卐 प्रस्तावना 卐

अनन्त श्री सुख सम्राट सतगुरू सुखराम जी महाराज की अणभै वाणी का भाषान्तर करने का प्रयास जिन्होंने भी पूर्व में किया वह सभी धन्यवाद के पात्र है, साथ ही उन्होंने यह लिखा कि आपको सतगुरू के ज्ञानानुसार कोई विशेष बात ज्ञान व अनुभव में आवे उसी के अनुसार समझने की कोशिश करे। अत: इस ग्रंथ में रही कुछ त्रुटियों को सुधारने का प्रयास किया है। ताकि आने वाली पीढी को भक्ति मार्ग के ज्ञान का स्वच्छ मार्गदर्शन मिले। तीन लोक के मालिक ब्रह्मा, विष्णु, महादेव के द्वारा बनाई गई मर्यादा का पालन करते हुये मोक्ष का मार्ग प्रशस्त हो सके। इन्ही आशाओ के साथ महाराज के ग्रंथ का नवीन संस्करण आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहे है। हमारे से भी त्रुटि रहना सम्भव है, यदि आपको इससे भी अच्छा अर्थ आये तो सुधार कर सकते हैं।

इस ग्रंथ को पढ़कर मनन कर सांस ऊसांस में सतगुरू विधि से राम राम रट कर शब्द की जागृति करो, जिससे जीते जी दशवां द्वार खुलकर के: पद आ: पद की प्राप्ति हो। इस साधन के अत्तिरिक्त अन्य सब साधन करते है तब तक ही होते है, अखण्ड नही होते। इससे तीन लोको में फलो की प्राप्ति होती है।

卐 वर्तमान में इस ग्रंथ की उपयोगिता 卐

केवल ज्ञान में अब तक सशरीर सतगुरू मौजूद रहते थे तब तक उनसे यह केवल का बीज प्रगट होता था, परन्तु आज सतगुरू सुखराम जी महाराज की देही नहीं होते हुये भी उनके इस ग्रंथ को सतगुरू रूपी पदवी मिल गयी। आज भी ने: अक्षर (सतशब्द) इनके ज्ञान द्वारा प्रगट हो रहा है। अब तक श्री कृष्ण भगवान के बाद रक्षा के लिये नीमित अवतार धरा धाम पर नहीं आये। अत: आज भी रक्षा का ओधा श्री कृष्ण भगवान को ही है। ठीक इसी प्रकार सतगुरू सुखराम जी महाराज के बाद कोई भी आत्म कल्याण हेतु नित्य अवतार नहीं आये। अत: इनको ही सतगुरू रूपी ओधा है।

कृपया कुछ शब्दो को संक्षिप्त में लिखा है उसको पूरा पढे।

के:पद याने केवल पद, आ:पद याने आनन्द पद, म:फ:याने महाराज फरमाते है।

ग्रंथ मिलने का स्थान :-

Champalal Solanki
Agewa road
Jaitaran (राज.)
फोन : 9413876977

卐 भजन की विधि 卐

सांस ऊसांस कहे हरि नाम, फिरे रसना मुख में दिन राती।
धीरज ध्यान अडोल न डोले, आसण मार ऊकाऊ छाती।।
नाल समीसल राखत नाही, मोडत अंग न बंधत बाती।
मन को थोब पवन सूं मेला, सूरत समोय निरत कर साथी।
सुखराम कहे यूं ध्यान धरो, ज्यूं दीप सूं ज्योत जले है बाती।।

भेद सहित :- सांस ऊसांस में भजन परमात्मा का नाम राम है व विधि से रसना व मुख से रात दिन लेवे, धीरज से ध्यान रखे व विरतीयो को भी डुलावे नही। आसन लगाकर छाती ऊंची रखे व नाडी भी सीधी रखे और शरीर को आमा सामा मोडे नही और किसी से बात भी नहीं करे और स्वांसा में मन सूरत निरत लगाकर भजन करे। सतगुरू सुखरामजी महाराज फरमा रहे है कि इस तरह से भजन ध्यान करने पर जैसे दीप से दीप लगाने पर जुप जाता है ऐसे ही निज नाम यानि सतशब्द जागृत हो जाता है।

卐 अनन्त श्री सुख सम्राट सतगुरु सुखरामजी महाराज की अणभै वाणी 卐

卐 मनुष्य शरीर के बारह कंवलो की विगत 卐

अमरलोक सुखराम कह, हम देख्यो रट राम।
बावन गादी ढील न खावे, ऐता हंस लोक उण जावे।। १।।

म:फ: है कि हमने अमरलोक सांस ऊसांस में राम रट कर देखा है। बावन अक्षरो में रकार ब्रह्म वाचक है और मम्मा माया वाचक है। ब्रह्म माया के मेल से सृष्टि की उत्पति होती है। ऐसे ही ब्रह्म का नाम रटने से हंस मोक्ष में जाते है।

शब्द सुण्या सत्तगुरू का बेणा, देख्या सकल आपका नेणा।
पेली शब्द श्रवणा आवे, जब तो मन में हरख बंधावे ।। २।।

म:फ: है कि प्रथम बार सत्य केवल ज्ञान के अणभै वचन सुने तो मन में खुशी हुई। यानि आपके ज्ञान रूपी नेत्रो के दर्शन हुये।

उठत बैठत सांस ऊसांसा, रसना राम रटो निश वासा।
मनवा करे पवन सूं मेला, सुरत शब्द दोनो भये भेला ।। ३।।

म:फ: है कि हे हंस वृति आत्माओ सुनो, राम के नाम को सांस ऊसांस में जिभ्या से रात दिन, उठते-बैठते रटते रहोगे तो मन स्वांसा में लगेगा और सुरत सतशब्द ने: अक्षर का अनुभव करने लगेगी।

चाले बेल पिवे कण्ठ क्यारी, फूल्या कंवल पांखडी चारी।
रसना उलट कंवल में देखी, दीसे दोय मुख तो ऐकी।। ४।।

१. कण्ठ कंवल :- शरीर रूपी बेल में रटना चलेगी तो कण्ठ क्यारी रूपी कंवल में चार पखुंडी का कंवल खिलेगा अर्थात चार सूर्य जैसा सतशब्द का आनन्द आयेगा। मुंह तो एक है पर दो दिखाई देते है। यानि मुंह से रटना भी चलेगी और कण्ठ में निजनांव कुदरत कला का अनुभव भी होगा।

हिरदे सुन्न हरिजन वासा, कलियां सूर आठ प्रकाशा।
प्रेम हिलोला आत्मा जागी, नव तत्त देह रटे लिव लागी।। ५।।

२. हृदय कंवल :- म:फ: है कि भक्तो के सतशब्द कण्ठ कंवल से हृदय सुन्न में आया तो कलियां यानि आठ सूर्य का प्रकाश हुआ तब आत्मा चेतन होकर प्रेम में मग्न हुई तो नव तत्त लिंग शरीर ही लिव बंध रटना करने लगा।

मध्य सुन्न बिच भलक्या नूरा, सोलह कली दीशे शशि सूरा।
नाभ सुन्न पर संत पधारे, कली बत्तीस तपे रवी सारे ।। ६।।

३. मध्य कंवल :- म:फ: है कि तीसरा कंवल मध्य सुन्न पर ने: अक्षर आया तो सोलह कली यानि सूर्य चन्द्रमा के प्रकाश जैसा आनन्द आया।

४. नाभ कंवल :- चौथा कंवल नाभी सुन्न पर भक्ति करने वाले संत आत्मा शब्द के साथ आई तब बत्तीस कली याने बत्तीस सूर्य तप जैसा ने: अक्षर का आनन्द आया।

कंवल खट पांखडी ब्रह्म स्थान, ज्या में ब्रह्मा माण्ड घडत है।
उभय नाड संग आणी, गुदा सुन्न पर संत जन पूगा।। चौसठ कली सूर शशि ऊगा।। ७।।

५. ब्रह्म कंवल : म:फ: है कि पांचवा कंवल ब्रह्म स्थान में ब्रह्माजी मांड घडते है। मूत्र व वीर्य निकलने का ब्रह्म स्थान तो एक है, पर नाडिया दो है।

६. गुदा कंवल : छटा कंवल गणेश स्थान पर संत आत्मा ने: अक्षर के साथ चौसठ कलियां यानि सूर्य चन्द्रमा के जैसा आनन्द लेती है।

पिछम सुन्न घर संतजन झूंझे, फूल्या कंवल इसी विध सूजे।
मुंह सेहशर जिभ्या घणी, सब फण नीचे होय।। ८।।

७. शेष कंवल : म:फ: है कि संत आत्मा संखनाल के छ: कंवलों का अनुभव करके बंकनाल में सातवां कंवल पिछम सुन्न घर में खुलता है तो शूरवीर संत ही शेष नाग के कंवल पर पहुंच सकते है। क्योंकि शेषजी हजार मुंह दो हजार जिभ्या के साथ नीची फण किये बैठे है। सांस-सांस में भजन करने वाले गुदा घाट आते है और कुण्डली जाग्रत करते है, पर होती नहीं है। फिर गुदाघाट संखनाल से ही चढते है। बंकनाल में नहीं उलट सकते।

शेष लोक सब देखियो, ररंकार सुखराम कह रटे निशो दिन जोय।
ररंकार की घोर सूं, छिक गया सूरग इक्कीस।। ९।।

८. बंकनाल कंवल : म:फ: है कि शेषलोक में शेषजी दो हजार जिभ्या से ब्रह्म के नाम की रात दिन रटणा कर रहे है, इसलिये संत आत्मा ब्रह्म के नाम को सांस ऊसांस में रट कर ररंकार यानि कर्द शब्द ने: अक्षर की ताकत के कारण ही शेषजी ने रास्ता दिया तब इक्कीस स्वर्ग यानि

आठवां कंवल बंकनाल का छेदन कर सका।

ताला तोडू भेद सूं, खोलू पोल विचार। इडा पिंगला सुखमण धारा,
तीनू बहे संत की लारा। धूजाया सब शहर कूं, कीयो जेर निराट।
सुखराम ब्रह्म मुजरे चल्या, जहां खुली मेर की बाट।। १०।।

९. मेरूडण्ड कंवल : म:फ: है कि ब्रह्म के नाम का भेद यानि सांस ऊसांस में रटा तब नवां कंवल यानि मेरू पोल को केवल ज्ञान का विचार करके ताले तोडे जब इडा, पिंगला, सुखमणा तीनो धाराये यहां निकल कर संत यानि सतशब्द के साथ बहने लगी तो शरीर रूपी शहर में रोम रोम कांपने लगे, सारी वृतियां शीतल हो गई, फिर मेरूडण्ड की पोल खोल कर सिर ऊपर होकर त्रिगुटी ब्रह्म के देश में आया।

जब त्रिबेणी सुन्न संत बिराजे, इकलख सूर तपे उण छाजे।
तीन लोक का ये सुख त्यागे, तेरह लोक त्रिगुटी आगे।। ११।।

१०. त्रिगुटी कंवल : म:फ: है कि दसवां कंवल पर इडा, पिंगला, सुखमणा एक होकर त्रिवेणी सुन्न में संत आत्मा ने:अक्षर का अनुभव करके एक लाख सूर्य तपे जैसा आनन्द लिया। इतना सुख आने पर भी यहां जन्म मरण साथ है और तेरह लोक त्रिगुटी से आगे पारब्रह्म तक है। इनके सुख को भी मैंने त्याग दिया।

तेरह लोक : ब्रह्मा, विष्णु, महेश, माया, ब्रह्म, प्रगत, ज्योत, अजर, आनन्द, बजर, ईखर, निरंजन ब्रह्म, शिवलोक।

पांख हजार कंवल जहां फूल्या, कली कली रस छूटा।
हंस बैठा सुखराम कह, सुन्न सागर की तीर।। १२।।

११. दसवां द्वार कंवल : म:फ: है कि एक हजार पांख का कंवल खिला हुआ है उसकी कली कली से अमृत रस छूट रहा है। भक्ति करने वाली संत आत्मा ब्रह्मण्ड सुन्न की तीर पर बैठी हुई सतशब्द के रस का रसपान कर रही है।

सुन्न सागर आगे बसे, पारब्रह्म को लोक, जहां अनन्त पांख को फूल है।
यूं भंवर गुफा लग हंस के, माया पवन को भेल।
सुखिया छाडे त्रिगुटी, तां दिन रती न भेल।। १३।।

१२. पारब्रह्म कंवल : म:फ: है कि बारवां कंवल ब्रह्मण्ड सुन्न दसवे द्वार के आगे पारब्रह्म का लोक जहां अनन्त पंखुडियो का फूल है इसे भंवर गुफा भी कहते है, वो बारवां कंवल है। यहां तक भी हंस के साथ माया ब्रह्म का भेल है अर्थात् जनम मरण है। इस देश को छोडेगा तब भेल रती भर भी नहीं रहेगा, यहां तक त्रिगुटी का एरिया है।

वा माया सूं फोडनी, दूजो नाय उपाय। सिद्ध सिला कूं फोड के, चढिया संत सधीर।
नव तत्त लिंग शरीर है ऐबी उली बार, हम देख्या सुखराम कह बारी खोल किंवार।। १४।।

म:फ: है कि सिद्ध सिला यानि ब्रह्मण्ड से ऊपर अधर घूमता हुआ सतशब्द अखण्ड मालूम पड़ता है। उसके भी आगे जाने के लिए नव तत लिंग शरीर केवल की बारी को खोलने के लिए केवल ज्ञान का निष्पक्ष निर्णा समझ में आयेगा यही माया से फोडना है। तब त्रिये ताप से अलग होकर धैर्यवान संत आत्मा ही आगे पहुंचेगी।

वहां लांग्या सुखराम कह, हंस पहुंता मोख। केवल होय निकेवल होय, फेर जन्म नहीं धारे।
दरशण करत तिरपत नहीं होवे, इमरत बाणी जन कूं मोहे।
वा विध का सुख कहया न जावे, बिन टेके सतधाम कहावे।। १५।।

म:फ: है कि बारवां कंवल भंवर गुफा सिद्ध सिला केवल की बारी तक है। इनको लांघने पर ही केवल यानि सता समाधि के बाद ही निकेवल यानि सुन्न समाधि आने पर ही हंस परममोक्ष की प्राप्ति करेगा। उसकी पहचान है कि सतशब्द ने:अक्षर का आनन्द आठ पोहर लेते हुये भी तृप्ति नहीं होती व अमृत के समान अणभै वाणी का निष्पक्ष निर्णा प्यारा लगता है, वो धाम बिना टेके है। यानि पांच तत्व, नव तत लिंग, शरीर और त्रिय ताप से अलग सतगुरु पद है।

सर्वलोक जय जय करे, बन्दे विष्णु महेश। जब पहुंता सुखराम कह, संत समाधी देश।। १६।।

म:फ: है कि मृत्युलोक में संत आत्माये सत्ता समाधि सुन्न समाधि देश की वासी बन जाती है तब ब्रह्माजी के बन्दे यानि पुत्र चेतन को विष्णु महेश व सर्व देव लोक धिन धिन व जय जयकार करते है।

सत स्वरूप निज नांव, केवल पद गुरु दयाल।।
सतगुरु प्रणामम् परम गते, बेराग्यम् परम भाग्यम्।।
सन्तोषम् परम धनम्, कुल गिनान तजे निरन्तम्।।
सो जोगी नमो नमस्ते, सत स्वरूप केवल पद अखण्डाय।।
नमस्ते नमस्कारम् सर्वगते।।
ब्रह्मानन्द परम सुखदम्, केवलम् ज्ञान मूर्तिम्।।
दूंदातीतम् गगन सदृश्यम्, तत्वम् स्पदि लक्षणम्।।
एकौ नित्यम् विमल मचलम्, सर्वदा साक्षी रूपम्।।
भावातीतम् त्रिगुण रहितम्, सतगुरु तम् नमामि।।
चेतनम् सासवम्, व्योमा तीतम् निरंजनम्।।
नाद बिन्दू कला तीतम्, तस्मयी गुरुवे: नम्।।
मंगलम् गुरु शब्द रूप, अनाम नाम प्रकाश नम्।।
मंगलम् शब्दार्थ शब्दाधार, शब्द निवास नम्।।
परमदयाल सतगुरु दयाल की अमृतमयी बाणी कानों द्वारा पान करो।।
राम सतगुरु देव जी महाराज का अमृतमय नांव मुखार बिन्द द्वारा पान करो।।
राम सतगुरु देवजी महाराज का निजनाम सतनाम सूरत दिष्टी व दिव्य दिष्टी सुं अनुभव करो, श्रवण करो, मनन करो।।
शरणो सतगुरु दयाल को, मुख हृदय हरि नाम।।
नित पत संगत साध की, आजीवन मोक्ष सुखराम।।
सब धरती कागद करूं, सब वन कलम कटाय।।
सात समन्द स्याही करूं, सतगुरु गुण लिख्या न जाय।।

सतस्वरूप के निज नांव को केवल पद व गुरू पद कहते है। सतगुरू पद की प्राप्ति होना ही सतगुरू प्रणामम् परम गते है। ज्ञान वैराग की प्राप्ति होना ही परम भाग्य है। संतोष की प्राप्ति परम

धन है। कुल गिनान याने विधि से भजन कर करणियो के ज्ञान से अलग होकर पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति होना ही अलग होना है। सो जोगी नमो नमस्ते है। सतस्वरूप आनन्द पद की प्राप्ति होना ही वो पद केवल पद अखण्डाय नमस्ते याने परम आनन्द है।

सतगुरू पारब्रह्म के आनन्द का स्वरूप है, केवल वही पारब्रह्म का स्वरूप, उसका धाम तथा उसकी लीला को जानने वाले होते है। इसलिए योग के लक्ष्य को भी वही निर्धारित करते है। योग का लक्ष्य है परम आनन्द की प्राप्ति। जिसने पारब्रह्म के साक्षात्कार के द्वारा परमानन्द को पा लिया है वही तो अपने भीतर की पारब्रह्म की शक्ति से आत्मा को परमानन्द का अनुभव करवा पायेगा। आनन्द तो इधर उधर माया में ही रह जाता है, परन्तु परमानन्द जिसे कहा है वह पारब्रह्म का साक्षात स्वरूप है, इसलिए अनन्त है, बेशुमार है, जिसे पाकर कुछ भी पाना शेष नहीं रहता। सतगुरू पारब्रह्म के आनन्द का साक्षात स्वरूप है। इसलिए वे परमात्मा के हुक्म से प्रगटे है।

ब्रह्म सर्वव्यापक है, वे ही निरंजनम है, नाद बिन्दू याने आधार क शब्द से वह आत्म चेतन से अलग है और करणियो से भी अलग है। जो शब्द प्रगट होता है वो ही मंगलम गुरू शब्द रूप है। अनाम नाम याने परमात्मा का कोई नाम नहीं है। शब्द प्रगट होता है वो ही परमात्मा का नाम है। केवल पद आनन्द पद की भक्ति करना ही शरणो सतगुरू दयाल का है। मुंह से और हृदय से हर समय परमात्मा को याद रखना ही मुख हृदय हरी नाम है। आत्म चेतन के आत्मा के निरंजन निराकार पद से बिना करे भक्ति होती है, उसकी संगत करना ही नित पत संगत साध की है। जीते जी ही हर समय केवल पद आनन्द पद का अनुभव होना ही जीवन मुक्त है।

स्कन्द पुराण – यदि पारब्रह्म एक है तो पारब्रह्म के आनन्द का अनुभव करवाने वाले भी एक समय में एक ही सतगुरु होते है। परन्तु गुरु अनेक है।

卐 सतगुरु सुखरामजी महाराज की विगत 卐

दोहा: गुजरगोड पंचारिया संत सुखदेवजी नाम।
भरत खण्ड मरूधरा बास विराही गांव।।
रेखता : सन्त सुखराम घर द्विज के उतरिया। वेद गत छाड निज नाम ध्याया।
भगत के काज भगवान मुझ भेजिया। हंस चेतावणे काज आया।
ब्रह्म दरबार से मोहर परवानगी। अणभै बांच सुणाय देऊं।
जग में जीव कोई आंण कर भेंटसी। काल का मुख सु काढ लेऊं।
ताय में फेर तिलमात्र मत जानजो। राम गुरु देवजी शीष म्हारे।
दास सुखरामजी हरि हुक्म सूं आविया। शरण के जीव कूं राम तारे।। १।।
अणभै ज्ञान सुखदेव जी बोलता। लिखता शिष हरि किसन आंणी।
पुस्तका मांय सो अणभै ऊतरी। बांच ज्यो नित गुरु धर्म जांणी।
अणभै ज्ञान गुरुदेव भगवान है। पत प्रणाम दण्डोत किज्यो।
पोथियां जीव ज्यूं सीस पर राखज्यो। इष्ट को भाव फल मांय लिज्यो।
आद अनाद में सन्त सो कह गया। ज्ञान गुरु पत सूं राम राजी।
दास सुखराम कह धर्म ओ राख के, राम कूं रटे सो मरद गाजी।। २।।

मुरधरा देश में गांव कूडी बसे। सन्त सुखराम जहां भक्त कीनी।
सम्वत अठारे सौ वर्ष चौबीसवे, मास आषाढ हर शरण लीनी।।
बार गुरु वार सुण पख सो सुध थी। तिथ सो तीज वा दिन होई।
लिखके नाम हिरदे उर धारियो। सुणो प्रणाम सब सन्त लोई।
हाथ कर जोड दंडोत मैं करत हूं। राम सो राम सब मान लीजो।
दास सुखराम कहे साम महाराज है। राम कूं रट सब काज कीजो।। ३।।

卐 सन्त सतगुरु सुखरामजी महाराज परम धाम पधारिया जिण समय री विगत 卐

सम्वत अठारे सौ वर्ष तिहोतरे। सन्देसो प्रेसतो आण दीयो।
हुक्म दरगाह को हक प्रवाणगी। सन्त सुखरामजी बांच लीयो।
सुध वैशाख दिन पख जब ऊतरयो। जगमें बास षट मास होई।
सिध औतार जन पीर पैगम्बरा। थिर संसार नहीं रह कोई।
मास काती सुध तिथ तेरस थी। ऊगते सूर सिधकार किनो। बारस की रात घडी दोय को दुगडियो।
देह मृत लोक में मेल दीनी। घोर घमघोर जब आवाज हुई शब्द की।
रोम ही रोम ररंकार बोल्या। नव ही द्वार होय राह नहीं मोख की।
दसवे द्वार कूं आण खोल्या। ब्रह्म सूं चाल भूलोक में आविया। हंस चेताय सब काज कीया।
संत सुखराम परम धाम कूं पहुंतिया। शिष गिरधर कूं संग लिया।। ४।।
कुण्डलिया : वर्ष तियांसी लागते चेत मास गुरुवार। तिथि नोमी पख चानणो,
सुख अवतरिया संसार, सुख अवतरिया संसार, सम्वत सतरा से मांही।
जम घर उपज्यो सोग, नरा घर बटी बधाई। अठारा सो तिहोतरे,
पहुंता मोख द्वार। बरस तियासी लागते चेत मास गुरुवार।। ५।।

卐 वाणी लिखी जिण समय की विगत 卐

राम सभा हरसोर की, जहां एक कियो विचार।
वाणी का अंग बांधिया, ए शब्द बडा ततसार।। १।।
सुखसारण अंग बांधिया, लिखिया कृपाराम। देशकाल सब देखकर, धरिया ठामो ठाम।। २।।
शिष था राघोदास का, रहता नित हरसोर। कृपाराम जो दूसरा, जांके गुरु रिणछोड।। ३।।
अंग बांध्या वाणी लिखी, हुंता बालक बुद्धि अजाण।
या में कसर कोर हुवे, तो किज्यो ऐह पिछाण।। ४।।
समत अठारे से तिराणवे, सावण मास बखाण।
मंगलवार पख चानणो, तिथ द्वादस जाण।। ५।।
कुण्डलिया : दोय पोथ्यां पूर्व से आई, एक पिछम सूं जांण। आछो मोहरथ रामजी,

संता भेज्यो आंण।। संता भेज्यो आंण, समो कोई श्रेष्ठ आयो।
अपणा जन को जश, आप साहिब मन भायो। सुखसारण बांची सबे, ए शब्द बडा निर्वाण।
दोय पोथ्यां पूर्व सूं आई, एक पिछम सूं जांण।।

रेखता : सन्त सुखरामजी महाराज की अणभै ऊतरी जिण समय री विगत।। सन्त सुखरामजी महाराज की अणभै ऊतरी, पुस्तकां मांय सो सुणो सारा, ग्रन्थ तां मांय दस पांच ले भासिया, अंग पचास फिर आठ न्यारा, ज्ञान की गुष्ट शिष एक हरिकिशन को, चवदा सन्त समाद बोल्या।। जग में जीव कीणी ही आण कर बूज्यो, ब्रह्म की भक्ति का ताक खोल्या, पद पेतीस फिर राग बंध तीन से, एक दस सेंस श्लोक मांही।। अखर श्लोक बत्तीस प्रवाण है, ताय में घाट को बांध नाही, एक सेंस का हर्फ केता कहया, बावन हजार लख तीन सारा, दोय हरफा बिचे भेद इन शब्द को, एक रकार मकार लारा।। राम रसना रटया, करम सारा कटया, भ्रम सांसा मिटे, विध्न बचे, किंवाड ममंकार मुख द्वार जडवो करे।। द्रव ररंकार को, खास संचे, और दस पांच मुंख नाम सेंसर लिया, मांय संचे बिना, बस्त बारे धरया, जीव जोखा घणा, नाम का नाम बिन, जन्म धारे।। राम मुख सिमरिया, मन पवना मिले, शब्द सांसा मिले, शब्द सांसा झिले, सूरत माही बेण अब बक बुले, बन्ध लागे खुले, तन मन संग बंगे, सुध नाही।। अमृत धारा चले, नेण निर्मल खुले, कमल कलिया फूले, ठाम ठाई ऐसो लगे, बीण अनहद बंगे, झिग मिगे जोत घर अगम जाई, आत्मा उलट परमात्मा सूं मिले, बोलिया सन्त मुख ब्रह्मवाणी।। केवली भक्त, निज सन्त को ज्ञान है, न्याव निरणो, जिसो दूध पानी, मोख पर लोक को अर्थ तां मांय है, श्रवण सुणत बोह जीव जागे, समजसी भेद कोई सत्ता गुरुदेव की, सास उंसास मुख नाम लागे।। चार षट सोझ कर, नव कूं छांण कर, आठ फिर दस कूं भेद दीया। दास सुखराम कहे, सबन कूं जोयकर, राम ही राम संत धार लीया।।

बोलो राम सतगुरु देव जी महाराज ने धन्य हो धन्य हो।
परम दयाल सतगुरु सुखरामजी महाराज ने धन्य हो धन्य हो।
अनन्त श्री सुखसम्राट सतगुरु सुखरामजी महाराज
के ज्ञान सत स्वरूप भगवान ने धन्य हो धन्य हो।।
केवली भगवंता ने धन्य हो धन्य हो।।
जीवां तारण जहाज ने धन्य हो धन्य हो।।
मोक्ष के मालका ने धन्य हो धन्य हो।।
अनन्त कोटि संता ने धन्य हो धन्य हो।।

* * * * * * *

卐 वर्णमाला क्रम से विषय सूची 卐

क्रमांक	ग्रन्थ अंग व संवाद का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	अगाध बोध ग्रन्थ	458
2.	अजर लोक ग्रन्थ	415
3.	अनन्त श्री सतगुरू सुखरामजी म. की जीवणी	726
4.	अधीरता का अंग	252
5.	अमरलोक महिमा ग्रन्थ	359
6.	अलौकिक ग्रन्थ	366
7.	अवधु रो संवाद	592
8.	आत्म सार ग्रंथ	539
9.	आंधा के ज्ञान की कुण्डलिया	716
10.	आवबल का अंग	605
11.	ओगुण ग्राही का अंग	660
12.	ऊजीयागर पुरूष का अंग	38
13.	उपदेश का अंग	305
14.	करमी नर का अंग	200
15.	कीरतदान का अंग	440
16.	कुण्डलिया छुटकर	724
17.	कूंडा पंथी का संवाद	752
18.	खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड का अंग	219
19.	गरभ चेतावनी ग्रन्थ	331
20.	गर्भावली ग्रन्थ	394
21.	गृह सन्तोष का अंग	261
22.	गुप्त नांव सिमरण का अंग	26
23.	गुरू महिमा	3
24.	गुरू शिष्य का संवाद	556
25.	घमण्डी रामजी रा शिष्य का संवाद	199
26.	चाणक का अंग	145
27.	जती का संवाद	385
28.	ढूंढीया का संवाद	434
29.	तत्त भेद का अंग	430
30.	त्याग वैराग का अंग	610
31.	तांत्या का संवाद	105
32.	तेजा चौधरी का संवाद	196
33.	दादू पंथी का संवाद	751
34.	ध्यान समाद	495
35.	धिन धिनता का अंग	212
36.	धिरग धिरगता का अंग	201
37.	न्यात का संवाद	714
38.	निरगुण बोध ग्रन्थ	377
39.	निरणा का अंग	451
40.	निरपख का अंग	314
41.	नेः करमी का अंग	623
42.	पखा पखी का अंग	216
43.	पेट नाट का अंग	628
44.	परम पिस्तावो ग्रन्थ	43
45.	परा भक्ति का अंग	41
46.	प्रेम भक्ति का अंग	54
47.	प्रश्न का अंग की साखा	304
48.	प्रश्न उत्तर का अंग	296
49.	प्रश्न उत्तर का अंग का अरथ	300
50.	फल फूल का अंग	257

51. ब्रह्मचारी का संवाद 63
52. ब्रह्म भक्ति का अंग 573
53. ब्रह्म विचार का अंग 426
54. ब्रह्म स्तूति 1
55. ब्रह्म ज्ञानी का अंग 577
56. बाल लछ का अंग 621
57. बिजा इन्दा का संवाद 314
58. बैरागी का संवाद 265
59. बैली ग्रन्थ अमृत सार 664
60. भगत उपज का अंग 383
61. भक्त माल 775
62. भरम विधुंष का अंग 455
63. भुरकी ग्रन्थ 28
64. मन की राड ग्रन्थ 633
65. मलीनता का अंग 246
66. मिनखा देह गुण का अंग 250
67. मिश्रीत विषय का अंग 627
68. मुन्डत त्यागी बेरागी का अंग 262
69. मूल ज्ञान का ग्रन्थ 398
70. मूल ज्ञान घट परचा का अंग 230
71. मूल प्राण उत्पति का अंग 717
72. रचना ग्रन्थ 526
73. राजा चन्दूलाल का संवाद 152
74. वचन का अंग 630
75. वाय निरणा का अंग 624
76. विट्ठलराव का संवाद 72
77. विरह का अंग 11
78. विश्वास का अंग 253
79. विष अमृत का अंग 631
80. षट दरशण का अंग 606
81. स्यामी का संवाद 387
82. संचत का अंग 625
83. सतगुरू पारख का अंग 140
84. सतगुरू मेहर का अंग 282
85. सतगुरू सत्ता का अंग 171
86. सतभेष का अंग 59
87. सतगुरा का अंग 136
88. सन्मुख बेमुख का अंग 658
89. सतस्वरूप आनन्द पद ने: अँच्छर निज नाम 117
90. समाद 513
91. साध भेद का अंग 441
92. साध लछ का अंग 174
93. साध सिद्ध पारख का अंग 448
94. सुख विलास ग्रन्थ 408
95. सिमरण का अंग 22
96. सुदर का अंग 752
97. सूरातन का अंग 617
98. सुरगुण निरगुण का अंग 253
99. सूत का अंग 660
100. सेन का अंग 661
101. सौदागरी ग्रन्थ 183
102. हदगुरू पारख का अंग 138
103. हीण लछ का अंग 315
104. होतब का अंग 437
105. हरिकिशनजी की ज्ञानगोष्ट का अंग 320

卐 वर्णमाला क्रम से हरजस पदों की विषय सूची 卐

क्रमांक	हरजस का नाम	पृष्ट संख्या
1.	अटक रयो रे साधौ अटक रयो रे	127
2.	अनाद शब्द सुं नाद हुवो रे	201
3.	अवधु ईमरत पी सब मुवा	44
4.	अवधु ऊदबुद रीत कहाणी	42
5.	अवधु ऐसा तत विचारिया	41
6.	अवधु बिन कल बालक पाया	42
7.	अवधु सो कन्या हम पाई	45
8.	अवधु सो बालक जन पावे	43
9.	अरट अेसो बेलो अेसो बेलो	137
10.	अवगत न्यारो है अवगत न्यारो है	136
11.	अवगत हर सब ऊपरे हो	200
12.	आज तो तेरा कुछ नही जावे	113
13.	आज दिवस भल ऊगा हो	238
14.	आज भलाई दिन ऊगीयो	246
15.	आंणद लोक तो रे बंदा वे हंस जासी	129
16.	आन धरम दिन चार	67
17.	आवो ये बधावा सतगुरू आपणा	248
18.	आसा तज निरआसा होई	93
19.	इण मन कूं दोष न कोय	208
20.	इण मन सुं काहा कीजिये हो	201
21.	ऊठ परोडे प्रेम सुं	90
22.	ऊठ परोडे मांगने	89
23.	उण समरथ की मैं बलिहारी	117
24.	उण सूरत की बलिहारी हो	249
25.	ऊ दिन को कब ऊगसी हो	199
26.	अेक घडी आधी घडी	87
27.	अेक मना सिध अेक मना सिध	130
28.	अेका अेकी रे तुं चल जासी	124
29.	अे चेतावणी जमलोक की	183
30.	अे मुरख भेव न दुनियां जाणे	133
31.	अेजी तुम सुणता हो गुरू ज्ञानी गिगन में भंवर	24
32.	अेजी तुम सुणता हो गुरू ज्ञानी गिगन में सेहेर	25
33.	अेजी तुम सुणता हो गुरू ज्ञानी गिगन में अनहद	26
34.	अेसा भेव बतावज्यो	91
35.	अेसा याकूं निरमल किजे जोय	24
36.	अेसा समरथ साहिब मेरा	123
37.	अेसा है कोई अेसा है	109
38.	अेसे अवगत आप सांई	178
39.	अेसे कहे जुग दाय न आवे	121
40.	अेसे श्याम राम भगत वत्सल	179
41.	अेसे ही बोह बेद कुराण भरे सायद तेरी	179
42.	अेसो कोई ताप बुजावे आय	16
43.	अेसा जुग में को नही	93
44.	ओ कोई अरथ बतावो साधो	79
45.	ओ तज दूजा जे भजे	185
46.	ओ तेरे क्या न्याव है	92
47.	ओर सकल विध सेली	99
48.	कपटी राम न पावे हो	99
49.	क्या मैं करूं ऊपाई संतो	80
50.	करणी कर रेणी रहे	90
51.	कृपा करो गुरां शिष कूं तारो	253
52.	करम करे सो कवन है हो	196
53.	करम काट पद में मिले	183
54.	कलजुग पूरण जोय	70
55.	कह गीता हो सुण वेद चार	229
56.	काचे मन वैराग त्याग	222
57.	किस विध मिलिये हो राम सूं	180
58.	कुण है रे बाबा कुण है रे बाबा	209
59.	कुल की राह चले हर शिवरण	255
60.	केइक पाप मन मानिया रे	104
61.	केवल ध्यान धरे रे कोई जन	5
62.	केवल ध्यान धरे रे जे जन	58

63.	केवल राम रटो मन मेरा	11
64.	कोई अेसा है जन संत सुजाण	230
65.	कोई ऐसा है जन सूर साधो	196
66.	कोण शब्द से कोण होय	231
67.	कोहो इण मन सुं क्या करूं	184
68.	खण्ड पिण्ड की गत एक है	204
69.	ज्ञान ग्रन्थ सब सांभलो	184
70.	ज्ञानी ज्ञान विचारूं देखो	111
71.	ज्ञानी सब ही सांभलो रे	105
72.	ज्ञान सुणे सुण चेत ज्यो रे	102
73.	गलतान मता कब आवेगा	40
74.	गुरूजी कारज किस विध कीजे	139
75.	गुरां जी का सरवर अवर न कोई	253
76.	गुरू बिच अन्तर राखे हो	237
77.	गिगन मंडल में बालक पाया	131
78.	घट मांही साहिब बसे हो	203
79.	चालोनी रे हंसा अपणे राम जना रे देश	244
80.	छोगाला नर रे तूं तो जम जालम सुं डर रे	177
81.	जग कछु लेत देत कुछ नांही	116
82.	जगत अचाई मीत करे	107
83.	जन चाय हुवे सो खोज जो हो	195
84.	जन सा ठग न कोई हो साधो	97
85.	जन्तर मन्तर एक न जाणूं	116
86.	जन सा सूर न कोई हो	100
87.	जब जम आंण नगर कूं घेरे	122
88.	जम जालम है जम जालम है	128
89.	जंवरो सोज कहो घट मांही	204
90.	जाग जाग धर जाग	67
91.	जां दिन ते कृपा हुई रे	108
92.	जामो है भारी है भारी	95
93.	जिन मुख राम कहोरी रसना	12
94.	जी गुरां भेद बतावज्यो	181
95.	जीमो सतगुरू सांचा शिरजण हार	225
96.	जीव को कंठ स्थान है	69
97.	जीव बसे किस ठौड	69
98.	जुग बडाई छाड	64
99.	जुग में अेक भरम है भारी	28
100.	जुग मांही सोई फकीर बखाण	16
101.	जुग में जोगी कोई नहीं	88
102.	जुग में सोई जन उतरे पार	17
103.	जुग शोभा चाहूं नहीं	94
104.	जे आ मुगत भेष सूं पावे	254
105.	जे जे जाय मिल्या पद मांही	256
106.	जे तलफो कोई जीव	70
107.	जोगिया गिगन मंडल घर किया	35
108.	जोगिया गिगन मंडल घर खेले	36
109.	जोगिया ने ढुंढत जुग भया	87
110.	जोगिया सतशब्द लो भेवा	34
111.	झालर बिन अेक झालर बागी	130
112.	डूबा था धे मांय नहीं तर डूबा था	257
113.	त्यागी ओ तूं भेद विचारे	256
114.	ताकूं भूलो तूं आन ध्यावे	134
115.	तारेगा तेतीक सतगुरू तारेगा	258
116.	तिरखा कूं हर जल कियो रे	106
117.	तीन रीत परमोद हमारी	119
118.	तुम बिन आन और नही धारूं	253
119.	तुम बिन मेरा नांह जुग में	222
120.	तुम सुणज्यो सकल जन आंण	195
121.	तूं तो उण पद सुं मिलज्या रे	176
122.	तूं तो निरगुण पद सूं मिल रे	176
123.	तूं तो स्याम धणी कूं बर अे	174
124.	तो भी नही हो इण नांव सम	227
125.	धर मानव अवतार	65
126.	धिन गुरू ग्यान जो साध इण जुग में	178
127.	धिन धिन भाग हमारा हो	235
128.	धिन धिन सो नर जाणिये हो	208
129.	धिन धिन सो नर नारी जुग में	81
130.	धिन धिन सो हंस जीव	65
131.	धिन धिन सो हंस भाग	66
132.	धिन धिन हो धिन परम धाम	234

133. धिन धिन हो धिन राम नाम 232
134. धिन सोई है धिन सोई है 136
135. धिरग धिरग सो नर नार कवाय 231
136. धिरग धिरग हो मन धिरग तोय 229
137. धिरग लाणत मन आप कूं हो 199
138. धोबिया रे दरगा जाणो मोय 17
139. दिया मैं हेला सुणो सकल नर नार 220
140. दुनिया भरम मांय भूलाणी 27
141. देखो रे देखो साधो मत जगत की 113
142. देव पदी जीव जाय 69
143. दोय विध संत पिछाणो रे 109
144. नर कहा तेरी गत तूं ही जांणे 52
145. नर ताका कोण हवाला हो 98
146. नही रे अेसो लगन दुजो कोय 14
147. नहीं रे अेसो मोसर दुजो कोय 14
148. नांव कला विध न्यारी संतो 74
149. नांव नकेवल कोय 64
150. निरंजन तेरी गत तूं ही ज जांणे 54
151. ने: चल को रंग डोल कहूं हो 205
152. पंडित अरथ अरथ को किजे 32
153. पंडित भूल दोन्यू घर मांई 45
154. पंडित यामे कुण है न्यायी 32
155. प्रभुजी मैं कहा करूं इस मन को 59
156. प्रभुजी मैं किसका शरणा धारूं 172
157. प्रभुजी मेरी बाह संभावो 63
158. प्रभुजी मेरे मन कूं हिम्मत दीजे 4
159. प्रभुजी मैं हार चल्यो इस मन से 60
160. प्राणी क्यों हर बिसरयो रे 101
161. प्राणी मेरा राम नाम लिव लाय 13
162. प्राणीया काय तूं सुतो रे 46
163 प्राणीयां रे नांव गहो तत सार 18
164. प्राणीयां रे नांव गहो मुख मांय 20
165. प्राणीयां रे सतगुरू तारण हार 20
166. प्राणीयां रे समझ सिंवरो राम 15
167. प्रेम पियाला पीजिये 93
168. पांडे अन्तकाल कहां जावो 33
169. पांडे एक शब्द सत जिले 255
170. पांडे ओ तो ब्रह्म कुवावे 39
171. पांडे चार वरण घट मांही 84
172. पांडे नेहचल ज्ञान विचारो 34
173. पांडे पाखण्ड काय चलावो 251
174. पांडे ब्राह्मण कुण विध बागा 40
175. पांडे मैं चार बरण सुं न्यारा 33
176. पांडे समझ चेत होय भाई 255
177. पांडे समज्या यूं तत धारे 29
178. पांडे समज वाद सो किजे 31
179. पांडे समज शिंवर हलसांई 82
180. पांडे से सब मधम कहावे 31
181. पांडे सुण ले बेद हमारो 170
182. पिंडत आंधो रे भेद न बुजे 134
183. पिया मैं दोरी हो प्रगटो दीनदयाल 260
184. पिया मैं भूली हो मेरे सतगुरू 259
185. प्रीत न छिपे छिपाई सन्तो 75
186. फिट मन लाणत तोने 131
187. फूटरिया मन रे तूं तो हर भज पार उतर रे 175
188. बंदा अन्त काल पिस्तासी 37
189. बंदा और सकल सब शोभा 39
190. बंदा कहा कियो नर होई 37
191. बंदा गाय गाय हर गाय रे 36
192. बंदा जाग जाग नर जाग रे 26
193. बंदा नांव सताबी लिजे 38
194. बंदा शरण सबल की गेह रे 27
195. बन पावो रे बन पावो रे 137
196. ब्याव हुवे लो ब्याव हुवे लो 132
197. बांदा अगम देश पेडयां दश आगे 166
198. बांदा आनन्द ब्रह्म या सुंई आगे 148
199. बांदा आनन्द लोक से जावे 154
200. बांदा आयो मोसर मती हारो 161
201. बांदा ओ अरथ यांको होई 147
202. बांदा ओई कोई भेद बतावे 146

203. बांदा ओ नर मोहे न जाणेजी 193
204. बांदा और शकल पिस्तासी 193
205. बांदा केवल को घर न्यारो 140
206. बांदा केवल भेद न्यारो जी 192
207. बांदा गुरू तजियां दोष नांई 156
208. बांदा जुगत मुगत परचा सो माया 141
209. बांदा तत राज यो होई 143
210. बांदा तीन भक्त कहूं तोई 186
211. बांदा ने: अँच्छर तत सांचो 168
212. बांदा ने: अँच्छर बिन अे नही लांगो 167
213. बांदा ने: अँच्छर सुण न्यारा 142
214. बांदा पांच भगत जुग जांणे 161
215. बांदा पुराण सुण कुण तिरिया हो 169
216. बांदा मत कर झोड अनाडी 159
217. बांदा मत भूलो भरम मांही 187
218. बांदा मोख जिके जन जासी 144
219. बांदा मोमे ओ गुण आयो 194
220. बांदा यूं जग मोहे ना जाणे 192
221. बांदा यो जग मोहे ना जाणेला 189
222. बांदा भेद यां नहीं पायो 152
223. बांदा ओ सुण भेद नियारो 159
224. बांदा राज जोग विध न्यारी 163
225. बांदा वे जन पुरा जोगी 164
226. बांदा सतगुरू मेहर नियारी 154
227. बांदा सतशब्द है न्यारा 151
228. बांदा सत सुक्रत यो जांणो 166
229. बांदा सब ही भगत नियारी 162
230. बांदा समज छाण मत लिजे 165
231. बांदा से जन पूरा जोगी 146
232. बांदा से नर मोक्ष न जावे 139
233. बांभीडा खीज काय दुख पायो 29
234. बेमुख सोई जाणिये रे 103
235. बिन करक्या हर न मिले हो 207
236. बिन धवण लोहा जे गाले 56
237. भगत करावो दास कूं 89
238. भगत करे जन सूरा हो 100
239. भगत तुम्हारी बखाणी 3
240. भगत भेद नही जांणे अे तो 101
241. भजना रे प्राणिया क्या अरथ विचारे 182
242. भजो तो राम भजीज्यो रे हरि बिन आन तजीज्यो रे 46
243. भजो तो राम भजीज्यो रे मून गहो तो 47
244. भजो तो राम भजीज्यो रे षट क्रिया आचार ले रे 48
245. भजो तो राम भजीज्यो रे सतजुग में सत राखता रे 48
246. भजो तो राम भजीज्यो रे जे बोले तो राम कह रे 49
247. भरम ज्ञानी लो भरम ज्ञानी लो 126
248. भाई भेदी हुवे सोई जांणे 217
249. मत भूलो हो मन माया संग 232
250. मत भूलो मत भूलो लो 110
251. मन राजा के नार 71
252. मन रे आछी करी ते बीर 21
253. मन रे ओ तन ऐसो लोई 2
254. मन रे करडी बिना सब काची 30
255. मन रे तूं खेती करोनी आय 21
256. मन रे गाफल चेत सवेरो 38
257. मन भजिये हो नित राम नाम 228
258. मन रे मत फूले मुढ गिंवारा 51
259. मन रे मैं तो कछु नही जांणु 79
260. मन रे सिमर सिमर हलसांई 6
261. मनवा लाणत तोय रे 107
262. म्हाने अवचल बर परणावो हो 174
263. म्हारा गुरांजी रे देश चालो अे 245
264. म्हारे पावणा परम गुरू आज 243
265. म्हारा सतगुरू आया ये सैयां 247
266. म्हारा सतगुरू परम स्नेही हो 237
267. म्हारो ने संदेशो सायब सांभलो 219
268. मारी करम डोर काठी बंधी 1
269. माधोजी भक्त कोण विध धारूं 3
270. मात पिता सुत बन्धु तेरा 125
271. माया है रे या तो माया है 138
272. मैं तुज बुझू रे प्राणियां 88

273. मैं तो अेक शब्द सत लिया 254
274. मैं देता हूं हेला जुग के मांय 205
275. मैं बहुत दुखी जग मांय 96
276. मैं बिगडिया हूं राम दुवाई 263
277. मैं मल सूं करतार का 91
278. मेरे आंणद अनन्त सुख उपज्यो हो 197
279. मेरे प्रीतम कब मिले हो 200
280. मेरे मन की दुबध्या मेटो 76
281. मेरे लागी हो ऊर शब्द भाल 233
282. मो बल कर्म न जावे प्रभुजी 72
283. मोख भजन बिना नांही रे 96
284. या जग में तो रे बंदा वे बडभागी 118
285. या पारख बिन भरम न तुटो 120
286. रंग मैं खेलूं रमैया सूं होली 261
287. राजा अेसा भेख हमारा 218
288. राजा सो मन 71
289. राजा है ऐसा जन कोई 210
290. राम कथे ओऊं मथे रे 106
291. राम कहत सम तिरिया हो 98
292. राम तेरी दाय पडे ज्यूं किजे 54
293. राम मिल्या बिन हरिजन दुखिया 87
294. रे अवधू सो बालक हम पाया 44
295. रे मन समझ केवल ध्याय रे 132
296. रे मन हर सूं डरप 68
297. वा कल तो पावे नहीं 94
298. वारी वारी आया हंसा काज 13
299. वारी वारी पोढो राम दियाल 224
300. वा विध सब सूं न्यारी 76
301. विषे मनोरथ थक गया 90
302. वे जन जीता ताकूं भारी 121
303. वे जन जुग कूं तारसी हो 205
304. वे मिलज्यो हरिजन आंणी हो 236
305. वो दिन को कब आसी हो 235
306. वो दिन को कब ऊगे हो 238
307. वो सुण भेद नियारो सब सूं 73
308. शब्द चेतन देह चमके 225
309. शिमरथ मैं तेरा शरणा लिया 52
310. सत की बात न मेलो हो साधो 250
311. सतगुरू चरण बंदो मेरे प्राणी 86
312. सतगुरू तारेगा मुझ आंण 19
313. सतगुरू भेव बताविया 184
314. सतगुरू मेहमा किजे हो 236
315. सतगुरूसा कोई सेण न देख्या 119
316. सतगुरां औषध पाई लाय 22
317. संत सुणज्यो हो सतशब्द विचार 228
318. सब भरम छाड दइजे रे 239
319. सब विध सारण काम 261
320. सब सुं निरसा होय 69
321. समझ समझ प्राणियां जो मोख 112
322. समझ समझ हंसा सन्मुख रेणा 115
323. समझो हो नर समझ नार 233
324. समरथ साहेब नित भजो ये 242
325. सरब दुखी लो सरब दुखी लो 114
326. संतो अगम गेल गत न्यारी 242
327. संतो अरथ करे सो पूरा 213
328. संतो अे अगवाणी आविया हो 198
329. संता अेसा महल बणाया 4
330. संतो अेसा भेव संभावो 212
331. संतो इण मन कूं क्या किजे 63
332. संतो केवल मत तो न्यारी 171
333. संता कहयां पत नही आवे 77
334. संतो काल सिर भारी है 223
335. संतो खेती जतन अे भेवा 86
336. संता ज्ञान अरथ गम भारी रे 210
337. संतो गुरू भक्ता नही कोई 213
338. संतो चौथे पद नहीं जावे 49
339. संतो त्यागन भेव बताऊं 250
340. संतो वो सुण कारण नांही 173
341. संता देख्या इचरज भारी 78
342. संतो वाद करे सो झूंठा 56

343. संता भजलो केवल राम 60
344. संतो भाई अे क्यों मोख न जावे 85
345. संतो भाई अेसा नाम कहावे 55
346. संतो भाई करो हो केसरिया आई 222
347. संतो भाई गृहस्थ भेव बताऊं 251
348. संतो भाई नाम गहो तत सार 19
349. संतो भाई बिणस्या सोच न किजे 50
350. संतो भाई भेव मिल्या गम आवे 226
351. संतो भाई सुणज्यो भेद विचारा 81
352. संतो भाई सो जन भक्त कमावे 252
353. संतो भाई सो सत सूर बखाण 223
354. संतो भाई अे क्यों मोख न जावे 227
355. संतो भेद वेद सुं न्यारा 83
356. संतो मैं अेसा सतगुरू चाहूं 211
357. संतो मैं तो करम अभागी 61
358. संतो ओ जुग बडो अज्ञानी 28
359. संतो यो दुख किण सूं कहिये 221
360. संता राम ऊथापे झूंठा 62
361. संतो सतशब्द सो न्यारा 85
362. संतो सुणो भेष भूलो जाय 23
363. संईयां खेलो फाग होरी आई 240
364. संईयां सतगुरांजी रे जास्यां ये 262
365. साधो भाई आनन्द पद गुरू होई 216
366. साधो भाई करडू परत न सीजे 5
367. साधो भाई तत्त कल लेहो विचारी 10
368. साधो भाई तन धर त्यागी नांही 7
369. साधो भाई त्याग दिया हम सोई 8
370. साधो भाई तीरथ तो सब किया 9
371. साधो भाई धिन जिण चोला किया 57
372. साधो भाई भेद बिना जग डोले 12
373. साधो भाई राम भजन बिन झूंठा 10
374. साधो भाई समझ सोच रहो गाढा 6
375. साधो भाई मैं तो शिष उकरडी किया 9
376. साधो मत मेरा जन्म गमावो 58
377. साधो म्हारे आंणद भयो घर मांही 57
378. साधो हमने सतगुरू मोरथ दिया 7
379. साहेबजी सुं डरिये मन रे 71
380. सुच धरणी अप सुच 66
381. सुण ज्ञानी वचन हमारा रे 217
382. सुणज्यो अरज हमारी प्रभुजी 72
383. सुणज्यो बाबा कलजुग बरत्यो आय 15
384. सुणज्यो सब नर आय के रे 102
385. सुणज्यो सब नर नार 66
386. सुण लिज्यो लो सुण लिज्यो लो 125
387. सुण लिज्यो लो सुण लिज्यो लो 135
388. सुणो भाई संतो मैं ज्ञान दूं 181
389. सुणो शिष अेसा कलजुग आसी 53
390. सुणो सब या बांता किम पावे 51
391. सुणो सरब जुग मैं हेला दिया 59
392. सुन्न में खेलूं सायब संग होरी 241
393. सुर जाणे लो सुर जाणे लो 126
394. हर कूं सोजो या तन मांही 202
395. हर को नांव न जांणिये हो 202
396. हर खांवद है लो हर खांवद है लो 111
397. हर गुरू दोय न जांणे हो 249
398. हर सूं हूं मिलियो चाहिये 186
399. हरि को भेद नियारो रे 240
400. हरि को भेद नियारो रे 104
401. हरिजन को किम जांणिये हो 206
402. हरिजन सूरा हरिजन सूरा 129
403. हरिजन सो इम जांणिये हो 207
404. हरिजन हरि गुण गावे हो 100
405. हंस चल्या घर आपणे 92
406. हंसा छोडोनी जग को नेह 68
407. हाथी है झूंठो है झूंठो 95
408. हेला दे दे संत पुकारे 122
409. हो ज्यां परम पद तत दिया हो 234
410. हे तूं तो बाबल मुझ परणावो हो 177
411. त्रिकुटी महल अनुपा हो 239

卐 ब्रह्म स्तुति 卐

नमों नांव गुण पार, पार तेरा कुण पावे । नमों गत अवगत, नमों तु भेव बतावे ॥ १ ॥

ब्रह्म को नमस्कार नमस्कार है। जिसके नांव के गुणो का पार नहीं है, आपका पार कौन पा सकता है, आपकी गती अवगत है, आप ही उसका भेद बताते है।

नमों पाप खोगाल, नमों परमेश्वर प्यारा। नमों नांव बिन छेह, नमों बिडद सिर भारा ॥ २ ॥

नमस्कार है उस ब्रह्म को जो पाप का नाश करने वाले है। वह परमेश्वर सबको प्यारा है। उसके नांव का छेह नहीं है। समस्त प्राणी मात्र की रक्षा करने के बिडद का भार उस पर है।

नमों नेट श्रीराम, नमों नारायण नीका। नमों करण करतार, नमों केवल हर टीका ॥ ३ ॥

नमस्कार है श्रीराम को आप ही नारायण है आप ही सब करने वाले है व श्रृष्टी करता है। केवल परमात्मा सर्वोपरि है।

नमों नांव निसाण, नमों सब तुज सरावे। नमों निरंजन राय, नमों संतन मन भावे ॥ ४ ॥

आप का नांव निसाण की तरह है सब आपकी सराहना करते है। हे निरंजण निराकर ब्रह्म आप संतो को श्रेष्ठ लगते है।

नमों आप सेह जीत, नमों तु ही तु होई। नमों धरण आकाश, तुज बिन और न कोई ॥ ५ ॥

समस्त जीवों का आधार आप है। सब जगह आप ही आप है। पृथ्वी से लेकर आकाश तक आपके सिवाय और कुछ नहीं है।

नमों नांव निरधार, नमों टेके बिन करता। नमों पुरातम पीव, नमों केवल मन हरता ॥ ६ ॥

आपका नांव निराधार है। बिना किसी आधार के श्रृष्टी की रचना की है। आप आदि अनादि से केवल राम सबके मन को हरने वाले है।

नमों हरि हर राम, नमों संतन सुख दाई। नमों जहां तहां तुज, शकल घट रहया समाई ॥ ७ ॥

हे ब्रह्म परमात्मा आप ही हरी है, हर है, राम है। आप सब संतो को सुख देने वाले हैं। आप सब घटो में समायें हुये है। व सब जगह ब्रह्म ही ब्रह्म है।

नमों बिदुसन भरम, नमों सब करम मिटावण।
नमों तात प्रतिपाल, नमों भों मांय लंघावण ॥ ८ ॥

सब भरमों का व करमों का नाश करने वाले आप हैं। हे प्रतिपाल करने वाले पिता आप को नमस्कार है। आप भवसागर से पार लगाने वाले है।

नमों आस असमान, नमों हर अंतरजामी। नमों संतन सब शीष, नमों केवल हर स्वामी ॥ ९ ॥

आसमान तक सब आपकी आशा लगाये हुये हैं। आप सबके अंतरयामी है। सभी संतो के शिश पर आप ने: अक्षर के रूप में विराजमान है। हे केवल हर स्वामी आपको नमस्कार है।

नमों मेहर जगदीश, नमों हर गरभ अहारी। नमों पलक दरयाव, नमों सब मांड पसारी ॥ १० ॥

हे जगदीश्वर परमात्मा आपकी सब पर मेहर है। गर्भ के अन्दर आहार पहुंचाने वाले आप हैं। आप एक पल में समुन्द्र भर सकते हैं। सारी मांड में आपका पसारा है।

नमों निरंतर मांय, नमों सायब हर सांचा। नमों अलख हर आप, नमों त्यारण हर वाचा ॥११ ॥

हे सिरजण हार आप आत्मा रूप से सब में व सच्चे सायब ईश्वर है। आपकी गती लखने में नहीं आती, वचनो से सबका उद्धार करने वाले है।

नमों रूप अण रूप, रूप तेरा सब होई। नमों ध्यान निज धाम, नमों केवल हर सोई ॥ १२ ॥

आपका कोई रूप नहीं है। सब ही रूप आपके है। ध्यान करने वाले आपके निज धाम का ध्यान करते है। आप ही केवल हर है।

नमों नमों गुरूदेव, नमों मुगती गत दाता। नमों ब्रह्म निरधार, नमों सुख शरण विधाता ॥ १३ ॥

आप सबके गुरूदेव बैकुण्ठ व स्वर्ग के देने वाले है। बिना आधार के ब्रह्म है। शरण में आने वाले को सुख देने वाले है।

नमों निरंजन राय, नमों आकाश बिन पाणी। नमों देव शिर देव, नमों जुग जुग जुगाणी ॥ १४ ॥

आप ही निरंजन निराकार है, आकाश व पानी में सब जगह आप है आप सब देवो के देव है। असंख जुगो से आपका ही आधार है, असंख जुगो से यह बह्माण्ड आपका आधार लिये हुये है।

नमों राम पर पीर, नमों रमता सब मांही। नमों आप करतार, नमों केवल हर कवाही ॥ १५ ॥

आप दूसरों के कष्ट हरने वाले है, सब में रमने वाले है। आप ही श्रृष्टी करता व आप ही केवल हर कहाते है।

नमों निरंजण देव, नमों पूरण अविनाशी। नमों ब्रह्म परिब्रह्म, नमों हरि घट घट वासी ॥ १६ ॥

आप निरंजण देव पूरण व अविनाशी है, आप ही ब्रह्म पारब्रह्म व घट घट में वास करने वाले है।

नमों अचल अद्वेत, भेद जन बिरला पावे। नमों असंगी संग, रंग बिन रंग दिखावे ॥ १७ ॥

आप अचल अद्वेत है, आपका भेद बिरले ही भक्ति करने वाले पाते है, आप सबके साथ व सबसे अलग है बिना रंग के रंग बताते है।

सुखरामदास वन्दन करे, नमों ब्रह्म भगवान। आत्म तत अरूप है, पूरण पद निरवाण ॥ १८ ॥

हे ब्रह्म भगवान मैं आपको प्रणाम करता हूं। आत्म तत का कोई रूप नहीं हैं। आत्मा को पूरण पद की प्राप्ति कराने वाले आप ही हो।

नमों नमों परब्रह्म, अचल निज नांव अरूपं। नमों अखै अद्वैत, परम गुरू सत सरूपं ॥ १९ ॥

हे पारब्रह्म आपका पद अचल अरूप अक्षय अद्वैत व सत स्वरूप निज नाम है।

नमों ब्रह्म अनाद, आद अगाद गुसांई। तीन लोक चहुं चख, शकल व्यापक हर सांई ॥ २० ॥

हे ब्रह्म आप आदि अनादि से सब के स्वामी है। तीन लोक में चारों तरफ सर्वत्र आप ही व्यापक है।

नमों नमों सब मांय, नमों सब ही सु न्यारा।
नमों प्रगट नहीं गुप्त, छीपत नहीं लिपत लिगारा ॥ २१ ॥

आप सबमें व सबसे अलग है, आप प्रगट है, गुप्त नहीं, आप लेश मात्र भी नहीं छिपते है।

नमों नमों निरबाण पद, निजानंद निश्चल पदा।
सुखरामदास वंदन करे, चरणकंवल बंदु सदा ॥ २२ ॥

आपके निर्वाण पद को नमस्कार है। वो पद निश्चल है । खास आनन्द दिलाने वाले आप है। म.फ. हैं कि मैं आपके चरण कमल की वन्दना सदा ही करता हूं।

श्लोक : धर्मो न कर्मो ग्यानों न तांई, नहीं बाप मैया बैना न भाई ।
दिष्टो न मुष्टो नामो न ठांणा, कहे इम सुखम ब्रह्म बखाणा ॥ २३ ॥

आप धरम से करम से ग्यान से परे है। आपके मां बाप बहन व भाई नहीं है। आप न दृष्टि में न मुट्ठी में आते है। न आपका कोई मुकाम है। म.फ. है कि ऐसा ब्रह्म का बखाण है।

जातो न पांतो न्यातो न मेला, नहीं धूप रूपंग संगी न अकेला।
आबो न जाबो केबो न कांई, कहे इम सुखम ब्रह्म गुसांई॥ २४॥

आपकी न जाति न पाती न धूप न रूप न किसी के साथ न अकेले आते है न जाते है। कैसे कहा जाये कि बह्म ऐसा है।

छोटो न मोटो फोरो न भारी, नहीं कहण कीमत थाह बिचारी।
जन्मयो न जननी बंधु न मेला, कहे इम सुखम ब्रह्म अकेला ॥ २५ ॥

ब्रह्म न छोटा न मोटा न हल्का न भारी कहने में नहीं आता न विचारों से थाह आता है। न जन्मा न माता न बन्धुओं का मेला है। म.फ. है ऐसे ब्रह्म अकेला है।

घी साव पुष्पंग जल मीन पंथो, उडे बिंहग भंवरा कहा गेल संतो।
सेजास सुखम सो जीव जाणे, यूं ब्रह्म सुखम कोई संत पिछाणे॥ २६ ॥

घी के प्रसाद का स्वाद पुष्प की गंध जल में मछी का रास्ता आकाश मे उडने वाले पक्षी व भंवरो का रास्ता कैसा है। सेज के सुख को भोगने वाला जीव ही जानता है। ऐसे ही ब्रह्म के पद की प्राप्ति का सुख कोई संत ही जानते है।

॥ इति ब्रह्म स्तुति सम्पूर्ण ॥

卐 गुरु महिमा का अंग 卐

नमों नमों गुरूदेव, परम निज भेव बताया। निर्गुण ज्ञान विचार, हंस परम हंस कुवाया॥
नमों नमों गुरूदेव, समुद्र में डुबत तारया। नमों नमों गुरूदेव, बांहा गहे पार ऊतारया॥
नमों नमों गुरूदेव, ग्यान मोही निर्भय दिया। नमों नमों गुरूदेव, तिमिर मन का हर लिया॥
जन सुखिया गुरूदेव जी, शिष के तारणहार। भवसागर में तारज्यों, लिज्यों बांह पसार ॥ १ ॥

गुरू महाराज से नमस्कार कर प्रार्थना कर रहे हैं कि अपने परम निज भेव याने परमात्मा का खास स्वरूप आनन्द पद का भेद बताया है। आपने बताया आत्मा ब्रह्म, परमात्मा ब्रह्म, ने: अक्षर ब्रह्म। यह निर्गुण को ज्ञान से समझाया तब यह हंसवृति आत्मा परमहंस कहलायी। यही सनातन धर्म है। सतगुरू से बार बार प्रार्थना करते है कि संसार रूपी समुद्र में याने जन्म मरण में जीव भाव से आता जाता था, उसको के: पद आ: पद का ग्यान देकर जन्म मरण से रहित कर दिया यही बांह गेह पार उतारना है। आपने निर्भय पद का ग्यान देकर भय रहित कर दिया मन को अग्यान अवस्था के अंधकार से रहित कर दिया याने मिटा दिया। म:फ: है कि सतगुरू शिष्य का उद्धार करने वाले है। इस संसार रूपी समुद्र से पार करना ही तारना है व बांह पकड कर पार करना है।

गुरू देवन के देव, सेव किज्यो सब कोई। गुरू जीवां की जहाज,
गुरां बिन मुक्त न होई। ब्रह्मा विष्णु महेश, गुरां को शीष निवाये।
राम कृष्ण अवतार, गुरां से मोक्ष सिधाये। सुखरामदास गुरूदेव का,

कहां लग करूं बखाण। अथंग अथाह अपार है, गुरू दरियाव समान ॥ २ ॥

सदगुरू जी देवों के देव हैं। सब ही उनकी सेवा करो यानि ज्ञान धारण करो। सदगुरू जी जीवों को भवसागर से पार कराने वाले है। बिना गुरू के मुक्ति नही होती। ऐसे गुरू को ब्रह्मा विष्णु महादेव जी शीश नवाते हैं। राम कृष्ण अवतार भी ऐसे गुरू से मोक्ष में सिधाये। म.फ. हैं कि गुरूदेव की महिमा का कहां तक बखाण करूं। वो अथंग, अपार है उसका पार नहीं हैं। गुरू समुद्र के समान है।

बिन जल मिटे न प्यास, शीत अम्बर बिन सोई। भोजन बिन परसाद,
भुख जुग जाय न लोई। कन्चन कसन सोनार, हार तागा बिन राखे।
जुग हुन्नर सब काम, बात सुणिया बिन भाखे। शील सांच सन्तोष,
ज्ञान बिन भरम न जावे। जन सुखिया बिन सूर, तिमर कहो कौन मिटावे ॥ ३ ॥

जल के बिना प्यास नहीं मिटती है। शीत याने ठण्ड अम्बर याने ओढे बिना नहीं जाती। अन्न का प्रसाद किये बिना संसारियों की भूख नहीं जाती। सुनार सोने का तार खींच कर बिना तागे के हार बना देता है, जगत के हुन्नर व काम है, उसको सुने बिना नहीं कह सकते। शील सांच सन्तोष व ग्यान के बिना भरम नहीं जाते। म:फ: है सूर्य के बिना अन्धेरे को कौन मिटा सकता है।

सतगुरू बिना न मोक्ष, भूप बिन पटा न देवे। बादशाह बिन हुक्म
जगत की खबर न लेवे। समुद्र न ऊतरयो जाय, नाव काष्ट बिन सोई।
हीरा रत्न सर माही, भेद मरजीवा होई ॥ पारस बिन बोहो पाहाण,
लोहे कूं आंण लगावे। जन सुखिया सतगुरू बिना, जीव मोख नहीं जावे ॥ ४ ॥

सतगरू अणभै वाणी बनाने वाले केवली भगवंत के बिना सतशब्द की जागृति नहीं होती तो ने: अंच्छर के बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती, राजा के बिना पटा कोई नहीं देता, बादशाह के हुक्म के बिना जगत की कोई खबर नहीं लेता, लकडी की नाव बिना समुद्र पार नहीं किया जाता। समुद्र में हीरा व रत्न है उसका भेद मरजीवा जानते है ऐसे ही जो संत सतगुरू सतशब्द की भक्ति करते व अणभै ग्रंथ बनाते है, उनको मरजीवा कहा है। पारस के बिना दूसरा पत्थर चाहे हीरा हो लोहे को चाहे जितना लगावो, सोना नहीं बनता। म:फ: कि ऐसे ही सतगुरू के बिना जीव कोई मोक्ष में नही जाता।

गुरू केशो करतार, गुरू गत अकथ कहाणी। शिव सनकादिक शेष,
विष्णु बोले मुख बाणी॥ लख चोरासी जूण जाय, भूगतो तुम सोई।
गुरू निंधा को पाप, तोहि ऊतरे नहीं कोई॥ सिख सतगुरू सुं आ कियो,
गुरां दिनों भेद बताय। चौरासी सुखराम कहे, बाता सटे गमाय ॥ ५ ॥

सतगुरू ही परमात्मा व श्रृष्टि करता के समान ही सतगुरू की गती अकथ है। यह कहने में नहीं आती है शिवजी सनकादिक ऋषि शेषजी व विष्णु भगवान भी गुरूपद की महिमा करते है। नारद जी ने गुरू नहीं किया था। विष्णु भगवान के कहने पर कालूजी धीवर को गुरू बनाया था। फिर गुरू की जय नहीं बोलने से विष्णु भगवान ने नारद जी को चोरासी भोगने को कहा। तुमने गुरू की निन्दा की है यह पाप चौरासी लाख योनी भोगे बिना नहीं ऊतर सकता। नारदजी ने गुरूजी कालूजी धीवर से जाकर कहा तो कालूजी ने नारदजी को चोरासी से छूटने का भेद याने उपाय बता दिया। म:फ: है कि गुरू कृपा से चोरासी की सजा को बातों ही में काट दिया यो गंवा दिया।

कालू सा गुरूदेव, शिष नारद सा कहिये। गुरू बिन मुक्त न होय,
भेद बिन मोक्ष न लहिये॥ वाष्ट मुनि पे आय, राम बुज्यो तत सोही।
जीव मोख किम जाय, ताहि गत कहिये मोही॥ जन सुखिया वाष्ट कही,
रामचन्द्र सुण कान। ईडा पिंगला सुखमणा, ब्रह्म मिलण रो ध्यान ॥ ६॥

कालूजी धीवर जैसे गुरू व नारदजी जैसे शिष्य थे। गुरू ग्यान के बिना मुक्ति नहीं होती सतगुरू याने केवलग्यान से भेद मिले बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। वशिष्ठ मुनि के पास जाकर रामचन्द्र जी ने पूछा जीवों को मोक्ष प्राप्ति कैसे होती है उसकी गति याने भेद मुझ से कहिये। म:फ: है कि वशिष्ठ जी ने कहा कि हे रामचन्द्र जी सुणो इडा पिंगला से होकर सुखमणा में ध्यान लगने से ही ब्रह्म पद की प्राप्ति होती है।

राम किया गुरूदेव, कृष्ण शरणागत आया। गोरख समरथ जांण
गुरां बिन नांय कहाया॥ तीन देव को अंश, दत्त बोले सत बानी।
गुरू धारण चौबीस, सुख महिमा गुरू जानी॥ गुरू सम जग में को नहीं,
देव विष्णु अवतार। जन सुखिया गुरूदेव के, शरणे रहो विचार ॥ ७॥

रामचन्द्र ने वशिष्ठ जी को गुरू किया। कृष्णचन्द्र जी दुर्वासा के शरण में गये। गोरखनाथ जी भी जलंधरनाथजी गुरू से ही समरथ शक्तिशाली हुवे। तीन देव याने ब्रह्मा विष्णु महादेवजी के अंश से पैदा हुये दतात्रेयजी भी सच कहते है। दतात्रैय जी ने चौबीस गुरू किये थे। वेदव्यासजी के लडके सुखदेवजी ने भी गुरू की महिमा को जाना था। म:फ: है कि जगत में सतगुरू केवली भगवंतो के समान देवता विष्णु अवतार भी नहीं है। ऐसा विचार कर सतगुरू की शरण रहो।

शुकदेव जती बखाण, गुरां बिन भेद न आयो। जनक विदेह गुरू भेद,
तत्त सुं तत्त मिलायो। ऐसा समरथ जांण, आंण हम शरणा लिया।
जुगन जुगन की गेल, पलक मे पेंडा किया॥ सतगुरू बिरमदासजी,
जनक विदेह परमाण। जन सुखिया अमरीष सा, जयदेव दया बखाण ॥ ८॥

वेदव्यास जी के लडके शुकदेव जी बालब्रह्मचारी व जती थे। उनको भी गुरू के बिना भेद नहीं मिला। राजा जनक ने गुरूपद का भेद देकर आत्म तत को परमात्मा पद की प्राप्ति करा दी। इस तरह सतगुरू को समरथ जाण कर उनकी शरण ली। अनेक जुगो से आत्मा परमात्मा से बिछुड रही थी। उसको एक पल में ही परमात्मा तत्त की प्राप्ति करा दी। म:फ: है कि सतगुरू बिरमदासजी राजा जनक विदेही की बराबर व राजा अमरीष जैसे अनन्य भक्त व दया में जयदेवजी जैसे है।

सतगुरू सता समाध, जाय ब्रह्मण्ड घर किया। परमारथ के काज,
देहे जुग वासा लिया॥ बडभागी सो जीव, शरण सतगुरू की आवे।
काग पलट हंस होय, कीट सु भृंग कहावे॥ जन सुखिया गुरू देव की,
महिमा कही न जाय। आप सरिसा कर लिया, शिष कूं चरण लगाय ॥ ९॥

सतगुरू विधि से भजन करने से सता समाध यानि अखण्ड रहने वाली समाधि ब्रह्मण्ड में लगी रहती है। जीवों का परमारथ यानि उद्धार करने के लिये नित्य अवतार शरीर लेकर जगत में आते हैं। वही जीव भाग्यशाली है जो सतगुरू केवली भगवंतो की शरण लेने पर कौवे से हंस व कीडे से भंवरा हो जाता है। म:फ: है कि सतगुरू की महिमा कहने में नहीं आती। सतगुरू ने शिष्य को

चरण कमलों की शरण देकर आप जैसा बना दिया है।

गुरूशीष का दातार, मोही ऐसा धन दिया। ग्यान ध्यान विवेक,
बुद्धि दे निरमल किया॥ वायक वचन विचार, हाल गुरूचाल सिखाई।
दीन गरीबी प्रेम, भाव सो दया पठाई॥ अकल अरथ सुनमान,
शब्द वाणी सिर गाजे, जन सुखिया गुरूदेव, शीष पर अेसा निवाजे ॥ १०॥

सतगुरू केवली भगवंत ऐसे दातार है, शिष्य को ऐसा धन देते है जो कभी नहीं खुटता है। सतगुरू ने ग्यान ध्यान विवेक बुद्धि देकर निर्मल कर दिया है। वचनों को विचार कर बोलना व जगत में कैसा व्यवहार करना व कैसे रहना यह ग्यान गुरू ने सिखाया है। प्रेम भाव से भजन करना व दीन गरीबी धारण कर सब जीवों पर दया करना यह सतगुरू ने सिखाया है। अकल से अर्थ को समझाना व गुरूदेव के वचनों द्वारा बताये हुये ग्यान को धारण करने से सतशब्द शिर के ऊपर गरजना करता है याने अनुभव होता है। म:फ: है कि सतगुरू शिष पर ऐसी कृपा करने वाले है।

भक्ति भाव भगवान, तत्त गुरू माही लखाया। खण्ड ब्रह्मण्ड का भेद,
सोज गुरूशरणे आया॥ मत चित्त समता सांच, शरण अेसी विध पाई।
शकल अंग शिर पांव, भक्ति गुरूदेव पठाई॥ अेसो कर उपकार शिख
को प्रकट कियो। जन सुखिया गुरूदेव, राज नवखण्ड शिर दियो॥ ११॥

सतगुरू केवली भगवंतो ने भाव से भक्ति करना बता कर तत याने ब्रह्म का घट में अनुभव करा दिया सतगुरू के अणभै ग्यान की शरण लेने से जो खण्ड में है वही ब्रह्मण्ड में है इसका ग्यान हुआ। सतगुरू की शरण लेने से ही बुद्धि में, चित में शान्ति व सत्य की प्राप्ति हो गई। सारे शरीर में पांव से लेकर सिर तक सब अंगो से भक्ति सतगरू विधी से भजन करने से होने लग गई। सतगुरू ने ऐसा उपकार कर शिष्य को भक्ति में लगा दिया। म:फ: है कि गुरूदेव ने कृपा कर शिष्य को नवखण्ड के सिर पर राज दे दिया यानि उस पद की प्राप्ति करा दी है उसकी प्राप्ति होने पर जन्म मरण में नहीं आता यही राज नवखण्ड शिर देना है।

सदगुरू बड दातार, ताहि जोडे नहीं कोई। प्रसन्न होय गुरूदेव,
दत बगसे नित सोई॥ धन देवे अनतोल, मोल सो तोल न आवे।
दुख दालद सब जाय, खात छेडो नहीं पावे॥ अमरलोक शासन दियो,
रिद्धि सिद्धि दी बोहो लार। जन सुखिया गुरूदेव जी, अेसा बड दातार ॥ १२॥

अणभै वाणी बनाने वाले सतगुरू ऐसे बडे दातार है। जगत में उनकी बराबरी में कोई नहीं है। जब गुरूदेव प्रसन्न होते है तो ऐसी चीज बगसते है सो कभी नहीं खुटती। ऐसा अपार धन देते है जिसका मोल व तोल नहीं होता उस धन के प्राप्त होने से दुख व दरिद्रता सभी चली जाती है। खूब खरचने पर भी धन का पार नहीं आता। अनन्त रिद्धि सिद्धि देकर अमरलोक शासन दियो याने आनन्द पद की प्राप्ति हो गई याने करा दी। उस पद की प्राप्ति होने पर जन्म मरण में नहीं आता। म:फ: है कि सतगुरू ऐसे बडे दातार याने देने वाले है।

चमक चोक मणी लाय, खाल लोहा सब गाल्या। सोगी सोनो सोज,
फूस नारया पर जाल्या॥ नाड पकड गहे हाथ, दर्द अपने मन लिया।
औषध मुली बांट, आण रोगी मुख दिया॥ कसर कोर गुरू सोज,

रोग की जडा कढाई। जन सुखिया गुरूदेव, वैद पर वैदज भाई ॥ १३ ॥

चौक में मणी रखने पर प्रकाश होता है। इसी तरह हृदय रूपी चौक में ग्यान रूपी मणी से प्रकाश होता है। बकरी की खाल से सब लोहा गल जाता है, इसी तरह सांस ऊसांस रूपी धवण लगाने से भरमो व करमों का नाश हो जाता है। सोगी डालने से सोना गलता है। ऐसे ही भजन से सारे करम गल जाते है। फुस यानि कचरे से न्यारधर धातु अलग कर देता है। इसी तरह भजन से शब्द अलग प्रकट होता है। सतगुरू ने नाडी हाथ में पकड रोगी के दर्द को जान लिया है कि जीव को जन्म मरण का रोग लग रहा है। ऐसी ग्यान रूपी औषधी जडी बुटी लाकर रोगी के मुख में दी, जितनी भी रोगी में कसर कोर थी उन सबको निकाल कर जन्म मरण के रोग को जड़ से समाप्त कर दिया। म:फ: है कि सतगुरू सब वैद्यों में वैद्य है।

अमृत सायर सीप, मांहि कण मोती लहिये। गंगा यमुना मध्य,
और तीरथ सब कहिये॥ धातु वस्तु सब होय, जोय सारी गेह लावे।
ईन्द्रलोक स्थान, ताहि शिर बिध बणावे॥ अेता सब अरपण करे,
सुर नर सुख समोय। जन सुखिया गुरूदेव सूं, सिख ऊरण नहीं होय ॥ १४॥

समुद्र के अन्दर अमृत सीप व मोती के कण है उन सबको लेकर सतगुरू केवली भगवंतो को भेंट कर दो। गंगा व यमुना के बीच जितने तीर्थ स्थान है उन सबको तीर्थो की यात्रा के फल को भेंट कर दे। धातु से बनी सब वस्तु को देखकर ले आवें। राजा इन्द्र के स्थान से ऊपर रहने की विधि बना ले। देवताओं व मनुष्यों के जितने भी सुख साधन है उन सबको सतगुरू को भेंट कर दे तो भी शिष्य गुरूदेव से ऊऋण नहीं हो सकता।

बन में चन्दन रूख, बाग में गुल्ल बिराजे। अष्ट धातु में हेम,
रत्न में हीरा छाजे॥ ज्यु गोपियां में कान, सभापति इन्द्र कहिये।
नदियां में ज्यों गंग, धाम में पुष्कर लहिये॥ सती नगर मध मांय,
रैण तारा शशि छाजे। जन सुखिया गुरू बीरम, सभा में ईस्या बिराजे ॥ १५॥

बन में चन्दन का वृक्ष शोभा देता है। बगीचे में फूल शोभा देते है। आठ धातु में सोना व रत्नों में हीरा शोभा देता है। गोपियों में कृष्ण शोभायमान है। देवताओं की सभा में इन्द्र सबसे ऊपर है सब नदियों में गंगा जी सबसे श्रेष्ठ है। सब धामों में पुष्कर सब तीर्थों का गुरू है। नगर में सती स्त्री ही सबसे श्रेष्ठ है। रात्रि में तारों के मध्य चन्द्रमा शोभा देते है। ऐसे ही म.फ. हैं कि मेरे गुरू बीरमदास जी संतों में सबसे श्रेष्ठ हैं।

गुरू दीर्घ द्रगपाल, मत सुखदेव बखाणो। पृथु प्राक्रम मांही,
ध्यान ध्रुव ज्यों थिर जांणो॥ समता श्याम समान, प्रेम में पदम सरिसा।
दाता कर्ण सधीर, ग्यान ऊजियागर ईसा॥ गहरा बहोत गम्भीर ब्रह्म
ज्यों थाह न आवे। जन सुखिया गुरूदेव, ताहि गत बिरला पावें॥ १६॥

केवली भगवंत सतगुरूदेव दृगपालो की तरह ज्ञान में सबसे बडे है उनकी मती याने बुद्धि वेदव्यासजी के लडके सुखदेव जी जैसी है, प्राक्रम में राजा पृथु के समान है, ध्यान करने में ध्रुव जी की तरह स्थिर है, धैर्य रखने में विष्णु के समान है, प्रेम करने में पदम प्रभू के बराबर है, दानियों में कर्ण के बराबर है, ग्यान में ईसा पैगम्बर के समान ऊजियागर है याने श्रेष्ठ है। ईसा पैगम्बर ऐसे

शक्तिशाली थे उनको सब ईश्वरता प्राप्त थी। उनकी प्रार्थना करने पर उन्होने कहा मेरी प्रार्थना करने के बजाय परमात्मा का नाम लेते तो तुम्हे कुछ मिलता मेरे जितने कितने हो गये व होवेगें। ब्रह्म की तरह बहुत गम्भीर है। कोई थाह नहीं पाता है। म:फ: है कि सतगुरू की गति को बिरले ही जान पाते है।

रूखमांगज अमरीष, सैन गोतम रिख जानो। वाष्ट शंकर शेष,
कपील सी सोज बखाणो॥ वाल्मीक सी बुध, चित परिक्षीत सो कहिये।
अगस्त रूम ऋषि जांण, ताहि गुरू समरथ लहिये॥ वीर विक्रमा सरिसा,
पर उपकारी प्राण। सतगुरू बिरमदास जी, सुखिया है सम जांण॥ १७॥

सतगुरूदेव केवली भगवंत की सेन राजा रूखमांगंद व अमरीष तथा गौतम ऋषि के समान है। वशिष्ठ मुनि शंकर जी शेष जी कपिल मुनि की तरह साधना करने वाले है। महर्षी वाल्मिकी जैसी बुद्धि है। चित राजा परिक्षीत जैसा है अगस्त मुनि व लोमेश ऋषि से भी सतगुरू ज्यादा समरथ है। वीरता में राजा विक्रम के समान परोपकारी है। म:फ: है कि सतगुरू बिरमदासजी इन सबके बराबर है।

पाहडा मज सुमेर, पंख में गरूड कहिये। नरन में ज्यूं भूप,
फोज में घेवर लहिये॥ देही में ज्यों नाक, देव मज अन्न बखाणो।
भोजन में पकवान, महल में दीपक जांणो।। कश्यप सुत जब ऊगिया,
मंड उजाला होय। यूं सभा में सुखराम कह, सदगुरू बिरम जोय ॥ १८॥

पहाडो में सुमेर पर्वत व पक्षियों में गरूडजी की तरह, मनुष्य में राजा की तरह, फौज में हाथी की तरह, शरीर में नाक की तरह, देवताओं में अन्न देवता की तरह, भोजन में पकवान की तरह, महल में दीपक की तरह है। कश्यपजी के पुत्र सूर्यनारायण उदय होते है। जब सारे जगत में प्रकाश हो जाता है। म:फ: है कि मेरे गुरू बिरमदास जी सभा में इस प्रकार सुशोभित हो रहे है।

गुरू ज्यों ब्रह्म स्वरूप, ताहि में फेर न कोई। सता समाधी प्राण,
बेण ब्रह्मा सा होई॥ शीतल विष्णु समान, सांच पाण्डव सुत जांणो।
कला कृष्ण कबीर, ग्यान गोरख बखाणो॥ जन सुखिया गुरू देवजी
मेरे इनन समान। बिरमदास गुरूदेव पर वारू वेद कुरान ॥ १९॥

सतगुरू ब्रह्म के समान है। इसमें किसी तरह का फेर सार यानि झूंठ सांच नही है। सता समाधि के प्राण है। इनके वचन ब्रह्मा जी की तरह है। विष्णु के समान शीतल है। सत्य बोलने में राजा युधिष्ठर धर्मराज की तरह है। कला में कृष्ण जो सौलह कला लेकर के आये, कबीर के पास सत की कला थी, और ज्ञान में गौरख नाथ जी के समान है म.फ. है कि मेरे गुरू बीरमदास जी इनके समान है। बीरमदास जी से मुझे समस्त शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त हुआ।

तारण तिरण गुरूदेव, भेद भवसागर दिया। बिन खेवट बिन नांव
बांहि गेह बाहर लिया॥ चिदानन्द महाराज, ब्रह्म पूरण गुरूदेवा।
धिन धिन तुम अवतार, धिन दरशण ले भेवा॥ बन्धी छोड गुरूदेव,
दयासागर गुणदाता। जन सुखिया गुरूदेव, ब्रह्म ज्यों बण्या विधाता ॥ २०॥

केवली भगवंत सतगुरू भवसागर से तारने वाले है, भवसागर से तिरने का भेद बताया है। बिना नांव व खेने वाले के ही बांह पकड कर भवसागर से बाहर कर दिया है। गुरूदेव पुरण

चिदानन्द महाराज है। आपके अवतार को धिन धिन है। आपके दर्शन कर भेद लेते है वे धिन धिन है। गुरूदेव दया के सागर व गुणों के दाता है व जीव को जन्म मरण से छुडाने वाले है। म:फ: है कि गुरूदेव के द्वारा ब्रह्म पद की प्राप्ति होना ही ब्रह्म ज्युं बण्या विधाता है।

गुरू समरथ शिख जांण, निरंजन आद गुसांई। पारब्रह्म गुरूदेव,
फेर शिरजण सो सांई॥ ज्योति स्वरूपी आप, रिजक पुरण गुरूदेवा।
घड भंजन करतार, अलख अविनाशी सेवा॥ जन सुखिया गुरूदेव जी,
हर सु अधिक बताय। प्राण पुरूष से अधिक है, बोलत है घट मांय ॥ २१॥

शिष्य को केवली भगवंत सतगुरू सत्तस्वरूप सामर्थ्यवान को आद से निरंजन ईश्वर जानना चाहिये गुरूदेव पारब्रह्म के समान व श्रृष्टि करता ईश्वर के समान है। गुरूदेव ज्योति स्वरूप पूरण रिजक देने वाले है। गुरूदेव श्रृष्टि रचने वाले व मिटाने वाले ईश्वर के समान है। अलख याने गुरूदेव की गति लखने में नहीं आती व अविनाशी है। म:फ: है कि गुरूदेव ईश्वर से भी ज्यादा बढकर है। प्राण पुरूष जो घट में बोल रहा है उससे बढकर है।

गुरू शरणे गोविन्द, मिलन की किमत आवे। ईन्द्र मेह बरसाय,
जमी पर साख निपावे॥ परदेशी पर भोम, गेल बुजे घर आवे।
चले आपणे पांव, धिन सो पंथ बतावे॥ जन सुखिया फल नीर रे,
पीवत तरवर मांय। सिमरथ साहिब पाविया, सतगुरू शरणे आय ॥ २२॥

सतगुरू केवली भगवंतो के अणभै ग्यान की शरण लेने पर ही परमात्मा की प्राप्ति का ज्ञान होता है। जैसे इन्द्र पृथ्वी पर बरसात बरसाता है तब ही अन्न पैदा होता है। जैसे परदेसी अनजान जगह जाकर रास्ता पूछकर ही अपने स्थान पर आता है चलता तो अपने पांवो से लेकिन धन्य है उसको जिसने रास्ता बताया है। म:फ: है कि फल पानी वृक्ष से ही लेता है। इस तरह सतगुरू की शरण लेने पर ही उनके अणभै वाणी में बताये हुये साधन से सांस उसांस में भजन कर शब्द की जागृति कर निरंजण निराकार ब्रह्म पद की प्राप्ति करता है।

तन मन अरपे धन्न, बोले मिठी मुख बानी। सदगुरू से आधीन,
करे महिमा बहु आनि॥ प्रेम सु पिलंग ढलाय, प्रीत की सोड बिछावे।
चित सो चंवर कराय, भाव परसादी लावे॥ जन सुखिया शिख सांच सो,
अष्ट उमै अंग मांय। तन मन दिल को सांच ले, शीष निवाजे आय ॥ २३॥

सतगुरू जी के अणभै ग्यान के आधीन होकर मीठी वाणी से बहुत महिमा करता हुआ तन मन धन से मोह नहीं रखना ही अर्पण करना है। प्रेम व प्रीति से भजन करना ही पिलंग ढलाना व सोड बिछाना है। चित भाव से भजन करना ही परसादी लाना व चंवर कराना है। म:फ: है कि सच्चे शिष्य वही तन मन व दिल से सच्चाई से भक्ति करने वाले शिष पर ही सतगुरू की पूरी कृपा होना ही निवाजना है।

सतगुरू दर्शण जाय, और मन में नहीं लावे। गुरूदेवे निज स्वरूप,
रूप निरखत दिन जावे॥ गुरू बोले सो बैण, चित हृदय धर लिजे।
और शकल विध त्याग, मान गुरू वायक लीजे॥ गुरू गोविन्द जन अेक है,
तामे फेर न कोय। सांचा शिष सुखराम के , ज्यांगत अेसी होय ॥ २४॥

सतगुरू के दर्शन करने जावे याने संतो की अणभै वाणी सुनने जावे तब किसी तरह की कामना मन में नहीं लावे। सतगुरू शिष्य के निज स्वरूप याने सतशब्द का भान करा देते है। उस रूप को निरखत याने अनुभव करते हुये ही दिन जाते है। सतगुरू जो भी आज्ञा करे उन वचनों को चित हृदय में धारण कर सब वचनों को मानना चाहिये। म:फ: है कि सतगुरू व परमात्मा ऐक ही है। उसमें किसी तरह का फर्क नहीं है, जो सच्चे शिष्य होते है, उनकी ऐसी धारणा होती है।

गुरू बेचे बिक जाय, हरष मन मांहि बधावे । आ बिध गाढी मुठ, कदे गोतो नही खावे॥
अेकण अंग रहाय, मत सो मुचे न कोय। दिन दिन दुणी प्रीत, शरण सतगुरू की सोइ॥
गुरू पत में सुखराम कह, ज्यों शिख सांचा होय। देवल इंडो चढ गयो, पथ प्राक्रम जोय॥ २५॥

सतगुरू केवली भगवंत बेच भी देवे तो बिक जावे याने सतगुरू के बताये माफिक अणभै ग्यान धारण करना व दूसरे विचार नहीं लाना ही बिकना है। उसका अपने मन में खुब हरष समझे इस तरह अपनी मती यानि बुद्धि में निश्चय कर बुद्धि को कभी विचलित नहीं होने देवे। दिन दिन सतगुरू की आज्ञा को ज्यादा से ज्यादा भाव से माने यही सतगुरू की सच्ची शरण है। म:फ: है कि जो शिष्य सतगुरू की आज्ञा में सच्चा विश्वास रख साधना करते है तो सतगुरू के बताये हुये रास्ते का अेसा प्रभाव है याने प्राक्रम है कि सतशब्द खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड से बाहर होकर अधर हो जाता है। यही देवल याने शरीर रूपी मंदिर पर इंडा याने कलश चढाना है।

<u>साखी :</u> तीन लोक माया सही, चौथे लोक न जाय।
जीवां कारण सांईयां, बप धारयो जुग मांय ॥ १॥

इच्छा शक्ति माया तीन लोकों में रहती है। चौथे लोक में माया का प्रवेश नहीं होता जीवों का उद्धार करने के लिये ही ईश्वर ने सतगुरू सता के रूप में केवली संतो में प्रक्रट होना ही शरीर धारण करना है। तीन लोक तक का ज्ञान माया के पद तक का है उससे चौथे पद की प्राप्ति नहीं होती।

अेसो ग्यान ऊचारियो, निगम वेद गम नांय। तीनु गेला छाडकर ऊपराडे हंस जाय ॥ २॥

ऐसे ज्ञान का वर्णन किया है जिस ज्ञान का वर्णन वेदों पुराणों में नही है। संत ने: अक्षर की जाग्रति कराके खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड का छेदन कराके के: पद में भेजते हैं।

ब्रह्मा विष्णु महेश है, शक्ति धरम परवान। जन सुखिया देखत रहे, हंस पहुंचे निर्वाण ॥ ३॥

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शक्ति और धर्मराय पांचों ही साक्षी दे रहे है कि इनकी देखरेख में ही हंस सतशब्द के साथ निरवाण याने केवल पद आनन्द पद की प्राप्ति करता है।

अेसा सतगुरू सांईयां, अदभुद ग्यान सुणाय। वेद कतेब न पावसी, स्थिर भया वहां जाय ॥ ४॥

भगवंत अेसे सतगुरू केवली ईश्वर स्वरूप है। उन्होने अदभुद ग्यान सुणाया है। वेद कुरान के बताये ग्यान की साधना करने वालों को उस पद की प्राप्ति नहीं होती। सतगुरू के अणभै ग्यान द्वारा पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति कर जन्म मरण में नहीं आना ही स्थिर होना है।

तीन लोक जावे नहीं, सुर नर धर पाताल। हंस पहुंचा गिगन में, पाप न पुण्य न काल ॥ ५॥

सतगुरू विधि से साधना करने वाले तीन लोक देवलोक मनुष्य लोक व नागलोक में नहीं जाते हंस याने सतगुरू की विधि से भजन करने वाले गिगन याने ब्रह्मण्ड व पार ब्रह्म से ऊपर पहुंचते हैं जहां पाप पुण्य व काल की पहुंच नहीं है।

तीन ताप को मेटकर, सबका अमल उडाय।
जन सुखिया गुरूदेव जी, ब्रह्म के मांय मिलाय ॥ ६ ।।

तीन ताप यानि आधि, व्याधि, उपाधि यानि मन का ताप, आत्मा का ताप शरीर का ताप। सदगुरू विधि से भजन करने पर तीनों ताप मिटकर सभी ईन्द्रियां जो विषय रस में थी वो अब इनमें नहीं है। यही अमल उडाय है। म.फ. है कि ऐसे गुरूदेव आत्मा को ब्रह्म परमात्मा में मिला देते हैं।

।। इति गुरू महिमा सम्पूर्ण।।

卐 बिरह का अंग 卐

म्हारो ने संदेशो साहिब सांभलो, बिना सुणियारो नहीं है सूल।
विरहन बिचारी तन कूं छाडसी, रही ऊरध मुख झूल ॥
बरस अठारा हर बिन काडिया, म्हारे आस रही घर मांय।
अब तो जोगण हर होय जाव सुं, बस्तर देवुं जी बगाय ॥ १ ॥

आत्मा परमात्मा से प्रार्थना कर रही है कि मेरा संदेशा सुणो। बिना सुणे मेरा दुख कैसे मिटेगा, बिरहन शरीर को छोडेगी। ऊन्धे मुंह झूल रही है। परमात्मा की प्राप्ति के बिना अठारह बरस निकाल दिये। शरीर में ही मेरी आशा लगी रही यानि माया ब्रह्म के पसारे में आशा रखना ही आस रही घर मांय है। अब तो मैं हे परमात्मा करमों से अलग हो जाऊंगी। बस्तर याने शरीर स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण से व पारब्रह्म के पद से अलग होकर के: पद आ: पद में मिलना है।

काये तो ढोल्यो हर नहीं घालता, भेद न देताजी मोय।
बिना तो दीठि साहेब चीज रो, म्हाने दुख दालद नहीं होय ॥ २ ॥

हे परमात्मा आप ढोल्या यानि मनुष्य शरीर नहीं देते और सतशब्द कैसे आता है उसका भेद नहीं देते। बिना देखी हुई चीज का हे परमात्मा मुझे दुख व पश्चाताप नहीं होता।

शब्दा कलेजो रामजी बिंदियो, म्हारे करोत बहे ऊर मांय।
नख चख साले राम जी निश दिना, मोसु हर बिना रहयो नहीं जाय ॥ ३ ॥

शब्द से मेरा कलेजा बिन्द गया व मेरे हृदय में करोत बहने जैसा दर्द होने लगा। मेरे नख से चख तक रात दिन दर्द हो रहा है। मेरे से परमात्मा के बिना नहीं रहा जाता है। यही विरह लगी रहती है कि हे परमात्मा आप कब मिलोगे।

अब तो जग में बोहर नही आवडे, आप मिलो नी आय।
इण तो अपराधी दुष्टि जीव रो, जलम अकारथ जाय ॥ ४ ॥

हे परमात्मा अब संसार में मुझे नहीं सुहाता है। याने माया ब्रह्म के पसारे में। इसलिये आप आकर मिलो। इस अपराधी व दुष्टि जीव का जन्म आपके मिले बिना बेकार जा रहा है।

अेकण महल दुजे चढी, तिजे खडी छूंजी आंण।
बजर दरवाजा हर नहीं ऊगडे, रहया करारा जी तांण ॥ ५ ॥

ऐक महल याने पिण्ड से खण्ड में चढी व तीसरे ब्रह्मण्ड पर आकर खडी हुई। बजर पोल का दरवाजा मुझसे नहीं खुलता बहुत मजबूत लगा हुआ है।

चेन तमाशा हर दिखलाय के, मत डेहकावो जी मोय।
किरपा करो नी जन पर दयालजी, मोय दरशण दो पट खोय ॥ ६ ॥

हे परमात्मा कई माया के चैन तमाशा बताकर मुझे मत बहकावो। हे दयालु आप मेरे पर कृपा करो व मुझे पट खोल कर दर्शन दो।

जन सुखदेव हरजी सुं बिणती, सुणज्यों जी सुरत लगाय।
अमर लोक जी साहब आप रो, म्हाने घणो जी देखण रो चाव ॥ ७ ॥

म:फ: है कि हे परमात्मा मेरी प्रार्थना को ध्यान से सुणो आत्मा कह रही है मुझे आपके अमर लोक को देखने की बहुत इच्छा हो रही है। के: पद: आ: पद की प्राप्ति ही अमरलोक है।

साखी : बिरह अग्र यूं पर जले, दूं बन मज कहाय।
बिन ईन्दर बरस्या बाहेरी, बुझे कुणि ते जाय ॥ ८ ॥

बिरह रूपी अग्नि में ऐसे जल रहे है जैसे वन के मध्य में आग जलती है। वन की आग इन्द्र के बरसे बिना किससे बुझ सकती है। ऐसे ही आपके सतशब्द दर्शन के बिना बिरह अग्नि कैसे बुझ सकती है ?

लड लाकड सब ही जले, रूखां करे विनास।
चौमासो बिन बरसिया, वन जीवे किण आस ॥ ९ ॥

विरह रूपी अग्नि में हाड मांस सब जल रहे है। इससे शरीर कृश हो जायेगा। चतुर्मास के बरसे बिना वन किसकी याने बिरहन किस आशा से रामजी के दर्शन बिना जीवित रहेगी।

मोपे रहयो न जात है, सुण हो श्याम सुजाण।
बिरहन पुकारे मिलण कूं, दर्शण दिज्यो आंण ॥ १० ॥

हे श्याम सुजान मेरी सुणो आपके बिना मेरे से नहीं रहा जाता है। बिरहन मिलन के लिये पुकार रही है। आकर मुझे दर्शन दो।

नैण निशो दिन निरखता, बपडा रहया हराय।
जीभ बिचारी घस गई, तुज हर दया न मांय ॥ ११ ॥

आंखे रात दिन आपकी बाट जोते जोते दुखी हो गई। जीभ भी भजन करते करते घिस गई है। हे परमात्मा आपके घट में दया नहीं है।

तुमको दया न ऊपजे, विरहन दुखी करतार।
के किरपा कर केशवा, नहीं तर मुझको मार ॥ १२ ॥

हे करतार बिरहन बहुत दुखी है। आपको दया नहीं आ रही है। हे प्रभु या तो आप मेरे पर दया करो या मुझे मार दो।

तुम हम बिचे केशवा, छेती कितीयक होय। ऊंचा सुरा पुकारयो, पाछो जाब न कोय ॥ १३ ॥

हे प्रभु आपके मेरे बीच कितनी दुरी है। बहुत ऊंची आवाज से मैने आपको पुकारा तो भी पीछा कोई जवाब नहीं है।

हेला दे दे सांईयां, जन के पडी कटूक। नेडा हो तो सांभलो, विरहन पुकारे भूक ॥ १४ ॥

आपका निरन्तर भजन होना ही हेला देना है। भजन करते हुये भी आपकी प्राप्ति नहीं होना जन के कटूक पडना है। आप नजदीक हो तो सुणो बिरहन आतुरता से पुकार रही है।

बिलबिलती बिरहन फिरे, तुं ही तुं पुकार। पपैया ज्युं लिव रही, अंतर दरद अपार ॥ १५ ॥

बिरहन आप ही आपको पुकारती हुई बिलखती हुई फिर रही है। अंतर में अपार दर्द है पपैया की तरह लिव लगा रही है।

मैं रोगी थी पीव जी, तब लग भुख न प्यास। जब लग कदे न बोलिया, पीव हमारे बास ॥ १६ ॥

मैं रोगी यानि चौरासी में थी तब तक तो आपसे मिलने की भुख प्यास नहीं थी। जब तक मैं कभी भी नहीं बोली, जबकि आप आत्म रूप से मेरे पास थे।

भुख लगी प्यासा मरूं, अब हर रहयो न जाय।
ज्युं त्यूं समझो सांईयां, नीर पिलावो ल्याय ॥ १७ ॥

आपके दर्शणो की भूख प्यास से मर रही हूं, अब प्रभू मुझसे रहा नहीं जाता जैसे तैसे परमात्मा कृपा करो और मुझे दर्शन दो यही नीर पिलाना है।

भूख हमारी खोय हो, शीतल करो शरीर। बिरहन बुही जात है, मोय बंधावो धीर ॥ १८ ॥

हे परमात्मा आप मेरी जन्म मरण की इस भूख को मिटा दो और दर्शन देकर शरीर को शांति दो। बिरहन बुही जा रही है मेरे को धीरज बंधाओ।

भौ सागर चहुं दिश भरयो, खाली दिशा न कोय।
कित होय आवुं सांईयां, थाह न सुजे मोय ॥ १९ ॥

तीन लोक में जन्मना व मरना यानि शुभ अशुभ का तांता लग रहा है, मुझे यह नहीं सुझ रहा है कि आपसे कैसे मिलूं।

जल बंब जलाकार है, देखु दिष्ट पसार। प्रीतम तुम बिन को नहीं, डुबी भव जल बार ॥ २० ॥

दृष्टि पसार कर देखती हूं। सब तरफ जल ही जल है यानि संसार करणी करम में लगा हुआ है। यही जलाकार है। हे प्रभु आपके बिना कोई बचाने वाला नहीं है। भवसागर के जल में डुब रही हूं।

तुम कारण विरहन सुन्दरी, तजी जात कुल काम।
जुग सुख सारा पर हरया, दे दरशण मुझ राम ॥ २१ ॥

आपके लिये विरहन सुन्दरी ने माया ब्रह्म की प्राप्ति के साधन को छोडना ही जाति कुल व कामना को छोडना है। संसार के सारे सुखों को छोडा है। हे रामजी मुझे दर्शन दो।

तन मन शीश अंवार के, मेलूं भांय ऊतार। टुकि एक दर्शन दिजिये, माधो मुकन मुरार ॥ २२ ॥

तन मन व सिर आप पर वार कर पृथ्वी पर रखती हूं यानि भक्ति में लगाती हूं। हे रामजी मुझे जरा से दर्शन दो।

और सुख सारा लहे, मेरे काम न कोय। अरस परस मिल सांईयां, दरसन दिजे मोय ॥ २३ ॥

तीनो लोको के जितने सुख है, वो मेरे काम के नहीं है। सता रूप से प्रगट होना व अेक क्षण भी इससे अलग नहीं होना ही अरस परस होना है।

तुम बिन सब बिड लोक है, सुरग मध्य पाताल।
जहां जावुं तहां सांईयां, तुम बिन सब मुख काल ॥ २४ ॥

आपके बिना स्वर्ग मध्य व पाताल सब पराया लोक है। जहां जाती हूं वहां हे रामजी आपके बिना सब जगह काल है।

विरहन जगत कूं देख के, रोय रही दिल मांय। जम डंड मेरे सांईयां, कब जु भुगतु जाय ॥ २५ ॥

बिरहन संसार को देखकर दिल में रो रही है। हे रामजी जमराज के डंड से मेरा कब छुटकारा होगा याने जन्म मरण कब मिटेगा।

ज्यां देखुं जहां दुःख है, सोचर कियो विचार।
तुम बिन समरथ सांईयां, जुग सिर जम की मार॥ २६ ॥

जहां देखती हूं वहां दुख ही दुख है। ऐसा सोचकर विचार किया है। आपके बिना हे समरथ स्वामी संसार के सिर पर जम की मार है।

देश विदेशा में फिरी, सुखी न देख्यो कोय। हाय बोय के बीच में, रहयो जगत सब रोय ॥ २७॥

देश यानि परब्रह्म विदेश यानि तीन लोक में सब जगह फिरी। किसी को सुखी नहीं देखा। सारा संसार जन्म मरण में आ रहा है। और यही हाय बोय में रोना है।

जगत देखकर बिरहनी, अन्तर भई उदास।
तुम बिन समरथ सांईयां, जम गल घाली फांस ॥ २८ ॥

बिरहन संसार को देखकर हृदय से उदास हो रही है। हे समरथ प्रभु आपके बिना जमराज ने सबके गले में फांसी डाल रखी है।

आठ पोहोर संसार में, काल करम की बात। बिरहन कूं डर ऊपजे, मो जम गाले हाथ ॥ २९॥

संसार में रात दिन काल करम के सिवाय दुसरी बात नहीं है। बिरहन को भी डर पैदा हो रहा है कि जमराज मेरे गले में हाथ डाल देंगे।

सब जुग धुके दुवाड ज्यों, आग बिना सब लोय।
बिरहन कुं बिरह उपजे, जुग दुख पडता जोय ॥ ३०॥

सब संसारी बिना आग के ही आग में जल रहे है। संसार को दुख में पडता हुआ देखकर बिरहन को बिरह हो रही है।

तुम तज ओटे मैं फिरी, हिंडी बोहो घर बार। सब स्वारथ के मीत है, बिन सांई भरतार ॥ ३१॥

हे परमात्मा मैं आपको छोडकर चौरासी में चली गयी और नाना प्रकार की योनियों में गई। आप के बिना सभी योनियों में स्वार्थ के मीत है।

अेता दिन मद अंध थी, कछुअन कियो विचार।
अब सुज्यों मुझ सांईयां, तुम मेरा भरतार ॥ ३२॥

इतने दिन मैं मद में अन्धी हो रही थी। कुछ भी विचार नहीं किया॥ अब मुझे मालुम हुआ कि आप मेरे पति हो।

छेला संग जुग जुग रमी, दिन दिन किया अनेक ।
सुख नहीं पायो सुन्दरी, हुई खराबी देख ॥ ३३॥

जुग जुग में आनदेव यानि शरीरधारी की उपासना में लगी व दिन दिन अनेकों की उपासना की। इस कारण आत्मा रूपी सुन्दरी को सुख यानि वो पद नहीं मिला, उल्टी चौरासी में चली गयी।

भोलप मेरे सांईयां, मैं थी बडी गिंवार। तुम सा प्रीतम छाड के, गई आन की लार॥ ३४॥

हे प्रभु यह मेरा भोलापन था, मैं बडी मूर्ख थी, आप जैसे पति को छोडकर आन की उपासना में लगी।

बडा बडाई ना तजे, आद अंत हर जोय। सूरज तज दियो करे, बुरो न माने कोय ॥ ३५॥

आदि से लेकर अंत तक बडा अपने बडप्पन को नहीं छोडता। सूरज के प्रकाश में भी कोई दीपक जलाता है तो सूरज बुरा नहीं मानता।

किया सो तो कर लिया, बहोत खून करतार। भावे बगसो सांईयां, भावे गरदन मार ॥ ३६ ॥

हे परमात्मा जो भी मेरे से अपराध होते थे हो गये। चाहे मुझे माफ करो या चाहे गरदन मार दो।

हर बिन मुखा न बोलस्युं, सुरत समोऊं मांय।
तन कूं खाख मिलावस्युं, के हर मुझ बतलाय ॥ ३७ ॥

परमात्मा के भजन करने में लगा रहना ही परमात्मा के सिवाय दुसरों से नहीं बोलना याने सुरत शब्द में मिलाना। हे प्रभु आप मुझे बतलाओ नहीं तो शरीर को खाख में मिला दूंगी।

शरणो परथ न छोडस्युं, तार मार दुःख दे। तम मन सब अरपिया, पिछे क्या हर ले ॥ ३८ ॥

चाहे आप मुझे मारो या तारो या दुख देवो मैं आपकी शरण नहीं छोडुंगी। तन मन सब आपके अर्पण है अब मेरे पास क्या है।

आ पच करके जीव दूं, बिरहन दुःख अपार। क्युं जीवे को सांईयां, जल बिन मीन विचार ॥ ३९ ॥

बिरहन को अपार दुख है। वो जिन्दगी को खत्म कर देगी। हे परमात्मा पानी के बिना मच्छी जिन्दा कैसे रह सकती है।

दादर दस दिन खटकडे, मच्छी रहे न कोय।
विरहन बिचारी क्या करे, तुम बिन यूं दुख होय ॥ ४० ॥

मेंढक पानी बिना पांच दस दिन तक जिन्दा रह सकता है लेकिन मच्छी थोडी देर भी नहीं रहती, बिरहन क्या कर सकती है आपके बिना अेसे ही दुख हो रहा।

जल बिन नागर बेलडी, पेप फूल कुमलाय।
तुम बिन समरथ सांईयां, बिरहन यो दुःख पाय ॥ ४१ ॥

नागर बैल व फूल बिना पानी के कुमला जाते हैं। इसी तरह बिरहन आपके बिना दुख पा रही है।

चिकोर आग न बिसरे, दुजी करे न चूण। जन सुखिया के बिरहनी, हर बिन माने कुण ॥ ४२ ॥

चकोर आग को नहीं भुलता व दुसरी चीज को नहीं खाता। मःफः है कि बिरहन आत्मा परमात्मा के बिना किसको मानती है?

विरहन दुखारी क्या करे, बोहो दुःख पडया शरीर।
घायल धीरज क्यों धरे, ता पच दुणी पीर ॥ ४३ ॥

बिरहन आत्मा को शरीर में बहुत दुख लग रहा है। वह दुख्यारी क्या कर सकती है। घायल कैसे धैर्य धारण करता है। उसको दूणी पीड हो रही है।

घायल नींद न संचरे, सिसकत रैण बिताय। पर ऊपकारी जुग में, को मो दुःख बतलाय ॥ ४४ ॥

जो घायल होता है उसको नींद नहीं आती है। घायल की सिसकते सिसकते हुये रात बीतती है। संसार में ऐसा कौन पर उपकारी है जो मेरे दुख को मिटाता हो।

बिरह बिसारे न पडे, दिन दिन दुणी होय। सुरत न छाडे दुःख कूं, बेदल रोवे जोय ॥ ४५ ॥

आत्मा बिरह के साथ जो भक्ति कर रही है वो परमात्मा को भुलाने पर भी नहीं भूलती है। रात दिन भक्ति करना ही दिन दिन दुणी होना है। सूरत याने आत्मा परमात्मा की प्राप्ति बिना दुख को नहीं भूलती। रातदिन रोती है यही बेदल रोवे जोय है।

दरदवाद लौलीन होय, बैद बूलावण जाय। विरहन पुकारे पीड सूं, सांई मलमल गाय ॥ ४६ ॥

जो दर्द में लीन होता है वो वैद्य को बुलाने जाता है। विरहन दर्द के मारे पुकार रही है व परमात्मा को निरन्तर याद कर रही है।

औषध दिजे आंण के, हरि बैद भरतार। चौरासी के रोग की, पावो जडी बिचार ॥ ४७ ॥

हे परमात्मा आप ही मेरे वैद्य व भरतार हो। ऐसी दवा दीजिये जिससे मेरा चौरासी का रोग जन्मना मरना मिट जावे।

अेसो औषध कीजिये, दरद रोग सब जाय। आवागवण न ऊपजूं, जामण रोग मिटाय ॥ ४८ ॥

ऐसी औषध करिये मेरा सब रोग चला जाय। जन्म मरण के रोग से छुटकारा हो जाये।

मैं तुझ सुणयो केशवा, पूरण वेद सधीर। शरणे जुग जुग ऊबरे, मरण न पावे बीर ॥ ४९ ॥

हे परमात्मा मैने आपके लिये ऐसा सुणा था कि आप पूरे वैद्य है। जुगान जुग से जो शरण में आया उसका उद्धार हो गया वो जन्म मरण नहीं पाता।

अमर किया जुग मांय थे, जामण रोग मिटाय।
सो मैं सुणियो केशवा, ग्यान नगर जहां जाय ॥ ५० ॥

जो शरण में आया उसका जन्म मरण का रोग मिटाकर संसार में अमर कर दिया। हे प्रभु यह मैंने ग्यान नगर यानि सत्संग व कथा स्थल में जाकर सुना है।

पुरण परमानन्द हो, गरीबन के प्रतिपाल।
जुग जुग दुर्बल तारिया, अब हर मोय सम्भाल॥ ५१ ॥

आप गरीबो की रक्षा करने वाले पूर्ण परमानन्द के देने वाले हो। जुग जुग से आपने गरीबों का उद्धार किया है। प्रभु अब मुझे सम्भालो।

बेग थका सम्भाल हो, औसर मती गमाय।
तन मन थका सवार थी, धन हर को कुण खाय॥ ५२ ॥

जल्दी मेरी सम्भाल करो। मनुष्य जन्म के अवसर को मत गमावो। तन मन आपके अर्पण कर दिया तब आपके धन को कौन खा सकता है।

आगे पीछे मध ले, तुम हो तारणहार। तो काहे को दुख दीजिये, अब ही मिलो विचार ॥ ५३ ॥

आगे पीछे व मध्य में आप ही मेरा उद्धार करने वाले हो तो दुख क्यों दिखला रहे हो। ऐसा विचार कर आपकी शरण में लो।

आज काल पांचा दिना, ने:चे नेह निधान। तुम ही तारणहार हो, और न आवे जान ॥ ५४ ॥

आज या काल या पांच दिनों में यह मेरा निश्चय है कि आप ही मेरा उद्धार करने वाले है। दूसरा कोई नहीं हो सकता।

ताते अब ही प्रगटो, दरसो दीन दयाल। गुण ओगुण मत देख हो, आदु प्रीत सम्भाल ॥ ५५ ॥

हे दीनदयाल अब ही प्रगट होकर मुझे दर्शन दो। मेरे गुण अवगुणो को मत देखो, आदू की प्रीति को सम्भालो। याने आपके बिडद की तरफ देखो।

तुम तारो जब सांईयां, कहो कुण पालनहार। पीव बुलावे नार कूं, कहो कुण आडो यार ॥ ५६ ॥

आप ऊद्धार करते है तो कौन रोकने वाला है। पति स्त्री को बुलाता है तो दुसरा कौन आडे आता है।

रात दिवस कारण नहीं, पीव मन मान्या जोग।
करम जगत पडिया रहे, जब पीव चावे भोग ॥ ५७॥

रात व दिन का कोई कारण नहीं है। जब पति की इच्छा होती है तब वह बुलाता है। परमात्मा यदि आप मिलना चाहे तो करम रूपी जगत क्या आड दे सकते है।

रूत दाता युं ग्यान के, जे नर पर हर जाय। कोढी हुये जग सांईयां, अरथ निगम के मांय ॥ ५८॥

वेदो में ऐसा ग्यान है। ऋतुवन्ती को पुरूष ऋतु दान नही देता है तो वह कोढी होता है। यह मनुष्य जन्म ऋतु दान का समय है। इसमें आप प्राप्त नहीं हुवे तो मेरा क्या दोष है।

बिरहन आतर होय रही, पीव मिलण के काज। जात कुडुंबो लोक की, छोडी है कुल लाज ॥ ५९॥

बिरहनी आत्मा अपने पति परमात्मा से मिलने के लिये उतावली हो रही है। इसने जाति कुटुम्ब व कुल की लाज छोड दी है।

शरम सन संक्या नही, तिनूं दिया बुहाय। पीव मिलण के कारणे, बके चोवटे जाय ॥ ६०॥

बिरहन को न शरम है न संशय है, न सन है, तीनो को छोड दिया है। पति से मिलने के लिये सबके सामने भक्ति कर रही है।

सो दिन कहो कब ऊगसी, पीव रमेंगे सेज। मन की आशा पूर हूं, हिलमिल दे घर भेज ॥ ६१॥

वो दिन मेरे लिये कब ऊगेगा, जब मन की आशा पूरी होगी। केवल पद की प्राप्ति का अनुभव अखण्ड होकर आनंद आवेगा यही पीव रमेंगे सेज है। जब आनन्द पद में लय होना ही हिलमिल दे घर भेज है।

बिरहन आस सुख गेह रही, स्वातक सीप कहाय।
आन शकल सब पर हरया, बंधी पीव पत मांय ॥ ६२॥

जैसे सीप स्वाती की बूंद के लिये आशा करती है ऐसे ही बिरहनी उस परम पद की प्राप्ति की आशा कर रही है और सब आन की भक्ति को छोडकर सतस्वरूप की भक्ति करना ही पीव के पत में बंधना है।

पत सुं सुण आगे चले, करो गुंज घर जाय। अजु न आया सांईयां, है ओगण मुझ मांय ॥ ६३॥

जो इस भक्ति को विश्वास के साथ करेगा वह आत्मा उस के: पद में जायेगी। और मेरे को अभी तक आप नही मिले इससे मालूम होता है कि मेरे में ही अवगुण भरे हैं।

लाणत मेरे जीव कूं, फिट मन तोय धिरकार।
पीव बिना जुग जीवणो, कायर कपट गीवार ॥ ६४॥

मेरे जीव को लाणत है। मन तुझे धिक्कार है। परमात्मा के बिना संसार में जीना कायर कपटियों व मुर्खो का काम है।

मोत बिना मरबो नही, जीवण जुग अकाज। विरहन पुकारे पीड सुं, तुम बिन हर देह भांज ॥ ६५॥

मौत के बिना मृत्यु नहीं आती। जगत में मेरा जीना व्यर्थ है। बिरहनी दुख के साथ प्रार्थना करती है कि आपकी प्राप्ति के बिना हे परमात्मा इस देही को खत्म कर दो।

दूना दु:ख दिराइये, सब शेषू करतार। आप मिल्या बिन बाहेरी, बिरहन मारो मार ॥ ६६॥

हे प्रभु दूसरे दुख आप मुझे कितने दिरावो, सबको सहन करूंगी। आपकी प्राप्ति के बिना बिरहन को अपार दुख हो रहा है।

रूम रूम सब थर हरे, नख चख शकल शरीर। तुम बिन मेरे सांईयां, बिरहन धरे न धीर ॥ ६७ ॥

मेरा सारा शरीर रूम रूम नख से चख तक थर्रा रहा है। आपकी प्राप्ति के बिना बिरहन को धैर्य नहीं हो रहा है।

अंतर लागी पुकारणे, राखी रहे न कोय। पीव बात जब ही सुणे, तब ही भेली होय ॥ ६८ ॥

अंतर में रात दिन आपकी भक्ति भजन करना ही पुकारना है। एक क्षण भी आपको नहीं भूलना राखी रहे न कोय है। आपकी प्राप्ति होने पर ही सन्तोष होगा।

पांख हुये ऊड जाइये, पीव बसे ऊण वेश। जहां जहां करूं बिछावणा, नाना बिध का देश ॥ ६९ ॥

मैं यदि मेरे पंख होते तो उडकर आपकी शरण में पहुंच जाती। आपकी प्राप्ति के लिये मुझे जो भी करना पडे वह मैं सब करने को तैयार हूं।

पीव बसे ऊण देश में, धिन नर टाबर नार। निश दिन खेले महल में, मुख देखे भरतार ॥ ७० ॥

जो हमेशा पीव के साथ रहती है वह सभी तरह से सुखी व आनन्द में रहती है। रात दिन परमात्मा के साथ रह कर दर्शन करती रहती है।

बाता सरब सुहाग की, बिरहन लिवी जाय। आगे पीव निवाजया, यूं संता कू आय ॥ ७१ ॥

बिरहन ने परमात्मा की प्राप्ति के सब साधन धारण कर लिये है। पहले भी आपने संतो पर कृपा की है। वैसे ही मेरे पर कृपा करो।

ज्युं ज्युं बिरहन सुणत है, पीव प्राक्रम वीर। आतर अंतर अधीर बोहो, निमख न खावे धीर ॥ ७२ ॥

जैसे जैसे परमात्मा का प्राक्रम सुनती है बिरहन को परमात्मा के दर्शनों की तीव्र इच्छा हो रही है यही निमख न खावे धीर है।

नारी कूं नर परण के, पीव घरे ले जाय। गुण ओगुण सब ढाक के, अपणो बिडद निभाय ॥ ७३ ॥

पुरूष स्त्री को परण कर अपने घर ले जाता है तो उसके गुण ओगुण का विचार नहीं करके अपने बिडद को निभाता है।

मैं बिरहणी जुग में फिरूं, प्रीतम तुम ओगाल।
बिडद विचारो सायबा, बेगी करो सम्भाल॥ ७४ ॥

मैं बिरहणी जगत में आपकी भक्ति करके चौरासी में फिरूं तो इसमें आपकी निन्दा है। आप अपने बिडद का विचार कर जल्दी दर्शन दो।

ईत ऊत कोई देखसी, बाहिर भीतर जाय। अब बिरहन बोहो ऊब के, दाबी दबे न मांय ॥ ७५ ॥

मैं आपकी प्राप्ति के लिये बिरह करती हूं, बाहर भीतर जाने वाले देखते है तो संसार की लज्जा से बिरहन नहीं दबती। आपकी प्राप्ति के लिये ज्यादा बिरह करती है।

निजर नैण जड लागियो, आंसु तुटे नाय। सुध बुध बिसरी जगत की, पीव ही पीव कहाय ॥ ७६ ॥

आंखों से निरन्तर पानी बह रहा है आंसू नहीं टूटते। जगत की सब सुध बुध भूलकर रात दिन भक्ति भजन में ही लगी रहती हूं।

चोडे चोवटे चापटे, देवे हांक पुकार। है कोई ऐसो जुग में, मुझ पीव मिलावण हार ॥ ७७ ॥

चौडे बाजार में सब जगह आवाज दे रही हूं कि जगत में ऐसा कोई मुझे परमात्मा की प्राप्ति कराने वाला है।

व्याकुल दुखी शरीर है, बोहो पीड मन मांय। खान पान सब बिसरी, पीव ही पीव भणाय ॥७८॥

शरीर बहुत दुखी और व्याकुल हो रहा है। मन में भी बहुत पीडा है रात दिन भजन करने में लगकर खाना पीना भूल गई हूं और पीव ही पीव पुकार रही हूं।

कहयो न माने ओर को, सुणे न दुजी कान। बिरहन सब ही बिसरी, नर नारी धर आन ॥७९॥

दूसरों का कहना नहीं मानती। दूसरी बात कोई कान में नही सुनना चाहती। पृथ्वी पर जितने भी स्त्री पुरूष है, बिरहन उन सबको भूल गई है।

प्रीतम प्यारो ज्यां मिले, मोय सुणावे आय।
बिरहन ऊठ चरणा लगे, धिन दिन आज कुवाय ॥८०॥

जिस साधन से परमात्मा की प्राप्ति हो वह ग्यान मुझे कोई सुणावे तो मैं उठकर उनके चरणों को छुवुं याने सतग्यान धारणा करूं। वो दिन धिन कहावेगा।

धिन तुम दिन भल ऊगियो, केहे प्रीतम समाचार।
हम घर को कब आवसी, सांई सिरजण हार ॥८१॥

वो दिन मेरे लिये धिन है व भला उदय हुआ है जिस दिन परमात्मा की प्राप्ति का ग्यान मिलेगा। मेरे घट में परमात्मा के दर्शन कब होंगे।

सब सु मिल ऐसी कहे, सुध नहीं बाडे कोय। पीव पीव लीव लग रही, सब घर आही होय ॥८२॥

सुध को भुलकर जो मिलता है, उससे यही कहती है कि मुझे सारे शरीर में परमात्मा की प्राप्ति की लगन लग रही है।

मेरा पीव बताईये, तम जाणन हारे आय। मांगोगा सो सब देवूं, जे मुझ पीव मिलाय ॥८३॥

तुम जानने वाले आकर मुझे परमात्मा की प्राप्ति का साधन बता दो। मुझे परमात्मा की प्राप्ति हो जायेगी तो मांगोगे सो सब दूंगी।

मेरा प्रीतम कहां बसे, सो कहो मोय अेनाण। कुण ऊणयारो रंग है, कब भेंटू दीवाण ॥८४॥

मेरा परमात्मा कहां रहता है वो जगह मुझे बतलावो उनका क्या स्वरूप है, क्या रंग है, कब मुझे उनकी प्राप्ति होगी।

बिरहन बेरागण होय रही, चाले निरमल चाल।
पीव बिन भटकत फिरे, पडता व्हो जुग व्हाल ॥८५॥

बिरहन तीन लोकों व जगत के सुख नहीं चाहती आपकी प्राप्ति चाहती है यह बेरागण होना व निरमल चाल चलना है। परमात्मा की प्राप्ति के बिना चौरासी में भटकना व दुख पाना ही पडता व्हो जुग व्हाल है।

बिरहन संदेशो मोकले, सुणज्यों शिरजणहार। तुम हो तेसी कीजियो, मोपे गुन्हा निवार ॥८६॥

बिरहन प्रार्थना कर रही है। हे परमात्मा मेरी प्रार्थना सुणो मेरे अवगुणो की तरफ न देखते हुये अपने बिडद का विचार करो।

मैं गुण ओगुण बहो किया, तुम सूं दूरा जाय।
किया सो मैं भुगतिया, अब मुझ पीव मनाय ॥८७॥

मैने आपसे दूर जाकर शुभ अशुभ बहुत कर्म किये है। मैं मेरे किये कर्मो का फल भोग रही हूं अब आप मेरे पर कृपा करो।

करूणा राखो रामजी, बरसो दीनदयाल।
गुण ओगुण सब बगसो सही, आदू प्रीत सम्भाल ॥ ८८ ॥

हे परमात्मा मुझे आपके चरणो की शरण दो मुझ पर कृपा करो। मेरे गुण अवगुणो को माफ कर दो। आपके बिडद को निभावो।

बिरहन पुकारे पीड सुं, सुणियों त्रिभुवन राय। बिडद तुम्हारो जांण के, दरशन दिज्यो आय ॥ ८९ ॥

बिरहनी प्रेम से प्रार्थना करती है, हे त्रिभुवन राय सुणो। आपके बिडद का ध्यान करके मुझे दर्शन दो।

मैं गुणवन्ती सुन्दरी, अवगुण भरया अपार। बाहगह्या की लाज है, सुण सांई भरतार ॥ ९० ॥

मै गुणवन्ती सुन्दरी, मेरे में अपार ओगुण भरे हैं। हे परमात्मा मैंने आपकी शरण ली है, शरण आये की लज्जा रखो।

ओछे जल ज्युं मांछली, तलफत है ईण रीत। जोबन चाल्यो जात है, हे साहिब कर चीत ॥ ९१ ॥

थोडे पानी में मछली रात दिन तडफती है। मनुष्य जन्म चला जा रहा है। हे परमात्मा आप इसकी तरफ ध्यान दो।

जगत भेद जाणे नहीं, किण सुं कहूं पुकार। ऋतुवन्ती ऋतु कारणे, सब अंतर बोहो मार ॥ ९२ ॥

जगत इस भेद को नहीं जानता। किसको जाकर कहूं। मनुष्य शरीर से ही परमात्मा की प्राप्ति होती है इसलिये मेरा मन अंतर में बहुत दुखी है।

कही सुणी जावे नहीं, नां कोई सुणणे हार। ऋतुवंती के दरद की, साहिब सुणो पुकार ॥ ९३ ॥

किसी से कहा सुना नहीं जाता न कोई सुनने वाला है। इस बिरहनी के दर्द की हे परमात्मा आप ही प्रार्थना सुणो।

पपैया ज्युं पच रही, अंतर पीढ विराट। साहिब हम घर आवज्यो, निश दिन जोवुं बाट ॥ ९४ ॥

जिस तरह पपैया रात दिन पी पी रटता रहता है। मेरे अंतर में बहोत पीडा है। हे परमात्मा मुझे अन्तर में दर्शन दो। मैं रात दिन आपकी बाट जो रही हूं।

नैण नींद न संचरे, अन्न पावुं बिन जोग। धिरग हमारो जीवणो, हर दरशन बिन भोग ॥ ९५ ॥

आंखो में नींद नहीं आती। अन्न भी बिना इच्छा के पाती हूं। मेरा जीना परमात्मा के दर्शन व भक्ति के बिना धिक्कार है।

बिरहन रोवे रैण भर, सांई सुणो पुकार। बिल बिलता दिन निसरे, बिन मिलिया भरतार ॥ ९६ ॥

बिरहणी रात भर रो रही है। हे परमात्मा प्रार्थना सुणो, मेरे दिन परमात्मा की प्राप्ति के बिना बिलखते हुये निकल रहे है।

किरपा कीजे केशवा, मो बिरहन पर आय।
तम मिलिया बिन सांईयां, सब दिन दूभर जाय॥ ९७॥

हे परमात्मा मुझ बिरहनी पर कृपा करो। आपके दर्शनों के बिना मेरे दिन मुश्किलों से निकल रहे है।

पीव बिहुणी सुन्दरी, ज्युं ज्युं रहे उदास। बिरहन प्रीतम बाहेरी, तजती है देह आस ॥ ९८ ॥

जिस तरह पति के बिना सुन्दरी उदास रहती है, यह बिरहन भी शरीर की आशा छोडकर आपके दर्शन की आशा रखती है।

बेग संभालो सांईयां, तुम बिना रहयो न जाय। सब जग दीसे थोथरो, ऊजड मेरे भाय ॥ ९९ ॥

आप मेरी जल्दी सम्भाल करो आपके बिना मैं नहीं रह सकती। मुझे जगत अच्छा नहीं लगता उजाड सा है।

मोकु आंण संभालियो, अेकरस्या बतलाय।
तुम परस्या बिन साहिबा, यो तन छुटयो जाय ॥ १०० ॥

मेरी आकर सम्भाल करो, एक बार सन्मुख दर्शन दो। आपके दर्शनो के बिना यह शरीर छुटा जा रहा है।

क्या मैं कहूं बणाय कर, तुम से छिपे न कोय।
गुण ओगुण मुझ में भरिया, बिडद तुमारो जोय ॥ १०१ ॥

मैं आपको बणाकर क्या कहुं। आपसे कोई छिपा नहीं है। मेरे में तो गुण ओगुण बहुत भरे हुये है। आप अपने बिडद की तरफ देखो।

तुम प्रीतम पूरण ब्रह्म हो, सब मन सारत काम।
आत्म कन्या बिरहनी, तुम चाहत है राम ॥ १०२ ॥

हे परमात्मा आप पूर्ण ब्रह्म हो। सबकी मनोकामना पूरी करते हो, यह आत्म कन्या बिरहनी आपके दर्शन चाहती है।

बावल मेरो ब्याव कर, बेगो लग्न लिखाय। आत्मकन्या बिरहनी, अत आंतर मन मांय ॥ १०३ ॥

हे परमात्मा जल्दी से जल्दी आपकी शरण में लो। यह आत्मकन्या बिरहणी अन्तर में बहुत दुखी है।

पुल मोरत दिन जात है, दिन सुण बरस समान। बरस हमारे सांईयां, जुग बराबर जाय ॥ १०४ ॥

यह समय जा रहा है। एक दिन मेरे लिये एक वर्ष के समान है। और एक वर्ष एक युग (12 वर्ष) के बराबर जा रहा है।

जुग जाय सो सेल है, सुख में लखु न कोय।
अब बर चिन्ता ऊपजी, छीन दुभर मुझ होय ॥ १०५ ॥

सुख के दिनों में जुग जाने की मालूम नहीं पडती। अब तो एक क्षण भी यदि दुख में जाता है तो यही मुझे चिन्ता है।

अब मेरा मन यो कहे, मोय जन्म धिक्कार।
खावंद बिन जुग जीवणो, रे मन मुख है छार ॥ १०६ ॥

अब मेरा मन कहता है कि परमात्मा की प्राप्ति के बिना मेरा मनुष्य जन्म धिक्कार है। परमात्मा की प्राप्ति के बिना जगत में जीना ही मन मुख पर धिक्कार रूपी धूल पडती है।

अकन कंवारी कामणी, या जग सुणिन कोय।
मो जुग जनम अकाज है, तां घर मेर न होय ॥ १०७ ॥

आज दिन तक संसार में अकन कुवांरी स्त्री नहीं सुणी है। मेरा जन्म व्यर्थ है जब तक मुझे आपकी प्राप्ति नहीं हो रही है।

राम बिना संसार में, जन्म धरयो किण काम।
संबल फुल्यो वन में, तीरथ जल बिन धाम ॥ १०८ ॥

रामजी की प्राप्ति के बिना संसार में मनुष्य जनम धारण करना किस काम का है। वन में संबल फूलता है वो किसी के काम नहीं आता है। जिस तीरथ में जल व ठहरने का स्थान न हो तो वह तीरथ किस काम का है।

॥ इति बिरह का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 सिमरण का अंग 卐

सिंह सो गज स्वान सुशेज्यो, बिल्ली को देख मुसम्बर ध्यायो।
वासंग वाज सुणि गरूडा डर, पयाल को पेठत बार न लायो॥
ग्वाल को देख नहीं सिंह ठाडो, जाग्रत गांव जहां चोर न आवे।
नाम प्रताप कहे सुखदेवजी, वाज सुणे यो अघ भगावे ॥ १ ॥

बडे बडे शरीर वाले हाथीयों के झुण्ड के झुण्ड हो, सिंह को देखते ही भाग जाते है। कुत्ते को देखते ही सुशेज्यो याने खरगोश भाग जाते है। चूहे कितने भी हो बिल्ली को देखते ही बिलों में घुस जाते है। गुरूडजी की आवाज सुनकर सर्प जमीन के अन्दर बिलों में चले जाते है। ग्वाल ऐसी किलकारी करता है कि सिंह खडा नहीं रहता। जिस गांव के मनुष्य जागते रहते है वहां चोर नहीं आते। म:फ: है कि परमात्मा के नाम का ऐसा प्राक्रम है कि जहां नाम की ऐसी भक्ति होती है, वहां पापों का क्षय हो जाता है।

<u>कवित्त :</u> कहा ओस को नीर, फूस को तप कहाणो। गेहणो कहा कथीर,
रूंख ऐरण्ड कहा बायो। धुवें का क्या कोट, घडे को मोती लिजे।
आक काठ का महल, झूंठ केतो इक रिजे। बादल की क्या छांह,
जाल डोको घर आणो। केवल बिन सुखराम, नाम ऐसा सब जाणो ॥ २ ॥

ओस का जल भी जल ही कहलाता है पर उससे प्यास नहीं जाती। कपडे नहीं धुपते। फूस का भी तप कहलाता है। परन्तु वो नहीं ठहरता। कथीर का गहणा कहलाता है। बेचने पर मामूली पैसा आता है। ऐरन्ड का वृक्ष कहलाता है तो भी उसकी छाया में न तो बैठा जा सकता है। न लकडी काम आती है। धूवें का कोट चारो तरफ हो जाता है परन्तु उससे किसी की रक्षा नही होती। पानी का घडा भी मोती की तरह दिखता है परन्तु वह मोती का काम नहीं देता। आक की लकडी का महल किसी के काम नहीं आता। झूंठ याने असत को सत समझ ले तो सत नहीं होता। जले हुये पोधे को घर पर लाकर रोपने से क्या वह वृक्ष बनेगा। बादल की छाया कितनी ही हो, जाते देर नहीं लगती। म.फ. है कि ऐसे ही केवल नाम याने सतशब्द ने: अंच्छर के बिना जो वाणी के आधार के नाम है वो इस प्रकार है।

राम नाम सत जांण, राम बिन झूंठ सगाई। गोत कडुंबो बहोत, अन्त अेको ही जाई॥
हटवाडे को लोग, आंण गृही सब भेला। आप आपके काज, आनि सब ही हुवे भेला॥
बिणज करे व्यापार, संच अपणे घर जावे। जन सुखिया नर मूढ, गीरे का दाम गमावे ॥ ३ ॥

राम का नाम सत है। राम के बिना सब प्रेम झुठे है। कुटुम्ब व गोती बहुत होने पर भी अन्त में अकेला जाता है। घर में सब मनुष्य हटवाडे में लोग इकट्ठे होते है। ऐसे सब इकट्ठे हुये है। आप आपके करमानुसार सब इकट्ठे होते है। और अपने अपने कर्मो का फल भोग कर चले जाते है। जैसे

हटवाडे में आये मनुष्य अपना कार्य कर अपने अपने घर चले जाते है। जो मुर्ख होता है वह श्वांसा रूपी धन को व्यर्थ में खो कर बुरे व्यसनों में लगकर चौरासी में जाता है। उसको मनुष्य जन्म नहीं मिलता यही गिरह का दाम गवाना है। म:फ: है कि जो मूर्ख होता है वह हटवाडे में घर से लाया पैसा भी खोकर जाता है।

यो गृह में सब जीव, हाट मझ भेला होई। नफो समझिया होय, वस्तु मोलावो कोई।
गाफल गोता खाय, गिरह का दाम गमावे। भाण्ड भया देखाय, फेर पिछे पछतावे॥
मेलो बिखर जाय, फेर कारी नहीं लागे। ओ ओसर सुखराम, फेर मोसर नहीं जागे॥ ४॥

घर में सब जीव हटवाडे की तरह इकट्ठे हुये है। कोई भी चीज की कीमत करावो। नफा तो समझने से होता है। मनुष्य को श्वांसा रूपी धन मिला है। श्वांसा के आधार पर सतगुरू विधि से भजन कर ऐक ऐक स्वांस में सीतर क्रोड नाम की जागृति कर मोक्ष याने परमपद की प्राप्ति करना ही समझ कर नफा कमाना है। गाफिल याने बेसमझ गोते खाते है व पास का धन गमा के जाते है। जैसे भांड होता है उसको दिन भर बोलने पर भी साधारण सी वस्तु मिलती है। अेसे ही बिना भेद के दिन भर वाणी के आधार से भक्ति करने पर तीनों लोकों में जीव भाव से सुखों की प्राप्ति हो सकती है। चौरासी नहीं कटती है। यही पीछे पछताना है। मनुष्य जन्म की आयु समाप्त होने पर कोई उपाय काम नहीं आता है। म:फ: है कि मनुष्य जन्म की प्राप्ति का अवसर फेर जल्दी नहीं मिलता।

जिण मुख में हरि नाम, कर्म को जोर न लागे। भूत प्रेत छलछिद्र, जम दूरा से भागे॥
विषे व्याध सब जाय, रोग व्यापे नहीं कोई। चौरासी को काट, जीत जन निर्मल होई॥
देव करे प्रणाम, विष्णु ब्रह्मा शीव चावे। जन सुखिया निज नाम, ब्रह्म के माहि मिलावे ॥५॥

जिस मुख से राम नाम का सिमरण बराबर होता है। तो वहां करमो का जोर नहीं लगता। भूत प्रेत छल छिद्र व जम के दूत दूर से देखते ही भाग जाते है। विषयों की व्याधी का सब रोग चला जाता है। सिमरण करने वाला जन चौरासी याने जन्म मरण से रहित होता है यही निर्मल होना है। देवता प्रणाम करते है ब्रह्मा विष्णु महेश भी उनको चाहते है। म.फ. है कि निज नाम की भक्ति करने से ब्रह्म पद की प्राप्ति हो जाती है।

ज्यां शिवरया हरि नाम, जीत निशाण घुराया। मिल्या ब्रह्म में जाय,
शुन्य में शहर बसाया॥ ज्यों जल गलियो लूण, समुद्र शिलता समाणी।
प्राण मिले यो जाय, नाम जग मांय निशाणी। कहा कहूं इण नाम की,
आगे अगम लखाय। जन सुखिया रट नाम रे, गरक हुवा इण मांय ॥६॥

जिन्होने निज नाम का सिमरण किया है वो ब्रह्म पद में मिले है। शून्य में जाकर मिलना ही शून्य में शहर बसाना है। नमक जल में घुलकर जल रूप हो जाता है। नदियां समुद्र में गिर कर समुद्र रूप हो जाती है। ऐसे ही प्राण ब्रह्म में जाकर ब्रह्म रूप हो जाते है। जगत में उनके नाम की महिमा रहती है यही निशाणी रहना है। म:फ: है कि इस नाम के लिये क्या कहूं आगे अगम याने के:पद आ: पद का अनुभव होता है। इस नाम को रटकर आ: पद में लय हो जाता है यही गरक होना है।

राम नाम निज सार, समझ सिमरे जन सोई। स्वर्ग लोक पाताल, जग में प्रगट होई॥
जम माने मरयाद, चाल पासे नहीं आवे। दूरा से डंडोत, साध का दरशण चावे॥

मोंगा पित्तर भूत, अगत सुणता ही हरषाया। सुखराम नाम प्रताप, जीव को शीव मिलाया॥ ७॥

राम के निज नाम को समझकर सिमरण करता है तो निज नाम का खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड में अनुभव होता है। यही स्वर्ग व पाताल व जगत में प्रकट हो जाता है। सतगुरू विधि से भजन करने वालों के यमराज पास नहीं आता है, दूर से प्रणाम करता है। वो भी साध का दरशण चाहता है। सिमरण करने वालो के कुटुम्ब में मोगा पितर भूत व अगत याने नरक में जाने वाले हो तो उन्हे भी हरष होता है कि अब हमारा उद्धार हो जायेगा। म:फ: है कि निज नाम का ऐसा प्रताप है कि जीव से शीव हो जाता है।

राम शब्द समरथ, समुद्र में सेना तारी। पृथ्वी क्रोड पचास, शेष ले सिर पर धारी॥
शब्द रटयो प्रहलाद, असुर सारा पच मुवा। गरभ गुफा शुकदेव, शब्द से पलटया सुवा॥
शंकर अमर शब्द से, पार्वती प्रलय परी। सुखिया समृथ नाम ओ, ऊमा ने अमर करी ॥ ८॥

रकार मकार याने राम शब्द में वो शक्ति है कि पत्थर पानी में तैरने लगे व समुद्र में पुल बांधकर रामचन्द्र जी ने सेना को पार कर दिया। राम नाम के प्रताप से शेष जी ने पचास क्रोड पृथ्वी का भार सिर पर उठा रखा है। प्रहलाद जी ने राम शब्द को रटा राक्षस सब पच पच कर मरे पर प्रहलादजी का कुछ नहीं बिगाड सके। इस राम के प्रताप से माता के गर्भ में सुवा से सुखदेव हो गये। महादेवजी इस राम शब्द से अमर है। पार्वती ने राम नाम धारण करने से पहले कितनी ही बार जन्म मरण में आई। म:फ: है कि इस राम की समर्थता है कि पार्वती ने उसको धारण किया याने सुमरण करने लगी तो वो भी अमर हो गई।

चली सेना कर कोप, रेत रावण की मारूं। जब बोले रूघनाथ, भक्त मेरा मैं तारूं॥
मरूं मरूं में राम, राम मुख इनके आवे। मरूं कहेत मुनेश,
सदा मेरो यश गावे॥ हा हराम में राम, जान अेक यवन तारयो।
अर्ध नाम सुण वाज, ग्रह गजराज ऊबारियो॥ सिमरो जान अजान ही,
अजामेल ऊधारियो। धुन अक्षर सुखराम कह, ररो ममो कर तारियो ॥ ९॥

राम चन्द्र जी की सेना क्रोध करके चली कि रावण की रैयत को मार देंगे, तब रामचन्द्र जी बोले मैं मेरे भक्तों का उद्धार करूंगा। मारो मारो करने से रकार मकार इनके मुंह में आवेगा। बाल्मिकी मुनि मरा मरा करते हुये ही मेरा यश गाते है। एक यवन के मुंह से हे राम निकल गया जिससे उसका ही उद्धार कर दिया। हाथी जब ग्राह के फंदे में फंस गया था तब उसके मुंह से आधा नाम निकला कि रक्षा करो, जिससे उसका उद्धार कर दिया। अजामेल ने जाने अनजाने में अपने लडके रामनारायण को पुकारा जिससे उसका उद्धार हो गया। म:फ: है कि रकार मकार का जो सिमरण करते है, वो संसार सागर से तर जाते है।

शोर शिला सिंह शब्द, कर्म कुंजर उठ भागे। गरूड पांख पनंग,
वाज सुणता तन त्यागे।। नाग निवण मुख नाम, सुधा विष को गुण जारे।
पाप रूप पाखान, नाम नोका ज्युं तारे।। बडी रसायन नाम निध,
जडी युक्ती सो जोर ले। सुखरामदास सोगी शब्द, कर्म कनक सहजा गले॥ १०॥

शोर से शिला उठ जाती है याने पत्थर टूट जाते है। शब्द रूपी सिंह से करम रूपी हाथी उठकर भाग जाते है। सर्प गरूड जी की पांख को देखते ही भाग जाता है व आवाज सुणते ही प्राण त्याग

देता है। नाग निवण जडी मुख में हो तो जहर नहीं चढता। इस तरह नाम रूपी अमृत मुंह में हो तो कर्म क्षय हो जाते है। पाप रूपी पत्थर को राम नाम रूपी नोका पार कर देती है। ऐसे ही राम का नाम पापीयों का उद्धार कर देता है। राम का नाम बडी रसायन है। सतगुरू विधि से भजन करना ही जडी युक्ति जोडना है। म:फ: है कि शब्द सोगी की तरह है। जिससे कर्म रूपी सोना सहज में गल जाता है।

चन्दन बनी जड जान, परस चन्दन बन हुवा। अमृत पियो अजान,
करे संजीवन मुवा॥ लोहा पारस परसता, जड कंचन हो जावे।
काम धेनु कलवृक्ष, मांग मनेच्छा फल पावे।। राम नाम चिन्तामणी,
मन चिन्तया कारज करे। सुखराम प्राक्रम वस्तु का, भज्या नाव भव जल तिरे ॥ ११ ॥

चन्दन की बनी जड है उसकी हवा परसने से वनों के सारे वृक्षों में चन्दन की खुशबू हो जाती है। अमृत अनजान में भी पी लेवे तो मरा हुआ जिन्दा हो जाता है। लोहे के पारस लगाने पर जड होते हुये भी सोना हो जाता है। कामधेनु व कल्पवृक्ष से मांगने पर इच्छा माफिक फल मिलता है। राम का नाम चिन्तामणी की तरह है। इच्छा माफिक सब काम सिद्ध होता है। म:फ: है कि वस्तु में अपना अपना प्राक्रम है। इस नाम का प्राक्रम ऐसा है जिसने इस राम नाम को भजा भवसागर से पार होता है।

<u>कुण्डलिया :</u> परिक्षीत शिवरयो सात दिन, षट दिलीप अेक याम। नामें तो भारी करयो,
हल्को करयो स राम॥ हल्को करयो स राम, पात ज्यों पाहण तारया।
पात भया गिरमेर, दास ज्यों मना विचारया।। सुखराम नाम चिंत्रामणी,
अे मन चिंत्या काम। परिक्षीत शिवरयो सात दिन, षट दिलीप अेक याम ॥ १२ ॥

राजा परीक्षित ने सात दिन सुमरण किया, राजा खटवांग ने एक याम यानि तीन घण्टे सिमरण किया। नामदेव जी ने तुलसी पत्र पर राम लिखकर यह चितवन किया कि इसका वजन पहाड से भारी हो जावे। और रामचन्द्र भगवान ने राम के नाम को लिखकर यह चितवन किया कि यह बडे बडे पत्थर हल्के हो जावे। इस प्रकार पत्थरों को पानी पर पत्तों की तरह तिरा दिया व पत्ता पहाड बन गया। जैसा भगवान के जनों ने संकल्प किया वैसा ही हुआ। म.फ. है कि नाम चिंत्रामणी की तरह है, जो भी मन में संकल्प करते हैं, उसी माफिक उनका कार्य हो जाता है।

<u>कवित्त:</u> सांचो है हरिनाम, और सब जग ही झूंठे। ज्यों जल की पिणीयार,
होय उपजे सब फूटे॥ निश्चय रहे न कोय, अन्त सब ही चल जावे।
परदेशी की प्रीत, ताहि में क्या सुख पावे॥ भाण्ड भया इण संग,
नाम केता धर लाया। केवल बिन सुखराम, नाम अेसा दिखलाया ॥ १३ ॥

परमात्मा का नाम सच्चा है और संसार झूंठा है जैसे पानी के बुदबुदे पैदा हो कर फूट जाते है इसी तरह जगत में कोई निश्चल नहीं रहता सब चले जाते है। परदेशी से कोई प्रीति कर लेता है तो उसमें क्या सुख मिलता है। भांडों का संग करेगा तो तेरे को कई नाम धारण करने पडेंगे यानि चोरासी लाख योनियों के नाम तू धारण करेगा। अर्थात चौरासी में चला जायेगा। म:फ: है कि केवल की भक्ति याने जो नाम बिना धरा है जो आत्म चेतन के आधार पर प्रगट होता है उससे चौरासी मिटती है। आधार के नाम से नहीं मिटती।

॥ इति सुमरण का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 गुप्त नांव सिमरण का अंग 卐

गुप्त नांव शिव अमर, शेष शिवरे सब जाने। गुप्ता नाम कबीर हीर
बिणज्या छिप छाने॥ गुप्त धरयौ ध्रुव ध्यान, गर्भ सांचा शुक ध्यानी।
शिवरी पद रज पावन, सुध सरिता बन छानी॥ पिपो धस्यो पाताल में,
बाल्मिकी क्यों नीर झरे। सुखरामदास सांचो सो ही, गुप्त नाम हृदय धरे ॥ १ ॥

शिवजी नाम का गुप्त सिमरण करने से अमर है। शेष जी भी गुप्त सिमरण करते है। इसको सब जानते है। कबीरजी महाराज ने भी गुप्त नाम का भजन किया यही हीर बिणज्या छिप छाने है। ध्रुवजी ने भी गुप्त ध्यान किया। सुखदेवजी ने भी माता के गर्भ में बारह वर्ष तक छिप कर ध्यान किया। शिवरी के चरणो की रज पम्पासुर में लगी जब ही वह शुद्ध हुआ। पीपाजी द्वारका में भगवान के दर्शन करने गये जब मालुम हुआ कि भगवान तो द्वारका समेत समुद्र में समा गये तो पीपाजी समुद्र में कूद गये। वहीं उनको भगवान के दर्शन हो गये। बाल्मिकी जी भी इसी नाम से पवित्र हो गये। म:फ: है कि सच्चा वही है जो गुप्त नाम को हृदय में धारण करता है।

गुप्त दीप घट शब्द, पवन भय प्रगट जाहीं। होय रहे ऊजियार भवन,
भोडल की नांई॥ ग्यान मुकुर दुरबीण, देखकर विघ्न निवारे।
बेडा भव जल मांहि, भजन भव आपो तारे॥ प्रगट नाम नृपत मरयो,
अरू पांव चली प्राक्रम जडी। जन सुखिया बिणजे जतन, रतन अमोलक गठडी॥ २ ॥

दीपक गुप्त रहता है तो उसे हवा का भय नहीं रहता है। प्रगट में रहने पर हवा का भय रहता है। भोडल के भवन में दीपक के जोने पर प्रकाश होता है। ऐसे ही घट में शब्द की जागृति होने पर सारे शरीर में शब्द का प्रकाश हो जाता है। भक्ति में किसी प्रकार की बाधा हो तो ग्यान रूपी दुरबीन को जो कर दूर कर ले। जीवन रूपी नोका भवसागर में पडी हुई है। भजन करने पर भवसागर से पार होते है। राजा गुप्त भजन करता था। एक दिन नाम प्रगट हो गया तो राजा ने प्राण त्याग दिये। कोई जडी होती है उसमें प्राक्रम है कि वो चलने लग जाती है। ऐसे ही निज नाम में यह प्राक्रम है कि वो आगे से आगे बढता जाता है। अमोलक रतन का व्यापार जतन से होता है इसी तरह निज नाम का प्राक्रम है जैसे रतन का प्रकाश अंधेरे में हो जाता है, ऐसे ही निज नाम का प्रकाश घट में हो जाता है।

काल कुठारा जग बनी, बचे गुप्ता जन चन्दन। छिपे सिंह बन बीच,
पडे पशवादिक बन्धन॥ छिपे पनंग मणी काज, नाज गुप्ता धर बावे।
समज्या पुरूषा सेन, सुन्दरी गर्भ दुरावे॥ गुप्ता भजन गम्भीर,
सर रत्ना रास बिरोलिये। जन सुखिया जन जोहरी, हर हीरा मन पो लिये ॥ ३ ॥

जग वन है। इस वन को काटने के लिये कुल्हाडा काल है। इस काल रूपी कुल्हाडे से चन्दन की तरह जो जन गुप्त भजन करते है। वो ही बचते है। सिंह वन के बीच छीपे रहते है। व पशु बंधन

में पड जाते है। सांप मणी के लिये वन में छिपा रहता है। अनाज भी जमीन में गुप्त बोया जाता है। समझदार पुरूष सेन याने इशारे में समझते है। स्त्री अपने गरभ को छिपाये रखती है। गुप्त भजन गम्भीर है। सर यानि समुन्द्र में हीरे होते हैं जो मरजीवा होता है उसे ही हीरे मिलते है। म:फ: है कि जो गुप्त भजन करने वाले जन जोहरी की तरह है। जिन्होंने परमात्मा रूपी हीरे को अपने मन में पो लिया है।

भील भवन सुल्तान, मोल मिश्री का हीरा। बुजत मीन मराल,
मानसर कैसो बीरा॥ विप्र मनु सुर चरित्र, वीर विक्रम सो जांणे।
कोई पेश पुतली लूण, समुद्र को थाह बखाणे॥ डाकण अक्षर सब कहे,
पढे जो डाकी पाठ मुख। जन सुखिया संसार में, बरण्या जाय न ब्रह्म सुख ॥ ४॥

बादशाह रास्ता भटक कर एक रात भील की कुटिया पर रह गया। बादशाह ने भील को हीरा दे दिया उसने बेसमझी से हीरे को दो चार मिश्री के टुकडे में बेच दिया। मछली राजहंस को पूछती है कि तुम्हारा मानसरोवर कैसा है। ब्राह्मण के मन के विचार व देवताओं के चरित्र को राजा विक्रमादित्य जानता था। नमक की पुतली समुद्र में घुसकर उसका थाह नहीं ले सकती, इसी तरह आत्मा परमात्मा का थाह नहीं ले सकती, उनमें लय हो सकती है। डाकण के भी ढाई अक्षर है उनको विधि से रटने पर उसके गुण प्रकट होते है, मुंह से डाकण कहने से नहीं होती, इसी तरह नाम को सतगुरू विधि से रटने पर ही निज नाम प्रकट होता है। म:फ: है कि जगत में ब्रह्म के सुखों का वर्णन नहीं हो सकता।

शब्द घोर लिव बरत, सुरत नटणी ज्युं लोटे। ऊडि गुडि असमान,
बन्धि लिव बोरू उलटे। कर्म कूप लव नेज, कलश मन करसण पावे।
पडेस निकसे नांह, बन्धी लिव बोरू आवे॥ पाप लोह पिंजर जडियो,
मरजीवा समुंदा जुरे। जन सुखिया भव सिन्धु में, लिव बन्धी नोका तिरे ॥ ५॥

लिव बन्ध भजन से ही शब्द की घोर अखण्ड अनुभव होती है। सुरत निरन्तर शब्द में लगी रहती है। यह नटणी का लौटना है। नटणी रस्से पर नाचती है व उसकी सूरत रस्से पर लगी रहने से नहीं पडती। पतंग आसमान में उडता है, उसके डोरी बन्धी हुई है तो वो आगे भी जाती है व पीछे भी आती है। इसी तरह लिव बन्ध भजन से शब्द निरन्तर अनुभव होता है लिव टूटने पर अनुभव नहीं होता, यही पीछा आना है। कर्म रूपी कुंए में मन रूपी कलश लिव बन्ध भजन रूपी डोरी में बंधा हुआ है। तो डूबने नहीं पावेगा लिव लगी रहती है तो मन भजन में बराबर लगा रहता है। लिव नहीं लगने पर भजन में मन नहीं लगता यही रस्सी टूटना है। लिव बन्ध भजन से कर्मो का क्षय होता है। लिव बन्ध भजन के बिना कर्म क्षय नहीं होता यही कुये में गिरना है। पाप रूपी लोहा शरीर में जडा हुआ है। मरजीवा भी लोहे के पिंजरे में बैठकर समुद्र के तह से रत्न ले आता है। इसी तरह सतगुरू विधि से भजन करने पर सतशब्द की जागृति होने से पापों का नाश हो जाता है। म:फ: है कि इस भव सागर से पार होने के लिये लिव बन्ध भजन ही नौका है।

॥ इति गुप्त नाम सिमरण का अंग सम्पूर्ण॥

卐 भुरकी ग्रन्थ 卐

श्री गुरू चरण सरोज में, नवण करूं कर जोड। राम नाम की भुरकी लेह, सो मेरे शिर मोड ॥ १ ॥

श्री गुरू महाराज के चरण कमलो में हाथ जोडकर सिर निवाता हूं जो राम नाम की भुरकी लेते है। वो मेरे सिर पर मोड की तरह है।

ब्रह्मा विष्णु देवता, सिमरे शक्ति महेश। राम नाम जां दिन जप्यो, धरणी धरी फनेश ॥ २ ॥

ब्रह्मा, विष्णु, महादेवजी, शक्ति व देवता यही सिमरण करते है। शेषजी ने भी राम नाम का सिमरण करने से ही पृथ्वी को धारण कर रखा है।

धर्म सनातन थेट सुं, नवो पंथ कह नीच। तां गल जंवरो फांस दे, न्हाके नरकां बीच ॥ ३ ॥

राम नाम रटने का यह सनातन धर्म आदि से है। इसको नया पंथ कहने वाले नीच है। उनके गले में यमराज फांसी लगा कर नरक में डालते है।

राम नाम सत मंत्र है, पापी कह फितुर। लख चौरासी जुण सो, वे भुक्ते बेसूर ॥ ४ ॥

राम नाम सच्चा मन्त्र है। इसको पापी फितुर बताते है। वे बिना कसूर के चौरासी लाख योनियों में भटकते है।

प्रगट सांचा पंथ कूं, ले भूरकी को नाम। इण भुरकी से सो ऊधरया, सो बरणे सुखराम ॥ ५ ॥

जो सच्चा पंथ जगत में प्रगट है उसको भुरकी कहते है। म:फ: है कि इस भुरकी से किस किस का उद्धार हुआ उसका वर्णन करता हूं।

छन्द : **कोई कहे पाखण्ड, कोई कहे भुरकी, कोई कहे मोही फेनी।**
राम भजन का मर्म न जाणे, देखो जगत अग्यानी ॥ ६ ॥

कोई इसे पाखण्ड बताता है। कोई इसे भुरकी कहता है। कोई इसको फेनी याने फितुर कहता है। म:फ: है कि अग्यानी जगत राम भजन के मरम को नहीं जानता।

मैं पाखण्डी मैं पाखण्डी, ऐसा पाखण्ड मेरे।
राम सिमरता कबू न फिरसी, लख चौरासी फेरे ॥ ७ ॥

म:फ: है कि मैं पाखण्डी हूं मैं पाखण्डी हूं, मेरे ऐसा पाखण्ड है। रामजी का सिमरण करने वाला लख चौरासी योनियों में नही भटकेगा।

मैं तो फेनी बाबा फेनी, मैं तो ऐसा फेन चलावुं।
लख चोरासी जीव पडत है, जाकूं मोक्ष मिलावूं ॥ ८ ॥

मैं फितूर करने वाला हूं, मैं ऐसा फितूर चलाता हूं कि जो जीव चौरासी लाख योनियों में भटकते है। उनको मोक्ष में भेज देता हूं।

भुरकी सन्तो भुरकी मेरे, जामें फेर न सारा।
जो लेवे ताहि में डारूं, जग सूं कर दूं न्यारा ॥ ९ ॥

हे सन्तों मेरे यह भुरकी है। इसमें किसी तरह का फेर सार नहीं है। जो लेता है उसके ही यह भुरकी डालकर जगत से अलग कर देता हूं।

इण भुरकी सनकादिक भरम्या, साध संगत ही भावे।
सूत कथा सुण जाय पंयाला, सांझ बैकुण्ठा धावे ॥ १० ॥

इस भुरकी से सनकादिक ऋषि भरम गये उनको साध संगत अच्छी लगती है। सुतजी की कथा सुनने के लिये पाताल में जाकर, सांयकाल बैकुण्ठ में चले जाते।

या भुरकी शंकर उरधारी, जग में निर्भय होई।
पारवती के नहीं या भुरकी, मर मर जावे सोई ॥ ११ ॥

महादेवजी ने यह भुरकी हृदय में धारण की, जिससे जगत में निर्भय हो गये। पार्वती के यह भुरकी नहीं थी जिससे उसको बार बार मरना पडा।

लछमण राम विचारी भुरकी, वशिष्ठ मुनि पे आया।
सतगुरू किरपा लेकर दीनी, केवल मांही मिलाया ॥ १२ ॥

रामचन्द्रजी लक्ष्मणजी भुरकी का विचार कर वशिष्ठ मुनि के पास आये सतगुरू वशिष्ठजी ने कृपा कर भुरकी देकर केवल में मिला दिया।

हनुमान सीता से भुरकी, लक्ष्मण कूं फिर दीनी।
तीनू चूर चढया गढ चौथे, बूज्यां परगट कीनी ॥ १३ ॥

हनुमान जी ने भुरकी सीता माता से ली, सीताजी ने ही लक्ष्मणजी को दी। स्वर्ग मध्य पाताल को पार कर चौथे पद याने ब्रह्मण्ड में पहुंचे, पूछने पर प्रगट की। लक्ष्मणजी ने सीताजी को पूछा जब भुरकी का भेद बताया।

गोपीचन्द भरतरी दोनो, गोरख चरणा लागा।
ज्यों आ भुरकी ही त्यों लीनी, जुरा मरण भव भागा ॥ १४ ॥

गोपीचन्दजी भरतरीजी दोनों ने गोरखनाथजी के चरणों की शरण ली। उन्ही से भुरकी लेकर जैसे थी वैसे ही करके जन्मने मरने का भय मिट गया व जगत में अमर हो गये।

मछन्दर के या ही भुरकी, ठीकर ले उरधारी।
कतरश्याम या भुरकी लेकर, चारूं धात बिडारी ॥ १५ ॥

मच्छन्दर नाथ जी ने अपने गुरू ठीकर जी से यह भुरकी लेकर हृदय में धारण की। कार्तिक स्वामी ने यही भुरकी लेकर चारूं धात बिडारी यानि चारों काया को जीतकर जन्म मरण से रहित हो गये।

दत्त दिगम्बर के या भुरकी, हस्तामल के आया।
बारा बरस मून में बीता, भुरकी नांख बुलाया ॥ १६ ॥

दतात्रेयजी के पास यही भुरकी थी। वो हस्तामल मुनि के पास आये। हस्तामलजी ने बारा बरस की मून ले रखी थी, सो भुरकी डालने पर बोलने लग गये।

शंकराचार्य ब्राह्मण होता, जन्म मरण की केता।
दत्त दिगम्बर भुरकी न्हाकी, बेद छाडियां बेता ॥ १७ ॥

शंकराचार्यजी ब्राह्मण थे। त्रिकालदर्शी थे। जन्म मरण की कह देते थे। दतात्रेयजी ने भुरकी डाली तो वेदों के ग्यान को छोडकर भजन में लग गये।

जन प्रहलाद पढण कूं जाता, श्रीयादे समझाया।
भुरकी पढी तजी कुल विद्या, राम नांव लीव लाया ॥ १८ ॥

प्रहलादजी पढने को जाते थे तो श्रीयादे ने समझाया जब उन्होने कुल की विद्या छोडकर भुरकी

पढी। राम नाम से लीव लगाकर भजन किया।

भुरकी में भरम्यो ऊ भारी, माता पिता गुरू पाल्यो।
कर कर धेख खप्यो कुल सारो, यों भुरकी घर घाल्यो ॥ १९ ॥

प्रहलादजी भुरकी में खुब रमें। माता पिता, गुरू ने बहुत समझाया। सब राक्षस उनसे द्वेष कर नष्ट हो गये। इस तरह भुरकी ने करामात बताई। यही घर घालना है।

दस हजार होता दक्ष पुत्र, राज काज बन आया।
मेल्या मुक्त मिल्या गुरू नारद, यो भुरकी भरमाया॥ २० ॥

राजा दक्ष के दस हजार पुत्र थे वो राज के काम के वास्ते वन में आये वहां उन्हे नारदजी मिल गये। उनको भजन करवा कर अपना उद्धार करने के लिये जंगल में भेज दिया इस तरह भुरकी ने उन्हे भरमा दिया।

दियो श्राप सहयो रिष नारद, भुरकी पांव पसारया।
तीन लोक में फिर फिर डारी, केता ही जीव ऊधारया ॥ २१ ॥

राजा दक्ष ने नारदजी को श्राप दिया, नारदजी ने श्राप सहन किया, इस तरह भुरकी सब जगह फैली तीन लोको में फिर फिर कर नारद जी ने भुरकी डाली, जिससे कितने ही जीवों का उद्धार हो गया।

राजा जनक होम जीग करता, कहयो जोगेश्वर आवे।
पुरोहित अग्र मिल्या ऊठ सामा, यूं भुरकी मन भावे ॥ २२ ॥

राजा जनक यज्ञ हवन करते थे। किसी ने कहा वो जोगेश्वर आ रहे है। यज्ञ के पुरोहित व अग्नि उठ कर सामने गये। इस तरह भुरकी सब को अच्छी लगने लगी।

दान पुन्नः देता दिन बीता, भक्त बीज नहीं ऊगा।
नव जोगेश्वर भुरकी न्हाकी, पाय ग्यान पद पुगा।। २३ ॥

राजा जनक को दान पुन्न करते कितना ही समय बीत गया। भक्ति घट में प्रगट नहीं हुई। नो जोगेश्वरो ने भजन की विधि बताई। इस तरह ग्यान को प्राप्त कर परम पद की प्राप्ति की।

वेद व्यास का सुत सुखदेवा, ग्रह तज वन बसाया।
आगम निगम झूंठ जग जाण्यों, भुरकी तेज बधाया ॥ २४ ॥

वेदव्यासजी के लडके सुखदेवजी माता के गरभ से निकलते ही जंगल में चले गये, वेद पुराणों को व संसार को झूठा जानकर भजन में लग गये, यही भुरकी तेज बधाना है।

अमरीष राजा बडभागी, सत एक वृत नारी।
भुरकी सुण दुर्वासा कोप्यो, लग्यो चक्र जीण लारी ॥ २५ ॥

अमरीष राजा बडे भाग्यशाली थे, सतभाषी व एक पत्नीव्रत थे, उनकी भक्ति की तारीफ सुनकर दुर्वासा ने राजा पर क्रोध किया तो दुर्वासा के पीछे सुदर्शन चक्र लग गया।

वशिष्ठ मुनि अरू अरूंध्वती से, तृणवत भुरकी लीनी।
विश्वामित्र छुडाई बीच में, जूण अधोगत दीनी ॥ २६ ॥

वशिष्ठ मुनि व उसकी स्त्री अरूंध्वती से तृणवत ने ली थी। विश्वामित्रजी ने बीच में ही छुडा ली तो तृणवत की अधोगति हुई याने बीच में ही लटक गये।

राजा रघु चल्यो गुरू करणे, काशी कपिल बैरागी।
जडभरत बोल सुणाई भुरकी, अध बिच सेना त्यागी ॥ २७॥

राजा रघु काशी में कपिलजी को गुरू करने जा रहे थे तो जडभरतजी ने रास्ते में ही भुरकी सुणाई तो बीच में ही सेना को त्याग कर जडभरतजी का ग्यान धारण कर लिया।

गोरख की भुरकी भरमाया, क्रोड निनाणु राजा।
राज पाट राण्या सुत त्याग्या, बाजे प्रगट बाजा ॥ २८॥

गोरखनाथ जी की भुरकी ने निनाणु क्रोड प्रजा व राजाओं को भरमा दिया वो राजपाट रानिया व लडको को छोड गये यह प्रगट बात है।

बाल्मिक बहु कर्म कमाया, कोटी इक जीव संघारया।
नारद ऋषि ले भुरकी न्हाखी, राम ही राम पुकारया ॥ २९॥

बाल्मिकीजी ऋषि ने क्रोडो जीवों की हत्या की बहुत बहुत बुरे कर्म किये। जब नारदजी ने यह भुरकी दी याने न्हाखी तब राम राम कहने लगे।

मरू मरू केता भया मुनि, राम कहया क्यों नही होई।
बालमित यो संख बजायो, जीग राजसु जोई ॥ ३०॥

मरा मरा कहने से मुनि हो गये तो राम राम कहने से क्यों नहीं होंगे। पांडवो के यज्ञ में बालमित ने भोजन किया जब पांच्जन्य संख बजा। तब उनका यज्ञ पूर्ण हुआ।

परिक्षित कूं सिंगी ऋषि श्राप्यो, कुल मरजाद मिटाई।
सप्त दिवस में सदगत पहुंचा, सुखदेव भुरकी वाई ॥ ३१॥

राजा परिक्षित को श्रृंगी ऋषि ने श्राप दिया। ऋषि ने कुल की मर्यादा मिटा दी। यानि ब्राह्मण किसी को श्राप नहीं देता, यह मर्यादा मिटाई। सुखदेवजी की भुरकी द्वारा परिक्षित को सात दिन में सदगति प्राप्त हो गई।

षट दिलीप राजा कूं भुरकी, संत कृपा कर दिनी।
आइ मृत्यु सुणी दोय मोरथ, तुरत परम गत चिनी ॥ ३२॥

राजा खटवांग ने सुणा, उनकी मृत्यु एक प्रहर में आने वाली है। संतो ने कृपा करके भुरकी दी जिससे तुरन्त परम गति को प्राप्त हो गये।

इण भुरकी पैगम्बर तारया, सांई लोक सुं ग्यानी।
रिषभदेव तीरथंकर तारया, भरत भरत की रानी ॥ ३३॥

इस भुरकी से पैगम्बरों का उद्धार हुआ। परमात्मा के लोक से ज्ञानियों का उद्धार हो गया। भगवान ऋषभदेव व तीर्थंकरो की व भरत व भरत की रानी का भजन करने से उद्धार हुआ।

चोइसो भगवन्त ऊधारे, नव क्रोड नर नारी।
काग भुसन्डी इण भुरकी कारण, देह काग की धारी ॥ ३४॥

तीर्थंकरो के समय में नो क्रोड स्त्री पुरूषों का उद्धार हुआ। कागभुसण्डीजी ने इस भुरकी के कारण ही काग का शरीर धारण कर रखा है।

रूम ऋषी भुरकी में भीना, अमर शब्द लिव लाया।
कागभुसण्डी निरभै कीना, मोह न ब्यापे माया ॥ ३५॥

लोमेश ऋषि भुरकी में लगे। अमर शब्द राम के नांव से लिव लगाई व कागभुसण्डी को इस राम नाम से निर्भय कर दिया जिससे उनको मोह माया नहीं व्यापती।

शेष नाग या भुरकी सुमरे, रसना दोय हजारं।
लागे नहीं भार वसुधा को, विश्वामित्र विचारं ॥ ३६ ॥

शेषजी भी दो हजार जिभ्या से इस भुरकी को सुमरते है जिससे पृथ्वी का भार उनको नहीं लगता है विश्वामित्र को यह अनुभव है।

आद ऋषि ब्रह्मा को बुज्यो, भुरकी कहो विचारा।
मिल्यो ने अरथ हरि जब दीनो, होई हंस अवतारा ॥ ३७॥

आद ऋषि यानि सनकादिक ऋषि ने ब्रह्माजी को भुरकी याने भजन के लिये पूछा तो उनसे जवाब नहीं मिला तो परमात्मा ने हंस अवतार धारण कर जवाब दिया।

आ भुरकी नारद में न्हाखी, महा विष्णु बेकुण्ठा।
मिलिया गुरू छुटी चौरासी, सतगुरू बिन सब झुंठा ॥ ३८ ॥

इस भुरकी को बेकुण्ठपति विष्णु ने नारद में डाली तो उनको कालुजी धीवर गुरू मिल गये। और उनका चौरासी लाख योनियों से भुगतने का छुटकारा हो गया। सतगुरू की शरण के बिना सब झूंठा है।

ऊरगारी मन भया अंदेशा, राम राज नर भूपा।
वाइसराज सुणाई भुरकी, तब दरस्या सुर भूपा ॥ ३९ ॥

गरूडजी को शंका हुई कि रामजी मनुष्य रूप में राजा है। तब काग भुसण्डी ने भुरकी सुणाई। जब रामचन्द्र जी भगवान मालुम हुये।

भुरकी गजानन्द सुण पाई, कुण बड पण गण ओली।
पचास क्रोड पृथ्वी परदक्षिणा, ऊभे अंक अे दोली ॥ ४० ॥

देवताओं में पहले किसकी पूजा होगी, तब गणेशजी ने इस भुरकी को सुणा तो इस ऊभे अंक याने रकार मकार के परिक्रमा दे पचास क्रोड पृथ्वी की परिक्रमा लग गयी।

मारकण्ड मुनि महा प्रलय, माया मना बिलासी।
भीड पडी जब सुमरी भुरकी, अमर भया अविनासी ॥ ४१ ॥

मारकण्डे का मन माया में लग रहा था। महाप्रलय के समय जब विपत्ति आई तो भुरकी का सिमरण किया जब वे अमर अविनाशी हो गये।

अगस्त मुनि इण भुरकी सुं, खल कूं भक्षण किया।
भागो चोर शरण समुद्र की, तीन चलु भर पिया ॥ ४२ ॥

अगस्तजी ने इस भुरकी से राक्षस को पकडा वो समुद्र में घुस गया तो उन्होने समुद्र को तीन चलु में पी लिया।

मुनी यागबल के या भुरकी, भारद्वाज कूं भाखी।
शिवरी भक्त सुतीक्षण पाई, भृगु वृस्पती साखी ॥ ४३ ॥

याज्ञवल्क्य मुनी के यही भुरकी थी। भारद्वाज को यही बताई। फिर उनसे शिवरी को, सुतीक्षणजी को मिली। इसके भृगुजी व बृहस्पतिजी साक्षी है।

चवदे मुनी भया चिरंजी, एताहि भूप मनन्तर।
भुरकी जपी जके जन सिद्धी, ऐसा ही वैध धनन्तर ॥ ४४ ॥

इस भुरकी से चवदे मुनी चिरंजीवी हो गये। इतने ही मनन्तर राजा चिरंजीवी हो गये। जिन्होने भुरकी का जप किया उन जनों को सिद्धी मिली। उनमें धनन्तर वैद्य है।

गोकरण ऋषि सुख ज्यों भुरकी, धुंधमार कूं दीनी।
अंश बंश पुरूष हुता अगती, सबकी मुक्ति कीनी ॥ ४५ ॥

सुखदेवजी से यह भुरकी गोकरण ऋषि को मिली। उनसे धुंधमार को मिली। उसके वंश में जितने पुरूष नरक में मिल गये थे, उन सब की मुक्ति हो गई।

दया ऋषि मुनी पुत्र दुज पुत्री, राम नाम सत जाण्यो।
तीन बेर कह सुपच कियो सुच, ताको दोष बखान्यो ॥ ४६ ॥

दयामुनि वशिष्ठजी के दोहिते थे। उन्होने राम नाम को सच्चा जाना। उन्होने एक ब्राह्मण की गोहत्या का पाप तीन बार राम राम कहलाकर उतारा तो दयामुनि का दोष बताया।

कपिलमुनि करदम के, ग्यान दियो माता कूं।
अष्टा बक्र उदर में बैठा, पुरू तर कियो पिता कूं ॥ ४७ ॥

कपिलमुनि ने अष्टावक्रजी की माता करदम को ग्यान दिया उस समय अष्टावक्रजी गरभ में थे तो पिता को भी पुरू तर कर दिया।

छाडयो राज कियो बन आसन, तूठा त्रिभुवन राई।
अल्प अवस्था ध्रुव में भुरकी, माता सुनिती बाई ॥ ४८ ॥

छोटी उम्र में ध्रुवजी को अपनी माता सुनिती बाई से इस भुरकी का ग्यान मिला। राज छोडकर वन में चले गये व त्रिभुवनपति भगवान प्रसन्न हो गये।

पुत्र कलितर राजा हरिश्चन्द्र, संपत सर्व समरपी।
बिखो पडयो पण तजी न भुरकी, शंकर काशी थिरपी ॥ ४९ ॥

राजा हरिश्चन्द्र ने पुत्र स्त्री व सब राज सम्पती सब समर्पण कर दी। दुख पडने पर भी भुरकी नहीं छोडी और शंकर भगवान की काशी में रहने चले गये।

भागीरथ नृप सगर वंश में, धर पर गंगा आणी।
दशरथ राज प्रेम के पातर, भुरकी सब जग जाणी ॥ ५० ॥

सगर वंश में राजा भागीरथ हुये उन्होने ही गंगाजी को पृथ्वी पर लाया। राजा दशरथ प्रेम के पात्र थे ऐसे भुरकी को सब जगत ने जाना।

तिरहुत राज किया कुंड खाली, भुरकी में लवलीना।
बली राजा ऋखमांगद भीषम, सब भुरकी में भीना ॥ ५१ ॥

राजा तिरहुत ने नरक कुंड खाली करवा दिये थे। भुरकी में लवलीन हो गये थे। राजा बली रूखमांगद भीष्मजी सब भुरकी में ही लग गये थे।

सतवती राणी के भुरकी, अंत पारषद आया।
ऊदे अस्त लग जीव मुवा सो, सब ही मोक्ष सिद्धाया ॥ ५२ ॥

सत्यवती राणी के भी यही भुरकी थी उसको अन्त में भगवान के पारषद लेने आये उस दिन

उदय से लेकर अस्त तक जितने जीव मरे थे उनको स्वर्ग में भेज दिया।

अर्जुन के मन भया अंदेशा, मोर ध्वज सतवादी।
सुत कूं वध सिंह कूं दिया, सत वृत धर्म अनादि ॥ ५३ ॥

राजा मोरध्वज के वास्ते अर्जुन के मन में शंका हो गई कि सतवादी नही हो सकते। जब लडके को अपने हाथ से वध करके सिंह को डाल दिया। इस तरह अनादि सत्य वृत का पालन हुआ।

पाण्डव पांच द्रोपदी राणी, उग्रसेन से राजा।
कुम्भीपाक कियो सब खाली, अे भुरकी का काजा ॥ ५४ ॥

पांचो पाण्डवो के एक ही द्रोपदी रानी थी। उग्रसेन जैसे राजा थे उन्होने कुभ्भीपाक नरक को खाली करा दिया। ऐसे भुरकी के काम थे।

भुरकी तजी भूप दुर्योधन, ब्राह्मण पंडिता बरणी।
नृप तज कृष्ण विदूर घर जीम्यां, यो भुरकी वशी करणी ॥ ५५ ॥

राजा दुर्योधन ने भुरकी को छोड दिया। ब्राह्मणों व पंडितो ने भुरकी की महिमा गाई। राजा को छोडकर भगवान कृष्ण विदुरजी के घर जीमे। इस तरह भुरकी ने वश में कर लिया।

जेमलराव मुरारी मीरा, जगतसिंह बड भागी।
रांका बांका कालु कुबा, भक्त पुरातम जागी ॥ ५६ ॥

जेमलराव की कन्या मीरा बाई कृष्ण भक्त थी। जगतसिंह बडे भाग्यशाली थे। रांका जी बांकाजी कालुजी कूबाजी के इस भक्ति की जागृति हुई।

कृष्णदास पै अहारी गलते, मान राज बड भूपा।
अलख छोड लख भुरकी लीनी, दर्शण तज भज श्रूपा ।। ५७ ।।

कृष्णदासजी गलता में रहते थे केवल दूध का आहार करते थे। राजा मानसिंह जयपुर के राजा थे उन्होने भुरकी धारण कर अलख याने नाथ गुरुओं को छोड याने दरशणीयों को छोड भजन में लगे।

षट शास्त्र ऋषियां भाख्या, ब्रह्मा चारू वेदा।
अवतार तीर्थंकर पीर पैगम्बर, सब भुरकी रा भेदा ॥ ५८ ॥

छः शास्त्र ऋषियों ने बनाये। ब्रह्माजी ने चारों वेद बनाये। अवतार तीर्थंकर पीर पैगम्बर सब ही भुरकी के भेद में लगे।

जन दरियाव संत जुग तारण, कलयुग हरि अवतारा।
भुरकी तत्व खोजना किनी, आगम निगम विचारा ॥ ५९ ॥

कलियुग में परमात्मा के अवतार रूप दरियावजी महाराज संसार का उद्धार करने हेतु पधारे। भुरकी तत्व याने राम के निज नाम की खोज की वेद पुराणों का विचार किया।

खोजी परसा अगर किलजी, जन नानक लाहोरं।
हरिदास को गोरख दिनी, यूं भुरकी सब ठोरं ॥ ६० ॥

खोजीजी परसाजी अगरजी कीलजी व लाहोर में नानक जी व गोरखनाथजी ने हरिदासजी को दी। इस तरह यह भुरकी सब जगह थी।

बलख बुखारंदा सुलतानी, चेरी चाटक सिधा।
तजिया राज भज्यो साहिब कूं, यो गध में बाजिन्दा ॥ ६१ ॥

बलख बुखारन्दा बादशाह थे। चेरी चाटक सिद्ध थे। बादशाह ने राज छोडकर परमात्मा का भजन किया बाजीनन्दजी ने गद्य में प्रार्थना की।

सेऊ समन नीका भुरकी, बगतु मात फरिन्दा।
नुरा मात पुत्र हेतम सा, सांई शीष सरिन्दा ॥ ६२ ॥

सेऊ समन बगतु की माता फरिन्दा थी। माता ने भजन करना बताया। हेतम की माता नुरा थी उसने भी हेतम को भजन में लगा दिया।

त्रिलोकचन्द घर रहयो बरतियो, नामे नाम नवेरयो।
छान छवाई गऊ जीवाई, मंदिर को मुख फेरयो ॥ ६३ ॥

तिलोकचन्द जी घर में रह कर भक्ति करते थे। नामदेव जी ने नाम के प्रताप से मरी गाय जीवा दी। भगवान ने उनकी छान छवादी और मंदिर का मुख फेर दिया।

बांदर भील रीछ निस्तारी, नाम धरू किन किन का।
पापी अनन्त ऊधारया भुरकी, अजामेल गज गिनका ॥ ६४ ॥

बांदरो भीलों रीछों का भी इस नाम से उद्धार हो गया किस किस का नाम बताऊं, इस राम के नाम से अजामेल हाथी गिनका व अनन्त पापियों का ऊद्धार हो गया।

च्यार जुगा में भुरकी चावी, धरम न जाना बिधका।
चवदे भक्त माल में चारण, अेक अेक सुं इधका ॥ ६५ ॥

चारों जुगों मे यानि सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलयुग में निज नाम से ही जीवों का ऊद्धार हुआ है यही चारों युगो में भुरकी का चावी होना है। अनके प्रकार के धर्मो व कर्म काण्डो को उन्होने नही माना। भक्त माल में वर्णित चवदेह भक्त एक से एक बढ चढ कर हुये है जैसे कि पुराणे समय में राजा महाराजाओं के चारण हुआ करते थे।

अनन्त क्रोड ब्रह्म ऋषि ऊधरिया, अनन्त कोट सो राजा।
प्रजा अनन्त कोट पद पाया, बाजे प्रगट बाजा ॥ ६६ ॥

अनन्त क्रोड ऋषियों व अनन्त क्रोड राजाओं का ऊद्धार हुआ। अनन्त क्रोड प्रजा को पद की प्राप्ति हुई जो जगत में प्रगट है।

च्यार सम्प्रदा बावन द्वारा, सब भुरकी का शरणा।
ता सतसंग अनेक जना का, मिटया जामण मरणा ॥ ६७ ॥

चारों सम्प्रदाय व बावन द्वारे वालों ने भुरकी की शरण ली। उनके सत्संग से अनेक मनुष्य जन्म मरण से रहित हो गये।

नव निनांणु द्वादश क्रोड, सप्त पांच जुग जांणे।
गिणती करे कोण इण घर की, पहुंता जके पिछाणे॥ ६८ ॥

बारह जुगों में एक सौ बीस करोड जनों ने इस भुरकी की महिमा को जाना है। इस घर की गिनती कौन कर सकता है। पहुंचे हुए है वही जान सकते है।

ररंकार है तारक मन्तर, भरम्योडा कहे भुरकी।
सवा लाख जन मैं तारू, सपत सुणो सतगुरू की ॥ ६९ ॥

यह ररंकार उद्धार करने वाला मंत्र है, भरमें हुए भुरकी कहते हैं। सतगुरू की शपथ खाकर

कहता हूं कि मैं भी सवा लाख का उद्धार करूंगा। पहले ग्रंथ बनाया तब सवा लाख का हुक्म था परन्तु बाद में बढा दिया।

सुरज सोम भूप जग वंशी, जम न हकीकत पावे।
भुरकी भजी जके जन अमर, व्यास भागवत गावे ॥ ७० ॥

सूर्यवंशी व चन्द्रवंशी राजाओं ने भुरकी को नहीं जाना, जमराज भी उसके प्राक्रम को नहीं जानते। जिन्होने भजन किया वे जन संसार में अमर है। व्यासजी ने भागवत में ऐसा कहा है।

रामानन्द या भुरकी लाया, भुरकी कला न पाई।
दास कबीरे प्रगट कीनी, ले सब मांय नकाई ॥ ७१ ॥

रामानन्दजी महाराज यह भुरकी लाये पर वह नहीं फैली। कबीरजी महाराज ने इसको प्रगट की और इस भुरकी को सब में डाली।

पीपा धना तिलोकचन्द सजना, सुरगुण करता भाई।
भुरकी की कल कीमत पाई, निरगुण सुं लिव लाई ॥ ७२ ॥

पीपाजी, धन्नाजी, तिलोक चन्दजी सजनाजी सुरगुण की भक्ति करते थे। जब भुरकी का गुण मालुम हुआ तो निरगुण से लिव लगाई।

संतदास स्वामी में भुरकी, गुरू आकाश सुणाई।
माला तजो भजो मुख रसना, प्रेमदास भल पाई ॥ ७३ ॥

स्वामी संतदासजी महाराज को आकाशवाणी हुई कि माला छोडो व मुख रसना से भजो तथा प्रेमदास जी महाराज को संतदासजी महाराज से भली प्रकार मिली।

दादु दरिया सा ले भुरकी, देखो दया विचारी।
केताई जीव अधोगत जाता, किया मोक्ष इधकारी ॥ ७४ ॥

दादूजी, दरियाव जी महाराज ने इस भुरकी से कितने ही जीवों पर दया की। जो जीव नरको में जाने वाले थे, उनको मोक्ष की प्राप्ति करा दी।

रैण शाहपुरा में भुरकी, पुन खेडापे जागी।
भरम करम सबका कर दूरा, राम रटण धुन लागी ॥ ७५ ॥

यह भुरकी रेण में, शाहपुरा में, खेडापा में, जागृत हुई। सबके भरमों करमों को दूर करके राम रटन की धुन लगी।

राम नाम की भुरकी मेरे, सब सन्ता ले धारी ।
कह सुखराम भक्त या केवल, आवागवण निवारी ॥ ७६ ॥

म:फ: है कि मेरे राम नाम की भुरकी है। इसको सब सन्तों ने धारण किया है यह केवल की भक्ति है इससे ही जन्मना मरना मिटता है।

भुरकी लहे जके जन जीता, बिन भुरकी जम मारे।
कह सुखराम भक्त या केवल, जमलोक जन तारे ॥ ७७ ॥

जिन्होने इस भुरकी को धारण किया वो जन जीते, बिना भुरकी के जम मारता है। म:फ: है कि यह केवल भक्ति है। इससे जमलोक से जनों का उद्धार होता है।

साध संगत जुग जुग में कीनी, जिन्ही कारज कीना।
राम संता बिन आन बतावे, सो ही करम का हीना ॥ ७८ ॥

जिन्होंने संतों की संगत जुग जुग में करी। उनका कार्य हो गया। जो राम व संतों के ब्रह्म ज्ञान के बिना शरीर पूजा से मुक्ति बताता है वो करमहीन है।

करमहीना के क्रोड विघ्न है, साथ संगत सुं लाजे।
कह सुखराम जके हरि बेमुख, भुरकी कह कह भाजे ॥ ७९ ॥

जो कर्म हीण है। उनको क्रोड बाधाये है। उनको संतो की संगति से लज्जा आती है। म:फ: है कि जो राम बेमुख है वह भुरकी कहकर दूर भागते है।

कलजुग को धर्म राम नाम है, और धर्म नहीं चाले।
कह सुखराम जके करम हीना, राम सिमरता पाले ॥ ८० ॥

कलयुग का धर्म राम का भजन है और धर्म नहीं चलते है। म:फ: है कि जो कर्महीण है वे राम का नाम सिमरण करने से मना करते है।

जिण या भुरकी लेकर दीनी, भरम करम सब खोया।
कह सुखराम पाप हुआ प्रलय, लेत करम सब रोया ॥ ८१ ॥

जिन्होने इस भूरकी को धारण किया व दूसरों को धारण कराया, उनके भरम करम सब समाप्त हुए। म.फ. है कि पाप प्रलय हो गये व करम रोने लगे।

श्वान काग सूकर जग सारो, हंस बिरती नहीं जाणे।
नीर क्षीर का न्याव सुणे जब, निन्दक निन्दा ठाणे ॥ ८२ ॥

सारे जगत ने कुत्ते काक व सूकर की सी वृत्ति धारण कर रखी है। हंस वृत्ति नहीं जानते। जब दूध और पानी यानि माया और ब्रह्म तीन लोक और चौथा लोक का अलग अलग निरणा सुनते है तो निन्दक निन्दा करते हैं।

संवत अठारह बरस एक में, सतगुरू किरपा कीनी।
कह सुखराम भाग धिन मेरो, सतगुरू बिरम दीनी ॥ ८३ ॥

म:फ: है कि संवत १८०१ में सतगुरू ने कृपा की। मेरा भाग्य धिन है सो सतगुरू बिरमदासजी महाराज से यह भुरकी मिली है।

या भुरकी निज नांव की, पारायण को जीव।
कह सुखराम हरष कर लेवे, तो मिले निरंजण पीव ॥ ८४ ॥

यह भुरकी निज नांव की है। जो जीव इस भवसागर से पार होना चाहता है तो म:फ: है कि वो इसे हरष करके लेता है तो उसे निरंजन निराकार ब्रह्म की प्राप्ति हो जाती है।

भुरकी है भवतारणी, चौरासी है छन्द। पढया सुण्या कट जावसी, चौरासी का फन्द ॥ ८५ ॥

यह भुरकी भवसागर से पार उतारने वाली है। इसमें चौरासी छन्द है। इसके पढने सुनने से चौरासी का फन्द कट जाता है।

॥ इति श्री भुरकी ग्रन्थ सम्पूर्ण ॥

卐 उजियागर पुरुष का अंग 卐

कवित्त : पाप, कुमत, सुण घात, झूंठ , जारी सो निन्दा। मेहरी खिसे मार, मन कुंडे दिस सन्दा ॥
जुवा फांसी मूंठ, माय डाकण नहीं केहे। गोला सामी बात, निरस पडदे सब लेहे॥
बुरी बात जे नर करे, बुज्या कहे न आय। ऊजियागर सुखराम कह, चोडे देत बजाय ॥ १ ॥

पाप करने वाले, कुमत रखने वाले, घात करने वाले, झूंठ बोलने वाला, जारी करने वाला, निन्दा करने वाला, परस्त्री का संग करने वाले, जेब काटने वाला, कुंडा पंथ में रहने वाले, जुंआ खेलने वाले, फांसी लगाने वाले, मुंठ चलाने वाले यह लक्षण किसी में हो या जिसकी मां डाकण हो तो कोई किसी को नहीं कहता। जो जो खराब बात है उसको सब छिपाना चाहते है। जिसके पेट में बात नहीं रूकती ऐसे मनुष्य के सामने कोई बात नहीं करते क्योंकि वह सुनते ही प्रगट कर देता है। म:फ: है कि ऊजियागर यानि कि अच्छी बात को कोई नहीं छिपाता। खुशी से प्रगट कर देते है।

ज्यां पाया तत्त भेद, प्रगट सो किया पसारा। शिष्य चेला संग थाय, ग्यान सो ग्रन्थ ऊचारा॥
ठाम ठाम पर धाम, जुग मेला सो किया। भिन्न भिन्न कर समझाय, भेद परमात्म दिया॥
लादो सो ही कह गया, प्रगट जग के मांय। पायो ज्यां सुखराम कहो, कुण रख्यो छिपाय ॥ २ ॥

जिण केवली भगवंतो ने ब्रह्म पद की प्राप्ति का भेद व ब्रह्म की प्राप्ति की है उन्होने उस ग्यान ग्रन्थ का निरणा निरपख सब को बताया है, छिपाया नही। जो उनके शिष्य याने ग्यान धारण करने वालो ने भी ग्रन्थो का उच्चारण किया। जगह जगह उनकी तपस्या का स्थान बन गया। सतसंग होने लग गई उन सतसंगो में परमात्मा की प्राप्ति का भेद अलग अलग तरह से समझाया। जिन्होने ब्रह्म पद की प्राप्ति का ज्ञान प्राप्त किया उन्होने सारे संसार में जाहिर किया है। म:फ: है कि किसने छिपा रखा है।

परसराम मत हरत, राज रघुनाथ जमायो। कृष्ण पख सु बांध, नाम अपनो जस गायो॥
बांध्यो पंथ कबीर, गुरां बीच राह चलाई। आदनाथ पख खैच, जैन क्रिया बिध गाई॥
बिना धरम बिन पख रे, कहो कुण जग मांय। सुण मुरख सुखराम कह, ऐकी मोय बताय ॥ ३ ॥

परसराम जी ने अपनी माता का सिर काट दिया, यह मती हर ली। तथा रामचन्द्र जी ने ऐसा राज किया जिसे याद करते है। रामराज्य के लिये नाम अमर है। कृष्ण का अवतार हुआ जिसे आज भी कृष्ण पक्ष के नाम से जाना जाता है, यही जस गाना है। कबीरजी ने गुरू की मौजुदगी में अपना नया अलग पंथ चलाया। आदनाथ याने ऋषभदेवजी ने पक्ष खेंचकर जैन सम्प्रदाय कायम की है। म:फ: है कि बिना पक्ष के कौन सा धर्म जगत में है। सब अपनी बढाई करते है। हे मूर्ख बिना पक्ष का एक तो बताओ।

जीवां तारण जहाज, संत सिरज्या जग मांही। वाणी चले सुबास,
शब्द परदेशा जाई॥ सुण सुण जागे जीव, शकल सोई दरशण आवे।
भंवर बिलुंबे कमल, भुजंग ऊड चन्दन जावे॥ साध छिपाया क्यों छिपे,
ऊजियागर जग मांय। सूरज ऊगा सुखराम कह, किसकू सूजे नांय ॥ ४॥

परमात्मा ने संतो को जीवों का उद्धार करने के लिये प्रगट किया है। जीवों को तारने के लिये संत ही जहाज का रूप है, उनके उपदेश की सुगन्ध सब जगह फैल रही है, उनके उपदेश आत्मा को परमात्मा पद की प्राप्ति कराते है। उनके उपदेशों को सुनकर जीव जागृत होते है व उनके दर्शनो को आते ह। जिस प्रकार भंवरा कमल के चक्कर लगाता रहता है। सांप उड उड कर चन्दन पर जाते है तो सत परमात्मा के निज नांव याने सतशब्द की भक्ति करते है व कराते है। वे कैसे छिप सकते है जो जगत में प्रसिद्ध है। म:फ: फरमाते है कि जब सूर्य उदय होता है तो किसको नही दिखता है।

कृष्ण देव को जोय, हनु तुलसी नहीं मान्यो। व्यास भागवत मांय, समझ गोरख नहीं आन्यो॥
दत्त देव कूं संत, मुख गह राख्यो नाही। रामानन्द कबीर शिष गुरू उल्ज्या मांही॥
भक्त माल नाभे कही, बरण्या संत अनेक। दादू कूं सुखराम कह, मांय धरिया नहीं देख ॥ ५॥

कृष्णचन्द्र जी को हनुमानजी व तुलसीदास जी ने नहीं माना याने सिर नहीं झुकाया। वेदव्यासजी ने भागवत में गोरखनाथजी की कथा नहीं लिखी। दत्तात्रेयजी को संतो ने मान्यता नहीं दी। रामानन्दजी व कबीरजी दोनो शिष्य गुरू के आपस में विचार नहीं मिले। म:फ: है कि नाभाजी ने भक्तमाल लिखी व अनेक संतो का उसमें वर्णन किया लेकिन उसमें दादू जी महाराज का वर्णन नहीं किया।

<u>कुंडलिया :</u> या याने नहीं मानिया, कहा कमती अे होय। तीन लोक के बीच में,
धिन धिन कहे सब लोय॥ धिन धिन कहे सब लोय, धाम बंधगा जग मांय।
मिल्या ब्रह्म में जाय, कम कसर कुछ नांही॥ घूघू कूं सुखराम कह,
सूरज नहीं दिसे कोय। या याने नहीं मानिया, क्या कमती अे होय ॥ ६॥

ऊपर वर्णित इन्होने इनको नहीं माना तो ये क्या कम हो गये। तीन लोक में सब संसारी धिन धिन कह रहे है। जगत में उनकी कई जगह धामें बन गई है। वो जाकर ब्रह्म में समाये है। किसी तरह की कसर नहीं रही है। म:फ: है कि घूघू को दिन में सूर्य नहीं दिखता है। इसी तरह इन्होने इनको नही माना तो क्या ये कम हो गये।

<u>कवित्त :</u> मैं तो देव असल हूं सांचो, तिण में फेर न सारा। तू सुण गोल गम है रासभ,
पाखण्ड ले सिर धारा॥ भरडे केसो भेष बणायो, दुनिया कू ठग खावे।
अंतकाल सब ही पिस्तावे, जो तुझ बुझण आवे॥ सांची सबे मान तुम लिज्यो,
वेद भागवत जोय। कह सुखराम बिना ऊजियागर, कलजुग भरडा होय ॥ ७॥

मैं तो पारब्रह्म परमात्मा का खास नाव जो सत है उसकी आराधना करता हूं, उसमें किसी तरह का फेर सार नहीं है। तूने पाखण्ड को ही धारण कर रखा है इसलिये गधे की तरह है। खाली भेष धारण कर रखा है। जगत को ठग कर खाता है। जो तुम्हारी संगत करते है उनको अन्तकाल में पछताना पडेगा। म:फ: है कि मेरी बात को सच मानो। वेद भागवत भी यही कहते है। परमात्मा की प्राप्ति के उपदेश के बिना कलयुग में सब ही भरडा भोपा है।

साखी : बांदी आदम देह में, ज्यों पंछया घुघु जोय।
यूं ज्ञानियों में सुखराम कह, बिन भेदी नर होय ॥ १ ॥

जैसे मनुष्य शरीर में दासी है। पक्षियों में घुघु है। म:फ: है कि ऐसे ही ज्ञानियों में जो मनुष्य भजन के भेद को नहीं जानते है वो इस प्रकार है।

राम नाम मुख बोलिया, सो मेरा गुरू होय।
दुजा सब सुखराम कह, शिष साखा सुण लोय ॥ २ ॥

जो मनुष्य मुंह से सतगुरू विधि से राम राम करता है। उसे गुरू पद मिलता है। म:फ: है कि संसारी सुणो दूसरे सब शिष्यों की जमात लगाते है व शाखाये खोलते है। परमात्मा की प्राप्ति नहीं कराते।

ज्यां पुज्या ऐ लोक में, यां ही सुख नहीं कोय।
ताकूं सुण सुखराम कह, वहां कैसो सुख होय ॥ ३ ॥

वर्तमान में जिनको पूजने से यहीं सुख नही मिलता है तो उस लोक में क्या सुख मिलेगा।

ललफल सु सुखराम कह, हर नहीं माने कोय।
तन बिन अरप्यो पीव कूं, फरजन कैसे होय ॥ ४ ॥

म:फ: है कि बिना मन से कोई भी कार्य करो सफलता नहीं मिलती। निज मन से कार्य करने पर ही सफलता मिलती है। ललफल याने बिना मन के कार्य को परमात्मा नहीं मानता। जैसे स्त्री अपने पति को अपना शरीर अर्पण नहीं करती है तो उसे सन्तान कैसे प्राप्त हो सकती है।

मूल गहया ही क्या मिले, फल डाला में होय।
बिन बादल सुखराम कह, बिरखा सुणि न कोय ॥ ५ ॥

मूल गहया यानि राम का नाम रटने के साथ साथ तीन लोक की मर्यादा का भी पालन करना होगा। जैसे बिना बादल के बरसात नहीं होती वैसे ही बिना ओधाधारी सदगुरू के ने: अक्षर रूपी फल नही आता।

मूल गहया बिन बायरो, ऊंचो चढयो न जाय।
फल ही सुण सुखराम कह, गोड गह तो खाय ॥ ६ ॥

म:फ: है कि उस पद की प्राप्ति करने के लिये गौड यानि ब्रह्मा विष्णु महादेव शक्ति इनको नमन करेगा तथा इनके द्वारा प्रदत्त तेरा शरीर इससे उस परब्रह्म परमात्मा के नाम को सिमरेगा तब के: पद रूपी फल खा सकता है।

करणी कर निरबल रह, आपो गह न काय।
ता के बल सुखराम कह, जहां तहां राम सहाय ॥ ७ ॥

करणी करते हुये भी अपना अपनत्व नही समझते। परमात्मा की कृपा समझते है। म:फ: है कि उनकी जहां तहां राम जी सहायता करते है।

॥ इति श्री ऊजियागर पुरूष का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 पराभक्त का अंग 卐

कवित्त : पराभक्त जहां ऊदत, ताहि अेसा लछ होई। भजन भाव नहीं ज्ञान,
सोच सांसो नहीं कोई॥ सुख दुख अेक समान, नाय सिसकारी आवे।
तीन लोक की गम, अहार पइसे भर पावे॥ केश नख नही सुधरे,
जीभ स्वाद नही कोय। पराभक्त सुखराम कह, जहां अेसा लछ होय ॥ १ ॥

पराभक्ति जहां प्रकट होती है वहां ऐसे लक्षण होते है, न तो भजन, न भाव, न ज्ञान, न सोच, न संशय होता, उसके लिये सुख दुख बराबर है। दुख का अनुभव नहीं होता। तीन लोक याने खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड का ग्यान रहता है। आहार भी साधारण करता है। केश व नखो को सुधारने का कोई भाव नहीं है। न जीभ के स्वाद का भान है। म:फ: है कि ये लक्षण पराभक्ति के है।

लागे ब्रह्म समाद, देह की सुध न होई। पाँचु गया बिलाय, मोह मासो नहीं लोई॥
करामात करतूत शकल, कूं दूर विडारी। मन सो गयो बिलाय, देव बंदत है लारी॥
पराभक्त जहां ऊपजी, दुनिया सके न मान। कोई ग्यानी सुखराम कह, लछ पिछाणे आँण ॥ २ ॥

जब ब्रह्म समाध लगती है तो शरीर की कोई सुधि नहीं रहती, पांचू विषय समाप्त हो जाते, मोह बिल्कुल नहीं रहता, करामात करतूतों से अलग रहते है। मन के कहने के माफिक नहीं चलते। देवता भी वन्दना करते है। जहां पराभक्ति उदय होती है जगत के लोग उसको नहीं जानते है, कोई ज्ञानी ही पराभक्ति के लक्षण पहचानते है।

पराभक्त के नेम, प्रेम क्रिया नहीं होई। कूंची मुद्रा जोग, जप साधन नहीं होई॥
हरष कोड नहीं सोग, करम अेको नहीं बांधे। गुण इन्द्री सब जीत, सुरत साहिब दिस साधे ॥
आया कूं मेटे नहीं, लेण काहू नहीं जाय। ये लक्षण सुखराम कह, पराभक्त जहां कहाय ॥ ३ ॥

परा में नेम प्रेम और क्रिया नहीं होती है, न कूंची, न मुद्रा, न किसी तरह की साधना होती है, न जप, न किसी तरह का साधन किया जाता है, न हरष , न सोग, न खुशी, न ही किसी तरह का कर्म बन्धन करता है। तीन गुणो को सब इन्द्रियों को जीतकर सूरत परमात्मा में लगायी रहते है जो है उसमें सन्तोष है व विशेष प्राप्त करने की इच्छा नहीं रखते। ये पराभक्ति के लक्षण है।

जात पांत कुल नांय, निरख बंदे नहीं निन्दे। बिन सतगुरू कहूं जाय, साध कोई नहीं बन्दे॥
धरम करम सुण पाप, करत देखे जग मांही। सरस निरस नहीं होय, बन्दे निन्दे जुग मांही॥
अद्‌भुत चालज अगम है, मोपे कही न जाय। पराभक्त सुखराम कह, केवल सम कहाय ॥ ४ ॥

पराभक्त जिनके उदय होती है उनके जात पांत व कुल से सम्बन्ध नहीं रहता किसी को देखने पर न निन्दा करते है, न महिमा करते है। एक सतगुरू जिससे ज्ञान मिला उसी को गुरू मानता है, दूसरे किसी साध को नहीं मानता। संसार में कोई धर्म करता है और कोई पाप करता है उसको देखकर न बुरा कहते है और न अच्छा कहते है। म:फ: है कि उनकी अद्‌भुत चाल है पूरी जानकारी नहीं होती। परभक्ति केवल के बराबर है।

रेखता :- परा सो भक्त तिण पुरूष को, ऊपजे तांही का अंग अे लछ होई।
त्याग बेराग महमंत मस्तान रे, ब्रह्म की दिष्ट सब मंड जोई॥
भाव प्रभाव आत्मा परमात्मा, अेक सो दूसरो नांय जाणे।

शुभ अशुभ ऊपाय संसार में, आप ही आपको ख्याल ठाणे ॥
नही हरष सोग संसार में रहत है, ऊलट ब्रह्मण्ड में जाय बैठा।
दास सुखराम कह परा जहां ऊपजे, तीन तज ताप कूं होय सेठा ॥ ५ ॥

जिस पुरूष के घट में पराभक्त उदय होती है, उसके लक्षण ये है। संसार की सब वस्तुओं से त्याग कर वैराग की मती में मस्त रहता है। सारे संसार को सब में ही ब्रह्म रूप देखता है। भाव से प्रभाव से आत्मा में कोई द्वेष भाव नहीं रखता है। संसार में अच्छे व बुरे उपाय है लेकिन पराभक्त प्राप्त पुरूष केवल अपना ही विचार करते है अर्थात परमात्मा की भक्ति में ही लगे रहते है। संसार में रहते हुये भी हर्ष व सोग से रहित है और सतगुरू विधि से भजन साधन करके बंकनाल में उलट कर ब्रह्मण्ड में ध्यान करते है। म:फ: है कि परा याने श्रेष्ठ भक्ति जहां उदय होती है ऐसे पुरूष के तीन ताप आध्यात्मिक अधिदेव और अदिभूत याने आधी व्याधि और उपाधि का उन पर कोई असर नहीं होता।

अन्न मुख मांय कूं देत है, ग्रास कूं नीर जल पाविया पीत भावे।
कपडा आण ओढाय को ले चले, रिजना रीस दिल मांय आवे॥
देह भरलाट मुख बैण सो सुवावणा, लोक तिहूं सब सो लांघ बोले।
भवन के ऊपरे गिगन में घर करे, जा आसमान की पोल खोले॥
चन्द्र नही सुर को रात नही दिन है, करम की रेख पर मेख मारी।
दास सुखराम कह लच्छ ये जानिये, परा सत भक्त है अेम सारी ॥ ६ ॥

पराभक्त उदय होती है ऐसे पुरूष को मुंह में प्रसाद याने अन्न देते है तो पा लेते है। पानी पिलाते है तो पी लेते है। कपडा ओढाकर चले जाते है और कोई कपडा लेकर चला जाता है तो न ओढाने पर राजी और न ले जाने वाले पर नाराज होते है। शरीर पर भक्ति का तेज भरलाट करता है मुंह से सुहावने वचन बोलता है। तीन लोक से परे केवल पद की बात कहते है। स्वांसा के ऊपर गिगन में ध्यान करना ही गिगन में घर करना है। ब्रह्मण्ड के दसवें द्वार को खोलकर केवल में जाना ही आसमान की पोल खोलना है, जहाँ न चाँद न सूर्य न रात न दिन है। म: फ: है कि करणियों से अलग होना ही कर्म की रेख पर मेख मारना है, ये पराभक्ति के लक्षण है।

चार सो ज्ञान उर सो उपजे, पांचवे ज्ञान की गम नांही।
तहां लग प्रेम उपाय की भक्त है, मून गहे प्रेम ठेराय मांही॥
लछ सो मन सूं खेच ऊर धारियो, चाल हर हाल अरू घेर लावे।
परा सो भक्त तिण पुरूष को उपजे, पेल सब मन की बास जावे॥
पांच सो इन्द्रियां जीवती तन में, उलट घर आद में नांय पैठा।
दास सुखराम कह तहां लग अंग रे, ज्ञान में सांभली धार बैठा।। ७॥

मत ज्ञान, श्रुति ज्ञान, मन परचे ज्ञान, अवध ज्ञान ये चार ज्ञान घट में उपजते है लेकिन पांचवे ज्ञान केवल ज्ञान को नहीं जानते है तब तक प्रेम उपायो की भक्ति है। मौन धारण करके प्रेम को अन्दर ठहराते है अच्छे लक्षण भी मन से धारण करते है। विचारों व करणियों से मन को वश में करने की कोशिश करते है तब पराभक्त पुरूष के मन में पांचो विषयों की वासना समाप्त हो जाती है। जब तक शरीर में पांचो इन्द्रियां अपना भोग मांगती है तब तक उस पुरूष को आद घर की प्राप्ति नहीं होती तथा उन पुरूषों ने अच्छे लक्षणों को ज्ञान सुणकर धारण कर रखा है।

बंदगी बंदगी करत रे बासना, सेंग जल जाय नहीं रहे जांकी।
तां दिन भक्त सो परा घट ऊपजे, करम जूं अेक ना रहियो बाकी॥
पांच पेमाल पचीस सो मर रहया, तीन के उपरे जीण मांडे।
नव को आसरो लांगण को आवियो, तां दिना सरब सूं प्रीत छाडे।
बीच में हट बिन बंदगी मोन गेह, ताय कूं ज्ञान नांही परा आई।
दास सुखराम कह करम कोई पहुंचियो, भरम सो ऊपनो मन मांही ॥ ८ ॥

जिन पुरूषों की भजन करते करते वासनायें समाप्त हो जाती है। ऐसे पुरूषों के घट में पराभक्ति का उदय होता है। तब एक भी करम बाकी नहीं रहता है। पांच पेमाल याने पांचो इन्द्रियों के विषय तथा पच्चीस प्रकृतियों के गुण सब समाप्त हो जाते है। तीन याने सतो रजो तमो गुण इन तीन गुणो से भी अलग हो जाता है। जब नव तत लिंग शरीर के आधार को छोड कर हंस आगे बढता है तब सारे संसार याने सबसे प्रीति छूट जाती है। कोई पुरूष हठ करके बिना भजन किये मौन धारण कर लेता है तो उस पुरूष को पराभक्ति का ज्ञान प्राप्त नहीं होता है। म:फ: है कि ऐसे पुरूषो के ऐसे कोई करम पहुंचते ही याने कर्म के उदय होते ही अनेक तरह के भरम मन में उपजते है।

॥ इति श्री पराभक्त का अंग सम्पूर्ण॥

卐 परम पिस्तावो ग्रंथ 卐

दोहा:- भक्ति बिसारी राम की, मानव देही पाय।
पछतासी सुखराम कह, लख चोरासी मांय ॥ १ ॥

म: फ: है कि मनुष्य शरीर पा कर परमात्मा की भक्ति भूल गया सो लख चौरासी में पछतावेगा।

जन्म जन्म पछतावतो, मानव देह के काज।
राम सिंवर सुखराम कह, यो अवसर है आज ॥ २ ॥

अनेक जन्मो से मनुष्य शरीर की प्राप्ति के लिये पिछताता था। म:फ: है कि राम जी का सुमरण करो यह अवसर आज आ गया है।

लख चौरासी भटक कर, नर तन पायो नीट।
सुखराम राम शिंवरे नहीं, तो पशुवा पंखी कीट ॥ ३ ॥

चौरासी लाख योनियों में भटकने के बाद मुश्किल से मनुष्य शरीर मिला। म:फ: है कि अब भी राम नहीं सिमरेगा तो पशु पक्षी व कीट योनि में जाना पडेगा।

मृत्यु लोक में मानवी, देवलोक में देव। सुखिया सब पछतावसी, भूला हरि की सेव ॥ ४ ॥

म:फ: है कि मृत्यु लोक में मनुष्य व देव लोक में देवता जो परमात्मा को भूल रहे है याने भजन नही करते सब पछतायेंगे।

चौपाई:- चोरासी बंछ तो नर देही, भक्ति काज पछतायो।
हल होशियार करो नर शिवरण, यो अवसर अब आयो ॥ ५ ॥

जब चौरासी लाख योनि में था तब मनुष्य शरीर की इच्छा करता था। भक्ति करने के लिये पछताता था। अब मनुष्य शरीर मिल गया है तो होशियारी से जल्दी सतगुरू विधि से भजन करो।

भटकत भटकत नीठ मिल्यो है, मानव तन अवतारा।
सूरपत देव शकल सो बंछे, मिले न दूजी बारा ॥ ६ ॥

चौरासी लाख योनियो में भटकते भटकते मुश्किल से मनुष्य शरीर मिला। देवताओं व उनके राजा इन्द्र भी मनुष्य शरीर की इच्छा करते है पर दूसरी बार यह नहीं मिलता है।

बालक तरूण बुढापो बितो, अजहूं राम न गावे।
चौरासी फिर नर तन पायो, चाम सोवनी जावे ॥ ७ ॥

चौरासी भटक कर मनुष्य शरीर मिला। बालक जवान बुढापा बीतने आया फिर भी राम का भजन नहीं किया। मनुष्य जन्म पा कर भक्ति नहीं करता। अमुल्य समय जा रहा है, यही सोवनी चाम है।

नर तन खेत नाम कण निपजे, मोती पुल का बाया।
निपज्या साध साख फल फूली, भर गाडा घर लाया ॥ ८ ॥

इस नर शरीर में ही राम के नाम का बीज जो बोयेगा तो उस आत्मा के निज नाम रूपी अन्न निपजेगा। चौरासी लाख योनियों में नर शरीर मिलना और फिर सदगुरू विधि से राम नाम के मोती बोयेगा तो ने: अक्षर रूपी साध निपजेगा और एक श्वांस में सत्तर करोड की कमाई होगी, यही साख फल फूलेगी। तो इतनी कमाई होने से इस आत्मा के फिर किसी प्रकार के कर्म ऋण नहीं रहेंगे। और आत्मा के: पद में चली जायेगी। यही भर गाडा घर लाया है।

आज असाढु चाम सोवनी, समझ बीज नहीं बायो।
अन्तकाल काती को करसो, भजन बिना पछतायो॥ ९ ॥

जीव के लिए मनुष्य जन्म असाढ महिने की तरह होते है जिस तरह असाढ महिने में किसान बीज समझ कर नहीं बोता है तो काती में पछताता है। इसी तरह मनुष्य जन्म पा कर भेद से भजन नहीं करता तो जन्मना मरना नहीं मिटता यही अन्तकाल में पछताना है।

जहाज फटया जल थाह न आवे, आभ फटिया नहीं थूणा।
अन्तकाल ऐसी विध बरते, से नर भक्ति बिहूणा ॥ १० ॥

समुद्र में जहाज फटने पर जल का थाह नहीं आता। आकाश फटने पर थूणी नहीं लगती ऐसे ही जो मनुष्य राम भजन नहीं करते उनको अन्तकाल में नरकों व चौरासी का दुख भोगना पडेगा।

देख दूत मानव पछताणा, अन्त काल अब आयो।
सुकरत किया न राम संभाल्यो, गरभ कोल बिसरायो ॥ ११ ॥

अन्त समय नजदीक आने पर यमदूतों को देख कर मनुष्य पछताता है कि न तो मैने सुकरत किया और न रामजी का भजन किया तथा गरभवास में जो कोल किया वो भूल गया।

धर्मराय जब लेखो मांगे, किया कोल चितारे।
लीला पांव करे मुँह कालो, शिर पर मुगदर मारे ॥ १२ ॥

धर्मराय के पास जाने पर गर्भकाल में कोल किया उसको याद दिलाकर सिर पर मुगदर मारेंगे व लीले पांव व काला मुंह करेंगे।

हंस हंस किया न छूटे रोया, किया कबाडा हाथा।
घडी घडी दम दम का लेखा, चित्रगुप्त का खाता ॥ १३ ॥

हंस हंस कर के जो करम किये है अब रोने से भी छुटेंगे नहीं। सब करम हाथों से किये थे। चित्रगुप्त के पास घडी घडी का व स्वांस स्वांस का हिसाब है।

पहूंचो धणी चोर पछताणो, माल बिराना खावे।
तोडे शीष नाक कर काटे, भस्मी खाल भरावे ॥ १४ ॥

चोर चोरी करने जाता है तो मालिक नहीं होने पर चोरी कर लेता है। जब मालिक हो तो चोर को पकड लेता है, सिर फोडता है हाथ नाक काटता है तथा खूब मारता है यही भस्मी खाल भराना है।

बादशाह की हुरमा होती, लागी लार पिंजारा।
पडी पेजार पीछे पछताणी, जन्म बिगाडयो जारा ॥ १५ ॥

आत्मा सत है, माया का स्वरूप असत है, जो सत को छोड कर असत की भक्ति में लग गई है, यही बादशाह की हुरमा का पिंजारा के साथ लगना है। बादशाह की हूरमा को सब तरह के सुख हर समय मिलते है। करना कुछ भी नहीं पडता। ऐसे ही सतशब्द ने: अंच्छर की भक्ति में हर समय बिना किये अखण्ड आनन्द का अनुभव होता है। माया सरूप की भक्ति में जब तक करते है, तभी तक सुख मिलता है। शुभ अशुभ दोनों करणिया होती है, शुभ का फल सुख अशुभ का फल दुख भोगना पडता है, माया स्वरूप की भक्ति करने से जन्मना मरना नहीं मिटता यही पेजारा पडना व जन्म बिगाडयो जारा है।

आन जार को फिर फिर पूजे, हरि सुं बेमुख होई।
गिनका ज्यों जिण तिण की जोरू, पतिव्रता नहीं कोई ॥ १६ ॥

आत्मा पंच तत में आकर विषय रस बुरे विचार बुरे लक्षण बुरी वृतियों का संग है तो आन जार को फिर फिर पूजना है। परमात्मा सत है उनकी भक्ति नहीं करना ही उनसे बेमुख होना है। आन जार का संग वेश्या की तरह है। व सतशब्द की भक्ति परमात्मा की तरह है।

बिणज ठग्यो बाण्यो पछतावे, नर तन नाम बिसारयो।
कह न सके मन ही मन छिजे, शाहजी सोदे हारयो ॥ १७ ॥

व्यापारी व्यापार में ठगा कर पछताता है, ऐसे ही मनुष्य शरीर पाकर नाम को भूलने वाला पछताता है । जिस प्रकार साहूकार सौदे में हारने वाला मन ही मन छीजता है, दूसरो को कह नहीं सकता।

मृगजल धाय मृग पछताया, सेम्बल से हर सुवा।
कांच महल कुकर पछताणा, यूं ही झक झक मुवा ॥ १८ ॥

मृग को जल दिखता है लेकिन वो जल नहीं है। सेम्बल के फूल में तोता को खाने को कुछ

नही मिलता ऐसे ही संसार में सुख दिखते है पर वास्तव में सुख नहीं है। कुत्ता कांच के महल में अपनी परछाई को दूसरा कुत्ता समझ कर भूसता है और अन्त में पछताता है। ऐसे ही सब प्राणियों की आत्मा एक है शरीर अलग अलग है परन्तु मनुष्य अग्यान अवस्था में आपस में राग द्वेष करके अन्त में पछताते है।

गागर फोड चली घर रीति, पछतावे पिणियारी।
खोयो द्रव्य जन्म यूं हारयो, ज्यों जुवा खेल जुवारी ॥ १९ ॥

मनुष्य जन्म पाकर परमात्मा की भक्ति नहीं करता तो जन्म मरण नहीं मिटता। तब मनुष्य जन्म बीतने पर पछताना ही घाघर फोड पिणियारी का पछताना है। मनुष्य जन्म में श्वांसा को भक्ति के बिना व्यर्थ खोना ही जुआरी की तरह पछताना है।

पर मुल्क पक्षी पछतायो, मेरो मीत न कोई।
दूर दिशान्तर ओघट घाटा, संग भी एक न दोई ॥ २० ॥

आत्मा सत है। शरीर धारण कर तीन लोक में आया है यहां सब असत है यही पर मुल्क पक्षी पछताना व मीत नहीं कोई है। जिसको अपना समझकर प्रेम करता है वो कोई भी साथ नहीं जाता यही दूर देशान्तर ओघट घाटा व संग न एक न दोई है।

ठगा ठग्यो मुसाफिर रूनो, द्रव्य संच्यो हम खोयो।
झूंठ कपट कुमता ठग लीनो, काम विषय रस बोयो॥ २१ ॥

मुसाफिर को ठग ठग लेते है, तो रोता है इकट्ठा किया हुआ धन मैंने खो दिया है। इसी तरह प्राणी झूंठ कुमत व कपट से ठगा जाता है। कामना व विषय रस में बह जाता है।

सतगुरू शब्द दियो नहीं सिंवरयो, गाफल जन्म गंवायो।
झूंठी गला गांव में रोली, खेत चिडकलयां खायो ॥ २२ ॥

सतगुरू ने शब्द दिया परन्तु राम नाम का सिमरण नहीं किया। बेहोशी में जन्म गंवा दिया। झूंठी बांता में खेल तमाशों में लगा रहा। इधर खेत को जानवर खा गये।

मृत्यु लोक मानव पछताणा, देवलोक में देवा।
भक्ति हीण सब ही पछताणा, बिसरया हर की सेवा ॥ २३ ॥

मृत्युलोक में मनुष्य, स्वर्गलोक में देवता पछतायेंगे। भक्ति नहीं करके परमात्मा को भूल रहे है। वो सब ही पछतायेंगे।

ध्यान समाधि सजे कोई साधु, देव लोक में जावे।
जन को देख करे अव लाखा, भक्ति काज पछतावे ॥ २४ ॥

मृत्यु लोक में कोई ध्यान समाधि लगाता है तो वह आत्मा देवलोक में चली जाती है। अब मृत्यु लोक में कोई केवल्य भक्ति करके केवल पद में जाते है तो ऐसे जन को देखकर देवलोक में बैठी आत्मा इच्छा करती है कि अगर मैं भी ऐसी भक्ति करती तो के: पद में चली जाती, क्यों कि उसे पता है कि यहां से आना जाना है जन्म मरण नही मिटेगा। इसलिये पछताती है।

इन्द्रलोक में सेज सुधरमा, जहां जन बैठे जाई ।

देव ही प्रश्न करे मिल बुझे, देव ही ऊतर लाई ॥ २५ ॥

इन्द्र लोक में देवताओं की सेज यानि आसन पर भक्ति करने वाले जन जाकर बैठते है तो देवता ही आपस में प्रश्न करते है, देवता ही जवाब देते हैं।

लोका में को लोक बडो है, देहि में को देहा।
नामा में को नाम बडो है, सेवा में को सेवा ॥ २६ ॥

तीन लोक में कौनसा लोक बडा है। चौरासी लाख शरीरों में कौनसा शरीर बडा है। परमात्मा के अनेक नाम है उनमें कौनसा नाम बडा है। संगत करने में कौनसी संगत बडी है।

लोका में मरत लोक बडो है, देहि में नर देहा।
नामा में बड राम नाम है, सेवा में संत सेवा ॥ २७॥

तीन लोक में मृत्यु लोक बडा है। शरीरों में मनुष्य शरीर बडा है। परमात्मा के सब नामों में राम नाम बडा है। सेवा में संतो की संगत अच्छी है। यानि संतो का ब्रह्म ज्ञान अच्छा है।

राम नाम बिन मोक्ष न पहुंचे, नाम संचय नर देही।
मृत्यु लोक बिन साध न निपजे, किज्यो राम स्नेही ॥ २८ ॥

राम नाम के बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। मनुष्य शरीर से ही नाम का सिमरण होता है। मृत्युलोक में ही साध यानि ओधाधारी संत आते है और उनके द्वारा बताई गई विधि से राम रटने पर ने: अक्षर रूपी साध निपजेगा। जो इस प्रकार भक्ति करेगा वो राम स्नेही होगा।

या कारणिक देह सुख दुख भोगे, शिवरण पडे न संचय।
वा कारजीक देह करे सो होवे, यो नर तन सुर बंचे ॥ २९ ॥

देव योनि कारणिक है किये हुऐ कर्म का सुख दुख भोगते है, सुमरण नहीं होता, मनुष्य शरीर कारजीक है, जो चाहे वो कर सकते है। इसलिये देवता मनुष्य शरीर धारण करना चाहते है।

मनच्छा भोग सर्व सुख हाजर, सेज सुधरमा मांही।
आवागवण मिटे नही हंस की, यो सुख थिरता नांही॥ ३० ॥

देव लोक में इच्छा माफिक सब भोग व सुख हाजर रहते है, परन्तु हंस का जन्म मरण नहीं मिटता इस तरह देवलोक का सुख स्थायी नहीं है।

पहुंचे जुरा काल नित झापें, जब ही सुखरत खूटे।
बार बार पडे चौरासी, जम की मार न छूटे ॥ ३१ ॥

बुढापा आता है। काल का डर हमेशा रहता है। जब पुण्य करम समाप्त होने को होते है तो पीछा चौरासी में आना पडता है। व जमराज की मार से छुटकारा नहीं होता।

आवागवण जन्म और मरना, भक्ति बिना दुख भारी।
माया मोह विषय सुख मांहि, सांची सूझ बिसारी ॥ ३२ ॥

रामजी की भक्ति बिना आना जाना जन्मने मरने का दुख नहीं मिटता। माया मोह में विषय सुखों में सांची सूझ याने परमात्मा की भक्ति को भूल गये है।

शांकल बन्ध्यों सिंह पछतावे, अब कहो कौन छुडावे।

पाप पुण्य कंचन लोह बेडी, पांव पडया दुख पावे ॥ ३३ ॥

सिंह पिंजरे में सांकल से बंध जाता है, तो उसे कौन छुडावे। इसी तरह पाप व पुण्य से लोहे व सोने की बेडी पडती है तब दोनो का सुख दुख भोगना पडता है।

मृत्यु लोक होता नर देही, राम नाम नहीं संचा।
जप तप यज्ञ किया व्रतादिक, स्वर्ग लोक सुख बंछा ॥ ३४॥

मृत्यु लोक में मनुष्य शरीर मिलने पर राम का सुमरण नहीं किया वरन जप तप यज्ञ व्रत आदि करके स्वर्ग के सुखों की इच्छा की।

काया कलश विष रस भरयो, कहो किसी विधी छूटे।
खान पान मर्कठ की मुठी, काल कूंजडो कूटे ॥ ३५॥

यह शरीर रूपी कलश विषयों से भरा हुआ है उससे कैसे छूट सकता है। जैसे बंदर खाने के लालच में पडकर कूंजडे की मार खाता है और पकडा जाता है। ऐसे ही मनुष्य विषयों में फंस कर काल की मार खाता है याने जन्म मरण में आता है।

यो सब देव करे पछतावा, यो नर तन कब पांवा।
जन्म मरण काल भय मेटर, परमधाम कब जांवा ॥ ३६॥

सब देव पछतावा करते है कि हमें मनुष्य शरीर कब मिलेगा। जब हमें जन्म मरण काल का डर मिटाकर परमधाम की प्राप्ति हो।

अहो प्रभु मानव तन दीजे, भरतखण्ड के मांही।
केवल भक्ति करा संत सेवा, और करां कछु नांही ॥ ३७॥

देवता प्रार्थना करते है कि हे प्रभु भरत खण्ड में मनुष्य शरीर मिले वहां केवल की भक्ति करे व संतो की संगत के सिवाय कुछ नहीं करें, सतशब्द की भक्ति करने वाले ही संत है।

ब्रह्मादिक विष्णु शिव देवा, इन्द्र देव पछतावे।
धिन धिन संत भक्ति कर केवल, परम धाम को जावे ॥ ३८॥

ब्रह्मा, विष्णु, शिव व इन्द्र आदि देवता पछताते है। वे कहते है कि उन संतो को धिन है धिन है जो केवल की भक्ति करके परमधाम को जाते है।

जन्म मरण जीत मोह माया, जंवरा काल भय नांही।
अमरलोक में आण पहुँचे, जीत निशान बजाही ॥ ३९॥

जन्म मरण को, मोह माया को जीत कर अमर लोक में जा पहुंचते है। वहां काल व बुढापे का भय नहीं है यही जीत कर निशान बजाना है।

अमरलोक में बटे बधाई, संत सामा चल आवे।
देवलोक में जय जय बाणी, पैप फूल बरसावे ॥ ४०॥

जो ऐसी भक्ति करके के: पद में आत्मा जाती है तो उस अमर लोक में जो संत बिराजमान हैं आपस में एक दूसरे को बधाई देते है कि आज मृत्युलोक से ऐसी भक्ति करके आत्मा यहां आ रही है और वहां के सभी संत उसकी अगुवानी के लिये सामने जाते है। देवलोक में भी उसकी जय जयकार होती है और सभी देवता उस आत्मा पर खुशबुदार फूल बरसाते हैं।

यमदेव सौंपे कोतवाली, ऋद्ध भण्डार कुबेरा।
इन्द्र कहे मैं दास तुम्हारा, लेवो सिंहासन मेरा ॥ ४१ ॥

यमराज अपनी कोतवाली सौंपता है। कुबेरजी अपनी ऋद्धियों का भण्डार सौंपते है। इन्द्र कहता है आप मेरा सिंहासन लीजिये। मैं आपका दास हूं।

ब्रह्मा कहे घडो तुम भांडा, शिव कहे करो संहारा।
विष्णु कहे कीजे प्रतिपाला, यह बैकुण्ठ तुम्हारा ॥ ४२ ॥

ब्रह्माजी कहते है आप सृष्टि की रचना करो व मिटावो। शिवजी कहते है आप ही संघार का काम करो विष्णु कहते है यह बैकुण्ड आपका है आप ही प्रतिपाल करो।

चिदानन्द कहे इच्छा तेरी, रचना आप रचावो।
शिव ब्रह्म कहे स्वरूप हमारो, यो निश्चल पद पावो ॥ ४३ ॥

सचिदानन्द कहते है यह इच्छा आपकी है। आप ही इस संसार की रचना करो। शिव ब्रह्म कहते है यह हमारा स्वरूप है। इस निश्चल पद को प्राप्त करो।

वे निवृत पुरूष पडे क्यों प्रवृत, सर्व पदारथ त्यागी।
बंदगी तालब केवल ज्ञानी, वारी सूरत साहिब सूं लागी ॥ ४४ ॥

वे सब पदार्थो के त्यागी निवृत पुरूष प्रवृति पसारे में क्यों पडने लगे। उनकी सूरत केवल पद में है। केवल पद के ज्ञान का अनुभव करना ही सूरत साहिब से लगाना है।

सुलज्या हंस जके क्यों उलझे, देव सबे उलझावे।
तीन लोक का तजे पदारथ, चौथो लोक बसावे ॥ ४५ ॥

जो जन समझ गये हैं वो फिर नहीं उलझेंगे। सब देवता ऐसे जनों की मनुहार करते है। लेकिन वो तो पहले ही तीन लोकों के सभी पदार्थो को छोड दिया। वो तो चौथे लोक में जाना चाहते है।

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर ईश्वर, सब यो करे उदासी।
यो प्रवृत पसारो छाड हुंवा कब, निवृत देश का वासी ॥ ४६ ॥

ब्रह्मा, विष्णु, महादेव व ईश्वर सब ही उदासी कर रहे है कि प्रवृति पसारे को छोड कर निवृत देश के: पद आ:पद को कब प्राप्त करेंगे।

तीन लोक की फांस गला में, बंदगी बणे न कांई।
ऊपत खपत करो प्रतिपाला, या विपता ब्रह्म लगाई ॥ ४७ ॥

ब्रह्मा, विष्णु, महादेव कहते है कि हमारे जिम्मे तीन लोक की उत्पति व खपत करना व प्रतिपाल करने का है। हमारे जिम्मे यह दुख ब्रह्म ने लगा दिया जिससे हमसे ब्रह्म की भक्ति नहीं होती।

तीन लोक का तीनों मालिक, से अटके नहीं कोई।
बादशाह का अेधी आगे, भूपत हाजर होई ॥ ४८ ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश तीन ही तीनों लोको के मालिक है। इसलिये सबको इनकी मर्यादा में रहना पडेगा इनके बनाये नियमों का पालन करना पडेगा। और जो संत परब्रह्म से ओधा लेकर आते हैं

तो ऐसे केवली संतो की रक्षा करने के लिये तीनों देवता हाजिर रहते हैं। क्यों कि परब्रह्म बादशाह है और ऐसे ओधाधारी उनके अेधि है। तीनों देवता राजा है। और राजा भी उसी परब्रह्म के द्वारा नियुक्त किये गये हैं।

अगम देश का सतगुरू अेधी, शब्दा मार मचावे।
सुता हंसा सुन सुन जागे, से सतगुरू पद पावे ॥ ४९ ॥

अगम देश की प्राप्ति कराने वाले याने सतग्यान सतगुरू ही है। उनके उपदेशों को सुन कर अज्ञान अवस्था त्याग कर सतगुरू पद का साधन करके सतगुरू पद की प्राप्ति करना है।

जाग्या हंस जके नही सोवे, सतगुरू शब्द विचारे।
अगम देश की अणभै वाणी, अनन्त हंसा कूं तारे ॥ ५० ॥

जगे हुये हंस फिर नहीं सोते वे सतगुरू के शब्द को याने सतशब्द का अखण्ड अनुभव करते है यही विचारना है। के:पद का अनुभव होने पर आ:पद की प्राप्ति होती है यही अनन्त हंसो का तारना है।

अगम देश की अणभै ऐसी, सुणता ही सुख आवे।
गरजे शब्द सुधा रस बरसे, भरम करम सब ढावे ॥ ५१ ॥

अगम देश की अणभै वाणी ऐसी है कि उसको सुणते ही आनन्द आता है। शब्द के अनुभव का आनन्द आना ही सुधारस बरसना है। सब भरमों करमों का नाश हो जाना है।

लगी समाधि इकीसो ब्रह्मण्ड, अगम देश वे जाही।
के सुखराम जके जन जग में, भूल न भव जल आही ॥ ५२ ॥

पारब्रह्म, शिवब्रह्म, चिदानन्दब्रह्म इन तीन ब्रह्म के तेरह लोक तथा जीवब्रह्म और जीव ब्रह्म के तीन लोक स्वर्ग मध्य पाताल ये बीस तथा के: पद, कुल इक्कीस ब्रह्मण्डो को पार करने पर आ: पद, की प्राप्ति होती है। म:फ: कि वे जन भूलकर भी जन्म मरण में नहीं आते।

अमरलोक का अमर प्रेषता, सो हंस लेवन जावे।
मृत्यु लोक का सन्त प्रेषता, दे प्रमोद पठावे ॥ ५३ ॥

सतशब्द का प्रगट होना ही अमरलोक का अमर प्रेषता हंसो को लेने आता है। मृत्युलोक में अणभै वाणी बनाने वाले संत व उनका केवल ग्यान प्रेषता हंसो को सतशब्द का ज्ञान देकर सतशब्द प्रगट कर उस पद की प्राप्ति करा देते है।

निकास का चवदह दरवाजा, हंस दशों दिश जाई।
सामा आन बधावे साधु, आगम करे बधाही ॥ ५४ ॥

इस शरीर में से आत्मा के निकलने के चवदा दरवाजे हैं, दो नेत्र, दो कान, नाक के दो सुर, मुंह, मलद्वार, वीर्य, पेशाब, दो स्तन, एक नाभि, दसवा द्वार बह्मण्ड है। जो हंस दसवें द्वारा से निकलता है वो केवल पद में जायेगा। ऐसे भक्ति करके जाने वाली आत्मा को के: पद में विराजमान आत्मायें सामने आकर उनकी अगवानी करते है। और आपस में एक दूसरे को बधाई देते हैं।

और तृपत ममता भई पूरण, जन दरशन नित चावे।

सन्मुख आनि प्रेषतो बूजे, अजहूं संत कोई आवे ॥ ५५ ॥

जिस हंस वृति आत्मा की ममता व कामनायें पूर्ण हो जाती है तो ने: अक्षर रूपी प्रेशता ऐसे जन के दर्शन नित्य चाहता है और उन्हें के: पद में ले जाता है। और फिर प्रेशता सत स्वरूप भगवान से पूछता है कि अब कौन से संत को लांऊ।

हरष कोड उत्साह नया नित, पल पल प्रीति सवाई ।
देख्या संत हियो यूं हरषे, ज्यों रंक नवो निधि पाई ॥ ५६ ॥,

हंस वृति आत्मा को परमात्मा में मिलने का केवल ग्यान मिल जाता है तो भक्ति ग्यान में हरष उत्साह कोड प्रीति सवाई हो जाती है। हृदय उमडता है जैसे रंक से राजा बन गया हो।

अमर लोक में संत बिराजे, जांरा सुख बताऊं।
गुप्ता भेद वेद नहीं जांणे, से प्रकट कर गावुं ॥ ५७ ॥

जो संत अमरलोक में विराजते है उनके सुख का वर्णन करता हूं। उस गुप्त भेद को वेद भी नहीं जानते सो मैं प्रकट करके कहता हूं।

अमर लोक में यो गुण पडियो, थिरे राज कहूं तोहि।
जुरा काल जंवरो नहीं पहुंचे, जन्म मरण नहीं दोई ॥ ५८ ॥

अमरलोक का यह गुण है। वहां का निवास स्थिर है। वहां पर बुढापा काल व यम की पहुंच नही है। वहां पर जन्म मरण यह दोनो भी नहीं है।

मेहरबान सब ही बड पुरूषा, गेब छत्र सिर छाया।
केर कूमेर नहीं मैं मेरी, मोह न व्यापे माया ॥ ५९ ॥

वहां पर सब ही बडे पुरूष मेहरबान है। सिर पर गेबाऊ छत्र छाया है। वहां पर राग द्वेष तेरी मेरी काम, क्रोध, मोह, माया सताते नहीं है।

ऐक ही रूप तेज तप ऐक ही, बडा पुरूष बड भागी।
आप ऊजाला आप ही सूजे, अखण्ड झिलामिल लागी ॥ ६० ॥

उस पद में सब का एक ही रूप, एक ही तप, यानि तेज है। सब ही बडे भाग्यशाली है। स्वयं आत्मा प्रकाशवान होती है पूरा देश प्रकाशवान है, झिलामिल ज्योति रहती है कभी खंडित नहीं होती।

मंदिर झिलामिल रत्ना छाया, बाग झिलामिल फूले।
संत झिलामिल दिव्य शरीरा, कोटिक सूरज भूले ॥ ६१ ॥

मंदिर में चारो तरफ रत्न जड दिये जाते है तो एक सा प्रकाश रहता है। बाग में फूलों की सुगन्धी चारों और फैलना ही झिलामिल है। चौथे पद में ध्वनि का अखण्ड अनुभव होना ही दिव्य शरीर है व आनन्द आना ही झिलामिल है। उस प्रकाश की करोडो सूर्य भी बराबरी नहीं करते यही कोटिक सूरज भूले है।

दीप झिलामिल दीपक सूजे, हीर झिलामिल हीरा।
शब्द झिलामिल सब जग सूजे, सोधे शकल शरीरा ॥ ६२ ॥

दीपक की झिलामिल से दीपक सूज रहे है। हीरों की झिलामिल से हीरा सूझ रहा है। और सतशब्द से खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड सब सूझ जाता है, तीन लोक, चौथा लोक, परब्रह्म सब सूझ जाता है। और पूरे शरीर में सत शब्द का अनुभव हो जाता है।

सूर झिलामिल सूरज देखे, चन्द झिलामिल चन्दा।
ब्रह्म झिलामिल ब्रह्म ही देखे, सो साहिब का बन्दा ॥ ६३ ॥

सूर्य के प्रकाश में सूर्य दिखता है। चन्द्रमा की ज्योति में चन्द्रमा को देखते है। शब्द ब्रह्म के प्रकाश में जो ब्रह्म को देख रहा है। वो ही परमात्मा का बंदा है।

मिणियां ज्योति रतन प्रकाशा, माल मोतियां पोई।
आनन्द कलश अमीरस भरिया, सुख को सागर सोई ॥ ६४ ॥

जहां पर मणियो की ज्योति व रतनो का प्रकाश है। मोतियों की माला पोई है। शरीर रूपी कलश में निरन्तर आनन्द का अनुभव होता है। वही सुख का समुद्र व अमीरस भरना है।

किस्तुरी कुण्जा भर राख्या, परमल एक सरीसी आवे।
यूं सब को सुख एक सरिसो, सब हाजिर होय जावे ॥ ६५ ॥

किस्तुरी के कुन्जे भरे हुये है। जिसमें सुगन्ध एक सरीखी आ रही है। इस तरह सब का सुख एक सा है। सब सुख का हाजिर होना है।

यो सुख को सागर सब सुख तृपत, चितवन करे न कोही।
आनन्द सरोवर अनन्ता ही हंसा, केल करे कहूं तोही ॥ ६६ ॥

वो सतगुरू पद सुख का सागर है। वहां सुख के लिये चितवन नहीं करता। उस आनन्द सरोवर में अनन्तो ही हंस आनन्द ले रहे है।

शिर पर मोड सुयश का बंधिया, यूं है अमर अवाजा।
आनन्द बधावे नित ही बाजे, कहे धिन धिन महाराजा ॥ ६७ ॥

हंस वृति आत्मा केवल भक्ति करके गिगन मण्डल में अगम आवाजो का जबर आनन्द आता है तब शिर मोड सुयश का केवली संतो व उनके ग्यान को आत्मा धिन धिन करती है।

अमीरस कूंपा करे स्नाना, वस्त्र अमर शरीरा।
हँसता मुख में मोती बरसे, पांव परे जहां हीरा ॥ ६८ ॥

सतशब्दों के ध्यान का आनन्द आना ही अमीरस कूंपा करे स्नाना है। व आनन्द पद की प्राप्ति होना ही वस्त्र अमर शरीरा है। वाणी से भजन हो रहा है। वो ही हंसते मुख से मोती बरसना है। सूरत के द्वारा शब्द का सब जगह अनुभव होना ही पांव परे जहां हीरा है।

चिंत्रावण वन कल्पवृक्ष फूले, बरसे अमृत धारा।
अमर जडी अमर फल निपजे, पावे संत जन सारा ॥ ६९ ॥

चिंत्रामणी व कल्पवृक्ष से मन की सब इच्छायें पूरी हो जाती है। और सदगुरू विधि से राम रटने पर अमृत की धारा बहने लगती है। राम का नाम अमर जडी है इसको रटने से ने: अक्षर रूपी अमरफल निपजता है। जिससे संतो को वो पद मिल जाता है।

पावे संत अमर होय बैठा, बहुर न जन्म न मरणा।
कह सुखराम परम पद पहुंचे, सो पछतावा करणा ॥ ७० ॥

संत परम पद की प्राप्ति कर अमर हो गये। अब वो जन्म मरण में नही आते। मृत्यु लोक में हंस वृति आत्माओं को परम पद की प्राप्ति कैसे होवे वो पछतावा करना चाहिये।

परम पछतावो नाम ग्रन्थ को, किया परम पद पावे।
कह सुखराम और पछतावा, करे सो खोटा खावे ॥ ७१ ॥

इस ग्रन्थ का नाम परम पछतावा है। ऐसा पछतावा करने से परम पद प्राप्त होता है। म:फ: है कि दूसरे पछतावा करने से जन्म मरण नहीं मिटता। यही खोटा खाना है।

देह थका ऐसा सुख देखे, पहुंता पुरूष समाधि।
कह सुखराम बिना कोई पहुंता, सुन सुन बढे विवादी ॥ ७२ ॥

शरीर रहते ऐसा सुख मिलता है। जो पुरूष समाधि में पहुंचते है। म:फ: है कि बिना पहुंचे ही सुन सुन कर कहने वाले विवाद करते है।

शुभ करम कर स्वर्गा जावे, अशुभ किया चौरासी।
कह सुखराम भक्ति कर केवल, परमधाम जन जासी ॥ ७३ ॥

शुभ करम करने से स्वर्ग जाते है। अशुभ करम करने से चौरासी व नरकों का दुख भोगना पडता है। म:फ: है कि केवल की भक्ति करने से परमधाम की प्राप्ति होती है।

दोहा:- नरतन में पछताय कर, रहया राम लिव लाय।
से हंसा सुखराम कह, अमरलोक को जाय ॥ ७४ ॥

म:फ: है कि जो हंस मनुष्य शरीर में पिछताकर राम नाम से लिव लगाते है वे अमर लोक में जाते है।

इण कारण भटकत फिरे, तीन लोक के मांही।
आडा बादल भरम का, सदगुरू सूजे नांही ॥ ७५ ॥

भरमों की वजह से केवल ग्यान नहीं सूजता, इसलिये सतगुरू की शरण में नहीं जाने से तीन लोक में भटकना पडता है।

गुरू बिरम कृपा कर, दीनी भक्त बताय।
नहीं तर तो सुखराम कह, मैं ही रह तो पछताय ॥ ७६ ॥

मेरे पर सतगुरू बिरमदास जी ने बडी कृपा की और केवल की भक्ति बता दी नहीं तो मैं ही पछताता रहता।

परम पछतावो ग्रंथ को, जो कोई करे विचार।
भक्ति ऊपजे भय मिटे, पहुंचे मोक्ष द्वार ॥ ७७ ॥

इस परम पछतावा ग्रन्थ का जो विचार करेगा उसके भक्ति उपजेगी, भय मिटेगा व मोक्ष की प्राप्ति होगी ।

॥ इति श्री परम पिस्तावो ग्रन्थ सम्पूर्ण ॥

卐 प्रेम भक्ति का अंग 卐

कवितः- प्रेम भक्त लछ अेहे, प्रीत सतगुरू सो लागी। नाम रटे निरधार,
नेम क्रिया सब भागी॥ विरह तलब ऊर मांय, लाज संक्या नही आवे।
गद गद होय शरीर, मून ऊंचे सूर गावे॥ पलक नाम नही बिसरे,
तलफत ऐ निश जाय। प्रेम भक्त सुखराम कह, ऐ लछण तां कुवाय ॥ १ ॥

प्रेम भक्ति के लक्षण ये है उनका प्रेम ओधाधारी सतगुरू व सतगुरू के ज्ञान में लगा रहता है। नेम क्रिया को छोडकर निरन्तर नाम का भजन करते है। हृदय में विरह व उतकण्ठा के साथ भक्ति में लगे रहते है, किसी से नहीं शरमाते है। भक्ति करने से शरीर में खूब प्रेम आता है कभी मौन रहते है कभी भजन करने लग जाते है, एक पलक भी रामजी की भक्ति को नहीं भूलते, रात दिन इसी में लगे रहते है। मः फः है कि ये लक्षण प्रेम भक्ति के है।

भूल गया घर बार, मन की सुध न कांई। गया अंग सब छूट, सूरत मन मांही मिलाई॥
रह उदासी जोर, साध दरशण मन चावे। और शकल विध छाड, राम सतगुरू मन भावे॥
लिव लागे तुटे नहीं, उठ बैठ कर काम। प्रेम भगत सुखराम कह, वा बगसी सतराम ॥ २ ॥

घर वालों से मोह नहीं रहता मन की सुध नहीं रहती। दूसरे सब साधन छोडकर सूरत व मन लगाकर भजन करते है संसार से उदास रहते है। मन से सन्तों के दरशण चाहते है और सब विधि को छोडकर रामजी का भजन व सतगुरू का ज्ञान अच्छा ही लगता। उठते बैठते काम करते अखण्ड शब्द का अनुभव होना ही लिव लागी तुटे नहीं है। मः फः है कि सच्ची प्रेमा भक्ति उनको प्राप्त हुई है यही बगसना है।

रोम रोम थरराय, बैण बायक उर लागे। कांपे शकल शरीर, भरम दुबध्या सब भागे॥
अक बक बैण विचार, मन नांचे तन मांही। सांस अमांऊ नाभ, बंक पिछम दिश बाही ॥
सूरत शब्द मन अेकठा, हंसे पलक कब रोय। अे लक्षण सुखराम कह, प्रेम भक्त जहां होय ॥ ३ ॥

सतगुरू के वचन हृदय में ऐसे लगते है, रोम रोम थरथराता है, सारा शरीर कांपता है, भरम व द्वेत भाव नहीं रहता, प्रेम में बोलने की सुध नहीं रहती है, मन में बहुत भारी खुशी रहती है, नाभी में सांस ऊसांस में खूब भजन होता है, बंकनाल में पिछम दिशा में उलट जाता है, सूरत शब्द मन एक हो जाते है, जब कभी हंसता है जब कभी रोता है । मः फः है कि प्रेमाभक्ति जागृत होने के ऐसे लक्षण है।

हरषे रग रग रोम, जगत सब लागे खारो। डब डब नैणा नीर,
राम लागे अति प्यारो॥ कहड ऊठे मन माय, लहर ठंडी बहु आवे।
भरमे चित जु मन, राम काथो मुख गावे॥ नेः चल थिर मन ना रहे,
पल खिण होत ऊदास। प्रेम भक्त सुखराम कह, अे लछण जहां बास ॥ ४॥

रग रग रोम रोम में हर्ष मालूम होता है। जगत से मोह नहीं रहता है आंखों में पानी आता रहता है। राम का नाम अत्यन्त प्यारा लगता है। कभी मन में पीड़ा आती है और कभी भक्ति की लहरें उठती है। कभी चित व मन में भरम उपज जाते हैं, उस समय राम राम की रटना तेजी से करने लग जाता है। और कभी मन में निश्चितता व स्थिरता नहीं रहती, उस पल उदास हो जाता है। मः फः है कि यह लक्षण प्रेमा भक्ति के हैं।

विरह ऊठे मन मांय, करम न्यारा सब दिसे। सुणिया नांव ऊपाय,
दांत जंवरे शिर पीसे॥ सूरातन अंग जोर, ऊंघ आलस नहीं आवे।
साहिब को दीदार, खांत कर सुध बुध लावे॥ जात पांत कुल ना गिणे,
सुण साहिब के लेण। प्रेम भक्त सुखराम कह, जहां अमृत मुख बैण ॥ ५ ॥

मन में विरह आती रहती है उसको यह मालुम हो जाता है। दूसरे करणी व करमों से जीव का उद्धार नहीं होता। नांव का विधि से भजन करने से ही जन्म मरण से अलग होता है यही जंवरे का दांत पीसना है। सूरवीरता से भजन करने से ऊंघ व आलस नहीं आता। सुध व बुध से प्रेम से लग्न से भजन कर परमात्मा के दर्शनों की इच्छा रखता है। परमात्मा की प्राप्ति का ज्ञान लेने के लिये जाति पांति व कुल नहीं गिनता है, जिनके मुख से अमृत के समान वचन निकलते है वे प्रेमा भक्ति के लक्षण है।

रेखताः- खान हर पान विचार सब बिसरे, राग हर द्वेष को खोज जावे।
होय लवलीन आधीन भगवान सूं, एक करतार निरधार गावे॥
करत अल्लाप कल्लाप हर काज रे, ताव शिर सहत है सरब सारा।
ज्ञान में बात विचार सो सांमले, नैण में नीर चंवे छूट धारा॥
राम ही राम रग रोम पुकार है, हरष उर माय प्रेम भारी।
दास सुखराम कह प्रेम जहां असल है, अंग अे मिलत ज्युं रीत सारी ॥ ६ ॥

इस तरह भजन में लगा रहता है कि वो खाने पीने का विचार भूल जाता है। राग द्वेष बिल्कुल नहीं रहता वो भगवान के आधीन होकर भजन में लगे रहते है। रामजी की निरन्तर भक्ति करते है। सब दुखों को सहन करते हुये भी परमात्मा की प्राप्ति के लिये सब काम करते है। ज्ञान की ही बात विचार व निरपख निरणा को सुनते है। आंखों में आँसुओं की धारा बहती रहती है। रग रग रोम रोम से राम राम होता रहता है। हृदय में खुशी व प्रेम भारी आता रहता है जिनका सच्चा प्रेम परमात्मा में है उनमें ये लक्षण होते है।

ऊठियो प्रेम पाखण्ड सब छूट गया, पीव में जीव सो जाय लागो।
मात हर तात कुल लाज सब लोक की, बात विचार सो भरम भागो॥
चाय ज्युं पीव की दिल भारी लागी, दाबिया जोय नही रहत छाने।
हाल ज्युं चाल देह नैण में पारखा, मुख सो बोलिया जगत जाणे॥
गिलगिले कंठ दिलगीर ऊदाष से, सपने जीव जाय सुख माणे।
अब नहीं बिसरे रात दिन बिच रे, कब लूं सुख यो मन जाणे॥
दास सुखराम कोऊ पीव मेला करे, ताय कू मन अर शीष दीजे।
अनन्त जन्म को बिछडयों जीव है, मोय उपकार कोई आंण कीजे ॥ ७ ॥

परमात्मा से सच्चा प्रेम होने पर झूंठ कपट छूट जाता है। परमात्मा में जीव लगा रहता है। माता पिता भाई बन्धु लोक लाज का डर व मोह नहीं रहता। परमात्मा की प्राप्ति की ऊत्कण्ठा दिल में भारी लगी रहती है वो छिपाये नहीं छिपती, इसकी परीक्षा उनके चलने फिरने व शरीर से व नेत्रो की तरफ देखने से हो जाती है। बोलने से सारा जगत जान जाता है। कंठ में गिलगिली व मन में उदासी रहती है। सपने में भी भक्ति में लगे रहते है। दिन रात में एक पल भी परमात्मा की प्राप्ति कराने वाले सतगुरू

याने सत्य ज्ञान है उनकी मन से शरण लेना ही मन व शीष देना है। यह जीव अनन्त जन्मों से परमात्मा से अलग हो रहा है उसे परम पद की प्राप्ति करा दे यही उपकार करना है।

धिन जो धिन गुरू देव कूं कहत है, तब हरके मन रग रोम सारा।
आप करतार आरब सो राम है, सब अवगत गुरू देव म्हारा॥
पलक दीदार कूं सूरत नहीं बिसरे, करत प्रणाम सुण नींद मांही।
नाम गुरू देव में सूरत महमंत है, सपना सेंग बिलाय जाही॥
देह सूं देह गुरू देव सूं मिलत है, ता दिना सुध कुछ बुध ऐसे।
दास सुखराम कह करत प्रणाम रे, बेण सो कित का कित कहे से॥ ८॥

हंस वृति आत्माओ के सत शब्द ऊमाऊ होता है तो प्राणी ओधाधारी सत गुरू को धिन है धिन है जो करता है व आरब व राम है सब ही अवगत मेरे गुरूदेव है, उनके दर्शनो को सूरत क्षण भर भी नहीं भूलती है नींद में भी गुरूदेव को प्रणाम करता है। परमात्मा के नाम व ज्ञान गुरूदेव को प्रणाम करता है। परमात्मा के नाम व ज्ञान गुरूदेव में सूरत हर समय लगी रहती है माया रूपी सपनो के जन्जाल नहीं आते। शरीर से ज्ञान गुरू महाराज के दर्शन करता है उन दिनों सुध व बुध प्रणाम करते ही वचन मुंह से कैसे निकल रहे है, उसका भान नहीं रहता।

दूध ऊफाण ज्युं मनवो ऊफणे, तरंग से भांग की लहर आवे।
जीव सो जाय आसमान में घर करे, ता दिना धिन मुझ भाग कहावे॥
प्रेम का बाण तन मांय अे नीसरे, कांपिया करम सो पाप सारा।
ऊतरी गंग आकाश सुं धरण में, नीर बह चालियो शेष धारा॥
धरण पाताल लग जाय जल पहुंचियो, शब्द आंकूर सो ऊलट ऊगा।
दास सुखराम कह सात पुढ फोडकर, इक्कीस कूं ठाय घर आद पूगा ॥ ९॥

मन में भारी उमंग लगी रहती है जैसे भांग की तरंगे व लहरें आती है। जिस दिन आत्मा को केवल पद की प्राप्ति होगी वो दिन व भाग्य धिन है। शरीर में प्रेम जागृत होने पर करमों व पापों से अलग हो जाना ही पाप करम का कांपना है। जब शब्द ब्रह्मण्ड के ऊपर आ जाता है और रटना करने से एक हजार पांख का घड़ा भर जाता है और टेंक से सहस्त्र धारा कागलिया रूपी शिव लिंग पर लगती है यही उत्तरी गंगा आकाश से है। शरीर में शब्द का अनुभव होना ही नीर बह चाल्यो शेष धारा है। शेष के स्थान में पहुंच कर बंकनाल में उलट गया व पिछम दिशा में आना ही सात पुडो को फोडना है। व इक्कीस स्वर्ग की गांठो को छेदन करता हुआ पारब्रह्म के पद में जा पहुंचा।

ज्ञान को बाण तन मांय गरकाब होय, मन तब धूज ऊर मांय आवे।
पवन कूं सूरत मिल चित सो आ पडे, प्रेम की लहर पाताल जावे॥
गिलगिली होत नख चख के बीच में, धूज बैराट तिहूं लोक सारा।
हल हले होय जो नाभ में पोंच रे, शब्द चहूं दिश होय शेष धारा॥
लछ अनेक उपाय सो साजना, गेब खट धरम की रीत आणी।
दास सुखराम कह बंध दे तीन रे, उलट अशमान को चढयो प्राणी ॥ १०॥

शरीर में ज्ञान धारण करना ही बाण तन माय गरकाब होना है। मन का भजन में लगना ही धूजकर आना है। श्वांसा में सूरत का चित्त का लगना व प्रेम आना यही प्रेम की लहर पाताल जाना

है। सारे शरीर में नख से लेकर चख तक गदगद होना सारा शरीर खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड थरराता है। नाभी में शब्द आता है तब सारे शरीर में अनुभव होता है। अनेक लक्षण साधन के अनेक उपाय होते हुये भी जो यह भक्ति करता है उसके गेबऊ खट दरशणियो के गुण आ जाते है। म:फ: है कि तीन बंध जालंधरी ऊतानपात व त्राटकी बंध लगा और बंकनाल में उलट कर आसमान में जा पहुंचा।

होय ममंकार ररंकार सो अंग में, रोम सब राम सो राम बोले।
नाद घरणाट असमान में घुर रहयो, सूरत सो शब्द में मिल कंवल खोले ॥
संख की नाल होय धस पाताल में, कमल खट छेद कर शेष साया।
ऊपजी लहर मन जोर सूं कापियो, डरपियो जीव भव अन्त आया॥
जाण पाताल सो समंद में नाकियो, वार कुछ पार सो नांय सूजे।
रीत विचार सो बिध बिलायगी, भरमियो चित सो संत बूजे॥
एक सो रात में आवाज आ नीसरी, ध्यान धर शब्द कूं जोय मांही।
पंयाल के देश में शेष ज्यों बिलंबियो, भजन कर सोच तू रख नांही॥
उलटियो शब्द तब शहर सब धुजियो, बंकडी नाल की पोल खुली।
सुरत सो जाय पंयाल सूं उबकी, पिछम के घाट दिश आंण झूली॥
सुरग ईकीस कबाण गत घेरिया, शब्द ऊल्लास सूं पीठ फाटे।
सूरवा संत बोह भांत कर झूंजिया, तां दिना निसरया मेर घाटे॥
जाय आसमान आकाश में बिराजिया, तां दिना सुख बोहो चेन आया।
दास सुखराम कह त्रृगुटी शहर में, तीन त्रिलोक शिर राम पाया ॥ ११ ॥

सारे शरीर में रोम रोम में शब्द का अनुभव होना ही ममंकार ररंकार बोलना है। शब्द की ध्वनि ब्रह्मण्ड में हो रही है। सूरत शब्द में लगकर कंवलों को छेदन करती है। छ: कंवलों को छेदन कर याने (कंठ हृदय नाभि मध्य ब्रह्मा गणेश स्थान) को पार करता हुआ शेष के स्थान में आता है। जैसे किसी को समुद्र या पाताल में डाल दिया जाता हैतो उसका वार पार याने थाह नहीं सूजता है। सब रीति व विधि बिलायमान हो जाती है। चित में भरम उठता है तब संतो से पूछता है। एक रात उसको यह सुनाई देता है शब्द को ध्यान लगाकर अन्दर देखो पातल व शेष के स्थान पर लुप्त हो गया है। साधक कहते है कि तू भजन कर सोच मत कर। शब्द बंकनाल में उलटता है तब सारा शरीर धूजता है। बंकनाल का रास्ता खुल जाता है। सूरत पाताल से उठ कर पिछम में आ लगी। सुरग इक्कीस की गांठे व शरीर कबाण की तरह हो जाता है। शब्द के जोर से पीठ फटने जैसा अनुभव होता है। सूरवीर संत बहुत प्रेम से भजन कर मेरूदण्ड से पार हो जाते है। ब्रह्मण्ड में पहुंचकर शब्द का अनुभव हो व आनन्द आना ही सुख चेन आना है। म:फ है कि ब्रह्मण्ड में तीन त्रिलोकी ऊपर पहुंचना ही रामजी को प्राप्त करना है।

ध्यान असमान आकाश में लागियो, सूरत जो मनवा जाय बैठा।
त्रृगुटी शहर में नाद घनघोर है, आद स्थान में आण पैठा॥
खचिया नैण सो ऊलट पट लागिया, देह आसमान बिच जाय ऊँची।
सूरत हर शब्द को मेल जहाँ बीछडे, ता ही अस्थान लग जाय पहुंची।।
चन्द ही सूर दिन रात की गम नहीं, नाद अनहद सुण रहत लारा।

दास सुखराम कह खोल खिडकी धस्या, ब्रह्म यो जीव ही होय प्यारा ॥ १२ ॥

ब्रह्मण्ड में सूरत व मन से ध्यान होना ही मन व सूरत का बैठना है। ब्रह्मण्ड में शब्द की ध्वनि का अनुभव हो रहा है। आद याने पारब्रह्म के पद का अनुभव ही हुआ है। शब्द का ब्रह्मण्ड से ऊपर शब्द उठता हुआ मालूम होता है। ध्यान का ऊपर अनुभव होना ही देह आसमान बीच जाय ऊंची है। ब्रह्मण्ड से ऊपर सूरत शब्द में मिल जाती है शरीर से रटणा अलग होती रहती है। अला पिंगला से अलग होकर सुखमणा में भजन होने लग जाता है। उस पद में रात दिन नहीं है न सूर्य चन्द्रमा है कई प्रकार की आवाजें त्रिकुटी में रह जाती है। दशवें द्वार को खोलकर शब्द बाहर हो जाता है। जब के: पद में पहुंच कर आ: पद में लय होना ही जीव का ब्रह्म होना है।

<u>सवईयो इन्द व छन्द</u> :- लाय सौ काम, खुधा घट आवे, मेघ सो बहत विचार न आणे।
तिरखा नीर कहां सर कुवो, रण में जात न पांत पिछाणे॥
गांव में भीड गहे दिल आरत, मरत मोह नी कारण ठाणे।
प्रेम का लछ कह सुखदेवजी, सो लाज न नेम नहीं पुल जाणे ॥ १३ ॥

अग्नि लग जाने पर सौ काम छोडकर उसको बुझाते है। शरीर में भूख लगती है तब भी सब काम छोडकर पहले भूख शांत करते है बरसात होती है तब वो यह विचार नही करती कि मैं कहां कहां बरसात करूं। प्यास लगी हो तब यह विचार नहीं करता कि यह पानी तालाब का है या कुंए का है। लड़ाई के मैदान में सामने वाला कौन सी जात पांत का है यह नहीं देखते है। गांव में तकलीफ होती है तो दिल बड़ा दुखी होता है। मरने वाला न तो मोह करता है न कारण ढूंढता है। म:फ: है कि प्रेम के यही लक्षण है कि न लाज न नियम न समय देखता है। वह हर समय भजन में लगा रहता है।

बार चढे डर गांव ऊ चाले, चोर कूं मारत पूल न जोवे।
सती के नेम नही दिन कारण, आँण कहे तब ही संग होवे॥
रण सुं भाग गहे घर ओठो, पुल सो बेत कछु नहीं जोवे।
नाम सु प्रेम लाग्या सुखदेव कहे, लाज मरजाद कछु नहीं होवे ॥ १४ ॥

जब किसी पर चढाई करते है तो क्या वो गांव से डरकर जाता है। चोर को मारते समय पुल नहीं देखते। सती स्त्री के न तो नियम न दिन न कारण है उनको तो एक पति की मृत्यु का समाचार मिलते ही उनके साथ जलने की तैयारी कर लेती है। लडाई से भाग कर आने वाला भी घर आने के लिये पुल व समय नहीं देखता है। म:फ: है कि जिसके नांव से प्रेम हो जाता है वो लज्जा मरजादा नहीं करता।

<u>साखी</u> :- सुखराम आद घर पहुंचिया, तां दिन या बिध होय।
ध्यान लग्यो बाणी कही, सांसो रहयो न कोय ॥ १५ ॥

म: फ: है कि परमात्मा पद की प्राप्ति हो तो ऐसी विधि होती है। ध्यान लगना व अणभै वाणी का निरपख निरणा करके कहने पर कोई दुख नहीं रहता।

॥ इति श्री प्रेम भक्ति का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 सत भेष का अंग 卐

सुण रे पिंडत ज्ञान सब मेरा, सतशब्द ले राखुं।
तेरी बात मोही तन मांही, भांत भांत ले भाखुं ॥ १ ॥

पंडितो से म:फ: है कि मैने तो सतशब्द का ज्ञान धारण कर रखा है। तुम्हारी बात मेरे ध्यान में है उसका मैं सब तरह से वर्णन करता हूं।

तपस्या करूं तत कण लिया, और हिरदे नहीं धारूं।
समता शील सांच गेहे बैठा, वेदा दूर निवारूं ॥ २ ॥

मैंने ब्रह्म का ज्ञान धारण कर रखा है यही तपस्या है और हिरदे में धारण नहीं करता। समता शील सांच को धारण कर दुविधा से दूर रहता हूं।

ऊज्जवल दशा हंस के चाले, बोलूं बैण पियारा।
ऐसा ज्ञान करूं उजियागर, माया ब्रह्म नियारा ॥ ३ ॥

जो भी हंस वृति आत्मा यह ज्ञान धारण करती है उसकी दशा उज्जवल होने की शुरू हो जाती है। सबसे मीठे वचन बोलता हूं और ऐसा ज्ञान दर्शाता हूं जिससे माया व ब्रह्म को अलग अलग कर दूं।

ना काहू से हेत दोस्ती, बैर भाव नहीं राखुं।
बुज्या शकल भरम ले तोडूं, आद अन्त ले भाखुं ॥ ४ ॥

मेरे न तो किसी से हेत याने प्रेम है। बैर भाव तो किसी से रखता ही नही हूं। बूझने पर ही सब भरम मिटा देता हूं। आद से लेकर अन्त तक वर्णन करता हूं।

एको ब्रह्म सकल में व्यापक, दुतिया भाव न जांणु।
पांच भूत की शकल आत्मा, ज्यां त्यां ब्रह्म पिछाणु ॥ ५ ॥

एक ही ब्रह्म सर्वत्र व्यापक है। दूसरा भाव नहीं जानता। पांच तत्वों की सब आत्मा है। सब जगह ब्रह्म देखता हूं।

पूरण ज्ञान परे पद पाया, करम भरम सब भागा।
मिट गई रैण भया ऊजियारा, अगम अगोचर जागा ॥ ६ ॥

पूरण ज्ञान से के: पद की प्राप्ति पर भरम करम का नाश हो जाता है। अज्ञान का अन्धकार मिटकर ज्ञान का प्रकाश हो गया। उस पद की प्राप्ति होना ही अगम अगोचर जागा है।

क्रिया धरम करम सब छाडया, चौका चित्त दिरावुं।
भाव भजन की करी रसोई, नित पत अैसे पावुं ॥ ७ ॥

क्रिया धरम करम सब को छोडकर चित्त लगा कर भजन करना ही चोका लगाना है। भाव प्रेम से भजन करना रसोई बनाना है। हमेशा इस तरह भजन करता हूं यही पाना है।

चारूं वेद भेद मैं बांच्या, ऐसा जीग रचाया।
पांच पचीस शकल ले झुक्या, पीछे जीव जीवाया ॥ ८ ॥

चारों वेदों व उसके भेद को मैंने बांचा है, यही मेरा यज्ञ है इस यज्ञ में पांच विषय पच्चीस प्रकृतियों को झोंक दिया। पीछे जीव को जीवाया।

ऐसा जीग करूं मैं भारी, नित पत करूं सपाडा।
निरमल नीर अधर मैं झूलूं, गिगन महल घर झाडा ॥ ९ ॥

मैं ऐसा भारी यज्ञ करता हूं कि हमेंशा ही स्नान करता हूं। निमल नीर याने निरंजन निराकार पद में शब्द का अखण्ड अधर गिगन में ध्यान होना ही अधर में झूलना व गिगन महल घर जाना है।

डंड कमंडल क्रिया हम किनी, निरमल नीर भराया।
धोती ध्यान अधर में सुके, न्हाय धोय घर आया ॥ १० ॥

सतगुरू विधि से भजन करना ही डंड कमंडल व क्रिया करना है। भजन ध्यान कर पूरण पद की प्राप्ति करना ही निरमल नीर भराना है। सतशब्द का अधर ध्यान होना ही धोती का अधर में सूकना है। आः पद में लय होना ही न्हाय धोय घर आना है।

बिन बैराग बात नहीं मांनु, ररे ममे बिन कांई।
त्यागु शकल ऐक गेह राखु, सतशब्द मन मांही ॥ ११ ॥

सतगुरू विधि से रकार मकार भजना ही बैराग है इसके सिवाय दूसरी बात नहीं मानता। सबको छोडकर एक सतशब्द को ही मन से धारण करता हूं।

ऐसा तरक त्याग मैं राखुं, चवडे कहुं बजाई।
काम क्रोध अहंकार मद रे, छोडी जगत सगाई ॥ १२ ॥

मैं ऐसा तरक त्याग रखता हूं, सो सबको प्रगट कहता हूं। काम, क्रोध, अहंकार, अभिमान व जगत का मोह छोडा है ऐसा त्याग है।

तामस तरक रीस सब त्यागी, में ते मान ऊडाया।
लालच लोभ चाय कूं तज रे, यूं सुख मांय समाया ॥ १३ ॥

तामसी वृति तरक क्रोध सबको छोडकर मेरी तेरी व बढाई नहीं चाहा। लालच व लोभ इच्छाओं को छोडकर इस तरह सच्चे सुख की प्राप्ति की।

सेजे रहूं जगत के मांही, सोच फिकर नहीं मेरे।
ऊपजे खपे हांण नहीं जोखम, मोह आंण नही घेरे ॥ १४ ॥

सहजवृति से संसार में रहता हूं। मुझे किसी तरह की सोच फिकर नहीं है। उपजो, खपो, उसका मुझे हानि लाभ नहीं है व जगत से मोह नहीं करता हूं।

ऐसा त्याग नित पत मेरा, सांई शरण निभावे।
जाणे जीव पीव सो पेला, दुजा भेव न आवे ॥ १५ ॥

मेरे हमेशा ही ऐसा त्याग है। परमात्मा की कृपा से ही निभता है यह जीव परमात्मा के सिवाय दूसरा कोई भेद नहीं जानता।

सामी पणो सेंग है मेरे, भिन्न भिन्न भेद बतावुं।
भस्मी अंग ध्यान मैं चाडु, कपडा प्रेम रंगावुं ॥ १६ ॥

मेरे सब तरह से स्वामी पणा है। इसका अलग अलग भेद बताता हूं। परमात्मा का ध्यान करना ही शरीर पर भस्मी रमाना है। परमात्मा से प्रेम करना ही कपडे रंगाना है।

पासु प्रीत फिटकडी लाई, गेरू ज्ञान करिजे।
कुंडो नाभ सुरत में गालु, चादर चित रंगीजे ॥ १७ ॥

परमात्मा से प्रीति करना फिटकडी लाना है व ज्ञान ही गेरू लगाना है। नाभी में सूरत लगाकर भजन करना ही व भक्ति में हर समय लगना ही चित रूपी चादर रंगना है।

तुम्बी तत ज्ञान की हाथे, मांय ब्रह्म जल भरिया।
पीवत नीर छिकुं नहीं कोई, सांस ऊसांसे जरिया॥ १८॥

ब्रह्म पद का ज्ञान करना ही तूम्बी हाथ में लेना है। सतशब्द का ध्यान होना ही ब्रह्मजल भरना है। श्वांस प्रश्वास के द्वारा राम रट कर यह नीर पीता हूं। और इतना पीता हूं कि कभी धापता ही नहीं हूं।

माथे जटा जुक्त री बांधी, लिव लंगोट लगाई।
गोला हाथ भेद का लिया, अणभै अलख जगाई ॥ १९॥

विधि से भजन करना ही जटा बांधना है। लिव बंध भजन होना ही लंगोट लगाना है। परमात्मा की प्राप्ति का भेद जानना ही हाथ में गोला लेना व अनुभव करके कहना ही अलख जगाना है।

धूणी ध्यान शिखर में तापू, सुरत पावडी चालूं।
जाडो काल ठंड सब भागी, पवना संग ले बोलूं ॥ २०॥

ब्रह्मण्ड से ऊपर ध्यान होना ही शिखर पर धूणी तापना है। सुरत से अनुभव होना ही पावडी से चलना है। सांस ऊसांस में भजन करने से काल व ठंड सब भाग जाती है।

पांच पचीस चार मिल तीनूं, अर जमात चलाई।
त्रिवेणी तट जाय सपाडे, कियो बहुत जुध भाई॥ २१॥

पांच विषयों के शरीर व पचीस प्रकृति व मन, बुध, चित, अहंकार व सत, रज, तम तीन गुणो के साथ भजन करना ही जमात चलाना है। त्रिकुटी में ध्यान रखकर भजन करना ही त्रिवेणी में स्नान करना व युद्ध करना है।

लडिया बहुत भेष सब खिरियो, मेन्त रहयो शिर थांणे।
लागी प्रीत अलख सुं यारी, भली जगत सुख मांणे ॥ २२॥

खूब भजन करना ही लडना है। पुनः जन्म लेने के लिये किसी भी योनि में नहीं आंवु यानि चौरासी को जीत लिया। और उस पद में जाकर ठाणा पति हो गया। मेरा यह काम इस प्रकार हुवा मैंने उस अलख परमात्मा से दोस्ती कर ली उसी में मेरी प्रीति लगी। जगत तो सांसारिक सुख को ही सुख मानती है।

मिलिया जाय सरस सामी सुं, बाहिर क्या दिखलावे।
जन सुखराम भेष ये पेरया, प्रेम प्रीत लिव लावे ॥ २३॥

पूरण परमानन्द की प्राप्ति होना ही सरस सामी सूं जाकर मिलना है बाहर नहीं दिखाया जाता है। मःफः है कि प्रेम प्रीत से लिव बंध ध्यान होना ही भेष को पहरना है।

जोगी जुगत जोय में भाखुं, ऐसा भेष बणाया।
मुद्रा कान मन की गालुं, अनहद नाद बजाया ॥ २४॥

जोगी की जुगत देखकर कहता हूं कि मेरा ऐसा भेष है। मन को भजन में लगाना ही कान में मुद्रा पहनना है। आत्म चेतन को बिना किये ही शब्द की ध्वनि का अनुभव होना ही अनहद नाद बजाना है।

शैली सांच, सत की सिंगी, आदर भाव आ देशुं।
टोपी शीष तत की मेलुं, बांधे प्रीत बंदे सुं ॥ २५ ॥

सांच की शैली सत की सिंगी व सबसे आदर भाव रखना ही आदेश है। सतशब्द का सिर पर अधर अनुभव होना ही टोपी ओढना है। परमात्मा पद की प्राप्ति हेतु ही बंदे से प्रीत बांधना है।

सातो द्वीप फिरू गुरू शरणे, नवखण्ड मार चेताया।
भिक्षा भजन शब्द परसादी, पाय बहुत सुख आया ॥ २६ ॥

शरीर में शब्द के साथ सातो द्वीप यानि सातो सुर भजन में लग गये यही सातों द्वीप गुरू शरणे फिरना है। नवखण्ड यानि पांच प्राण, मन बुद्धि चित अहंकार इनको मारना यानि लांघना। भजन करना ही भिषा है। शब्द का अखण्ड अनुभव होना ही प्रसादी है। शब्द का अखण्ड आनन्द आना ही बहुत सुख आना है।

जोडी जतन खडाऊ खिम्या, आड बंध पत पूरा।
जग सुं भरम त्याग हम दिया, बसु गिगन घर दूरा ॥ २७ ॥

जतन से भजन करना जोडी है जोडी यानि श्वांस प्रश्वांस , कागलिया जिभ्या, रकार मकार। क्षमा धारण करना ही खडाऊ है। सतपद के ज्ञान में पूर्ण विश्वास रखना ही आड बंद है। जगत के सारे भरमों को छोडकर गिगन में ध्यान होना ही गिगन घर बसना है।

प्याला सूरत प्रेम रस पिवुं, आसण पवन बंधाया।
धुणी जाय अधर घर तापुं, तहां बहुत सुख आया ॥ २८ ॥

सुरत लगाकर प्रेम से ध्यान करना प्याला पीना है। स्वांसा से अलग होकर अधर में ध्यान होना ही पवन का आसण बंधना है शब्द का अधर ध्यान घूणी तापना व ध्यान का आनन्द आना ही बहुत सुख पाना है।

दोहा : आसण बांध्यो शिखर में, आयस अलख अतीत।
जन सुखदेव जोगी भया, ऐसी ऊदबुद रीत ॥ २९ ॥

शब्द का अधर में अनुभव होना ही शिखर में आसण बांधना है। वो पद ही आयस अलख अतीत है। म: फ: है कि परमपद की प्राप्ति होना ही जोगी होना है। अेसी ऊदबुद रीति है। केवल शरीर पर भेष धारण करने से परम पद की प्राप्ति नही होती।

ऊठ बैठ सब रीत सुं, हाल चाल ब्यौहार।
मन जाण्यो सुखरामजी, एको ब्रह्म विचार ॥ ३० ॥

ऊठो बैठो हालो चालो। सब तरह से जगत का ब्योहार करो। म:फ: है कि मन तो एक ही ब्रह्म के विचार में लगा रहता है।

॥ इति श्री सत्त भेष का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 ब्रह्मचारी का संवाद 卐

बस्ती त्याग बन में आया, त्राटक ध्यान लगायो। ऊलटी दिष्ट खेंचकर फेरो,
क्या जामे सुख पायो॥ ब्रह्मचारीजी तो भी कच्चा,
अे नाहक त्याग कियो तुम घर को, गुरू नहीं मिल्या सच्चा ॥ १ ॥

त्राटक ध्यान लगाकर दृष्टि को खेंचकर फेरते हो तो इससे क्या सुख मिलेगा नाक की अणी पर ध्यान रखकर करने को त्राटक ध्यान कहते है। सब जगह से ध्यान हटाकार नाक की अणी पर ध्यान लगाना ही उल्टी दिष्ट खेंचकर फेरना है। हे ब्रह्मचारीजी तुम कच्चे हो तुमने बिना सोचे घर छोड दिया तुम्हे सच्चे गुरू नहीं मिले है।

राम तुम्हारे है घट मांही, प्रेम प्रीत सुं पावो। हट तो किया राम नहीं रिजे,
कोई मुरख न समझावो॥ ब्रह्मचारीजी भेद न पाया,
ऐ नाहक त्याग कियो तुम घर को, तन को बन क्युं लाया ॥ २ ॥

राम तुम्हारे घट में ही है। प्रेम प्रीति से प्राप्त कर सकते हो। हठ जोग की साधना करने से रामजी प्रसन्न नहीं होते किसी मूरख को समझाओ। म:फ: है कि हे ब्रह्मचारीजी तुमने भगवत प्राप्ति का भेद नहीं पाया। वृथा ही घर का त्याग करके शरीर को बन में क्युं लाये।

ब्रह्मचारीजी बुज्यो, तुम कोण मुद्रा में रहते हो, तब सुखरामजी महाराज बोल्या:
चौपाई :- हे ब्रह्मचारी कहूं मैं तोई, मुद्रा जे नर साजे सोई।
ज्यां रे प्रेम उमंग नही आयो, वा मुद्रा में मन लगायो ॥ १ ॥

हे ब्रह्मचारीजी मैं तुम्हे कहता हूं कि मुद्रा की साधना वे मनुष्य करते है जिनके घट में प्रेम उमंग कर नहीं आता। वे मुद्रा में मन लगाते है।

जहां लग मुद्रा साजे कोई, तब लग नर बेगारी होई।
ब्रह्मचारी पद कदे न पावे, साजन हट मूढ को भावे ॥ २ ॥

मुद्रा की साधना करते है। जब तक मन उसमें लगा रहता है नहीं करने पर मन नहीं लगता यही बेगारी की तरह है। ब्रह्मचारीजी उनको परम पद की प्राप्ति कभी नहीं होती मुर्खो को ही हठयोग के साधन अच्छे लगते है।

मेरी मुद्रा तोय बतावुं, ऊमग्यां प्रेम बहुत सुख पावुं।
सहज समाध रात दिन होई, सूरत निरत को काम न कोई॥ ३ ॥

म:फ: है कि मेरी मुद्रा तुम्हे बताता हूं। प्रेम उमंग रहा है उससे बहुत सुख आ रहा है। सहज समाधि रात दिन लगी रहती है, जो सूरत निरत से अलग है।

कहे सुखराम सुणो ब्रह्मचारी, गिगन मंडल में रेण हमारी।
ताली लगे न टुटे कोई, मन पवना झूंठा मिल दोई ॥ ४॥

म:फ: है कि ब्रह्मचारी सुणो मेरा गिगन मण्डल में निवास है वहां पर ध्यान अखण्ड रहता है यही ताली लगे न टूटे कोई है। यह ध्यान स्वांसा से अलग है।

मन पवना को काम न कोई, कुदरत कला घट में होई।
ब्रह्मचारी या कोई न पावे, ज्यां सुण रीत ऊलट चढ जावे ॥ ५ ॥

मन का स्वांसा का कोई काम नहीं है। कुदरत कला ने: अंच्छर की जागृति घट में होती है।

हे ब्रह्मचारीजी इस रीत को सब नहीं पाते जो बंकनाल से ऊलट कर ऊपर चढते है वो ही पाते है।

मुद्रा पांच हद में होई, जे साजे ज्यां प्रेम न कोई।
कर्म करे ब्रह्मचारी सारा, सो पवन से पचणे हारा ॥ ६ ॥

पांचो मुद्रा हद में होती है उसकी साधना वो करते है जिनके घट में प्रेम नहीं है। जो सारे कर्म किये जाते है वो स्वांसा के आधार से होते है यही पचना है।

करम करे सो तन हट भाई, मुद्रा पांच मन हट मांही।
कह सुखराम सुणो ब्रह्मचारी, सतशब्द की है विध न्यारी ॥ ७ ॥

जो कर्म किये जाते है वो शरीर द्वारा होते है। पांचो मुद्रा की साधना मन से होती है। म:फ: है कि हे ब्रह्मचारी सुणो सतशब्द की विधि सबसे अलग है।

कोई उनमुनी सुं मन लगावे, कोई खेचरी सुं हट चावे।
कोई चाचरी साजे भाई, केई भुचरी गहे जन आई ॥ ८ ॥

कोई उनमुनी मुद्रा में मन लगाता है। कोई खेचरी मुद्रा से हट जोग की साधना करते है। कोई चाचरी मुद्रा की साधना करते है। कोई भुचरी मुद्रा की साधना करते है।

कहे सुखराम अगोचर आगे, जहां लग यो मन जायर लागे।
मन छिटकावे जब विध भाई, ब्रह्मचारी रहे रीत न कांई ॥ ९ ॥

म:फ: है कि अगोचर मुद्रा के आगे जहां तक यह मन जाकर लगता है। मन जब उस विधि को छोड देता है तब हे ब्रह्मचारी कोई रीत नहीं रहती।

मुद्रा पांच जोग के मांही, भक्त जोग में मुद्रा नांही।
सपत भोम का सब जन गावे, सो जोगारंभ मांय नहीं पावे ॥ १० ॥

योग की साधना में पांच मुद्रा है, भक्ति जोग में मुद्रा नही है। सात धात के सबके शरीर है लेकिन वो सभी जोगारंभ नही करते ।

द्वादस मंत्र सन्यास बखाणे, सो बैराग हिरदे नहीं आंणे।
गीता शकल एक कर गावे, गायत्री सब भेद बतावे ॥ ११ ॥

ओम नमो भगवते वासुदेवाय, इस द्वादसमन्त्र का सन्यासी बखाण करते है परन्तु बैरागी इसको धारण नहीं करते है। गीता सब आत्मा को ही ब्रह्म बताती है। गायत्री की साधना अलग अलग पहुँच बताती है।

पवन जोग करम कर साजे, भक्त जोग करमा सूं लाजे।
कह सुखराम सुणो ब्रह्मचारी, परमभक्त युं सबसे न्यारी ॥ १२ ॥

पवन जोग की साधना करने में शरीर से मेहनत करनी होती है। भक्ति योग में करम नहीं किये जाते। म:फ: है कि ब्रह्मचारी सुणो परम पद प्राप्त करने की भक्ति सबसे अलग है।

गावे बजावे नाचे कोई, सो नवधा भक्त अंग कहूं तोई।
बांचे सुणे अर्थ जो कर है, पूजा अरचा पात शिर धर है ॥ १३ ॥

गाते है, बजाते है, नाचते है, कथा बांचते है, सुणते है, ग्रन्थों का अर्थ करते है, मुर्ति की पूजा करते है, फूल पते चढाते है यह सब नवधा भक्ति के अंग है।

विष्णु करम अे नांव कहावे, नव प्रकार शकल जन गावे।

जोग करम इण सुं है न्यारा, पवन जोग का और विचारा ॥ १४॥

इन कर्मो को विष्णु की भक्ति कहते है। सब उसको नवधा भक्ति कहते है। योग की साधना इनसे अलग है। पवन जोग का साधन दूसरा है।

आ हद बेहद की क्रिया होई, दोन्या परे न जावे कोई।
कहे सुखराम सुणो ब्रह्मचारी, निज नांव की भक्ति न्यारी ।। १५।।

इन क्रियाओ से हद बेहद में जा सकते है। हद बेहद से परे कोई नहीं जाता। म:फ: है कि हे ब्रह्मचारी सुणो निज नांव की भक्ति इनसे अलग है।

दुर्वासा तप जोग कमाया, गोतम कपिल ऊदालक भाया।
विश्वामित्र साज्यो सोई, निज नांव की गम न कोई ॥ १६ ॥

दुर्वासा, गोतम, कपिल, ऊदालक व विश्वामित्र मुनियों ने तपस्या व योग की साधना की परन्तु उनको निज नांव की जानकारी नहीं थी।

कहे सुखराम सुणो ब्रह्मचारी, नहीं मानो तो वशिष्ठ मुनि धारी।
निज नांव वशिष्ठ मुनि पाया, ज्यां वेद करम सब ही छिटकाया ॥ १७॥

म:फ: है कि हे ब्रह्मचारी सुणो यदि नहीं मानते हो तो उसको वशिष्ठ मुनि ने धारण किया। वशिष्ठ मुनि ने निज नांव पाया तब उन्होने वेदों की करणीयों को छोड दिया।

सुखदेव प्रेम प्रीत में भीना, बिना नांव कोई करम न कीना।
जनक वदेह राजा सुण भाई , निज नांव की भक्ति पाई ॥ १८॥

वेदव्यासजी के पुत्र सुखदेवजी नांव के प्रेम में प्रीति में ऐसे लगे कि कोई करम नहीं किया। राजा जनक विदेही थे उन्होने निज नांव की भक्ति की थी।

तां प्रताप सुखदेव भीना, बिना नांव कोई करम न कीना ।
शंकराचारज के पत आई, तब ऋष करम सब दिया बहाई ॥ १९ ॥

राजा जनक के प्रताप से सुखदेवजी ने निज नाम की आराधना की कोई करम नहीं किया। शंकराचार्यजी को नांव का विश्वास हुआ। जब ऋषि करम को छोड दिया।

हस्तामल कूं दत्त समझायो, तब नांव को परचो आयो।
जोगी तपी पंडित ऋष ध्यानी,पच पच मुवा बहुत विध आनी ॥ २० ॥

हस्तामलजी मुनि को दतात्रेय ने समझाया जब नांव का प्राक्रम मालुम हुआ। योगी पंडित तपस्वी ध्यान करने वाले ऋषियों ने अपनी अपनी युक्ति बताई तो भी हस्तामल जी ने मौन नहीं तोडी।

हस्तामल मानी नहीं कांई, वेद करम काल मुख मांही।
कहे सुखराम सुणो ब्रह्मचारी, प्रेम नांव की भक्ति न्यारी ॥ २१ ॥

हस्तामलजी ने किसी की नहीं मानी। वेदों के ज्ञान व साधन से ब्रह्मपद की प्राप्ति नहीं होती है। आना जाना नहीं मिटता। म:फ: है कि ब्रह्मचारी सुणों प्रेम नांव की भक्ति सबसे अलग है।

हनुमान सीता रघुराई, निज नांव की वा गत पाई।
लक्ष्मण को सीया समझायो, निज नांव प्रेम तब पायो ॥ २२ ॥

हनुमानजी, सीताजी, रामचन्द्रजी ने निज नांव का ज्ञान प्राप्त किया। लक्ष्मणजी को सीताजी ने समझाया तब उन्होने निज नांव का प्रेम प्राप्त किया।

बालमिक नांव विध पाई, वेद करम किया नहीं भाई।
बालमीत सरगरो होई, ज्यां वेद करम किया नहीं कोई ॥ २३ ॥

बाल्मीकीजी ने नांव की विधि प्राप्त की उन्होने वेदों में बताये करम नहीं किये। बालमित जाति के सरगरा थे जिन्होने वेदों में बताये करम नहीं किये।

निज नांव प्रेम लिव लाया, ज्यां पंचायण संख बजाया।
सब हेरान हुवा रिष जोगी, मधम जात शकल रस भोगी ॥ २४ ॥

उन्होंने निज नांव से प्रेम से लिव लगाई, उनके पाण्डवों के यज्ञ में जाने से पंचायण शंख बजा जितने भी ऋषि जोगी वहां थे सब हैरान हो गये, यह मधम जाति का भोग भोगने वाला है।

ज्यां आया संख बाज्यो सोई, रिष पच मुवा बज्यो नहीं कोई।
कहे सुखराम सुणो ब्रह्मचारी, नांव जोग प्रीत हर प्यारी ॥ २५ ॥

वो आया जब शंख बजा ऋषियों से नहीं बजा। म:फ: है कि ब्रह्मचारी सुणो निज नांव की भक्ति परमात्मा को प्यारी है।

राज जोग यो कहिये भाई, नवजोगेश्वर रहया समाई।
सोम रिष यो जोग कमायो, सो जन पछे नामदेव गायो ॥ २६ ॥

हे भाई राजयोग इसे कहते है। नवजोगेश्वरों ने भी राजयोग की साधना की थी। सोम ऋषि ने भी यही साधन किया उनके पीछे नामदेवजी ने भी यह साधन किया।

संत अनेक चढया गढ सोई, कहां लग गिण बतावुं तोई।
कहे सुखराम सुणो ब्रह्मचारी, निज नांव बिध सब सुं न्यारी ॥ २७ ॥

इस साधन से अनेक संत गढ पर चढ गये। मैं तुमको कहां तक गिनती करके बताऊं। म:फ: है कि ब्रह्मचारी सुणो निज नांव की विधि सबसे अलग है।

नवधा भक्त रीत सो होई, जोग करम न्यारा कहूं तोई।
तिजी रिख रीत सुण भाई, चोथी विध सन्यासा पाई ॥ २८ ॥

नवधा भक्ति की रीति है। योग करम का साधन अलग है। तीसरी रीति हे भाई ऋषियों की है। चौथी विधि सन्यासियों की है।

प्रेम जोग ऊंच पद पावे, तो हठ जोग सब ही छिटकावे।
हट जोग सो वेद बताया, नवध्या प्रेम भक्त लग भाया ॥ २९ ॥

प्रेम जोग की साधना से उच्च पद प्राप्त होता है तो हठ योग की सब साधना छोड देते है। हठ योग का साधन वेदों में बताया है। नवधा व प्रेमा भक्ति तक का साधन भी वेदों में बताया है।

ज्ञान विज्ञान कही सब आंणी, परम हंस बदेह बखाणी।
कूंची करम जोग की सारी, मंत्र ध्यान नव भक्त बिचारी ॥ ३० ॥

वेदों में सब ज्ञान विज्ञान को कहा है। परमहंस व विदेह का बखाण किया है। सब जोग की विधि कुंची करम ध्यान मंत्र नवधा भक्ति का विचार किया है।

ऐतो शकल वेद ले गाया, नाना विध कर आंण सुणाया।
पण छुछम वेद वेदा में नांही, सो पावे सो सत कहाही ॥ ३१ ॥

ऐ सब तो वेदों में बताये है अनेक तरह से सुणाये है परन्तु छुछम वेद सतशब्द ने: अंच्छर का

ज्ञान वेदों में नहीं है उनकी प्राप्ति को ही सत्य कहा जाता है।

वेद भेद तीनूं जुग बांधा, छुछम वेद वेदा नहीं लाधा।
कण आया कूकस दे बावे, यूं छूछम वेद ज्यां वेद न गावे ॥ ३२॥

तीन लोक में सबने अष्टांग योग व वेदों का साधन धारण कर रखा है परन्तु छुछम वेद याने सतशब्द ने : अंच्छर का ग्यान वेदों में नहीं है। कण आने पर छिलके दूर हो जाते है ऐसे ही जिन्हे छुछम वेद सतशब्द ने: अंच्छर की प्राप्ति हुई है वे वेद की करणियों का ग्यान नहीं करते है।

वेद भेद कहता है कोई, सो सुण जोग कुंची सब होई।
वेद भेद कर शोभा चावे, करम जोग इधका कर गावे ॥ ३३॥

कोई वेदों के अष्टांग योग के लिये कहता है यह सब जोग की कूंची है। वेद व अंष्टाग योग की साधना कर शोभा चाहते है वे करमों व जोग के साधन को अधिक बताते है।

कहे सुखराम सुणो ब्रह्मचारी, छुछम वेद विध इण सुं न्यारी।
गोरख भरतरी गोपीचन्दा, जोगारंभ साज हुआ बन्दा ॥ ३४॥

म:फ: है कि ब्रह्मचारी सुणो छुछम वेद की विधि इनसे अलग है गोरखनाथजी भरतरी जी व गोपीचन्दजी ने जोग की साधना की व अपने शरीर को अमर कर लिया।

कूंची करम साज देह झाडी, पवन दियो गिगन पर चाडी।
ये तो सिद्ध हुवा जग मांही, देही रखी काल बस नांही ॥ ३५॥

कूंची व करमों की साधना करके स्वांसा को ब्रह्मण्ड में चढा लिया और जगत में सिद्ध हो गये। अपने शरीर को भी काल के बश में नहीं रखा।

चंद सूर धरण मिट जावे, तां लग काल निकट नहीं आवे।
पण ने: चे सुण जम बस होई, महाप्रलय में बचे न कोई ॥ ३६॥

चन्द्रमा सूर्य धरती भी मिट जावे वहां तक काल उनके पास नहीं जाता परन्तु निश्चय ही उनको काल के वश में होना पडेगा। महाप्रलय में काल से नहीं बच सकते।

यूं छूछम वेद बिना झूंठा भाई, परम मोक्ष हंस कोऊ न जाई।
कह सुखराम सुणो ब्रह्मचारी, वेद भेद ऊला व्यौहारी ॥ ३७॥

छुछम वेद के बिना सब झूंठे है। छुछम वेद के बिना कोई भी हंस मोक्ष में नहीं जाता। म:फ: है कि हे ब्रह्मचारी सुणो वेद व अष्टांग योग ऊली तरफ याने हद याने तीन लोक व बेहद याने बह्म तक को प्राप्त कराने वाले है।

रिष धरम यो कहिये भाई, इन्द्रियां दमन तप जुग मांई।
मंत्रादिक गायत्री साजे, देवलोक में जाय बिराजे ॥ ३८॥

इन्द्रियों को वश में करना तप करना ये सब ऋषि धर्म में है। मंत्रादिक गायत्री की साधना करके देवलोक व स्वर्ग में जा पहुंचते है उनका जन्म मरण नहीं मिटता।

ऐसी पोंच रिष्यां की होई, विष्न लोक लग पहुंचे सोई।
तेज पुंज की काया पावे, मन चावे सो कर्र बतावे ॥ ३९॥

ऐसी पहुंच ऋषियों की होती है वो बैकुण्ठ तक जा पहुंचते है। तेज पुंज का शरीर मिल जाता है। मन जो चाहता है वो ही करके बताते है।

ऐसी पोंच रिष्यां की होई, सुख दुख संग मिटयो नहीं कोई।
छुछम वेद रिषी किणीहन पायो, परम मोक्ष को भेद न आयो ॥ ४० ॥

ऋषियों की पहुंच इस तरह की है लेकिन जन्म मरण नहीं मिटता। छुछम वेद की प्राप्ति किसी ऋषि ने नहीं की इसलिये उनको परम मोक्ष की प्राप्ति नहीं हुई।

आवागवण रहित नहीं हुवा, देवलोक में सब रिष जुवा।
कहे सुखराम सुणो ब्रह्मचारी, यूं छुछम वेद बिन विधा न कारी ॥ ४१ ॥

जन्म मरण से छुटकारा नही मिला। स्वर्ग में सब ऋषि अलग अलग है। म:फ: है कि हे ब्रह्मचारी सुणो छुछम वेद के बिना कोई विध्या काम नहीं आती है।

नवधा अंग नव विध लावे, तो च्यार मुक्तलग पदवी पावे।
आवागमण मिटे नहीं कोई, परम मोक्ष लग पोहोच न कोई ॥ ४२ ॥

नवधा भक्ति नो प्रकार से होती है उससे बैकुण्ठ तक की चार मुक्ति सायुज्य, सारूध्य, सानिध्य व सामिप्य होती है। जन्मना मरना नहीं मिटता। परम मोक्ष में नहीं पहुंचते।

कहां लग बरण बतावुं भाई, एक अरथ में समझो आई।
वेद भेद हद बेहद तांई, सुक्ष्म वेद अगम कूं जाई ॥ ४३ ॥

मैं इसका कहां तक वर्णन करूं। एक अर्थ में ही इसको समझ लो। वेदों व अष्टांग योग के साधनोंकी पहुंच हद बेहद तक है। छुछम वेद के ज्ञान से अगम में जाता है।

सुक्ष्म वेद सुं सब कुछ होई, मुख सुं बोल कहे जुग लोई।
मन पवना चेतन तत सारा, सूरत निरत सब ही विस्तारा ॥ ४४ ॥

छुछम वेद पारब्रह्म से ही सब कुछ हुआ है। संसारी मुख से बोलकर जगत में कहते हैं। मन स्वांसा चेतन व पांचों तत्व सुरत निरत सबका विस्तार वहां से होता है।

बावन हरफ सुक्ष्म ने किया, अनंता नाम वेदा ने दिया।
अनंत नांव बावन के मांही, बावन हरफ एक में जाई ॥ ४५ ॥

बावन हरफ आत्म चेतन के आधार पर है। बावन हरफ से अनन्त नाम बने है यही वेदों ने दिया है। अनन्त नाम बावन में है। बावन अक्षरों का ज्ञान एक राम रटने से सज जायेगा।

ऐक नांव सुं ही सुक्ष्म न्यारा, वो पावे सो सत्त विचारा।
और शकल साधु रिष जोगी, तीन लोक माया रस भोगी ॥ ४६ ॥

सतशब्द ने: अंच्छर का ज्ञान अलग निराधार है। उसकी प्राप्ति से ही सतलोक की प्राप्ति होती है। सब साधु ऋषि जोगी तीन लोक में माया का सुख लेते है।

छुछम वेद मूल जिण पाया, वेद भेद डाला छिटकाया।
कहे सुखराम सुणो ब्रह्मचारी, युं छुछम वेद की विध है न्यारी ॥ ४७ ॥

छुछम वेद का ज्ञान मूल के समान है जिसको यह ज्ञान प्राप्त हो गया वो वेदों व अष्टांग योग के ज्ञान को नहीं करते जो डाला के समान है। म:फ: है कि ब्रह्मचारी जी सुणो छुछम वेद की विधि सबसे अलग है।

बेद भेद तम कहो ब्रह्मचारी, कोण बेद लग पोंच तुम्हारी।
बेद लबेद भेद सो होई, छुछम वेद न्यारा कहूं तोही ॥ ४८ ॥

हे ब्रह्मचारीजी तुम वेदों के अष्टांग योग के लिये कहते हो तो कौन से वेद तक तुम्हारी पहुंच है। वेद लबेद भेद याने अष्टांग योग है परन्तु छुछम वेद इन सबसे अलग है।

च्यार वेद पंडित अे गावे, आत्म धरम नांय सो कुवावे।
मंत्रादिक तामे रिचा होई, करामात वामें कहूं तोई ॥ ४९ ॥

पंडित चार वेदों का बखान करते है, वो आत्मधर्म नहीं कहलाता है। उसे आन धर्म कहते है। वेदों में मंत्रादिक व रिचाऐं हैं। करामात व कला वगैरह सब है।

अे दोऊ लबेद ऊडाया, करामात ईधकी कहां भाया।
ऐक जैन धर्म सुं बांध्यों आवे, काचे कलसे बेद बुलावे ॥ ५० ॥

वेदों के ज्ञान व अष्टांग योग के साधन से लबेद याने वाणी का भजन श्रेष्ठ है इसके सामने करामात अधिक नहीं है। जैन धर्म वाले मंत्रों से करामात से कच्चे कलशों से वेदों का उच्चारण कराते थे।

नेचे कलश कहे आ बाणी, शिव धर्म झूंठ जैन सत प्राणी।
जहां शंकराचार्य वहां चल आया, गधे पुंद मुख वेद बोलाया ॥ ५१ ॥

कलश निश्चय ही यह बात कहता था कि हे प्राणीयों शिव धर्म झूंठा व जैन धर्म सत्य है। वहां शंकराचार्यजी चल कर आये। वहां गधे की गुदा से वेदों का उच्चारण कराया।

तो भी कलश कहे आ बाणी, जैन धरम सांचो सुण प्राणी।
तब शंकराचार्य मंत्र संभाया, तो भी कलश हटे नहीं भाया ॥ ५२ ॥

फिर कलश कहता रहा कि जैन धरम प्राणीयों सच्चा है तब शंकराचार्य जी ने मंत्रों का उच्चारण किया तो भी कलश का बोलना बंद नहीं हुआ।

जब लबेद समाल्यो आंणी, तब चुप कलश ना बोले वाणी।
कहे सुखराम सुणो ब्रह्मचारी, बेद लबेद की यो बिध न्यारी ॥ ५३ ॥

जब उन्होने लबेद का उच्चारण किया तब कलश चुप हो गया वाणी नहीं बोलता। म:फ: है कि हे ब्रह्मचारी सुणो इस तरह वेदों की व लबेद की विधि अलग है।

अब छुछम वेद भेद यो होई, श्रुत ज्ञान बिन लखे न कोई।
कहया गरज सरे नहीं कोई, मत ज्ञान अंध सुण होई ॥ ५४ ॥

छुछम वेद का यह भेद है कि वो शास्त्रो के ज्ञान के बिना नहीं जाना जाता। छुछम वेद का ज्ञान कहने से नहीं आता। जो शास्त्रो के बिना मत ज्ञान से चलते है। वो अंधे है।

छुछम वेद वशिष्ठ मुनि पायो, विश्वामित्र भेद संभायो।
इनके अडी पडी जब भाई, चुक्यो न्याव शेष पे जाई ॥ ५५ ॥

छुछम वेद का ज्ञान वशिष्ठजी ने पाया। विश्वामित्रजी ने तपस्या की, उन्होने तपस्या को अच्छा माना व छुछम वेद को अच्छा नहीं समझा, इसका न्याव शेषजी के पास कराने गये।

हारयो वेद जप तप सारो, जित्यो छुछम नांव बिचारो।
व्यास बेद किरया सब गाई, छुछम वेद नेचे नहीं आई ॥ ५६ ॥

वेद जप तप सब की हार हुई छुछम वेद की जीत हुई। व्यासजी ने वेदों की सब क्रिया का वर्णन किया छुछम वेद का ज्ञान उनको नहीं मिला।

आ पारख उण दिन सुण होई, ऊभा व्यास बार कहुं तोई।
पार गूजरी आवे जावे, छुछम वेद वा पारख पावे ॥ ५७॥

यह परीक्षा उस दिन हो गई जबकि व्यासजी नदी के किनारे खडे रह गये गूजरी नदी के आर पार आ जा रही थी उसने छुछम वेद की परीक्षा पाई थी।

कहे सुखराम सुणो ब्रह्मचारी, अब कोण वेद की मत तुम्हारी।
बार बार तुम वेद बतावो, या चारा में मोख न पावो ॥ ५८ ॥

म:फ: है कि हे ब्रह्मचारी सुणो अब किस वेद पर तुम्हारी मान्यता है। बार बार तुम वेदों का बखान करते हो परन्तु इन चारो वेद के ज्ञान से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। जब तक छुछम वेद को नहीं समझोगे।

वेद गाय पूंता जन कोई, सो तुम सोज बतावो मोही।
भेद साज जन मोक्ष सिधाया, कोण कोण कहिये मुझ भाया ॥ ५९ ॥

वेदों के ज्ञान को पढकर कौन से जन मोक्ष पहुंचे है सो तुम मुझको सोध कर बतावो। अष्टांग योग की साधना कर कौन कौन से मोक्ष में गये जिसे तुम मुझे बतावो।

फेर लबेद लाय घट मांही, कौण कौण नर पूंता जाई।
ओ कोई आण भेद मुझ देवे, छुछम वेद सोजी तब लेवे ॥ ६० ॥

लबेद याने वाणी के भजन करने से किन किन मनुष्य को परम पद की प्राप्ति हुई इसका भेद मुझे आकर बतावो तब उसको छुछम वेद के ज्ञान की समझ आती है।

मोख मिल्या की आ सेनाणी, तीन लोक में रहे न प्राणी।
धर पाताल सुरग लग बासा, तहां लग गरभ शकल की आसा ॥ ६१ ॥

जो प्राणी मोक्ष में मिले है वो तीन लोक में नहीं रहते। धरती पाताल व स्वर्ग में निवास है तब तक सबको गरभ में आना जाना पडता है।

जुग में मिले किसी विध आंणी, अनन्त कला दिखलावे जांणी।
वे नर मोख न पूंता भाई, देवलोक में बैठा जाई ॥ ६२ ॥

जगत में आकर कई प्रकार की कला बताने वाले मोक्ष में कैसे गये। हे भाई वे मनुष्य मोक्ष में नहीं पहुंचे स्वर्ग में गये है।

बल रूखमांगद हरचन्द राई, पाण्डव पांच शकल जुग मांही।
सुण अमरिष भक्त या किनी, च्यार मुक्त बैकुण्ठा लिनी ॥ ६३ ॥

राजा बली रूखमांगद व हरिशचन्द्र पांचो पाण्डव ये सब तीन लोक में है। सुणो राजा अम्बरीष ने यह भक्ति की थी उनको बैकुण्ठ की चार मुक्ति मिली।

यूं नवध्या भक्त करे जन होई, परम मोक्ष पहुंता न कोई।
रिष धर्म साज कर भाई, देवलोक में पहुंता जाई ॥ ६४ ॥

इस तरह नवधा भक्ति करके भक्त हो गये परन्तु परम मोक्ष में कोई नहीं पहुंचा। ऋषियों के धर्म की साधना करके स्वर्ग में गये।

तप ही मोख न पहुंचे कोई, इधक जोर तो ईन्दर होई।
मेरा वचन न मानो भाई, तो भागवत में सुण लो जाई ॥ ६५ ॥

तपस्या करने वाले मोक्ष में कोई नहीं पहुंचे ज्यादा तपस्या करने पर इन्द्र पद की प्राप्ति होती है। मेरे वचनों पर विश्वास नहीं हो तो जाकर भागवत सुण लो।

नासकेत यहां आण बताया, सब रिष धरम पुरी में भाया।
जोगी शकल जुग के मांही, देवलोक में कबु न जाही ॥ ६६ ॥

ऊदालकजी के पुत्र नचिकेता ने यहां आकर बताया कि सब ऋषि देवताओं की पुरी में है। पवन योग साधना करने वाले जगत में रहते है। देवलोक में कभी नहीं जाते।

जिनको भेद कहूं तुझलाई, देह धर मिले जक्त के मांही।
ऐ परम मोक्ष किम मिल्या जाई, सो तुम भेद कहो मुज आई ॥ ६७ ॥

इसका भेद मैं बताता हूं। ये शरीर धारण कर जगत में मिलते है। ये परम मोक्ष में जाकर कैसे मिले इसका मुझे तुम भेद बताओ।

कहे सुखराम सुणो ब्रह्मचारी, मोख मिले वा भक्ति न्यारी।
मोख गयो आवे नहीं कोई, तीन लोक में नकल न होई ॥ ६८ ॥

म:फ: है कि हे ब्रह्मचारी जी सुणो जिस भक्ति से मोक्ष की प्राप्ति होती है वो सबसे अलग है। मोक्ष में गया हुआ वापस नहीं आता। तीन लोक में उसकी नकल भी नहीं होती।

कोई पारब्रह्म कूं देखे भाई, तो मोख मिल्यो आवे जुग मांई।
मोख मिलण बोहो राह न होई, ब्होत कहे जहां गम न कोई ॥ ६९ ॥

यदि कोई शरीर से कोई पारब्रह्म को देखता है तो मोक्ष में गया हुआ जगत में आ सकता है। मोक्ष की प्राप्ति के अनेक साधन नहीं है जो अनेक कहते है उनको जानकारी नहीं है।

गिगन चढन को पवन न्यारा, यूं मोख मिलन को एक विचारा।
चहुं दिश ऊडया गेण नहीं जावे, यूं ब्होत पंथ में मोख न पावे ॥ ७० ॥

गिगन में चढने के स्वांसा अलग है ऐसे ही मोक्ष प्राप्ति का साधन है। चारों तरफ उडने वाला पक्षी आकाश में ऊपर नहीं जा सकता इसी तरह अनेक साधन से मोक्ष प्राप्त नहीं होता।

ब्होत पंथ एक ही होई, मोख पंथ यामे नहीं कोई।
बोहोत पंथ तज एक संभावे, सो भी मोख कबहुं नहीं जावे ॥ ७१ ॥

सब करणियों के साधन एक ही है। करणियों के साधन से मोक्ष नहीं मिलता। सब करणियों को छोडकर एक करणी का साधन करे तो भी मोक्ष में नही जाता।

या तो बोहोत माया सुं स्याई, मोख पंथ न्यारो सुण भाई।
मोख पंथ थेट सुं न्यारो, ज्युं पंछी को ऊडन बिचारो ॥ ७२ ॥

करणियों के साधन से माया की प्राप्ति होती है। मोक्ष की प्राप्ति का साधन अनादि से अलग है जैसे पक्षी की उडान अलग अलग है।

तिरछी ऊडान शकल अवलाई, आडी ऊडण झूंठ सब भाई।
बहोत पंथ जे पग का होई, जहां पपील वेद कहे सोई ॥ ७३ ॥

पंछी तिरछा उडता है तो बहुत अवलाई पडती है आडा उडता है तो ऊपर जा भी नही सकता करणियो के बहुत से साधन पैरों से चलने के समान है वेदो के ज्ञान व साधन से जहां तक की प्राप्ति होती है।

ज्युं चींटी गेण कोण विध जावे, मोख राह बिन परा न पावे।
वेद भेद में पांव ऊपाई, बेहद लग नीट कर जाई ॥ ७४॥

जैसे कीडी आकाश में कैसे जा सकती है। मोक्ष का रास्ता बिना पांखों के नहीं मिलता। वेदों का ज्ञान व योग का साधन पैरों का रास्ता है बेहद तक मुश्किल से जा सकते है।

ज्युं चीटी वृक्ष नीट चढ जावे, अगम गेण कूं कहो किम पावे।
यूं ब्होत पंथ झूंठ है भाई, बिन पांखा को गेण न जाई ॥ ७५॥

कीडी वृक्ष पर मुश्किल से चढ जाती है वो आकाश में कैसे जा सकती है ऐसे ही बहोत साधन से मोक्ष नहीं होती इसलिये झूंठा कहा है बिना पांख वाले आकाश में नहीं जा सकते ।

पांव ऊपांव काहू नहीं पावे, बिना लबेद पांख नहीं आवे।
सोज्यां वेद भेद कूं पाया, भेद मांय सुं लबेद ऊपाया ॥ ७६॥

दूसरे साधनों से ऊपर नहीं चढा जा सकता। बाणी से सिमरण करने से ऊपर चढने का रास्ता मिलता है यही बिना लबेद के पांखों का नहीं आना है। वेदों की साधना करने से परमात्मा के नांव का सुमरण करने का ज्ञान मिला यही भेद मांय से लबेद ऊपाया है।

पण छुछम वेद यामें नहीं कोई, ना लबेद वेद पत होई।
कहे सुखराम सुणो ब्रह्मचारी, कोण वेद लग मत तुमारी ॥ ७७॥

छुछम वेद याने सतशब्द ने:अंच्छर वेदों के ज्ञान के आधार के सिमरण से प्रकट नहीं होता। म:फ: है कि ब्रह्मचारीजी कौन से वेद का तुमको ज्ञान है।

॥ इति श्री ब्रह्मचारी का संवाद सम्पूर्ण ॥

卐 बिठलराव का संवाद 卐

चौपाई :- बिठलराव अब बुज्यो आई, किरपा करदो भेद बताई।
ऐ च्यारू किण किण ने किया, पहली मान भेद किण लिया ॥ १॥

बिठलराव ने महाराज से प्रार्थना की कि आप कृपा करके भेद बतावो कि इन चारो बेद भेद लबेद व छुछम बेद को किसने बनाया है सबसे पहले इनका भेद किनको मिला।

श्री सुखो वाच:- चार वेद सुण ब्रह्मा किया, नारद सीख श्रवणा लिया।
ऊण उपदेश व्यास ने गायो, इस विध वेद जगत में आयो॥ २॥

म:फ: है कि ब्रह्माजी ने चारों वेदों को बनाया व नारदजी ने कानों से सुनकर वेदों के ज्ञान को धारण किया। नारदजी ने वेदों के ज्ञान का उपदेश व्यासजी को दिया। व्यासजी ने जगत में फैलाया।

वेद भेद यो सुण ले भाई, गोरखनाथ बरणयो आई।
शिव सुं मछ सुण प्रकट कियो, शिव सुं भेद शकल ने लियो ॥ ३॥

शिवजी से अष्टांग योग की साधना का भेद मछेन्द्र नाथजी ने सुणा। गोरखनाथजी ने अष्टांग योग को जगत में प्रगट किया। शिवजी से ही गोरखनाथजी को सारा भेद मिला।

महाशेष लबेद बणायो, आदशक्त से वां भी पायो।
विश्वकर्मा श्री यादे भाई, प्रगट कियो आण जुग मांही ॥ ४॥

बाणी का भजन सबसे पहले शेषजी को प्राप्त हुआ। शेषजी को महाशक्ति याने सृष्टिकर्ता

ईश्वर से मिला। शेषजी से श्रीयादे व विश्वकर्मा को मिला तथा उन्होने जगत में इस ज्ञान को प्रकट किया।

अब छुछम वेद की ऊतपत लावुं, महाविष्णु से तोय बतावुं।
लिछमी विष्णु बहुत सुख पाया, सनकादिक सुण जग में लाया ॥ ५ ॥

छुछम वेद की उत्पति बताता हूं। पारब्रह्म के पद से प्रकट होता है जो कि सृष्टि कर्ता का आधार है। सबसे पहले विष्णु लक्ष्मी को इसकी प्राप्ति हुई उनसे सनकादिक ऋषि को मिला सनकादिको ने इसे जगत में प्रकट किया।

ऋषभ देव तामें तत्त छाण्यो, छुछम वेद में तत्त पिछाण्यो।
वा प्रगट किया जग में आंणी, विध चोबीस तिरथंकर जाणी ॥ ६ ॥

ऋषभदेवजी ने छुछम वेद याने पारब्रह्म का पद जो सत्त माया का आधार है जिस पद से सतशब्द ने: अंच्छर आकर प्रकट होता है जिसे केवल ज्ञान कहते है उसे ऋषभदेव जी ने पाया उन्होने इसे जगत में प्रकट किया। चौबीस तीर्थंकरों ने भी इस ज्ञान को धारण किया।

तब बालाजी पिंडत बोल्या, तुम यह ज्ञान सकल गह तोल्या।
सबका मोल तोल कहो न्यारा, तुम बोलत हो कोण आधारा ॥ ७ ॥

बालाजी नाम का पंडित वहां था। उसने म: से प्रार्थना की कि आपने यह सब ज्ञान का अलग अलग वर्णन किया है तो आप किस ज्ञान के आधार पर बोल रहे है।

श्री सुखो वाच :- कह सुखराम भेद कहूं लाई, बालाजी पिंडत सुण भाई।
मैं बोलूं हूं इन आधारा, वो छूछम वेद इण सब सुं न्यारा ॥ ८ ॥

म:फ: है कि उस ज्ञान का भेद तुम्हे बताता हूं। हे बालाजी पिंडत सुणो मैं जिस आधार से बोलता हूं वह छूछम वेद इन सबसे शरीर स्वांसा व वाणी से अलग है।

इण आधार वेद सब किया, ब्रह्मा भेव जक्त को दिया।
बोल्या संत छुछम आधारा, पण काम काम में फरक विचारा॥ ९ ॥

शरीर स्वांसा व वाणी के आधार से ब्रह्माजी ने चारों वेदों की रचना की। ब्रह्माजी ने चारों वेदों के ज्ञान का भेद जगत को दिया है। सब ही संत छुछम वेद के आधार पर बोले है परन्तु काम काम में अन्तर है।

ऐक हाकम मुलक बसायो जाई, वां ही आधार भूप को भाई।
ऐक ब्याव कर राजा के लावे, वे ही आधार भूप को गावे ॥ १० ॥

ब्रह्मा विष्णु महादेव ने इस तीन लोक को बसाया परन्तु उनके भी आधार परब्रह्म परमात्मा का था तब बसा। जैसे जगत में एक राजा शादी करके लाता है और एक जगह उनका खांडा ब्याह करके लाता है तो उस खांडे के आधार उस राजा का है।

मैं आयो इण कारण भाई, सो प्रकट सुण जग के मांही।
ने:अच्छर खांडो सुण होई, वो नाम ब्रह्म को कहे न कोई ॥ ११ ॥

मैं जिस काम के लिये संसार में आया हूं उसको मैं तुम्हे प्रकट कहता हूं। ने: अंच्छर राजा के खाण्डे के समान है यह ब्रह्म का नाम है जिसको ब्रह्म का नांव कोई नहीं कहता है।

सो ने: अंच्छर दे मुज तांई, सतगुरू भेज्यो जुग के मांही।

आत्म हंस जाय के ल्यावो, पारब्रह्म के लोक पठावो ॥ १२ ॥

ब्रह्म के नाम ने: अंच्छर को देकर सतगुरू याने पारब्रह्म परमात्मा ने मुझे जगत में भेजा है। जो हंस आत्म चेतन के आधार से ने:अंच्छर का ज्ञान धारण करते है उन्हे पारब्रह्म के लोक में भेज दो।

अनन्त क्रोड आगे जन आया, आत्म हंस ब्यावणे भाया।
सोई रीत हमारी होई, ब्रह्मा रीत और कहूं तोई ॥ १३ ॥

आगे भी अनन्त ही संत आत्महंसो को इस ज्ञान को धारण कराने के लिये आये है। वो ही ज्ञान मैं देने के लिये आया हूं। इस तरह ब्रह्माजी का ज्ञान अलग है।

अब सुण बालाजी पिंडत आणी, वेद भेद अब कहूं बखाणी।
बात सकल चेतन आधारा, पर काम काम पर वचन नियारा ॥ १४ ॥

हे बालाजी पंडित सुणो मैं तुमको वेद व अष्टांग येाग के ज्ञान को अलग अलग कहता हूं। सब ज्ञान चेतन के आधार पर है परन्तु हर एक काम के लिये वचन अलग अलग है।

यूं ब्रह्मा वेद किया हद तांई, बेहद लग बात कही मांई।
इणको हुक्म यहां लग हुवा, तीनुं लोक बसावो जुवा ॥ १५ ॥

ब्रह्माजी ने तीन लोक में रहने का ही ज्ञान दिया। ब्रह्म पद तक के ज्ञान का वर्णन किया। ब्रह्माजी को तीन लोक में रहने का ज्ञान व तीन लोक को अलग अलग बसाने का हुक्म हुआ।

तीन लोक में आवे जावे, छोटी बडी पदवी सो पावे।
जहां लग ब्रह्मा तांण बताई, अगम बात सुक्ष्म कर गाई॥ १६ ॥

ब्रह्माजी के ज्ञान से तीन लोक में आते जाते रहते है तथा छोटी बडी पदवी पाते रहते है। जहां तक ब्रह्माजी ने इस ज्ञान को अच्छी तरह समझाया। ब्रह्म की प्राप्ति को सुक्ष्म रूप से बताया।

शोभा कही इस्यो पद होई, पण मिलणे की विध कहीं न कोई।
तिण को अरथ सुणो ओ भाई, वा विध कहयां रद्द अे जाई ॥ १७ ॥

ब्रह्म पद की शोभा तो की कि वो पद ऐसा है। परन्तु इसकी प्राप्ति का ज्ञान नहीं बतलाया। उसका कारण यह है कि उस ज्ञान को समझाते तो इनका ओधा रद्द हो जाता।

ब्रह्मा को कारज ओ होई, तीन लोक मरजादा सोई।
तिण कारण ये तांण बताई, भिन्न भिन्न रीत सकल जग मांही ॥ १८ ॥

ब्रह्माजी का ज्ञान तीनों लोको को मर्यादा में रखने का है। इस कारण ब्रह्माजी ने जोर देकर समझाया उसी से जगत में परमात्मा की प्राप्ति के अलग अलग साधन करने में लग गये।

और कुछ तुम भेद बतावो, तो आ सुण बुद्ध हिरदय में लावो।
और विध सब भिन्न भिन्न भाखी, परममोख की छुछम दाखी ।। १९ ।।

और तुम कोई भेद बताते हो तो सुणो। इस ज्ञान को हृदय में समझो। ब्रह्माजी ने दूसरी विधियां तो अलग अलग समझाई परन्तु परम मोक्ष की प्राप्ति का साधन सुक्ष्म रूप से वर्णन किया।

ओ तुम भेद हृदय में आंणो, छुछम वेद तुम भेद पिछाणो।
सेल भेल की शोभा गाई, जामण मरण होय विध भाई ॥ २० ॥

इस बात को हृदय में समझो तब तुम छुछम वेद भेद समझ सकते हो। ब्रह्माजी ने वेदों के ज्ञान में साकार को निराकार, निराकार को साकार बताया यही सेल भेल की शोभा गाना है उस ज्ञान

से जन्म मरण होता रहता है।

जन्मे जहां मरण विध नांई, मौत जहां वो ज्ञान न कांई।
यूं मोख मुक्त का पंथ नियारा, ब्रह्मा संग कहे क्यों प्यारा ॥ २१ ॥

जहां जन्म होता है वहां मरणे की विधि नहीं होती जहां मृत्यु होती है वहां जन्मने की विधि नहीं होती। इसी तरह मोक्ष व बैकुण्ठ का रास्ता अलग अलग है। ब्रह्माजी उसको साथ साथ कैसे कह सकते थे।

वेद नाम की शोभा गाई, परम मोख की यही ऊपाई।
पण भेद नाम को न्यारो होई, सो वेदा में कहयो न कोई ॥ २२ ॥

वेदों में ब्रह्म के नाम की शोभा का वर्णन करके परम मोक्ष की प्राप्ति का उपाय है परन्तु नाम व निजनाम सतशब्द ने:अंच्छर का भेद अलग अलग है उसका वर्णन वेदों में नहीं है।

सुण बालाजी पिंडत कहूं तोई, अजहुं तुम नहीं चिन्यो मोई।
शोभा वस्तु भेद नहीं पावे, तब लग ज्ञान हृदय नहीं आवे ॥ २३ ॥

बालाजी तुमको कहता हूं सुणो अब तक तुमने मेरे ज्ञान को नहीं पहचाना है। नाम की शोभा करी है परन्तु नाम की प्राप्ति का भेद नहीं मिला तब तक हृदय में ज्ञान प्राप्त नहीं होता।

नाम भेद वेदा में नांही, और बिध सब साजन मांही।
ऐक कुदरत कला नाम की न्यारी, वेद कहयो तो कहो ऊचारी ॥ २४ ॥

निज नाम याने सतशब्द ने:अंच्छर की प्राप्ति का ज्ञान वेदों में नहीं है। दूसरे सब साधनों की विधि है। एक कुदरत नाम की कला अलग है अगर वेदों में कहीं हो तो बताओ।

पूर्व ध्यान वेद में गायो, ओऊं सोहं शब्द बतायो।
पवन संग गिगन में जावे, नाम चढे सो भेद न पावे ॥ २५ ॥

पूर्व के रास्ते का साधन वेदों में बताया है। ओऊं सोहं का साधन बताया है। स्वांसा के साथ ओऊं सोऊं का जपा अजपा करके गिगन याने ब्रह्मण्ड में पहुंचते है। नाम याने सतशब्द ने:अंच्छर चढता है उसका भेद नहीं जानते।

नाम चढे पिछम दिश होई, आ कुदरत कला तके है सोई।
सब ही साध ना जाणी भाई, नहीं नहीं दोष तुमारे मांही ॥ २६ ॥

ने:अंच्छर बंकनाल में होकर पिछम के रास्ते चढता है उसको कुदरत कला कहते है। सब ही साधन करने वालों ने इसे नहीं जाना है इसमें तुम्हारा क्या दोष है।

बिठलराव अब बोल्या आंणी, आ बडा बडा पुरूषा नहीं जाणी।
सो कारण क्या कहिये मोही, या कुदरत कला कहत हो सोई ॥ २७ ॥

बिठलराव कह रहा है कि इसको बडे बडे पुरूषों ने नहीं जाना। उसका क्या कारण है जिसे कुदरत कला कहते है।

<u>श्री सुखो वाच :-</u> इणको अरथ यह सुण भाई, राज वेद किया जग मांही।
जहां तहां यांरी विद्या गावे, जीव सुणे सोई भेव संभावे ॥ २८ ॥

म:फ: है कि इसका अर्थ है कि जगत में सब वेदों का ज्ञान करते है। जहां तहां इसी ज्ञान का उपदेश होता है। जैसा जीव सुणता है वो वैसी ही साधना में लगता है।

जगा जगा चर्चा आ होई, बेद रीत घर घर कहुं तोई।
लागे रंग संग सुं भाई, यूं कुदरत की संगत नहीं कोई ॥ २९ ॥

जगह जगह इसी ज्ञान का उपदेश होता है इसलिए वेदों का ज्ञान घर घर में धारण कर रखा है। जैसी संगत मिलती है वैसा ही साधन करते है। कुदरत कला का उपदेश नहीं मिलने से उस ज्ञान को कैसे धारण कर सकते है।

अे बडा पुरूष पीछे सुण होई, पहली सकल नार नर लोई।
यूं वेदी सुणे वेद विध सोई, यूं कुदरत कला संगत नहीं पाई ॥ ३० ॥

जिसको तुम बडे पुरूष मानते हो वो बडे पुरूष पीछे होते है पहले तो सब संसारी स्त्री पुरूष के रूप में है। इसी तरह वेदों का ज्ञान सुनते है तो वेदों का ज्ञान धारण करते है, ऐसे ही कुदरत कला की प्राप्ति का ज्ञान नहीं सुनते तो कुदरत कला कैसे प्राप्त हो सकती है।

करणी कर कर बलवन्त होई, जहां कुदरत कला न जांणे कोई।
इसको अर्थ यह सुण भाई, बिना प्रेम नहीं जागे कोई ॥ ३१ ॥

करणिया करके बलवन्त याने रिद्धियां सिद्धियां प्राप्त करते है उनको कुदरत कला याने सतशब्द की जागृति नहीं होती इसका अरथ यह है कि बिना प्रेम के कोई कार्य नही होता।

जाग्यां बिना रीत नहीं पावे, नामे करे और शोभा गावे।
यूं अे मोख इसी में जांणे, नाम कला कूं नांय पिछाणे ॥ ३२ ॥

सतशब्द की जागृति के बिना परम पद की प्राप्ति नहीं होती। नाम के सिमरण की शोभा करते है। सुमरण से ही मोक्ष मानते है। नाम कला याने सतशब्द के ज्ञान को नहीं जानते।

बडा पुरूष दोय बिध होई, जांरो भेद कहूं मैं तोही।
ऐक ज्ञान भेद समझ में भारी, एक काया अपर बल ईधकी धारी ॥ ३३ ॥

बडे पुरूष दो प्रकार के होते है उसका भेद बताता हूं एक ज्ञान से बडे होते है, दूसरे शरीर से बलवान।

ठोड ठोड संगत या नांही, जहां कुदरत कला ऊदे हुये मांही।
आ कुदरत कला नाम की भाई, ठोड ठोड नहीं जग के मांही ॥ ३४ ॥

जगत में जगह जगह यह सतसंग नहीं है जिससे कुदरत कला याने सतशब्द की जागृति हो जावे। यह कुदरत कला निज नाम ने:अंच्छर का ज्ञान सब जगह नहीं है।

बिठलराव अब कहे पुकारी, तुम तत्त ज्ञान सबसे कहो भारी।
तो जग में फेल्यो क्यों नांही, जो कुछ बडो प्राक्रम मांही ॥ ३५ ॥

बिठलराव म: से प्रार्थना करता है कि आप ब्रह्म पद की प्राप्ति के ज्ञान को श्रेष्ठ बताते हो तो यह ज्ञान जगत में क्यों नहीं फैला। जबकि आप इसमें बडा प्राक्रम बताते हो।

वेद भेद तुम ऊला किया, तो सब जगत धार क्यों लिया।
जाग जाग सबके मन भावे, खट दरशण वैराग संभावे ॥ ३६ ॥

वेदों व योग के साधन को ऊली तरफ का बताया तो सारे जगत ने इसको क्यों धारण कर लिया। जगह जगह इसकी साधना होती है। खट दरशणी व बैरागी भी यही साधना करते है।

श्री सुखो वाच :- कह सुखराम सुणो विध आणी, वेद भेद फैल्या इम जांणी।
जिण कारण अे जग में आया, सो सब भोग वेद में गाया ॥ ३७॥

म:फ: है कि वेदों का ज्ञान संसार में इसलिये फैला कि जीव जगत में जिस कारण आया है उसके सब सुखों की प्राप्ति के साधन का वर्णन है।

इण कारण कोई भेद न पावे, सुणियां बिना कुण विद आवे।
बेद भेद जग में बोह होई, इण कारण जाणे सब कोई ॥ ३८॥

इसी कारण से संसार में ने:अंच्छर निज नाम का भेद धारण नहीं करते है क्योंकि उनको इसके बारे में जानकारी नहीं है। चारों वेदों का ज्ञान जग में है।

भोग मिले नाना विध सारा, सो वेदां में कहया विचारा।
इण कारण धारे सब आई, मोख सुख नहीं सूजे भाई ॥ ३९॥

जीव जिन जिन भोगों को भोगना चाहता है उन सब भोग प्राप्ति के उपाय वेदों में है इसलिये सब वेदों के ज्ञान को धारण करते है मोक्ष की प्राप्ति का साधन नहीं करते।

वेद जगत स्वारथ ले गाया, तीन लोक का सुख बताया।
जो आत्म कूं भावे भाई, सो वेदां में समझ बताई ॥ ४०॥

जीव जग में सुख चाहता है। तीन लोकों में सुख चाहता है उन सब सुखों की प्राप्ति के साधन वेदों में है। जो आत्मा सुख चाहती है उनके मिलने की विधि वेदों में है।

बिठलराव तत्त ज्ञान न फैलयो, सो कारण इन जक्त न झेल्यो।
सो आत्म का सुख एक न गावे, उल्टो नांव मरण विध लावे ॥ ४१॥

म: बिठलराव से फ: है कि ब्रह्म की प्राप्ति का ज्ञान इस कारण जगत ने धारण नहीं किया। ब्रह्म प्राप्ति के ज्ञान में आत्मा के सुखों की महिमा नहीं है। ब्रह्म से नांव की साधना करने वाले संसार के सुखों को सत्य समझकर उनसे मोह नहीं करते यही उल्टा नांव मरण विध लाना है।

आत्मराज जगत में होई, परमात्म को राज न कोई।
यांरी संगत जीव बुध धारी, आनन्द लोक कूं दियो बिसारी ॥ ४२॥

संसार में सब आत्मा का सुख चाहते है परमात्मा की प्राप्ति कोई नहीं चाहता। सुख प्राप्ति की चाह से आत्मा जीव भाव में आ गया है इसलिये यह आनन्द पद को भूल गया है।

यांरी संगत जीव होय बैठा, इस कारण तत्त गहे न सेंठा।
कह सुखराम राव सुण आई, युं वो ज्ञान न फैले भाई ॥ ४३॥

सुखों की चाहना से आत्मा जीव हो गया इसलिये ब्रह्म की प्राप्ति का ज्ञान धारण नहीं करता। म:फ: है कि राजा सुणो इस कारण से यह ब्रह्म प्राप्ति का ज्ञान संसार में नहीं फैला।

शोभा देख सकल जस गावे, कुदरत कला सकल मन भावे।
इणकी रीत कठिन सो होई, तिण कारण धार सके न कोई ॥ ४४॥

संसार कुदरत कला के ज्ञान की महिमा करता है व सबको अच्छा भी लगता है परन्तु इस ज्ञान को धारण करने की विधि मुश्किल है इसलिये इसको कोई धारण नहीं करता।

कठिन चाल यांरी नहीं आवे, ब्रह्म तेज सहयो नहीं जावे।
जाणे सही अधिक या होई, तो पण धार सके नहीं कोई ॥ ४५॥

ब्रह्म प्राप्ति के साधन को संसार कठिन समझकर धारण नहीं करता। ब्रह्म तेज सहा नहीं जाता। सब यह जानते हुये कि यह ज्ञान सबसे श्रेष्ठ है फिर भी धारण नहीं करना चाहता।

बिठलराव इण कारण सोई, तत्त ज्ञान नहीं फेल्यो कोई।
तीन लोक का सुख ऊठावे, आनन्द लोक तांको जस गावे ॥ ४६ ॥

हे राजा ब्रह्म प्राप्ति का ज्ञान संसार में नही फैलने का यह कारण है कि यह ज्ञान तीनों लोकों के सुख को असत समझ कर नहीं चाहते। एक आनन्द लोक की प्राप्ति की ही महिमा करते है।

एक कारण में वा कुछ नांही, किस विध जीव मिलावे मांही।
कूंची करम धरम नहीं सेवा, मंत्र इष्ट नहीं कोई देवा ॥ ४७ ॥

आनन्द लोक की प्राप्ति के लिये कूंची, करम, धरम, ठाकुर, सेवा, मंत्र, इष्ट व देवता कुछ नहीं है। आनन्द लोक की प्राप्ति में यह एक भी साधन नहीं है तो यह जीवों को कैसे मिल सकता है।

आत्म रीत सेजे यो होई, बोहो बिध बिन थंभे नहीं कोई।
तत्त ज्ञान में कुछ न भावे, तो कोण रीत कर हंसा पावे ॥ ४८ ॥

आत्मा की यह सहज रीति है कि यह बहुत करणियों में तो लग जाती है और ब्रह्म प्राप्ति के ज्ञान में कोई करणी नहीं है तो हंस करणी करके उसको कैसे पा सकता है।

बिठलराव अब बोल्या छाणी, काया रखे कोण विध प्राणी।। ४९ ॥

बिठलराव ने म. से प्रार्थना की कि यह प्राणी बिना करणी किये कैसे शरीर को रखे।

कह सुखराम देह के तांई, करो सकल विध कारण नांही।
मोख काज विध एक न चहिये, सतगुरू शरण प्रीत कर रहिये॥ ५० ॥

म.फ है कि शरीर को रखने के लिये दैनिक कर्म, कर्त्तव्य कर्म, शुभ कर्म निष्काम भाव से करने में मनाई नही है। मोक्ष प्राप्ति हेतु किसी करणी की आवश्यकता नही है। प्रेम से सदगुरू की शरण में रहना चाहिये।

प्रेम ऊपाय तत्त के तांही, कुदरत कला प्रगटे मांही ।
सतगुरू दया राम रटे कोई, ने:अंच्छर प्रगटे तब होई।। ५१ ॥

ब्रह्म प्राप्ति के लिये केवल प्रेम ही चाहिये, प्रेम से भजन करने पर ही कुदरत कला प्रगट हो जाती है। सदगुरू दया से उनकी विधि से भजन करने पर ही सतशब्द ने:अंच्छर की जागृति होती है।

प्रेम प्रीत सुं जागे भाई, प्रेम प्रेम सुं ऊलटे मांही ।
प्रेम प्रेम सुं पिछम आवे, प्रेम प्रेम सब किल्ला ढावे॥ ५२ ॥

प्रेम से भजन करने पर ही सतशब्द प्रगट होता है व प्रेम से ही बंकनाल में उलटता हैं। प्रेम से भजन करने से ही शब्द पिछम में आता है, वह सब कंवलो का छेदन करता है।

नाम प्रेम के सुण बस भाई, प्रेम बिना नहीं और ऊपाई ।
प्रेम मांय विध और विचारे, तो ज्युं नमक दूध में डारे॥ ५३ ॥

निज नाम प्रेम के वश में है। प्रेम से भजन करने के सिवाय कोई उपाय नहीं है। प्रेम से भजन करने के सिवाय दूसरी करणिया करना दूध में नमक डालने की तरह है।

नाम ऊलट गिगन चढ जावे, फाडर पीठ शिखर में आवे ।
मिणिया सकल फोड के भाई, मेरूदण्ड को बिंदे जाई।। ५४ ॥

प्रेम से भजन करने पर शब्द बंकनाल में होकर मेरूदण्ड पर होकर गिगन में चढ जाता है। इक्कीस सुरगो को छेदन करता हुआ मेरूदण्ड पर पहुंचता है।

सिर ऊपर होय त्रिगुटी आवे, लाग्यो ध्यान नैण पलटावे।
अब चढया नाम अगम दिश भाई, बिना प्रेम नहीं और ऊपाई ॥ ५५ ॥

मेरूदण्ड से सिर ऊपर होकर त्रिकुटी में आता है। त्रिकुटी में शब्द का अनुभव होने से नैत्र पलट जाते है। जब शब्द अगम याने ब्रह्मण्ड से ऊपर चला जाता है। प्रेम से भजन करने के सिवाय कोई दूसरा उपाय नहीं है।

बिठलराव अब बुज्यो आंणी, किण सुं प्रेम करे यो प्राणी।
तुम देवल देव बिध नहीं राखी, निराधार प्रेम विध भाखी।। ५६ ॥

बिठलराव ने म. से पूछा कि भजन करने वाला प्राणी किससे प्रेम करे। क्योंकि आपने मंदिर व देवता कोई विधि नही रखी, निराधार प्रेम का वर्णन किया है।

कहो प्रेम कौण सुं लागे, बिना सुध कैसे कोई भागे ।
करणी ज्ञान ध्यान नहीं राख्यो, निराधार प्रेम तुम भाख्यो ॥ ५७ ॥

अब आप ही बताओ यह किससे प्रेम करे। बिना जानकारी के कोई कैसे जा सकता है। आपने किसी प्रकार की करणी व ज्ञान ध्यान नहीं बताया। निराधार प्रेम का वर्णन किया है।

कह सुखराम प्रेम आधारा, सतगुरू शरण एक विचारा।
और शरण कोई नहीं चाहिये, आपी ऊलट आप में रहिये।। ५८ ॥

म.फ. है कि उस प्रेम के वास्ते सिर्फ सदगुरू की शरण चाहिये। और किसी शरण की जरूरत नही है। यह साधन आपको अपने आप करना पडता है।

जो चावे सो सतगुरू होई, आनन्द ब्रह्म राम कहूं तोई ।
और न दूजी आशा कोई, प्रेम लगे गुरू चरणा जाई॥ ५९ ॥

जो जीव आनन्द ब्रह्म व रामजी की प्राप्ति चाहता है तो सदगुरू विधि से भजन करके प्राप्त कर सकता है। दूसरी कोई आशा नही रखते हुए गुरू ज्ञान से ही प्रेम करे।

ऐसो हेत गुरू सो लागे, तन मन गया भरम नहीं जागे।
तब वो प्रेम उमंग घट आवे, ने:अंच्छर तन मांय जगावे।। ६० ॥

इस गुरू ज्ञान से इतना प्रेम हो जावे कि यह शरीर व मन पर कितना ही कष्ट आ जावे तो भी किसी प्रकार का भरम नहीं जागे। जब प्रेम शरीर में उमंगता है तो शरीर में सतशब्द ने:अंच्छर की जागृति हो जाती है।

परम मोख का सतगुरू दाता, सब करणी का गुरू विधाता ।
पारब्रह्म सतगुरू ही भ्यासे, जब ऊर केवल सो प्रेम प्रकाशे॥ ६१ ॥

परम मोक्ष की प्राप्ति कराने वाले सदगुरू याने के: ज्ञान ही है। दूसरी करणिया कराने वाले विधाता यानि ब्रह्मा विष्णु महादेव राम कृष्ण है। केवल ज्ञान की विधि धारण करने से ने:अंच्छर रूपी सतगुरू आयेगा वो ही के:प: में ले जायेगा।

प्रेम जग्यो हर नाम प्रकाशे, ऐक दिवस भर ढील न पासे।
दुरलभ प्रेम वो आवे नांही, तब लग नाम न जागे मांही॥ ६२॥

जब अन्तर में प्रेम की जागृति होगी तब सतशब्द का प्रकाश होगा एक दिन की भी देरी नहीं होगी। परमात्मा प्राप्ति के लिये जब तक घट में प्रेम नही आता तब तक नाम की जागृति नहीं होती।

और ऊपाय प्रेम के नांही, सतगुरू दया प्रकाशे मांही ।
मुख कहणे को काम न कोई, कुदरत कला दया वो होई।। ६३॥

म.फ. है कि प्रेम के लिये दूसरा कोई उपाय नही है। सदगुरू दया यानि विधि से राम रटने से ही प्रेम घट में आता है। मुंह से कहने से नही होती। सदगुरू की दया से कुदरत कला की जागृति होती है।

और ज्ञान के अनन्त ऊपाई, तत्त ज्ञान के एक ही भाई ।
सतगुरू टाल प्रेम नहीं आवे, तो नेःअंच्छर वो नाम न पावे॥ ६४॥

म.फ. है कि दूसरे ज्ञान के अनन्त उपाय है। ब्रह्म प्राप्ति के ज्ञान के वास्ते यह एक ही उपाय है। सदगुरू की शरण लिये बिना प्रेम घट में नहीं आता है तो ने: अंच्छर प्राप्त नहीं होता।

कह तो बहुत समझ कहूं लाई, कह तो एक बचन में भाई।
सतगुरू सुं दुबध्या कछु नांही, अेसो मिले नीर पय मांही॥ ६५॥

म.फ. है कि तुम कहो तो अनेक तरह से समझाऊं नही तो एक वचन में समझ ले। सदगुरू ज्ञान में किसी तरह का भरम नही रखे। ऐसा प्रेम करे जैसे दूध और पानी मिलकर एक हो जाता है।

<u>बिठलराव वाच</u> :- सतगुरू मेहर सुणी हम आगे, आप कहो सो अरथ न लागे।
वां तो कयो दया कर देवे, तुम कहो कुदरत कला कर लेवे ॥ ६६॥

बिठलराव ने कहा है कि सदगुरू की दया मैंने पहले भी सुनी। उसका अर्थ आपके कहने के माफिक नही लगता। उन्होंने तो कहा दया कर देते है। आप कहते है कि सदगुरू दया यानि अणभै वाणी के ज्ञान से ही कुदरत कला की जागृति होती है।

आगे दया मेहर जन गाई, गुरू परताप सत जुग मांही ।
आप कहो सो रीत है न्यारी, आ गम नहीं कम को हो भारी ॥ ६७॥

आगे भी सतयुग में गुरू दया का जनों ने वर्णन किया है। आप कहते है सो रीति अलग है। यह मालूम नही होता है कि कौन सी कम व कौन सी अच्छी है।

वां तो कही संत कोई आवे, मेहर करे तो भेद बतावे ।
आप कहो कहणो कुछ नांही, जागे नांव प्रेम सुं मांही॥ ६८॥

उन्होने तो कहा कोई संतो का आगमन हो जाय तो वो दया करे तो भेद बता देते है। आप कहते हैं मुंह से कुछ नही कहना है। प्रेम से ही घट में नांव की जागृति होती है।

वां तो कयो नाम सुं लागे, वेद करम कर निश दिन जागे ।
साजन ऐक संभावो आई, प्रीत करो साहब सुं भाई ॥ ६९॥

उन्होने तो कहा नाम का सुमरण रात दिन करो व वेदों के बताये माफिक करम भी करो। आप कहते हो एक साधन को संभालो और परमात्मा से प्रीति करो।

आप कहो गुरू ही हर होई, सतगुरू अवर नहीं कोई ।
गुरू ही नाम नेम पत सारा, गुरू ही सुमरण ध्यान विचारा ॥ ७० ॥

आप कहते है कि गुरू ही ईश्वर है। सदगुरू यानि सत्य केवल ज्ञान के सिवाय और कोई नही है। गुरू यानि ज्ञान को ही सब कुछ समझो। गुरू नाम नेम पत सुमरण ध्यान सब गुरू ही है।

बिठलराव यूं बोल्या आई, आप न्याव करदो समझाई ।
वां तो कयो तन मन माया, हरी लेखे अरपण कर दो सब भाया ॥ ७१ ॥

बिठलराव ने ऐसा कहा कि आप ही मुझे अच्छी तरह से समझा दो। उन्होने तो कहा था कि तन मन व माया हरी के लेखे अर्पण कर दो।

श्री सुखो वाच :- बिठलराव सुण वचन हमारा, न्याव करूं भांजु भर्म थांरा।
इनको अरथ यह सुण भाई, वा हद बेहद की दौड बताई।
बेहद तो साजन सूं जावे, वां साज्यो सोई आंण बतावे ॥ ७२ ॥

म.फ. है कि हे राजा मेरे वचनों को सुणों, मैं तुम्हारे भरमों को अच्छी तरह समझाकर मिटा देता हूं। इसका यह आशय है कि सुणो उन्होने हद व बेहद तक जाने की बात बताई है। तथा उन्होने जो साधन किया वो ही साधन तुमको बताया।

इण में झूंठ कछु नही भाई, प्रेम जोग विध वा नहीं पाई।
जो जो ऋषि जोगेश्वर हुवा, ज्ञान ध्यान वारा सब जुवा ॥ ७३ ॥

इसमें किसी तरह का झूंठ नहीं है। भक्ति योग याने प्रेम से सतगुरू विधि से भजन की विधि उनको प्राप्त नहीं हुई है जितने ऋषि व योग की साधना करने वाले हुये उन सबका ज्ञान ध्यान अलग अलग है।

पंडित बेद व्यास गत न्यारी, जन अवतार एक विध धारी।
सिध की मेहर वचन सुं होई, बिना वचन दिल फले न कोई ॥ ७४ ॥

पंडितो व वेदव्यासजी का साधन अलग है। भक्तों की व अवतारों की एक विधि है। सिद्धों की कृपा वचनों से होती है। दिल से (बिना मुंह से बोले) फल नहीं होता।

इनकी मेहर फलां की भाई, मोख ब्रह्म नहीं बचना मांही।
आ ही अवतार रीत सुण होई, पंडित व्यास ऋषि कहूं तोई ॥ ७५ ॥

इन सब की मेहर फलों की प्राप्ति की है। मोक्ष व ब्रह्म प्राप्ति का ज्ञान वचनों से नहीं कहा जाता यही अवतारों की, पंडितो की, व्यासजी व ऋषियों की है।

अे वचना सुं मारे तारे, हद बेहद का कारज सारे।
पण अगम देश वचना में नांही, कुदरत कला बिन पुचें न कोई ॥ ७६ ॥

यह वचनों के द्वारा ही मार देते है, तार देते है, हद बेहद तक की प्राप्ति करा देते है परन्तु अगम देश की प्राप्ति वचनों से नहीं होती। कुदरत कला याने सतशब्द ने:अंच्छर के बिना वहां नहीं पहुंचते है।

युं जन की मेहर दिल की भाई, पवन बिना गिगन जहां जाई।
यांरी मेहर सकल हद मांही, घणी घणी तो बेहद जाई ॥ ७७ ॥

संतो की दया दिल से होती है। स्वांसा से अलग होकर गिगन में पहुंचता है उन सबकी मेहर

हद याने तीन लोक में रखती है ज्यादा से ज्यादा बेहद याने परब्रह्म तक पहुंचाती है।

आ दिल की मेहर अगम घर जावे, हद बेहद कोई थाह न पावे।
तन की मेहर जीव की होई, जड माया कर बकसे कोई ॥ ७८ ॥

संत जिन पर दिल से दया करते है वो अगम घर में पहुंचते है। हद बेहद तक पहुंचाने वाले उनका थाह नहीं पा सकते है। शरीर की कृपा है वो जीव की है, वो जड माया देते है।

वचन मेहर चेतन कर जांणो, सो हद की मेहर पिछाणो।
ने:अंच्छर बचना में नांही, ना कागद पर मंडयों न जाई ॥ ७९ ॥

वचनों की मेहर चेतन की है। वो भी तीन लोकों में सुखों की प्राप्ति कराती है। ने:अंच्छर वचनों में नहीं आता व न कागज पर लिखा जाता है।

कोण बिध कहो बगसे आंणी, बिठलराव समझो तत छाणी।
आतो मेहर आद सुं होई, सतगुरू बिना न माने कोई ॥ ८० ॥

हे राजा इस रहस्य को समझो। किस तरह से उसको दे सकता है यह मेहर तो अनादि से है। सतगुरू की दया के बिना यह प्राप्त नहीं होती।

गुरू सब ध्यान विद्या मत सारा, सब करणी गुरू मूल विचारा।
ने:अंच्छर सतगुरू में होई, पारब्रह्म प्रगट कहूं तोही ॥ ८१ ॥

गुरू याने ज्ञान से ही सब तरह की विद्या बुद्धि व ध्यान करना आता है। सब तरह के साधन बताने वाले भी गुरू ही है। ने:अंच्छर की प्राप्ति सतगुरू से ही होती है वह पारब्रह्म का स्वरूप है।

इण कारण सतगुरू को ही माने, न्यारो कर ब्रह्म केम पिछाणे।
कुदरत कला नाम की जागे, अेसी मेहर भरम सब भागे ॥ ८२ ॥

इसलिये सतगुरू की शरण लेनी पडती है। सतगुरू के बिना ब्रह्म की प्राप्ति कैसे हो सकती है। सतगुरू याने सत ज्ञान से ही कुदरतकला निज नाम की जागृति होती है उनकी ऐसी दया से सब भरम मिट जाते है।

बिन करणी दे गिगन चढाई, सो गुरू बिना जपे क्या भाई।
अनहद घुरे नाद सिर बाजे, अनहद में जन जाय बिराजे ॥ ८३ ॥

करणियां कराये बिना ही गिगन में चढा देते है सो वह सतगुरू के सिवाय किसका जप करे। सतगुरू की विधि से भजन करने से त्रिगुटी में अनहद घूरने लगता है। शब्द की ध्वनि सिर पर होती है। ब्रह्मण्ड में शब्द का अनुभव होना ही अनहद में जन जाय बिराजे है।

आनन्द लोक में पोंचे जाई, ओ गुण सब सतगुरू के मांही।
और मेहर मंत्र देवे, साजन ध्यान सबे शिष सेवे ॥ ८४ ॥

आनन्द पद की प्राप्ति सतगुरू की दया से होती है। दूसरे मेहर करने वाले मंत्र देते है। सब शिष्य साधन ध्यान करते है।

राज योग में बिध ना कांई, गुरू सो हेत सो ही जप भाई।
वेद भेद में ज्यो विध होई, राज योग में गुरू कहूं तोही ॥ ८५ ॥

राज जोग में कोई विध नहीं। गुरू याने ज्ञान से प्रेम करना ही जपना है। वेदो के व अष्टांग योग में विधि है। राज योग में सब कुछ गुरू ही है।

सतगुरू मांय सबे विध भाई, न्यारो हेत करे काहा जाई।
आ सुण मेहर इसी विध न्यारी, और मेहर में सब विध सारी ॥ ८६ ॥

सतगुरू याने अणभै वाणी में ही सब विधि है। अलग किससे जाकर प्रेम करे। इस तरह यह मेहर न्यारी है। दूसरों की मेहर में सब विधि है।

आ तो एक प्रेम सुं जागे, दूजो प्रेम अरथ नहीं लागे।
अमरत जहर दोय है भाई, यूं ऐसी मेहर जगत के मांही ॥ ८७ ॥

यह तो प्रेम से जागृत होती है। दूसरों से प्रेम काम नहीं आता। अमृत व जहर दो है। जगत में इस तरह की मेहर है।

इमरत तो कुदरत सो होई, जहर बहुत विध कर ले सोई।
कहे सुखराम अरथ ओ होई, बिठलराव भिन्न भिन्न कयो तोई ॥ ८८ ॥

अमृत तो कुदरत से होता है। जहर बनाने की बहुत विधि है। म:फ: है कि हे राजा तुमको अलग अलग समझाया है इसका यह अर्थ होता है।

जो निज मन माने सत्त भाई, तो कसर कोर राखो मत राई।
तन मन धन अरपण सब कीजे, निराधार गुरू शरणो लीजे॥ ८९ ॥

तुम्हारा निज मन इसको सत मानता है तो हे राजा इसको धारण करने में किसी तरह की कसर मत रखो। तन मन सब अरपण करके सब आधार छोडकर सतगुरू की शरण लो।

मोसर चुक न जाणो भाई, जो तत्त समझ धसी उर मांही।
ज्यु संता आगे विध किवी, सोई तुम करो मोख वा लीवी ॥ ९० ॥

इस मनुष्य शरीर का लाभ लेना चाहिये यदि ब्रह्म प्राप्ति का ज्ञान हृदय में जचा है। जिस विधि से करने से संतो को मोक्ष की प्राप्ति हुई वो ही विधि तुम करो।

राज योग की यही उपाई, तन मन धन गुरू चरणा मांही।
मेल्या तका तत्त सुं जाण्यो, सब बैराग त्याग मन ठाण्यो ॥ ९१ ॥

राज योग की प्राप्ति का यही साधन है। तन, मन, धन, सतगुरू यानि जिन संतो ने अणभै वाणी बनाई उनके चरणों में अर्पण कर दे जिन्होने यह साधन किया है। उनको ब्रह्म की प्राप्ति हुई व मन से त्याग वैराग धारण किया।

और त्याग बेराग न होई, मन माने जहां रहो जन कोई।
ऐक बिध करडी आ भाई, तन मन धन अरपियो नहीं जाई ॥ ९२ ॥

इसमें किसी तरह का त्याग बेराग नहीं है जहां मन हो वहां ही रहो। केवल अहंभाव को छोडकर हर्ष शोक से रहित होना ही तन मन धन अर्पण करना है। यह एक विधि कठिन है।

घर कूं त्याग करे नर कोई, ले मुख जाय बन में सोही।
ओ भी त्याग सहल रे भाई, पण तन मन धन अरपियो७ नहीं जाई ॥ ९३ ॥

कोई मनुष्य घर को छोडकर वन में चला जाये तो यह त्याग बहुत सरल है परन्तु तन मन धन का अर्पण होना कठिन है इनका ममत्व नहीं मिटता।

डाक पडे धेह में नर कोई, यूं बेराग त्याग सुण होई।
सती अग्नि तन काठ जलावे, तन मन युं बेराग कहावे ॥ ९४ ॥

कोई मनुष्य सबका मोह छोडकर धेह में कूद पडता है। सुणो इसको त्याग बेराग कहते है। सती अपने शरीर को अग्नि में जलाती है यह तन मन से बेराग है।

तन मन धन अरपण कर भाई, निरभय होय रहो जग मांही।
हुवे आंण आप सुं आंणी, सो पासे लाखां रहो प्राणी ॥ ९५ ॥

तन मन धन अर्पण करके जगत में भय रहित होकर रहो। परमात्मा की इच्छा से जो हो रहा है उसको अच्छा समझो। पास में कितने ही प्राणी ज्ञान धारण के लिये आते है उससे तेरे त्याग में कोई फर्क नहीं पडेगा।

जो जावे सो जाणे दीजे, सहज रहे सो शरणे लीजे।
डरपो मती लाज कुल जांणी, बिड़द अधिक बदसी जग आंणी ॥ ९६ ॥

जो जा रहा है उसको अपना समझ कर सोच मत करो। सहज में जो रहे उसे परमात्मा का समझो। कुल व जगत की केवत से मत डरो पीछे संसार में तुम्हारी महिमा रहेगी।

जो जो हंस तुमारा होई, सो सो कदे न बिछडे कोई।
चिन्ता मती करो तुम कोई, निरभय तत्त गहो जग मांही ॥ ९७ ॥

जो भी तुम्हारे हंस है वो तुम से कभी अलग नहीं होंगे। किसी तरह की चिन्ता मत करो तथा निरभय होकर ब्रह्म प्राप्ति का ज्ञान धारण करो।

कुल पदवी छुछम आ भाई, सो पण भरी विकारां मांही।
जन पदवी त्रिलोक सरावे, हंसा ऊलट अगम घर जावे ॥ ९८ ॥

कुल व जगत की पदवी थोडे दिनों की है सो भी विकारों से भरी हुई है। संतो की पदवी की तीन लोक में महिमा होती है व हंस उलट कर के:पद आ:पद पाते है।

ज्ञान खोज हिरदे कर लीजे, निरस बात सोई नहीं कीजे।
से सूरा साहिब मन भावे, तीन लोक तांको जस गावे ॥ ९९ ॥

इस ज्ञान को समझ कर हृदय में धारण करो बुरे विचारों को छोडो। वे ही शूरवीर संत है जो कि परमात्मा की प्राप्ति करते है तीन लोक उनकी महिमा करता है।

तन मन तज रिजक उपाई, तत्त ध्यान धरिये घट मांही।
रख विश्वास पूरसी आंणी, निरपख होय रहो तत्त छांणी ॥ १०० ॥

तन मन से सिर्फ धन संग्रह में मत लगो। ब्रह्म का ध्यान घट में धारण करो। परमात्मा में विश्वास रखो। सब तरह से पूर्ति करेगा। निरपक्ष होकर सत पथ का ज्ञान धारण करो।

मन सुं ऐक ध्यान सो कीजे, और बोझ सिर कछु न लीजे।
सेज बिरती में जो कुछ होई, ताकु आड न दीजे कोई ॥ १०१ ॥

मन में एक ब्रह्म के ध्यान का ही विचार करो दूसरे विचार मन से मत करो। सहज वृति में जो कुछ हो रहा है उसे होने दो।

<u>कुण्डलिया</u> :- अणभै हेला देत हूं, सुण लीज्यो निज दास। ब्रह्मलोक की चाह हुवे,
सो आजो मम पास॥ सो आजो मम पास, ब्रह्म के मांय मिलावुं।
जतन करूं बोहो भांत, संग कर ले मैं जावुं॥ सुखराम हंसा के कारणे,
देह धरी जग बास। अणभै हेला देत हूं, सुण लिज्यो निज दास ॥ १ ॥

अणभै ग्यान से कह रहा हूं कि जो मेरे ज्ञान को धारण करने वाले है सुणो जिनको ब्रह्मलोक की प्राप्ति करना हो तो वो मेरे ज्ञान को धारण करो। मेरे ज्ञान को धारण करने से ही ब्रह्म की प्राप्ति होगी। सब तरह से ज्ञान को समझाना ही जतन करना है। सतशब्द के साथ हंसो को के:पद आ:पद की प्राप्ति कराना ही साथ ले जाना है। म:फ: है कि हंसो का उद्धार करने के लिये सतपद के ज्ञान से सता रूप से देही में प्रकट होना ही देह धारण करना है व जगत में वास करना यही अणभै हेला देणा है।

शब्द हमारो सांभल्या, आनन्द हुये घट मांय। से सब हंस स्वरूप है,
मिलसी हम सुं आय। मिलसी हम सुं आय, नाम मेलुं घट मांही।
पिछम देश होय हंस, उड आकासा जाई॥ सुखराम जीव सुलझाय के,
जम से लेवुं छुडाय। शब्द हमारो सांभल्या, आनन्द हुवे घट मांय ॥ २॥

हमारा शब्द याने अणभै ग्यान सुनने से जिसके हृदय में आनन्द होता है वे सब हंस के समान है। वे ही मेरा ज्ञान धारण करेंगे जिससे उनके घट में शब्द की जागृति होगी। शब्द के साथ बंकनाल में होकर ब्रह्मण्ड में पहुंचेंगे। म: फ: है कि जीव को सतशब्द का ज्ञान धारण कराके जन्म मरण से रहित करना ही जम से छुडाना हैं।

शब्द हमारा पेक है, भेज दिया जग मांय। भरम करम कुं भांग के,
हंस ले आवे जाय॥ हंस ले आवे जाय, ब्रह्म के लोक पठावुं।
सवा लाख को हुक्म, हंस संग लेकर जावुं ॥ सुखरामदास फटकार कहे,
तिण में कसर न काय। शब्द हमारा पेक है, भेज दिया जग मांय॥ ३॥

मेरा सतशब्द शक्तिशाली है उसका सतगुरू विधि से भजन करने पर कंठ कंवल पर प्रकट होता है यही जगत में भेजना है। इसके प्रकट होने से भरम करम से अलग करके शब्द के साथ हंस को ब्रह्मलोक में पहुंचा देता हैं। इस सत पद के ज्ञान द्वारा अनन्त हंसो का उद्धार हुआ है और आगे भी होता रहेगा। यह बात बिल्कुल सच्ची है याने सवा लाख की है। म: फ: है कि इसमें किसी तरह की शंका नही है।

ओऊं अजपो संग करे, सोहं स्वांसा जांण। ररो ममो रट जीभ सुं, धरे बीच में आंण॥
धरे बीच में आंण, तबे ने: अंच्छर आवे। इण छके बिन मेल, पीठ राहा कदे न पावे॥
सुखरामदास अे अेकठा, मथे नाभ में आंण। ओऊं अजपो संग करे, सोहं स्वांसा जांण ॥ ४ ॥

ओऊं याने बाहर निकलते हुये स्वांस में सब बोलते है। इस स्वांस को अजपा याने कागलिया की धुन व मन को साथ लगाकर अन्दर लेते हुये उस्वांस याने सोहं को पहचानो। लेते हुये छोडते हुये श्वांसो के बीच में रकार मकार का उच्चारण करो। इस तरह भजन करने से ही ब्रह्म वैराट से आकार शब्द कंठ कंवल पर प्रगट होता है, यही ने: अंच्छर है। इस तरह इन छह के मिले बिना पीठ का रास्ता नही मिलता। म: फ: है कि इन सबके साथ नाभी में सुरत लगाकर भजन करना ही नाभ में मथणा है।

ओऊं सोहं लिंग है, स्वांसा पुरूष शरीर। रंकार सो बीज है, ममंकार बिंद वीर॥
ममंकार बिंद वीर, भग अंच्छा सो होई। सुरत कंवल तां मांय, प्रीत नारी कहूं तोय॥
सुखराम भोग ऐ करे, जीभ सेज पर आय ।तो जीव ऊलट आद घर, मिले ब्रह्म में जाय ॥ ५॥

ओऊं सोऊं स्वांस लिंग है। यह स्वांसा ही पुरूष का शरीर है। ररंकार बीज है ममंकार बिंद है इच्छा भग है सूरत रूपी कंवल है। प्रीति से भजन करना ही स्त्री है। म: फ: है कि इस तरह जीभ द्वारा भजन करना ही जीभ सेज पर आना है। ऐसी विधि से भजन करने से ही जीव को आद घर याने परमपद के:पद आ:पद की प्राप्ति होना ही ब्रह्म में मिलना है।

शिष्य वचन :- सिख बूजे गुरूदेव कूं, मोकूं कहो समझाय। जीव ब्रह्म सु बिछडयो,
किस कारण जन राय॥ किस कारण जन राय, काय आयो जग मांही।
भोलप कन रिसाय, कन माया रस तांई॥ अब तलफै ब्रह्म लोक कूं,
कहो किस कारण आय। सिख बूजे गुरूदेव कूं, मोकूं कहो समझाय ॥ ६ ॥

शिष्य गुरूदेव से पूछता है कि आप मुझे समझाकर कहिये कि हे गुरूदेव यह जीव ब्रह्म से किस कारण से अलग हुआ है तथा जगत में क्यों आया है। भोलप से, रीस से या माया का रस लेने आया है। अब वापिस ब्रह्म लोक में जाने को क्यों तडप रहा है इसका क्या कारण है।

क्या दुख थो ब्रह्म लोक में, क्या सुख थो नांय। क्यों आयो तज धाम ऊ,
क्यों पडियो फंद मांय॥ क्यों पडियो फंद मांय, दया कर रीत बतावो।
ब्रह्म जीव हुवे काय, अरथ सो सोजर लावो॥ अब ब्रह्म होणो आद रे,
पहले आयो काय। क्या दुख थो ब्रह्म लोक में, क्या सुख थो नांय॥ ७॥

ब्रह्म लोक में इस जीव को क्या दुख था कौनसा सुख नही था। ब्रह्मधाम को छोड कर क्यों फंद में पडा है दया करके यह बात बताओ। यह ब्रह्म जीव क्यों हुआ इसका अर्थ समझाइये। वापिस ब्रह्म होना चाहता है पहले क्यों आया। ब्रह्मलोक में क्या दुख था और क्या सुख नही था।

जीव ब्रह्म ते बिछडयो, यूं कहे सब ही ज्ञान। वहां कुछ न्यारो जीव थो, कन ब्रह्म ऐकी ध्यान॥
कन ब्रह्म ऐकी ध्यान, ब्रह्म से बिछडयो कांई। वहां कहां रहयो निदान, काय आयो जग मांही॥
ओ आंटो मुझ खोल के, कहिये है ज्युं आन। जीव ब्रह्म ते बिछडयो, यूं कहे सब ही ज्ञान ॥ ८॥

सब ही ज्ञान यह कहते है कि जीव ब्रह्म से बिछड़ा है। वहां पर जीव अलग था या ब्रह्म वह एक ही था, ब्रह्म से क्यों अलग हुआ है। वहां कैसे रहा व जगत में कैसे आया है। इस बात को आप मुझे समझाकर कहिये। सब ज्ञान कहते हैं जीव ब्रह्म से बिछडा है।

वो ही ब्रह्म यो जीव है, कन वो न्यारो होय। केआयो यां फूट कर,
से कहिये गुरू मोय॥ से कहिये गुरू मोय, ऐसे कहे सब कोई।
सब कोई सतस्वरूप, कन पुत्र जिम होय॥ वहां यहां कहो क्या फेर है,
सो विध कहिये मोय। वो ही ब्रह्म कन जीव है, कन वो न्यारो होई॥ ९॥

यह जीव वो ही ब्रह्म स्वरूप है या अलग है या ब्रह्म से फूटकर आया है। हे गुरूदेव इसको समझाइये ऐसे सब जीव कहते है। यह सब सत्तस्वरूप है या पुत्र की जैसे है। यहां व वहां क्या फर्क है सो भी कहिये। यह जीव वो ही ब्रह्म है या अलग है।

सुखराम वाच :- जन सुखदेव अब बोलिया, हे शिष सुण दे कान। पारब्रह्म इन जीव को,
निरणो कहुं सब आंण॥ निरणो कहुं सब आंण, भरम राखुं नही कोई।
जीव ब्रह्म है दोय, आश ऐसी विध होई ॥ पूत पिता सुं बिछडयो,
यह गत वहां सो जांण। जन सुखदेव अब बोलिया, हे शिष सुण दे कान॥ १०॥

म: फ: है कि हे शिष्य मेरी बात ध्यान से सुणो। पारब्रह्म का व जीव का सब खुलासा कहता हूं। किसी तरह का भरम नही रखुंगा। जीव व ब्रह्म दो है इसको इस तरह से समझो जैसे जगत में पुत्र पिता से अलग होता है यह विधि वहां पर है। हे शिष ध्यान लगा कर सुणो।

पूत पिता के मांय है, युं ब्रह्म में जीव होय। यहां जीव न्यारो ऊपजे,
वहां भी आ गत होय, वहां भी आ गत होय, नार नर वहां भी होई।
सुणो ब्रह्म व्यौहार, भोग सारा कहुं तोही॥ सुखराम कहे शिष सांभलो,
वहां भरम दुख नही कोय। पूत पिता के मांय है। युं ब्रह्म में जीव होय ॥ ११ ॥

पूत पिता के अन्दर है। ऐसे ही जीव ब्रह्म के अन्दर है। जिस तरह जीव यहां अलग उत्पन्न होता है। वहां भी यही रीति है। स्त्री पुरूष वहां भी है। ब्रह्म के व्यौहार व भोग सब कहता हूं। म: फ: है कि हे शिष सुणो ब्रह्म में भरम व दुख नही है जैसे पूत पिता में ऐसे ही ब्रह्म में जीव है।

यहां जीव पेडया ऊतरे, पडे दुख में जाय। चोथी पीढी रंक होय, अे मुख विष ले खाय॥
अे मुख विष ले खाय, जीव युं आंण कहायो। जात पांत कुल छोड, संग वैश्या से ल्यायो॥
सुखराम कहे युं ब्रह्म सुं, बिछड जीव हुवो आय। यहां जीव पेडया ऊतरे, पडे दुख में जाय ॥ १२ ॥

यहां जीव जिस तरह पेडिया उतरता है, जैसे जैसे दुख में जा पडता है व चौथी पीढी में राजा से रंक हो जाता है। यानि जब सृष्टिकर्ता पद से नीचे उतरता है वह शिव ब्रह्म होता है, शिव ब्रह्म से चिदानन्द ब्रह्म और चिदानन्द ब्रह्म से उतर कर जीवब्रह्म हो जाता है जब तक यह जीव शरीर में पांच तत्व, तीन गुण व इन्द्रियों के भोगों के साथ है वहां तक जीव भाव है। जैसे जगत में कोई अपनी जात पांत कुल को छोडकर वैश्या से पुत्र लाता है इस तरह ब्रह्म से बिछडकर जीव हुआ। व जन्म मरण के दुख में पडा।

ब्रह्म सुन्न परब्रह्म के, संगम बण्यो तीण बार। शिव पुत्र सो ऊपजे,
महासुन्न धीव लार॥ महासुन्न धीव लार, अबे संजम या होई।
चेतन शक्त विचार, पुत्र पुत्री अे दोई॥ सुखराम कहे अब शक्त के,
चेतन लागो लार। ब्रह्म सुन्न परब्रह्म के, संगम बण्यो तीण बार ॥ १३ ॥

पारब्रह्म का सृष्टि कर्ता पद है, उसे होण काल ब्रह्म भी कहते है। इसी पद के आधार पर शिव ब्रह्म व माहसुन्न का पद है, इसके बाद चेतन व शक्ति पद है। पारब्रह्म पुरूष, ब्रह्म सुन्न स्त्री इनके संयोग से शिव ब्रह्म पुत्र व पुत्री महासुन्न हुई, इनके संयोग से चेतन पुरूष शक्ति रूपी स्त्री पैदा हुये।

चिदानन्द और शक्त के, बण्यो भोग व्यौहार। महतत इच्छा दोय से,
बालक ऊपज्या लार॥ बालक ऊपज्या लार, अबे यांके संग होई।
मन्छा पुत्री वीर, अहुं बेटो कहूं तोई॥ सुखराम कहे अहंकार के,
मन्छा से हुवो प्यार। चिदानन्द और शक्त के, बण्यो भोग व्यौहार॥ १४॥

चेतन व शक्ति के संयोग से महतत पुरूष व इच्छा रूपी स्त्री हुई है। इनके संयोग से मन्छा पुत्री व अहंकार पुत्र पैदा हुआ।

कवित्त :- अहंकार संग होय, नार मंच्छा कहुं तोई। तासुं उत्पत जीव, तत्त ब्रह्मण्ड कहुं तोई॥
इणकी सो औलाद, दोय मारग होय चाली। तब चिदानन्द सुण शक्त, आण रीता सब पाली॥
दोनो चालो अेकठा, न्यारी दिशा मत तांण। दोनु फुटया कुछ नही, कही चिदानन्द आंण॥ १५॥

अहंकार व मन्छा से जीव व पांच तत्व बने है। ये दोनो अलग अलग हुये है व तब चिदानन्द शक्ति ने इनको कहा दोनो साथ साथ रहो अलग मत रहो। दोनो के अलग अलग होने से कुछ नही होगा। अहंकार व मन्छा के संयोग से जल तेज वायु आकाश पुत्र है व पृथ्वी पुत्री है।

कुण्डलिया:- अहंकार से ऊपना पांच तत परवाण। ब्रह्मण्ड पवन तेज जल,पुत्री मही बखाण॥
पुत्री मही बखाण, भोग यांरा सब होई। चौरासी लख पुत्र, जीव जाया कहुं तोई॥
सुखराम कहे इण जीव की, युं आ उत्पत जांण। अहंकार से ऊपना पांच तत परवाण॥१६॥

अहंकार से पांच तत्व पृथ्वी, जल, तेज, वायु व आकाश बने है इनमें पृथ्वी पुत्री है इन्ही से चैरासी लाख योनियो में जीवों की उत्पत्ति होती है। म: फ: है कि इस जीव की उत्पति ऐसे हुई है। अहंकार से पांच तत्व बने है।

कवित्त :- जीव पुरूष के संग, नार ममता कहुं तोई। यो जायो मन पूत,
सूरत कन्या पण होई॥ यांरे बण्यो संजोग, भोग करणे कूं लागा।
चौसठ जाया पूत, घडी मोरत बंद बागा॥ सुखराम कहे यूं ब्रह्म सुं,
बण्यो जीव शिव आय, चौरासी के बीच में, फिर फिर गोता खाय ॥ १७॥

जीव पुरूष के साथ ममता रूपी स्त्री है। इस ममता व जीव से मन रूपी पुत्र व सूरत रूपी कन्या हुई है। इस मन व सूरत से आठ पोहर चौसठ घडी व मोरत बने है। म: फ: है कि ऐसे ब्रह्म से जीव व शीव बने है, अब इस जीव को चौरासी लाख योनियों में आना पडता है।

कुण्डलिया :- हे शिष अब तोसे कहूं, तो में तेरा ज्ञान। खण्ड सोई ब्रह्मण्ड में,
सोई पिण्ड में जाण॥ सोई पिंड में जाण, निरख अपने घट कीजे।
खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड, सोज तीनू या लीजे॥ बिन्द जहां से ऊतरे,
तहां ब्रह्म को ध्यान। हे शिष अब तोसे कहूं, तो में तेरा ज्ञान॥ १८॥

म: फ: है कि हे शिष्य मैं तुझे कहता हूं कि तेरे में ही तेरा ज्ञान है। जो खण्ड में है वही ब्रह्मण्ड में है, वही पिण्ड में है। अपने घट में देख लो। इस शरीर में ही खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड तीनो की साधना करो। जहां से बिन्द भृकुटी होकर नीचे उतरता है। वहां चिदानन्द ब्रह्म का ध्यान होता है।

दशवें द्वार परब्रह्म है, महल त्रिकुटी शीव। त्रिकुटी तज पिण्ड आवियो, तबे कहायो जीव॥
तबे कहायो जीव, स्थूल काया इण धारी। सुख दुख देही लार, अन्त विपता सब लारी ॥
सुखराम कहे शिष सांभलो, युं नित पैदा जीव। दशवें द्वार परब्रह्म है, महल त्रिकुटी शीव॥ १९॥

दशवें द्वार में परब्रह्म का स्थान है। त्रिकुटी से ऊपर शीव ब्रह्म का स्थान है। त्रृकुटी को छोडकर जब शरीर में आता है तब जीव कहाता है, तब इस जीव ने स्थूल शरीर धारण किया है। शरीर के साथ सुख दुख अनेक विपत्तियां लग गई। म: फ: है कि हे शिष्य सुणो ऐसे जीव हमेशा पैदा होते है।

दशवें द्वार ब्रह्मण्ड है, सुणो त्रिकुटी खण्ड। जहां लग पवन बहत है, तहां लग कहिये पिण्ड॥
तहां लग कहिये पिण्ड, भेद सारो तुझ मांही। बिना सतगुरू संसार, जीव गत जाणे नांही॥
सुखराम कह शिष सांभलो, युं बण रयो मण्ड। ब्रह्मण्ड दसवों द्वार है, त्रिकुटी कहिये खण्ड॥ २०॥

दसवां द्वार को ब्रह्मण्ड कहते हैं, त्रिकुटी को खण्ड, जहां तक स्वांसा चलता है उनको पिण्ड याने शरीर कहते है, यह सारा भेद तुम्हारे अन्दर ही है। सतगुरू की शरण लिये बिना संसारी जीव

इस ज्ञान को नही जानते। म: फ: है कि हे शिष्य सुणो इस तरह यह सारी सृष्टि बनी है।

अब च्यार खान में ऊपजे, जीव जहां तहां जाय। सुख दुख जहां तहां एक ही,
कम नही जाफा मांय॥ कम नही जाफा मांय, नरक सुरगा लग जावे।
धरी देह का डण्ड, बिसन आगे लग पावे॥ तीन लोक सुखराम कहे,
युं जग बणियो आय। अब च्यार खान में ऊपजे, जीव जहां तहां जाय॥ २१॥

सृष्टि में जीव जहां तहां चार खान (जर, इण्डज, आंकूर, व ऊदबुद) में उपजते याने पैदा होते है। सुख दुख जीवों को जहां तहां एक सा है कम ज्यादा नही होता। जीव नरक में या स्वर्ग में जावे। सुख दुख एक सा है। शरीर धारण करने की सजा विष्णु लोक तक मिलती है। म: फ: है कि तीन लोक में सब जगह सुख दुख है।

बिठलराव वाच : शिष पूछे गुरूदेव कूं, अगत मुक्त गत मोख। इणको भेद विचार सो,
कहो सुख दुख दोष॥ कहो सुख दुख दोष, जीव को कहां सुख होई।
सो विध कहिये आण, भेद दीजे सब मोही।। जीव पणो कहां जायगो,
कब टले सब दोष। शिष पूछे गुरू देव कूं, अगत मुक्त गत मोख ॥ २२॥

शिष्य गुरू से पूछ रहा है कि अगत याने नरक, मुक्त याने बैकुण्ठ, गत याने स्वर्ग, मोक्ष याने के:पद आ:पद है। इनके भेद विचार व सुख दुख व दोष कहिये। जीव को सुख की प्राप्ति कहां होती है वो विधि फरमाइये व सबका भेद बताईये। यह जीव भाव कैसे मिटेगा, सब दोष कब दूर होंगे यह बात शिष्य गुरूदेव से पूछता है।

हे शिष अगत मुक्त और गत लग, सुख दुख तीनों जाग। ऊलट मोख लग पोंचसी,
जब जासी दुख त्याग॥ जब जासी दुख त्याग, फेर पाछो नही आवे।
पारब्रह्म के मांय, ओ जीव जाय समावे॥ वहां सुण सुख की जाग है,
जहां नही जम की लाग। अगत मुक्त और गत लग, सुख दुख तीनों जाग ॥ २३॥

हे शिष्य नरक बैकुण्ठ में तीनों जगह सुख दुख है। सतगुरू विधि से भजन कर बंकनाल में उलटकर मोक्ष में पहुंचेगा जब दुख से छुटकारा होगा। जन्म मरण में नही आवेगा तब ही सब दुख दूर होगा। पारब्रह्म के पद में यह जीव जाकर समा जायेगा सुणो उस जगह सुख ही सुख है वहां यमराज की पहुंच नही है।

पारब्रह्म में हंस मिले, जे जन्मे नही कोय। यो सब कहे गुरूदवेजी,
मेरे सांसो होय॥ मेरे सांसो होय, आद ओ कहां सुं आयो।
वो इज ब्रह्म कन और, ज्ञान में जहां तहां गायो॥ पहले कहो किम आवियो,
सो विध कहिये मोय। पारब्रह्म में हंस मिले, जे जन्मे नही कोय॥ २४॥

शिष्य गुरूदेव से पूछ रहा है कि जो हंस पारब्रह्म में जाकर मिलते है वह कोई जन्म नही लेते। हे गुरूदेव ऐसा सब ही कहते परन्तु मुझे शंका है कि यह शुरू में कहां से आया है यह वो ही ब्रह्म है या दूसरा है। ज्ञानी जहां तहां इसका बखाण करते है। यह पहले वहां से क्यों आया है यह बात बताईये।

श्री सुखो वाच :- पारब्रह्म लग जीव की, आदु ऊतपत होय। पारब्रह्म ज्यां आनन्द है,
ऊपजे खपे नही कोय॥ ऊपजे खपे नही कोय, सदा थिर रहे यह दोई।

पारब्रह्म और आनन्द, भेद यांरो कहूं तोई ॥ आनन्द मिल्या नही बावडे,
हे शिष कहूं मैं तोय। पारब्रह्म लग जीव की, आदु ऊतपत होय ॥ २५ ॥

म:फ: है कि हे शिष्य पारब्रह्म से ही जीव की आदु से उत्पति हुई है। पारब्रह्म का पद आनन्द पद के साथ है वहां पहुंचने पर जन्म मरण नही होता वो पद व आत्मा हमेशा स्थिर है। पारब्रह्म का और आनन्द पद का भेद कहता हूं कि जो जीव आनन्द पद में मिल जाता है वह वापिस नही लौटता है। हे शिष्य मैं तुझ से कहता हूं कि पारब्रह्म तक जीव की आदु से उत्पति है।

पारब्रह्म को लोक है, इसो शीव को होय। चिदानन्द को लोक है,
जीसो जीव को जोय ॥ जीसो जीव को जोय, च्यार अे लोक कहावे।
तां आगे आनन्द वार कोई पार न पावे ॥ सुखराम कहे शिष सांभलो,
आ गत ज्यो वां जोय। पारब्रह्म को लोक है, इसो शीव को होय ॥ २६ ॥

पारब्रह्म, शीवब्रह्म, चिदानन्द ब्रह्म और जीवब्रह्म का लोक ये चार लोक कहलाते है। इन चारो के आगे आ:पद है उसका कोई थाह नही पाता। म:फ: है कि हे शिष्य सुणो ऐसी गति है जिसको देख लो। पारब्रह्म के लोक जैसा ही शीवब्रह्म का लोक है।

जीवब्रह्म को लोक है, जहां लग सुख दुख लार। चिदानन्द के लोक में,
है दुख ऐक अपार ॥ है दुख ऐक अपार, शीव को ने:चल नांही।
पारब्रह्म को लोक, ता लग ओ दुख मांही ॥ परा आनन्द में मिल गया,
जे नही जन्मण हार। जीवब्रह्म को लोक है, जहां लग सुख दुख लार ॥ २७ ॥

जीव ब्रह्म के लोक में सुख दुख दोनों साथ है। चिदानन्द ब्रह्म के लोक में एक अपार दुख है। शीवब्रह्म के लोक से आने की विधि है, ने:चल नहीं है। पारब्रह्म के लोक तक यह दुख साथ है। आनन्द पद में मिलने वाला वापिस जन्म नहीं लेता। तीन ब्रह्म के लोक में गया हुआ वापिस आता है, यही भारी दुख है।

च्यार लोक तो थिर सदा, अेक लोक मिट जाय। इण अेके का तीन अे,
चवदे भवन कहाय।। चवदे भवन कहाय, जीव का अे सब होई।
वा तीनां के मांय, लोक तेरे कहूं तोई। आनन्द लोक सुखराम कहे,
जहां लोक नहीं मांय। च्यार लोक तो थिर सदा, अेक लोक मिट जाय ।। २८ ।।

आनन्दलोक, पारब्रह्म का लोक, शीव ब्रह्म का लोक, चिदानन्द ब्रह्म का लोक ये चार लोक हमेशा स्थिर है। अेक जीव ब्रह्म का लोक मिट जाता है, इस जीव ब्रह्म के तीन लोक चवदहा भवन कहलाते है। पारब्रह्म, शिवब्रह्म, चिदानन्द ब्रह्म इन तीनो में तेरह लोक है तथा आनन्दलोक में कोई लोक नही है।

तीन ब्रह्म के लोक सुं, आनन्दलोक नही जाय। जीव ब्रह्म के लोक सुं,
उलट मिले ता मांय ॥ उलट मिले ता मांय, बहुर जन्में यो नांही।
तीन ब्रह्म का लोक, तहां लग आवे जाई ॥ इण कारण सुखराम कहे,
हंस आवे जग मांय। तीन ब्रह्म के लोक सुं, आनन्द लोक नही जाय ॥ २९ ॥

पारब्रह्म, शिवब्रह्म, चिदानन्द ब्रह्म के इन तीन लोको से आनन्द लोक में नही जाते। जीव ब्रह्म के लोक से ही मनुष्य योनि से सतशब्द के साथ बंकनाल में उलटकर खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड को पार

कर आनन्द लोक में जाता है उनका जन्म नही होता। तीन ब्रह्म के लोको से आना जाना पडता है। म:फ: है कि इस कारण से हंस जगत में आते है।

बिठलराव वाच :- बिठलराव अब या कही, उलट मिले किम जाय। हंस आवण की रीत सो, सब ही कही बजाय॥ सब ही कही बजाय, दया कर अब या कहिये। अमरलोक किम जाय, शब्द सुख कैसे लहिये॥ सो विध भिन्न भिन्न तार कर, भेद गुंज कहो आय। बिठलराव अब या कही, उलट मिले किम जाय॥ ३०॥

महाराज से बिठलराव ने प्रार्थना की कि उलट कर किस तरह जाकर मिलता है। जगत में हंसो के आने की विधि तो आपने स्पष्ट बताई तथा अब दया करके यह फरमाईये कि अमरलोक की प्राप्ति कैसे होती है। सतशब्द का सुख कैसे मिलता है। इन सबका भिन्न भिन्न कर भेद का मर्म समझाईये।

सुखराम दास जन बोलिया, सुणज्यो वचन हमार। भृकुटी से बिन्द ऊतरियो, पडियो गरभ तिणबार।। पडियो गरभ तिण बार, प्रेम वो उलटो चाहिये। शंखनाल कूं त्याग, बंक पिछम दिस गहिये॥ साजन कूंची बाहिरो, चढे शब्द संग तार। सुखरामदास जन बोलिया, सुणज्यो वचन हमार॥ ३१॥

म:फ: है कि मेरे वचनो को सुनो कि पिता की भृकुटी से बिन्द उतर कर प्रेम से माता के गर्भ में पड़ता है। उसी तरह इस साधन में प्रेम से भजन करने पर ही शंखनाल को त्याग कर बंकनाल में होकर पिछम दिशा में चला जाता है। बिना किसी योग की कूंची मुद्रा व अनेक साधन किये बिना शब्द के साथ ऊपर चढ जाता है।

कवित्त:- पडे गरभ में आय, प्रेम संग जो वो आवे। फिर दुणो बरसे हेत, तब उलटो होय जावे॥ जिसी भोग की चाह, इसी सायब दिश जागे। सुखरामदास भग प्रेम वे, अन्ध कन्ध तज लाज। इसो प्रेम सो चाहिये, राम मिलण के काज ॥ ३२॥

जिस प्रेम के साथ गरभ में आकर पडता है उससे भी दुगने प्रेम से भजन करने पर बंकनाल में उलट जाता है। जिस तरह विषय भोग के वास्ते सब सुध बुध भूलकर लज्जा त्याग कर विषय भोग में लगता है इस तरह रामजी की प्राप्ति के लिये भजन करने पर ही रामजी की प्राप्ति होती है।

कुण्डलिया :- प्रेम प्रेम में फेर है, सुणो प्रेम के न्याव। च्यार प्रेम सो प्रेम हुवे, जब लग झूंठी चाव॥ जब लग झूंठी चाव, पांचवो प्रेम कहावे। वा गत तब घट होय, उलट हंसो तब जावे॥ आया सोई विध चाहिये, दूजी झूंठ उपाय। प्रेम प्रेम में फेर है, सुणो प्रेम के न्याव॥३३॥

प्रेम प्रेम में फरक है प्रेम का खुलासा अरथ सुणो चार प्रेम से प्रेम होता है जब तक प्रेम झूंठा समझा जाता है, जिसको पांचवा प्रेम कहते है उस प्रेम की विधि जानने पर ही हंस बंकनाल में उलट जाता है, जिस प्रेम के साथ बिन्द उतर कर आया है वैसा ही प्रेम चाहिये दूसरे उपाय सब झूंठे है। इस तरह प्रेम प्रेम में फरक है।

चीज देखकर रीजियो, दिन में सो सो बार। तो पण राम न ऊतरियो, सो तुम करो विचार॥ सो तुम करो विचार, जीभ चाख्या नही आवे। सुण सुण फूले बहुत, काम का मरम न पावे॥

बासा सुं नही उतरया, नही गरभ के प्यार । चीज देखकर रीजियो, दिन में सो सो बार ॥ ३४॥

चीज को देखकर दिन में सो सो बार प्रसन्न होता है तो भी बिन्द नही उतरता इसका विचार करो। जीभ से चाखने पर भी नही उतरता। सुण सुण कर बहुत फूलता है तो भी बिन्द जगह नही छोडता है। जब तक स्थान से नही उतरता तब तक गरभ में नही आता है।

अेक भग रस रीत की, सुणिया जागे काम। मेहरी बदन विचार घट, चंचल वे सब धाम॥
चंचल वे सब धाम, मथन से भृकुटी छाडे। ओ सुण ज्यों सुध प्रेम, शिष सतगुरू में गाढे॥
बिठलराव सुखराम कहे, उलट चढे यो राम। अेक भग रस रीत की, सुणिया जागे काम॥ ३५॥

भग रस की रीति सुन कर इच्छा जागृत होती है। मेहरी के शरीर का घट में विचार आता है तब सारे शरीर मे चंचलता आ जाती है परन्तु मंथन से भृकुटी छोडता है ऐसा सच्चा प्रेम शिष्य के सतगुरू के बताये हुये साधन में लगता है। तब ही म: फ: है कि शब्द के साथ चेतन उलटकर बंकनाल से ऊपर चढ जाता है।

बिठलराव अब कहत है, सो प्रसंग सत होय। यहां मेहरी भग मथन है,
सो जांणे सब कोय॥ सो जांणे सब कोय, भेद उलटण को दीजे।
कोण रीत लिंग भग, मन्थन कैसी विध कीजे॥ तार तार विध छाण के,
कहो तीनों विध मोय। बिठलराव अब कहत है, ओ प्रसंग सत होय ॥ ३६॥

राजा कहता है कि जो आप फरमा रहे है वो सत है। यहां स्त्री भग मंथन है। उसको सब जानते है परन्तु बंकनाल में उलटने का भेद बताईये किस रीति से भग लिंग का मंथन करना चाहिये। इसका सब तरह से खुलासा करके तीनो विधि मुझसे कहिये।

श्री सुखो वाच:- बंकनाल सो नार है, रसना सो भग होय। ममंकार सो प्रेम है,
ररंकार लिंग जोय॥ ररंकार लिंग जोय, रस ओऊं ता मांही।
सोहं कहिये बिन्द, धसे अजपे संग जाई॥ सुखराम कहे धम पेट में,
गरभ बंधे कहूं तोय। बंकनाल सो नार है, रसना सो भग होय।। ३७॥

म:फ: है कि बंकनाल स्त्री है रसना भग है। ममंकार ही प्रेम है। ररंकार ही लिंग है। उसमें ओऊं याने स्वांसा के साथ भजन करना रस है। सोहं याने ऊसांस के साथ भजन होना बिन्द है। इस तरह भजन करने से कंठ कंवल पर शब्द की जागृति होना ही तथा शब्द के साथ आगे बढना ही अजपे संग धसना है व पेट में गरभ बंधना है।

अेक पोहोर में जागकर, चेतन व्हे तन मांय। जे मंथन ओ कीजिये,
प्रेम धंसे उर मांय॥ प्रेम धंसे उर मांय, उलटता बार न लागे।
नख चख नाडी रोम, नाम धुन सब में जागे॥ सुखराम कहे गुरू मेहर रे,
ज्यूं रूतवंती भाय। अेक पोहोर में जागकर, चेतन व्हे तन मांय॥ ३८॥

एक पहर याने तीन घंटे तक प्रेम से सूरत लगाकर भजन करने से सतशब्द की अनुभूति पूरे शरीर में हो जाती है। इस तरह अन्तर में भजन प्रेम से करने पर बंकनाल में उलटते देर नही लगती। सारे शरीर में नख से चख तक रग रग रोम रोम व नाड नाड में शब्द का अनुभव होने लगता है। म:फ: है कि यही सतगुरू की मेहर है जैसे रूतवंती की इच्छा से गरभ रहता है। इसी तरह शिष्य का सतगुरू याने सत ज्ञान में प्रेम होने पर ही शब्द की जागृति होती है। प्रेम ही मुख्य है।

कागलियो लिंग असल है, रसना सो भग होय। ओऊं सोहं प्रेम रस,
चेतन नर कहूं तोय॥ चेतन नर कहूं तोय, ररो जीव कुवावे।
सोहं कहिये बिन्द, ममो अंच्छर अंस ल्यावे॥ सुखराम अजपे संग धसे,
धम पेट कहूं तोय। कागलियो लिंग असल है, रसना सो भग होय॥ ३९॥

शरीर में कागलिया असल लिंग है। रसना भग है सांस ऊसांस याने ओऊं सोऊं में प्रेम से भजन करना ही रस है। चेतनता ही नर है। रकार जीव है। ऊसांस याने सोऊं बिन्द है। मकार अंच्छर के साथ रटने से ही अजपा याने शब्द जागृत होकर आगे बढता है।

इण मंथन से ऊतरे, पारब्रह्म को नाम। ने:अंच्छर आकार बिन, सोआवे घट गांव॥
सो आवे घट गांव, जीव का सब फंद काटे। पिछम गेल होय पीठ, चले अगम की बाटे॥
जब पहुंचे सुखराम कह, पारब्रह्म के धाम। इण मंथन से ऊतरे, पारब्रह्म को नाम ॥ ४०॥

इस तरह भजन करने से ब्रह्म बैराट से पारब्रह्म परमात्मा का नांव उतर कर आता है। जिस ने:अँच्छर के आकार नही है। उसका शरीर में आत्म चेतन के आधार से प्रकट होना ही घट गांव आना है। इसी से जीव का जनम मरण मिटता है यही सब फंद कटना है। शब्द पीठ के रास्ते पिछम से होकर अगम में जाने के लिये बढता है। म:फ: है कि जब वह पारब्रह्म के धाम याने के:पद आ:पद में पहूंच जाता है।

इण भग लिंग के मंथन सुं, जीव आयो जग मांय। बिन्द नाद ले ऊतरियो,
संखनाल होय धाय॥ संखनाल होय धाय, अबे मंथन मुख किया।
ने:अंच्छर सो नाद, बिंद चेतन संग किया॥ बंकनाल मांही उलट के,
आनन्द लोक कूं जाय। इण भग लिंग के मंथन सुं, जीव आयो जग मांय॥ ४१॥

इस भग लिंग के मंथन से जीव जगत में आया है। चेतन शब्द के साथ शंखनाल में होकर आया है। अब मुंह से भजन करने पर ने:अंच्छर याने शब्द बिन्द याने चेतन के साथ बंकनाल में उलटकर आनन्दलोक में जाता है।

रटणे की विध टाल के, साजन करे अनेक। से सब हद का ख्याल है, नाना विध का देख॥
नाना विध का देख, परमपद कदे न पावे। ने: अंच्छर बंकनाल, पिछम को भेद न पावे॥
हद बेहद में सब थके, वेद भेद कल देख। रटणे की विध टाल के, साजन करे अनेक॥४२॥

सतगुरू से भजन करने की विधि को छोडकर अनेक साधन करो। सब तीनो लोकों में ही फलो की प्राप्ति कराने वाले है, उनसे परमपद की प्राप्ति नही होती। ने: अंछर की जागृति नही होती व बंकनाल पिछम में उलटने का भेद नही मिलता। वेदो का व योगो का साधन हद याने तीन लोक बेहद याने ब्रह्म तक की प्राप्ति कराने वाले है यही हद बेहद में थकना है।

बाहिर क्रिया जाप सो, यांरी हद लग दौड। बेहद पहुंचे ध्यान ओ, पूरब सोहंग मोड़॥
पूरब सोहंग मोड़, पवन पीवे नर कोई। वे पहुंचे बेहद, भंवर जहां गुफा होई॥
सुखरामदास बेहद परे, ये नही पावे ठोड। बाहिर क्रिया जाप सो, यांरी हद लग दौड़॥ ४३॥

शरीर के द्वारा जो क्रिया जप किया जाता है इनका फल तीन लोक में मिलता है। पूरब का याने शंखनाल का जपा अजपा का ध्यान बेहद याने ब्रह्म तक पहुंचता है। यदि कोई मनुष्य स्वांसा के द्वारा योग का साधन करता है। वो बेहद में भंवर गुफा तक पहुंचते है। म:फ: है कि बेहद से आगे

याने के:पद आ:पद में नही जाते है।

साजन सब ही पर हरे, पूरब राहा न जाय। प्रेम प्रीत सुं उलट के,
चढे पिछम दिश मांय॥ चढे पिछम दिश मांय, तके हद बेहद त्यागे।
ओ राह न्यारो होई, सुणर बिरला जन जागे॥ सुखराम मोख जे पहुंचसी,
सतगुरू भेटया आय। साजन सब ही पर हरे, पूरब राहा न जाय॥ ४४॥

पूरब के रास्ते जाने के सब साधन छोडकर प्रेम व प्रीति से भजन कर बंकनाल में उलटकर पिछम दिशा में चढता है वही हद बेहद को पार करके के:पद आ:पद में पहुंचता है। यह रास्ता याने साधन अलग है इस ज्ञान को बिरले जन धारण करते है। म:फ: है कि जिन्होने सतगुरू विधि से भजन किया है वे मोक्ष में पहुंचते है।

बिठलराव अब बोलिया, किसो प्रेम ऊ होय। बिन साजन जद हंस ओ, चढे पिछम दिश जोय॥
चढे पिछम दिश जोय, प्रेम ऊ मोय बतावो। किस विध आवे मांय, रीत सोजर सब लावो॥
बहुत ज्ञान मैं ढूंढियो, अेसी सुणी न कोय। बिठलराव अब बोलिया, किसो प्रेम ऊ होय॥ ४५॥

बिठलराव ने महाराज से पूछा कि वह कौनसा प्रेम है जिससे बिना साधन के ही हंस पिछम दिशा में चढ जाता है उस प्रेम को आप मुझे बताईये। वह प्रेम घट में किस प्रकार आता है उसकी सब विधि मुझे बताईये। मैने बहुत ज्ञान सुणा है परन्तु आप जो फरमा रहे है वो मैने कभी नही सुना है।

सुखराम कह जिण प्रेम सुं, हंस आयो जग मांय। ऊईज प्रेम शुद्ध भाव है,
हुवे रूतवंती की चाह॥ हुवे रूतवंती की चाह, सतगुरू सांचो पावे।
जो उनमें तत्त होय, प्रेम इण घट में आवे॥ नख चख आपे सोज ले,
फाड पीठ चढ जाय। सुखराम कह जिण प्रेम सुं, हंस आयो जग मांय॥ ४६॥

म:फ: है कि जिस प्रेम से हंस जगत में आया है वो ही सच्चा प्रेम है। जबकि रूतवंती की चाहना होती है जब सच्चे अणभै वाणी बनाने वाले ओधाधारी सतगुरू की शरण मिलती है और वे सतगुरू परमपद की प्राप्ति किये हुये होते है। जब ही शिष्य के घट में प्रेम से भजन करने पर ही शब्द की जागृति होकर नख से चख तक उसका अनुभव होकर पीठ के रास्ते ऊपर चढ जाता है।

बिठलराव कहे प्रेम ऊ, किम आवे शिष मांय। सो विध बचन ऊचार कहो,
क्या करणो क्या नांय॥ क्या करणो क्या नांय, दया कौन विध पावे।
धिन ऊ प्रेम विचार, उलट आनन्द घर जावे॥ अपने वश कन और के,
नेक बताओ छांण। बिठलराव कहे प्रेम ऊ, किम आवे शिष मांय॥ ४७॥

बिठलराव महाराज से कहता है कि वो प्रेम शिष्य में किस तरह आता है। आप उसकी विधि फरमाईये, क्या करना है और क्या नही करना है, वो सतगुरू की दया किस तरह पाता है उस प्रेम व विचार को धन्य है जिसके द्वारा उलटकर आनन्द लोक में जाता है। यह साधन अपने वश में है या औरो के इसका भेद बताईये।

सुखराम कहे सुण प्रेम ओ, इस विध उत्पन्न होय। काम राम सब मांय है,
संगत का गुण जोय॥ संगत का गुण जोय, नार गुरू असल पावे।
वहां जागे घट काम, नाम उलट वहां जावे॥ ज्ञान ब्रह्म का चेन है,

सो बरण बतावे कोय। सुखराम कहे सुण प्रेम ओ, इस विध उत्पन्न होय॥ ४८ ॥

म:फ: है कि हे राजा वह प्रेम इस विधि से उत्पन्न होता है। काम भी इस शरीर में है। रामजी भी इस शरीर में है। जैसा संग करेगा वैसा ही गुण प्रकट होगा। जब सच्चे गुरू यानि सतज्ञान मिलेगा तब शब्द प्रगट होगा। असल स्त्री मिलने पर ही घट में काम की जागृति होती है उसी प्रकार शब्द उलटकर आनन्द पद में पहुंचता है। ब्रह्म की प्राप्ति का ज्ञान पूर्ण रूप से कौन वर्णन कर सकता है।

ने: कामी जग पुरूष हुवे, ताको कहूं सुण ज्ञान। औषध खावे पुष्ट की,
तांबेसर कहूं आन॥ तांबेसर कहूं आन, फेर मेहरयां संग राखे।
सहज रमण रस ख्याल, गाय रामजनी भाखे॥ जब ऊ घट भयभीत होय,
त्यागे शंका मान। ने: कामी जग पुरूष हुवे, ताको कहूं सुण ज्ञान॥ ४९ ॥

जो जगत में ने: कामी पुरूष होते है सुणो उनका ज्ञान कहता हूं। शरीर को पुष्ट करने की औषधि जो तांबे की भस्म है उसको खाकर फिर स्त्रीयों को साथ रखता है। जब रामजनी याने वैश्यायें उनको काम की जागृति कराने वाले गाने गाकर सुनाती है तब जो उसको काम वासना बिल्कुल नही थी व काम जागृत होने की शंका व डर था वो मिटकर काम वासना में लग जाता है यही काम और राम का साथ होना है। जैसा संग करता है। वैसा ही गुण प्रकट होता है।

खट रागां को भेद सुण, गायां प्रगटे जोय। बिन गाया पढबो करो,
लाख बरस लग कोय॥ लाख बरस लग कोय, राग को गुण नही जागे।
बिनपुंगी पढ ज्ञान, सरप के नेक न लागे॥ खट गुण की खट राग रे,
गम बिन लखे न कोय। खट रागां को भेद सुण, गायां प्रगटे जोय॥ ५० ॥

छ: रागो को भेद से गाने पर ही उनके गुण प्रगट होते है। बिना भेद से गाने पर लाख बरस तक गावो गुण नही प्रगटता। सांप पुंगी की राग के बिना खुश नही होता। छ: रागो के गुण छ: ही राग बंद गाने से ही प्रकट होते है।

खट रागां साथे करे, अेकण समचे कोय। तो गुण एक न प्रगटे, ऐसो ज्ञानी जोय॥
ऐसो ज्ञानी जोय, तत्त जागे सो बांणी। वे न्यारा सुण शब्द, भेद बिन लखे न प्राणी॥
सुखराम कहे प्रेम वो, पुन:ही प्रगट होय। खट रागां साथे करे, अेकण समचे कोय॥ ५१ ॥

छ: रागो को एक साथ गाने पर एक का भी गुण प्रगट नहीं होता इसी तरह ये ज्ञानी अनेक साधन व करणियां करते है उससे करमों का नाश नहीं होता, पारब्रह्म परमात्मा का निज नाम याने सतशब्द जिस विधि से जागृत होता है उससे परमपद की प्राप्ति हो जाती है। उस शब्द के भेद को जाने बिना जो हरेक मनुष्य नहीं जानता। म:फ: है कि वह शब्द सतगुरू विधि से प्रेम से भजन करने पर ही जागृत होता है।

जो कोलु को फेरणो, तो भेरू ले राग। जो हिंडोले छेडिये, तो झूला को लाग ॥
तो झूला को लाग, पाहण पल गले इम भाई। श्री राग भरपूर, मेह मलाराँ ले आई॥
दीपक दीया जोडिया, पंचम गुण गाये भाग। जो कोलु को फेरणो, तो भेरू ले राग ॥ ५२ ॥

भेरू राग गाने से घाणी अपने आप फिरती है। हिंडोल राग गाने से झूला चलने लगता है। श्री राग को गाने से पत्थर भी गल जाते है। मल्हार राग गाने से बरसात होने लग जाती है। दीपक राग

गाने से दीपक जुप जाते है। इस तरह इन पांच रागों को साथ गाने से उनके एक के गुण भी प्रगट नहीं होते है।

ज्यों गुण न्यारा राग में, युं चरचा में होय। उलट चढे सो रीत सुण,
और न सुणनी कोय ॥ और न सुणनी कोय, प्रेम वो इस विध लागे।
जहां चरचा सुध होय, भेल दूजो नहीं सागे॥ सुखराम कह सुण राजवी,
सब विध न्यारी जोय। ज्यों गुण न्यारा राग में, युं चरचा में होय ॥ ५३ ॥

जिस तरह अलग अलग राग में अलग अलग गुण है। इसी तरह भगवत चरचा में भी अलग अलग गुण है। एक पूरब का व एक पिछम का रास्ता है। जिस साधन से बंकनाल में उलटकर के:पद आ:पद की प्राप्ति होती है उस साधन को सुणो दूसरा मत सुणो। जहां शुद्ध ज्ञान की चरचा होती है उसे प्रेम से सुणो। जिसमें किसी तरह का भेल नहीं है। म:फ: है कि हे राजा इस तरह सब विधि अलग अलग है।

जिण तिण सुं सुण राग को, गुण नहीं प्रगटे आय। यों चरचा बहु जागे हुवे,
गुण एक ही नहीं मांय॥ गुण एक ही नहीं मांय, रीज खाली उठ जावे।
ज्यों बादीगर खेल, जक्त देखर घर आवे॥ सुखराम कहे सुण सांच वा,
करर दिखावे लाय। जिण तिण सुं सुण राग को, गुण नहीं प्रगटे आय॥ ५४॥

हर एक से राग का गुण प्रगट नहीं होता। इसी तरह भगवत चरचा अनेक जगह होती है लेकिन उससे भगवत प्राप्ति नहीं होती यही चरचा में गुण नहीं होना है। इस तरह ज्ञान चरचा सुनने से मन राजी हो जाता है भगवत प्राप्ति नहीं होती यही खाली उठकर जाना है। जैसे बाजीगर का खेल देखकर गिरह का पैसा खोकर घर आ जाते है। म:फ: है कि सच्चा देखना तो वह है जो करके बता देवे।

प्रेम भक्ति का बांण सो, छोडे बद बद आंण। फेर भेद की सुध लिया,
जिस्यो राग घर जांण॥ जिस्यो राग घर जांण, नेक कसर नहीं कोई।
जहां प्रगटे निज नाम, और बक बक रह सोई॥ सुखराम कहे सुण राजवी,
सोई जन लेय पिछाण, प्रेम भक्ति का बांण सो, छोडे बद बद आंण ॥ ५५॥

सतगुरू विधि से प्रेम से भक्ति भजन करना ही बद बद कर बांण छोडना है व सांस ऊसांस में शब्द में सुरत लगा कर भजन करना ही भेद की सुध लेना है। जैसे राग बंद राग गाने से उसका गुण प्रगट होता है किसी तरह की कसर नहीं रहती। इसी तरह भेद से भजन करने पर ही निज नाम याने सतशब्द ने:अंच्छर प्रगट होता है। बिना भेद से रात दिन बाणी द्वारा भजन करने से शब्द की जागृति नहीं होती यही बक बक कर रहना है। म:फ: है कि हे राजा जिन जनों के द्वारा सतशब्द की जागृति होती है उनको पहचानना चाहिये।

कवित्त :- निर्भय शब्द ऊचार, प्रेम सुं बोले आई। जहां जागे वो नाम, नख चख के मांही॥
जो दुजो होय भेल, कबु साजन कोई लावे। तो नहीं प्रगटे नाम, राग ज्यों घर तज गावे ॥ ५६॥

सतगुरू विधि से प्रेम से राम राम का भजन करना ही निर्भय शब्द का उच्चारण करना है। जिस भजन के करने से घट में निज नाम की जागृति होकर सारे शरीर में नख चख तक उसका अनुभव होता है यदि दूसरा कितना ही साधन करो तो भी उससे निज नाम की जागृति नहीं होती।

जैसे राग के घर को छोडकर कितनी ही राग गावो, राग का गुण नहीं प्रगटता।

चरचा लिव अरू रेण सुं, अेक कोण विध होय। अेक कोण विध होय,
बात तीनूं यह न्यारी॥ रहणी चरचा बात, लीव अे तीन विचारी ॥ ५७॥

सतगुरू विधि से ज्ञान धारण करने पर ही चर्चा भी रात दिन सतशब्द की होती है व साधन भी शब्द की प्राप्ति का करते है। जिसके करने से लिव बंध भजन यानि शब्द का रात दिन खाते पीते बैठते अखण्ड अनुभव होना ही लिव लगना है। रहणी चर्चा लीव ये तीन है और तीनों ही अलग अलग है। सो सतगुरू का ज्ञान धारण करने से एक हो जाते है।

कुण्डलिया :- बिन गुरू गम निंदे बंदे, सो मदभागी होय। पेड डाल फल पात कूं,
चाख्या गम नहीं होय॥ चाख्या गम नहीं होय, दाद दरगा नहीं पावे।
लख चौरासी मांय, जुण सो इधकी पावे॥ सुखराम ब्रह्म अगाध है,
क्या गत जांणे कोय। बिन गुरू गम निंदे बंदे, सो मदभागी होय ॥ ५८॥

सतगुरू से ज्ञान धारण किये बिना ज्ञान की महिमा व निन्दा करते है वो भाग्यहीन है। जितने भी जगत में साधन है जिनसे फलों की प्राप्ति होती है वे साधन पेड, डाल, फल, पात को चखने की तरह है। उन साधनों से परमपद की प्राप्ति नहीं होती। चौरासी लाख योनियों में उच्च योनि व पदवी प्राप्त हो जाती है। म:फ: है कि ब्रह्म प्राप्ति का ज्ञान अगाध है उसको हर अेक कैसे जान सकता है।

त्रृगुटी तखत न देखिया, काना सुण्या न कोय। ब्रह्म देश की गम नहीं,
केह मैं सतगुरू होय॥ केह मैं सतगुरू होय, प्राण की गम न कांई।
अे जासी किण देश, शिष गुरू दोनों भाई॥ सुखराम दास बातां करे,
अगम निगम की जोय। त्रृगुटी तखत न देखिया, काना सुण्या न कोय ॥ ५९॥

जिन्होने साधन द्वारा त्रृकुटी तखत याने के: पद आ:पद की प्राप्ति नहीं की न ही कानों से उस ज्ञान को किसी ने सुना है। ब्रह्म देश याने के:पद का ज्ञान नहीं है और कहते है कि मैं सतगुरू हूं। प्राण किस स्थान पर जाकर ब्रह्म में समाते है इस बात का ज्ञान नहीं तो शिष्य व गुरू कौन से देश में जायेंगे। म:फ: है कि बातें तो देखों वेदों व पुराणों के ज्ञान की करते है।

कवित्त :- सतगुरू सतस्वरूप, सत सोही करणी मांही। सत जागे बैराग,
सत बिन कसणी नांही॥ सतशब्द सो ही मांय, सत सुं ही उलटर चढ है।
लागे सहज समाध, नरम कबहुं नहीं पड है॥ सुखरामदास सतगुरू तिके,
निज नाम शिष मांय। उलट पीठ कूं फाड़ के, लेर अगम घर जाय ॥ ६०॥

सतस्वरूप का पद वो ही सतगुरू है। सत की प्राप्ति के लिये राम को विधि से रटते हैं। शब्द की जागृति होना ही सत बैराग का जागना है। सतशब्द के सिवाय दूसरा कोई साधन नहीं है। सतशब्द ही घट में है। सतशब्द के साथ ही सूरत उलट कर चढती है। जब सत्ता समाधि रात दिन लगी रहती है कभी नहीं टूटती। म:फ: है कि शिष्य में निज नाम शब्द है वो ही सतगुरू है जो बंकनाल के रास्ते उलटकर पीठ को फाडकर ऊपर चढकर के:पद आ: पद की प्राप्ति होना ही लेर अमर घर जाना है।

कुण्डलिया :- परम मोख युं कहत है, कोई जन बिरला जाय। तां को अरथ विचार सो, सुणो सकल नर आय॥ सुणो सकल नर आय, गेल या मिले न कोई। जे पावे कोई भेद, धारणी मुश्किल होई॥ सुखरामदास सत स्वरूप बिन, अमर राह न कोय। परम मोख इण कारणे, बिरला पहुंचे जोय ॥ ६१ ॥

परम मोक्ष के लिये कहते है कि कोई बिरले जन ही जाते है उसका कारण सब ही स्त्री पुरूष सुनो। प्रथम तो यह ज्ञान नहीं मिलता। परममोक्ष में जाने का ज्ञान अगर मिल भी जाता है तो धारण करना मुश्किल है। म:फ: है कि सतस्वरूप की भक्ति बिना अमरलोक की प्राप्ति नहीं होती इसी कारण परम मोक्ष में बिरले ही पहुंचते है।

राह मिले पहुँचे नहीं, तिण में फेर न सार। नहीं पहुंचे इण कारणे, गेल न मिले विचार ॥ गेल न मिले विचार, धारणी दुरलभ ऐसे। वेद भेद दो ऊ मूढ, रात दिन झूंठी केह से ॥ सुखराम दास संसार रे, कह भेष सो बार। युं पंडित ज्ञानी साध सो, मेरो करे विचार ॥ ६२ ॥

सतस्वरूप का ज्ञान प्राप्त होने पर ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। मोक्ष प्राप्ति का ज्ञान मिल जावे और मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो ऐसा कभी नहीं होता है। इसमें किसी तरह का फरक नहीं है। रास्ता मिलने पर जरूर उस पद की प्राप्ति होती है। इस कारण से नहीं पहुंचते है कि मोक्ष प्राप्ति का ज्ञान नहीं मिलता है व उस ज्ञान को धारण करना भी इस तरह कठिन है। वेदों के ज्ञान का बखाण करने वाले व अष्टांग योग की साधना बताने वाले अपने ज्ञान से मोक्ष मानते है। म:फ: है कि यह दोनो बताने वाले मूरख है। रात दिन यही कहते है कि इस ज्ञान से मोक्ष होता है। म:फ: है कि संसारी व भेषधारी सब ही कहते है इस तरह ज्ञानी पंडित व साध कहते है उसका भी विचार करो तथा मैं कह रहा हूं उसका भी विचार करो।

वेद भेद की करणियां, करे अनन्त जग मांय। मोख न पुंथो आज लग, ओ अरथ सूजे नांय ॥ ओ अरथ सूजे नांय, राहा कोई न्यारो होई। असंख जुग गया बीत, काय नहीं पुंथो कोई ॥ सुखरामदास राहा चालतां, नगर न आवे काय। वेद भेद की करणियां, करे अनन्त जुग मांय ॥ ६३ ॥

वेदों के ज्ञान के माफिक करणियां व योग के साधन करने वाले जगत में अनन्त है परन्तु आज तक किसी को मोक्ष प्राप्त नहीं हुआ लेकिन यह अरथ नहीं सूजता कि मोक्ष की प्राप्ति का रास्ता दूसरा है। असंख जुग बीतने पर भी कोई नहीं पहुंचा। म:फ: है कि रास्ते चलने पर भी गांव कैसे नहीं आता।

कोईक मुक्त लग पहुंचिया, बिसन लोक लग जाय। केइ एक पदवी इन्द्र लग, केइ एक अटल कहाय॥ केइ एक अटल कहाय, शक्त लग पहुंता जाई। से परघट जग मांय, पुराण शायद में भाई॥ सुखराम राह या वेद की, हद बेहद लग मांय, कोईक मुक्त लग पहुंचिया, बिसन लोक लग जाय ॥ ६४ ॥

कोई बैकुण्ठ तक पहुंचे। कोई विष्णु के लोक तक गये है। कोई को इन्द्र पद की पदवी मिली। कोई देही से अटल है। कोई एक शक्ति के लोक तक पहुंचे है। यह जगत में प्रकट है पुराण इसकी साक्षी दे रहे है। म:फ: है कि वेदों के ज्ञान से तीन लोक व ब्रह्म तक की प्राप्ति होती है।

सतलोक जे जावसी, जांकी या बिध होय। दशवों द्वार ऊघाड के, चले सन्त कहूं तोय ॥

चले सन्त कहूं तोय, और सुण राहा न कोई। नव गेला हद मांय, तांय की सुध नहीं कोई ॥
दशवें लग सुखराम कह, मोख न पूंथो कोय। सतलोक जे जावसी, जांकी या विध होय ॥ ६५ ॥

मोक्ष में जाने का रास्ता है कि दशवें द्वार को खोल कर कोई सन्त ही जाते है इसके सिवाय दूसरा कोई भी रास्ता नहीं है। नो दरवाजों से जाने वाले तो तीन लोकों में ही जाते है तथा उनको मोक्ष प्राप्ति के ज्ञान की सुध नहीं है। म:फ: है कि दशवें द्वार में, पहुंचने पर भी कोई मोख में नहीं पहुंचा।

मैं सतगुरू हूं आद का, आत्म का गुरू कहाय। मेरी महिमा अगम है,
क्या जाणे जग मांय॥ क्या जाणे जग मांय, काग बुद्ध ग्यानी सारा।
जे आत्म बिन ज्ञान, रात दिन करे विचारा ॥ सुखराम हंस परमहंस व्हे,
सो बुध चैंठे नांय॥ मैं सतगुरू हूं आद का, आत्म का गुरू कहाय ॥ ६६ ॥

म: सता रूप से फ: रहे है कि मैं आद अनादि से सतगुरू हूं। आत्मा का गुरू कहलाता हूं। मेरे ज्ञान से केवल पद की प्राप्ति होती है। संसार उनको नहीं जानता। ये ज्ञानी इन्द्रियों द्वारा करणी करके इन्द्रियों के भोगों की प्राप्ति करना चाहते है इनकी काग बुद्धि है जो आत्मा के आधार बिना शरीर व इन्द्रियों द्वारा ही रात दिन ज्ञान करते है। म:फ: है कि हंस से परमहंस होने के ज्ञान की विधि धारण नहीं करते।

आत्म का गुरू शिष्ट में, तासुं सन्मुख होय। ताके सिर नहीं खून रहे,
ब्रह्म लग कहूं तोय॥ ब्रह्म लग कहूं तोय, जन्म ऊंचे घर पावे।
बुद्ध परवीण धन पूर, राव होय जग में आवे ॥ सुखराम जन्म फिर दोय ले,
सुख पावे कहूं तोय। आत्म का गुरू शिष्ट में, तासुं सन्मुख होय ॥ ६७॥

जो जगत में आत्मा को सतस्वरूप की प्राप्ति कराने वाले सतगुरू है, उनके ज्ञान की शरण लेने पर इस आत्मा के, जब से पारब्रह्म से बिछुडी तब से लेकर आज तक के सभी कर्मो का खात्मा हो जायेगा। भक्ति में किसी प्रकार की कमी रहने पर अगला जन्म मनुष्य का ऊंचे कुल में होगा। बुद्धि में बुद्धिमान व अटूट सम्पति व स्वांसा रूपी पूंजी भी पूरी मिलेगी व राजा होकर जगत में आते हैं। म:फ: है कि फिर एक या दो जन्म लेकर अनन्त सुखो की प्राप्ति करते हैं।

सतगुरू रूपी संत ने, जे नहीं माने आय। जिण सिर खून अपार है, केतां बणे न कांय ॥
केतां बणे न कांय, करे जो निन्दा कोई। तो पडे अगत के मांय, तांय की गत न कोई ॥
सुखरामदास यो खून रे, कहूं न छूटे जाय। सतगुरू रूपी सन्त ने, जे नहीं माने आय ॥ ६८ ॥

जो संत परब्रह्म से ओधा लेकर आते है, जो गुरू साक्षात परब्रह्म कहलाते है उनको जो गुरू नहीं मानता है, उनके ऊपर इतना गुन्हा सिर बंध जायेगा जिसका वर्णन मुंह से कह नही सकते। और जो ऐसे सदगुरू की निन्दा करता है उसको अवगति में जाना पडता है उनकी गति नहीं होगी। म:फ: है कि यह दोष कभी नही छूटता।

कवित्त:- ब्रह्मा को सुण खून, विष्णु के चरणा जावे। शिव को खूनी होय,
विष्णु जुं आंण मिटावे॥ या तीनां को खून, शक्त के चरणां छूटे।
शक्त को खून सिर होय, ब्रह्म बिन परथ न तूटे॥ सुखराम दास सतस्वरूप को,
जो खूनी जग मांय। सो सुण दोष न छूटसी, बिन सतगुरू कहूं जाय ॥ ६९ ॥

ब्रह्मा का दोषी विष्णु के चरणों में जाने से छूट जाता है। शिव का दोष भी विष्णु की शरण लेने पर मिट जाता है। ब्रह्मा विष्णु महेश इन तीनों का दोष शक्ति के चरणों में जाने से छूट जाता है। शक्ति का दोष ब्रह्म की भक्ति के बिना नहीं छूटता। म:फ: है कि जो जगत में सतस्वरूप का दोषी है वो दोष सदगुरू के चरणों में जाने पर ही छूटता है। यानि माफी मांगने पर छूटता।

जतियां को शिष होय, जंगम को होवे आई। तो नहीं लागे दोष, ऊंच पदवी आ भाई॥
जंगम गुरू को त्याग, ब्यास को धरम समावे। तो नहीं लागे दोष, ऊंच पदवी नर पावे ॥
सुखराम तज ब्यास कुं, सन्यासी व्हे कोय। तोकुं दोष न लागसी, सुण ज्ञानी कहूं तोय ॥७०॥

जो जती का शिष्य होकर जंगम का शिष्य हो जावे तो उसको दोष नहीं लगता यह पदवी उससे ऊँची है। जंगम गुरू को छोड ब्यास गुरू का ज्ञान धारण करे तो दोष नहीं लगता क्योंकि पदवी ऊंची है। म:फ: है कि कोई ब्यास को छोडकर सन्यासी हो जाता है उसको दोष नहीं लगता है। ज्ञानियो सुणो मैं यह तुमको कहता हूं।

कुण्डलिया:- सन्यास कर्म को छोड रे, हुवे वैष्णव आंण। तो नहीं लागे करम रे,
यो पद ऊंचो जांण॥ यो पद ऊंचो जांण, वैष्णव पंथ में आवे।
तो नहीं लागे पाप, सर्व सुं ऊंचो पद पावे ॥ सुखराम सकल पंथ त्याग कर,
वीतराग होय जाय। ताकुं दोष न शिष्ट में, ओ मत ऊंचो बखांण ॥७१॥

सन्यास कर्म को छोडकर के वैष्णव धर्म धारण करता है तो उसे कोई दोष नहीं लगता है यह पद सबसे ऊंचा है। म:फ: है कि सब धर्मो को छोडकर वीतराग हो तो यह सबसे ही ऊंचा पद है उसको जगत में किसी तरह का दोष नहीं लगता।

वीतराग विज्ञान होय, इनको शिष होय आय। जे सतगुरू संसार में,
जन्म धरे जग मांय॥ जन्म धरे जग मांय, दोष ताकूं नहीं कोई।
ओ पद केवल ब्रह्म, ताय कूं दुरलभ जोई॥ सुखराम अे गुरू किया,
अब गुरू नहीं जग मांय। वीतराग विज्ञान होय, इनको शिष व्हे आय ॥७२॥

वीतराग याने राग द्वेष से रहित है वो ही विज्ञान है। सतगुरू संसार में जन्म धारण करते है वे कुख में नहीं आते अर्थात जिस मनुष्य के घट में सतगुरू सता की जागृति होती है यही सतगुरू का जन्म है। उस सत्ता के द्वारा ही वे संत जो शिष्य उनकी शरण में आता है उसमें सत्ता प्रगट करके सत्ता के साथ करणियों व कर्म से व मन स्वांसा पांच प्राणों से पांच तत्त के शरीर से जीते जी अलग कर दशवां द्वार खोलकर के:पद आ:पद व पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति करा देते है यही सतगुरू सत्ता का गुण है। जो ऐसे गुरू धारण करते है उनको कोई दोष नहीं है। यह पद के: ब्रह्म का है। यह प्राप्त होना बडा दुर्लभ लगता है। म:फ: है कि ऐसे गुरू करने पर जगत में फिर गुरू करने के लिये कोई गुरू नहीं है।

और खून सब छूटसी, जिण सिर बहुत ऊपाय। अेक न छूटे खून ओ,
सतगुरू को जग मांय॥ सतगुरू को जग मांय, पद इण आगे नांही।
कहो कुण छोडे आंण, ब्रह्म लग पोंच न मांही॥ सुखरामदास यो खून रे,
सतगुरू शरणे जाय। और खून सब छूटसी, जिण सिर बहुत उपाय ॥७३॥

सब दोष छूटने के अनेक उपाय है लेकिन सतगुरू का दोष दूसरे उपाय से नहीं छूटता इस पद

के आगे कोई पद नहीं है। जब ब्रह्म तक की पहुंच वहां नहीं है तो कहो कौन इस दोष से छूडा सकता है। म:फ: है कि यह दोष सतगुरू की शरण में उनका ज्ञान धारण करने पर छूट जाता है।

सतगुरू सतगुरू कह दिया, सतगुरू हुवे न कोय। सतगुरू किणी अंग सुं,
ना परचा कर होय॥ ना परचा कर होय, सतगुरू ऐसा होई।
ताके भरम रहे नहीं कोय, शिष निपजे सब लोई॥ सुखराम नाम शिष में जागे,
से सुण सांचा होय। सतगुरू सतगुरू कह दिया, सतगुरू हुवे न कोय ॥ ७४॥

मुंह से कह दिया कि मैं सतगुरू हूं ऐसा कहने से सतगुरू नहीं होते है। सतगुरू न तो कोई अंग धारण करने से होते है न परचा देने से होते है। सतगुरू तो वे होते है जिनके कोई तरह के भरम नहीं रहते तथा उनके द्वारा संसार के सब शिष्यों को सतशब्द ने:अंच्छर की जागृति हो जाती है। म:फ: है कि शिष्य के घट में निज नाम की जागृति करा देते है वही सच्चे सतगुरू याने सत ज्ञान है।

उत्तम चीज संसार में, सुण बिरली सी होय। मिधम चीज बिन पार है,
गिणतन आवे कोय॥ गिणतन आवे कोय, ज्ञान कर देखो ज्ञानी।
मेरो ज्ञान अगाध, समझसी बिरला आंणी॥ सुखराम वेद मत जगत में,
घर घर घट घट जोय। उत्तम चीज संसार में, सुण बिरली सी होय ॥ ७५॥

श्रेष्ठ चीज संसार में कोई बिरली ही होती है। मध्यम चीजों का कोई पार नहीं होता जिसकी गिनती नहीं है। हे ज्ञानियों ज्ञान करके देखो। मेरे ज्ञान का कोई थाह नहीं है जिसको बिरले ही समझेंगे। म:फ: है कि देखो संसार में वेदों का ज्ञान घर घर में स्त्री पुरूषों के घट घट में है।

कांच कथीर फिर लोह में, समझे सब संसार। कंचन लग की बुद्ध है,
यो मत वेद विचार॥ यो मत वेद विचार, रतन कोई बिरला जांणे।
ज्यों चिजां की परख ब्रह्म कोई सन्त पिछाणे॥ सुखराम दास हीरे परे,
कोय न समझणहार। कांच कथीर फिर लोह में, समझे सब संसार॥ ७६॥

कांच कथीर व लोह में सारा संसार समझता है। सोने तक के पहचान तक की बुद्धि है यह बुद्धि वेदों का ज्ञान धारण करने जैसी है। रतन कोई बिरले ही पहचानते है। जैसे संसार में चीजो की परख है ऐसे ही ब्रह्म के पद को कोई संत ही पहचानते है। म:फ: है कि हीरे के आगे कोई नही समझता है यानि ब्रह्म पद के आगे का ग्यान कोई नही जानता।

<u>कवित्त</u> :- कल बरछ कहिये जोय, रतन चिंतामण होई। अमर जडी संसार,
फेर अमरत कहूं तोई॥ पारस पत्थर होय, नाम जांणे सब नर नारी।
आस करे सब कोय, चीज परघट ऐ सारी॥ सुखराम संजीवण ज्ञान रे,
यूं मेरो जग मांय। परख बिना सब लोप दे, पचे वेद से आय॥ ७७॥

कल्पवृक्ष, रत्न, चिंतामणी, अमरजडी, अमृत व पारस पत्थर है जिसका सब स्त्री पुरूष नाम जानते है तथा उसको सब पाने की इच्छा रखते है। यह सब चीजें जगत में प्रकट है। म:फ: है मेरा ज्ञान जगत में संजीवनी जडी की तरह है परन्तु उस ज्ञान की संसार को परीक्षा नही है इसलिये उसे कोई धारण नहीं करता व वेदों पुराणों के ज्ञान को सब धारण करते है।

चौरासी का जीव, अनन्त ज्यां पार न कोई। नर देह छुछम जांण, भेद बिरला कहूं तोई॥

यूं बिरला नर होय, मोक्ष कूं जानण हारा। करणी करे अनेक, ताय को अन्त न पारा॥
सुखराम कह सुण ज्ञान ओ,मेरो बिरली ठौर। और ज्ञान घर घर फिरे, ज्युं चौरासी ठौर॥ ७८॥

चौरासी लाख योनियों में इतने जीव है कि उनकी कोई गिनती ही नही है पर मनुष्य शरीर थोडे है इसका भेद बिरले ही जानते है। इस तरह बिरले स्त्री पुरूष मोक्ष में जाने वाले है। करणियां करने वाले अनन्त है जिसका अन्त व पार नहीं है। म: फ: है कि इसी तरह मेरा ज्ञान बिरली सी जगह है। और दूसरा ज्ञान चौरासी के पशुओं की तरह घर घर में है।

चिन्तामण कल बरछ है, फेर पारस कहूं तोय। यहां लग समझे जगत,
कसणी कर जन कोय॥ सुण परचा होय, नजर देखे नर नारी।
यूं होण काल लग भगत, नार नर लागे प्यारी॥ सुखरामदास फल अमर में,
क्यों कर समझे लोय। युं सुण मेरा ज्ञान कूं, वेद न जाणे कोय॥ ७९॥

चिन्तामण कल्पवृक्ष व पारस को संसार मेहनत करके समझ सकता है उनसे परचे याने चमत्कार होते है उसको सभी स्त्री-पुरूष देखते है। ऐसे ही होण काल ब्रह्म तक की भक्ति सब स्त्री पुरूषों को अच्छी लगती है। म:फ: है कि अमर फल की परीक्षा नही हो सकती इसलिये नही समझ सकते। ऐसे ही मेरे ज्ञान को वेदों के ज्ञान को धारण करने वाले नही समझ सकते इसलिये धारण नही करते है।

अमरजडी अमरफल ईमरत, ताय न जांणे लोय। भोलप मांय खावे सो खावे,
परख न लेवे कोय॥ ऐसी भक्त हमारी जग में, समझ हाथ नही आवे।
या तो बात ब्रह्म सुं ही आगे, अरथ कोण विध लागे॥ सुखराम जगत की बुद्ध रे,
रतन पारस परखे आय। चिंतामण कल्पवृक्ष सुं, आगे बुद्ध न कोय॥ ८०॥

अमरजडी अमरफल व इमरत को संसारी नही जानते। भोलेपन में कोई खा लेवे तो खा लेवे। परीक्षा करके कोई नही खा सकता इसी तरह मेरी भक्ति है सो इसको समझ कर कोई धारण नही करता। यह ज्ञान ब्रह्म पद से आगे का है इस ज्ञान को कैसे समझ सकते है। म:फ: कि जगत के मनुष्यों की बुद्धि रतन, पारस चिन्तामणि व कल्पवृक्ष तक की है इसके आगे के ज्ञान को समझने की बुद्धि नही है।

कंचन लग की भक्ति में, सब जग समझे आय। फेर पारस लग जाणसी,
बिरला सा जग मांय॥ सब चीजा की परख, और आगे लग जांणे।
चिन्तामण कल्पवृक्ष परख, कैसी विध आणें। सुखराम ग्रन्थ कोटां कथ्यां,
रूम न पावे कोय। ब्रह्म लग री भक्त रे, अरथां कर ले जोय॥ ८१॥

जैसे सोने में सब जग समझते है ऐसे ही वेदों के ज्ञान की भक्ति को सारा जगत जानता है। पारस के गुण भी बिरले ही जानते है और दूसरी सब चीजों की परीक्षा आगे तक जान सकते है। चिन्तामणी व कल्पवृक्ष की परीक्षा कैसे जान सकते है। म:फ: है कि क्रोडो ग्रन्थ संसार में बने हुये है उनको कथने व बांचने से रूम भर भी ने:अंच्छर की प्राप्ति नही कर सकते है। होणकाल ब्रह्म तक की याने अंच्छर ब्रह्म की भक्ति में बैरंग परचे दिखने में है। ने: अंच्छर की केवल भक्ति में घट परचे है।

<u>कुण्डलिया</u>:- अनन्त चीज री परख है, कलबरछ लग कहुं तोय। एक अमरजडी
अमरफल की,कीमत परख न होय॥ कीमत परख न होय, यों सुण ज्ञान हमारा।

जे माने हंस आय,जगत सुं होय रह न्यारा ॥ सुखराम अमीरस पीवियां
मुवा संजीवन होय। युं हंस मोसुं मिलत ही, गिगन चढे कहुं तोय ॥ ८२ ॥

अनन्त चीजों की परीक्षा है। कल्पवृक्ष तक की परीक्षा है। एक अमरजडी व अमरफल की कीमत व परीक्षा नही हो सकती। सुणो इस तरह मेरा ज्ञान है जो हंस मेरे ज्ञान को धारण करता है जगत से जीते जी अलग हो जाता है। म:फ: है कि अमृत पीने से मरा हुआ जिन्दा हो जाता है इसी तरह जो हंस मेरे ज्ञान को धारण करता है वो के:पद आ:पद में पहुंचता है।

अष्ट धातु का पारखु, जग में बोहता होय। हीरे लग का पारखु,
ज्यों त्यों करले जोय ॥ ज्यों त्यों करले जोय ,पारख पारस लग होई।
चिन्तामण कल्पवृक्ष तहां लग जांणे कोई ॥ सुखरामदास अमरजडी
अमरफल दे कोय। तो पारख नर क्यों गहे, सो विध कहिये मोय ॥ ८३ ॥

आठ धातु की परीक्षा करने वाले संसार में बहुत है। हीरे तक की परीक्षा कोई कोई जैसे तैसे कर सकता है। पारस चिन्तामणी व कल्पवृक्ष की परीक्षा कोई जान सकता है। म:फ: है कि किसी को अमरजडी व अमरफल दे देवे तो मनुष्य उसकी परीक्षा कैसे कर सकता है सो उसकी विध मुझे बतावो।

हीरो घण से परखिये, पारस संग लोह लाय। चिन्तामण की परख आ,
चितवन करे नर आय ॥ चितवन करे नर आय, सब की पारख होई।
इमरत फल की परख, कोण विध कहो नी मोई ।। सुखराम कह युं जगत सुं,
मेरी परख न होय। और संत कूं परख ले, जे अरथा में होय ॥ ८४ ॥

हीरों की परीक्षा घण से चोट लगाने से पारस की परीक्षा लोहा लगाने से हो जाती है। मनुष्य जो चितवन करता है वो प्राप्त हो जाता है। यह चिन्तामणी की परीक्षा है। ऐसे सब चीजों की परीक्षा हो सकती है। म:फ: है कि इस तरह जगत में मेरे ज्ञान की परीक्षा नही होती, मेरे ग्यान में घट परचे है और संतो की परीक्षा हो सकती है, क्योंकि बैरंग परचे है।

कवित्त:- हीरे लग की भक्ति, आत्मा इन्द्री सारो। आ पारख जो होय,
और कुछ नांय बिचारो ॥ पारस लग की भक्त, विष्णु लग परचा देवे।
चिन्तामणी परब्रह्म, सर्व दुख मेटर लेवे ॥ सुखराम कहे या भक्त रे,
युं परख सके न कोय। जे अमरफल परख ले, तो यांकी परख होय ॥ ८५ ॥

इन्द्रियों को बश में करके आत्म ज्ञान करना याने ब्रह्म पद तक का ज्ञान करना यह भक्ति हीरे के पहचान जैसी है। ब्रह्म तक की भक्ति करने वाले के आगे के:पद है, उसको नही जानते। विष्णु की भक्ति करने वाले जगत में परचा देते है, यह भक्ति पारस की तरह है, जैसे पारस लोहे को सोना बना देता है, पारस नही बना सकता। पारब्रह्म की भक्ति चिन्तामणी की जैसे जिससे सारे दुख मिट जाते है। म:फ: है कि के:पद आ:पद की भक्ति अमर फल की तरह है। अमरफल की परीक्षा कोई नही कर सकता इसी तरह इस भक्ति की परीक्षा नही हो सकती।

अमरजडी फल अमर से, अमर हुआ जग मांय। इण गुण बिना गुण दूसरो,
और न प्रगटे आय ॥ और न प्रगटे आय, सुत वित धन न पावे ॥
युं पद सतस्वरूप, भूत परचा नही आवे ॥ यूं वो गरभ न पाछो आवसी,
कहे सुखदेव बजाय। अमरजडी फल अमर से, अमर हुआ जग मांय ॥ ८६ ॥

अमरजडी व अमरफल से जग में अमर हुये है इस गुण के सिवाय दूसरा कोई गुण प्रगट नही होता। इनसे धन व लडके की प्राप्ति नही होती इसी तरह सतस्वरूप के पद में परचा व करामात नही होती। म: जोर देकर कहते कि सतस्वरूप के ज्ञान धारण करने वाले गरभ में नहीं आवेंगे, जन्म मरण से रहित हो जाते है।

अमर फल जो पावसी, सोही सोही जाणनहार। और न जांणे प्राणियां,
तिल भर भेद विचार। तिल भर भेद विचार, सब पीछे जस गावे।
युं अमर जग मांय, और मर मर दुख पावे॥ सुखराम हंस मोकुं मिल्यां,
तांकु लांगु पार। अमर फल जो पावसी, सोही सोही जाणन हार॥ ८७॥

जिनको अमरफल की प्राप्ति हुई है वो ही इसका गुण जानते है दूसरे इसका भेद तिल भर भी नही जानते। इसी तरह उस ज्ञान को सुनकर धारण नही करते पीछे से इस ज्ञान की महिमा करते हैं। जिन्होंने इस ज्ञान को धारण किया है वो अमर हुये हैं। इस ज्ञान को नही धारण करने वालों का जन्म मरण नही मिटता यही मर मर दुख पाना है। म:फ: है कि जो हंस मेरे ज्ञान को धारण करेंगे उन्ही का जन्म मरण से छुटकारा होगा यही पार लगाना है।

अमरफल कूं परहरे, से सब मर मर जाय। यो मेरो उपदेश तज,
जुग जुग गोता खाय॥ जुग जुग गोता खाय, मुढ अब समझे नांही,
उल्टी निन्दा ठांण, सरब परले को जाई॥ बडभागी सुखराम कहे,
से हंस माने आय। अमरफल कूं पर हरे, से सब मर मर जाय ॥ ८८॥

जो अमर फल को छोड देते है वो मर मर जाते है इसी तरह मेरे ज्ञान को छोडने वाले जुग जुग गोते खायेंगे याने जन्म मरण में आवेंगे। मुर्ख अब भी नही समझते उलटी मेरे ज्ञान की निन्दा करके जन्म मरण में आते है। म:फ: है कि वही हंस भाग्यशाली है जो मेरे ज्ञान को धारण करते है।

कवित्त:- कही न माने कोय, भेद अरथां में नांही। किम तारूं जग सेंग,
सोच मोटो मुझ मांही॥ मैं आयो संसार,धार कारण इण सोई।
सतलोक नर नार, लेर जावुं सब लोई॥ सुखराम कहे सतस्वरूप की,
आ आग्या मुझ होय। हंस हंस सब भेज दो, जग में रखो मत कोय॥ ८९॥

कहने से कोई नही मानता। इस ज्ञान का भेद बैरंग पर्चो में नही है। सारे संसार का उद्धार कैसे हो यही मेरे को बडा सोच है। मैं जगत में शरीर धारण कर इसलिये आया हूं। सब स्त्री पुरूषो को सतस्वरूप का ज्ञान देकर सतलोक में भेज दूं, यही सतस्वरूप की मुझे आज्ञा है। म: फ: है कि जो हंस सतस्वरूप का ज्ञान धारण करते है वे ही सतलोक में जाते है यही हंसो का भेजना व जगत में नही रहना है।

मत ज्ञान माने नही, श्रुत ज्ञान में न्याव। अवध ज्ञान में सूजसी,
लाख कोस को डाव॥ लाख कोस को डाव, मन परचे सोई कर है।
या केवल की परख, अमर फल खाया न मर है॥ सुखराम बरस विदित हुआ,
नर के उपजे भाव। मत ज्ञान माने नही, श्रुत ज्ञान में न्याव॥ ९०॥

मन से ज्ञान करने वाले इस ज्ञान को नही मानते। श्रुत ज्ञान से ही उस पद का अनुभव होता है यही न्याव है। अवध ज्ञान में लाखों कोसों की मालूम पडती है। मन परचे ज्ञान में जो मन चाहता

है वो ही कर सकते है। केवल ज्ञान की यही परीक्षा होती है जैसे अमरफल खाने से शरीर अमर हो जाता है ऐसे ही केवल ज्ञान को धारण करने से आत्मा परमपद में जा समाती है। म:फ: है कि इस ज्ञान की जानकारी के बिना मनुष्य के कितने ही बरस बीत जाते है। जब अगले जनम की प्राणी की पुन्नवानी जागृत होती है तब यह ज्ञान सुनने को मिलता है तो इस ज्ञान को धारण करने का भाव हो जाता है।

॥ इति श्री बिठलराव का संवाद सम्पूर्ण ॥

卐 तांत्या का संवाद 卐

दोहा:- कहो समाधी देश में, क्या सुख लील बिलास।
कह तांत्यो गुरूदेवजी, कोण देश कुण बास॥ १ ॥

गुरूदेव से तांत्या पूछ रहा है कि समाधि देश में क्या सुख, क्या लीला, क्या बिलास है। कौन देश है, किसका बास है।

कुण्डलिया:- सुख तो मालूम कुछ नही, क्या कहूं कैसा होय।
पण आनन्द सुख बैकुण्ठ का, दिल नही माने कोय॥
दिल नही माने कोय, इसा सुख देखे जाई। तिरपत हुवे जब हंस, फेर समाध लगाई॥
सुण तांतिया आ मालूम है जोय। सुख तो मालूम कुछ नही, क्या कहूं कैसा होय॥ २ ॥

म:फ: है कि सुख की तो कुछ भी मालूम नही है कि सुख कैसा है परन्तु बैकुण्ठ के आनन्द व सुख का भी दिल नही मानता। इस तरह का सुख समाधि में जाकर देखता है जब हंस सुख से तृप्त हो जाता है फिर समाध लगाता है। हे तांतिया सुणो यह मालूम है समाधि के सुख में तृप्त हो जाता है।

महामाई अरू प्रकृति, आगे जोत कहाय। अजरलोक लग सुख की,
निज मन कह दिल मांय॥ निज मन कह दिल मांय, देश नव आगे होई।
वांकी यहां गम नांय, पुरूष जाणे पण सोई॥ सुखराम कह सुण तांतिया,
देश परख रे मांय। महामाई अरू प्रकृति, आगे जोत कहाय॥ ३ ॥

महामाया से ही प्रकृति बनी है उससे आगे जोती का लोक है। अजरलोक याने त्रिकुटी से पारब्रह्म तक तेरह लोक के सुख की निज मन याने आत्म चेतन कहता है। उसके आगे नो देश है उनकी यहां गम नही है। पुरूष जानते भी है। म:फ: है कि हे तांतिया उन देशो की अन्तर में अनुभव से ही जानकारी होती है।

त्रृकुटी में सुख पांच है, मेहमा मेहरी जांण। माया के सुण लोक में,
देवत सुख बखाण॥ देवत सुख बखाण, देश प्रगत के मांही।
प्रेम रूप सब सुख, और दिशे कुछ नांही॥ सुखराम जोत का लोक में,
जोत तांतिया जांण। त्रिकुटी में सुख पांच है, मेहमा मेहरी जांण॥ ४ ॥

त्रृकुटी में जब सूरत द्वारा शब्द का ध्यान होता है जब पांचो इन्द्रियों का सुख याने स्त्री पुरूष के संजम सा सुख आता है। माया के लोक में देवताओं सा सुख आता है। प्रकृति के लोक में प्रेम आता है और कुछ नही देखता। म:फ: है कि जोती के लोक में जोत व अनहद शब्द रूपी ज्योति का अनुभव होता है।

अजर लोक जहां अलख है, आनन्द लोक में नाद। बजरलोक में ब्रह्म है,
जहां चेतन को स्वाद॥ जहां चेतन को स्वाद, ईखर जो लोक कहावे।
वहां अनाहद नाद, खोल खिडकी जन जावे॥ सुखराम कह सुण तांतिया,
ईखरलोक समाद। अजर लोक जहां अलख है, आनन्दलोक में नाद॥ ५॥

ब्रह्म का जो पद लखने में नही आता उसको अजर लोक कहते है। आनन्द लोक में नाद याने शब्द होता है। आनन्द लोक के:पद के बाद आता है वो दूसरा है। यह त्रिकुटी से ब्रह्मण्ड के बीच आता है। जहां चेतन को स्वाद आता है उसे बजरलोक याने ब्रह्म पद बताया। शब्द का सुरत से ध्यान करते करते समाधि हो जाती है उठ के काम नही कर सकता। शब्द समाधि में बराबर सुनता व बाहर की बातें भी सुनता उसे ईखर लोक की समाधि कहते है।

सतलोक सतरूप है, जिंग शब्द धुन होय। आगे पूरण ब्रह्म का,
लोक कहावे दोय॥ लोक कहावे दोय, फरक अेतो ऊंण मांही।
गले नव तत्त की देह, तेज सुख आनन्द मांही॥ सुखराम दूसरो लोक यो,
दशवों द्वार दे खोय। फिर यहां आयर तांतिया, जन्म धरे नही कोय॥ ६॥

सतलोक पारब्रह्म में जिंग शब्द और आगे पारब्रह्म में जिंग शब्द के आगे के:पद आ:पद ये दो पद ही दो लोक कहलाते है लेकिन उसमें और इसमें इतना फरक है कि जीते जी चेतन के साथ इस देह में नव तत लिंग शरीर से अलग होना ही नव तत लिंग शरीर का गलना है। उस पद में तेज सुख आनन्द ही आनन्द है। म:फ: है कि दूसरा लोक दशवां द्वार खोलकर के:पद से आ:पद में जाना ही दूसरा लोक है। आ:पद में मिलने पर दूसरा जन्म धारण नही करता है।

कवित्त:- ओ सुण सुण नर ज्ञान, भेद हिरदे थिर कर है। सब सुरगुण विध छाड,
शीष सतगुरू पद धर है॥ वे चौरासी मांय, हंस कबहूं नही आवे।
ना देवत के लोक, स्वर्ग में नांय रहावे ॥ सुखराम कह सुण तांतिया,
वे नर नर ही होय। खण्ड ब्रह्मण्ड पिण्ड सोज के, लेत समाधि जोय॥ ७॥

इस ज्ञान को सुन सुन कर आनन्द प्राप्ति का भेद हिरदे में स्थिर करते है। सब सुरगुण की विधि छोडकर सिर पर सतगुरू पद के ज्ञान को धारण करते है। वे हंस कभी भी चौरासी लाख योनियो में जन्म धारण नही करते, न देवताओं के लोक व स्वर्ग में रहते है। म:फ: है कि हे तांतिया सुणो वे नर मनुष्य ही बनते है। खण्ड पिण्ड व ब्रह्मण्ड की साधना कर समाधि लेते है।

तत्त रूपी गुरूदेव, परख शरण आवे। राम राम यो पद शींवर,
घट नांव जगावे॥ ऊलट पिछम के घाट, मेर इकीसुं फोडे।
गिगन मण्डल कूं छेद, आण त्रकुटी मन जोडे॥ सुखराम कह सुण तांतिया,
ब्रह्म लोक वे जाय। बजर पोल जन खोल के, धंस गया वां मांय॥ ८॥

केवली भगवंतो के सत ग्यान की समझ करके शरण लेवो फिर सतगुरू विधि से सांस ऊसांस में राम राम का सुमरण कर घट में कंठ कंवल पर शब्द की जागृति करे। बंकनाल में उलटकर मेरूदण्ड की इक्कीस गांठो को फोड कर गिगन मण्डल को छेद करके त्रकुटी में पहुंचकर भजन में मन लगा कर सूरत से ध्यान करे। म:फ: है कि तांतिया सुणो वे हंस ब्रह्म लोक में जाते है वो जन बजर पोल को खोलकर पार होते है।

कुण्डलिया:- संत समाधि जाय के, पाछा आवे कांय। ब्रह्म सुख में गरक हुवा,
तो क्या सुख थो जग मांय॥ तो क्या सुख थो जग मांय, भेद यांको मुझ दीजे।
भरम हमारा भांग, ब्रह्म के शरणे लीजे॥ कहे तांतिया गुरूदेवजी,
यो भरम है सब मांय। संत समाधि जाय के, पाछा आवे कांय॥ ९॥

संत समाधि अवस्था तक जाकर वापस क्यों आते है। जो ब्रह्म के सुख में गरक हो गये तो संसार में क्या सुख था इसका मुझे भेद देने की कृपा करो। मेरे भरमों का नाश कर ब्रह्म की शरण लो। म: से तांतिया अरज कर रहा है कि अेसा भरम सबके मन में है कि संत समाधि अवस्था तक जाकर वापिस क्यों आते है।

जल में डारया लूण रे, तुरत गले नहीं मांय। नारी कर सुं साय के,
फिर फिर लेत उठाय॥ फिर फिर लेत उठाय, फेर पाछो ले डारे।
यूं दस पन्द्रह बार, नमक सब ही कूं गारे॥ सुखराम कहे सुण तांतिया,
यो जन आवे जाय। जल में डारया लूण रे, तुरत गले नहीं मांय ॥ १०॥

जल में नमक की डली डालने से तुरन्त नहीं गलती, नारी हाथ से बार बार उठाती है और डालती है। इस तरह दस पन्द्रह बार करके सब नमक को गाल देती है। म:फ: है कि हे तांतिया इस तरह मनुष्य जनम मरण में आते जाते है।

तूं या भारी बात रे, क्यों बूझत है आय। तेरे उर क्या भाव है, सो मुझ कहो सुणाय॥
सो मुझ कहो सुणाय, एक तो हरि पद चाहिये। एक सुणन की बात, परख तेसो तिह कहिये॥
सुखराम कह सुण तांतिया, दोय भाव जग मांय। तूं या भारी बात रे, क्यों बुझत है आय ॥ ११॥

म:फ: है कि हे तांतिया तूं इस भारी बात को क्यों बूझता है। तेरे हृदय में क्या भाव है सो मुझे सुणा कर कहो। एक तो तुम्हे हरि पद चाहिये या खाली सुनने की बात है। जिसकी जैसी परीक्षा है वह परीक्षा करके वैसा कहता है। म:फ: है कि संसार में दो भाव है।

परख करे तूं संत की, हर मिलणे के काज। तो या परख कीजिये,
हरिजन कह सो साज॥ हरिजन कह सो साज, फेर या पारख कीजे।
ज्ञान ध्यान अरू सीख, सुरत खेती पर दीजे॥ सुखराम कह सुण तांतिया,
छाड़ भरम को राज। परख करे तू संत की, हर मिलणे के काज ॥ १२॥

यदि तू संत की परीक्षा परमात्मा की प्राप्ति के लिये करता है तो यह परीक्षा कर कि जो हरिजन कहते है वो साधन करो। ज्ञान ध्यान को सीखकर शब्द में सुरत लगाकर भजन करना ही सुरत खेती पर देना है। म:फ: है कि हे तांतिया भरमों को छोडकर भजन में लग जावो।

ध्यान समे सुण संत की, या देह ठंडी होय। मस्तक सेती अत् रहे,
कर पारख कहूं तोय॥ कर पारख कहूं तोय, नैण ऊलटर पट लागे।
एक कला या देख, नाम शिष के घट जागे॥ सुखराम कह सुण तांतिया,
अणभै कागज होय। ध्यान समे सुण संत की, या देह ठंडी होय ॥ १३॥

ध्यान करते समय साधक का शरीर ठंडा याने मस्तक से नीचे का शरीर ढीला होता है। बाहर की बातें सुनता है परन्तु उठ कर काम नहीं कर सकता है। मस्तक सेती अत रहे याने ब्रह्मण्ड में ध्यान होता रहता है, अन्तर में सुरत रूपी चक्षु खुल जाते है इसकी तूं परीक्षा कर। मैं तुझसे कहता हूं एक कला यह देख, शिष्य के घट में निज नाम की जागृति हो जाती है। हे तांतिया सुण जिसको

अणभै की परवानगी मिली हो।

धिन धिन संसार में, राम मिलण के काज। पदवी छोडे जगत की,
तीनू जग को राज॥ तीनू जग को राज, मिलण की तजे ऊपाई।
पारब्रह्म को ध्यान, भेद बुझे गुरू जाई॥ सुखराम कह सुण तांतिया,
जे नर छोडे राज। धिन धिन संसार में, राम मिलण के काज ॥ १४॥

संसार में वहीं मनुष्य धिन है जो परमात्मा की प्राप्ति के लिये जगत की पदवी व तीन लोक का राज छोडते है तथा इनकी प्राप्ति का उपाय छोडते है। सतगुरू के सत ग्यान को सुणकर भेद याने भजन करने की विधि पूछते है कि पारब्रह्म का ध्यान कैसे किया जाता है। म:फ: है कि जो रामजी की प्राप्ति के लिये राज छोडते है वो धिन है।

कवित्त:- ब्रह्म मिलण के काज, ब्रह्म को ध्यान समावे। राज मिलण का ध्यान,
ज्ञान सब ही ले भावे॥ ओ सुण तजियाँ राज, गरज सरे नहीं कांई।
कर रयो फेर ऊपाय, राज की क्रिया जाई॥ जहां लग ब्रह्म न पावसी,
कोटिक करो ऊपाय। सुखराम कह यूं तांतिया, भेद ध्यान के मांय ॥ १५॥

ब्रह्म की प्राप्ति के लिये शब्द ब्रह्म का ध्यान करे। राज प्राप्ति के लिये ज्ञान व ध्यान सब ही को अच्छे लगते है। राज मिलने का ज्ञान ध्यान सब छोडे इस राज को छोडकर फिर भी राज प्राप्ति का ऊपाय कर रहा है। करोडो ऊपाय करो वहां तक ब्रह्म की प्राप्ति नहीं होती। म:फ: है कि तांतिया भेद सहित भक्ति से ही अन्दर ध्यान का अनुभव होगा।

कुण्डलिया:- च्यार ध्यान जप चार रे, विष्णु लोक कूं जाय। एक ध्यान जप एक रे,
रहे जगत के मांय॥ रहे जगत के मांय, परमपद कदे न पावे।
तप किरिया सब ज्ञान, भगत सो जुग में आवे॥ सुखराम कह सुण तांतिया,
समझ भेद इण मांय। च्यार ध्यान जप चार रे, विष्णु लोक कूं जाय ॥ १६॥

चार ध्यान चार जप विष्णु लोक में जाते है, एक ध्यान व जप जगत में रहते है। इनसे परमपद की प्राप्ति नहीं होती। तप करो, क्रिया करो, सब तरह का ज्ञान व भक्ति करो सबका फल भोगकर संसार में आ जाते है। म:फ: है कि हे तांतिया इस भेद को समझ लो।

सेवा पूजा जीग रे, दया ध्यान ये चार। ऐ फलसी संसार में,
आगे नहीं विचार॥ आगे नहीं विचार, हट तप जग में आवे।
भेद तप नर साज, स्वर्ग के लोक सिधावे ॥ सुखराम कह सुण तांतिया,
या नहीं ब्रह्म विचार। सेवा पूजा जीग रे, दया ध्यान ये चार ॥ १७॥

सेवा करो, पूजा करो, दया करो, ध्यान करो, इनका फल संसार में ही मिलता है आगे नहीं मिलता। हट जोग तप करने वाले संसार में आते है। भेद से तप की साधना करने वाले मनुष्य स्वर्ग में जाते है। म:फ: है कि इन साधनों से ब्रह्म पद की प्राप्ति नहीं होती है।

ज्ञान पाठ मंतर जपे, ऐ सब हद का जाप। सुरगुण पावे जन्म धर,
ऊलटर भुगते पाप॥ ऊलटर भुगते पाप, परमपद कदे न पावे।,
रेचक पुरक ध्यान, त्रकुटी में लावे॥ सुखराम कह सुण तांतिया,
यां सुं मिले न आप। ज्ञान पाठ मंतर जपे, ऐ सब हद का जाप ॥ १८॥

ज्ञान करो, पाठ करो, मंत्र जपो यह सब ही हद के ही जाप है, इनसे तीन लोकों में फलों की प्राप्ति होती है। इन फलों को भोगकर संसार में जन्म लेता है, इनसे परमपद की प्राप्ति नहीं होती है। रेचक पूरक ध्यान करके त्रकुटी में ध्यान लाते है। म:फ: है कि हे तांतिया इनसे परम पद की प्राप्ति नहीं होती।

ममंकार ओऊं जपे, सोहं अजपो जांण। ये पहुंचे बैकुण्ठ में,
च्यारू मत बखांण॥ च्यारू मत बखांण, जोग रहे जग के मांही।
त्राटक वैदेही ध्यान, ब्रह्म लग कदै न जाही॥ सुखराम कह सुण तांतिया,
ऐ दिल भेद पिछाण। ममंकार ओऊं जपे, सोहं अजपो जांण ॥ १९॥

ओऊं का जपा अजपा व सोहं का जपा अजपा करने वाले बैकुण्ठ में पहुंचते है, यह चारो मत का बखाण है। जोग की व अष्टांग योग की साधना करने वाले जगत में ही रहते है। त्राटक व मन से किसी का ध्यान करना वैदेही ध्यान है, इनको करने वाले भी ब्रह्म की प्राप्ति नहीं करते। म:फ: है कि हे तांतिया दिल में इस भेद को पिछाणो।

कवित्त:- पहिलो त्राटक ध्यान, दूसरो जोग कहावे। तीजो वैदेही ध्यान,
मून पर परचो लावे॥ यामें साजन ध्यान, जप में तोय बताया।
पाचूं इन्द्रियां काज, करम आगे कहूं भाया॥ सुखराम कह सुण तांतिया,
तीरथ बरत विचार। ध्यान ज्ञान जप तप रे, सब सुण माया का यार ॥ २०॥

त्राटक ध्यान, योग की साधना, वैदेही ध्यान, मून धारण कर मन से ध्यान यह सब ध्यान जप मैंने बताये, इनसे पांचो इन्द्रियों के भोग मिलते है। म:फ: है कि तीरथ करो, व्रत करो, ध्यान, ज्ञान, तप, जप ये सब माया के है इनसे माया की प्राप्ति होती है।

कुण्डलिया:- ब्रह्म ध्यान बिन ध्यान, सब माया मिलण ऊपाय। ब्रह्म प्रेम बिन प्रेम,
सो सब करमा की खाय॥ सो सब करमा की खाय, नाम केवल बिन सारा।
सब इन्द्रियाँ का भोग, करण कारण बिचारा॥ करद शब्द के प्रेम बिन,
परम मोख नहीं जाय। ब्रह्म ध्यान बिन ध्यान, सब माया मिलण ऊपाय ॥ २१॥

ब्रह्म ध्यान के बिना दूसरे जितने ध्यान है वे माया प्राप्ति के ऊपाय है। ब्रह्म प्रेम के बिना जो प्रेम है वो सब करम है। केवल के नाम याने सतशब्द के बिना सब करमों से इन्द्रियों के भोग मिलते है। करद शब्द करम काटने वाला है। ने:अंच्छर के प्रेम के बिना ग्यान ध्यान के बिना परम मोक्ष नहीं जाते है।

कवित्त:- शुभ अशुभ व्यौहार, सरब इन्द्रियाँ के तांई। राव रंक क्या देख,
सरब न्यारा जग मांही॥ सब ही भुगते भोग, किसब भावे सो किया।
यूं करणी जग मांय, भोग आगे कूं जीया॥ सुखराम कहे सुण तांतिया,
यूं सब एक ऊपाय। परमपद में तत्त मिले, सो विद नहीं इण मांय ॥ २२॥

संसार में अच्छे व बुरे व्यवहार सब इन्द्रियों के लिये है, राजा व गरीब को देखो सब ही अलग अलग है किसब तो कोई भी करो उसका भोग वही भोगता है। इस तरह यह करणियें करके आगे उनका भोग भोगते है। म:फ: हैं कि तांतिया सुणो इस तरह सबका एक ही उपाय है, परमपद की प्राप्ति की विधि इसमें नहीं है।

परमपद को प्रेम, आपको आप ही मांही। परमपद को नाम,

आपको आप जपाई ॥ परमपद को ध्यान, आपको आप ही धारे।
परमपद सो ऊलट, आपको आपी तारे ॥ सुखराम तांतिया तत्त रे,
यूं बिछड़यो जाय। तन में मन होय नाम संग, चढे पिछम दिश मांय ॥ २३ ॥

परमपद की प्राप्ति के लिये प्रेम घट में ही है। वो आत्म चेतन में होता है। परमपद की प्राप्ति के लिये नाम खुद का खुद को ही जपना पडता है व ध्यान भी खुद का खुद को ही करना पडता है। परमपद के लिये ऊलटकर याने बंकनाल के रास्ते होकर खुद में ही खुद का उद्धार हो जाता है। म:फ: है कि तांतिया इस तरह तत्त से बिछुड जाता है। शरीर में ही मन व नाम के साथ पिछम की दिशा को अन्दर ही चढता है।

कुण्डलिया:- परमपद के मिलण की, दूजी नहीं ऊपाय। चवदा तीनूं लोक में,
फिर नर देखो जाय ॥ फिर नर देखो जाय, ब्रह्म किस दिश ने पावे।
जीण पायो सब मांय, सतगुरू भेद बतावे ॥ सुखराम कहे सुण तांतिया,
करद शब्द कूं साय। परमपद के मिलण की, दूजी नहीं ऊपाय ॥ २४ ॥

तीन लोक चवदा भवन में फिर कर देखो परमपद की प्राप्ति का उपाय दूसरा नहीं है। ब्रह्म किस दिशा में नहीं मिलता। सतगुरू विधि से जिन्होने प्राप्ति की है उन्होने अन्दर में ही पाया है। म:फ: है कि हे तांतिया कर्द शब्द की प्राप्ति करो इसके सिवाय परमपद की प्राप्ति का उपाय दूसरा नहीं है।

साखी:- एक समे सुण राम के, आ बरती तन मांय।
पारब्रह्म के लोक में, किस विध मिलिये जाय ॥

कवित्त:- रामचन्द्र कूं देख, ज्ञान वास्टमुनि दियो। तुम ही ब्रह्म विचार,
भरम काये ऊर लियो ॥ जैसे तरंग कहाय, सूर सूं किरणा फूटे।
ज्यों बादल सूं बूंद, सरब न्यारी होय छूटे ॥ ऐसे तुम ऊण ब्रह्म सूं,
न्यारा कहिये जांण। रामचन्द्र कूं तांतिया, वास्टमुनि कही तांण ॥ २५ ॥

एक समय रामजी के मन में यह बात पैदा हुई कि पारब्रह्म के लोक में किस विधि से जाकर मिला जाता है। देखो रामचन्द्रजी को ज्ञान वशिष्ठ मुनि ने दिया कि तुम स्वयं ब्रह्म हो, भरमों को हृदय में धारण क्यों किया है। जैसे पानी में तरंगे उठती है, सूर्य से किरणें फूटती है व बादल से बून्दे अलग अलग छूटती है ऐसे ही तुम उस ब्रह्म से अलग हो। म:फ: है कि हे तांतिया रामजी को वशिष्ठ मुनि ने इस प्रकार कहा।

इसी विधि को ज्ञान, बोहो बिद दीयो आई। तुम ही ब्रह्म विचार,
और दुबध्या नहीं भाई ॥ सोच करो मत कोय, जग का काम सुधारो।
तीन लोक मरजाद बांध, राकस सब मारो ॥ सुखराम कह सुण तांतिया,
राम न माने कोय। वास्टमुनि पचहार के, ब्रह्म बतायो जोय ॥ २६ ॥

इसी तरह का ज्ञान वशिष्ठ मुनि ने रामजी को बहुत विधि से दिया। विचार करो कि तुम ही ब्रह्म हो उसमें किसी तरह की दुविधा नहीं है। किसी तरह का सोच मत करो व संसार का काम सुधारो। तीन लोक मरजादा में बांधकर सब राक्षसों को मारो। म:फ: है कि तांतिया सुणो रामजी नहीं मान रहे है। तब वशिष्ठ मुनि ने पचहार कर ब्रह्म प्राप्ति का भेद बताया।

कुण्डलिया:- राम कहे गुरूदेव ने, यूं तो सब ही राम। पांच तत्त के बस पड्या,

सो नहीं पूरण धाम। सो नहीं पूरण धाम, ब्रह्म तो ऐसो होई।
सदा सुख आनन्द, दुख माशो नहीं कोई॥ मोमें तो सब बस रहया,
सुख दुख माया काम। राम कहे गुरूदेव ने, यूं तो सब ही राम ॥ २७॥

गुरूदेव से रामजी कह रहे है कि ऐसे तो सब ही राम है परन्तु जो पांच तत्वों के शरीर के साथ है सो पूरण धाम नहीं होते। ब्रह्म का पद तो ऐसा है सदा सर्वदा सुख आनन्द है दुख तो जरा सा भी नहीं है। मेरे में तो सुख दुख माया व कामनायें सब ही बस रही है। गुरूदेव से रामजी कह रहे है कि ऐसे तो सब ही राम है।

ब्रह्म सकल घट मांय, ब्रह्म में सब घट होई। रामचन्द्र तुम ऐम,
तुज बिन एक न कोई॥ दीजे भरम भगाय, ज्ञान कर देखो राई।
तीन लोक के मांय, पुरूष ऐसो नहीं भाई॥ सुखराम राम तब बोलिया,
यूं तो सब सब मांय। पूरण पद में घट नहीं, सो गुरू कहिये आय ॥ २८॥

ब्रह्म सब घटों में है और ब्रह्म में ही सब घट है। रामचन्द्रजी तुम इसी तरह हो तुम्हारे बिना एक भी कोई ऐसा नहीं है। राजा ज्ञान से देखो तीन लोक में तुम्हारे जैसा दूसरा पुरूष नहीं है। सब भरम दूर करो। म:फ: है कि जब रामजी ने कहा सब में सब ही है। पूरण पद में शरीर नहीं है वो पद बतलाईये।

माया मांही घट है, घट में माया होय। पूरण पद में घट नहीं,
सो ब्रह्म कहिये जोय॥ सो ब्रह्म कहिये जोय, राम बूझे गुरू तांई।
मैं तो सब में होय, सरब मेरे मांई॥ सुखराम कहे पारब्रह्म में,
तांतिया घट नही कोय। माया मांही घट है, घट में माया होय ॥ २९॥

जितने भी शरीर है वो माया के पद में है। घट में आत्मब्रह्म का पद है वो माया के पद में है। पूरणपद में घट नहीं यानि निरंजन निराकार सतचेतन आ:पद में घट याने शरीर नहीं है। उसको ब्रह्म का पद कहते है। रामजी गुरूजी से पूछ रहे है कि मैं सब में हूं। सब मेरे में है। याने आत्मा ब्रह्म सबमें है व सब मेरे में है। म:फ: है कि तांतिया पारब्रह्म के पद में घट नहीं है। स्थूल सूक्ष्म व कारण जितने भी शरीर तीनों लोकों में है सब माया पद में है व घट में जो ब्रह्म का पद है उसे भी माया कहते है। पूरण पद में घट नहीं निरंजन निराकार सर्वव्यापक ब्रह्म याने पारब्रह्म का पद है उसमें घट नहीं है। उस पद को ब्रह्म कहते है।

पारब्रह्म में घट नहीं है, ना पद है घट मांय। सो पद पूरण राम है,
सब जन कहता जाय॥ सब जन कहता जाय, तीन गुण पांचो नांही।
मो सूं ऐ गुरूदेव, निमक नहीं दूरा जाही॥ राम कयो गुरूदेव कूं,
केवल राम बताय। पारब्रह्म में घट नहीं, ना पद है घट मांय ॥ ३०॥

पारब्रह्म के पद में याने शरीर नहीं है। न शरीरों में वो पद है। वह पद पूरण राम का है। सब संत यही कहते आये है। न उस पद में तीन गुण व पांच तत्व है। रामजी गुरूजी से कह रहे है कि मेरे से तीन गुण व पांच तत्व निमिष मात्र भी दूर नहीं जाते है। रामजी ने गुरूदेव से कहा मुझे केवल राम बताओ, जिसमें शरीर नहीं है वो पद बताओ।

वास्ट मुनि कह रामजी, तुम ही ब्रह्म कहाय। ब्रह्मा विष्णु महेश सुर,

सब तुज बन्दे आय ॥ सब तुज बन्दे आय, देख प्राक्रम तुझ मांही।
तीन लोक सम्हाल, पुरूष ऐसो कोऊं नांही ॥ तुम माया तुम ब्रह्म हो,
तुम ही आवो जाय। वास्ट मुनि कह रामजी, तुम ही ब्रह्म कहाय ॥ ३१ ॥

वशिष्ठ मुनि रामजी से कह रहे है कि तुम ही ब्रह्म कहलाते हो। ब्रह्मा, विष्णु, महादेवजी व देवता सब आकर तुम्हे वन्दना करते है। तुम में जो प्राक्रम है उसको देखो व तीन लोको को सम्हालो। आपके जैसा पुरूष कोई नहीं है। तुम ही माया हो, तुम ही ब्रह्म हो, तुम ही आते जाते हो।

प्राक्रम तो सब राम कह, माया को गुण होय। कहां कम जाफा इधक है,
मैं नहीं मानूं कोय ॥ मैं नहीं मानूं कोय, ब्रह्म का अे लछ नांही।
तुम बहकावो मोय, झूंठ गुरू कहिये नांही ॥ सुखराम कह सुण तांतिया,
ज्ञान दृष्टि कर जोय। प्राक्रम तो सब राम कह, माया को गुण होय ॥ ३२ ॥

प्राक्रम याने चमत्कार तो सब माया का गुण है। कही ये ज्यादा कही कम है। मैं नही मानता। ब्रह्म के यह लक्षण नहीं होते। आप मुझे बहका रहे हैं गुरूदेव आपको झूंठ नहीं बोलना चाहिये । म:फ: है कि तांतिया ज्ञान दृष्टि से देखो प्राक्रम तो सब माया के पद में है ।

कहिंक माया अधिक हैं, कहिंक छुछम जांण। माया से माया लडे,
माया करे बखांण ॥ माया करे बखांण, सहाय कर लेवे सोई।
आई ऊपज खप जाय, ब्रह्म यामें नहीं होई ॥ सुखराम रामचन्द्र तांतिया,
इसी कही सुण तांण। कहिंक माया अधिक है, कहिंक छुछम जांण ॥ ३३ ॥

कहीं तो माया का प्राक्रम अधिक है, कहीं थोड़ा है। माया ही माया से लड़ती है और माया ही माया का बखान करती है। सहायता भी माया ही करती है। माया ही ऊपजती है व मिटती है। ब्रह्म का पद माया के पद में नहीं है। म:फ: है कि तांतिया रामचन्द्र जी ने ऐसी बात गुरूदेव को कही।

पारब्रह्म नहीं मारसी, ना या करे सहाय। ना जाया ना जन्मसी,
नहीं वे आवे जाय ॥ नहीं वे आवे जाय, सदा आनन्द रस रूपी।
सावन पलटे अंग, इधक कम छांय न धूपी ॥ सुखराम ज्ञान में सायदी,
राम कही आ मांय। पारब्रह्म नहीं मारसी, ना या करे सहाय ॥ ३४ ॥

पारब्रह्म के पद में न मारना, न सहायता करना , न आता है न जाता है। उस पद में सदा आनन्द है जैसे श्रावण में न धूप अधिक न छाया अधिक रहती है। उस पद के ज्ञान में यह अनुभव होता है।

वास्टमुनि कह रामजी, आ भ्यासी तुम मांय। तो अब पूरण ब्रह्म की,
कल कीमत कहूं लाय ॥ कल कीमत कहूं लाय, ब्रह्म वे है तुम मांही।
बजरपोल के पार, देह में कहिये नांही ॥ सुखराम कह धिन धिन गुरू,
सुणो तांतिया आय। वास्टमुनि कह रामजी, आ भ्यासी तुम मांय ॥ ३५ ॥

वशिष्ठ मुनि ने रामजी से कहा कि आपने जो यह बात पूछी है तो उस पूरण ब्रह्म पद की प्राप्ति का ज्ञान कहता हूं। वो पूरण ब्रह्म तो तुम्हारे अन्दर ही है। बजरपोल से पार है। शरीर में नहीं है। म:फ है कि तब रामजी कह रहे है कि हे गुरूदेव आपको धिन धिन है तांतिया सुणो।

चेतन माया ब्रह्म सूं, सब ही उतपत होय। तांका तुम अवतार हो,
वां आगे हर जोय ॥ वां आगे हर जोय, तत्त वे ब्रह्म कहावे।

सदा रूप आनन्द, ताय भेदी जन गावे ॥ सुखराम कह सुण तांतिया,
वहां अवतार न लोय। चेतन माया ब्रह्म सूं, सब ही उतपत होय ॥ ३६ ॥

आत्म चेतन माया और ब्रह्म से सबकी उत्पत्ति है, उसको होणकाल ब्रह्म का पद कहते है इसके तुम अवतार हो। उसके आगे केवल पद है याने शब्द ब्रह्म जिसे सतशब्द ने:अंच्छर भी कहते है। वह सदा ही आनन्द का ही रूप है। उस पद की भक्ति कोई भेदी जन ही करते है याने संत ही करते है। म:फ: हैं कि तांतिया सुणो उस पद से कोई अवतार नहीं आता।

चेतन को सुण जीव है, फिर पांचू जग मांय। मन निज मन रंग रूप ले,
दाणू देव कहाय॥ दाणू देव कहाय, सरब जग भाई होई।
अे आपस के मांय, सुख दुख लेवे दोई॥ पारब्रह्म तो यामें नहीं,
ना आवे ना जाय। चेतन को सुण जीव है, फिर पांचू जग मांय ॥ ३७॥

जीव पांच तत्व मन निज मन याने आत्मा रंग रूप दाणू देव सब होणकाल के पद में है। दाणू देवता दोनों भाई के माफिक है। एक चेतन पद से ही दोनों की उत्पत्ति है। ये आपस में सुख दुख लेते है। पारब्रह्म का पद सर्व व्यापक निरंजन निराकार है वह आता जाता नहीं है। जीव व पांच तत्व होण काल चेतन के पद में है।

जीव ही मारे जीव कूं, जीव ही देत आहार। ओतो झगडो जीव को,
जीव ही जीते हार॥ जीव ही जीते हार, बात सांची आ होई।
पण तुम सब पर राव, राम कहिये इम सोई॥ बास्ट मुनि कह रामजी,
सुण जग अे बुहार। जीव ही मारे जीव कूं, जीव ही देत आहार ॥ ३८॥

जीव ही जीव कूं मारता है। जीव ही जीव का आहार है। यह सब झगडा जीव का है। जीव की ही जीत व जीव की ही हार होती है परन्तु सच्ची बात तो यह हैकि तुम राजा हो इसलिये तुमको राम कहा जाता है, वशिष्ठ मुनि रामजी से कह रहे है कि यह संसार का व्यवहार है। जीव ही जीव को मारता है। जीव ही जीव का आहार है।

राम कहें गुरूदेव कूं, हो गुरू सुणो पुकार। इस महिमा में क्या मिले,
सुख दुख रह नित लार।। सुख दुख रह नित लार, मोय पदवी नहीं भावे।
दीजे ब्रह्म विचार, संत भेदी जन गावे॥ पारब्रह्म बिन हंस ओ,
फिट जित्यो फिट हार। राम कहें गुरूदेव कूं, हो गुरू सुणो पुकार ॥ ३९॥

राम गुरूदेव से कह रहे है कि आप मेरी प्रार्थना सुणो। इस महिमा में क्या मिलने वाला है। जब तक मैं पांच तत्वों के साथ हूं। तब तक सुख दुख हमेशा साथ रहते है। मुझे कोई भी पदवी अच्छी नहीं लगती। मुझे तो ब्रह्म की प्राप्ति का विचार बतलाईये। जिसको संत व भेद जानने वाले गाते है। पारब्रह्म की प्राप्ति बिना हारने में व जीतने में दोनों में कुछ नहीं है।

वास्टमुनि तब बोलिया, रामचन्द्र सुण भेव। पारब्रह्म तब भाससी,
अन्तर करस्यो सेव॥ अन्तर करस्यो सेव, आप आपी को जोवो।
राम राम यो शब्द, अर्द ऊर्द बिच खोवो॥ सुखराम कह सुण तांतिया,
अखण्ड बताई सेव। वास्टमुनि तब बोलिया, रामचन्द्र सुण भेव ॥ ४०॥

वशिष्ठ मुनि रामचन्द्र जी से कह रहे है कि यह भेद सुणो। पारब्रह्म का आभास तब होगा जब घट

में अन्तर सेवा याने भक्ति करोगे। खुद ही खुद की खोज करो। राम राम इस शब्द को सांस ऊसांस में भजन करो। म:फ: है कि तांतिया सुणो गुरूजी ने अखण्ड भजन करने का साधन बताया।

कवित्त:- राम राम पद शिंवर, अर्ध ऊर्ध मन ल्यावो। सूरत निरत धर मांय,
करद वो नाम जगावो।। वांके संग तुम होय, ब्रह्म कूं देखो जाई।
पारब्रह्म को चेन, द्वार दशवें के मांही॥ सुखराम कह सुण तांतिया,
या विध दी गुरू लाय। रामचन्द्र तब हरष के, बैठा ध्यान लगाय ॥ ४१ ॥

गुरू वशिष्ठ जी रामजी से कह रहे है कि स्वांस ऊस्वांस में मन लगाकर सूरत निरत लगाकर करद नाम याने ने:अंच्छर को जागृत करो। उस शब्द के साथ होकर ब्रह्म का दर्शन करो। पारब्रह्म का अनुभव दशवें द्वार में होगा। म:फ: है कि हे तांतिया, गुरूदेव ने यह विधि बताई। जब रामजी प्रसन्न होकर ध्यान लगाकर बैठ गये।

कुण्डलिया:- ऊलट गिगन में चढ़ गया, लग्यो त्रिकुटी ध्यान। अब आनन्द घट
ऊपना, फिर नहीं बूझे ज्ञान॥ फिर नहीं बूझे ज्ञान, राज रीतां सब छाडी।
दिन दिन अधिक स्वरूप, सूरत आनन्द में गाढ़ी ॥ सुखराम कह सुण तांतिया,
राम रहया सुख मान। ऊलट गिगन में चढ गया, लग्यो त्रिकुटी ध्यान ॥ ४२ ॥

बंकनाल में उलटकर गिगन में याने ब्रह्मण्ड में चढ गये व त्रिकुटी में ध्यान लग गया। अब हृदय में बडे आनन्द का अनुभव होने लगा तो गुरूजी से फिर ज्ञान नहीं पूछा तथा राज काज की सब रीति रिवाज को छोड दिया। दिन दिन इस स्वरूप में आगे बढने लगे। व सूरत याने आत्म चेतन को आनन्द ज्यादा से ज्यादा आने लगा। म:फ: है कि तांतिया, रामजी को बहुत आनन्द आ रहा है।

छाड़ त्रिकुटी ध्यान कूं, गया समाधि देश। अब पारब्रह्म कूं परसिया,
अन्तर रही न रेस ॥ अन्तर रही न रेस, धिन धिन कहे गुरू तांई।
अब मेरे आनन्द, भरम राख्या नहीं मांही॥ सुखराम कह सुण तांतिया,
तज्या सकल जग भेष। छाड़ त्रिकुटी ध्यान कूं, गया समाधि देश ॥ ४३ ॥

त्रिकुटी का ध्यान छोडकर अब ब्रह्मण्ड से ऊपर पहुंच गये है जहां समाधि लगती है। अब पारब्रह्म का अरस परस हुआ। जब बिल्कुल भी अन्तर नहीं रहा। अब कहने लगे गुरूदेव आपको धिन धिन है। अब मेरे आनन्द ही आनन्द है। भरम बिल्कुल नहीं रहा। म:फ: है कि हे तांतिया सुणो रामजी जगत का व्यौहार छोडकर ध्यान में लग गये।

अब सबको चिन्ता पडी, ओ कुण करसी राज। रामचन्द्र तो आप,
कर बैठा जुग काज॥ कर बैठा जुग काज, लोक सब चालर आया।
कह ऋषिजी कूं आंण, कहा तुम भेव बताया॥ सुखराम देव ऋख कूं कह,
बिगड गयो सुर काज। अब कहो शरणे कोण के, कहां हम जावां भाज ॥ ४४॥

अब सबको इस बात की चिन्ता हुई कि यह राक्षस मारने का काम व राज कौन करेगा। रामजी तो संसार में अपना कार्य कर बैठे है। सब लोको से चल कर वहां आये है। जहां रामजी ध्यान लगाकर गुरू वशिष्ठ के समीप बैठे थे। सबने आकर गुरूजी से यह कहा कि आपने रामजी को क्या भेद बताया। म:फ: है कि देवता गुरूजी से कह रहे है कि देवताओं का सब काम बिगड गया है। अब कहिये हम लोग भागकर किसकी शरण में जावें।

वास्टमुनि चिन्ता करी, अब कहा कियो जाय। ब्रह्मा विष्णु महेश को,

कारज अडियो आय॥ कारज अडियो आय, तबे रिख दया विचारी।
रामचन्द्र तज ध्यान बात एक मान हमारी॥ सुखराम तांतिया रामजी,
यूं थिर हुवां मांय। वाष्ट मुनि चिन्ता करी, अब कहा किया जाय ॥ ४५ ॥

वशिष्ठ मुनि चिन्ता करने लगे ब्रह्मा, विष्णु व महादेव का काम आकर अड गया है। क्या करना चाहिये, तब ऋषिजी को दया आ गयी, तब रामचन्द्रजी से कहा कि ध्यान छोडो और एक मेरी बात मानो। म:फ: है कि तांतिया इस तरह रामजी अन्दर ही अपने स्वरूप में स्थिर हो गये जब वशिष्ठजी को चिन्ता हुई कि क्या करना चाहिये।

कह रहे वचन विचार रिख, राम समाधि खोल। वास्ट मुनि रिख कह रहया,
अेक वचन सुण बोल। अेक वचन सुण बोल, देव सब ऊभा भाई।
ईन्द्र सो करे पुकार, सुरां की गत न कांई। सुखराम कह सुण तांतिया,
राम न बोले बोल। कह रहे वचन विचार रिख, राम समाधि खोल ॥ ४६ ॥

गुरूदेव वचन पर विचार कर रामजी से कह रहे है कि रामजी समाधि को खोलो। वशिष्ठ मुनि कह रहे है कि मेरा एक वचन सुणो और बोलो। सब देवता यहां खडे हुवे है। देवताओं की क्या गति है। इन्द्र भी पुकार रहे है। म:फ: है कि हे तांतिया रामजी नहीं बोल रहे है। ऋषिजी विचार कर वचन कह रहे है कि रामजी समाधि खोलो।

राम समाधि खोल के, कयो गुरू सूं आय। पारब्रह्म का चरण तज,
असुर न मारूं जाय। असुर न मारूं जाय, अरज मानो गुरूदेवा।
ओ मोसर ओ डाव, फेर कब पांवू भेवा॥ मेरा कारज बिगडे,
किसकी करूं सहाय। राम समाधि खोल के, कयो गुरू सूं आय ॥ ४७ ॥

रामजी ने समाधि खोलकर गुरूजी से आकर कहा कि पारब्रह्म के चर्णारविन्दों को छोडकर असुर मारने के लिये नहीं जावूंगा। हे गुरूदेव आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करो। यह समय यह मौका मुझे कब मिलेगा। मेरा कार्य बिगडता है। मैं किसकी सहायता करूं। रामजी ने समाधि खोलकर गुरूजी से कहा।

दया न कीजे झूंठ की, जिण संग बंधे पाप। मेरे कारज सत कहूं,
काय बिगाडो आप।। काय बिगाड़ो आप, देव दाणूं सब अेकी।
इनका एक ही बुहार, ध्यान कर लीजे देखी॥ सुखराम राम सुण तांतिया,
कही गुरां से आय। दया न कीजे झूंठ की, जिण संग बंधे पाप ॥ ४८ ॥

रामजी कह रहे है कि हे गुरूदेव आप झूंठ पर दया मत कीजिये जिससे पाप पल्ले बंधता है। मैं सच कहता हूं कि आप मेरा काम क्यों बिगाड रहे है। देवता व राक्षस सब एक ही है। आप ध्यान से देख लीजिये इनका एक जैसा ही व्यौहार है। म:फ: है कि तांतिया रामजी ने गुरूदेव से आकर कहा कि झूंठ पर दया मत करिये जिससे पाप लगता है।

कवित्त:- तीन लोक की रीत सदा, ऐसी विध होई। क्षण जीते क्षण हार,
सुख दुख मिटे न दोई॥ कहो किसे मारूं जाय, कहां कारज है यारां।
च्यार दिनां की बात ऊरे ये मरसी सारा॥ सुखराम राम सुण तांतिया,
कहीं गुरां से आय। या झूंठी बातां कारणे, मत बोवो धै मांय ॥ ४९ ॥

तीन लोक में सदा ऐसी विधि है कि क्षण भर में जीत व क्षण भर में हार होती है। सुख दुख

दोनूं नहीं मिटता है, कहो किसको जाकर मारूं, इनके क्या काम है। चार दिनों के बाद में यह तो सब ही मरने वाले है म:फ: है कि हे तांतिया रामजी ने यह बात गुरू वशिष्ठजी को कही कि आप इन झूंठी बातों के लिये मुझे धैह में याने जन्म मरण में क्यों डाल रहे हो।

कुण्डलिया:- वास्ट मुनि हट चट पड़े, रावण मारो जाय। पीछे हम नहीं छेडस्यां,
दिज्यो ध्यान लगाय॥ दिज्यो ध्यान लगाय, काज नहीं बिगड़े तेरा।
ओ परमारथ साज, भाव ऊर है सिख मेरा॥ सुखराम राम ने तांतिया,
यो समझायो जाय, वास्टमुनि हट चट पडे, रावण मारो जाय ॥ ५०॥

वशिष्ठ मुनि ने हठ पकडी कि एक बार रावण को जाकर मारो उसके बाद हम कुछ नहीं कहेंगे। फिर तुम ध्यान लगा लेना तुम्हारा कोई काम नहीं बिगडेगा। हे शिष्य मेरे दिल में यह भाव है कि इस परमारथ को करो। गुरूजी ने रामजी को समझाया कि जाकर रावण को मार दो।

राम कहे गुरूदेव कूं, किसको मारूं जाय। चवदा तीनूं लोक में,
अेक पुरूष रहयो छाय॥ अेक पुरूष रहयो छाय, दूसरो दिशे नांही।
हातां कहो शरीर, कोण विध काटयो जाई॥ सुखराम ब्रह्म जब भासियो,
तब आ कही बजाय। राम कयो गुरूदेव कूं, किसको मारूं जाय॥ ५१॥

रामजी गुरूजी से कह रहे है कि किसको जाकर मारूं। तीन लोक चवदह भवनों में सर्वत्र ब्रह्म छा रहा है। मुझे ब्रह्म के सिवाय कोई नजर नहीं आता। अपने हाथ से अपना शरीर कैसे काटा जा सकता है। म:फ: है कि जब ब्रह्म का आभास हुआ याने त्रिलोकी आत्मा ये अपनी आत्मा के समान दिखाई दी। तब यह बात जोर देकर कही। रामजी कह रहे है कि किसको मारूं।

वास्ट मुनि तब बोलिया, तीन लोक सच एक। पण शुभ अशुभ बोहार है,
सो घट भीतर देख॥ सो घट भीतर देख, घेर मारग पर ल्यावो।
आप आपको काम, और कूं कांई चावो॥ सुखराम गुरां जब या कही,
सब सुर कारज लेय। वास्ट मुनि तब बोलिया, तीन लोक सच एक ॥ ५२॥

वशिष्ठ मुनि कहने लगे कि तीन लोक में वो एक ही ब्रह्म है परन्तु जैसे घट में शुभ व अशुभ व्यवहार होते है ऐसे ही शुभ व्यवहार राम की तरह है व अशुभ व्यवहार रावण की तरह है। इसलिये रावण को हटा कर राम को रखना है। इस तरह अशुभ व्यवहार हटाकर शुभ व्यवहार लाना ही घेर मारग पर लाना है। यह आपका ही काम है। म:फ: है कि हे तांतिया यह बात देवताओं के लिये गुरू वशिष्ठजी ने रामचन्द्रजी को समझाई।

यूं परचायर राम सूं, रावण मरायो जोय। पारब्रह्म कूं छोडकर लियो काल अद्य रोय॥
लियो काल अद्य रोय, राम परबस हुआ भाई। माया बडी बलाय, डाव दे पकडे आई॥
सुखराम कह सुण तांतिया, सन्त समाधि होय। यूं परचायर राम सूं, रावण मरायो जोय॥ ५३॥

इस तरह रामजी को समझाकर रावण को मराया। रामचन्द्रजी पारब्रह्म का ध्यान छोडकर रावण रूपी काल को मारने के लिये तैयार हो गये इसलिये रावण रूपी काल रोया। इस प्रकार इच्छा रूपी माया अवसर देखती है। ईखर समाधि तक पहुंचने पर भी इच्छा तृप्त नहीं होती है तो जन्म मरण में आना पडता है।

॥ इति श्री तांत्या का संवाद सम्पूर्ण॥

卐 सत्तस्वरूप आनन्द पद नेःअँच्छर निजनाम 卐

चौपाईः- भेद सहित ज्ञान घट आवे, प्रेम भाव नेहचो मन पावे।
मोख मिलण की यही ऊपाई, दूजी नहीं शिष्ट में भाई ॥ १ ॥

सतगुरू विधि से भजन करना ही भेद सहित घट में ज्ञान धारण करना है। प्रेम भाव मन से निश्चय करके सतगुरू से भेद लेकर भजन करने से ही मोक्ष प्राप्ति का रास्ता मिलता है दूसरा कोई साधन नहीं है।

ओ तो जीव ब्रह्म सुण होई, यांकू पकड सके नहीं कोई।
सब ही करम जीव ईण साया, सुख के काज जक्त हुवो भाया ॥ २ ॥

यह जीव तो ब्रह्म ही है। इस जीव को कोई नहीं पकड सकता है। सब ही करम इस जीव के आधार से होते है। संसार की रचना भी जीव को सुखो की प्राप्ति के लिये हुई है।

ब्रह्म जहां सुण सुख दुख नांही, लेणा एक न देणा कांई।
तां कारण यो खेल बनायो, पांच भूत कर संग हुय आयो ॥ ३ ॥

आत्मचेतन का जो निरंजन निराकार ब्रह्म का पद है, उसमें न तो सुख व दुख है, न कुछ लेना व देना है। पारब्रह्म ने सुख के लिये ही सृष्टि की रचना की है, यही पांच तत्वों के साथ आना है।

कुण्डलियाः- ज्ञानी सब ही सांभलो, जीव कहो कुण होय। किसा लोक सुं अवियो,
सोज बतावो मोय॥ सोज बतावो मोय, ऊलट कहां लग गया भाई।
बोहर न जन्में आय, कहां लग पुगा जाई॥ सुखराम कहे वा दौड कहो,
कुण बल पूगो कोय। ज्ञानी सब ही सांभलो, जीव कहो कुण होय ॥ ४॥

मःफः है कि सब ज्ञानी सुणो जीव कौन है। यह जीव किस लोक से आया है। यह मुझे सोधकर बतावो, उलट कर किस पद में मिला है जो वापिस नहीं आता। साधन से उस पद की प्राप्ति करता है जो वापिस नहीं आता है वो साधन बतलावो।

जीव ब्रह्म सूं अवियो, जीव ब्रह्म ही होय। तो फिर आसी जायकर,
तामें फेर न कोय॥ तामे फेर न कोय, जीव यो साहिब होई।
तो फिर आसी जाय, रीत आदू कहूं तोही॥ सुखराम आद घर पहुंचिया,
निरभे किस विध होय। जो पेली सुं आवियो, तो अब क्युं नहीं आवे जोय ॥ ५॥

यह जीव ब्रह्म से आया है। जीव ब्रह्म है तो यह जाकर फिर आवेगा इसमें किसी तरह का फरक नहीं है। जो आत्म ब्रह्म का आधार पारब्रह्म का पद है वहां जाने पर भी वापिस आवेगा। आदि से वहां की आने की ही रीति है। मःफः है कि पारब्रह्म के पद में पहुंचकर निरभय किस विधि से होता है जो पहले वहां से आया है तो अब वापिस वहां से क्यों नहीं आवेगा।

ब्रह्म अस्थिर के थिर सदा, सुण ज्ञानी कह मोय। करणे हारो ब्रह्म है,
कन माया कहूं तोय॥ कन माया कहूं तोय, अरथ यो सोज बतावो।
के तज सब ही ज्ञान, शरण मेरी चल आवो॥ सुखराम कह इण भेद बिन,
मोख न पावे कोय। ब्रह्म अस्थिर के थिर सदा, सुण ज्ञानी कहूं तोय ॥ ६॥

हे ज्ञानियों सुणो और मुझसे कहो कि ब्रह्म का पद अस्थिर है या हमेशा थिर है, करने वाला ब्रह्म ही है या करने वाली माया है इसका अरथ तुम मुझे सोध कर बतावो या सब ज्ञान छोडकर

मेरा ज्ञान धारण कर लो। म:फ: है कि इस भेद के बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती ।

ब्रह्म अखण्डित थिर सदा, माया आवे जाय। करणे हारो ब्रह्म ही,
और न दूजो मांय॥ और न दूजो मांय, अरथ सुणज्यो ओ होई।
जे कसर या मांय, फेर कर कहिये मोही॥ ज्ञानी जन सुखदेव कूं,
कही ऊलट कहूं आय। ब्रह्म अखण्डित थिर सदा, माया आवे जाय ॥ ७॥

ब्रह्म हमेशा थिर व अखण्ड है वह आता जाता नहीं है, माया आती जाती है। करने वाला भी ब्रह्म ही है और कोई दूसरा नहीं है। सुणो इसका अरथ है इसमें किसी तरह की कसर है तो आप कहिये। ज्ञानियो ने महाराज को ऐसी बात कही। ब्रह्म तो अखण्ड व थिर है।

करता कहो थिर किम हुवे, ना वो करणे हार। ओ किम लागे अरथ रे,
चौडे कहे पुकार॥ चौडे कहे पुकार, अचल सो ही जग मांही।
ना करता ना केण, नहीं आवे कहूं जाई॥ सुखराम कहे ज्ञानी सुणो,
समझर करो विचार। करता कहो थिर किम हुवे, ना वो करणे हार ॥ ८॥

जो ईश्वर करता है वो थिर कैसे हो सकता है। वो करता पद है तो थिर कैसे हो सकता है। यह अरथ कैसे लग सकता है। चौडे पुकार कर कह रहे है कि वो ही अचल पद है। जो न तो करता है न कहने में आता है। वह न कहीं आता है न कहीं जाता है । म:फ: है कि ज्ञानियो समझ से विचार करो कि करता का जो पद है वो थिर कैसे हो सकता है।

माया सोई करतार है माया आवे जाय। माया जीते हारसी,
माया धापे खाय॥ माया धापे खाय, ब्रह्म तो ने: चल होई।
आणंद लेसी जाय, जीव माया कहूं तोई॥ सुखराम कहे सब सांभलो,
माया करे ऊपाय। माया सोई करतार है, माया आवे जाय ॥ ९॥

माया है वो करतार का ही पद है। माया ही आती जाती है। जीत व हार माया की ही होती है। माया ही धाप कर खाती है। ब्रह्म तो ने:चल है याने थिर है। जीव माया के साथ आनन्द लेता है। म:फ: है कि सब सुणो माया ही सब उपाय करती है व माया ही करता है। माया ही आती जाती है।

ब्रह्म ब्रह्म तुम के रहया, ब्रह्म हुवा क्या होय। ज्ञानी ज्ञान विचार के,
अरथ बताओ मोय॥ अरथ बताओ मोय, ब्रह्म में क्या सुख प्यारा।
कहो आनन्द किस रीत, केम कोई लेह विचारा॥ सुखराम कहे कर न्याव रे,
भिन्न भिन्न कर कहो मोय। ब्रह्म ब्रह्म तुम के रहया, ब्रह्म हुवा क्या होय ॥ १०॥

ब्रह्म ब्रह्म की प्राप्ति के लिये तुम सब ही कह रहे हो सो ब्रह्म होने से क्या होता है। हे ज्ञानियों ज्ञान से विचार करके मुझे अरथ बताओ कि ब्रह्म पद में क्या सुख है। ब्रह्म के पद में आनन्द कैसे लिया जाता है विचार करो। म:फ: है कि भिन्न भिन्न याने अलग अलग करके इसका निर्णय करो।

ब्रह्म हुवा ज्यां दुख नहीं, ना सुख आणंद माँय। सुण ग्यानी मैं भेद दूं,
चौडे दिष्टांग लाय॥ चौडे दिष्टांग लाय, नार बिन ज्यों नर होई।
बिन बिभे बिन ख्याल, ग्यान से न्यारो कोई॥ सुखराम राजा बिन फौज रे,
ज्युं राजा गढ़ जाय। ईऊं ब्रह्म हुवा ज्यां दुख नहीं, ना सुख आणंद माँय ॥ ११॥

ब्रह्म में न दुख है न आनन्द का सुख है। हे ज्ञानियों सुणो दृष्टांत देकर समझाता हूं। कि जैसे स्त्री के बिना पुरूष है। बिना विवेक के किसका सुख ले सकता है। ज्ञान से कोई आत्मा को ब्रह्म मान लेता है तो उस पद में क्या सुख मिलता है। म:फ: है कि बिना फौज व प्रजा के राजा बन जाता है तो वह किसका सुख लेता है। ऐसे ही ब्रह्म पद में सुख दुख नही है यह होणकाल ब्रह्म है।

नारी बिन नर क्या करे, नर बिन नारी जोय। ईऊं माया बिन ब्रह्म है,
सुण ज्ञानी कहूं तोय॥ सुण ज्ञानी कहूं तोय, अकल बिन काम कहावे।
बिन आवध रजपूत, राड़ बिन रण में जावे॥ सुखराम कहे यूं ब्रह्म होय,
क्या करसी कहूं तोय। नारी बिन नर क्या करे, नर बिन नारी जोय ॥ १२॥

बिना स्त्री के पुरूष व बिना पुरूष के स्त्री क्या कर सकती है। हे ज्ञानियों सुणो ऐसे ही माया के बिना ब्रह्म है जैसे बिना अकल के कोई काम नहीं होता है। बिना हथियार बिना लडाई के राजपूत रण में जाता है तो किससे लड़ता है। म:फ: है कि इस तरह तुम ब्रह्म होकर क्या करोगे जैसे बिना पुरूष के स्त्री व बिना स्त्री के पुरूष क्या कर सकता है। ऐसे ही माया के बिना ब्रह्म किसका सुख लेगा।

बिन ऊधम जो सुख हुवे, तो नर करे न कोय। कोण भोलो संसार में,
नर नारी सब लोय॥ नर नारी सब लोय, ब्रह्म ईऊं खेल बणायो।
बिन माया सुख नांय, संग रमणे तब आयो॥ सुखराम कहे नर समझ रे,
सब कुछ कियां होय। बिन ऊधम जो सुख हुवे, तो नर करे न कोय ॥ १३॥

बिना मेहनत किये सुख मिल जावे तो कोई मेहनत नहीं करेगा। संसार में ऐसा कौन स्त्री पुरूष व संसारी भोला है कि बिना स्वार्थ के श्रम करे। संसार में ब्रह्म ने ऐसा खेल बनाया है। माया के बिना संसार में सुख नहीं मिलता तब माया के साथ संसार में खेल करने के लिये आया। म:फ: है कि मनुष्य मात्र समझो सब कुछ करने से होता है। बिना मेहनत के सुख मिले तो कोई मनुष्य मेहनत नहीं करेगा।

एक माया आनन्द है, दूजो ब्रह्म विचार। तीजो पद आनन्द है,
सत्त सरूपी सार॥ सत्त सरूपी सार, देर दिष्टांग बतावुं।
या तीनों को न्याव, परख न्यारो कर लावुं॥ सत आनन्द वैराग ज्यूं
माया सुख ग्रह होय। सुखराम दूर इण दोय से, ईऊं ब्रह्म ऐसो जोय ॥ १४॥

एक माया का आनन्द है। दूसरा ब्रह्म का विचार है। तीसरा आ:पद है। आ:पद सतसरूपी है। मैं तुमको दृष्टांत देकर इन तीनों का न्याव व परीक्षा अलग करके समझाता हूं। सतआनन्द बैराग की तरह है। माया का सुख गृहस्थ की तरह है। इनसे अलग ब्रह्म पद है उसमें सुख दुख नहीं है।

एक माया रूपी पद है, दूजो चेतन जांण। तीजो पद सो ब्रह्म है,
सुणो सकल नर आंण॥ सुणो सकल नर आंण, पद चौथो ओ होई।
सतस्वरूप सत मांय, निसंक निरभै हुवे कोई॥ सुखराम कहे सब सांभलो,
ज्ञानी ध्यानी आंण। एक माया रूपी पद है, दूजो चेतन जांण ॥ १५॥

एक माया का पद है चर्म चक्षुओं द्वारा नजर आता है वो सब माया है। दूसरा पद चेतन का है वो जो माया में है जीव का पद है। तीसरा जो माया का व जीव का आधार है उसको ब्रह्म पद

कहते है। सभी सुणो चौथा पद वो है जिसे केःपद आःपद कहते है। उसको सतगुरू सतस्वरूप कहते है वही निसंक निरभय पद कहलाता है। मःफः है कि सब ग्यानी ध्यानी सुणो।

ज्ञान सुख आनन्द सो, ज्यां भ्यास्यो जहां ही होय। माया सुख बिन झूंझियां,
कदे न पावे जोय॥ कदे न पावे जोय, पाय फिर दुखिया होई।
ईऊं करणी कर जीव, पार पहुंचे नहीं कोई ॥ सुखराम इन्द्रियां सुख रे,
पचियाँ पावे लोय। ज्ञान सुख आनन्द सो, ज्यां भ्यास्यो ज्यां ही होय ॥ १६ ॥

केःपद आःपद का सुख याने आनन्द जिनको अनुभव होता है उनको ही प्राप्त होता है। माया का सुख बिना मेहनत के नहीं मिलता, वह सुख प्राप्त कर फिर दुखी होना पडता है। इसी तरह जीव कई तरह की करणियां करके भी परम पद की प्राप्ति नहीं कर सकता। मःफः है कि इन्द्रियों का सुख तो मेहनत करने से मिलता है।

बे इन्द्रियां को सुख रे, हठ बिन लियो न जाय। तीनों को सुख सहज में,
लेत सरब हंस आय॥ लेत सरब हंस आय, पाय फिर दुखिया होई।
अर भ्यास्यां सुण ज्ञान, तांय में दुख न कोई॥ ओ दिष्टांग सुखराम कह,
सब नर सुणज्यो आय। बे इन्द्रियां को सुख रे, हठ बिन लियो न जाय ॥ १७॥

जीभ व स्पर्श इन दोनों इन्द्रियों का सुख बिना हठ व मेहनत के बिना नहीं मिलता है। आंख नाक व कान इन तीनों इन्द्रियों का सुख सहज में ही सब हंसों को मिल जाता है। इस सुख को पाकर फिर दुखी होते है। सुणो जहां ज्ञान पद का याने केःपद आःपद के ज्ञान में जो अनुभव होता है। उसमें आनन्द ही आनन्द है दुख नहीं है। मःफः है कि इस दृष्टांत को सब मनुष्य आकर सुणो। दो इन्द्रियों का सुख बिना हठ व मेहनत के नहीं मिलता।

दल बहुत भेला किया, मुलक दाबियो जाय। क्या पाई वा चीज रे,
ईधकी जग के मांय॥ ईधकी जग के मांय, रेत वा ही सुण होई।
क्या ईधकी क्या कम, रेत न्यारी नहीं कोई। ईऊं करणी सुखराम कह,
सब ही एक कहाय। दल बादल भेला किया, मुलक दाबियो जाय ॥ १८॥

बहुत फौजे इकट्ठी करके किसी दूसरे के मुल्क को कब्जे में कर लिया तो संसार में उसने क्या चीज पाई। प्रजा तो वही है क्या ज्यादा क्या कम। मःफः है कि इस तरह सब करणियां एक कहलाती है। करणियों के द्वारा स्वर्ग बैकुण्ठ शक्ति ब्रह्म और पारब्रह्म के लोको की प्राप्ति होती है उनमें एक से एक का सुख ज्यादा से ज्यादा है वो सुख स्थायी नहीं रहता। इसी तरह दल बादल इकट्ठा करके मुल्क दबाया जाता है।

अमरजडी बिन बाहेरी, सब ही जड़ियां एक। जासूं जावे रोग रे,
अमर न हुवे देख ॥ अमर न हुवे देख, सकल करणी ईऊं भाई।
ब्रह्म लग सो जाय, मोख पहुंचे नहीं कोई॥ ध्यान भजन सुखराम कह,
लिव लग काची देख। अमरजड़ी बिन बाहेरी सब ही जड़ियां एक ॥ १९॥

अमरजड़ी के बिना दूसरी सब ही जड़ियां एक है उन जड़ियों से रोग जाता है परन्तु अमर नहीं होते है। इसी तरह सब करणियें करके ब्रह्म तक पहुंच जाते है। मोक्ष में कोई नहीं जाता है। मःफः है कि ध्यान करो भजन करो जब तक लिव (याने सत्ता समाधि जो रात दिन अखण्ड खाते पीते

उठते बैठते बिना किये अनुभव होती है) के बिना सब करणियों कच्ची है। लिव अमरजड़ी की तरह है। दूसरी जड़ियां रोग गमाने वाली जड़ी की तरह है।

सरब किसब न्यारा करे, अन्न सकल ले आंण। ईऊं करणी सिवरण ध्यान लग, पूरण ब्रह्म पिछाण॥ पूरण ब्रह्म पिछाण, अन्न सूं खुद्या जावे।
सुण फिर लागे भूख, ब्रह्म होय ईऊं गरभ आवे॥ सुखराम ऊपांया भजन लग,
सब एकी कर जांण। सरब किसब न्यारा करे, अन्न सकल ले आण ॥ २० ॥

सब किसब याने करम अलग अलग करके सब ही अन्न लाते है। इसी तरह करणियो सिवरण ध्यान से पूरण ब्रह्म याने पारब्रह्म तक प्राप्ति हो सकती है। और पीछे गरभ में आना पडता है। जैसे अन्न से भूख चली जाती है और पीछे भूख लग जाती है। म:फ: है कि भजन करने तक सब ही ऊपाय एक तरह के है।

परमहंस नर होय कर, सिंवरे सिरजणहार। सो गृहस्थी सो बार रे,
संता करो विचार ॥ संता करो विचार, करम तो करता मांही।
निराकार निरबाण, सरब ओपत जांही॥ सुखराम सबे पैदा किया,
वो पक्को घर बार। परमहंस नर होय कर, सिंवरे सिरजण हार ॥ २१ ॥

परमहंस मनुष्य होकर यदि सिरजण हार याने सृष्टि करता याने होणकाल ब्रह्म का सिवरण करता है जो सिवरण वाणी मन विचार व स्वांसा के आधार से होता है वो सिरजणहार का सिवरण है। वह गृहस्थी है एक बार नहीं सौ बार गृहस्थी है। संतो इसका विचार करो। करणियां करम तो सब करता पद में है। निराकार निरबाण सरब ओपत जांही याने बाणी से निरंजन निराकार व निरबाण पद की महिमा करते है। बाणी महिमा करने वालों को उस पद की प्राप्ति नहीं होती इसलिये उत्पति में वापस आ जाते है। म:फ: है कि जिसने पैदा किया वो पक्का घरबारी है।

सब माया सूं लग रहया, साध सिद्ध अवतार। अलख निरंजण आप हो,
वहां लग माया धार।। वहां लग माया धार, अटल एक पुरूष कहावे।
वा माया है असल, चाल वहां सूं हंस आवे॥ सुखराम हद बेहद लग,
बहे माया की धार। सब माया सूं लग रहया, साध सिद्ध अवतार॥ २२ ॥

आत्म चेतन से जितने भी साधन वाणी इन्द्रियां मन और श्वांसा के आधार पर होते है। वो सब माया का पद है। आत्म चेतन का आधार अलख निरंजन याने पारब्रह्म का पद है। वहां से भी वापस आ जाता है। अटल एक पुरूष याने सतमाया के साथ जो पारब्रह्म का पद है वो अटल पुरूष है। उस पद से ही सतशब्द आकर आत्म चेतन के आधार पर प्रगट होता है। म:फ: है कि हद याने तीन लोक बेहद ब्रह्म तक माया का पद है। सब साध सिद्ध व अवतार माया के पद तक की भक्ति करते है।

सतस्वरूप तो ब्रह्म नहीं, नहीं साहेब नहीं जीव। ना कोई पुरूष नार है,
ना कुछ यार न पीव॥ ना कुछ यार न पीव, सुणो ज्ञानी जग सारा।
सतस्वरूप ज्युं चीज, इसो पद अमर विचारा॥ सुखराम कहे आनन्द है,
नहीं धीणो नहीं धीव। सतस्वरूप तो ब्रह्म नहीं, नहीं साहेब नहीं जीव ॥ २३ ।।

सतस्वरूप का पद तो न ब्रह्म है, न साहेब, न जीव, न पुरूष, न स्त्री, न दोस्त, न पति है। ज्ञानी

संसारी सब सुणो सतस्वरूप का पद तो सत व अमर है। म:फ: है कि उस पद में तो आनन्द ही आनन्द है। न तो धीणा है और न वहां बेटे बेटी है।

ब्रह्म ज्ञान मत धार के, कहा ईधक कोई होय। ओ तो है ज्यों बण रहयो,
जांण मां जाणो कोय॥ जांण मां जाणो कोय, ईधक ओछो नहीं होई।
जैसे रवि प्रकाश, मंड सारी पर लोई॥ बस्त बणी ज्यां बण रही,
जाण्या सुं क्या होय। ब्रह्म ज्ञान सुखराम के, धार ईधक नहीं कोय ॥ २४॥

ब्रह्म ज्ञान को धारण करके क्या कोई ईधक याने ऊंचा हो सकता है। यह ब्रह्म तो है ही चाहे जाणो या मत जाणो। यह जानने से कम ज्यादा नहीं होता है। जैसे सूर्य का प्रकाश सारे संसार में एक सरिका होता है। वस्तु तो जैसे बण रही है वैसे बण ही रही है उसको जानने से क्या होता है। म:फ: है कि इस तरह कोई ब्रह्म ज्ञान धारण करके बड़ा नहीं बन सकता है।

को करणी की बात, ताय लेणे देह धारी। शुभ अशुभ सो खोल,
छांट के कहो विचारी॥ छांट के कहो विचारी, काय लेणे ओ आयो।
ओ तो आपे आप, काय यो जीव कहायो॥ ओ ते ज्ञान विचार के,
बात मानो सुण म्हारी। को करणी की बात, ताय लेणे देह धारी ॥ २५॥

आत्म चेतन तो ब्रह्म ही है क्या लेने के लिये इसने शरीर धारण किया है। इस शुभ अशुभ का निरणा करके अलग अलग विचार कर कहो। यह क्या लेने के लिये आया है। यह तो आपो आप ब्रह्म था। किस लिये यह जीव कहलाया। इस ज्ञान का तुम विचार करो। मेरी बात को सुनकर मानो। म:फ: है कि किस करणी के लिये शरीर धारण किया है।

ब्रह्म ज्ञान बिन ऊपजे, ऊंच नीच संग जाय। सो नर सब पिस्तावसी,
अन्तकाल के मांय॥ अन्तकाल के मांय, मार पडसी सिर भारी।
या तीनां की मरजाद, भांग के करे खुंवारी॥ पाप धरम की वासना,
रेती है ऊर मांय। जब लग झूंठो कथत है, ब्रह्म ज्ञान कूं आय ॥ २६॥

ब्रह्म ज्ञान के बिना भी, जो ऊंचा है और नीच गुरू का संग करता है तो उसे अंत समय में पछताना पडेगा और सिर पर भारी मार पडेंगी। ब्रह्मा विष्णु महेश इन तीनो की मर्यादा नष्ट कर अपनी खराबी कर रहे है। जब तक हृदय में पाप धर्म की वासना रहती है। जब तक ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है। वो झूंठ कहते है कि हमको ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति हो गई है।

<u>कवित्त</u>:- ब्रह्म ज्ञान तब सांच, विष अमृत सम जाँणे। बेटी माता बहिन,
नार सागे कर माने॥ लेवे सबे स्वाद, धणियां पे नांही।
शुभ अशुभ की चाय, आस मासो कछु नाहीं॥ जीवण मरण एको गिणे,
जस कुजस नहीं कोय। ब्रह्म ज्ञान सुखराम कह, वांके ऊर घट होय ॥ २७॥

ब्रह्म ज्ञान जब सच्चा समझा जाता है। जब जहर व अमृत को बराबर जानता है। बेटी, माता, बहन व स्त्री को रिश्ते की मर्यादा अनुसार मानता है। सब स्वाद लेता है परन्तु अपना स्वामित्व नहीं समझता है। अच्छे व बुरे की चाहना बिल्कुल नहीं रहती है। जीने और मरने को बराबर समझता है। जिसके मान व अपमान बराबर है। म:फ: है कि ब्रह्म ज्ञान उसके घट में प्रगट होता है।

करे जात में ब्याह, बेन बेटी परणावे। डसे सरप तन आय,

सोच चित मांही लावे।। तब लग झूंठी कथत है, मुख सुं ब्रह्म ज्ञान।
आप जात में फंस रहयो, दे औरां कूं ज्ञान ॥ २८ ॥

बहन व बेटी की शादी ब्याह जाति में करता है। शरीर में सरप डस जाता है तो मन में सोच करता है मर जावेंगे। जब तक मुंह से झूंठी ही ब्रह्म ज्ञान की बातें करता है। खुद तो जात में फंस रहा है और औरों को ब्रह्म ज्ञान का उपदेश करता है।

कुण्डलिया:- बालक ब्रह्म स्वरूप है, भर जोबन में जीव। जब विज्ञान प्रकाशियो,
तब समरथ कहे सीव॥ तब समरथ कहे सीव, दशा तीनूं इण पाई।
किसी ईधक या मांय, सोज कहिये मुज भाई॥ सुखराम कहे पद तीन ये,
लेणे हारो जीव। बालक ब्रह्म स्वरूप है, भर जोबन में जीव ॥ २९ ॥

बालक ब्रह्म के समान है व जवानी में करम बन्धन करता है वो जीव है। जब ज्ञान का प्रकाश होता है तब वो शीव ब्रह्म होता है। जीव, जीव ब्रह्म, शीव ब्रह्म यह तीन पद है। यह तीनों दशा आत्म चेतन में है। तीनों पद आत्म ब्रह्म के पद में है। इन तीनों में कौनसी ईधक है सोध कर बतावो। म:फ: है कि इन तीन पदों को लेने वाला जीव है। बालपने में ब्रह्म व जवानी में जीव है।

गुरूपद न्यारो सत है, ज्यूं अमर फल होय। और राम लग भक्ति सो,
अन्न जल जडियां जोय॥ अन्न जल जडियां जोय, सर्व सुख जहां जावे।
यूं करणी रट राम, मुक्त लग जन फल खावे॥ सुखराम ऊपाया एक सो,
नाना विध की जोय। गुरू पद न्यारो सत है, ज्यूं अमर फल होय ॥ ३० ॥

गुरू पद अलग व सत है जैसे अमर फल होता है वैसे ही वो पद अमर है। गुरूपद के अलावा दूसरे सब पदों की प्राप्ति की भक्ति अन्न जल रोग गमाने वाली जड़ियों के समान है। यूं करणियें करने वालों को सब सुख मिलता है। जैसी जैसी करणी करते है। म:फ: है कि नाना विधि की करणियों से फलों की प्राप्ति होती है। गुरूपद अलग व सत्त है जैसे अमरफल होता है।

काम सरब इण जग का, कहयां करे सब आय। पण चीजां की परीक्षा,
किस विध किवी जाय॥ किस विध किवी जाय, ज्ञान इण आ सेजाही।
लाख कहो कोई आंण, समझ तो घट के मांही॥ सुखराम नाम सत दुरलभ है, सिमरण
सहज ऊपाय। पण भेदा भेद में भेद रे, किम दरशावे लाय ॥ ३१ ॥

संसार के सारे काम सब ही कहने से करते है परन्तु चीजों की परीक्षा किस तरह की जाती है। ज्ञान भी इसी तरह जाना जाता है। लाख तरह से आकर कोई कहो समझ तो घट में होती है, वही काम आती है, म:फ: है कि निज नाम सत है। वह प्राप्त होना दुरलभ है। सिमरण करना सहज उपाय है परन्तु सुमरण करने में भेद है। उस भेद के मिलने पर सतशब्द प्रकट होता है। भजन करने की विधि में भेद है उसकी कैसे जानकारी कराई जा सकती है।

रागी पागी पारखु, नाड़ी वेद अरू न्याव। इण विध ज्ञान प्रकाश रे,
किस विध सिख्यो जाय॥ किस विध सिख्यो जाय, ज्ञान पद कहत न आवे।
कथणी सबे उपाय, ब्रह्म माया कूं गावे॥ सुखराम समझ यूं ज्ञान की,
उपजे नर ऊर मांय। रागी पागी पारखु, नाड़ी वेद अरू न्याव ॥ ३२ ॥

राग बन्द राग गाने वाला, पागी याने पगों के खोज की परीक्षा करने वाला, नाडी वैद्य व न्याय

करने वाला, इस विधि से ज्ञान का प्रकाश होता है। वह किस प्रकार किस विधि से सीखा जाता है। ये सब बातें है। वो भी सब की एक सी नहीं होती। सतशब्द के ज्ञान का प्रकाश घट में होता है वो कहने में नहीं आता। वाणी से कहने में आता है। वो सब ब्रह्म और माया की प्राप्ति का ऊपाय है। म:फ: है कि इस प्रकार के ज्ञान को समझने की बुद्धि घट में उपजे तब ही मनुष्य उस पद की प्राप्ति का ज्ञान धारण करते है।

करम बड़ा बलवान है, कन बलवन्त है करतार। होणहार कन जबर है,
संता करो विचार॥ सन्ता करो विचार, राम तो घट घट होई।
जेती करी ऊपाय, ब्रह्म लग और न कोई॥ सुखराम धणी तो को नहीं,
को कुण करणे हार। करम राम होणहार है, तीनूं अड़िया विचार ॥ ३३॥

करम बडे बलवान है या करतार बडे बलवान है। होणहार या भावी जबरदस्त है। इसका सन्तों विचार करो। रामजी तो घट घट में विराज रहे है। जितने भी उपाय किये है वह सब ब्रह्म तक की प्राप्ति के है और कोई नहीं है। म:फ: है कि जो राम सर्वत्र व्यापक है उसके कौण धणी है। उसी के आधार से सब कुछ होता है और कोई करने वाला नहीं है। करम राम व होणहार तीनूं का विचार है।

करम राम तो एक है, देखो ज्ञान विचार । बिन चेतन करतार रे,
कहो कुण करणे हार॥ कहो कुण करणे हार, ब्रह्म माया सब एकी।
आद अन्त अरू मध्य, कबु न्यारी नहीं देखी॥ सुखराम समो होणहार रे,
पुलांज न्यारी होय। ये करता बस को नहीं, सुण ज्ञानी कहूं तोय ॥ ३४॥

ग्यान से विचार करके देखो करम राम तो एक ही है आत्मचेतन करतार के बिना कौन करने वाला है। ब्रह्म व माया दोनों साथ है। आदि से लेकर अन्त तक व मध्य में माया व ब्रह्म को कभी अलग नहीं देखा है। म:फ: है कि समय होणहार है पुलां अलग होती है। ये करता के बस में नहीं है। हे ज्ञानियों सुणो यह मैं तुम्हे कहता हूं।

झगड़ झगड़ बहु झगडिया, झगड़ो मिटे न कोय। ईऊं करणी सूं हंस का,
करम न दूरा होय॥ करम न दूरा होय, रोष ले गयो मन मांही।
कब पूगे सुण डाव, तां दिन चूके नांही॥ सुखराम ज्ञान बिन सुलझिया,
निरभै कबु न होय । झगड़ झगड़ बहु झगड़िया, झगड़ो मिटे न कोय ॥ ३५॥

झगडा झगडा करने से नहीं मिटता। इसी तरह करणियां करने से कर्मों से छुटकारा नहीं होता। जैसे किसी के मन में रोष रहता है तो जब उसका मौका आ जाता है वो नहीं चूकता। म:फ: है कि सतपद के ज्ञान की प्राप्ति बिना निरभय नहीं हो सकता।

राड्या राड न भागसी, अन्न सूं भूक न जाय। जल सूं तृषा न बुझे,
बोहो जल पियो आय॥ बोहो जल पियो आय, नींद सूं नींद न जावे।
ईऊं करणी सूं करम को, छेह न आवे॥ सुखराम कह वा चीज कहो,
ए फेर न लागे आय। राड्या राड न भागसी, अन्न सूं भूख न जाय ॥ ३६॥

राड से राड नहीं मिटती, अन्न से भुख नहीं जाती, बहोत पानी पीवो जल से प्यास नहीं बुझती, बहुत नींद निकालो नींद नहीं जाती। इस तरह करणियां करने से कर्मों का छेह नहीं आता याने कर्मो

से अलग नहीं हो सकते। म:फ: है कि चीज याने वो ज्ञान बतावो जिसे प्राप्त कर इन कर्मो को नहीं भोगना पडे।

राड़ साँच सूं भागसी, भूक शब्द सूं जाय। सतगुरू ऐसी चीज,
फल अमर देवे लाय॥ फल अमर देवे लाय, जोग तो रोग गमावे।
यूं गुरू पद में समझ, हंस परम मोख सिधावे॥ सुखराम ब्रह्म लग ज्ञान सो,
वे झूंठा जग मांय। राड़ साँच सूं भागसी, भूक शब्द सूं जाय ॥ ३७॥

लडाई सत्य से दूर होगी। जन्म मरण से रहित होने की भूख सतशब्द से जाती है। सतगुरू ऐसी चीज अमरफल लाकर देते है। जोग याने अष्टांग योग की साधना से शरीर के रोग दूर होते है। इसी तरह गुरूपद में समझने से हंस को परम मोक्ष की प्राप्ति होती है। म:फ: है कि ब्रह्म तक की प्राप्ति के सब ज्ञान से जन्म मरण नहीं मिटता है।

शंकराचार्य बोलिया, से बायक कहूं तोय। अंछयाकारी ब्रह्म की,
अे कहिये प्रगट दोय॥ अे कहिये प्रगट दोय, बास हूति के नांही।
बिन केवल अरस परस, कुछ सूजे नांही॥ सुखराम जहां लग पूगिया,
ज्यां हाँ मेहर की जोय। शंकराचार्य बोलिया, से बायक कहूं तोय ॥ ३८॥

शंकराचार्य जी ने वचन कहे वो तुमसे कहता हूं। ब्रह्म व ब्रह्म की इच्छा ये दो प्रगट है बासना है या नहीं, केवलपद की प्राप्ति के बिना ब्रह्म की इच्छा की बात समझ में नहीं आती। म:फ: है कि जिस संत के पास जिस पद तक का ज्ञान होता है उतनी मेहर वो कर सकता है।

न्यारो पद कूं सब कहे, भेद न जाणे कोय। एक मांहे अनेक है,
एक अनेका होय॥ एक अनेका होय, तहां लग न्यारो नांही।
जे ब्रह्म की पैदास, कोण विध न्यारो कुवाही॥ सुखराम ब्रह्म सूं दूसरो,
सो मत न्यारो होय। न्यारो पद कूं सब कहे, भेद न जाणे कोय ॥ ३९॥

न्यारा पद सब कहते है परन्तु भेद को नहीं जानते। एक में अनेक याने सारी सृष्टि को ब्रह्म में मानते है व सारी सृष्टि में व्यापक है यही अनेक में एक होना है। जो ब्रह्म से पैदा हुआ है। तो उसको न्यारा कैसे कह सकते है। म:फ: है कि ब्रह्म के पद से दूसरा पद है वो अलग है।

जल सुं उपजी चीज रे, सो सब एकी होय। युं मुख चढिये सुण नांव में, न्यारो नांव न कोय॥
न्यारो नांव न कोय, समझ को फेर। नटे सो परले जावे, सुखराम नांव न्यारो तको॥
कबहुं न पावे कहूं तोय। जल सूं उपजी चीज रे, सो सब एकी होय ॥ ४०॥

जल से पैदा होने वाली चीजें सब एक ही होती है। इसी तरह जो नांव बाणी पर आता है वो न्यारा नहीं है। यह समझ का फेर है। इसमें जो इन्कार करता है वो परले में याने जन्म मरण में आता है। म:फ: है कि जो नांव न्यारा है उसकी प्राप्ति कभी भी नहीं हो सकती है। बाणी व स्वांसा के आधार के शब्द एक है वो अलग नहीं है।

दोय चीज जोडे खडी, जात पांत विध दोय। सो न्यारी सुण जांणिये, और एक सब होय॥
और एक सब होय, भेद ऐसो कोई पावे। ईऊं न्यारो नांव, सोज कोई मोहे बतावे॥
सुखराम ब्रह्म बिन नांव रे, सो सुण बिजो होय। दोय चीज जोड़े खड़ी, जात पांत विध दोय ॥ ४१॥

दो चीजें साथ है उसकी जाति पांति व विधि दो तरह की है। बाणी के आधार के सब नाम

एक है व बिना वाणी के आत्म चेतन के आधार से प्रगट होकर आत्मा के निरंजन निराकार पद में अखण्ड निराधार अनुभव होता है। वह नाम अलग है वो न्यारा है और सब एक ही है। ऐसा भेद किसी को मिले इस तरह जो नांव अलग है उसको सोधकर मुझे बताओ। म:फ: है कि बिना ब्रह्म के जो नांव है उसको सुणो वह दूसरा है।

राम नाम की टेक रे, सुणो जगत के होय। सामा मिल्या सब कहे,
भेष न कहे कोय॥ भेष न कहे कोय, तको कारण सुण कांई।
ज्ञानी सोज बताय, कौन ईधको या मांही॥ सुखराम पंथ सब भेष का,
न्यारो कर कर जोय। राम नाम की टेक रे, सुणो जगत के होय ॥ ४२॥

राम नाम की टेक सारे संसार के होती है। आमने सामने मिलने पर सब ही राम राम करते है परन्तु जितने भेषधारी है वो अपनी सम्प्रदाय का अलग अलग नाम लेते है, राम राम नहीं लेते है। इसमें कौन अधिक है, इसका क्या कारण है। हे ज्ञानियों यह सोधकर बताओ कि इनमें कौन अधिक है। म:फ: है कि सब ही पंथो के भेषों को अलग अलग देखो।

वाह गुरू नानक कहयो, साहेब कहयो कबीर। जैन धर्म बंदणा करे,
राम की गत कहे बीर॥ राम की गत कहे बीर, कौन ईधको यां मांही।
दत्त, नारद, तत्त चीन और कियो कुछ नांही ॥ सुखराम कहे रघुनाथजी,
किशन कहयो क्या बीर। वाह गुरू नानक कहयो, साहेब कहयो कबीर॥ ४३॥

नानक सम्प्रदाय वाले वाह गुरू वाह गुरू करते है। कबीरजी के सम्प्रदाय वाले सतसाहिब सतसाहिब करते है। इसी प्रकार जैन धर्म वाले वन्दना करते है। कोई कोई भाई राम की भक्ति करते है तो इनमें कौन अधिक है। दतात्रेयजी नारदजी ने ब्रह्म पद की प्राप्ति की और कुछ नहीं किया। म:फ: है कि रामचन्द्रजी व कृष्णजी ने क्या कहा। नानक सम्प्रदाय वाह गुरू व कबीर सम्प्रदाय सतसाहिब करते है।

राम कहे सतियां जले, मोख कहो किसी जाय। और संत प्रहलाद ध्रुव,
मिले कौन पद मांय॥ मिले कौन पद मांय, सोज यो अरथ बतावो।
ररंकार की पोंच, सोज निरणो सब लावो॥ सुखराम वस्तु गुण ना छिपे,
खाया नर ऊर मांय। राम कहे सतिया जले, मोख कहो किसी जाय ॥ ४४॥

सती पति के साथ जलती है वह भी राम राम कहकर जलती है। कहो मोक्ष में कौन जाती है। संत प्रहलाद व ध्रुवजी किस पद में जाकर मिले है सोधकर इसका अर्थ बतावो। ररंकार की पहुंच यानि दौड कहां तक है सोधकर निर्णय बतावो। म:फ: है कि वस्तु के गुण छिपते नहीं है। जो मनुष्य अपने ऊर में खाता है उसी का गुण प्रकट होता है।

राम राम कहे मिलत है, सो प्रगट कहूं तोय। गत मुक्त लग पहुंच है,
आगे पहुंच न कोय॥ आगे पहुंच न कोय, वचन मानो सब आई।
ध्रुव रटियो प्रहलाद, सुरग किऊं बैठा जाई॥ सुखराम सती सतवाड में,
जाय सरब कहूं जोय। राम राम कहे मिलत है, सो प्रगट कहूं तोय ॥ ४५॥

राम राम कहने से जिसकी प्राप्ति होती है वो मैं तुमसे प्रगट कहता हूं। इनकी पहुंच स्वर्ग व बैकुण्ठ तक है उससे आगे पहुंच नहीं है। सब आकर मेरे वचनो को मानो। ध्रुवजी प्रहलादजी ने

राम राम रटा उनको स्वर्ग क्यों मिला। म:फ: है कि सब सतियां सतवाड में जाती है।

सत बोल्यां गत की, संत धर्म यो नांय। जगत बरोबर संत हुवा, वां पकडयो जग मांय॥
वां पकड़यो जग मांय, संत या टेक न धारे। ओ पद है करतार, काल व होय ओई मारे॥
सुखराम ब्रह्म लग ठौड है, आगे कबहूं न जाय। राम नाम सत्त कहे, संत रटे यो नांय ॥ ४६ ॥

सत्त बोलने में स्वर्ग में जाते हे। संतो का यह धर्म नहीं है। संसार वाणी के आधार से नाम लेने को मोक्ष मानती है परन्तु जो संत वाणी के आधार के नांव से मोक्ष मानते है वो संत सब जगत के बराबर है। संसार में बेखरी वाणी से भजन करना यह करता का नांव है। इससे जन्म मरण नहीं मिटता। म:फ: है कि इस नाम से ब्रह्म तक की प्राप्ति होती है आगे नहीं जाते। राम का नाम सत है किन्तु संत ऐसे नहीं रटते हैं।

पडे जगत में भीड, आण राजा की देवे। यूं नर नारी आंण, राम शरण सब लेवे॥
राम शरण सब लेवे, गत मुक्त को न्याव। ब्रह्म सारे सुण होई, ज्यूं राजा बस जहान॥
खेत घर देवे सोई, ज्ञान धरम यो रिष को, राजा को धरम न्याव।
सुखराम मोख गुरू पद मिले, यूं राम ब्रह्म ने ही जाय ॥ ४७॥

संसार में तकलीफ पडने पर राजा की सौगन दिराते है, इसी तरह संसार में सब ही स्त्री पुरूष राम की भक्ति करते है, इससे स्वर्ग व बैकुण्ठ तक की प्राप्ति होती है, ये ब्रह्म के आधीन है जैसे राजा के सब रैयत है उनको राजा खेत व घर दे देते है। ऋषियों का धर्म ज्ञान देना है। राजा का धर्म न्याव करना है। म:फ: कि गुरू पद की प्राप्ति होने पर मोक्ष मिलता है यो राम रटने वाले ब्रह्म तक जाते है, जो माया के साथ पद है।

धन माल बिन काज, भूप की आंण दिरावे। कहो ज्ञान के काज,
कौन राजा पे जावे॥ कौन राजा पे जावे, ज्यों मोख विध का मन हो कांई।
गुरू पद चहिये सत्त, छोड हद बेहद जाई॥ सुखराम है अनाद रे,
अे पद दोनूं होय। एक पद करतार रे, एक गुरूपद जोय ॥ ४८ ॥

धन माल व बिना काम के राजा की सौगन कौन दिराता है। ज्ञान सीखने राजा के पास कौन जाता है, ऐसे ही मोक्ष की प्राप्ति के लिये गुरू पद याने सतशब्द चाहिये, जो हद बेहद को छोडकर गुरू पद याने आ:पद में लय हो जाता है। म:फ: है कि यह दोनों पद पारब्रह्म व आनन्द पद दोनो अनादि है। एक पद करतार याने सृष्टि की उत्पत्ति व करणीया है। जो असत माया के साथ है वो करता का पद है और दूसरा पद गुरूपद है।

भूप रेत न खोसले, भूपी दे घर खेत। भोग सकल जग भरत है,
कोईअन बंछे देख, कोईअन बंछे देख। ब्रह्म ब्रह्म सकल पुकारे।
जे घर छोडे खेत, तके नहीं भूपत सारे॥ भूप रेत न खोसले, भूपी दे घर खेत ॥ ४९ ॥

राजा ही प्रजा को घर खेत देता है और राजा ही घर खेत ले लेता है। सारा संसार राजा को भोग हासल भरता है। कोई नहीं बच सकता है। संसार ब्रह्म की भक्ति करता है। जो खेत व घर छोड देता है वो राज के सहारे नहीं रहता याने जो सतशब्द के साथ सतगुरु विधि से भजन कर के: पद आ: पद प्राप्त करते है उनका माया ब्रह्म से अलग होना ही खेत घर छोडना है।

ज्ञान पद जो पाविया, सो राजा बस नांय । और ऊधम सब भरत है,
डंड राज में जाय॥ डंड राज में जाय, तके है भूपत सारे। ज्ञान पद नहीं पावियो,
जो यांरे बश होय॥ ज्ञान पद जो पाविया, सो राजा बस नांय ॥ ५० ॥

जिसको वैराग्य हो जाता है वो माता पिता व राजा से अलग हो जाता है, यही उनके बश में नहीं रहना है। व्यापार बिणज करने वालों को राज का टेक्स भरना पडता है, वो राजा के वश में है। करणियों का साधन करने वाले माया ब्रह्म के पद से आगे नहीं पहुंचते, उन्हे ज्ञान पद याने सतशब्द की प्राप्ति नहीं हुई है। जिनको सतशब्द की प्राप्ति हो गई है उनको सतशब्द के साथ माया ब्रह्म से अलग होकर के:पद आ:पद की प्राप्ति करना ही गुरू पद को पाना है। वे राजा के बस में नहीं है।

<u>चौपाई</u> :- सत्त शिरे आनन्द पद भाई, सतरूप सतस्वरूप कहाई।
सत्त सकल सिरनायक होई, और सकल पद मिथ्या होई ॥ १ ॥

सत आ:पद सबसे श्रेष्ठ है। जो सतरूप है उसे सतस्वरूप कहते है। सत सबके सिरे और सब पद असत याने मिथ्या है।

सतस्वरूप को भेद न पावे, जब लग हंसा अे पद संभावे।
नहीं नहीं दोष हंस के मांही, सतस्वरूप वो पावे नांही ॥ २ ॥

जहां तक सतस्वरूप के भेद की प्राप्ति नहीं होती वहां तक हंस दूसरे माया के पदों की साधना करते है उसमें हंसो का कोई दोष नहीं है क्योंकि हंसो को सतस्वरूप की प्राप्ति नहीं हुई है।

आतो एक अगम गत होई, कहेण सुणन में आ नहीं कोई।
पाप पुन्न सूं कदे न पावे, धन ज्ञान सूं ही अरथ न आवे ॥ ३ ॥

यह तो अगम गति है। इस अगम गति को कोई नहीं जानता है। यह कहने सुनने में नहीं आती है। पाप से पुण्य से इसकी प्राप्ति नहीं होती है। धन से ज्ञान से भी इसकी प्राप्ति नहीं होती है।

तीरथ बरत देव सब पूजे, जप तप कियां ही सत नहीं सूजे।
जिग किया सूं ही लेस न पावे, साजन कदे कोई नहीं पावे ॥ ४ ॥

तीर्थ करो, व्रत करो, सब देवताओं की पूजा करो, जप करने से, तप करने से, इतने सब करने पर भी सत की प्राप्ति नहीं होती। यज्ञ करने से लेस मात्र भी प्राप्त नहीं होता। कई प्रकार के साधन करो कभी सत की प्राप्ति नहीं होती।

सांख जोग अष्टांग सुण होई, पवन जोग चढावे कोई।
तोई यो भेद न पावे प्यारा, सत कला को कहूं विचारा ॥ ५ ॥

सांख जोग की व अष्टांग योग की साधना से पवन जोग से कोई स्वांसा को ऊपर चढाने से इस भेद को नहीं पा सकता। सत ज्ञान की प्राप्ति का विचार कहता हूं।

गुरूकृपा कर मंत्र देवे, शिष्य सब सीख धार ऊर लेवे।
आ बिद अनन्त जन्म लग होई, सत नाम पावे नहीं कोई ॥ ६ ॥

गुरू कृपा करके शिष्य को मंत्र दे देवे व शिष्य भी सब विधि धारण कर लेवें, ऐसी विधि अनन्त जन्मों तक होती रहे तो भी किसी को सत नाम की प्राप्ति नहीं होती है।

मुख सूं कहे जन नाम बतावे, सो शिष सीख धार घर जावे।
भजो रात दिन रहो लिव लाई, सतस्वरूप ना पावे भाई ॥ ७॥

परमात्मा के जन मुंह से कहकर ईश्वर का कोई भी नाम बतावे और शिष्य उसे सीखकर घर चला जावे। रात दिन उस नाम का भजन कर लिव लगाता रहे तो भी उसे सतस्वरूप की प्राप्ति नहीं होती।

राम राम कोई आंण बतावे, तो पण सतस्वरूप ना पावे।
सत साहब कहे निश दिन कोई, अन्तकाल जासी सब रोई॥ ८॥

यदि कोई आकर राम राम का सिमरण करना बता देवें तो भी सतस्वरूप की प्राप्ति नहीं होती। कोई रात दिन सत साहेब सत साहेब करो। अन्तकाल के समय सबको पछताना पड़ेगा।

परम मोख निरभे पद गावे, सत साहेब कहे कदे न पावे।
कहणी सकल झूंठ है सारी, वाय शब्द सो बके विचारी ॥ ९॥

परम मोक्ष व निरभे पद को गाते है। मुंह से सतसाहेब सतसाहेब कहने से कभी प्राप्त नहीं होता है। मुख से कहणे की बात झूंठ है। वाणी के आधार के शब्दों से उस पद की प्राप्ति नहीं होती।

हीरा कहे मुंगिया कोई, निशदिन केहेण मुख ईयां होई।
कहो वांके घर हीरा आवे, तो सत साहेब कहे वो पद पावे ॥ १०॥

हीरा मूंगा, मोती का नाम रात दिन मुंह से कहता रहे और उसके घर हीरा आ जाता है तो ऐसे ही सतसाहेब सतसाहेब कहने से उस पद की प्राप्ति हो सकती है।

चिंत्रामण कूं बहुत सरावे, चिंत्रामण चिंत्रामण गावे।
यूं चिंत्रामण पावे कोई, तो समरथ कहयां पार तुम होई ॥ ११॥

चिंत्रामणी की बहुत सराहना करता है। चिंत्रामणी को गाता है। इस तरह किसी को चिंत्रामणी की प्राप्ति हो जाती है तो समरथ समरथ कहने से पार हो सकते हो।

कलबरछ कलबरछ कहे नर नारी, तो कहा पावे कहो ऊचारी।
जो कल्पना वांरी सब जावे, तो समरथ साहेब कहे पद पावे ॥ १२॥

सब स्त्री पुरूष मिलकर कल्पवृक्ष उच्चारण करे तो भी उसकी प्राप्ति नहीं होती। यदि कल्पवृक्ष का नाम लेने से उनकी कामना सिद्ध हो जाती है तो समरथ कहने से उस पद की प्राप्ति हो सकती है।

इमरत इमरत कहे नर सोई, इमरत कयां न जीवे कोई।
यूं मुख का नाम जाप सब सारा, मोख न पावे कोई बिचारा ॥ १३॥

कोई मनुष्य मुंह से इमरत इमरत कहता है लेकिन इमरत कहने से कोई नहीं जीता है। इसी तरह मुंह के नाम जप से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है।

अमरजड़ी अमरफल भाई, नित प्रत कहो मुख से आई।
कहो अमर कुण हुवो जग मांही, यूं सतसाहेब कया ही मोख न जाही ॥ १४॥

हे भाईयों हमेशा मुंह से अमरजड़ी व अमरफल को कहते रहो। कहो संसार में कौन अमर हुवा है। ऐसे ही सतसाहेब सतसाहेब कहने से मोक्ष में नही जाता है।

राम कहो तो मोख न पावो, सतसाहेब कहे कदे न जावो।
समझो सकल ज्ञान कर भाई, सतस्वरूप नहीं ऐ मांही ॥ १५ ॥

राम राम कहने से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। सतसाहेब कहने से भी मोक्ष में नहीं जा सकते। सब ही स्त्री पुरूष इस ज्ञान को समझो। सतस्वरूप का पद इनसे प्राप्त नहीं होता।

कहा मांग कर माया लावे, ऊधम किया सूं ही माया पावे।
सत विज्ञान कोण विध लीजे, समझ समझ यो ऊतर कीजे ॥ १६ ॥

मांगने से माया नहीं मिलती, मेहनत करने से ही माया प्राप्त होती है। सहज में सत विज्ञान किसे किस विधि से प्राप्त हो सकता है। समझ समझ कर इसका उत्तर देवो।

ऊधम बिना माया नहीं पावे, सतगुरू भेद परमपद आवे।
बिन सतगुरू सत नहीं पावे कोई, भजो रात दिन मुख से कोई ॥ १७ ॥

मेहनत करे बिना माया की प्राप्ति नहीं होती। सतगुरू से भेद मिलने पर ही परमपद की प्राप्ति हो सकती है। सतगुरू से भेद लिये बिना रात दिन भजन करो। सतपद की प्राप्ति नहीं हो सकती ।

करणी कर माया फल पावे, मुख मंत्र सुं देवत धावे।
सत अण बण पाठ न कोई, मंत्र ज्ञान ना केवत होई ॥ १८ ॥

करणी करके माया के फल पाते है। मुंह से मंत्रो का जाप करने से देवता प्रसन्न होते है। सतशब्द वाणी पर नहीं आता है, न मंत्र से, ज्ञान कहने से व लिखने से उसकी प्राप्ति नहीं होती है।

कह सुखराम हांक दे भाई, मानो वचन हमारा आई।
वाणी मांही राम नहीं कोई, ना साहेब समरथ सुण होई ॥ १९ ॥

मः हेला देकर फः है कि मेरा वचन आकर मानो। राम राम व समरथ साहेब करने से रामजी की प्राप्ति नहीं होती।

ओ तो एक ज्ञान सुण होई, ज्युं जग में रंग राग हुवे सोई।
यूं बांणी वेद विचारा, क्या सुरगुण क्या निरगुण प्यारा ॥ २० ॥

सुणो यह तो एक ऐसा ज्ञान है। जैसे संसार में रंग राग होता है, ऐसे ही वाणी सुनो। वेदों के ज्ञान का विचार करो। क्या सुरगुण की क्या निरगुण की भक्ति करो।

नट बाजीगर ख्याल बणावे, बोहो बिध ख्याल सांग ले आवे।
देख देख सब राजी होई, नफो कुछ नहीं दे धन खोई ॥ २१ ॥

नट बाजीगर खेल करते है। कई तरह से स्वांग ला लाकर कई तरह से खेल बताते है। जिसको देख देख कर सब खुश होते है। उससे देखने वालों को कुछ भी फायदा नहीं होता। गीरह यानि गांठ का धन खोते है याने उनको कुछ देना पडता है।

यूं बाणी ज्ञान बेद सुण भाई, खुशी रहो सुण जग के मांई।
गिरे को गुन्हो बंधे सिर सोई, बाणी सुणे तो मुक्त नहीं होई ॥ २२ ॥

वाणी सुणो, ज्ञान सुणो, वेदों की कथा सुणो, इस तरह सुन सुन कर संसार में प्रसन्न रहो। सुनकर उसके माफिक करनी नही करना गुनाह है। केवल वाणी सुनने से ही मुक्ति नहीं होती है।

क्या सुरगुण क्या निरगुण भाई, क्या भेद सूं ही भेद कहाई।
ओ तो एक ज्ञान सुख होई, नाना विध कर सीखो कोई ॥ २३ ॥

वाणी से चाहे सुरगुण की चाहे निरगुण की उपासना करो। अष्टांग योग, पवन योग, हट योग की साधना करो। यह तो ज्ञान का सुख है। नाना विधि से कोई भी साधन करो।

सब जंतर सब मंतर सारा, ये माया रूपी सरब विचारा।
अे सोहं से पैदा होई, यामें परम मोख नहीं कोई ॥ २४॥

सब तरह के जंतर व सब तरह के मंतर सब माया के है। यह सब सोहं याने स्वांसा के आधार से बोले जाते है। इनसे परम मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है।

सब ही जाप नाम सब बांणी, ओऊंकार कहे सब आंणी।
सो सोहं से पैदा होई, माया मूल आद है सोई ॥ २५॥

सब तरह के जप व नाम व वाणी आत्म चेतन के आधार से स्वांसा से बोली जाती है। इन सबसे माया की प्राप्ति होती है।

करामात करतूत कहावे, सो ओऊं सोहं कर पावे।
ये सब ख्याल माया सुण होई, घड भंजन माया का दोई ॥ २६॥

स्वांसा के आधार से साधन करने पर करामात व करतूत प्राप्त हो जाती है यह सब माया के पद में है। उपजना खपना यह सब माया के पद में है।

इणको ध्यान करे नर कोई, करणी सकल इणी की होई।
मुद्रा कूंची साजन सारा, ध्यान ज्ञान सब करम विचारा ॥ २७॥

आत्मचेतन के आधार से स्वांसा से मुद्रा कूंची साधन ज्ञान ध्यान सब करणियें माया के पद में है।

जैसी करे तैसो फल पावे, चमत्कार बाहिर बण आवे।
जोत ऊजाला देखे भाई, हीरा मूरत या तन मांही ॥ २८॥

जैसी करणी करता है, वैसे ही फल मिलते है। करणियों से बाहर दिखने लगता है। ज्योति का प्रकाश दिखने में आता है। हीरा मूरत या तन मांही यानि इस शरीर में हीरा व मूर्ति दिखने लग जाती है।

साजन करे नर दे दिखलाई, जे माया छाया प्रतिबिम्ब भाई।
आंख मूंदिया दिशण लागे, माया जाल भरम का जागे ॥ २९॥

साधन करने पर मनुष्य को जो कुछ दिखलाई देता है। वो माया का प्रतिबिम्ब है। आंख बंद करने पर भी जो दिखता है वह सब माया का चैन व भरम का जागना है।

ध्यान कियां सूं निजरयां आवे, सो सब माया चैन कुवावे।
रजमातर मूरत कण होई, तब लग ब्रह्म है नहीं कहूं तोई ॥ ३०॥

ध्यान करने पर जो नजर में याने देखने में आता है वह सब माया के चेन है। रज मात्र भी कोई देखने में आता है तब तक का वह ब्रह्म का पद नहीं, माया का पद है।

ब्रह्म कला सोई कहत न आवे, ना मूरत ना जोत कहावे।
ना कुछ आवाज ऊजाला होई, ना रंग रूप केहेण नहीं कोई ॥ ३१॥

ब्रह्म का पद निरंजन निराकार सत्त चेतन है। यह भी कहने में नही आता है। न मूरत, न जोत, न आवाज, न प्रकाश, न रूप , न रंग कुछ भी कहने में नहीं आता है।

पारब्रह्म के रूप नहीं कोई, नकल तोल मोल नहीं होई।
जिण ऊपर सतशब्द विचारा, वो सुण देश ब्रह्म से ही न्यारा ॥ ३२॥

पारब्रह्म के पद में न रूप है, न कला है, न तोल है, न मोल है। पारब्रह्म के पद के आगे सतशब्द का पद है। वह पद पारब्रह्म के पद से अलग है। पारब्रह्म के पद में जो असत् माया का आधार है उसमें सुख दुख नहीं है। सतशब्द के पद में अखण्ड सुख है इसलिये वह पद ब्रह्म के पद से अलग है।

शब्द कहर कोई जुक्त बतावे, नेचो पकड़ सत पर लावे।
जो विश्वास शब्द में बोले, तां ऊपर करणी तोले ॥ ३३॥

कोई महापुरूष मिले और शब्द की जागृति का साधन बतावे और विश्वास करके साधन करे उनके वचनों के माफिक सांस ऊसांस में मन व सूरत लगाकर भजन करे यही करणी तोलना है।

शब्द कहे मैं तारूं सोई, जो विश्वास हमारो होई।
नेचो पकड़ ना डोले भाई, तो परम मोख ले जावुं आई ॥ ३४॥

सतशब्द कह रहा है कि मैं उसी को तारता हूं जो मेरे में विश्वास रखता है। मेरे ऊपर नेछा रखे और इधर उधर भटकता नहीं फिरे तो मैं उसे परम मोक्ष में ले जाऊंगा।

आ सत बात असत नहीं कोई, पण शब्द कयो तां दिन सत होई।
अब यो शब्द मिथ्या होई, कहयो जके नहीं जग में कोई॥ ३५॥

यह बात सत्य है, असत नहीं है कि केवल्य ज्ञान को सुनकर सांस ऊसांस में रटण करने से नेःअंच्छर प्रगट हो जाता है वो दिन सत है। यदि प्रगट नहीं होता है तो मिथ्या है।

देणी चीज कही थी भाई, से बंदा सुण गये सिधाई।
कहो वा चीज कहां सूं लावे, शब्द रति वांके संग जावे ॥ ३६॥

किसी ने कोई चीज दूसरो को देने के लिये कहा लेकिन कहने वाले मौजूद नहीं रहे तो वह चीज कैसे मिल सकती है। ऐसे ही अणभै वाणी के पढने सुनने से सतशब्द प्रगट नहीं होता है तो सत उनके साथ चला जाता है। लेकिन सुखराम जी के ग्यान से तो सता प्रगट हो रही है।

नांव पुरूष का है जग मांही, बातां अरथ तके सब यांही।
लेण देण किया बोहारा, ऊण समय सब सत पियारा ॥ ३७॥

उन महापुरूषो का नांव जगत में है। बातें अरथ आदि सब यही है। लेने देने की क्रिया का व्यौहार तो उनकी मौजुदगी में ही सत्य था।

भाग पुरूष सुण जग में आई, कियो नांव जक्त के मांही।
जिण कूं चीजां देणी कीवी, वाकूं माया बोह बिद दीवी॥ ३८॥

भाग्यशाली पुरूष संसार में आते है वो अपना नाम कर जाते है। जिनको जो चीज देना कहा था। उनको माया बहुत विधि से दीनी।

लारे कोई चलावे चावे, तो द्रव चढावे कहां सूं लावे।
भागरती गई जे संग भाई, बचन सवाल रहे जग के मांही ॥ ३९॥

पीछे से कोई देने की बात चलाना चाहे तो उसको बिना द्रव्य के कैसे चला सकता है क्योंकि भाग्यरती भाग्यशाली के साथ चली गई उनके केवल वचन सवाल ही संसार में रह गये।

यूं बचन सवाल जन का सब सारा, से देह थकां सत सब प्यारा ।
अब वा चीज न पावे कोई, शोभा सुणर खुशी रहो सोई ॥ ४० ॥

इसी तरह महापुरूषों के वचन उनके शरीर के समय सब सत्य थे। अब उनके बिना मौजुदगी में उस चीज को कोई नहीं पा सकता। केवल उनकी शोभा सुनकर प्रसन्न हो जावो।

कह सुखराम बाद नहीं कीजे, गम कर ज्ञान सोज ऊर लीजे।
जिण जन पंथ चलाया जूवा, वे ऐसा कहो पछे के हूवा ॥ ४१ ॥

मःफः है कि वाद विवाद मत करो। ज्ञान कर जानकारी करो। हृदय में धारणा करो। जिन महापुरूषों ने अलग पंथ याने सम्प्रदाय चलाये है उनके पीछे वैसे और कौन हुये है।

कह सुखराम न्याव हम कियो, भरम भांज हंसन कूं दियो।
नेः चल हुवा ही मोख नहीं पावे, रखे विश्वास पार नहीं जावे ॥ ४२ ॥

मःफः है कि मैने न्याव किया है और हंसो के सब भरमों का नाश कर दिया है। कोई नेः चल याने स्थिर हो जाये तो भी मोक्ष नहीं पाता है और भरोसा रखने से भी प्राप्त नहीं कर सकता है।

अनन्त करे कल कीमत लावे, तो ही सतस्वरूप की कला न पावे।
कहे सुखराम सुणो सब ज्ञानी, मान सको तो मानो आनी ॥ ४३ ॥

कोई कितनी ही कलाओं की अनन्त साधना करो फिर भी सत्तस्वरूप की कला की प्राप्ति नहीं होती है मःफः है कि सब ज्ञानी सुणो मेरी बात मान सको तो मानो।

परम मोख ये बात न पावे, कहणी कहण सुणन में आवे।
अे तो सकल की मती रे भाई, माया पकड करो बस कोई ॥ ४४ ॥

परम मोक्ष की प्राप्ति इन बातों से नहीं होती। करणियां कहने सुनने में आती है। इन सब साधको की मती माया की प्राप्ति है।

हुवे प्रगट मुख आगे आवे, जो चावे सोई चैन बतावे।
सतशब्द कूं ले किम कोई, केण शब्द में लेस न होई ॥ ४५ ॥

माया प्रगट होकर सामने आ जाती है व जो चाहे जैसा चेन बताती है। सतशब्द को कोई किस तरह ले सकता है। शब्द कहने में लेश मात्र भी नहीं आता है।

सत साहेब अजरावण होई, अे सिवरण करे नार नर कोई।
सत विश्वास सत पर राखे, मिथ्या वचन भूल नहीं भाखे ॥ ४६ ॥

सतसाहिब अजरावण है याने उसका कभी नाश नहीं होता है। उसका सिमरण नर नारी सभी करते है सच्चा भरोसा सत पर रखते है। मिथ्या वचन भूल कर भी नहीं बोलते है।

तो पण हंस मोख नहीं जावे, उलट जन्म धरे दुख पावे।
ज्यूं सत आया बिन जले न कोई, बातां किया बिगोवो होई ॥ ४७ ॥

इतना होने पर भी हंस को मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है। उलटा जन्म धारण करके सुख दुख भोगता है जैसे सत प्रकट हुवे बिना स्त्री पति के साथ नहीं जल सकती है और सती होने की बातें करने से संसार में निन्दा होती है।

सती होण की बातां कीवी, जब जग पदवी मान सुण लीवी।
पछे जले नहीं जे जाई, हांसी करे सकल जग मांही ॥ ४८ ॥

पहले तो पति के साथ सती होने की तैयारी की बात चौडे प्रकट की तो संसार ने इसे सती की पदवी दे दी। पीछे वो पति के साथ नहीं जलती है तो सारे जगत में उसकी हंसी होती है।

यूं सत आया बिन कहे सत कांई, मैं सती पीव संग होऊं जाई।
तो झूंठी जल्यो न जावे कोई, यूं सतसाहिब कहे मोख न होई ॥ ४९ ॥

सत के प्रगट हुवे बिना वह कैसे कह सकती है कि मैं पति के साथ जाकर सती होऊंगी। तो झूंठ बोलने वाली से जला नहीं जाता है। ऐसे ही सतसाहेब सतसाहेब कहने से मोक्ष नहीं मिलता है।

सतसाहेब जुग सांचा भाई, सत्ता सत्त की प्रगटे आई।
और सकल है कोगतीयारा, ज्युं सती संग हुवे लोक विचारा ॥ ५० ॥

सतसाहिब संसार में जब सच्चा है। जब सत की सत्ता प्रगट हो जाती है और सब ही तो तमाशा देखने वाले है जैसे सती के साथ संसार पीछे लग जाता है।

यूं सतसाहिब सब करो नर नारी, मोख न जावे एक बिचारी।
नर के संग जलिया जाई, जिण में सत्त प्रकटियो आई ॥ ५१ ॥

ऐसे ही सब स्त्री पुरूष सतसाहेब सतसाहेब करो लेकिन एक भी मोक्ष में नहीं जाता है। पति के साथ में वही स्त्री जाकर जलती है जिसमें सत्त प्रकट हुवा है।

और सकल बस्ती संग जावे, उलटा सकल घरे चल आवे।
यूं सत सत कहयां मोख नहीं होई, नांव प्रगटे ज्यां सत होई ॥ ५२ ॥

नगर के सब लोग साथ जाते है पीछे सब घर लौटकर आ जाते है। ऐसे ही सत सत कहने से मोक्ष नहीं होता। निज नाम प्रकट होता है वो सत है। वो प्राप्त होने पर ही सतसाहिब पद पाता है।

कह सुखराम मत भूलो कोई, मुख की केण झूंठ सब होई।
मंतर सिमरण जप सारा, कल मुदरा विश्वास विचारा ॥ ५३ ॥

मःफः है कि मुंह से सिमरण करके कोई मत भूलो। मुंह से कहे मंतर, सिमरण, जप, मुदरा, कूंची, विश्वास सब ऐसे ही है। कला प्रकट होना, मुदरा की साधना करना व विश्वास करने से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती।

कुण्डलियाः- जब गणेश कह गुरूदेवजी, कियो न्याव सत छांण। अब कृपा करके या कहो मोख जाय किम प्राण॥ मोख जाय किम प्राण, विध तुम एक न राखी।
सुणन कहण प्रत ध्यान, जोत मिथ्या कर भाखी॥ जिण जिण बिद हंस पहुंचसी, सोही बिद कहिये आंण। जब गणेश कह गुरूदेवजी, कियो न्याव सत छांण ॥ ५४॥

गणेश नाम के शिष्य ने कहा हे सतगुरू जी आपने न्याव से सत का निरणा कर दिया। अब कृपा करके यह कहिये कि प्राणी मोक्ष में कैसे जाता है। विधि तो आपने एक नहीं रखी। सुनना कहना ध्यान करना व ज्योति से आपने उस पद की प्राप्ति होना नहीं माना है तो उस विधि को बताओ जिससे हंस मोक्ष में पहुंचते है।

धन तो बोहोत शाह घर होई, चाकर हुक्म राजा के सोई।
परचा बोहोत देव सो देवे, मन की जांण सांणी लेवे ॥ ५५ ॥

साहूकार के घर में धन बहुत होता है। सेवा करने वाले, हुक्म मानने वाले राजा के बहुत है।

करामात व परचा देवता बहुत बताते है। सांणी मन की बात जान लेती है।

अब राम मिल्या सूं क्या गुण होई, सो सत चैन बतावो मोही।
इस कूं राम मिल्या जग जांणे, कहो क्या देखर सन्त बखाणे ॥ ५६ ॥

राम की प्राप्ति होने से क्या गुण होता है। उसके सच्चे आसार व चैन मुझे बताईये कि इसको राम की प्राप्ति हो गई है। उसको संसार जान जाय और कहो कि संत उसका बखान क्या देखकर करते है।

वाणी कहे कवेसर भाई, जिण घट कहे सरस्वती बाई।
अगम निगम का अर्थ बतावे, सो चारण भाट सोज सब लावे ॥ ५७ ॥

कवि वाणी कहते है उसके घट में सरस्वती प्रेरणा करती है। वेदों पुराणों का अर्थ बताते है सो चारण भाट भी सब अर्थो की सोधना कर लेते है।

अनहद नाद घुरे सोई माया, ऊलट चढ़े सो आत्म भाया।
प्रतिबिम्ब पांचो रंग होई, ध्यान धरर देखो नर कोई ॥ ५८ ॥

पूरब याने शंखनाल के रास्ते में अनहद व नाद होता है। वो माया के पद में है। उलटकर याने बंकनाल से ऊपर चढता है। वह आत्म चेतन का आधार है। प्रतिबिम्ब जो भी दिखता है वो सब पांच तत्वों का रंग है ध्यान धरकर कोई भी नर देख लो।

नेण मूंद कोई मूरत जोवे, तो प्रतिबिम्ब थूल को होवे।
दासातन गेह नर कोई, तो कंगाल बहुत जग होई ॥ ५९ ॥

आखें बन्द करके मूर्ति के दर्शन करता है तो वह भी स्थूल का ही प्रतिबिम्ब है। कोई शरीर द्वारा दास भाव धारण कर लेवें तो संसार में भी बहुत निर्धन है।

मस्तमान अभिमान न राखे, पांचू भोग परख नहीं चाखे।
तो बेंडा सुणो बहुत जग होई, मुरख तके ना समझे कोई ॥ ६० ॥

अपने मन से मस्त बन जावे, अभिमान किसी तरह का नहीं रखे। पांच रसों को परख याने स्वाद से नहीं खाता है। तो पागल संसार में बहुत है। जो मुरख है वो कुछ नहीं समझते है।

अब कहोजी राम कौन विध भाई, तां मिलिया से परखो आई।
सो तुम चैहन कहो मुझ आई, राम कौन विध जाणो भाई ॥ ६१ ॥

रामजी को आपने किस विधि से जाना उनके मिलने से परीक्षा कैसे होती है। सो तुम मुझको उसके आसार व चैन कहो। रामजी को किस तरह से जाना है सो अब कहिये।

जहां जे पूंछ प्राक्रम होई, सो परसे माया कहूं तोई।
छोटी बड़ी कला सो कुवावे, गेब अचानक प्रगटे आवे ॥ ६२ ॥

जहां कहीं भी जो पूंछ प्राक्रम होता है तो वह सब माया का ही प्राक्रम है। यह मैं तुमको कहता हूं। छोटी बडी जो माया की कला कहलाती है वह सब अचानक ही गेबाऊ प्रगट होती है।

अब तुम चिन्हो राम कौन विध आंणी, सो मत तुमारा कहो बखाणी ॥ ६३ ॥

अब आपने रामजी को किस विधि से पहचाना याने पाया है। वह विचार आप कृपा करके कहो।

॥ इति श्री सतस्वरूप आनन्द पद नेः अँच्छर निज नाम ग्रंथ सम्पूर्ण ॥

卐 सप्त गुरां का अंग 卐

बाप मांय गुरू पेल है, सुणज्यो सब संसार।
रगत बूंद सुखराम कह, बिगसी धात विचार ॥ १ ॥

सारा संसार सुणो माता पिता पहले गुरू है। पानी की बूंद से ही सारे शरीर का उद्‌भव हुवा है।

फिर सुणज्यो गुण ओ करे, दस माह पाले देह।
अन्न जल सूं सुखराम के, बालक लग मुख लेह ॥ २ ॥

फिर माता यह गुण करती है कि बालक को दस माह तक गर्भ में रखती है फिर सुणो बालक मुंह से अन्न जल लेने लगता है, तब तक उसके शरीर का पालन पोषण करते है।

मात पिता गुरू एक ही, तिण में फेर न सार।
मोख मिले सुखराम कह, वह गुरू और विचार ॥ ३ ॥

माता पिता दोनों एक ही गुरू है इसमें फेर सार नही है। म: फ है कि जीव को मोख मिल जावे उस गुरू का विचार करो।

दूजा गुरू सुखराम कह, दाई है जुग मांय। मल मुतर सूं काढ कर, लियो कंठ लगाय ।। ४ ॥

म:फ: है कि दाई मां बालक को मल मुतर से निकाल कर गले लगा लेती है वह दूसरा गुरू है।

दस दिन करे है चाकरी, न्हाय झुलावे आण। दाई गुरू सुखराम कह, ऐता गुण बखाण ॥ ५ ॥

म:फ: है कि दस दिनों तक सेवा कर स्नान कराके झूले में झूला देती है। यह दाई मां के गुण है।

दाई गुरू गुण अे किया, सुणज्यों सब संसार। पार लंघे सुखराम कह, सो गुरू करो विचार ॥ ६ ॥

संसारी सभी सुणो दाई गुरू ने यह गुण किये लेकिन उस गुरू का विचार करो जिससे भवसागर से पार हो जावो।

तीजा गुरू सुखराम कह, विपर कहिये आंण। वे दाता इण वस्त का, नांव कढावे नांण ॥ ७ ॥

म:फ: है कि इस शरीर का नांव व नांवण निकाल देते है वो ब्राह्मण तीसरे गुरू है।

ब्राह्मण गुरू सुखराम कह, इण देही का होय। जामण मरणो होइये, ता गुण पूजे लोय ॥ ८ ॥

म:फ: है कि ब्राह्मण इस शरीर के गुरू है परन्तु संसार में जन्मना मरना हो तब इनकी जरूरत पडती है।

ब्राह्मण गुरू सुखराम कह, सुणज्यो सब नर नार।
देह को पाडयो नांव रे, यो फल दियो विचार ॥ ९ ॥

ब्राह्मण ने शरीर का नांव निकाल दिया है यही गुण किया है। सब ही स्त्री पुरूष सुणो।

मात पिता गुरू बूंद का, दाई गुरू सपडाय। बाह्मण गुरू सुखराम कह, नांव पडायो आय ॥ १० ॥

माता पिता बूंद के गुरू है, दाई स्नान कराने की गुरू है, ब्राह्मण गुरू ने शरीर का नांव निकाल दिया।

अे तीनूं गुरू हद का, बेहद का गुरू नांय। ब्राह्मण सुण सुखराम कह, जती वेद का कुवाय ॥ ११ ॥

यह तीनों गुरू हद में रखने वाले है बेहद के गुरू नहीं है। ब्राह्मण जती वेद यह सब हद के गुरू है।

ब्राह्मण पाड़े नांव रे, जती पढ़ावे आंण। ये गुरू तो सुखराम कह, या चीजां का जांण ॥ १२ ॥

म:फ: है कि ब्राह्मण शरीर का नांव निकाल देते है व जती पढाते है। यह गुरू तो इन चीजों के है।

आयस सामी ढूंढ़िया, बैरागी गुरू जांण। अे बगसे सुखराम कह, सांग पदारथ आंण ॥ १३ ॥

म:फ: है कि आयस, स्वामी, ढूंढिया व बैरागी गुरू अपना भेख दे देते है।

खट दरसण बैराग रे, ऐ देहे का गुरू जांण। अेकू को गुण करत है, सब ही हद का जांण ॥ १४ ॥

जोगी, जंगम, सेवडा, संयासी, दरवेश, ब्राह्मण यह छ:शरीर के गुरू है। यह एक एक गुण करने वाले हद के गुरू है।

खट दरशण गुरू देह का, दिन में करो पचास ।
बिन सतगुरू सुखराम कह, झूंठ मुगत की आस ॥ १५ ॥

खट दरशणी शरीर के गुरू दिन में पचास करो। म:फ: है कि केवली भगवंतो की सतगुरू विधि से सतशब्द की जागृति होना ही सतगुरू शरण बिना मोक्ष की आशा झूंठी है।

जंतर मंतर अकल रे, लख चीजां दे आंण। भेद बिना सुखराम कह, सब देह का गुरू जांण ॥ १६ ॥

जंतर मंतर अकल व लाखो चीज दे सकते है। म:फ: है कि भेद के बिना मुंह से नाव रटाते है वो भी शरीर के ही गुरू है।

देह का गुरू सूं मुगत रे, सुण देही की होय।
आत्म की सुखराम कह, सतगुरू के संग जोय ॥ १७ ॥

शरीर के गुरू शरीर को सुखों की प्राप्ति कराते है। म:फ: है कि आत्मा को परमात्मा की प्राप्ति केवली संतो के अणभै ग्यान के भेद से होती है।

भेद बिना सुखराम कह, सब देह का गुरू होय।
करणी की सुण क्या चली, नांव रटावे कोय ॥ १८ ॥

करणियों के करने वालों को मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। म:फ: है कि भेद के बिना मुंह से नांव रटाते है वो भी शरीर के ही गुरू है।

सतगुरू है इण जीव का, सुणज्यो ज्ञानी लोय। दूजा गुरू सुखराम कह, सब देही का होय ॥ १९ ॥

म:फ: है कि ज्ञानी व संसारी सुणो जीव को मोक्ष की प्राप्ति कराने वाले सतगुरू याने सतग्यान ही है दूसरे सब शरीर के गुरू है।

मोख मिलण की चाह है, सतगुरू किज्यो आय।
दूजा गुरू सुखराम कह, सब ही करम ऊपाय ॥ २० ॥

मोक्ष प्राप्ति की इच्छा हो तो सतगुरू की शरण लो याने सतशब्द की जागृति करो। म:फ: है कि दूसरे सब करणी व कर्म में लगाने वाले है।

॥ इति श्री सप्त गुरा का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 हद गुरु पारख का अंग 卐

हद का गुरू सुखराम कह, सुणज्यो इण अेनांण।
क्रिया करणी धर्म रे, भरम दिढावे आंण ॥ १ ॥

जप, तप, तीरथ, व्रत, जीग यह क्रिया है। बाणी से सुमरण, चित से चिन्तन, मन से ज्ञान, बुद्धि से निश्चय, अहंकार, ज्ञान, अज्ञान का ये सब करणी है। म:फ: है कि हद में रखने वाले गुरू इस तरह के है जो क्रिया करणी करने का, धर्म पुण्य करने का उपदेश करते है। इन साधनों से मोक्ष नहीं मिलता है यही भरम दिढाना है।

नाम बिना महिमा करे, सो हद का गुरू होय।
सुणज्यो सब सुखराम कह, क्या सांगी क्या लोय ॥ २ ॥

नाम याने सतशब्द ने:अंच्छर के बिना दूसरे साधनो की महिमा करते है वे हद में रखने वाले गुरू है। म:फ: है कि सब सुणो वे चाहे भेषधारी हो या गृहस्थी हो।

जप, तप, तीरथ, जीग की, शोभा करे बखाण। हद गुरू सो सुखराम कह, पढ़े पढ़ावे आंण ॥ ३ ॥

जप, तप, तीरथ व जीग करने की शोभा बहुत बढा चढा कर करते है। म:फ: है कि वे हद में रखने वाले गुरू ही है जो पढते व पढाते है।

मंत्र देवे शिष कूं, पांच सुणावे नाम। सो गुरू है सुखराम कह, हद के ऊले गाम ॥ ४ ॥

जो शिष्य को कान में मंत्र देते व पांच नाम सुनाते है। म:फ: है कि वे गुरू तो हद में ही रखने वाले है।

तारग मंत्र देत है, फिर तुलसी को आय। सो गुरू हद का जांणिये, सुखदेव कह बजाय।। ५ ॥

तारग मंत्र याने अपनी अपनी सम्प्रदाय के मुताबिक ज्ञान बताते है फिर तुलसी दास जी ने रामायण में राम को रटने का कहा वो बताते है। म:फ: है कि वे सब हद के गुरू है।

सुरगुण सेवा बन्दगी, ले माला सूं नाम। सुखदेव सो गुरू हद का, सुणज्यो रे सब गाम ॥ ६ ॥

सुरगुण मुर्ति की सेवा बंदगी करते व कराते है। माला के आधार से नाम लेते है। म:फ: है कि सब ही सुनो वे गुरू हद में रखने वाले है।

संख जोग सुण भक्त को, मत मन्तर दे आंण। सो गुरू सब ही हद का, सुखदेव कह बखाण ॥ ७ ॥

सांख जोग का साधन व भक्ति करने का मन्त्र बताते है। म:फ: है कि सब सुनो वह गुरू हद में रखने वाले है।

साजन क्रिया अटकना, नेम बतावे कोय। से गुरू सुखराम कह, सब ही हद का होय ॥ ८ ॥

क्रिया करने का साधना व नियम बताते है। म:फ: है कि वे गुरू हद में रखने वाले है।

कूंची देवे जोग की, दे पवन गढ़ चाढ़। सो गुरू ही सुखराम कह, जद तद हद का जांण ॥ ९ ॥

योग साधना बताकर स्वांसा को गढ पर चढा देते है। म:फ: है कि वे गुरू भी जैसे तैसे भी हद में रखने वाले है।

तीन लोक चारूं दिशा, कर में देत दिखाय। वे ही गुरू है हद का, सुखदेव कह बजाय ॥ १० ॥

म:फ: है कि तीन लोक चारूं दिशा को हथेली में दिखाने वाले गुरू भी हद के ही है।

मन की बातां सब कह, दे चावे सो आंण। परमात्म के भेद बिन, सुखदेव हद गुरू जांण ॥ ११ ॥

मन की सब बातें कह देते है। जो चाहते है वो सब मंगा देते है। म:फ: है कि परमात्मा की

प्राप्ति के भेद बिना उनको भी हद के गुरू जांणो।

सुरगुण निरगुण ज्ञान रे, पढ़ता ओड़ न कोय।
आत्म तत्त के भेद बिन, सुखदेव हद गुरू जोय ॥ १२ ॥

सुरगुण व निरगुण के ज्ञान को पढते व महिमा करते है। म:फ: है कि आत्मा के द्वारा ब्रह्म पद की प्राप्ति नहीं कराने वाले सब ही गुरू हद के है।

हद बेहद की बात रे, सीख सुणावे आंण। सो गुरू तो सुखराम कह, सब ही हद के जांण ॥ १३ ॥

हद बेहद की बातें सीख सीख कर सुनाते है। म:फ: है कि वे सब गुरू हद के है।

एक पलक के मांय रे, तीन लोक फिर जाय।
सुखदेव पद बिन चीनियां, सब गुरू है हद मांय॥ १४ ॥

म:फ: है कि एक पलक में लोकों में फिर जाते है परन्तु परमपद की प्राप्ति बिना सब गुरू हद के है।

धर अम्बर कूं भांज के, फिर नर थापे कोय।
सुखदेव पद का भेद बिन, सब हद का गुरू होय ॥ १५ ॥

धरती व आकाश को मिटाकार वापस बना देते है। म:फ: है कि परमपद की प्राप्ति के भेद बिना सब गुरू हद के है।

आत्म में परमात्मा, या गत लखे न कोय।
तब लग सुण सुखराम कह, सब हद का गुरू होय ॥ १६ ॥

आत्मा में परमात्मा है। जब तक इस ज्ञान को धारण नहीं करते तब तक सुणो सब गुरू हद के ही है।

करामात करतूत रे, बहुत सिद्धाई मांय। जन सुखदेव गढ़ न चढ़या, तो हद गुरू कहाय ॥ १७ ॥

करामात करतूत व अनेक प्रकार की सिद्धाइये जानते है। म:फ: है कि जब तक के:पद आ:पद की प्राप्ति नहीं हुई, हद के गुरू है।

द्वादस कंवल न छेदिया, इण काया में जोय।
जब लग सुण सुखराम कह, सब हद का गुरू होय ॥ १८ ॥

जब तक शरीर में बारह कंवलो का अनुभव नहीं किया तो सुणो सब गुरू हद के है।

पूरब दिशा त्रृगुटी चढ़े, षट कंवला कूं जोय।
वे ही गुरु सुखराम कह, सुण हद ही का होय ।। १९ ।।

पूरब के रास्ते छ: कंवलों को छेदकर त्रृकुटी चढते है तब तक सुणो वह गुरु भी हद के ही है।

बारी द्वादस उपरे, जब लग खोली नांय।
तब लग सुण सुखराम कह, सब गुरू हद के मांय ॥ २० ॥

बारह कंवल के ऊपर जब तक केवल की बारी नहीं खुले तब तक के:पद आ:पद में लय नहीं होंगे तब तक सब गुरू हद के ही है।

लाख बात की बात या, सुणज्यो रे सब कोय।
सुखदेव निरगुण भेद बिन, सब हद का गुरू होय ॥ २१ ॥

सब सुणो लाख बात की एक बात है कि निरगुण के भेद बिना सब ही गुरू हद के ही है।

षट दरशण गुरू देह का, सुण लीज्यो सब कोय।
सुखिया गुण फल देत है, हद का हद में होय ॥ २२ ॥

खट दरशणी, जोगी, जंगम, सेवडा, सन्यासी, दर्वेश, ब्राह्मण यह शरीर के गुरू है। यह हद में ही फलों की प्राप्ति कराते है। सब ही सुण लो।

बैरागी गुरूभेष का, जोशी पाड़े नांव। विध्या का गुरू सेवड़ा, आरे का गुरू ग्राम ॥ २३ ॥

बैरागी भेष के गुरू है। जोशी नांव निकालते है। सेवडा (जती) विद्या के गुरू है। आरा नुगता गांव वालो की इजाजत से होता है। यही आरे का गुरू गांव है।

वैध गुरू इण रोग का, इन्द्रिया का गुरू भोग।
मन का गुरू तो ग्यान है, प्राणों का गुरू जोग ॥ २४ ॥

शरीर के रोग के गुरू तो वैद्य है। भोग इन्द्रियों के गुरू है। ग्यान मन का गुरू है। प्राणो का गुरू राजयोग यानि केवल ज्ञान है।

सतगुरू बिन सो करो, कारज सरे न कोय।
जन सुखदेवजी कहत है, सुण लिज्यो सब लोय ॥ २५ ॥

सतगुरू के बिना सो गुरू करो कार्य नहीं होता याने आत्मा परमात्मा पद की प्राप्ति नहीं कर सकती यह सब संसारी सुणो।

तीन लोक का अरथ रे, काड़े बोहो बिद जोय।
चौथे पद बिन जाणिया, सुखदेव हद का गुरू होय ॥ २६ ॥

तीन लोक के ज्ञान का अरथ संसार में अनेक प्रकार से निकालते है। म:फ: है कि चौथे पद की प्राप्ति के बिना सब हद के गुरू है।

खट दरसण गुरू हद का, बैरागी सब लोय। सतगुरू तो सुखराम के, सब से न्यारा होय ॥ २७ ॥

संसार में खट दरसणी व बैरागी दोनो गुरू हद के है। म:फ है कि सतगुरू तो इन सबसे अलग है।

॥ इति श्री हद गुरू पारख का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 सद्गुरु पारख का अंग 卐

सद्गुरू सो सुखराम कहे, सांच झूंठ दे छांट।
उलटा होय गढ पर चढे, सांस सुरत दिस सांट ॥ १ ॥

सद्गुरू वह है जो सांच ब्रह्म, झूंठ माया, का अलग अलग निर्णय करे। स्वांसा में सुरत लगाकर भजन करे। बंकनाल उलट कर के: पद की प्राप्ति जीते जी करे।

साहिब बिना मांने नहीं, ना काऊ से बेर। सो सद्गुरू सुखराम कह, पहूंता त्रिगुटी शहर ॥ २ ॥

परमात्मा के सिवाय दूसरो को नहीं मानता न ही किसी से बेर भाव रखता है। म:फ: है कि सत्य ज्ञान के द्वारा जो इडा पिंगला सुखमणा में होकर त्रिकुटी में आते है वो ही गुरू पद के वासी है।

तिरवेणी न्हावे सदा, आठ पोहोर रह ध्यान। सो सद्गुरू सुखराम कह, अणभै पूरण ज्ञान ॥ ३ ॥

जिनका आठ पोहोर त्रिवेणी में अखण्ड ध्यान लगा रहता है यही त्रिवेणी में नहाना है। म:फ: है कि जिनको पूरण अणभै ग्यान की समझ होती है वो ही सद्गुरू है।

आशा तृष्णा कल्पना, करे करमों का नाश। सो सद्गुरू सुखराम कह, छाडयो पूर्व बास ॥ ४॥

किसी प्रकार की आशा, तृष्णा, कल्पना नहीं रखते हैं तथा तीनों कर्मो का खात्मा करते हैं जिससे उनकी आत्मा किसी भी योनि में नहीं जावे, यही छाडयो पूर्व वास है।

परमेश्वर सूं रत सदा, भुला सबे विकार। सो सद्गुरू सुखराम कह, पहूंता दशवें द्वार ॥ ५॥

म:फ: है कि रात दिन परमेश्वर के ध्यान में रत, विकारों से रहित, दशवें द्वार में पहूंचे हुए है। वे सतपद के वासी है। वे सद्गुरू है।

दरशण करावे है दीन का, इण काया के मांय। सो सद्गुरू सुखराम कह, दूजा कहिये नांय ॥ ६॥

म:फ: है कि इस शरीर में शब्द ब्रह्म के दर्शन कराते है। वही सदगुरू है दूसरे कोई भी सदगुरू नहीं कहलाते हैं।

वे जन जग कूं तारसी, जांरे अणभै परवाना हात।
वे सद्गुरू सुखराम कह, सब बातां की बात ॥ ७॥

वे ही सदगुरू संत जगत में जीवों को तारेंगे जिनको अणभै की परवानगी मिली है। वे ही सदगुरू के पद पर है, दूसरे नही।

जांकू हरि दूवो दियो, सो जन तारे जीव। वा बिन हरि सिमरण करो, परथ न मिलसी पीव ॥ ८॥

जिनको स्वयं परमात्मा ने सदगुरू पद का ओधा देकर भेजा है। वो ही जीवों को तारेंगे। उन गुरू के बिना राम राम करते हुये भी सतशब्द रूपी पति नहीं मिलेंगे।

फल पावे पदवी मिले, गरभ न छुटे कोय।
ओहदा बिना बोहो साध रे, जहां संग मोख न होय ॥ ९॥

ओधाधारी सदगुरू के बिना भी किया गया राम राम व्यर्थ नही जायेगा, उससे फलों की प्राप्ति व तीन लोक में पदवी मिल जायेगी परन्तु इस से जन्मना मरना नहीं छूटेगा। दूसरे अन्य बहुत संत है, उनके संग से मोक्ष नहीं मिलेगा।

सुणज्यो सब सांची कहूं, इण में फेर न सार।
भजन किया ही तारसी, सांचा जन की लार ॥ १०॥

सब ही सुणो मैं सच कहता हूं। इसमें झूंठ सांच नही है ओधाधारी की शरण लेकर उनके बताये अनुसार विधि से भजन करने से ही उद्धार होगा।

सांचा सतगुरू संत वे उलट चढ़े आकाश। जन सुखिया अणभै धणी, ध्यान त्रगुटी बास ॥ ११॥

सच्चे संत व सद्गुरू वही है। जो बंकनाल के रास्ते से गगन में चढते है म:फ: है कि उनको पूर्ण अणभै ज्ञान का ओधा है। उनका ध्यान अखण्ड ब्रह्मण्ड से ऊपर रहता है।

अणभै कागज लाविया, ब्रह्म देश सूं जाय। सो तारे सुखराम के, जग में जीव अनन्त ॥ १२॥

ब्रह्मण्ड से ऊपर के:पद का पूर्ण अनुभव होना व ब्रह्म देश से अणभै कागज लाना है। म:फ: है कि वे महापुरूष ही जगत में हंसो का उद्धार करते हैं।

कनफूंका की क्या चली, सागे सद्गुरू होय।
अणभै बिन सुखराम कह, तार सके नही कोय ॥ १३॥

कान में मन्त्र सुनाने वालो की क्या बात है। सागे सद्गुरू याने गुरू पद में मिल गये हो तो भी पूर्ण अणभै ज्ञान के बिना दूसरो का उद्धार नही कर सकते। केवल खुद का ही उद्धार करते है।

अणभै कागज हाथ दे, हरि भेज्या जग मांय। सो हंसा कूं तारसी, सुखदेव कह बजाय ॥ १४॥

हरी परमात्मा ने अणभै कागज के साथ जिनको जगत में भेजा है वो ही जीवों को तारेंगे। यह बात सत्य है।

जिन जन को ओदो हुवो, हंस तारण कूं देख।
ता संग सुखदेव उधरे, क्या गिरही क्या भेख ॥ १५॥

जिनको परमात्मा ने ओधा दिया है कि तुम हंसो को तारो। उन्हीं का संग करना यानि उनके कहे मुताबिक ज्ञान धारण करने पर चाहे गृहस्थी हो चाहे भेषधारी हो, उनका उद्धार हो जायेगा।

तीन लोक को अरथ रे, काडे बोहो बिध जोय।
चौथे पद बिन जांणियां, सुखदेव हद गुरू होय ॥ १६॥

तीन लोक के ज्ञान का बहुत विधि से वर्णन करते है। म:फ: है कि चौथे पद के ज्ञान के बिना सब गुरू हद के है।

जो जन तारण आवियां, ओदो ले जग मांय।
वासूं मिल सुखराम कह, नरकां एक न जाय ॥ १७॥

जगत में के:पद का अनुभव व सिरजणहार से अणभै ज्ञान का पूर्ण ओहदा लेकर जो जन जनों का उद्धार करने के लिये आये है। उनसे मिलने पर याने उनके ज्ञान धारण करने से एक भी नरक में नही जाता है।

जे जन तारण आविया, ज्यारा अे अेनांण। सुखदेव मिलता प्रगटे, शिष में साहिब आंण ॥ १८॥

जो जन जगत में उद्धार करने के लिये आये उनकी यही पहचान है कि उनके मिलते ही याने अणभै ज्ञान को धारण करते है। शिष्य में शब्द ब्रह्म की जागृति हो जाती है।

अणभै कागद बाहिरा, भावे सो जन होय। वां संग सुखराम कह, हंसो तिरे न कोय ॥ १९॥

के:पद के अणभै वाणी बिना चाहे जैसा जन हो उनके साथ हंसो का उद्धार नही होता।

ज्यूं नर प्यादो शहर को, यूं अणभै बिन साध।
सुखदेव सांच न मानियो, सब मिथ्या कह बात ॥ २०॥

शहर का सिपाई बिना कागज (वारण्ट) लेकर आता है, ऐसे ही बिना अणभै के साधु है। म:फ: है कि इनकी बात को सच मत मानो। यह सब झूंठ कहते है।

परवाना बिन बायरो, प्यादो खेले घात।
अणभै बिन सुखराम कह, यूं शिष मिल्या न जात ॥ २१॥

जैसे सिपाही बिना कागज के किसी को पकड के ले जाना चाहता है तो कोई साथ नही जाता। ऐसे ही म:फ: है कि अणभै वाणी के बिना किसी भी शिष्य को शब्द की जागृति नही होती।

परवाना ले आविया, से साधु जग मांय। सो ताकीदी देत है, सुखदेव बहु विध आय ॥ २२॥

के:पद का पूर्ण अनुभव कर अणभै का परवाना लेकर जो साधु जगत में आये है। म:फ: है कि वो बहुत विधि से हंसो को केवल पद की प्राप्ति का ही साधन बताते है यही ताकीदी देना है।

दरगा सूं ले आविया, सद्गुरू पदवी सन्त। वे तारे सुखराम कह, जग में जीव अनन्त ॥ २३॥

जो सन्त सद्गुरू की पदवी के: पद से लेकर आये है। वही जगत में अनन्त जीवों का उद्धार करते है।

अणभै री परवानगी, दीनी सिरजण हार। वे सद्गुरू सुखराम कह, तिरबो वांकी लार ॥ २४॥

जिनको परमात्मा की तरफ से अणभै रूपी परवानगी हुई है वही सद्गुरू है। उनकी शरण लेने पर ही उद्धार होता है।

उमराव वकील रे, हाकम बगसी दिवाण। सब ओधा सुखराम कह, नरपत की फुरमाण ॥ २५॥

उमराव, वकील, हाकम, बगसी और दिवान म:फ: है कि यह सब ओधायत राजा की आज्ञा से होते है।

ब्रह्मा सिरज्यो रचण कूं, विष्णु करण प्रतिपाल।
शिव कूं रच्यो संहार कूं, ईन्द्र बरसण मेघमाल ॥ २६॥

ब्रह्मा रचना के लिये, विष्णु को पालना के लिये, शिवजी को संहार करने के लिए और इन्द्र को मेघो से वर्षा बरसने को मुकरर किया है।

पाप पुण्य का न्याव कूं, सिरज्यो है धर्मराज।
संत सिरज्या सुखराम कह, जीव उधारण काज ॥ २७॥

धर्मराज को पाप पुण्य का न्याव करने के लिये बनाया म:फ: है कि संतो को जीवों का उद्धार करने के लिए बनाया।

कोई नांव कोई डूंडका, कोई सतगुरू ज्यों जहाज।
सब तिरसी सुखराम कह, भवसागर महाराज ॥ २८॥

कोई नांव की तरह, कोई डूंडका की तरह, कोई सतगुरू जहाज की तरह है। म:फ: है कि इस भवसागर से सब ही पार जावेंगे।

नौका संग सौ दोय सौ, लाखो तारे जहाज। जन सुखिया गुरू डूंडका, करे आपरो काज ॥ २९॥

नौका रूपी सदगुरू के साथ सौ दो सौ तथा जहाज रूपी सदगुरू के साथ लाखों तिरते है। नौका रूपी यानि ऐसे सदगुरू जब तक सेदेही रहते तब तक जीव तिरते। जहाज रूपी यानि ऐसे सदगुरू देही से नहीं रहने के बाद भी उनके ग्रंथ को तारने की पदवी मिली हुई है। म:फ: है कि डूंडका रूपी गुरू खुद का ही उद्धार करते है।

अे दोनों भव तारसी, एक सद्गुरू एक जहाज।
गुण ओगुण देखे नही, बहे बिड़द की लाज ॥ ३०॥

सद्गुरू व जहाज यह दोनो भवसागर से तारेंगे। यह गुण ओगुण को नही देखते। अपने बिडद का पालन करते है।

क्या सुकरत मुरदे किया, मिली संजीवण आय।
सुखिया जे जीवे नही, तो बिड़द जड़ी को जाय ॥ ३१॥

म:फ: है कि मुरदे ने क्या अच्छे कर्म किए है जो उसको संजीवनी जडी मिल गई। यदि मुरदा जिन्दा नही होता है तो जडी का बिडद जाता है।

पारस परस्या गुण क्या, लोहा कंचन होय। पाहण संग सुखराम कह, पारस कहे न कोय ॥ ३२ ॥

पारस को परसने से क्या गुण होता है। लोहा सोना हो जाता है। यदि पत्थर के साथ लोहा रहता है तो वह सोना नही होता तो कोई उसे पारस नही कहता है।

निज नाम शिष में जगे, काग पलट हुवे हंस। वे सद्गुरू सुखराम कह, पार ब्रह्म का अंश ॥ ३३ ॥

जिसे अणभै ज्ञान के द्वारा शिष्य के घट में निज नाम की जागृति हो जाती है। म:फ: है कि वह आत्मा जो ब्रह्म का अंश थी, वह सत पद की वासी बन जाती है।

नीर क्षीर निरणा करे, वे सांचा गुरू पीर। हंसो कूं सुखराम कह, नाम चुगावे हीर ॥ ३४ ॥

नीर क्षीर यानि माया ब्रह्म का निरणा कर दे, वही सदगुरू है। वह संतो को निज नाम रूपी हीरा चुगाते है यानि सतशब्द की भक्ति में लगाते हैं।

सुखिया संत छाया पड़े, जम पुरी में आय। जीवां की जाला बुझे, क्रोध जमों का जाय ॥ ३५ ॥

ओधाधारी सदगुरू जब अवतार लेकर जमपुरी यानि मृत्युलोक में पधारते है तब जीवात्मा की जन्मने मरने की ज्वाला शांत होती है। फिर उस भक्ति करने वाले पर जमराम जी भी क्रोध नहीं करते हैं।

जम जालम की त्रास सूं, हंसा करी पुकार। सुखिया साहिब आविया, ले जन को अवतार ॥ ३६ ॥

बार बार जन्म मरण की त्रास से हंस वृति आत्मा परमात्मा से पुकार करती है, तब परमात्मा जीवों का उद्धार करने के लिये सतारूप से संतो के रूप में अवतार लेकर आते है।

कनफूंका गुरू हद का, भावे सौ कर आय। सद्गुरू बिन सुखराम के, सांसो कदे न जाय ॥ ३७ ॥

कनफूंका गुरू चाहे सौ गुरू भी कर लेवे तो भी वो हद में ही रखने वाले है। म:फ: है कि बिना सद्गुरू सतज्ञान के बिना संशय कभी नही मिट सकता है।

सद्गुरू क्यूं कर जाणिये, या पारख कहो मोय।
ज्ञानी तो सुखराम के, नाना विध का होय ॥ ३८ ॥

संसार में ज्ञानी तो अनेक प्रकार के होते है। म:फ: है कि सद्गुरू की परीक्षा कैसे जानी जाती है इसका मुझे भेद बताओ।

या सद्गुरू की पारखा, सुणज्यो चित दे कान।
केवल बिन सुखराम के, भजे न दूजो आन ॥ ३९ ॥

म:फ: है कि संसार के सब ज्ञानी चित व कान लगाकर सुणो। सद्गुरू की यही परीक्षा है कि वो केवल ज्ञान व आत्म चेतन के आधार से सद्शब्द की भक्ति को छोडकर किसी भी आन धर्म याने मन विचार इन्द्रियो से ध्यान करते है उनको नही मानता ।

दूवो बिन सुखराम के, तार सके नही कोय। क्या ग्रेही बैराग रे, भावे सा गुरू होय ॥ ४० ॥

म:फ: है कि सद्शब्द व सत अणभै ज्ञान की परवानगी के बिना कोई भी जीवों को नही तार सकता। चाहे गृहस्थी हो चाहे बैरागी कैसा भी गुरू हो उद्धार नही कर सकता ।

॥ इति श्री सद्गुरू पारख का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 चाणक का अंग 卐

चौपाई : ऋग यजुर श्याम अथर बण सोई, चारूं वेद कुवाय।
मोख मुगत की गेल विचारी, पशु वे वेद दिखाय ॥ १ ॥

ऋगवेद, यजुरवेद, सामवेद, अथर्रवेद यह चार वेद कहलाते है। म:फ: है कि जो इन वेदो से मोक्ष बताता है वो पशु के समान है। (वेद सृष्टि रचना के लिये बने)

श्रोता वक्ता पंडित जोशी, भूल रया जग मांही।
डाला पान फूल फल सेवे, गोड बीज गम नांही ॥ २ ।।

सुनने वाले, बोलने वाले, पिंडत, जोशी यह सब करणियो से फलों की प्राप्ति के ज्ञान को प्रधानता देते है यही जगत में भूलना है। देवता व अवतारों की भक्ति करना डाल व फल फूल सेवना है। पारब्रह्म की ब्रह्म पद के ज्ञान की प्राप्ति नही होना ही गोड बीज गम नांही है।

बाजी देख जगत सब भूली, धन ले गांठ चढावे।
जन सुखराम बुद्ध बिन मुरख, वादी नांव सरावे ॥ ३ ॥

बाजीगर की बाजीगिरी देखकर सारा संसार भूल रहा है। गिरह का धन चढाते है। म:फ: है कि बुद्धि के बिना मुर्ख बाजीगिरी की सराहना करते है। ऐसे ही सब संसार परमात्मा की रची सृष्टि सब झूंठी है। इसमें होकर इसको सत समझता है व इसको बनाने वाला सत है। उसको नही जानता।

कवित्त : पत्थर मूरत कोर, आण देवल में मेली। वे भी पूजण जाय, कहे तुं व्हे ज्यो बेली।।
हातां लीवी बणाय, पूज नर नारी जावे। मकडी मांडे जाल, उलट फिर मांही बंधावे ॥ ४ ॥

पत्थर की मूर्ति घडकर उसे मन्दिर में रख दी व रखने वाले भी स्वयं पूजा कर प्रार्थना करते है कि हमारी रक्षा करना उन्होने अपने हाथों से ही बनाई है। सभी स्त्री पुरूष पूजाकर जाते है जैसे मकडी मुंह से तागा निकालकर जाला बनाती है दूसरों जीवों को फंसाने के लिए लेकिन खुद ही फंस कर प्राण गंवा देती है।

यूं भरम्यो संसार, देव सब मांड उपाया। हातां करम कमाय, फेर भुक्तण को आया॥
धरिया घडिया देव रे, सब अनघड़ बस होय। छिन पल करे तो शिष्ट, भस्म चुरण सब कोय ।।५॥

इस तरह संसार भरम रहा है। देवताओं ने यह सारी मांड बनायी और उसमें सभी तरह के भक्ति के साधन बताये। परन्तु गलत कर्मो के कारण वापस जन्म मरण में आता है। परब्रह्म परमात्मा ने ब्रह्मा, विष्णु, महादेव को धरा तथा वो चाहे तो सारी सृष्टि को क्षण भर में भस्म कर सकते है व बना सकते है।

पल में करे पैदास, छिनक में सबे संघारे। यूं घड़िया सब घाट, सकल अनघड़ के सारे ॥ ६ ॥

एक पल में सारी सृष्टि को पैदा करके एक क्षण में सबका संहार कर देता है। ऐसे ही सब बनाये हुये आकार उस अनघड परमात्मा के वश में है।

सुरगुण नाम अनन्त, ताँही गिणती नही जाणी। ब्रह्म एक निरधार, तांही को नांही पिछाणी।।
देह लग सांचा नाम, पूज सेवे तन सोई। बिरछ बिना के छांय, जड़ मूरख नही होई॥
गेणो भांज मिटावियो, कहा नांव कहे कोय। देह पडयां सुखराम के, सब नाम इम होय॥ ७।।

सुरगुण याने आकार के अनन्त नाम है उसकी कोई गिनती नही है। ब्रह्म का नाम एक है वो

निराधार है उसको कोई नही पहचानते याने नही जानते। तब तक शरीर है तब तक ही नांव सच्चा था, जब उस शरीर की पूजा सेवा होती थी। वृक्ष के बिना छांया कैसे होती, अरे हे मूर्ख नही होती। जब गहना था उसको गलाकर मिटा दिया, तब उसका क्या नाम कहोगे। म:फ: है कि जब शरीर नही रहता है तब सब ही नांव मिट जाते है।

दोहा:- गऊ बाछड़ियो मर रहयो, कियो महुरयो लोय।
ग्यान समझ बिन बाहेरी, धूमर चाटे जोय ॥ ८ ॥

गाय का बछडा मर गया है। उसके पास नकली बनाकर रख दिया। गाय समझ से शून्य है उस वास्ते देखो वो उसको चाट रही है।

बालक केता संग रमे, करे जग को ख्याल। खान पान सब बीसरे, रम क्या हुवे न्याल ॥ ९ ॥

बालक कितने ही साथ खेलते है संसार का खेल खेलते है। खेलते वक्त वह खाना पीना सब भूल जाते है लेकिन वो खेलकर क्या न्याल होते है याने उन्हे क्या फायदा होता है।

काठ पूतली मांड कर, नार संग ले सोय। सुरगुण इम सुखरामजी, तांमे फेर न कोय॥ १० ॥

लकडी की पूतली याने स्त्री बनाकर उसे साथ लेकर सोते है परन्तु उससे सन्तान नही होती न सेज का सुख आता है। ऐसे ही सुरगुण की उपासना करने से मोक्ष की प्राप्ति नही होती । इस बात में कोई फेर नही है याने झूंठी नही है।

सूक्ष्म वेद बिन भेद, गत पिंडत नही होई।
चाल हाल नर नार, ज्ञान सब ही को ओई ॥ ११ ॥

परमात्मा में मिलने के ज्ञान को सुक्ष्म वेद कहते हैं। सुक्ष्म वेद के भेद का पंडितो को ज्ञान नही हैं। जो पंडित जी बताते हैं जनता उसी को मानकर चलती है।

हिलमिल रहे हजूर, और न्यारी नही सूजे ।
परदेशी की बात, आंण परदेशी बूझे ॥ १२ ॥

जो जगत में ज्ञानी व पंडित जी बताते है उसी को मानकर भक्ति करते है। उनको उस पद में मिलने का नही सूजता है। जैसे एक परदेशी से दूसरा परदेशी कोई पता पूछता है तो वो क्या बतायेगा।

कहा कहे उण देश की, सुख सम्पत वो आय।
पिंडत संग सुखराम जी, रहयो जगत उलझाय ॥ १३ ॥

इन पंडितो को उस देश के सुख का मालूम नही है। फिर भी जगत उन से ही कल्याण समझता है।

दालदरी ढिंग जाय, आंण निर्धन घर किया।
नार उधारे जाय, कहा धन का डर दिया ॥ १४ ॥

कोई गरीब घर की स्त्री ने निर्धन का घर किया, अब वो उधार लेने के लिये जावे तो कभी भी अपने धन का डर नही बता सकती है।

अंधे अंधो लार, पंग पंगे संग होई।
त्रिया मेहरी संग,काज ऐको नही कोई ॥ १५ ॥

अंधा अंधे के साथ, लंगडा लंगडे के साथ व स्त्री स्त्री के साथ रहने से किसी का कार्य सिद्ध

नहीं होता।

सपना में सम्पत मिले, राजपाट सुख धाम।
निरगुण बिन सुखराम के, यूं सुरगुण बेकाम ॥ १६ ॥

जैसे सपने में किसी को सम्पति मिल जावे और राजपाट सुख मिल जावे तो वो नीन्द खुलते ही समाप्त हो जाते है। इसी तरह सुरगुण भक्ति का सुख भी अखण्ड नही है। बिना निरगुण के आत्मा निर्भय ठोर प्राप्त नही कर सकती। इसलिये सुरगुण को बेकाम बताया।

सुरगुण देही जाण, झूंठ सांची नही कोई।
जन सुखिया देह जाय, नाम सांचो किम होई ॥ १७॥

शरीर सुरगुण है, झूंठा है, रहने वाला नही है। म.फ. है कि जब शरीर ही नहीं रहता है तो नाम कैसे सच्चा हो सकता है।

सुक्ष्म वेद सुण भेद, जाण देवत नही पाया।
कवि पंडित पच जाय, भेद का मरम न आया ॥ १८॥

सुक्ष्म वेद यानि सतशब्द का भेद देवताओं को भी प्राप्त नही होता है तो कवि और पंडित चाहे कितने ही पचो ने: अंच्छर का भेद नहीं मिलता।

डाला पान गम्भीर, पेड फल फूल बखाणे ।
इन सब ही का मूल, तांही गत बिरला जाणे ॥ १९ ॥

यह डाला पान फल फूल यानि देवता व अवतारों की भक्ति करते है व करवाते हैं। मूल में सारी सृष्टि परमात्मा की है उसमें मिलने का भेद कोई बिरला ही जानते है।

भरम्यो सो संसार है, चार वेद के मांय,
सुक्ष्म वेद सुखराम के, पिंडत कूं गम नांय ॥ २० ॥

सारा संसार वेदों के ज्ञान को ही प्राथमिकता देता है क्योंकि जो सुख वह चाहता है उसकी विद्या वेदों में है। इसलिये पंडित वेद ही बांचते है। उनको सुक्ष्म वेद की जानकारी नही है।

दोहा:- राजा रंक सुलतान, सब बंध्या बेद मुख मांय।
काजी मुल्ला बादशाह, आलम दूनी बंधाय ॥ २१ ॥

राजा, रंक, बादशाह सब वेदों के ज्ञान के साधन में लग रहे है। काजी मुल्ला व बादशाह प्रजा संसार सब इसी में लगे है।

तीन लोक चवदा भवन, जहां तहां हुवे बखाण। पवन पाणी धरतरी, बंधी वेद प्रवाण ॥ २२ ॥

तीन लोक चवदा भवन में जहां तहां वेदों के ज्ञान का बखाण होता है। वेदों के ज्ञान से हवा पानी पृथ्वी सब की जानकारी होती है यही बंधी वेद प्रवाण है।

तीन लोक देख्या सही, अरथ निगम पद जोय।
पंडित कूं सुखराम के, सुक्ष्म वेद कहो मोय ॥ २३ ॥

वेदो के ज्ञान से तीन लोक का ज्ञान होता है यही तीन लोक देखना है। म: पंडितो से पूछते है कि सुक्ष्म वेद किसे कहते है वो कहो।

कवित्त:- सूक्ष्म वेद बिन जांण, आंण बोले सब वाणी। कूटे सबे पराल,
कूप सिंचे बिन पाणी ॥ दुल्हे बिना बारात, बीज नाकू बिन बायो।

कंवल कूख बिन नार, ब्याव परणे घर ल्यावे ॥ गोली बिन आवाज,
तुपक बहो सोर उड़ावे। जन सुखिया बिन भेद, पिंडत बक जन्म गमावे ॥ २४॥

सुक्ष्म वेद याने ने: अंच्छर का ज्ञान जाने बिना जो वाणी बोलते है वे सब पराल कूटते है। जिसमे कण नही है, बिना पानी के कुवे को सींचने से क्या मिलता है। बरात में दुल्हा नही हो तो शादी किसकी होगी। बिना नाकू का बीज खेत में बो रहे है तो कैसे उगेगा। कंवल कूख नही हो उस स्त्री को ब्याव करके घर लावे तो संतान कैसे होगी। बन्दूक में गोली नही है सोर से खाली आवाजे हो रही है तो निशाना कहां लगेगा। म:फ: है कि सतशब्द के ज्ञान बिना मोक्ष की प्राप्ति नही होती यही पंडितो का खाली बोलकर जन्म गंवाना है।

सुक्ष्म वेद को नांव, भेद कोऊ आंण सुणावे। बिन दीपक बिन तेल, जोत पर जोत जगावे॥
नदियां बहे सपूर, जोर सिलता बोहो भारी। हिलमिल एक होय, घाट सो कहो विचारी ॥
पांचू परखे नांय, बैण बायक नही जावे। जन सुखिया वा जाग जोय, कोई मोय सुणावे ॥ २५॥

सुक्ष्म बेद पारब्रह्म परमात्मा के निज नांव के भेद को कोई आकार सुनावे। आत्म चेतन के आधार पर सतशब्द का जागृत होना ही बिना दीपक तेल के जोत पर जोत जगाना है। इडा, पिंगला व सुखमणा में शब्द का ध्यान होना ही नदियो का जोर से बहना है। इडा पिंगला एक होकर सुखमणा से त्रिकुटी में ध्यान होना ही घाट से कहो विचारी है। म:फ: है कि वाणी के निकले वचन व पांच प्राण जहां नही पहुंचते उस पद का अनुभव कर मुझे बतावो।

दोहा:- वा जागा ऐसी कही, निरभै भय नही कोय।
कयां सुणया माने नही, देख्यां ही सुख होय ॥ २६॥

वो पद ऐसा है जहां कोई भय नही है। निर्भय पद है। कहने सुनने से कोई नही मानता। उस पद की प्राप्ति होने पर ही सुख आता है।

कवित:- जगत, भेष, पिंडत सबे, किणी पार नहीं पाया।
ऐसा अनघड देव तज, धरिये संग आया ॥ २७॥

संसारी, भेषधारी साधुओं, पंडितो ने किसी ने भी उसका पार नही पाया ऐसे निरंजन निराकार सतचेतन ब्रह्म के पद की भक्ति को छोडकर देह धारीयो की भक्ति में लगना ही धरिये संग आना है।

देह धर जुग औतार, ब्रह्म वे अगम बतावे।
ब्रह्मा विष्णु महेश, शेष जांको नित गावे ॥ २८॥

देह धारण करके जगों में अवतार आते हैं वे ही ब्रह्म को अगम बताते है। ब्रह्मा विष्णु महादेव वे शेषजी राज दिन उसकी भक्ति करते हैं। यही गाना है।

निरगुण ब्रह्म विचार, जोय तेरे घट मांही।
जहां तहां करे सहाय, ज्ञान कहे आद गुंसाई ॥ २९॥

निरगुण ब्रह्म का विचार करो, देखो वह तुम्हारे घट में हैं, जहां तहां सहायता करता है। समस्त शास्त्र भी यही कहते है।

बिन देही आकार अलख, खाविन्द सो कहिये।
सो तेरे मन मांय, भूल ओटे क्यूं जहिये ॥ ३०॥

वह परमात्मा बिना आकार का है, उसकी गति को नही लख सकते, वह सबका पति परमात्मा है। सो तेरे अन्दर ही है। तू उसे बाहर ढूंढता है।

चलता देवल पूज, प्रेम सूं प्रीत बंधावे।
सूने घर सुखराम, पावणो क्या सुख पावे ॥ ३१ ॥

इस शरीर में जब तक श्वांस चल रही है तब तक पूज यानि इस शरीर को काम में ले ले और उस परमात्मा के नाम की रटना प्रेम से करले। जैसे मेहमान किसी के घर पर जाते है और वहां पर घर धणी नहीं मिलता तो उस की खातिर कौन करेगा।

धणी गया परदेश, जाग झाड़े नर नारी ।
बिन राजा रजपूत, झूंझ कर मरे विचारी ॥ ३२ ॥

जैसे किसी मकान का मालिक परदेश चला गया हो पीछे से उसके मकान की कोई नर नारी साफ सफाई करते हैं तो उसको वेतन कौन देगा। जैसे कोई राजा है ही नही और कोई राजपूत उसके नाम से लडाई में झूंझता है। वो अगर मर जावे तो उसे पटा या इनाम कौन देगा।

कण बिन जोते खेत, जीव बोह भांत उडावे।
पात फूल फल नांय, वृक्ष को नीर पीलावे ॥ ३३ ॥

बिना बीज के ही कोई हल चलाता है और फिर रोजाना खेत पर जाकर चिडियो को उडाता है। जैसे कोई पेड सुखा है जिसके पते फूल व फल नही है और उस पेड को रोजाना पानी पिलाता है। तो तुझे कुछ भी मिलने वाला नहीं।

गाय भैंस को करक, ताय को जतन करिजे।
पारी भर सुखराम, दूध कतरोयक लिजे ॥ ३४ ॥

गाय भैंस की हड्डियों को कितने ही जतन से रखो उनसे दूध मिलने वाला नहीं।

कोलू खल पिलाय, छाछ कूं खरी बिलौवे।
बांज नार कूं सेव, बस्त बिन मेल्यो जोवे ॥ ३५ ॥

कोलू में तिल की जगह खल डालेंगे तो तेल निकलने वाला नही। छाछ को बिलोने से घी निकलने वाला नही है। जिस नारी के कूख नही है उससे बच्चा होने वाला नही है। कोई वस्तु रखी ही नही और तूं ढूंढता है तो मिलने वाली नही है।

धन बिन मांडे खत, रूंख बिन फला चढिजे।
जल बिन कुवो जोत, करण बिन हेला दीजे ॥ ३६ ॥

बिना किसी को धन उधार दिये कोई रसीद नही मांड कर देगा। जिस पेड पर फल नही है और तू उस पर चढेगा तो भी फल नही मिलेगा। कुंए में जल नही है और तू बैल जोत कर चड़स चला रहा है तो पानी नही मिलेगा । जिसके कान नही है और तू आवाज लगा रहा है तो भी वो सुनने वाला नही है।

बादस्या बिन तक्त सेव, कोई पट्टा कढावे ।
सुरगुण यूं सुखराम, मोख कबहूं नहीं पावे ॥ ३७ ॥

बादशाह है ही नहीं और तू रोज उसके दरबार में जाकर रोज सेवा करता है तो भी तेरे को पट्टा मिलने वाला नही है। सुरगुण भक्ति यानि रूप की भक्ति से सतशब्द नहीं आता। और बिना सतशब्द

के मोक्ष होने वाली नही है।

धरम पुन्न जोग जाप जिग, जप तप तीरथ सब किया।
बरत वास उपवास, चित परमारथ दिया ॥ ३८ ॥

कोई धर्म पुनः करते है, कोई जोगारंभ, कोई जाप, यज्ञ करते है, कोई तपस्या व कोई तीर्थ करते है। कोई व्रत उपवास करते है तथा कोई अपना चित दूसरों की सेवा में लगाते है। कोई जोरदार तपस्या करते है, कोई जगत में शील व्रत का पालन करते है। कितना ही जरूरी काम हो परमार्थ से नही चूकता। उपरोक्त सभी साधनों से तीन लोक में जहां भी आत्मा जायेगी उनसे फलों की प्राप्ति हो जायेगी। मःफः है कि बिना नांव के मोक्ष होने वाली नही है।

तपस्या करे करूर, शील जो जगत कमावे।
परमारथ के काज जाय, बोहो जाग बिकावे ॥ ३९ ॥

कठिन तपस्या करता है, जगत में शील व्रत का पालन करता है, परमार्थ के लिये अपना तन मन धन देने के लिये तैयार रहता है।

तीन लोक चवदा भवन, जहां तहां अे फल खाय।
जन सुखिया बिन नांव रे, मोख कबहूं नहीं जाय ॥ ४० ॥

उपरोक्त सभी साधनों का तीन लोक चवदा भवन में फल प्राप्त होगा, लेकिन बिना नांव के मोक्ष नहीं होगी।

दोहाः- नांव कहे सुखराम जी, केवल ब्रह्म विचार।
धरी देह सब झूंठ है, माया को विस्तार ॥ ४१ ॥

यहां नांव से तात्पर्य यह है कि परब्रह्म परमात्मा का नाम राम से है। और जितने भी देही के नाम है वो सब झूंठे है। उनसे माया के फलों की प्राप्ति हो जायेगी।

चौपाईः- धरी देह सुणज्यो तुम सब ही, मैं विज्ञान बतावूं ।
करणी कर्म एक नहीं साझूं, निज पद मांय समावूं ॥ ४२ ॥

शरीर धारण करने वालो तुम सब ही सुणो मैं तुम्हें विज्ञान बताता हूं करणी व करम एक की भी साधना नहीं कराता हुआ मैं तुम्हे निज पद की प्राप्ति करा देता हूं।

स्वर्ग नरक दोनो सुख झूंठा, जूवा खेल मंडाया।
जाय जीत बोहता धन लेवे, कब सो गांठ गमाया।। ४३ ।।

स्वर्ग का सुख व नरक का दुख दोनो झूंठे है। स्थिर नही रहते है इसलिये झूंठे है। जिस तरह जुवे में जीतकर धन लाना स्वर्ग के सुख की तरह व धन खोकर हारना नरको के दुख के समान है।

वर्णा वर्ण कहे जुग मांही, पिंडत करे विचारा।
जन सुखराम बंध्यो जम तांती, है इन सूं कोई न्यारा ॥ ४४ ॥

पंडित लोगों के वर्ण आश्रम का विचार करने से जमराज के बन्धन से छुटकारा नही होता जमराज के बन्धन से छुडाने वाला ज्ञान दूसरा ही है।

ब्रह्म वेद दोनूं जग उला, रिख जग सबे भुलाया।
दोनूं पखा बिचे सब झूंझे, ब्रह्म भेव नहीं पाया ॥ ४५ ॥

सब ऋषि लोग वेदों के आधार से करणियों का मन व विचारो के द्वारा ब्रह्म ज्ञान का उपदेश

करते है। इन दोनों साधनों के करने से आत्मा पांच तत्वों से अलग नही होती इसलिये उनको जीव भाव से सुखों की प्राप्ति होती है। याने ब्रह्म की प्राप्ति नही होती।

श्रुति श्रुति कहे, मून गहे, साजे जुग हुन्नर सब लोई।
जैसे मंडया लाव लस्कर में, सबे एक घर होई ॥ ४६ ॥

जग में शास्त्रो को पढते है, मौन धारण करते है जगत के हुनर साजते है। म:फ: है कि जगत के हुन्नर को देखकर समझो। कागज या दीवार पर हाथी घोडे मांड देते है। क्या मंडे हुये हाथी घोडे लडाई करके फतह कर सकते है। ऐसे ही मौन धारण करने से ब्रह्म पद की प्राप्ति नही होती।

त्रिया पुरूष भरम मिल दोनूं, सांच एक नही आया।
जन सुखराम केण कूं दिया, जड़े गुगरा साया ॥ ४७ ॥

स्त्री पुरूष साथ साथ रहते है लेकिन संतान उत्पति की क्रिया नही करते तो साथ साथ रहते हुये भी गरभ नही रहता। तब तक साथ रहना नही समझा जाता। ऐसे कोई भी ज्ञान करो आत्मा को पांच तत्वों के शरीर से अलग नही करता। जब तक ब्रह्म पद की प्राप्ति नही होती। जैसे पायल में घूंघरू सब साथ लगे हुए दिखने पर भी अलग के अलग है।

घड़यो घाट गगरी माटो, न्याव कुलाल बणाया।
सबका नांव ठाम सब सारा, यूं जग मोय लखाया ॥ ४८ ॥

कुम्हार पृथ्वी से मिट्टी लाता है। न्याव कुलाल द्वारा मिट्टी के छोटे व बडे बरतन बनाता है। जो जैसा बरतन होता है। वैसा ही उसका नाम धर देता है। ऐसे ही सृष्टि में ब्रह्म तो एक है तथा माया का स्वरूप सब अलग है। उनके नाम भी अलग अलग है। ऐसे संसार मुझे दिखता है।

सब ही नांव ठांव सब केणी, कारज सूं ले किया।
समज्या पछे एक है सांचो, जमी आद दे लिया ॥ ४९ ॥

जब तक बरतन के रूप में रहते है। तब तक वह नाम रहता है। जब फूटकर जमीन में मिल जाता है जब उसका नाम मिट जाता है। इसी तरह आत्मा आकार के साथ रहती है तब तक उसके अलग अलग नाम है। आकार से अलग होकर ब्रह्म में मिलने पर आत्मा ब्रह्म हो जाती है।

किया जहांन मिल्या सब मांही, आतर ढेल सरिसा।
घडिया जहां तिण ऊपर, चढे पड़े ता पीसा ॥ ५० ॥

पांच तत्वो के साथ चेतन के अनेक शरीर है। उनके अनेक नांव है। जब तक शरीर है तब तक नांव है। जब आत्मा ब्रह्म पद में मिल जाती है। जब शरीर के नाम मिट जाते है। सो समझदार ब्रह्म को सत समझता है। आकार व आकार के नाम को असत समझता, सत नही समझता है।

ज्यूं तर पात पान सब हुवा, डाली डाल कहाणी।
निश्चे: जाय मिले धर मांही, जहां ते बीज उपाणी ॥ ५१ ॥

वृक्ष के पान पते डाली डाल सब कहने में आते है। वो निश्चय ही धरती में जा मिलते है। जहां से बीज का उद्‌भव हुवा है।

करसो जाय करे जो खेती, माल माल कण लिया।
फूली फली साख जहां आई, भरी आंण जहां लिया ॥ ५२ ॥

किसान खेती करता है। अपने माल का एक एक कण जमीन में डालता है। जब साख फल

फूल कर पकती है तो वहीं लाकर भरता है जहां से उठाया था।

साहूकार बिणज सो कर है, घर घर दाम बिखेरे।
जन सुखराम लिया जहां मेले, ब्याज समूला घेरे ॥ ५३ ॥

साहूकार व्यापार करते है। घर घर उधार दे देते है। म:फ: है कि जहां से लेते है ब्याज सहित वसूल करके वही रखते है।

॥ इति श्री चाणक का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 राजा चन्दूलाल का संवाद 卐

संत महाराज श्री सुखरामजी ने सीवणी रो राजा चन्दूलाल बूजीयो :
थै साध बाजो, थांरे भेख तो कोनी। जद संत सुखरामजी बोलिया :
पद:- राजा ऐसा भेष हमारा, भेदी जके भली बिध जांणे, करमी लखे न सारा।
राम रटे परमेश्वर प्यारा, रह करमा सूं न्यारा ॥ टेर ॥

हे राजा हमारा भेष ऐसा है जो परमात्मा की प्राप्ति करने वाले व भजन के भेदी है वो भली विधि से जानते है। और जो कर्म बंधन का काम करता है वो मेरे ज्ञान को नहीं जानता है। जो सतगुरू विधि से राम रटता है, वह परमेश्वर का प्यारा है। वह करमो से अलग रहता है।

कफनी हमें क्षमा की पहरी, ज्ञान गुदड़ी ओड़ी।
चोलो अजब दया को गल में, कुबद कामणी छोड़ी ॥ १ ॥

मैने क्षमा की कफनी पहन रखी है। ज्ञान रूपी गूदडी ओढ रखी है। दया का अजब चोला मेरे गले में है। कुबुदि रूपी कामणियों को मैने छोड दिया है।

रमता संग रमूं जग मांही, इण मन कूं शिष कीना।
सतशब्द सो गुरू हमारा, तत्त तिलक सिर दीना ॥ २ ॥

रमतीत राम जो आत्म रूप से सब में विराजमान है उनके संग जगत में रहता हूं। और इस मन को शिष्य बना रखा है। जिस परमात्मा के द्वारा यह सतशब्द आता है वो परमात्मा ही गुरू है। और यह ने: अक्षर आता है उसी तत्त का तिलक सिर पर धारण किया है।

पोथी पाठ वेद सब गीता, अणभै का पट खोलूं।
द्वादस मंत्र गायत्री मेरे, सतशब्द मुख बोलूं ॥ ३ ॥

मेरे अणभै ग्रंथ में सभी शास्त्रो का सार लिख दिया, यही मेरी पोथी पाठ वेद गीता सब है। राम के नाम की रटना करता हूं यही मेरा द्वादस मंत्र व गायत्री मंत्र है। तथा मुंह से सत्य वचन बोलता हूं।

मुद्रा कंठी पावड़ी अलफी, भेद ज्ञान की पहरी ।
सांस उसांस अजपो घट में, निरगुण माला फेरी ॥ ४ ॥

मत ज्ञान, सुरत ज्ञान, मन परचे ज्ञान, अवध ज्ञान व के: ज्ञान, इन पांचो के भेद को जानना ही मुद्रा कंठी पावडी अलफी पहनना है, सांस उसांस में रकार मकार का भजन करना व अजपा जागृत होकर अखण्ड अनुभव होना ही निरगुण माला फेरना है।

धीरज धरण लंगोटी जरणा, आडबंद मत मेरी।
आ देह बीण तात सब नाड़ी, रागां अनहद घेरी ॥ ५ ॥

पृथ्वी के समान धीरज धारण कर रखी है। सहनशीलता की लंगोटी लगा रखी है। सतशब्द के ज्ञान के सिवाय मेरी बुद्धि दूसरी तरफ नही जाती, यह आड बंदमत मेरी है। मेरा शरीर बीणा है व नाडे सब तार है। बिना किये ही कई तरह की अनहद की रागे हो रही है।

गिगन मंडल में मंडी हमारी, त्रृगुटी सेवा पूजा।
सत का शब्द जोत के आगे, और देव नही दूजा ॥ ६ ॥

ब्रह्मण्ड के ऊपर के: पद में सतशब्द का अनुभव होना ही गिगन मंडल में मंडी हमारी है। त्रिगुटी में शब्द आने पर कई प्रकार की ध्वनियों का होना ही त्रिगुटी पूजा है। सतशब्द का निरंजन निराकार चेतन में अनुभव हो रहा है। यही सत का शब्द जोत के आगे है। इसके सिवाय मेरे कोई देवता नही है।

अला पिंगला करे आरती, अनहद झालर बाजे।
चित मन सुरत हजुरी चाकर, गिगन शब्द धुन गाजे ॥ ७ ॥

त्रृकुटी में शब्द का अनुभव होना ही अला पिंगला की आरती करना है। बिना किये ही जो आवाजें आ रही है। वो ही अनहद झालर बजना है। चित मन सुरत हजुरी चाकर है। गिगन में सतशब्द का अखण्ड ध्यान होना ही गिगन शब्द धुन गाजे है।

देह रो भेष सकल सो माया, असत सत नही कोई।
जे कोई भेष शब्द को साजे, मोख मिलेगा सोई ॥ ८ ॥

जिसने भी देही धारण कर रखी है। वो सब माया का भेष है। असत है सत नही है। आत्मा जो इस शरीर भेष से अलग होकर सतशब्द में लय होती है यही सतशब्द का भेष धारण करना है। आ:पद में लय होना ही मोक्ष की प्राप्ति करना है।

कह सुखराम भेष यो मेरो, जे कोई संत बसावे।
तीनों ताप तोड़कर हंसो, अमरलोक में जावे ॥ ९ ॥

म:फ: है कि मेरा यह भेष जो संत धारण करेंगे। वो हंस तीनों ताप अधीदेव, अधीभूत व अध्यात्म इन तीनों तापों को तोडकर अमरलोक में पहुचेंगे।

राजा उवाच:- दोहा:- तुम भाखी घट भेद की, आ नही वेद के मांय।
प्रगट छांण मोसूं कहो, अमरलोक जे जाय ॥ १० ॥

राजा ने नम्रता से कहा कि आपने घट के भेद की कही है। यह वेदों में नही है। आप प्रगट में उन लक्षणो को खुलासा मुझ से कहिये जिससे अमरलोक की प्राप्ति होती है।

बार बार विनती करूं, सांभलजो गुरूदेव।
परमधाम किम जावसी, जके बताओ भेव ॥ ११ ॥

राजा कह रहा है कि हे गुरूदेव सुणो मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि परमधाम की प्राप्ति कैसे होती है जिसका भेद बताईये।

श्री सुखो वाच:- पद:- राजा है ऐसा जन कोई ।
होण काल ईश्वर सूं आगे, ज्ञान बतावे मोई ॥ टेर ॥

म:फ: है कि हे राजा ऐसा जन कोई है। जो सृष्टि करता ईश्वर से आगे का ज्ञान मुझे बतावे।

जे कोई ज्ञान त्याग ले गावे, तिके काल मुख मांही।
वांकी संगत परम मोख नही, हंसो किस विध जाई ॥ १ ॥

कोई त्याग को ज्ञान बताते है। वे तो काल के मुख में है। उनकी संगत से परम मोक्ष की प्राप्ति नही होती तो हंस किस तरह जा सकता है।

जो कोई ज्ञान बतावे करता, पैदा करन्दा भाई।
ओ सब ज्ञान काल का मुख में, न्याव करो ओ आई ॥ २ ॥

जो कोई सृष्टि की रचना करने वाले का ज्ञान बताते है। हे राजा यह सब ज्ञान काल के मुख में है। इसका तुम ही न्याव करो।

क्रिया कला जप तप साधन, कूंची मुद्रा गावे।
पेलो छेह काल का मुख में, परम मोख नही जावे ॥ ३ ॥

कोई क्रिया करणी कला जप तप का साधन कूंची मुद्रा बताते है। इसका पेला छेह काल के मुख में है। इससे परम मोक्ष में नही जाता है।

घणी बात थोडी में केवूं, सुण लीज्यो नर नारी।
ब्रह्म काल माया सब चारो, देखो ज्ञान विचारी ॥ ४ ॥

सब स्त्री पुरूष सुणो बात तो बहुत है परन्तु मैं तुम्हे थोडे शब्दों में कहता हूं। चार काया तक तो काल की पहुंच है। पांचवी काया दिव्य काया होने पर काल की पहुंच नही। चार काया सो माया रे भाई पांचवी काया दिव्य काया संत काया।

कह सुखराम काल सूं बारे, जे जन सत पद गावे।
हद कूं छाड तजे बेहद कूं, ब्रह्म उलंग हंस जावे ॥ ५ ॥

म:फ: है कि काल से बाहर याने जहां काल की पहूंच नही है। कोई जन सत पद की प्राप्ति करते है वे हद व बेहद दोनो को छोड देते है। ब्रह्म के पद से अलग होना ही ब्रह्म उलंग कर जाना है। ब्रह्म से आगे के:पद की प्राप्ति करना ही सत पद को पाना है।

<u>टूाटक छन्द</u>:- निज नांव मुख से नही भूप आवे, ज्ञान गम सोज गत नांय पावे।
तत्त रूपी गुरू की दिल मेहर भाई, निज नाम जाग्या शिष तन मांही ॥ १ ॥

हे राजा निज नांव ने: अंच्छर मुंह से कहने से नही आता। ज्ञान से उसकी जानकारी व सोधने से उसकी प्राप्ति नही होती। ब्रह्म सरूपी सतगुरू की दिल की दया होने पर ही निज नाम याने सतशब्द की कंठ कंवल पर जागृति हो जाती है।

ज्यां तत्त पाया, सो जन कहाई। कह शिष कूं, कर आ असल मांही ॥
तबे तत्त जाय, मिले प्रेम होई। निज नाम की भूप, तबे गम जोई ॥ २ ॥

जिनके द्वारा सत शब्द आता है वही ओधाधारी सदगुरू कहलाते हैं। और वे शिष्य से कहते हैं कि यह असल कमाई तेरे अन्दर कर ले। और शिष्य का इसके प्रति प्रेम होगा तब उसके घट में ने:अंच्छर आता है। हे राजा निज नाम सतशब्द की जब ही जानकारी होती है।

पूर्व देश उपासक मेटे, पिछम ले सोज तबे नाम भेटे।
वा डोर लागी नही तार तूटे, तिरलोकी फंद सबे घट छूटे ॥ ३ ॥

पूर्वदेश याने संखनाल की उपासना को छोडकर बंकनाल के रास्ते लगे तभी निज नाम की प्राप्ति होती है। वहां पर ध्यान लगने पर वो ध्यान नही टूटता है जब इस जीव का तीन लोक में आना जाना छूटना ही तीन लोक फन्द छूटना है।

निज नाम सूं भूप निज नाम पावे, ज्यों बीज सूं चीज सबे ऊग आवे।
जल प्रेम चहिये सब चीज तांई, कण ड़ाल की विध है दोय मांही ॥ ४ ॥

निज नाम याने राम राम सतगुरू विधि से सुमरण करने पर ही निज नाम याने सतशब्द की प्राप्ति होती है। जैसे पृथ्वी में जैसा बीज डालते है वो ही चीज उग आती है सब चीजों के वास्ते जल प्रेम की जरूरत है। पानी देने से ही कण से डाल फूटती है।

सबे नाम दीपक मुस्याल तारा, निज नाम सूरज मणी रूप धारा।
सबे नाम जडिया संजीवन तांई, निज नाम चिंतामण यूं गुण मांही ॥ ५ ॥

परमात्मा के जितने भी नाम है वो दीपक तारा मशाल के समान है। निज नाम सूर्य के व मणी के समान है। सब नाम जडी व संजीवनी जडी के समान है। जडिया शरीर का रोग गमा देती है। संजीवनी मरे हुए को जिन्दा कर सकती है। अमर नही करती। ऐसे ही निजनाम चिंतामणी की तरह है। उससे जो चाहे सो गुण प्रकट होता है।

केई काम किया मुख किया सो होवे, कोई काम ज्युं दिस्ट भरे नैण जोवे।
यूं नाम निज नाम की गत न्यारी, ज्यूं देव मानव की विध न्यारी ॥ ६ ॥

कितने ही काम मुंह से कहने से होते है कितने ही काम आंखो के इशारे से होते है। ऐसे ही निज नाम व नाम का प्राक्रम अलग अलग है। जैसे देवताओं व मनुष्यों की विधि अलग है। देवताओं को आगे की सूजती है व मनुष्यों को आगे की नही सूजती है।

निज नाम की गम तबे हंस पावे, मुख नांव पूरब तज पिछम दिस आवे।
कहो नाम महिमा करे है बडाई, मन तन मांही मावे नही भाई ॥ ७ ॥

मुंह से सतगुरू विधि से नाम रटा जाता है उससे सतशब्द की जागृति होती है। तो पूरब के सब स्थानो को पारकर बंकनाल में उलट कर आता है तब ही हंस को निज नाम का ज्ञान प्राप्त होता है। उस नाम की बडाई व महिमा मन व वाणी से खूब करते है यह मन तन में नही माना है।

बिना जाप बिना चित है ऐसो, दिन रात अड़ियो सुण गरभ तैसो।
तन मांय धुन हुवे ररंकार भारी, सबे बैण सुण नाम डोर न्यारी ॥ ८ ॥

शब्द की जागृति होने पर बिना जप के व बिना चित के शरीर में दिन रात उसका अनुभव होता है। जैसे स्त्री के गर्भ का अनुभव होता है। शरीर में ररंकार की ध्वनि सब जगह होती है। हे राजा सब वचनो को सुणो, निज नाम के ध्यान का अनुभव अलग होता है।

निज नाम नेचे गुरूदेव होई, जे जन पहूंता घर आद सोई।
दूजा सब गुरू नाम रूपी संसारा, तत रूपी गुरूदेव पारब्रह्म प्यारा ॥ ९ ॥

निज नाम बीज की तरह निश्चय ही यह गुरूदेव है इसके द्वारा ही आत्म चेतन को के:पद आ:पद की प्राप्ति होती है यही आद घर में पहुंचना है। संसार में सब गुरू नाम की तरह है। व सतशब्द की जागृति कराने वाले पारब्रह्म की तरह है।

राजा उवाचः- कह भूप पूंछे संत किणी रीत पाऊं, ओ जग सोज मैं शरणे जावूं।
कहो अंग लछण कहा चैन कहावे, तत्त रूपी जन की कैसे परख आवे ॥ १० ॥

राजा अरज कर रहा है कि हे महाराज ऐसे संतो को मैं कैसे पा सकता हूं। ऐसे महापुरूषो को ढूंढकर मैं उनकी शरण में जाना चाहता हूं। उन महापुरूषो के अंग लक्षण व चैन कैसे होते है।

श्री सुखो वाचः- तत्त रूपी जन की या परख होई, सता समाधि लगे तत्त जोई।
नही तार टूटे दिन रेण सारी, रहे ध्यान त्रृगुटी खंचे नैण भारी ॥ ११ ॥

जिन के द्वारा यह ने : अक्षर आता है उन जन की यह परख है कि उनके अखण्ड सता समाधि लगी रहती है। सतशब्द का निरन्तर अनुभव करते है। दिन रात अनुभव व सिमरण का तार नही टूटना है। उनका ध्यान त्रृगुटी में याने सुखमणा में लगा रहता है व नेत्र ऊपर की तरफ खींचते रहते है।

दिल मांय दिल ऊलट दिल मांय समावे, निज नाम की डोर गेह गेण जावे।
रह अंग ऐसो मुढ नर कोई, तबे बैण बोले हुवे तकत सोई ॥ १२ ॥

आत्मचेतन द्वारा सतशब्द का अनुभव कर उसके साथ बंकनाल में उलटकर ब्रह्मण्ड से ऊपर निरंजण निराकार पद में सतशब्द का अखण्ड अनुभव होना ही निज नाम की डोर गेह गेण जाना है। वे शरीर से तो बेसमझ से दिखते परन्तु वह वचन बोलते है तब सब आश्चर्य करते है।

तत्त रूपी जन की या परख भाई, तन मांय मन हुवे गरकाब मांही।
शिष शरण आया तत्त मांय जागे, सतपुरूष की आ परख ओ अरथ लागे ॥ १३ ॥

ओधाधारी जन की यह परख है कि उनका मन भी उसी में लगा रहता है। जब शिष्य अणभै ज्ञान धारण करते है तो सतशब्द की जागृति हो जाती है। यह सतगुरू की परीक्षा है और यही इसका अर्थ है।

सतपुरूष की परख आ सत भाई, बिना शिष करणी लेह धाम जाई।
हुए आप जैसो निज नाम पावे, तन मांय उलटर घर आद जावे ॥ १४ ॥

अणभै वाणी बनाने वाले सतगुरू के ये वचन सत्य है कि वह शिष्यो याने हंसवृति आत्माओं के शुभ व अशुभ कर्म नही देखते है विधि से भजन करने पर निज नाम आ जाता है। छः पूर्व छः पश्चिम के कंवलो का छेदन करके परमपद में मिल जाता है।

सतपुरूष की परख आ भूप होई, सबे नाम न्यारा कह अरथ जोई।।
परब्रह्म है ब्रह्म तिजीस माया, सतपुरूष सांई यो भेद लाया ॥ १५ ॥

हे राजा सतपुरूषो की यह परीक्षा है कि अणभै वाणी में बावन अक्षरो व सभी साधनो का विस्तार से वर्णन किया है और आनन्द ब्रह्म परमात्मा में मिल कर ब्रह्म पारब्रह्म माया तीनों का निरणा किया है।

राजा उवाचः- कह भूप हो संत यो न्याव कीजे, परब्रह्म माया ब्रह्म खोज दीजे।
ओ हम सुणयो ब्रह्म अर माया, तीजो न सुणयो तुम खोज लाया ॥ १६ ॥

राजा मः से प्रार्थना कर रहा है कि मुझे यह समझाईये मैने तो माया व ब्रह्म सुना है। आप तीसरे पारब्रह्म को बता रहे है जिसे मैने नही सुणा। ब्रह्म माया व परब्रह्म के पदो को अलग अलग समझाईये।

श्री सुखो वाचः- हे भूप प्रसंग कहूं एक तोई, पारब्रह्म माया यूं ब्रह्म होई।
परब्रह्म जल रूप ब्रह्म बीज हुवा, तर जेम माया विस्तार जूवा ॥ १७॥

म:फ: है कि हे राजा मैं इसका भेद समझाता हूं। परब्रह्म, माया व ब्रह्म इस तरह है पारब्रह्म का पद जल रूप है, ब्रह्म का पद बीज की तरह है, माया का पद वृक्ष की तरह है व उसका फैलाव अलग है।

है बीज बन में बन बीज मांही, यूं ब्रह्म माया परब्रह्म नांही।
ब्रह्म ब्रह्म गायां ब्रह्म लग जावे, से हंसा उलटर फेर जूण आवे ॥ १८॥

बीज वृक्ष में है, वृक्ष बीज में है ऐसे ब्रह्म माया व पारब्रह्म का पद अलग है। ब्रह्म के पद से वापिस आकर फिर शरीर धारण कर लेता है।

है गोड़ डाला फूल पात हुवा, यूं देव औतार संसार जूवा।
ज्यों बीज तर में यो ब्रह्म होई, परब्रह्म न्यारा जल रूप होई॥ १९॥

जैसे वृक्ष के डाले फूल पते होते है ऐसे ही अवतार व संसार अलग अलग है। जैसे बीज वृक्ष में है ऐसे ही ब्रह्म सर्वत्र सब जगह व्यापक है, पारब्रह्म का पद अलग वो जल की तरह है।

सुण नाम का भेद है भूप न्यारा, परब्रह्म आद है कहूं भेद सारा।
जिन प्रसंग सूं जो पुरूष हुवा, सुण सुरत बंधी यूं भेद जूवा ॥ २०॥

हे राजा निज नाम याने सतशब्द का भेद अलग है पारब्रह्म पद अनादि है। उसका सब भेद कहता हूं जिस आधार पर सतशब्द है उनका सब अलग भेद है। वो मैं तुमसे कहता हूं।

परब्रह्म सूं सुण सतशब्द राई, जिंग शब्द निकस्यो तां शब्द मांही।
जिंग शब्द सूं अनाहद हुवा, अनाहद से सुण घुरे नाद जुवा ॥ २१॥

हे राजा यह सतशब्द परब्रह्म से आता है। फिर उस सतशब्द में से जिंग शब्द निकला, फिर जिंग शब्द से अनाहद हुवा। फिर अनाहद से नाद घुरने लगा।

ऊण नाद सूं सुण साकार आया, साकार ने सुण ररंकार जाया।
ररंकार से सुण दिल पुरूष हुवा, दिल पुरूष सूं सुण चेतन हुवा ॥ २२॥

उस स्वांसा के आधार से बाणी के द्वारा सतगुरू विधि से राम राम किया जाता है। उससे ररंकार याने सतशब्द की जागृति होती है। सतशब्द का आत्मचेतन से अनुभव होना ही दिल पुरूष होना है उस शब्द से ही ज्ञान रूपी चेतनता आई है।

चेतन सूं सुण घट ग्यान पाया, हर ग्यान से ध्यान विग्यान आया।
विग्यान सूं सुण समाद लागे, समाद सूं सुण परब्रह्म सागे ॥ २३॥

ग्यान रूपी चेतनता से ही खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड का व सारे शरीर का अनुभव होना ही घट ग्यान पाना है। ध्यान से शब्द का अनुभव होना ही हर ग्यान का होना है। इससे आगे ब्रह्मण्ड से ऊपर पांच तत्वों नव तत्व लिंग शरीर त्रीताप से अलग निरंजन निराकार पद में शब्द का अखण्ड अधर अनुभव होना ही विज्ञान आना है। व सता समाधि का लगना है। सता समाध का अखण्ड अनुभव होना पारब्रह्म सागे है, पारब्रह्म का पद जो सत माया के साथ है उसे सतस्वरूप भी कहते है।

चौपाईः- हे राजा ऊंडो ज्ञान समझ ऊर लीजे, अंध धुंध कोई काम न कीजे।
सतशब्द की सोजी करिये, उला मांय उलझ मत रहिये ॥ १॥

हे राजा इस ज्ञान को हृदय में अच्छी तरह समझो। बिना समझे कोई काम मत करो। उस सतशब्द की सोजना करो जो शरीर से अलग अखण्ड अनुभव होता है। जो साधन शरीर के आधार से होते है। वो सब उली तरफ के है। उनमे मत उलझे रहो।

हे राजा आशा चाह करो क्या मांही, ता काजे ते भक्ति संभाई।
मैं बूजूं तुम कहो विचारी, कोण धाम पे सुरत तुम्हारी ॥ २ ॥

हे राजा जो भक्ति तुम कर रहे हो उससे तुमने क्या आशा व चाहना लगा रखी है। किस धाम की प्राप्ति करना चाहते हो यह मैं तुमसे पूछता हूं विचार कर कहो।

राजा उवाचः- हो स्वामीजी बिसन धाम पर सुरत हमारी, बहुत सुखां पर आशा धारी।
मुक्त काज हम भक्ति करां, गरभ काज हरि हिरदे धरां ॥ ३ ॥

हो स्वामीजी बैकुण्ठ की प्राप्ति व बहुत सुख मिलने की आशा लगा रखी है। बैकुण्ठ की प्राप्ति व गर्भ में वापस नही आने की इच्छा से ही विष्णु भगवान की भक्ति करता हूं।

श्री सुखो वाचः- हे राजा सुख की लार दुख सुण होई, गरभ मुक्त लग मिटे न कोई।
विष्णु धाम लग काल ग्रासे, काम क्रोध दोनो रह बासे ॥ ४ ॥

हे राजा सुख के साथ दुख लगा हुआ है बैकुण्ठ की प्राप्ति तक गरभ में आना जाना नही मिटता है। विष्णु धाम बैकुण्ठ तक काल की पहोंच है वहां कामना क्रोध भी है।

हे राजा जहां लग फोज काल की जावे, तहां लग का सुख झूंठ कहावे।
तीन लोक सुख बंछे कोई, तहां लग सुखी कदे न होई ॥ ५ ॥

हे राजा जहां तक काल की पहुंच है। वहां तक के सुख स्थायी नही है। यदि कोई तीन लोकों के सुख की इच्छा करता है वहां तक वह कभी भी सुखी नही हो सकता।

हे राजा चन्द्र सूर पवन अर पाणी, धर ब्रह्मण्ड लग करो पिछाणी।
तीनों देव जहां लग भय है, ओ ऊपाव काल मुख जे है ॥ ६ ॥

चन्द्रमा सूर्य हवा जल पृथ्वी आकाश व ब्रह्मा विष्णु महादेव का पद है। वहां तक भी काल का डर है। जब तक यहां तक का साधन करते है तब तक जन्म मरण से छुटकारा नही होता।

हे राजा सुरगुण नाम धाम सब सारा, अे हद का सुण है बोहारा ।
जे साहिब कूं लखे नही कोई, जामें अे ही सूल सुण होई ॥ ७ ॥

हे राजा सुरगुण के सब नाम व धाम है। यह तीनों लोक में ही रखने वाले है। जो परमात्मा के पद की प्राप्ति नही करते है वे तीन लोकों में ही रहते है। यह ही सूल सुण होना है।

हे राजा जक्त लेण ये धाम बणाया, सब औतार काज इण आया।
सब ही जीव हद में राख्या, तिण काज ये शास्त्र भाख्या ॥ ८ ॥

हे राजा जगत को बसाने के लिये ही तीन लोक चवदा भवन सात द्वीप नो खण्ड बनाये है। सब अवतार भी इसी काम के लिये आये है। सब ही जीव को हद में याने तीन लोको में रखने के लिये ही यह शास्त्र बनाये है।

हे राजा इण काजे अे शास्त्र किया, ज्यों मंदिर के जुग बंधन दिया।
ऐसे वेद चार कर भाई, तीन लोक बांध्या इण मांही ॥ ९ ॥

हे राजा जगत को बसाने के लिये ही शास्त्र बनाये है। जैसे जगत को मंदिर का बन्धन लगा

दिया मंदिर में दर्शन करने से ही कल्याण मानते है। इसी तरह चार वेदो की रचना कर वेदो के ज्ञान द्वारा शुभ करणियों का फल तीन लोको में भुगतना पडता है।

हे राजा मूरख तके धंध ही जाणे, ज्ञानी उलज्या वेद बखाणे।
जे सुलज्या आगे हरी चिन्ही, जो कुण सुरगुण सेवा किन्ही ॥ १० ॥

हे राजा मूर्ख है वे तो धन्धे में ही लगे रहते है, ज्ञानी वेदों के ज्ञान से करणियो द्वारा परमात्मा की प्राप्ति मानते है। करणियों से परमात्मा की प्राप्ति नही होती यही उलझना है। आगे भी जिन्होंने परमात्मा पद की प्राप्ति की, उनमे से किसने साकार की उपासना की है।

हे राजा ब्रह्मा विष्णु महेसर देवा, वे सो करे कौन की सेवा।
ऊ तत्त ज्ञान विचारो राई, कौन शब्द या मांड उपाई ॥ ११ ॥

हे राजा ब्रह्मा विष्णु महादेवजी यह किसकी सेवा याने भक्ति करते है। हे राजा उस तत याने ब्रह्म प्राप्ति के ज्ञान का विचार करो। किस शब्द से इस सृष्टि की रचना हुई है।

हे राजा सुण समझ विचारी, आगे रिषी कौन विध धारी ।
ज्यांरा शिष औतार कहाया, कौन ज्ञान वे हिरदे लाया ॥ १२ ॥

हे राजा सुणो समझो विचारो आगे ऋषियो ने कौनसी विधि धारण की थी, जो अवतार उनके शिष्य कहलाये, उन्होने कौनसा ज्ञान हृदय में धारण किया था।

यूं तो कह ब्रह्म सब कोई, पण देह धारियां सूं माया होई।
ज्यूं जल सूं चीज उपज सब जावे, सुण जल को रूप किसी विध कहावे ॥ १३ ॥

यों तो सब ही ब्रह्म कहते है। परन्तु शरीर धारण करने से माया कहलाती है। जैसे जल से सब चीजे पैदा होती है परन्तु वह जल का रूप कैसे कहला सकती है।

हे राजा नाना विध की चीजां सारी, छोटी मोटी हल्की भारी ।
अेतो सब ही जल से होई, जल को रूप किसो कहो सोही ॥ १४ ॥

हे राजा जल से नाना तरह की चीजे होती है छोटी मोटी हल्की व भारी है। परन्तु इनमें जल का रूप कौनसा है वह मुझे बताओ।

हे राजा जल की चीज सकल सो कुवावे, किण ही सूं सुण प्यास न जावे।
यूं सुण मोख ब्रह्म बिन नांही, हे राजा सुण समझो मांही ॥ १५ ॥

हे राजा सब चीजें जल से ही बनी है। किसी से भी प्यास नही जाती। ऐसे ही के:पद की प्राप्ति के बिना मोक्ष नही होती इसको तुम हृदय में समझो।

हे राजा ब्रह्म ध्यान में फेर कहावे, बिना भेद सुण मोख न जावे।
ज्यों जल सूं सुण न्हावे धोवे, पीवण विध बिन प्यास न खोवे ॥ १६ ॥

हे राजा ब्रह्म के ध्यान में अलग अलग फरक है, कोई मन से ब्रह्म का ध्यान करता है। कोई चित से चिन्तन करता है, कोई बुद्धि से ब्रह्म का निश्चय करता है, इन सब साधनों के करते हुये भी भेद से भजन किये बिना ब्रह्म पद की प्राप्ति व मोक्ष नही मिलता, ऊपर जो साधन बताये है वे सब नहाने धोने की तरह है जैसे जल से नहाते धोते है परन्तु जल पिये बिना प्यास नही जाती।

हे राजा जल की चीज जल ही सूं धोवे, तब निरमल होय उजली होवे।
जल बिन खसे बहुत विध कोई, चीज बीज से निरमल नही होई ॥ १७ ॥

हे राजा जो चीज जल से पैदा हुई है उसे जल ही से धोने से वह साफ व उजली होती है। जल के बिना दूसरी चीजों से साफ नही होती है न बीज से साफ होती है।

हे राजा भारी चीज तके जग मांही, तैसे सब औतार कहाई।
हल्की चीज बस्त सब ठांणो, ऐसे जग संसार बखाणो ॥ १८ ॥

हे राजा जगत में सब अवतार भारी चीज व संसार के सब जीव हल्की चीज की तरह है।

हे राजा भारी चीज संग जे जावे, तो हल्की संग शोभा नही पावे।
पण जल को रूप हुवे नही भाई, लाख चीज भारयां संग जाही ॥ १९ ॥

हे राजा भारी चीज यानि अवतारों की भक्ति करना फिर भी अच्छा परन्तु उससे ब्रह्म पद की प्राप्ति नहीं होगी। हल्की यानि शरीरधारी की पूजा करता है तो तेरी शोभा नहीं होगी।

हे राजा छोटी बडी चीज सो भाई, जल पियां बिन बधे न कोई।
क्या अवतार मिनख नर लोई, ब्रह्म ध्यान बिन मुक्त न होई ॥ २० ॥

हे राजा जल के बिना चाहे छोटी चीज हो या मोटी नही बढती है, चाहे अवतार हो या मनुष्य ब्रह्म का ध्यान किये बिना मुक्त नही होती है।

हे राजा ब्रह्म ध्यान बिन धरम कहावे, सो तो सब माया को ध्यावे।
ज्यांरा भरम न छूटे कोई, वे उलटा माया बस होई ॥ २१ ॥

हे राजा ब्रह्म प्राप्ति के ध्यान बिना जितने धर्म व साधन है उन सबसे माया की प्राप्ति होती है। जिनके भरमों का नाश नही होता वह माया के वश में ही रहते व जन्म मरण से रहित नही होते है।

राजा उवाचः- हो स्वामीजी पंडु तके धरम पुत्र किया, बहुत दान विप्रां ने दिया।
रूखमांगद अमरीष कहाया, वे ही धरम सुरगुण ने ध्याया ॥ २२ ॥

राजा ने कहा हो स्वामीजी पाण्डवो नें बहुत धरम पुत्र ब्राहमणो को दान दक्षिणा दी राजा रूखमांगद व राजा अम्बरीष हुये उन्होंने भी सुरगुण धर्म की आराधना की।

श्री सुखो वाचः- हे राजा रूखमांगद अमरीषज होई, वे भी मोख न पूंता कोई।
पांडु कृष्ण फेर यहां आसी, सुख दुख फेर जक्त संग पासी ॥ २३ ॥

मःफः है कि हे राजा अम्बरीष व रूखमांगद भी मोक्ष में नही पहुंचे है। पाण्डव व श्रीकृष्णचन्द्रजी फेर यहां आवेंगे व जगत में सुख दुख की लीला करेंगे।

हे राजा सुरगुण नाम धाम सब सेवा, समज्यां बिना भजे सब देवा।
जे सुण समझ सुलजिया आई, जां किण सुरगुण सिमरयो जाई ॥ २४ ॥

हे राजा सुरगुण के नाम धाम है व भक्ति है। समझे बिना सब ही देवताओं की भक्ति करते है। सुणो जिन्होंने समझ कर ब्रह्म की भक्ति की है, उन्होंने कब सुरगुण का सिमरण किया।

हे राजा सुण वचन हमारा, कौन मत का ज्ञान तुमारा।
कौन शब्द से सिमरण करो, कौन देव सिर पूजा धरो ॥ २५ ॥

मेरे वचनो को सुणो तुम्हारा ज्ञान कौन से मत का है। किस शब्द याने किस नाम का सिमरण करते हो। कौन से देवता की आराधना करते हो।

राजा उवाचः- हो स्वामीजी दया पुन्न यो मत हमारा, सुरगुण ज्ञान हिरदे हम धारा ।
कृष्ण कृष्ण यो सिमरण करां, कृष्णदेव सिर पूजा धरां ॥ २६ ॥

हो स्वामीजी दया रखना पून्य करना ऐसा मन में विचार है, सुरगुण का ज्ञान हृदय में धारण कर रखा है। कृष्ण भगवान का सिमरण व आराधना करता हूं।

श्रीसुखो वाचः- हे राजा दया पुन्न सुकरत सुण होई, सुख दुख लारे रहे दोई।
सुरगुण ज्ञान हद लग जावे, बेहद की गम कदे न पावे ॥ २७॥

म:फ: है कि हे राजा दया करना पुन्न करना यह शुभ करम है। इन करमों से सुख दुख से अलग नही होता। सुरगुण की भक्ति तीनों लोकों में सुखो की प्राप्ति कराती व ब्रह्म पद की प्राप्ति नही कराती।

राजा उवाचः- हो स्वामीजी सुरगुण निरगुण नही ए दोई, हद बेहद कहो कैसे होई।
हम तो सबे एक कर जांणी, कृष्ण ब्रह्म में दुज न ठांणी ॥ २८ ॥

राजा ने कहा हो स्वामीजी साकार व निराकार ये दो अलग अलग नही है। हद बेहद क्या होती है। मैं तो कृष्ण भगवान व ब्रह्म में कोई फरक नही समझता।

श्रीसुखो वाचः- ब्रह्म अरूप रूप सो माया, बोलणहार एक किम कुवाया।
तीन लोक हद जंवरो खावे, बेहद जहां काल नहीं जावे ॥ २९ ॥

म:फ: है कि ब्रह्म का पद अरूप है आकार है वो माया है। बोलने वाला आकारी व ब्रह्म निरंजण निराकार एक कैसे हो सकते है। तीनो लोकों में काल की पहुंच है। ब्रह्म पद में काल नही पहुंचता।

राजा उवाच :- हो स्वामीजी वे ही विष्णु वे ही कृष्ण कहावे, वे ही हद बेहद जावे।
सब औतार तीरथंकर होई, कृष्ण देव बिन अवरन कोई ॥ ३० ॥

राजा ने कहा हो स्वामीजी कृष्ण भगवान ही विष्णु है। हद बेहद में भी वो ही है। जितने भी अवतार व तीर्थंकर है। कृष्ण भगवान के सिवाय और कोई नही है।

श्रीसुखो वाचः- हे राजा देह का नाम तके सब माया, उपजे खपे जगत में काया।
सुरगुण बेहद किम जावे, सो राजा जम हाथ बिकावे ॥ ३१ ॥

म:फ: है कि हे राजा सब शरीर धारी का नाम सब माया है, शरीर जगत में उपजता खपता है। शरीर धारी ब्रह्म पद में कैसे जा सकते है शरीरधारी को शरीर छोडना पडता है।

हे राजा ओऊं शब्द मूल है माया, तांकी बणी सकल अे काया।
उपजे खपे सो माया जाणो, ईखर शब्द सो करता ठाणो ॥ ३२ ॥

पांच तत्वों के साथ जो चेतन शक्ति है उसको ओऊं कहते है सब शरीर उसी के बने हुए है जो होकर मिट जाते है। उसको माया कहते है अक्षर ब्रह्म का पद करता पद है।

हे राजा धर धर देह अवतार कहावे, से तो सकल विष्णु से आवे।
यांरे परे निरंजन देवा, तांकी करे सकल ये सेवा ॥ ३३ ॥

हे राजा जो शरीर धारण कर अवतार कहलाते है। वो अक्षर ब्रह्म जो सृष्टि करता पद है। उससे आते है। उस पद को म: ने यहां विष्णु कहा है। इस पद के आगे निरंजन निराकार सचिदानन्द पारब्रह्म का पद है। उसके नांव की भक्ति करते है।

हे राजा माया ब्रह्म दोय है भाई, एक किसी विध कहियां जाई।
माया सुख दुख भुगते दोई, ब्रह्म सदा सुण नेः चल होई ॥ ३४॥

हे राजा माया ब्रह्म दो है। इनको एक कैसे कहा जा सकता है। माया याने शरीरधारी को तो सुख दुख का अनुभव होता है। ब्रह्म का पद नेः चल याने सत है।

राजा उवाचः- हो स्वामीजी राम कृष्ण तो अवगत होई, माया स्वरूप नही अे दोई।
याने सो माया ठहरावे, सो सब ही नर भूला जावे ॥ ३५॥

राजा ने कहा हो स्वामीजी राम कृष्ण तो अवगत है इनकी गति को कोई नही जानता, यह माया स्वरूप नही है। इनको जो माया बतलाते है। वह सब ही नर भूल रहे है।

श्री सुखो वाचः- हे राजा दुर्वासा ऋषि कहो क्या किया, कौन शब्द कृष्ण कूं दिया।
उ सत शब्द समझ उर लीजे, भरम ज्ञान में मन नही दीजे ॥ ३६॥

मःफः है कि हे राजा दुर्वासाजी ने कृष्ण को कौन सा शब्द बताया उस सतशब्द को हृदय में समझो। भरम ज्ञान याने माया को ब्रह्म मानता है। तो उसमें मन मत लगाओ।

हे राजा वास्टमुनि सुण रिषी कहाया, ज्यां रामचन्द्र कूं गहै समझाया।
उ सत ज्ञान समझ तूं राई, और भरम सब दे छिटकाई ॥ ३७॥

वशिष्ट मुनि ऋषि थे। उन्होंने रामचन्द्रजी को ज्ञान दिया। उस सच्चे ज्ञान को समझो और भरमों को छोडो।

हे राजा रामचन्द्र कूं नेः चल को किया, उनको ज्ञान वास्ट मुनि दिया।
लक्ष्मण कूं सीता समझायो, कौन शब्द दे भरम भगायो ॥ ३८॥

हे राजा रामचन्द्रजी को वशिष्ठजी के द्वारा ही सतज्ञान की प्राप्ति हुई, लक्ष्मणजी को सीताजी से वो सतज्ञान मिला। इनको कौनसा शब्द देकर भरम मिटाया।

रिषभदेव राजा सो होई, रामचन्द्र को जन्म न कोई
वो सो देव कौन सुण ध्याया, ता दरशण सब देवत आया ॥ ३९॥

रिषभदेवजी राजा थे। उस वक्त में रामचन्द्र जी का जन्म भी नही हुआ था। उन्होंने किसकी भक्ति की जो उनके दर्शन करने के लिए सब देवता आये थे।

हे राजा महावीर तीर्थंकर सारा, नेमनाथ को शब्द उचारा।
ज्यां ने कृष्ण न पूज्या आई, वे सो मिल्या ब्रह्म में जाई ॥ ४०॥

हे राजा सब तीर्थंकरो ने व नेमनाथजी ने किस शब्द की आराधना की, उन्होने कृष्ण भगवान की न पूजा की न भक्ति की, वे सब ब्रह्म में जाकर मिले व ब्रह्म रूप हो गये।

हे राजा हस्तामल पे सब चल आया, नाना विध का ज्ञान सुणाया।
काहूं से नही बोल्या कोई, दत्त के शब्द शिष सो होई ॥ ४१॥

हे राजा हस्तामलजी ने मौन धारण कर रखी थी। उनके पास सब चलकर आये व कई तरह के ज्ञान सुनाये वो किसी से नही बोले, दतात्रेयजी का ज्ञान सुनकर उनके शिष्य हो गये।

हे राजा ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा, दत्तदेव कूं बुज्या भेवा।
हो स्वामीजी तुम कौन कहावो, किसका पुत्र कौन को ध्यावो ॥ ४२॥

हे राजा ब्रह्मा विष्णु महादेवजी ने दतात्रेयजी को भेद पूछा कि आप कौन हो व किसके पुत्र हो व किसकी आराधना करते हो।

तब सो देवदत्त सो बोल्या, ब्रह्म ज्ञान ताला सुण खोल्या।
मैं तीन देव का पुत्र कहावुं, हर ब्रह्म ध्यान हिरदा में लावुं ॥ ४३ ॥

तब दतात्रेयजी ने ब्रह्म प्राप्ति का ज्ञान बताया और कहा कि मैं तीनों देवो का पुत्र हूं। हर समय ब्रह्म का ध्यान करता हूं।

हे राजा काग भुसन्डी सुण रिषी कहावे, वे सो शब्द कौन मुख गावे।
वांरी उमर में औतारा, अनन्त क्रोड़ सो चले विचारा ॥ ४४ ॥

हे राजा काग भुसन्डी ऋषि है वे किस शब्द की आराधना करते है। उनकी आयु में कितने ही अवतार आये और गये है।

हे राजा रूम ऋषि क्या सिमरे भाई, नेःचल अमर हुआ जग मांही।
ऊ सो शब्द सोज ऊर लीजे, तन मन अरप काज सो कीजे ॥ ४५ ॥

हे राजा लोमष ऋषि किसका सिमरण करते है वे जगत में स्थिर व अमर हुये बैठे है उस शब्द की खोज कर तन मन से सतशब्द की आराधना कर आत्मा को परमात्मा पद की प्राप्ति कराना ही काज करना है।

हे राजा अगस्त मुनि क्या सिमरण कियो, तिण सुण समुद्र घूंट भर पियो।
वां सरगुण कब सेवा संजोई, ज्यां री इच्छा ऐसी सुण होई ॥ ४६ ॥

हे राजा अगस्त मुनि ने किसका सिमरण किया जिन्होंने समुद्र को तीन चलुं में पी लिया। उन्होंने कब सुरगुण की आराधना की जिनमें ऐसा प्राक्रम था।

हे राजा गोपीचंद भरतरी जाणो, गोरखनाथ जलंधर ठाणो।
या औतार न मान्या कोई, अे कोण शब्द ले नेः चल होई ॥ ४७ ॥

हे राजा गोपीचंदजी भरतरीजी, गोरखनाथजी व जलंधरनाथजी हुवे है। इन्होंने अवतारो की भक्ति नही की, यह कौनसा शब्द लेकर अमर हुवे है।

हे राजा मुसलमान औतार न माने, हिन्दू तके पीर नही जाणे।
जैन पीर औतार ही त्याग्या, वे सो कहो कोण सूं लाग्या ॥ ४८ ॥

हे राजा मुसलमान अवतारों को नही मानते। हिन्दू पीरों को नही मानते। जैनियो ने अवतारों व पीरों दोनों को ही नही माना। वे किसकी आराधना करते है।

हे राजा सब को धर्म एक सो सांचा, और धर्म सब ही सुण काचा।
उपजे खपे होय मिट जावे, से सब ही धर्म माया कुवावे ॥ ४९ ॥

हे राजा सबका धर्म एक है। वो ही सच्चा है और सब ही धर्म असत है। जो उपजते है, खपते है, होकर मिट जाते है, उन सबकी भक्ति माया की है।

<u>राजा उवाच</u>:- हो स्वामीजी सबका धर्म एक किम होई, ए हिन्दू तुरक कहिजे दोई।
कृपा कर मोकू समझावो, ऊ एक धर्म सो मोय बतावो ॥ ५० ॥

राजा ने कहा हो स्वामीजी सबका धर्म एक कैसे होता है। हिन्दू व मुसलमान अलग अलग है। उस एक धर्म को आप कृपा करके मुझको समझाइये ।

श्री सुखो वाचः- हे राजा बावन अंछर न्यारा होई, पण एक शब्द सूं बोले सोई॥
जिण सूं सुण पैदा वे हुवा, ऊ ही हरफ बोलावे जुवा ॥५१॥

हे राजा बावन अक्षर अलग अलग है। परन्तु एक स्वांसा से ही सब बोले जाते है। जिस स्वांसा से यह अक्षर बनते है। उसी के आधार से अलग अलग बोले जाते है।

हे राजा एक हरफ का बावन होई, बावन हरफ एक में सोई।
उन ही से वे पैदा कीजे, ऊ ही शब्द वां ही पर दीजे ॥५२॥

हे राजा एक ही स्वांसा से बावन हरफ होते है व बावन अक्षर स्वांसा के ही आधार पर है। जिस स्वांसा से यह बने है। उसी स्वांसा से बोले जाते है।

हे राजा बावन हरफ को है धरम स्वांसा, सांस शब्द पर मन की आशा।
मन ऊपर सुण चेतन होई, चेतन परे पुरूष नही कोई ॥५३॥

हे राजा बावन हरफ का आधार स्वांसा है स्वांसा जब तक चलता है तभी तक मन संकल्प विकल्प करता है। मन के ऊपर आत्म चेतन के परे कोई पुरूष नही है।

हे राजा यूं सुण धरम सकल को सोऊं, ता ऊपर सुण कहिये ओऊं।
ओऊं परे ब्रह्म सत जाणो, ओ धरम सबको एक बखाणो ॥५४॥

हे राजा सब ही का धर्म स्वांसा है सुणो स्वांसा के आधार से चलते फिरते है, खाते पीते व बोलते है, स्वांसा के आत्म चेतन का आधार है। आत्म चेतन के परे जो ब्रह्म है वो सत है। आत्मचेतन का वो ही आधार है। इस तरह सबका धर्म एक है। याने एक ही स्वांसा के सबके आधार है।

हे राजा औतार ब्रह्म ही कुवावे, तो ब्रह्म ध्यान में सब ही आवे।
न्यारो कछु रहे नहीं कोई, सब औतार ब्रह्म में होई ।।५५।।

हे राजा तुम अवतारों को ब्रह्म मानते हो तो ब्रह्म के ध्यान में सब ही आ जाते है। सब अवतार ब्रह्म में ही है। तो अलग कुछ नही रहता।

हे राजा अवतार सरावे कोई, तो ब्रह्म लग ओ जाणो होई।
ताते ध्यान ब्रह्म को कीजे, तज डाला सुण मूल गहिजे ॥५६॥

हे राजा कोई अवतारों की भक्ति करते है। तो ब्रह्म तक ही जाते है। इसलिये ब्रह्म का ही ध्यान करना चाहिये। डाला को छोडकर मूल को ही पकडना चाहिये।

हे राजा निरगुण सुरगुण सुण होई, ता मध फेर कछु नही होई।
अब गुण प्राक्रम न्यारो सुण कहावे, ईण कारण ब्रह्म सुलज्या ध्यावे ॥५७॥।

हे राजा निरगुण व सुरगुण यह दो भक्ति है। इसमें किसी तरह का फरक नही है। अब इनका गुण व प्राक्रम अलग अलग है। इसलिए इसमें समझने वाले ही ब्रह्म की भक्ति करते है।

हे राजा ज्यों सुण नाज आंण के कोई, भोजन करयो बहुत विध लोई।
है सागे पण प्राक्रम जुवा, सुण राजा यूं सुरगुण हुवा ॥५८॥

हे राजा कोई अनाज लाकर कई प्रकार के भोजन बनाते है। अनाज तो वो ही है। पर उसका गुण अलग अलग है। इस तरह ब्रह्म से ही साकार हुवे है।

हे राजा नारी पुरूष कहावे दोई, ऐ पांचो तत्त का सब ही होई।
पण गुण प्राक्रम न्यारो सो जाणो, यूं सुरगुण सुण ब्रह्म बखाणो ॥ ५९ ॥

हे राजा स्त्री पुरूष ये दो कहलाते है। इन दोनों के शरीर पांच तत्व के है। परन्तु स्त्री पुरूष का प्राक्रम अलग अलग है। ऐसे ही सुरगुण व निरगुण का प्राक्रम अलग अलग है।

हे राजा जैसो किसब करे नर लोई, तैसो नाम प्राक्रम होई।
ऊ ही करसो ऊ ही साध कहावे, ऊ ही चोर जग साह गावे ॥ ६० ॥

हे राजा मनुष्य जैसा उधम करता है। वैसा ही उसका नाम व प्राक्रम होता है, जैसा काम करता है वैसा ही कहलाता है। वही किसान, साधु, चोर व साहुकार कहलाता है।

हे राजा ओलो असल नीर को कहावे, यूं औतार ब्रह्म सूं आवे।
पण जल को काम जल से ही होई, ओले सू सुण सजे न कोई ॥ ६१ ॥

हे राजा ओला पानी से ही बनता है। इसी तरह अवतार ब्रह्म से ही आते है। परन्तु जल का काम जल से ही होता है। जल का काम ओले से नही होता।

हे राजा ओलो गले नीर हो जावे, जब उण जल में फेर न कहावे।
पण ओला नाम रहे नही कोई, नीर ही नीर पुकारे लोई ॥ ६२ ॥

हे राजा ओला गल कर जल हो जाता है। जब उस जल में कोई फर्क नही रहता तब ओले का नाम नही रहता, सब उसको जल ही जल कहते है।

हे राजा यूं औतार ब्रह्म सूं आवे, फेर उलट ब्रह्म मांय समावे।
देह को नाम घडे सम जांणो, ब्रह्म नीर सो आद बखाणो ॥ ६३ ॥

हे राजा ऐसे ही अवतार ब्रह्म से आते है और ब्रह्म में जाकर मिलते है। शरीर का नाम ओले के व ब्रह्म का पद जल के समान है।

हे राजा सुण वचन हमारा, बूझूं लछण ज्ञान तुमारा।
धर औतार जग में आया, किण कारण हर तोय पठाया ॥ ६४ ॥

हे राजा मेरे वचनो को सुणो मैं तुम्हारे ज्ञान व लक्षण को पूछता हूं। यह शरीर धारण कर जगत में आये हो, परमात्मा ने तुम्हें यहां किस काम के लिए भेजा है।

<u>राजा उवाच</u>:- हो जनराय न्याव के तांई, हर भेज्यो मोय जग के मांही
सब सो सुखी रहे सो करणा, ये लछ सोज नाम ऊर धरणा ॥ ६५ ॥

राजा ने कहा हे महाराज परमात्मा ने मुझे जगत में न्याय करने के लिये भेजा है। सब प्रजा सुखी रहे। ऐसा काम करना, अच्छे लक्षण धारण करके परमात्मा की भक्ति करना।

<u>श्री सुखो वाच</u> :- हे राजा तुम लेता हो कन देता सोई, करता हो के अकरता सोई।
सुता हो कन जागो राजा, है शरम के नही घट लाजा ॥ ६६ ॥

म:फ: है कि हे राजा तुम लेते हो या देते हो, करता हो या अकरता हो, हे राजा तुम सोते हुये हो या जाग रहे हो, तुम्हारे शरीर में लज्जा व शर्म है या नही है।

<u>राजा उवाच</u> :- हो स्वामीजी लेता हूं अर देता सोई, कर्ता होयर अकर्ता होई।
सूता हूं पण जागूं स्वामी, तुम जांणत सब अन्तरयामी ॥ ६७ ॥

राजा ने कहा हे स्वामीजी लेता भी हूं और देता भी हूं, कर्ता व अकर्ता दोनो ही हूं। सोता भी

हूं व जागता भी हूं। आप अन्तरयामी सब जानते है।

श्री सुखो वाचः- हे राजा क्या तुम लेवो क्या तुम देवो, कैसे कर्ता अकर्ता सेवो।
कैसे सुता कैसे जागो, कैसे जगत काम को दागो ॥ ६८ ॥

म:फ: है कि हे राजा तुम क्या लेते व क्या देते हो। किस तरह कर्ता व अकर्ता हो। किस तरह सोते वे किस तरह जागते हो। कैसे जगत का कार्य करते हो।

राजा उवाच :- हो स्वामीजी देवूं तन मन धन जन के तांही, लेवुं गुण सतो गुण मांही।
जाग्रत रीत आद की जोई, सूता राम भरोसे सोई ॥ ६९ ॥

राजा ने कहा हो स्वामीजी मैं प्रजा को तन मन धन देता हूं व मै सतोगुण धारण करता हूं। जागने की रीति अनादि है, सोता हूं तो राम भरोसे सो जाता हूं।

हो स्वामीजी कर्ता राज अनीत अकर्ता, जीत हमारे जीवन मरता।
काम हमारे रिछया करणी, लज्या नीत अनीत न धरणी ॥ ७० ॥

हो स्वामीजी मैं राज करता हूं। पर अनीति से नही करता। राजा की जीत जीवन व हार मरण है। मेरा काम रक्षा करने का है। लज्जा याने नीति धारण करता हूं। अनीति धारण नही करता।

श्री सुखो वाच :- हो राजा या तो असल नही होई, आवागवण मिटे नही कोई।
मैं कहूं ज्ञान धार तूं राजा, ज्यों सब ही सरे तुमारे काजा ॥ ७१ ॥

म:फ: है कि हे राजा यह बात ठीक नही है। इससे जन्मना मरना नही मिटता। हे राजा मैं कहूं उस ज्ञान को तुम धारण करो। जिससे तुम्हारे सब कार्य सिद्ध हो जायेंगे।

हे राजा दीजे मन संतन के तांही, लीजे भेद ब्रह्म को मांही ।
कर्ता होय भजन सो कीजे, आशा त्याग अकरता रीजे ॥ ७२ ॥

हे राजा संतो के ज्ञान को मन से धारण करो, यह संतो को मन देना है। हृदय में ब्रह्म प्राप्ति का ज्ञान धारण करो, यदि करना है तो भगवान का भजन करो। सब आशाओं को छोडना अकर्ता रहना है।

हे राजा जागे ज्ञान ऊदे कर भाई, सोवो जाय समाद लगाई।
चौरासी की शरम रखावो, लज्या काढ़ कुलछ गमावो॥ ७३ ॥

हे राजा हृदय में ज्ञान धारण करना ही जागना है। सता समाधि में रहना ही सोना है। चौरासी में नहीं आना पडे यह शरम रखो। कुलक्षणों को छोडना ही लज्जा रखना है।

राजा उवाच :- हो स्वामीजी या तो बात जोग की होई, गृहस्थ सूं सुण सजे न कोई।
त्यागे जगत ग्रह बन में जावे, से जोगी वा पद को पावे ॥ ७४॥

राजा ने कहा हो स्वामीजी यह बात योगियों की है। गृहस्थ से इसकी साधना नही होती गृहस्थ को छोडकर जो योगी बन जाते है। उनको ही इस पद की प्राप्ति होती है।

श्री सुखो वाच :-हे राजा जोग मोख नही जावे, नेःछे जब तब झंवरो खावे।
जंगल गया मोख जे होई, तो बन का जीव उड़े मिल सोई ॥ ७५ ॥

म:फ: है कि हे राजा योग की साधना करने वाले मोक्ष में नहीं जाते, निश्चय ही जब कभी काल के वश में हो जाते है। यदि जंगल में रहने से मोक्ष हो जाता तो जंगल के जीव मोक्ष में चले जाते।

राजा उवाच:- हो स्वामीजी वन का जीव भेद नही जाणें, राम राम मुख कबहूं न आणें ।
ओ तो अरथ दाय नही आवे, बिन बन गया मोख किम पावे ॥ ७६ ॥

राजा ने कहा हो स्वामीजी वन में रहने वाले जीव भेद नही जानते, वह कभी भी मुंह से राम राम नहीं करते। यह बात मुझे पसन्द नही है। बिना वन में गये मोक्ष की प्राप्ति कैसे हो सकती है।

श्री सुखो वाच :- हे राजा भजन भेद सत ओ होई, ग्रह अर बन सत नही कोई।
भजन भेद का सुण ईधकारा ग्रह त्याग दोनां सूं न्यारा ॥ ७७ ॥

म:फ: है कि हे राजा भेद से भजन करना ही सत है। गृहस्थ व वन में रहना सत नही है। गृहस्थ में रहो चाहे वन में इसका कोई कारण नही है। भेद से भजन करने पर ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

विशवामित्र वन को जोगी, वास्टमुनि ग्रह संजोगी।
आधी तपस्या गुरू को दीनी, एक पलक सत संगत लीनी ॥ ७८ ॥

विश्वामित्र वन के तपस्वी व वशिष्ठ मुनि गृहस्थी थे। विश्वामित्र ने गुरू वशिष्ठजी को तीस हजार वर्षो की तपस्या भेंट की तो वशिष्ठजी ने एक पल मात्र की सतसंगत का फल दिया।

प्रीत घटी हर मन पिस्तायो, समज्यो नहीं विष्णु समझायो।
हर की माया तोय भरमावे, जाय शेष पे न्याव चुकावे ॥ ७९ ॥

विश्वामित्रजी के मन में प्रीत घटी वह पछताने लगे। विश्वामित्र तीस हजार वर्ष की तपस्या को बडी समझकर व एक पल मात्र के सतसंग के फल को छोटा समझकर विष्णु भगवान के पास न्याय कराने गये। विष्णु भगवान ने बहुत समझाया तो भी वह नही समझे, तब कहा कि परमात्मा की माया तुमको भरमा रही है। यदि न्याव कराना हो तो शेषजी के पास चले जावो।

धारो धरण शेष यूं बोल्या, तप के जोर ब्रह्मण्ड तोल्या।
धुसकी धरण मुनेश्वर धुज्यो, सतगुरू शब्द सांच कर पुज्यो ॥ ८० ॥

शेषजी के पास जाने पर शेषजी ने कहा, इस पृथ्वी को धारण करो तब विश्वामित्रजी ने तपस्या के बल से धारण करना चाहा परन्तु पृथ्वी धारण नही हुई व नीचे खिसकने लगी तब विश्वामित्रजी धूजने लगे। जब वशिष्टजी महाराज के एक पल मात्र के सतसंग के दिये फल को लगाने पर पृथ्वी धारण हो गई तब उन्होंने सतगुरू के सतशब्द को सच्चा समझा।

उपजी प्रीत हरडिंभ निवारयो, साध संगत मिल कारज सारयो।
ग्रह में हुतो जनक विदेही, सुखदेव जोगी परम स्नेही ॥ ८१ ॥

उनके अहंकार का नाश होने पर परमात्मा के नाम पर प्रेम हुआ, साध याने वशिष्ठजी की संगत से उनका काम सुधर गया। राजा जनक विदेही व गृहस्थी थे। सुखदेवजी वन के रहने वाले योगी थे।

त्यागी तपी सदा वनवासी, जन मत गृह युं भयो उदासी।

अटके बिवाण व्यास के आयो, व्यास देव गुरू जनक बतायो ॥ ८२ ॥

सुखदेव मुनि जन्म से ही वन में रहने वाले त्यागी तपस्वी थे। जन्म लेते ही गृहस्थ से अलग हो गये थे। जब उनका बिवाण बैकुण्ठ से आगे नही बढा तब व्यासजी के पास गये तब उनको जनक जी से गुरू पद में मिलने का भेद आया।

सुखदेव जती जनक गुरूराया, भक्ति भेद ले मोक्ष सिधाया।

ग्रह त्याग की कहा इधकाई, नारद के गुरू धीवर भाई ॥ ८३ ॥

सुखदेव जती थे। राजा जनक गृहस्थी थे। राजा से ज्ञान लेकर मोक्ष में गये। गृहस्थ व त्याग में क्या विशेषता है। नारदजीके गुरू कालूजी धीवर थे।

राजा अमरीष रिष दुर्वासा, ऊ बनवासी ऊ ग्रह उदासा।

दियो श्राप सुदर्शन बायो, उलटर चक्र उसी के आयो ॥ ८४ ॥

राजा अम्बरीष गृहस्थी थे। दुर्वासाजी गृहस्थ में रहने वाले तपस्वी थे। उन्होने राजा को श्राप दिया। जब सुदर्शन चक्र दुर्वासाजी के पीछे लग गया।

पुरी पुरी हर पास पुकारे, जन को द्रोही कौन उबारे।

जावो रिष राजा के पासा, बगसे चूक मिटे भव त्रासा ॥ ८५ ॥

तब दुर्वासाजी कैलाश में, ब्रह्माजी के लोक में, विष्णु भगवान के पास बैकुण्ठ में गये और सुदर्शन चक्र से रक्षा की प्रार्थना की। भक्तों से द्वेष करने वालों की रक्षा कौन कर सकता है, तब विष्णु भगवान ने ऋषि से कहा आप राजा के पास जावो, वो ही तुम्हारी गलतियों को माफ कर तुम्हारी रक्षा कर सकते है।

मैं जन में, जन मेरे मांही, भगवत भक्तां अंतर कोऊ नांही।

तब ऊ रिष राजा के आयो, मेटी त्रास गुन्हा बगसायो ॥ ८६ ॥

विष्णु ने कहा मैं भक्तो में हूं व भक्त मेरे है। भगवान व भगवान के भक्तो में कोई अन्तर नही है। जब दुर्वासाजी अम्बरीष के पास आये, जब राजा ने गुन्हा माफ कर दिया, दुख दूर किया।

सिमरे राम जका बड़भागी, क्या ग्रहही और बैरागी।

ओरूं एक जांजली रिषनामा, तुलाधार बाण्यो ग्रह धामा ॥ ८७ ॥

जो रामजी की भक्ति भजन करते है। चाहे वो गृहस्थी हो या वैरागी हो, वही भाग्यशाली है। एक जांझुल नाम के ऋषि थे व एक तुलाधार नाम का वैश्य गृहस्थी था।

बन में जोग लगाई ताली, मन पवना थिर किया कपाली।

खुलयो ध्यान गर्व मन आण्यो, सुर नर पंखी सरावे बाण्यो ॥ ८८ ॥

जांझुल ऋषि ने वन में योग की साधना करके व मन को थिर करके स्वांसा को ब्रह्मण्ड में चढा लिया, उनकी समाधि खुलकर ध्यान हुआ तो उनको गर्व हुआ कि मेरे बराबर समाधि लगाने वाला कौन हो सकता है। परन्तु देवता मनुष्य व पक्षी तुलाधार वैश्य की भक्ति की सराहना कर रहे थे।

जब तपसी कासी चल आयो, तुलाधार घर बैठो पायो।
जप तप जोग तज्या अभिमाना, तुलाधार को चिन्हो ज्ञाना ॥ ८९ ॥

जब जांझुल ऋषि काशी में आये तो तुलाधार वैश्य घर में बैठा मिला तब उन्होने जप तप व योग की साधना का अभिमान छोडकर तुलाधार का ज्ञान धारण कर लिया।

गुरू प्रताप भक्त घट जागी, ब्रह्म समाद ब्रह्मण्ड में लागी।
बहुर सुणो एक कुर्कट राया, रिष पुंडलिक जहां चल आया ॥ ९० ॥

सतगुरू की दया से उनके घट में भक्ति जागृत होकर ब्रह्मण्ड में ब्रह्म समाधि लगने लग गई, और सुणो एक राजा कुर्कट थे। उनके यहां पुंडलिक नाम के ऋषि आये।

अडसठ तीरथ सब ही कीना, कुर्कट के घर बासा लीना।
जब बुझे तीरथ को बासी, यहां से कोस किता गंग काशी ॥ ९१ ॥

पुंडलिक ऋषि अडसठ तीर्थो की यात्रा करके ही राजा कुर्कट के यहां रात्रि विश्राम के लिये ठहरे, जब ऋषि ने राजा को पुछा, यहां से काशीजी व गंगा कितने कोस है।

कोस पांच पर निकट बताई, देखी नही सुणी रिष राई।
उपजी गिलान गवां चल आई, देखत देव कन्या होय जाई ॥ ९२ ॥

राजा ने कहा हे ऋषि मैने देखी तो नही, सुनी है कि पांच कोस पर नजदीक ही है। तब ऋषि के मन में ग्लानि हुई। उसी समय वहां तीन गाये आई और देखते देखते देवकन्या हो गई।

रंभा एक स्नान करावे, कलश भरे एक भवन बुरावे।
हे राजा यह कहा अचंभा, पशुवा जूण भई कुण रंभा ॥ ९३ ॥

उनमें से एक राजा का कलश जल से भर लाई। एक राजा को स्नान कराने लगी। एक महल को साफ करने लगी, तब ऋषि ने कहा राजा यह क्या अचंभा है। यह पशु योनि से देवकन्या कैसे हो गई।

कुर्कट कह इसी कूंही बुझो, तुम हम नही और कोई दूजो।
जब ही रिष बूझे प्रसंगा, मैं काशी गोदावरी गंगा ॥ ९४ ॥

तब राजा ने कहा आप ही इन्ही को पूछो, आप व मेरे सिवाय यहां कोई दूसरा नही है। जब ऋषि ने उनको पूछा तो उन्होनें कहा कि मैं काशी गोदावरी व गंगा हूं।

दुनिया पाप करे मोही राले, पशुवा जूण वर्ण भई काले।
अे हरिजन परमेश्वर पूरा, दर्शण कियां पाप हुवे दूरा ॥ ९५ ॥

संसारी हमारे में स्नान कर पाप छोड जाते है। इसलिए हमारा वर्ण काला व पशु योनि हो गई है। यह राजा परमात्मा के भक्त परमेश्वर के रूप ही है। इनके दर्शन करने से पाप दूर हो जाते है।

या सुण रिष आश्रम चल आयो, भक्ति करि घर में हरि ध्यायो।
बहूर कहूं एक हरि को दासा, वाराणसी बसे रविदासा ॥ ९६ ॥

यह सुनकर ऋषि अपने आश्रम पर आ गया। घर में ही भगवान का भजन करने लगा। एक परमात्मा के गृहस्थ भक्त को बताता हूं। रैदास नाम के भक्त काशी में रहते थे।

पुत्री परणी निवत बुलाई , देह धार गंगा घर आई।
सांची भक्त सदा हर संगा, कठौती मांय प्रगटी गंगा॥ ९७॥

रैदासजी ने लडकी की शादी में गंगाजी को निमन्त्रण दिया तो शरीर धारण कर गंगाजी उनके यहां आई, जो सच्ची भक्ति करते है परमात्मा सदा उनके साथ रहते है। उनकी कठौती में गंगाजी प्रगट हो गई।

ध्रुव प्रहलाद ध्यान बन कीयो, हरजी राज हट कर दियो।
घर में नाम कबीरा भाई, सकल भेष में फिरे दुहाई ॥ ९८॥

ध्रुवजी व प्रहलादजी ने वन में जाकर ध्यान किया। परमात्मा ने हटकर के राजा बना दिया। कबीरजी ने घर पर ही भक्ति भजन किया था, सब ही भेषधारी उनके ज्ञान की महिमा करते है, यही दुहाई फिरना है।

राजा उवाचः- ऊंच नीच को कारज को है, सूत कथा सनकादिक मोहे।
हो स्वामीजी मोय भरम मिटायो, गृह त्याग समताकर गायो ॥ ९९॥

ऊंची न नीची जाति का कोई कारण नही है। सनकादिक ऋषि सूतजी की कथा सुनने हमेशा जाते थे। राजा ने कहा हो स्वामीजी आपने मेरे भरम मिटाकर गृहस्थ व त्याग को बराबर बताया।

अब तुम काज हमारो कीजे, सतगुरू होयकर दीक्षा दीजे।
कर प्रणाम चरण गेह लिया, सतगुरू हाथ शीष पर दिया ॥ १००॥

राजा ने चरण कमलों में प्रणाम किया व सतगुरूजी ने विधि से भजन करना बताया यही हाथ शीष पर देना है। राजा ने कहा आप मेरा उद्धार करो व गुरूपद का ज्ञान बताओ।

दीक्षा लीवी राम लिव लागी, भक्त पुरातम हिरदे जागी।
बागा तूर सूर घट ऊगा, लाग्यो ध्यान परम पद पूगा ॥ १०१॥

राजा के सांस उसांस में भजन करना शुरू करते ही लिव बंध भजन हो गया। पूर्व जन्म की भक्ति हृदय में जागृत हो गई। शब्द की ध्वनि सारे शरीर में होने लगी व अनुभव रूपी सूर्य का प्रकाश हुआ, के:पद में ध्यान लग कर आ: पद की प्राप्ति हो गई।

करणी हीण शिष जो होई, आप समान करे गुरू सोई।
अब तुम कहो करूं गुरूदेवा, तन मन लिया करूं मैं सेवा ॥ १०२॥

जो शिष्य सत शब्द की भक्ति करना नही जानता। उसे सतगुरू विधि बताकर अपने बराबर बना लेते है। हे गुरूदेव आप जो आज्ञा देंगे वही मैं धारण करूंगा व तन मन से आपकी सेवा करूंगा।

दोहा :- सांचा सतगुरू शिष कूं, करले आप समान।
दूजा गुरू सुखराम कह, कनफूंका रा ज्ञान ॥ १०३॥

सच्चे सतगुरू शिष्य को अपने बराबर कर लेते है। म:फ: है कि दूसरे गुरू करणियो व कर्मों में लगाये रखते है। यह ही कनफूंको का ज्ञान है।

॥ इति श्री राजा चन्दूलाल का संवाद सम्पूर्ण॥

卐 सतगुरू सता का अंग 卐

चौपाई:- सतगुरू सता न बरणी जाही, सो मण धान बानगी मांही।
सतगुरू सता शिष में आवे, अगम देश हंसा चल जावे ॥ १ ॥

सतगुरू सता का वर्णन मुंह से नही होता । जैसे सैंकडो मन धान का कोठा भरा हुआ हो तो उसका नमूना बताते है। सतगुरू की सता सतशब्द जब शिष्य में जाग्रत होता है तो हंस अगम देश याने के: पद आ: पद की प्राप्ति कर लेता है ।

चुगे चकोर चन्द्र मुख जोवे, शीतल अग्नि किसी विध होवे ।
शशि के अमृत बसे शरीरा, सांचा गुरू चन्द्रामण हीरा।। २।।

चकोर पक्षी अग्नि का चुरण चुगता है और चन्द्रमा की तरफ टकटकी लगाये रहता है। जिससे अग्नि भी उसे शीतल लगती है क्योंकि चन्द्रमा के शरीर में अमृत का निवास है । इसी तरह सच्चे सतगुरू चन्द्रमणी हीरे की तरह है । जैसे चन्द्रमणी हीरा नकली हीरो को असली हीरा बना देता है, ठीक इसी तरह सच्चे सद्गुरु के ज्ञान को धारण करेगा वो भी असली हीरा बन जायेगा ।

आप अमोलक और बनावे, दीपक राग दीप जग जावे ।
यूं शिष कोई करणी का हीणा, आप समान करे प्रवीणा ।। ३।।

केवली भगवंत सत ग्यान के दाता है। परम मोक्ष की प्राप्ति कराने वाले है, जैसे दीपक राग गाने से दीपक जल जाता है, इसी प्रकार भक्ति धारण करने वाली आत्मा को परम पद की प्राप्ति करा देते है।

धिन धिन ज्यांरी सफल कमाई, ज्यां संगत सतगुरू की पाई ।
उड उड भुजंग चन्दन बन जावे, यूं शिष तन की तपत बुझावे ।। ४।।

जिन्होंने नरदेही पाकर सत ग्यान को धारण किया है उनको धिन धिन है। सर्प उड उड करके चन्दन के वन की और जाते है। ऐसे ही शिष्य सतगुरू की शरण लेकर अपनी ज्वाला शांत करते है।

अंग ज्वाला व्यापे नही कोई, यूं संगत सतगुरू की होई ।
जडी संजीवन जीव जीवाया, क्या करणी मुरदा कर आया ।। ५।।

हंस वृति आत्मा जब सत की संगत करती है तो सत शब्द प्रगट होने पर अंग मे त्रीताप नही सताते है जैसे संजीवनी जड़ी मरे हुये को जिन्दा कर देती है ।

अमर करे अमीरस पावे, यूं सतगुरू की सता कहावे।
पारस का सुण प्राक्रम भाई, लोह परस कंचन होई जाई ।। ६।।

सतगुरू के ग्यान की शरण में आने से सतगुरू की सता का अमृत पीकर हंस अमर हो जाता है। पारस का प्राक्रम है कि लोहे के लगते ही लोहे को सोना बना देता है।

बोरूं काट न लागे कोई, ओ प्राक्रम सतगुरू में होई ।
कलबरछ पुरे मन की आशा, यूं सतगुरू है सुख की रासा।। ७।।

फिर उस लोहे के काट नही लगता। ऐसे ही शिष्य जन्म मरण से रहित हो जाता है। यह सतगुरू में प्राक्रम है। कल्पवृक्ष मन की आसाऐं पूर्ण कर देता है। ऐसे ही सतगुरू सुखों की प्राप्ति करा देते है।

चिंत्रावण चिनत्या फल पावे, यूं सतगुरू निज नाम बतावे।
ज्यूं जुरा काल जम को डर भागे, जे निज नाम शिख मे जागे।। ८।।

मन में चिन्तन करने से फलो की प्राप्ति चिन्तामणी से होती है। ऐसे ही सतगुरू निज नाम बताते है जिससे बुढापा काल यमराज का डर नही रहता। यदि शिष्य में निज नाम की जागृति हो जाती है तो जन्म मरण से रहित होना ही काल व बुढापे का नही आना है।

सतगुरू सता कही नही जावे, नग पंखी हीरा निपजावे।
ओ इचरज मानो मत कोई, कीट पलट भंवरा किम होई।। ९।।

सतगुरू सता कहने में नही आती है। नग पक्षी से हीरा पैदा होता है। इसको कोई आश्चर्य मत मानो की कीडा पलटकर भंवरा कैसे हो जाता है।

अमर बिवाण शीश चल आवे, पांचू ज्ञान गेब का पावे।
यूं सता सतगुरू की भाई, जागे शब्द शिष तन मांही।। १०।।

सतगुरू की सता से ही शिष्य के तन में शब्द की जागृति होकर सतशब्द संखनाल से बंकनाल होता हुआ सिर के ऊपर होकर अमर बिवाण की तरह मंडराने लगता है। ये पांचवा ग्यान गेबाऊ आता है।

छांय हुमाव हुवे रंक राजा, फिरे दुहाई कहे महाराजा।
सतगुरू सता शिष्य यूं लेवे, साध साध कर सब जुग सेवे ।। ११।।

हुमाव पक्षी की छाया जिस व्यक्ति के ऊपर पड जाती है वो उसी जन्म में राजा हो जाता है उसकी दुहाई फिरने लग जाती है, सब उसे महाराजा कहने लग जाते है इस तरह इस सतगुरु की सत्ता को कोई शिष्य धारण कर लेता है तो वो भक्ति करके उस देश में चला जाता है तो पीछे जगत में उनके नाम की महिमा रहती है।

सतगुरू सता जीव यूं जागे, चमक पत्थर लोहा उड लागे।
आ सुण सता गुरां के मांही, जड़ पशवा चेतन होय जाई ।। १२।।

चकमक पत्थर के लोहा लगने से आग प्रकटती है ऐसे सतगुरू की सता से जीव जागते है। ऐसी सता सतगुरू में है। पशु की तरह मुर्ख जीव को के: पद का ज्ञान प्राप्त होता है। यही चेतनता आना है।

सतगुरू सता सेज शिख झेले, अरध उरध बिच रामत खेले।
सांस उसांस रटे नित सांई, निरमल नैण खुले घट मांही।। १३।।

सतगुरू की सता सहज में शिष्य धारण कर लेता है। सांस उसांस में भजन करता है। सांस उसांस में हमेशा भजन करने से निरमल नेण याने सुरत रूपी नेत्र घट में खुल जाते है।

ऊगा सूर भया उजियारा, भरम करम मेटया अंधियारा।
बोरू तिमर न व्यापे कोई, जिग मिग जोत उदे घट होई।। १४।।

सतगुरू के ज्ञान का हृदय में प्रकाश होता है। जब भरम करम रूपी अन्धेरा मिट जाता है, फिर अज्ञान रूपी अंधकार नही व्यापता, सतशब्द की ज्ञान रूपी जोती का घट में प्रकाश होना ही झिगमिग होना है।

ज्यूं मुख दिसे दरपण मांई, अरस परस सेवग हर सांई।
दिल ही में साहिब दीदारा, कोटक भाण हुवा उजियारा।। १४।।

दरपण में मुंह सामने नजर आता है। ऐसे ही आत्म चेतन याने सेवग को सतशब्द याने स्वामी का अखण्ड अनुभव होना ही स्वामी व सेवग का अरस पास होना है। सतशब्द का दिल में अनुभव होना ही साहिब का दर्शन होना है। सतशब्द का रग रग रोम रोम में खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड में अगमदेश में अनुभव होना ही ज्ञान रूपी करोडो सुर्यो का प्रकाश होना है।

कोटक भांण हुवा उजियारा, दिल ही में साहिब दीदारा।
अमृत बूंद जडे कण मोती, दीपक ज्ञान झिलामिल ज्योति।
मनवो चंवर करे मन मांही, जहां देखुं जहां सतगुरू सांई।। १६।।

करोडो सुर्यो का जैसा प्रकाश हो रहा है। दिल ही में परमेश्वर के दर्शन हो रहे है। सतगुरू विधि से भजन होना ही अमृत बूंद व मोती कण जडना है। सतशब्द का अनुभव होना ही ज्ञान का दीपक व झिलमिल ज्योति है। घट में सतशब्द रूपी परमात्मा की जब जागृति हो जाती है तब निज मन को अपार खुशी होती है। यही मन का मन में चंवर करना और घट मे सर्वत्र रामजी के दर्शन करना है।

सतगुरूजी की मैं बली जाई, ऐसो भेव दियो मुझ आई।
तन देवल बिच आत्म देवा, निरगुण भक्ति भजन अे भेवा।। १७।।

मैं सदगुरू जी की बलिहारी जाता हूं जिन्होंने मुझे ऐसा भेद बताया । इस शरीर रूपी मंदिर में आत्मा रूपी देवता विराजमान है। इस आत्मा को परमात्मा में मिलने का वो भेद दिया।

प्रेम फूल मनवो ले आवे, चित का चन्दन ले चरचावे।
सेवा वन्दन आरती कीजे, तन मन वार अमी रस पीजे।। १८।।

प्रेम से भजन करना पुष्प चढाना व चित से चिन्तन करना ही चन्दन चढ़ाना है। तन मन से भक्ति भजन करना ही सेवा वन्दन आरती करना है। व भजन का आनन्द आना ही अमीरस पीना है।

सुरति सेवग निज मन माला, भाव का भोजन सर्व रसाला।
धूप ध्यान लागो दिन राती, दीपक ज्ञान प्रीत की बाती ।। १९।।

सुरती याने आत्मचेतन सेवग है, भाव से भजन करना ही सब प्रकार के भोजन है। शब्द का रात दिन ध्यान रहना ही धूप लगना है। घट में ज्ञान से सबका अनुभव होना ही दीपक जुपना है। प्रेम से भजन करना ही प्रीत की बाती है।

सुखमण कलश अमी भर लाई, जिगमिग जिगमिग मंदिर मांही।
मुरली बीण बजे सुरणाई, संख री घोर गिगन घर छाई।। २०।।

सुखमणा में भजन होने पर अमीरस झरता है। यही कलश भरना है। इसी शरीर रूपी देवल में शब्द की झिगमिग लग रही है। यही मुरली वीणा व शहनाई बजना है। गिगन में याने ब्रह्मण्ड से ऊपर सतशब्द का अखण्ड अनुभव होना ही संख की घोर गिगन छाना है।

अनहद झालर का झणकारा, रोम रोम बोले ररंकारा।
जन सुखराम सता या जागी, ब्रह्म समाध ब्रह्मण्ड में लागी ।। २१।।

अनहद याने बिना बजाये ही झालर की झणकार हो रही है। रोम रोम रंकार की आवाज हो रही है। म:फ: है कि यह सता की जागृति होना है। ब्रह्मण्ड से ब्रह्म समाधि याने सकल त्रिलोकी की आत्माये ब्रह्म प्रतीत होती है, यही समाध लगना है।

दशवें द्वार करे हंस केला, अनन्त कोट सन्तो का मेला।
ऐसो समयो सदा ही हमारे, आठ पोहर क्या सांझ सवेरे।। २२।।

दशवे द्वार में हंस शब्द का आनन्द ले रहा है। यही केल करना है। अनन्तो क्रोडो सन्तो ने जिस पद की प्राप्ति की है। उस पद की प्राप्ति होना ही संतो का मेला होना । सतशब्द का रात दिन आठ पोहर चौसठ घडी चाहे सांझ हो या सबेरा अखण्ड अनुभव होना ही ऐसा समय सदा ही हमारे है।

जन सुखराम अमर घर पाया। जामण मरण मोह नही माया।। २३।।

म: फ: है कि के: पद आ: पद की प्राप्ति होना ही अमर घर पाना है। उस पद में जन्म मरण मोह माया नही है।

दोहा:- जन सुखिया सतगुरू सता, मोपे कहीयन जाय।
जो मुझ बरती आय के, सो विध कही सुणाय ।। २४।।

म. फ. है कि सतगुरू सता का वर्णन मुझ से नही हो सकता है जैसा मुझे अनुभव हुआ है वैसा ही मैंने वर्णन किया है।

।। इति श्री सतगुरू सता का अंग सम्पूर्ण ।।

卐 साध लछ का अंग 卐

आ है रीत आद अनादि, स्वारथ सबे पुकारे।
जन सुखराम मिल्यां सब बन्दे, तजियां धेक विचारे।। १।।

म: फ: है कि यह अनादि से रीति है कि सब स्वार्थ से प्रेम करते है। जब तक स्वार्थ सिद्ध होता है तब तक महिमा व प्रेम करते है। स्वार्थ सिद्ध नही होने पर निन्दा व द्वेष करते है।

जब लग हेत धेक मिल दोनुं, तब लग जक्त कहिजे।
जन सुखराम साध लछ ऐसा, पियां सब तिस छीजे ।। २।।

जब तक स्वार्थ से प्रेम व स्वार्थ नही होने पर द्वेष करता है। तब तक वह संसारी है। म: फ: है कि साध लक्षण ऐसे है। उनका ज्ञान व विधि धारण करने पर बार बार का जन्म मरण का तांता मिट जाता है, यही पियां सब तिस छीजे है।

ना काहू से बैर दोस्ती, आपे घरां न जावे।
जन सुखराम जाय आराध्यां, दुतिया भाव न लावे।। ३।।

न उसका किसी से बैर है न मोह है। कामना लेकर किसी के यहां नही जाते। म: फ: है कि जाकर आग्रह करने पर भी कुछ नही चाहते है।

जब लग बुरी भली सब भ्यासे, काम क्रोध अहंकारा।
जन सुखराम तहां लग भय है, त्रिगुटी तत विचारा ।। ४।।

जब तक यह बुरा व अच्छा है कामना क्रोध व अहंकार साथ है। म: फ: है कि त्रिगुटी तक ब्रह्म का ध्यान करते हुये भी इन वृतियों के साथ है, तब तक उसको भय है।

उपजे खरी जरे सो मांही, से नर साध कहिजे।
जन सुखराम सुणत सम बोले, जगत बरोबर दिजे।। ५।।

सच्ची बात बोलते है व उसी के अनुसार चलते है व घारण करते है। वह ओधाधारी साध के लक्षण है। म: फ: है कि दूसरे की बात सुनते ही जवाब देता है, तो वह संसारियो के समान है।

सब सूं हेत बेर नही बंछे, निरपख ज्ञान विचारे।
जन सुखराम सूर के उदे, ठगे मुंह से कुण मारे ।। ६।।

सबका भला चाहते है। बुरा किसी का नही चाहते , निरपक्ष ज्ञान करते है। म: फ: है कि सूर्य उदय होने पर कौन ठग चोरी व मारपीट कर सकता है। इसी तरह घट में ज्ञान का प्रकाश होने पर बुरे विचार व वृतियो से अलग हो जाते है।

निरपख साध पखे बंध लोई, धेक करे सो दांणो।
जन सुखराम मुख सुं मीठा, कपटी नरक बखाणो।। ७।।

जिनके किसी तरह का पक्ष नही है वो साधु है, जिनके अच्छे बुरे का पक्ष है वो संसारी है, जो दूसरो से द्वेष करता है वो राक्षस है। म: फ: है कि मुंह पर मीठा बोलता है मन में कपट रखता है उसके लिये तो नरक है।

हरजन हेत राम सुं लागा, दुजी सेज संभाई।
जन सुखराम चाह बिन दुबध्या, कांहा बिराजे आई ।। ८।।

जो राम जी के भक्त है वो निरन्तर रामजी के भजन में ही लगे रहते है। सब पर समभाव रखते है। म: फ: है कि जब किसी तरह की कामना ही नही है तो राग द्वेष किससे करेंगे।

चरचा सकल पखा की लावे, खांचे आप तणी रे।
जन सुखराम चाह को कोठो, अंतर चाह गणी रे।। ९।।

जो भी बात करते है पक्ष की करते है। अपने स्वार्थ की करते है। म: फ: है कि इसके तो कितनी ही चाहना लगी हुई है व अन्तर में बहुत चाहना करता है।

जन की चाह दाय सब उठी, अंतर ध्यान चढावे।
जन सुखराम सूर के उगे, दुबध्या रात न आवे।। १०।।

भजन करने वालो के कोई कामना नही रहती, अन्तर में ध्यान करते रहते है। म: फ: है कि ज्ञान रूपी सूर्य के उदय होने पर द्वेत रूपी रात्रि यानि थारी मारी नही आती।

घिरत खांड गुलनाज किराणो, ऊंच नीच कुल होई।
जन सुखराम हीर कण लेणा, जात भेद नही कोई।। ११।।

घी खांड गुड़ नाज सामान लेते समय ऊंच नीच कुल का ध्यान रखना पडता है। ऐसे ही करणियो व करम का ज्ञान धारण करने के लिए ब्राह्मण को ही गुरू बताते है। म: फ: है कि हीरा लेने के लिये कोई जाति पांति नही देखी जाती, ऐसे ही सतशब्द ने: अंच्छर का ज्ञान धारण करने में जाति पांति नही देखी जाती है।

हीरो जाय बणे जहां लीजे, कहा जात सूं कामा।
जन सुखराम लेत उजियाला, धरे नख चख रामा ।। १२।।

हीरा जहां पर भी मिलता हो वही से ले लेना चाहिए। उसमे जाति पांति का क्या काम है। ऐसे

ही सतशब्द ने: अंच्छर का ज्ञान जहां पर भी मिले, वही से ले लेना चाहिए। म: फ: है कि शब्द की जागृति होते ही सारे शरीर में रग रग रोम रोम में नख से चख तक शब्द का अनुभव होना ही प्रकाश होना है।

सोदो फरक फेर है अेतो, काची पक्की रसोई।
जन सुखराम विप्र जहां जीमे, बणत असल घर मांही ।। १३।।

मेरा ज्ञान व अन्य ज्ञान में इतना फर्क है जैसे कच्ची रसोई व पक्की रसोई में होता है। तीन लोक का ज्ञान कच्ची रसोई का है व चोथे लोक का ज्ञान पक्की रसोई का है, म: फ: है कि ब्राह्मण वहीं जीमते है जहां उच्च कुल में भोजन बनता है।

लाडू पेडा सरस जलेबी, विप्र जीम सब जावे।
जन सुखराम भेद भिन्न नांही, जे सतगुरू रूप कहावे।। १४।।

ब्राह्मण लाडू पेडा जलेबी सब जीम जाते है। म: फ: है कि जो सतस्वरूप ने: अंच्छर का ज्ञान देने वाले है। उनकी जाति पांति देखने की जरूरत नही है।

हद में गुरू परे सो सतगुरू, तहां कारण नही कोई।
जन सुखराम धातु तो सबही, कनक काट नही होई ।। १५।।

हद का ज्ञान देने वाले गुरू, ब्रह्म प्राप्ति का ज्ञान देने वाले सतगुरू है। म: फ: है कि धातु तो सब ही है। परन्तु सोने के काट नही लगता। सतगुरू के ज्ञान से जन्म-मरण मिट जाता है। गुरू के ज्ञान से नही मिटता, यही कारण नही कोई है।

दूजा गुरू नीर सम कहावे, धरम करम सब पाले।
जन सुखराम अगन ज्यूं सतगुरू, अशुभ शुभ सब जाले।। १६।।

दूसरे गुरू पानी की तरह है। धरम करम याने शुभ करणियां करने का ज्ञान देते है। जिससे फलो की प्राप्ति होती है जैसे वृक्ष में पानी देने से फल मिलते है। म: फ: है कि सतगुरू का ज्ञान अग्नि के समान है, जिससे शुभ अशुभ करमो से अलग हो जाता है।

दूजा गुरू जगत सू मिलता, सब मिल धर्म उचारे।
जन सुखराम सतगुरू ऐसे, ऐको ब्रह्म विचारे।। १७।।

दूसरे गुरू संसारियो को सब तरह के धर्मो का ग्यान बताते है। म: फ: है कि सतगुरू तो एक ही ब्रह्म की प्राप्ति का ज्ञान बताते है।

गुरू सो ग्यान विचारे सारा, निरख परख ले चाले।
जन सुखराम सतगुरू ऐसा, भली बुरी सब पाले।। १८।।

दूसरे गुरू सब ग्यानो का उपदेश करते है वो वर्णाश्रम का ध्यान रखते है। म:फ: है कि सतगुरू वर्णाश्रम का ध्यान नही रखते हुये सभी को ब्रह्म प्राप्ति का उपदेश करते है।

सब सूं मेल रहे सो दागा, देव दरस अवतारा।
जन सुखराम अग्न मुख डारया, नही रहे मेल लिगारा।। १९।।

सबकी याने देवताओं व अवतारो की भक्ति करने से जन्म मरण नही मिटना ही दागा है। म:फ: है कि सतगुरू पद का ज्ञान अग्नि की तरह सबको आप रूप बना लेता है याने जन्म मरण से रहित कर देता है।

सतगुरू गुरू आंतरो जोजन, रात दिवस ज्यों होई।
जन सुखराम हद के गुरू सो, तन मध समझ न कोई।। २०।।

सतगुरू व गुरू में जोजन जितना अंतर होता है जैसे रात दिन जितना अन्तर होता है। म:फ: है कि वो हद के गुरू होते है। मेरे ज्ञान की उनको समझ नही होती है।

सतगुरू सेन लखे सब न्यारी, खंड ब्रह्मण्ड सब सोजे।
जन सुखराम तन मध साहिब, निरख निशो दिन खोजे।। २१।।

म:फ: है कि सतगुरू के ज्ञान से खण्ड पिण्ड ब्रह्म की सोधना होकर शरीर में रात दिन सतशब्द का अखण्ड अनुभव होता है।

सातूं गुरू बसत यूं न्यारा, सुणज्यो सकल संसारा।
जन सुखराम भेद सब भाखूं, गुरू गुरू का न्यारा।। २२।।

सतगुरू से सात गुरू अलग है। संसारी सब सुणो। म:फ: है कि मैं गुरू गुरू का अलग भेद वर्णन करता हूं।

प्रथम गुरू सो पिता कहावे, लिंग बीज नाभ में नांखे।
दूजी मांय सत कर भाखे, नव मास गरभ में राखे।। २३।।

प्रथम गुरू पिता है जो बीज नाभी में डालता है दूसरा गुरू माता है जो नो माह गर्भ में रखती है।

तीजा गुरू गरभ सूं झेले, दाई जतन कर भू मेले।
चौथा गुरू ब्राहमण भाई, दिया नांव जगत के मांही।। २४।।

तीसरा गुरू दाई है जो गर्भ से झेलकर पृथ्वी पर सुलाती है। चौथे गुरू ब्राहमण है जो जगत में शरीर का नाम निकालते है।

खवास गुरू सब केश संवारे, मस्तक हाथ मुंड पर धारे ।
कनफूंका षट गुरू कहावे, करमाला अवतार जपावे।। २५।।

पांचवा गुरू नांई है जो मस्तक पर हाथ रखकर केश संवारता है। कान में मंत्र व हाथ में माला दे देकर के अवतारों का जप कराने वाले कनफूंका छठा गुरू है।

सतगुरू ब्रह्म मिलावे मांही, भव बंधण जुग भ्यासे नांही।
निरभै जाग जहां गुरू मेले, काल करम कुबुध पेले।।२६।।

सतगुरू के अणभै ग्यान से शब्द ब्रह्म की घट में जागृति हो जाती है। चौरासी से छुडाकर काल व कर्मो से कुबुद्धियो से अलग कर के:पद आ:पद की प्राप्ति करा देते है।

रमता को गुरू भेद बतावे, ता संग होय गिगन घर आवे।
कूंची ज्ञान गम सब देवे, जड़िया ताक खोल सब लेवे।। २७।।

जो आत्मा शरीर में बैठी है उसको परमात्मा में मिलने का भेद बताते है, उसके साथ सांस उसांस में भजन करने का भेद बताते है, तब सतशब्द की जागृति होकर उसके साथ गिगन में पहुंचते है, सतगुरू विधि से भजन करने की व ज्ञान की पूरी जानकारी देते है तथा बारह कंवलो का छेदन करने का मार्ग बताते है।

सतगुरू मिल्या भरम सब भागे, अणभै ज्ञान आत्मा जागे।
ने: चल होय चले जन जांही, सो करता नर पावे मांही।। २८।।

सतगुरू की शरण लेने पर कोई भरम नही रहता है। अणभै का ज्ञान होना ही आत्मा का जगना है जो विश्वास के साथ भजन करते है। उनको घट में ही ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है।

काना सुणे दिष्ट सूं देखे, सो सब बात तन में पेखे।
तीरथ व्रत धाम सब देवा, घर अस्थान तन में सेवा।। २९।।

कानो से सुनना, दृष्टि से देखना, तीरथ व्रत धाम सब देवता शरीर में ही देखते है।

सतगुरू मिल्या इसी विध पावे, ओ तन खोज आद घर जावे।
जन सुखराम और गुरू सारा, फलदायक सब कार्य विचारा।। ३०।।

सतगुरू की शरण से ऐसी विधि मिलती है। इस शरीर को खोजकर परम पद की प्राप्ति हो जाती है। म:फ: है कि दूसरे सब गुरू करणियों व करम कराकर फलों की प्राप्ति करा देते है।

सतगुरू शरण मोख घर पावे, आवागवण रोग सब जावे।
गुरू सतगुरू अन्तर बोहो भाई, जे समज्यां जहां धिन कमाई।। ३१।।

सतगुरू की शरण मिलने पर आवागवण का रोग मिटकर मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। गुरू व सतगुरू में बहुत फरक है। जिन्होने सदगुरू को समझा है वह बहुत धन्य है।

गुरू तो सकल जहान के होई, सतगुरू शरण दुरलभ शिष जोई।
दूजा गुरू जन्म लग लारे, लख चौरासी नांही निवारे।। ३२।।

गुरू तो सारे जगत के होते है। शिष्य को सतगुरू की शरण मिलना बडा मुश्किल है। दूसरे गुरू शरीर के साथ जीवन पर्यन्त रहते है। उनसे जन्म मरण नही मिटता।

जन सुखराम सतगुरू मेला, नर देह पाय मिले पद भेला।
आवागवण बोहोर नही आवे, पण भाग बिना सतगुरू नही पावे।। ३३।।

म:फ: है कि मनुष्य शरीर में सतगुरू के अणभै ग्यान से सतशब्द की जागृति हो जाने पर परमपद की प्राप्ति हो जाती है। वह जन्म मरण में नही आते। परन्तु भाग्य बिना सतगुरू की शरण नही मिलती।

भाग बिना कोई नही पावे, सतगुरू हर दीदारा।
जन सुखराम सुखी नर थोड़ा, दुखी घणा सिर मारा।। ३४।।

भाग बिना सतगुरू व परमात्मा के दर्शन नहीं होते। म:फ: है कि जगत में सुखी कम व दुखी मनुष्य बहुत है। सतगुरु का ज्ञान बिरलो को ही मिलता है।

गुरुं सूं मिल्यो चानणो ऐतो, दीपक बाट जगाई।
जन सुखराम सतगुरु मिलियां, सूर उदे जग मांई ।। ३५।।

गुरू के मिलने पर इतना सा याने आत्मा को ब्रह्म का भान होता है जैसे दीपक के बती लगाई है सतगुरू का ग्यान मिलने पर सारे शरीर में ज्ञान का प्रकाश हो जाता है जैसे जगत में सूर्य उदय हुवा है।

कनिष्ठ गुरू ओस का पाणी, कहे पण प्यास न जावे।
जन सुखराम सतगुरू सायर, मिलता प्यास बुजावे।। ३६।।

करणियां कराने वाले गुरू ओस के पानी की तरह है। ओस के पानी से प्यास नही जाती। म:फ: है कि सतगुरू सायर के समान है। जिनके मिलते ही प्यास बुझ जाती है।

देवल देव देवरा बंधिया, तीरथ जक्त चली रे।
जन सुखराम कहे सब सुणज्यो, पूजा सभी भली रे।। ३७।।

स्थान स्थान पर देवल देवरा बने है। सारा जग तीरथ करने चला है। म:फ: है कि सब सुणो सब तरह की पूजा अच्छी है।

पूजा राम किशन वा किनी, सो अवतार कहाया।
जन सुखराम वशिष्ट गुरूरे, दुर्वासा पूजाया।। ३८ ।।

राम व कृष्ण जो जगत में अवतार कहलाये। म:फ: है कि उन्होंने भी अवतार होते हुये अपने अपने गुरू यानि राम जी ने वशिष्ट जी व कृष्ण भगवान ने दुर्वासा जी से यही ज्ञान प्राप्त किया।

पांडू पांच युधिष्ठर राजा, पूजा अखण्ड चलाई।
जन सुखराम कहे सब सुणज्यो, पूजा टेल गुण भाई ।। ३९ ।।

पांचो पाण्डवो व राजा युधिष्ठर ने अखण्ड पूजा की। म:फ: है कि सभी सुणो, पूजा व सेवा का यही गुण है कि उससे फलो की प्राप्ति होती है।

पूजा पांण टेल सब सांई, भाव बाढ सो दिया।
लिव शमशेर सोधकर पकडी, करम कतल सब किया।। ४० ।।

परमात्मा की पूजा जितने सेवा भाव से की जाती है उतना ही फल मिलता है। लिव बंध भजन होने पर सब करमो का क्षय होकर मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

हाथ पांव मुख नैण नासका, श्रवण संग कमावे।
जन सुखराम उपजे ता संग, उलटा फेर गमावे।। ४१ ।।

हाथ पैर मुख नेत्र नाक कान से ही कर्म बंधते है और म:फ: है कि इन सबसे ही कर्म कट जाते है।

चरण पांव साधा दिश धारे, कर सूं टेल करिजे।
जन सुखराम ज्ञान सुण श्रवण, पूजा शीश धरिजे।। ४२ ।।

पैरों से चलकर संतो के दरशन को जावे, हाथ से सेवा करे। म:फ: है कि कानों से सुनकर ज्ञान को सिर नवाना ही पूजा शीश पर धारण करना है।

नैणा निरख साध की सूरत, रसना राम रटावे।
जन सुखराम अेइ मिल किया, अेइ करम कटावे।। ४३ ।।

सूरत रूपी नेत्रो से ने: अक्षर रूपी साध के दरसण कर रसना से राम राम रटे। म:फ: है कि इनसे ही कर्म बन्धन होता है इनसे ही कटता है।

अेसी सूज मिले सब सारी, सो नर भक्त कमावे।
कह सुखराम हाथ कर ऊपर, रसना राम धियावे।। ४४ ।।

ऐसा सब ज्ञान मिलने पर ही मनुष्य भक्ति भजन करता है। म:फ: है कि अपना अहम् भाव मिटाकर हाथ ऊपर करके कहता है कि हे परमात्मा सब कुछ आप ही है, मैं कुछ भी नही हूं। ऐसा भाव रखकर रसना से परमात्मा का नाम रटता है।

<u>कवित्त</u>: शील सांच सन्तोष, भाव प्रभाव पिछाणे।
प्रेम प्रीत चित लीन, ज्ञान अंतर मन जांणे।। ४५ ।।

शील सांच सन्तोष भाव प्रभाव धारण करके प्रेम व प्रीति से चित में हर समय ज्ञान याने भजन करने में ही मन को लगाये रखे।

समता समझ विचार हेत, सब कूं सुखदाई। नेम गरीबी नांव, लगन सिमरन सूं भाई।। ४६ ।।

समता समझ विचार कर सब से प्रेम करना ही सुख देना है। नेम व गरीबी धारण करके सिमरण में ही लगन लगाना चाहिये।

बिरह बसे बैराग, त्याग सुरातन आवे। अे अंग मिल चौबीस, सुखराम संत कहावे।। ४७।।

बिरह बैराग त्याग व सूरवीरता से भजन करे, यह चौबीस लक्षण है। म:फ: है कि वही संत कहलाते है।

धीरज धरम ध्यान, भेद भगवत घट होई। दया दान दिल पाक, नेम परमारथ सोई।। ४८ ।।

धीरज धरम ध्यान एवं परमात्मा की प्राप्ति का भेद घट में होवे। दिल में दया दान पवित्रता नियम व परमारथ की भावना होवे।

शीतल सहज सुभाव, बात मिठी मुख बाणी। कोमलता बोहो लीन, भेद सब लियो पिछाणी।। ४९ ।।

शीतल हो सहज स्वभाव हो, व मुंह से मीठे वचन बोलता हो, कोमलता व भजन में लीन रहता हो वही सब भेद को पहचानता है।

पत पूरण परतीत, मत मन कूं बश किया। अे अंग मिल सुखराम, साध कूं साहिब दिया।।५०।।

विश्वास व पूरा भरोसा व ज्ञान से मन को बस में कर लिया है। म:फ: है कि यह शुभ अंग ओधाधारी साध को परमात्मा ही देते है।

जरणा जप सधीर, सरम साहिब दिश सांची।
सतगुरू मेर मरजाद, ज्ञान बिन करे न काची।।५१।।

सन्तोष जप धैर्यता निरन्तर भजन में लगा रहना ही सरम साहिब दिश सांची है। सतगुरू के ज्ञान की मर्यादा रखते हुए, झूंठी बात नही करते ।

अत आंतर मन सांच, चित चेतन सुध होई। मन पवना संग साज, दाग दुबध्या नही कोई।।५२।।

अन्तर में सच्चे मन से चेतनता व सुध भाव से भजन करना। मन व स्वांसा के साथ भजन करना व कू कर्मो का दाग और द्वेष भाव नही रखना।

सतवाचा गुरू धरम में, अे चौसठ अंग जोय।
गिगन बास सुखरामजी, सो जन साहिब होय।।५३।।

सतगुरूजी के अणभै ग्यान के वचनो को धारण करने से आठ अंग चौसठ लक्षण सही हो जाते है। फिर भजन कर सतशब्द के साथ के:पद में पहुंचते है। वही परमपद की प्राप्ति करते है।

आठ अंग चौसठ लछ, लिया सो नर राम केह है।
जन सुखराम धिन नर जुग में, गिगन मंडल घर कर है।।५४।।

आठ अंग व चौसठ लक्षणो को धारण करके जो मनुष्य राम राम करते है। म:फ: है कि वे स्त्री पुरूष धिन है जिनको के:पद की प्राप्ति हुई है।

शील सांच सन्तोष भाव सो, प्रेम प्रीत चित लीन।
जन सुखराम दया घट जरणा, आठ अंग ये चीन।।५५।।

शील सांच सन्तोष व भाव प्रेम व प्रीति से चित में लीन है। म:फ: है कि घट में दया धैर्यता यही आठ अंग है।

दोहा:- अंग अंग के आसरे, आठ आठ लछ जांण।
सुखराम दास न्यारा करे, सब लछ अंग पिछाण।। ५६ ।।

एक अंग के साथ आठ आठ लक्षण है। म:फ: है कि सब अंगो के लक्षणो को अलग अलग कर पहिचानो।

बैण नैण शीतल दशा, हास मगन नही नेहे।
सुखराम काम व्यापे नही, शील अंग लछ अेहे ।। ५७।।

वचनो से व आंखो से शीतल दशा धारण करना न किसी से राग द्वेष मोह व न किसी से प्रेम है व न किसी से खुशहाली है। म:फ: है कि किसी तरह की कामना नही व्यापती है। यही शील अंग के लक्षण है।

ज्ञान ध्यान गुण नेम, अरथ आदर निरमोही।
भै अन्तर सुखराम कह, सांच ऐसा लछ होई ।। ५८।।

ज्ञान ध्यान व नियम व गुणो को धारण करना, सब का आदर करना व मोह नही करना हृदय में ईश्वर का डर रखना। म:फ: है कि यही सांच अंग के लक्षण है।

धीरज धरम निरपख है,ने: चल ध्यान सधीर। अे लछ है सन्तोष का, सुखदेव चले बीर।। ५९।।

धीरज रखना, धरम धारण करना, निरपक्ष रहना व स्थिर भाव से धैर्यता पूर्वक ध्यान करना यह सन्तोष के लक्षण है। म:फ: है कि इनको धारण करना ही चले बीर है।

सूरत निरत में रख रे, अत आंतर चित चाय। भाव लछ सुखराम के, सब सूं शीश निवाय।। ६०।।

सूरत निरत लगाकर भजन करना अन्तर में चित में परमात्मा की प्राप्ति की चाहना रखना, सबसे नम्रता रखना यह भाव अंग के लक्षण है।

प्रसण प्रगल लीनता, चाह गरज विज्ञान। प्रेम लछ सुखरामजी, आदर सबको मान ।। ६१।।

प्रसन्नता रखना, प्रेम में गरक होना, भजन में लीन रहना, विज्ञान प्राप्ति की चाहना रखना। म:फ: है कि सब को आदर व मान देना यह प्रेम के लक्षण है।

सुध बुध सांसो, सोग मन डर त्रास। प्रीत लछ सुखरामजी, लगी अेक सूं आस।। ६२।।

सुध बुध से भजन करना व सब संशय सोग डर त्रास को मन से छोडकर एक रामजी की आशा करना ही प्रीत अंग के लक्षण है।

तलब तत ताकीद बोहो, अण भेदो न सुवाय। वीत लछ सुखरामजी, आठ पोहर हर गाय।। ६३।।

भजन करने की तलब रखकर ब्रह्म प्राप्ति की बहुत ही ताकीदी रहती है। अण भेदो नही सुहाता है। म:फ: है कि रात दिन भजन करना ही वीत याने वैराग के लक्षण है।

दान मान करूणा करे, कष्ट शुद्ध परतीत। दया लछ सुखरामजी, हार चले नही जीत।। ६४।।

दान करे, दूसरो का मान करे, दुखी जीवों पर करूणा करे, दूसरो का कष्ट मिटाने की कोशिश करे। म:फ: है कि नम्रता रखे अहंकार न रखे। उनकी जीत ही है हारता नही है।

शुषतो शीतल बुद भै, चाय लेण बुहार। जरणा लछ सुखरामजी, खिवण निवण मन मार।। ६५।।

शान्ति व शीतलता रखे, बुरे विचारों से इतना डरना कि उनको व्यवहार में लेने की चाहना न रखना, सबसे नम्रता व क्षमा रखना, मन में किसी तरह की इच्छा नही रखना। म:फ: है कि यह जरणा के लक्षण है।

आठ अंग ये साध में, चौसठ लछ समेत। सुखराम साध की पारखा, शब्द चाल सहेत।। ६६ ।।

साधु आठ अंग चौसठ लक्षण धारण करते है। म:फ: है कि साधु की परीक्षा उनके वचनो व चाल चलन से होती है।

अे अंग लछ उर उपजे, मोय मिलण के काज।
सुखराम परख चौडे धरी, सो जन जुग महाराज।। ६७।।

यह अंग लक्षण हृदय में परमात्मा पद की प्राप्ति के लिए ही पैदा होते है। म:फ: है कि यह परीक्षा चौडे बताई है। वही जन जगत में संत है।

आठ अंग लछ साध के, चौसठ शब्द सहेत। सो सांचा सुखराम कह, निरमल साधु होत।। ६८ ।।

जिनमे आठ अंग व चौसठ लक्षण साथ होते है। म:फ: है कि वही सच्चे व निर्मल सन्त है।

अे लछण हरि मिलण का, अष्ट अंग लवलीन।
पाया तो सुखराम कह, वे लछ न्यारा चीन।। ६९ ।।

परमात्मा की प्राप्ति के यह लक्षण है। जो आठ अंगो को धारण करते है। म:फ: है कि इन अंगो की प्राप्ति हुई है तो उन लक्षणों को अलग अलग पहचानो।

पाया परचा बैण कहे, मुख बरसे चख तेज। सदा सुख सुखराम कह, अणभै कागज भेज।। ७०।।

परमात्मा पद की प्राप्ति होना उनके वचनो से मालूम पडती है। मुंह व आंखो पर सदा नाव रटणा का नूर बरसता है और अणभै ग्यान के निरपख निरणे का आनन्द आता है।

मगन भया मन मांय ही, अन्तर ध्यान चढाय।
अब पाया सुखराम कह, गिगन मंडल घर जाय।। ७१ ।।

मन में खुशहाली व अन्तर ध्यान लगा रहता है। म:फ: है कि पद की प्राप्ति ही गिगन मंडल घर जाना है।

पाया की पारख सुणो,शब्द वाज सेनाण। ऊ देह सुखराम कह, भारी बोल पिछाण।। ७२ ।।

जिन्हें पद की प्राप्ति हुई है। उनकी परीक्षा वचन शब्द व लक्षणो से होती है। वह उसी देह में परमात्मा पद की प्राप्ति के अणभै वचन बोलते है।

आठ पोहोर रह एक सा, बदन पलटे नांय। रूप चढे सुखराम केह, दिन दिन दूणा मांय।। ७३ ।।

आठ पोहोर अखण्ड ध्यान लगा रहना व ध्यान का विशेष आनन्द आना ही दिन दिन दूणा रूप चढना है और मुंह पर नांव का नूर रहता है।

दिष्ट तेज मुख भल हले, बायक वचन सतोल।
पुथां लछ सुखराम केह, भरम ताक दे खोल।। ७४ ।।

उनकी दृष्टि ध्यान में ही रहती है। वचन ऐसे बोलते है कि सब भरमो का नाश हो जाता है। म:फ: है कि यह पहुंचे हुए संतो के लक्षण है।

भक्त बिना मत अंग रे, चौसठ ही सब झूंठ।
सुणज्यो सब सुखराम कह, ज्यूं नर खाली मूंठ।। ७५ ।।

आठ अंग चौसठ लक्षण धारण कर लिये है और सतशब्द ने:अंच्छर की भक्ति नही है तो उससे परमपद की प्राप्ति नही होती। जिससे उनको झूंठा कहा है। म:फ: है कि सब सुणो यही मनुष्य की खाली मूंठ है।

नीरस चीज सब लेत है, सरसी बिरला कोय।
यूं निरगुण सुखराम कह, सुरगुण भेली होय।। ७६ ।।

निषिद कर्म तो सब करते है व अच्छे कर्म बिरले ही करते है। म:फ: है कि सतगुरू विधि से सुरगुण की भक्ति वाणी से करने पर निरगुण की प्राप्ति हो जाती है।

च्यार बरण नर नार में, फेरफार नही कोय। हरजी तो सुखराम कह, प्रेम प्रीत बस होय।। ७७।।

चार वर्णो में स्त्री या पुरूष हो उनमें कोई फरक नही है। म:फ: है कि परमात्मा तो प्रेम व प्रीति से भजन करने वालों के ही वश में होते है।

संस्कृत काव्य कहूं, तो जग समझे नांय। तां कारण सुखराम कह, बोलूं प्राक्रत मांय।। ७८ ।।

यदि में संस्कृत भाषा में बोलूं तो संसार उसमें नही समझ सकता। म:फ: है कि इस वास्ते बोलचाल की भाषा में बोलता हूं जिससे सब समझ सके।

भूला नर भंवता फिरे, हर ढूंढण को जाय। साहिब तो सुखराम कह, नेडा है घट मांय।। ७९ ।।

भूले हुए परमात्मा को बाहर ढूंढने जाते है। म:फ: है कि परमात्मा इस शरीर में ही नजदीक है।

बाहिर नर ढूंढत फिरे, साहिब के तांई। हर तन में सुखराम कह, सो सूजे नांही।। ८० ।।

परमात्मा को बाहर ढूंढते फिरते है म:फ: है कि परमात्मा शरीर में ही है, सो नही सूजता है।

सुखराम दास मन जोश है, तब लग करणी होय।
निरबल होय गरीबी गही, ज्यां सूं बणे न कोय।। ८१ ।।

म:फ: है कि जिनके घट में प्रेम है तब तक परमात्मा की भक्ति होती है। मन में कमजोरी आ जाती है। तो उनसे भजन नही बनता है।

हर की गत सुखराम कह, मोसे लखी न जाय।
समझा सुरडे पानडा, भोला निज फल खाय।। ८२ ।।

म:फ: है कि परमात्मा की गति मुझ से लखने में नही आती है। समझे हुए पुरूष याने ग्यान कथने वाले ग्यानी वाणी वेद को कंठस्थ करके बोलते रहते है व भोले मनुष्य सतगुरूविधि से भजन कर परम पद की प्राप्ति कर लेते है। यही निज फल खाना है।

।। इति श्री साध लछ का अंग सम्पूर्ण।।

卐 सौदागरी ग्रन्थ 卐

सौदागर चल्या जीव सौदे, भरत खण्ड में आया।
कईयक कर गया लाभ कमाई, कईयक मूल ठगाया।। १ ।।

भरतखण्ड में जीव का मनुष्य जन्म में आना ही सौदा व्यौपार करने आना है। शुभ करणी कर तीन लोक के सुखो की प्राप्ति करना, योग के साधन कर ब्रह्म पद की प्राप्ति करना, परमात्मा के सतनाम निजनाम की भक्ति कर पूर्ण परमानन्द याने मोक्ष की प्राप्ति करना ही कईयक कर गये लाभ कमाई है अशुभ करणी करके नरकों व चौरासी का दुख प्राप्त करे और पुन: मनुष्य जन्म नही मिले यही मूल की पूंजी ठगाना है।

इन्द्र आद ब्रह्मादिक बंछे, यो नर तन है भाई।
रामभक्त और साध समागम, इसो लाभ इण मांही।। २ ।।

मनुष्य शरीर ऐसा है इसको प्राप्त करने की इच्छा इन्द्र ब्रह्मा आदि देवता भी करते है। मनुष्य शरीर से राम भक्ति व साधु समागम का लाभ मिलता है।

नर तन बडो पदारथ पायो, भजन करो नर नारी।
सिमरण जिस्या बिसारया सौदा, पशु संग्या ले धारी।। ३।।

मनुष्य जन्म मिलना बडा ही दुर्लभ है। मनुष्य जन्म में परमात्मा की भक्ति भजन करो। स्वांसा के साथ सिमरण नही करना ही सौदा बिसारना व पशु संज्ञा धारणा है।

जके जंजाल जागतां विपता, सांझ पडी जब सोयो।
सूतां विपत पडी सपना में, पशु उघालर खायो।। ४।।

संसार मोह में रात दिन दौडता व दुख पाता है। रात में सोने पर भी सपने भी वैसे ही आते है तो इसमें भी दुख होता है। जैसे पशु दिन में खाते है व शाम को बधोलते है।

घर की गांगरत गयो जमारो, उधम आपदा मांही।
मुंह से ठगे भरे अेक ओदर, पशु संज्ञा आ पाई।। ५।।

कुटुम्ब के मोह में परिवार के पालन पोषण के लिये ठगता, बेईमानी करता व झूंठ बोलता है। मनुष्य जन्म व्यर्थ गमाता है। यही गांगरत में जमारा गमाना है। पेट भराई का काम पशु भी करते है। मनुष्य करे तो वही पशु संज्ञा ही है।

नर संग्या ज्ञान ध्यान गुण साध समागम, सिमरण कथा विलासा।
जागे जिते राम ही सिमरे, सूता ओई अभ्यासा।। ६।।

ज्ञान करना, ध्यान करना, सिमरण करना, कथा का आनन्द लेना, संतो की संगत करना तथा जब तक जगते है तब तक राम राम करते है। सोने पर भी राम राम करते हुए सोते है। यह मनुष्य पणा है।

माया मोह भरम की रजनी, सूता जीव अघाई।
सतगुरू वाज करी ईक अैसी, राम कहो मेरा भाई।। ७।।

जीव का माया से मोह करना ही भरम रूपी रात्रि में अघाकर सोना है। सतगुरू ऐसा उपदेश देते है कि राम राम कहो।

मिनखा देही शुभ है ओसर, रामभजन लिव लावो।
भवसागर का दुख है भारी, जामण मरण मिटावो।। ८।।

मनुष्य जन्म मिला है यही बडा शुभ अवसर है। इसमें रामजी का लिव बंध भजन करके जन्म मरण का बडा भारी दुख है। उसको मिटावो।

सूता जन्म अमोलक बीते, जाग्यां जब पिस्तावो।
जीवडो पडयो जंजाला मांही, सपने जनम ठगावो।। ९।।

अज्ञान अवस्था में मनुष्य जन्म बीतना ही सूता जन्म अमोलक बीते है। ज्ञान होने पर इस बात का पछतावा होना ही जागे जब पिस्ताना है। मनुष्य जन्म पाकर भक्ति नही करना ही जीव का जंजालो में पडकर सपने में जनम ठगना है।

जीवण अलफ अवध है ओछी, माया सबे बिराणी।
तीतर बाज काल यूं दाबे, आशा सकल बिलाणी।। १०।।

जीवन व आयु थोडी है। माया सब दूसरो की है। जैसे तीतर कितनी ही आशाऐं बांधता है जब

बाज आकर झपटता है तो तीतर की सब आशाऐं समाप्त हो जाती है। ऐसे मनुष्य कई प्रकार की आशाऐं करता है। जब काल आ जाता है तो आशाऐं समाप्त हो जाती है।

तन धन जोबन देखत जासी, ज्यों बादल की छाया।
अंजली नीर ओस का पानी, सब सपना की माया ।। ११ ।।

शरीर, धन और यौवन अवस्था देखते देखते बादल की छाया की तरह चली जायेगी। अंजली व ओस का पानी सपने की माया की तरह है। कोई काम नही आता है।

मात पिता सुत नार सनेही, इण ठग नगरी जीव मोयो।
समज्यो नही मुसाफिर पेली, जन्म ठगायर रोयो।। १२ ।।

मनुष्य जन्म पाकर भक्ति नही की, माता पिता स्त्री पुत्र व कुटुम्ब के मोह में जन्म बिता दिया यही ठगाकर रोना है।

मैं मेरी में अवध गमाई, जनम बदीतों बातां।
सिमरण सौदा कदेहन कीया,ओ हीर मुसायो हातां।। १३ ।।

मेरी तेरी के अहंभाव में ही आयु गमा दी व बातों ही बातों में जन्म बिता दिया। मनुष्य जन्म में भजन नही किया तो पुनः मनुष्य जन्म नही मिलता है यही हाथ से हीरा खोना है।

काल कटक सूं सब जग धूजे, सूर नर घरां अहेडा।
जलम्यां जका गया दिन दूरा, यूं अंत काल दिन नेडा।। १४ ।।

सारा संसार काल की फौज से डरता है। देवता व मनुष्य सबको काल खा जाता है। मनुष्य शरीर में जन्म लिया वो दिन तो बहुत दूर चले गये अब अन्त समय नजदीक आ गया है।

कीजे काज आज यो ओसर, अवध ओस का पानी।
सिर पर काल रेण दिन गरजे, जम जालम है डांणी ।। १५ ।।

मनुष्य जन्म भक्ति करने के लिए मिला है। भक्ति करो, आयु ओस के पानी के जैसे है। सिर पर काल रात दिन गरज रहा है। जैसे करम करेगा वैसे ही फल भोगने पडेंगे यही जम डाणी है

बीता आव उपाव न कोई, होसी कागा रोला।
कुटुम्ब लुटेरा काया लुटे,जम जीव के दोला।। १६ ।।

मनुष्य जन्म की आयु बीतने पर कोई उपाय नही होगा। कुटुम्बी रो रो कर रह जायेंगे। यही कागा रोला है। कुटुम्ब के मोह में भक्ति नही करना ही कुटुम्ब रूपी लुटेरों का काया लूटना है। जन्म मरण में आना व नरकों का दुख भोगना ही जम जीव के दोला होना है।

पीव पीव कर नार पुकारे, पूत पूत कर माई।
कुरले कुटुम्ब कबीलो सारो, इण जंवरे जंग मचाई।। १७ ।।

स्त्री पीव पीव करके पुकारती रहेगी। माता पूत पूत कर पुकारेगी। सारे कुटुम्ब का रोना ही कुटुम्ब कबीलो सारे है। काल के आने पर शरीर छोडना ही जंवरे का जंग मचाना है।

सिर में गुरज गला में फांसी, जालम है जम राणो।
सायब राम कदे नही सिंवरयो, यो सब लोक बिराणो।। १८ ।।

यमराज के दूत सिर में गुरजो की मार व गले में फांसी देते है। यमराज बडा जबरदस्त है। जीव की सहायता करने वाले रामजी का भजन नही करके कुटुम्ब मोह में फंस गया, यही सब लोक बिराणा है।

झूंठो कुटुम्ब विषे सुख झूंठा, काया माया झूंठी।
जोवे खडा जोर नही लागे, आव उरस सूं टूटी।। १९।।

कुटुम्ब, विषयो के सुख, शरीर व माया सब झूंठी है। आयु की समाप्ति पर कुटुम्बी देखते रहते है। किसी का जोर नही चलता है।

बहुत कुटुम्बी जाय अकेलो, अेको संग न चाले।
सब स्वारथ की देख सगाई, दिन बीता दुख पाले।। २०।।

कुटुम्ब में बहुत से मनुष्य है लेकिन जाना अकेला ही पडता है। कोई साथ नही जाता है। सब स्वार्थ से ही प्रेम करते है। दिन बीतने पर दुख भूल जाते है।

अपणा पर का भया सरीसा, माया सब धर डाटी।
मुस्या जका चल्या इण साथे, आ खाय और ही खाटी ।। २१।।

कुटुम्बी जो सुख पहुंचाने वाले थे। उन्होने सब सम्पति पर अधिकार कर लिया यही अपणा पर का भया सरिसा है। सम्पति प्राप्त करने में जो बुरे कर्म किये वो उसके साथ चलेंगे। उनका फल उसे भोगना पडेगा। यही खाय और ही खाटी है।

सिवरण सिताब विलम्ब नही कीजे, आव घटे तन छीजे।
बडे दिशावर भगवत भेज्या, कोई सुखरत सौदा कीजे।। २२।।

परमात्मा की भक्ति करने में देरी मत करो। जल्दी से जल्दी करो। आयु घट रही है, तन क्षीण हो रहा है। भरत खण्ड में मनुष्य जन्म पाना ही भगवत का बडे दिशावर भेजना है। मनुष्य जन्म पाकर भक्ति में लगना ही सुखरत सौदा करना है।

भरत खण्ड में नर देह पाई, बडे दिशावर आया।
सतगुरू शाह मिल्या सौदागर, बिणज करो मन भाया।। २३।।

भरत खण्ड में मनुष्य जन्म पाना ही बडे दिशावर आना है। सतगुरू के ज्ञान से एक स्वांस में सीतर करोड नाम आते है। यही सतगुरू का ज्ञान धारण करना है। एक स्वांस को खाली नही जाने देना। तथा २१६०० स्वांस में भजन करना ही मन भाया बिणज करना है।

इणी दिशावर सब संत आया, आ मानव देह पाई।
सतगुरू हाट रामधन बिणज्या, देखो सफल कमाई।। २४।।

मनुष्य जन्म पाकर ही भरतखण्ड में ही सतशब्द की भक्ति करने वाले संत प्रगटे है। सतगुरू का ज्ञान धारण करने से एक स्वांस में सीतर करोड नाम आते है। उसको धारण कर के:पद आ:पद की प्राप्ति की है। यही रामधन बिणजना और सफल कमाई करना है।

सांसा रतन पराई पूंजी, सिवरण सौदा कीजे।
खोटे बिणज राम रिसावे, खोटे निवी छीजे।। २५।।

स्वांस परमात्मा के दिये हुए है। यही सांसा रतन पराई पूंजी है। स्वांसा से सिर्फ परमात्मा की भक्ति करो। स्वांसा से भजन नही करके दूसरे कार्यो में लगना ही खोटे बिणज राम रिसाना व खोटे निवी छीजना है।

छ: सौ शेष इकीसो सांसा, राम भजन के लेखे।
अेक रेण दिवस में अेतो दिवालो, जासी जन्म अलेखे।। २६।।

२१६०० स्वांसा राम भजन करने में जाते है। वो गिनती में आते है। यदि सांस उसांस में भजन नही करता है तो मनुष्य जन्म व्यर्थ जाता है। इतना नुकसान एक रात दिन में होता है।

सागे दाम धणी का देणा, इधका लाभ कमाई।
टोटो दे तो साह नही धीजे, इण में कहा भलाई ।। २७।।

२१६०० नाम रोज लेते है तब तक धणी के सागे दाम देने है। सतगुरू विधि से भजन करने पर एक सांस में ७० करोड नाम आते है। यही अधिक लाभ व कमाई है। साहूकार का कर्जा पूरा नही चुकाते तो वह उस पर न तो विश्वास करता है न ही दुबारा उधार देता है। ऐसे ही मनुष्य जन्म पाकर भजन नही करते तो दुबारा मनुष्य शरीर नही मिलता है। इसमें क्या भला होने वाला है।

खोटो खरो बिणज नही समज्यो, हाण लाभ नही जाण्यो।
पडयो दिवालो कहां जाय दाखो, ज्यूं बिणज ठगायो बाण्यो।।२८।।

बुरे व अच्छे व्यौपार को नही समझता, हानि व लाभ किस में है, नही जानता। जिस प्रकार बिणज व्यौपार में ठगाया हुआ महाजन अपना दुख किसी को नही कहता, सब सहन करता है।

खोटे बिणज खोवसी पूंजी, खोटे शाह रिसावे।
जम की गेल पडेगी गल में, राज द्वार बंधावे।। २९।।

खराब व्यौपार करने पर पूंजी खोने से साहूकार नाराज होता है। ऐसे उसांस में भजन नही करने से रामजी नाराज होते है। यमराज का दुख भोगना पडता है। उधर साहूकार राजा की जेल में भिजवाते है।

गिणिया सांस घटे दिन बीतां, बीसां सो की बारी।
छियंतर लाख सतन्तर करोड़ा, तोई भजन बिना भिखारी।। ३०।।

परमात्मा ने जो श्वांसे दी है उनकी कितनी ही बीस बीस की थप्पीयां लगा लेना, रोजाना तेरी यह ढिगलिया खत्म हो रही है। सतन्तर करोड छियंतर लाख श्वांस सौ वर्ष की उम्र में मिलती है। इतनी पूंजी मिलने के बाद भी भजन नही करता है तो भजन के बिना भिखारी के समान है।

खातो धर्मराय कूं सोप्यो, हिसाब हुवा पिस्तासी।
मूल मांय मिनखा देह हारी,ब्याज मांय दुख पासी।। ३१।।

जब धर्मराय के यहां तेरा हिसाब होगा तो पछताना पडेगा। मूल में तो मनुष्य जन्म नही मिलेगा व ब्याज में चौरासी का दुख भोगना पडेगा।

दोजख दुख जम की मारा, जन्म मरण दुख भारी।
लख चौरासी वार न पारा, भुगतेगो जुग च्यारी।। ३२।।

नरक व चैरासी का दुख, जन्म मरण का दुख बडा भारी है। चौरासी लाख योनियो में चार जुगो तक भुगतना पडेगा।

च्यार जुगा का बरस बदिता, लाख तीन चालीसा।
अेतो मार सहे सिर ऊपर, और सहेसर बीसा।। ३३।।

चार जुगो के ४३ लाख २० हजार बरस होते है। इतना दुख सहन करना पडेगा याने भोगना पडेगा।

च्यार जुगा बीच अेके बारा, ओसर नर तन पावे।
सतगुरू मिल्या बिना जीव सुना, फिर चौरासी आवे।। ३४।।

चार जुगों में एक बार मनुष्य शरीर मिलता है। मनुष्य जन्म में सतस्वरूप के ग्यान का भेद मिले बिना जीव परमात्मा से वंचित रह जाता है तो फिर चौरासी में जाना पडता है।

सिंवरो राम सकल दुख भांजे, सतगुरू शरण समावो।
सतगुरू हाथ अमर परवाना, नर तन पटे लिखावो।। ३५।।

सतगुरू की शरण लेकर सतगुरू विधि से रामजी का भजन करने से सब दुख दूर हो जायेंगे। सतगुरू विधि से भजन करने पर सतशब्द जाग्रत होते ही मनुष्य जन्म व आ:पद की प्राप्ति का पटा मिल जाता है।

अेसा पटा लिखे गुरूदेवा, अमर आंक मुख मांही।
बोहोर न भव जल आवे हंसा, जीवण मुक्त होई जाई।। ३६।।

सतगुरू ऐसा पटा लिख देते है, शब्द ब्रह्म की जाग्रति होना ही अमर आंक मुख मांही है। सतगुरू विधि पर भजन करने पर हंस जन्म मरण में नही आता है तथा जीवन मुक्त हो जाता है।

सिंवरो बेग बिलम नही कीजे, सतगुरू अग्या कीनी।
सांसोऊं सांस रटो आ रसना, राम भजन कूं दीनी।। ३७।।

सतगुरू की यह आज्ञा है कि जल्दी से भजन करो। देर मत करो। सांस उसांस में भजन करो। यह रसना राम भजन के लिये ही मिली है।

यो जग नींद शिष्य जब उठया, सुण सतगुरू की बाणी।
माया मोह भरम की रजनी, जाग्या सकल बिलाणी।। ३८।।

सतगुरू का ज्ञान सुनकर माया से मोह व भरम रूपी रात्रि से शिष्य जब जागता है। जब ज्ञान रूपी सूर्य के उगने पर अज्ञान रूपी अन्धेरा बिलाय मान हो जाता है।

वाह गुरा की ईमरत बाणी, मरतक जीव जिवाया।
होय सरजीत राम कह बोल्या, शब्द सरवणा आया।। ३९।।

सतगुरू विधि से भजन करना ही मृतक जीव जिवाया है। सांस उसांस में भजन करने से जो घोर बंधती है, उसको सुनना ही शब्द सरवणा आना है।

ऊबक्या नांव ब्रह्म की अग्या, मुख बिच रसना हाले।
धवण लगी धीर नही बंधे, वे शब्द गुरां का साले।। ४० ।।

सतगुरू की आज्ञा सांस उसांस में भजन करना मुखबिच रसना हाले है सांस उसांस में भजन से धवण बंध जाती है। दोनो सांस में नाम बराबर आना ही धीर नही बंधना व गुरां का शब्द सालना है।

अगम चेहेन शब्द सेनाणी, मिष्ट खुल्या मुख मांही।
सतगुरू मिलें तो सब विध जाणे, दूजा जांणे नांही।। ४१।।

अगम पद की प्राप्ति का चेन व सेनाणी यह है, जीभ पर अमी रहती व आनन्द का कंठो पर अनुभव आना ही मिष्ट खुलना है। सतगुरू ज्ञान धारण करने वाले जानते, दूसरे नही जानते है।

चमक्यो मन झबुकी नाडी, रूम रूम थररावे।
घुमे प्रांण गद गदे हियो, नैण अखण्ड जड लावे।। ४२।।

सतगुरू विधि से भजन करने पर नाड नाड रोम रोम में शब्द का अनुभव होना ही मन का चमकना है। प्राण घूमते है हिया गद गद होता है। आंखो में पानी की अखण्ड जड लग जाती है।

अमरत सीर ऊ रस सूं उतरी, कंठ बीच किया पसारा।
सांसोऊं सांस राम धुन लागी, आ देखो पतियारा।। ४३।।

ब्रह्म बैराट से शब्द का आना व कंठ कंवल पर अनुभव होना ही कंठ बीच किया पसारा है। सांस उसांस में रामभजन होना ही धुन लगना घोर बंधना यही विश्वास आना है।

कंठ बीच कंवल फूली गुल क्यारी, महा अमीरस पीया।
गुप्ता नैण खुल्या सब सूजे, ज्यूं दिल मंदिर दीया।। ४४।।

कंठ कंवल पर सूरत के आधार से शब्द का अनुभव होना ही गुल क्यारी का फूलना व महा अमीरस पीना है। सूरत शब्द का अनुभव होना ही गुप्ता नेण खुलना है। जब ही सब अनुभव होता है। यही सूजना है। जैसे मकान में दीपक का प्रकाश होने पर सब चीजे नजर आती है।

जन की जीभ कंठा बीच हाले, सूरत सांस कूं तोले।
पत्नी जेम पीव कूं प्यारी, शब्द सूरत ज्यां बोले ।। ४५।।

भजन करने वाले को मालूम होता है जबान से भजन अलग व कंठ कंवल पर अलग हो रहा है। सूरत स्वांसा में लगी रहती है। सांस में कितने आते है, ऊसांस में कितने आते है यही श्वांस तोलना है, सूरत का शब्द में ही लगा रहना ही पत्नी का पीव को प्यारी लगना है।

अमरत घूंटा शब्द अलूजे, धारा पूर चलेसे।
चकरी बेग चडयो है सांसा, दरपण में सब दिशे।। ४६।।

सांस उसांस में भजन होने से आनन्द आना ही इमरत घूट में शब्द उलझना है व धारा पूर चलना है। सांसा का चकरी की तरह चलना व उसका अनुभव होना ही दरपण में सब दीसना है।

तुलबे सांस गहया मन पवना, सतगुरू दीप संजोवे।
शब्द तार सूरत सुन्दरी, चुगचुग मोती पोवे।। ४७।।

सांस में मन लगाकर सांस ऊसांस में भजन होना ही तुलवे सांस गहया मन पवना है। शब्द का अनुभव होना ही सतगुरू का दीप संजोना है। सूरत का शब्द में लगना ही चुग चुग मोती पोना है।

पूरण चन्द्र पावस्यो हिरदे, होय रहया अखण्ड उजियाला।
निरख्या नूर जिगमिग लागी, देह बीच दीपक माला।। ४८।।

हृदय में शब्द का अखण्ड अनुभव होना, पूरण चन्द्र का उदय होना व उजियाला होना है, शब्द का सारे शरीर में अनुभव होना ही नूर निरखना, झिगमिग लगना व देह बीच दीपक माला है।

इमरत बून्दा प्रेम फुवारा, हिरदे होद भरिजे।
सुख की लहरया हंसा झूले, तो मेरा सतगुरू रीजे।। ४९।।

सांस उसांस में प्रेम से भजन होना ही ईमरत बून्दे प्रेम फुवारा चलना है। हृदय में शब्द का अनुभव हो आनन्द आना ही हौज का भरना है। यही सुख की लहर में हंस का झूलना व सतगुरू का रीजना है।

उजली धार अमीरस पीया, आनन्द उपज्या भारी।
फूल्या कंवल कली सब फूली, फूल रही सब क्यारी।। ५०।।

सतगुरू विधि से भजन करने पर अमीरस कंठो के अड अड कर उतरता है। यही अमीरस पीना है, उजली धार है व भारी आनन्द उपजना है। कंवलो पर शब्द का अनुभव होना ही कली व क्यारी

का फूलना है।

धसक्या आभ अथंग जल उलटया, झरे नाभ घर झरणा।
धुन के धोरे हरिजन भीजे, अे सुख सतगुरू चरणा।।५१।।

नाभ कंवल पर सांस ऊसांस में भजन होना ही धसक्या आभ अथंग जल उलटना, नाभ घर में झरणा झरना है। भजन से ध्वनि का होना हरिजन धुन के धोरे भीजना व सतगुरू के चरणो की शरण का सुख है।

लिव धम सांस नाभ रसणा बिच, नाडनाड सब जागे।
शब्द घोर सूं गढ घरणावे, नख चख में धुन लागे।।५२।।

सांस उसांस में रसना से नाभी तक लिव बंध भजन करने से नाड नाड जागती है। शब्द की घोर सारे शरीर में अनुभव होती है, यही गढ का घरणाना व नख से चख तक धुन लगना है।

गरज्या गिगन धडुक्या ईन्दर, घौर सुणयो पुर जागी।
मंगलाचार घरो घर हुवा, बटण बधाया लागी।।५३।।

सारे शरीर में शब्द का अनुभव होना व सब जगह आनन्द का अनुभव होना ही गिगन गरजना, इन्द्र धडुकना, घोर सुनना व पुर का जागना व घर घर में मंगलाचार होना है। अनुभव का कहना ही बधाया बटना है।

सूरत नेह शब्द सूं जोडया, ज्यूं निरखे चन्द चकोरा।
लिव में पोय लिया कहां जावे, ज्यूं चकरी बिच डोरा।।५४।।

सूरत शब्द में ही लगे रहना ही नेह जोडना है। व चिकोर का चन्द्रमा को देखना है, लीव बंध भजन करने से जो शब्द का अनुभव हो रहा है। चकरी बीच डोरा पोना है।

शशी के ऊदे कमोदण बिगसे, सूरत सीप आकाशा।
स्वातक बूंद पुकार पपिइयो, यूं राम मिलण की आशा।।५५।।

चन्द्रमा के उदय होने पर कमोदण फूलती है। सीप स्वाति की बून्द के लिए समुन्द्र में उपर आ जाती है। पपईया भी स्वाति की बून्द के लिए रात दिन पुकारता है। ऐसे ही सूरत रामजी मिलने की आशा में शब्द में लगी रहती है।

वांसु प्रेम पयाला आया, शेष आरती सारी।
मिणिया चोक चानणो पुर में, सिर पर झिगमिग न्यारी।।५६।।

नाभी से ब्रह्म व गणेश के स्थान को पार कर शेष के स्थान पर आना ही शब्द का प्रकाश का अनुभव होना ही मिणिया चौक चानणा पुर में सिर पर झिगमिग न्यारी है।

शीतल सकल रैत पुर राजा, रसना नाम उचारे।
भजन प्रताप ताप नही कोई, स्वर्ग सुख तो लारे।।५७।।

शेष स्थान में सूरत लगाकर भजन करने से सारे शरीर में ठंडी ठंडी लहरा आती है। भजन व शब्द के प्रताप से कोई ताप नही सताता है। स्वर्ग का सुख भी उस सुख से पीछे रह जाता है।

उलटा शब्द पिछम दिश आया, बंकनाल की बाटी।
धुजी धरण ब्रह्माण्ड धूज्यो, घोर मेर की घाटी ।।५८।।

यहां से शब्द पिछम की तरफ बंकनाल में उलटता है जिससे सारा शरीर धूजने लगता है।

इक्कीस स्वर्गो को पार कर मेरूदण्ड पर शब्द का अनुभव होना ही घोर मेर की घाटी है।

हल्या सुमेर कंप्या सूर सारा, गंग चढी गिरनार।
भिणकी बीण खच्या बोहो खेच्या, नार चढी जंतर तारा।। ५९।।

शब्द मेरूदण्ड पर आने पर शरीर धूजना ही सुमेर का हिलना व देवताओं का स्थान कांपना है। सूरत का मेरूदण्ड पर शब्द का अनुभव होना ही गिरनार पर चढना है। यही भीणकी बीण खच्या बोहो खेच्या है। सूरत का शब्द के साथ चढना ही नार चढी जन्तर तारा है।

लिव के बरत चढया मन नटवा, सांस तोल पग मेले।
खैच कबाण मिलाया गौसा, मुख सूं मूंदडी झेले ।। ६०।।

सांस उसांस में मन लगाकर लिव बंध भजन करना ही लिव के बरत मन नट का चढना है व सांस तोल पग रखना है, मेरूदण्ड पर उतानपात बंध लगता है। शरीर कबाण की तरह झुक जाता है। मुंह से भजन बराबर होता रहता है। यही मुंह से मून्दडी झेलना है।

सांस बरत सूरत है नटणी, मनवे ढोल बजाया ।
जन सुखराम निरत कर नाचे, चलो अगम कूं भाया।। ६१।।

श्वांसा रूपी बरत है। श्वांसा में सूरत निरत मन लगाकर अखण्ड भजन करने से अगम याने के:पद आ:पद की प्राप्ति हो जाती है।

करे पुकार प्राण सतगुरू ने, पंथ पिछम का ओखा।
हुई आवाज अगम घर मांही, घोर गिगन का गोखा।। ६२।।

प्राण सतगुरू से प्रार्थना करते है कि पिछम का रास्ता कठिन है। हंसे की पीड से गिगन मंडल में शब्द की धुनी गरजने लगी।

धर अर गगन धूजे देह सारी, खुली मेर की पोल्या।
सूरज जाय मिल्या घर चंदा, यूं शिष सतगुरू की जोल्या।। ६३।।

मेरूदण्ड से उपर शब्द जाने पर सारा शरीर धूजने लगता है यही धर हर गिगन धूजे देह सारी व मेर की पोल्या खुलना है। अला पिंगला एक होकर सूरत से शब्द का अनुभव होना ही शिष सतगुरू की जोल्या है।

अगम सुण्यो संत को सुर पुर , घर घर बटे बधाई।
जै जै शब्द दुधंबी बाजे, संत त्रृगुटी मांही।। ६४।।

भजन करने वाले सूरत लगाकर शब्द के साथ देवताओं के लोको में होकर त्रिगुटी में जाते है। जब दोनो कानों से अनहद की आवाजे आती है। यही घर घर बधाई बटना व जै जै शब्द दुंदुभिया बजना है।

उलटी घटा अखण्ड जड लागी, बरसे अमोलक हीरा।
सेंसर धारा सुखमणा ओलरी, तट त्रिवेणी तीरा।। ६५।।

भजन करने वाले हजार पांख के कंवल पर शब्द का अनुभव करते है। वहां शब्द झरता हुआ अनुभव होता है, यही उलटी घटा अखण्ड जड लगना व अमोलक हीरा बरसना है। त्रिवेणी तीर याने हजार पांख के कंवल पर शब्द का सुखमणा में अखण्ड अनुभव होना ही सेंसर धारा सुखमणा ओलरी है।

अनहद घुरे गगन गरणाया, अनन्त भांण ज्यां ऊगा।
तेज पुंज का सब संत दिसे, सतगुरू शब्दा पूगा।। ६६ ।।

ब्रह्मण्ड से ऊपर के पद भंवर गुफा में अनन्त भाण का उगना व अनहद घुरना व गिगन गरणाना है। सतगुरू शब्दा याने सतशब्द के साथ के: पद की प्राप्ति करना ही तेज पूंज का सब सन्त दिशे है।

मंछा भोग विमल जल पीणा, ऋतु बंसत गवे छः।
मान सरोवर माणक निपजे, हंसा हीर चुगे छः।। ६७।।

बंसत ऋतु में मन की इच्छानुसार भोग मिलने पर विमल जल पीने से जो सुख का अनुभव होता है, ऐसा आनन्द ब्रह्मण्ड में शब्द का ध्यान करने पर अनुभव होता है। ब्रह्मण्ड के ऊपर ध्यान करने से मन को खुशी होती है। यही मानसरोवर में माणक निपजना है व ध्यान का आनन्द लेना ही हंसो का हीरा चुगना है।

वार पार नग न्यारा दीसे, अेसा निरमल पाणी।
चात्रक मोर लवेछ दादर, चकवा कहे कहाणी।। ६८ ।।

निर्मल पानी में कोई चीज पडी हो, साफ दिखती है। ऐसे ही भजन करने वालों को सतशब्द का अनुभव होता है। यही वार पार नग न्यारा दिसना है। शब्द की ध्वनि का होना ही चात्रक मोर दादर चकवा का बोलना है।

ऐसा सुख ऊदासी अन्तर, अमर देश तो दूरा।
सांचो शब्द भोलाऊं संगी, सिर पर सतगुरू पूरा।। ६९ ।।

ब्रह्मण्ड में ऐसा सुख आने पर अन्तर में उदासी है कि अमरलोक तो दूर है लेकिन सतशब्द बोलाऊ साथ में है। सिर पर सतगुरू याने केवल ग्यान पुरा है।

सुख जहां दुख दिवस जहां रजनी, ज्यां जामण ज्यां मरणा।
ग्यान विचार गुरां का देखो, काल पास क्यों पडना।। ७० ।।

सुख है वहां दुख है, दिन है जहां रात है, जन्मना है जहां मरना है। सतगुरू के ग्यान से विचार करके देखो। काल की फांसी में क्यों पडते हो।

ओऊं चित्त बुद्ध मन पवना, अटक रहया सब यांही।
सूरत और शब्द चल्या दोऊ आगे, ममो मेर के मांही।। ७१ ।।

चित बुद्धि मन श्वांस यह सब नीचे रह जाते है सबका यही अटकना है। सूरत और शब्द बंकनाल से उलटकर आगे चलते है माया मेरूदण्ड पर रह जाती है।

भोडल भवन भांण अेक ऊगा, अेक मेक ऊजियाला।
दीप दीप न्यारा सब दीसे, स्वर्ग मध पंयाला।। ७२ ।।

शरीर में सतशब्द की जागृति होना ही भोडल भवन भाण एक उगना है। शरीर में सब जगह सतशब्द का अनुभव होना ही ऊजियाला होना है। खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड में स्थान स्थान पर अनुभव होना ही दीप दीप न्यारा दिशना है।

चवदा भवन चानणो दिसे, दिव्य नैण ज्यां खुल्या।
अमर देश तो दूरा इण सूं, अे आरम्भ सब ऊला।। ७३ ।।

सूरत द्वारा शरीर में तीन लोक चवदा भवन में शब्द का अनुभव होना ही सूरत रूपी नैण का खुलना व चानणो दिसना है, अमर देश याने के:पद आ:पद तो इनसे अलग दरसता है यह सब साधन उली तरफ के है।

तीन लोक और भवन चतुर दश, अेक काल को ग्रासा।
सतगुरू मेहर बिना नही छूटे, जन्म मरण भव त्रासा।। ७४।।

तीन लोक चवदा भवन तक काल की पहुंच है सतगुरू के ज्ञान बिना जन्म मरण का दुख नही मिटता।

चोकी फिरे शब्द की चहूं दिश, सतगुरू पौरा जागे।
नोपत नांव फरूकत नेजा, जुरा मरण भौ भागे।। ७५।।

सारे शरीर में सब जगह शब्द का अखण्ड अनुभव होना चोकी फिरना व सतगुरू का पोरा जागना है। के:पद में शब्द की अगम आवाजे हो रही है। यही नांव की नोपत नेजा फरकना है। जब जन्मने मरने का डर मिटता है।

बिचरत जहां बिवाण की छाया, पांच ज्ञान जीव पावे।
यूं हुमाव सतगुरू की सता, अमरलोक ने जावे।। ७६।।

ब्रह्मण्ड से पार ब्रह्म ऊपर सतशब्द का अधर अनुभव होना ही बिवाण की छाया बिचरना व पांचवा ज्ञान की प्राप्ति होना है। जैसे हुमाव पक्षी की छाया में आने से राजा हो जाता है। ऐसे ही सतगुरू सता की प्राप्ति होने पर अमर लोक याने के:पद आ:पद की प्राप्ति होती है।

अमरदेश संत अनन्त पहुंता, उपज्या केवल ज्ञाना।
मेटे कोण गुरां का लिख्या, अमर आंक परवाना॥ ७७॥

सतशब्द की जागृति होना ही केवल ज्ञान उपजना है। सतशब्द को प्राप्त करके अनन्त संतो ने के: पद आ:पद की प्राप्ति की है। यही अमर पद की प्राप्ति अनन्त संतो का पहुंचना है। इस प्रकार सतगुरू का ज्ञान अमर पद की प्राप्ति कराने वाला है। इसे कौन मिटा सकता है यही अमर आंक परवाना है।

अेक अमर बिवाण अगम सूं आया, वो है आदु शरणा ।
संत उछाव बधाई आगम, मारग केशर बरणा ॥ ७८॥

शरीर में शब्द ब्रह्म बेराट से आकर प्रगटता है यही अमर बिवाण का अगम से आना है। सतशब्द द्वारा के: पद आ: पद की प्राप्ति होना ही आदु शरणा है। उस पद में बैठे संत उछाव व एक दूसरे को बधाई देते हैं कि मृत्यु लोक से कोई हंसवृति आत्मा आ रही है। ऐसी आत्मा के जाने का मार्ग केसर बरणा है।

अधर दीप संतन की सता, अमर देश वो नामा।
आनन्द रूप अनन्त सुख सागर, नहीं दुख बिसरामा ॥ ७९॥

ब्रह्मण्ड पार ब्रह्म से ऊपर सतशब्द का अधर अनुभव होना ही संतो की सता है, उसका नाम ही अमर देश है। वहां आनन्द ही आनन्द व अनन्त सुखो का सागर है। वहां दुख जरा सा भी नही है।

गरजे गगन गेब की अवाजा, आणंद बायरा बाजे।
भलके भवन अगम ऊजियाला, शोभा अनन्त बिराजे ॥ ८० ॥

ब्रह्मण्ड पार ब्रह्म से ऊपर शब्द की ध्वनि की आवाज आना ही गेबकी आवाज आना है। उसका आनन्द आना ही बायरा बाजना है। सारे शरीर में शब्द का अनुभव होना ही भलके भवन अगम ऊजियाला व शोभा अनन्त विराजे है।

कोट भाण नख चख की शोभा, झलकत दिव्य शरीरा।
सोहत सभा भवन में पुरे, ज्यूं चन्द्र मणी हीरा ॥ ८१ ॥

रग रग रोम रोम में नाड नाड में शब्द का अनुभव होना ही कोट भाण नख चख की शोभा व दिव्य शरीर का झलकना है। जैसे चन्द्रमणी हीरे का प्रकाश सारे भवन में होता है, ऐसे ही शब्द का प्रकाश सारे शरीर में होता है।

मरतलोक मल मूत्र शरीरा, तेज पुंज सुर बासा।
दिव्य शरीर देश संता का, परम जोत प्रकाशा ॥ ८२ ॥

मृत्युलोक में मल मूत्र का शरीर, देवलोक में तेज पुंज का शरीर, संतो का शरीर दिव्य है। उसमें परम ज्योति का प्रकाश है।

अनन्त संत जहां अमर जुगा जुग, गिणता वार न पारा।
सरब सुख जहां आज्ञाकरी, मगनी मूनी सारा ॥ ८३ ॥

अनन्त संतो ने जुगो जुग में अमरपद की प्राप्ति की है, जिसकी गिनती का वार पार नही है। उस पद में अखण्ड आनन्द होना ही सब सुख का हाजर होना व मगनी मूनि सारा है।

जहां जलम मरण का नाम न जांणे, काल करम दोई कांपे।
और धाम सुख दुख के दाता, जुरा अण चिती झांपे ॥ ८४ ॥

वहां से जन्म मरण नही होता, काल व करम की वहां पहुंच नही है। तीन लोक चवदा भवन में सुख व दुख है। काल व बुढापा बिना चाहे ही आता है।

सुरग भोग सुख मद मत्सरता, मरतलोक भय सोगा।
लोक पंयाल जाय दिन दुख में, यूं हरक सोग तिहूं लोगा ॥ ८५ ॥

स्वर्ग लोक में मद मत्सरता है। मृत्युलोक में बहुत दुख है, पाताल में भी हमेशा दुख ही है। इस प्रकार तीनों लोको में हर्ष व शोक है।

वो मंगल देश राज संता को, रिद्ध सिद्ध सब पग पूजे।
चक्कर गेब फिरे जन द्वाही, काल कंपे भै धूजे ॥ ८६ ॥

सतलोक संतो का देश है। संत नही चाहते हुये भी रिद्धि सिद्धियां उनके पैर पूजती है। सतलोक में शब्द का अखण्ड अनुभव होना ही चक्कर गेब फिरे जन द्वाही है। काल व भय उस में नही है।

नख चख बिचे अखण्ड धुन उठे, जा दिन भये समादि।
जग में रहे जिते सुख ऐसा, अन्तकाल व्हे सादी ॥ ८७ ॥

सारे शरीर में नख से चख तक अखण्ड शब्द की ध्वनि होती है तब ही समाधि लगती है। जब तक शरीर संसार में है तब तक उस सता समाधि का सुख व आनन्द लेते है। अन्त समय में पूर्ण परमानन्द में लय हो जाती है।

आवे बिवाण मोख के मारग, बाजे दुंधुबी बाजा।
जै जै करे ईन्द्र ब्रह्मादिक, साध शकल सिरताजा ॥ ८८ ॥

जब भक्ति करके आत्मा मोक्ष में जाती है तब मोक्ष से बिवाण आता है। उस पद में दुधुंबी बाजे बजने लग जाते है। जब आत्मा देवलोक में से गुजरती है तब इन्द्र ब्रह्म आदि देवता जै जै कार करते हैं। ऐसे साध याने संत सबके सिर के ताज हैं।

ऊंची द्रष्ट दरसणे काजा, पेफ घटा पुर छाया।
पावन करे शकल सुर बंछे, बंछे बैकुण्ठ राया ॥ ८९ ॥

संत जब देवताओ के लोको में होकर जाते है, तब फूलो की बरसात करते है। ऊंची दृष्टि करके उनके दर्शन करना चाहते है। सब देवता भी यही इच्छा करते है। संत इधर होकर पधारे ताकि हमारे लोक भी पवित्र हो जावे ऐसी इच्छा बैकुण्ठ पति भी करते है।

सुरपत कहे भवन सब सुना, ब्रह्म लोक किण काजा ।
जन तप सत बैकुण्ठ उदासी, जहां नही रेत का राजा ॥ ९० ॥

देवता कहते है कि आप ब्रह्म लोक में क्यों पधारते है। आप यही विराजे। संत जनलोक, तपलोक, सतलोक, बैकुण्ठ लोक में नही बिराजना चाहते है। क्योकि वहां से आना जाना है। एवं सतलोक पद स्थिर है।

कमज्या काज गया पर मुल्का, कर कमज्या घर आया।
दुख सुख सहया पूछिया कुशला, माल अलेखे लाया ॥ ९१ ॥

संत फ: है कि जीव माया के देश में सुख दुख सहकर भक्ति करके के:पद आ:पद की प्राप्ति करता है। यही अलेखे माल लाना है। माया का देश पर मुल्क है।

जलम्या मरया सही तिस खुध्या, बस्या लोक बिराणा।
पहुंता निज नगर सहा बड नामी, तीन लोक तज ठांणा ॥ ९२ ॥

संत माया के देश में जन्मना मरना भूख प्यास सहकर भक्ति करके के: पद आ:पद की प्राप्ति करना ही बडनामी साहूकार निज नगर में पहुंचना है। तीन लोक से अलग पद की प्राप्ति करना ही तीन लोक तज ठांणा है।

इण शब्द अमर कर दिया, भज्या सो अमर हुवा।
जाण अजाण अमर फल खाया, ईमरत पी कुण मुवा ॥ ९३ ॥

सतशब्द ही अमर पद की प्राप्ति कराने वाला है। इसकी भक्ति करने वाला ही अमर पद की प्राप्ति करता है। जैसे जाण या अनजाण में अमरफल खावे। ईमरत पी लेवे, तो मरता नही अमर हो जाता है।

<u>दोहा</u>:- गगन गरजे गेबका, जेसी गोरम गाज।
संत द्वाही उण देश में, और संता ही को राज ॥ ९४ ॥

ब्रह्मण्ड पारब्रह्म से ऊपर के: पद में सतशब्द का अधर अखण्ड अनुभव होना ही गेबाऊ गिगन का गरजना है व गोरम गाजना है। उस देश में संत पहुंचते है वो देश संतो का है।

ब्रह्म मांही सुख दुख नांही, अर माया दुख को रूप।
अमर सुख माया अखण्ड, सुखिया वो देश अनूप ॥ ९५ ॥

परब्रह्म के पद में सुख दुख नही है। माया दुख का रूप है। अमरलोक में सत माया है उसका सुख भी अखण्ड है। म:फ: है कि वो देश अमर देश अनोपम है।

चंदण मणी चहूं दिश जड़या, सकल भुवन ऊजियाला।
जन सुखिया उण देश में, कोई काना सुण्यो न काल ॥ ९६ ॥

चन्द्रमणी हीरा के चारों तरफ जडने से सब जगह प्रकाश हो जाता है। कोई खोटा हीरा नही रहता है म:फ: है कि ऐसे ही सतलोक में काल की पहुंच नही है।

सतगुरू छांय हुमाव ज्युं, बिचरया अमर बिवाण।
सुखिया सता गेबकी, उपज्यो केवल ज्ञान ॥ ९७ ॥

जिस प्रकार हुमाव पक्षी की छाया में राजा होने का गुण है, ऐसे ही सतगुरू की सता में मोक्ष प्राप्ति का गुण है। म:फ: है कि सतगुरू की सता गेबाऊ है। के: ज्ञान धारण करने से ऐसा हुआ।

सुखिया समे चेत्यो भलो, गुरू बीरम की बार।
सिरजण हार दिज्यो सदा म्हाने, सतगुरां को दीदार ॥ ९८ ॥

म:फ: है कि मैं सतगुरू बीरमदास जी की कृपा से समय पर चेत गया जिससे मेरा भला हो गया। परमात्मा आप हमें सदा ही सतगुरू के दर्शन कराते रहो।

नर देही पाई नरा जो उपज्यो संसार। तो अे सौदा शब्द सुण किज्यो बारम्बार ॥ ९९ ॥

संसार में मनुष्य शरीर मिला है तो यह मेरा ज्ञान शब्द सुनकर ऐसा सौदा बारम्बार करते रहो।

पापी को यमलोक है, पुन्नी को सुरलोक।
सुरगुण भक्ति विष्णुपद, निरगुण भक्ति मोख ॥ १०० ॥

पाप करने वाला नरक में, पुण्य करने वाला देवता लोक में, सुरगुण नवधा भक्ति करने वाला बैकुण्ठ पाता है। निरगुण भक्ति से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

॥ इति श्री सौदागरी ग्रंथ सम्पूर्ण ॥

卐 तेजा चौधरी का संवाद 卐

श्री संत सुखरामजी महाराज ने तेजा चौधरी को समझाया :-

सुण तेजा सुखराम कह, ओ ओसर मत चूक।
जीती सार न हारियो, ससवो होय कर ढूक ॥ १ ॥

म: चौधरी से फरमाते है कि इस मनुष्य के अवसर को मत चूक। चौरासी लाख योनियो से मोक्ष की प्राप्ति नही होती। मनुष्य योनि से होती है। सतगुरू विधि से भजन करके मोक्ष प्राप्ति होना ही जीती सार का नही हारना है।

सुण तेजा सुखराम कह डाव न चूके वीर। यो ओसर बह जावसी, ज्यूं सिलता को नीर ॥ २ ॥

म:फ: है कि तेजा इस डाव को मत चूक, यह समय चला जायेगा। जैसे नदी का पानी बह कर चला जाता है।

नांव जडी सागे कने, कल कीमत नही काय। सुण तेजा सुखराम कह, पाया रोग न जाय ॥ ३ ॥

जडी है इसके प्रयोग की विधि नही जानने से प्राप्त होने पर भी रोग नही जाता है। ऐसे ही सब मनुष्य राम राम करते है, परन्तु राम राम करने की विधि नही जानते है। इसलिए सारी उम्र राम राम

करते हुए भी चौरासी का रोग नही मिटता ।

सुण तेजा सुखराम कह, गुरू सूं बैद अजाण। बैरी की गरज सारसी, यूं कह बेद कुराण ॥ ४॥

म:फ: है कि हे तेजा सुणो वेद व पुराण ऐसा कहते है कि अजाण गुरू व वैद्य दोनो बेरी का काम करते है।

झाडा औषध नांव रे, सुण सागे ही होय। जस बिन सुण सुखराम कह, कारी लगे न कोय ॥ ५॥

झाडा देने वाला दवाई व नांव एक सरीखे है म:फ: है कि सुणो बिना जानकारी के झाडा देने से, दवाई देने से व परमात्मा का नांव लेने से शरीर का व जन्म मरण का रोग नही मिटता है।

झूंठा गुरू के पास रे, झूंठा शिष चल जाय। सुण तेजा सुखराम कह, दोनो शुद्ध न काय ॥ ६॥

बिना भेद के रात दिन भक्ति भजन करने पर भी परमात्मा की प्राप्ति नही होती। यही झूंठे गुरू के पास झूंठे शिष्य का जाना है। म:फ: है कि तेजा सुणो दोनो को जानकारी नही है।

सुण तेजा सुखराम कह, समझ सोच मन मांय।
अब के ओसर चुकिया, जुग जुग परले जाय ॥ ७॥

म:फ: है कि हे तेजा सुणो, मन में सोचो, समझो। अब के इस अवसर पर याने मनुष्य जन्म में परमात्मा की प्राप्ति नही की तो जुग जुग में जन्म मरण का दुख भोगना पडेगा।

ओसर चुका बात को, बोह पिस्तावो होय। जन सुखदेवजी कहत है, सुणज्यो रे सब लोय ॥ ८॥

म:फ: है कि सब संसारी सुणो यह मनुष्य जन्म परमात्मा की प्राप्ति के बिना यों ही चला जायेगा। फिर चौरासी में पछताना पडेगा।

कनफूंका गुरू हद का, भावे सो कर आय। सतगुरू बिन सुखराम कह, सांसो कदे न जाय॥ ९॥

करणियां व कर्म कराने वाले कनफूंका गुरू चाहे जितने करो वे तीन लोकों में ही रखने वाले है। म:फ: है कि सतगुरू विधि से भजन किये बिना जन्म मरण नही मिटता।

सतगुरू क्यों कर जांणिये, या परख कहो मोय।
ज्ञानी तो सुखराम कह, नाना विध का होय ॥ १०॥

सतगुरू को कैसे जाना जाता है। यह परीक्षा मुझे बताओ। म:फ: है कि ज्ञानी तो कई तरह के होते है।

आ सतगुरू की पारखा, सुणज्यो चित दे कान।
केवल बिन सुखराम कह, भजे न दूजो आन ॥ ११॥

सतगुरू याने सतग्यान की यह परीक्षा है, कान व चित लगाकर सुणो, सत शब्द ने:अँच्छर की जागृति कैसे होवे, इस सतज्ञान के सिवाय दूसरा भजन नही करते ।

अणभै कागज लाविया, ब्रह्म देश सूं जाय। सो तारे सुखराम कह, हंसा कूं जग मांय ॥ १२॥

केवली भगवंत के:पद में पहुंच कर उस पद की प्राप्ति के लिए अणभै वाणी बनाते है। वो हंसो को उस पद की प्राप्ति करा देते है। यही अणभै कागज ब्रह्म देश से लाना है म:फ: है कि उन्ही के द्वारा संसार में हंसों का उद्धार होता है।

कनफूंका की क्या चली, सागे सतगुरू होय।
अणभै बिन सुखराम कह, तार सके नही कोय॥ १३॥

करणी कर्म कराने वाले गुरूओ की तो क्या बात है। जो सतशब्द ने:अंच्छर की भक्ति कर

के:पद की प्राप्ति करले तो भी अणभै ज्ञान नही होने से दूसरो का उद्धार नही कर सकते। खुद का ही करते है।

अणभै कागज हाथ दे, हर भेज्या जुग मांय। सो हंसा को तारसी, सुखदेव कह बजाय॥ १४॥

केवली संतो को परमात्मा ने अणभै वाणी बनाने का ज्ञान देकर जगत में भेजा है। म:फ: है कि वे ही हंसो का उद्धार करेंगे।

जिन जिन कूं दुवो हुयो, हंस तारण को देख। ता संग सुखदेव उधरे, क्या गरेही क्या भेख ॥ १५॥

जिन जिन को हंसो का उद्धार करने की अणभै ग्यान बनाने की आज्ञा हुई है। म:फ: है कि उनका ज्ञान धारण करने से गृहस्थी हो या भेखधारी सब का ही उद्धार हो जायेगा।

दुवा बिना सुखराम कह, तार सके नही कोय। क्या गरेही बैराग रे, भावे सा गुरू होय ॥ १६॥

म:फ: है कि अणभै की परवानगी के बिना गृहस्थी हो या भेषधारी गुरू हो, वे उद्धार नही कर सकते।

जे जन तारण आविया, दुवो ले जग मांय। वांसु मिल सुखराम कह, नरका एक न जाय ॥ १७॥

जो जन अणभै की परवानगी लेकर हंसो का उद्धार करने के लिए आये है। उनका केवल ग्यान धारण करने पर सतशब्द की जागृति हो जाती है। मनुष्य जन्म का पटा मिल जाता है यही नरक में नही जाना है।

जे जन तारण आविया, ज्यांरा अे अेनाण। सुखदेव मिलता प्रगटे, शिष में सायब आण ॥ १८॥

जो जन उद्धार करने के लिये आये है उनका यही सेनाण है। म:फ: है कि उनका अणभै ग्यान धारण करते ही सतशब्द की जागृति हो जाती है।

अणभै कागज बायरे, भावे सा जन होय। वाके संग सुखराम कह, हंसो तिरे न कोय ॥ १९॥

जिन्हें के:पद की प्राप्ति कराने के लिए अणभै वाणी बनाने का ओडर नही है, वे चाहे जैसी भक्ति भजन करने वाले जन हो, म:फ: है कि उनका ग्यान धारण करने से परमपद की प्राप्ति नही होती।

ज्युं नर प्यादो शहर को, यूं अणभै बिन साध।
सुखदेव सांच न मानियो, सब मिथ्या है बाद ।। २०॥

जैसे शहर के सिपाही के पास कागज नही हो ऐसे ही अणभै के बिना साधु है। म:फ: है कि उनकी बात सच मत मानो। उनके ज्ञान से परमपद की प्राप्ति नही होती, यही सब मिथ्या बाद है।

परवाना बिन बायरो, प्यादो खेले घात।
अणभै बिन सुखराम कह, यूं शिष्य मिल्या न जात ॥ २१॥

कागज बिना सिपाही घात खेलता है। म:फ: है कि ऐसे अणभै की परवानगी के बिना शिष्यो को परम पद की प्राप्ति नही करा सकते।

परवानो ले आविया, से जन जुग के मांय।
सो ताकीदी देत है, सुखदेव बोहो बिद आय ॥ २२॥

जो अणभै रूपी परवाना लेकर जगत में आये व जीवों को बहुत विधि से के:पद की प्राप्ति का ज्ञान समझाकर, म:फ: है कि वे इसी जन्म में उसकी प्राप्ति करने के लिए भजन करने की ताकीदी करते है।

सांचा सतगुरू संत वे हो, उलट चढे आकाश।
जनसुखदेव अणभै सो वाणी, वांरा ध्यान त्रिवेणी बास ॥ २३ ॥

अणभै वाणी बनाने वाले केवली भगवंतो व उनका अणभै ग्यान सच्चा है, वही सतगुरू है और सन्त वे है जो बंकनाल के रास्ते उलटकर गिगन में चढ जाते है। म:फ: है कि वे अणभै वाणी बोलते है। उनका सुखमणा में अखण्ड ध्यान होता रहता है।

॥ इति श्री तेजा चौधरी का संवाद सम्पूर्ण ॥

卐 घमण्डी रामजी रा शिष्य का संवाद 卐

थारे नाच कोण रीत होय छे, राम नाच तो सुण्यो नही भूत नाचे, तब सुखरामजी बोल्या:-
अरेल:- तुम सांचा नांचे भूत, पांच तत मांय रे। अे नृत्य करे हर काज, राम गुण गाय रे॥
सुण सुरत पवन संग, मन नाभ में खोय है। हर हां सुणज्यो कह सुखराम, नाच यूं होय है ॥ १ ॥

म:फ: है कि तुम सच्चे हो। यह पांच तत्वो के ही शरीर में नाचते है। यह परमात्मा की प्राप्ति के लिए रामजी का भजन करते है। सुणो स्वांसा ऊस्वांसा के साथ सुरत व मन लगाकर नाभ में ध्यान रखकर भजन करते है। म: फ: है कि सुणो इस तरह यह नाच होता है।

नांव रटे सुण जोर, प्रीत लागे अती भारी। विरह व्याकुल मन जीव, सुध बिसरे सब सारी॥
रटत रटत सो नाभ में, सेंग पेंग मन जाय। तब नाचे सुखराम कह, पांचभूत तन मांय ॥ २ ॥

शूरवीरता से नांव निज नांव का भजन करे, बहुत प्रेम करे, विरह आवे, परमात्मा प्राप्ति के लिए व्याकुल होता रहे, शरीर की भी सुध भूल जावे। म:फ: है कि इस तरह भजन करने से नाभी में मन लग जाता है। यह पांच तत्वों का शरीर नाचता है।

नांव रटे निरधार स पीडो कहत है। आ करक कलेजा मांय, रात दिन रहत है।।
सुण पडे शब्द की लहर नाभ में जोय रे। हर हां सुणज्यो कह सुखराम, नाच यूं होय रे ॥ ३ ॥

नांव निज नांव को निरन्तर रटे, एक क्षण भी नही भूले। हृदय में रात दिन भजन की लगी रहती है। सांस उसांस भजन करना ही नाभी लहर पडना है। म:फ: है कि सुणो ऐसे भजन करने से सारे शरीर में नाच होने लगता है।

सुरत निरत मन लिव बंध, भजन सो करत है। अे सांस उसांसा शब्द, नाभ में धरत है॥
तब होय उमाऊ मांय, कसर नही कोय रे। हर हां सुणज्यो कह सुखराम नाच यूं होय रे ॥ ४ ॥

नाभी में सुरत निरत व मन लगाकर सांस उसांस में भजन कर ध्यान रखते है। तो शब्द का सारे शरीर में अनुभव होता है। तब किसी तरह की कसर नही रहती। म:फ: है कि ऐसे भजन करने से नाच होने लगता है।

पडे शब्द की धूस, नाभ में आय रे। ज्याहां मन पवना के राड, नाच यूं थाय रे॥
अे धस गया पांचू मांय, भोमिया जोत है। हर हां सुणज्यो कह सुखराम, नाच यूं होत है ॥ ५ ॥

नाभी में शब्द का ध्यान रखकर भजन करना ही धूस पडना है। मन स्वांसा में नही लगता और उसे बार बार स्वांसा में लगाना ही राड होना है। मन पांचो विषयों में लगा हुआ था। उसे हटाकर भजन में लगाना ही भोमिया जोत है। म:फ: है कि सुणो इस तरह नाच होता है।

अे करे भजन मन धाव, जुगत सब छाड के। ब्रेह व्याकुल होय केत, कसर सब काड के॥
रे तब उमंगे मन शब्द जोस सूं उतरे। हर हां सुणज्यो कह सुखराम नांव यूं जूत रे॥ ६॥

दूसरे साधनो को छोडकर विरह व्याकुलता के साथ मन को भजन में लगाने से मन उमंगता है। जब वो शब्द प्रगट होता है। म:फ: है कि इस तरह भजन करने से निज नाम की जागृति होती है।

रसना खट रस साव कण्ठ अड निसरे। या ही बिरह की जाल, सुध सब बिसरे॥
रे नाभ कमल में नाच, पिछम में बंध रे। हर हां ध्यान लगे सुखराम, त्रृगुटी संध रे ॥ ७॥

भजन करने से कंठ में स्वाद आना ही रसणा खट रससाव कंठ अड निसरे है। बिरह के साथ सब सुध भूल जाता है। शब्द नाभ कमल में आने पर शरीर में कई तरह के चेन होते है। बंकनाल से मेरूदण्ड पर ऊत्तानपात बंध लगता है। म:फ: है कि त्रृगुटी में आने पर ध्यान लगता है।

इण तरां फेर बोलिया में तीन चार संत दीठा ज्यांरे नाच हुवा नही, तब सुखरामजी बोलिया:-
सुण ताके शब्द असोस, जोस सुध संत है। रे जाके व्हे सुण नाच, बिरह महमंत है॥
देह पिछम दिस बन्ध करारो आंण रे। हर हां भारी सो सुखराम, शब्द वो जांण रे ॥ ८॥

प्रेम व बिरह के साथ जिनके भजन होता उसको असोस कहा है। बिरह प्रेम से भजन होने को जोस सुध कहा है। बिरह महमंत है उनके नाच होता है। उनके पिछम में बन्ध लग जाता है। उस शब्द को भारी समझो।

बेह सिलता सुण पूर, पडी वा जात है। रे पाड़े सब बनराय, उछाला खात है॥
यूं सुण वांकी रीत, शब्द की ठांणिये। हर हां नाच हुआ सुखराम, ईधक तत जाणिये ॥ ९॥

अेक नदी तो शान्ति से पूर बहती है। और एक नदी उछाला खाती हुई बहती, वो किनारो के वृक्षो को उखाड देती है। म:फ: है कि ऐसे शब्द की रीति है, जिसके नाच होता है उस शब्द को अधिक जाणो।

कांपे है सब डील, नाभ में आवियां । रे नाच हुवो सो अधिक, राम गुण गाविया।
सुण सीया की बात, एक ही थाय रे। हर हां सुण इधक सुखराम, उछाला खाय रे ॥ १०॥

नाभी में शब्द आता है। तब सब शरीर कांपने लग जाता है। रामजी की भक्ति करने से जो नाच होता है। वह अधिक है। जैसे शरीर में बुखार चढता है, तब शीया लगता है। ऐसे ही शरीर धुजता है। म:फ: है कि जो उछाला खाता है। वो उससे अधिक है।

॥ इति श्री घमण्डी रामजी रा शिष्य का संवाद सम्पूर्ण ॥

卐 करमी नर का अंग 卐

कवित:- जल पाहण घी कूंप, झूंठ गुल आग न झेले। बालक संग जवान,
हीण नर सेज न खेले॥ बगतर छिपे न घाव, आंधलो चाव न देखे।
लाडू किया अनेक, चाख लेते बिन पेखे॥ काली ऊन न रंग चढे,
लाखां करो उपाय। यूं करमी नर सुखराम कह, ज्ञान भिदे न आय ॥ १॥

जल पत्थर व कूडे में पडा घी तथा जला हुवा सूत का गुल आग नही पकडते। बालक के साथ जवान हींज नर सेज का सुख नही लेता। लडाई का घाव बगतर पहन लेने से नही छिपता, दर्द होता रहता है। अन्धा आदमी इच्छा होते हुये भी कुछ नही देख सकता अनेक तरह के लाडू बनाये है पर

चखे बिना स्वाद मालूम नही होता। लाख ऊपाय करने पर भी काली ऊन पर दूसरा रंग नही चढता। म:फ: है कि इसी तरह करमी मनुष्य कभी भी ज्ञान धारण नही करता।

आक इख आदित्य आंखकारी यूं करमी। ज्युं मरकट सिर पांव,
अर्ड पोया को चिरमी॥ सरप दूध विष होय, मरे खर मिश्री खावे।
चहूं दिश सायर नीर, प्रेत प्यासो दुख पावे॥ युं करम हीण के नही बणे,
साध संगत को जोग। दाख फल्या सुखराम कह, हुवे काग के रोग ॥ २॥

आकडा व ईख याने सांठा के मेल नहीं खाता है। जिसने आंख का आपरेशन करवाया वो सूर्य की तरफ नही देख सकता, बन्दर को सिर से पांव तक अच्छे कपडे पहनाओ तो वह क्या समझता है। अर्ड पोया चिरमी से डरता है। सांप को दूध पिलाने पर भी जहर होता है। गधे को मिश्री खिलाने से मर जाता है। पानी के तालाब चारो तरफ भरे हुए है, परन्तु प्रेत प्यासा ही दुख पाता है। ऐसे ही करमहीण है उनके साध संगत का योग नही बनता। म:फ: है कि जब दाख फलता है तो काग के कंठ में रोग हो जाता है।

जहां आन की सेव, साध की संगत न भावे। जैसे जुर को जोर,
रूच अन्न की मिट जावे॥ करमी तजे कपूर, मेल माखी नितजोई।
बहुता दूधा धोय, कोयला उजल न होई॥ सदा संजीवण जीव कूं,
सनपाती अन्न सुं मरे। यू करम ऊदो सुखरामजी, ब्रह्म भक्ति कैसे करे ॥ ३॥

आन याने शरीर धारी गुरूओ की भक्ति करने वालो को सतशब्द ने:अंच्छर की भक्ति अच्छी नही लगती जैसे शरीर में बुखार का जोर होने पर अन्न अच्छा नही लगता, मक्खी कपूर पर नही बैठकर मेले पर बैठती है। कोयले को कितनी ही बार दूध से धोवो सफेद नही होता। अन्न हमेशा जीव को जीवन देने वाला है परन्तु सन्नी पात के रोगी को अन्न खिलाने पर रोगी मर जाता है। म:फ: है कि जिनके करमों का उदय होता है वो ब्रह्म की भक्ति कैसे कर सकते है।

ऊदे भांण आकाश जीव, अेता नही राजी। घुघु तस्कर चोर,
चमक पर भयंग बैराजी॥ दियो मान मुसाल, जोत हीरा की जावे।
यूं पतिव्रता कूं देख, बैसिया बोहो दुख पावे॥ यूं हरिजन मंड प्रकटिया,
करमी नर मुरझाय, ज्ञान चकर सुखराम कह। लगे कनफटी मांय॥ ४।।

घुघु, चोरी करने वाले चोर व तस्कर सूर्य उदय का प्रकाश होने से ये जीव नाराज होते है। सांप भी चमक से नाराज होता है। सूर्य के प्रकाश के सामने दीपक की मशाल की व हीरा की ज्योति भी कम हो जाती है। पतिव्रता नारी को देखकर वैश्या बहुत दुख पाती है। ऐसे ही सतशब्द की भक्ति निरपक्ष केवल ग्यान के निरणे को सुनकर करमी नर दुखी होते है। म:फ: है कि उनको ज्ञान सुनकर अच्छा नही लगता। यही कनफटी में लगना है।

॥ इति श्री करमी नर का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 धिरग धिरगता का अंग 卐

साखी:- मद भागी संसार में, सो नर कहिये जोय।
सुणज्यो सब सुखराम कह, ज्यां मुख राम न होय ॥ १॥

म:फ: है कि सब सुणो मदभागी मनुष्य वह है जिसके मुख में राम न हो याने रामजी का भजन नही करता हो।

नर देही नर पाय कर नांव रटे नही कोय। तांको सुण सुखराम कह, धरग जमारो होय॥ २॥

म:फ: है कि मनुष्य शरीर पाकर जो राम के नाम को नही रटता है उस मनुष्य जन्म को धिक्कार है।

धरग धरग वा नर देह रे, धरग धरग वांकी जात ।
तामे सुण सुखराम कह, नही भजन की बात ॥ ३॥

म:फ: है कि उस मनुष्य शरीर को धिक्कार धिक्कार है व उसकी जाति को धिक्कार धिक्कार है जिसमें राम भजन की बात नही है।

भजन बिना नर फिरत है, ते नर पशु समान। हर तज से सुखराम कह, धरक पूजे जे आन ॥ ४॥

म:फ: है कि भजन के बिना जो मनुष्य फिरता है वो जानवर के समान है। ब्रह्म राम को छोडकर शरीर रूपी आन की पूजा करता है उसको धिक्कार है।

समरथ को शरणो तजे, गहे आन की ओट। ताकूं धरक सुखराम कह, धरक लाणत है कोट ॥ ५॥

समरथ परमात्मा की शरण को छोडकर जो शरीर रूपी आन की शरण पकडता है। उसको धिक्कार है, म:फ: है कि उसको करोडो धिक्कार व लाणत है।

आठ पोहोर सिंवरे नही, आद पुरूष निरधार। सो आयस सुखराम के, धरक धरक इण संसार ॥ ६॥

जो पारब्रह्म का निराधार नाम है। उसको रात दिन नही सिमरते। म:फ: है कि उसको धिक्कार है जो संसार में मनुष्य जीवन पाकर के राम नही सिंवरता है।

जंगम होय जांचे नही ,अविन्यासी निज देव।
धरक धरक सो सुखराम कह, लहे न आत्म भेव ॥ ७॥

जो अविनाशी निरंजन निराकार ब्रह्म को जंगम होकर नही जांचता। म:फ: है कि उन्हे धिक्कार है जो आत्मा के आधार से सतशब्द की भक्ति होती है। उसका भेद नही लेते।

बेरागी होय ब्रह्म को, ने:चल धरे न ध्यान। तांकू धक्र सुखराम कह, गरह तज भुक्ते काम ॥ ८॥

बैरागी होकर सतशब्द का ध्यान नही करते है। म:फ: है कि उसको धिक्कार है जो घर को छोडकर भी अनेक तरह की कामनाए रखते है।

बैरागी होय राम सूं, लिव लगाई नांय। ग्रह तज धरक सुखराम कह, फेर बस्ती में जाय॥ ९॥

बैराग्य लेकर भी जिसने रामजी से लिव नही लगाई है। म:फ: है कि धिक्कार है उसको जो घर छोडकर भी स्वारथ की कामना रखते है। यही बस्ती में जाना है।

जती होय जगदीश कूं, तन मन अरप्या नांय।
तांकू धरक सुखराम कह, तज उलटा विष खाय॥ १०॥

जती होकर भी जिसने ईश्वर की तन मन से भक्ति नही की है, म:फ: है कि धिक्कार है जो संसार छोडकर विषयो की इच्छा रखता है।

ब्राह्मण होय कर ब्रह्म को, भेद न जाणे कोय।
धरक धरक सो सुखराम कह, नांव लजावे जोय ॥ ११॥

ब्राह्मण होकर ब्रह्म प्राप्ति का कोई भेद नही जानते। म:फ: है कि उसे धिक्कार है, धिक्कार

है देखो वह ब्राह्मण के नाम को लजा रहे है।

ब्राह्मण के घर जन्म रे, भजन ब्रह्म को नांय।
तांकू धरक सुखराम कह, ब्राह्मण केवायो जाय ॥ १२ ॥

ब्राह्मण के घर जन्म लेकर निरंजन निराकार ब्रह्म का भजन नही करता। म:फ: है कि उसको धिक्कार है कि ब्राह्मण क्यों कहला रहा है।

ज्ञानी होय के ज्ञान की, राह चले नही कोय।
धक धक सो सुखराम कह, नित पलट हुवे लोय ॥ १३ ॥

जो ज्ञानी होकर परमात्मा की प्राप्ति का ज्ञान नही करता म:फ: है कि उसे धिक्कार है, धिक्कार है जो संसार में हमेशा आता जाता रहता है।

पंडित होय निरपक्ष की, करे न चरचा आय।
धक धक सो सुखराम कह, जग स्वागत के जोय॥ १४ ॥

पंडित होकर निरपक्ष ज्ञान नही देकर स्वार्थ सिद्धि का ज्ञान देता है। म:फ: है कि उसको धिक्कार है जो संसार को अच्छा लगता है वो ज्ञान देता है।

धक ज्ञानी धक भेष सो, जे हरि रता नांय। धक दुनियां सुखराम कह, से पूजण कूं जाय ॥ १५ ॥

उन ज्ञानियों व भेषधारियों को धिक्कार है। जो परमात्मा में रत नही है। म:फ: है कि उन संसारियों को धिक्कार जो उनकी पूजा प्रतिष्ठा करते है।

नो निध का बरसा हुवे, अन्न धन अकथ अपार।
बिन सिवरण सुखराम कह, धरक धरक जन्म गिंवार ॥ १६ ॥

घर में नो सिद्धि का खजाना हो अन्न व धन भी इतना हो जिसका वर्णन नही हो सकता। म:फ: है कि बिना भजन के उनके जीवन को धिक्कार है धिक्कार है।

बुध भारी हिम्मत घणी, बडी अकल तन मांय।
तांकू धरक सुखराम कह, समझर सिंवरे नांय ॥ १७॥

बुद्धि बहुत भारी है। हिम्मत भी बहुत है। अकलमंद शरीर है। म:फ: है कि उसको भी धिक्कार है जो समझकर याने सतगुरू विधि से भजन नही करता।

जांण बुज हर जो तजे, ताकूं फिट धिक्कार। आगो होय सुखराम कह, पिछो पड़े गिंवार ॥ १८ ॥

जो जानबुझकर राम का भजन छोड देता है उसे फिट धिक्कार है। म:फ: है कि जिसने सतगुरू का अणभै ज्ञान धारण कर लिया है फिर भी सतगुरू विधि से भजन नही करता है।

चरचा सुण मन प्रतिज्ञा ले, अग्या लीजे जाय।
धक धक सो सुखराम कह, ढील करे घर जाय ॥ १९ ॥

ज्ञान चरचा सुनकर मन में प्रतिज्ञा करता है कि सतगुरू के पास जाकर आज्ञा लेना है। याने सांस उसांस भजन करना। म:फ: है कि घर जाकर आज्ञा याने विधि लेने में जो ढील करता उसे धिक्कार है।

फिको मन हुवे भक्त सुं, चरचा सुण मुरजाय।
धक धक सो सुखराम कह, हरि गुण सुणे न आय॥ २० ॥

न तो भक्ति भजन में मन लगता न ही चरचा सुण भक्ति में लगता यही मुरझाना है। परमात्मा

के गुणानवाद नही सुनता है। म:फ: है कि उसे धिक्कार है।

धक धक वे नर नार है, ज्यांरे भक्त अभाव।
तांकू धक सुखराम कह, गरह तज विष चाव ॥ २१ ॥

उन स्त्री पुरूषो को धिक्कार धिक्कार है जो भक्ति नही करते। म:फ: है कि जो घर छोडकर भी विषय भोगों की इच्छा रखते है उसको धिक्कार है।

धक धक वांको जलम है, गरह तज विषिया खाय।
तांकू धक सुखराम कह, जन के पास न जाय॥ २२ ॥

उनका जन्म धिक्कार है जो धर छोडकर विषयो की इच्छा रखते है। म:फ: है कि जो सतशब्द जाग्रत होने का केवल्य ग्यान है व केवल्य भक्ति बताने वालों के पास नही जाते उन्हें भी धिक्कार है।

मिनख जन्म पाय कर, सिंवरे नही जगदीश।
तांकू धक सुखराम कह, लाणत विस्वा बीस ॥ २३ ॥

मनुष्य शरीर पाकर रामजी का सिमरण नही करते। म:फ: है कि उसको धिक्कार है व विस्वा बीस लाणत है।

घर आश्रम बांधकर, संत न पोखे लाय ।ताकूं धक सुखराम कह, धक नर जन्म कुवाय ॥ २४॥

गृहस्थ का घर बांध बैठा है। संतो की सेवा नही करता याने द्वार पर आये को अन्न, जल नही देता है। म:फ: है कि उसको धिक्कार है जो मनुष्य कहला रहा है।

आत्म में परमात्मा, तांकू खोजे नांय। वा देही सुखराम कह, धक धक है जग मांय ॥ २५॥

इस आत्मा में ही परमात्मा है। उसको नही खोजता, म:फ: है कि उस मनुष्य शरीर को संसार में धिक्कार है धिक्कार है।

परमेश्वर सुं प्रीत नही, ज्ञान उथापे आय।
धक धक सो सुखराम कह, गुरू द्रोही जग मांय॥ २६ ॥

जिसका परमात्मा से प्रेम नही है तथा ज्ञान को उथापता है। म:फ: है कि संसार में उन्हें धिक्कार है जो गुरू द्रोही है।

काछ लम्पटी धक है, धक झूंठा कह बैण ।
धक धक सो सुखराम कह, होय नर बिरचे सेण ॥ २७॥

जो चरित्रहीन है, झूंठ बोलते है। म:फ: है कि धिक्कार है उन्हें जो उनकी भलाई करने वाले सेण है। उनकी बुराई करता है।

धक धक तांको जनम है, बैण पलट होय जाय।
तांकू धक सुखराम कह, वे नर सूंका खाय ॥ २८ ॥

जो वचन कहकर पलट जाते है। उसके मनुष्य जन्म को धिक्कार है। म:फ: है कि जो मनुष्य रिश्वत खाता है उसको धिक्कार है।

करणी कदे न आदरे, करमा सूं हुशियार।
हरि बेमुख सुखराम कह, सो नर सब ही गिंवार ॥ २९ ॥

जो जगत में अच्छा कार्य करता है उसका आदर नही करता है और स्वयं कर्म बंधन का कार्य करता है, वह परमात्मा से बेमुख है। ऐसे मनुष्य सभी गिंवार यानि मूर्ख है।

मदभागी संसार में, सुणज्यो अे सब होय। भेद बिना सुखराम कह, क्या मूढ ज्ञानी लोय ॥ ३० ॥

म:फ: है कि सुणो संसार में वे सब ही मदभागी है जो परमात्मा की प्राप्ति का भेद नही जानते चाहे मूरख हो ज्ञानी हो।

भेक पेहर हरि ना भजे, तांकू फिट धरकार।
फिट लाणत सुखराम कह, भेद ना लहे गिंवार ॥ ३१ ॥

जो भेष धारण कर साधु बन कर भी परमात्मा का भजन नही करते है उन्हें फिट धिक्कार है। साधु होकर सतशब्द ने:अंच्छर की भक्ति का भेद नही लेते, वो मूर्ख है।

त्यागी होय ताकीद सूं, भजे न अनघड देव।
तांकू ध्रक सुखराम कह, निज पद लख्या न भेव ॥ ३२ ।।

जो त्यागी होकर अनघड रामजी का जल्दी से भजन नही करता म:फ: है कि उन्हे धिक्कार है जिसने निज पद के भेद का अनुभव नही किया।

जोगी होय सुखराम कह, जोग न साज्या कोय।
तांकू ध्रक सुखराम कह, भेख लजायो जोय ॥ ३३ ॥

योगी होकर जिसने योग की साधना नही की म:फ: है कि उसको धिक्कार है देखो उसने अपने भेष को लजाया है।

हर की भक्त समावता, डिग पच गोता खाय।
ध्रक ध्रक सो सुखराम कह, परखर लोप्या जाय ॥ ३४ ॥

परमात्मा की भक्ति करने में डिगपिच कर गोता खाता है। म:फ: है कि धिक्कार है धिक्कार है। उसको जो परख कर भी लोप रहा है।

आगो पिछो हो रयो, अग्या लुं के नांय। तांकू धिरक सुखराम कह, हरि दिश गोता खाय ॥ ३५ ॥

आज्ञा लेने याने सांस उसांस रटणा करने में आगे पीछे हो रहा है। लेवुं या नही लेवुं। म:फ: है कि उसको धिक्कार है परमात्मा की तरफ बढते हुए गोता खा रहा है।

डरतो इण संसार सूं, अग्या लहे न कोय। तांकू फिट धिरकार है, कह सुखदेवजी तोय ॥ ३६ ॥

संसार से डरता हुआ कोई आज्ञा याने सांस उसांस भजन करना नही चाहता है। म:फ: है कि उसको फिट धिक्कार है।

चर्चा सुण आरे करे, पत समावे नांय। तांकू ध्रक सुखराम कह, परखर लोप्या जाय ॥ ३७ ॥

ज्ञान चर्चा सुनकर भजन करना स्वीकार नही करता है। उस पर भरोसा नही करता। म:फ: है कि उसको धिक्कार है कि परीक्षा करके भी लोप रहा है।

राम नांव उपदेश रे, यांको कहे फितूर। तांकू ध्रक सुखराम कह, वां मुख पडसी धूल ॥ ३८ ॥

राम का नाम उपदेश है। जिसे फितूर कहते है। म:फ: है कि उसको धिक्कार है ऐसा कहने वाले के मुंह पर धूल पडेगी।

राम नांव आरे करे, ओ पद आद अनाद। ध्रक वाकूं सुखराम कह, रटे जना सुं वाद ॥ ३९ ॥

राम नाम को स्वीकार नही करता है। यह पद आदि अनादि से है। म:फ: है कि उसको धिक्कार है। जो राम नाम को रटते है। उनसे वाद विवाद करते है।

रटे जना कूं झूंठ कहे, राम नाम सत होय। तांकू ध्रक सुखराम कह, सुणो शिष्ट के लोय ॥ ४० ॥

म:फ: है कि जो जन राम नाम का भजन करते है। उनको झूंठ कहते है। राम नाम सत मंत्र है। सब संसारी सुणो राम नाम को झूंठ कहने वाले को धिक्कार है।

साखी शब्द सीख के, अडे संत सु कोय। तांकू ध्रक सुखराम कह, गयो जमारो खोय॥ ४१॥

कोई साखी शब्द सीखकर संतो से आकर लडते है। म:फ: है कि उसको धिक्कार है। वह मनुष्य जन्म को खो रहा है।

आप न देख्या देश वो, सुण सुण अड़े गिंवार। तांकू ध्रक सुखराम कह, सीखर होय खंवार ॥ ४२॥

खुद ने तो वो देश देखा नही है। दूसरो से ज्ञान सुन सुनकर मूर्ख अडता है। म:फ: है कि उसको धिक्कार है जो सीखकर जोरावर हो रहा है।

अरथ भेद जांणया बिन, थाप उथापे कोय। ध्रक वांकू सुखराम कह, सीख ज्ञान जन होय॥ ४३॥

अरथ भेद के बिना जाणे ही थापना उथापता है। म:फ: है कि उसको धिक्कार है जो ज्ञान सीखकर गुरू बनते है।

सांचा जन कूं उथपे, अडंग बडंग करे ज्ञान। तांकू ध्रक सुखराम कह, परख करे न आन ॥ ४४॥

सच्चे जन है उनके ज्ञान को उथापता है व मन से अडंग बडंग झूंठा सच्चा ज्ञान करता है। म:फ: है कि उसे धिक्कार है जो ज्ञान की परीक्षा नही करता।

जोड जोड़ कर कहत है, साखी शब्द सुणाय। ध्रक भिडे सुखराम कह, जे अणभै सुं ल्याय ॥ ४५॥

जो बना बनाकर साखी शब्द कहता है म:फ: है कि धिक्कार है उनको जो अणभै वचनों से उसकी बराबरी करते हैं।

बेहद की बाता कहे, साध समाधि गाय। तांकू ध्रक सुखराम कह, चारण जैसा ठहराय ॥ ४६॥

बेहद की बाते करते है, साधु समाधि का बखाण करते है। म:फ: है कि उनको धिक्कार है। वो चारण की तरह मालूम पडते हैं।

जे पुंथा समाद घर, मिल्या ब्रह्म में जाय। वे जन कूं सुखराम कह, ध्रक माने नही आय ॥ ४७॥

जो समाधि अवस्था में पहुंचे है व ब्रह्म में जाकर मिले है। म:फ: है कि ऐसे जनों को नही मानने वालों को धिक्कार है।

हर जन चढ असमान में, बोलत निरभै ज्ञान।
ताकूं ध्रक सुखराम कह, जे नही करे बखाण ॥ ४८॥

भक्ति करने वाले जन गिगन में चढकर निरभै ज्ञान का उच्चारण करते है। म:फ: है कि धिक्कार है उनको जो ऐसे जनों का बखाण नही करते है।

ईत उत अंच्छर लायकर, साखी कहे बणाय।
तांको ध्रक सुखराम कह, जन होय बेसे आय ॥ ४९॥

ईधर उधर से अक्षर जोडकर साखी बनाकर कहते है। म:फ: है कि उनको धिक्कार है जो जन होकर बैठे है।

शब्द भेद जाणे नही, साख कवित कहे जोड़ ।
तांकू ध्रक सुखराम कह, रहे जनां सु तोड़ ॥ ५०॥

शब्द ब्रह्म के भेद को नही जानते। साख व कवित जोड कर कहते है। म:फ: है कि धिक्कार है उनको जो जनो से तोडकर बैठे है।

कवित साख ऐसी कहे, जैसी कही कबीर। ध्रक वाकूं सुखराम कह, शिष्ट बांध के बीर ॥५१॥

कवित साख ऐसी कहते है कि जैसी कबीरजी महाराज ने कही थी। म:फ: है कि धिक्कार है उनको जो दूसरो की कही हुई कहते है। यही शिष्ट बांध के बीर है।

पूंथा बिन वाणी कहे, तांकू फिट धिरकार। छाया ले सुखराम कहे, कथणी कथे गिंवार ॥५२॥

के: पद आ:पद में पहुंचे बिना जो बाणी कहते है उनको फिट धिक्कार है। म:फ: है कि दूसरो की छाया लेकर मूर्ख कथणी कथ रहे है।

खट कंवल पूर्व दिशा में, छे पिछम का खोल। गढ़ पर चढ़ सुखराम के, अणभै वायक बोल ॥५३॥

पूर्व के छ: कमलो को व पिछम के छ: कमलो को खोलता है व गढ पर चढकर अणभै का वचन बोलते है।

द्वादस कंवलन छेदिया, उलट चढया नहीं कोय।
तांकू ध्रक सुखराम कह, शब्द कहत है जोय ॥५४॥

बारह कमलों का छेदन नही किया व बंकनाल से उलटकर गिगन में नही चढे। म:फ: है कि धिक्कार है उनको जो देखकर शब्द कहते है।

पहुंचा बिना बांणी करे, निरभै शब्द उचार।
तांकू ध्रक सुखराम कह, आगे पडसी मार ॥५५॥

के: पद आ: पद की प्राप्ति किये बिना बाणी करते है। निरभै शब्दों का उच्चारण करते है। म:फ: है कि उन्हें धिक्कार है। आगे जमराज के यहां मार पडेगी।

भजन बंदगी भेद नहीं , साखा कहे अनेक ।
तांकू ध्रक सुखराम कह, फूस पिछाटे देख ॥५६॥

न तो भजन का भेद जानते व सेवा करते है, अनेक तरह की साखे कहते है। म:फ: है कि उनको धिक्कार है वो देखो फूसो को पिछाट रहे है ।

दत्त गोरख के शब्द कूं, बुज्या अर्थ न होय ।
तांकू ध्रक सुखराम कह, निरभै बोलत जोय ॥५७॥

पूछने पर दत्तात्रेयजी गोरखनाथजी के शब्दो का अर्थ नही बता सकते । म:फ: है कि उनको धिक्कार है। देखो निरभै बोल रहे है ।

घट मांही अस्थान है, बुज्या कही न जाय ।
तांकू ध्रक सुखराम कह, कहे परचे की लाय॥५८॥

इस घट में कौन से स्थान पर किस देवता का निवास है, पूछने पर नहीं कह सकते। म:फ: है कि उनको धिक्कार है जो करामातो की लाकर कहते है ।

बुज्या अरथ न उपजे, कहे गवचे साख ।
तांकू ध्रक सुखराम कह , शब्द छाया ले भाख ॥५९॥

पूछने पर अरथ नही ऊपजता है साखे गाकर कहते है । म:फ: है कि उनको धिक्कार है जो दूसरो के शब्दो की छाया लेकर कहते है ।

साखी शब्द कह रहयो, बिना अरथ विचार ।
साखा कहे सुखराम कह, सो जड़ बडो गिंवार॥६०॥

अर्थ के बिना विचारे ही साखी शब्द कह रहा है । म:फ: है कि केवल शाखा कहने वाला बडा ही मूर्ख गिंवार है ।

पारब्रह्म की भक्ति बिन, ध्रक करणी करतूत ।
ध्रक मंतर सुखराम कह, जे हरजी बिना सूत ॥ ६१ ॥

पारब्रह्म परमात्मा की भक्ति के बिना करणी करतूत को धिक्कार है । म:फ: है कि धिक्कार है उन मन्त्रो को जिससे परमात्मा की प्राप्ति नही होती, हरजी बिना सूत है।

ध्रक सो जाणे घणी, ब्रह्म भेद बिन बात ।
तां सु ध्रक सुखराम कह, करे जीव सुं घात ॥ ६२ ॥

ब्रह्म के भेद बिना दूसरी बातों को बहुत जानता है उसको धिक्कार है। म:फ: है कि उनको धिक्कार है। जो जीवो के साथ धोखा करते है ।

ध्रक तामस ध्रक शीश वा, जग कूं तज्यो न जाय ।
ध्रक श्रवण सुखराम कह, अनहद सुण्यो न जाय ॥ ६३ ॥

धिक्कार है उस क्रोध को धिक्कार है, उस शिर को जो जगत को नही छोड सकता। याने बुद्धि पर विवेक नही रखता। म:फ: है कि धिक्कार है उन कानो को जिनसे अनहद नही सुनता।

ध्रक ध्रक हरि बिन कोड है, ध्रग बिन भक्ति चाव।
ध्रक ध्रक सो सुखराम कह, हरि गुरू बिन ब्हो भाव ॥ ६४ ॥

धिक्कार है उस लग्र को धिक्कार है जो बिना भक्ति उमंग रखते है। म:फ: है कि धिक्कार है जो रामजी सतगुरू याने सतग्यान के बिना दूसरो से भाव रखता है ।

ध्रक ध्रक अमल छोके, चढे करम पर जाय।
ध्रक चित मन सुखराम कह, पवन गहे नही माय॥ ६५ ॥

धिक्कार है उस अफीम खाने वालो को जो करमो में रत है । म: फ : है कि उस चित्त मन को धिक्कार है जो स्वांसा को अन्दर नही पकडते ।

ध्रक ध्रक सो रंग राग है, धरक जीणा कंठ होय ।
तांसु सुण सुखराम कह, हरजस करे न कोय॥ ६६ ॥

धिक्कार है उस रंग राग को धिक्कार है उस जीणे कंठ से परमात्मा के गुणानुवाद नही गाता।

ध्रक ध्रक कंठ हरजस बिना, सुणज्यो से सब कोय ।
ध्रक मंडली सुखराम कह, बिन शिवरण जो होय॥ ६७॥

उस कंठ को धिक्कार है जिससे हरजस नही बोला जाता। म:फ: है कि सब सुणो उस मंडली को धिक्कार है जो हरि सिमरण नहीं करती ।

ज्यां मंडली भेली हुई, भजन बंदगी नांय ।
ध्रक ध्रक सो सुखराम कह, वां मुरख क्यों जाय ॥ ६८ ॥

जहां मंडली इकट्ठी हो जाती है। ईश्वर का भजन भाव नही होता। म:फ: है कि धिक्कार है धिक्कार है वहां मूरख क्यों जाते है ।

इत उत से भेला हुवे, नर नारी सब लोय ।
ध्रक ध्रक सो सुखराम कह, शिवरण करे न कोय॥ ६९ ॥

इधर उधर से स्त्री पुरूष इकट्ठे हो जाते है। म:फ: है कि धिक्कार है धिक्कार है उनको वे रामजी का सिमरण नही करते ।

धक धक सो जुग जाणिये , जामे नही औतार।
धक सतगुरू सुखराम कह, जो जीव लंघे नही पार ।। ७० ॥

उस युग को धिक्कार है जिसमें अवतार नही आते। म:फ: है कि उन सतगुरू बनने वालो को धिक्कार है जो जीवों को पार नहीं लगाते।

धक धक मंडल देश वो , ज्यां पहुंता संत न होय।
धक बस्ती सुखराम कह, जीव न जागे कोय ॥ ७१ ॥

उस देश व मंडली को धिक्कार है धिक्कार है जिसमें पहुंचे हुए संत न हो। म:फ: कि उस बस्ती को धिक्कार है जिसमें किसी जीव के सतशब्द की जाग्रति न हुई हो ।

धक नगर धक शहर वो, ज्यां में सती न होय।
तांसु धक सुखराम कह, राम रटे नही कोय ॥ ७२ ॥

उस नगर व शहर को धिक्कार है जिसमें पतिव्रता स्त्री न हो। म: फ: है कि उनको फिर धिक्कार है जो कोई भी राम भजन नहीं करता।

धक मंडल ज्यां साध नहीं, धक बस्ती बिन दास।
धक द्वारो सुखराम कह, नही भक्त की प्यास ।७३ ॥

धिक्कार है उस मंडली को जिसमें साधु न हो, उस बस्ती को धिक्कार है जिसमें भगवान का दास न हो, म:फ: है कि उस द्वारे को धिक्कार है जिसमें किसी को भगवान की भक्ति की प्यास न हो।

धक धक कुल धक जात वा, ज्यां में संत न होय।
धक मेहरी सुखराम कह, हरिजन जण्यो न कोय ।। ७४ ॥

धिक्कार है उस कुल को धिक्कार है उस जाति को जिसमें कोई संत न हो, म:फ: है कि उस नारी को भी धिक्कार है जिसने भगवान का भक्त पैदा नही किया।

धक धक बस्ती धक गांव सो, ज्यां हरि चरचा नांय।
धक घर सो सुखराम कह, एक न सुण ने जाय ॥ ७५ ॥

धिक्कार है उस बस्ती व गांव को जहां हरि परमात्मा की चर्चा नहीं होती हो, म:फ: है कि धिक्कार है उस घर को जिसका एक भी सुननें को नही जाता ।

सुणज्यो सब सांची कहूं, मोय सतगुरू की आंण।
केवल बिन सुखराम कह, सब ही झूंठ बखाण।। ७६ ॥

सब ही सुणो मैं तुमको सच्ची बात कहता हूँ । सतगुरू की सौगन्ध खाकर कहता हूं सतस्वरूप की भक्ति बिना सब ही झूंठा बखाण कर रहे ।

तीन लोक सुं जे रता, क्या नर नारी देव।
धक धक सो सुखराम कह, पारब्रह्म बिन सेव ।। ७७ ॥

जो स्त्री पुरूष व देवता तीन लोकों में रत है । म:फ: है कि धिक्कार है धिक्कार है उनको पार ब्रह्म के बिना दूसरों की सेवा करते है।

धक धक सो ये पांव रे, दरशण कदे न जाय ।

नैण ध्रक सुखराम कह, रूप न निरखे आय ।। ७८ ॥

धिक्कार है धिक्कार है उन पांवो से जो ज्ञान सुनने नही जाते, म:फ: है कि उन नेत्रो को धिक्कार है जो सुरत रूपी नेत्रो से शब्द ब्रह्म के दर्शन नही करते ।

ध्रक हाथ गुरू टेल बिन, ध्रक कान वे होय।
हर चर्चा सुखराम कह, चित कर सुणी न कोय।। ७९ ॥

धिक्कार है उन हाथो को जिनसे सतगुरू की सेवा नही हुई, उन कानो को धिक्कार है कि जिन्होंने हरि चरचा को चित लगाकर नही सुणा है।

ध्रक मन बुध वा अकल है, मेहेमा करे न आय।
ध्रक मन सो सुखराम कह, गुरू सुं मिले न जाय ।। ८० ॥

धिक्कार है धिक्कार है उस बुद्धि और अकल को जो सतगुरू व सत ग्यान की महिमा नही करती। म: फ : है कि उस मन को जो सतगुरू ज्ञान को धारण करके सुरत शब्द में नहीं मिलती।

ध्रक जीभ या मुख रसना जांकी, नांव रटे नहीं कोय।
ध्रक मत सो सुखराम कह, गुरु धर्म पत नही होय ।। ८१ ।।

धिक्कार है उस जीभ को जो नांव को सांस उसांस नही रटती। म:फ: है कि धिक्कार है उस बुद्धि को जिसे गुरु धर्म में विश्वास नही होता।

ध्रक ध्रक खाली जात है, नांव बिना दम कोय।
ध्रक दिन सो सुखराम कह, तां दिन भजन न होय।। ८२ ।।

धिक्कार है उस पोर व पल को जिसमें जो स्वांसा बिना नाव रटणा के जा रहे है। म:फ: है कि उस दिन को धिक्कार है जिस दिन भजन नही होता।

ध्रक ध्रक वा पोर पल, नांव बिसारे कोय।
ध्रक दहाड़ो सुखराम कह, हरिजन मिले न कोय ।। ८३ ।।

धिक्कार है उस पोर व पल को जिसमें नांव की रटणा नही होवे। म:फ: है कि उस दिन को धिक्कार है जिस दिन कोई हरिजन नहीं मिले हो।

ध्रक ध्रक वांको धन है, गुरु नही पुज्या लाय।
ध्रक मस्तक सुखराम कह, चरण निवायो नही आय ।। ८४ ।।

धिक्कार है धिक्कार है स्वांसा रूपी धन, ग्यान भक्ति के काम नही आता। म:फ: है कि धिक्कार है उस मस्तक को जो सतगुरु के अणभै ग्यान के चरणो में नही झूकता।

ध्रक जांको धन माल है, ध्रक बगतावर होय।
सतगुरु की सुखराम कह, महिमा करी न कोय ।। ८५ ।।

धिक्कार है जिस धन माल को धिक्कार है बगतावर याने बडप्पन को। म:फ: है कि जिसने सतगुरु की महिमा नही करी है।

ध्रक तन मन माल सो, ध्रक सुख संपत होय।
सतगुरु कूं सुखराम कह, अरपण करी न कोय ।। ८६ ।।

उस तन मन माल को धिक्कार है। म:फ: है कि उस सुख सम्पति को भी धिक्कार है जो सतगुरु के अरपण नहीं की हो।

धक दाता धक सुर वां, हरी गुरू सामा नाय ।
धक की मत सुखराम कह, मन नही पकड़यो जाय ॥ ८७॥

उस दाता व शूरवीर को धिक्कार है जो ईश्वर व सतगुरू के सामने न आया हो। म:फ: है कि धिक्कार है उस मती को जिसने मन को नही पकडा है।

हरि बिन चर्चा धक है , धक ज्ञानी बिन भेद।
धक बाणी सुखराम कह, गुरू महिमा बिन छेद ।। ८८॥

ईश्वर के बिना चर्चा को धिक्कार है धिक्कार है । उस ज्ञानी को जो भेद नही जानता। म:फ: है कि धिक्कार है उस वाणी को जिसमें बिना छेह गुरू याने सत अणभै ज्ञान की महिमा न हो।

धक पढियो धक सीखियो, हर गुरू बिना ज्ञान।
धक धक सो सुखराम कह, बिना घट शील स्नान ।। ८९॥

उस पढने व सीखने को धिक्कार है जो परमात्मा व सतगुरू विधि के बिना ज्ञान है म:फ: है कि जिस घट ने शील व्रत धारण नही किया है धिक्कार है।

धक धक मरतंग धक है, जे नर रोवे नार।
धक जामण सुखराम कह, हरक न हुवो विचार ॥ ९०॥

धिक्कार है उस मरने वाले मनुष्य को जिसकी स्त्री रोती है। म:फ: है कि धिक्कार है उस माता को जन्म देकर भी जिसे हर्ष न हुआ ।

धक नर जुग में धक है, मुवां को दे बांग।
तांसु धक सुखराम कह, अमल तमाखु भांग ।। ९१॥

उस मनुष्य को जगत में धिक्कार है जो मुर्दो को बांग लगा रहा है । जो अमल तमाखु भांग काम में लाता है उसे भी धिक्कार है।

धक बस्ती धक बास घर, ज्यां हरी भक्ति नांय।
धक मुरदो सुखराम कह, पांव पसारया जाय ।। ९२।।

उस बस्ती व घर को धिक्कार है जहां रामजी की भक्ति नहीं है। म:फ: है कि उस मरने वाले को धिक्कार है, जो बिना भक्ति किये पांव पसारे जा रहा है ।

धक धक जां घर सोग रे, धक बड़ले सो नार।
धक मुवां को रोइये, सुखदेव तके गिंवार ॥ ९३॥

उस घर को धिक्कार है जिसमें सोग है। धिक्कार है उस स्त्री को जो रोती है। धिक्कार है जो मरे हुवे को रोते है। म:फ: है कि वो मूर्ख है।

धक आरो धक ब्याव सो, जहां जन जिम्या नांय।
धक जाती सुखराम कह, बिन देह देवल जाय ॥ ९४॥

उस नुगते व ब्याव को धिक्कार है जहां हरिजन नहीं जीमते है। म:फ: है कि धिक्कार है उस जाने वाले को, संतो का शरीर तो वहां नही है सिर्फ देवल है, वहां जाते हैं।

धक तीरथ धक धाम वो, जल बीन ही निवास।
धक जाती सुखराम कह, ममता बुजी न आस ॥ ९५॥

उस तीरथ व धाम को धिक्कार है जहां जल भी नही है। धिक्कार है उस जाने वाले को

जिसकी ममता व आशा नही बुजी है।

धक धक भक्त न परख ले, सतगुरू करे न कोय।
धक गुरू बिन सुखराम कह, राम स्नेही होय ॥ ९६ ॥

जो भक्ति की परीक्षा कर सतगुरू विधि से भक्ति नही करता, उसे धिक्कार है। म:फ: है कि धिक्कार है उन्हे जो सतगुरू विधि के बिना राम से स्नेह करने वाले होते है ।

कनफूंका गुरू हद का, वांसु रहे उलजाय।
तांसु धक सुखराम कह, सतगुरू करे न आय ॥ ९७॥

कान में फूंक देकर गुरू बनते है । वो हद गुरू है। उनसे उलझ जाते है। म: फ: है कि धिक्कार है उनको जो हदगुरू छोड सतगुरू विधि को धारण नहीं करते है ।

झूंठे गुरू से लागा रहे, तांकू फिट धिक्कार।
सतगुरू कूं सुखराम कह, समझर तजे गिंवार ॥ ९८ ॥

जो झूंठे गुरू के साथ लग रहे है उनको फिट धिक्कार है। म: फ: है कि वे मूर्ख है जो सतगुरू याने सतज्ञान को समझकर भी छोड रहे है।

सांचा सतगुरू सो सही, उलट चढे असमान ।
दूजा सब सुखराम कह, झूंठा करे बखाण ॥ ९९ ॥

सच्चे सतगुरू वे ही है जो बंकनाल के रास्ते से चढकर आसमान में पहुंचते है। म: फ: है कि दूसरे सब झूंठा बखाण कर रहे है।

हरजी को शिवरण करे, जन सूं धेक विचार। तांकू धक सुखराम कह, दरगा पडसी मार॥ १०० ॥

जो परमात्मा का सुमरण करते है व हरिजनो से द्वेष करते है उनको धिक्कार है। म: फ: है कि उनको धरमराय की दरगा के यहां दुख भोगना पडेगा ।

भजन भाव व भक्ति बिना, धक धक क्या नर नार।
सब परले का जीव है, सुखदेव कह विचार ॥ १०१ ॥

भजन भाव व भक्ति के बिना स्त्री हो या पुरूष उनको धिक्कार है। म:फ: है कि मैं विचार कर कहता हूं कि सब परले के जीव है याने जन्म मरण में आने वाले है।

।। इति श्री धिरग धिरगता का अंग सम्पूर्ण।।

卐 धिन धिनता का अंग 卐

साखी:- धिन धिन तांको जन्म है, ज्यां पद खोज्यो आय।
फिर धिन सो सुखराम कह, रहया राम लिव लाय॥ १ ॥

उनका जन्म धिन धिन है जिन्होने परमपद को खोजा है । म:फ: है कि उनको फिर धिन है जिनके रामजी का लिव बंध भजन हो रहा है ।

धिन ज्ञानी धिन संत वे, धिन जो चिन्हा राम।
धिन सो सुखराम कह, जनम जीवता पहुंता धाम॥ २ ॥

उन संतो व ज्ञानियो को धिन है जो जीते जी स्वांसा व प्राणो से अलग होकर के: पद आ: की प्राप्ति की है। यही राम चिनना व धाम का पहुंचना है।

धिन धिन सुण सोई मंड में, जा मथ काड़यो सार।
धिन फिर सो सुखराम कह, लेवे तत्त विचार ॥ ३ ॥

इस ब्रह्माण्ड में वही धिन है जिन्होने मथ कर याने ज्ञान के द्वारा माया के पद से अलग ब्रह्म की प्राप्ति कर ब्रह्म का ज्ञान करते है यही सार काढ तत विचारना है ।

धिन धिन सो संसार में, जिन घट बह्म गिनान।
फिर धिन सो सुखराम कह, दियो भरम सब भान ।। ४ ॥

शरीर में शब्द ब्रह्म का आत्म चेतन द्वारा अनुभव करना ही घट में ब्रह्म ज्ञान होना है । असत को असत समझना ही भरम भानना है। ऐसे साधु संसार में धिन है ।

धिन धिन सो संसार में , जां सिर सतगुरू होय ।
फिर धिन सो सुखराम कह, तत्त कण लियो जोय॥ ५ ॥

संसार में वे ही धिन है धिन है जिन्होंने सतगुरू का अणभै ज्ञान धारण किया है। म:फ: है कि फिर वे धिन है जिन्होने ब्रह्म पद में मिलने का सतज्ञान धारण कर लिया।

धिन धिन जांकु गुरू मिल्या, सतगुरू समरथ आय।
आत्म में सुखराम कह, दिया ब्रह्म बताय ।। ६ ॥

वे धिन है धिन है जिन्हे समरथ सतगुरू की शरण मिली है। म:फ: है कि सतगुरू याने संतो के अणभै ज्ञान ने आत्मा में ही शब्द ब्रह्म की जागृति करा दी है।

धिन धिन निरगुण ओलख्यो, इण काया के मांय ।
फिर धिन सो सुखराम कह, उलट गिगन घर जाय ।। ७ ॥

वे धिन है जिन्होने शरीर में शब्द ब्रह्म का अनुभव कर शब्द के साथ उलट कर गिगन में पहुंचे है।

धिन धिन सो नर धिन है, ज्यां रे जन को लाड।
फिर धिन सो सुखराम कह, मुख रसणा लिव गाढ॥ ८ ॥

वे मनुष्य धिन है जो शब्द ब्रह्म की भक्ति करने वालो से भाव व प्रेम करते है व रसना से निरन्तर भजन करते है।

धिन धिन सो संसार में, ज्यां घट दया सन्तोष।
फिर धिन सो सुखराम कह, दे जीवां दिल पोख॥ ९ ॥

इस जगत में वे धिन है धिन है जिनके घट में दया सन्तोष है। म:फ: है कि वे धिन है जिनके दिल से जीवो की रक्षा करना व सुख पुंचाना ही पोख देना है।

धिन धिन सो नर धिन है, सो गुण गराही होय।
फिर धिन सो सुखराम कह, झूंठ न बोले कोय ॥ १० ॥

वे मनुष्य है जो अच्छे गुणो को ग्रहण करता है। म:फ: है कि फिर वे धिन है जो झूंठ नही बोलते है।

धिन धिन सोई नर जाणिये, ज्यां घट हर भय होय।
फिर धिन सो सुखराम कह, आशा रखे न कोय ॥ ११ ॥

उसी मनुष्य को धिन समझना चाहिए। जिनके घट में परमात्मा का डर हो। म:फ: है कि फिर वे धिन है जो जगत में कुछ भी आशा नही रखते।

धिन धिन सो नर धिन है, ज्यां जाण्यो जग झूंठ।
फिर धिन सो सुखराम कह, रहे करमा सुं रूठ ॥ १२ ॥

वे मनुष्य धिन है जिन्होने इस जगत को झूंठा जाना है। म:फ: है कि वे फिर धिन है जो अशुभ करमो के कार्य से डरते है यही करमो से रूठना है ।

धिन धिन जन संसार में, हर गुण सो माता।
फिर धिन सो सुखराम कह, निज पद का दाता ॥ १३ ॥

वे जन संसार में धिन है जो ईश्वर के गुणानुवाद में मस्त है। म:फ: है कि वे धिन है जो निज पद की प्राप्ति कराने वाले है।

धिन धिन तांको जन्म है, संत सरावे आय ।
फिर धिन सो सुखराम कह, दुरबल पूजे जाय॥ १४॥

उनका जन्म धिन है जो ऐसे संतो की सराहना करते है। उनको भी धन्य है जिनको जिसकी आवश्यकता होती है उसकी मदद करते है।

धिन धिन सो नर धिन है, ज्यां उर अणभै होय।
सब गेला सुखराम कह, बरण बतावे जोय ॥ १५ ॥

वे मनुष्य धिन है धिन है जिनके हृदय में अणभै वाणी का पूर्ण ज्ञान है। म: फ: है कि वे सब साधनो का अलग अलग वर्णन कर बताते है ।

भरम करम निरणा करे, काढे अरथ विचार।
फिर धिन सो सुखराम कह, बोहो नर उधरे लार ॥ १६ ॥

सत असत का शास्त्र सम्मत निर्णा करे। फिर वे धिन है जो ऐसे सतज्ञान को नर नारियों को बताते है। जिससे उसका कल्याण हो जावे ।

धिन जो देवे उपदेश यो, धिन जो झेले आय ।
धिन धिन सो सुखराम कह, निज पद रहे संभाय ॥ १७॥

वे धिन है जो सत शब्द जाग्रत का उपदेश देते है। वे भी धिन है जा इस निरपक्ष ज्ञान को ग्रहण करते है। म:फ: है कि वे धिन है जो निज पद में जाकर समाते है याने के: पद आ: पद की प्राप्ति करते है।

भक्त करे सो धिन है, ऊंच नीच के मांय।
बिन भक्ति सुखराम कह, सब ही धक कहाय ॥ १८ ॥

ऊंच हो या नीच जो भक्ति करता है वे धिन है। म:फ: है कि बिना भक्ति करने वालो को सबको धिक्कार है।

सो राजा सुण धिन है, न्याय करे तत जोय।
फिर धिन सो सुखराम कह, दयावन्त वो होय॥ १९ ॥

सुणो वे राजा धिन है जो सच्चाई जानकर न्याय करता है। म:फ: है कि वे फिर धन्य है जिनके घट में दया है।

सो राजा फिर धिन है, बुजे ज्ञान विचार ।
खट दरशण सुखराम कह, बुजर पकडे सार ॥ २० ॥

वो राजा धिन है जो ज्ञान का विचार पूछता है । म:फ: है कि जो खट दरशणीयों याने उपदेश

देने वालो की संगत कर उनसे ज्ञान पूछकर सार सार धारण करते है, वे राजा धिन है ।

हाकिम सोई धिन है, सूंक न मांडे हात।
फिर धिन सुखराम कह, मिथ्या करे न बात ॥ २१ ॥

वही हाकिम धन्य है जो रिश्वत लेने में हाथ नही मांडता है। म:फ: है कि फिर वे धिन है जो न्याय करता है। अन्याय नही करता ।

सो महाजन सुण सुखराम के, घटतो देवे न कोय ।
लेवा धिन सुखराम के, ले नहीं तोले लोय॥ २२ ॥

म:फ: है कि सुणो जो महाजन कम नहीं तोलता व लेते समय ज्यादा तोलकर नही लेता है वो धिन है ।

सो मेहरी जुग धिन है, जो पतिव्रता होय।
नर धिन सो सुखराम कह, झूंठ न बोले कोय ॥ २३ ॥

जगत में वह स्त्री धिन है जो पतिव्रत धर्म का पालन करती है । म:फ: है कि वे मनुष्य धिन है जो झूंठ नही बोलता है।

धिन धिन ब्राह्मण धिन है, हर ही सुं राता।
साधु धिन सुखराम कह, जाचण नहीं जाता ॥ २४॥

वो ब्राह्मण धिन धिन है जो परमात्मा के भजन में रत है। म:फ: है कि वो साधु धिन है, जो मांगने को नही जाता।

क्षत्री सोई धिन है, बोहो क्षमा कर जाय।
खट दरशण सो धिन है, निव चाले जुग मांय॥ २५ ॥

वे राजपूत धिन है जो बहुत क्षमा रखता है, वो खट दरशणी धिन है जो जगत में नम्र होकर चलते है।

शुभ शुभ बांता जे करे, सो सब ही धिन होय।
पण सांचा धिन सुखराम कह, जे हरि रता होय॥ २६ ॥

अच्छे अच्छे काम करने वाले सब ही धिन है। म:फ: है कि वे ही सच्चे है जो परमात्मा के भजन में रत है।

धिन तो वे ही जांणिये, जो रता रहमान। दूजा सब सुखराम कह, नैचे झूंठ बखाण।। २७॥

उन्ही को धिन समझना चाहिये जो रात दिन ईश्वर में रत है। म:फ: है कि दूसरे सब ही निश्चय ही झूंठ याने माया की महिमा करते है।

वा जाग्या ही धिन है, जहां हर चरचा होय। जे रता रहमान सूं, तिण सम अवर न कोय॥ २८ ॥

वो जगह ही धिन है जहां भगवान के गुणानुवाद गाये जाते है। जो परमात्मा में रात दिन रत है उनके समान कोई दूसरा नहीं है।

धिन धिन वे नर जुग में, राम स्नेही नांव। फिर धिन सो सुखराम कह, वा बस्ती वु गांव॥ २९ ॥

वे मनुष्य जगत में धिन है जो राम से स्नेह करने वाले है म:फ: है कि वो बस्ती व गांव भी धिन है ।

राम स्नेही बाजिया, प्रगटिया जुग माय। सो धिन है सुखराम कह, मुख देखिये जाय॥ ३० ॥

नर देही पाकर सांस उसांस में राम रट कर सुरत द्वारा ने अंच्छर का आनन्द लिया वो ही राम स्नेही प्रकट है वे धिन है । म: फ: है कि उनके जाकर दर्शन करो अर्थात आप उनसे ज्ञान धारण करो।

सतगुरू की सेवा करे, ले नित निरगुण नांव।
सो धिन है सुखराम कह, सुणज्यो रे सब गांव ॥ ३१ ॥

सतगुरू की सेवा करना यानि ज्ञानगुरूदेव कहे उस अनुसार चलना और उस निरगुण राम परमात्मा के नाम का भजन करे । म: फ: है कि सब ही गांव वालों सुनो वे धन्य है।

धिन धिन हरकी भगत है, धिन जो करे उचार।
धिन धिन सो सुखराम कह, केवल ब्रह्म विचार॥ ३२ ॥

परमात्मा की भक्ति करने वाले धिन है जो निज नांव का उच्चारण करते है। म:फ: है कि वे धिन है धिन है जो केवल ब्रह्म का विचार करते है।

धिन धिन सोई जाणिये, जो शिवरे निज नांव।
तांसु धिन सुखराम कह, जो पहुंता उण गांव ॥ ३३ ॥

जो निज नाम का सिमरण करते है उनको धिन है उससे वे धिन है जिन्होने उस परम पद की प्राप्ति कर ली है ।

पूरब घाट उतरे, पश्चिम दिशा चढ जाय। सुखिया धिन धिन जुग में, बैठा निज घर मांय॥ ३४ ॥

जो संखनाल से उतरकर बंकनाल में चढ जाते है। म:फ: है कि वे धिन धिन है जिन्होने के: पद व पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति की है यही निज घर बैठना है ।

त्रिवेणी के उपरे, नव घर लंघे कोय। सो नर जुग में धिन है, वां सम अवर न कोय॥ ३५ ॥

त्रकुटी के आगे जो नव तत्त लिंग शरीर को पार करता है म:फ: है वे कि वे मनुष्य जगत में धिन है उनके बराबर दूसरा कोई नहीं है।

त्रिवेणी नैणा बिचे, प्रकट कहूं बजाय। जन सुखदेवजी पहुंतिया, सतगुरू सौगन खाय॥ ३६ ॥

त्रिकुटी दोनो नेत्रो के बीच में है। यह मैं अनुभव करके कहता हूं। सतस्वरूप आ: पद की भक्ति करने वाले त्रिकुटी में होकर आगे पहुंचते है। यह मैं सतगुरू की सोगन खाकर कहता हूं।

॥ इति श्री धिन धिनता का अंग सम्पूर्ण॥

卐 पखा पखी का अंग 卐

<u>चौपाई</u> :- **पखापखी में सब जग बंधियो, निरपख बिरला कोई।**
पख कूं छाड निरन्तर खेले, सो जन पहेला होई ॥ १ ॥

सारा जगत अपने अपने पक्ष में बंधा हुवा है। निरपक्ष तो कोई बिरला ही है । जो अपने पक्ष की बात नही करते वही उच्च कोटि के संत है।

जंगम जोगी शेख सन्यासी, खट दरशण जग सारा।
सब ही मिल दिशु दश खींचे, ब्रह्म एक निरधारा॥ २ ॥

छ: दरशणी जोगी जंगम शेख सन्यासी ब्राह्मण व द्रवेश सारा जगत सब अपने ज्ञान के अनुसार आकारी को बताते है, यही दशो दिश खेचना है,ब्रह्म तो एक व सत है। आकारी अनेक है व असत है।

खट शास्त्र वेद पुराणा, अडे भिडे सो माया।
जन सुखराम ब्रह्म सो नेःचल, चले डिगे सो काया॥ ३॥

छः शास्त्र चार वेद अठारा पुराण के ज्ञान को लेकर अडते भिडते है सो यह माया के पक्के है। मःफः है कि ब्रह्म तो सत है स्थिर है। शरीर धारी ही चलते फिरते है।

कुण्डलियाः- नारायण सन्यास कयो, जोगी कह आदेश। नमस्कार रिषीयां कयो,
सदा पंथ में बेस ॥ सदा पंथ में बेस, अल्ला फकीर सरावे।
बंदना मान्या जैन, संत सत नाम्याभावे ॥ सुखराम रहीम कोई राम कहे,
आ पखा पखी की रेस ॥ नारायण सन्यास कयो, जोगी कह आदेश ॥ ४॥

सन्यासी नारायण नारायण कहते है, जोगी आदेश आदेश कहते है । ऋषि नमस्कार कहते है, सब अपने अपने पंथ की बात करते है । जैन वंदना करते है फकीर अल्ला अल्ला करते है । संत सतनाम सतनाम करते है। मः फ : है कि कोई रहीम कोई राम कहता है। यह पक्षा पक्षी है। सबका अलग अलग नाम लेना ही पक्षा पक्षी की बात है ।

कोईक राधा कृष्ण कहे, कोईक सीताराम, कोईक शिव शिव कह रहया,
कोई लेवे विष्णु को नाम॥ कोई लेवे विष्णु को नांव, किणी सतसाहिब मान्यो।
दत्त कपिल तत्त चीन, ब्रह्म बिन और न जाण्यो। सुखराम ब्रह्म तो एक ही,
अे पखा पखी को काम। कोइक राधा कृष्ण कहे, कोईक सीताराम ॥ ५॥

कोई राधा कृष्ण कहते है। कोई सीताराम कहते है, कोई शिव शिव कह रहे है। कोई विष्णु के नाम को लेते है, कोई सतसाहिब सतसाहिब करता है। दत्तात्रेयजी कपिलमुनि ने ब्रह्म का अनुभव किया। ब्रह्म के सिवाय औरो को मान्यता नहीं दी। मःफः है कि ब्रह्म तो सर्वत्र एक है। यह पक्षा पक्षी का काम है। कोई राधा कृष्ण कहता है, कोई सीताराम कहता है।

कवित :- अे अेक ही बिसन करीम, राम रहीम है अेको। बीबी आदम हुवा, शिव पार्वती देखो ॥ १॥

हिन्दू जिसे विष्णु कहते है, मुसलमान उसे करीम कहते है, शिवजी पार्वती ही बीबी आदम है ।

दोजख नरक न दोय, भिस्त बैकुण्ठ न दूजा । अेकी मन्दिर मस्जिद, अेकी अेकादसी रोजा॥ २॥

दोजख व नरक दो नहीं है । ऐसे भिस्त व बैकुण्ठ भी एक है , दो नही है। मंदिर व मस्जिद भी एक है। रोजा व एकादशी एक ही है।

तसवी माला अेक है, यूं हिन्दू मुसलमान। पखा पखी सुखराम कह, ज्यांरी खेंचा तांण ॥ ३॥

तसवी व माला एक ही है ऐसे ही हिन्दू व मुसलमान है। मःफः है कि अपने अपने पक्ष को लेकर ही हिन्दू मुसलमान अलग अलग नाम बताते है ।

सांसा गुण के काज, नाम साहिब सो दिया॥ उठ बैठ गम जांण, नाम ओऊं धर लिया॥
नाम राम इम होय, जोय रमता सब मांही॥ सोहं इण प्रकार, सकल में रहया समाई॥
ओऊं सोऊं राम सुण, अे अेसे सब होय ॥ यां ऊपर सुखराम कह, परमात्म कूं जोय॥ ४॥

स्वांसा के आधार पर जो नाम है। वो चेतन के पद में है। जो श्वांस उठता बैठता है। इसका नाम ओऊं है जो सब में रम रहा है। इसलिये राम कहते है कि सब में समा रहा है। ओऊं सोऊं व राम ये सब आत्म चेतन के पद में है। इसके ऊपर जो परमात्मा है उसको समझो।

निंरजन कहे इण रीत, ताही अंजण नहीं कोई । निराकार सो अेम, दिष्ट पर चढे न कोई ॥

आरब इसका नांव, आत जाता पर दिया। अलख कहे इण रीत, जक्त लख सहीन किया ॥
निरंजण आरब अलख रे, अे सब अेको जांण। या ऊपर सुखराम कह, तांकी करो पिछाण ॥५॥

परमात्मा को निरंजण इसलिए कहते है कि उसका कोई आकार नहीं है। निराकार इसलिए कहते है, कि वो दृष्टि में नहीं आता है। आता जाता प्रतीत होता है। इसलिए आरब कहते है। अलख इसलिए कहते है। ये सब एक ही पद के नांव है। यह सब ब्रह्म के नांव है। इनके ऊपर जो पद है उसकी पहचान करो।

परमेश्वर इण रीत, पलक में मांड उपाई। अविनाशी कह अेम, गरभ में पडयो न काई ॥
आद आप ही आप, तद अजरावण बागा। करता कहिये अेम, विध करणे सब लागा॥
दोय नाम प्रब्रह्म का, दोय आत्म का होय। सतगुरू बिन सुखराम कह, न्यारा लखे न कोय॥६॥

परमेश्वर इसलिए कहते है कि पलक में सृष्टि की रचना कर देता है। अविनाशी इसलिए कहते है कि वो गर्भ में नही रहता। वो पद अनादि से है इसलिए इसको अजरावण कहा है। करता इसलिए कहा है कि सबकी उत्पति इसी पद से होती है। दो नाम पारब्रह्म के है इसको सतगुरू ही अलग अलग जानते है। ओऊं सोऊं जो स्वांस के आधार पर है वो आत्मचेतन के दो नाम है। ररंकार जो शरीर में रग रग रोम रोम से होता है व शरीर से अलग निरंजन निराकार पद में जिसको ने: अंच्छर सतशब्द कहते है ये दोनो नाम पारब्रह्म के है।

<u>इन्दव छन्द</u> : - सामी कह शिरे पंथ हमारो, जोगी ही जोर सरेस बखाणे ।
जंगम और फकीर जलाली, अल्ला सरोवर और न आंणे ।।
जतीस पंथ सराय मरे, ज्यूं विप्र वेद वे ईस बखाणे।
पास गया सुखराम कहे, सो तो पखे की बात, पखे दिश ताणे॥७॥

स्वामी कहते है सबसे श्रेष्ठ पंथ हमारा है। जोगी अपने पंथ की जोर से सराहना करते है। जंगम व फकीर व जलाली अल्ला के सिवा दूसरों को नही मानते है। जती अपने पंथ की सराहना करते है। ब्राह्मण वेदों के ज्ञान की व ईश्वर की महिमा करते है। जिसके पास जाते है वो अपने अपने पक्ष की बात कहते है ।

जती फकीर सन्यास बण्यो, ज्युं कोऊस कानज आंण फडावे ।
कुंडे में बैठ सबे भिन्न खोई, गृहे सो मांड बना बिच जावे॥
तपस्या ही तप अनेंकू हुन्नर, सांच बिना कोई भावे ज्युं गावे।
सोच विचार कहे सुखदेवजी, भाग बिना कण काहू न पावे ॥८॥

जगत में जती फकीर व सन्यासी है। कोई कान फडा कर मुद्रा पहनते है। कुडा पंथी भिन्नता नही रखता है । कोई गृहस्थ में रहता है। कोई गृह छोडकर वन में जाता है। कोई तपस्या करता है । कोई तप करता है कोई अनेको तरह के हुन्नर करता है, बिना सत परमात्मा की भक्ति के बिना अपनी इच्छा मुवाफिक कुछ भी कहते है व करते है। म:फ: है कि भाग्य के बिना परमात्मा की प्राप्ति का साधन याने ज्ञान नही मिलता।

पंथ की शोभा कर नर अेसे, आपकी मांय को डाकण को केहे ।
जग सो जात सबे सुख मानर, लिल बिलास सबे कर रहे॥
तांही सु काम पडे तिण बेला, सोई आधीन सराय मरे है।

अेसे जुं सब कहे सुखदेवजी, और की बात को कान न दे है ॥ ९ ॥

सब अपने अपने पंथ की याने सम्प्रदाय की शोभा इस तरह करते है जैसे अपनी माँ डाकण होने पर भी उसको डाकण नहीं कहते। जगत में सभी सम्प्रदाय वाले अपनी अपनी सम्प्रदाय को अच्छी बताकर जगत का सुख व आनन्द लेते है। जिसको जिस समय जिससे काम पडता है। वो जिसके पास जाते है। वो अपनी सम्प्रदाय की शोभा करता है, म:फ: है कि वे दूसरों की बाते सुनना ही नही चाहते ।

आपकी बात इसी बिध केहे। और को ज्ञान सुण्यो नही आवे ।
गांव सो शहर मुलक विदेशा। देख्या बिना कहां भेव बतावे ॥
पार को धन सुखो दुख पीडा, बुज कन या किण रीत कहाई ।
युं सोच विचार कह सुखदेवजी, और की शोभा इसी बिध गाई ॥ १० ॥

आपकी सम्प्रदाय व आपकी ज्ञान की बहुत सराहना करते है। दूसरो का ज्ञान अच्छा होने पर भी सुनना नहीं चाहते। म:फ: है कि कोई गांव शहर व विदेशी मुल्क को देखा नहीं है तो उसके बाबत कैसे कह सकता है। दूसरो को सुख दुख व पीडा है व धन है उसको पूछने पर मालूम होती है। म:फ: है कि अपने ज्ञान से दूसरो का ज्ञान श्रेष्ठ होने पर भी पूछे बिना कैसे मालूम हो सकता है।

॥ इति श्री पखा पखी का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 खण्ड पिंण्ड ब्रह्मण्ड का अंग 卐

पूरा गुरू मिल्या, सांची सूज पाई। रटो राम नामा, आछी ब्रिया आई ॥ १ ॥

मनुष्य अनादि से रामनाम की भक्ति करता है वह नाम वाणी के आधार पर ही रहता है। आत्मा को स्थूल, सुक्ष्म शरीरो से अलग नहीं कर सकता । जब सच्चे केवली संत मिलते है। तब राम नाम को विधि से रटाकर पारब्रह्म के निज नाव सत नांव है। उसको प्रकट करके के: पद आ: पद की प्राप्ति करा देते है। इसलिए सच्चे महापुरूष मिल गये व मनुष्य जन्म मिल गया तो उनकी बताई विधि से राम नाम रटो।

पाई नर देही, भरत खण्ड आयो। बंछे इन्द्र ब्रह्मा, अेसा तन पायो ॥ २ ॥

भरत खण्ड में मनुष्य शरीर मिल गया। उस शरीर की इन्द्र ब्रह्मा और अन्य देवता भी इच्छा करते है। ऐसा यह देव दुर्लभ शरीर मिला है ।

दिवी सुज सारी, लिया गरभ बाचा। किया कोल हर सूं, करो बोल सांचा॥ ३ ॥

गरभवास में परमात्मा से कोल वचन किया और सारी सुध दी इसलिए अब मनुष्य शरीर मिला है। उन वचनों के माफिक भजन करो ।

शिष बायक :- जतो सत समज्या, तपो त्याग कीना । हुवा शुभ करमी, सुरगादीक लीना ॥ ४ ॥

शिष कहता है जती पणा रखे, सतपणा रखे, तपस्या करे, त्याग करे, सब शुभ करम करके देवताओ की योनी व लोक की प्राप्ति करता है ।

करे जिग सौ एक हुवे इन्द्र राजा। बंछे नर देही जिण का किण काजा ॥ ५ ॥

सौ यज्ञ करने पर इन्द्र पद की प्राप्ति होती है, वह भी मनुष्य जन्म की इच्छा करते है, इसका क्या कारण है।

ब्रह्मा विधाता रचे जीव सोई, मिनख तन मांगे, कहो अर्थ मोही ॥ ६ ॥

ब्रह्मा सारी सृष्टि व जीवों को रचते है, वो भी मनुष्य जन्म की इच्छा करते है। इसका क्या कारण है ।

सतगुरू वचन :- अबे संत बोल्या, सुण शिष बांणी। करूं न्याय अेसा, जैसा दूध पाणी ॥ ७ ॥

सतगुरू म:फ: है कि हे शिष्य मै अब ऐसा न्याय करूं, जिससे कि दूध एक तरफ और पानी एक तरफ हो जावे याने सही बात मालूम हो सके ।

करे शुभ सारा पदवी देव पावे। हुवे पुन्न पुरा, वासुं काल ढावे ॥ ८ ॥

पहले शुभ करम करके देवता पद प्राप्त करते है, पुन्य पूरे होने तक वहां रहते है फिर काल आ जाता है ।

भोगे पुन्न पेली, भुगते पाप पीछे। हुवे पशु पंखी, मानव तन बंछे ॥ ९ ॥

पहले पूण्य भोगकर पाप भोगने के लिए पशु पंखी की योनी में जाना पडता है । इसलिए मनुष्य शरीर की इच्छा करते है ।

बली काल अेसो, ब्रह्मा इन्द्र धुजे । बिना पद पहुंता, परले काल सूजे ॥ १० ॥

ब्रह्मा इन्द्र की भी आयु है और काल ऐसा बलवान है वे भी इससे धूजते है । जब तक सत पद की प्राप्ति नहीं होती काल से बच नही सकते है।

जब देव जांणे, भरत खण्ड जावां। करा भक्ति केवल, परम पद पावां ॥ ११ ॥

देवता लोग भी यह इच्छा करते है। भरत खण्ड में मनुष्य जन्म लेकर के: पद की भक्ति कर परम पद की प्राप्ति करें ।

मिले मिनखा देही, आवे साध शरणो। जुरा काल जीते, मिटे जन्म मरणो ॥ १२ ॥

मनुष्य जन्म मिलकर सच्चे केवली संतो की शरण मिले तब जीव काल के चक्कर व जन्म मरण से बचता है ।

रटे राम रसणा, कटे करम सारा। धुवे सांस उसांसो, लंघे भव पारा ॥ १३ ॥

सांस उसांस में संतो की विधि से राम राम रटने से सब करम कट कर जीव जन्म मरण से रहित हो जाता है ।

सुणो संत वाणी, गहे पंथ सुधा। हिरदे जोत जागी, मिटे अन्ध चुन्धा ॥ १४ ॥

संतो की बाणी सुणे वे जो साधन बतावे उस माफिक साधन करने से हिरदे में शब्द जागृत हो जाता है यही जोती जागना है । उससे भरम व अज्ञान रूपी अन्धकार का नाश हो जाता है ।

तजे आन दूजा, करे संत सेवा। भजे देव आत्म, लखे भक्त भेवा ॥ १५ ॥

आन की उपासना छोड कर संतो का ब्रह्म ज्ञान धारण करे यही संतो की सेवा है। उनसे आत्मा में परमात्मा पद की प्राप्ति करने का भेद लेवे।

दोहा:- आत्म में परमात्मा, आ गत लखे न कोय।
भरम करम जुग बन्धिया, मुक्त कहां से होय ॥ १६ ॥

जब तक संसार भरम करम में बंधा रहता है तो उसे आत्मा में परमात्मा की प्राप्ति का भेद नही लख सकता है तो मुक्ति मोख कैसे हो सकती है।

सुण वाणी शिष चेतिया, शिवरण लागा सूर।

राम नांव लिवल्या लगी, सुण्या अनहद तूर॥ १७॥

सतगुरू के अणभै वचन सुनकर शिष भजन करने लग गया। जिससे राम नांव की लिव लग गई जिससे शब्द जागृत होकर उसका सब जगह अनुभव होने लग गया ।

सरवण भवन सुवावणा लागे, सुण्या सरवणा बाजा।
मनवो हरक बधाई कीनी, धिन सतगुरू महाराजा॥ १८॥

जब शब्द की ध्वनि कानों में सुनी तो वह धुनी कानों को बडी सुहावनी लगती है। मन को भी बडा आनन्द होता है और कहता है ग्यान सतगुरू देव आपको धिन है ।

राम नाम रसना लिव लागी, कंठ में गदगद बाणी।
कण कण रूम कंपकपी चाली, नैण न संभ बे पाणी॥ १९॥

जब रसना से राम नांव की लिव लगी और कंठ में शब्द जागृत हो गया । रूम रूम में कण कण में शब्द का अनुभव होने लगा। नेत्रो में बरसात की तरह पानी की धारा बहने लगी।

कंठ भवना बिच कंवल्या फूल्या,जामें शब्द प्रकाशा।
सुरत निरत मन पवना दिशे, आवत जावत सांसा॥ २०॥

जब कंठ कंवल पर शब्द का अनुभव हो गया तब सुरत निरत मन व आते जाते स्वांस की मालूम पडने लग गई ।

झिलमिल झिलमिल जोत जिगमिग, बाजे अनहद तूरा।
हिरदा भवन बिराज्या सतगुरू, तेज पुंज का नूरा ॥ २१॥

हृदय कंवल पर शब्द की ध्वनि होना ही शब्द की दिव्य ज्योति है। शब्द का अनुभव होना ही अनहद बाजना है। हृदय स्थान पर शब्द का अनुभव होना ही सतगुरू का ही स्वरूप है।

अमृत बूंद लूम जड लागी, मोत्यां अमर छाया।
आत्म में परमात्म प्रगटया, नांव नाभ घर आया॥ २२॥

सांस उसांस में भजन करना ही अमृत की बूंदो की जड लगना है, आनन्द लेना व अनुभव करना ही मोत्यां छाया है। आत्मा में शब्द जो परमात्मा का निज स्वरूप अनुभव हुवा, नाभी के स्थान पर होना ही परमात्मा का स्वरूप प्रगट होना है।

वाही सुरत शब्द मुख लिवल्या, कली कंवल मन पवना।
जिके झिलमिल हिरदे होती, सो विध नाभी पवना॥ २३॥

वही सुरत, वही मुख, वही लिव, वही लगन जो स्वांस में मन लगाने से हृदय में होती थी वह नाभी स्थान में होने लग गई।

गुदा घाट पर अनहद गरज्या, ररंकार धुन बोली।
छेदया चकर कंवल खट बिंध्या, खट बारी ले खोली॥ २४॥

जब पूरब के छः कंवल कंठ, हृदय, मध्य, नाभी, ब्रह्मा व गणेश स्थान को पार किया जब गुदा घाट पर ररंकार ध्वनि शब्द का अनुभव हुवा।

<u>दोहा</u>:- खठ पोल्या जन खोल के, पहुंता पिछम घाट।
पूरब को पंथ छाड के, गही बंक की बाट॥ २५॥

पूरब के छः स्थानो को पार करके शब्द का पिछम दिशा में उलटना ही पिछम घाट आना है।

पूरब का रास्ता छोडकर पिछम का रास्ता पकडा है।

अनन्त संत आगु गया, आजु अनन्ताई जाय।
सो मारग सुखराम कह, सतगुरू दियो बताय॥ २६॥

अनन्त संत ऐसा साधन कर मोक्ष में पहुंचे है और आज भी अनन्त ही जा रहे है। यही मारग याने साधन सतगुरूजी याने अणभै ग्यान ने कृपा कर बता दिया।

छंद जात मोतीया दान:- आया सत शब्द पिछम हो बाट। उठी घोर गरजे है मेर के घाट ॥ २७॥

सत शब्द पिछम के रास्ते आकर मेरू के घाट पर गरजना होने लग गया याने अनुभव होने लगा।

गरज्यो गिगन चढयो गरणाट। धुज्यो धर अम्बर सारो बेराट॥ २८॥

मेरू स्थान में शब्द की गुंजार होने से सारे शरीर का धूजना ही धर अंबर बैराट धूजना है।

धडहड गिगन कंप्यो शरीर। चढयो असमान ही उलटो नीर ॥ २९॥

गिगन में शब्द अनुभव होने पर सारा शरीर कम्पायमान हो जाता है। शब्द पिछम दिशा से उलट कर ऊपर गिगन में अनुभव होना ही उलटो नीर चढना है।

करे गुरूदेव कूं प्राण पुकार। प्रभु मेरा किज्यो बेडा पार॥ ३०॥

प्राण याने आत्मा ज्ञान गुरूदेव से पुकार रही है। हे गुरूदेव आप मुझे संसार सागर से पार उतारो।

ओखा पंथ पिछम ओघट घाट। खुल्या गुरू मेहर भिस्त कपाट॥ ३१॥

पिछम का रास्ता बडा कठिन है। अणभै ग्यान गुरू म: की मेहर से त्रिवेणी याने बैकुण्ठ स्थान पर पहुंचना ही भिस्त कपाट खुलना है।

सूरा संत जीत्या है जम सुं राड़। पगातल दियो है पिसण पाड़॥ ३२॥

शूरवीरों संतो का मेरूदण्ड को पार करना ही जम सू राड जीतना है व मन रूपी जमराज को पांव नीचे दबाना है।

पुंथा है अब राम दरगे ही जाय। दियो है दाद लिया है चरण लगाय॥ ३३॥

जो भक्ति करके उस के: पद में पहुंच गये उनको धन्यवाद दिया कि तुम यहां पहुंचे, यही चरण लगाना है।

भगवत बचन :- सांचो जन सांचो है राम बिड़द। मारयो मन मेवासी कीनो सडद॥ ३४॥

रामजी का बिडद व सतगुरू केवली जन सच्चे है। आत्मा अनन्त जन्मो से मन के साथ संकल्प विकल्प के साथ थी, अब उससे अलग होना ही मन को मारना वश में करना है।

डारयो भवसागर मोह की फांस। हुवो तूं सनमुख सांचो ही दास॥ ३५॥

रामजी आत्मा से कह रहे है कि तू अनन्त जन्मों से मन के साथ रही, मन मोह की फांसी लगाकर भवसागर में तुमको डालता रहा। अब तू सतगुरू विधि से भेद लेकर भक्ति की, अब तू सन्मुख हो गई अब तू मेरी सच्ची दास है।

करूं मैं रीज पट्टा बकसीस। दियो मेरो नांव बिस्वाबीस॥ ३६॥

अब मैं तुम पर प्रसन्न हो गया इसलिए अब मेरा निज नाम सत नाम रूपी पट्टा बकसीस कर दिया।

भगत मुगत है नाम की लार। बगस्या हूं लाखों गुन्हा इण बार॥ ३७॥

भगती मुगती याने मोक्ष इस नाम से ही है। लाखो गुन्हा को बगस दिया याने माफ कर दिया।

भगत वत्सल है मेरा नाम। कृपाल दयाल कहावुं मैं राम॥ ३८॥

भगतो पर कृपा दया करने से उनका प्रतिपाल करने वाला होने से मुझे कृपालु दयाल राम कहते है।

कीनी है मैं दया गंजे नही काल। पड़े नही बोहोरू ही माया जाल॥ ३९॥

मैंने तेरे पर दया कर दी अब काल नही खा सकता व माया के जाल जन्मने मरने में भी नही आवेगा।

अेसी अद्भूत अचंबा की बात। दिखावे दास कूं दीनानाथ॥ ४०॥

अेसी एक अद्भूत अचम्बा की बात, दास को दीनानाथ परमात्मा ने दिखाई।

हुवो अेक पिण्ड तणो ब्रह्मण्ड। बसयो जामे सातु दीप नो खण्ड॥ ४१॥

जैसे ब्रह्म बैराट में खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड है। वैसे ही जीव बैराट में खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड सात द्वीप नो खण्ड है।

बध्या जन ऐसे ही शब्द ही साथ। पताला पांव आकाश ही हाथ॥ ४२॥

जन याने सूरत शब्द के साथ छः कंवलो का छेदन कर गणेश स्थान याने शेष लोक में गई। शेष लोक में बंकनाल के रास्ते बह्मण्ड में गई यही पताला पांव आकाशा हाथ है।

लागी लिव धरण गई ब्रह्मण्ड बध्या, जैसे बावन के कर डण्ड॥ ४३॥

भजन की लिव लगाने से पहले धरण याने पाताल में गई, पाताल से बह्मण्ड में चली गई। जैसे बावन अवतार ने राजा बली से तीन पेन्ड जमीन मांगी। उन्होंने तीन पेन्ड में तीन लोकों को नाप लिया, भगवान के साथ डंडा भी बढ गया वैसे ही लिव के द्वारा खण्ड पिण्ड को पार कर लिया। बडे होत क्या बेर है। जो हरि पकडे हाथ। संतदास लकडी बढी बिन कुंपल बिन पात।

रच्यो एक ऐसो चानण चोक। दिसे तांमे तीनूं ही चवदा लोक॥ ४४॥

सतगुरू के अणभै ज्ञान द्वारा शरीर में ही तीन लोक चवदा भवन का अनुभव हुआ।

देखुं गुरू ज्ञान लिया दूरबीण। रच्यो यो भोडल भवन कीण॥ ४५॥

भोडल के मकान में सूर्यनारायण का प्रकाश होने पर सब तरफ सूरज ही सूरज दिखाई देते है। ऐसे गुरू ज्ञान रूपी दूरबीन याने सतगुरू विधि से भजन करने पर शरीर रूपी भोडल के भवन में सब जगह खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड में शब्द का अनुभव होता है।

झिगमिग लागी है सुरग पंयाल। प्रभु म्हारे जोई है दीपकमाल॥ ४६॥

सूरग याने देवलोक व पंयाल याने शेष लोक में, याने खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड में, शब्द का प्रकाश होना ही झिगमिग लगना है। जैसे दीपावली के दिन सब जगह दीपक ही दीपक है वैसे ही सब जगह नाड नाड रग रग रोम रोम में शब्द का अनुभव होना ही दीपक माला जोना है।

भला भल ऊगा है भांण अनेक। उजाला है बाहर भीतर अेक॥ ४७॥

सूर्य के उदय होने पर बाहर भीतर सब जगह प्रकाश होता है ऐसे ही अणभै ज्ञान रूपी सूर्य के उदय होने से शरीर के बाहर व अन्दर ज्ञान होना ही अनेको सूरज का उदय होना है।

भरया रस ईमरत ठामो ठाम। हुवा अब रूम ही रूम में राम॥ ४८॥

सारे शरीर में सता का अनुभव हो आनन्द आना ही रोम रोम में राम राम होना व ईमरत ठामो ठाम भरना है।

शिष बायक :- आवे है अेक अचंबो मोय। पिण्ड ब्रह्मण्ड कैसे होय॥ ४९॥

शिष्य गुरू म: से पूछ रहा है कि पिण्ड में ही ब्रह्मण्ड कैसे होता है। उसका मुझे अचंबा आता है।

भगवत बचन :- ओ तो है निज नांव प्राक्रम है संत।
खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड लीला अनन्त॥ ५०॥

भगवान सन्तो से कह रहे है कि निज नाम के प्राक्रम से खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड की अनन्त लीला हो रही है। यह सब प्राक्रम संतो का है।

सुणो अेक मेहर हमारी और। रची है काज संता के ठोर॥ ५१॥

भगवान संतो से कह रहे है कि मेरी एक और मेहर है। मैंने सन्तो के वास्ते चौथा लोक अलग बसाया है। तीन लोक चवदा भवन जीवों के वास्ते व चौथा लोक संतो के लिए है।

भरम्यो हो बेमुख जूण अनन्त। बताऊं देश बिराजे संत॥ ५२॥

तू मेरे से बेमुख रहकर अनन्त जन्मो तक भटका। अब तू मेरे सन्मुख हुआ इसलिए अब तुझको वो देश बताता हूँ जहां संत विराजते है।

जठे नहीं अम्बर धरण आधार। जठे नहीं त्रिगुण जाल पसार॥ ५३॥

जहां पर आसमान धरती का भी सहारा नहीं है और न ही सतो रजो तमो गुणी (त्रिगुणी माया) का पसारा है।

जठे नहीं सुरगर मध्य पंयाल। जठे नहीं काल जुरा जम जाल॥ ५४॥

जहां पर देवलोक मृत्युलोक व पाताललोक नहीं है। वहां पर काल बुढापा और जम के जाल भी नहीं है।

जठे नहीं तत प्रगट बैराट। जठे अेक राम जना कोई ठाट ॥ ५५॥

जहां पांच तत्व प्रकृति का बैराट नहीं है। वहां सतगुरू केवली संतो के अणभै ग्यान से भेद लेकर रामजी के उस पद की प्राप्ति करते है। इसलिए रामजना का ठाट कहा है।

जठे नही चारूं हूं बाण र खाण। जठे नहीं उतपत परलो है जांण॥ ५६॥

जहां परा मध्यमा बैकरी व पश्यन्ती वाणी व जर आंकुर इन्डज व उदबुद ये चारो खाने भी नहीं है और जहां न उत्पति है और न परलय याने मरणा है।

जठे नहीं ब्रह्मा विष्णु महेश। जठे नहीं चन्दर सूरज शेष॥ ५७॥

जहां ब्रह्मा विष्णु महादेव नहीं है और न ही चन्द्रमा सूर्य व शेषजी भी नहीं है।

जठे नहीं दाणूं देव ओतार। जठे नहीं जीव जम शिर मार॥ ५८॥

जहां राक्षस देवता व अवतार नहीं है। उस देश में जीवो के सिर पर जम की मार नहीं है।

जठे नहीं ईन्दर पुरन्दर देव। जठे नहीं तीरथ मूरत सेव॥ ५९॥

जहां पर ईन्दर और पुरन्दर देव नहीं है वहां पर न तीरथ है और न ही मूर्ति सेवा है।

जठे नहीं व्याकरण वेद पुराण। जठे नहीं पिन्डत काजी कुरान॥ ६०॥

जहां पर वेद पुराण व व्याकरण नहीं है और वहां पर पिन्डत काजी कुरान नहीं है।

जठे नहीं जोगी ही जंगम बोध। जठे नहीं ग्यान ध्यान परमोध॥ ६१॥

जहां पर जोगी जंगम और बोध भी नहीं है और ग्यान ध्यान उपदेश नहीं है।

जठे नहीं ओऊं रू इच्छा परवेश। जठे एक संत जना को देश॥ ६२॥

उस पद में नई कामना इच्छाओं का प्रवेश नहीं हैं उस पद को संत जनों का देश कहा है।

सुणी या मेहर हमारी अगाध। देवुं मेरो नाम मिलावुं हूं साध॥ ६३॥

रामजी म: फ: है कि मेरी मेहर अगाध है याने जिसका कोई पार नहीं है। उसके द्वारा संतो से मिलाकर उनको मेरा नाम बक्सीस करा देता हूँ।

सिपती ये शास्त्र नांव अपार। रटे नित संत जको तत सार॥ ६४॥

शास्त्र में जितने भी नांव है वे सिपती याने धरे हुए है। उन धरे हुए नामों में से राम नाम को विधि से संत रटते है। उसके द्वारा जो नाम प्रकट होता है, वो मेरा खास नाम है।

अनेकाई मत अनेका ही पंथ। मिले मुझ मांय जको पंथ सत॥ ६५॥

अनेक मत व अनेक पंथ याने साधन है जो साधन मुझ में आकर मिले वो ही साधन सत है।

न जाणूं हूँ कुण हमारो नाम। सुणया मैं जाय संता मुख राम॥ ६६॥

हमारा नांव क्या है वो नहीं जानता लेकिन संतो के मुख से राम राम सुना है।

रट रट राम मिल्या मुझ मांय। दुजा मत पंथ दिशो दिश जाय॥ ६७॥

दूसरे साधनो से अलग अलग लोको में जाते है और विधि से राम राम रटते है वो मेरे में मिलते है।

भूले मती और भरमा मांय। रट निज नांव संता संग जाय॥ ६८॥

भरमो में मत भूलो, केवली संतो की संगत करके भेद लेकर विधि से राम नाम रटो।

मैं ही गुरू संत मैं ही सत स्वरूप। जांणे अेहे दोनु रूप अनूप॥ ६९॥

गुरूपद की प्राप्ति करने वाले केवली संत मेरे ही सरूप है और सतस्वरूप का पद है वो भी मैं ही हूं। इसलिए उन दोनों रूपों की ऊपमा का वर्णन नहीं हो सकता।

धरी म्हें अे संता की देह। बरसे है बादल में ज्यों मेह॥ ७०॥

सन्तो के शरीर में सता रूप से इसलिए प्रकट हुवा हूं कि बिना शरीर के उपदेश नहीं हो सकता जैसे बिना बादल के बरसात नहीं हो सकती।

धरयो बप जीव चेतावण काज। गुरू एक संत हमारो ही साज॥ ७१॥

सन्तों में सता रूप से जीवों को चेताने के लिए ही प्रकट हुआ हूं। सतगुरू सता का उपदेश करने वाले केवली सन्त मेरा ही सरूप है।

बोले मुख साध हमारी बाण। ऐसे संत जीव जगावे है आंण॥ ७२॥

सन्तो के वचनो से सत पद के ज्ञान का उपदेश होता है वो मेरी ही अणभै वाणी है। उसी वाणी द्वारा जीवों के सता की जागृति होती है। उसको ही जीव जगाना कहते है।

उधारूं हूं तारूं हूं करूं मैं साय। राखूं हूं बिडद संता को जग मांय॥ ७३॥

जीवों को तारना, उधारना, सहायता करना सब मेरा ही काम है। लेकिन केवली सन्तो का बिडद याने उनका नाम रखता हूं।

कहूँ अब राम जना को देश। सदा रस अमर अेको है भेष॥ ७४॥

रामजी की भक्ति कर उस पद की प्राप्ति करते है। उस पद का आनन्द एक रस अखण्ड रहता है।

सांचा गुरू बीरम विशवाबीस। तपे सुखदेव के सदा ही शीस॥ ७५॥

सांचा गुरू है जिनके द्वारा उस पद की प्राप्ति हो जाती है म: फ है कि बीरमदासजी महाराज सच्चे केवली भगवंतो का अणभै ग्यान गुरू है सो उनके द्वारा मुझे भी उसकी प्राप्ति हो गई है।

दोहा :- घट मांही दरशण देवुं, मम् मूरत निराकार। बाहिर गुरू उपदेश दे, सो मेरो आकार॥ ७६॥

घट भीतर सतशब्द का दरशण होता है वो मेरा निराकार स्वरूप है। बाहर अणभै ग्यान गुरू के वचनो द्वारा सत पद के ज्ञान प्राप्ति का उपदेश देते है वो मेरा आकार है।

सतगुरू बदन निहार के, मांही मूरत देख। दोनो एक सरूप येह, तो मैं सतगुरू अेक॥ ७७॥

सतगुरू बदन निहारना यानि अणभै ग्रंथ ही सतगुरू का बदन है। उसको निहारना यानि उनमें जो लिखा है उसको धारण करना है। ब्रह्म ज्ञान के द्वारा ही मेरी सूरत सतशब्द के रूप में देख। मैं और वो दोनो एक है।

सतस्वरूप क्यों नांव है, सदा रहे सो सत। असत सब चल जायगा, यूं बोल्या भगवंत॥ ७८॥

सतस्वरूप नांव इसलिए है कि वह सदा सत रहता है, असत वह जो रहता नही अेसा भगवान ने कहा।

चल हंसा जहां जाइये, जहां राम जना को देश। आवागवण न ओतरे, अमर अेको भेष॥ ७९॥

हंस याने आत्म चेतन वहां चल जहां राम जना का देश याने चौथा पद है। वहां जाने पर आवागमण से रहित होकर अमर हो जाता है। वहां पर सबकी एक जैसी अवस्था है।

अमर देश सिद्ध लोक छन्द जात भुजंगी:- अधर देश ऊंचो सबे लोक छाया।
खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड उण हेट आया॥ ८०॥

चौथा पद जिसे सतलोक कहते है वो ऊपर अधर अनुभव होता है और खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड भी उसके नीचे रहते है। त्रृकुटी को खण्ड, त्रृकुटी उपर ब्रह्मण्ड, त्रृकुटी से नीचे पिण्ड कहते है।

अखी अमर अेको, नहीं काल आवे। तिहूं लोक चवदा, सबे काल खावे॥ ८१॥

अखी याने सत और अमर जिसका नाश न हो। उस पद में काल नहीं पहुंचता है। तीन लोक चवदा भवन में काल की पहुंच है। याने काल खा जाता है।

किती बेर उपना, किती बेर भंजे। ईश्वर विष्णु ब्रह्मा, सिरे काल गंजे॥ ८२॥

तीन लोक चवदा भवन की कितनी ही बार तो रचना हो जाती है। आगे कितनी ही बार भंजे याने नाश हो जाती है। ब्रह्मा विष्णु महेश भी काल से नहीं बच सकते।

इक्कीस आगे ब्रह्मण्ड चूरे, अेसो देश दूरे। पोहोचे भाग पूरे॥ ८३॥

तीन ब्रह्म के तेरह लोक, एक जीव ब्रह्म तथा जीव ब्रह्म के तीन लोक एक केवल पद (3+13+1+3+1=21) इनको पार करने पर ब्रह्म का देश आता है। भाग्यशाली पुरूष होते हैं वो ही इस देश में पहुंचते है।

लंग्या लोक सारा, सिला सिद्ध लोपी। तीरथंगर बिराज्या, परम जोत रूपी॥ ८४॥

तीन लोक चवदा भवन सब लोको को पार कर सिद्ध सिला को लांघ कर तीरथंगर द्वारा उस पद की प्राप्ति करना ही वहां बिराजना है। उनका शरीर दिव्य रूप में है। यानि परमात्मा स्वरूप है।

मुनि मगनी सारा, अेको स्वरूप ध्यानी। नहीं कूख कारण, सबे केवल ज्ञानी॥ ८५॥

उस देश में चाहे मुनी या मगनी पहुंचे सभी का एक ही स्वरूप यानि दिव्य रूप है। नहीं कूख कारण यानि छोटा बडा, जाति पांति का कोई कारण नहीं है। सभी केवल ज्ञानी है।

निरभै स्थान जागा, सुखो, दुख नांही। हुति आद बिरती, जका अन्त मांही॥ ८६॥

वह निर्भय स्थान है वहां सुख ही सुख है दुख नहीं है। उस पद में जो आदि अनादि से रीति है वो हमेशा रहती है।

नही सेंध असेंधा, नही मम मेरी। नहीं गुरू शिषंग, नहीं भ्रात मेरा॥ ८७॥

उस पद में न कोई सेंधा न असेंधा है। न ही मैं मेरा है। वहां गुरू शिष्य भाई बन्ध भी नहीं है।

नही रेत राजा, नही दास स्वामी। नही नार पुरूषा, सबे संत नामी॥ ८८॥

उस पद में राजा प्रजा नहीं है। न दास स्वामी है। न नारी पुरूष है सब सन्त रूप याने दिव्य रूप है।

शिला गोल गरदंग, खुणो अेक नांही। चान्दी सेत बरणी, जैसी हेम झांई॥ ८९॥

सिद्ध शीला चारों और से गोल है उसमें कोई खुणा नहीं है। चांदी जैसी श्वेत बरण है। शुद्ध सोने की जैसी झलक है।

लंघी सिद्ध शिला, पुंथा देश दूजे। कोटा कलश आगे, झिलमिल सूजे॥ ९०॥

सिद्ध शिला को पार करने पर शब्द की अगम आवाजें आती है उसको दूसरा देश कहा है। अगम आवाजों के दिव्य प्रकाश को ही कोटा कलश झिलमिल कहा है।

चोऊं फेर कोटंग, लडा लूम लागी। मिणयां रतन मोत्यां, असंख जोत जागी॥ ९१॥

खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड अगम देश रग रग रोम रोम में सता का अनुभव होना ही असंख जोत जागना व मिणया रतन मोत्यां है।

आनन्द बाय बाजे, गूंजे गिगन सारो। नितो धिन बांणी, अेसा देश म्हारे॥ ९२॥

गिगन में शब्द के गुंजार का आनन्द आना ही बाय बाजना है। उस पद को नित्य धिन कहते है अेसा वो देश है।

सुणे संत अणभै, चेते बावन गादी। आवे बिवाण सामी, साधे संत सादी॥ ९३॥

केवली संतो से अगम पद का अणभै ज्ञान सुनने से बावन अक्षर का ज्ञान होता है, उसमें श्रेष्ठ ररा ममा को रटे। शब्द की जागृति होना ही बिवाण का आना है। फिर बारह कंवलो का छेदन करके गिगन मंडल में सूरत शब्द अेक होना ही शादी होना है।

बधाई बधाई, संता की बधाई। ल्यावो जाय सामा, धिनो आज आई॥ ९४॥

जो भक्ति करके उस पद में पहुंचते हैं तो वहां पहले से पहुंचे हुये संत उस आने वाले को बधाई देते हैं। उसको सामने जाकर लाते है। कहते है आज के समय को धन्य है।

हरके देश सारो, अेको अम्बर छावे। पेरावे संता कूं, बधावे झुलावे॥ ९५॥

उस देश में चारो और खुशी का माहौल हो जाता है। सभी के एक ही तरह की छत्र छाया होती है। आने वाले संत को अमर कपडे पहनाते है, उनके बधावणे करते है, उनको स्नान कराते हैं।

भूले सुधत सोई, हुये चकरत सारा। निरमल नूर बरसे, भीजे अमी फुवारा॥ ९६॥

आत्मा उस पद में पहुंचने पर वहां का दृश्य देखकर सुधी भूल जाती है। चकित रह जाती है।

निरमल नूर बरसता है, अमी रस के फव्वारे में भीजते है।

गले माल मोत्यां, रूले रतन हीरा। ढूले शीश पंखो, चरचे सुगन्धी नीरा॥ ९७॥

गले मे मोत्यों की माला पहने हो, रतन व हीरा खूब रूलते है और माथे पर चंवर व पंखे ढूल रहे है। इत्र की सुगन्ध जैसा सुख आत्मा को आता। वैसा सुख व आनन्द का अनुभव उस पद में होता है।

भलके भवन सारो, दीपे तेज भारी। वरणुं सुख सारो, किसी सगती हमारी॥ ९८॥

म: उस देश का वर्णन करते हुये कहते है कि वो देश स्वयं प्रकाशवान है वहां भारी तेज है। उस देश के सारे सुखों का वर्णन करने की मेरी शक्ति नहीं है।

अनन्त रूप लीला, अनन्त संत ब्राजे। अनन्त वेद वाणी, करसी पंथ साजे॥ ९९॥

उस पद में अनन्त रूप लीलायें तथा अनन्त संत वहां बिराजमान है। जगत में अनन्त प्रकार के शास्त्र हैं जो जैसी भक्ति व साधन करेगा वैसी उसकी पहुंच हो जाती है।

नहीं वार पारंग, दसुं दिश देखा। नितो नित लीला, अनेखंग अनेखा॥ १००॥

सतगुरू सता का कोई वार पार नहीं है। शरीर में सब जगह उसका अनुभव होना ही दसु दिशा देखना है। सता का नित नया अनेक प्रकार से अनुभव होना ही नितो नित लीला है।

सुगन्ध बाग बरछंग, बैठा संत मांही। झिगामिग लागी, बोलाचाल नांही॥ १०१॥

जैसे बाग में सब जगह एक सी सुगन्ध आती है। उसी प्रकार सतगुरू पद में मिले बाद साधकों को एक सरिसा आनन्द आता है व दिव्य दृष्टि से स्वयं प्रकाश देश हो जाता है, तब जन्म व मरना नहीं है।

उनमुन ध्यान मुद्रा, सदा काल रेते। कोटा कल्प ब्रह्मा, शिंभू कोट बरते॥ १०२॥

वाणी बिना बाणी के भजन होना उनमनी मुद्रा है। सत आनन्द पद की प्राप्ति कर सन्त वापस नहीं आते चाहे करोडो ब्रह्मा व शिव चले जावे।

देखा बाग भवना, देखी बावन गादी। देखी सिद्ध शिला, समादंग सादी॥ १०३॥

बावन अक्षर का ज्ञान व वाणी का सुमरण करना सिद्ध शिला व बावन गादी देखना है। सिद्ध शिला के आगे सता समाधि का सुख का अनुभव करना ही बाग भवन देखना है।

जको सुख सिला, जको बिरछ बागंग। सोई सुख भवना, निरभै जाग जागंग॥ १०४॥

जो सुख सिद्ध शिला के पद में है। जैसे बाग में वृक्ष की छाया में है, वो ही सुख सतलोक रूपी भवन में है। वो निर्भय जगह है।

अमर बाग भवना, सबे मान माना। नहीं छोट मोटंग, नहीं रूप नाना॥ १०५॥

अमरलोक सतलोक बाग भवन जैसा है और सबका मान सम्मान बराबर है। न कोई छोटा न कोई मोटा न नाना प्रकार के रूप है।

नहीं भूख भोगंग, नही मन इच्छा। अनन्त फूल फूलंग, हाजिर बिन अंछया॥ १०६॥

उस पद में भूख व भोग नहीं है। मन व इच्छा भी नहीं है। अनन्त सुख बिना इच्छा के हाजर है।

दरशण परसण सारा, नितो संत मेला। सबे सतसंगी, करे अेम केला॥ १०७॥

यहां पर जैसे दर्शन परसण व मेल मिलाप का आनन्द आता है। ऐसा ही आनन्द उस पद में

आता है। यहां सब सतसंगियो के मिलने का परस्पर आनन्द आता है। वैसा ही उस पद में ध्यान का आनन्द आता है।

यासुं नित जांणो, उठै नही मरणा। कह सुखराम, धिनो गुरू शरणा॥ १०८॥

मृत्यु लोक में जन्मना मरणा होता है। केवल पद की प्राप्ति होने पर जन्म मरण नहीं होता है। इसलिये गुरू पद की भक्ति को धिन है।

नहीं भीड लागी, नहीं ठोड रीती। जैसे बिवाण पुष्पी, सुरा सहज जीती॥ १०९॥

पुष्पक विमान व देवताओ की सभा में जितने जाते है उतने ही वहां जाकर बैठ जाते है। इसी प्रकार सत पद में न कोई स्थान खाली है न ही भीड है। याने जितने जाते है सन्त सब समा जाते है।

तजे भरम करमंग, भजे राम कोई। जके जन पहुंता, अखी अमर होई॥ ११०॥

भरम करम को छोडकर सतगुरू विधि से रामजी की भक्ति करे। वो ही जन याने सन्त पहुंचते है और अक्षय अमर पद की प्राप्ति करते है।

छूटे थूल काया, नवो तत खूटे। बणे संत काया, इसा सुख लूटे॥ १११॥

सतगुरू विधि से भजन करने पर सभी कर्म व ऋणों का खात्मा करके, आत्मा नव तत लिंग शरीर से भी अलग होकर, स्थूल शरीर को छोडकर संत काया यानि दिव्य काया बन जाती है और उस देश का अखण्ड सुख लेती है।

पुंता जन जाई, है ज्युं विध जांणे। बिना सिपत पहुंता, करो के बखाणे ॥ ११२॥

पहुंचे हुये जन ही यह विधि जानते है बिना पहुंचे हुए पद का क्या बखाण कर सकते है।

नहीं साख सायद, कहे न बेद बांणी। किस विध जांणे, अकथ कहाणी॥ ११३॥

सत पद की न साखे है, न शायद है, उस पद को न वेद वाणी कहती है। कैसी विधि से ऐसी अकथ बात जानी जाती है?

श्लोक :- मरत लोक ना है थीर, नित सांसा तुटे। सुरग नहीं थिर, सुखरत खुटे ॥ ११४॥

मृत्यु लोक थिर नहीं है हमेशा स्वांसा कम होते है। स्वर्ग का सुख भी थिर नहीं है। पूण्य भोगने पर वहां का सुख समाप्त होता है।

बैकुण्ठ नहीं थीर, जबे काल आवे। तिहूं लोक नहीं थिर, सबे नाश पावे॥ ११५॥

बैकुण्ठ सुख भी थिर नहीं है सब को काल खा जाता है और तीन लोक भी थिर नहीं रहते है।

परमपद है थीर, तिहूं लोक जूवा। सुखदेव उतपत, परले न हुवा॥ ११६॥

परमपद में जन्मना मरना नहीं है, परमपद थिर है, तीन लोक में उत्पति खपती है।

नही दिन मोरथ, नहीं पुनः सांसा। नही तिथ बारंग, नही बरस मासा॥ ११७॥

सत पद में दिन मोरथ नहीं है। वापस किसी प्रकार की जन्म मरण की सांसा नहीं रहती है। न ही तिथि बार बरस व महीना है।

नहीं पिण्ड ब्रह्मण्ड, न पांच तत होई। नही बाय प्राण, क्षित तेज सोई॥ ११८॥

सत पद में शरीर ब्रह्मण्ड व पांच तत्व भी नहीं है और बाय प्राण क्षित तेज पाणी भी नहीं है॥

पद गुण प्राक्रम, अमर सारा। कह सुखदेव, सोई देश हमारा॥ ११९॥

परमपद का गुण व प्राक्रम सब अमर है वो पद हमारा है।

है कोई बन्दो, बन्दगी रो तालब। तीनूं लोक त्यागे, गहे पद मालब॥ १२०॥

है कोई ऐसा बन्दा जो सदगुरू विधि से भजन कर तीन लोको के सुख त्याग कर उस माला माल पद को गृहण करें।

तज पूरब पिछम, पौतें समादी। कह सुखदेवंग, पद है नित सादी॥ १२१॥

पूरब स्थान व पिछम के सब स्थान पारकर समाधि देश में पहुंचे। वह पद नित आनन्द देने वाला है उस पद में आनन्द ही आनन्द है।

मरत लोक मलमूत्र, कारजिक काया। जमलोक जांचनीक, जो जांच खाया॥ १२२॥

मृत्यु लोक की काया कारजिक है मलमूत्र की है। उसके कर्म सब जगह भोगने पडते है। यमलोक में दुख भोगने की काया है।

कारणिक सुरलोक, तेज पुंज देही। ब्रह्म लोक सुक्ष्म, ब्रह्म सम ते ही ॥ १२३॥

किये हुये भोगने की सुरग लोक में तेज पुंज की काया है। ब्रह्म लोक याने होणकाल पद में सुक्ष्म निरंजण निराकार है।

जबे संत काया, दिव्य रूप धारे। कहे सुखदेव, संत मोख पधारे॥ १२४॥

भक्ति पूर्ण होने पर यह काया संत काया दिव्य काया, दिव्य रूप धारण कर लेती है। म: फ: है कि तब यह मोक्ष में पहुंचती है।

ये पंच काया चारूं सो माया। सुखदेव पंचमी, सत सरूप भाया॥ १२५॥

चार काया तो माया की है। म: फ: कि पांचवी काया दिव्य रूप सतस्वरूप की है, उसे दिव्य काया कहते हैं।

।। इति श्री खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड का अंग सम्पूर्ण।।

卐 मूल ज्ञान घट परचा का अंग 卐

सुखराम संत जन कहत है, अजब अनोपम बात।
बिन देख्यो परचो कहे, सो नरक कुण्ड में जात॥ १॥

म: फ: है कि परमात्मा के जन यानि केवल भक्ति करने वाले अनुभव करके आ: पद की अजब अनोपम बात कहते है। लेकिन जो बिना अनुभव किये मनुष्य सुन सुन कर परचे याने अणभै की बात कहते है। उन्हे उस पद की प्राप्ति नहीं होती है।

या नेणा नही देख्या, अजब अनोपम चेन। सुखराम सुरत सुं देखकर, अब भाखत हूं बैण॥ २॥

के: पद के अजब अनुपम के चेनो को चर्म चक्षुओ से न देखकर आत्मा के दिव्य चक्षुओ से देखकर अब वचनो द्वारा कहता हूं।

नख चख री गत अेक है , रोम रोम रट राम।
सुखराम कमाई आगली, अब नहीं उल को काम॥ ३॥

नख से चख तक की एक स्थिति है,रोम रोम रग रग में राम राम होने लग गया सो सतगुरू म: फ: है कि यह कमाई अगली याने के: पद आ: पद की है उली तरफ की नहीं है।

सिमरण की सरदा नही, मुख सो कयो न जाय।

सुखराम दास देह मुणज्यो, पावन रहयो बजाय॥ ४॥

बिना वाणी द्वारा भजन होना ही सिमरण की सरदा नहीं होना है। उसका वर्णन मुंह द्वारा नहीं हो सकता, अनुभव द्वारा जाना जाता है । जैसे मुख पर हवा घुसने पर गुंजार होता है।

मेरी मुझ को गम नही, सुरत शब्द ले जाय।
सुखराम सुन्न का शहर में, अजब तमाशा थाय॥ ५॥

सुरत याने आत्मचेतना शब्द के साथ जा रही है इसलिए मुझे मेरे शरीर का गम नहीं है। खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड से परे अगम देश में शब्द का अनुभव हो रहा है। यही अजब तमाशा है।

उडी गुडी असमान कूं, सुरत शब्द की डोर।
सुखराम घटा बिन दामिनी, जहां अनहद बोले मोर॥ ६॥

जैसे पतंग आसमान में उड रहा है। उसके डोर लगी हुई है वैसे ही शब्द के साथ सुरत याने आत्म चेतनता उसका अनुभव कर रही है। म: फ: है कि बिना घटा व बिजली के याने बिना किये हुए ही अनहद में शब्द का अनुभव होना ही मोर बोलना है।

सुखरामदास देह किंगरी, नाड़ भई सब तार। राग छतीसों उतरे, कोई गेब बजावण हार॥ ७॥

शरीर सारंग व नाडिया तार है। जैसे सारंगी से छतीसो रागे बजाई जाती है। वैसे ही शरीर में कोई गेबाऊ सारंगी बजा रहा है और छतीसो रागो का अनुभव हो रहा है।

अजब तमाशो देखियो, तन भीतर मन मांय।
सुखराम जगत का ख्याल पर, अब मन जावे नांय॥ ८॥

बिना भजन किये आत्मा की चेतनता को शब्द का अनुभव हो रहा है यही अजब तमाशा है और अब जगत की करणियो पर मन नहीं जाता है ।

जगत तमाशे लग रही, आन माया के संग।
सुखराम दास जहां रम रहया, अनहद बाजे जंग॥ ९॥

सारा संसार आन याने माया की भक्ति में लग रहा है। सच्चे संत जहां अनहद के बाजे बज रहे है वहां रम रहे है। अनहद शब्द का ध्यान करते है।

नहीं दिसे नही देखूं, रूप रंग कछु नांय। सुखराम हाथ में हाथ रे, यूं शब्द लखाया मांय॥ १०॥

वह पद चर्मचक्षुओं से नहीं दिखता है जैसे अन्धेरे में हाथ पर हाथ रखने का अनुभव होता है, रूप रंग कुछ भी नहीं दिखते हुए भी अनुभव होता है। ऐसे ही शब्द के रूप रंग नहीं होते हुए भी अनुभव होता है ।

सूरत हमारी माकडी, तार हमारी सांस।
मन पवना घर लायकर, सुखदेव चढया आकाश॥ ११॥

जैसे मकडी अपने अन्दर से तार निकालकर उसके सहारे ही ऊपर चढती है। वैसे ही मकडी रूपी सूरत सांस के साथ साधन करके मन व स्वांसा को एक कर ब्रह्मण्ड के ऊपर जाती है।

पीठ फाड ऊंचा चढया, बंकनाल निज मांय।
सुखराम धरम सुं जीतकर, त्रिवेणी में नहाय॥ १२॥

बंकनाल के रास्ते होकर ऊंचा चढे, आगे मेरूदण्ड धर्मराज के स्थान को पारकर त्रिकुटी में पहुंचे।

उलटा अम्बर फाड के, बस्या त्रिकुटी जाय। सुखराम त्रिकुटी चैन रे, शब्दा मांय बताय॥ १३॥

मेरूदण्ड से सिर ऊपर होकर त्रिकुटी में आना ही उलटा अम्बर फाडना है। त्रिकुटी में अनुभव करके वहां के चैन को शब्दों में दूसरो को कहना ही शब्दा मांय बताना है।

मन पवना आकाश लग, सुरत शब्द घर अेक।
सुखराम त्रिगुटी पहुंचिया, देह छिनमातर देख॥ १४॥

आकाश याने ब्रह्मण्ड तक स्वांसा मन शब्द सुरत साथ रहते है जब शरीर छिन मात्र दिखता है ।

आंख फिटकडी ऊघडे, अतलस तेज लखाय।
ध्यान समय सुखराम कह, संत त्रिगुटी मांय॥ १५॥

जैसे आंख में फिटकडी डालते है तो लाल मखमल की तरह देखने से तेजी मालूम पडती है वैसे ही शब्द का त्रकुटी में ध्यान समाधि लगती है।

सुखराम लगे जब ध्यान रे, नैण ऊलटा थाय। तीनों रास्ता अेक होय, दशवें द्वार लखाय॥ १६॥

ध्यान करने से अन्दर के सुरत नैत्र खुल जाते है। तब तीनों रास्ता अला पिंगला सुखमणा तीनों एक होकर दशवें द्वार में शब्द का अनुभव होने लगता है ।

सुखिया साहिब भेटिया, त्रिवेणी के तीर। सहसर धारा सुखमणा, बूठा अमरत हीर॥ १७॥

सतगुरू फ: है कि त्रवेणी के तीर याने ब्रह्मण्ड में शब्द का अनुभव होना ही साहिब से भेंटना है। सुखमणा में भजन होने पर हजारों धारो का छूटना ही अमरत रूपी हीरा बरसना है।

अनहद जहां बाजा बजे, घर घर मंगलाचार।
सुखिया आत्म सुन्दरी, जहां परमात्म भरतार॥ १८।।

शब्द का ब्रह्मण्ड में कुदरत ही अनुभव होना ही बाजा बजना है। सारे शरीर में अनुभव होना ही घर घर मंगलाचार है। शब्द ब्रह्म है याने परमात्मा का रूप है और शब्द का अनुभव आत्म चेतन कर रही है। वही आत्म सुन्दरी व परमात्मा भरतार है।

जोत झिलमिल होय रही, तेज पुंज मुख नूर। ज्युं ऊगा सुखरामजी, शेष कला ले सूर ॥ १९॥

शब्द की ध्वनि याने दिव्य ज्योति का अनुभव होना ही जोत झिलमिल होना है। जिस प्रकार सूर्य हजारो कलाओं के साथ उदय होता है वैसे ही पूर्ण रूप शब्द का दिव्य ज्योति का अनुभव होना ही तेज पुंज मुख नूर है।

सुरत सुन्दरी महल में, पाया पुरातम पीव। निकट सदा दूरी नहीं, लग्या पीव सुं जीव ॥ २०॥

बह्मण्ड में आत्मचेतन शब्द का अनुभव करती यही पुरातम पीव पाना है। शब्द का अखण्ड ध्यान होना ही पीव सुं जीव लगना है और निकट रहना, दूर नहीं होना है।

रूप रेख नही बरण है, ना कोई बेर न बात।
सुरत रमे सुखराम कह, आठ पोहोर पीव साथ ॥ २१॥

उस ने: अक्षर का रूप आकार वर्ण व बेर बात नहीं है। आत्म चेतन द्वारा हर समय शब्द का अखण्ड ध्यान होकर ध्यान रूप होना ही आठ पोहोर पीव के साथ रहना है ।

आकाश मंड कूं चूर कर, लिया सुन्न गढ़ जाय।
निर्भय नेजा रोपिया, सुखदेव काल न खाय॥ २२॥

ब्रह्मण्ड व पारब्रह्म को पारकर पांच तत्व पांच प्राण व स्वांसा से अलग होकर सुन्न गढ़ याने निरंजन निराकार पद की व के: पद की प्राप्ति कर जन्म मरण से रहित होना ही काल का नहीं खाना है।

बिन सूरज का तेज है, बिन चंदे प्रकाश। बिन बादल सुखराम कह, बरसे बारा मास ॥ २३ ॥

वह देश स्वयं प्रकाशित देश है। वहां बिना सूर्य व चन्द्रमा के प्रकाश है बिना बादल के भी बारह मास वर्षा होती है।

बिन पानी का रंग है, बिन धरती आंकूर। जहां देख्या सुखराम कह, ब्रह्म जीव का नूर ॥ २४ ॥

उस देश में बिना पानी ही सब रंग है, बिना धरती के ही अंकूर है। म: फ: हैं कि जहां देखता हूं वहां आत्मा दिव्य रूप में है।

बिन तरूवर बोहो फूल है, बिन फूला निज बास।
बिन भंवरे सुखराम कह, लेवे सुख विलास॥ २५ ॥

शब्द ब्रह्म का अखण्ड अनुभव होना ही बिना तरूवर बोहो फूल बिना फूला के निज वास होना है। यही बिन भंवरे के सुख का अनुभव होना है।

धरणी गिगन दोनो नहीं, नहीं चन्दा नहीं सूर।
जहां देख्या सुखराम कह, अलख पुरूष का नूर॥ २६ ॥

उस पद में धरती व आकाश नहीं है, चन्द्रमा व सूर्य भी नहीं है, वहां उस पद में ब्रह्मण्ड व पार ब्रह्म से परे सतशब्द का अनुभव होना ही अलख पुरूष का नूर है।

वेद गाय पुगे नहीं, नहीं किरिया करे जाय। रंकार की डोर सुं, सुखदेव मांय मिलाय॥ २७ ॥

वेदो को पढकर करणी व क्रिया के द्वारा उस पद की प्राप्ति नहीं होती है। ररंकार से उस पद की प्राप्ति होती है याने सांस उसांस में राम रटणे से सतशब्द प्रगट होकर आत्मा को परमात्मा में मिलाता है।

तपस्या कर कर खप गया, तीरथ कर नर लोय।
बिना भजन सुखराम कह, कदे न पहुंचे कोय॥ २८ ॥

तपस्या करने से तीर्थो में जाने से उस पद की प्राप्ति नहीं होती। सतगुरू विधि से भजन करने पर परमात्मा पद की प्राप्ति होती है। बिना भजन के नहीं होती है।

बरतबास एकादशी, करता है निरधार। बिना भजन सुखराम कह, कदे न पहुंचण हार॥ २९ ॥

सतगुरू विधि से भजन किये बिना व्रत वास और निराधार एकादशी करने से उस पद की प्राप्ति नहीं होती।

दान पुन्न जिग बोह किया, कंचन तुला चढाय।
बिना भजन सुखराम कह, धाम कदे न जाय॥ ३० ॥

सतगुरू विधि से भजन किये बिना। पुन्न करो, जिग करो। सोने के बराबर तुलकर उसका दान करो तो भी परम पद की प्राप्ति नहीं होती है।

<u>रेखता</u> :- आकाश सूं पंच पंयाल कूं उतरिया, चोकिया चार विश्राम पाया।
पांच पचीस दिन नाम रसणा लिया, हिरदे मास हरि अेक गाया॥
नाभ के बीच में जुग सो रम रयो, गुरां के भेद पाताल आया।

मूल द्वार में गम ऐसी पडी। पवन के फेर कोई भंवर खाया॥
नाड चोबीस का बंद एक लग्या, उथे जालंधरी बंद लागा।
धरण आकाश मध्य होत झणकार रे। थाल कूं छेड कोई देत भाया॥
भेद की बात निज फेर अैसे कहूं, मूण में भंवर कोई गीत गाया।
पांव हर पंख बिना चलत आकाश कूं। पिछम देश का भेद पाया॥
पिछम के देश का सूत अेसे लग्या, कूप में कुम्भ कोई खींच लाया।
मेर के ऊपरे बंध बोह भांत का, धर्म कूं जीत आकाश आया॥
अला हर पिंगला दोय काने लगी, त्रिवेणी घाट सो आन नहाया।
मध्य से सुखमणा आन भेली हुई, चन्द्र हर सूर घर एक लाया॥
अरध हर उरध ज्यां कमल दोय फूलिया, शब्द की घोर गिगनार छाया।
दास सुखराम गुरूदेव प्रताप सुं, गढ़ पर चढ़ निसाण बाया॥ १ ॥

शब्द आकाश याने ब्रह्म बैराट से उतरकर पंयाल याने शरीर में प्रवेश करता है। सतगुरू विधि से भजन करने पर कंठ हृदय नाभी दशवां द्वार याने पारब्रह्म इन चार चोकी पर शब्द ठहरता है। एक महिना जीभ से राम राम किया, एक महिना हृदय में रखकर भजन किया। नाभी मे बारह वर्ष तक भजन कर सतगुरू विधि से गणेश शेष के स्थान पर आया, गणेश स्थान से पिछम में उलटना ही स्वांसा के फेर में भंवर खाना है। जहां चौबीस नाडिया मिलती है। उस नाभी स्थान पर जालंधरी नाम का बंध लगा। धरण गणेश स्थान मध्य नाभी व आकाश ब्रह्मण्ड तक शब्द की ध्वनि होने लग गई । जैसे थाल को किसी के छेड देने पर होती है। उस शब्द भेद की बात ऐसी है जैसे मूण में हवा घुस जाती है। तब ऐसा मालूम होता है कि भंवरे गुंजार कर रहे हो। बिना पांव बिना पंख के ब्रह्मण्ड की ओर जा रहा है तो बीच में पिछम याने बंकनाल का भेद मिल गया। शब्द जब मेरूस्थान पर आता है जब ऐसा मालूम पडता है कि कोई कुए में से घडे को खींच रहा हो। मेरूदण्ड पर कई तरह के बन्ध लगते है। इस तरह धर्मराज के स्थान को जीत कर ब्रह्मण्ड में आया, बांयी तरफ ईड़ा, दायीं तरफ पिंगला, दोनो तरफ से त्रिकुटी में पहुंची। मध्य से सुखमणा आकर शामिल हो गई। ईडा पिंगला शामिल हो गई। अर्ध उर्ध में सतगुरू विधि से भजन करने से शब्द गिगन में छा गया। म: फ: है कि सतगुरू केवली भगवंतो के प्रताप से शुन्य में के: पद में गढ पर चढकर निसान बाया याने अखण्ड ध्यान लगा।

नाभ रसणा बिचे एक धारा लगी, गदगद कंठ अलेख ध्यावे।
अरट आकाश में रात दिन बह रहयो, बेल पाताल कूं नीर जावे॥
सांस ऊसांस बीच बारा ढुले, रोम ही रोम संभाल पावे।
गुरूदेव प्रताप भेद कर उलटिया, पिछम देश आकाश आवे॥
शब्द का भेद कोई संत जन जानसी, मुक्त की राह दिल खोज पावे ।
दास सुखराम जहां रीत निरभय बणी, पहुंचिया संत जिण गेल ध्यावे॥ २ ॥

नाभी रसणा के बीच सांस उसांस में भजन होने लगा। कंठ में गदगदी बिरह प्रेम से भजन कर अलेख याने परमात्मा जो लखने में नहीं आता। उसका सतगुरू विधि से भजन किया। ब्रह्मण्ड में शब्द का अखण्ड अनुभव होना ही पाताल कूं बेल जाना है । सांस उसांस में भजन करना बारा

ढुलना है। रोम रोम में उसका असर होता है। केवली सतगुरू के प्रताप से भेद को कोई कोई संत ही जानते है। दिल खोजने पर ही मुक्ति का रास्ता मिलता है। म: फ: है कि जब ऐसी निरभय रीति बनती है जिस रीति को धारण कर पहले सन्त पहुंचे है उसी रास्ते पर चलकर उस पद की प्राप्ति करे।

सांस उसांस के बीच बारा ढुले, प्रेम की डोर जहां लहर आवे।
पंयाल का बन कूं पाय, जब उलटिया, सुन्न की बाड़िया जाय पावे॥
मेघ बिन मेघ जहां घटा बिन दामिनी, गाज बिज गाज घणघोर लाया।
नीर बिन बाग जहां फूल बिन फूलिया, बाग बिन भंवर गुंजार गाया॥
सुन्न की बाड़िया पाय निरभय हुवा, फूल फूलवाद की बास आवे।
दास सुखराम उण बाग में रम रहया, अमर पद बेल का फल खावे॥ ३॥

सतगुरू विधि से सांस उसांस में भजन करना ही बारा ढुलना है। जहां प्रेम से भजन होता है। वहां प्रेम की लहर हृदय में आती है। पाताल याने गणेश स्थान व शेष के स्थानो को पारकर जब बंकनाल में उलटता है। जब ही सुन्न में पहुंचता है। वहां बिना मेघ के मेघ की आवाज है। बिना घटा के बिजली बिना गाज बीज के घणघोर गरजना हो रही है। बिना पानी के बाग हरा भरा है, बिना फूलो के फूल रहा है, बिना शरीर में भंवर गुंजार कर रहे है। इस तरह सुन्न की बाड़िया पाकर निर्भय हो गया। परमपद की प्राप्ति होना ही फूल फूलवाद की बास है। म:फ: है कि मैं उस बगीचे में रमने वाला उस परमपद की प्राप्ति करने वाले को अमर बेल याने के: पद आ: पद की प्राप्ति करना ही यही अमर फल खाना है।

अडद और उड़द के बीच गुडिया उड़ी, सुरत हर निरत की डोर लागी।
सांस उसांस में जाय ऊंची चढी, सुन्न में जाय झणकार बाजी॥
सुन्न का शहर में गेबका महल में, पहुंतसी सन्त सुजाण पागी।
वेद कतेब गुण गाय पुगे नहीं, सूरत पर जीण कर सन्त गाजी॥
अगम वो देश जहां निगम को गम नहीं, भरम भूला फिरे मिसर काजी।
दास सुखराम जहां सुन्न निराकार है, देह बिन देव जहां परसना जी॥ ४॥

उठते बैठते स्वांस में भजन करने से शब्द ऊपर के स्थान बढता है। जैसे पतंग डोर की ढील से बढता है। सुरत निरत लगाकर भजन करना ही शब्द के डोर लगाना है। सांस उसांस में भजन करने से शब्द ऊपर पहुंचा व सुन्न में शब्द का अनुभव होने लगा। उस सुन्न में सतशब्द का अनुभव होना ही गेबका महल है व गेबाऊ महलों में समझदार सन्त ही पहुंचेंगे। वेद व कुराण का पाठ करने वाले वहां नहीं जा सकते। सुरत लगाकर भजन करने वाले सन्त ही जा सकते है। वो देश अगम है। उसकी गम वेदो को नहीं है। मुल्ला व काजी पंडित भरमों में भूले फिर रहे है। म: फ: है कि सुन्न निराकार है। उसका कोई आकार नहीं है। वहां बिना देह के देवता का बिना देह परसना याने अनुभव करना है।

सूरत अब जाय असमान में घर कियो, शब्द सुं मनवा जाय लागा।
रात हर दिवस में पलक नहीं बिछडे, सुन्न का शहर में तूर बागा।
राग में राग बोहो भांत जहां निसरे, कामणियां अनन्त मिल गीत गावे।

सुख समाद में पिवजी पोढिया, सुन्दरी सूरत जहां खबर लावे।।
पीव का बखांण आंण बोहो भांती करे, आन की बात नहीं चित माने।
पीव का पत में अन्त गाढी रहे, सर्व संसार कूं खाक जाणे॥
बहुत दिना जुग सुं बिछडिया हो गया, श्याम सुं प्रीत कर प्रेम पिया।
दास सुखराम जब जाय दरगा मिल्या, पिवजी कंठ लगाय लिया॥ ५ ॥

सुरत का ब्रह्मण्ड में शब्द का अनुभव करना ही घर करना है। मन सतशब्द के ज्ञान का विचार करते रहना ही मन लगना है। रात व दिन पलक भर भी नहीं भूलता। सुन्न शहर में बाजे बजने लगे। अनेक राग में राग अनेक तरह की निकल रही है। जैसे बहुत सी स्त्रियां मिलकर गीत गा रही है। शब्द ब्रह्म का निरंजण निराकार पद में सुरत का अनुभव होने लगा। उसका वर्णन बहुत तरह से करने लगी। अब शरीर रूपी आन की उपासना को चित नहीं मानता है। बहुत दिनों से अर्थात जुगों से परमात्मा से अलग हुये हो गये, अब शब्द ब्रह्म से प्रीतकर प्रेम से ध्यान कर आनन्द लेना ही प्रेम का प्याला पीना है। म: फ: है कि जब आत्म चेतन निरंजण निराकार पद से के: पद का अखण्ड ध्यान का अनुभव कर आ: पद लय होना ही पीव का कंठ लगाना है।

रमता राम सुं प्रेम हम बांधियो, बोलता राम सुं प्रीत कीनी।
देह आकार का नाम सब पर हरया, अड़द हर उड़द बिच सूरत दीनी॥
पांच पचीस सुं राम न्यारा रह, दिस्ट और मुस्ट में नाय आवे।
धरण पाताल आसमान सुं अगम है। करोड़ मध संत कोई गम पावे॥
पूर्णा राम भरपूर सो रम रहया, जाय ब्रह्मण्ड रंकार ध्यावुं।
दास सुखराम कह शब्द अरूप है। जिंग सी धुन सुं राम गांवु॥ ६ ॥

जो राम सर्वत्र चर अचर जड चेतन में रम रहा है, उनसे प्रेम बांध कर बोलताराम याने अणभै वाणी केवली भगवंतो के बोले हुये वचनो से प्रेम कर भजन करना ही बोलते राम से प्रीत करना है। देह धारी व आकारियों के सब नांवो को छोडकर स्वांस उसांस में सुरत लगाई। पांच तत्वों और पचीस उनके गुणों से रामजी अलग रहते है। जो दृष्टि में मुट्ठी में नहीं आता है। धरती पाताल व आसमान याने तीनों लोक से वो अगम है। करोडो में से कोईक सन्त ही उस पद की प्राप्ति करते है। यही गम पाना है। वह पूर्ण राम सब जगह व्यापक है। ब्रह्मण्ड में पहुंचकर ही शब्द का ध्यान ही ररंकार का ध्यान है। म: फ: है कि शब्द ब्रह्म के रूप नहीं है अरूप है। जींग की ध्वनि बराबर होती है। एक सरीसी आवाज होती रहती है। यही राम का गुण गाना है, अर्थात ब्रह्मण्ड पारब्रह्म से ऊपर शब्द का अनुभव होना ही जींग ध्वनी से राम गाना है।

<u>प्रश्न</u> :- चन्द्र और सूर घर कौन स्थान है, धरण ब्रह्मण्ड कहां बाय उठे।
मन हर बुद्ध अहंकार संग सुरत रे, कहां लग दौड घर कौन छूटे॥
आद अस्थान घर कौन हंस को, जीव की जुक्त कहां बास होई।
अड़द हर उड़द कौन घर उपजे, तत्त का भेद घर जान कोई॥
शक्त हर शिव कहां विष्णु भगवान है, सात सुर माय कहां सहज सेवा।
कुण अस्थान घर विष का वास है, कौन घर वस्त सो मिस्ट मेवा ॥ ७॥

चन्द्रमा व सूर्य का स्थान कौनसा है। धरती नाभी व नीचे का स्थान व ब्रह्मण्ड में श्वांसा कहां

से उठती है। मन बुद्धि अहंकार व सुरत की दौड कहां तक है। किस स्थान में इनकी पहुंच है। आद में हंस का कौन अस्थान है। जीव किस जगह जुक्ति से रहता है। अड़द व उड़द लेता हुवा व छोड़ता हुवा स्वांस किस घर से पैदा होता है। तत का भेद किस घर में जाना जाता है। शक्ति शिवजी व विष्णु भगवान का इस शरीर में कहां स्थान है। सात सुरो की सहज ही सेवा कहां तक होती है। किस जगह विष का निवास है। किस स्थान में मिस्ट मेवा मालूम होता है।

<u>प्रश्न</u> :- शुद्ध हर बुद्ध गणेश घर कौन है, सुरग ईक्कीस कहां इन्द्र राजा।
सुरस्वती सांच सम राग घर कौन है, अखण्ड घन घोर कहां बजे बाजा॥
भार अठार घर कौन से उपजे, नेम सो नाभ घर कौन मांही।
शिलता सेंग कुण मांय सो निसरे, बहत जल नीर कुण समंद जाही।
प्रांण का पांव कहां गेल विस्तार है, कौन घर ठाम जहां जोत जागे॥
हद घर कौन बेहद की बात कहे, वां हंस जाय जब कौन सागे।
जोत के ऊपरे कौन अस्थान है, लोक सो लोय के राज होही।
दास सुखराम निरबाण निज ब्रह्म को, भेद स्थान को देत मोही॥ ८॥

शरीर में बुद्धि व गणेश का स्थान कहां है। इकीस सुरग और इन्द्र राजा का स्थान कहां है। सरस्वती व राग का घर कौन है। अखण्ड घनघोर बाजा कहां बजता है। अठारा भार कहां से पैदा होते है। नाभी में क्या नेम उस में और कौन है। सब नदियां कहां से निकलती है और उनका जल बहकर किस समुन्द्र में जाता है। प्राणों के पांव कहां है। उनका रास्ता विस्तार कहां है। किस घर व स्थान में ज्योति की जागृति होती है। हद का घर कहां है। बेहद कहां तक है। बेहद में हंस किसके साथ जाता है। ज्योति के ऊपर कौन स्थान है। कौन लोक लोय के राज क्या है। म: फ: है कि निज ब्रह्म का निरबाण गति का भेद व स्थान मुझे कोई बतावे।

<u>उत्तर</u> :- अला घर चन्द्र रवि घर पिंगला, खण्ड नव मेर के आस पासा।
पवन की पोट ब्रह्मण्ड से उतरे, धरण तिहूं लोक में बन्धी आशा।
हंस की जाग घर हद है त्रृगुटी, जीव को बास जो कंठ मांही।
अड़द उड़द घर नाभ सुं उपजे, तत्त घर भेद ब्रह्मण्ड कुवाही॥
शक्त स्थान पर त्रृगुटी ऊपरे, विष्णु भगवान घर नाभ वासा।
मन हर बुद्ध अहंकार सो शिवजी, हिरदे स्थान जो सर्व आसा॥
त्रिवेणी शहर घर श्याम सुख सेव है, भृगुटी शीष घर विष होई।
निगम निज नाम सो मन घर मांय है, अड़द हर उड़द जा मिले दोई॥
कमल खट पांखडी ब्रह्मा अस्थान है, सुरग ईकीस सुमेर मांही।
सरस्वती स्थान दिल ऊपरे, राग घर कंठ कमल जांही॥
भार अठार कण नाड में उपजे, नेम सो नाम घर प्रेम कहिये।
प्राण का पांव प्रमोद निज ज्ञान है, अड़द हर उड़द बिच बास रहिये॥
सिलता सेंग मथा सरो नाभ है, पवन जल अंश सो बहत मांही।
सिलता पांच मिल जात है समंद में, दोय बतीस जहां तीन जांही॥
सात सर मांही सो जात चोबीस ही, और निनाणवे बीच भेला।

आद घर खोज जहां तीन प्रकाश है, तीन गुण पांच जहां होत मेला॥
जोत के ऊपरे नवस्थान है, राज गत विध से नाम जूवा।
नाशका नाभ बिच हद स्थान है, त्रिगुटी लंघ बेहद हुवा॥
गुदा घर कमल गणपत का वास है, नगर अमरावती इन्द्र राजा॥
सुखमण स्थान घर मिस्ट मेवा खुले, गिगन घर बजे घोर अखण्ड बाजा।
दशवें द्वार को खोल मुगतास है, हद बेहद सब रहे लारा।
दास सुखराम निरवाण निज ब्रह्म कूं, सुन्न के शहर में परस प्यारा॥ ९॥

ईडा का घर चन्द्रमा है। सूर्य का पिंगला है। नो खण्ड मेरूदण्ड के आस पास है। स्वांसा शरीर में ब्रह्मण्ड से उतरती है फिर धरती व तीन लोको में आशा बन्ध जाती है। हद त्रकुटी तक हंस की जगह है। जीव का निवास कण्ठ में है, उठता व बैठता हुआ स्वांसा नाभी कमल से पैदा होता है। तत के भेद का घर ब्रह्मण्ड है। शक्ति का स्थान त्रकुटी के ऊपर है। विष्णु का स्थान (निवास) नाभी में है। मन बुद्धि अहंकार और शिवजी का स्थान हृदय है। सबकी आशा वहीं लगी हुई है। त्रिवेणी का स्थान विष्णु की सेवा का स्थान है। विष याने बिन्दु का स्थान भृकुटी व शीष में है। निगम निज नाम सो मन घर मांय याने निरंजन निराकार ब्रह्म के निज नाम की जानकारी नही थी। उसकी अड़द उड़द याने स्वांस प्रस्वांस में मन लगाकर भजन करने से प्राप्त की। छः पांख के कमल पर याने संसार उत्पति स्थान पर ब्रह्मा का निवास है। इक्कीस स्वर्ग सुमेर में है। सरस्वती का स्थान दिल के ऊपर है। राग का घर कण्ठ कमल पर है। अठारा भार रोमावली याने रोम रोम नाडियो में पैदा होते है। नियम प्रेम से भजन करना ही नेम से नाम घर प्रेम करना है। उठते बैठते स्वांसा में निज स्वरूप का ज्ञान करना ही प्राणों का पांव है याने आधार है। सब सिलता याने नाडियो का सिरा नाभी है, उनमें स्वांसा रूपी जल का अंश बहता है। पांच प्राण नाभी में मिलते है। दोय बतीस याने मन निज मन पच्चीस चित मन बुद्धि अहंकार और सतोगुण रजोगुण तमोगुण ये तीन गुण सात सर मांय याने सात इन्द्रिया चौबीस नाल व निनाणवे नाडिया ये सब जाकर नाभी में मिलते है। ज्योति के लोक याने जीव ब्रह्म के ऊपर नव स्थान है, राज योग की सतगुरू विधि धारण करने से निज नांव अलग प्रगट होता है, हद का स्थान नासिका व नाभी के बीच है। त्रकुटी लांघने पर बेहद है, केवल की बारी दशवे द्वार को खोलकर शब्द जब बाहर हो जाता है जब ही के: पद आ: पद की प्राप्ति होती है। गुदा घर गणपति का स्थान है। अमरावती नगरी सुमेर के आस पास इन्द्र राजा की नगरी है। सुखमणा में भजन होने पर अमीरस झरने लगता है। यही मिस्ट मेवा खुलना है। गिगन में अखण्ड शब्द का अनुभव होता है यही बाजा बजना है। जो निमीष मात्र भी बन्द नहीं होता। दसवें द्वार के खुलने पर ही मोक्ष की प्राप्ति होती है, हद बेहद पीछे रह जाता है। म: फ: है कि इस सुन्न के शहर में याने निरंजण निराकार पद में के: पद आ: पद का अनुभव होना ही निरबाण निज ब्रह्म को परसना है।

क्रोध की दौड सुमेर आकाश लग, मन की पहुंच सो हद मांही।
सुरत सो जाय बेहद के टापरे, अगम स्थान जहां संत जाही॥
आवते हंस की संखनी नाल है, उलट घर जावता बंक होई।
भंवर गुफास में आद स्थान है, संख और बंक जहां मिले दोई॥

बीच में पट सो जाल उनमान है, भरगुटी त्रिकुटी दोय कहावे।
संखनी नाल होय जोग स्थान ले, बंकसी माय होय ब्रह्म पावे॥
जोग के साजिया देह जुग राख ले, काल के बस जन जाय होई।
दास सुखराम कह भक्त इधकार सुं, जन्म हर मरण जो मिटे दोई॥ १०॥

क्रोध की दौड मेरू से ब्रह्मण्ड तक है। मन की पहुंच हद याने त्रिकुटी तक है। सूरत बेहद याने ब्रह्मण्ड से ऊपर तक जाती है। अगम स्थान याने के: पद आ: पद की प्राप्ति सन्त करते है। हंस संसार में शंखनाल के रास्ते से आता है और उलट घर जावता याने पूर्ण परमान्द की प्राप्ति का रास्ता बंकनाल है। भंवर गुफा में आद स्थान याने ब्रह्मण्ड के ऊपर पारब्रह्म का पद जो आत्म चेतन व पांच तत्वो का आधार है। जहां से हंस आता है जहां संखनाल व बंकनाल दोनो मिलती है। बीच में पट याने परदा जाल के अनुमान है, उसको त्रिकुटी व भृकुटी दोनों कहते है। योग की साधना करने वाले शंखनाल याने पूर्व के रास्ते से जाते है। बंकनाल के रास्ते से जाने वालो को ब्रह्म की प्राप्ति याने के: पद आ: पद की प्राप्ति होती है। अष्टांग योग की साधना करने वाले अपने शरीर से संसार में अमर हो जाते है उम्र बढाकर भी आखिर काल के बस हो जाते है। म: फ: है कि राम भक्ति का ऐसा प्रताप है कि जन्म मरण से रहित हो जाता है।

ब्रह्म के देश की गेल बहु कठिन है, बीच इकीस जो चार घाटा।
पांच पचीस सो पेडिया पड़त है, अध बीच राह सो तीन फाटा॥
दश सो समद उण गेल के बीच है, दोय जुं राम के देश मांही।
बीच में पहाड ता मांय झक रहत है, जम के शीष होय गेल जांही॥
तीन ठग दोय सो नाहर बन बीच है, वेश्या सात सुण दोय दूता।
दास सुखराम कह सर्व अे जीतियां, ता दिना आद घर जाय पहुंता॥ ११॥

ब्रह्म देश प्राप्ति का रास्ता बहुत कठिन है। इकीस मेरूदण्ड की गांठीये कंठ हृदय नाभी व दशवां द्वार ईकीस स्वर्ग व चार घाटे है। पांच तत्व पचीस प्रकृतियों के गुण रास्ते में है, उस जगह ईडा पिंगला सुखमणा ये तीन फाटा है। दसों इन्द्रियों के विषय दश समुन्द्र है। माया ब्रह्म के पद ये दोय, जु राम के देश माही है। बीच में पहाड याने मेरूदण्ड पर यमराज का स्थान है। यमराज के सिर पर होकर से रास्ता जाता है। उस वन में सत रज तम ये तीन ठग अहमता ममता दो नाहर सात इन्द्रियां वेश्या एवं राग द्वेश ये दोय दूता है। म: फ: है कि इन सबको जीतने पर ही आद घर याने पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति हो जाती है।

छाड संसार का काम कल्याण सो, आठ ही पोहोर हर नाम लिया।
सांस उसांस की धवण घट लाय के, कर्म सो छाडकर प्रेम पिया॥
उड़ के मोर पाताल में पेठगो, शेष कूं पकड पलटाय लियो।
जाय आकाश असमान सुं ऊपरे, तां दिना सरप को छोड दियो॥
नाद अनाद घर सुन्न में सामलो, मोर महमंत होय बोल बाणी।
दास सुखराम कह त्रृगुटी छाडिये, तां दिना गरूड ही थके प्रांणी॥ १२॥

संसार के सब कामों को छोडकर आठ ही पोहोर राम नाम का भजन किया। इस शरीर में सांस उसांस धवण लगाकर के शुभ अशुभ करणियों को छोडकर राम नाम का प्रेम से भजन करना, प्रेम

पीना है। उड के मोर याने शब्द कंठ कंवल से छः कमलो को छेदन करता हुवा शेष के स्थान पर जाकर बंकनाल में पलट गया। जब वो शब्द आकाश याने ब्रह्मण्ड को फोडकर बाहर हुवा, यही आकाश आसमान से बाहर होना है। शरीर से कोई सम्बन्ध नहीं रहता है ये ही मन रूपी सर्प को छोडना है। आत्मा आद अनादि से माया ब्रह्म के घर में थी सो सतशब्द के साथ होकर मेहमन्त होकर अणभै वचन बोलने लगी। मः फः है कि जब पारब्रह्म त्रकुटी को छोडकर आगे जाता है। जब स्वांसा से प्राणो से अलग होकर केः पद आः पद की प्राप्ति करना ही गरूड का थकना है।

देह बिन देव आकार बिन मूरति, नेण बिन पांव हम जाय देख्या।
आठ ही पोहर में अखण्ड दीदार है, त्रिकुटी शहर में जाय पेख्या॥
कहण में शोभ बर्णाव किम कीजिये, भेद करतार को बहुत भारी।
मन सो सुरत जब जाय हर देखिया, छाड दी भरम की रीत सारी॥
होय निसंख संसार में बिचरया, राम बिन आन सो नांय सुवावे।
दास सुखराम कह चित बिन सुरत रे, जीव बिन श्याम निरधार गावे॥ १३॥

उस सतशब्द ने अंच्छर रूपी देवता के शरीर, आकार व मूर्ति नहीं है। बिना नेत्रो बिना पांवो के जाकर हमने देखा है। आठो पहर उसका अखण्ड दर्शन हो रहा है। त्रकुटी याने पारब्रह्म से आगे शहर में जाकर उसको देखा है। उसकी शोभा व वर्णन कैसे किया जा सकता है। सृष्टि करता का भेद बोहोत भारी है। जब मन व सुरत याने आत्म चेतन ने शब्द ब्रह्म का दर्शन किया तो भरम पैदा करने वाली सब रीतियां छूट गई। अब निसंख याने निः संकोच संसार में विचरण कर रहे है। रामजी के बिना शरीर रूपी आन की उपासना नहीं सुहाती है। मः फः है कि बिना चित बिना सूरत बिना जीव के निराधार याने सतशब्द का अखण्ड होना ही श्याम को गाना है।

बंद जालधंरी नाभ में लागियो, पीठ के देश उतानपात।
त्रिगुटी मांय सो त्राटकी बंध है, ध्यान की अब सो कहत गाथा।
रेचकी ध्यान में मन सो नासिका, पूरकी ध्यान में चख बिचा।
तीसरो ध्यान कुम्भक तब लागियो, प्राण सो चालियो सुरग ऊंचा।
अेक समाद तो सहज की रहत है, सुरत हर शब्द के गांठ लागी।
दास सुखराम कह दूसरी तब लागे, तां दिना शुद्ध नहीं पवन त्यागी॥ १४॥

नाभी में शब्द आता है तो वहां पर जालन्धरी बंध लगता है और पीठ के रास्ते ऊलटता है तब बंकनाल में ऊतानपात बंध लगता है। त्रिकुटी में शब्द आने पर त्राटकी बन्ध लगता है। अब ध्यान की बात कहता हूं नाक की अणी पर मन लगाना रेचक ध्यान होना है। दोनो नेत्रो के ऊपर भंवरो के बीच में ध्यान करना पूरक ध्यान होना है। जब कुम्भक ध्यान लगता है। तो प्राण ऊंचा चढता है,एक समाधि में तो शब्द में सुरत लय हो जाती है याने गांठ लग जाती है। इसे सता समाधि कहते है और दूसरी शून्य समाधि अवस्था में शरीर की सुध भी नहीं रहती है।

उडियो हंस बिन पंख असमान में, धरण का बाड़िया सरब धूजी।
नाहर बग नाहर सो बन का छापल्या, पहाड के बीच एक नार गूंजी॥
जाय असमान में हंस हीरा चुगे, क्षीर हर नीर सो करे न्यारा।
त्रगुटी तखत पर जाय बिराज्यो, तीन जहां नदिया बहत धारा॥

रात हर दिवस वहां हंस केला करे, सहज ही सहज गत चूर्ण होवे।
दास सुखराम कह हंस उदास हुवो, ब्रह्म के देश की बाट जोवे॥ १५॥

शब्द ब्रह्मण्ड में अनुभव होने लगा। तब सारा शरीर कम्पायमान होने लग गया। शरीर की वृतिया अहंकार पहाड याने मेरूदण्ड ब्रह्मण्ड में सूरत ने शब्द का अनुभव किया। वहां माया ब्रह्म को अलग अलग देखो। जब शब्द त्रिगुटी में आता है तो वहां अला पिंगला सुखमणा तीनो मिलती है। अला पिंगला मे अलग सुखमणा में सतशब्द का अखण्ड होना ही त्रिकुटी तखत पर विराजना है। रात दिन सतशब्द का अखण्ड ध्यान का अनुभव करना ही हंस का केल करना है और सहज ही सहज गत चूर्ण होना है। म:फ: है कि हंस यहां आ: पद में लय होने के लिए उदास हो रहा है।

मन कलाल चढ़ पहाड के ऊपरे, आंण भटी चुणी खोह मांही।
पांच पचीस कूं आंण तल झुकिया, नार नित मद को पीण जांही॥
छिक कर अब सो बके संसार में, पीव को भेद सो कहत बारे।
लाज हर सरम सो नाय घट उपजे, ईधक सुं ईधक सो बात धारे॥
होय मतवाल मेहमंत शिर जोश रे, पकड कलाल कूं वश किया।
दास सुखराम कह नार सो बिरचगी, यार सो भागसी मांय दिया॥ १६॥

मन रूपी कलाल ने पहाड याने मेरूदण्ड पर चढकर एक खोह में भटी चुण दी। पांचु विषय और प्रकृति के पचीस गुणो को भटी में नीचे झोक दिया याने इनको खत्म कर दिया। नार याने सुरत को शब्द का अनुभव कर आनन्द आना ही मद का पीकर छकना है। परमात्मा की प्राप्ति का ज्ञान अनुभव करके बताना ही पीव का भेद संसार में बताना है। परमात्मा प्राप्ति का भेद कहने मे लाज शर्म घट में नहीं रखकर ज्यादा से ज्यादा भेद बताती है। इस तरह मतवाली मेहमंत होकर बहुत जोश से मन से अलग हो गई। यही पकड कलाल कूं वश किया है। म: फ: है कि सूरत का मन से अलग होना याने मन व इच्छा के कहने में नहीं रहना अणभै ग्यान के साथ चलना है।

पहाड़ सुं मच्छ सो धस्यो पाताल में, ताय के मुख में चीज भारी।
कमल खट छेद के सूरत पिछी धरी, समंद के बीच खुली बारी॥
माछली मछ सो रतन कूं ले चल्या, पिछम देश होय जाय ऊंचा।
बीच में घाट सो बाट बांका घणा, आस ही पास बहु घुंच घुंचा॥
बगुला पांच सो घाट में चुग रहया, माछली ऊपरे डाव मारे।
दास सुखराम कह आद घर पहुंचगी, ताय सुण मीन को कोण मारे॥ १७॥

सतगुरू विधि से भजन करने पर ब्रह्म बैराट से शब्द आकार कंठ कंवल पर प्रगटता है तथा आत्म चेतन के आधार से अनुभव होना ही व आनन्द आना ही पहाड से मच्छ का पाताल में धंसना व मुख में भारी चीज होना है। छ: कमलो का छेदन कर बंकनाल में उलटना ही सूरत शब्द का पीछे जाना है। शेष के स्थान से बंकनाल में जाना ही समंद के बीच बारी खुलना है। सूरत व मन लगाकर भजन करने से शब्द आगे बढता है। यही माछली मछ का रतन ले चलना है। बंकनाल से ऊपर जाना ही पिछम देश ऊंचा जाना है। रास्ते में कई स्थान व नाडियो का पार करना ही घाट घुंच घुंचा है। पांच तत्व में रस शब्द स्पर्श रूप गंध ये पांच बगुला माछली आत्म चेतन को विषयो

में फसाना चाहते है। म: फ: है कि आत्म चेतन ने पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति कर ली, तो वो जन्म मरण में कैसे आ सकती है।

जमना सुरसरी गंग जा खल हले, त्रिकुटी घाट पर धेन ब्याही।
बाछडा बाछडी दोय थन लागिया, सुख की सीर सो सेंग आई॥
दुहता दुहता दूध बोहो निसरे, सांघणी राखयां कम होवे।
देह बिन मुख वा पहाड़ में चरत है, सन्त सुजाण कोई जाय जोवे॥
तां दिन भूख भय सब सो मिट गया, सहज बिलोवणो सुन्न माही।
दास सुखराम कह तत्त घी आविया, दशवें द्वार अब बेस जाही॥ १८॥

त्रिकुटी में ध्यान होना ही अला पिंगला सुखमण में धेनु ब्याना है। बाछडी बाछडा सुरत व मन लगाकर भजन करना ही थन लगाना है। भजन का आनन्द लेना ही सुख की सीर आना है। मन व सुरत लगाकर भजन करने पर आनन्द ज्यादा आता है। यही दुहता दुहता दूध बोहो निसरे है और भजन कम कर पूर्ण आनन्द नहीं पाते यही सांघणी राखियो कम होना है। आत्मा को बिना देही मुंह के दशवें द्वार में सतशब्द का अनुभव होना ही पहाड में चरना है। सन्त उसका अनुभव करते है। यही जाकर जोना है याने देखना है। के: पद आ: पद की सुन्न में प्राप्ति होना ही भूख भय मिटना है। म: फ: है कि अखण्ड ध्यान का अनुभव होकर आ: पद में लय होना ही तत घी आना है।

पवन के ऊपरे जाय घर बांधियो, सूर हर चन्द्र शिर ध्यान लागो।
राग छतीस घम घोर घरनाट है, दशवें द्वार में नाद बागो।
सुखमण शिर होय नीर जल आवियो, प्राण को कीर जहां हीर बूठां।
त्रिकुटी शहर मध्य तीन जोत है। सुन्न सुं धार होय प्रेम छूटा॥
निखरी बात तिहूं लोक सब सुजियो, उलट असमान सुं जाय आगा।
दास सुखराम कहे, पार हम पहुंचिया, जम जालम का भय भागा।। १९॥

चेतन को स्वांसा से अलग शब्द का अनुभव होना ही पवन के ऊपर घर बांधना है। सूर और चन्द्र के सिर याने सुखमणा में ध्यान लग गया है। जब दशवें द्वार में शब्द का अनुभव होने लगा यही नाद बागा है। सुखमणा में भजन का आनन्द आना ही नीर जल आना है। मन शरीर को भी आनन्द का अनुभव होना ही प्राण को कीर जहां हीर बूठां है। त्रिगुटी में तीन ज्योत याने दो पांख हजारू पांख व अनन्त पांख का कमल है व सुखमणा में भजन हो सुन्न में सत शब्द का अनुभव होना प्रेम छूटना है। ऊपर की सब बाते अनुभव कर तीनो लोक खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड व पार ब्रह्म के आगे अनुभव किया। म: फ: है कि के: पद आ: पद की प्राप्ति करने पर ही जन्म मरण से छुटकारा होता है।

पहाड की खोह में सिंह सुण गरजियो, तीन गजराज सुण हांक कांपे।
पांच पचीस आवाजा सुण उड़ गया, मानवी एक कूं ताव झांपे॥
बन का स्याल सुण रीछ हर बांदरा, हिरणया लूकडी सरब भागी।
बगुली एक सुण नाहरी वन में, सिंह नी बाज सुण तुरत जागी॥
भेसड़ो वन में चरत ही भाजगो, पांच करसाण डर छाड खेती।
दास सुखराम कह सिंह यो गाजता, काल डर छाड़गो प्रांण सेती॥ २०॥

जब शब्द मेरूदण्ड याने यमराज के स्थान पर आता है, उसकी हाक याने आवाज तीन गजराज याने सत रज तम सुनकर कांपने लगे। पांचो विषय पच्चीस प्रकृति के गुण शब्द की आवाज से उड गये। मन पर भी ताव पडने लगा। बन का स्याल रीछ बांदरा याने शरीर की सारी वृतियां सब भाग गयी। बगुली याने ममता नाहरी अहमता ये भी भागी। सिंहनी याने सूरत भी शब्द की आवाज से जाग गई। भेसडो याने अहंकार बन में चरते ही याने शरीर से दूर हो गया, पांचु विषय भी दूर हो गये। म: फ: है कि गरजना से काल डर कर प्राणो को छोड भागा याने काल का डर मिट गया।

सिंह सो सागे आसमान सुं उतरिया, मानवी एक कूं संग लिया।
लोक परलोक पाताल सब धुजिया, प्रजा सब हल बली भूप बिया॥
आनन्द ओछाव घर जीव के उपना, धिन है धिन है भाग मेरा।
शिरजिया मोय सो राम पधारिया, राखसी अब सो मोय चेरा॥
मारियो अेक अेवाल सो गाडरो, पांच सुण अनल ले मरग उडियो।
दास सुखराम कह उलट घर पहुंचिया, तीन को एक कर बांध गुडियो॥ २१॥

ब्रह्म बैराट से शरीर में शब्द का प्रवेश होना ही सिंह का आसमान से उतरना है। मनुष्य शरीर में आत्म चेतन को शब्द का अनुभव होना ही मानवी एक कूं संग लिया है। तीन लोक इस शरीर में है याने सारा शरीर धुजने लगा। सारे शरीर में हलचल मची। भूप याने मन भी डरा जीव आनन्द ले रहा है। मेरा भाग्य धिन है धिन है। जो मुझे पैदा करने वाले रामजी शब्द ब्रह्म के रूप में शरीर में पधार गये सो अब मुझे दास बना लेंगे। मन और अहंकार को वश में करना ही अेवाल व गाडरो मारना है। पांच विषय पांच तत्वो को व पांच प्राणो से सबसे अलग होना ही पांच सुण अनल से मरग उडियो है। शब्द आत्म चेतन को ले उडा। म: फ: है कि बंकनाल में उलट कर के: पद आ: पद की प्राप्ति की, यही घर पहुंचना है। तीनो नाडिया एक होकर सुखमणा में भजन होने लग गया, यही तीन को एक कर सरियो है।

राम ही राम रट राम रिजाविया, राम रट आत्मा खोज लीवी।
भजन प्रताप सुं धस पाताल में, उलट आसमान में शीर पीवी॥
गाजियो जाय आसमान चढ शिखर में, शब्द मोती झडे मुख मांही।
पवन सो सेंग समाय है कमल में, तां दिना दशवें द्वार जाई॥
मोख पर मोख हर गाय जब पहुंचिया, सरब सांसा मिटया अब मेरा।
दास सुखराम कहे, सांभलो संत जू, मिट गया सरब रे जन्म फेरा॥ २२॥

सतगुरू विधि से भजन करने पर शब्द जागृत होना ही राम रिझाना है। भजन कर आत्मा में परमात्मा पद की प्राप्ति करना ही आत्मा खोज लेना है। भजन के प्रताप से छ: कमलों का छेदन कर गणेश व शेष के स्थान पर आया और बंकनाल के रास्ते उलटकर ब्रह्मण्ड में शब्द का अनुभव किया। यही उलट आसमान में सीर पीवी है। ब्रह्मण्ड में शब्द का अनुभव होना ही शब्द झडे मुख मांही है। पवन याने स्वांसा से प्राणो से अलग होकर दशवें द्वार में शब्द का अनुभव होना ही दशवें द्वार में जाना है। सतगुरू विधि से भजन करने पर के: पद आ: पद की प्राप्ति की जब जीव का सांसा मिटता है। म: फ: है कि संत मेरी बात सुणो अब आत्मा जन्म मरण से रहित हो गई।

अमर सो तत्त में अमर बर पाविया, अटल ताली लागी जाय मेरी।
पांच पचीस कूं उलट ले चढ़ गया, त्रिकुटी घाट में शब्द घेरी॥
तेज ही तेज भरलाट बोहो होत है, मन पकडी जगा सहज मांही।
जगत जंजाल संसार में चित जुं, पलक हूं छाडकर जाय नांही॥
ब्रह्म परब्रह्म जे जाय गरकाब हुवा, जीव सुं शीव अब होय भाया।
दास सुखराम कह धिन गुरूदेवजी, ताय परताब हम ब्रह्म पाया॥ २३॥

आत्मचेतन अमर तत है उसमें अमर बर याने आनन्द ब्रह्म को पाया है। के: पद में अखण्ड ध्यान होना ही अटल ताली है। पांच विषय पचीस प्रकृतियो से अलग होना ही उलट कर चढना है। पारब्रह्म के पद में शब्द का दिव्य प्रकाश का अनुभव होना ही तेज ही तेज भरलाट का होना है। मन से अलग याने संकल्प विकल्प से रहित होकर ध्यान करना ही मन का पकडना है। अब संसार के माया मोह में एक पल भर भी चित शब्द के आनन्द को छोडकर नहीं जाता है। ब्रह्म पारब्रह्म के: पद और आ: पद में लय गरकाब होना ही जीव का शीव होना है। म:फ: है कि अणभै ग्यान सतगुरूदेव को धिन है जिनके प्रताप से ब्रह्म पद की प्राप्ति हुई।

ज्ञान विज्ञान की घटा दिल उपडी, प्रेम बिरखा बणी शेष धारा।
धरण जहां थर हली नीर बोह चालिया, पीवया रूंख बन बाग सारा॥
आनन्द ओछाव नवखण्ड में होविया, डेडरा मोर झिंगोर बोल्या।
हालिया हरष बोह भांत सुख उपना, साह व्यौपार ले हाट खोल्या॥
बीज सो खाद सब प्रेम से पूरवे, हल होशियार होय खेत बावे।
सात नव कामणी सरब भेली हुवे, रोटिया दोय ले भात जावे॥
होय हरियाली हरियाल सब वन में, पूरणी धरण सब माल लागो।
दास सुखराम कह आनन्द सब देश में, काल अकाल सरब सो भागो॥ २४॥

शरीर में ज्ञान हुआ ज्ञान से विज्ञान की प्राप्ति हुयी यही दिल में घटा उमडना है। प्रेम और विरह से भजन कर उसके आनन्द का अनुभव करना ही बरसात बरसना है। गणेश व शेष के स्थान में शब्द का अनुभव होना ही धरण जहां थर हली नीर बोह चलना है। शब्द का अनुभव होना ही पीविया रूख का पीना है व रग रग रोम रोम में वन बाग सारा है। नवखण्ड याने सारे शरीर में आनन्द आना ही नाड नाड में शब्द का अनुभव होना ही डेडरा मोर झिंगोर बोलना है। मन को भी बहुत हर्ष हुआ और कई भांति के सुखो की प्राप्ति हुई यही हालिया हर्ष बोहो भांत उपना है। जैसे साहूकार व्यापार करने के लिए हाट खोलते है इस तरह भजन करने में सब तरह की सावधानी रखना जैसे मन बुद्धि चित भजन में लगाना जैसे किसान सब सावधानी रखकर समय पर झाड बुहार कर बीज बोता है। वैसे ही भजन करना ही खेत बाना है। सात इन्द्रियां व नवकामणी याने पांच प्राण चित मन बुद्धि अहंकार सब भजन में लगी यही भेली हुई है। वाणी द्वारा व सुरत के आधार से भजन करना ही दो रोटिया है व सतशब्द के साथ जाना ही भात लेकर जाना है। इस तरह सारे शरीर में शब्द का अनुभव होना ही होय हरियाली हरियाल सब बन में है तथा खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड में अनुभव होना ही पूरणी सब माल लागो है। म: फ: है कि सारे शरीर में अनुभव का आनन्द आना ही आनन्द सब देश में है। जन्म मरण से रहित होना, काल अकाल का भय भागना है।

घट में राव हर घट में रंक रे, घट में जात छतीस होई।
घट में देव हर देवरा घट में, घट में नार सो पुरूष होई॥
घट में बेर हर घट में सेण रे, घट में सुख हर दुख वासा।
घट में शुभ जुं घट में सांच है, घट में द्रव्य सो सरब आसा॥
घट में हार सो घट में जीत है, घट में तिहूं लोक नव खण्ड वासा।
घट में चन्द्र जा घट में सूर रे, घट में रेण सो दिवस मासा॥
घट में धरण आकाश सो घट में, घट में धरम हर करम दोई।
घट में पवन हर पीर सो घट में, घट में औतार चौबीस होई॥
घट में देव सो विष्णु महेश है, घट में वृछ सब जीव आवे।
भार अठार सो सरब घट मांय ही, नीर निरबाय सब बाय कुवावे॥
भंवर ज्युं बाडिया पोप घट मांय ही, ऊपजे जीव मांय मुवा।
मांय ही वेद कुराण कूं पढिया, मांय ही जीव मिल शीव हुआ॥
मांय ही प्रेम जूं मांय ही नेम है, मांय ही प्रीत ईतबार होई।
दास सुखराम कह मांय ही सुलझणो, मांय ही गुरू शिष्य बसे दोई॥
मांय ही ज्ञान हर मांय ही ध्यान रे, मांय सुण लेत जु मांय सीखे।
पिण्ड ब्रह्मण्ड की एक विध जांणिये, मांय ही थिर हो मांय भीखे॥ २५॥

इस घट में ही राजा और रंक है। घट में ही छतीस जातिये है। घट में ही देव शब्द ब्रह्म देवरा दशवां द्वार है। घट में नार सुरत व पुरूष शब्द है। घट में बुरे विचार बुरे काम बैर व अच्छे विचार अच्छे काम सेण है। जो जीव का हित करने वाले है। घट में सुख दुख का निवास है। घट में शुभ याने अच्छा व सत्य भी घट में है। घट में राम जी का भजन रूपी द्रव्य याने धन है। आशाये भी इसी घट में लगा रखी है। घट में हार याने चौरासी में जाना व जीत याने परमपद की प्राप्ति करना है। इस घट में तीनों लोक खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड धरण मध्य आकाश है। नो खण्ड मेरू के आस पास है । घट में ईडा नाडी चन्द्र व पिंगला नाडी सूर्य है। घट में अज्ञान रात्रि व ज्ञान का प्रकाश दिन में है और मास है। घट में गणेश का स्थान धरण व ब्रह्मण्ड आकाश है। घट में धृति, क्षमा, इन्द्रिया, दमन, शुद्धता, विद्या उपार्जन, सत्य बोलना, क्रोध रहित होना, ये धरम है व बुरे काम करना ये करम भी घट में है। स्वांसा घट में है, पीर व चौबीस अवतार भी घट में है। घट में सुमेरू के आस पास देवताओं की पुरियां है। यह देव है। नाभी में विष्णु, हृदय में महादेव है। वृछ व जीव भी घट में है। अठारा भार रोमावली घट में है। नीर निरबाय याने सब तरह की वायु घट में है। भंवर व बाडियां व फूल सब घट में है। जीव घट में ही उपजता व मरता है। वेद पुराण कुराण भी घट में पढा है। जीव सीव भी घट में होता है प्रेम नेम भी घट में ही है। प्रीति व विश्वास भी घट में ही है। म:फ: है कि अन्दर ही सुलझणा है। अन्दर ही गुरू सतशब्द व शिष्य मन है ज्ञान व ध्यान भी अन्दर है। सुनना सीखना भी अन्दर ही है। पिण्ड व ब्रह्मण्ड की एक विधि है। अन्दर ही सन्तोष थिर है। कामना ही भीख मांगना है।

कवित:- घट में पदवी मोज है, घट में नरक निवासा। चल विचल घट मांय,
घट में निरभय बासा॥ घट में निरधन धन, घट में सुख दुख दोई।

घट में पाप रे पुन्न, घट में सब कुछ होई॥ घट में मुक्ति मोख है,
जे कोई करे विचार। बिन गुरू गम सुखराम कह, दुख पावे संसार ॥ २६ ॥

घट में मोज पदवी सता समाध का अनुभव होना है, ज्ञान ही सुख है, अज्ञानता ही नरक निवास है, संकल्प विकल्प चल विचल है, परमपद की प्राप्ति होना ही निरभय वास है, भजन करना ही धन है व भजन नहीं करना ही निर्धनता है। परमात्मा की प्राप्ति सुख है, चौरासी में जाना ही दुख है। घट में बुरे विचार पाप है, अच्छे विचार पुण्य है। घट में मुक्ति याने पारब्रह्म का पद है, मोक्ष आनन्द पद की प्राप्ति है। म:फ: है कि सतगुरू याने अणभै ग्यान की शरण के बिना सारा संसार दुख पाता है।

॥ इति श्री मूल ज्ञान घट परचा का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 मलीनता का अंग 卐

रज विरज सुं देह उत्पन्न हुई, गरभ के वास नव मास रहियो।
ऊंच हर नीच को एक अस्थान है, एक भग द्वार होय जन्म लियो।
सप्त ही धात तत पांच को पूतलो, आत्मा एक संसार सारो।
एक परमात्मा शकल कूं शिरजिया, अब मोय बताय दे गोत न्यारो॥
एक ही आहार विहार सुखराम कह, झरे नव द्वारा मल मुत्र मांही।
ऐसा शरीर में बास कर पांडिया,सुच आचार का काम कांई॥ १ ॥

यह शरीर रज और वीर्य से पैदा हुआ है। नो महीने तक गरभ में रहा है। ऊंच हो या नीच सबके रहने का एक स्थान है। भग के रास्ते से ही सबने जन्म लिया, सात धातु व पांच तत्वों का शरीर है। सारे संसार के प्राणियों में आत्मा तो एक है। एक ही सृष्टिकर्त्ता ईश्वर ने सारे संसार की रचना की है। म: फ: है कि तेरा गोत्र अलग कैसे है सो मुझे बतावो। सब का एक सा व्यौहार है आहार है। शरीर के नो द्वारो में से मल मूत्र बराबर झरता रहता है। हे पंडितो, ऐसे शरीर में निवास करता है याने रहता, तो फिर शुद्धताई व आचार का क्या काम है।

कुबद कलाल घरे विषे मद पी रयो, काम चमारडो तोय चूंटे।
भूख की भांग पी मन विकली भयो, मेर मरजाद बिन पडे ऊठे॥
पाप तो पारधी फंद ले रोपियो, भरम के भीलड़े भाल सांधो।
नैण कसाइणो हेर कर मारसी, मोह का जाल मांय जीव फंधो।।
ठग अहंकार बोह प्यार कर ठगियो, लोभ लबाड़ो नित लोडे।
मेनका पांच पचीस तोय लूटसी, शबल शरणा बिन नांय छोडे॥
क्रोध चन्डाल अर चाय बहु चुहडी, त्रसणा तेलणी प्रांण पीले।
मनछा धोबणी पटक पछाडियो, दुबध्या डाकणी तोय कीले॥
झूंठ पटसाल में काल कोली बसे, कपट कापट कूं सांध जोड़े।
कुटुम्ब की बाडियां काल माली धस्यो, फूल फल कूंपला मरोड तोडे॥
सब ही जात तोही पिंड में पांडिया ।। सुच आचार किम चले थारा।

दास सुखराम चहूं बरण ही सुदर है, ब्रह्म की भक्ति किया ब्रह्म ही सारा ॥ २ ॥

खराब विचार करके विषय भोगों से लगना ही मद का पीना है। काम वासना रखना ही चमार का चूटना है, इन्द्रियो के भोगो की भूख चाहना ही भांग पीना है, मन से खराब विचार करना ही मन का विकली होना है, मन के खराब विचार के चलने से कुटुम्ब की मर्यादा को नही मानता, नही ज्ञान धारण करता है। यही पडना उठना है। जीव मात्र को कष्ट पहुंचाना ही पाप रूपी पारधी का फंद रोपना है, जिन साधनो से फलों की प्राप्ति होती, मुक्ति नही होती, आवागवण नही मिटता, उन साधनो से मोक्ष प्राप्ति मानना ही भरम रूपी भील का भाल सांधना है। नेत्रो से कु दृष्टि से देखकर चौरासी में जाना ही नैण कसाई का हेर कर मारना है। कुटुम्ब से व असत माया से मोह करना ही मोह के जाल में जीव फंदना है। अज्ञान का अहंकार डूबाने वाला है ही पर ज्ञान के अहंकार से भी परमात्मा की प्राप्ति नही होती, यही अहंकार का प्यार कर ठगना है। लोभ की वृति निरन्तर रखना ही लोभ लवाडे को लोढना है। पांच विषय पच्चीस प्रकृतियों के विषयो में लगे रहना ही मेनका पांच पच्चीस का लूटना है। परमात्मा के निज नाम सतनाम के बिना जन्म मरण नही मिटता यही सबल के शरणा बिना नही छुटना है। क्रोध करना, कामना रखना, तृष्णा रखना ही क्रोध चन्डाल चाह रूपी चुहणी तृष्णा रूपी तैलण का प्राणो को दुख देना है। अनेक तरह की इच्छाये रखना ही मनछा रूपी धोबण का पटक पिछाडना है। द्वेत पणा थारी मारी करना ही दुबध्या डाकण का किलना है। कुटुंब परिवार में आयु समाप्त होने पर छोटे व बडे से विछोह हो जाना ही कुटुम्ब बाडी में काल माली का धसना है व फूल फल कूपल को मरोड कर तोडना है। हे पंडितो यह सब जातियां तुम्हारे शरीर में है। तो आचार विचार में शुद्धताई कैसे रह सकती है। म:फ: है इस तरह से चारो वर्ण ही शुद्र है। ब्रह्म याने आत्म चेतन के आधार से सत शब्द की भक्ति करना ही ब्रह्म की भक्ति करना है। उससे के: पद आ: पद की प्राप्ति होना ही ब्रह्म होना है।

कूकरे जाय टटेर कूं चिग लियो, आंण घर मांय मुख छेड हांडी।
सेर अधसेर की घाट ता मांय है, ब्राहमणी देख ज्यूं नांय छाडी।।
ऊंदरा मार मंजार घर में रहे, कीड़िया कीट वहां वास किया।
भिष्ट की माखियां उड घर भेलियो, थाल परसाद कूं छाय लिया।।
नार रूत धरम जहां रक्त जल बहत है, सरप तां छांय अंध होत वांही।
दास सुखराम आ छोत माने नांही, करत परसाद उण हाथ जांही ।। ३ ।।

कुत्ता कबूतर को खाकर घर में घुस आया और बर्तन में मुंह मारा बर्तन में आधा सेर या सेर की रंधी हुई घाट थी, ब्राहमणी ने देखकर भी उसको नही फेंका। चुहो को मारकर बिल्ली घर में रहती है, कीडे व कीडियां भी उसी घर में रहते है। मक्खियां भिस्टे पर बैठकर घर में उड रही है। भोजन के थाल पर आ बैठती है, स्त्री ऋतु धर्म में है। उसमें लाल जल बह रहा है। ऋतुवन्ती की छाया पडने से सांप भी अन्धा हो जाता है। म:फ: है कि मासिक धर्म वाली स्त्री को छूत नही मानकर उसके हाथ का बनाया हुआ प्रसाद करता है।

कवित :- चुडो चित हराम, भरम भंगी घट होई। दुबध्या दाणु नार,
मन बिकली कहे सोई ॥ मन्छया नारी संग, तरक तेलण घट मांही।
गोत संग अग्यान, आस वेस्या घट कवाई॥ थोरी मन में मान,

ठग उर घात रहावे, अे सुखिया संग होय, उत्तम सो कुण कहावे ॥ १ ॥

चित से खराब चिन्तन करना ही, भरम रखना ही, घट में चुडा व भंगी है। द्वेतपणा रखना ही दुबध्या दाणु नार है। मन से खराब विचार करना ही मन का विकली होना है। इच्छा रूपी स्त्री तरक करना ही तरक रूपी तेलन का घट में रहना है। आशा रखना ही घट में वेश्या रहना है। मन से मान करना ही थोरी का मन में बसना है। दूसरो को ठगने की वृति रखना ही हृदय में घात का रहना है। म:फ: है कि सब बुरी वृतियां साथ है जब तक उत्तम कैसे कहला सकता है।

मोची के घर जाय, आण जोडी नर लेवे। पेरे तब पग मांय,
आण छांटो जल देवे॥ जल सुं भरम सकाय, खाल तो सरब रंगाणी।
तब वे तो जब साज नीर सुं छिडके आंणी॥ अधम उत्तम अब किम भयो,
कहां लगाई सूंठ। सुखराम कहे सुण लिज्यो, भरम करम की मूंठ ॥ २ ॥

मोची के घर जाकर जूतो की जोडी खरीदते है। उसको जल का छींटा देकर पहनते है। खाल तो पहले ही जल में भिगो कर रंगी हुई है। फिर तू पानी छिडकता है। जल का छींटा देना ही भरम है जो पहले खराब थी वह उत्तम कैसे हुई है। यह झूंठी शुद्धता है। म:फ: है कि यही भरम करम के विचार है सब सुणो।

ब्रह्म न चिन्यो जाय, ध्यान की गम नहीं कांई। नही अजपा जाप, प्राण की सुध न भाई॥
कर है पान अपान, भांग सो पीवे तमाखुं। सोई विप्र चंडाल, अरथ गीता का भाखुं॥
कले भरम त्याग न करे, सुखदेव दया न कोय। सो है ब्राह्मण केण का, असल कसाई होय ॥ ३ ॥

जिन्होंने साधन कर ब्रह्म की प्राप्ति नही की, जिस साधन से ब्रह्म की प्राप्ति होती है उसका ज्ञान नही है। सतगुरू विधी से भजन करने पर अजपा जाग्रत होता है। किस पद में पहुंचने पर पांच प्राणो से अलग होते है उसका ज्ञान नही है। भांग तमाखु अफीम गांजा का सेवन करते है वो ब्राह्मण चण्डाल है। गीता भी यही कहती है कि लडाई झगडा व जिद करते है, जिनके घट में दया नही है वो कहने मात्र के ब्राह्मण है। ऐसे ब्राह्मण कसाई के बराबर है।

नही ब्रह्म पिछाण, ज्ञान की गम नही कांई। करे झोड़ बोहो भांत, पत गुरू झेले जाई॥
लेत ग्रहण में दान, और मुवा पर ल्यावे। घरडु जुते जांय, रांध कर भोजन पावे॥
सो ब्राह्मण है केण का, सुण लिज्यो नर नार। गांव कूट सुखराम कह, तासुं पेले पार ॥ ४ ॥

ब्रह्म की पहचान नही है। असत को सत मानते है। यही ज्ञान की गम नही है। दान लेते समय ज्यादा लेने के लिए दान देने वालो से झगडा करते है। ग्रहण में तथा मरे हुए पर भी दान ले लेते है। जीव का अन्त समय के मौके पर भी उनके वहां भोजन बनाकर पा लेते है। सब ही स्त्री पुरूष सुणो वे कहने मात्र के ब्राह्मण है। म:फ: है कि ऐसे ब्राह्मण को कूट कर गांव से बाहर कर दो।

हाड मास मल मूतर, ओर भोग तन तेरे। त्वचा खाल नख चख, प्राण पवन मन घेरे॥
रोग भोग सुत नार, और पश्वा सब होई। जो होय जग को व्यौहार, ताय में कसर न कोई॥
भग गेले तुं आवियो, अब ब्राह्मण किम होय। अरथ कहो सुखराम कह, इस्ट द्वाही तोय ॥ ५ ॥

सब मनुष्यो की तरह तुम्हारे हाड मांस मल मूत्र व तेरे शरीर में खून है। शरीर व चमडी नख चख प्राण स्वांसा व मन सब एक है। शरीर में रोग व विषय लडका स्त्री व पशु भी रखते है। जो जगत में व्यौहार है उसमे किसी तरह की कसर नही है। जिस रास्ते से सब मनुष्य आते है उसी रास्ते

तुम आये हो, तुम अब ब्राह्मण कैसे हो गये हो, उसका अरथ बताओ। तुमको अपने इष्ट की सौगन्ध है।

सुणो वैष्णव नांव, बिस्ण की भक्त समाया। स्यामी इण प्रकार,
शिव कूं निश दिन गाया॥ विप्र कहिये अेम, वेद ब्रह्मा का बांचे।
ब्राह्मण इण गुण होय, ब्रह्म का चरणा राचे॥ किसब लार सब जात है,
सुण लिज्यो नर नार। किसब गया सुखराम कह, जात हुई सब खुंवार ॥ ६ ॥

विष्णु की भक्ति करने वाले को वैष्णव कहते है, रात-दिन शिव शिव कहने वाला स्वामी कहलाता है। ब्रह्माजी के बनाये वेद बांचने वाले विप्र कहाते है। ब्राह्मण इस गुण के कारण बने जो ब्रह्म की भक्ति करते हैं। जो जगत में जैसा किसब करता वैसी ही उसकी जाति कहलाती। म:फ: है कि सब नर नारियो सुण लो जिसने जो किसब करना छोड दिया तो उसकी जाति भी उस किसब को छोडने से समाप्त हो गयी।

<u>चौपाई</u> :- बुज्या कहे हम ब्राह्मण, हम पंडित नित उठ कर्म कमावे।
जन सुखराम भजन की बेल्या, होको भर मंगवावे ।। १ ।।

पूछने पर कहते है हम ब्राह्मण है, हम पंडित है। हमेशा उठ कर कर्म करने में लगे रहते है। म:फ: है कि सुबह रामजी के भजन करने के समय में हुक्का भरकर मंगाता है।

आरो सुण गांव पर गांवा, सुबे उठ पोस उठ ध्यावे।
जन सुखराम हाथ में होको, छाणो संघ धुकावे ।। २ ।।

आरा याने नुगता गांव या दूसरे गांव में सुनता है तो पोस की सर्दी में भी सुबह जाने लगता है, म:फ: है कि हाथ में हुक्का है व सिलगता कंड़ा ले रखा है।

अेक हाथ आग ने: पकडी, ने: मुख मांय अडाई।
जन सुखराम चले पिंडत, जोडी खुरे चढाई ॥ ३ ॥

एक हाथ में आग है। दूसरे हाथ में हुक्के की ने: पकड रखी है। हुक्के की ने: को मुंह में लगा रखी है। म:फ: है अब पंडितजी जूते पहन कर चले है।

कपडा बहुत गरक रह मेला, क्रिया धरम न जाणे।
सो सुखराम ब्राह्मण ऐसा, चण्डक रूप बखाणे ॥ ४ ॥

पंडित जी के कपडे मेल में गरक गंदे है व पंडितजी न क्रिया न धर्म जानते है। म:फ: है कि ऐसे ब्राह्मण चांडाल की तरह है।

भांग तमाखु अमल तिजारो, मिल मिल बहुत बखाणे।
जन सुखराम घणी मनवारां, विप्र वेद ओ आंणे ॥ ५ ॥

पंडित लोग आपस में मिलकर भांग तमाखु अफीम की बहुत तारीफ करते है। म:फ: है इसको ब्राह्मण वेदों का ज्ञान समझते है।

सारी रात भूर के लेणो, विप्रा नींद न आई।
जन सुखराम भजन की बिरिया, सोय रहया घर मांही ॥ ६ ॥

ब्याह शादी में भुरकी दक्षिणा लेने के लिए सारी रात जागते रहते है। भजन करने के समय घर में जाकर सो जाते है।

कुंडलिया :- ब्रह्म कर्म क्रिया बाहेरो, ब्राह्मण हुवे न कोय। मैं तुज बुजु पंडिता, आ सच कन झूंठी होय। सच कन झूंठी होय, न्याव सु कहिये मोही। कन ब्राह्मण घर जनम धार, ब्राह्मण जु होई। सुखराम कहे सुण नरक की, क्या विध कीवी जोय। ब्रह्म कर्म क्रिया बाहेरो, ब्राह्मण हुवे न कोय॥ १ ॥

जो ब्राह्मण कर्म नही करते वो ब्राह्मण नही है। म:फ: है कि हे पंडितों मैं जो बात कहता हूं जो सच है या झूंठी। यह सत्य बोलकर कहो या केवल ब्राह्मण के घर जन्म लेने से ही ब्राह्मण हो गये हो। तुमने कैसे कर्म किये, जो ब्राह्मण के करम नहीं करता वो ब्राह्मण ब्राह्मण नही कहलाता है। जो बुरे कर्म करने वाले है उनको नरक में जाना पडता है।

मैं तुज बुजु पंडिता, धिन तुम तेरो ज्ञान। नारी घर में सुदर है, तुम ब्राह्मण हुआ आन। तुम ब्राह्मण हुवा आन, सुदर का भी कर माने। असल सुदर घर मांय, ताय उत्तम कर जाने॥ सुखराम कहे किणी किते रेणी, कित कुडी मान। मैं तुज बुजु पंडिता, धिन तुम तेरा ज्ञान ॥ २ ॥

म: पंडितो से फ: है कि तुमको व तुम्हारे ज्ञान को धिन है। स्त्री तो तुम्हारे घर में शुद्र है। तुम अपने आपको ब्राह्मण मानते हो। शुद्र के हाथ भी नही अडाते। असल शुद्र घर में स्त्री है उसको उत्तम कर मानते हो। म:फ: है कि हे ब्राह्मण तुम्हारी केणी तो क्या है व रेणी झूंठी है। हे पंडितो तुमको व तुम्हारे ज्ञान को धिन है।

॥ इति श्री मलीनता का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 मिनखा देह गुण का अंग 卐

मन रे ओ तन ऐसा लोई। जो कोई समझ सिंवरे है साहिब, आपी करता होई ॥ टेर॥

हे मन यह मनुष्य शरीर ऐसा है इसमें यह गुण है कि जो सतगुरू से भेद लेकर भक्ति करे तो आत्मा को परमात्मा पद की प्राप्ति हो जाती है।

या तन सुं उज्जल घर जावे, ईण सुं राजा होई।
यां सुं रूप करूप बंधाणा, सुख दुख पावे लोई॥ १ ॥

मनुष्य शरीर में जैसी कमाई करता है वैसा ही फल मिलता है। इसी से आगे उच्च कुल में जन्मता है राजा होता है। उसी से रूपवान कुरूपवान बनता है। संसार में सुख दुख भोगता है।

इण सुं दीन दुनि शिर होई, यां सुं सुरगा जावे।
ईण सुं पीर पेगम्बर कहाणा, फिर अवतार कहावे ॥ २ ॥

इससे बादशाह पद की तथा स्वर्ग के उच्च पदो की प्राप्ति होती है। मनुष्य शरीर से ही पीर पेगम्बर अवतार होते है।

मिनखा देह अमोलक हीरो, ऐसो अवरन कोई।
ईण सुं शेष महेसर देवा, यां सुं भगवत होई ॥ ३ ॥

जिस प्रकार अमूल्य हीरे की कीमत नही होती है। ऐसे ही मनुष्य शरीर अनमोल है इसके बराबर और कोई शरीर नही है। इस शरीर से साधन कर शेष महादेव व परमात्मा पद की प्राप्ति हो सकती है।

ईण में उलट आद घर पोंचे, या में केवल होई।
इण सुं देव शकल तन सारा, ईण सम अवर न कोई ॥ ४॥

इसमें ही सतगुरू से भेद लेकर बंकनाल में उलट कर के: पद की प्राप्ति व पारब्रह्म की प्राप्ति होती है, सभी देवताओं के पद भी इससे ही प्राप्त कर सकते है। इसके बराबर और कोई शरीर नही है।

ओ सुण जन्म इसो है भाई, तिण में फेर न सारा।
कह सुखराम समझ मन मेरा, सिंवरो सिरजण हारा ॥ ५॥

यह मनुष्य शरीर ऐसा गुण वाला प्राक्रमी है इसमें कोई भी झूंठ सांच नही है याने सत है। म:फ: है कि हे मेरे मन तू समझकर याने सतगुरू केवली भगवंतो के अणभै ग्यान से भेद लेकर सिरजण हार परमात्मा का भजन कर।

कवित :- तप कर राजा, रूप तीरथ कर, पर उपकार सहाई। जीग कर धन, व्रत कर सुख संपत,
देह निरोगी पाई, जत कर जुगत। सत कर कोई, देवलोक में जावे,
काशी करोव्रत झाप झूरे झर, अेक मन चिंत्यो फल पावे। करणी क्रिया कस्या बोहो काया,
सब फलदायक दीना, कह सुखराम नांव बिन रटियां, फिर चौरासी दीना ॥ १॥

तप करने से राजा, तीरथ करने से अपनी सहायता होती है। यज्ञ करने से धन व व्रत करने से सुख सम्पति मिलती है। शरीर निरोग बनता है। जतीपना धारण करने से सत्य बोलने से देवताओं के लोक की प्राप्ति होती है। काशी में करोव्रत लेकर छोडने से सिर्फ अेक मन में चिन्तन हो उसकी प्राप्ति होती है। जैसी करणी इस शरीर से करता है वैसे फलों की प्राप्ति होती है। म:फ: है कि सतगुरू से भेद लेकर निज नाम की जाग्रति कर भजन नही करते तो आद घर के: पद आ: पद की प्राप्ति नही होती तो फिर चौरासी में जाना पडता है जन्म मरण नही मिटता।

कुण्डलिया :- लख चौरासी जूण में, अेक मिनखा देही होय। गुण भारी करतार सुं,
अेसो ब्रह्म न कोय। अेसो ब्रह्म न कोय, हद बेहद में जोई।
अमर लोक जब जाय, धरे मिनखा देह कोई॥ सुखराम और किणी जूण सुं,
गरभ न छूटे कोय। लख चौरासी जूण में, अेक मिनखा देही होय ॥ २॥

चौरासी लाख जन्मो में मनुष्य जन्म ही ऐसा है जो ब्रह्म का करता पद है उसमें भी ऐसा भारी गुण नही है। तीन लोक व बेहद याने ब्रह्म के पद में भी देख लो, नही है। एक मनुष्य जन्म होने से ही साधन करके जीव गरभ याने जन्म मरण से छूट सकता है, ऐसा बडा भारी गुण मनुष्य जन्म में ही है और कोई जन्म में नही है।

॥ इति श्री मिनखा देह गुण का अंग सम्पूर्ण॥

卐 अधीरता का अंग 卐

कुण्डलिया :- कन्या बेचे मोल कर, पईसा लेय बजाय। क परणे क ब्याज ले,
उ धन खरचे खाय॥ उ धन खरचे खाय, जके महापापी होई।
मुख देख्यां रो पाप, वेद शायद में जोई॥ सुखराम दास वे अंक रंगा,
जहां तहां फूले आय। कन्या बेचे मोलकर, पईसा लेय बजाय ॥ १ ॥

कन्या को मोल बेचकर उसका पैसा ले लेते है। उस पैसे से या तो शादी करता है या ब्याज लेते है। उस धन को खाते व खर्च करने वाले महापापी होते है। उनका मुंह देखने से पाप लगता है ऐसी वेद साक्षी देते है। म:फ: है कि वे सभी लडकी के पैसे लेने वाले जहां तहां फूलते है।

लागी पेट की दाह, और सूजे नहीं कांई। तीन लोक नर नार, आपदा रहया संभाई॥
सिद्ध पीर अवतार, सरब माया सुं लागा। ब्रह्मा विष्णु महेश, ईस लग भरम न भागा॥
माया बडी बलाय है, काहू न जीती आय। केइक जन सुखराम कह, जीत गया जग मांय ॥ २ ॥

उनको पेट की लाय लग रही है और कुछ नही सूजता है। तीन लोको के स्त्री पुरूष पेट के दुख में दुखी हो रहे है। चाहे सिद्ध हो, पीर हो, अवतार हो सब माया से लग रहे है। ब्रह्मा विष्णु व महादेवजी के लोको में भी भर्म दूर नही हुआ है। इच्छा माया बडी बलवान है। किसी से नही जीती जाती। म:फ: है कि बिरला ही भक्ति करने वाले जनों ने संसार में इच्छा माया को जीता है।

ईन्दव छन्द :- पैसो भयो जब टके की आशा, टके से दोय टका मन भावे।
दोय से चार हुआ जब राजी, रूपया ऊपर सुरत लगावे॥
रूपयो आंण मिले जब कोई, पांच पच्चीस की गांठ जु चावे।
पांच पच्चीस पचास हुआ, सैंकड़ा ऊपर मन दौडावे॥
सैंकड़ा पांच मिले कुछ जाफा, शेष को छोड लाखा मन आवे।
लाखाज सात सताईस होई, अरबा खरबा असंख माया ज्युं चावे॥
अैसो हूं धन मिले तब आई, भूपज होने की प्यास लगावे।
भूप से भूप होवुं कुछ जाफा, दीन दुनि ये बादशाह कहावे॥
बादशाह रह मन होय आगो, ईन्द्रासन में ईन्द्र होवुं जाई।
तोही यो मन रह दिल आगे, ब्रह्मा जुं होने की प्यास लगाई।
मन की भूख कहे सुखदेवजी, बिना सन्तोष मिटे नही भाई ॥ ३ ॥

जब एक पैसा होता है तो टके की आशा लगती है। एक टके से दो टका मन को भाता है। दो टका से चार टका होता है तो और राजी होता है। अब रूपये पर ध्यान लगता है। जब रूपया मिल जाता है तो पच्चीस की चाहना होती है। जब पांच पचीस पचास होते है तो मन सैंकडो पर आ जाता है। पांच सैंकडा व इससे कुछ ज्यादा मिल जावे तो हजारों को छोडकर मन लाखो पर जाता है। पांच सात लाख होने पर सताईस लाख होने पर अरबो खरबो व असंख्य माया की चाहना होती है। इतना धन मिलने पर राजा होने की प्यास लगती है। राजा होने पर राजा से भी ऊपर दुनियां का बादशाह हो जावें तो अच्छा है। बादशाह होने पर मन आगे ईन्द्रासन पाकर ईन्द्र बनने की इच्छा करता है। तो भी यह मन आगे ब्रह्मा बनने की इच्छा करता है। म:फ: है कि मन की भूख बिना सन्तोष के नही मिटती है।

॥ इति श्री अधीरता का अंग सम्पूर्ण॥

卐 विश्वास का अंग 卐

तेरे किये कुछ होवत नांही, सोच करे किम जीव अज्ञानी।
कीडी को कण, दियो मण कूंजर, देह के संग सो चिठी लिखानी॥
हंस कूं मोती, दिये सिंह माटी, अग्नि चकोर नित उठ ठानी।
सोच विचार कह सुखदेवजी, ज्ञान विचार रहो सुख मानी ॥ १ ॥

अज्ञानी जीव क्यों सोच करता है। तेरे सोचने से कुछ होने वाला नही है। परमात्मा कीडी को कण व हाथी को मण देता है जिसका जैसा शरीर है वैसी ही उसके चिठ्ठी लिखी है। हंस को मोती चुगने को दिये है। सिंह माटी खाता है। चकोर अग्नि चूर्ण करता है उसे हमेशा उठते ही मिलती है। म:फ: है कि हे जीव सोच विचार ज्ञान से विचार कर सुखी रह।

अनल आकाश शेष धर हेठे, इजगर कूं राम दे भख आनी।
मुनि सो ऋषि गुफा बन तापे, तोय की गम लेह हरी जानी ॥
जुग सो जहान अनन्त हुआ, चून दयाल दिया हरि जावे।
लाणत तोहे कहे सुखदेवजी, जीव दृढता तोही न आवे ॥ २ ॥

अनल पक्षी आकाश में रहता है। शेषजी पृथ्वी के नीचे रहते है। रामजी अजगर को भी अपना भोजन देते है। मुनि ऋषि वन में गुफा बनाकर तपस्या करते है। उनकी सुध परमात्मा लेते है। जग भी अनन्त हो गये और सृष्टि भी अनन्त हो गई परमात्मा सबका भरण पोषण करता है। म:फ: है कि जीव तुझे धिक्कार है जो ईश्वर पर तुझे भरोसा नही है।

उठत धाह पुकारत डोले, कोन भेर नर पेट जु तेरो।
तरसणा तोख लिये गल डोले, माया संग रहे नित चेरो॥
आठ मास नव गर्भ में दिया, कहां धन संग कहां जूं डेरो।
सोच विचार कहे सुखदेवजी, गोऊं बावे सोई सींचे बेरो ॥ ३ ॥

मनुष्य उठते ही पुकारते फिरते है कि मेरी पेट भराई, किस तरह होगी। तृष्णा तोख को गले में लिये फिरता है परमात्मा ने गर्भवास में भी तेरी पूर्ति की उस समय तेरे पास क्या था। म:फ: है कि जो गेहूं बोवेगा उसी को कुवा सींचना पडेगा। ऐसे ही परमात्मा ने सृष्टि की रचना की है तो पालन उनको ही करना पडेगा।

॥ इति श्री विश्वास का अंग सम्पूर्ण॥

卐 सुरगुण निरगुण का अंग 卐

सुरगुण निरगुण सब करे, भेद न जाणे कोय। सुरगुण में सुखराम कह, नकला पूजे लोय ॥ १ ॥

सुरगुण निरगुण सब कहते है। परन्तु इसके भेद को नही जानते। म:फ: है कि सुरगुण के नाम पर संसारी सुरगुण की नकल बनाकर पूजते है याने नाशवान शरीर व उसकी फोटू को पूजते है।

सुरगुण न्यारी रे गई, निरगुण लखे न आय। सुरगुण की सुखराम कह, नकला पूजे लाय॥ २ ॥

सुरगुण तो अलग है निरगुण को नही जानते। म:फ: है कि सुरगुण के नाम पर याने आकार की नकल बना बना कर पूजते है।

सुरगुण में समझे नही, यो जुग सब संसार। नकला करी सुखराम कहे, पूजे सबे गिंवार ॥ ३ ॥

यह जगत संसार सुरगुण में नही समझता। नकल बना बनाकर पूजते है।

सुणज्यो रे संसार सो, समझो ज्ञान विचार। सुरगुण की गम कीजिये, केह सुखदेव उर धार ॥ ४ ॥

म:फ: है कि सब संसारी सुणो ज्ञान से विचार कर समझो सुरगुण की अन्तर में जानकारी करो।

पाहण तो जड थूल है, सो सुण सुरगुण नांय। सो सुरगुण सुखराम कह, चित मन बोले मांय ॥ ५ ॥

पत्थर तो जड है, स्थूल है, सुरगुण नही है। म:फ: है कि सुरगुण वह है जिसके अन्दर चित मन बोलता है।

नकल बणावे थूल की, कह करता अे होय। दोन्या सुं सुखराम कह, न्यारी रेगी लोय ॥ ६ ॥

आकार की नकल बनाकर कहते है कि यह परमात्मा है म:फ: है कि सुरगुण और निरगुण दोनों से संसारी अलग रह गये है।

सुरगुण पांचू आत्मा, निरगुण शब्द विचार। कहे सुखदेव नर समझ रे, आ सेवा उर धार ॥ ७ ॥

सुरगुण तो पांच प्राणो का शरीर व निरगुण शब्द है। म:फ: है हे मनुष्य समझकर इस सेवा को हृदय में धारण करो।

सुरगुण माता जांणिये, निरगुण पिता होय। कह सुखदेव ये अेकठा, न्यारा सुण्या न कोय ॥ ८ ॥

सुरगुण तो माता याने माया है। निरगुण पिता ब्रह्म है। म:फ: है कि ये दोनो साथ ही है अलग अलग नही है।

जड पूजे सुरगुण कहे, सो बेक्या जुग मांय। राह नगर सुखराम के, तज उबट नर जाय ॥ ९ ॥

पूजा जड की करते है, उसको सुरगुण कहते है। वे जगत में बहके हुए है। म:फ: है कि वे नगर का रास्ता छोडकर उजाड में जा रहे है।

ऊर में सुरगुण सेव है, निरगुण शब्द सरूप। यां सांभल सुखराम के, पूजो सुरगुण रूप ॥ १० ॥

हृदय में विचार कर प्राणी मात्र को सुख पहुंचाना ही सुरगुण की सेवा है। निरगुण का सरूप शब्द है। म:फ: है कि यह समझ कर आत्म चेतन से शब्द का आनन्द सुरगुण याने शरीर से रटणा करे, यही सुरगुण की पूजा है।

पिंडत ज्ञानी सांभलो, आ सेवा सत होय। सुरगुण निरगुण अेकठी, कह सुखदेवजी तोय ॥ ११ ॥

म:फ: है कि पंडित व ज्ञानियो सुणो यह सेवा सच है। सुरगुण निरगुण दोनो साथ है।

सुरगुण पूजो आत्मा, जामें शिरजण हार। पाहण तो सुखराम कह, है सो थुल विचार ॥ १२ ॥

आत्मा में ही परमात्मा है। चलते फिरते प्राणी को सुख पहुंचाना ही सुरगुण की सेवा है। म:फ: है कि पत्थर तो स्थूल है। उसकी पूजा सुरगुण नही है।

सुरगुण निरगुण एक है, जो जाने कोई भेव। सुरगुण कर सुखराम कह, पावे निरगुण देव ॥ १३ ॥

सुरगुण निरगुण दोनों साथ है यदि कोई इस भेद को जाने। सुरगुण शरीर से राम रटने पर निरगुण देव की प्राप्ति हो जाती है।

सुरगुण सेवा सो सही, बोलर दे आशीष। पूज्या बोल न जवाब दे, सो जड़ बिश्वाबीस ॥ १४ ॥

सुरगुण की सेवा वही सच्ची है बोलकर आशीर्वाद देते है। पूजा करने पर भी जो बोलकर जवाब नही देते है। तो वह बीस ही बिसवा जड है।

राम कहे मुझ मांय है, पूजन जड़ कूं जाय।
कह सुखदेव ज्ञानी सुणो, न्याव करिज्यो आय ॥ १५ ॥

कहने को कहते है कि रामजी हमारे अन्दर है। पूजने जड को जाते है। म:फ: है कि ज्ञानियों

सुणो तुम ही इसका न्याव करो।

तो में तेरा राम है, तो जड पूजो काय। के यूं कहो सुखराम कह, हर नही है हम मांय ॥ १६ ॥

तुम्हारा राम तुम्हारे अन्दर है तो फिर जड को क्यों पूजते हो। म:फ: है कि या यह बात कहो कि ईश्वर हमारे अन्दर नहीं है।

जो हर तुमरे मांय है, मैं बूजत हूं आय। जड़ आगे सुखराम कह, काय निवावो जाय॥ १७॥

मैं तुमसे पूछता हूं कि परमात्मा तुम्हारे अन्दर है तो जड के सामने जाकर सिर क्यों झुकाते हो।

केता तो तुम यूं कहो, नर नारायण देह। पूजे जड़ सुखराम कह, पत्थर सिर पर लेह ॥ १८ ॥

कहने को तो कहते है यह मनुष्य शरीर नर नारायणी देही है। म:फ: है कि पूजा जड की करते है। पत्थर को सिर पर उठा रहे है।

तुम ठाकूर कर थापियो, एक तत्व कुवाय। तत पांचू सुखराम कह, ताकी गम न काय ॥ १९ ॥

जिसको तुमने ईश्वर मानकर स्थापना की उसमें एक तत्व है। म:फ: है कि तुम पांच तत के हो जिसका तुम्हे ज्ञान नही है।

पांचा में साहिब बसे, कह सुर नर लोय। तत अेक सुखराम कह, कीणी बतायो तोय ॥ २० ॥

जहां पांच तत्व इकट्ठे हुए है वही ईश्वर का निवास है। ऐसा देवता व मनुष्य संसारी कहते है म:फ: है कि एक तत्व में तुमको किसने बताया।

मैं बूझूं तुम पंडिता, क्यों भरमाई लोय। साहिब तो सुखराम कह, कोहो कीणी जाग न होय ॥ २१ ॥

हे पण्डितो मैं तुम्हे पूछता हूं कि तुमने संसार को क्यों भरम में डाला है। म:फ: है कि कहो किस जगह पर ईश्वर नहीं है।

जे साहिब सब में बसे, तो सोजो उर मांय। केह सुखदेव बारे दूनि, क्यूं भटकावो जाय ॥ २२ ॥

यदि परमात्मा सब में बसते है तो अपने हृदय में खोजो। म:फ: है कि दुनिया को बाहर क्यों भटका रहे हो।

पेट भरण के कारणे, भरम उठायो कांय। साहिब तो सुखराम कह, है सब ही के मांय ॥ २३ ॥

म:फ: है कि हे पंडितो पेट भरने के लिए यह भरम क्यों खडा किया है। ईश्वर तो सब जगह व्यापक है।

हर का किया देव ये, प्रगट पांचू जोय। तन देवल सुखराम कह, राम बणायो सोय ॥ २४ ॥

ईश्वर ने ही इन पांच तत्व रूपी देवताओं को प्रगट किया है। म:फ: है कि यह शरीर रूपी देवल रामजी ने बनाया है।

राम बणाया देवरा, तामें मेल्या देव। सुणज्यो सब सुखराम कह, यांकी करलो सेव ॥ २५ ॥

रामजी ने शरीर रूपी मन्दिर बनाया है उसमें आत्मा रूपी देवता को बिराजमान किया है। म:फ: है कि सुणो सब इन देवता की सेवा करो याने आत्मचेतन के आधार से शब्द ब्रह्म का आनन्द लेवो।

मन का किया देवरा, मन ही थापो देव। बिन समज्या सुखराम कह, भोला करसी सेव ॥ २६ ॥

अपनी इच्छा से देवल बनाकर इच्छा से ही देवता की स्थापना कर दी। म:फ: है कि बिना समझ के भोले मनुष्य ही इसकी सेवा करेंगे।

सांई देवल मांडियो, अजब अनोपम आय।
तामें सुण सुखराम कह, तीन लोक सब मांय ॥ २७॥

ईश्वर ने मनुष्य शरीर रूपी मंदिर बनाया है। वह बडा अजब व अनोपम है। म:फ: है कि सुणो

तीन लोक उसमें है।

मन का किया देवरा, यो मन पूजे जोय। तब लग सुण सुखराम कह, हर सुं बेमुख होय॥ २८॥

मन से देवरा बनाया है। यह देखो मन से ही पूजा कर रहे है। म:फ: है कि सुण तब लग तो वह ईश्वर से बेमुख है।

हर का किया देवरा, तिण में सब ही देव। हर वांही सुखराम कह, करल्यो वांकी सेव ॥ २९॥

परमात्मा ने जो यह शरीर रूपी मंदिर बनाया है। उसमें सब ही देवता है। म:फ: है कि हर समय शरीर में सांस उसांस में रामजी की रटना करो।

कहा कहूं मन गिंवार कूं, समझे नही लिगार।
कह सुखदेवजी इण झूंठ संग, क्यूं उतरोगे पार ॥ ३०॥

म:फ: है कि इस मूरख मन को क्या कहूं। जरा सा भी नही समझता है। इस असत के साथ लगकर भवसागर से कैसे पार उतरेंगे।

सुरगुण काया आपकी, निरगुण सिवरण सार। अे भक्ति सुखराम कह, दोनूं संग विचार ॥ ३१॥

शरीर तो सुरगुण है निरगुण सिमरण सार है। जिस सिमरण से सतशब्द जाग्रत होता है वह सिमरण सार है। यह भक्ति दोनो साथ है।

परम मोख जब पावसी, हर नित सिंवरया जोय।
निरगुण संग सुखराम कह, सुरगुण भेली होय ॥ ३२॥

परम मोक्ष की प्राप्ति जब होगी रामजी का नित्य सुमरण करोगे। म:फ: है कि निरगुण भक्ति आत्म चेतन से शब्द का आनन्द लेना सुरगुण मुंह से रटना करना ये दोनो साथ होती है।

सुरगुण सुण ममंकार है, निरगुण येह पिछाण।
ररंकार सुखराम कह, मुख बिन बोले बाण ॥ ३३॥

सुरगुण सुणो माया है। म:फ: है कि निरगुण की यह परीक्षा है कि बिना मुंह वाणी के आत्म चेतन के आधार से सतशब्द याने ररंकार का अनुभव होता है।

जब लग सुरगुण सेव है, मुख सुं सिंवरे कोय।
निरगुण तो सुखराम कह, बिन रसणा सुं होय ॥ ३४॥

जब तक मुंह से सिमरण होता है। वह सुरगुण की भक्ति है। म:फ: है कि निरगुण भक्ति तो बिना रसणा के होती है याने सांस उसांस रटणा से ने अंच्छर कंठ कंवल पर सतशब्द प्रकट होता है।

सुरगुण सेवा या सही, मुख सुं सिंवरे राम। रट रसणा सुखराम कह, पूंचे निरगुण धाम ॥ ३५॥

मुख से राम राम सिमरण करना यह सुरगुण की सच्ची भक्ति है। म:फ: है कि सतगुरू विधि से रसना से भजन करने से निरगुण की प्राप्ति हो जाती है।

सुरगुण निरगुण एक है, सुणज्यो इण विध होय।
आवो संग सुखराम के, मनमाना क्यों जोय ॥ ३६॥

सुणो सुरगुण निरगुण इस विधि से एक ही है। म:फ: है कि मेरे ज्ञान को धारण करो। मनमाने ज्ञान में क्यों लग रहे हो।

बाहिर पूजो देवरा, या सुरगुण नही होय। भरम्योडा सुखराम कह, नकल बणाई जोय ॥ ३७॥

बाहर कोई भी पूजा करो, यह सुरगुण भक्ति नही है, शुभ करम है। म:फ: है कि जो भरम

में पडे हुये है। उन्होने यह बनाई है।

परघट हेला देत हूं, सुणज्यो सब नर आय। भक्ति तो सुखराम कह, है दोनूं तन मांय ॥ ३८ ॥

सब मनुष्य आकर सुणो मैं चौडे आवाज देकर कहता हूं। म:फ: है कि यह सुरगुण निरगुण दोनो भक्ति इस शरीर में ही है।

॥ इति श्री सुरगुण निरगुण का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 फल फूल का अंग 卐

सगत पंथ में आय, भिन्न खोवे नर नारी। पूजे पांचू पीर, अलख शिंवरे नर नारी॥
जांका ये फल फूल, जन्म अगले नर पावे। नर नरा में वीर, नार जोगणी कुवावे॥
सुखराम ज्ञान बैराग बिन, मोख न पुंचे कोय। तीबर मद बैराग रे, हद बेहद का होय॥ १ ॥

शक्ति का सम्प्रदाय धारण करके पांचो पीरो की स्त्री पुरूष साथ साथ पूजा करते है व अलख अलख का साथ सिमरण करते है। जिसका यह फल मिलता है कि अगले जन्म में नर नरों में वीर, नार जोगणी कहलाती है। म:फ: है कि ज्ञान बैराग के बिना मोक्ष की प्राप्ति नही होती, तीव्र बैराग व मद बैराग हद बेहद का है।

सगत पंथ में आय, ज्ञान ध्यान नही जांणे। संग खेले नर नार, नित करमा दिश तांणे।
ज्यां का अे फल फूल, जन्म अगले नर पावे। नर होय सांसी साटिया, नार वेश्या कहावे॥
सुखराम ज्ञान बैराग बिन, मोख न पहुंचे कोय। तीबर मद बैराग रे, हद बेहद का होय ॥ २ ॥

शक्ति का सम्प्रदाय धारण करके ज्ञान ध्यान को नही जानते है। स्त्री पुरूष हमेशा साथ रहकर कर्म बन्धन करते है जिसका यह फल होता है। अगले जनम में मनुष्य सांसी सांटया होता है। स्त्री वेश्या होती है। म:फ: है कि ज्ञान बैराग के बिना मोक्ष की प्राप्ति नही होती, तीव्र व मद बैराग हद बेहद का है।

शिव मारग में आय, सांच बिन पांव न मेले। पांचू इन्द्री जीत, उलट ब्रह्मण्ड में खेले॥
ज्यां का अे फल फूल, जन्म अगले नर पावे। सगत लोक लोप, जोत में जोत समावे॥
सुखराम ज्ञान बैराग बिन, मोख न पहुंचे कोय। तीबर मद बैराग रे, हद बेहद का होय ॥ ३ ॥

शिव ब्रह्म की उपासना करने वाले हमेशा सच बोलते है, पांचो कर्मेन्द्रियो को वश में करके साधन कर ब्रह्मण्ड में जा पहुंचते है जिसका यह फल होता, अगले जन्म मनुष्य सगती के लोक को लोप कर शिव ब्रह्म की प्राप्ति कर लेता है। म:फ: है कि ज्ञान बैराग बिन हद बेहद के है।

नित उठ करे स्नान, परथ चुके नही कोई, ऐसो पन व्रत धार, नार नर झूले दोई।
ज्यां का अे फल फूल, जन्म अगले नर पावे। महारूप वन्त देह, जूण भावे जीण जावे॥
सुखराम ज्ञान बैराग बिन, मोख न पहुंचे कोय। तीबर मद बैराग रे, हद बेहद का होय॥ ४ ॥

हमेशा नियम से स्नान करते है कभी नही चूकते है। ऐसा नियम स्त्री पुरूष हमेशा धारण कर स्नान करते है। जिसका यह फल होता है कि मनुष्य अगले जन्म में रूपवान शरीर पाता है। योनि कोई भी मिलती है। म:फ: है कि ज्ञान बैराग बिना हद बेहद के है।

तीबर यो बैराग, प्रेम साहिब सुं भारी। सिवरण पुन्न विचार, शुभ करमा से यारी।
ज्यां का अे फल फूल, सुजस बंधे संसार। सुरग को पुंज कहावे,

सुखराम ज्ञान बैराग बिन, मोख न पुथे कोय। तीबर मद बैराग रे, हद बेहद का होय ॥ ५ ॥

तीव्र बैरागी प्रेम से परमात्मा का भजन करता है। सिमरण करता, पुन्न करता, अच्छे कर्म करता है। संसार में उसकी महिमा होती है, स्वर्ग की प्राप्ति होती है। म:फ: है कि ज्ञान बैराग बिना हद बेहद के है।

सती पुरूष जग मांय, नित उठ पुन्न विचारे। ननो भणेस नांय, देह लग देणो धारे॥
ज्यां का है फल फूल, जन्म अगले नर पावे। माया सुख विलास, जूण भावे जीण जावे॥
सुखराम ज्ञान बैराग बिन, मोख न पुंचे कोय। तीबर मद बैराग रे, हद बेहद का होय ॥ ६ ॥

दान पुन्न करने वाले पुरूष उठते ही हमेशा पुन्न करते है। किसी को ना नही करते। शरीर मांगने पर शरीर भी देने को तैयार रहते है। जिसका यह फल मिलता है कि माया के सुख मिलते रहते है। योनी कोई सी भी मिलती है। म:फ: है ज्ञान बैराग बिना हद बेहद के है।

मद सुण यो बैराग, घेर पांचु घर लावे। एक ब्रह्म को ध्यान, धर्म सब ही छिटकावे॥
ज्यां का है फल फूल, जन्म अगले नर पावे। मिले ब्रह्म में जाय, उलट पाछो नर आवे॥
सुखराम ज्ञान बैराग बिन, मोख न पुंचे कोय। तीबर मद बैराग रे, हद बेहद का होय॥ ७ ॥

पांचो इन्द्रियो को बस में करके एक ब्रह्म का ध्यान करते है और सब धर्मो को छोड देते है। उसे मद बैराग कहते है। उसका यह फल होता है। अगले जन्म में जाकर ब्रह्म में मिल जाता है। उलटकर संसार में वापस आ जाता है। म:फ: है कि ज्ञान बैराग बिना हद बेहद के है।

बैराग ज्ञान यूं जाण, पिण्ड ब्रह्मण्ड से न्यारा। स्वांसा का नही काम, जीभ का कोन विचारा॥
सुणत मस्त हो जाय, ब्रह्म आपो छिटकावे। शुभ अशुभ दोय बास, निकट नेडी नही आवे।
सुखराम ज्ञान बैराग का, अे लक्षण कहूं तोय। हद बेहद कूं जीतकर, लियो परम पद जोय॥ ८ ॥

ज्ञान बैराग इसे कहते है वो पिण्ड ब्रह्मण से न्यारा हो जाता है। स्वांसा के आधार के साधन से भी वहां नही जाता है तो जीभ के आधार का वहां कैसे जा सकता है याने स्वांस जिभ्या चलती है तब तक देही ब्रह्म से रटणा करे रटणा उस देश में पहुंचती नही है परन्तु रटणा के बिना त्रीताप रूपी घाटा लंघ नही सकते निरन्तर सांस उसांस में रटणा कर सतशब्द की ध्वनि को सुनकर मस्त रहता है। अहं ब्रह्मास्मि के ज्ञान से भी अलग हो जाता है। शुभ करम करके फलो की इच्छा नही रखता व बुरे कर्म नही करता। म:फ: है कि यह लक्षण ज्ञान बैराग के है। हद याने खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड को पारकर पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति कर लेते है।

दयावन्त नर होय, दरद राखे नही कोई। कीडी कुंजर आद, शकल पर करूणा होई॥
ज्यां का अे फल फूल, जन्म अगले नर पावे। सुखी रहे जग मांय, देव सब मांड सरावे॥
सुखराम ज्ञान बैराग बिन, मोख न पुंचे कोय। तीबर मद बैराग रे, हद बेहद का होय॥ ९ ॥

जो मनुष्य कीडी से लेकर हाथी तक, सब प्राणियों पर दया करता है। किसी को दुख नही देता, जिसका यह फल होता है। अगले जन्म में मनुष्य जन्म लेकर संसार में सुखी रहता है। देवता व संसार उसकी सराहना करते है। म:फ: है कि ज्ञान बैराग बिना हद बेहद के है।

सरब देव सुं भाव, चाय भारी उर मांही। ब्रह्मा विष्णु महेश, राम हिरदे उर जांही॥
जांका है फल फूल, जन्म अगले नर पावे। देह धरे जग मांय, हार कबहु नही आवे॥
सुखराम ज्ञान बैराग बिन, मोख न पुंथे कोय। तीबर मद बैराग रे, हद बेहद का होय॥ १० ॥

सब देवताओं का भाव रखते है। हृदय में भारी श्रद्धा रखता है। ब्रह्मा विष्णु महादेव व अवतारों की हृदय में भक्ति करता है जिसका यह फल होता है कि अगले जनम में मनुष्य शरीर धारण करता उसकी कभी हार नही होती। म:फ: है कि ज्ञान बैराग बिना हद बेहद के है।

बरतवास उपवास, देही कष्ट नर कोई। ईग्यारस चोबीस, कर उजम दे सोई॥
ज्यां का है फल फूल, जन्म अगले नर पावे। मन बंछत फल अेहे, देह निरोगी कहावे।
सुखराम ज्ञान बैराग बिन, मोख न पुंथे कोय। तीबर मद बैराग रे, हद बेहद का होय ॥ ११ ॥

कोई व्रत व उपवास करके देही को कष्ट देते हैं। चौबीस ग्यारस करके उसका उजमणा करता है, जिसका यह फल होता है। अगले जनम में मनुष्य शरीर धारण कर मन की इच्छा के माफिक यह फल मिलता है शरीर निरोग रहता है। म:फ है ज्ञान बैराग बिना हद बेहद के है।

गायत्री चोईस, शुद्ध साजे नर कोई। तीनूं बगत त्रिकाल, नेमधर सेटो होई॥
ज्यां का है फल फूल, जन्म अगले नर पावे। मुख सुं कहे बैण, होय खाली नही जावे॥
सुखराम ज्ञान बैराग बिन, मोख न पुंथे कोय। तीबर मद बैराग रे, हद बेहद का होय॥ १२ ॥

गायत्री के चोबीस पुश्चय चरण विधि पूर्वक करता है। त्रिकाल संध्या नियम से करता है जिसका यह फल होता है। अगले जन्म में मनुष्य शरीर धारण करता है तो मुंह से जो कहता है वही हो जाता है। उसके वचन खाली नही जाते। म:फ: है ज्ञान बैराग बिना हद बेहद के है।

राम राम यो शब्द, जोर आराधे कोई। सरब धर्म कूं छोड, अेक पर नेचो होई॥
ज्यां का है फल फूल, जन्म अगले नर पावे। रोम रोम ररंकार, उलट ब्रह्मण्ड में जावे॥
सुखराम ज्ञान बैराग बिन, मोख न पुंथे कोय। तीबर मद बैराग रे, हद बेहद का होय ॥ १३ ॥

जो मनुष्य निरन्तर राम राम का भजन करता है सब धर्मो को छोडकर अेक राम राम का ईष्ट रखता है। जिसका यह फल होता है, अगले जन्म में मनुष्य शरीर धारण करता है। रोम रोम ररंकार की ध्वनि होकर ब्रह्मण्ड में पहुंच जाता है। म:फ: है कि ज्ञान बैराग बिना हद बेहद के है।

जत सत तप ये तीन, असल धारे नर कोई। तन मन धन सब अरप, देह पर रूचे सोई॥
ज्यां का ये फल फूल, जन्म अगले नर पावे। सुरग लोक में जाय, कहाय नर भूप कहावे॥
सुखराम ज्ञान बैराग बिन, मोख न पुंथे कोय। तीबर मद बैराग रे, हद बेहद का होय॥ १४॥

जती पना धारण करे, सत्य बोले, नियम पूर्वक विधि से तपस्या करे। तन मन धन सबन का अहंकार भाव मिटाकर विश्वास के साथ करने पर यह फल मिलता है। अगले जन्म में मनुष्य शरीर धारण कर या तो स्वर्ग पाता या राजा हो जाता है। म:फ: है ज्ञान बैराग बिना हद बेहद के है।

ओऊं शब्द को साज, उलट ब्रह्मण्ड में जावे। लाख बरस लग सांस, नाभ पाछो नही आवे॥
जांका ये फल फूल, जन्म अगले नर पावे। देह धरे करतार, राम सो दरशन पावे॥
सुखराम ज्ञान बैराग बिन, मोख न पुंथे कोय। तीबर मद बैराग रे, हद बेहद का होय॥ १५॥

स्वांसा के साधन करके स्वांसा को ब्रह्मण्ड में चढा लेता है। लाखो बरस तक स्वांसा नाभी में नही आता है। इसका यह फल होता है। जो अवतार धारण कर आते है वे उनके दर्शन करते है। म:फ: है ज्ञान बैराग बिना हद बेहद के है।

चार पुलां के मांय, पुन्न करणी जे पावे। सो नर व्हे त्रिय देव, देव सब मांड सरावे॥
जांका ये फल फूल, जन्म अगले नर पावे। चक्रवंत नर होय, काय बैराग संभावे॥

सुखराम ज्ञान बैराग बिन, मोख न पुंथे कोय। तीबर मद बैराग रे, हद बेहद का होय ॥ १६ ॥

चार पुल कोई ऐसे समय आते है जिसमें दान पुण्य करने से तीनों देवता ब्रह्मा विष्णु महादेव की पदवी मिलती है। व सारी सृष्टि उसकी सराहना करते है। जिसका यह फल मिलता है। अगले जन्म में मनुष्य चक्रवर्ती राजा होता है। या बैराग ले लेता है। म:फ: है ज्ञान बैराग बिना हद बेहद के है।

अडसठ तीरथ न्हाय, पृथ्वी परदीक्षणा देवे। कर माला मुख राम, राम नाम अेसी विध लेवे॥
जहां भगती सहित हो राज, देही तज सुरगा जावे। सुखराम ज्ञान बैराग बिन,
मोख न पहुंचे कोय॥ तीबर मद बैराग रे, हद बेहद का होय॥ १७॥

अडसठ तीरथों में स्नान कर पृथ्वी की प्रदक्षीणा करे। हाथ में माला के द्वारा मुंह से राम राम का भजन करे, वो राजा होने पर भक्ति करने वाला होता है व शरीर छोडने पर स्वर्ग में चला जाता है। म:फ: है ज्ञान बैराग बिना हद बेहद के है।

सदा व्रत नित नेम, धर्म कन्या परणावे। अभय दान दे नार, मोल कर पाछी लावे।
ज्यां सुरग में जाय, करोडी धज कुवावे। सुखराम ज्ञान बैराग बिन,
मोख न पुंथे कोय। तीबर मद बैराग रे, हद बेहद का होय॥ १८ ॥

जो मनुष्य नित्य नियम से सदाव्रत देवे व कन्या को धर्म परणावे। स्त्री को कपडा व गहना पहना कर दान देवे। वापस दान देने वाला जितना मोल मांगे वो देकर वापिस लेवे। इसका यह पुण्य होता है या तो स्वर्ग में जाता या करोडपति होता है।

भगती नाम सो अंग, शुभ सारा जग मांही। प्रेम भाव प्रतीत, बिरह व्याकुलता कुवाई॥
ज्यां काम पडया करतार, काज वाँका कर जावे। सुखराम ज्ञान बैराग बिन,
मोख न पुंथे कोय। तीबर मद बैराग रे, हद बेहद का होय॥ १९ ॥

परमात्मा की भक्ति किसी रूप में करो जगत में सब अच्छी है। प्रेम व विरह तथा व्याकुलता से भक्ति करने वालों का समय पर परमात्मा काम कर देता है। म:फ: है ज्ञान बैराग बिना हद बेहद के है।

अनाज पुरूष कोई छोड दूध पीवे, नर पावे बन फल फूल अहार, जडी बूंठी खिण खावे॥
जहां झाडा झपटा रोग, आंण नर बेद कहावे। सुखराम ज्ञान बैराग बिन,
मोख न पुंथे कोय॥ तीबर मद बैराग रे, हद बेहद का होय ॥ २० ॥

अन्न को छोड़कर कोई पुरूष दूध पीते है। कोई नर जंगल में फलफूल का आहार करते हैं। कोई जड़ी बूटी खोद कर खाते हैं। यहां पर कोई नर झाडा झपटा देकर रोग दूर करते हैं। वे जगत में वैद्य कहलाते हैं। म:फ: है कि ज्ञान बैराग बिना हद बेहद के हैं।

<u>कुण्डलिया</u> : पिता सरूपी राम है, अेक माता सरूपी जांण। तीजो राम सरूप है,
धरणी धरे पिछाण॥ धरती धरे पिछाण, चतुर चोथो यो होई।
सतगुरू समरथ होय, ज्ञान धन देवे सोई॥ सुखराम किस्या सुण ब्रह्म को,
ध्यान धरो तुम जोय। ब्रह्म शकल में एक है, राम घटो घट होय ॥ २१ ॥

एक राम तो पिता सरूपी है, एक राम माता सरूपी है। तीसरा राम जो सब सृष्टि का आधार है उसको पहचानो। चौथा राम सतगुरू समरथ केवली भगवंत है जो अणभै ज्ञान रूपी धन देते है। म:फ: है कि तुम कौनसे ब्रह्म का ध्यान करते हो। ब्रह्म तो सर्वत्र एक है। चेतन राम का पद घट में अलग अलग है।

रैत सरूपी राम है, राजा सरूपी जांण। तीजो राम सरूप है,
सो तो सेण बखाण ॥ सो तो सेण बखाण, चतुर चोथो ओ होई।
सतगुरू सत सरूप ताहि गत लखे न कोई॥ सुखराम किस्या सुण ब्रह्म को,
ध्यान धरो तुम जोय। ब्रह्म शकल में एक है, राम घटो घट होय ॥ २२॥

अेक राम तो प्रजा सरूप है। अेक राम राजा स्वरूप है। तीसरा राम जो है वो प्राणी मात्र का हित करने वाला है। चौथा राम सतगुरू स्वरूप का पद है। उसकी गति को हर एक नहीं जानता है। म:फ: है कि तुम किस ब्रह्म का ध्यान करते हो ब्रह्म तो सर्वत्र एक है। चेतन राम का पद घट में अलग है।

ब्रह्मा विष्ण महेश तो, रैत सरूपी जांण। घड भंजन करतार सो, राज सरूपी बखाण॥
राज सरूपी बखाण, ब्रह्म सुं तो सब होई। सुखराम किस्या तुम ब्रह्म को,
ध्यान धरो तुम जोय। ब्रह्म शकल में एक है, राम घटो घट होय ॥ २३॥

ब्रह्मा विष्णु महेश का पद तो प्रजा सरूपी है। सृष्टि को बनाने वाला मिटाने वाला करतार का पद राजा की तरह है। पारब्रह्म के पद का सबके आधार है। जैसे सब में होते हुये भी सबसे अलग है। म:फ: है कि तुम किस ब्रह्म का ध्यान करते हो। ब्रह्म तो सर्वत्र एक है। चेतन राम घट घट में अलग अलग है।

सोहंग पिता कूं सुमरता, जीव ब्रह्म हो जाय। ओऊं कार मा सेविया,
कला प्रगटे आय॥ कला प्रगटे आय, ररो शिवरया सुण भाई।
रोम रोम ररंकार, जगत में परचा पाई ॥ सुखराम सतगुरू सेविया,
परम मोख मिल जाय। आवागवण नहीं उतरे, सुख में रहे समाय ॥ २४॥

सोहंग पिता याने सोहं का जपा अजपा ब्रह्म की भक्ति है। इसे करने से ही ब्रह्म की प्राप्ति हो जाती है। स्वांसा के आधार व वाणी से सुमरण करना माया की भक्ति है। यह माता की है उसे ओऊंकार मा सेविया है। इस भक्ति के करने वालो के मनसा माफिक कार्य सिद्ध होते रहते है यही कला प्रगट होना है। ररा याने राम राम का सिमरण करने से रोम रोम में ररंकार की ध्वनि होने लग जाती है। जगत में अपनी करामात बताने लग जाते है। यही परचा पाना है। म:फ: है कि सतगुरू विधि से भजन करने से सतशब्द की जागृति होकर सतस्वरूप आ: पद की प्राप्ति हो आवागमन रहित हो जाना ही सुख में समाना है।

॥ इति श्री फल फूल का अंग सम्पूर्ण॥

卐 गृह संतोष का अंग 卐

कवित : सुण ब्रह्मा घर नार, नार शिवजी संग होई। महा विष्णु घर नार, नार गणपत घर होई॥
चन्द्र सूर घर नार, नार व्यास संग जाणो। राम कृष्ण ओतार, ताय संग बोहोत बखाणो॥
सुर तेतीसो देवता, सब घर नारी होय। अैता में सुखराम कह, कहो कुण निरसा होय॥ १॥

सुणो ब्रह्मा के घर स्त्री है। शिवजी के साथ स्त्री है। महाविष्णु के घर भी स्त्री है। गणेशजी के घर में स्त्री है। चन्द्रमा सूर्य के घर भी स्त्री है। वेदव्यासजी के साथ स्त्री है। रामचन्द्र जी व कृष्णजी अवतार रूप में आये। रामचन्द्रजी के भी नारी थी तथा कृष्ण भगवान के अनेक स्त्रियां थी। तैतीसों देवताओं के यहां सब के घर स्त्री है। म:फ: है कि बताओ कौन बिना स्त्री का है।

वाष्ट मुनि घर नार, पुत्र साठी उण जाया। पांडु पांचू जाण, नार परणी घर लाया॥
कर्दम मुनि घर नार, नार पीरा संग होई। ऋषभदेव सा देव, नार बिन रहया न कोई॥
अे सब घर बारी हुवा, हरि भज उतरे पार। अेता सु सुखराम कह, कुण इधको संसार ॥ २॥

वशिष्ट मुनि के घर स्त्री थी। जिसके साठ लड़के पैदा हुए। पांचो पाण्डव स्त्री को परण कर घर लाये। कर्दम मुनि के घर स्त्री थी, पीरों के साथ स्त्री थी, ऋषभदेव जैसे भगवान भी बिना स्त्री के नहीं रहे। ये सब गृहस्थी थे परमात्मा का भजन कर भवसागर से पार हुए। म:फ: है कि इतनो से संसार में कौन इधक है।

जनक विदेह घर नार, शेष दस खवासा जानो। फिर राजा अमरीश,
ताय संग बहुत बखाणो॥ जमदग्न घर नार, नार शंकर रिष धारी।
देव निरंजण आप, ताय लेय सुण विचारी॥ अे घर बारी सब हुवा,
मिल्या ब्रह्म में जाय। क्या ओगुण सुखराम कह, सुण त्यागी घर मांय ॥ ३॥

राज जनक विदेही थे। उनके घर स्त्री थी। जिनके दस हजार दास थे। फिर राजा अमरीश के घर भी स्त्री तथा बहुत से सेवक थे। जमदग्न ऋषि व शंकर ऋषि के साथ स्त्री थी। सृष्टि रचना के लिए स्वयं परब्रह्म परमात्मा ने यह भोग व्यवहार बनाया यही देव निरंजन आप, ताय लेय, सुण विचारी है। ये सब ही गृहस्थ थे व ब्रह्म में जाकर मिले। म:फ: है कि त्यागियो गृहस्थ में क्या अवगुण है।

<u>कुण्डलिया</u> : ब्रह्म सदा ही अमर है, जांका कहा बखाण। माया अमर धाम है,
सो नर ईधकी जांण॥ सो नर ईधकी जांण, ब्रह्म तो डिगे नही कोई।
जो माया तज आय, अरथ बिन निकमो होई॥ सुखराम हद बेहद लग,
जन्म मरण गत जांण। ब्रह्म सदा ही अमर है, जांका कहा बखाण ॥ ४॥

ब्रह्म तो सदा से ही अमर है, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता, शरीर रूपी माया अमरधाम ले जाने का सबसे उच्च हीरा है, ब्रह्म परमात्मा तो स्थिर हैं। माया तज के आता है जैसे माया यानि धन को छोड़कर जंगल में जाता है तो वह बिन धन निकम्मा है। ऐसे ही माया के शरीर को छोड़ता है परन्तु राम नाम के धन के बिना निकम्मा है। हद बेहद तक तो आना व जाना है।

॥ इति श्री गृह संतोष का अंग सम्पूर्ण॥

卐 मुण्डत त्यागी बैरागी का अंग 卐

शिव के दाढी मूंछ है, फिर ब्रह्मा के होय।
ऋषि सब ही सुखराम कह, मुंडत सुण्या न कोय॥ १॥

शिवजी के दाढी व मूंछ है फिर ब्रह्माजी के भी है। म:फ: है कि सब ही ऋषि दाढी मूंछ के है। किसी को भी मुण्डत नही सुणा है।

दाढी मूंछ बणाई करता, फिर सनकादिक जांण।
मुण्डत सुण सुखराम कहे, किणे कहयो कहो आंण ॥ २॥

दाढी मूंछ सृष्टि करता ईश्वर ने बणाई है। सनकादिक ऋषियों के दाढी मूंछ थी। म:फ: है कि

दाढी मूंछ सृष्टि कर्ता ईश्वर ने बणाई है। मुण्डत कराने की बात किसने आकर कही है।

दाढी मूंछ राम ने किया, जिन ओ जीव बणायो।
कहे सुखराम मुण्डत को करता, कहो कोण जुग गायो ॥ ३ ॥

दाढी मूंछ रामजी ने की है। जिन्होंने इस जीव को बणाया है। म:फ: है कि इस मुण्डत को करने वाला कौन है, जगत में उसकी कहो।

दाढी मूंछ शीष पर शिखा, जे हर किया जोय॥
कह सुखराम भेष मुण्डत को, करण वालो है कोय ॥ ४॥

दाढी मूंछ व सिर पर चोटी यह ईश्वर ने बणाई है। म:फ: है कि मुण्डत भेष को करने वाला कौन है।

मुण्डत भेष को करता नांही, तिण में फेर न कोय।
कहे सुखराम मूंछ हर दाढी, राम बणाई जोय॥ ५ ॥

मुण्डत भेष ईश्वर ने नहीं बनाया है इसमें कोई झूंठ नहीं है। म:फ: है दाढी मूंछ रामजी ने बनाई है।

राम बणाया भेष ये, क्या ओगुण सुण मांय। विरकत सुं सुखराम कह, तुम उतरायो जाय॥ ६ ॥

रामजी ने जो यह भेष बनाया है। उसमें क्या अवगुण है। म:फ: है भेष बनाने के लिये तुमने उसको उतरवा दिया है।

नारी के सुण मूंछ रे, दाढी करी न कोय। हरी सुं तो सुखराम कहे, छाने कुछ न होय ॥ ७॥

सृष्टि करता ने स्त्री के दाढी व मूंछ नहीं बनाई है। म:फ: है कि ईश्वर से कुछ भी छिपा हुवा नहीं है।

विरकत सुं सुखराम कह, जे हरी राजी होय। तो दरगा सुं मूंड के, क्यूं मेल्यो नी जोय॥ ८ ॥

जो भेषधारी मुण्डन कराने वाले है। उनसे यदि परमात्मा राजी होते तो म:फ: है कि ईश्वर के दरबार से ही मूंड के क्यों नहीं भेजा है।

रूखमया को मुंडकर, ख्याल कियो हर जोय,
वा पख का सुखराम कह, विरकत जग में होय॥ ९ ॥

रूखमया को श्री कृष्ण भगवान ने सजा के लिये मुण्डा था उसके कारण यह प्रचलित हुआ, विरकत यानि सांग धारना।

सीरक सीरक मुझ क्या करे, तुम भी सीरकण हार।
राम बिना सुखराम कह, को थिर करो विचार॥ १० ॥

मुझको सिरक सिरक क्या कर रहे हो तुम भी सिरकने वाले हो। म:फ: है कि रामजी के बिना कौन स्थिर है। इसका विचार करो।

सिरके पवन नीर भी, सिरके देव और सब लोई।
कहे सुखराम तके नहीं सिरके, पत्थर समाना होई॥ ११ ॥

हवा सिरकती है पानी भी सिरकता है। देवता व संसारी सब सिरकते है। म:फ: है जो नहीं सिरकता है वह पत्थर के समान है।

<u>रेखता</u> :- न्हाय कर धोवणा, तिलक छापा करे। निपणा चूपणा नित होई,

बोहत प्रकार आचार कूं साजिये, विष की दिष्ट नहीं मिटे कोई।
दास सुखराम कह पच मरे बापड़ा, राम बेमुख नी मुक्त नाई ॥ ९ ॥

स्नान कर कपड़े धोकर तिलक छापा करते है। बहुत तरह से आचार याने शुद्धता रखते है। अन्तर में विषयों का विचार करना ही विष की दृष्टि नहीं मिटना है। म:फ: है कि इस प्रकार करते रहते है। रामजी की भक्ति नहीं करते। रामजी की भक्ति बिना मुक्ति नहीं होती।

घर कूं त्याग बनवास कूं निसरयो, प्रीत संसार सुं नांय होई।
अन्न परसाद की बात माने नहीं, कंद के फूल खिण खाय सोई॥
तन कूं कष्ट बोह भांत दे जोगिया, आत्मा देव कूं दुख होई।
दास सुखराम कहे पच मरे बापड़ा, राम बेमुख नी मुक्त नांई ॥ २ ॥

घर को छोड़कर वन में निवास करने को निकल गये संसारियो से मोह नहीं है। भोजन परसाद करने को कहते है तो मंजूर नहीं करते, कंदमूल खोदकर खाते है। जोगी शरीर को कई तरह का कष्ट देते है इससे आत्मा रूपी देव को दुख होता है। म:फ: है इस तरह पचते रहते है। रामजी की भक्ति नहीं करते, रामजी से विमुख है उनकी मुक्ति नहीं होती।

मून संभाय संसार में निसरया, जगत सुं बोलणो नांय होई।
तन का कपड़ा डार निरभय भया, होय निरवाण मन मांय सोई॥
राख के बीच गरक गरकाव है, दिष्ट संसार सु चित गोई।
दास सुखराम कहे पच मरे बापड़ा, राम बेमुख नी मुक्त नांई॥ ३ ॥

मून धारण कर संसार से निकल गये अब जगत से नहीं बोलते है। शरीर के कपड़ो को उतारकर कर निरभय हो गये, मन में निरवाण समझने लग गये। शरीर पर राख लगाकर गरक हो रहे, दृष्टि व चित संसार में लगा हुवा है। म:फ: है कि पच पच कर मर रहे है जो रामजी से बेमुख है, उनकी मुक्ति नहीं होती है।

त्याग संसार कूं भेश बानो लियो, तिरथां उठ नर जाय कोई।
किरोड पचास में बोहोत दिन भटकिया, दु:ख हर सुख बिच रेण खोई॥
भटक भटकाय हर बेस रह जोगिया, झूंपडी बांध संसार सोई॥
देश विदेश की बात बखाण करे, रात हर दिवस बिच ध्यान ओई॥
तन सूं उठ कर साध सेव करे, मन सुं गांव में जाय जोई।
दास सुखराम कहे पच मरे बापड़ा, राम बेमुख नी मुक्त नांई ॥ ४ ॥

संसार को छोड़कर भेख धारण कर लेते है। उठकर तीरथो में चले जाते है। सारी पृथ्वी पर भटकते रहते है। दुख सुख में राते बिताते है। इस तरह जोगी भटक कर बैठे रहते है। संसार में झूंपडी बांधे रहते है देश व विदेश की बातों का बखाण करते है। रात दिन यही ध्यान लगा रहता है। शरीर से साधुओं की सेवा करता है मन गांव में लगा हुवा है। जाकर यह चीज लानी है। म:फ: है कि इस तरह पच पच कर कितने ही मर जाते है, जो रामजी की भक्ति नहीं करते, उनकी मुक्ति नहीं होती।

उठ संसार कूं बांग पुकार दे, शहर जगाय फकीर सोई।
तीन तिरकाल निवाज गुंजार दे, पीर अवलिया और कोई॥
माया कूं त्याग हर कहत फकीर है, जीव कूं मार के अहार सोई।

दास सुखराम कह पच मरे बापड़ा, राम बेमुख नी मुक्ति नांई ॥ ५ ॥

फकीर सुबह उठकर जोर से बांग पुकारता है। शहर में सोने वालों को जगा देता है। तीनो समय की पीर अवलिया नमाज पढते है। माया को त्याग कर कहते है, हम फकीर है। जीवों को मारकर पेट भरते है। म:फ: है कि पच कर मर रहे है। जो रामजी से विमुख है, उनकी मुक्ति नहीं होती।

पोथिया पानडा संग लिया फिरे, होय परबीण मन मांय सोही।
शील संतोष की बात ओरा कहे, आपके घट में जहर होई॥
उजला कपड़ा पहर कर निसरया, रोटियां लावता चित गोई।
दास सुखराम कहे पच मरे बापड़ा, राम बेमुख नी मुक्त नांई ॥ ६ ॥

पोथी पाना साथ में लिये फिरते है। अपने मन में खुद को प्रवीण समझते है। शील संतोष धारण करने की बात दूसरो को कहते है और खुद के शरीर में क्रोध भरा रहता है। साफ सफेद कपड़े पहन कर निकलता है। घरों में से रोटिया लाते समय चित किधर जा रहा है। म:फ: कि विचारे पच कर मर रहे है। जो रामजी से बेमुख है। उनकी मुक्ति नहीं होती है।

ओठियो चुठियो नीर लेता फिरे, माया की चाय कुछ नाय होई।
अण देखता जीव की दया बोली करे, देखते जीव सु बैर होई॥
बोलता चालता संग साथ रहे, उ करे बैर हर धेख दोई।
दास सुखराम कहे पच मरे बापड़ा राम बेमुख नी मुक्त नांई ॥ ७ ॥

धोवण धावण का पानी लेते फिरते है। माया की चाहना कुछ भी नहीं होती। जो जीव नहीं दिखते उनकी दया की बात जुबान से करते है। अपना जीव दिख रहा है उसको कष्ट देते है। बोलते चालते साथ रहते है। आपस में अंतर में बेर व द्वेष रखते है। म:फ: है कि पच कर मर रहे है। रामजी से विमुक्तो की मुक्ति नहीं होती।

॥ इति श्री मुण्डत त्यागी बैरागी का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 बैरागी का संवाद 卐

श्री संत श्री सुखदेवजी से रामावत विसनु बैरागी बोलिया तुमने भेख किण दियो तब संत सुखदेवजी बोल्या:

श्री सुखो वाच :- चौपाई :- मेरे भेष आद को स्वामी, क्या कहूं मैं तोई।
ज्यां दिन मांड घडी है साहिब, पेल कियो है मोही ॥ १ ॥

महाराज यहां सतस्वरूप की सता रूप से बोल रहे है कि हे स्वामी मेरा यह भेष आदि अनादि से है। जिस दिन सृष्टि की रचना हुई थी उस दिन सबसे पहले सतस्वरूप का पद बनाया था। तब बैरागी ने प्रश्न किया है कि पहले तुम कहां से आये और पहले तुमने क्या किया। पहले तो ओ३म किया ओ३म से सारी उत्पत्ति है।

श्री सुखो वाच :- ओऊं शब्द विष्णु जो ब्रह्मा, आद बणाया सोई।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, पछे मांड सब लोई ॥ २ ॥

ओऊं याने आत्मा, ब्रह्मा विष्णु महादेव को शुरू में बनाया। म:फ: है कि बैरागी सुणो पीछे

सारी सृष्टि हुई।

जेता भेष जगत में कहिये, सबे दूज सु आया।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, आद रिख मैं आया ॥ ३ ॥

जगत में जितने भेष है वो सब ब्रह्माजी से आये है। म:फ: कि बैरागी सुणो आदि का जो ऋषि पद है उससे मैं ब्राह्मण हूं। बैरागी बोलिया आदि में तुम कहां से आये। आदि में तो पांच तत्व बणे है। पांच तत्वों के पहले कुछ भी नहीं था। फिर पांच तत्वों के पहले तुम कहां से आये।

श्री सुखो वाच :- पाणी पवन धरण आकाशा, नही या जूण हमारा।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, ता दिन भेष हमारा ॥ ४ ॥

पांच तत्व से पहले मेरा भेष नहीं था जिस दिन पांच तत्व बने उसी दिन मेरा भेष बणा।

मैं हूं रिष ब्रह्म जोगी, असल दूज का जाया।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, कलजुग संत कहाया ॥ ५ ॥

मैं ऋषि पद में ब्रह्म ऋषि हूं। ब्रह्माजी से सब ऋषियों की उत्पति है। यही जाया है। म:फ: है कि बैरागी कलयुग में मुझे संत कहते है।

मेरा भेष कहां तू बुजे, जाणत है जग सारा।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, तीन लोक शिष्य हमारा ॥ ६ ॥

मेरे भेष को तुम क्या बुझते हो मेरे भेष को सारा जगत जानता है। म:फ: है कि हे बैरागी सुणो तीनो लोक मेरे शिष्य है। बैरागी बोल्या जगत का गुरू तो ब्रह्मा है फिर शिष्य जगत कहां से हुआ।

श्री सुखो वाच :- ब्रह्मा गुरु पिता है मेरा, शीव उपदेश बताया।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, जन्म रिष में भाया ॥ ७ ॥

ब्रह्माजी मेरे गुरु व पिता है। शिवजी ने उपदेश दिया है। म:फ: है कि हे बैरागी सुणो मेरा जन्म ऋषि पद में है।

खट दरशण आद ऋष की पदवी, असंख जुगा के मांही।
कह सुखराम पंथ ये द्वारा, कलजुग मध्य कहाई ॥ ८ ॥

जोगी, जंगम, सेवडा, सन्यासी, ब्राह्मण दरवेश असंख युगो से ऋषि पद में है। म:फ: है कि अलग अलग पंथ व द्वारे कलजुग में कहलाये है।

मैं बुजुं अब कहूं आपको, भेष कहां सुं लाया।
कह सुखराम दरशणी हो कन, पाखण्ड रूप कहाया ॥ ९ ॥

महाराज ने बैरागी से कहा आप यह भेष कहां से लाये है। आप दरशणी हो या पाखण्ड रूप धारण कर रखा है।

बैरागी कहयो हम असल रामावत वैष्णव है, पूजत है सब लोई।
सुणो सुखराम भेष ओ मेरे, सकल पंथ सिर होई ॥ १० ॥

बैरागी ने कहा हम असल रामावत वैष्णव है। सब संसारी हमारी पूजा करते है। सुखरामजी सुणो मेरा भेष सब पंथो में श्रेष्ठ है।

चार संप्रदा बावन द्वारा, ज्यां में फेर बसेखा।
सुण सुखराम कील का द्वारा, सबे भेष का टीका ॥ ११ ॥

चार सम्प्रदा बावन द्वारा में सबसे विशेष है। सुखरामजी सुणो कीलजी द्वारे से जिसने भेष धारण किया वो अपने को श्रेष्ठ मानते है। यह जयपुर गलताजी में है।

श्री सुखो वाच :- चार संप्रदा बावन द्वारा, अगरदास ठहराया।
कहे सुखराम ताय सुण आगे, कोण बिध थी भाया ॥ १२ ॥

म:फ: है कि चार सम्प्रदाय व बावन द्वारा अगरदासजी ने मुकर्रर किये है इससे आगे कौन विधि थी।

रामानन्द परे नही द्वारा, भक्त बरण में होई।
कहे सुखराम मुनि रिष जोगी, दरशण बिना न कोई ॥ १३ ॥

रामानन्दजी से पहले कोई द्वारा नही था। भक्ति बरणो में थी। म:फ: है कि मुनि ऋषि व जोगी दरशणी के बिना कोई नहीं था।

जे कोई भगत हुआ जग मांही, बरण छाडियो नांही।
कहे सुखराम भेष जो अबरण, चाल्यो कलुगत मांही ॥ १४ ॥

संसार में जो कोई पराक्रमी भक्त जन हुआ उसमें से किसी ने अपना बरण नही छोडा। म:फ: है कि अवरण भेष कलजुग में चला है। कलयुग में शुद्र जो भेष धारण में लगे है। उसे अबरण कहा है।

चार सम्प्रदा बावन द्वारा, अगरदास ठहराया।
रामानन्द ऊरे बैरागी, तीन पीढ़ियां भाया ॥ १५ ॥

चार सम्प्रदा बावन द्वारा अगरदासजी ने मुकर्रर किये थे। रामानन्दजी से तीन पीढ़ी याने तीसरे नम्बर में अगरदासजी हुये।

अबरण भेष जगत सुद्रा में, रामानन्द सु आई।
कह सुखराम ताय सुण आगे, भेष दरसणा मांही ॥ १६ ॥

अबरण व अबरण भेख धारण करके भक्ति शुद्रो में रामानन्दजी से चली है। म:फ: है कि उससे पहले भेख दरशणियो में था।

जे कोई भक्त शुद्र में हुवो, तोई दरशण के आसे।
कहे सुखराम अबे बैरागी, बेईमान व्हे नासे॥ १७ ॥

अगर शुद्र में कोई भक्त हुआ है। तो वह षट दरशणियों के आधार थे। म:फ: है कि हे बैरागी अब वे उनके गुण को नहीं मानते है। यह बेईमान व्हे नासे है।

बैरागी वाच :- शुद्र में भक्ति कहां से आई ?
श्री सुखो वाच :- बारा समत बरस बाणवें में, भक्ति शुद्रा में आई।
कह सुखराम गोत दरशण सुं, न्यारी राह चलाई ॥ १८ ॥

म:फ: है बारह सो बराणवे के वर्ष में भक्ति शुद्रो में भेख धारण कर शुरू हुई। म:फ: है कि षट दरशणियो से अलग पंथ चलाया है।

आगे रिषी जोगेश्वर होता, रामानन्द बिन सोई।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, जब तो और न कोई ॥ १९ ॥

रामानन्दजी पूर्व ऋषि जोगेश्वर थे। उनका दूसरा कोई भेष नहीं था।

तब मुरडाय रीस कर चाल्या, छाडयो भवन हमारो।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, मन मुख भेष तुम्हारो ॥ २० ॥

जब बैरागी क्रोध करके भवन छोड़कर चले। म:फ: है कि तुम्हारा भेष मनमुखी है।

सुण ले बरस चार सो हुवा, अबरण भेष कहाई।
कह सुखराम ताय सुण आगे, सबे हमारे मांई ॥ २१ ॥

महाराज के पार्थिव शरीर मौजूद के चार सो वर्ष पूर्व अबरण भेष चला था। म:फ: है कि पहले सब भेख दरशणियों में था।

बेमुख हुवा ताको सुण कारण,दरशण कहे न कोई।
कह सुखराम भेष तुम पासे, सबे हमारा होई ॥ २२ ॥

बेमुख होने का यह कारण है कि उनको कोई दरशणी नहीं कहता। म:फ: है कि तुम्हारे पास जो भेष है। वो षट दरशणियो के है। बैरागी बोल्या हमारे पास तुम्हारा भेष कौनसा है।

श्री सुखो वाच :- डण्ड कमण्डल सनकादिक, दाढी माला तिलक जनेऊ।
कह सुखराम सुणो बैरागी, आद हमारी होई ॥ २३ ॥

डण्ड कमण्डल दाढी माला तिलक जनेऊं सनकादिक यह सब खट दरशणियो की है।

पोथी ज्ञान अरथ अरू चरचा, वेद भेद सुण सारा।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, आदू सबे हमारा॥ २४॥

पोथी ज्ञान अरथ चरचा वेदों का ज्ञान भेद याने योग की साधना सब ही ये छ: दरशणियों से चली है।

ओऊं सोऊं ररो ममो, गायत्री सुण भाई।
कह सुखराम सुणो बैरागी, या हम पेल बणाई॥ २५ ॥

ओऊं सोऊं का जपा अजपा रकार मकार गायत्री यह सब ज्ञान छ: दरशणियों से चला है।

संख जोग और भक्त भेष रे, आदू दूज बणाया।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, तुम कहां सु ल्याया ॥ २६ ॥

सांख्य योग व भक्ति भेष आदि से ब्रह्माजी ने बनाये है। म:फ: है हे बैरागी आप कहां से लाये हो।

मंतर जंतर सांसा साजन, बावन अक्षर किया।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, घड पैदा हम किया॥ २७॥

मंतर जंतर स्वांसा का साधन बावन अंछरो का ज्ञान यह सब छ: दरशणियो से बने है।

चीजा सबै तुमारे पासे, सो पैदा कहां होई।
कह सुखराम सुणो बैरागी, अरथ बताओ मोही ॥ २८ ॥

जो चीज आपके पास है वो कहां पैदा हुई इसका अरथ बताओ।

दरशण बिना कहां सूं ल्याया, नांव भेष विध सारी।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, कहोनी भेद विचारी ॥ २९ ॥

बिना दरशणियों के नांव भेष की सारी विधि कहां से आई है। म:फ: है आप भेद विचार कर बताओ।

भूलो मती मूल घर देखो, बस्त कहां सुं आई।
कह सुखराम सुणो बैरागी, समझ सोच मन मांही॥ ३०॥

भूल मत करो, आदी से देखो, यह सब चीजे कहां से आई है। म:फ: है इसको मन में सोचो समझो।

जात पांत हम ब्रह्म कहीजे, जो तूं शिंवरत है सोई।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, कहा बुजसी मोही॥ ३१॥

आत्मा रूप से महाराज बोल रहे है। जाति पांति से तो आत्मा ब्रह्म ही है। जिसका आप सिमरण करते है। म:फ: है हे बैरागी और मुझे क्या पूछोगे। तब बैरागी रीस में आकर बोला हम तुम्हारे क्या है आप तो फंद में फंदे हुये हो। वास करते हो। क्या सिवरते हो ? हम त्यागी है। माया से बाहर गृहस्थ से बैरागी व जगत से अलग है। तुम तो गृहस्थी हो।

श्री सुखो वाच :- त्यागी होय कोप मत स्वामी, बस्त गृह सुं आई।
कह सुखराम सुणो बैरागी, अरथ सोज ऊर मांही ॥ ३२॥

त्यागी होकर क्रोध मत करो वस्तु याने शरीर गृहस्थ से आया है। इसका अरथ हृदय में समझ लो।

गृह सुं आप निसरया स्वामी, नांव गृह सुं ल्याया।
कह सुखराम सुणो बैरागी, निन्दे मती अब भाया॥ ३३॥

हे स्वामी आपकी उत्पति गृहस्थी से ही है नांव भी गृहस्थ का है। म:फ: है कि आप गृहस्थ की निंदा मत करो।

गृह की काया गृह की माया, गृह का सकल पसारा।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, कौन गृह सु न्यारा ॥ ३४॥

गृहस्थ का शरीर है, सब माया गृहस्थ की है, नाव भी गृहस्थ का है। म:फ: है गृहस्थ से कौन अलग है।

गृह में जन्मे गृह कूं निन्दे, सो दरगा का खूनी।
कह सुखराम सुणो बैरागी, कह गये सन्त अजूणी॥ ३५॥

गृहस्थ में जन्म कर गृहस्थ की निन्दा करता है। वो परमात्मा का दोषी है। म:फ: है कि बैरागी अनादि से संत यह कहते रहे है। यह बात सुनकर बैरागी दुखी हो गया और रीस खाकर उठकर जाने लगा। तब सुखरामजी महाराज बोल्या।

चरचा मांय दुख जो माने, सो नर मुढ गिंवारा।
कह सुखराम सुणो बैरागी, निरभै ज्ञान हमारा॥ ३६॥

ज्ञान चरचा में बुरा मानता वो मूर्ख है। हे बैरागी हमारा ज्ञान निर्भय है।

तामस करे उठ जो जावे, ज्यां गुरु ज्ञान न पाया।
कह सुखराम सुणो बैरागी, तके उडत ज्ञान ले आया॥ ३७॥

म:फ: है कि जो क्रोध करके उठ जाते है उनको गुरु से ज्ञान नहीं मिला है, वे सीख सीख कर ज्ञान धारण कर रखा है।

सतगुरु मिल्या ज्ञान ले आस्यो, फिर तुम हंस कहासो।

कह सुखराम सुणो बैरागी, उठ उठ मत न्हासो ॥ ३८ ॥

सतगुरु केवली भगवंत से अणभै ज्ञान प्राप्त करोगे तब तुम सन्त कहावोगे। उठ उठकर मत भागो। बैरागी बोल्या कि तुम हमारी तो सुनते ही नहीं हो। हमारा निरभय ज्ञान सुणो तबै।

श्री सुखो वाच :- कहोनी ज्ञान तुम्हारो, साख शब्द मुख बोलो।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, ज्ञान हाट क्यूंनी खोलो ॥ ३९ ॥

म:फ: है कि आपका ज्ञान भी कहो साख शब्द मुंह से उच्चारण करो। म:फ: है कि जो आपकी ज्ञान रूपी दुकान है वो क्यों नहीं खोलते हो।

मैं कहूं ज्ञान सुणेगा स्यामी, कन नहीं चित तुम्हारो।
कहे सुखराम जुवाब यो दीजे, ज्युं दिल खुले हमारो ॥ ४० ॥

म:फ: है कि तुमे जो ज्ञान कह रहा हूं सो सुणोगे या सुनने में तुम्हारा चित नहीं है। म:फ: है इसका जवाब दो जब मैं तुमसे ज्ञान कहूं।

अरथा बिना उथापे चरचा, सो मन मुखी कहावे।
कह सुखराम सुणो बैरागी, दरगे दाद न पावे ॥ ४१ ॥

अरथ नहीं जानता व चरचा उथापता, वे मन मुखी है। वो परम पद की प्राप्ति नहीं कर सकता। बैरागी बोल्या कि हमारा सतशब्द अर्थ सुणिया बिना मनमुखी व मूरख कैसे बताते हो। हमारा गुरुमुखी का अर्थ तो सुनते ही नहीं हो।

श्री सुखो वाच :- कहो सतशब्द अरथ सो कीजे, पांख पांख को सारो।
कहे सुखराम अरथ बिन बकबोस, डोटे दडी विचारो ॥ ४२ ॥

सतशब्द का अरथ कहो, स्थान का वर्णन करो। म:फ: है कि यदि अरथ नहीं जानता है तो कभी कुछ कभी कुछ बात करता है। यही दडी के डोटे लगाना है।

चरचा मांय पडया जे अडबी, उठ उठ जे जावे।
कह सुखराम साध वो नांही, हर कूं नाही सुवावे ॥ ४३ ॥

ज्ञान चरचा में कोई उलझन पड जाये तो उठ उठ कर जाता है तो वो संत नहीं है। परमात्मा को अच्छा नहीं लगता।

एक दोय चरचा करके, जिऊं तिऊं कर सुलझावे।
कह सुखराम साध वो पूरा, भूला राह लगावे ॥ ४४ ॥

एक दो ग्यान की चरचा करके ज्युं त्युं करके उसको सुलझावे। म:फ: है कि सच्चे संत वे ही है जो भूले हुवों को रास्ता बता देते है।

ग्यान ध्यान सुमरण जप सांसा, दौड त्रिगुटी ताई।
कह सुखराम तठा सुं आगे, कोण पद कठे जाई ॥ ४५ ॥

जितने भी ग्यान ध्यान सुमरण जप स्वांस इनकी पहुंच त्रिकुटी तक है। म:फ: है कि त्रिगुटी के आगे कौनसा पद है। कौनसा पद कहां पहुंचता है। बैरागी बोल्या कि तुम त्रृगुटी के आगे कैसे और क्या साधन करके जाते हो ? वो तुम्हारा ज्ञान कैसा है ?

श्री सुखो वाच :- सुण बैरागी ज्ञान हमारो, राम शब्द को ध्याऊं।
कह सुखराम अजपो जाग्यो,उलट आद घर जाऊं ॥ ४६ ॥

म:फ: है कि हे बैरागी हमारा ज्ञान सुणो मैं सतगुरु विधि से राम को जपता हूं। सतशब्द की जागृति कर बंकनाल में उलटकर आद घर याने के: पद में जाता हूं। बैरागी बोल्या कि अजपा क्या होता है। राम शब्द ही सिंवरते है। तुम्हारा राम शब्द न्यारा है। वो राम कैसा है। सो कहिये।

श्री सुखो वाच :- बावन परे तीन गुण बारे, सुरत शब्द सुं न्यारो।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, सो सतशब्द हमारो॥ ४७॥

बावन अक्षरो, तीन गुण, सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण से अलग, सुरत शब्द से अलग है। म:फ: है कि हे बैरागी सुणो हमारा वो सतशब्द है।

रसना सेव थकी है मन की, जीव भजन सुं लागे।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, भरम हंस का भागे॥ ४८॥

म:फ: है कि सतगुरु विधि से सांस उसांस में रटणा करना ही रसना सेव, जब मन की गति थक जाती है। जीव भजन में लग जाता है तो हे बैरागी तब हंसो का भरम भागता है।

रसना सेव थकी जब मन की, जीव भजन सुं लागे।
कह सुखराम पारख वांकी, ध्यान सुखमण जागे॥ ४९॥

रसना से रटणा करने से मन की गति ढीली पड जाती है उसकी यही परीक्षा है कि उसका सुखमणा में घ्यान होने लग जाता है। बैरागी बोल्या कि यह तुम्हारा सत शब्द क्या है सो कहो।

श्री सुखो वाच : अरथा परे समझ के आगे, गम सेन के बारा।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, सो सत शब्द हमारा॥ ५०॥

अरथ से अलग समझ के आगे ज्ञान व सेन से बाहर, म:फ: है कि हे बैरागी वो हमारा सतशब्द है।

सोहं परे अजपे आगे, थके अनाहद लारा।
कहे सुखराम नाद सुं ही आगे, है सत धाम हमारा॥ ५१॥

स्वांसा से अलग मन से अलग अनहद से भी आगे नाद याने ब्रह्मण्ड के शब्द से आगे पूरब के रास्ते अनाहद में होता है। म:फ: है कि उससे भी आगे वो हमारा सत धाम याने के: पद है। बैरागी बोल्या तुम्हारा सत धाम कैसा है सो कहो।

श्री सुखोवाच :- चवदे धाम फेर इक्कीसुं, बेहद परे मुकामा॥
केह सुखराम तटा सुण आगे, केवल पुरूष को धामा॥ ५२॥

तीन ब्रह्म (परब्रह्म, शिवब्रह्म, चिदानन्द ब्रह्म) के तेरह लोक, जीव ब्रह्म के तीन लोक (स्वर्ग, मध्य, पाताल) तथा इनके आगे केवल पद है।

लोका परे भवन सुं आगे, ज्ञान ध्यान सुं ही बारा।
केह सुखराम सुणो बैरागी, वो सतवास हमारा॥ ५३॥

म:फ: है कि तीन लोक चवदह भवनों से आगे ज्ञान व ध्यान से अलग वो हमारा सतलोक है।

सुणने परे देखने आगे, सुरत दौड सुं बारा।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, वो सत शब्द हमारा॥ ५४॥

म:फ: है कि सुनने के परे देखने से आगे सुरत से भी अलग वो हमारा सतशब्द है। बैरागी बोल्या तुम्हारा सतशब्द कैसा है सो कहो।

श्री सुखो वाच : पांचा परे पचीसु आगे, रेण केण सुं न्यारा।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, वो सतशब्द हमारा ॥ ५५ ॥

म:फ: है कि पांच तत्व पचीस प्रकृति से आगे रहणी कहणी से अलग वो हमारा सतशब्द है।

पांचु बसे देह के आसे, देह पवन आधारा।
केह सुखराम पवन जिण टेके, सो सत शब्द हमारा ॥ ५६ ॥

म:फ: है कि शरीर पांच तत्व का है। शरीर स्वांसा के आधार पर है। जिसके आधार पर है वो ही हमारा सतशब्द है।

पवना रहे तके सुण टेके, सोई शब्द है उला।
कह सुखराम तटा लग सुमरे, सोई सकल नर भूला॥ ५७॥

म:फ: है कि श्वांस के आधार के जो शब्द है वो सब उली तरफ है। स्वांसा के आधार के शब्दों का जो साधन करते है। वो सब भूले हुये है।

जेता शब्द जीभ पर आवे, सुरत शब्द सुं जांणे।
कह सुखराम तटा लग माया, काचा सूत बखाणे॥ ५८ ॥

जितने भी शब्द जीभ के आधार से बोले जाते है। सुरत के आधार से जाने जाते है। म:फ: है कि वहां तक माया का पद है। उस सतशब्द के ज्ञान को नहीं जानने वाले जीव ही उनकी महिमा करते है।

पेला सुरत समझ में जांणे, सो रसना जन गावे।
कह सुखराम रटियां सुं साधो, परम पद जन पावे॥ ५९ ॥

पहले सुरत समझ से जाणे उसका रसना में सांस उसांस में भजन करे, जो लिखा हुवा है या बोलता है उसको तो समझते है। सांस उसांस में सुरत लगाकर भजन करने से सतशब्द जाग्रत होता है उसका अनुभव सुरत से होता है। ऐसे भजन करने से परम पद की प्राप्ति होती है।

डेहको मती साख सुण कोई, परम पद लिव मांही।
कह सुखराम रटन लिव आपे, ले परम पद जाई॥ ६० ॥

संतो की साखे सुनकर कोई मत बहको। परमपद की प्राप्ति लिव बंध भजन से होती है। तब परम पद की प्राप्ति होती है। म:फ: है कि रसना से रात दिन भजन करने से याने लग्न रखकर हर समय भजन करने से परमपद की प्राप्ति होती है।

आप थके सहज में कोई, तका बात है सांची।
कह सुखराम मन कर छाडे, सोई सरब बिद काची॥ ६१ ॥

भजन करते समय जब रसना बंद हो जाती है, मुंह बंद हो जाता है। ध्यान अवस्था में रहते है तब तक फिर ध्यान खुलने पर वापिस रसना चालू हो जाती है। वो सच्ची बात है। म:फ: है कि मन से भजन करना बंद कर देते है। वो सब विधि कच्ची है।

करता भजन थके जो मांही, सो सब थकने दीजे।
कह सुखराम भजन बिन मन सुं, अेको बात न लीजे॥ ६२ ॥

भजन करते करते जो भी थके उनको थकने दो। म:फ: है कि भजन के सिवास एक भी बात मन से धारण मत करो।

बुध में बुध सुध में सुध व्हे, तो चरचा कर आई।

कह सुखराम नहीं तो स्यामी, आगत लखी न जाई॥ ६३॥

जानकारी में जानकारी हो सुधी में सुधी हो तो उस विषय की ज्ञान चरचा करो। म:फ: है नहीं तो यह बात समझ में नहीं आती।

अरथा मांय अरथ ना जांणे, तो चरचा कर हल कीजे॥
कह सुखराम नहीं तो स्वामी, उलट जवाब नहीं दीजे॥ ६४॥

केवल ज्ञान के बारे में नहीं जानते हो तो ज्ञान चरचा कर हल कर ले, म:फ: हैं कि नहीं तो स्वामी जी जवाब मत दो।

आगे ज्ञान ज्ञान व्हे लारे, सो तो कोई न जांणे।
कह सुखराम गम से गम व्हे, सो कोई नेक पिछाणे॥ ६५॥

आगे पीछे का भी बता देवे यानि अवध ज्ञान हो तो भी कुछ नहीं जानता। केवल ज्ञान की गम करेगा तभी पिछाण करेगा।

पढ पढ ज्ञान अरथ सोई सिख्या, ताकूं या गम नांही।
कह सुखराम साध क्या जोगी, अरध उरध के मांही ॥ ६६॥

जो पढ पढ कर ज्ञान व अरथ सीखे है। उनको इस सतशब्द का ज्ञान नही है। म:फ: है कि चाहे साधु हो या जोगी सब स्वांसा के आधार से ही साधन करते है। स्वांसा से अलग नही हो सकते।

ज्यां कर भजन आत्मा चिनी, ब्रह्म खोज उर लिया।
कह सुखराम तके जन मिलता, रूम रूम हँस दिया ॥ ६७॥

जिन्होंने भजन कर आत्मा याने सुरत के आधार से शब्द का अनुभव होना ही ब्रह्म खोज उर लिया है। म:फ: है ऐसे साधन करने वाले मिलते है तब रोम रोम में खुशी होती है।

देशी मिल्या हरष से पारख, अेक साख के मांही।
कह सुखराम वदेश लख के, चुपक बोलिये नांही ॥ ६८॥

अेक सरिसा साधन करने वालों की परीक्षा वचन बोलते ही हो जाती है। दूसरे साधन करने वालों के कहने पर भी नही समझ में आती इसलिए उनको नही कहना चाहिये यही चुप रहना है।

देशी मिल्या काय की चरचा, खुशी मगन व्हे रेणा।
कहे सुखराम वदेश आगे, भांत भांत कर कहाणा ॥ ६९॥

अेक साधन करने वालों से क्या चरचा करना है यही खुशी मगन व्हे रेणा है। म:फ: है कि विदेश याने दूसरे साधन करने वाले को पूछने पर उनको भांती भांती से याने अलग-अलग कई तरह से समझाना पडता है।

जागत परे सपन गत आगे, तुरिया परे बखाण्यो।
कह सुखराम सुणो बैरागी, सो ही शब्द हम जाण्यो॥ ७०॥

जागृत अवस्था से परे, सपनों व तुरियां अवस्था से परे, जो सतशब्द का हर समय अनुभव होता है। म:फ: है उस सतशब्द को हमने जाना है।

जागत भजे नींद सुख मांही, सपने मांय लखावे।
कह सुखराम तहां लग माया, मेरे दाय न आवे॥ ७१॥

जागते में भजन करे नींद में सपने में भजन का सपना आवे। म:फ: है कि सब माया के देश में है मुझे पसन्द नही आता।

अस्टांग जोग जुगत कोई साधे, जप जाप कोई गावे।
कह सुखराम परम पद परस्या, अे कोई दाय न आवे॥ ७२ ॥

अष्टांग योग की साधना करे जप करे कोई गावे। म:फ: है कि जब परम पद की प्राप्ति हो जाती है तो यह कोई पसन्द नही आता। बैरागी बोला वो परम पद कैसा जिसका जवाब दो।

श्री सुखो वाच :- क्या अब जवाब कहूं बैरागी, तुम तो या मुज बूजे।
कह सुखराम परम पद ऐसा, परस्या बिना न सूजे ॥ ७३ ॥

हे बैरागी परम पद के वास्ते क्या कहूं तुम मुझे यहां पर पूछते हो, पर परमपद ऐसा है कि उस पद का अनुभव किये बिना नही सूजता।

रूप न रेख रंग नही वांके, अदभूत खेल कुवावे।
कह सुखराम सुणो बैरागी,कहयां भेद नही पावे ॥ ७४ ॥

न तो रूप है न रंग है वो तो एक अदभूत खेल है। म: फ: है कहने से उसका भेद नही मिलता।

परस्यां बिना प्रेम बिन बुज्या, समझ जवाब क्या देसो।
कह सुखराम कहूं मैं स्यामी, शब्द भेद किम लेसो ॥ ७५ ॥

परम पद की प्राप्ति किये बिना प्रेम से बुझे बिना समझ के क्या जवाब दोगे। म:फ: है कि आपको कहता हूं कि शब्द कैसे ले सकते हो।

मैं तो कहूं सुणी तुम सारी, ज्ञान भेद सब दिया।
कह सुखराम भेष तुम पेरया, क्या सही अब किया ॥ ७६ ॥

मैने तो सारी बात आपको कह दी, आपने सब सुणली, ज्ञान का भेद सब बता दिया । म:फ: है कि तुमने भेख धारण किया और क्या ज्ञान धारण किया है।

पेरयो भेष जगत ठग खायो, अंग कूं रहा फूलाई।
कह सुखराम भजन बिन दरगा, क्या कहोगे जाई ॥ ७७ ॥

भेष पहनकर जगत को ठगकर खाया है। शरीर को फूला लिया है। म:फ: है कि भजन बिना किये परमात्मा की प्राप्ति कैसे करोगे। बैरागी बोल्या कि कालूजी म: ने कहा है कि बाना बडा दयाल का, कंठी तिलक और माला। जम डरपे कालू कहे, भय माने भोपाला। कालूजी म: ने कहा है कि परमात्मा का बाना बडा है। वो कंठी तिलक व माला पहना है तो जमराज भी डरता है राजा भी भय मानता है।

श्री सुखो वाच : टीका टोप कंठी और माला, पेर मगन मत होई।
कहे सुखराम भजन बिन जंवरो, तोड ले जासी तोही ॥ ७८ ॥

म:फ: है कि तिलक कंठी माला पहनकर खुश मत होवो। सतगुरू विधि से भजन किये बिना काल की फांसी से नही बचेगा।

टोपी पाग जटा जुग मुण्डत, खट दरशण क्या लोई।
कहे सुखराम भजन बिन जंवरो, कारण रखे न कोई ॥ ७९ ॥

टोपी पाग पहनने वाले, जटा रखने वाले, मुण्डन कराने वाले, चाहे छ: दरशणी हो या संसारी

बिना भजन किये, जन्म मरण नही मिटता। यही जंवरो कारण रखे न कोई है। बैरागी बोल्या कि कंठी तिलक माला भगवा वसतर यह सब हरी का बाना है।

श्री सुखो वाच : हर के रूप रंग कुछ नांही, तुम बताओ बाना।
कह सुखराम झूंठ क्यों बोले, समझ चुप रहो छाना ॥ ८० ॥

परमात्मा का कोई रूप व रंग नही है। आप बाना बता रहे हो। म:फ: है झूंठ क्यों बोलते हो समझ कर चुप रहो। बैरागी बोल्या कि हां हर के रंग रूप कुछ भी नही है। परन्तु यह बाना लेणा है। सो उनकी सरण लियां की सेनाणी है।

श्री सुखो वाच : शरणे तिके भजन में राता, भेष पहरियां नांही।
कह सुखराम सुणो बैरागी, राम शकल के मांही ॥ ८१ ॥

जिन्होंने रामजी का शरणा लिया है वो भजन करने में रत है। भेख धारण नही करा। म:फ: है बैरागी सुणो रामजी तो सर्वव्यापक है।

साहिब बसे तन के मांही, बारे किणी न पाया ।
कह सुखराम सुणो बैरागी, गोत छोड क्यूं आया ॥ ८२ ॥

परमात्मा और आत्मा शरीर में ही है। परमात्मा को बाहर किसी ने नही पाया है। म:फ: है कि बैरागी तुम अपना गोत्र छोडकर साधु क्यों बने हो। बैरागी बोल्या सायब तन में बसता है तो मिलता क्यों नही है।

श्री सुखो वाच:- साहिब बसे तन के मांही, भजन किया सुं पावो।
कह सुखराम भेष तुम पेरयो, किस कूं जाय रिजावो।। ८३ ।।

परमात्मा शरीर में ही रहता है। सतगुरुविधि से भजन करने पर उसकी प्राप्ति होती है। म:फ: है कि तुमने यह भेष पहना है। इससे किसको प्रसन्न करते हो।

जो तुमको साहिब ही चाहिए, तो घर तज क्यूं भागा।
कह सुखराम राम तो सारे, ठाम ठाम सब जागा ॥ ८४ ॥

तुमको अगर परमात्मा की चाहना थी तो घर को छोडकर क्यूं आये हो। म:फ: है रामजी तो सर्वत्र सब जगह व्यापक है। बैरागी बोल्या कि हमने घर छोडया है सो करम और गरभ से डरते मोख जाने के वास्ते घर छोडकर यह बाना लिया है।

श्री सुखो वाच : जे तुम करम गरभ सुं डरिया, तो बाना क्यों धारे।
कह सुखराम मोख तो जाणो, भजन सांच के सारे ॥ ८५ ॥

तुम करमों व गरभ में आने से डरे थे तो भेष धारण क्यों किया है। म:फ: है मोक्ष की प्राप्ति भजन करने से व सतशब्द की जागृति होकर भजन पूरा करने से ही होती है। बैरागी बोल्या कि हम घर बार गोत्र कडूंबा छोडकर उसी का शरणा लिया है अब बाकी क्या रहा है।

श्री सुखो वाच : साहिब तिका जाग्या मेल्यो, सो जागा तज दिन्ही।
कह सुखराम न्याव ओ सुणयो, केत शरण हम लिन्ही ॥ ८६ ॥

परमात्मा ने जिस जगह भेजा था उस जगह को क्यों छोड दिया है। म:फ: है न्याव सुणो कहते है हमने परमात्मा की शरण ली है।

कर्ता हाथ बनाई चीजा, सो साहब को बानो।

कह सुखराम मिनख कर पेरे , सो गुण देह बखाणो ।। ८७ ॥

परमात्मा ने पंच तत्व का शरीर बनाया है वह परमात्मा का दिया हुआ बाना है, मनुष्य जो बाना पहनते हैं वो देही की रक्षा के लिये है।

हर को भेष राम को बानो, तो या देह कुवावे।
कह सुखराम सुणो बैरागी, सांग प्राणी ले आवे ॥ ८८ ॥

परमात्मा का भेष व रामजी का बाना तो यह शरीर कहलाता है। म:फ: है कि हे बैरागी सुणो सब तरह के सांग तो प्राणी ले आते है। यही प्राणी का सांग लाना है।

सब पहराण भेष सुण बानो, यो मन देह बणाया।
कह सुखराम सुणो बैरागी, राम भेष तन भाया ॥ ८९ ॥

सब तरह के भेष व बाना तो मन व शरीर की प्रसन्नता है। म:फ: है बैरागी सुणो रामजी का बनाया हुवा भेष तो यह शरीर है।

श्री बैरागी वाच : हम भेष लिया है जब लोग हमको हरीजन बोलते है।
दूसरे को तो हरीजन कोई नही बोलता।
श्री सुखो वाच : अब तुम भेष पहर हुवा हरीजन, कहो साहिब की बाता।
कह सुखराम कहां सु आया, कौन दिशा अब जाता ॥ ९० ॥

अब तुम भेष पहनकर परमात्मा के भक्त जन हुये हो तो परमात्मा की बातें कहो। म:फ: है कि तुम कहां से आये हो व किस दिशा को अब जाओगे।

श्री बैरागी वाच : हम ब्रह्म से आये है और उसी सायब से जाकर मिलेंगे।
श्री सुखो वाच : साहिब मिल्या के नांय गुसाई, कन आसा मुख डोलो।
कह सुखराम झूंठ नही कहणा, सांच शब्द मुख बोलो ॥ ९१ ॥

तुम्हे रामजी मिले है या नही मिले या आशा लगाये फिर रहे हो। म:फ: है कि झूंठ मत बोलना मुंह से सच्चे शब्द बोलो याने सत्य कहो।

बैरागी बोल्या : मिल्या राम हमारे तांई, सांसा रहया न कोई।
सुण सुखराम कहे बैरागी, हम और राम न दोई ॥ ९२ ॥

बैरागी ने कहा रामजी हम को मिल गये है। अब कोई दुख नही रहा। हे सुखराम सुण मैं और राम दो नही है।

श्री सुखो वाच : कहो आप कुण विध मिल्या, सो मुझ भेद बतावो।
कह सुखराम बाहिर कन मांही, कन ज्ञान करे हर गावो ॥ ९३ ॥

म:फ: है कि आप परमात्मा से किस तरह मिले यह भेद मुझे बतलावो। आप रामजी से बाहर मिले या अन्तर में या ज्ञान से परमात्मा की प्राप्ति मानते हो।

बारे मिले तिके नही मांनु, ज्ञान मुक्त नही यांरी।
कह सुखराम तन में मिलिया, सो विध कहो विचारी ॥ ९४ ॥

यदि परमात्मा से बाहर मिले तो मैं उसको नही मानता। ज्ञान से मोक्ष नही मिलता। म:फ: है कि शरीर में परमात्मा की प्राप्ति हुई है तो वह विधि मुझे बताओ।

कुण अस्थान खेचरी मुद्रा, कहां चाचरी जागे।

कहे सुखराम उनमुनी स्यामी, किसी देश में लागे ॥ ९५ ॥

किस स्थान खेचरीमुद्रा व चाचरी मुद्राये जाग्रत होती है। म:फ: है कि उनमुनि मुद्रा शरीर में किस जगह लगती है।

कहो भुचरी कहो चाचरी, कहो अगोचर सोई।
कह सुखराम खेचरी कहिये, कहां उनमुनि होई ॥ ९६ ॥

भुचरी चाचरी अगोचर मुद्रा के लिये कहो। म:फ: है कि खेचरी मुद्रा कहां लगती है व उनमुनि मुद्रा कहां लगती है। बैरागी बोल्या तुम ही कहो।

श्री सुखो वाच : मुख स्थान खेचरी मुद्रा, हिरदे भुचरी जागे।
कह सुखराम अगोचर नाभी, त्रृगुटी उनमुनि लागे ॥ ९७ ॥

सांस उसांस में मुंह से रटणा होती है तब ब्रह्म वैराट से सतशब्द को खेचरी मुद्रा खेच कर कंठ कंवल पर प्रगट करती है। हिरदे में भूचरी मुद्रा से ग्यान का प्रकाश होता है। नाभी में अगोचर मुद्रा से सब जगह सतशब्द अनुभव होता है। त्रिगुटी में उनमुनि मुद्रा से ध्यान समाधि लगती है।

मुद्रा जहां चाचरी जागे, अणभै ज्ञान प्रकाशा।
सगोचर समाद पहुंचे, द्वार दसवां बासा ॥ ९८ ॥

जहां चाचरी मुद्रा जाग्रत होती है वहां अणभै ज्ञान का प्रकाश होता है। दशवें द्वार में समादी में पहुंचता है, वहां सगोचर मुद्रा जाग्रत होती है।

मन खेचरी चित चाचरी, सांच भुचरी होई।
कह सुखराम उनमुनि सांसा, तत अगोचर लोई ॥ ९९ ॥

मन से ज्ञान करने पर खेचरी, चित से चिन्तन करने पर चाचरी, स्वांस उस्वांस में भजन करने से उनमुनि मुद्रा, शब्द ब्रह्म का अनुभव होना अगोचर मुद्रा है।

ज्ञान खेचरी अरथ चाचरी, समझ भुचरी जाणो।
कह सुखराम अगोचर लिव है, तलब उनमुनि ठाणो ॥ १०० ॥

ज्ञान करना खेचरी, अरथ करना चाचरी, समझ में आना भुचरी, लीव लगना अगोचर व तलब लगना उनमुनि मुद्रा है।

भजन खेचरी ध्यान उनमुनि, सुरता अगोचर गावुं।
कह सुखराम चाचरी बिरह, भरम भुचरी ढावुं ॥ १०१ ॥

भजन करना खेचरी, ध्यान होना उनमुनि, सुरत जाग्रत होना अगोचर, बिरह आना चाचरी, भरमों का नाश भुचरी मुद्रा से होता है।

जवाब खेचरी प्रश्न चाचरी, समझ भुचरी जाणो।
कह सुखराम पांचवी सरवण, चख उनमुनि ठाणो ॥ १०२ ॥

जवाब देना खेचरी, प्रश्न करना चाचरी, समझना भुचरी, म:फ: है कि कानो से सुनने पर पांचवी मुद्रा अगोचर व आंखो से देखना उनमुनि मुद्रा लगना है।

मुद्रा पांच चित कर साजे, सो जोगी हर पावे।
कह सुखराम परम पद परसे, उलट आद घर जावे ॥ १०३ ॥

इन पांचो मुद्रा की चित लगाकर साधन करते है वो जोगी है, उन्हें ही परमात्मा की प्राप्ति होती

है। म:फ: है वे सतशब्द के साथ बंकनाल में उलटकर के: पद आ:पद की प्राप्ति करते है।

ये मुद्रा श्यामी मैं भाखी, भांत भांत कर सारी।
कह सुखराम सुणो बैरागी, पांच फेर है न्यारी ॥ १०४॥

ये मुद्रा सब अलग अलग मैने तुमको बताई है। म:फ: है कि हे बैरागी पांच मुद्रा और अलग है।

ज्यांरी ममता मांय मुई है, ज्ञान पूत सो जाया।
कह सुखराम पांच ये मुद्रा, सोई लखेंगे भाया ॥ १०५॥

जिनके ममता रूपी माता मरी है और ज्ञान पूत जाया है याने जिन्हें सतशब्द का ज्ञान प्राप्त हो गया है। म:फ: है कि वे इन पांच मुद्रा का अनुभव करेंगे।

अब मैं कहूं सुणो बैरागी, अरथ आप ओ कीजे।
कह सुखराम कंवल है केता, समझ जवाब यो दीजे ॥ १०६॥

म:फ: है कि बैरागी शरीर में कितने कंवल है समझकर बताओ।

कहो सब कंवल पांख सब बरणो, धाम बतावो सारा।
कह सुखराम नही तो श्यामी, छोडो भेष तुम्हारा ॥ १०७॥

सब कंवलो की कहो उनकी पांखो का वर्णन करो व कंवलो के स्थान बताओ। म:फ: है कि नही बता सकते हो तो हे श्यामी जी इस भेष को छोडो।

कोण बात सुं मोख पहुंचे, कहा किया हर रीजे।
कह सुखराम सुणो बैरागी, जवाब भेद यो दीजे ॥ १०८॥

कौन साधन करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है, क्या करने से परमात्मा प्रसन्न होते है। म:फ: है कि बैरागी सुणो भेद सहित इसका जवाब दो। बैरागी बोल्या तुम ही कहो।

श्री सुखो वाच : लिव बंध भजन मोख कूं पहुंचे, सांच कमाया रीजे।
कह सुखराम सुणो बैरागी, भेद नांव रट लीजे ॥ १०९॥

लिव बन्ध भजन होने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है, सतशब्द की जाग्रति होने पर परमात्मा प्रसन्न होते है। म:फ: है कि हे बैरागी सुणो सांस उसांस में राम का भजन करना ही भेद से नाम रटना है।

पहेरीया भेख भेद ले श्यामी, कोण पहर पद पाया।
कह सुखराम अरथ यो दीजे, पछे ज्ञान कर भाया ॥ ११०॥

जो तुमने भेष पहना है क्या भेद लेकर पहना है, बिना भेद के भेष पहन कर किसने परम पद की प्राप्ति की। इसका अरथ बतावो, पीछे ज्ञान चरचा करो।

पेहरियो पछे भेद जो पायो, तो भंवता क्यों भाया।
कह सुखराम पेल ज्यो समज्यो, तो काय गोत तज आया ॥ १११॥

भेख लेने के बाद परमात्मा की प्राप्ति का भेद मिल गया तो अब जगत में क्यों फिरते हो। म:फ: है कि भेख लेने से पहले भेद मिल गया तो गोत छोडकर भेष क्यों पहना ?

भेष पहल तो भेद मिला था, तो क्यों कुल को छिटकाया।
कह सुखराम पछे जो समज्या, तो काय भंवे जुग भाया ॥ ११२॥

भेख लेने से पहले भेद मिल गया तो कुटुम्ब को क्यों छोडा। म:फ: है कि भेख लेने के बाद

भेद समझे हो तो अब क्यों फिरते हो। बैरागी बोल्या तुम ही कहो।

श्री सुखो वाच : समज्या पछे भेषजु पहरयो, मांग खावण के तांही।
कह सुखराम जगत में डोल्या, मोहो लगे जग नांही॥ ११३॥

समझ आने के बाद भेष तुमने मांग खाने के लिये पहना है। म:फ: है कि जगत में फिरते हो और कहते हो कि जगत से मोह नही करते। बैरागी बोल्या हमने मांग खाने कूं भेष नही लिया है। लोगो को परम पद का भेद बताते फिरते है। संसार का मोह लगने के डर से हम नही फिरते है परम पद के वास्ते हमने भेष लिया है।

श्री सुखो वाच : सुण बैरागी बात हमारी, परम भेद कहे भाई।
कह सुखराम नही तो स्यामी, उठिया राम दुहाई ॥ ११४॥

म:फ: है हे बैरागी मेरी बात सुणो, परम पद का भेद कहो, नही तो यहां से उठकर जावोगे तो तुम्हे रामजी की सोगन है।

मंत्र सुक्ष्म कहो बैरागी, के गृहस्थ हो जावो।
जन सुखराम ज्ञान से बूझे, नांव को नांव बतावो ॥ ११५॥

सुक्ष्म मंत्र किसे कहते है। यह बतावो या गृहस्थ हो जावो। म:फ: है मैं आप से पूछता हूं कि नांव का नांव किसे कहते है। बैरागी बोल्या तुम ही कहो।

श्री सुखो वाच : सुक्ष्म मंत्र सांस दम मांही, बिन जिभ्या मन जाणे।
कह सुखराम द्वादस ऊपर, पूरा सन्त पिछाणे ॥ ११६॥

सुक्ष्म मंत्र याने सतशब्द सांस उसांस में भजन करने से प्रगट होता है। सुरत के आधार पर अनुभव होना बिना जिभ्या के कहा है। उसको मन जानता है, म:फ: है कि बारह कंवलों के ऊपर जाकर पहुंचे हुये सन्त ही उसका अनुभव करते है।

राम नांव को नांव कहिजे, कन साध पद छाडो।
कह सुखराम पवन किण टेके, सोज अरथ सो काढ़ो ॥ ११७॥

राम नांव को नांव कहो नही तो साध पद छोडो। म:फ: है स्वांसा किसके आधार पर है। सोजकर इसका अरथ बतावो।

राम नांव को नांव सांस है, पवन सुरता के टेके।
कहे सुखराम सुणो बैरागी, सुरता परे हर देखो ॥ ११८॥

राम का नांव तो स्वांसा के आधार पर है। स्वांसा सूरत के आधार पर है। म:फ: है सुरत के परे के:पद आ:पद है।

पवन बिना शब्द है केता, पुरूष कहो बिना पाणी।
कह सुखराम भेद यो दीजे, पछे कथो तुम बाणी ॥ ११९॥

स्वांसा के बिना कितने शब्द है, बिना पाणी के कितने पुरूष है। म:फ: है इसका भेद बताओ। पीछे ज्ञान चर्चा करो। बैरागी बोल्या तुम ही कहो।

श्री सुखो वाच : पवन बिना शब्द है दोई, सात पुरूष बिन पाणी।
कह सुखराम सुणो बैरागी, परम पद वांसु पेला परे पिछाणी ॥ १२०॥

स्वांसा के बिना दो शब्द बिना पाणी के सात पुरूष है म:फ: है परम पद इनसे पेली तरफ है

इसको पहचानो।

कुण कुण शब्द पवन बिन कहिये, किसा पुरूष बिन पांणी।
कह सुखराम सुणो बैरागी, वे तो तत पिछाणो ॥ १२१ ॥

कौन कौन से शब्द स्वांसा के बिना है। कौन पुरूष बिना पाणी के है। म:फ: है कि हे बैरागी उन तत्वो को पहचानो। बैरागी बोल्या तुम ही कहो।

श्री सुखो वाच : उलटर चढे अनाहद गरजे, बाय बिना ये कुवाया।
कह सुखराम परम पद यांसु, आठ मंजिल है भाया ॥ १२२ ॥

जो सतशब्द उलटकर चढता है, अनाहद गरजता है, वो स्वांसा से अलग है। म:फ: है कि परम पद इससे आठ मंजिल आगे है याने पांचो विषय रस त्रीताप आठ मंजिल है याने ये भक्ति करने में नही सताते है तो सता समाधि है और परम पद में मिल जायेगा।

अवगत सुन्न मुन्न सुण वायु, तेज निरंजण जाणो।
कह सुखराम बीज बिन जल है, अे पुरूष सात बखाणो ॥ १२३ ॥

अवगत, सुन्न (शब्द), मुन्न (आसमान), तेज, निरंजण, हवा पानी के बीज नही है, ये सात पुरूष है।

और कहूं फेर में श्यामी, कण पूछण सू धाया।
कह सुखराम अगम के आगे, खोज खबर मैं लाया ॥ १२४ ॥

हे श्यामी मैं फेर कहूं या पूछने से धाप गये हो। म:फ: है अगम के आगे की खबर मैं लाया हूं। बैरागी बोल्या क्या पूछना है।

श्री सुखो वाच : सोगन तुम्हें दुहाई गुरु की, कसर राखो मत कांई।
कह सुखराम बूज फिर श्यामी, काय शिष्य हो जाई।। १२५।।

तुम्हे गुरु की सोगन है। पूछने की किसी तरह की कसर मत रखो। म:फ: है कि श्यामीजी फिर पूछो या शिष हो जावो। बैरागी बोल्या तुम यह जो कहते हो सो सांच क्या परस के मानणा।

श्री सुखो वाच : तन मन खोज देख ले वारे, अखण्ड जोत है वांकी।
कह सुखराम समज बिन श्यामी, रूलि बात क्यूं भाखी ॥ १२६ ॥

तन मन से लगाकर अनुभव करले, सतशब्द का अखण्ड अनुभव होता है, वो ही अखण्ड जोती है। म:फ: है कि समझ के बिना फालतू बात क्यों कहते हो। बैरागी बोल्या हमने बाना लेकर के भेष लिया है सो इस बाने की लाज उसी को है।

श्री सुखो वाच : श्यामी सांग भेद बिना अेसो, ज्युं सेमल बोहो फूले।
कह सुखराम फेर मैं भाखूं, जगत काल में डोले ॥ १२७ ॥

हे श्यामी बिना भेद सांग इस तरह का है जैसे सेमल फूलता है। म:फ: है कि मैं कहता हूं कि सारा जगत जन्म मरण में आ जा रहा है।

कोरो भेष पेहरियो क्या व्हे, धन बिना बोहरा नांही।
कह सुखराम पार को बिरजे, जगत ठगन के तांई ॥ १२८ ॥

खाली भेष पहनने से क्या होता है बिना धन कोई बोहरा नही होता। म:फ: है कि दूसरो का ज्ञान सुण व सीख सीख कर बोलने वाला जगत ठगने के लिये कहता है। बैरागी बोल्या कि मैंने

भेष लिया है सो हमारा कारज तो अपने आप ही हो जायेगा जैसा कि आगे संतो और भक्तो का हुआ है वैसा ही हमारा भी हो जायेगा।

श्री सुखो वाच : श्यामी गरज भेद सुं सरसी, सांग धार बहु तेरा।
कह सुखराम नांव बिन कोई, लंघे पार नही चेरा ॥ १२९ ॥

हे श्यामीजी परमात्मा की प्राप्ति का भेद जानने से कार्य होगा, चाहे कितने भेख धारण कर लो। म:फ: है कि निज नांव का भजन किये बिना भव सागर से पार नही हो सकते।

अरेल : मांही बाहिर अेक होय नही जाणिये, ज्यां अंतर व्हे चाय बाहिर सुं आंणिये।
तेती करे उपाय माहे के लेण रे, कह सुखदेवजी झूंठ नही कहण रे ॥ १३० ॥

बाहिर नाम व अन्दर का नाम अेक नही हो सकता। जो चाहना हो तो बाहिर के नाम को अन्दर में प्रकट करना पडता है। वही उपाय याने साधन करे जिससे बाहर का नाम अन्दर में प्रगट हो जाय। म:फ: है कि इसमें कोई झूंठ बात नही है।

मून गहया क्या होय मन में घात है, नैल हुवो धर ध्यान मच्छी चुग खात है।
साखी शब्द लिखाय बांच क्या पाय रे। हरहां बिन सिमरण नरक में जाय रे ॥ १३१ ॥

मौन धारण से क्या होता है, मन से कई प्रकार के स्वार्थ का विचार करना ही घात है। बगुला पानी के किनारे एक पांव से खडा रहकर ध्यान धरता है। परन्तु मच्छी आते ही निगल जाता है। साखी शब्द लिखाकर बांचने से क्या मिलता है। म:फ: है कि बिना भजन किये नरक में जाना पडता है।

साखी शब्द लिखाय, ज्ञान बहु सीखिया, अब मारो पुस्तक कांख, जगत में भीखिया।
दे दे औरा कूं ज्ञान, आप विष खाय है। हरहां सो कपटी सुखराम, नरक में जाय है ॥ १३२ ॥

साखी शब्द लिखकर बहुत ज्ञान सीख लिया है अब बगल में पुस्तक दबाकर जगत में भीख मांगते है, वे दूसरो को ज्ञान देते है, आप धारण नही करते, यही विष खाना है म:फ: है वे कपटी नरक में जाते है।

फिर फिर सीखे साख अडण के काज रे, नही भगत की चाय नरक की लाज रे।
सुण ज्ञानी बेईमान जग में जांणिये, हरहां वांसु सुण सुखराम प्रीत नही ठांणिये ॥ १३३ ॥

जो साखे सीख सीखकर वाद विवाद करते है उनको भक्ति करने की इच्छा नही है और नरक में जाने की शर्म नही है। इस तरह के ज्ञानी जगत में बेईमान है। म:फ: है कि उनसे प्रेम नही करना चाहिये।

खूब बणायो भेष ग्यान बहु सीखिया, के तीरथ किया अनेक धाम बोहो भीखिया।
सब सुध लीवी सोध नांव दिश पूठ है। हरहां तब लग कह सुखराम सरब विध झूंठ है ॥ १३४ ॥

बहुत अच्छा भेष बनाया है, बहुत ग्यान सीखा है। अनेक तीर्थो की यात्रा की है। बहुत धामों पर भटके है। सब विध सोध ली है लेकिन भजन नही करते यही नांव दिस पूठ है। म:फ: है कि भजन किये बिना सब ही विधि झूंठ है।

ओ मोसर दिन आज ब्होर नहीं पाय रे, चेत सके तो चेत राम गुण गाय रे।
फेर रहे लो पछताय तन यो छूटसी, हरहां बिन सिवरण सुखराम जम तोय लूटसी।। १३५ ।।

मनुष्य शरीर मिला है यह आज है फिर नहीं मिलेगा। यदि चेत सकते हो तो चेतो और रामजी

का भजन करो। शरीर छूटेगा तब पछतायेगा। म:फ: है कि भजन किये बिना बार बार जन्मना मरना पडेगा।

चलत नही दिसे नांव बधती देह रे, जात न दिसे आव भरन्ती खेह रे।
आई भजन की रीत साध की बात है। हरहां बिन सतगुरू सुखराम लखी नही जात है ॥ १३६ ॥

पानी में चलती हुई नाव चलती हुई नही दिखती, शरीर बढता हुआ नही दिखता, आयु जाती हुई नही दिखती। रंज बाहर से आ आ कर कमरे में भर जाती है वो आती हुई नही दिखती। ऐसी बात भजन करने वाले साधुओं की है जो रात दिन हर समय भजन करते रहते है। म:फ: है कि बिना भजन करने वाले सतगुरू का ज्ञान धारण किये बिना उनकी बात अनुभव में नही आती। यह लखी न जात है।

छोड जगत को नेह निरंजण गाय रे, बिन भक्ति नर चेत चौरासी जाय रे।
तुज जन्म जन्म दुख होय पार नही पावसी,
हरहां बिन सिमरण सुखराम धक्का बोहो खावसी ॥ १३७ ॥

जगत का मोह छोडकर भगवान का भजन करो, बिना भजन किये हे मनुष्यो चौरासी में जाना पडेगा, जिस योनी में जायेगा वहीं दुख पाना पडेगा। उस दुख का थाह नही है। म:फ: है कि बिना भजन किये नरकों व चौरासी का दुख भोगना पडेगा, यही धक्का खाना है।

बालक हुवो जवान तबे सब मानसी, गया किराडे नांव हरक सब जानसी।
युं जन को संसार लार सुं मानसी, हरहां देह छता सुखराम भेद यो जांणसी ॥ १३८ ॥

बालक जब जवान हो जाता है तब सब उसकी बात मानते है। नांव बीच मझधार से किनारे लग जाती है तब सर्व हर्ष मनाते है। ऐसे ही ओधाधारी सदगुरू जब इस संसार से चले जाते हैं तब पीछे से उनको मानते है। म:फ: है कि वो सशरीर रहते जब ही उनसे भेद को जान लो।

कुण्डलिया : चरचा में सुखराम कह, जे जन माने रीस। सो नुगरो गुरू बाहेरो,
मूरख बिस्वाबीस। मूरख बिस्वाबीस, ढोर सुं ही ढोर कहावे।
जो ज्ञान करत के मांय, उठ मुरडायर जावे॥ सो नर नरकां जावसी,
सिंवरत ही जगदीश। चरचा में सुखराम कह, जे जन माने रीस ॥ १३९ ॥

म:फ: है कि जो संत ज्ञान चरचा करने में क्रोध करते है वो नुगरे बिना गुरू के बीस ही बिस्वा मूर्ख है। जानवर कहाने योग्य है। जो ज्ञान की चर्चा करते हुए मुंह मोडकर जाता है वो मनुष्य भगवान का भजन करते हुये भी नरक में जाते है।

॥ इति श्री सुखरामजी महाराज और बैरागी का संवाद सम्पूर्ण ॥

卐 सतगुरु मेहर का अंग 卐

कुण्डलिया : मन रिज्या से ना बणे, ना मुख कहिया जोय। ओ अरथ दिठो तोल हम,
लाख द्वाही मोय ॥ लाख द्वाही मोय, निज मन रिज्या भाई। बणे शिष में रीत,
और सब भरम उपाई ॥ सुखराम कहे मो बस नही,
निज मन न्यारो होय। मन रिज्या से ना बने, ना मुख कहिया जोय ॥ १ ॥

गुरू महाराज का मन राजी होने से व उनके मुखार बिन्द के कहने से सतशब्द जाग्रत नही होता यह अरथ मैने देखा है। मैं लाख सौगन खाकर कहता हूं गुरु का निज मन याने सतगुरू सुखराम जी का आत्म चेतन याने अणभै ग्यान रिजने पर ही शिष्य में सता की जागृति होती है और तो सब भरमों का ऊपाय है। म:फ: है कि वह मेरे वश में नही है। निज मन अलग है, मन राजी होने से तथा न मुंह से कहने से सता की जागृति होती है।

जो रिजावे सतगुरू, शिष ज्यों त्यों कर आंणी, तो घट जागत नांव,
बार नही लागे प्रांणी ॥ तिणे मेहर लग बात, अरथ रिजर मन लावे।
उण पल पलक विचार, बीज केवल घट आवे॥ सुखराम कहे कारण नही,
मुख केणो को होय। निज मन रिज्या मेहर रे, तुरत शिष पर होय ॥ २ ॥

शिष्य गुरू महाराज के बताये मुजब ज्ञान धारण करे तो शिष्य के घट में सतशब्द की जागृति होने में देर नही लगती। गुरू महाराज के ज्ञान को निज मन से धारण करे तो उसी समय शब्द की जागृति हो जाती है। म:फ: है कि मुंह से कहने का कोई कारण नही है। सतगुरू का निज मन राजी होने पर शिष्य पर तुरन्त कृपा हो जाती है।

निज मन तो रिज्या नही, रीत सो तुम्हे बतावुं। सुणज्यो सब नर नार, हांक चौडे दे जावुं॥
धन दे लाख करोड़, मुल्क कोई मोय चढावे। करे टेल बोहो भांत, मन मांगे सो लावे॥
नागो होय नाचे सदा, जुग की लज्जा खोय। यां लग तो सुखराम कह, नही रिजे मन जोय ॥ ३ ॥

सब स्त्री पुरूष सुणो इस ज्ञान को मैं चोडे बताता हूं कि सतगुरू का निज मन प्रसन्न नही हुआ उसकी रीति मैं तुम्हे बताता हूं। गुरु म:फ: है कि कोई लाखो करोडो का धन देवे, कोई मुल्क भेंट कर दे। सब तरह से सेवा करे, जो मन मांगे वो ही लाकर देवे। जो गुरू महाराज फरमावे वो काम किसी की शरम न रखते हुये करते रहे, इतना करने पर भी म:फ: है कि यहां तक तो सतगुरू की मेहर नही होगी।

<u>कुण्डलिया</u> : तन मन धन अरपण करे, कुल छाडर संग होय। बहो लघुताई बिणती,
केही बतावे मोय। केही बतावे मोय, तहां लग रिजु नांही।
अे मेरे बेकाम, कोण विध रिजु मांही॥ सुखरामदास नही रिजसी,
या लग निज मन जोय। तन मन धन अरपण करे, कुल छाडर संग होय ॥ ४ ॥

तन मन धन अरपण करके कुटुम्बियों को छोडकर साथ हो जाय, बहुत तरह से नम्रता व प्रार्थना करता रहे, तो भी मेरा निज मन खुश नहीं होता। यह मेरे ज्ञान की प्राप्ति होने में बेकाम है। इनसे मैं कैसे खुश हो सकता हूं। म:फ: है कि इन बातों से मेरा मन नही रिजता।

बाता से मन रिजसी, धन दिया तन जोय। पांचु इन्द्रियां आत्मा, अे चावे कहूं तोय।
गरज जांसु जो रिजे। बिना चाय की चीज, देख अन्तर नही भिजे॥
सुखराम कहे धनमाल की, मेरे गरज न कोय। बाता से मन रिजसी, धन दिया तन जोय ॥ ५ ॥

बातो से मन राजी होता है, धन देने से शरीर राजी होता है, इन चीजों को पांच इन्द्रियां व आत्मा चाहती है। जो चीज जिसके काम आती है वो उससे ही राजी होता है। बिना चाहना की चीज को देखकर उसको लेने की इच्छा नही होती। म:फ: है कि ज्ञान रूप से मेरे को धनमाल की जरूरत नही है।

मैं रिजु इण बात सुं, सुण लीज्यो नर नार। मेरा होय मोको मिले, तो पावे दीदार॥
तो पावे दीदार, निज मन सुंपो लाई। तब प्रगटे तत मांय, अखण्ड नख चख बिच आई॥
सुखराम कहे इण रीत बिन, हंस न उतरे पार। मैं रिजु इण बात सुं, सुण लीज्यो नर नार ॥ ६ ॥

मैं इस तरह खुश होता हूं सब ही स्त्री पुरूष सुणो, मेरे ज्ञान को निज मन से धारण करने पर ही जो गुरू का सरूप सतशब्द वो प्रगट होता है यही दरशण होना है। निज मन से ज्ञान धारण करने पर दर्शन होता है। इसको सौंपना कहा है। तब वो सतशब्द नख से चख तक सारे शरीर में अखण्ड अनुभव होने लगता है। म:फ: है कि इस तरह सतगुरू का ज्ञान धारण किये बिना हंस संसार रूपी समुद्र से पार नही हो सकता ।

जिण जिण को तुं होवसी, सोई सुण परसण होय। आई रीत अनाद सुं,
कह समझावुं तोय ॥ कह समझावुं तोय, हाथ तेरे सब होई ।
जो चावे सो चीज, पकड प्रगट कहूं तोई॥ सुखराम कहे मां बाप रे,
तीजा गुरू कहूं तोय। जिण जिण को तुं होवसी, सोई सुण परसण होय ॥ ७॥

जिस जिस की तुम भक्ति करोगे ज्ञान धारण करोगे उसी पद की प्राप्ति होगी, यही प्रसन्न होना है। यह अनादि से रीति है। यह मैं तुझे कहकर समझाता हूं। यह सब तेरे अखत्यार है। जैसा पद की प्राप्ति करना चाहो वो ही ज्ञान धारण कर लो। म:फ: है कि एक तो माया का पद है। दूसरा ब्रह्म का पद है। तीसरा गुरूपद है जिस की प्राप्ति का ज्ञान धारण करेगा उसी पद की प्राप्ति हो जायेगी।

कवित : मां से राखे हेत, मांय रिजे सुण भाई। भोजन देवे ल्याव, ब्याव कर सेज बिछाई॥
पिता पत जो होय, बचन लोपे नही कोई। तो धन देवे माल, किसब अपणो कहूं तोई॥
सुखराम दास गुरूपत गहे, देवे ज्ञान बताय। मांय बाप दोनो तजे, तब सिर मुंडयो जाय ॥ ८॥

माता से हेत करने से माता राजी होती है। भोजन कराती है, ब्याव होने पर बिस्तर बिछा देती है। ऐसी ही माया की भक्ति से माया के फलों की प्राप्ति होती है। पिता की आज्ञा में रहता है। पिता अपना धनमाल व अपना व्यौपार सौंप देता है, ऐसे ही ब्रह्म की भक्ति करने वालों के सिद्धियां जाग्रत हो जाती है। म:फ: है कि गुरू की आज्ञा में रहे और भाव करे तो गुरू ज्ञान दे देते है। ऐसे ही गुरू पद की पारब्रह्म परमात्मा के निज नाम की भक्ति करते है तो गुरू पद के:पद आ:पद की प्राप्ति हो जाती है। माया ब्रह्म के पद से सतशब्द के साथ अलग होने पर ही गुरू पद की प्राप्ति होती है। यही मांय बाप दोनो तजे तब सिर मुंडयो जाय है।

कुण्डलिया : माता रिजे वचन सुं, पिता काम से जोय। गुरू रिजे भै भीत मन,
ज्ञान कहे कहूं तोय॥ ज्ञान कहे कहूं तोय, अेहे बिध मेरी भाई।
तेरी तेरे हाथ, समझ कर पकडे आई॥ सुखराम कहे यूं कुल तजे,
तब बैरागी होय। माता रिजे वचन सुं, पिता काम से जोय ॥ ९॥

माता तो वचनो से राजी होती है, पिता काम करने से राजी होते है, गुरूकृपा गुरू का भय मन में हर समय रखने से होती है, जब ही ज्ञान प्राप्त होता है। माया की भक्ति सेवा पूजा व मंत्रो द्वारा होती है। पर ब्रह्म की भक्ति ज्ञान व ध्यान के द्वारा होती है। सतगुरू की भक्ति विज्ञान के द्वारा होती है। चौरासी में आने जाने का डर होने से ही विज्ञान का साधन करते है। यह भयभीत मन से गुरू का रीजना है यही मेरी विधि है। तुम्हारी तुम्हारे हाथ है। जिस पद को तुम्हे प्राप्त करना है वो ही

भक्ति करो। म:फ: है कि माया ब्रह्म की भक्ति छोडने पर ही गुरू पद की भक्ति होती है। यही कुल छोडकर बैरागी होना है।

जो जिनको नर होवसी, तामें मिलसी जाय। और जात में किम मिले, बाता करके आय॥
बाता करके आय, राछ कोई पीछ ले आवो। यूं गुरू पासे ज्ञान सुण, अपणे घर जाओ॥
सतगुरू कृपा तब बणे, निज मन सुंपे लाय। जो जिनको नर होवसी, तामें मिलसी जाय ॥ १० ॥

जो मनुष्य जिनकी भक्ति करेंगे उनको उसी पद की प्राप्ति होगी। करणी करम करने से परमपद की प्राप्ति नही होती और जात में किम मिले बाता करके आय है। करणी करम करने से फलो की प्राप्ति होती यही राछ पीछ लाना है। इसी तरह ज्ञान सुनकर घर चला जाता है। धारणा नही करता। निज मन से सतगुरू का ज्ञान सुनकर घर चला जाता है। धारण नही करता। निज मन से सतगुरू का ज्ञान धारण करने पर ही परमपद मिलता है याने गुरूपद की प्राप्ति होती है।

जल हुवा जल में मिले, झाल हुवा झाल मांय। धरणी होय धर में मिले,
पवन हुवा पख जाय॥ पवन हुवा पख जाय, जात में जाती मावे।
या विध आद अनाद, ब्रह्म माया लग कहावे॥ सुखराम कहे यूं समझकर
निज मन सुंपो लाय। जल हुवा जल में मिले, झाल हुवा झाल मांय ॥ ११ ॥

जल जल में मिलता है, अग्नि अग्नि में मिलती है, धरती के बने हुये मकान धरती के पदार्थो के बनते है व गिरते है तो धरती में मिलते है। हवा हवा में मिलती है जो जिस जाति का होता है वो उस जाति में ही रहता है। यह विधि आद अनादि से है। सब ब्रह्म माया की भक्ति करते है। म:फ: है कि इस तरह समझकर निज मन सुंपो लाय याने गुरूपद की प्राप्ति करो।

गुरू का होय गुरू में मिले, तांका अे अंग होय। सत सरूप के जोग बिन,
और इस्क नही कोय॥ और इस्क नही कोय, रात दिन या मन मांही।
उलट चढूं आकाश, प्रेम उर मावे नांही॥ सुखराम हेत या रीज सुं,
कल बिन पडे न मोय। गुरू का होय गुरू में मिले, तांका अे अंग होय ॥ १२ ॥

गुरूपद की भक्ति करके गुरूपद में मिलने वालों के ये अंग है। सतसरूप की प्राप्ति की इच्छा के सिवाय और कोई इच्छा नही है, रात दिन मन में यही लगन रहती है। बंकनाल के रास्ते होकर ऊपर चढूं ऐसा प्रेम हृदय में नही समाता है। म:फ: है कि इस रीति के बिना उन्हे चैन नही पडता है।

सतगुरू के अंग शिष चले, और न माने ज्ञान। सरब ज्ञान इनका किया,
क्या मैं धर सुं ध्यान॥ क्या मैं धर सुं ध्यान, बुद्ध अेसी जब आवे।
सो हंस गुरू को होय, सोज यो पत संभावे॥ सुखराम कहे सतस्वरूप की,
तब कृपा हुवे आन। सतगुरू के अंग शिष चले, और न माने ज्ञान ॥ १३ ॥

सतुगुरू जो ज्ञान बतावे उस माफिक ही साधना करे, दूसरा ज्ञान न माने। सरब ज्ञान सतगुरू याने परमात्मा के बनाये हुये है उनके सिवाय मैं किसका ध्यान करूं। जब साधन करने वालों की ऐसी बुद्धि होवे, वो हंस गुरूपद की प्राप्ति करता है। म:फ: है कि जब ही सतगुरू व सतसरूप की उसके उपर कृपा होती है।

केश बराबर आंतरो, जे हंस राखे कोय। तो या किरपा ना बणे, ऐसी कुदरत होय॥

ऐसी कुदरत होय, निज मन माने नांही। कपट लिया आधीन, ताय घर जावे नांही॥
सुखराम कहे पच पच मरो, गरज सरे नही कोय। केश बराबर आंतरो, जे हंस राखे कोय ॥ १४॥

सतगुरू का ज्ञान धारण करने में कोई तरह की कसर नही रखना ही केश बराबर आंतरा नही रखना है। यदि ज्ञान धारण करने में जरा सी भी कमी रहती है तो सतशब्द जागृत नही होता। इस तरह का इसका नियम है। कसर रखने पर सतगुरू का निज मन राजी नही होता। कपट रखकर आधीन होने पर भी सतशब्द जागृत नही होता, चाहे जितनी मेहनत करो, कार्य सिद्ध नही होता।

अंतर छाड गुरू सुं मिले, भावे जिण विध आय। तो कारण कुछ ना रहे,
कला प्रगटे जाय॥ कला प्रगटे जाय, सांच सतगुरू मन भावे।
गुरू बिच अन्तर होय, सोई शिष झूंठ कहावे॥ सुखराम कहे सतगुरू मिल्या,
नांव परगटे मांय। अंतर छाड गुरू सुं मिले, भावे जिण विध आय ॥ १५॥

चाहे जैसे हो निज मन से सतगुरू का ज्ञान धारण करे तो फिर सतशब्द जागृत होने में किसी तरह की कमी नही रहती। निज मन से ज्ञान धारण करने पर ही सतगुरू प्रसन्न होते है ज्ञान धारण करने में कसर रखने वाला शिष झूंठा है। म:फ: है कि सतगुरू की शरण बिना नांव की जागृति नही होती।

भोले को दोषण नही, अंग न जोवे कोय। वां पर गुरू को हेत रे, तुरत घिरे कहूं तोय॥
तुरत घिरे कहूं तोय, अरथ यांको यो होई। ज्यूं ठग के आंणद जोर, मूढ देख्या सो सोई॥
सुखराम मन यूं खुशी हुवे, ओ बस होसी जोय। भोले को दोषण नही, अंग न जोवे कोय ॥ १६॥

सतगुरू के कहते ही ज्ञान धारण कर लेवे, उसे भोला कहते है। उसका और अंग नही देखते। उस पर सतगुरू की कृपा तुरन्त होती है। इसका आशय यह है कि ठग मनुष्य किसी मुरख आदमी को देखकर मन से बडा खुश होता है कि इसको बहुत जल्दी ठग लेंगे। म:फ: है कि सतगुरू का मन प्रसन्न हो जाता है कि यह तो कहते ही ज्ञान धारण कर लेगा।

ज्ञानी पर निज मन की, ईण विध मेहर न होय। अंतर अरथ पिछाण ले,
अे बस पडे न कोय॥ अे बस पडे न कोय, भरम भारी इण पासे।
निज मन के उर रेस, नित अंतर या आसे॥ सुखराम कहे मुज दोष नही,
सुण लिज्यो सब लोय। ज्ञानी पर निज मन की, ईण विध मेहर न होय ॥ १७॥

ज्ञानियों पर सतगुरू के निजमन की मेहर इसलिए नही होती उसके लिए अंतर में ऐसे विचार आते है कि यह ज्ञान धारण करने वाला नही है। इसके कई तरह के ज्ञान का, जाती का, धन का, कई प्रकार का अहंभाव है इसलिए सतगुरू का निज मन प्रसन्न नही होता। म:फ: है इसमें गुरू का कोई दोष नही है। सब संसारी सुण लो, इस वास्ते ज्ञानियो पर सतगुरू की मेहर नही होती।

भरम आगला छाड़ दे, बल तज निरबल होय। गुरू की महिमा जगत में,
करे भिन्न भिन्न जोय॥ करे भिन्न भिन्न जोय, तबे निजमन सो माने।
तब भागे अन्तराय, हंस अपणो कर जांणे। सुखराम ज्ञानियों उपरे,
तब प्रसन्न व्हे जाय। भरम आगला छाड़ दे, बल तज निरबल होय ॥ १८॥

आगे के सब अहंभाव है उनको छोडकर बडेपन को छोडकर नम्रता धारण करके सतगुरू सुखरामजी के ज्ञान व सतगुरू की अनेक तरह से महिमा करे, तब सतगुरू का निज मन प्रसन्न होता

है। तब सतगुरू अपना समझने लगते है। म:फ: है भरमो को छोडकर नम्रता धारण करने से इस तरह ज्ञानियो पर सतगुरू की मेहर हो जाती है।

सतगुरू को अंग अेक ही, और अंग नही कोय। निरबल हुवा बिन हंस पर,
मेहर न हुवे जोय॥ मेहर न हुवे जोय, दया सतगुरू के नांही।
ना किसी पर रोस, अंग कारण ओ कवाही॥ सुखराम कहे रंक राव बिच,
बस बिन मेहर न होय। सतगुरू को अंग अेक ही, और अंग नही कोय ॥ १९॥

सतगुरू का एक ही स्वभाव है दूसरा कोई स्वभाव नही है। नम्रता धारण किये बिना सतगुरू की कृपा नही होती। सतगुरू के दया भी नही है न किसी पर क्रोध है। सतगुरू के स्वभाव का यह कारण है म:फ: है कि चाहे राजा हो या रंक हो, सतगुरू की शरण सतग्यान को धारण किये बिना मेहर नही होती, यही सतगुरू का स्वभाव है।

भोले पर तत्काल सो, बणे रीत युं जोय। निज मन गुरू को खुशी हुवे, ओ बस पडसी मोय॥
ओ बस पडसी मोय, पंथ सतगुरू के आसी। ज्ञान कहे सो रीत, हंस यो तुरत समासी॥
ज्ञानी कूं सुखराम कहे, निज मन गहे न कोय। भोले पर तत्काल सो, बणे रीत यूं जोय ॥ २०॥

भोले पर याने सतगुरू के कहते ही ज्ञान धारण करने वाले पर तुरन्त सतगुरू की कृपा हो जाती है सतगुरू का निजमन प्रसन्न हो जाता है। यह मेरा ज्ञान धारण कर लेगा। सतगुरू विधि से भजन करने लग जायेगा। जो भी ज्ञान बतायेंगे वो तुरन्त धारण कर लेगा। म:फ: है ज्ञानी है वो निजमन से ज्ञान धारण नही करेगा। जो सतगुरू की आज्ञा पालन करता है उस पर तुरन्त मेहर होती है।

ज्ञानी सो आधीन होय, ले ले आवे संग। सो अंतर की रेस वा,
ज्यों त्यों कर दे भंग॥ ज्यों त्यों कर दे भंग, मेहर निजमन की होवे।
सो बणे संत सो खूब, नेक पाछो नही जोवे॥ कल बल कर सुखराम के,
इण मन का भरम भंग। ज्ञानी सो आधीन होय, ले ले आवे संग ॥ २१॥

ज्ञानी सतगुरू की शरण होकर दूसरों को भी ले लेकर आवे। जब सतगुरू के ऐसे विचार होते है कि अब यह सतगुरू का ज्ञान धारण कर लेगा। जब सतगुरू के निज मन से कृपा उस पर हो जाती है। ज्ञान धारण करने से अच्छा सन्त बन जाता है एवं इस ज्ञान के प्रति पूर्ण समर्पित हो जावे। म:फ: है चाहे जो प्रयत्न करके मन के सब भरमों को मिटा दे।

नेछे कबहुक रिजसी, केइक अरथ पर आय। ज्ञानी यूं विचार कर,
संग मां छोडो कोय॥ संग मां छोडो कोय, घेर मन सतगुरू पे लावो।
ऊपर के बोहार, रीत रंग करता जावो॥ सुखराम बाण नित फेकिया,
कोईक लागेगो जाय। नेछे कबहुक रिजसी, केइक अरथ पर आय ॥ २२॥

निश्चय ही सतगुरू कभी न कभी किसी भी अरथ पर प्रसन्न हो जावेंगे। हे ज्ञानियों ऐसा विचार कर सतगुरू की शरण मत छोडो। मन से सतगुरू का ज्ञान धारण करते रहो। संसार के कामकाज भी सहज में करते रहो। जैसे बाण चलाते चलाते कभी न कभी निसाने पर लग ही जाता है। इस तरह सतगुरू का ज्ञान धारण करने से कभी न कभी सफलता मिल ही जाती है।

कवित : धन केती अेक बात, कहा कुल जगत विचारो। ताके हेत मोह काज,
जांण बिच अंतर डारो॥ ऐसी अकल विचार, आप बस सो तो कीजे।

तन मन धन लग सांच, सूंप सतगुरू को दीजे। पीछे सुण सुखराम कह,
शिष कूं दोष न कोय॥ गुरूपद को बिडद लाजसी, जे किरपा नही होय॥ २३॥

धन कुटुम्ब व जगत का अहंभाव कितने दिन का है। इसके मोह में फंसकर सतगुरू के ज्ञान को धारण नही कर रहे हो, इस तरह का विचार कर इनका मोह छोडो। यह अपने बस की बात है। सच्चे मन से तन मन धन का आपा व मोह छोडना ही सतगुरू के अरपण करना है। म:फ: है कि पीछे शिष्य का कोई दोष नही है। फिर भी कृपा नही हो तो गुरूपद का बिडद जायेगा।

धन हाथ को मेल, ब्होत ब्हो तेरे आवे। कुल केता एक दिन,
छोड नेछे जन जावे॥ सुत वित कामण झूंठ, ताय से क्या हेत कीजे।
दस दिन पीछे ही जाय, ताय से पेली दीजे॥ ज्यूं रिजे सुखराम कह,
सतगुरू साहिब आंण। पडियो जस भौ उपरे, लिज्यो परख पिछाण ॥ २४॥

धन हाथ का मेल है, यह आता जाता रहता है, कुटुम्ब साथ कितने दिन का है, आखिर छोडकर जाना पडता है। लडका धन स्त्री यह सब असत है। इनसे क्या मोह करना है, दस दिन बाद तो इन्हे छोडना ही पडेगा, इसलिए इनका आपा व मोह छोड सतगुरू की शरण ले, उनका ज्ञान धारण करने पर ही सतगुरू प्रसन्न होते है। सब वस्तुएं परमात्मा की है। उसको अपनी नही समझना ही पृथ्वी पर पडा हुआ जस लेना है व परख पिछाण करना है।

<u>कुण्डलिया</u> : पड़िये जस में गुण गणो, जे कर सके कोय। जुग जुग शोभा रहे,
गुरू रिजे कहूं तोय॥ गुरू रिजे कहूं तोय, रीज में निज पद पावे।
उलट चढे आसमान, फोड ब्रह्मण्ड कूं जावे॥ सुखराम कहे सुरा सुणो,
सत वचन अे होय। पडिये जस में गुण गणो, जे कर सके कोय ॥ २५॥

पडे हुए जस में बहुत गुण है यदि कोई इसको कर सकता है। जगत में शोभा रहती है। गुरू म: प्रसन्न होने पर निज पद याने के:पद आ:पद की प्राप्ति हो जाती है। बंकनाल के रास्ते उलटकर ब्रह्मण्ड के ऊपर चढ जाता है। म:फ: है कि शूरवीर इस बात को सुणो यह सत्य वचन है।

<u>कवित</u> : धन को कारण नांय, प्रीत को कारण होई। बिन प्रीत या रीत,
कुण कर सके कोई, इण आडा घट कोट, सक्त शमसेर संभावे।
माया बस हंस, कोण से बची जावे॥ सुखरामदास सतस्वरूप को,
अंस पडे कहूं आय। सो माया के बस नही, करले ज्यूं मन चाय ॥ २६॥

इसमें धन नही चाहिये, सच्चे मन से प्रेम चाहिये। प्रेम से भजन किये बिना सतशब्द की जागृति नही होती यही बिना प्रीत रीत कुण कर सके कोई है। इस ज्ञान में बाधा देने वाले करोडो विघ्न है। माया के अनन्त प्रकार के ज्ञान भी इसमें बाधक है। सब माया का सुख चाहते है। इसलिए माया के मोह से कौन अलग होना चाहता है। म:फ: है कि जिनके सतशब्द की जागृति हुई है। यही सतस्वरूप का अंश पडा है, वो ही माया के पद से अलग हो, माया के बस नही रहा है। के:पद आ:पद की प्राप्ति करना ही मन चाहे सो करना है।

जो धन दे हर हेत, रीस माने नही कोई। जे दे माया काज,
बहोत जुग राजी होई॥ किवो ओ इन कोई काम, ब्रह्म लग शोभा सारी।
ज्यूं जग में मां बाप, बिणज परणो नर नारी॥ सुखराम दास सतस्वरूप हेत,

माया तजी न जाय। जिऊं कुल के हेत सब करे, जन कूं नही दे लाय ॥ २७॥

प्राणी मात्र को सुख पहुंचाने के लिए फल की इच्छा से धन को खरच करना, वो परमात्मा के निमीत लगाना है। उसको कोई बुरा नही समझते। कुटुम्ब परिवार के काम हेतु धन खरच करना माया के लिए खरचना है। इससे जगत में बहुत शोभा होती है, इस तरह के काम में धन खरच करने से जो प्राणी मात्र का हित हेतु खरच करता है, उसे तीन लोको में फलों की प्राप्ति होती है। कुटुम्ब परिवार के ब्याह शादी के लिए खरच करे तो जगत में शोभा होती है। बिना फलों की इच्छा से प्राणी मात्र के हित के लिए जो खरच करता है वो सतस्वरूप के हेत लगाना है यह काम हर एक नही कर सकता। कुटुम्ब परिवार के लिए सब ही खरच करते परन्तु जिस काम के लिए जन प्राणी मात्र के हित हेतु निष्काम भाव से खरचने के लिए कहते वो नही करते।

कुण्डलिया : पारब्रह्म के कारणे, माया तज दे कोय। जब लग तो संसार में,
न्यात पांत जिऊं जोय॥ न्यात पात जिऊं जोय, त्याग भावे संकल्प कीजे।
फेर मिलेगी आय, ब्याज पइसे ज्यूं दीजे॥ सुखराम हेत आनन्द के,
देलो माया कोय। जीऊं बैरागी जीम गया, न्यात पांत नही होय ॥ २८॥

फल की इच्छा से प्राणी मात्र के हित में खरचा करना पारब्रह्म के लिए है। वह त्याग न्यात पांत की तरह है। चाहे त्याग करो चाहे त्यागने का संकल्प करो। ब्याज से दी रकम ब्याज सहित वापिस आ जाती है। ऐसे ही मनुष्यो को फलों की प्राप्ति होती रहती है। म:फ: है कि बिना फल की इच्छा से प्राणी मात्र को सुख पहुंचाने में माया को खरच करना आनन्द के लिए है। जैसे बैरागी सन्तों को जिमाते है। जिमाने वाला वापिस उनके यहां जीमने की इच्छा नही रखता, न्यात पांत में जिमाते है। वो वापिस जीमने वाले दूसरो को जिमाते है।

न्यात पांत में जस किया, जगत सरावे कोय, संत न माने रूम भर,
करोड़ा खरचो कोय॥ करोड़ा खरचो कोय, इऊं सतस्वरूप नही रीजे।
बिन सतगुरु की टेल, नेक आनन्द नही भिजे॥ सुखराम त्याग जप तप किया,
माया ब्रह्म खुश होय। जीऊं जात पांत में जस किया, जगत सरावे कोय ॥ २९॥

जात पांत के कार्य के लिए धन खर्च करने से जगत में उसकी महिमा होती है। संत तो करोडो खर्च करने पर जरा सी भी महिमा नही करते, कारण इससे सतस्वरूप की प्राप्ति नही होती। सतगुरू की शरण व उसका ज्ञान धारण किये बिना आ:पद की प्राप्ति नही होती। म:फ: है कि त्याग जप तप करने से माया ब्रह्म पद की प्राप्ति होती है। जैसे जात पांत के लिये खर्च करने से जगत में सराहना होती है।

सतगुरु की महिमा किया, रिजे सतस्वरूप । आंणद पद घट प्रगटे,
मिटे भरम तम धूप॥ मिटे भरम तम धूप, करे गुरु पूजा भाई।
पारब्रह्म खुश होय, मुक्त फल देत पठाई । सुखराम जात कुल पूजियां,
शिव शक्ति खुश होय। फल पावे संसार में, कुटुम्ब सहेत कहूं तोय॥ ३०॥

सतगुरु पद की भक्ति करने से सतस्वरूप आ:पद की प्राप्ति होती है। भरम रूपी अंधकार मिटकर घट में आ:पद का अनुभव होने लगता है। गुरू की पूजा याने गुरु का ज्ञान धारण करने

से पारब्रह्म खुश होकर बैकुण्ठ की प्राप्ति हो जाती है। म:फ: है कि जाति कुल को सुख पहुंचाने से माया ब्रह्म खुश होते है। जिससे संसार में कुटुम्ब सहित फलों की प्राप्ति हो जाती है।

हे शिष तुम हम अेकी जात है, अेक बाप का पूत। मो तो में बल सारखो,
नख चख अेकी सूत॥ नख चख अेकी सूत, इधक हम में आ होई।
पूरण पद परताब, सतगुरु बगस्यो मोई॥ जोर किया माने नही,
तोही संग पांचू भूत। हे हंस तुम हम अेकी जात है, अेक बाप का पूत ॥ ३१॥

हे शिष्य तुम हम एक ही है, एक ही बाप के बेटे है। सब की उत्पति ब्रह्म से है। तेरे मेरे में बल एक सा है। नख से चख तक एक सरीसा है। म:फ: है कि मेरे में यह इधक है मुझे सतगुरु पद का ओधा मिला है। जोर करने से उस पद की प्राप्ति नही होती क्योंकि तुम पांचो विषयो के साथ हो।

पांच सात भाई हुवे, ताकी विध कहूं तोय। अेक राज की चाकरी,
अेक संत हुवो जोय॥ अेक संत हुवो जोय, तिका सुण रीत हमारी।
ज्ञान फोज तत बार, और नही जोर लगारी ॥ ऊं जे माने संत की,
तो बैरागी होय। जोर किया सुखराम के, कुल नही छोडे कोय ॥ ३२॥

पांच सात भाई होते है तुम्हे उसकी विधि बताता हूं। एक भाई राजा के ओधायत है। एक भाई संत हो गया है। जो सन्त हो गया है वो रीति मेरी है। सन्तों के ज्ञान की ही फोज व जोर है। और कोई दूसरा जोर नही है। अगर वो सन्तो का ज्ञान माने तो बैरागी हो जाता है। याने सन्तो का ज्ञान धारण करने से जीते जी माया ब्रह्म के पद से अलग होकर के:पद आ: पद की प्राप्ति कर लेता है। म:फ: है कि बिना ज्ञान धारण किये जोर करने से माया ब्रह्म के पद से अलग नही हो सकते।

जो भाई थो राज में, करे जोर वो आय। ओ बिडद इनको छाजसी,
चाकर राख्यो लाय॥ चाकर राख्यो लाय, सन्त ईऊं हुवे जग मांही।
पारब्रह्म लग दौड़, सिद्ध परचा दे जाही॥ सतस्वरूप विज्ञान चल,
सो विध है मुझ मांय। जो भाई कुल मांय थो, जोर दिखावे लाय ॥ ३३॥

जो भाई राज में ओधायत है वो जोर जबरदस्ती कर भाईयो को ले जाकर काम पर लगा देता है। यह काम वो कर सकता है नोकरी लगा सकता है। ऐसे ही जिन सन्तों की पारब्रह्म तक पहुंच है वे सिद्धाये व परचा बताकर मनुष्यों को पारब्रह्म तक की प्राप्ति का ग्यान धारण करा देते है। मेरे ज्ञान से सत स्वरूप की प्राप्ति हो जाती है।

कवित : नही जोर को काम, देश यो मुल्क न्यारो। मनाई चाले संग,
सत कूं परसे प्यारो। कुल में हब थब होय, जोर सूं ले घर जावे।
कुल बाहर बिन प्रीत, नार कैसे घर लावे॥ सुखराम कहे यूं जीव सो,
सब मेरो परवार। बल सूं संग कोई न करे, सब में जोर विचार ॥ ३४॥

के: पद आ: पद में किसी तरह की करणियां रिद्धि सिद्धि परचा नही है। वो पद इनसे अलग है। मन से इनकी इच्छा नही रखने वाला ही उस ज्ञान को धारण करता है, ज्ञान धारण कर सत पद की प्राप्ति करता है। माया ब्रह्म के पद में करणियां रिद्धि सिद्धि परचे होना ही कुल में हब थब होना है। इस लालच में लगकर मनुष्य यह ज्ञान धारण कर ही लेते है। यही जोर से ले घर जाना है। कुल

बाहर व बिना जाति की व जिससे प्रेम नही है उस स्त्री को कौन घर में लाता है। म:फ: है कि सब जीव आत्मा की दृष्टि से मेरा ही परिवार है। माया ब्रह्म से ही सबकी उत्पति है। माया ब्रह्म के पद की करणियों से उस पद की प्राप्ति नही होती है। माया ब्रह्म की प्राप्ति की करणियों को सब ही जानते है। यही सब में जोर विचार है।

कुण्डलिया : धिरग धिरग ऊ समझ कूं, लाणत नित हजार। आनन्द पद की भक्त में,
डाक न पडे गिंवार॥ डाक न पडे गिंवार, सांच देख्यो तोई आई।
झूंठ जगत को मोह, अलप सोई तजे न भाई ॥ सुखराम हीरो मिल्यो,
जो देहड़े में डार। धिरग धिरग ऊ समझ कूं, लाणत नित हजार ॥ ३५॥

म:फ: है कि ऐसी समझ को एक नही हजारो बार धिक्कार है जो सतस्वरूप आ: पद की भक्ति प्राक्रम को सुनकर भी धारण नही करता यही डाक नही पडे गिंवार है। उस ग्यान को धारण कर उस पद की प्राप्ति होने पर उससे विश्वास आता है। जगत का मोह थोडे समय का है। इसको जानने पर भी नही छोडता। म:फ: है किसी को हीरा मिल जाये वह उसके मूल्य को न समझकर देहडे याने पानी के गड्ढे में डाल देता है तो अमूल्य हीरा व्यर्थ जाता, कीमत नही मिलती, ऐसे ही मनुष्य शरीर पाकर सत स्वरूप आ:पद की भक्ति धारण नही करता तो मनुष्य जन्म व्यर्थ चला जाता है। यही हीरे को देहडे में डालना है। ऐसी समझ को एक नही हजार बार धिक्कार है।

अण समझे सिर दोष नही, समझवान सिर खून। जाणर महिमा कम करे,
ज्यूं बावे अन्न भून॥ ज्यूं बावे अन्न भून, कहा निपजे वहां भाई।
यूं सतगुरु की मेहर, समझ पर चढे न जाई॥ सुखराम कहे फले फूले नहीं,
रहे समझ सूं सून। अण समझे सिर दोष नही, समझवान सिर खून ॥ ३६॥

इस ज्ञान को नही समझने वाले को कोई दोष नही है, समझकर जो महिमा कम करता है जैसे भूने हुवे अन्न को धरती में बीज के रूप में डालता है तो उसके फसल नहीं आयेगी, ठीक इसी प्रकार समझवान के ऊपर सतगुरु की मेहर नहीं होयेगी। म.फ. है कि ऐसे समझवान के ने: अक्षर होते हुवे उन्हें के:पद प्राप्त नहीं होगा। समझवान को दोष है नही समझने वाले को दोष नही है।

कवित : समझवान सिर मेहर, पद की तां दिन होवे। करे बात कही अधिक,
देख नर नारी होवे। के तो कर कुल त्याग, सन्त शरणे नर आवे।
काय शकल धन माल, सांच गुरु चरणा लावे। सुखरामदास ब्याधी तिका,
मासो रखे न कोय। तब उजागर हंस व्हे, गुरु मन रिजे जोय ॥ ३७॥

समझदार के ऊपर पद की मेहर उस दिन होती है। उस पद की प्राप्ति की विशेष बाते नर नारियो से कहता है। माया ब्रह्म की प्राप्ति के ज्ञान को छोडकर सतगुरूपद की प्राप्ति का ज्ञान धारण करता है या सब आसक्ति धन व मोह छोडकर सच्चे मन से सतगुरू का ज्ञान धारण करे। म:फ: है कि जो इस ज्ञान की प्राप्ति में बाधा देने वाले विचार है उन सबको त्याग देवे। साधन करने वाले को सतगुरु प्रसन्न होने से उस पद की प्राप्ति हो जाती है।

कुण्डलिया : समझवान के त्याग बिन, किरपा बणे न काय। वो सत जाणे रीत कूं,
तन मन धन दे जाय॥ तन मन धन दे जाय, बात किजे कांई भारी।
नांही बणे जां लग, कल्यां फूले नही सारी॥ सुखरामदास बल तब पडे,

करड़ी करे बजाय। समझवान के त्याग बिन, किरपा बणे न काय ॥ ३८ ॥

जिसने इस ज्ञान को जान लिया और अपना आपा रखता है तो उस पर सतगुरु की मेहर नहीं होगी। वो इस ज्ञान को सच्चा समझकर अपना तन, मन व धन भी देता है व ज्ञान की बहुत महिमा करता है तो भी उस पर पूर्ण कृपा नही होती। म.फ. है कि उस पर कृपा तब ही बनेगी जब अपने भरम का पूर्ण रूप से त्याग कर ज्ञान के प्रति पूर्ण समर्पित हो जावे।

कोईक अंधेरी रात को, तरवर फूले जोय। और चांदनी रात में,
कलिया सुधी होय॥ कलिया सुधी होय, यूं ओ फेर कहावे।
समझ जिसी विध होय, फूल ज्यां ही सुख पावे ॥ सुखराम मेहर की फेर ओ,
और फेर नही कोय। कोईक अंधेरी रात को, तरवर फूले जोय ॥ ३९ ॥

कोई वृक्ष तो कृष्ण पक्ष में फूलता है। कोई चांदनी रात में कलिया खिलती है, कोई साधक तो भोलेपन में इस को विश्वास से धारण कर लेता है। कोई पूरी छानबीन करके ज्ञान धारण करता है। इस तरह दोनों की समझ अलग अलग हो गई, यही समझ का फेर है। जिसमे जैसी समझ होती है वैसा ही उसे सुख प्राप्त होता है। म:फ: है कि जो निज मन से ज्ञान धारण करता है। उसे जल्दी सफलता मिलती है। जो निज मन से ज्ञान धारण नही करता उसे सफलता मिलने में देर लगती है। यह मेहर का फेर व फरक है कोई अंधेरी रात याने भोलेपन से ज्ञान धारण करना है।

कवित : तन मन अरपे नांय, वचन बोले संत सुरा। लोथ पोथ सब बात,
निज मन राखे दूरा॥ पद चावे आंणद, बुध अेती नही आवे।
जहां सतगुरु बिच रेस, काड सब दूरी बावे। सुखराम कहे संभाल मन,
हिरदे करो विवेक। पारस लोह के आंतरो, अंग न पलटे देख ॥ ४० ॥

तन मन से सतगुरू के बताये मुजब भजन नही करता, मुंह से वचन शूरवीरता के बोलता है। बात तो उस पद की प्राप्ति करने की करता है। निज मन से ज्ञान धारण नही करता। आ:पद की प्राप्ति चाहता है। उसको यह समझ नही आता कि सतगुरु का ज्ञान निज मन से धारण करने पर सफलता मिलती है, यही रेस है। इसको दूर करनी चाहिये। म:फ: है कि यह बात समझकर हृदय में विचार कर लो। जिस तरह पारस और लोह जरा सा भी अलग रहता तो सोना नही बनता।

कुण्डलिया : जब सतगुरु शिष जांणिये, अे अंग दरशे मांय। बोले बोहो आधीन होय,
निज मन न्यारो नांय॥ निज मन न्यारो नांय, पुत्र ज्यो पदवी चावे।
मात पिता सुं हेत, ताय सुं इधकी लावे॥ सुखरामदास तब मन रे,
ज्यूं जल पय संग जाय। जब सतगुरु शिष्य जांणिये, अे अंग दरशे मांय ॥ ४१ ॥

जब शिष में ऐसे अंग दरशने लगते है। वो ही सतगुरु का सच्चा शिष है। बहुत नम्रता आधीन होकर बोलता है, निज मन से सतगुरु का ज्ञान धारण करता है। जैसे पुत्र पिता की आज्ञा का उल्लंघन नही करता, उससे भी ज्यादा सतगुरु का ज्ञान श्रद्धा से धारण करता है। माता पिता से प्रेम है उससे भी ज्यादा विशेष प्रेम गुरु से करे। म:फ: है कि जैसे दूध और पानी अेक हो जाता है ऐसे ही सतगुरु का ज्ञान धारण करने से किसी तरह की कसर नही रखे, तब समझे कि शिष की सतगुरु के ज्ञान में पूरी श्रद्धा है।

कवित : ज्यूं राजा से रेत, सरब कांपे घर मांही। सब चाकर आधीन,

हुक्म लोपे कुछ नांही ॥ अंतर रहे भै भाव, रात दिन अंग न भूले।
भूप भरोसो मांय, नख चख अंग सब फूले ॥ सुखरामदास अे अंग रे,
जब लग नही शिष मांय। तब लग गुरु न पिछाणियां, बात बणावो जाय ॥ ४२ ॥

जैसे राजा से प्रजा घर में रहते हुए भी डरती है। सब नोकर चाकर आधीन रहते, हुक्म नही टालते। अंतर में रात दिन डरते रहते है। राजा की जिस पर कृपा होती वो फूला नही समाता। म:फ: है कि जब तक शिष्य यह समझ ले और डर रखे कि सतगुरु के ज्ञान धारण करने में जरा सी भी कसर रह गयी तो चौरासी का दुख भोगना पडेगा, यह डरना है। सतगुरु का ज्ञान पूर्ण रूप से धारण कर यह खुशी मनावे कि इस ज्ञान के बराबर कोई दूसरा ज्ञान नही है। इससे ही जन्म मरण से छूटकारा होता है। ऐसा विचार कर फूला नही समावे, यह दोनों अंग शिष में होते है। जब जानना चाहिये कि शिष ने सतगुरु के ज्ञान को पहचाना है। ऐसे अंग नही हो तो सतगुरु के ज्ञान को नही पहचाना है, खाली बातें बनाता है।

क्या भूप कहूं तोय, क्या इन्द्र सुण होई। क्या विष्णु कहूं ईस,
क्या ब्रह्मादिक सोई ॥ क्या सब ओतार, क्या सो ब्रह्म कहावे।
होणकाल के मांय, सब ये जाय समावे ॥ सुखरामदास या सब शिरे,
सतगुरु साहिब होय। ज्यां शिर गुरु करणी नही, सतस्वरूपी जोय ॥ ४३ ॥

क्या राजा, क्या इन्द्र, क्या विष्णु, क्या महादेव, क्या ब्रह्मा सब अवतार क्या जिन्हें ब्रह्म कहते हैं। ये सब होणकाल याने सृष्टि कर्त्ता पद में समाते हैं। म.फ. है कि इन सबके ऊपर सतगुरु साहिब का पद है उस पद में न गुरू न शिष्य न करणी सभी का सतसरूप है।

केवल को सुण बीज, गेबसुं जन में आवे। नांही करणी के मांय,
ज्ञान सुं ही कदे न पावे ॥ ना केवल उपदेश, मांड में रहे न कोई।
ज्यां हा प्रगटे जन मांय, सो तारे हंस सोई ॥ सुखराम अनन्त ले उधरया,
से जन हंस जुग मांय, ज्ञानी ध्यानी जगत सुं, आ कल लखी न जाय ॥ ४४ ॥

केवल का बीज याने सतशब्द ब्रह्म बैराट से आकर जनो में प्रकट होता है। करणियो व ज्ञान से प्रकट नही होता है। केवल पद का उपदेश सृष्टि में नही हैं। जिन केवली संतो में सतशब्द प्रकट होता है उनका अणभै ज्ञान ही हंसो में सतशब्द की जागृति कराके सतस्वरूप आ:पद की प्राप्ति कराता है। म:फ: है कि इस ज्ञान के द्वारा अनन्तों का ही उद्धार कर देते है। यही अनन्त हंसो को जन का लेकर उधरना है। ज्ञानी ध्यानी व जगत से यह कला नही जानी जाती।

किण कुदरत घट मांय, सत सो आण बिराजे। जले पीव संग नार,
जगत सुं नेक न लाजे ॥ सुरो रण में जाय, घाव सन्मुख सो लिया।
धस्यो क्या घट मांय, मरण से नेक न बिया ॥ सुखरामदास घट ब्रह्म तो,
आगे अब ही होय। जब विज्ञान सो उपनो, तब आयो कुण जोय ॥ ४५ ॥

किस तरह से यह सत घट में आकर प्रकट हो जाता है। जिस तरह सती में सत प्रकट होता है तो वह पति के साथ जल जाती है। संसार मे जरा सी भी नही शरमाती। शूरवीर में सत प्रकट हो जाता है। जब लडाई में सन्मुख जाकर लडता है, कितने ही घाव शरीर पर हो जाते है, तो जरा सा भी नही डरता। म.फ. है कि शरीर में ब्रह्म तो पहले भी था अब भी है। जब संतो में सत प्रकट

होता है, तब वो सत के साथ ज्ञान से विज्ञान में पहुंच जाते है। यह चौथा पद है। बताओ इनके घट में क्या प्रकट हुआ है।

या तीनूं के मांय, सत कृपा कर आवे। सो घट घट में नाय,
सतस्वरूप कहावे॥ जीऊं हीरे की परख, बुध वा सबके नाही।
ईऊं सतस्वरूप कहाय, कोण समझे सत मांही॥ ज्यूं जैसा त्यों जीव है,
ज्यूं सतस्वरूप पिछाण। सुखरामदास कहे हांक दे, सब नर सुण्यो आंण ॥ ४६ ॥

सती, शूरवीर और सन्त इन तीनों में सत कृपा कर आता है, वो सब शरीरो में नही है। जिसे सत स्वरूप कहते है। जैसे हीरे की परीक्षा की बुद्धि सब में नही है, ऐसे सतस्वरूप व सत में कौन समझते है। जगत में जो जैसे जीव है ऐसे ही सतस्वरूप को पहचानते है। म:फ: है कि मैं आवाज देकर कहता हूं सब ही मनुष्य सुणो।

कुण्डलिया : आत्म ज्ञानी संत की, या रेणी या चाल। सब दासन को दास व्हे,
गहे मन राखे पाल॥ गहे मन राखे पाल, नीच सब ही विध त्यागे।
शुभ उत्तम सो चीजे, सुणर सब ही सुं लागे॥ तन मन धन सुखराम केह,
उनके हंस ख्याल। आत्म ज्ञानी सन्त की, या रेणी या चाल ॥ ४७॥

आत्म ज्ञानी जो सन्त है। इनकी यह रेणी व यह चाल है मन को अपने वश में करके दास भाव रखता हैं। सब बुरी बातों को छोड कर जो श्रेष्ठ व अच्छे गुणो को धारण करता है। म:फ: है कि तन मन धन से सबको अपना आत्म स्वरूप समझ कर सुख पहुंचाता है।

ब्रह्म ज्ञानी की चाल या, सुणो सकल नर आय। पाप न माने पुन्न कूं,
सांसो सोग न मांय॥ सांसो सोग न मांय, आत्मा माने नांही।
एक ब्रह्म गुण रूप, देख ले सबके मांही॥ सुखराम भोग सब ही करे,
मन माने सो खाय। ब्रह्म ज्ञानी की चाल या, सुणो सकल नर आय ॥ ४८॥

ब्रह्म ज्ञानियों की यह चाल सब ही मनुष्य सुणो, पाप को पाप नही मानता पुण्य को पुण्य नही मानता, संशय व दुख नही व्यापता, आत्मा नही मानते सब को ब्रह्म मानते है सब ही ब्रह्म है। म:फ: है कि सबको ब्रह्म मान कर ब्रह्म से ही भोग करते है। मन माने सो खा लेते है सब ही मनुष्यों सुणो यह ब्रह्म ज्ञानी की चाल है।

तत ज्ञान जहां ऊपनो, ताको मत विचार। या रेणी या मूठ है,
सुणो शकल नर नार॥ सुणो शकल नर नार, ब्रह्म देखे सब मांही।
बिसे भोग सब त्याग, करण क्रिया कुछ नांही॥ सुखराम ब्रह्म सो आपही,
ऐसी रहे उर धार। तत ज्ञान जहां ऊपनो, ताको मत विचार ॥ ४९॥

जो सब में तत ज्ञान याने ब्रह्म देखते है, तत ज्ञान का यह मत और विचार है। सब स्त्री और पुरूष सुणो सब में ब्रह्म देखते है। विषय व भोगों को त्याग देते है, किसी तरह की करणियां व कर्म नही करते। म:फ: है कि अपने आपको ब्रह्म समझते है ऐसी हृदय में धारणा रखते है, जिनको तत ज्ञान होता है उनका यह विचार है।

सतस्वरूप के भक्त की, हाल चाल कहूं आंण। राज रीत सो रीत सो,
शिष गुरुअेम पिछाण॥ शिष गुरुअेम पिछाण, सत कुदरत घट जागे।

चढे उलट तन मांय, ध्यान समादी लागे॥ सुखराम प्रेम सो ऊबके,
अक बक दूध ऊफाण। सतस्वरूप के भक्त की, हाल चाल कहूं आंण ॥५०॥

सतस्वरूप आनन्द पद की भक्ति का हालचाल कहता हूं। हे शिष्य तुम इसको इस तरह पहचानो, यह राज योग है। शिष्य द्वारा गुरू की पहचान इस प्रकार होती है कि उनके द्वारा शिष्य में सत की जागृति हो जावे। सतशब्द प्रगट होकर उलटकर बंकनाल में होकर ब्रह्मण्ड से ऊपर चढ जाता है। ध्यान समाधि और सता समाधि लग जाती है। म.फ. है कि इसके लिये शिष्य का इस भक्ति के प्रति अकबक प्रेम होना चाहिये, जैसे दूध उफनता है ऐसे प्रेम उबकता है। यह हालचाल सतस्वरूप की भक्ति के हैं।

माया घेरयो जीव को, बोहो बिध कला बणाय। जाय न सके छूट कर,
गेह बांध्यो जग मांय॥ गेह बांध्यो जग मांय, बहुत फांसी गल डारी।
जात पांत कुल ज्ञान, जगत केवत बिध सारी ॥ सुखराम पदी धनपेक अे,
घट घट बैठा आय। माया घेरयो जीव कूं, बोह बिध कला बणाय ॥५१॥

माया ने इस जीव को कई तरह से कई कला बनाकर अपने वश में कर रखा है। कई तरह की फांसिया गले में डाल रखी है। जात पांत कुटुम्ब की, ज्ञान की, जगत के केवत की, पद की, धन की, इनके अहंभाव में भक्ति भजन नही करते यही माया की फांसी है। यह फांसी घट माया में सब प्राणी मात्र याने मनुष्य मात्र के गले में पडी हुई है।

जात पांत कुल करम की, अे फांसी दे खोय। तो धन फांसी छूटे नही,
आ ब्हो भारी होय॥ आ ब्हो भारी होय, शूर कोई तोडर जावे।
तो फांसी गल मांय, ज्ञान की बोहो विध आवे॥ सुखराम ज्ञान की काट दे,
तो केवत गल मांय। अे फांसी सब तोड दे, तो पद प्रगटे आय ॥५२॥

जात पांत की, कुटुम्ब की, कर्मो की, अहंभाव से अलग हो जावे तो धन का अहंभाव नही छूटता। यह फांसी भारी है। कोई शूरवीर धन के अहंभाव से अलग हो जाता है। यही फांसी तोडना है। ज्ञान के अहंभाव छोड दे तो संसार की केवत का डर लगने लगता है। जब इन सब फांसियो से अलग हो जावे तो पद में पहुंचने का मार्ग प्रगट हो जाता है।

लोक लाज कुल जात को, डर नही माने कोय। तो फांसी या टूटगी,
रहो भावे जहां जाय॥ रहो भावे जहां जाय, गुरां बिच रेस न कांई।
तो फांसी सब दूर, अेक नही वां गल भाई। सुखराम सतगुरु रीजियां,
सब फंद दूरा होय। लोक लाज कुल जात को, डर नही माने कोय ॥५३॥

जगत की लज्जा का, कुटुम्ब का, जाति का डर नही मानता है तो यह फांसी टूट जाती है। फिर चाहे जहां रहो, सतगुरु के बताये हुए ज्ञान करने में जरा सी भी कसर नही रखे तो सब फांसिया दूर हो जाती है। अेक भी उसके गले में नही रहती। म:फ: है कि सतगुरु की पूर्ण आज्ञा मानने पर सतगुरु प्रसन्न हो जाते है। तब उसके सब अहंभाव मिट जाते है। तब उसको जात, जगत व कुटुम्ब का डर नही रहता।

॥ इति श्री सतगुरु मेहर का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 प्रश्न उत्तर का अंग 卐

प्रश्न : करम करावे कोण किणी या चाह उपाई। भिष्ट बुध मन हीण,
कुबद कहो कुण पठाई॥ निन्दा गर्व गुमान, तुरंग आपे किण चाडया।
सुध बुध गई बिलाय, काम कुता किण बाडिया॥ नीच अंग लछ चुगल का,
कहो कुण उपावे आय। जन सुखिया अज्ञानता, क्यों घट रहे समाय ॥ १ ॥

उत्तर : करम करावे चाय, सोच दुबध्या उपजावे, लाज शरम जीव रखे,
मन सो मान करावे॥ भूख प्यास दुख पीड, चाय कूं आंण जगाई।
काम भिष्ट बुद होय, कुबुद कुलश संग आई॥ निन्दा धेश धर निसरे,
गर्व मूल अज्ञान। आपे तुरंग चढावियो, सुखिया वे अभिमान॥
क्रोध उठाई सुध कुं, बुध गई बिलाय। सरम सपूती बाडिया,
काम कुत्ता कूं आय॥ नीच अंग नासत किया, चुगल चाय चित हीण।
अज्ञान धस्यो अहंकार संग, छाय रहयो घट छीण। दत्त बिना मन हीण है,
शोभा सुख गुमान॥ जन सुखिया इन सबन को, मूल चाय मन जांण॥

प्रश्न : शील सांच सन्तोष, अर्थ कहो किणे ऊपाया। परमारथ पर काज,
घेर शरणे कुण ल्याया॥ टेहल बन्दगी धरम, पुन्न सो कोण कराया।
शरम लाज मरजाद, मेर बन्धन कुण आया॥ मीठी बांणी निर्मली,
कोन पठावण हार। जन सुखिया हर पाइबो, कोण करयो उपकार ॥ २ ॥

उत्तर : शिवरण शील सन्तोष, अर्थ अणभै संग आवे। परमारथ परकाज,
साध शरणे जीव लावे। टेहल बन्दगी भाव, पुन्न परमोद कराया।
शरम लाज मरजाद, मेर बंदन भै आया॥ मीठी बाणी निर्मली,
बोल वचन विचार। जन सुखिया हर पाइबो, गुरां कियो उपकार॥

प्रश्न : ज्ञान ध्यान विवेक, समझ सोजी कहां आवे। ले लघुताई भाव,
प्रेम कहो कौन पठावे॥ विरह त्याग बैराग, जुग न्यारा कुण किया।
ब्रह्म भक्ति का भेव, आंण हिरदे किण दिया ॥ शकल अंग कहा पाइये,
भक्त करण हर जोग। जन सुखिया दुबध्या मिटे, किम टले सब रोग ॥ ३ ॥

उत्तर : ज्ञान ध्यान विवेक, समझ साधा संग आवे। भक्त करण हर जोग,
सतगुरु आंण बतावे॥ लघुता देवे चाय, लग्न आंकूर लगावे॥ भाव भेद चित मन,
प्रेम कू प्रीत पठावे। विरह प्रेम घर उबके, त्याग तरक मिल जांण।
जन सुखिया बैराग रे, ज्ञान संग दे आंण॥ जग छाडे बैराग, भांग सब अंग मिलावे।
ब्रह्म भक्त का भेव, दत्त पूरबले पावे॥ शब्द जगाया जीव, संदेशा ब्रह्म पठाया।
गुरू बायक प्रतीत, सांच देख्या सुख पाया॥ शकल रोग जब ही टले,
जब छूटे गरभवास। जन सुखिया दुबध्या मिटे, करे अमर घर बास॥

प्रश्न : कहो जीव की जात, ब्रह्म को गुरु बतावो। मात पिता कूं सोज,
थेट सूं उत्पत लावो॥ मरे कुण जग मांय, जन्म धारे कुण आई।

मुढ कहो कुण होय, चेत चतुर कुण भाई॥ सुखरामदास अे अर्थ रे,
जे कोई कहे मुझ आय। जीता मन गुरुपद पावियो, मोख मिलोगे जाय ॥ ४॥

उत्तर : सुणो जीव की जात, ब्रह्म आप ही कहूं तोय। गुरु ब्रह्म को ज्ञान,
पद आनन्द सत होई॥ मरे देह जग मांय, जन्म चेतन मन धारे।
नही जीव के अन्त, बाप मां उत्पत यारे॥ सुखराम मुढ यो जीव रे,
जीव ही चेतन होय। सो कारण सत ज्ञान को, आनन्द पद कूं जोय॥

प्रश्न : बादल का घर कोण, कहां से चालर आवे। बीज चमके मांय,
जाय किम मांय समावे॥ ज्ञान महल कहा नींव, प्रेम घर कोण कहावे।
गौ रखी की कुण मांय, मन गहियो कहां जावे॥ सेज ध्यान गुरुज्ञान,
सन्त सब कहां बिराजे। अनहद सुण सुखराम, अखंड धुन कहां से बाजे ॥ ५॥

उत्तर : बादल का घर सुन्न, देव अंछया चल आवे। बीज चमके मांय,
उलट सुन्न माय समावे॥ ग्यान महल की नींव, शील सन्तोष कहिजे।
प्रेम चित घर आंण, मन त्रिगुटी गेह लीजे॥ गो रख अच्छा पूत,
कहो ज्यां ठहरावे। जन सुखिया सब संत, त्रिगुटी आंण बसावे॥

दोहा : सन्त जाय चल त्रिगुटी, सेज ध्यान गत होय।
जन सुखिया अणभै धनी, वां अनहद बाजे जोय॥

प्रश्न : किण करणी प्रताप, आंण ब्राह्मण घर लीना। पिंडत किम प्रकार,
जगत पूजक किन कीना॥ मांगो किण प्रकार, जगत में लाज न आवे॥
राव रंक प्रधान, पाय सब ही लग जावे॥ जगत रकम तेरे भरे,
ब्राह्मण भरे न कोय। सुखराम पंडित ने पूछियो, आ छूट किसी विध होय॥ ६॥
किण करणी सुं ब्राह्मण हुवा, किण करणी सुं पंडिता। किण करणी सुं मांग कर खावो,
क्यां सुं फिरो नचीता॥ किण करणी जगत में पूजक, किण करणी सुं डण्ड जीता।
कह सुखराम अरथ ओ कीजे, तुम बांचत हो गीता ॥ ७॥

उत्तर : तीरथ कर कर ब्राह्मण हुवा, परमारथ सुं पंडिता।
वेद उगत सुं मांगर खावो, ज्ञान सुं फिरो नचीता॥ गुरु प्रताप जगत में पूजक,
तपस्या कर डण्ड जीता। कह सुखराम अन्न है परको, अबके रहलो रीता॥

प्रश्न : जगत भक्त में दोय, पेल यामे कुण होई। नार पहल कन पुरूष,
शिष कन सतगुरु दोई॥ राजा पहिले होय कन सुण व्यास कहावे।
सांच पहल कन झूंठ, सत कन नासत आवे। किसी किसी में निसरे,
यां चीजा कहूं तोय॥ सुण पंडित सुखराम कह, सोज बतावो मोय ॥ ८॥

उत्तर : जगत पहल होय, भक्त कहो कुण बताई। भक्त पहल जो होय,
जगत क्यों उपजे भाई॥ नार पहल जो होय, पुरूष बिन कैसे होई।
पुरूष पहल बिन नार, कुण विध जायो कोई॥ सुखराम व्यास गुरुदेव रे,
अे जे पहले होय। तो सिख राजा कहा उपना, सोज बतावो मोय॥
झूंठ पहल जो होय, सांच कहो कोण बताया। अर सांच पहल जो होय,

झूंठ क्यों उपजे भाया॥ जो नासत व्हे पेहल, सत्त कूं होण न देवे।
दुश्मन कर पैदास, कुण अपणे घर लेवे। अे चीजा सुखराम कह,
जोडे ही पैदा होय। यूं सतस्वरूप और ब्रह्म रे, सुण पंडित कहूं तोय॥

प्रश्न : कहो ब्रह्म किम चुप, रूप कैसे कर दरसे। कहां देश घर बास, जाय कैसे जन परसे॥
मिले किसी विध मांय, जाय कैसे सुख पावे। निरखे नैण निहार, दिष्ट कैसे कर आवे॥
मिलिया क्या सुख होय, बात कैसे कर कीजे। बुझे इम सुखराम, ब्रह्म निरणो मोय दीजे ॥ ९ ॥

प्रश्न : कहो सुन्न आकार, गिगन घर चेन बतावो। जो पुगां तुम जाय, नेट निरणो सब लावो ॥
कहो गेला किण रीत, बीच घाटा कहो होई। कुण कुण स्थान, छेक चाले जन सोई॥
कुण देव अस्थान, परस कैसे कर रहिये। यूं बुझे सुखराम, गिगन बासा मोही कहिये ॥ १० ॥

प्रश्न : कहो जीव को रूप, बोल केतो अेक होई। ज्ञान ग्रंथ घट मांय, रूप निरखे नर कोई॥
पवन चले उसांस, फेर पाछो किम आवे। ताको रूप बताय, फेर किण रंग बजावे॥
धापे सो क्या रूप, प्रीत कहो कहां सुनायो। ब्रह्म रूप सुखराम, निरख ऐसे सुख पायो ॥ ११ ॥

प्रश्न : सुख दुख दोन्यु जांण, आप बोले किसी वाणी। शीतल लहर सुण छाय, बाव रंग कहो बखाणी॥
भूख भाव में जांण, सांच कैसे रंग होई। पांच रंग को रंग, ताही गत जांणे कोई॥
चित में चितवन उपजे, तांको कहां स्वरूप। सुखराम ब्रह्म को निरखिया, हर है बहुत अनूप ॥ १२ ॥

प्रश्न : आलस उंग अज्ञान, नींद कैसे रंग लीजे। ताव तेजरी भीड़, पीड़ कैसे रंग कीजे ॥
मन मन शोभा जोय, सुरत परदेशा धावे। ज्यां देखी सब चीज, पलक में आण बतावे॥
सौ कोसा पर चीज है, निरखे या घट मांय। सुखराम ब्रह्म को रूप के, पण यांको रंग बताय ॥ १३ ॥

प्रश्न : ब्रह्मण्ड बनराय, जल थल पवन तेज सब। भू पर केही समाय, सुर नर मुनि देव सब॥
ब्रह्मा विशन महेश, शक्त समुली गरक है। शेष फुणा धर शहेस, अकल अनोपम अगाद है॥
रूप न बरणयो जाय, सुख सम्पत सुखराम कह, जेम मगन मन मांय ॥ १४ ॥

प्रश्न : ढोल नांद निशाण, देख कीमत को पावे। कांसी में सुर होय, ताय को भेद बतावे॥
बादल बीज समाय, नीर कीमत को जांणे। शेष शीश मीण होय, जांण को आंण बखाणे॥
मछी मछ सब जांण, चाल सामें जल ध्याया। उलट चढे सुखराम, साध सो ब्रह्म कुवाया ॥ १५ ॥

प्रश्न : कास्ट मध्य जो आग, लोहो पाखाण लुकाणी। बिन भेदी दिखलाय, जाय क्यों माने जाणी॥
सांठे मांय निवाथ, दूध मध्य घरत सुणायो। तेल तिल दिखलाय, पाट लंकी सुं गायो॥
कीट भंवर सो होय, पांख बिन पुरूष उडिजे। यूं सत संगत सुखराम, भेद बिन कैसे लिजे ॥ १६ ॥

उत्तर : ब्रह्म रूप अण रूप, रूप बरण्यो नहीं जावे। घरत पाय परसाद, आण को स्वाद सुणावे॥

कामी भुगते काम, जाय कामण संग होई। बुज्या क्या दे जवाब, स्वाद कैसो इक होई॥
पोपवास को रूप, मछ की गेल बखाणो। ब्रह्म रूप सुखराम, पेख ऐसी विध जाणो॥

प्रश्न : जाग्यो नाम घट मांय, राम पण किरपा किनी। लग्यो ध्यान वां जाय, दया पूरण हर की चिनी॥
उलट गया ब्रह्मण्ड, ब्रह्म सूं किया भेंटा। पूजे सब नर नार, दिया जम सूं हम छेटा॥
सुखराम कहे करतार ने, इसी मेहर की जोय। देह का डण्ड क्यों न मिटया, तके बताओ मोय ॥ १७॥

उत्तर : नहीं बस करतार के, होणहार वश नांय। पुल सराप कम जो पडे, सोई सोई भुक्ते आय॥
सोई सोई भुक्ते आय, फेर नर करे उपाई॥ फले ज्यांका पुल मांय, और परले सब जाई॥
सुखराम देह का डण्ड तो, जोग सज्यारे खेह जाय। नहीं बस करतार के, होणहार बस नांय॥

प्रश्न : साध जग पंडिता जैन सब कहत है। कर्म की लार जीव जूण पावे॥
पुन्न अर पाप दोय रात दिन करत है। दूसरी देह धर सरब खावे॥
अेक सो ज्ञान में और हंस सांभलो। मन की आश जहां जूण पाई॥
बेद सो फेर कतेब यूं कहत है। अंत सो बैर नहीं सुध कांई॥
आद में जीव सब सैंग सो उपना। तां दिना कर्म सो कौण किया॥
दास सुखराम कह लख चोरासियां। स्वर्ग और नरक में काय दिया ॥ १८॥

उत्तर : पाप और पुन्न दोय भरम है जग में। मन की आस सोई सांच नांही॥
बहोत प्रकार की सब और करणिया। मरग को जल है शिष्ट मांही॥
होण सो काल जीऊं होत है जीव के। करण करावणो सरब झूंठो॥
आद में जुग सो पेल परलो बण्यो। तां दिना करम सो कोण तुटो॥
सर्व व्यवहार सो किसब है देह का। देख त्रिलोकी हैरान होई॥
दास सुखराम कह जीव तो ब्रह्म है। पाप और पुन्न न लगे कोई॥

प्रश्न : कुण अस्थान में भक्त सो उपजे। कोण अस्थान में जीव जागे॥
कोण अस्थान में शब्द सो लगत है। कोण अस्थान में भरम भागे॥
कोण अस्थान में समाध सो लगत है। कोण अस्थान में ब्रह्म होई॥
कोण अस्थान में केवली ब्रह्म रे। परा सो ब्रह्म केत नर कोई॥
दास सुखराम अे अस्थान अे जाणसी। ज्ञान प्रकाश जिण संत मांही॥
ब्रह्म को रूप बैराग घर पुगसी। अमर अस्थान में झूंठ नांही ॥ १९॥

उत्तर : आंकूर अस्थान में भक्त सो उपजे। प्रेम स्थान में जीव जागे॥
रटण अस्थान में शब्द सो लगत है। न्याय अस्थान में भरम भागे॥
सता अस्थान में समाध सो लगत है। ज्ञान अस्थान में ब्रह्म होई॥
विज्ञान अस्थान में केवली ब्रह्म है। परा सो ब्रह्म नर कहे कोई॥
दास सुखराम अस्थान ये सत है। और अस्थान को कहो काई॥
पिण्ड ब्रह्मण्ड बैराट यो फूटसी। जीव के संग तो रहे नांही॥

प्रश्न : थे किसा राम ने गावो ॥ २०॥

उत्तर : पांच जिण तत बैराट यो थरपियो। विष्णु ब्रह्मा हर पैदास किया॥
पीर औतार शिव शक्ति के उपरे। दूज कूं ज्ञान का मूल दिया॥

अलख अलेख खुदाय सो। काल हुंणार उण राम सारे॥
पलक में मांड नर नार सो थरपिया। छिनक में सब कूं मार डारे॥
कागदा उपरे राम मंडे नहीं। मुख पर जीभ पर नांही आवे॥
दास सुखराम ब्रह्म ने रट रहिया, संत कोई शूरवां भेद पावे॥
रमता राम सूं हेत हम बांधियो। बोलता राम सूं प्रीत कीनी॥
देह आकार का नाम सब पर हरिया। अर्ध और उर्ध बिच सुरत दीनी॥
पांच पच्चीस सूं राम न्यारा रहे। दिष्ट और मुष्ट में नांय आवे॥
धरण पाताल आसमान सूं अगम है। क्रोड मज संत कोई गम पावे॥
पुरणा राम भरपूर सो भर रहया। जाय ब्रह्मण्ड ररंकार ध्यावुं॥
दास सुखराम केह शब्द अरूप है। जींग सी धुन सूं राम गांवु॥

कवित्त : नहीं बाप अर मांय, नही बेण सुन भईया। नहीं देश कुल नांव, नहीं किण शरण न रहिया॥
नहीं ज्ञान गुरु, शिष, नही आपो तन काया। नही वार कुछ पार, नहीं कहूं जायर आया॥
ऐसे अदभुत राम है, जाकूं शिंवरे वीर। तांको सुण सुखराम कह, भजिया दास कबीर॥

॥ इति श्री प्रश्न उत्तर का अंग सम्पूर्ण॥

卐 प्रश्न उत्तर का अंग का अरथ 卐

करम कौण करावे - करम चाह करावे।
चाह काय से उपजे - भूख प्यास पिण्ड से।
बुद्ध भृष्ट काय से होवे - काम से।
काम काय से रूके - लाज शरम मरजाद से।
लाज शरम मरजाद कौण रखे - जीव।
कुबुद्धि काय से आवे - कुशलाई खुशहाली से।
निन्दा काय से होवे - धेक से।
धेक काय से आवे - गर्व गुमान से।
गर्व का मूल कौन - अज्ञान।
अज्ञान काय से आवे - अहंकार से।
अहंकार किसकूं होवे - हल्की बुद्धि वाले कूं।
आपा काय से आवे - अभिमान से।
सुध बुध कैसे गई - क्रोध से सुध गई, सुध जाणे से बुद्धि गई।
नीच स्वभाव का लक्षण क्या - दूसरे की चुगली करे।
चुगली कौन करावे - हल्का चित।
मान कौण चावे - मन हीण।
हल्का काय से - दत्त धन बिना।

शोभा सुख मान इन सबकी चाहना किसको – मन को।
शील विश्वास संतोष अर्थ काय से आवे – अनुभव से।
परमार्थ पर कार्य कौण करे– साधू।
साधू पराया काज कैसे करे–जीवों को आपकी शरण में लेवे।
साधू की सेवा वंदगी काय से होवे – भाव से।
धर्म पूण्य कैसे करे – परमोद से।
शरम लाज काय से रखे – मेर मरजाद से।
मेर मरजाद का बंधन काय से – भय डर से।
मीठी और निर्मल बोली काय से – वचन विचार कर बोलने से।
ईश्वर मिलने का उपकार किसने किया – गुरु ने।
ध्यान ज्ञान विवेक सोजी समझ कहां से मिले – साधू संग से।
भक्ति करने का योग कौन बतावे – सतगुरु।
भक्ति करने का स्वभाव काय से आवे – भाग्य कर्म से।
ब्रह्म भक्ति का भेद काय से मिले – पूर्व के दत्तब से।
लघुताई कौन देवे – चाह।
मन में तलब चाह काय से लागे – अगाडी का अंकूर से।
भेद काय से मिले – भाव से।
भाव काय से आवे – प्रेम से।
प्रेम काय से आवे – प्रीति से।
त्याग काय से आवे – तरक से।
जगत काय से छोडे – बैराग से।
बैराग काय से उपजे – मत ज्ञान से।
जीव काय से जागे – शब्द से।
शब्द कौन सा – ब्रह्म का संदेशा।
ब्रह्म का संदेश कौन सा – गुरु वाक्य।
गुरु वचन का सुख काय से आवे – प्रतीत और विश्वास आने से।
सब रोग चौरासी और नरक का कब मिटे – गर्भ में जन्मना छूटने से।
जन्मना मरना दुविधा काय से मिटे – मोक्ष मिलने से।
जीव की जात क्या है – ब्रह्म।
ब्रह्म का गुरु कौन – ज्ञान।
जीव का मां बाप कौन – जीव के मां बाप नहीं है।
मां बाप के बिना शुरू से जीव की उत्पत्ति कैसे हुई – जीव की उत्पत्ति और अंत नहीं है।

जीव का अंत नहीं है तो जगत में मरता कौन है – देह।
जन्म कौन लेता है – चेतन मन।
मुढ कौन और चतुर कौन – जीव ही मुढ और जीव ही चतुर।
मुढ और चतुर हाने का कारण क्या – ज्ञान का।
सत्य ज्ञान कौन सा– आः पद का ज्ञान।
सत्य भक्ति कौन से अस्थान से पैदा होवे – आंकुर अस्थान से।
अगाडी का कुछ भक्ति का आंकुर होने से जीव भक्ति में कौन से अस्थान में लगे – प्रेम अस्थान।
प्रेम होने से शब्द कौन अस्थान में लागे– रटन अस्थान।
शब्द रटने से भरम कौन अस्थान जावे – न्याय अस्थान, विचार, निर्णय करने से।
समाध कौन से अस्थान में लागे– सता अस्थान, सतगुरु की सता से।
जीव ब्रह्म काय से होवे – ज्ञान से जीव ब्रह्म होवे।
ज्ञान अस्थान केवली ब्रह्म काय से होवे – विज्ञान अस्थान विज्ञान से केवली ब्रह्म होवे।
बादल का घर कौण सा, सुन्न बादल काय से आते हैं – देव अच्छया से।
सुन्न में बिजली चमक कर काय में समाती है – बिजली सुन्न में चमक कर सुन्न में समाती है।
ज्ञान रूपी महल का पाया व नींव क्या – शील संतोष।
प्रेम कहां रहता है – चित्त में।
मन कहां पकड़ा जावे – मन त्रिकुटी में पकड़ा जावे।
किसका मन कब पकड़ा जावे – संत का मन त्रिकुटी में ध्यान लगने से।
त्रिकुटी में ध्यान काय से लागे – गुरु के ज्ञान से।
पहले जगत पैदा हुवा के भक्त, पहले पैदास स्त्री हुई के पुरूष, पहले शिष्य पैदा हुये कि सतगुरु, पहले राजा हुआ के व्यास, पहले सांच हुवा के झूंठ, पहले सत पैदा हुवा के नासत–
जगत पहले होवे तो भक्त किसने किसने बताई और भक्त पहले हुवा तो जगत कैसे उपजा। स्त्री पहले हुई तो पुरूष बिन कैसे हुई और पुरूष पहले हुवा तो स्त्री बिन किसने जाया। व्यास और गुरुदेव पहले हुवा तो शिष और राजा कहां से उपजे। झूंठ जो पहले हुवा तो सांच किसने बताया। सांच पहले हुआ तो झूंठ कैसे उपजा। जो पहले नासत होवे तो सत कूं नहीं होणे देवे। क्यों कि दुश्मन को पैदा होने कौन देवेगा, तो कौण सी चीज कौण में से निकली, सोज कर बताओ। यह सब जोडे से पैदा हुवे है। तैसे ही सतस्वरूप और ब्रह्म साथ ही पैदा हुये हैं।
ब्रह्म का रूप कैसा है – ब्रह्म अरूपी है।
ब्रह्म का रूप कैसे दिखे – अरूपी होने से रूप कहा नहीं जाता।
ब्रह्म का देश कौण, ब्रह्म का घर कहां, ब्रह्म कहां वास करता है, उसके जन उसको कैसे जाय कर परसे, ब्रह्म में कौणते विध जाय के मिले, ब्रह्म में मिलने से क्या सुख होवे, ब्रह्म को आंखों से कैसे देखे, ब्रह्म दृष्ट में कैसे आवे, ब्रह्म से बात कैसे करना, ब्रह्म का सब निरणा

कहो। सुन्न का आकार कहो, गिगन घर चेन बताओ, जो तुम पुगे हो तो रास्ता व बीच के घाट बताओ, कौण कौण स्थान छेद के जन जाते है। कौणते देव कौणते अस्थान है, उसको कैसे परसना, कैसे रहना, सो कहो।

ब्रह्म का रूप पूछते हो पर जीव का रूप कहो, कितना बड़ा है। जो सब ज्ञान, बडे बडे ग्रन्थ सब घट में देख लेता है। श्वांस प्रश्वांस, श्वांस को छोडना, पीछा लेना, कैसे करता है। भेरी बाजा कैसे बजाता है। जीव धापे उसका प्रीति रूप कैसे आवे। ऐसे ब्रह्म का सुख आवे। जीव सुख दुख दोनों जाण के कैसे कहता है। चित में चितवन उपजे, इस जीव का क्या स्वरूप है। जीव आलस नींद अज्ञान कैसे रंग लेता है। सूरत परदेशा दौड़ती है। परदेश में देखी सब चीज पलक में यहां बता देता है। सौ कोस पर की चीज इस घट में जीव निरख यहां देख लेता है। ब्रह्म का रूप कहते हो, पण जीव का रूप बतावो।

ब्रह्म के रूप में सब धरती, आकाश, बनराय, जलस्थल, पवन, अग्नि, सब देव, मनुष्य, मुनि, राक्षस, ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, समुली शक्ति, अंछया, महतत सहित शक्ति, सहेष फुणो का शेष सब ब्रह्म के रूप अन्दर है। ब्रह्म की कल नहीं पडती, वह अनुप, अगाध, अरूपी है। अरूपी होने से रूप बरणा नहीं जाता। जैसे ढोल में नांद, कांसी में झणकार है। शेष के सिर में मणी है, सो कौण जाण के कौन बतावे। मच्छी मच्छ सब पानी की धार के सामने चलकर जाते हैं। ऐसे ही उलट के चढे सोई साधु ब्रह्म है।

ये बात जैसे लकड़ी में आग, दूध में धृत, तिली में तेल, कीडे में रेशम, कीट भंवरा होवेगा। ये बिन भेदी नहीं मानते। अरूपी ब्रह्म का रूप बरणा नहीं जाता। जैसे घिरत खा के उसका स्वाद कैसा है, कोई नहीं बता सकता। जैसे कामी पुरूष काम भोग कूं स्त्री संग करता है। पूछने पर स्वाद कैसा है, क्या जवाब देवेगा। पुष्प मे सुगंधी है, उस सुगंध का रूप, मच्छी का रास्ता, ऐसे ब्रह्म का रूप मानो।

साधु, पंडित, जगत, जैन सब कहते है कि जैसा जीव पाप पुण्य करता है सो दूसरी देह धारण करके किये करम का फल जीव भोगता है।

हिन्दू का वेद मुसलमानों का कतेब यह कहते है कि अन्त समय में जीव कूं कुछ सुध नहीं रहती तो आशा कैसे रहेगी। मन की आशा सच नहीं झूंठी है। आदि शुरू में जीव सब पैदा हुये उस दिन कौणसा कर्म किया सो जीव लख चौरासी और स्वर्ग नरक में जीव कैसे भेज दिये। आदि में पहले जगत का प्रलय हुआ उस दिन जीव के पहले किये हुये कर्म जीव के जैसे के वैसे ही रहे। प्रलयकाल में जीव करमों सहित ब्रह्म में समा गया। जीव पीछा जन्म लेने से ही वही कर्म जो पहले किये थे, उन करमों के सहित जन्म ले लिया। कर्म ब्रह्म में मिलने से टूटते नहीं और ब्रह्म में भोगे भी जाते नहीं है। जीव कूं देह मिलने से कर्म होते है और देह होने से त्रिलोकी में जीव कर्म भोगता है। सब देह का काम है, देह नहीं तब जीव तो ब्रह्म है। इस जीव को पाप पुण्य कुछ भी नहीं लगता।

।। इति श्री प्रश्न उत्तर का अंग का अरथ सम्पूर्ण।।

卐 प्रश्न का अंग की साखा 卐

गरीबी को मत यह है, सहे शकल सो लीन। मतवालो सुखराम कह, सब सुं सम तत चीन ॥ १ ॥
गरीबी का मत यह है, सबसे नम्रता रखे, सब सहन करे। म:फ: है कि मतवाला होकर सबको समान समजता है।

अंग सारा ही सांच है, सब ही झूंठा होय। जन ने पारख सुखराम के, शब्दा में कण जोय॥ २ ॥
सब ही अंग श्रेष्ठ है, अंग धारण से मोक्ष नही होता, उसके वास्ते झूंठा कहा है। म:फ: है कि जनों की परीक्षा बचनो से होती है। उसकी पहुंच कहां तक है।

रंग रूप जग स्वाद है, ये इनका सब होय। पांच तत सुखराम के, ब्रह्मा शिव हर जोय ॥ ३ ॥
रंग, रूप, जगत का स्वाद, ब्रह्मा, विष्णु, महादेव एवं पांच तत्व सब परमात्मा के है।

या बांधी मरजाद कूं, खट दरशण संसार। सो गुण मुख ते उथपे, आपा पंथ विचार ॥ ४ ॥
ब्रह्मा विष्णु महादेव ने जगत में मर्यादा बांधी है। खट दरशनियों को बनाया है। म:फ: है जो इनका गुण उथापते है। नही मानते है, वे आपा पंथी है।

बिजा बोहत भेष ने, खट दरशण के जोय। मुख ते सुण राखे नही, यूं पाखण्ड नर होय ॥ ५ ॥
दूसरे बहुत भेख को खट दरशणी कहते है, वो नही है। जो खट दरशनियो का गुण नही मानते वो पाखण्डी है।

पांच तत बिन जग में, रूप स्वाद नही कोय। तीन देव सुखराम के, शकल लोक शिष होय॥ ६ ।।
जगत में रूप रंग स्वाद पांच तत्व के है। सारा जगत तीन देव ब्रह्मा विष्णु महादेव का शिष्य है।

ज्ञान ध्यान सब बात सो, नाना विध की लोय। आद मूल ब्रह्मा, पांच तत गुण जोय ॥ ७॥
ज्ञान ध्यान नाना विध की सब बातें संसार को ब्रह्माजी से मिली है, जो पांच तत्व के गुण है।

केण मातर बात थी, सो सब कही अनाद। पीछे दूज की बुध ले, कहे शकल जुग साद ॥ ८ ॥
कहने की बात आद से ब्रह्मा ने कही है। पीछे सब उनकी बुद्धि के आधार से सारा जगत व साध कहते है।

पांच तत्व का पींजरा, ब्रह्मा की सब मांड। दरशण गुण मुख उथपे, सो नर पाखण्ड भांड ॥ ९ ॥
पांच तत्वों के सब शरीर सब ब्रह्मा की रची हुयी सृष्टि है। जो दरशनियों के गुण को नही मानते वे पाखण्डी व भांड की तरह है।

अेक घडी इन बाहेरो, प्राण न जीवे कोय। सो गुण मुख ते उथप्या, मुक्त कहां ते होय ॥ १० ॥
पांच तत्वों के बिना प्राण अेक घडी अेक क्षण भी जिन्दा नही रहते। उस गुण को उथापने से मुक्ति नही होती।

जहां पांचू तहां आप है, ओऊं शिरजण हार। या पूजा तुम कीजियो, मम देह रूप विचार ॥ ११ ॥
जहां पांच तत्व है वही आत्म ब्रह्म है। यह पूजा ही मेरी पूजा है। इनकी पूजा करना ही मम देह रूप विचार है।

पांच तत्व ये अेकठा, बोले प्रगट आय। आत्म में परमात्मा, सब सुर पोख्या जाय ॥ १२ ॥
जहां पर पांच तत्व इकट्ठे होते है। वो प्रगट बोलता है। म:फ: है आत्मा में परमात्मा सब का पालन करने वाले देवता है।

मम देवो मम आत्मा, मैं ही शिरजण हार। मम ऊपर पर ब्रह्म है। सो कुछ तारण मार ॥ १३ ॥

मैं ही देव हूं मैं ही आत्मा हूं मैं ही सृष्टि करता हूं। मेरे ऊपर जो पारब्रह्म परमात्मा वो किसी को तारते भी नही व मारते भी नही।

॥ इति श्री प्रश्नोत्तर के अंग की साखा सम्पूर्ण ॥

卐 उपदेश का अंग 卐

कुण्डलिया : चार पहर धंधो करे, सांज हतायां जाय। झूंठी जोड़ा छेड कर॥
बद बाद कहे नर आय, बद बाद कहे नर आय। पछे सुतो घर जाई,
होय सपना में जीव॥ पड़े दो जख के मांही, सुखरामदास गुरुदेव बिन,
यूं नर गोता खाय। चार पहर धंधो करे, सांज हतायां जाय ॥ १ ॥

चार पहर याने दिन भर काम करता रहता है। शाम को हतायो पर जा बैठता है। वहां पर मनुष्य झूंठी बाते बढ बढ कर कहते है, फिर घर जाकर सोता है। सपने में जीव दुखी होता है, वही सपने आते है। म:फ: है बिना ज्ञान के इस तरह दुख पाते रहते है।

कवित्त : पइसो घर गमे सोच, सोच छाली नही आया। खेती भले निनाण,
खीच नही समदी खाया॥ खोटी हुवे दिन एक, सोच बुटां जीव खावे।
आरो बिगड जाय, सोच कण नही बुवावे॥ लाख बात बोहो सोच रे,
नाना विध नर लोय। धिरग मानव सुखराम कह, अेक भजन सोच नही होय ॥ २ ॥

एक पैसा भी घर से गम जाने पर सोच करता है। शाम को बकरी घर नही आती है तो सोच करता है। खेती में निनाण नही होने से बाजरी नही पैदा होगी तो सम्बन्धियो को खींच नही खिला सकेंगे। सम्बन्धी भोजन करके नही जाता तो उसका सोच करते है। सारा दिन सोच करने में बिताते है। एक दिन भी खोटी होता है तो सोचता है कि फसल जीव खा जायेंगे। कोई आरा नुगता करते है। वो बिगड जाता है। तो उसका भी सोच करते है। इस तरह लाखों बातों का सोच करते है। दिन भर सोच करने में ही बीतता है। म:फ: है कि ऐसे मनुष्यों को धिरकार है जो भजन का सोच नही करते।

पइसो तो परखाय ले, सौदा करे बजाय। गेल नगर घर जावता,
बहु विध बुझे आय॥ समदी करे विवेक सुं, चाकर रहे दिल जोय।
हंडिया कूं ठमठोर के, लेता है सब कोय॥ सब कसर कीमत काढकर,
परख करे नर देह। धिरग मानव सुखराम कह, एक भजन परख नही लेह ॥ ३ ॥

पैसा खुद समझने पर भी दूसरे को परखा कर लेता है। सौदा करता है तो सब बाते तय करके करता है। गांव में या दूसरे गांव में जाना हो तो कई आदमियों से पूछ पूछ कर जाता है। सम्बन्ध करता है तो बहोत सोच विचार कर करता है। नौकर रखता है तो उसकी जांच कर के दिल में विश्वास होने पर रखता है। हांडी भी लेता है तो उसे बजाकर लेता है। मनुष्य सब काम सोच समझकर करता है। म:फ: है कि धिक्कार है उन मनुष्यो को जो भजन की परीक्षा करके नही लेते, कि यह जीव भाव से सुखो की प्राप्ति करायेगा या मोक्ष की करायेगा।

नकटी बुची मांग, ताय की बात सुणावे। बहो बिध व्हे आधीन, दौड वांके घर जावे॥
गांव पटेली लेण, बहुत सुकां नर दिन्ही। न्यात पांत के काज, बांध जरबी शिर लिन्ही॥
या बातां रे वास्ते, सब नर झूंजया जाय। या सरभर सुखराम कह, हरि गुरु है कन नांय ॥४॥

नकटी बूची मांग होने पर भी उसके घर जाकर बहुत नम्रता से बात करता है। गांव की पटैली लेने के लिए बहुत रिश्वत देता है। जाती में काम पडने पर उनकी जूतियां बांधकर सिर पर रख लेते है। इन बातो के लिए मनुष्य रात दिन कोशिश करते रहते है। म:फ: है कि इनकी बराबर परमात्मा या गुरु है या नही। गुरु के पास जाकर ज्ञान धारण कर परमात्मा की प्राप्ति नही करना चाहता है।

प्रेम जहां लग भजन, प्रेम छूटा सब कारा। माया जब गृह सुख, धन बिन दुख बोहरा॥
करामात जब पीर, कलालग देवत होई। जब लग मन इतबार, बात माने जग सोई॥
बंधी मुट्ठी लाखरी, खुल्या कोडी मोल। भाव खिच्या सुखराम कहे, सब नर फूटा ढोल ॥५॥

हृदय में प्रेम होने पर ही भजन होता है प्रेम नही होने पर भजन नही होता। गृहस्थ में माया होने पर ही सुख मिलता है। धन नही होने पर सब कामो में दुख देखना पडता है। करामात होने पर ही पीर कहाते है और कला होने पर ही देवता कहलाते है। जिसका जिसको भरोसा होता है उसकी ही बात मानते है। जब तक कोई बात प्रगट याने चौडे नही होती तब तक ही उसकी कीमत रहती है। प्रकट होने पर कीमत नही रहती। जब तक हृदय में भाव रहता है तभी तक भक्ति होती है। बिना भाव के भक्ति नही होती।

पडे दूध में लूण, ढोल रे परवाई लागे। घडियाल के राय, कृष के पवन कोई बाजे॥
हंडिया में रू होय, कंठ में पडे खटाई। धवण न बंदे ठीक, हदफ पर चोट न आई॥
यू मन फीको नेक ही, पडया न सजे काय। प्रेम बिना सुखराम कहे, राम गाय मां गाय ॥६॥

दूध में नमक पडने पर किसी काम का नही रहता, ढोल के बरसाती हवा लगने पर अच्छा नही बजता। घडियाल के राय आने पर अच्छी नही बजती। खेती में ठण्डी हवा लग जाने से साख खराब हो जाती है। हंडिया में सुराख होता है तो पानी नही ठहरता। कंठ में खटाई पड जाने से अच्छी राग नही निकलती। धवण ठीक नही हो तो लोहा गरम नही होता, तो चोट सही नही पडती तो फिर राछ नही बनता। इसी तरह मन फीका पड जाने पर भक्ति नही होती। प्रेम के बिना रामजी की भक्ति नही करने के बराबर है।

जब लग हरि सुं हेत, प्रेम सुं प्रीत नही भाई। सगा पुरसे खीर, साध कूं राब पिलाई॥
काती में मोखाण, उठ समदी घर जावे। साधु दरशण जाय, बोहोत घर काम बतावे॥
भजन करे सुख सेल में, हांसल दे तन खोय। जब लग तो सुखराम कह, हर सुं हेत न होय ॥७॥

जब तक परमात्मा का भजन करने में हेत प्रीत व प्रेम नही है। घर पर रिश्तेदार आते है। तब तो उनको अच्छा पकवान जिमाते है और सतसंगी घर पर आते है तो घर में होता है वही जिमा देते है। काती में किसानो के खेती का बहुत काम रहता है, जब किसी सम्बन्धी के मोखाण का काम उस समय हो तो जाना पडता है। यदि सतसंग हो तो वहां जाने में बहुत काम बताते है। भजन करने में किसी तरह की तकलीफ नही होती, सहज में सुख से होता है। हांसल भरना होता है तो दुख पाकर भी भरते है। म:फ: है कि जब तक ऐसे विचार रखते है जब तक समझो कि परमात्मा में प्रेम नही है।

चुंबक लोह हेत जांण, कनक सोगी संग किया। पय जल मिले व्हे एक,
अमल आसक दिल दिया॥ वासंग सुण हेत राग, घिरत दरद पर जावे।
विष्य ऋतु मेहरी जाण, सुध जावक बिसरावे॥ अेसा चितवन चाहिये,
साहिब सुं दिन रात। जब माने सुखराम कह, हरिजन की हरि बात ॥ ८ ॥

चुम्बक व लोह के ऐसा हेत होता है कि लोहा जड होने पर भी चुम्बक के जा लगता है। सोना सोगी डालने पर पानी जैसा हो जाता है याने गल जाता है। दूध और पानी मिलकर एक हो जाते है। अफीम खाने वाले को अफीम से बहुत प्रेम होता है। सर्प पुंगी के राग को सुनकर बिल से बाहर आ जाता है। घीरत को रूई के फोये में भिगोकर घाव पर बांधने से आराम हो जाता है। ऋतुवंती स्त्री विषय की कामना से सब सुध बुध भूल जाती है। म:फ: है कि परमात्मा की भक्ति रात दिन ऐसे प्रेम से करना चाहिये तभी परमात्मा की प्राप्ति हो सकती है।

औरत हेत भरतार, मीन जल प्रीत पिछाणे। अलि चित बास पेफ,
जोख दरद पर आंणे॥ शशि चकोर हेत जांण, राग में मरग बुलाया।
पारेवा नेह नार, पनंग नेह नार, पतंगा दीपक गेह गाया॥ अैसा चित मन चाहिए,
साहिब सुं सुण जीव। जब माने सुखराम कह, हरिजन की हरि पीव ॥ ९ ॥

जैसे स्त्री पुरूष के आपस में प्रेम होता है, मछली का पानी से प्रेम है। मछली एक क्षण भी पानी के बिना नही रह सकती। भंवरे के चित में फूलो की सुगन्ध में ही इच्छा रहती है। शरीर में जहां दर्द होता है। जोख वही जाकर चिपक जाती है। चन्द्रमा से अपनी दृष्टि चकोर पक्षी एक क्षण भी नही हटाता, ऐसा प्रेम है। मृग का राग से बहुत प्रेम है। जहां राग होती है वही चला जाता है। कबूतर का कबूतरी से बहुत प्रेम होता है। सर्प का सर्पणी से प्रेम होता है, दीपक व पतंगा के ऐसा प्रेम है। पतंगा जलने की परवाह न करके उसके उपर जा पडता है। इस तरह चित मन लगाकर परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए। म:फ: है कि तब ही भजन करने वाले को परमात्मा की प्राप्ति होती है।

सांच शील सन्तोष दया देणो जग मांही। मिट्ठा वचन सतोल,
तप ऐसा कोउ नांही॥ सतवचन सो ही जांण, न्याव पर बोले सारा।
दया दुख दे नांय, हर्ष जहां पुन्न विचारा ॥ सुखराम इसो पण बरत रे,
जाका कहां बखाण। शकल जहान महिमा करे, देवलोक जग जांण ॥ १० ॥

सत्य बोलना, शील व्रत धारण करना, सन्तोष रखना, प्राणी मात्र पर दया रखना, यही जगत को देना है। सोच समझकर मीठे वचन बोलना चाहिए। जिससे किसी को दुख नही हो, इसके बराबर कोई तपस्या नही है। सत्य वचन उसी को समझना चाहिए जो यथार्थ बात बोली जावे। दया उसे कहते है जो प्राणी मात्र को दुख नही दे। प्राणी मात्र को सुख पहुंचाना ही सबसे श्रेष्ठ पुण्य है। म:फ: है कि ऐसा प्रणव्रत लेकर कार्य करते है। उनका क्या कहना है। उनकी जगत में व देवताओं के लोक में महिमा होती है।

शीलवंत सोई जांण, नार परणी सोई सांची। और शकल मां बहेन,
संग बरते नही काची॥ हर्ष बिना ले नही, गवु बैठी नही छेडे।
बिन आदर नही जाय, बिन घरे काहूं बिन तेडे॥ सुखराम इस्यो पण बरत ले,

भजन करे कहूं तोय। से नर नारी संत है, और भीक्यारी होय ॥ ११ ॥

उसी को शीलवंत समझना चाहिए जो खुद की स्त्री के सिवाय दूसरी सब स्त्रीयो को मां बहन समझे, यही संग बरते नही काची है। देने वाला प्रसन्न होकर देवे तभी चीज लेनी चाहिए। बैठी हुयी गाय को कभी नही उठावे। बिन बुलाये बिना आदर किसी के यहां नही जावे। म:फ: है कि ऐसा प्रणव्रत लेकर जो स्त्री पुरूष भजन करते है, वे सन्त ही है। केवल भेष धारण कर ले और भजन नही करे तो भिखारी के समान है।

कुण्डलिया: पिता धरम तो सज गयो, पुत्र दियो परणाय। पुत्र धर्म तो जब सजे,
किया बन्दगी जाय॥ किया बन्दगी जाय, नार धर्म पतबरत कहावे।
चाकर रो ओ धर्म है, हुक्म पाछो नही आवे॥ गुरु शिष रो ही सुखराम कहे,
धरम कहावे जोय। गुरु तो ऊलट चढावे गिगन में, शिष तन मन अरपे दोय ॥ १२॥

पिता का धरम तो पुत्र का पालन पोषण कर पढा कर शादी ब्याह कर देना है। पुत्र का धर्म तो यह है कि माता पिता की सेवा करे। स्त्री का धर्म पतिव्रत पालन करने में है। नौकरी करने वाले का धर्म यह है कि जिसके यहां रहे उसकी आज्ञानुसार काम करे। गुरु शिष्य का यह धर्म है कि गुरु शिष्य को बंकनाल के रास्ते उलटकर के:पद आ:पद की प्राप्ति कराते है। शिष्य सतगुरु के बताये मुजब तन मन से भक्ति करे, यही गुरु के तन मन अरपण है।

कवित : काम क्रोध अहंकार, धेक नासत मुख निन्दा। मैं ते मान मरोड,
मोह माया मन संदा॥ तामस तरक तबोल, रीस आयो पख खींचे।
कडवा वचन विरोध, बाद करमा दिश खेंचे॥ कले कसर मन कपट रे,
दाव घाव बहु मांय। अे अंग मिल सुखराम केह, सो नर नरका जाय ॥ १३॥

कामना रखना, क्रोध करना, अहंकार रखना, द्वेषता रखना, झूंठ बोलना, दूसरो की निन्दा करना, तेरी मेरी करना, मान चाहना, मरोड, माया से मोह रखना, तामसी वृति, तरक करना, चाहे जैसे बकना व अपने पक्ष की बात करना, कलह करना, कसर देखना, मन में कपट रखना, हृदय में बहुत दाव घाव रखना। म:फ: है कि जिन मनुष्यो में ऐसे अंग होते है। वो निश्चय ही नरक में जाते है।

हम हर्ष हकीम, दुख औरां घर चीते। तस्कर चोर तबीब,
झगड सांचे सुं जीते॥ बके जके बिन रीत, मेर मरजाद न माने।
अत अंतर मन सोच, करम बंधे नित छाने॥ बैण नैण कर पांव ले,
निश दिन अशुभ कमाय। अे अंग मिल सुखराम कह, सहज नरक ले जाय ॥ १४॥

वैध हकीम खुद की खुशी चाहते है। दूसरों को बीमार देखना चाहते है। चोरी करने वाला चोर गुन्डा सच्चे आदमियों से भी झगडा कर जीत जाते है। बिना मतलब की बकवास करते है। किसी की शरम मर्यादा नही मानते, अन्तर में बुरे विचार सोचते रहते है। हमेशा छिपकर करम बन्धन करते रहते है। वाणी से, नेत्रो से, हाथ पैरो से, रात दिन बुरे कर्म करते है। म:फ: है कि जिन मनुष्यो में ऐसे अंग होते है, उनको सहज में ही नरक की प्राप्ति हो जाती है।

झूंठ नित खोटी चले, मुख अन्तर रह और। बोल वचन सब डाव सुं, करे करम कठोर॥
फेर आगो मन राखे, लालच तरसणा बहोत। चाह झूंठी मुख भाखे, नुगरो ग्यान ऊथाप॥
साध संगत नही भावे, ये अंग मिल सुखराम, नरक मांय मिलावे ॥ १५॥

हमेशा झूंठ बोलता व कुचलन चलता है। अन्तर में और विचारता और मुंह से वचन डाव से बोलता है। इस तरह का मन रखते है। लालच करते है। तृष्णा बहुत रखते है। अपने चाहना की पूर्ति के लिए बहुत झूंठ बोलते है। गुरु से ज्ञान धारण नही करते, ज्ञान को उथापते रहते है। साधो की संगत याने सतसंग अच्छी नही लगती। म:फ: है कि जिन मनुष्यों में ऐसे अंग है वो नरको में जाते है।

जरियो अहार उलाख, मरे माखी और मारे। मुसो चोरे बाट, जरे आप ही घर जारे॥
मकडी मांडे जाल, दगे बहुता जीव खावे। अजा खाल लोहा गले, किया सो अपणा पावे॥
बांस जले बिन जाल, ब्याल को काल छुछुन्दर। नापट नाक कटाय, करी करता बिन कदर ॥
बाल करद काजी बुई, खिणत खाड औरां पगा।
सुखराम दास संसार में, दगा नही किसका सगा ॥ १६ ॥

भोजन परसाद ग्रहण करते समय मक्खी मुंह में चली जाती है तो परसाद उल्टी होकर निकलता है, वो मक्खी उसको दुखी करती है और आप भी मरती है। चुहा दीपक की बती लेकर चला जाता है। खुद भी जलता है और उसका घर जला डालता है। मकडी अपने मुंह से तागा निकाल कर जाल बना उसमें दूसरे जीव फसाती है और उन्हें खा जाती है। आप भी खुद भी उस जाल में फंस कर मर जाती है। लोहा पहले बकरी को मारता है, वही बकरी की खाल लोहे को गला देती है। जो जैसा करता है वैसा ही भोगता है। बांस जंगल में आपस में लड भिड कर अग्नि प्रगट कर अपना नाश कर लेता है। सर्प अपने मुंह से चकचुन्दरी जानवर को पकड लेता है यदि वह उसको खा जावे तो सांप को कोढ हो जाता है, यदि छोडता है तो अंधा हो जाता है। आदर करने वाले का अनादर करने से दुख भोगना पडता है। जैसे एक सेठजी की खिदमत करने नाई गया, उसने खिजमत करने के बाद सिर को पपोल कर एक दो कडकोल्या की सिर में लगा दी, सेठजी के पास हुकुमत तो थी नही, बुद्धि थी, सो बुद्धि से विचार कर सेठजी ने खिदमत करने वाले नाई की मजूरी के आठ आने देने थे उसके बजाय एक सोने का सिक्का दे दिया। नाई ने दिल में सोचा कि सेठजी को कडकोल्या लगाने से निश्चय ही ज्यादा आनन्द आया होगा। वही नाई राजाजी की खिदमत करता था, एक दिन राजा की खिदमत करने गया, उसने राजा जी का सिर पपोलकर दो चार कडकोल्या लगा दिया। इस पर राजा ने क्रोध करके नाई का नाक कटवाने का हुक्म दे दिया । नाई का नाक कट गया क्योंकि जिसकी इज्जत करना चाहिए उसकी इज्जत नही की। एक काजीजी थे। बालक बरसात के मौसम में खड्डे खोदकर खेल रहे थे। बालको को काजीजी ने कहा रास्ते में खड्ढे क्यों खोदते हो, इस पर एक बालक ने कहा आपका क्या लेता है। जो खोदेगा वही गिरेगा। इस बालक के माता पिता नही थे। काजीजी ने पूछा तू बालक किसका है। बालक ने कहा मेरे माता पिता नही है। जो रोटी कपडा देते है। उसी के साथ रहता हूं। इस पर काजीजी ने कहा हमारे यहां पर रहो। काजीजी ने बालक को समझदार जान अपने यहां रख लिया। काजीजी बादशाह के दरबार में जाया करते थे। लडका काजीजी के साथ जाता, जहां जूते काजीजी उतारते थे। बालक उन जूतों को साफ कर उनके पास बैठा रहता। काजीजी घर आते बालक भी आ जाता, घर में थोडा बहुत काम होता करता रहता। एक दिन बादशाह ने काजीजी से पूछ लिया खुदा कहां रहता है। क्या खाता है व क्या ओढता है। इस पर काजीजी को जवाब नही आया। तो बादशाह

से छः महीने की अवधि मांगी। काजीजी ने सब कुरान को देखा परन्तु उसमें कोई जवाब नही मिला। इस सोच में काजीजी कमजोर होते चले गये, क्योंकि बादशाह ने कह रखा था। छः माह में जवाब नही देवोगे तो जान से मरवा दिये जावोगे। काजीजी का शरीर चिन्ता से सुखने लगा। एक दिन लडके ने काजीजी से कहा आप कमजोर क्यों होते जा रहे है। क्या चिन्ता लग रही है, काजीजी ने कहा तुम्हें कहने से क्या होता है। इस पर लडके ने कहा बडेरो का यह कहना है कि यदि घर में कोई दूसरा नही हो तो खंबे से या अपनी पगडी से सलाह ले लेनी चाहिए। मैं तो चेतन हूं। मेरे को कहने से आपका क्या नुकसान होता है। इस पर काजीजी ने लडके से कहा कि बादशाह सलामत ने मुझे ऐसे प्रश्न पूछे है। इस पर लडके ने कहा इसका जवाब तो अभी मैं देता हूं। खुदा फकीरो याने भक्तों के हृदय में रहता है। परमात्मा गर्व आहारी है। याने खुदा गर्व का आहार करता है। दुनिया की शर्म ओढता है। जवाब सुनकर काजीजी को सोच मिट गया व उनका शरीर स्वस्थ हो गया। समय पर बादशाह के दरबार में गये। बालक भी गया। काजीजी बादशाह के दरबार में सिंहासन पर जा बैठे। बालक काजीजी के जूते की रखवाली में पास बैठा। बादशाह दरबार में आये और काजीजी ने तीनों बातों का जवाब दे दिया। तब बादशाह ने काजीजी को कहा खुदा क्या करता है। काजीजी को जवाब नही आया तो काजीजी ने कहा मैं बाहर जाकर आता हूं। काजीजी ने बाहर आकर लडके से कहा कि बादशाह ने पूछा है कि खुदा क्या करता है। जल्दी जवाब बतला दे। इस पर बालक ने कहा इसका जवाब तो मैं खुद ही जाकर दूंगा। आपको बताने का नही है। बताने का होता तो बता देता। आप यहां मेरी जगह खडे रहिये। मैं बादशाह सलामत को देकर आता हूं। लडका अन्दर जाकर काजीजी की बैठक पर बैठ गया। बादशाह ने कहा काजीजी कहां है। तुम यहां कैसे आकर बैठ गये, लडके ने कहा मैं आपके सवाल का जवाब देने आया हूं। बादशाह ने कहा जवाब देवो। लडके ने कहा मैने जवाब दे दिया है। क्या आपको जवाब नही मिला। बादशाह ने कहा तुम्हारा जवाब हमारी समझ में नही आया। तब लडके ने कहा काजीजी मेरी जगह खडे है और मैं उनके तख्त पर बैठा हूं। खुदा यही करता है। काजी को पाजी व पाजी को काजी बनाता है। लडका यह जवाब देकर अपनी जगह पर आ गया और काजीजी तख्त पर जा बैठे। तब काजीजी के दिमाग में आया कही लडका अपना काजीपना न ले ले, इसको जान से मरवा देना चाहिये। थोडे दिनों बाद काजीजी ने लडके को कसाई के यहां से मीट लाने को कहा और परचे में लिख दिया कि यह लडका आ रहा है इसकी गरदन उडा देना। लडका चिट्ठी लेकर गया, रास्ते में काजीजी का लडका खेल रहा था। वह खेल में हार रहा था। उसने अपने नौकर को जाते देख कर आवाज दी। नौकर ने कहा मैं नही ठहर सकता, काजीजी ने मुझे जरूरी काम भेजा है। काजीजी के लडके ने कहा तुम्हारा काम मैं कर सकता हूं। तुम मेरी जगह खेलो, लडका वहां खेलने लग गया। व काजीजी का लडका चिट्ठी लेकर कसाई के यहां पहुंचा। कसाई ने चिट्ठी पढकर उसकी गरदन उतार दी। जब लडका थोडी देर खेलकर काजीजी के पास गया। लडके को देखकर काजीजी का चेहरा एकदम उतर गया। जब लडके ने कहा कि काजीजी क्या खड्डा खोदा है। यदि खोदा है तो उसमें पडना ही है। यही खिणत खाड औरां पगा है। मः फः है कि संसार में दगा किसी का सगा नही है।

कहो कुण जाले पनंग, जले अपनी अंग जाला। कर्मी बडो वश करे,
मुढ मरकट चाला॥ बिछुडी के सुत, वृछ बेल पोखत जीव सोखे।
आखर सीख अज्ञान, वीर चूटे इण दोषे॥ कुण दुख देवे दूसरो,
सींग मार सामर मरे। सुखराम पाप पीड पोखता, यूं अकाज जीव का करे ॥ १७॥

कहो सांप को कौन जला रहा है। खुद के जहर की ज्वाला से ही खुद जलता है। कर्मी मूर्खता के वश कर्म बन्धन करता है। इसी तरह बंदर भी कई तरह की चाला करते है। बिछुडी के बच्चे बिच्छु पैदा होते है। वो उसके चारो तरफ चेंटकर उसको मार देते है। वृक्ष बेल को अपने ऊपर चढाकर उसकी रक्षा करता है, बेल वृक्ष के चारो और छाकर वृक्ष को खत्म कर देती है। अज्ञानी मंत्र को सीखकर वीरों को बुलाकर उनसे चीजे मंगाते रहते है। दूसरा कौन किसको दुख देता है। सांभर अपने सींगो के भार से खुद ही मर जाता है। म:फ: है कि इस तरह पाप की कमाई से शरीर का पोषण करना ही जीव का अकाज करना है।

पेप हुवा पाखाण, पीड प्रहलादज पाई। समज्या पुरूषा दोष, हीर बिणस्यो रे भाई॥
बडी अवल्या अेक, सरप तिणका तन कीना। कबरां पढी कुराण,
सांच साहिब कूं दीना॥ सुण कर आवाज फकीर, हांक हुरमा चल आई।
लाख रूपया रोख, दे साहिब घर मांही॥ बन भटक्यो सुल्तान अचंभा ऐसा पाया।
अन्न पाणी की प्यास, सांई परलोक रचाया॥ पोल्या बोल्या प्रेसता,
अे दरबार हुरमा तणा। क्रोड मोल सुखराम कहे, समज्या दोषण सो गुणा ॥ १८॥

प्रहलाद जी की मां कयादू नाम का महात्म जानते हुये भी जब दूसरो ने प्रहलाद जी पर बडे बडे शस्त्र चलाये जिससे उनको पीडा नही हुई। माता ने पुत्र के मोह से फूल फेंके तो पत्थर हो गये जिससे उनको पीडा हुई, समझदार पुरूषो को सब दोष देते है। बेसमझ को कोई दोष नही देता। जैसे बांदी ने हीरे को पैर के नीचे बांधा, जिस पर तो हीरा चूर्ण नही हुवा एवं हीरे की कीमत जानने वाले जौहरी ने उसे पैर के नीचे दबाया। जो हीरा घण से नही फूटता उसके टुकडे टुकडे हो गये। मुसलमानो में एक स्त्री भक्त थी। दूसरो को उपदेश करती थी कि बिना पूछे किसी की चीज नही लेना चाहिए। आप खुद पडोसी के छप्पर में से तिनका तोडकर दांत कुचर लेती थी। जिससे जब उसकी मृत्यु हुई तब उसे दफनाया गया तो वहां तिनको के सर्प होकर उसके चारो तरफ चेंट गये। जब अेसे अवल्या ने घर वालों को सपने में अपनी गलती बताई और घर वालों को कब्र पर कुरान पढने को कहा, जब सब जगह उसकी गलती प्रकट होने से व कुरान से उसका दुख दूर हो गया। अपनी गलती प्रकट कर मालिक से माफी मांगना ही सांच साहिब को देना है। एक फकीर मालिक का घर बनाकर बेचता था। उससे जो आमदनी होती परोपकार में लगा देता था। उसमें से एक पाई भी अपने लिये खरच नही करता था। इस तरह फकीर की आवाज सुनकर बादशाह की हुरम आई और मालिक का घर एक लाख में खरीद लिया। एक दिन बादशाह जंगल में रास्ता भटक गया। वहां उसको भूख प्यास सताने लगी तब उसको वहां ऐसा ताज्जुब देखने में आया कि मालिक ने इसके लिए परलोक रच दिया। जब वो उसमें जाने लगा तो प्रेषता ने कहा यह बादशाह की हुरम का घर है। जब वो वापिस आया तो वही फकीर मालिक का घर बेचने आया और उसने बादशाह को एक करोड रूपया कीमत बताई, जिस पर बादशाह ने उस फकीर को कहा, हमारी हुरमा को

तो एक लाख में दिया, हमको एक करोड़ कैसे बता रहे हो, इस पर फकीर बोला आपकी हुरम ने तो विश्वास से खरीदा था। आप उसको देखकर आये हो। इसलिए करोड रूपया कीमत बताई है। म:फ: है कि इस तरह समझदार कोई गलती करे तो उसको सो गुना दोष लगता है। बिना समझ को एक गुणा दोष लगता है।

मेले मन का जीव, पीठ पर निन्दा ठाणे। मुख पर बात बणाय,
सुगम आछी कर आंणे॥ आनन्द होय खुशयाल, सुख कोहू को आवे।
द्वेषी नर मुरजाय, अन्तर बोहो दुख पावे॥ दगा बाज मुख बूंद रे,
दिल खुल करे न बात। नित पास्यां सुखराम कहे, गुथंत अेनिश जात ॥ १९॥

जिस मनुष्य के बुरे विचार है। वो पीठ पीछे दूसरों की निन्दा करता है। मुंह के सामने अच्छी अच्छी बाते बनाता है। किसी के यहां आनन्द व खुशी होती है। तो सज्जन तो उससे सुखी होते है। व राग द्वेष करने वाले अन्तर में बहुत दुखी होते है। यही मुरजाना है। दगाबाज दिल खोलकर बात नही करते वो दूसरो को रात दिन विचार दुख देने का ही करते है। यही नित फांसी गूंथना है।

जात पांत के मांय, अेकी अद न कांई। अेक अेक पुजनीक,
अेक इधको सब मांही॥ फोज फोज सब अेक, सरब तल घोडा हिस्से।
अेक परी बर जाय, अेक कूं स्वान न गीसे॥ तो करणी प्राक्रम अधिक है ,
अर्थ वेद के मांय। जात अधिक सुखराम कहे, जातीक मतो कहाय ॥ २०॥

आप आप की जाति में सब बराबर है। एक दूसरे से एक दूसरा पुजनीक है। एक से एक अधिक है। सब फौज के सवार एक से है। सब घोडो पर सवार है। जो फौज का सिपाही शूरवीरता से लडाई के मैदान में मरता है। उसको परी बर कर ले जाती है। जो कायरपने से मरता है उसको कुते भी नही घीसते। सब ही ज्ञान यह कहते है कि करणी का प्राक्रम सबसे अधिक है। म:फ: है कि कोई ऊंची जाति का व कोई नीची जाति का है। वही जाति में फरक है बाकी अपनी अपनी जाति में सब एक है।

मीठा भोजन धीक, पाय प्राणी दुख पावे। सो गहणो सुख बाल,
पेर सुरडा होय जावे॥ मैमुदी सरो पाव, धीरक सो सिया मुवा ।
ऊंची संगत धीक, नरक अधिकारी हुवा॥ जहां जहां तोटो ऊपजे,
सोई सोई तजिये धाम। नफे बिना सुखराम कहे, ऊंच चीज किस काम ॥ २१॥

उस मीठे भोजन को धिक्कार है जिसे पाकर प्राणी दुख पाता है। वह गहना किस काम का है जिससे पहनने पर तकलीफ होती है। किसी को किसी की तरफ से कपडा इनाम में मिल जाता है। उससे उसकी ठंड नही भागती तो वह किस काम का है। जिस संगत में जाने से नरको का दुख नही मिटता वह संगत ऊंची कहाती हो तो भी धिक्कार है। जो काम करने से नुकसान होता है। म:फ: है कि नफा नही होता उसको छोड देना चाहिए।

गधो गधे संग जाय, भैंस भैंसा में आवे। ऊंट ऊंट के संग,
गाय गायां में जावे॥ स्वान स्वान के संग, भेड भेडा संग होई।
घेवर संग गजराज, सिंह संग रहे न कोय॥ यूं नर नारी जगत में,
संगत मांजने होय। जात पांत सुखराम कहे, कुल करणी ले जोय ॥ २२॥

गधा गधे के साथ, भैंस भैंसो के, ऊंट ऊंटो के साथ, गाय गायों के, कुत्ता कुत्तो के साथ, भेड भेडो के, हाथी हाथी के साथ रहता है लेकिन सिंह के साथ कोई नही रहता, ऐसे स्त्री पुरूष जगत में जैसी जैसी संगत करते है उनको वो ही संगत अच्छी लगती है। जाती की पांती की कुल में जैसी करणी होती है, वैसी ही करणी करते रहते है।

ज्ञानी जल अंग एक, बिच दुविधा नही जागे। जो कोई बरते लहर, मिलत सो बार न लागे॥
अष्ट धातु, अज्ञान, ताव सो होय सो भेला। करमी बरतन फूट, लाख बिच हुवे न भेला॥
मुर्ख, पत्थर, काठ ज्यूं, फाटा पडे है देश। फिर जोडया सुखराम कहे, अन्तर मिले न लेस॥ २३॥

ज्ञानी का व जल का अंग एक होता है। उनके बीच द्वेतपना नही रहता, यदि कोई विचार आ भी जाता है तो उसी वक्त उन विचारो को छोड देता है। आठ धातु ताव देने पर गलती है। इस तरह अज्ञानी पर विपता आने पर ही ज्ञान धारण करता है, करम बन्धन करने वाले मनुष्य जिनके विचार आचरण व क्रिया करम बुरे है। वो लाख उपाय करने पर भी ज्ञान धारण नही करते है। जिस तरह फुटा हुआ मिट्टी का बरतन वापस कभी नही जुडता, मूर्ख मनुष्य पत्थर व लकडी की तरह है जो पत्थर टूट जाता है व लकडी टूट जाती है, उसको जोडने पर म:फ: है कि अन्तर में नही मिलते। बाहर टूटे जोडने पर भी दिखते रहते है।

ठाकुर रूठा शीष, गांव एक ही नर छाडे। राजा कोप विचार, मुल्क सुं बाहिर काढे॥
बादशाह सुण खण्ड, देव तो लोक छुडावे। धरम राय शीर कोप, नरक के गांव पठावे॥
ठाकुर राजा बादस्या, देव लग या दोड। गुरु रूठा सुखराम कहे, नही तीन लोक में ठोड ॥ २४॥

ठाकुर के नाराज होने पर मनुष्य को उस गांव को छोड देना पडता है। राजा के कोप करने पर अपने राज से बाहर निकाल देता है, बादशाह अपना खण्ड याने भरतखण्ड के बादशाह हो तो भरतखण्ड छूडा देता है। देवता नाराज होने पर अपना लोक छूडा देते है। ठाकुर राजा बादशाह व देवता यहां तक कर सकते है। म:फ: है कि ज्ञान गुरुदेव के रूष्ट होने पर तीन लोक में जगह नही मिलेगी अर्थात अवगति में जाना पडेगा।

अरथ उरध सो हरफ, सीखता पंडित होई। दिन मास पड बीच, भरम मोह देत बिगोई॥
माली बन विचार, सींच नेचे फल लागे। घणी नींद घट होय, सोय ऊ ही नर जागे॥
यूं जन लागे आद सूं, निभे अन्त लग कोय। तो नेचे सुखराम कह, आप ही करता होय।। २५॥

आधा आधा अक्षर सीखते सीखते पण्डित हो जाता है। इसी तरह सतसंग करने से किसी दिन व किसी समय मोह व भरमों का नाश हो जाता है। माली विश्वास रखकर वन को सींचता है तो निश्चय फल लग जाते है। जिस मनुष्य को बहुत नींद आती है वो भी सोकर जाग जाता है। म:फ: है कि इसी तरह मनुष्य निज नाम की भक्ति शुरू करते है। उस समय से अन्त समय तक भक्ति करते रहने से परमात्मा पद की प्राप्ति हो जाती है। यही करता होना है।

॥ इति श्री उपदेश का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 बिजा इन्दा का संवाद 卐

गीगन को करे मोल, पवन को करे तोल। रवी को रहावे अडोल, है कोई ऐसो नर रे॥
पत्थर को काते सूत, बांज को खिलावे पूत। धून में बोलावे भूत, है कोई ऐसो जन रे॥
बिजली को करे ब्याह, दूध कूं रखे ठांहा। इनका करे है अरथ, सोई हमारा गुरु रे ॥ १ ॥

उत्तर : गीगन को अमोल मोल, पवन को रती न तोल। बिजली सो विरहन जांण,
नांव उदे होय परणे आन॥ उलट प्रांण चढे देह मांय, सूरज रथ जब थुब्यो जाय।
दिल पत्थर भजन होय, सूत सो ही कते जोय॥ पांच भूत यह देह थाय,
नाड नाड सो बले आय। बांज नार सो सूरत होय, शब्द पूत सो रमे जोय॥
आगम घर जहां जाय, प्राण दधि कूं मथ। सो थूंवे आंण, यह अरथ आंकोस होय॥
सुण बिजा कहूं तोय, जाणसी संत जाके समाय। किंया सु सुख आवे नांय,
जाय शब्द उलटे जोय, सब अरथ आ पारख होय ॥ २ ॥
कुण्डलिया : सुखरामदासअे अरथ रे, चौडे किया बजाय। सतगुरु मिलयां पाइये,
सुण बिजा तन मांय॥ सुण बिजा तन मांय, आप में तां दिन आवे।
सतगुरु संत, ताय के चरणा जावे॥ और गुरु दस लाख करे,
गरज सरे नही काय। सुखराम दास अे अरथ रे, चौडे किया बजाय॥ ३ ॥

म:फ: है कि ये अरथ मैंने चोडे करके बताया है। सतगुरु का ज्ञान धारण करने पर ही शरीर में अनुभव होता है। सतगुरु रूपी संत के बताये माफिक साधन करना ही चरणों में जाना है। दूसरे गुरु चाहे लाखो करो, शब्द की जागृति नही होती। म:फ: है कि यह अरथ सबके सामने साफ कर दिया है।

॥ इति श्री बिजा इन्दा का संवाद सम्पूर्ण॥

卐 निरपख का अंग 卐

इन्दव छन्द : सबको न्याव करे नर सोई, ज्यां घट अणभै ज्ञान प्रकाशा।
हिरदे आंख खुले उर अन्तर, दशवें द्वार किया तत वासा॥
ज्ञान सु मांड सबे बिध सुजी, भेद सो पांच पिछाण लिया है।
सोच विचार कहे सुखदेवजी, ब्रह्म गीनान तकेश किया है ॥ १ ॥

जिस मनुष्य के घट में अणभै ज्ञान का प्रकाश होता है वह सब साधनो का व भक्तियों का अलग अलग निरणा कर सकता है। उसके हृदय में ज्ञान रूपी व सूरत रूपी चक्षु खुल जाते है। उसको दशवें द्वार में परमात्मा के निज नांव याने सत शब्द का अनुभव होता है। यही दशवें द्वार किया तत बासा है। पांच तत्वों के शरीर में खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड का अनुभव होना ही पांच का भेद पिछाणना है। म:फ: है कि उसको ही ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति हुई है।

सवैया : काम ही न क्रोध डिंभ लोभ ही न मोह है, अरी आठ पोहोर सुण राम गुण गावे है।
पाप ही न पुन्न हरष सोग ही न सांसो है, सांस ही ऊसांस धर नाभ दिस ध्यावे है॥

राग द्वेष मेरी तेरी कुछ नही धारणा, निरापखी ज्ञान करे ओरू समजावे है।
कह सुखराम हर नाम रस पीजिये, अैसो हरिजन हरि रामजी कूं भावे है ॥ २॥

जिनके कामना, क्रोध, मोह, अहंकार नही है, जो रात दिन रामजी की भक्ति करते है जिसको न तो पाप पुण्य की वासना है न हरष न सोग है न संशय है। वह सांस उसांस में नाभी में सुरत लगाकर भजन करता है। जिसके किसी से राग द्वेष नही है, न मेरी तेरी है। अपने स्वार्थ की धारणा नही करके निरपक्ष ज्ञान का उपदेश समझाते है। म:फ: है कि जो रात दिन भजन करते है ऐसे जनो को रामजी की प्राप्ति होती है, यही रामजी को भावे है।

घर ऐसो हरिजन हर राम कूं पियारो जू, बन मध अेक हूं रहावे है।
वास न उपास भूल आन नही पूजबा, बेद न कुराण जग सुख नही गावे है॥
तीन तीरलोक सुरदेव नही धारणा, परा पेल ब्रह्म सुं जू प्रीत सो लगाई है।
कह सुखराम अैसो साध जन जग मांही, हम वे तो सगे यार सुणो गुरु भाई है ॥ ३॥

इस तरह रात दिन रामजी की भक्ति करने वाला जन रामजी को प्यारा है। चाहे वह घर में रहे चाहे वह वन में रहे, दोनो एक ही है। उसके किसी तरह की वासना नही है। ऊपासना नही है। भूल कर भी आन यानि नाशवान शरीर की भक्ति नही करते। वेद व कुराण भी यही कहते है कि जगत में सुख नहीं है। इसलिये शास्त्र मत के अनुसार आत्मा को अब परमात्मा में मिलने की प्रीति हो गई है। इसलिये आत्म देव अब किसी भी त्रिगुणी माया में नहीं आना चाहती है। म:फ: है कि जो जन इस तरह की भक्ति करते है तो वो और मैं एक ही देश के वासी है।

॥ इति श्री निरपख का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 हीण लछ का अंग 卐

कवित : हरि बेमुख सो ढेड, ढेड मुख राम न बोले। घटतो दे सो ढेड, ढेड पूरो नही तोले ॥ १॥

जो परमात्मा से बेमुख है वह नीच है। वह नीच है जो मुंह से राम नाम का भजन नही करता है। जो कम तोलता है, पूरा नही तोलता है वह नीच है।

परणी त्यागे ढेड, ढेड अवरा संग जावे। कडवो बोले ढेड, ढेड के दुख मनावे ॥ २॥

शादी की हुई स्त्री को छोडता है वह नीच है। पराई स्त्रीयो से प्रेम करता है वह नीच है। जो अपशब्द बोलता है वह नीच है। जो कहने से दुख मानता है वह नीच है।

बोहो अहंकारी ढेड, ढेड बोहो नामस होसी। लछ खोटा सो ढेड, ढेड करणी नही कोई ॥ ३॥

बहुत अहंकार रखने वाला नीच है, बहुत नाम चाहने वाला नीच है, जिसके लक्षण खराब है वो नीच है। नीच के कोई करणी नही है।

बोहो तृष्णा सो ढेड, ढेड कूं चाय न चावे। झूंठ सांच मिल ढेड, ढेड बोहो वध चलावे ॥ ४॥

जिसको बहुत तृष्णा है वह नीच है। नीच को कोई नही चाहता है। झूंठ सांच को मिलाकर कहने वाला नीच है। नीच बहुत तरह से प्रपंच खडे कर देता है।

पीवे तमाखुं ढेड, ढेड आफू बोहो खावे। सुरे पिये सो ढेड, ढेड अेमख मंगावे ॥ ५॥

नीच तमाखु खाता है, बहुत अफीम खाता है, शराब पीने वाला, मांस मीट खाने वाला बहुत नीच है।

परणी छोडे ढेड, ढेड मरजाद न माने। मिलिया मनखा जाय, ढेड मुख कडवी ठाने ॥ ६ ॥
परणी हुई स्त्री को छोड देता व मर्यादा नही मानता वह नीच है। मिलने जाने वाले मनुष्य से कडवे वचन बोलता है, वह नीच है।

राम न के मुख ढेड, ढेड आडो बोहो सीखे। पितर भूत आराध, ढेड सो घर घर भिखे ॥ ७ ॥
नीच मुंह से राम राम नही कहता, नीच बहुत टेढी बात करता है, भूत पितरों की आराधना करता हुवा, नीच घर घर भिक्षा मांगता है।

न्याव करण में ढेड, ढेड पखो सो राखे। सांच झूंठ कर देत, झूंठ सांचो कर भाखे ॥ ८ ॥
नीच न्याय करने में पक्ष रखता है, सच्चे को झूंठा कर देता है व झूंठे को सच्चा बताता है।

हरि बेमुख सो ढेड, ढेड निन्दा बोहो ठांणे। चुगली करे सो ढेड, ढेड सो आन बखाणे ॥ ९ ॥
परमात्मा से बेमुख वह नीच है। नीच दूसरों की बहुत निन्दा करता है व दूसरों की चुगली करता है। नीच है जो आन रूप की उपासना करता है।

समरथ शीरजण हार, ताय को मरम न पावे। पांचा के बस ढेड, ढेड विष निश दिन खावे ॥ १० ॥
सृष्टि करता परमात्मा समरथ है उनकी प्राप्ति का भेद नही जानता। नीच रात दिन पांचो विषयों के सेवन में लगा रहता है।

नही भक्ति के लेस, ढेड बाता बोह धर है। घर में आतम राम, ताय की सेव न कर है ॥ ११ ॥
नीच बहुत बाते बनाता है। भगवान की भक्ति तो बिल्कुल नही करता। शरीर में ही आत्मा राम रूप से विराजमान है, उसकी सेवा नही करता।

ब्रह्म न चिने ढेड, ढेड करम बोहोत बखाणे। राचे राग बिलास, नांव हिरदे नही आंणे ॥ १२ ॥
नीच, ब्रह्म का अनुभव नही कर करमों का बहुत बखाण करता है। निज नाम को हृदय में धारण नही करता, रागो के सुख में रचा रहता है।

दगो करे सो ढेड, ढेड द्वुतीया मन माही। हरि बिन बोले ढेड, ढेड बेटी को खाही ॥ १३ ॥
दूसरों को धोखा देता है वो नीच है। नीच के मन में द्वेत भाव तेरी मेरी है। नीच रामजी का भजन नही करता। नीच बेटी का खाता है।

हित कर बिरचे ढेड, ढेड फिर बैर चलावे। लूण हरामी ढेड, ढेड मुख राम न गावे ॥ १४ ॥
भला करने वालों से भी नीच बदल जाता है व नीच फिर बैर करता है। नीच नमक हरामी होता है। नीच मुंह से राम राम नही करता।

ढेड श्याम सुं बैर, ढेड कुल हाथ चलावे। ढेड मुख नही राम, ढेड दावा दिन जावे ॥ १५ ॥
नीच परमात्मा से भी बैर करता याने भक्ति नही करता। नीच कुटुम्ब पर हाथ उठाता है। नीच के मुंह में राम का नाम नही आता। नीच के दिन दूसरों पर दावा करते जाते है।

ढेड गुरु सो होय, राम बिन आन बतावे। शिष कूं हूंचे खाय, ढेड गुरु भरम दिरढावे ॥ १६ ॥
नीच गुरु होता है वह राम के बिना आन की भक्ति बताते है। शिष्य को हर तरह से ठगने की कोशिश करते है। भरमों को मजबूत करते है।

सांचो देवल छोड, झूंठ की सेव बतावे। ढेड गुरु सुखराम, राम बिना भरम दिरढावे ॥ १७ ॥
यह शरीर सच्चा देवल है इसको छोड बनने बिगडने वाले जड की सेवा बताते है। म:फ: है कि नीच गुरु ग्यान के बिना भरमों को गाते रहते है।

भांड खाय सो ढेड, ढेड सो सुंका लेवे। करे दलाली ढेड, ढेड सुख जीव न देवे ॥ १८ ॥

नीच भांड खाता है व नीच रिश्वत लेता है। बुरे कामो की दलाली करता वह नीच है। दूसरों को सुख से नही जीने देता, वही नीच है।

मिली साट में ढेड, ढेड ले भिचकी राले। बनद बंदे सो ढेड, ढेड सो नगरी बाले ॥ १९ ॥

किसी का काम सुधरता हो तो उसको बिगाड देता है। बुरे काम करता है वह नीच है। गांव को जलाते है, वह नीच है।

सरवर फोडे पाल, ढेड सो देवल ढावे। बन काटे सो ढेड, रूख सो खोद मंगावे ॥ २० ॥

तालाब की पाल फोडते, वह नीच है। मन्दिर ढहा देते है, वन काटते है, वृक्ष खोदकर मंगाने वाले नीच है।

झूंठ साख भरे ढेड, ढेड सो हडण जावे। मलधारी रीजाय, ढेड फूले कुमलावे ॥ २१ ॥

नीच झूंठी गवाही देता है। नीच अपने स्वार्थ के लिए फिरते रहते है। लोगो को रिजाता है, नीच है। नीच फूलता कुमलाता है।

हर बिन बोले बैण, ढेड सो आन मनावे। राम नाम बिन साख, ढेड आचार चलावे ॥ २२ ॥

राम नाम फालतु है ऐसे वचन बोलने वाला ढेड आन रूप की उपासना करता है, वह नीच है। राम नाम के बिना केवल आचरण की बात करता है।

जीवां कूं डेहकाय, ढेड युं नरक ले जावे। आन धरम सो ढेड, और सीखे सिखावे ॥ २३ ॥

नीच जीवों को बहकाकर नरक में ले जाते है, आन रूप की उपासना आप भी करते है दूसरों को भी सिखाते है।

अमरपद की बात, ढेड के मना न भावे। परम भगत बिन मुक्त, ढेड सो नरका जावे ॥ २४ ॥

परमपद की प्राप्ति की बात नीच के मन नही भाती, परमपद की भक्ति बिना मोक्ष नही होती। नीच नरक में जाते है।

भगत बिना सब ढेड, ढेड जम द्वारे जावे। किया करम सब ढेड, धरम सो मार दिरावे ॥ २५ ॥

रामजी की भक्ति बिना सब नीच जमराज के द्वार पर जाते है। नीच जैसे कर्म करते है। धर्मराय के यहां उनको मार खानी पडती है।

भगत बिना नही मुगत, ढेड सो जन्म धरावे। गरभवास के मांय, ढेड मल मुत्र खावे ॥ २६ ॥

रामजी की भक्ति बिना मुक्ति नही होती। नीच को बार बार जन्म धारण करना पडता है। नीच मल मूत्र खाता है।

ऊरद मुख नव मास, ढेड सो संकट पावे। बिना भक्ति सो ढेड, गरभ में ज्यां त्यां जावे ॥ २७ ॥

नीच गरभावास में ऊंधे मुंह नो महिने तक दुख पाता है। रामजी की भक्ति बिना चौरासी लाख योनियों में जहां तहां गरभ में जाता है।

गरभवास में नो मास, ढेड सो वासा लिया।
मल मुतर का आहार, ढेड ले निश दिन किया ॥ २८ ॥

नो महिने तक नीच गरभवास में रहा, नीच ने रात दिन मल मूत्र का आहार किया।

पर नारी रत ढेड, ढेड वेश्या संग कर है। बोहो दिन दौडे काम, द्रव्य ले दंड में भर है ॥ २९ ॥

नीच पराई स्त्री से प्रेम करता है। नीच वेश्या गमन करता है। काम वासना में ही बहुत उम्र

बिताता है व धन को राज के दण्ड में भरता है।

माता गरभ नव मास, ढेड सो संकट देखे।
दुखी सांसा होय, जाय मास नव अबखा लेखे ॥ ३० ॥

नीच माता के गरभ में नो महिने तक दुख देखता है, सांस भी मुश्किल से लिया जाता है। नो महिने कठिनाई से निकलते है।

साखी : जन्म समे सब ढेड था, सब लोई संसार।
सुखरामदास करणी किया, ऊंच नीच बोहार ॥ ३१ ॥

माता के गर्भ के समय, जन्म के समय सब ही नीच थे। म:फ: है कि जैसा ऊँच नीच व्यौहार एवं करणी करता है वैसा ही होता है।

आ मैं कही विचार के, बुरो न मानो कोय। मल मूतर का संग सु, सब ढेड ज्युं होय ॥ ३२ ॥

म:फ: है कि यह मैंने सोच विचार कर कहा है। इसका कोई बुरा मत मानो। मल मूत्र के साथ सभी नीच होते है।

राम भजे सो ब्रह्म है, करणी करे सो देव।
सुखराम न्याव सुं बोलिया, सुणो शकल सब भेव ॥ ३३ ॥

जो राम नाम का भजन करते है। वो ब्रह्म पद की प्राप्ति करते है। जो शुभ करणियां करते है वो देव है, फिर नर की आशा करते है। म:फ: है कि मैं सच बोलता हूं सब ही इस भेद को सुणो।

राम बिना सब नीच है, तिण में फेर न सार।
ब्यास कहयो सुखरामजी, हरि बिन सबे चमार ॥ ३४ ॥

राम की प्राप्ति किये बिना सब ही नीच है। इसमें किसी तरह का फरक नही है। म:फ: है कि व्यासजी ने कहा, रामजी की भक्ति किये बिना सब ही चमार है।

बांण खाण चारूं सही, एक आत्मा होय। जन सुखिया जल एक है, फेर फार नही कोय ॥ ३५ ॥

चार बांणी व चार खान है। आत्मा तो सब में एक है। म:फ: है कि जल तो सब जगह एक सा है। इसमें किसी तरह का फेर फार नही है।

बांभी को चेलो तको, मकर चलावे जोय। रीस बाद सुखराम कहे, बोहो निन्दा घट होय ॥ ३६ ॥

ढेड का चेला मकर याने फरेब चलाता है। म:फ: है कि क्रोध गुस्सा करता है। वाद विवाद व सबकी बहुत निन्दा करता है।

बांभी को चेलो तको, ता घट भरम अनेक। आछो खावण वास्ते मकर चलायो देख ॥ ३७ ॥

जो बांभी का चेला है उसके घट में अनेक भरम होते है। अच्छा खाने के लिए अपनी चाल फरेब चलाता है।

बांभी को चेलो तको, ब्रह्म विचारे नांय। में ते सुखराम कह, आप चढ विष खाय ॥ ३८ ॥

जो बांभी का चेला है। ब्रह्म पद की प्राप्ति का विचार नही करता। म:फ: है कि मुंह से तेरी मेरी करता है। आगे होकर विषय खाता है।

बांभी को चेलो तको, भजे न शिरजण हार।
कुल छाडे सुखराम कह, बोहो पाखण्ड ले धार ॥ ३९ ॥

जो बांभी का चेला है वह सृष्टि करता रामजी का भजन नही करता। म:फ: है कि अपने कुल

को छोडकर बहुत पाखण्ड धारण कर लेता है।

बांभी को चेलो तको, भगत भेद बिन होय। पर घर का सुखराम कह, खावे टुकडा जोय ॥ ४० ॥

बांभी का चेला वह है जो रामजी की भक्ति का भेद नही जानता। म:फ: है कि पराये घर का टुकडा खाने के लिये साधु बना है।

बांभी को चेलो तको, निरस बैण मुख माय। समरथ साहिब छोडकर, मोंगा पूजे जाय ॥ ४१ ॥

बांभी का चेला वह है जो फालतु वचन बोलता है, समरथ साहिब परमात्मा को छोडकर मोंगा की पूजा करता है।

बांभी को चेलो तको, सिकल विकल नर होय। ब्रह्म भेद सुखराम केह, तत नही चिने कोय ॥ ४२ ॥

बांभी का चेला वह है जो मनुष्य सिकल विकल होता रहता है। म:फ: है कि वह ब्रह्म पद की प्राप्ति का भेद नही जानता। ब्रह्म का अनुभव नही करता।

दुरवासा क्या सेवियो, तांका शिष अवतार।
सुणज्यो सब सुखराम कह, समझर करो विचार ॥ ४३ ॥

दुरवासा ने किसका भजन किया जिनके अवतार शिष्य थे। म:फ: है कि सब ही समझकर इस पर विचार करो।

वशिष्ट मुनि का सेवियो, क्या शिंवरे कहो मोय।
तांके शिष सुखराम कह, रामचंदर सा होय ।। ४४ ॥

वशिष्ट मुनि ने किनकी भक्ति की व किनका शिवरण किया। म:फ: है कि जिनके रामचन्द्रजी जैसे शिष्य थे।

हरि बिन ढेड़ चमार, तुलसी चोडे के गया, सुखदेव कियो विचार ॥ ४५ ॥

रामजी की भक्ति भजन नहीं करते वे सब नीच है। ऐसा तुलसीदास जी प्रगट में कह गये। म:फ: है कि मैंने इसका विचार किया।

सपत धात को पिंजरो, पांच पच्चीसु मांय। जन सुखदेव अेसे कहे, या बिन न्यारी देह बताय ॥ ४६ ॥

यह शरीर सात धात का बना हुआ है, इस शरीर में पांच तत्व पच्चीस प्रकृतियों के गुण है। म:फ: है कि इनके बिना अलग शरीर हो तो बताओ।

चार बरण देह एक है, नख चख शकल सरूप। रूई बण्या कपास में, उत्तम कुण सब सूत ।। ४७ ॥

चारों वर्णो के शरीर एक से है। नख से चख तक एक सरूप है। सब सूत रूई से बना है। इसमें उत्तम कौन सा है।

धरणी ब्रह्मण्ड तेज जल, पवन शकल में होय। सुखराम कहे इण पांच में, मिधम केह सो कोय ॥ ४८ ॥

सब शरीर पांच तत्वों के है। म:फ: है कि स्वांसा सब में एक सा है। इन पांच तत्वों में मिधम कौन है।

कुवो बेरी बावडी, सरवर नदियां होय, जन सुखिया जल खाबडे, उत्तम किस्यो कहो होय ॥ ४९ ॥

पानी कुवा बैरी बावडी सब में एक सा है। म:फ: है कि नदियां तालाब व खड्डे में जल भरा है। इसमें उत्तम कौन सा है सो कहो।

।। इति श्री हीण लछ का अंग सम्पूर्ण ।।

卐 ज्ञान गोस्ट का अंग 卐

(हरिकिशनजी की ज्ञान गोस्ट)

शिष वाच : हो जन मैं बूजत हूं भेवा, किरपा करर कहिये गुरुदेवा।
ओ पांच तत कहां सु होई, तांका भेव कहो गुरु मोही ॥ १ ॥

शिष कहता है कि गुरुदेव मैं यह पूछता हूं आप कृपा कर कहिये। पांच तत्वो की उत्पति कहां से हुई इसका भेद बताओ।

श्री सुखो वाच : हे शिष पारब्रह्म परमातम देवा, तांसु तत उपज्या भेवा।
पीछे शकल मण्ड विस्तारा, ओऊं सोऊं सबे पसारा ॥ २ ॥

म:फ: है कि हे शिष पारब्रह्म परमात्मा से पांच तत्वो की उत्पति हुई है। पांच तत्वो में सारी सृष्टि की उत्पति ओऊं याने आत्म चेतन सोऊं याने ब्रह्म चेतन की उत्पति इससे है।

शिष वाच : हो स्वामीजी ओऊं शब्द कहां से होई, तांका भेव कहो गुरु मोही।
केसी शीष्ट जीव ऊपजाया, पांच तत्व कैसे कर कुवाया ॥ ३ ॥

शिष्य कहता है कि हे स्वामीजी ओऊं शब्द याने आत्मा कहां से हुई इसका भेद कहिये। सृष्टि के जीवों की उत्पति कैसे हुई। पांच तत्व कैसे कहलाये।

श्री सुखो वाच : है शिष परापरी परब्रह्म कहावे, तासूं देव निरजंण गावे।
सो आकाश के तत्त भाया, बाय तत्त सो ओऊं कुवाया।। ४।।

म:फ: है कि हे शिष्य पारब्रह्म परमात्मा के पद को निरंजण कहते है। निरंजण निराकार से आकाश तत्व हुवा है। वायु तत आकाश तत से हुवा है व वायु तत ओऊं याने स्वांसा है।

शिष वाच : ओऊं शब्द कहां का होई, तांका भेव कहो गुरु मोही।
कैसे बंध्या कोण बिध सांई, अे सब शकल जीव के मांही।। ५।।

शिष्य कहता है कि हे गुरुदेव ओऊं शब्द कहां से हुवा है इसका भेद कहिये। ये कैसे बंधा है। सब जीवों में कैसे बंधा हुवा है।

श्री सुखो वाच : हे शिष पारब्रह्म से ब्रह्मण्ड होई, तासुं वायु उपजे सोई।
तेज तत पवन ऊपजायो, सो निरंजण रूपी देव कुवायो ॥ ६ ॥

म:फ: है कि हे शिष्य पारब्रह्म से ब्रह्मण्ड याने आकाश तत हुवा, आकाश तत से वायु तत हुवा, वायु तत से तेज तत हुवा, सो निरंजण कहलाये है।

हे शिष तेज तत सुं तोय होई, तासुं मही धरण या जोई।
ऐसे पांच तत अे हुवा, हे शिष गुण सुं कहिये जुवा ॥ ७।।

तेज तत से पानी हुवा, पानी से पृथ्वी हुई, ऐसे ये पांच तत्व बने है। हे शिष इनके गुण अलग अलग है।

श्याम रंग ब्रह्मण्ड को जोई, लिलो रंग बाय सुं होई।
जो ओ लाल दिखावे भाई, तेज तत सुं ऊपज्यो आई ॥ ८ ॥

काला रंग आकाश तत का है, लीला रंग वायु तत से हुवा है, लाल रंग तेज तत से हुआ है।

हे शिष सेत रंग तोय सुं होई, पीलो रंग धरण सुं जोई।
अे पांचु रंग शिष्ट में भाया, तत सुं ऊपज जगत में आया ॥ ९ ॥

सफेद रंग तोय याने पानी से हुवा है। पीला रंग पृथ्वी तत से हुवा है। ये पांचो रंग सृष्टि में है। तत्वो से पैदा होकर जगत में आये है।

शिष वाच : हो स्वामीजी तत का रंग कहया तम सोई, पण रस साव कहां का सोई।
यांको भेव कहो गुरु राया, कैसे सब ये बास ऊपाया ॥ १० ॥

शिष्य कहता है हो स्वामीजी आपने तत्वों का रंग फरमाया पर यह छः रस कहां से हुए। इसका भेद कहिये। सबको इनका अनुभव कैसे होता है।

श्री सुखो वाच : हे शिष ब्रह्मण्ड तत कहिये भाया, कडवा साव वहां ते आया।
बाय तत सुं खाटा होई, तेज तत सुं चरका होई ॥ ११ ॥

म:फ: है कि हे शिष्य जिसको आकाश तत्व कहते है, कडवा रस उस आकाश तत का है। वायु तत से खटा रस हुआ है। तेज तत से चरका रस हुवा है।

हे शिष फीका साव अप से जांणो, मीठा धरणी मही बखाणो।
पांचू साव मिले तब भाई, छटो साव अनोप कुवाई ॥ १२ ॥

हे शिष्य पानी से फीका, पृथ्वी से मीठा रस बना है। ये पांच रस इकट्ठे होते है तब छटा रस अनोप कहाता है।

शिष वाच : हो स्वामीजी खट रस साव भेव तम दिया, अेसे बण्या इसी विध किया।
अे हम भेव सुण सुख पाया, अब मैं या बुजुं गुरुराया ॥ १३ ॥

शिष्य कहता है कि हे स्वामीजी आपने छः रस स्वाद का भेद बताया, इस तरह से बने है। इस भेद को सुनकर मुझे खुशी हुई, अब मैं यह पूछता हूं।

हो स्वामीजी प्रगत पांच बीस किम होई, ताको भेव कहो गुरु मोही।
भिन्न भिन्न कर निरणा सब दीजे, यांका अरथ खोल गुरु कीजे ॥ १४ ॥

हो स्वामीजी पच्चीस प्रकृतिया कैसे हुई, उसका गुरुदेव भेव बताओ। इसका अलग अलग निरणा कर इसका खुलासा कहिये।

श्री सुखो वाच : नाडी रोम तुचा सुण होई, मेड अस्त बण्या विध मांई।
अे प्रगत पांचू सुण भाई, मही तत सुं उपजे मांई ॥ १५ ॥

हे शिष्य नाडी केश चमडी मेदा हड्डिया ये जो शरीर में है। ये पांच प्रकृति की सुणो, ये पृथ्वी तत से बने है।

हे शिष थूक लाल मूत्र ओ कहिये, लोही बिंद पेशाब रहिये।
अे पांचू प्रगट सुण भाई, तोय तत से उपजे मांई ॥ १६ ॥

हे शिष्य थूक लाल मूत्र खून वीर्य ये पांचू प्रकृति जल तत से बने है।

हे शिष तिरखा नींद कामना जागे, खुधा आलस देह तन भांगे।
अे प्रगत पांचू सुण भाई, तेज तत सुं उपजे मांई ॥ १७ ॥

हे शिष्य नींद प्यास इच्छा जाग्रत होना भूख आलस से शरीर भांगता रहता है ये पांचू प्रगति तेज तत से बनी है।

हे शिष गावण लडण दौड बोहो होई, ऊंची हाक ख्याल करे कोई।
अे प्रगत पांचू सुण भाई, वाय तत सुं उपजे मांई ॥ १८ ॥

हे शिष्य गाना लडना दौडना जोर से आवाज देना उसका कोई ख्याल रहता है। ये पांचू प्रकृति वायु तत से बनी है।

हे शिष राग धेक ये डिंभ कुवावे, पकडे मून मोहो घट आवे।
अे प्रगत पांचू सुण भाई, ब्रह्मण्ड सुं ऊपजन आई ॥ १९ ॥

हे शिष्य राग द्वेष पाखण्ड मोन मोह ये शरीर में आते है ये पांचू प्रकृति आकाश तत से बने है।

अे तत पांच सुणाया तोही, तिनकी या प्रगत ही होई।
इणको ठाट सबे सुण भाई, तीनूं चवदे लोक कहाई ॥ २० ॥

ऐसे पांच तत्वो से पच्चीस प्रकृति हुई है। इनका पसारा तीन लोक चवदा भवन कहलाते है।

शिष वाच : हो स्वामीजी अे तम भेद बहोत विध दिया, भांत भांत कर निरणा किया।
अब मैं बुजु गुरु सोई, देह अस्थूल कहां को होई ॥ २१ ॥

शिष्य कहता है कि हे स्वामीजी आपने यह भेद बहोत विधि से दिया। सब अलग अलग निरणा किया मैं आपसे पूछता हूं। यह स्थूल शरीर कहां का होता है।

श्री सुखो वाच : हे शिष सरब धात की या देह होई, जो अस्थूल बण्यो है सोई ।
जेती देह दिष्ट में आवे, सो बस सातों धात कहावे ॥ २२ ॥

म:फ: है कि हे शिष्य धात का यह शरीर होता है जो यह स्थूल शरीर बना है जितने शरीर देखने में आते, सब सात धात के कहलाये है।

शिष वाच : सात धात कहां की होई, तांको भेव कहो गुरु मोही।
केरो जीव आत्मा सांई, सो गुरुभेद कहो मुज तांई ॥ २३ ॥

शिष्य कहता है कि सात धात कैसे होती है इसका भेद मुझ से कहिये। यह जीवात्मा किसकी है, हे गुरु इसका भेद मुझे कहिये।

श्री सुखो वाच : नाडी रोम तुचा सुण भाई, मेदा अस्त बण्या अे मांही।
अे पांचू धात मही से होई, हे शिष और बतावुं तोही ॥ २४ ॥

म:फ: है कि नाडी बाल चमडी मैदा हड्डी अे जो शरीर में बने है। ये पांचो धात पृथ्वी तत्व से होते है। शिष और तुझे बताता हूं।

हे शिष लोही बिंद धात अे जांणो, अप तत सुं योपत ठांणो।
सात घात बणी ये सोई, दोय तत सुं प्रगट होई ॥ २५ ॥

हे शिष्य खून वीर्य ये धात पानी तत से बनी है। इस तरह यह सात धात दो तत से बनी है।

हे शिष देह अस्थूल बण्यो यो भाई, पांचू तत बिराजे माही।
अे सो जीव आत्मा कहिये, जैसे नाम रूंख को लहिये ॥ २६ ॥

हे शिष्य यह जो स्थूल शरीर बना है इसमें पांचो तत्व रहते है। इसे जीव व आत्मा कहते है। जैसे वृक्ष का नाम है। नाम नीम है परन्तु उसमें कुछ नही है। डाला पान पता है। ऐसे पांचो तत्वो के साथ जो चेतन याने आत्मा है उसका कोई स्वरूप नही है।

शिष वाच : हो स्वामीजी यो तुम भेद कहयो समझाई, अेसे जीव आत्मा कुवाई।
अब मैं या बुजु गुरुदेवा, काया माय कहो तत भेवा ॥ २७ ॥

शिष्य कहता है हो स्वामीजी यह भेद आपने समझाकर कहा, ऐसे ये जीव आत्मा कहाती है।

अब मैं गुरुदेव यह पूछता हूं कि शरीर में तत्वो का भेद कहिये।

कहां कहां द्वार अहार सो सांई, कहां कहां तत बिराजे मांही।
तांको भेव बिध कर कहिये, को को अहार कोण विध लहिये ॥ २८ ॥

कहां द्वार है, कौन कौन तत उसमें बिराजते है, उसका भेद खुलासा कहिये। ये क्या क्या आहार किस विध से लेते है।

श्री सुखो वाच : हे शिष मही तत को यो घर भाई, सोले पांख कंवल कंठ मांही।
सब रस साव परख के न्यारा, मुख दरवाजा सोभ विचारा ॥ २९ ॥

म:फ: है कि हे शीष पृथ्वी तत का घर कंठ कंवल है। जिसमें सोलह पांख है। पूरब के रास्ते वाले मानते है। सब रस को परखकर अलग अलग स्वाद बताता है। इसका दरवाजा मुंह है।

हे शिष पवन तत नाभ घर जांणो, बासा आहार घ्राण मुख ठांणो।
आछी बुरी न्याव कर देवे, पवन आहार बास को लहिये ॥ ३० ॥

हे शीष वायु तत का घर नाभी है। उसके आहार सुगन्धी है। नाक उसका मुंह है। अच्छी बुरी सुगंध बताता है। वायु तत का आहार सुगन्ध का है।

हे शिष तेज तत हिये घर जांणो, अे मुख नैण रूप सब खांणो।
कर बोपार इसी विध भाई, रूप करूप कहे समझाई ॥ ३१ ॥

हे शिष तेज तत का घर हिरदे है, मुंह आंखे है, उसका आहार रूप है। इस तरह अलग अलग रूप समझाकर कहता हूं।

हे शिष तोय तत्व भरगुटी जांणो, ईन्द्रि मुख भग अहार बखाणो।
त्रिया संग बोहोत सुख पावे, बिंद छूटे सो द्वार कुवावे ॥ ३२ ॥

हे शिष जलतत्व का घर भृगुटी है, ईन्द्रि उसका मुंह है, भग आहार है, स्त्री के साथ बहुत आनन्द आता है, जो वीर्य छूटता है वो द्वार कहलाता है।

हे शिष धुर आकाश तत को भाई, ब्रह्मण्ड मांय बण्यो घर जाई।
श्रवण मुख सा आणंद अहारा, वाचा ज्ञान सुणो सब धारा ॥ ३३ ॥

हे शीष आकाश तत का घर ब्रह्मण्ड है, श्रवण याने कान मुख है, आनन्द आहार है, वचन सुनकर ज्ञान धारण करते है।

हे शिष पांचू तत कहया मैं तोई, आगे लार केण में होई।
पण ये घर द्वार इसी विध भाया, सो मैं तोकू बरण बताया ॥ ३४।।

हे शिष, मैंने तुझ को पांचू तत कहे है आगे पीछे कहने में आ सकते है। पर इनके घर द्वार इस तरह से है, सो मैने तुझको कहकर बताया है।

शिष वाच : तत अहार द्वार सब भाक्या, तामे कछु संदेह न राख्या।
अब मैं या बुजुं गुरुराई, प्रगत अहार कहां ले खाई ॥ ३५ ॥

शिष्य कहता है हे गुरुदेव आपने तत्वो का अहार बतलाया उसमें कुछ भी फरक नही रखा। अब मैं आपसे यह पूछता हूं कि प्रकृतियां आहार किससे लेकर खाती है।

श्री सुखो वाच : हे शिष अस्थ आहार चालण को कहिये, मेदा आहार धावणो सहिये।
तुचो नावण केश सुलझाया, नाडी आहार हुलसण भाया ॥ ३६ ॥

म:फ: है कि हे शिष्य हड्डियो का आहार शरीर को इधर उधर घुमाना है। मेदा याने शरीर में मांस बढ जाता है उसका आहार दौडना है। चमडी का आहार स्नान, केश साफ करना व नाडी का आहार खुशी होना है।

मूत्र आहार खोल बोहो होई, खट पण आहार थूक को सोई।
परसवे को वाय कुवावे, लाल आहार धूप ले खावे ॥ ३७॥

मूत्र आहार खोल बोहो याने उसको निकाल दे। खाने की चीज ठीक नही लगे उसको थूक देना उसका आहार है। हवा शरीर को परसती है। लाल मुंह से गिरने पर धूप सुखा देती है।

हे शिष बिंद को यो सुण भाई, त्रीया कंवल रस ले जाई।
अे पांच तत त्यां रंग बिस्तारी, तोय तत सुं उपजण हारी ॥ ३८ ॥

हे शीष वीर्य का आहार त्रीया कंवल रस लेना है। इन पांच तत्वो के रंग का विस्तार पानी से होता है।

हे शिष खुधा आहार अन्न को लेवा, तिरखा आहार नीर जल देवा।
निद्रा आहार सोवणो भाई, आलस लात काम उठाई ॥ ३९ ॥

हे शिष भूख का आहार अन्न है, प्यास का आहार पानी है। निद्रा का आहार सोना, आलस का आहार काम नही करना है।

हे शिष चेतन प्रगत को सुण भाई, म्हेरी संजम सुं ही सुखपाई।
ये प्रगत पांचू विस्तारी, तामस तत सु उपजे सारी ॥ ४० ॥

चेतन प्रकृति स्त्री के संजम से खुशी होती है। ये पांचू प्रकृति विस्तार तेज तत से होता है।

हे शिष गावण आहार अरथ को होई, धावण दोड जमी या सोई।
लडवे कूं मानव आहारा, सामा वचन सुणावन हारा ॥ ४१ ॥

गाने का आहार अरथ का है। दौडने का आहार जमीन, लडने का आहार मनुष्य है, सो सामने वचन बोलता है।

हे शिष खेलबा को ओ है आहारा, मांगे चीज अरथ विस्तारा।
मून गेण को यो सुण भाई, लेवे आहार ज्ञान के मांही ॥ ४२ ॥

खेलने का आहार कई चीजे मांगना है, मुन धारण करने का यह आहार ज्ञान करने का सुख लेना है।

डिंभ प्रगत ये लेत आहारा, दावा मूद के है मुख सारा।
मोहो प्रगत माया सुख लेवे, हियालो आहार नित प्रत लेवे ॥ ४३ ॥

अहंकार का आहार दूसरो की बुराई करना है। मोह का आहार माया से मोह करना है। हिरदे से ऐसा आहार हमेशा लेते है।

हे शिष अे पांचू प्रगत बिस्तारी, वाय तत सुं उपजण हारी।
अब मैं सुण ब्रह्मण्ड की भाखूं, तोसूं दूज कछु नही राखूं ॥ ४४ ॥

ये पांच प्रकृति हवा से बनती है, अब मै तुझे आकाश तत की बताता हूं। तेरे से कुछ नही छिपाता हूं।

हे शिष प्रगत आहार यो लेवे, निरसा वचन छांट सब देवे।

धेक आहार इनका ले आई, खसा खून करतोरे भाई ॥ ४५ ॥

इस प्रकृति का आहार है खराब वचनो को अलग बता देता है। द्वेश का आहार यह है कि खून करने का या मार देने का है।

हे शिष अहूं भाव प्रगतया भाई, लेवे आहार दुख को मांई।
अे प्रगत सुण लिजे भाया, पांचू बीस रहे इण काया ॥ ४६ ॥

अहंकार भाव का आहार दुख है। इस तरह पचीस प्रकृतियां ये शरीर में है।

शिष वाच : हो स्वामीजी प्रगतखज कहया सब भेवा, अब मैं या बुजुं गुरुदेवा।
मन सो चित ज्ञान ओ कुवावे, केरा बण्या कहां सुं आवे ॥ ४७ ॥

शिष्य कहता है हो स्वामीजी आपने प्रकृतियों का आहार बतलाया व सब भेद कहा। अब मैं आपसे पूछता हूं कि मन चित ज्ञान कैसे बने है व कहां से आये है।

श्री सुखो वाच : मही तत ओ मन ही होई, तोय चित उपजे सोई।
ओ विचार तेज सुं भाया, अणभै ज्ञान वाय सुं आया ॥ ४८ ॥

हे शिष पृथ्वी तत का यह मन है जल तत से चित पैदा होता है। विचार तेज तत से होता है। अणभै का ज्ञान वायु तत से आता है।

शिष वाच : हो स्वामीजी सुरत निरत या बुद कहावे, केरी बणी कहां सु आवे।
फिर विज्ञान कहो गुरुराया, केरा बण्या कहां सु आया ॥ ४९ ॥

हो स्वामीजी सुरत निरत व बुद्धि जिसे कहते है किससे बनी व कहां से आती है। फिर गुरुदेव विज्ञान के लिये कहिये किससे बना व कहां से आया है।

श्री सुखो वाच : हे शीष सुरत बणी मही सुं भाई, तोय तत निरत उपजाई।
या बुध जोय तेज सुं होई, प्रगत लारे बरते सोई ॥ ५० ॥

हे शिष सुरत पृथ्वी तत से, निरत जल तत से, यह बुद्धि तेज तत्व से बनी है। जैसी प्रकृति होती वैसा बरतता है।

हे शिष यो विज्ञान ऊपजे आई, सो ब्रह्मण्ड तत सु बण्यो भाई।
इण आगे नही वार न पारा, तासुं बणिया तत विचारा ॥ ५१ ॥

विज्ञान आकाश तत्व से बनता है। इसके आगे पारब्रह्म परमात्मा का पद है जिसका कोई वार पार नही। उससे सब तत्व बने है। यह सब उनका विस्तार है।

शिष वाच : हो स्वामीजी अे सब ही तुम भेव बताया, सो मेरे अन्तर मन भाया।
अब मैं या बुजु गुरु सोई, अे आशा तृष्णा केरी होई ॥ ५२ ॥

हो स्वामीजी आपने यह सब भेद बताया सो मुझे बहुत अच्छा लगा। अब मैं गुरुदेव यह पूछता हूं कि यह आशा तृष्णा किसकी होती है।

श्री सुखो वाच : हे शिष मही तत की तृष्णा होई, ब्रह्मण्ड की आशा रह कोई।
लालच लोभ अग्र का भाई, ममता चाल वाय सुं आई ॥ ५३ ॥

म:फ: है कि हे शिष पृथ्वी तत की तृष्णा होती है और आकाश तत की आशा होती है। लालच लोभ अग्नि तत के होते है। ममता वायु तत से हुई है।

शिष वाच : हो स्वामीजी अे तुम कही सुणी मैं सोई, मेरे आणंद घणा होई।

अब मैं या बुजुं गुरु सोई, आ लज्जा रीस काय का होई ॥ ५४ ॥

हो स्वामीजी आपने फरमाया मैने सुना मेरे मन को बहुत खुशी हुई अब मैं यह पूछता हूं कि यह लज्जा रीस किसकी होती है।

श्री सुखो वाच : हे शिष लज्जा सन शरम सुण भाई, अे तेज तत सुं उपजे आई।
चमके बिये डरे भै भावे, अे सब जांण तेज का कुवावे ॥ ५५ ॥

हे शिष सुणो यह लज्जा सन शरम तेज तत से होती है। चमकते है डरते है। डरे भै भय लगता है। यह सब तेज तत्व के है।

श्री सुखो वाच : हे शिष तामस रीस क्रोध आ होई, तेज तत सुं उपज्या सोई।
आ दुराशिष कल्पना कुवावे, तेज तत सुं अे भी आवे ॥ ५६ ॥

हे शिष तामस रीस क्रोध ये तेज तत से पैदा होते है। दुराशिष कल्पना जिसे कहते है तेज तत से होती है।

शिष वाच : हो स्वामीजी ओ तुम भेद बहुत विध भाख्यो, यामें भरम कछु नही राख्यो।
अब मैं बुजु गुरु सोई, ओ शील र सांच काहा को होई ॥ ५७ ॥

हो स्वामीजी आपने भेद बहुत तरह से फरमाया, इसमें कुछ भी भरम नही। अब मैं आपसे यह पूछता हूं कि शील सांच किससे होते है।

श्री सुखो वाच : हे शिष शीलर सांच ज्ञान विस्तारा, पवन तत सुं उपजण हारा।
ओ बमेक अेकता सोई, अे पवन तत की पैदा होई ॥ ५८ ॥

म:फ: है कि हे शिष सांच ज्ञान वायु तत से होते है, विवेक अेकता वायु तत से होते है।

शिष वाच : ओ नेटाव नेम घट होई, डर भै कहे न उपजे कोई।
ओ कहिये किणका होई, तांका भेद कहिये मोई ॥ ५९ ॥

यह नेटाव नेम घट में होते है। डर व भय कभी नही पैदा होते, ये किसके होते है। इसका भेद कहो।

श्री सुखो वाच : हे शिष ओ नेटाव गिगन सुं होई, मही तत को पण घट सोई।
ओ चमके बिये डरे ना भाई, सो ब्रह्मण्ड तत सुं उपज्यो आई ॥ ६० ॥

हे शिष्य नेटाव आकाश तत से, शरीर पृथ्वी तत का है, चमके बिये डरे ना भाई यह आकाश तत से होते है।

शिष वाच : हो स्वामीजी अे तम भेव सरब मुझ दिया, भांत भांत कर निरणा किया।
अब मैं या बुझुं गुरुसांई, कुण कुण बाय तत के मांही ॥ ६१ ॥

आपने यह सब भेद मुझे बताया, अलग अलग निरणा किया, अब मैं यह पूछता हूं कुण कुण हवा तत में होती है।

श्री सुखो वाच : हे शिष पवन ओ अेक और नही कोई, अे तत कर नांव निराला सोई।
ऐसे वाय पांच ई घट जांणो, चौरासी धर नांव बखाणो ॥ ६२ ॥

वायु तो एक ही है और कोई नही है। तत के नाम निराले है। ऐसे वायु पांच घट में है। चौरासी प्रकार की वायु है।

शिष वाच : हो स्वामीजी कुण कुण वाय पांच ये होई, तांका नांव कहो गुरु मोही।

क्यूं कर बसे उपजे मांई, न्यारा नांव कहो गुरुसांई ॥ ६३ ॥

हो स्वामीजी पांच वायु कौन कौन है। उसके नाम बताइये, कैसे शरीर में रहती है व कैसे उपजती है। न्यारा नाम कहिये।

श्री सुखो वाच : हे शिष धनंजय नाग देवदत भाई, किरकल कोरम कहिये मांही।
ये पांचू बाय नाम निज जांणो, या लारे छतीस बखाणो ॥ ६४ ॥

म:फ: है कि हे शिष्य धनंजय नाग देवदत किरकल कोरम ये पांच वायु के नाम है, इनसे फेर छतीस है।

शिष वाच : हो स्वामीजी पांचो बाय नांव केह दिया, निरणा गुरु बोहोत विध किया।
अब मैं बुझुं गुरु आई, कोहो तत से उपजे कुण बाई ॥ ६५ ॥

हो स्वामीजी पांच वायु नाम आपने बताये, आपने निरणा किया, अब मैं यह पूछता हूं कि किस तत से कौन वायु होती है।

श्री सुखो वाच : हे शिष मही तत की धनंजय होई, तोय माय नाग सुख जोई।
किरकल जांण तेज सुं आवे, बाय तत की कोरम कुवावे ॥ ६६ ॥

म:फ: है कि पृथ्वी तत की धनंजय वायु होती है। जल तत से नाग वायु होती है। किरकल वायु तेज तत से होती है। वायु तत की कोरम होती है।

हे शिष देवदत ब्रह्मण्ड की भाई, तेज तत सुं उपजे आई।
अे पांच बाय कही मैं तोई, तत तत सुं ऐसे होई ॥ ६७ ॥

हे शिष्य देवदत वायु आकाश तत्व की होती है। तेज तत्व की प्रकृति खुलती है जब होती है। ये पांच वायु तुझ से कही। तत्व तत्व से ऐसी होती है।

शिष वाच : हो स्वामीजी तत तत की सोज बताई, मेरा भरम गया भो मांही।
अब मैं या बुझुं गुरु सोई, अे उपज्या किम जांणे कोई ॥ ६८ ॥

हो स्वामीजी तत तत की आपने सोज बताई मेरा सब भरम मिट गया। अब मैं यह पूछता हूं कि कौन सी वायु पैदा हुई, यह कैसे जाना जाता है।

श्री सुखो वाच : हे शिष नाग बाय तन उपजे आई, जब यो प्राण डकारे भाई।
कोरम से फरके चख तेरा, किरकल छींक ऊछारे झेरा ।। ६९ ॥

म:फ: है कि हे शिष्य नाग नाम की वायु पैदा होती है। जब यह प्राण डकार लेते है। कोरम से आंख फरकती है, किरकल वायु में छींक आती है।

हे शिष देवदत की या बिध कुवावे, ओ तन भांज उबासी आवे।
धनंजय सुं सुजे भाया, छुटे प्राण देह तन काया॥ ७० ॥

हे शिष्य यह शरीर भांज कर उबासी आती है, यह देवदत की विधि है। धनंजय वायु प्राण शरीर से छूटने के समय आती है।

शिष वाच : हो स्वामीजी धन्न हो आप जुग के माही, मोपे महिमा कही न जाई ।
तुम तो मोय दिखावो अेसा, द्वापुर मांय ब्यास सुख जैसा ॥ ७१ ॥

हो स्वामीजी जगत में आप धिन है मेरे से आपकी महिमा कहने में नही आती। मुझे तो आप ऐसे मालूम हो रहे, जैसे द्वापुर में ब्यासजी के सुखदेवजी थे।

हो स्वामीजी फिर बुझुं गुरु सांई, अे तो तत सदा घट मांही।

अे वाया तो फिरती सी आवे, खिण में होय पलक में जावे ॥ ७२ ॥

हो स्वामीजी फिर मैं यह पूछता हूं अे तत तो हमेशा घट में रहते है। यह वायु तो फिरती रहती हुई आती है। क्षण में होती है पलक में जाती है।

हो स्वामीजी अे कहिये मोकूं सब भेवा, उपजे मिटे कुण विध देवा।
या विध मोय अंदेशे सांई, अे उपजे मिटे कोण विध मांई ॥ ७३ ॥

हो स्वामीजी इसका मुझे भेद कहिये। किस तरह पैदा होती है, किस तरह मिटती है। मुझे अंदेशा है। कैसे बनती है, कैसे मिटती है।

श्री सुखो वाच : हे शिष अन्न जल जोय मही तत पावे, पूरण हुवे वाय चल आवे।
तेज तत दुखिया जब होई, तब या वाय ऊपजे लोई ॥ ७४ ॥

म:फ: है कि हे शिष्य अन्न जल से पूर्ण हो जाता है तब पृथ्वी की वायु आती है। जब दुखी होता है। तब तेज तत की वायु आती है।

हे शिष प्राण भूत कूं चिन्ता होई, फिर को याद करे लोई।
तब या वाय चलकर आवे, जब यो ब्रह्मण्ड दुखी उबासी खावे ॥ ७५ ॥

हे शिष्य प्राण भूत को चिन्ता होती है। फिर कोई याद करता है, तब वायु चलकर आती है, जब वो ब्रह्मण्ड दुखी होकर उबासी खाते है।

हे शिष धनंतर वाय चाल तब आवे, जब यो प्राण देह छिटकावे।
तां उरियां नही व्यापे भाई, आ विध सरब उपजे आई॥ ७६ ॥

हे शिष्य धनंतर वायु आती है जब यह प्राण शरीर छोड देते है। उसके पूर्व यह वायु शरीर में नही होती है। यह विध सरब पैदा होती है।

शिष वाच : हो स्वामीजी अे तम सरब कहया मुझ भेवा, अब मैं या बुझुं गुरुदेवा।
ऊपजत बाय इसी विध सांई, पाछी मिटे कुण विध मांई ॥ ७७ ॥

हो स्वामीजी आपने सब भेद कहा, अब मैं यह पूछता हूं कि हे गुरुदेव, वायु कैसे पैदा होती है व कैसे मिटती है।

श्री सुखोवाच : हे शिष धनंजय बाय मिटे तन सूका, किरकल जाय तेज सिर ढूका।
कोरम मिटे इसी विध भाया, चिन्ता जाय सैण सुख आया ॥ ७८ ॥

हे शिष्य धनंजय वायु से शरीर सुखता है तब मिट जाता है। किरकल वायु कोई तेज खुलता है जब चली जाती है। कोरम वायु इस तरह मिटती है। चिन्ता चली जाती है। सैण सुख आता है।

हे शिष देवदत अेसे मिट जावे, तेज तत परगत खुल जावे।
नाग वाय अेसी विध सोई, पावे आहार वर फल कम होई ॥ ७९ ॥

हे शिष्य देवदत ऐसे मिटती, तेज तत की प्रकृति खुलती है। नाग वायु की अेसी विधि होती है। आहार कम होती है तो मिट जाती है।

शिष वाच : हो स्वामीजी अे तुम मोकुं भेव बताया, सो मेरे उर अन्तर आया।
अब मैं या बुझुं गुरु सांई, कैसे आहार पचे तन मांही ॥ ८० ॥

हो स्वामीजी यह आपने भेद बताया सो मुझे अन्तर में अच्छा लगा। अब मैं गुरुदेव यह पूछता हूं कि यह आहार शरीर में कैसे पचता है।

श्री सुखो वाच : हे शिष सातुं अग्न कहिजे भाई, जो जठरा अग्न बसे तन मांही।
तांसु आहार पचत है काया, सो सुण भेद बसे अग्न सुं भाया ॥ ८१ ॥

म:फ: है कि हे शिष्य सात अग्नि जिसे कहते है जो जठरा अग्नि शरीर में बसती है। उससे आहार शरीर में पचता है। यह भेद अग्नि का है।

शिष वाच :- हो स्वामीजी निगले आहार पीवे जल पाणी, ओ अद बीच कुण थोबे आणी।
तांको भेव कहो गुरुराया, रूम रूम में कैसे जल आया।। ८२ ।।

हो स्वामीजी आहार निगलता है जल पीता है। इसको अधबीच में कौन थोबता है। हे गुरूदेव इसका भेद कहो। जल रोम रोम में कैसे पहुंचता है।

श्री सुखो वाच :- हे शिष अेक बाय सूं निगले भाई, दूजी बाय थोबदे मांही।
तीजी आहार चूस सब लेवे, चौथी छांट मूल सब देवे।। ८३ ।।

म:फ: है कि हे शिष्य एक वायु से निगलता है। दूसरी वायु से थोबती है। तीसरी वायु आहार चूस लेती है। चौथी वायु सब मूल छांट देती है।

हे शिष मल कूं थोब रखे सुण भाई, ये पांचू बाय रहे तन माई।
अैसे बुहार तन को जाणो, खावत पीवत सरब बखाणो।। ८४ ।।

हे शिष्य मल को थोब रखती है। ये पांचू वायु शरीर में रहती है। इस तरह शरीर का व्यौहार है। खाने पीने का सरब बखाण है।

शिष वाच :- हो स्वामीजी ये पांच बाय कहां ते होई, तांको भेव कहो गुरु मोई।
को को बाय कुण घर बासा, सो भेव बताओ आसा।। ८५ ।।

हो स्वामीजी यह पांच वायु कहां से आती है। उसका भेद गुरुदेव कहो, किस किस वायु का किस घर में बास है सो सब भेव बताओ।

श्री सुखो वाच :- हे शिष निगलण बाय तेज की भाई, ब्रह्मण्ड की थोबत है आई।
चुसण बाय पवन की जांणो, मल छूटण सोई तेज बखाणो।। ८६ ।।

म:फ: है कि हे शिष्य निगलने वाली वायु तेज तत्व की है। आकाश तत्व की वायु थोबती है। चुसने वाली वायु पवन तत्व की है। मल छूटने वाली वायु तेज तत्व की है।

शिष वाच :- हो स्वामीजी इन्द्री मूल दोय है सांई, जल मल आहार ले किम मांई।
यांको भेव कहो समझाई, बिन्द मूत्र बिछडे किम मांई।। ८७ ।।

हो स्वामीजी इन्द्री मूल दो है। इनमें जल मल आहार अन्दर अलग कैसे होता है। इसका भेद समझाइये। वीर्य व मूत्र अलग कैसे होता है।

श्री सुखो वाच :- हे शिष नांभ कंवल में सब मिल जावे,
अन्न जल अहार जिक्युं नर खावे।
वासुं ही ओ बिछडत है भाई, सो तुम भेव कहुं समझाई।। ८८ ।।

म:फ: है हे शिष्य नांभ कंवल में सब मिल जाते है। अन्न जल आहार जो भी मनुष्य खाता है। वहां से ही वह बिछडता है। यह भेद समझाकर कहता हूं।

हे शिष नाभी बीच कंवल है भाई, नाडिया गोड शकल उण मांही।
कस कस नाड बाय ले पाया, पीछे टले इसी बिध भाया।। ८९ ।।

हे शिष्य नाभ कंवल के बीच में नाडिया गोड सब उण में है। कस कस को नाडिया वायु ले लेती है। पीछे इसी तरह अलग होती है।

हे शिष जैसी गत कोलु की जाणो, अेसो कंवल नाभ सो बणो।
वा जठरा अग्र सुं पाचे भाई, तब झर झर कंवल भरिजे आई।। ९०।।

हे शिष्य जैसी गति कोलु याने घाणी की है इस तरह नाभी कमल बना हुआ है। वहां जठरा अग्नि उसको पचाती है। तब झर झर कर कंवल भरता है।

हे शिष कस कस शकल चूस ले भाई, अंस बिंद नीर टल्यो युं माई।
रस कस बाय खेंच सब लिया पीछे आहार छोड उण दिया।। ९१।।

हे शिष कस कस को सब चूस लेता है। ऐसे वीर्य व पानी अन्दर में अलग होता है। रस कस सब वायु खींच लेता है। पीछे आहार को वो छोड देती है।

हे शिष ऐसे आहार छूटे मल सोई, भिन्न भिन्न भेद कहयो मैं तोई।
अब तोकूं मैं ठाम बतावुं, बाय बाय का निरणा लावुं।। ९२।।

हे शिष ऐसे अहारा मल छूटता है, यह भिन्न भिन्न भेद मैने तुझको कहा है। अब मैं तोकू जगह बताता हूं। वायु वायु का निरणा बताता हूं।

हे शिष निगलण बाय तेज की गाजे, कंठ कंवल के मांय बिराजे।
थोबण बाय गाल में भाई, चूसण बाय नाभ के माई।। ९३।।

हे शिष निगलने की वायु तेज तत्व की है, कंठ कंवल में रहती है। थोबण वाली वायु गाल में रहती है। चुसण वाली नाभी में है।

हे शिष मल कूं खांच छांट दे भाई, वा सो बाय नाभ के मांही।
थोबण बाय लिंग मुख जांणो, वाई बाय गुदा मुख ठांणो।। ९४।।

हे शिष मल कूं छांटकर खेंचकर अलग करती है वो वायु नाभी के अन्दर है। थोबण वाली वायु लिंग के मुख पर है, वो ही वायु गुदा के मुख पर है।

<u>शिष वाच</u> :- हो स्वामीजी लिंग मुख अेक दोय ना सांई, बिंद मूत्र बिछटे किम मांई।
यांको भेव कहो गुरुराया, कैसे बिंद छूटत इण काया।। ९५।।

हो स्वामीजी लिंग का मुंह तो एक है। दो नही है। वीर्य पेशाब अन्दर कैसे अलग होता है इसका भेद बताइये। शरीर में वीर्य कैसे छूटता है।

<u>श्री सुखो वाच</u> :- हे शिष बिंद को बास शिर पर होई, मूत्र वास कमर संध जोई।
नाडया दोय मुख है अेकी, जैसे शहर पोल बिध पेखी।। ९६।।

है शिष वीर्य का स्थान शिर पर है, पेशाब का स्थान कमर की संधी में है। नाडिया तो दो है मुख एक ही है। जैसे शहर की पोल है, शहर की पोल में घुसता है। वो रास्ता अलग है और निकलने का एक ही है।

हे शिष मन मंछया मेहरी चित आवे, मथन बाय सो काम चलावे।
अेसे बिंद छूटत है भाई, मूत्र कंवल पूरण व्हे मांई।। ९७।।

हे शिष यह मन की इच्छा स्त्री से मिलने की होती है मथन वायु काम पैदा करती है। इस तरह वीर्य छूटता है। मूत्र कंवल अंदर पूरण हो जाता है।

।। इति श्री ज्ञान गोस्ट का अंग सम्पूर्ण।।

卐 गरभचेतावनी ग्रन्थ 卐

दोहा :- गुरुसा दाता को नही, तीन लोक के मांय।
करता कूं सुखराम कहे, सतगुरू दिया बताय।। १ ।।

तीन लोक में सतगुरु याने अणभै वाणी बनाने वाले के बराबर कोई दान देने वाला नही है। म:फ: है कि सतगुरु ने पारब्रह्म परमात्मा के के: पद आ:पद की प्राप्ति करा दी है।

चवदा तीनूं लोक में, सब वांका धन होय। सो करता सुखराम कहे, गुरु बगसिया मोय।। २ ।।

तीन लोक चवदे भवन सब उसी परमात्मा के है, वो ही करता है। उनकी कृपा से ही गुरुदेव मिले है।

दिया भेद सहित ले, राम नाम तत सार। या बिन गुण सब और है, सो सरब माथे मार।। ३ ।।

गुरु महाराज ने भेद सहित राम नाम का भजन कराके निजनाम सतशब्द की प्राप्ति करा दी, इसके अलावा दूसरे साधन व भक्ति से जन्म मरण नही मिटता। यही माथे मार है।

ब्रह्मा विष्णु महेश ले, सगत सुन्न असमान। पांच तत तांसु परे, सो गुरु कहे बखाण।। ४ ।।

ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, सगती, सुन्न, असमान, पांच तत्वो से परे जो पद है उसकी गुरु महाराज ने जानकारी करा दी याने उसका ज्ञान दिया।

आगे पीछे मध्य में, जे तिरिया जुग मांय। सो मंत्र हरि नाम है, दूजा भरम कहाय।। ५ ।।

आगे पीछे मध्य में जिनका उद्धार हुवा है वो सब परमात्मा के नांव से हुआ है। दूसरे साधनो से नही होता यही भरम कहाय है।

शिव सनकादिक शेषजी, ध्यावत है दिन रात। सो मंत्र हरि नांव है, सुण सिख मेरी बात।। ६ ।।

उस नांव को शिवजी सनकादिक शेषजी रात दिन भजते है। हे शिष्य मेरी बात को सुणो वही मंत्र राम नाम है।

वेद भागवत पुराण रे, साख भरे सब कोय। केवल सत हरि बीज है, दूजी सब बन होय।। ७ ।।

वेद भागवत पुराण सब ब्रह्म के नांव की महिमा करते है। परमात्मा का केवल नाम ही बीज है बाकी नांव बन की तरह है।

ऋषि मुनि जोगेश्वरा, हरिजन सिद्ध अवतार। सब वाणी साखी भरे, केवल ब्रह्म विचार।। ८ ।।

ऋषि मुनि जोगेश्वर हरिजन याने भक्ति करने वाले सिद्ध अवतार सब की वाणी साक्षी दे रही है। केवल ब्रह्म की भक्ति करो।

मोकूं सब समझावियो, सतगुरु शिमरथ आय।
मैं बुज्यो सो सब कयो, भरम न राख्यो मांय।। ९ ।।

सतगुरु समरथ अणभै वाणी बनाने वाले ने मुझे सब समझाया मैने जो पूछा सो बतलाया। किसी तरह की कमी नही राखी।

तीन लोक निरणा किया, भांत भांत गुरुदेव।
तब मेरा मन समझिया, लाग्या ब्रह्म की सेव।। १० ।।

सतगुरु ने तीन लोक में सब भक्ति की अलग अलग पहुंच का निरणा बताया। तब मैं समझकर ब्रह्म की भक्ति करने लगा।

जा दिन सुं सुमरण लगा, निश दिन धारो धार। चेतन हुवा पल दोय में, जागी नाड विचार।। ११ ।।

जिस दिन से सांस उसांस में भजन करने लगा तो धारो धार होने लगा। दो पल में चेतन होकर नाडी में शब्द का अनुभव होने लगा।

सब कीमत इण शब्द की, कहां लग कहूं बणाय।
पख चारा जुग अेक में, गिगन पहुंता जाय।। १२ ।।

सब प्राक्रम इस शब्द का है। इसका कहां तक वर्णन करुं। पख चार याने दो महिने बारा बरस में गिगन में याने के:पद आ:पद में पहुंच गया।

जब हम चढया आसमान में, देख्यो जुग विचार।
सब नर बुहा जात है, मोह माया की लार।। १३ ।।

मैने के:पद आ:पद की प्राप्ति की और विचार किया कि सारा जगत माया के मोह में बहा जा रहा है।

इतनी हम कूं सूजगी, अरस परस दिल मांय।
बिन भगती जुग जीव सब, नरक कुण्ड में जाय।। १४ ।।

ऐसी बात मुझे मालूम हुई अरस परस दिल में निश्चय हो गया कि बिना भक्ति के सब जीव नरक में जा रहे है।

सुण लिज्यो नर नार सब, मै कहूं दुख लगाय। हरि लेखा जब मांगसी, कहा कहोगे जाय।। १५ ।।

मैं दुख के साथ कहता हूं सब स्त्री पुरूष सुणो, परमात्मा के दरबार में जब हिसाब पूछेंगे तब क्या जवाब दोगे।

जिण कारण हरि भेजिया, दिवी मिनखा देह। सो बाता क्यूं भूल गया, या मुख पडसी खेह।। १६ ।।

जिस काम के वास्ते मनुष्य शरीर देकर संसार में भेजा था। उस कोल को क्यों भूल गये हो। जिससे तुमको धिक्कार सहना पडेगा।

धरमराय दरबार में, तोय सुणाया बैण। सो बायक जडभूल के, क्यों कर रहयो केण।। १७ ।।

धरमराय के दरबार में जो वचन तुमको सुनाये थे। हे मूर्ख उन वचनो को भूल कर वादे के अनुसार नही चल रहे हो यही केण है।

दुख पावोगे प्राणिया, लख चौरासी मांय। हर को खूनी ठहरसी, जुग जुग गोता खाय।। १८ ।।

हे प्राणी चौरासी भुगतने में बडा दुख पावेगा। परमात्मा का दोषी ठहरेगा, जुग जुग में जन्म मरण का दुख भोगना पडेगा।

<u>शिष वचन</u> :- जब गुरुदेव को बुजियो, अति लघुता से आंण।
हरि दरगा में कोल हुवा, बोहो बिद कहो बखाण।। १९ ।।

शिष ने नम्रता से गुरु महाराज को पूछा कि परमात्मा के दरबार में क्या वादा किया सो आप समझाकर कहिये।

भोलप में भेद हम सब भूल गया, कोल वचन सब कोय।
तुम समरथ गुरुदेवजी, बरण बतावो मोय।। २० ।।

हे गुरुदेव आप समरथ है, ना समझी से भेद कोल वचन सब भूल गया आप समझाने की कृपा करो।

<u>गुरुवचन छन्दउदव</u> :- हे शिष तुम सुणो हित चित लाय, जद ओ कोल कीनो जाय।

करडो कोल यो तुम कीन, रहसुं राम सुं लवलीन।। २१ ।।

गुरु म:फ: है कि हे शिष तेरे हित के लिये चित लगाकर सुणो तुमने यह पक्का वादा किया था कि एक क्षण भी मैं परमात्मा से अलग नही होवुंगा।

रत कर भगत सूं राम, सत अब मेल जुग में श्याम।
मिनखा देह दिजे मोय, जद मैं भगती करस्युं जोय।। २२ ।।

मैं प्रेम में मग्न होकर भक्ति करूंगा हे परमात्मा मुझे जगत में भेज दो। मुझे कृपा कर मनुष्य योनी दो, जब मैं आपकी भक्ति करूंगा।

तीरथ धाम हरि जीग जाप, तपस्या तरक करस्युं त्याग।
ताली नही मेटु तोय, मानव देह दिजे मोय।। २३ ।।

तीरथ धाम जीग जाप तपस्या तरक का त्याग करूंगा। आपको एक क्षण भी नही भूलूंगा। मुझे मनुष्य शरीर दीजिये।

करस्युं जीव दया मैं जाय, रहसुं राम सुं रत राय।
बोलु सांच मुख सुं बैण, सब सुं होय रहसुं सैण।। २४ ।।

मैं जीवो पर दया करूंगा। हर समय रामजी की भक्ति करूंगा। सच्चे वचन बोलूंगा, सबका हितेषी बना रहूंगा।

सांची करूंगा मैं नित सेव, दिल में देखस्युं सत देव।
हर को रूप जांणु जोय, जैसो जीव जुग में होय।। २५ ।।

हमेशा ग्यान सच्ची भक्ति करूंगा, दिल में सतशब्द के दर्शन करूंगा, प्राणी मात्र को परमात्मा का रूप समझूंगा।

करस्युं सदा गुरू की सेव, तजस्युं राम बिन सब देव।
भजस्युं एक अणघड नाथ, करस्युं शुभ सारी बात।। २६ ।।

हमेशा ग्यान गुरु म: की आज्ञा में रहूंगा। रामजी के सिवाय दूसरी भक्ति नहीं करूंगा। एक पारब्रह्म परमात्मा का भजन करूंगा। सब अच्छे काम करूंगा।

करणी करूंगा मैं और, हरजी मेल उज्जल ठोर।
गास्युं शब्द हरिजस जाय, देस्युं दान जुग के मांय।। २७ ।।

मनुष्य जन्म का कर्तव्य समझकर प्राणी मात्र को सुख पहुंचावुंगा व भक्ति करूंगा। हे परमात्मा मुझे अच्छी जगह भेजो, रामजी के गुणानुवाद गावुंगा, जगत में दान देवूंगा।

चलस्युं नित मारग राम, तजस्युं धेक निन्दा काम।
करस्युं भगत का मैं लाड, तजस्युं मद मगजी गाड।। २८ ।।

हमेशा अच्छे आचरण धारण करूंगा। किसी की निन्दा द्वेष नही करूंगा। भगतो से भाव रखूंगा। मान बडाई को छोड दूंगा।

अबके ऐसो करस्युं धरम, बगसो आगला सो करम।
सांसो उसांस शिरजण हार, लेवु नांव दम की लार।। २९ ।।

अबकी मैं ऐसा साधन करूंगा, मेरे आगे के अपराध क्षमा कर दो। मैं आपके नांव बिना एक सांस भी नही खोवुंगा।

अेकी निमष भूलूं नांह, हरि कूं राखस्युं ऊर मांह।
अब जुग में मेल शिरजणहार, हर भज ऊतरूं ज्यूं पार।। ३०।।

एक समय भी आपको नही भूलूंगा, हृदय में हर समय परमात्मा को याद रखूंगा, अब मुझे जगत में भेज दो, आपका भजन कर भवसागर से पार हो जावूं।

आतुर हुवे है बोहो भांत, जल्दी करे अरजी खांत।
भक्ति करूंगा मैं जाय, अब तो भेज त्रिभुवन राय।। ३१।।

इस तरह आतुरता से कई तरह से प्रार्थना करता है कि मैं आपकी भक्ति करूंगा। हे तीनो लोको के स्वामी मुझे भेज दो।

भज सुं नांव केवल एक, दूजो छाडसुं सोभेष।
ओरूं फेर कहे ए आप, जाको जप सुं मैं जाप।। ३२।।

आप के नाम की भक्ति करूंगा दूसरी भक्ति नही करूंगा। और भी जो आप कहोगे सो ही करूंगा।

तेरा वचन टालू नांय, अब तो मेल जुग के मांय।
कीना कोल बहु इण रीत, हरिजी करो मेरी चीत।। ३३।।

मैं आपका वचन नही टालूंगा अब मुझे जग में भेज दो, इस तरह के वादे किये है, परमात्मा मुझ पर कृपा करो।

मैं तो दुखी हुवो अब मेल, झगडो करूंगा नही झेल।
तन मन अरप दियो तोय, मुख सुं बोल कहयो मोय।। ३४।।

मैं बहुत दुखी हूं किसी से झगडा नही करूंगा। तन मन आपके अरपण कर दिया, इस तरह आप कृपा कर कहिये।

<u>दोहा</u> :- धरमराज जब बोलिया, सुणो जीव अे बैण।
राम बिना संसार में, नही तुम्हारा सेण।। ३५।।

धरमराय बोले है जीव मेरे वचन सुण, राम के सिवाय संसार में कोई तुम्हारा सेण नही है।

मैं भेजू हूं जग में, सुणो बैण अे आय।
बिन भक्ति मैं नाख सुं, फेर नरक कुंड के मांय।। ३६।।

मैं तुम्हें भेजता हूं वहां तुमने रामजी की भक्ति नही की तो तुम्हे नरक भोगना पडेगा, यह सुण लो।

<u>शिष वचन</u> :- सतगुरु सुं शिष कहयो, दया करो गुरुदेव।
गरभवास में जीव का, भिन्न भिन्न दुख कहो भेव।। ३७।।

शिष्य गुरुदेव से प्रार्थना करता है, जीव के गरभवास में दुखो को सब तरह से समझाइये।

<u>गुरुवचन</u> :- हे शिष सुणो हित चित लाय, यह दुख है गरभ के मांय।
तोसूं कहूं सो सुण अेह, दुख अे जीव पावे देह ।। ३८।।

गुरुदेव फ: है कि हे शिष्य अपने हित के लिये चित लगाकर सुणो, गरभ में दुख है। यह जीव गरभ में शरीर ऐसे दुख पाता है।

झूले मुख ऊंधे जोय, मुंडो मेल मल में होय।
आवे दम अबका जोय, अर ज्यूं जीव जल में होय।। ३९।।

ऊंधे मुंह झूलता है, मुंह मल मूत्र में होता है, श्वांसा मुश्किल से आते है, जैसे जल में जीव दुखी होता है।

राखे मास नव ले मांय, खासा मेल मल मूतर खाय।
चमके चले जल्दी चाल, हुवो दुखी बोहो बेहाल।। ४०।।

नो महिना गरभ में रहते है, वहां मल मूत्र खाना पडता है, माता जल्दी चलती है तो जीव को दुख होता है। वह चमकता है।

सुणजे खोज मेरी शिष, जब यो दुखी बिस्वाबीस।
आहार करे बध तो आय, जब देह गले तन के मांय।। ४१।।

माता आहार ज्यादा कर लेती है तो गरभ में बालक का शरीर गलने लगता है। हे शिष्य मेरी बात सुण, मैंने खोजना करके गर्भ के दुख को पहचाना है। इस तरह जीव दुखी होता है।

नर सुं बेग बोले नार, पल पल दुखी पेले पार।
आवे क्रोध मां में धेक, दुख बोहो जन पावे देख।। ४२।।

क्रोध से स्त्री मनुष्य से बोलती है तो पल पल दुखी होता है, यदि माता में क्रोध द्वेषता आती है तो गरभ में बालक दुख पाता है।

ऊंदो शीष ऊंचा पांव, झूले गरभवास के मांय।
जठरा अग्नि को कुण्ड होय, जामें पडयो प्राणी जोय।। ४३।।

सिर नीचे पांव ऊपर रहते है। ऐसे गरभ में झूलता है, जठरा अग्नि के कुण्ड में पडा रहता है।

लागे आंच तांती लाय, मानव जोर दुखिया मांय।
यह दुख गरभ का अेहनाण, ज्यूं जल नाज सिजे जांण।। ४४।।

वहां बहुत गरमी लगती है, जीव वहां दुखी रहता है, ऐसा गरभ का दुख है, जैसे नाज सीजता है।

कर चल बांध ले चसकाय, अेसो गयो गाडो आय।
रिगस सके नही तिल ऐख , दुखी है जोर अेसो देख।। ४५।।

हाथ पांव मजबूत बांध देते है कि एक तिल भर भी इधर उधर नही हो सकता, ऐसा जोरदार दुखी रहता है।

बोता दुख जीणा जोर, अबकी गरभ की सुण ठोर।
अेसी नही दूजी मार, प्राणी देख इण संसार।। ४६।।

और भी बहुत से दुख है, गर्भ की जगह बहुत अबखी है। हे प्राणी, गर्भ के दुख के समान संसार में दूसरा दुख नही है।

काहा दुख गरभ का कहूं तोय, अेसा फेर कुण्ड में होय।
हरिजन ऋषि जोगी जांण, धुज्या गरभ में सो आंण।। ४७।।

गरभ के दुख तुझे कहां तक कहूं। ऐसे नरक कुण्ड का सा दुख होता है। भक्ति करने वाले ऋषि जोगी गरभ के दुख से बहुत डरते है।

भग जो पडे गृह के भेद, खरची खाय काडे खेद।
तब सो तजे जुग बोहार, लेवे नांव मारो मार।। ४८।।

लक्ष्मी खुट जाती है तो प्राणी दुखी हो जाता है। उसी प्रकार स्वांसा रूपी पूंजी खत्म हो जाती है तो भग में पडने से बहुत दुख होता है। जब जगत का व्यौहार छोडकर के एक क्षण भी नाम को नही भूलता है।

सुणो शिष गरभ का दुख अेहे, छुछम कयो नाही छेह।
करणा भगत सांची कीन, लिव बंध होय भजन में लीन।। ४९ ।।

हे शिष्य सुणो गरभ के दुख ऐसे है, मैंने तो थोडे से कहे है, दुखो का थाह नही है। इसलिए निज मन से सच्ची भक्ति करो।

दोहा :- गुरु शिष को समझाय के, कयो गरभ दुख आय। अे दुख नर भूला जाय।। ५० ।।

गुरुदेव ने शिष को गरभ के दुखो को समझाकर कहा कि मनुष्य इन दुखो को भूल गया है।

मार पड़सी सिर भारी, सुण शिष अे दुख होय। सोज मैं कहूं विचारी।। ५१ ।।

हे शिष ऐसे दुख होते है, सिर पर भारी मार पडती है, मैं तुझे सोच विचार कर कहता हूं।

शिष वचन :- अे दुख छूटे केम, गरभ कैसे नही आवे।
सो गुरु कहो ऊचार, कौन ओखद जड़ी खावे।। ५२ ।।

शिष प्रार्थना करता है कि इन दुखो से छुटकारा कैसे होता है। हे गुरुदेव कौनसी दवा व जडी खावे जिससे गरभ में नही आना पडे।

गुरुवचन :- ओ गरभ छूटे अेम, परिचित नांव सुं हुवे प्रेम।
मन हर बुद्ध अेको मांय, करिये नही दूजी कांय।। ५३ ।।

गुरु फः है कि निज नाम का प्रेम से भजन करने से ही गरभ से छुटकारा होता है, मन बुद्धि से निश्चय कर भजन करे और दूसरा कोई काम नही करे।

अेसो पच राखे, माने आन नाही कोय। आठो पोहोर ओई काम, झूंजे नांव मुख ले धाम।। ५४ ।।

अैसा पच राखे आन की भक्ति नही करे। रात दिन भजन करे, मुंह से भजन करना ही नांव से झूंझना है।

सिंवरे अेक सिरजणहार, दूजा सब काने टार।
लेवे नाम निरगुण अेहे, गाले पांच तत बिन देह।। ५५ ।।

परमात्मा के निज नाम का भजन करे, दूसरे सबको छोड दे, निरगुण नाम का भजन कर सतशब्द की जागृति कर पांच तत्वों के शरीर से अलग हो जावे। यही पांच तत्व बिन देह गालना है।

राखे एक सुं इकतार, लेवे नांव नित पत सार।
खोज आत्मा में देव, लागी सांस सुमरण सेव।। ५६ ।।

अेक राम राम के नाम का भरोसा रखे, हमेशा नियमित भजन करे, आत्मा के आधार से शब्द ब्रह्म की भक्ति करे। सांस उसांस में भजन करे। यही लागी सांस सुमरण सेव है।

साजे भगत मारग जोग, भूले तीन चवदे भोग।
आशा मेट रेह निराश, राखे देह जुग के पास।। ५७ ।।

भक्ति का रास्ता धारण करे, तीन लोक चवदे भवन के सुखो को छोडे। किसी में किसी प्रकार की आशा न करे। संसार का काम शरीर से करते रहे।

त्यागे सेंग अेसी रीत, हुवा हरक आगम चित।
बेसे नित आसण मार, लेवे नाम धारो धार।। ५८ ।।

इस तरह सब रीति को छोडकर चित लगाकर अगम की प्राप्ति का साधन करे। हमेशा आसण लगाकर बैठे व स्वांस उस्वांस में नाम का भजन करे।

मन कूं घेर राखे मांय, आठूं पोहोर खसता जाय।
दूजा ज्ञान बोहता होय, सब सुं रह बिरच्यो जोय।। ५९ ।।

मन को बस में करके आठ पोहोर भजन करे। संसार में दूसरे बहोत ज्ञान है उनसे दूर रहे।

माने अेक गुरु की आंण, दुजी सरब त्यागे बांण।
अेसो होय रह लवलीन, दादर मोर बरखा चीन।। ६० ।।

अेक गुरु की आज्ञा को माने, दूसरी सब आदतो को छोड दे। इस तरह भजन में लवलीन रहे जैसे मोर व मेंढक बरसात देखकर रहते है।

लेवे भेद गुरु के पास, खोजे पिंड छोड़े आस।
काया साज ले अस्तान, चिने तत पांचू मान।। ६१ ।।

भजन का भेद सतगुरु से लेवे, शरीर में सतशब्द को खोजे, सब आशा छोड दे। शरीर में सब स्थानों पर सतशब्द का अनुभव करे। पांच तत्वों के शरीर में सब अनुभव करें।

चाडे प्राण उलटो मांय, पूरब छोड पिछम जाय।
खोले बंक को मुख जांण, पीवे प्रेम वा घर आंण।। ६२ ।।

पूरब के स्थान तय करके पिछम के सब स्थानो को सतशब्द के साथ पार करे। यही प्राणो को अन्दर चढाना है, बंकनाल के रास्ते से जाकर प्रेम से भजन करे।

छोडे हद घर अवतार, जावे शिष्ट पेले पार।
सोऊं सांस ओऊं जाण, काड़े शब्द न्यारो छाण।। ६३ ।।

सतशब्द के साथ त्रिकुटी में आना ही हद घर छोडना व पार ब्रह्म से ऊपर सतशब्द का अनुभव करना ही शिष्ट पेले पार है। सांस ऊसांस में भजन कर शब्द की जागृति करना है।

सुण शिष फेर कहूं समझाय, धुर दिन पेड, कीसब लाय।
बरणु लछ का अहनांण, सुण शिष सांभलो सत बैण।। ६४ ।।

हे शिष फेर समझाकर कहता हूं कि शब्द की जागृति होकर शरीर रूपी पेड से रोजाना वही कीसब की, सब याने वही कार्य करता है। जिससे परमपद मिले उसके लक्षण बताता हूं। इन सच्चे वचनों को सुणो।

बोले बैण मधुरा जोय, छूटे प्रेम देवे रोय।
व्याकुल जीव मन ऊगताय, कह कब मिलूं हरि सूं जाय।। ६५ ।।

सबसे मीठे वचन बोले, प्रेम से विरह के साथ भजन करे। जीव में यह तडफडाट रहे कि मैं कब परमात्मा से मिलूं।

अेसो प्रेम लिया लीन, बैठे नांव सुं कसकीन।
लागे भक्त करडा बंध, सांसा सुरत मन सुं संध।। ६६ ।।

इस तरह प्रेम से भजन करे, नांव में सुरत लगाये रखे, भक्ति हर समय करे। सांसा में मन व सुरत का लगाये रखे।

दुजी सरब मेले आस, के दिन काटस्यूं जम पास।
अेसो मत राखे मांय, दूजो ज्ञान माने नांय।। ६७ ।।

सब आशाओं को छोडकर मन में यही विचार करे। जन्म मरण से रहित कैसे हो सकता हूं।

यही विचार रखे और दूसरे ज्ञान को न माने।

मंतर और सारा छाड, राखे नांव लिव को गाड।
क्रिया करम साजन देख, छाडे झूंठ जुग को पेख।। ६८।।

सब मंतरो को छोडकर अेक नांव का विश्वास रखे। क्रिया करम और साधन को झूंठा समझ छोड दे और जगत को झूंठा समझ उसमें मोह नही करे।

बांधे पांच मन मसकाय, रोके अेक घर में लाय।
खेले खेल शूली शीष, पाले तीन जोधा तीस।। ६९।।

पांच विषय व मनको बस में कर ले, सबको भजन में लगा दे। तीन गुण सत रज तम पांच विषय पचीस प्रकृतियो को बस में करके याने इनसे अलग होकर के:पद की प्राप्ति करना ही खेले खेल शूली शीष है।

बांधे मूल अेसो जांण, तामे पड़े सब ही आंण।
लेवे लच्छ सारा सोज, चिने तत काया खोज।। ७०।।

सतशब्द का साधन करे जिससे ये सब बस में करके अच्छे लक्षण धारण करे। शरीर को खोजकर ब्रह्म पद की प्राप्ति करे।

सोजे सेंग दिल बैराट, लेवे आद घर की बाट
छोड़े सरब उला गांव, भांजे बीच बिसम धाम।। ७१।।

शरीर में खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड का अनुभव करना ही सारे बैराट को सोधना है। इससे अलग होकर सतशब्द के साथ के:पद में जाना ही आद घर का रास्ता लेना है। सब ऊली तरफ के स्थानो को पार करना ही छोडना है। के: पद में पहुंचने की बाधा को मेट देवे।

नव घर लांघ दशवें जाय, बिन मुख राम रहो लिव लाय।
गंगा मिले सुखमण घाट, जमना सुरसती की बाट।। ७२।।

नव घर को छोड दशवें द्वार में चला जावे, वहां बिना मुंह राम राम होता है। उसका ध्यान करना ही लिव लगाना है। अला पिंगला एक हो सुखमण में भजन करना ही सुरसती की बाट है।

नहावे जाय नितपत कोय, जांको गरभ छूटे जोय।
हद घर लंघ बेहद जाय, मेले सुरत पद के मांय।। ७३।।

त्रकुटी में जाकर सतशब्द का अनुभव करना ही नहाना है। हद को छोड पार ब्रह्म में पहुंच के:पद में जाकर सतशब्द का अनुभव करे। उनका गर्भ छूटता है।

जां सुण चंद सूरज नांह, ज्यो घर खोज बेसे मांह।
सेजा जाय अनहद घोर, बोती सुणे अद्धबुद्ध और।। ७४।।

जिस पद में चन्द्रमा सूरज नही है उस पद की खोज कर उस पद की प्राप्ति करे। वहां सहज में ही अनहद की आवाजे हो रही है। उनको सुणे।

जावे अगम लागे देख, ज्यां हर आप अवगत पेख।
वां सुण ध्यान शिवरण नांह, सो घर सोज बेसे मांय।। ७५।।

के:पद आ:पद में जावे, जहां पूर्ण आनन्द है, वो ही परमात्मा का स्वरूप है। वहां पर ध्यान शिवरण पहुंचते नही है। उस पद की प्राप्ति करो।

लागे सहजा ज्यां समाद, ऊ घर जाय लेवे साद।
पहले ज्ञान सो सुण चार, चाले सुरत आगे धार।। ७६ ।।

पहले चार ज्ञान मत, श्रुति, मन परचा, अवध ज्ञान ये सुणे व समझे, सुरत लगाकर आगे बढे। जहां सहज समाध पांचवे के: ज्ञान की लगती है। साधना करने वाले उस पद की प्राप्ति करे।

भूले नही ऊला मांह, केवल ज्ञान कूं ले ध्याय।
निरगुण भगत धारे कोय, जांको गरभ छूटे जोय।। ७७।।

ऊली तरफ के ज्ञानो में न भूल के: ज्ञान की प्राप्ति करे। निरगुण की भक्ति करने वाला गरभ में नही आता है।

आपो आप होय किरतार, छूटे गरभ की सो मार।
सुण शिष ये निरभै ज्ञान, तोको कहयो सब ही आंण।। ७८ ।।

वो आप ही करता पद की प्राप्ति कर लेता है। जब उसका गरभ में आना जाना मिटता है। हे शिष्य निरभय ज्ञान को सुण जो मैंने तुझे कहा है।

या विध जीव निरभै होय, आवे गरभ में नही कोय।
तोकूं कहूं मैं समझाय, सुण शिष मान सांची आय।। ७९ ।।

इस विधि से भजन करने से जीव निरभय हो जाता है, वो गरभ में नही आता। तेरे को हे शिष समझाकर कहा है, इसको सच मानो।

दिया भेद ओही जांण, वास्ट रामजी कूं आंण।
गीता वेद गावे जोय, निरभै राम नाम लिया होय।। ८० ।।

यही भेद वशिष्टजी ने रामचन्द्रजी को दिया, वेद गीता भी यह कहते है कि परमात्मा के नाम से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

सुण शिष सांच अेहनाण, निरगुण ज्ञान धारे आंण।
लेवे नाम सांसो उसांस, छूटे गरभ की सो फांस।। ८१ ।।

हे शिष यह सच्ची बात है, निरगुण ब्रह्म की भक्ति करे, सांस उसांस में भजन करे, जब गरभ की फांसी मिटती है।

<u>शिष वचन</u> :- इसी भगत हर नांव है, ताहि भूले किम लोय।
सो गुरु कहो विचार के, भेद सब दीजे मोय।। ८२ ।।

शिष्य कहता है कि मनुष्य परमात्मा के नाम की ऐसी भक्ति क्यों भूल जाता है। हे गुरुदेव इसका विचार कर सब भेद मुझे दीजिये।

<u>गुरुवचन</u> :- <u>छन्द मोतीदान</u> :- अब शिष सुणो सब ही आय, यूं नर भूल गया जग मांय।
आवे गरभ में सो जीव, वां लग याद राखे पीव।। ८३ ।।

गुरुदेव म:फ: है कि अब हे शिष्य सब ही सुणो, इस तरह मनुष्य भूल गये है जब जीव गर्भ में आता है तब तक परमात्मा को याद रखता है।

आवे गरभ तज संसार, बाजे ढोल बरगु वार।
हरके बैन भुवा तात, होवे कडुंबा से बात।। ८४ ।।

गरभ को छोडकर बाहर आता है तब कई तरह के बाजे बजते है, बहिन भुवा भाई को खुशी

होती है। कुटुम्ब में आपस में बातचीत होती है।

धिन धिन आज जायो पूत, बांधे बाप मैया सूत।
गावे जाय मेहरी गीत, होवे हरक सब के चित।। ८५।।

आज का दिन बहोत धिन है, जो पुत्र की प्राप्ति हुई है। मां बाप कई तरह के आगे के विचार करते है, स्त्रियां गीत गाती है, सब के मन में खुशी होती है।

देखे बालक कूं सब जाय, लेवे गोद झेले मांय।
पीवे हांचल थण दूध, दिन दिन इन्द्रिया होवे सुध।। ८७।।

जब गुटकी गुटकी दूध पीता है, जब शरीर में माया का अंश बरतता है। बालक मां का दूध पीता है त्यों त्यों इन्द्रियां द्वारा जानकारी होने लग जाती है।

चोगे नेण देवे पोय, श्रवणा सांभले सुध होय।
दिन दिन बधे काया जाण, व्यापे शुद्ध सुरति आंण।। ८८।।

आंखो से देखकर पहचानने लगता है, कानो से सुनने लगता है, दिन दिन शरीर बढने लगता है, इस तरह वो जानने पहचानने लग जाता है।

चेतन बुध पलटे जोय, निज मन उलट अप मन होय।
तब मन भरम ऊपजे मांह, चमके डरे अन्न जल खाय।। ८९।।

चेतन की बुद्धि पलट जाती है। निजमन पलट अप मन हो जाता है, तब मन में भरम पैदा होता है। चमकता है, डरता है, अन्न जल खाने पीने लगता है।

हरखे हंसे फूले रोय, इन्द्रियां पांच चेतन होय।
अब सुण जीव बोले बाल, आवे प्रेम रामत आल।। ९०।।

कभी खुश होता है, हंसता है, रोता है, पांचो इन्द्रिया चेतन हो जाती है, अब जीभ से बोलने लग जाता है। खेलने में प्रेम आता है।

हरखे खेल सूं सो जाय, बाल थुडे उभो होय।
चाले पांवडा दस बीस, बरते हरख तीनों तीस।। ९१।।

खेलने से खुश होता है, बालक खडा होकर दस बीस पांवडा चलता है, तो तीन गुण पांच विषय पच्चीस प्रकृति प्रवेश होने लग जाती है।

जावे साइना के साथ, खेले रमे भर भर बाथ।
घर सु चीज ले वां जाय, मांडे खेल रामत आय।। ९२।।

अपने बराबरी के बच्चों के साथ जाकर बाथ भर भर कर खेलता रमता है। घर से खिलौने बाहर ले जाता है व बाहर खेलता है।

लागे जीव रामत मांय, बिसरे सुध या बिद जाय।
मोटो हुवा अब जो साथ, इन्द्रियां दस बरते आय।। ९३।।

जीव खेलने में लग जाता है इस तरह परमात्मा को भूल जाता है। जब बडा हो जाता है तो दसों इन्द्रिया अपना अपना भोग मांगने लगती है।

रामत खेल पेले जांण, माया काम व्यापे आंण।
देखे नैण मेहरी गात, व्यापे पीड औरत बात।। ९४।।

रमता है, खेलता है, माया की इच्छा शरीर में पैदा होती है। जब आंखो से स्त्री को देखता है तो काम की वासना जागृत हो जाती है।

व्याकुल होय मन उगताय, लागे भुख इन्द्रियां मांय।
व्यापे मांय सुण अे जोध, तोसुं कहुं सब ही सोध।। ९५।।

मन से दुखी होता है, मन में भोग भोगने की प्रबल इच्छा होती है, तुमसे यह सब सोध कर कहता हूं कि शरीर को भोगों की इच्छा प्रबल होती है।

चवदे तीन मोटा जांण, घेरे आत्मा कूं आंण।
यामें चार बांका होय, जा संग भूल गया सब लोय।। ९६।।

पांच ज्ञान इन्द्रिया, पांच करम इन्द्रिया, मन, बुद्धि, चित, अहंकार, रज, सत, तम तीन गुण बडे है। ये आत्मा को बस में कर लेते है। चित मन बुद्धि अहंकार इनकी पहुंच बहोत है, इनके साथ में सब परमात्मा को भूल जाते है।

वांकी दौड भारी जांण, पहुंचे लाखा कोस आंण।
करके प्राण कूं आधीन, भूले सुध सारी चीन।। ९७।।

इन सबकी मन की दौड बहुत भारी है। लाखो कोसो पर जा पहुंचता है, प्राणो को अपने बस में कर लेता है, सब सुध भूला देता है।

बरते विष काया आंण, बोले बैण काला जांण।
दूजी और भी बोहो मांय, माया झीणी बरते आंण।। ९८।।

विषयों की शरीर में इच्छा होती है। भोग भोगने की इच्छा से खराब वचन बोलने लग जाता है। अनेक तरह के भोगो की इच्छा पैदा होना ही झीणी माया बरतना है।

त्रिष्णा लोभ चिंता होय, जां संग राम भूल्या जोय।
भारी भरम बादल कोट, भूले सरब यांरी ओट।। ९९।।

त्रिष्णा लोभ चिंता सताने लगती है, इनके साथ रामजी को भूल जाता है, कई प्रकार के भरम पैदा हो जाते है, इनकी आड में रामजी को भूल जाता है।

करणे लागो सो व्यवहार, भूले राम शिरजणहार।
होवे इन्द्रियां बस जीव, प्रगक्त भूल जावे पीव।। १००।।

जगत के व्यौहार में लगकर रामजी को भूल जाता है, इन्द्रिया के भोगो के बस में हो जाता है व परमात्मा को भूल जाता है।

चावे सुख इण संसार, भूले राम शिरजणहार।
आवे ज्योस अहूं पद मांय, या बिद राम भूल्या जाय।। १०१।।

संसार के सुखो की चाहना में रामजी को भूल जाता है। शरीर में अहंभाव में भी परमात्मा को भूल जाता है।

जोरे चले इन्द्रियां देह, विषिया खाय बोखरे अेह।
पीवे मद अेमख खाय, या बिद राम भूल्या जाय।। १०२।।

इन्द्रियो के जोर से उनके बस में हो जाता है, विषय भोगकर उसी में लगा रहता है। मद पीता, माटी खाने में लगकर रामजी को भूल जाता है।

होवे जोध ही जवान, मंगजी कुबद व्यापे आन।
वासु पडे पर बस जीव, लहरया खाय भूले पीव।। १०३।।

जब जवान हो जाता है तो कई तरह की कुबुद्धियां जाग जाती है, उससे पर बस होकर विषय भोगो में लगकर परमात्मा को भूल जाता है।

इतनी आय व्यापे मांय, खांच्यो दशो दिशाने जाय।
सुणो शिष सांभलो धर कान, जग सुं लाग बिसरे ज्ञान।। १०४।।

इतनी कामनायें हो जाती है कि उनको पूरी करने के लिए दशो दिशा में फिरता रहता है। हे शिष कान लगाकर सुणो, जगत के काम में लगकर रामजी की प्राप्ति के ज्ञान को भूल जाता है।

खट रस जीभ मांगे स्वाद, व्यापे चाय चिन्ता बाद।
होवे शकल को आधीन, ऊपजे सोग सांसो कीन।। १०५।।

जीभ छः रसो का स्वाद मांगती है, उसमें चाय चिन्ता होती है, सबके आधीन हो जाता है, कई तरह के सोग सांसा खडे हो जाते है।

श्रवण भूख लागे मांय, मांडे कान बाता जाय।
पांचू भूत अेसा जांण, विकल पडे जुग में आंण।। १०६।।

कानो में बाते सुनने की भूख लगती है, बाते सुनने में कान लगाता है। पांचो विषय ऐसे है, विषयो की पूर्ति में ही लगा रहता है।

भूले शुद्ध सब ही लार, बांधे जुध घर सुं प्यार।
अेसी प्रीत उपजे मांय, परणु ब्याव किजे जाय।। १०७।।

सब सुध भूल जाता है, घर वालो से लडाई करता है, प्रेम भी करता है, ब्याह करने की इच्छा करने लगता है।

शोभा सुख जग में मान, ऐसी चाय ऊपजे आन।
किजे जुग शोभा देह, माने गोत भाई अेह।। १०८।।

जगत में शोभा सुख चाहता है ऐसी इच्छा होती है कि मैं जगत में ऐसा काम करूं, जिससे मेरी शोभा मान सम्मान मेरे गोती भाई भी करें।

ऐसी ऊपजे मन मांय, सबसुं संग हुये ये जाय।
लाजे लोग कुल सुं जीव, छोडे नही जुगरी सीव।। १०९।।

ऐसे मन में विचार करके सब के साथ इस काम में लग जाता है। भक्ति भजन करने में कुल के लोगों से लज्जा करता व जगत की मर्यादा को नही छोडता।

पूजे आन कूं तब आय, पलटे बुध सेंसा खाय।
नाना विध का व्यौहार, फैला जुग इण संसार।। ११०।।

आन की भक्ति व पूजा करने लग जाता है एवं उनके प्रसाद रूपी भोग लगाकर स्वयं गृहण करता है, ऐसे उसकी बुद्धि पलट जाती है। नाना विधि के व्यौहार जगत में फैल जाते है।

चूंपा चीज बोहती होय, झाडा मूठ मंतर जोय।
तामें पांच गुण परवाण, बरते तुरत साज्या आण।। १११।।

चुंपा याने आकार की बहुत सी चीजे होती है, मूंठ मंतर झाडा की साधना करते है, तो उसका

गुण तुरन्त बरतता है, इसलिए इनमें लग जाता है।

ऐसे जीव लालच लाग, धारे जुग किरया जाग।
ज्यों सुण पिंजरा के मांय, तोतो पडियो बोहो दिन आय।। ११२।।

जीव इस तरह लालच में लगकर जगत की क्रिया में लग जाता है जैसे तोता पिंजरे में आकर बन्दी बन जाता है।

समियो अैक अेसो जांण, तोतो मिल्यो भाया आंण।
भूले सरब बोली जोय, धारे गोत कुल ज्यो होय।। ११३।।

कोई समय ऐसा आता है तोता पिंजरे से निकल कर अपने भाइयो से जा मिलता है, गर्भ के सब वादे भूल जाता है। गोत कुल जो चाहे काम करता है।

सुण शिष यह परसंग आय, भूले जीव यूं जग मांय।
भूलो कोल इण विध आंण, पकडे चाल कुल की बांण।। ११४।।

हे शिष यह प्रसंग सुण ले, जीव ऐसे परमात्मा को जगत में भूल जाता है, परमात्मा की भक्ति भूल जाते है व कुल की चाल पकड लेता है।

करणे लागे सो व्यौहार, लागे करम काया लार।
पेली करे हुसया आय, पीछे पडे पर बस जाय।। ११५।।

इस तरह व्यवहार करने लग जाता है, शरीर से कोई भी कर्म करने पर कर्म बन्धन हो जाता है, पहले तो खुशी खुशी करते है, पीछे उनके बस हो जाता है।

घेरे आत्मा अज्ञान, बांधे करम पूजे आन।
दिन दिन मन मेला होय, करणी नही ये सूजे कोय।। ११६।।

इस तरह आत्मा को अज्ञान घेर लेता है, आन की पूजा करने में और अनेक मंत्रो को करने लग जाता है, दिन दिन मन मलीन होता जाता है और मनुष्य जन्म का जो कर्तव्य भक्ति भजन करना है वो नही सूझता है।

दुख सुख पडे वे परवाण, जब जीव होवे कायर आंण।
पूजे भैरू भोपा देव, लागा पाहण जुग की सेव।। ११७।।

जब शरीर में कई तरह के सुख दुख आ पडते है तब कायर होकर कई मंत्र रट कर भैरू भोपा की पूजा में लगकर पत्थरो की पूजा करने लग जाता है।

हे शिष कहां कहूं लग तोय, बांधे धरम न्यारो जोय।
पूजे मन मान्या देव, गुरुमुख नांय माने सेव।। ११८।।

हे शिष में कहां तक कहूं इस तरह अलग अलग धर्म बांध लेता है। अपने मन को जो अच्छा लगता है उस देवता की पूजा में लग जाता है। सतगुरु के ज्ञान से जीव जन्म मरण से रहित होता है उसको नहीं मानता है।

हे शिष कहूं कहां लग तोय, या विध सरब भूला लोय।
काया भरम बादल मांही, यू सरब दुख सूजे नांही ।। ११९।।

हे शिष मैं तुझे कहां तक कहूं। इस तरह सब संसार परमात्मा को भूल रहा है। शरीर में भरम रूपी बादलो से नरको का व चौरासी का दुख नहीं सूजता।

अजुं सोच नी मन मांय, यूं सरब जुग भूल्यो जाय।
पच पच मरग हुवे हैरान, भूले परतीबंब में जांण ।। १२०।।

अभी तूं मन में सोच सारा जगत परमात्मा को भूल रहा है। जैसे मृग दौड़ दौड़कर दुखी हो रहा है, सूर्य के प्रतिबिम्ब को बालू में पानी समझ रहा है।

हे शिष कहूं कहां लग तोय, गुरु बिन भेद भूल्यो लोय।
सांची अेक याही जांण, गुरु बिन भक्त भूले आंण ।। १२१।।

हे शिष कहां तक कहूं सतगुरु के बिना संसार परमात्मा की प्राप्ति का भेद भूल रहा है, इसको सांच समझ ले। गुरु के बिना सब भक्ति को भूल रहे है।

भेदी गुरां बिन यो जीव, हे शिष बिसरे इन पीव।
दिशा भूल वे नर कोय, गुरु बिन सरब अेसो होय।। १२२।।

भेदी गुरु याने सतशब्द व के:पद प्राप्त कराने वाले गुरु याने ज्ञान के बिना परमात्मा को भूल रहे है जैसे कोई मनुष्य दिशा भूल जाता है। इसी तरह गुरु के बिना परमात्मा की प्राप्ति नही हो सकती।

माया मोह बरते आय, या विध कोल भूला जाय।
काया देह बादल जांण, तांमे छिपे सो जीव भांण।। १२३।।

जीव माया मोह में लगकर अपने वायदों को भूल जाता है। शरीर रूपी बादलो में जीव रूपी सूर्य छिप गया है।

गेलो भगत सूजे नांय, उलटा करम बंधे जाय।
भूलो जीव यूं जुग मांय, सतगुरु बिना विषया खाय ।। १२४।।

इस तरह भक्ति का रास्ता नही सूजता, उलटा कर्म बन्धन करने में लग जाता है। ऐसे जीव जगत में आकर परमात्मा को भूल गया है। सतगुरु के ज्ञान धारण किये बिना विषय भोग भोगने लग रहा है।

<u>शिष वचन</u> :- <u>दोहा</u>:- विषये जुग जो खावे तहां, भगत जहां नही होय।
वांकी कुण गत होवसी, भेद बतावो मोय ।। १२५।।

शिष्य कहता है गुरुदेव जो जीव जगत में आकर विषय भोगों में लगते है, उनसे परमात्मा की भक्ति नही होती। उनकी क्या गति होगी इसका भेद बताइये।

<u>गुरुवचन छन्द</u> :- कहूं शिष बतावुं तोय, जुगे जुग जीव दुखी यो होय।
अठे करे करम पहुंचे आय, जके सुण जीव न छूटे है जाय ।। १२६।।

सतगुरु शिष्य से फ: है कि मैं तुम्हे भेद बताता हूं यह जीव जुगानजुगों से ऐसे दुखी होता है, यहां कर्म करता है, उन सब करमों का भोग भोगे बिना नही छूटता।

टले नही एक कियोडा जांण, यूं जीवग्रह अगावुं हूं आण।
सुणो शिष दुख पडे बोहो मांय, बिना हरि नाम चौरासी जाय।। १२७।।

भोग भोगे बिना एक भी कर्म नही छूटता, जीव जिस घर में जहां भी जाता है करम वहां वहां आगे आते है। हे शिष्य जीव बहुत दुख में पड जाता है। रामजी के भजन बिना चौरासी में जाता है।

कुटिजे जीव जमा के हाथ, नही को संग न बुझे बात।
देवे सो मार इसी विध जांण, कियोडा कर्म जतावे आंण ।। १२८।।

जीव जमराज के हाथो से कुटता है वहां न कोई साथ है न कोई पूछने वाला है। किये हुये कर्मो को याद दिलाकर इस तरह मार देते है।

घिरे सो दूत अगावू आय, बिना हरि नांव नही सुख थाय।
सब सो देव मनावे लोय, बिना हरि नाम नही सुख होय।। १२९।।

जमराज के दूत आगे से आगे आकर घेरते है, परमात्मा का भजन किये बिना सुख नही मिलता। संसारी सब देवताओं को मानते है पर भजन बिना सुख नही होता।

सुणो शिष करम तणो व्यौपार, कुटिजे जीव घरो घरबार।
जम को हाथ बिकाया प्राण, करे सो लाय बडो जमराण ।। १३०।।

हे शिष्य करमो का हाल सुणो, जीव घर घर जाकर कुटता है। प्राण जमराज के हाथो में है, जमराज बडा है, प्राणी को लाकर उसके कर्मो का फल भुगताता है।

देवे सो मार जताय जताय, कियोडा कर्म भूल्यो जाय।
अबे सो कोण तुमारो सैण, कह यूं जम सुणावे बैण ।। १३१।।

जमराज याद दिला दिलाकर मार देता है, किये हुये कर्मो को क्यों भूल रहा है। अब तुम्हारा यहां कौन सैण है। इस तरह के वचन जमराज सुनाता है।

डरावे जम कुंडा के मांय, वां शिष करम कियोडा खाय।
बिना हरि नांव पडे दुख अेह, जमा घर जीव नरा बिच देह ।। १३२।।

जमराज जीव को नरक कुण्ड में डराते है। हे शिष्य वहां किये हुए करमों का फल भोगता है। परमात्मा का भजन किये बिना ऐसे दुखो में पडता है। जीव तो जमराज के कब्जे में रहता है। शरीर को मनुष्य जला डालते है।

हैवान जके सुण जीव बिसे मद खाय, चौरासी कुण्ड भुगते जाय।
करे जो करम, न गावे राम, तिके सुण जीव बंधे है जम धाम ।। १३३।।

जो जीव विषयो भोगो में व करम करने में लगे रहते है। रामजी का भजन नही करते, उनको जमराज के बन्धन में बंधकर चौरासी का व नरको का दुख भोगना पडता है।

पूजे सो भैरू खेतरपाल, तके सुण जीव बणे जमकाल।
करे जो वाद विवाद अजाण, अेसा जो जीव हुये जड आंण ।। १३४।।

भैरू खेतरपाल की पूजा करता है वो जीव जमकाल के बन्धन में बंधता है। नही जानते हुये वाद विवाद करता है। ऐसे जीव जड बन जाते है।

भले बेहे जाय चौरासी बीच, जुगा जुग जीव किया करम कीच।
पडे सो दुख अनंताहा आय, बिना हर नांव हुवे जख जाय ।। १३५।।

जुगान जुगों से जीव करम कर रहा है, जिससे चौरासी में बहा जा रहा है, अनन्तो दुखो में जाकर पडता है, बिना भजन किये दुख भोगता है तथा बिना नाम रटे राक्षस बनता है।

भुगते है जीव चौरासी लख, पडे बोहो बाल, मिले नही भख।
प्रगटे पितर भूत पलीत, बिना हरि नांव दुखी इण रीत ।। १३६।।

जीव चौरासी लाख योनियां भोगता है, बालक अधूरा गिर जाता है। खाने को नही मिलता, पितर भूत पलीत बनकर प्रगटता है। बिना रामजी का भजन किये ऐसे जीव दुखी होता है।

हुवे सो राकस दाणो घुघ, पक्षी सोई कीट हुवे खर घुघ।
पितर अगत गत न काय, लिया बिन नांव भरमे जुग मांय ।। १३७।।

राक्षस दाणो घुघु हो जाता है, पक्षी कीडा गदहा घूघू हो जाता है, पितर बन कर अगत में जाता याने गति नही होती। भजन किये बिना जगत में भ्रमित हो जाता है।

होवे सो श्वान शिसांग शलेस, बथिजे जीव सुणावे बलेस।
भटके है जीव न पावे मोख, सदा दुख होय कहीं नही पोख ।। १३८।।

कुत्ता स्याल श्लेस व कई तरह के जीव बनता है। जीव हर योनि में भटकता है, मोक्ष जीव नही पाता। सदा दुखी होता है, कहीं पोषण नही मिलता।

पडिजे देह अनन्तु जाग, लियां बिन नांव करे जुग काग।
हुवे अंग रोग चूडेलम मांह, सलीटा सांप बिच्छु कहाय ।। १३९।।

पडे सो देह अनन्त ही बेर, भले सोहो आंण बधे मोहो घेर।
करे सो करम जिसी सुण जीव, तिसी सो मार दिरावे पीव ।। १४०।।

दोहा :- करम जीव जो करत है, हर भगती नही होय।
वे नैचे दुख पावसी, जमलोक में जाय ।। १४१।।

सरब दुख भुगते सही, बिन भगती बिन भेद।
कहां लग दुख बखाण कहूं, जहां तहां जीव शीर खेद ।। १४२।।

शिष वचन :- छन्द मोतीदान :- कहे सो शिष सुणो गुरुदेव, कहिजे छांट सबे दुख भेव।
किसी सो जूण किसी विध होय, ताको गुरु भेद बतावो मोय ।। १४३।।

कहो गुरुदेव विचार विचार, किस्या सो करम किस्या दुख लार।
कहो गुरुदेव कृपाल दयाल, किमे जुग जीव मंडो हो ख्याल ।। १४४।।

कुणि के बश करे यो काम, तको गुरु सोद बतावो राम।
कहो सो जम रूप किस्यो का होय, तका सब मांड पछाडी है लोय ।। १४५।।

कहो जमलोक कूंडा परवाण, किस विध जीव गहै जम आंण।
पडे सो देह किसी विध बेग, कहो गुरु देव सब दुख सेंग ।। १४६।।

मेरे सो बुद्धि किमी उर मांय, सबे दुख बात न बुजी जाय।
कहो गुरु देव सब दुख आप, कहां लग जीव भुगते पाप ।। १४७।।

भुगते जीव कहां लग करम, कहो गुरु देव मिटावो यो भरम।
कोडि सो कलंकी व्हे किम आय, जिके कहो करम किसो जुग मांय ।। १४८।।

होवे सो अंध गूंगो किम जांण, तके गुरु करम बतावो आंण।
अंगे अंग हीन किसी बिध होय, तके गुरु करम बतावो मोय ।। १४९।।

पडे सो हीण नीचे कुल जाय, तिके गुरु करम किस्यो जुग मांय ।

रहे सो बांझ कैसे गुरु देव, किरपा कर आप बतावो भेव ।। १५०।।
क्रोधी अंग करूपी देह, किस्यो गुरु पाप बण्यो अंग अेह।
घणा सो बाल आवे है खूक, किस्या गुरु करम सदा रह भूक ।। १५१।।

हुवो सो पंग अपंग अधीस, तके करम किण कोहो गुरु ईस।
गिरे सो गरभ अधुरा बाल, तके गुरु कर्म कहो जे बेडाल ।। १५२।।

गुरुकर्म कहो गुरुदयाल, जणे तो बहुत न जीवे एक, तके गुरु पाप किस्या जुग पेख।
दलदरी होय कोहो किण पाप, तके गुरु देव बतावो आप।। १५३।।

कमी वा बुद्ध कहो किम होय, तके गुरु करम कहिजे मोय।
पडे किम लछ कुलच्छण देह, किस्यो गुरु करम बणे अंग अेह।। १५४।।

कपटी होय न बोले सांच, ऐसा गुरु अंग बण्यो किम पांच।
काणो किम पाप हुवे गुरु देव, तको मुझ बतावो भेव ।। १५५।।

लूलो सो मंजर बाडो हो खेब, किसे गुरु करम पडे है अेब।
कहो किम बाल रंडिजे नार, तके गुरु करम कहो संसार।। १५६।।

मरे सो नार जोडो बंद होय, परणे फेर जीवे नही कोय।
पडयो सो बरोध नारी नर मांय, कलेसो नित अबोले जाय।। १५७।।

पडे सो बाल बिछोहा लोय, किस्या गुरु करम किया है सोय।
पडे सो बंध बिसे नरनार, किस्या गुरु किया करम संसार।। १५९।।

दासी दर चाकर चुकर खांण, किस्या गुरु करम किया वे आंण।
दवागण पीव न बुझे सार, किस्या गुरु करम किया वे ऊण लार ।। १६०।।

होवे किम नाजर खोजा हींज, किसी गुरु करम पडे है बीज।
पलटे पुरूष होवे किम नार, तके करम कहोनी विचार विचार।। १६१।।

किस्यो करम किया किस्यो दुख लार, तिका विध कीजे अब मोय।
मरे सो मोत कूंमीच विदेश, किस्या गुरु करम कहो गुरु रेस।। १६२।।

किस्या सो करम सो होवे काग, किस्यो गुण दोष फूटे नर भाग।
दासी के पेट ले अवतार, किस्या गुरु करम किया वे लार।। १६३।।

होवे सो भंगी मेहतर श्वान जांण, किस्या गुरु करम किया वे आंण।। १६४।।

डुमा घर घोडस ऊंट कतार, किस्या गुरु कर्म किया या मार।
दशरावे मेहकी सुत होय, किस्या गुरु कर्म सूं डाकण होय।। १६५।।

बालद्या बेल ऋष्यां घर गाय, किस्या गुरु कर्म बंदे है आय।

तेली घर बैल गाडोत्यी जांण, किस्या गुरु कर्म किया वे आंण ।। १६६ ।।
किसवण लार भडवा होय, तके गुरु कर्म कहिजे मोय।
नारी बस हुवे भरतार, काहा गुरु कर्म किया जूण लार।। १६७।।

होवे किम पितर भूत चूडैल, तके गुरु कर्म किस्या जुग खेल।
ऊंधे शीश आकाशा पांव, किस्यो गुरु कर्म बणे बिरछ आव।। १६८।।

सदा अंग रोगज लकूबा होय, तके गुरु कर्म कहो मुझ आंण।
सदा सुख हार सदा नहीं जीत, तके गुरु कर्म किस्या किण रीत।। १६९।।

व्हे जुग भूप जमे नही राज, भू जंग पण जमे है राज, तके गुरु कर्म कहो किम बाज।
पिंडत होय कर आवे रीस, कहो गुरुदेव कर्म किया गुरु ईस ।। १७०।।

जोगी सो होय न आवे विचार, कहां गुरु कर्म किया ऊण लार।
हुवे जो साध संतोक न मांय, कहां गुरु पूरब पाप कहाय।। १७१ ।।

भजे सो राम नही ईतबार, कहा गुरु कर्म किया ऊण लार।
बणायर भेष कमावे खेत, कहा जग उण कर्म किया जुग हेत ।। १७२।।

कथे सो ज्ञान न सूजे कोय, कहा गुरु कर्म किया जुग खेद।
पढे नित अरथ न सूजे कोय, कहा गुरु पूरब वा ऊर होय।। १७३।।

के शिष सूर नहीं पत मांय, कहा गुरु कर्म किया जुग आय।
ज्ञानी शिष होय नहीं गुरु धरम, कहा गुरु लार किया ऊण करम ।। १७४।।

पहुंचे जाय सबे लछ नांही, कहो गुरु दोख किस्यो जन मांय।
औरां कू ज्ञान न साजे है आप, किस्या गुरु कर्म किया ऊण पाप।। १७५।।

बखाणे है नांव करे सुर सेव, किसे गुरु कर्म न सूजे भेव।
होवे संग साध तज गरीबी नाय, किस्यो गुरु कर्म धस्या ऊ मांय।। १७६।।

जिको कर्म किये तिको व्हे हांण, सबे मुज छांट बतावो आंण।
अनेक तरह विध कर्म ऊपाय, अेक अेक की छांट बताओ आप ।। १७७।।

<u>गुरु वचन</u> : <u>दोहा</u> : सुण शिष तोसूं कहूं, सांच अर्थ यो जांण।
बिना भगती सब दोष रे, लागे जीव को आंण।। १७८।।

तूं कह तो सब छांटकर, निरणो करूं बजाय।
पण सांच अर्थ तो यो सही, सुण शिष मानो आय।। १७९।।

<u>कुण्डलिया</u> : भजन बिना सब कर्म रे, ऊड ऊड लागे आय।
ज्युं शिष सुना खेत में, मरग ढोर चर जाय।।
मरग ढोर चर जाय, खेत सो जाय भलिजे।

निशदिन नेहचल बास, हरष केला नित कीजे।।
भजन रूखालो जे रहे, मरग ढोर खेत नहीं खाय।
भजन बिना सब कर्म रे, ऊड ऊड लागे आय।। १८०।।

दोहा : हो गुरुदेवजी सांची कही, केहेण फेर नहीं कोय।
कोण करम को दोष है, छांट बताओ मोय ।। १८१।।

गुरू वचन : छन्द ऊद्धोव : हे शिष अंधा हुवे इण करम, गुरु को रूप निंदे धरम।
गुंगो होय इणमें जांण, गुरु सूं चेट सामो आय।। १८२।।

निंदे ज्ञान कूं नर आय, बोलो हुवे तबे जुग जुग परले जाय।
पांगो होय इण प्रकार, दरशण जात बैठे हार ।। १८३।।

होवे हीण बुद्ध यूं मांय, निंदे धरम अपना जाय।
त्रिया बांज हुवे इण पाप, निंदे हरि भगत को जाप।। १८४।।

मारे बालक कूं विष पाय, तांते बांज हुवे इम जाय।
तोतो कर्म इण सूं जांण, बोले मगज तेडी बांण।। १८५।।

तिरिया परण मर मर जाय, पूर्व पाप पहुंचे आय।
पूर्व पाप सुण शिष अेह, खाया द्रव्य हरे दुख देह।। १८६।।

विकली होय ईण सुण करम, गुरां सुं अडे छाडे शिष धरम।
काणू पाप इणा सुं जांण, आत्म देव निंदे आंण।। १८७।।

बाडो करे है इण पाप, निंदा नैण नरका आप।
होवे मांजरो इण दोष, दुखिया देख नहीं दे पोख ।। १८८।।

नाजर होवे है इम जांण, तप में विकल इन्द्रियां जांण।
खोजा होय है इण करम, मेहरी रूप निंदे धरम।। १८९।।

धावे है आन विषिया खाय, या बिद नीच कुल में जाय
दूजी जीव की दया दिल न होय, ताते नीच कुल में जाय।। १९०।।

तीजो धरम करणी नांय, ताते हीण कुल में जाय।
मंतर मूठ सीखे आय, जब वो पडे मध्य में आय।। १९१।।

करम बींदे नाना कीन, लगु सब कही गुरु लीन।
राखे गुरां सूं अंतराय, जदे ये जीव नरका जाय।। १९२।।

गुरां को मिनख जाणे है कोय, इण सुण दोष भरमे है लोय।
सेली जांण ले गुरु की सीख, जद सुण भरम फैले विष ।। १९३ ।।

राखे कपट दरशण जाय, इण सुण दोष रोगी है थाय।
मेहमा करत जांण कम, इण सुण दोष ओछा है दम।। १९४।।
लागे तीन फिर सुण पाप, जे कम साध जांणे आप।
दुबध्या राखे बंदे है कोय, इण सुण दोष विकले होय।। १९५।।

धारे साध सुण सुण धेक, इण सुण दोष बिटलवे भेख।
जन सुं मिल्या बोले नांय, इण सुण दोष गुंगो होय जाय।। १९६।।

हरिजन देख मन रीसाय, इण सुण दोष नरका जाय।
जन सुं बाद मांडे कोय, इण सुण दोष क्रोधी होय।। १९७।।

बालक बोहोत हुवे इम जोय, तिरस्कार पीव पर हर होय।
सदा भूख रहे ईण पाप, गुरां सूं पहले जीमें आप ।। १९८।।

काचा गिरे सुण ईण दोष, दियो नहीं शरणे आया पोष।
बालक जन्मे मर मर जाय, बंधे बैर जहां तहां आय।। १९९।।

दलदरी होय इण ही पाप, छाडे हरि भजन को जाप।
लच्छण पडे निराशा अेम, गुरां सुं निराश दूजा प्रेम ।। २००।।

लपटी होय है इण पाप, सतगुरु संगम निंदे आय।
अेसा रहे दिल में जांण, उर में ओर मुख कहे बांण।। २०१।।

ते सुण निपट लपटी होय, दुबध्या रह गुरां बिच जोय।
उर मुख रखे निश दिन दोय, जब अंग कुबरो वे जोय।। २०२।।

छन्द मोतीदान : छुडावे नाम नाना विद सार, इण सुण दोष रंडिजे नार।
जना बिच विरोध लगावे कोय, ईण सुण दोष मरे घर जोय।। २०३।।

पडे सो विरोध सुणो ईण पाप, भुलावे नाम छुडावे जाप।
दवागण कर्म इसे सुण दुख, सदा पति द्रोह दियो नहीं सुख।। २०४।।

गुरां की टेहल करे ताहां जान, तिका पर दोष लगावे है आंण।
इणे सुण दोष हुवे व्यभिचार, चाकर चुकर दासी होवे नार ।। २०५।।

गुना सो क्रोड करे नर कोय, तके सुण औरत इण विध होय।
पलटे पुरूष हुवे इम नार, भवानी जाय जपे संसार।। २०६।।

तजे सुण नाम नकेवल कोय, ज्यां सुं जाप भवानी होय।
मरे इण कर्म कूमीचा जाय, गुरां पत दोष लगावे आय।। २०७।।

गुरां सुं वाद उथापे ज्ञान, इसे करम काग होवे नर आन।
भंगी मेहतर इण कर्म व्हे शिष जोय, गुरां सुं रेण रखे भिन्न कोय।। २०८।।

फूटे नर भाग सदा रह अेम, गुरां को बैण ऊथापे नेम।
इणा सुण दोष डुमा घर घोड, गुरुं कूं टहल ऊदकन चोर।। २०९।।
भले सुण दोष कहे ईण रीत, तजे हर नांव अलापे है गीत।
कतारां ऊंट इणे करम होय, गुरा बीच टहल भूल्या कोय।। २१०।।

भले सुण ऊर इण कर्म जांण, अणभै ज्ञान ऊथापे आण।
दशरावे मेकी सुत मरे इण कर्म, जना हर घेर छुडावे धरम।। २११।।

रिष्यां घर गाय इण कर्म होय, गुरां घर आय भाव न होय।
हटके टहेल भिचकी देह, भले बोहो भांत दुखी बिन छेह।। २१२।।

हुवे सो श्वान इण कर्म आय, गुरां के पास अज्ञया बिन खाय।
बालध्या बैल हुवे इण दोष, ऊथापे टेहल चले मन जोस ।। २१३।।

किसबण होय इणे प्रकार, जके पत निन्दे सरावे जार।
गुरां घर काम रखे अंग कोय, गाडोत्यो बैल इण कर्म होय।। २१४।।

परक्रमा धर्म ऊथापे है आण, तेली घर बैल इण कर्म जांण।
भले सुण दोष बतावूं लाय, गुरां सुण ठांव नखे नहीं जाय।। २१५।।

किसबण कर्म इस्यो सुण जांण, गुरां पत निंधा सरावे आन।
भले जो कर्म करे इण रीत, जना को दोष देवे बिन प्रीत।। २१६।।

नारी के वश इणी कर्म जांण, गुरां को शीश नवायो नहीं आंण।
दूजो सुण दोष बतावुं हूं तोय, गुरां सत बैण बिदुखे खोय।। २१७।।

तीजो सुण दोष भले यो होय, भवानी सेव अलादो जोय।
होवे नर भूत इणे प्रकार, जना सुं है क्रोघ विचार है मार।। २१८।।

भले सुण भूत इणे सूं होय, हरि को नांव बिखोडे कोय।
प्रभु निंदे आन सरावे कोय, निन्दा कर भूत जुगो जुग होय।। २१९।।

हुवे इण कर्म चुडेली नार, जना सूं हूच बबिखोडे बार।
ईस्या फेर करम करे संसार, गुरां पत विष बिचारे है मार।। २२०।।

होवे है ईम पितर मोगा है जांण, अेको कूं धरम न राख्यो आंण।
भले सुण कर्म बतावुं तोय, बिखोडे धर्म सनातन होय।। २२१।।

रहे सुण मन मत मांगे जाय, ऊथापे है नांव नकेवल आय।
करे सुण कर्म हजारूं हूं लोय, तके सुण पितर मोगा होय।। २२२।।

ऊंदे सुण शीस रहे इण कर्म, हरि बिन ज्ञान बके बिन धर्म।
भले सुण कर्म बतावुं हूं पाप, कहे मुख ज्ञान न साजे आप।। २२३।।

हुवे इण दोष सबे बनराय, गुरां सूं घात विचारे है आय।
होवे जड़ पायण ईण बिद जोय, गुरां को देख न ऊबा होय।। २२४।।
रखे दिल गरब निवे नहीं कोय, रहे मुख झूंठ सरावे कोय।
ईसो सुण करम करे फिर अेह, पखाले प्रांण बिखोडे देह।। २२५।।

भले सुण दोष ईणा सुं जांण, बडा पुरूष पूज बिखोडे है आण।
सदा अंग रोग रहे ईण करम, जना बिच विरोध उठावे है भरम।। २२६।।

भले सुण जीव हते बिन खून, चढावे मांस भट्टी पर भून।
इसो सुण दोष भले बोहो होय, अेको कूं छांट बतावुं तोय ।। २२७।।

होवे इम गुंगो कुबो इण पाप, देही तन निरख ऊथापे जाप।
सदा सुख हार रहे इण करम, आज्ञा ले नीच उथापे धरम।। २२८।।

गुरु सो बरोध रहे मुरडाय, अज्ञया को लोप करे मन भाय।। २२९।।

भले सुण दोष ईणेसु हार, गुरा सुं बिणज ठगे व्यौपार।
जम्यो नहीं राज ईणे करम जांण, गुरु हरि निंदे बखाणे आंण।। २३०।।

न मान्या भेद दिया गुण ताय, कियो तप मन मते मुरडाय।
अहूं बल संत विदुख्या है जांण, इण करम राज जमे नहीं आंण।। २३१।।

भले तुज सोज बतावुं तोय, पांचू तप माही सजी नहीं कोय।
घणी सुण रीस इसे प्रकार, प्रसादी भिन्न ऊपाई लार।। २३२।।

होवे पढ पंडित रीस अपार, जीण यो करम कियो ऊण लार।
गुरां को ताव सहयो नही कोय, ऊचारया बैण सबे मुख में होय।। २३३।।

जोगी सो जोग न पावे है अेम, हरि गुरु ज्ञान उथापे प्रेम।
भले सुण दोष बतावूं हूं तोय, गुरां सुं बिरछर न्यारा होय।। २३४।।

कियो सो बाद विवाद अनेक, हरि सतनाम ऊथापे है देख।
भले सुण दोष घणा जुग मांय, कहां लग तोय बतावूं हूं आय।। २३५।।

इण दुख साद संतोष न काय, हणे गुरु माल उदासी होय।
कहूं शिष तोय बले इण कर्म, सराया है आन बिसे सब धरम।। २३६।।

रहे निज नाम नहीं ईतबार, तिणे शिष दोस किया ओ लार।
हणो गुरुदेव विचारी घात, दुखी तन देख न बुझी बात।। २३७।।

भले सुण करण बंध्यो सिर अेह, गुरां घर बसे विस्यो स्नेह।
इण दुख खेत कमावे भेख, उथापे है ज्ञान जना सुं धेख।। २३८।।

ओरूं फिर तोही बतावुं शिष, तजे घर बार पियो मद विष।
जना की टहल करी नहीं हेत, ईण करम साध कमावे खेत ।। २३९।।
न सूजे अरथ ईणे प्रकार, गुरां सुं छिप पियो विष लार।
रख्यो मन द्रोह कियो शुभ कर्म, डहेकाया जीव बताया है भरम।। २४०।।

कथे सो ज्ञान न सुजे भेद, तके गुण मेट करी गुरां खेद।
भले सुण दोष लग्यो सुण अेह, बिढारी नार बिखेडी देह।। २४१।।

नही पति दोष ईणी सुं जांण, बिखोडी ही आत्मा देह बखाण।
करयो अेह पाप पछाडी शिष, बंध्यापण भांज लगायो विष।। २४२।।

भले सुण दोष ईण प्रकार, तजे गुरु मोह कियो संसार।
भूले गुरु धर्म इण करम, नाही दिया दुख संत समागम ।। २४३।।

जांही हरे द्रव्य ज्ञान दगे सुं आय, इण कर्म धर्म बंधे नहीं जाय।
सबे लछ अंग इणे करम नांही, विदुस्याह जीव बिखोडियो है मांही।। २४४।।

औरां कूं ज्ञान न साजे आप, तिको यो करम किया सुण पाप।
कहे मुख बैण सदा ही झूंठ, रहयो अदबीच गुरु सूं रूंठ ।। २४५।।

भले सुण करम कियो है लार, हरि गत जांण मिल्यो संसार।
बखाणे नांव करे सुर सेव, तिकी यो करम किया सुण भेव।। २४६।।

हत्यो निज संत ऊथापे है ज्ञान, इण करम जड सेवे सुर आन।
अज्युं फिर दोष बंध्यो शिर अेह, जनागत जान उथापेह देह।। २४७।।

पियो विष मद संतापे जाय, जना की मेहर न मानी आय।
रख्यो नहीं कारण कूं रब लिगार, अहूं गुरु निन्दे जक यो संसार।। २४८।।

होवे साद तजे गरीबी नांह, जिका गुरु ग्रास न पायो जाह।
भख्यो अेमख जना को होय, इणे करम माह गरीबी जोय।। २४९।।

भले सुण दोष घणा जुग होय, छुछम सो छांट बताया तोय।
अब सुण तोही कहूं जमलोक, जहां जड जीव भुगते दोष।। २५०।।

अठे करे पाप तके करम लार, उठे जम घेर दिरावे मार।
करावे सोज सबे तत न्याव, रती सो चूक न चाले है चाव।। २५१।।

क्या रंक राव तिरलोकी जांण, करे है न्याव बराबर आंण।
इसो जमदूत जोरावर होय, धुजे जमलोक तिरलोकी है जोय।। २५२।।

जमा को रूप कहूं मैं आंण, सुणो अस्तूल बरणु हूं जांण।
तेरे दृगपाल गहे अस्तूल, तिको सब जम जमा को मूल।। २५३।।

बडा विकराल करूपी देह, नहीं घर गांव फिरे जुर अेह।
चवदह क्रोड तणो परवाण, तिका में अेक बडो सत जांण।। २५४।।
लडे ऊ जम जमा सुं जोय, चवदेह क्रोड न जीते है कोय।
इस्यो जमराय भखे जुग मांह, घणा करम कीट जहां चल जाय।। २५५।।

देखा सूं ताव न झेले है कोय, काया छोड झट चले हंसो जोय।
इस्या जमदूत सुणो शिष और, तिकारी पोंच बताऊं ठोर ।। २५६।।

चवदह फेर बडा जमराण, अेक अेक करोड ताके बस जांण।
तिके जीव जम घेर जाय, बहु बिध मार दिरावे आय।। २५७।।

सुणो शिष फेर जतावुं तोय, इसा कर आवध वांके होय।
सिला गुरज फांसी कई कर गूंथ, इणा सूं मार करे जीव सूथ ।। २५८।।

भले सुण आंकस फेर अनेक, चौरासी लख सबे सत पेख।
जिस्या करे करम तिसी दे मार, सुणो शिष जमा तणो व्यौहार।। २५९।।

बडे सुण जमा जीव में आय, दुजी सुण देह बिणावे जाय।
करे जम जोर इसी विध मार, गुरज घमघोर पडे शिर मार।। २६०।।

भाले गण जूथ बतावे दांत, ठंठूके नाला तोडे नल खांत।
होवे जम लार काया सुं काड, कहर कहर घोड खावे जम बाड।। २६१।।

गहे जम जीव इसी विध आंण, नकावे है फांस करे बंधी बांण।
जडे नव ताख धसे तन मांय, घेरे है मज जीव खेंचे है धाय।। २६२।।

अेको दम लेण न पावे कोय, झटके के छोड चले हंस जाय।
रहे सब लार हित जग माय, जमा संग जीव अकेलो जाय।। २६३।।

तको सो हो गेल इसीसी होय, होवे दुख अपार न बुजे कोय।
विकटा घाट बडा पन पाड, रूखा सूं रूख आडा बहू झाड।। २६४।।

बहे नदी बीच इसी अदभूत, जहां होई जीव चलावे दूत।
मही जल आगे सरोवर जांण, वहां जम जीव बखोरे आय।। २६५।।

कहे सुण बैण इस्या जमराण, कियो कुछ टेहल ऊदको आंण।
ज्युं तज आंच न लागे कोय, इस्या जम बैण सुणावे है जोय।। २६६।।

करो कुछ याद किया ऊपकार, नहीं तो प्रांण पडे शिर मार।
बहे जल लाल रगत सा जोय, तले तल कांटा खिला सो होय।। २६७।।

सुणो शिष घाट अबखा और, आतो तुज सैल बताई ठोर।
कहां लग फेर कहूं मैं तोय, बिकमी गेल जमा की होय।। २६८।।

शिष्य वचन : छन्द मोतीदान : कहो गुरु देव कुंडा परवाण।
किसे किस दोष पडे जीव आंण।
जमा के रूप बतावो मोय, पुरी किण रंग कठीने होय।। २६९।।

कहेजे आप सब विस्तार, किसे करम कोण पडे वा मार।
कहो गुरु देव सब विध मोय, जमा को रूप किसी विध होय ।। २७०।।

गुरुवचन : दोहा : करम विध सब सोज के, कहूं शकल बिध तोय।
अेक भजन बिन आत्मा, जद दुख पावे जोय।। २७१।।

छन्द मोती दान : होवे शिष कुंडा चौरासी होय, तिकारा नांव बतावुं तोय ।। २७२।।

अहूं अहंकार अलेजन अख, विषे बिरीपान चुहली चख।
सिलागुल पांख अभीचर कुंड, म्हा भखभांण कुंटुंबी झुंड।। २७३।।

अगोचर दिष्ट अडिटर भंग, निपोदर प्रास विष मही जुग।
म्हाखि भीष्ट रगतर जेर, सिली रहे जभ अधु कण केर।। २७४।।

अमुजी भीड विडारण भरम, लोहा कर कूपस अंध फिर गर्म।
सब कुंडा नांव इसी विध होय, अब अजु दोष बतावूं तोय।। २७५।।

जना पर हात चलावे कोय, तिको बस नरक पडे नर लोय।
हरिजन देख करे अभिमान, तके अहूं कुंड पडे नर जाय।। २७६।।

जना बिच बिरोध उथापे कोय, तिको भिष्ट कुंड पडे नर जाय।
छुडावे नांव हरे बिध आय, हर काम तिको नर नरक निगोद मांय।। २७७।।

अनेकुं हूं जिग करे शिष लोय, छुडाया नाम न माने कोय।
डरावे नरक निगोदा मांय, इकेअेण खून सबे सुख जाय।। २७८।।

सुणो शिष नाम झिलावे कोय, अनेकूं खून सबे रद्द होय।
इस्यो हरि नांव दियो फल जांण, महा कर्म दुष्ट न लागे है आंण।। २७९।।

इस्यो सुण अरथ विचारे कोय, तिको नर आप निरंजण होय ।। २८०।।

व्हे तुज दोष बतावुं और, बिना हर नाम नहीं गत मोख।
करे जो कर्म इतो जुग मांय, भुगते जीव जमा घर जाय।। २८१।।

जना सुं बेर रखे दिल कोय, तिको नरक पडे घूमे जोय।
ऊथापे ज्ञान चले मन जोर, तिको नर खंब बंधे ऊन ठोर।। २८२।।

जनागत जांण लहे जुग साथ, तके नर नरक निगोदा जाय।
होवे नर लीन मिले जुग मांय, सो वे नर नरक निसासे ये जाय।। २८३।।

अग्या ले फेर अफुटो होय, तिके भरम कुंड पडे नर लोय।
भले सुण नरक नकावे है जोय, मेला मल मंत्र सिखे है कोय।। २८४।।

करे बस देव मंगावे है माल, तिकारी जम कडावे है खाल।। २८५।।

जना सुं खेद द्वेष करे जुग मांय, तिके नर कुंभी नरका जाय।। २८६।।

अेकी को दोष बताऊं तोय, भले सुण खून अनेकूं होय।। २८७।।

सबे तुज खून बताऊं लाय, जमी पे पांव न मेल्यो हो जाय।
तुजे मैं छोटा बडा कहूं लाय, तिका नर नरक अवश्य जाय।। २८८।।

क्यूं कर खून मिटे नहीं कोय, अनेकूं धर्म ऊपाया होय।
भले सुण नांव लिवारी होय, तिकारो खून न छूटे है कोय।। २८९।।

आगा होय क्यूं धसे जुग मांय, तके सुण खून कही नहीं जाय।
भले सुण अेह तीन बडा सुण होय, तके सुण खून बताया तोय।। २९०।।

दोहा : सुणो शिष मैं तोसुं कहूं, बडा दोष इम होय।
फेर कहे तो देख रे, सरब बतावूं तोय।। २९१।।

शिष वचन : हो गुरुजी बडा दोष किम छुटसी, सो मुझ कहो ऊपाय।
और करम मैं काहा सुणुं, जहां हरि भजियां जाय।। २९२।।

गुरू वचन : छन्द मोतीदान : बडा सुण कर्म गले इम जांण, गुरां को शीश निवावे आंण।
सबे सुण दोष इमे गल जाय, गेहे हर नांव गुरां पे आय।। २९३।।

करम अनेक न लागे है कोय, होवे सब रद्द कियोडा होय।
परमेश्वर नाम अपरमपार, नमेगा दुष्ट कर्म रहे सब लार।। २९४।।

शिष वचन : कहे शिष फेर सुणावो गुरु देव, भगत बवेक बतावो भेव।
कहिजे आप सबे बिध कर्म, निरणा बिन भरम सबे नहीं जावे।। २९५।।

धिरज ज्ञान कहो विध कर्म, वे जमलोक कहो गुरु देव।
कित परवाण कठिने भेव, कहिजे आप सबे बिद करम।। २९६।।

भक्त बमेक बताया भेव, बिन तुम और कहे कुण आंण। धिरज ज्ञान कहो विध धर्म।। २९७।।

गुरु वचन : छन्द मोतीदान : सुणो शिष भेद बतावुं तोय, बामे कर लोक जमा को होय।
चोडा सुण जोजन सैह अक्ष हजार, अेतो ही लांबो उ चोडो बिस्तार।। २९८।।

चहूं दिश पोल्या अेक अेक होय, तिकारो भेव बताऊं तोय।
पुरबी पोल तिके नर जाय, घणां सुख सम्पति मां वे समाय।। २९९।।

करे सुण लील विलास अनेक, चाया मन भोग सबे सुख पेख।

भले सुण ऊतर पोल बखाण, जहां सुर राज घणा सुख जांण।
अनन्ता ही नाद घूरे घमघोर, सुखी है जीव सबे ऊन ठोर।
ईच्छा मन माही जके फल खाय, सुणो शिष पार अपार ही मांय।। ३००।।

पिछमी पोल कोऊं नर जाय, घणा जुग सुख भूगते है मांय।
लंकाऊ पोल जहां जमलोक, बहो दुख मार पडे गल तोक ।। ३०१।।

कहयो मैं लार सुणो विध भाग, तके सुण दुख पडे इण जाग।
कहां लग भेव बतावुं तोय, महा दुख मार जमा की होय।। ३०२।।

कई दुख वे तन आवे है कोय, हुकम हुकम त्रीहलोकी में होय।
सुनो शिष दुख तणा नहीं छेह, छुछम है सोद कया है अेह।। ३०३।।

शिष वचन : दोहा : हो गुरुदेवजी जमलोक चारूं दिशा, च्यारूं पोल्यां अे आं होय।
किस बिध न्यारा छांट के, जाता है नर जोय ।। ३०४।।

गुरू वचन : हे शिष जैसी करणी जो करे, मरतलोक के मांय।
तिण कारण जम छांट के, पोल पोल ले जाय।। ३०५।।

शिष वचन : हो गुरुदेवजी कुण करणी कर जीव ओ, पिछम पोल कूं जाय।
न्यारी न्यारी छांट के, चारूं कहो बजाय।। ३०६।।

गुरू वचन : सुणो शिष भेद बतावुं तोय, करे जीग जोग पुनारथ लोय।
भले उपगार दया घट मांय, जके नर पूरब पोल्यां जाय।। ३०७।।

कथे नित ज्ञान सुरा शुभ सेव, भजे अवतार तीनू सत देव।
करे तप त्याग जोरावर जाय, तके नर ऊतर पोलां जाय।। ३०८।।

रटे निज नाम नकेवल नित, धरे उर मांही अपूटो चित।
पूरा गुरु धार करे नित सेव, बिना हरि और न माने देव।। ३०९।।

तके सुण पिछम पोलां जाय, करे सो करम बोहो बिध आय।
तके सुण दक्षिण पोलां जाय।। ३१०।।

सुरग पोल कही सब सुध, बोहो बिध रीत समझे है बुध।
होवे सुण शिष ईआ ये होय, शिंभुसाह बैण सुनाया सोय।। ३११।।

शिष वचन : दोहा : हो गुरुदेवजी धिन आप हो, धिन मेरा अवतार।
तुम शरण में आय के, पायो भेद अपार ।। ३१२।।

मेरे मन अभिलाक है, अेक और गुरु राय।
जिण जिण पोल्यां पुचिया, या किम जांणी जाय।। ३१३।।

भेद यांको मुझ दीजे, किरपा कर गुरु देव। छांट निरणो सब कीजे।। ३१४।।

गुरू वचन : यांही सुण या गम होय, तिकारो मैं भेद बतावुं तोय।
काया सुं हंस सब तजे तिण बार, भेदी जन जाण लखे संसार।। ३१५।।

खुले सो काया कंवल जांण, तहां होय हंस बिछुटे प्रांण।
वही की पोल यहां ये होय, खण्डे पिण्डे राम बणाई जोय।। ३१६।।

वहां जिण पोल ले जावे जम, यहां तिण घाट कढावे दम।
सुणो शिष भेव इसी ओ होय, वहां यहां सब रीत कही जे तोय ।। ३१७।।

शिष वचन : पूरब पोल तके नर हंस जाय, यहां को घाट खुले गुरु जाय।
इन्हीं को भेव कहो सब बाट, किसी वा पोल किसी वा घाट ।। ३१८।।

गुरु वचन : सुणो शिष तोय बतावुं घाट, पुरबी पोल यहां मुख बाट।
भले सुण घ्राण खुले घट तांय, जके हंस ऊतर पोल्या जाय।। ३१९।।

खुले चख नैण सुणो इण देह, तिके हंस पिछम पोलस ने जाय।
गुदा लिंग घाट यहां यह जांण, वहां सुण दक्षिण पोल बखाण।। ३२०।।

कहे शिष फेर सुणावो गुरु आप, दिशे नहीं हंस कहां होय जाय।
किसी विध जांण पडे गुरु देव, तके मुझ सोज बतावो भेव।। ३२१।।

यहां होय हंस गये तेतीक, तिका गुरु मोही बतावो लीक।। ३२२।।

गुरू वचन : सुण शिष फूल खुले सोही जांण, तहां होय हंसा बिछुटो हो प्रांण।
शिष वचन : कहे शिष फेर सुणो ओ गुरु देव, अे तो हद चार बतावो भेव।। ३२३।।

होवे यो भेव कहो गुरु आप, मिलीजे मोख कहां होय जाय।
तिकारो भेव कहोनी मोय, वहां परम मोख यहां कहां होय।। ३२४।।

गुरू वचन : सुण शिष अठे अेहनांण, त्रिवेणी शीव बैकुण्ठ बखाण।
हरे तुज बांट बतावुं तोय, वहां की गेल यहां आ या होय।। ३२५।।

दशवो द्वार खुले जब आंण, तबे सुण मोख पहुंताहा जाण।
यहां यह घाट जडयो रह जोय, तहां लग हंस पहुंतो न कोय।। ३२६।।

बडी या पूंच प्राक्रम जाण, दशमो द्वार न खुल्यो है आण।
तहां लग फेर धरे अवतार, क्या सिद्ध साध पीर संसार।
दशवो द्वार खुल्या बिन देव, सदा ऊर हंस की आश करे है सेव।। ३२७।।

।। इति श्री गरभ चेतावनी ग्रंथ सम्पूर्ण।।

卐 अमर लोक महिमा ग्रंथ 卐

श्लोक :- पढंते सुणंते सिखन्ते परम धाम पावते सही।
ने कर्मी निराधार निरभय सदा महा सुखं ॥ १ ॥

अमरलोक महिमा को पढने सुनने सीखने याने ज्ञान को धारण करने से परम धाम की प्राप्ति होती है। उस पद में करम नहीं है, वह पद निराधार निरभय व सदा ही महासुख याने अखण्ड सुख का अनुभव होता है।

सतस्वरूप आनन्द पद, निज नांव केवल पद।
ज्ञान रूप ज्ञान ध्यानं ज्ञान दिष्ट, सदा सुखं नेह चला ।। २।।

सतस्वरूप आनन्द पद का निज नाम केवल पद जो गुरूपद है। वहां ज्ञान ही रूप, ज्ञान ही ध्यान व ज्ञान दृष्टि उस पद में सदा ही सुख है वो पद अटल है।

सजे सदा सुचं, जपन्ते जुक्ताय। ज्ञाने डोरं सर्व धर्मा नासन्ते न्यासी ।। ३।।

सदा पवित्र विधि से जपा जाता। सतगुरू के ज्ञान को धारण कर समस्त धर्मो की मर्यादा रखते हुए आत्मा का कल्याण करे।

निश्पाप निरदोष निरभै हंसा हंसे। निरमला अेकक नांव।। ४।।

इस एक नाम से हंस हंसणी याने स्त्री पुरूष निर्मल निष्पाप निरदोष होते है।

अजर नांव त्रिलोक नही लिपन्ते नांव, अजीत नांव जिभ्या धारे।
नांव रटन्ते मुखार बिंद, सांसा न सागे निराधार निरलेप ।। ५।।

यह नाम अजर है तीन लोक में लिपायमान नही होता याने तीन लोक में नही रहता, यह नाम अजीत है। सतगुरू विधि से जीभ पर धारण करने व नाम रटने से सांसा से अलग होकर निराधार निरलेप याने सबसे अलग हो जाता है।

साखी :- राम रतन सुखराम कहे, नेडा धरिया निराट।
सतगुरू बिन सूजे नही, आडा ओघट घाट ।। १।।

म:फ: है कि रामजी का पद आत्मचेतन के नजदीक है। सतगुरू का ग्यान धारण किये बिना उसका अनुभव नही होता। भरम व अज्ञान यही ओघट घाट आडे आना है। इनके कारण उस पद का अनुभव नहीं होता।

आ सायद सुण वेद में, संता कही बजाय।
बिन सतगुरू सुखराम कहे, अमरलोक नही जाय।। २।।

सतगुरू का सतग्यान धारण करे बिना अमरलोक की प्राप्ति नही होती। इस बात को सन्त भी कहते है व वेद भी इसकी साक्षी देते है।

रूम रूम में रम रहया, सुणज्यो शिरजणहार।
बिन सतगुरू सुखराम कहे, प्रगटे नहीं लिगार ।। ३।।

परमात्मा रूम रूम में रम रहा है, सब ही सुणो। सत ग्यान की शरण लिये बिना परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती।

सांचा सतगुरू जब मिले, शब्द बतावे भेद।

सुखराम नांव जब प्रगटे, चढे कंवल खट छेद ।। ४।।

म:फ: है कि जब सच्चे सतगुरू याने जिण संतो की वाणी में सतशब्द जागृत होने की विधी व कंवलो की जानकारी का भेद है तो शब्द की जागृति होने पर बारह कंवलो को छेदकर ऊपर चढता है।

आ सतगुरू की पारखा, सुण लिज्यो सब कोय।
निरभै बायक कह रहया, ध्यान शिखर में होय ।। ५।।

म:फ: है कि सब ही सुणो यह सतगुरू की परीक्षा है। उनका ध्यान के: पद में रहता है। वचनों द्वारा ऐसा उपदेश करते है कि जीव को अनादि से जन्म मरण का भय था, सबसे मुक्त कर देते है।

ध्यान परख सुखराम कहे, चौडे कहूं बजाय। नैण ऊलट कर पट लगे, देह अधर ठहराय ।।६।।

म:फ: है कि ध्यान की परीक्षा चौडे कहता हूं, नेत्रो से बाहर के दृश्य देखता है। अन्तर में दिव्य दृष्टि खुल जाती है। निरंजण निराकार पद में शब्द का अधर अनुभव होना ही अधर देही ठहराना है।

छन्द भुजंगी :- त्रीलोक माही नही आस वासा, मुवा न मरसी सोग न सांसा।
हरता न करता सरब सुखदाई, है परिपूर्ण आवे न जाई ।। ७।।

खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड से अलग सतशब्द के साथ होना ही त्रिलोकी में नही आसा वासा है। उस पद की प्राप्ति होने पर जन्म मरण से संशय सोग से रहित हो जाता है। उस पद में उत्पति नही है, न करता है उस पद में सुख ही सुख है। वो पद परिपूर्ण है, उस पद में न आता है न जाता है।

किलोल लीला इमरत धारा, ले हंस हंसणी अे सुख सारा।
अे खुट खुटे टूटे न कोई, हिणे न खिणे नही एक सोई ।। ८।।

वहां उस पद में हंस सतशब्द व उसका अनुभव करने वाली आत्म चेतन जिसको हंसणी कहते है। इन सुखो का आनन्द आत्मा के निरंजण निराकार चेतन पद से अनुभव होता है। वो सुख अखण्ड है कम नहीं होता। हमेशा एक सा रहता है।

है सतरूपा वे समदृष्टि, है नाम न्यारा ब्रह्म न भिष्टी।
है देश देशा सत धाम धामा, जहां हंस हंसणी नही करम कामा ।। ९।।

वो पद सत है उस पद का नाम ब्रह्म पद से न्यारा है व पद हमेशा सत है उस पद में करणियां नही है।

है भोग भारी केता न आवे, पाप न पुन्न नही दोष गावे।
सब सुख संपत मैं ते न क्रोधो, हंस नाम हंसणी महा रूप सोधो ।। १०।।

उस पद के सुखो का वर्णन नही होता। उस पद में पाप पुण्य व दोष नही है। उस पद में सुख ही सुख है। न तेरी मेरी न क्रोध है। उस पद में वहां सब ही दिव्य रूप है।

सतरूप काया सतरूप माया, सतरूप सब चीज सेजा बताया।
दुख रूप काया व्यापे नही कोई, सुख रूपकामा महा बेग होई ।। ११।।

उस पद में दिव्य काया सत है। दिव्य माया सत, सब चीज सत है। वहां दुख का नाम निशान नही है। सब तरह से सुख ही सुख का अनुभव होता है।

जो सुख चावे से सुख सारा, सन्मुख आवे ले हंस प्यारा।
सुख रूप कामा बोह बिध सारा, महा तेज लिया ले हंस प्यारा ।। १२।।

जिस सुख की चाहना होती है दिव्य रूप से वही सन्मुख रहते है। बहुत विधि से सुख ही सुख है।

त्रीलोक मांही पद नाम माया, सतलोक मांही सत पद भाया।
यां चीज माया वहां चीज अक्खी, यां चीज कच्ची वां चीज पक्की ।। १३।।

तीनों लोकों में माया का पद है। सतलोक में सत ही सत है। तीन लोको में चीज माया की याने परिवर्तन होने वाली। वहां की चीज अक्षय है यहां की चीज असत है, वहां सब सत है।

इण चीज मांही सुख दुख दोई, उण चीज मांही सरब सुख होई।
ये दोइ चीजा ब्रह्म लेण हारा, बिन चीज ब्रह्म आप सुन्न रूप प्यारा ।। १४।।

तीन लोक के पद में सुख दुख दोनो है। उस पद में सुख ही सुख है। इन दोनो पदो का अनुभव आत्म ब्रह्म करता है। इन दोनो पदो से अलग जो ब्रह्म का है व शून्य यानि निरंजण निराकार सत चेतन है।

जो हंस माया त्यागेस कोई, तो आप ही ब्रह्म पदवीस होई ।
सुख दुख रहता व्यापे न कोई, आ रीत परब्रह्म के धाम होई ।। १५।।

जो आत्मा तीन लोक की माया को त्यागकर परब्रह्म में पहुंचती है। तो वह आत्मा ब्रह्म स्वरूप कहलाती है। वहां पर रहते हुये किसी प्रकार का सुख दुख व्यापता नहीं है। यह रीत परब्रह्म पिता के देश की है।

सरब सुख को सुख सत पद मांही, क्रत रूप माया को लेस नांही।
सत रूप सत चीज सत पद जांणो, जां चीज करतब बिन पूर ठांणो ।। १६।।

उस सत पद में सब ही सुख है। असत माया का लेस मात्र भी नही है। उस पद में सब चीज सत है, वो पद सत है। उस पद की सब चीज परिपूर्ण है।

जो चीज चावे है काया विचारी, सो चीज भरपूर बिन दाम सारी।
नहीं आड अटकाव हटके न कोई, नही चीज काजे पचणो न होई ।। १७।।

उस सत पद में हंस रूपी काया की जो भी इच्छा होती है वह सब चीज बिना मूल्य के भरपूर मिलती है। वहां पर नहीं कोई रोकने वाला है। उस वस्तु के लिये किसी प्रकार की मेहनत भी नहीं करनी पड़ती है।

नही मोल आवे नही तोल देणी, ऊर में सो चावे सो सत लेणी।
लीला सरूपी वा रीत सारी, नाना प्रकारा रंग रागा भारी ।। १८।।

वहां पर किसी भी चीज का मूल्य नहीं चुकाया जाता है तथा नहीं तोल कर देणी पडती है। जिसकी भी जो इच्छा होवे वो लेवो व देवो। यह सब परमात्मा की लीला सरूपी रीत है। वहां पर कई प्रकार के सुख है।

नही सोच दूजो व्यापे न जाणे, केला करण रीत बोहो बिध आंणे।
बिन चन्द्र सूर तेज है भारी, नही रैण की लेस निदरा बिचारी ।। १९।।

वहां पर किसी प्रकार की चिन्ता फिक्र नहीं है, वहां पर हंस कई प्रकार की खुशिया मनाते है। बिना सूर्य व चन्द्रमा के भी वो देश प्रकाशवान है। वहां पर रात्रि नहीं है व निन्द का विचार भी नहीं आता है।

है तेज रूपी सबे हंस सारा, दिव्य रूप काया कोटा ऊजियारा।

रहे रूम मांही अेह तेज जांणो, इण सूर को तेज नकल न आंणो ।। २०।।

वहां पर सभी हंसो का दिव्य रूप है। रूम रूम में उजियाला रहता है। यहां के सूर्य की वहां पर नकल नहीं है।

चंद सूर तारा सबे अेक कीजे, उण हंस के रूप नकल न लीजे।
वांह सब ही हंस है जोत धारी, इण काज ऊण देश नही रेण प्यारी ।। २१।।

यहां का चन्द्रमा सूर्य एवं तारे सबको मिलाने पर जितना प्रकाश हो तो भी उस हंस के दिव्य रूप के बराबर नहीं है। वहां पर सभी हंस ज्योति स्वरूप है। इस कारण वहां पर रात्रि नहीं है।

सब हंस के शिर रहे छत्र छाया, अब देह को रूप कहूं दिष्ट आया।
छोटी सी काया है कान्ती भारी, दस गज री देह हंस ले धारी ।। २२।।

वहां पर सभी हंसो के सिर पर गेबऊ छत्र छाया रहती है। वहां की देही का रूप छोटी सी काया है परन्तु उसकी लालिमा बहुत भारी है। वहां हंस की लम्बाई वहां के दस गज की है।

से गज न्यारा अेह जाणो, दस गज को गज वो पाव ठांणो।
वहां देह अेसी महा रूप लिया, कहता न आवे गत कोट किया ।। २३।।

वहां का गज यहां के गज से न्यारा है। वहां का दस गज यहां के पाव गज के बराबर है। वहां की देही का महा रूप है। करोडो उपाय करने पर भी कहने में नहीं आता।

यहां चंद सूरज ताराज होई, मिण रूप पदम रतन नग सोई।
इण तेज को रूप ऊण देश नांही, क्या कर कहिये कहयो काहा जाई ।। २४।।

यहां चन्द सुर व तारा मणी पदम रतन जितने प्रकाश देने वाले है। इनके प्रकाश से वहां के प्रकाश की बराबरी नही होती। इसलिए उसका वर्णन कैसे किया जा सकता है।

यहां अेक अेहनाण नकल न होई, बिना ज्ञान भ्यास्या सूजे न कोई।
आ नकल है नेक इण जुग मांही, सतगुरू को ज्ञान गुरू गम जांही ।। २५।।

उस पद की यहां की चीजों से बराबरी नही होती। उस पद की प्राप्ति के बिना उस पद के आनन्द का अनुभव नही होता। सतगुरू की शरण लेने से जो सतशब्द के साथ जाकर उस पद की प्राप्ति का आनन्द का अनुभव होता है, यही नकल है।

इण तेज की नकल वहां जोत जांणो, जूं ज्ञान केवल हिरदे पिछाणो।
अेहे लोक मांही अेह नकल होई, सत लोक की नकल नही और कोई ।। २६।।

यहां जो पूर्ण परमानन्द में लय होने का अनुभव होता है वो ही तेज है। इस तरह के के: ज्ञान को हिरदे में अनुभव करो इस लोक में उसकी यही नकल है और कोई नकल सतलोक की नही है।

कहे सुखदेव सुण चित गोई, सतलोक को सुख इण रीत होई।
नही तोल, नही मोल, नही माप आवे, सतगुरू सन्मुख से हंस पावे ।। २७।।

म:फ: है कि चित लगाकर सुणो। सतलोक का सुख इस तरह है न तोल न मोल न माप है। सतगुरू की शरण लेने पर ही उस पद की प्राप्ति होती है।

<u>रेखता</u> :- सत का लोक में सत ही सत है, असत को नांव सो नाय जाणे।
सत का पेरणा सत का ओढणा, सत का सुख सो सुख मांणे।।
सत की देह अर सत का राछ सो, सत का महल अेवास होई।

सत की इन्द्रियां सत की चीज सो, सत का लेण हर देण होई ।।
माया के लोक में माया सो चीज है, ज्ञान कर देखलो सरब सारा।
दास सुखराम कह सत का लोक में, सत का सुख है अखण्ड प्यारा ।। १ ।।

सत का लोक में सब सत ही सत है, वहां असत नही है। उस पद में सत का पेरणा ओढना, सुख सभी सत है। सत का शरीर व राछ, महल, आवास, ईन्द्रिया, लेना देना, सब सत ही सत है। माया के लोक में सब चीज माया है। म:फ: है कि ज्ञान से सब अनुभव करो। सत का लोक में सब सत ही सत है। वो सत अखण्ड है।

कुण्डलिया :- मैं व्यौपारी ज्ञान का, और बिणज नहीं कोय।
जो तुम चावो मोख कूं, तो ज्ञान बिणज लो जोय।।
ज्ञान बिणज लो जोय, कसर राखो मत कांई। जो चावो सो ज्ञान, आंण बुजो मुझ भाई।।
सुखराम इस्या देवाल है, है कोई लेवण हार। अमरलोक ले जावस्युं, जामे फेर न सार ।। २ ।।

म:फ: है कि मेरे ज्ञान का व्यौपार है। अगर तुमको मोक्ष की प्राप्ति करनी है तो मेरे से ज्ञान प्राप्त करो। ज्ञान प्राप्त करने में किसी तरह की कसर मत रखो। जिस ज्ञान की तुम्हें आवश्यकता हो, मुझ से पूछो। म:फ: है कि मैं ज्ञान का देने वाला हूं, यदि मेरे बताये हुये ज्ञान को कोई धारण करने वाला हो तो मैं अमरलोक की प्राप्ति करा दूंगा। इसमें किसी तरह का फेर सार नही है।

कवित :- अमरलोक ने जाय, जको रस्तो कहूं तोही। सुणो सकल नर नार,
कसर राखुं नही कोई ।। ओ तन ओ बैराट, जिकण सुं न्यारो कवावे।
अेक बीस ब्रह्मण्ड चूर, बिरला जन जावे।। सुखराम अधर सत लोक है,
अधर जमी वां जांण। वां देखा अे अेथली, कर नर हाथ पिछाण ।। ३ ।।

अमरलोक में जाने का साधन बताता हूं। सब स्त्री पुरूष सुणो। इस ज्ञान को बताने में किसी तरह की कमी नही रखूंगा। सतलोक इस तन व पांच तत्वों के बैराट से अलग है। ईकीस ब्रह्मण्ड चूर याने पार करता है, उसको पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति होती है। उसको ही मोक्ष कहते है। इन ईकीस ब्रह्मण्ड में पारब्रह्म शीवब्रह्म चिदानन्द ब्रह्म इन तीन ब्रह्म के तेरह लोक, इस तरह सोलह तथा जीव ब्रह्म व जीव ब्रह्म के तीन लोक ये चार, एक केवल ब्रह्म इस तरह ये इकीस है। म:फ: है कि सत लोक अधर है, वहां की जमीन भी अधर है। उसे ही अधर जमी अधर सतलोक कहा है। उसका अनुभव जैसे अंधेरे में किसी का हाथ पकड़ने पर महसूस होता है।

कुण्डलिया :- कलयुग वारो मोख को, भरत खंड के मांय। भजन करे सो जीव रे,
वांरे उपजे आय।। वांरे उपजे आय, ज्ञान केवल घट आवे।
अर दरसण कर कर हंस, मोख क्रोडा लग जावे। सुखराम चौबीस प्रगटे,
चार जुगा के मांय।। कलजुग वारो मोख को, भरत खण्ड के मांय ।। ४ ।।

इस भरत खण्ड में कलयुग में मोक्ष में जाने का समय है। जो मनुष्य सतगुरू विधि से भजन करते है उनके सतशब्द ने:अंच्छर प्रगट होता है इस सतशब्द से ही के: पद का अनुभव कर करके क्रोडो ही लाखो ही जाते है। यही दरशण करके जाना है। म:फ: है कि चौबीस तीर्थंकर चार युगों में प्रकट हुये है। भरत खण्ड में कलयुग में मोक्ष में जाने का समय है।

भगवत बीसी नित नवी, बिदे खेतर माह। अेक भवतारी सन्त जन, जन्म धरे वां आय।
जन्म धरे वां आय, मोक्ष वासुं हंस जावे। अर बिन दरशण भगवंत, ज्ञान घट में नही आवे।।
सुखराम सदाई वा समो, हंस मोक्ष नित जाय। भगवत बीसी नित नवी, बिदे खेतर मांय ।।५।।

भगवत में मिलने का मार्ग भारत वर्ष में चालू रहता है। भवसागर से तारने वाले परमात्मा के द्वारा भेजे जाते है। उनसे ही हंस मोक्ष में जाता है। उनके बिना यह सत प्रगट नहीं होता है। उनके जीते जी हंस मोक्ष में जाते है।

ओ तो रस्तो बह रयो, निमक ढील नही खाय। समो आया सुखराम के, क्रोडा ही हंस जाय।।
क्रोडा ही हंस जाय, संत सामा चल आवे। सत जल करावे स्नान, अमर कपडा बिण जावे।।
अमर काया धाम रे, लेवे संत बधाय। ओ तो रस्तो बह रयो, निमक ढील नही खाय ।।६।।

अब वर्तमान में वो ही पदवी मेरे ग्रंथ को सतगुरू रूपी पदवी मिल गयी है। इसलिये मेरी देही नहीं होने पर भी जीव मोक्ष में जायेंगे। जो हंस इस विधि से भक्ति करते है और जब भक्ति पूर्ण होने पर केवल पद में बिराजमान संत उनकी अगवाणी करते है। उस हंस को सतजल से स्नान कराते है। अमर कपडे पहनाते है। वहां की काया एवं धाम अमर है।

अमर मंदिर मालिया, अमर झिरोका मांय, अमर लुंबालुंब ढोलिया,
तामें कसर न काय।। तामें कसर न काय, अमर संत बिराजे सारा।
अटल अमर वो धाम, सुख को वार न पारा।। सुखराम अथंग अमर सुख है,
है ज्यूं कयो न जाय। अमर मंदिर मालिया, अमर झिरोका मांय ।।७।।

उस पद में अमर मन्दिर, अमर ही मालिया, अमर झरोखा है। लडिया युक्त अमर ढोलिया है। इसमें किसी प्रकार की कसर नहीं है। सभी संत अमर है। वो धाम भी अमर है। एवं सुखों का वार पार नहीं है। वहां के अमर सुखो का मैं वर्णन नहीं कर सकता।

अखण्ड सुख आनन्द लोक में, सब ही हाजर होय। अमरलोक का संत रे,
केल करे कहूं तोय।। केल करे कहूं तोय, आणंद ऊछाव सदाई।
धिन धिन कह महाराज, कमी कसर नही कांई।। दिव्य उजाला अंग में,
बडा पुरूष कहूं तोय। अखण्ड सुख आणंद लोक में, सब ही हाजर होय ।।८।।

आनन्द पद में आनन्द में लय होना ही अखण्ड सुख व सब ही हाजिर होना है। के: पद की प्राप्ति करने वाले सन्त ही आनन्द पद में लय होते है, यही केल करना व हमेशा आणंद ऊछाव है। उनको सब ही धिन धिन कहते है। यही कमी कसर नही रहना है। के: पद दिव्य प्रकाश है अखण्ड आनन्द है यही सब हाजिर होना है।

दिव्य उजाला हो रया, दिव्य जमी वां जोय। सबे सरिसा संत है,
दिव्य रूप कहूं तोय ।। दिव्य रूप कहूं तोय, दिव्य चीजा सब सारी।
दिव्य महल आवास, दिव्य फूली फूलवारी।। सुखराम दिव्य सब देश वो,
ज्यां रेण दिवस नही होय। दिव्य उजाला हो रया, दिव्य जमी वां जोय ।।९।।

के:पद दिव्य है, जमी दिव्य है। सब ही सन्तो का रूप दिव्य है। सब चीजों के दृष्टान्त यहां के देकर समझा रहे है कि सब देश दिव्य है। वहां रात दिन नही होता। दिव्य प्रकाश दिव्य पद है। दिव्य जमीन है।

बावन गादी ऊपरे, पुरूष फिरे कहूं अेक। ओ सुख को सागर प्रेसतो, आवे पूर्व लेख।।
आवे पूर्व लेख, जना कूं ले ले जावे। बडे पुरूष तप तेज, बाट अटकण नहीं पावे।।
सुखराम काट फंद जीव का, तारे हंस अनेक। बावन गादी ऊपरे, पुरूष फिरे कहूं अेक ।।१०।।

बावन अक्षरो के ऊपर जो रकार है वो बावन के साथ में भी है और सभी अक्षरो के ऊपर नीचे लगता है। इन दोनो अक्षरों का सतगुरू विधि से भजन करने से कंठ कंवल पर ने: अंच्छर प्रगट होता है, उसको प्रेसता कहा है। वो पूर्व जन्म के पुण्य से प्रकट होता है, वो सुख का सागर है। जो जन भक्ति करते है उनको परमपद की प्राप्ति करा देता है। यही जनो को ले ले जाना है, उसका तप तेज बडा है। उसको रास्ते में कोई नही अटकाता। वो जीवों को करणियों से अलग करके परमपद की प्राप्ति कराके जीवों का फंद काटना व तारना है।

नो क्रोड जन पोचिया, अेक चौइसी लार। आगे अनन्ताई पोचिया, अनन्ताई पोचण हार।।
अनन्ताई पोचण हार, भगत को प्राक्रम भारी। जो सिंवरे निज नाम, मोक्ष को हो अधिकारी।।
सुखराम परमपद नांव है, भजजो बारम्बार। नो क्रोड जन पोचिया, अेक चौइसी लार ।।११।।

चौबीस तीर्थंकरो के समय में उनके ज्ञान द्वारा नो क्रोड जनो ने के: पद की प्राप्ति की है। इस सतशब्द ने: अंच्छर के ज्ञान द्वारा आगे भी अनन्तो ही पहुंचे है। अब भी अनन्तों ही पहुंचेंगे। इस भक्ति का प्राक्रम बहुत भारी है, जो इस निज नाम का शिवरण करते है। वो मोक्ष के अधिकारी याने प्राप्त करने वाले हो जाते है। म:फ: है कि परम पद की प्राप्ति कराने वाला निज नाम है। उसका निरन्तर भजन करना चाहिये।

आद भज्यो जन रिखबदेव, अन्त भज्यो महावीर। आठ पोहोर शिवरण किया,
धर चित ध्यान सधीर।। धर चित ध्यान सधीर, इकन्तर आसण किन्हा।
छाड दिया सब भरम, जगत सुं चारज लिया।। केवल भज केवल हुआ,
चुगे हंस तहां हीर। आद भज्यो जन रिखबदेव, अन्त भज्यो महावीर ।। १२।।

आदि याने पहले तीर्थंकरो में रिखबदेव अन्त में महावीर स्वामी इस साधन द्वारा रात दिन भजन सिमरण कर ध्यान कर एकान्त में आसण कर, जगत के भरमों करमों से अलग होकर, केवल की भक्ति करके केवल में लय हो गये।

अब ममता त्रिपत भई, सतगुरू शरणे आय। बोहोत आनन्द सुख ऊपज्या,
सांसो गयो बिलाय।। सांसो गयो बिलाय, दुख को लेश न कोई।
सब दिन सुख में जाय, अबे नही मुडे मुडाई।। सुखराम आंण सन्मुख भई,
चरणा लागी जाय। अब ममता त्रिपत भई, सतगुरू शरणे आय ।। १३।।

सदगुरू का केवल ज्ञान धारण करने से आत्मा की ममता धाप गयी। अब उसको बहुत आनन्द आ रहा है क्यों कि उसके जन्मने मरने का एवं दुखो का तांता मिट गया। अब हमेशा सुख में रहती है एवं इस ज्ञान व भक्ति को छोडती नहीं है। इस तरह परमात्मा के सन्मुख हो गयी। यही चरणा लगना है।

कवित : मरतलोक का भोग, सरब सुख लील विलासा। करे ऊदम नर नार,
शकल पूरे मन आशा।। देवलोक का भोग, देव ऐसी विद पावे।
मन उपज्या विश्वास, सरब हाजिर होय आवे।। आई रीत बैराट, सरब पुरीयां में होई।

अमरलोक का भोग, सरब हाजर कहूं तोई ।। सुखराम परम सुण धाम का,
अे सुख कहा कहूं बखाण। तीन लोक में रीत है, कही नकल सी जांण ।। १४।।

मरतलोक में उद्यम करने से ही सब तरह के सुख मिलते है। देवलोक में देवताओं की इच्छा से ही याने मन में जो इच्छा होती है वो सब सुख हाजिर हो जाते है। ऐसी ही रीति सब देवताओं की पुरियो में है। अमरलोक के सुख अपने आप हाजिर होते है। म:फ: है कि पूरण पद आनन्द पद का सुख कहने में नहीं आता है। तीन लोको के सुखा का वर्णन किया, यही नकल है।

कुण्डलिया : ब्रह्म सदा ही अमर है, जाका कहा बखाण। माया अमर धाम है,
सो नर इधकी जांण।। सो नर इधकी जांण, ब्रह्म तो डिगे न कोई।
जो माया तज जाय, अरथ बिन निकमो होई।। सुखराम हद बेहद लग,
जन्म मरण गत जांण। ब्रह्म सदा ही अमर है, जाका कहा बखाण ।। १५।।

आत्मा सदा ही अमर है उसका क्या वर्णन किया जाय। इस आत्मा के लिये मनुष्य शरीर ही सर्व श्रेष्ठ है, क्योंकि इसी शरीर से मोक्ष में जाते है। आत्मा तो आदि अनादि से ब्रह्म थी, ब्रह्म है और ब्रह्म ही रहेगी। जैसे जगत में कोई माया को छोडता है तो उसका काम नहीं चलता है। म.फ. है कि हद बेहद तक की पहुंच से जन्म मरण नहीं मिटता।

ओ तो रस्तो बह रयो, निमक ढील नही खाय।
समो आया सुखराम के, क्रोडो ही हंस जाय ।। १६।।

अब वर्तमान में मेरे ग्रंथ को सदगुरू रूपी पदवी मिलने से इस ज्ञान के द्वारा ही हंसवृति आत्माओं के सत की जागृति हो रही है। इसलिये वर्तमान में मोक्ष का मार्ग संतो की देही नहीं होते हुये भी चालू है। जो भी इस विधि से भक्ति धारण करेंगे एवं सतगुरू रूपी ग्रंथ को नमन करेंगे तो करोड़ो ही हंस अमर लोक में जायेंगे।

साखी- सत बैराग अमी फल ईमरत, पीवत ही गुण किया।
यूं निज नांव संत जन जाण्यो, जाय चौथा पद लिया।

जिसने भी केवल ज्ञान धारण किया उसके अमर फल का एवं अमृत पीने का गुण प्रगट हो जाता है। इस तरह जो संत वृति आत्मा ने सत को प्राप्त किया वो चौथे पद में पहुंचती है।

।। इति अमरलोक महिमा ग्रन्थ सम्पूर्ण।।

卐 अलौकिक ग्रन्थ 卐

शिष बुजे गुरूदेवजी, हंस जाय किम मोख। केती सुनां बीच में, कौन कौन सा लोक ।। १।।

शिष गुरूदेव से प्रार्थना करता है कि हंस को मोक्ष की प्राप्ति कैसे होती है। बीच में कितनी तो सुन्ने आती है व कौन कौन से लोक आते है।

केई कहे सुन्न अेक है, केई कहत अनेक। सो मोय बरण सुणावज्यो, तुम आया सब देख ।। २।।

कई तो एक सुन्न बताते है और कोई अनेक। आपने सब देखा है। कृपा कर वर्णन करिये।

चौपाई : सांची लगन जिणा घट लागे, गुरू गम बिन सभी भरम न भागे।
लोक लोक निरणा सब जांणे, सरब सुनां का भेद पिछाणे ।। ३।।

म:फ: है कि सच्ची लगन जिसके घट में लगती है। गुरू के ज्ञान के बिना सभी भरम नही जाते है। सब लोको का अनुभव करते हुये सब सुन्नो के भेद को जाने।

गुरू गम जिसी लोक जन जावे, मोख पदारथ हाथ न आवे।
मोख पद का सतगुरू दाता, लोक लोक का संत विधाता ।। ४।।

गुरू के द्वारा जैसा ज्ञान मिलता है। जन उसी लोको को जाते है। सतगुरू की शरण बिना मोक्ष की प्राप्ति नही होती। मोक्ष की प्राप्ति कराने वाले सदगुरू है, व अन्य लोको की प्राप्ति कराने वाले संत है।

अेक अलोकिक ग्रन्थ कहूं तोई, लोक लोक न्यारा सब जोही।
लोक लोक का सुख है न्यारा, सो मैं वरण सुणावुं सारा ।। ५।।

म:फ: है कि एक अलौकिक ग्रन्थ का वर्णन करता हूं। सब लोको का भी अलग अलग वर्णन करता हूं। सब लोको का अलग अलग सुख है। मैं उन सबका वर्णन करता हूं।

कोटक सुनां चूर कोई जावे, से हंसा अमरापुर पावे।
कोट सुनां का विवरा दाखूं, लोक लोक का सुख सब भाखूं ।। ६।।

करोडो सुन्नो को पार करने वाले हंस ही अमरलोक की प्राप्ति करते है। करोडो सुन्नो का वर्णन करता हूं। सब लोको के सुख का अलग अलग वर्णन करता हूं।

केवल भक्त ऊदे जब होई, प्रगटे नांव नखचक सोई।
केवल भक्त करे जन सूरा, शिर पर धारे सतगुरू पूरा ।। ७।।

केवल भक्त याने सतगुरू का ज्ञान धारण करे, जब सतशब्द ने:अंच्छर जागृत होता है, उस निज नांव का सारे शरीर में अनुभव होने लगता है। शूरवीरता से ही के: की भक्ति होती है।

सतगुरू की सता नाम घट जागे, श्रवण सुण राम धुन लागे।
इमरत धारा सुगन्धी शीरा, दिव्य नैण खुल्या दोय हीरा ।। ८।।

सतगुरू की सता इसे कहते है जिससे शरीर में नाम की जागृति हो जाती है, सतगुरू के ज्ञान को कानों द्वारा सुनकर, रसना से सतगुरू विधि से भजन करने से जो ध्वनि होती है व भजन करने से जो आनन्द आता है, वो ही इमरत की धारा सुगन्ध की सीर है। मन व सुरत लगाकर भजन करना, यही दिव्य दो नैण खुलना है।

कंठ सुन्न बीच हरिजन झूले, सूरज च्यार कली चहूं फूले।
रसणा ऊलट कंवल में देखी, दिसे दोय मुख तो अेकी ।। ९।।

कंठ स्थान पर शब्द का अनुभव होना, यही हरिजन मगन है। कंठ स्थान पर चार पांख के कंवल पर शब्द का प्रकाश को ही सूरज माना है। सांस उसांस में भजन करना ही दो दिखना व मुंह अेक है।

हिरदे सुन हरिजन वासा, कलियां सूर आठ प्रकाशा।
प्रेम हिलोला आत्म जागी, नव तत्त देह रटे लिव लागी ।। १०।।

जब शब्द हृदय सुन्न पर आता है, यहां आठ पांख का कमल है। आठ पांख पर शब्द का प्रकाश होना ही सूरज का प्रकाश है। भजन करने से प्रेम आना ही प्रेम हिलोला है। सूरत याने आत्म चेतन के आधार से शब्द का अनुभव होना ही आत्मा का जागना है। पांच प्राणो मन बुद्धि

चित अहंकार के साथ भजन होना ही नव तत देह रटे लीव लागी है।

देह में देह सुरत में सुरत, हिरदा मांही मंडी अेक मूरत।
मध्य सुन्न बिच भलक्या नूरा, सोलेह कली दिशे शशि सूरा ।। ११।।

शब्द का शरीर में अनुभव होना ही देह में देह, आत्मचेतन पर सूरत लगाकर भजन करना ही सूरत में सूरत, हदय में शब्द का अनुभव होना ही हिरदा में मंडी अेक मूरत है, मध्य सुन्न पर शब्द का अनुभव होना ही भलक्या नूरा है। यहां सोलह पांख का कमल है यहां शब्द का अनुभव होना ही दिशे शशि सूरा है।

नाभ सुन्न पर संत पधारे, कली बतीस तपे रवी सारे।
सुखमण बेग घोर घन लागी, देह बैराट बीण ज्यूं बागी ।। १२।।

नाभी कमल पर शब्द का आना ही कली बतीस तपे रवी सारे है। सांस उसांस में भजन होकर जो सतशब्द की आवाज आ रही है मानो बादल गरज रहे हो। सो सुखमण घोर है। सारे शरीर में शब्द का अनुभव होना ही देह बैराट बीण ज्यूं बागी है।

झरणा झरे पीवे बन सारा, ब्रह्मण्ड गूंजे शब्द गुंजारा।
गुदा सुन्न पर संत जन पूगा, चौसट कली सूर शशी ऊगा ।। १३।।

जब गुदा याने गणेश स्थान पर शब्द आता है तो वहां चौसठ पांख का कमल है। उस कमल पर शब्द का अनुभव होना ही शशी सूर ऊगा है। श्वांस उश्वांस में भजन होना ही जरणा झरना, पीवे बन सारा व शब्द की गुंजार ब्रह्मण्ड तक होना ही ब्रह्मण्ड में गुंजार होना है।

सात लोक सुन्न सपत पियांला, सतगुरू आगे शब्द उजाला।
साथे सरूप अंदेशो नांही, जहां तहां आवाज गेब गुरू मांही ।। १४।।

तल, वितल, अतल, सुतल, महातल, तलातल, रसातल ये सात लोक पाताल के है। इन लोको को पारकर आगे जो शब्द अनुभव होता है उसको ही आगे उजाला कहा है। साथ में शब्द जो सतगुरू का सरूप है उसमें किसी को शंका नही है। आगे से आगे शब्द का अनुभव होना ही गेबाऊ गुरू का साथ होना है।

ताला ताख शब्द ही खोले, ररंकार आगू धुन बोले।
अला पिंगला सुखमण धारा, तीनूं बहे संत की लारा ।। १५।।

सब स्थानो पर शब्द का अनुभव होना ही ताला ताख खोलना व ररंकार धुन का बोलना है। अला पिंगला व सुखमणा सतशब्द के साथ चलती है।

सातों सुन्न लोक तज दीना, पिछम दिशा का रस्ता लीना।
पिछम सुन्न घर संत जन झूंझे, फूल्या कंवल इसी बिद सूजे ।। १६।।

पाताल के सातो लोको को पारकर शब्द का बंकनाल में उलटना ही पिछम दिशा का रास्ता लेना है। भजन द्वारा शब्द का बंकनाल में अनुभव होना ही पिछम सुन्न पर संत का जूझना है। आगे कंवल इस विधि से सूजते है।

आठ छतीस कली ज्यां भ्यासे, पांख पांख पर सूर प्रकाशे।
सुन्न इकीस चूर जन आया, मेर सुन्न घर नोपत लाया ।। १७।।

जहां चवालीस कली के कंवल पर शब्द का अनुभव होता है। यही पांख पांख पर शब्द का

प्रकाश होता है। ईक्कीस सुन्न याने ईक्कीस गांठे है। इन्हे स्वर्ग व देवताओं का स्थान भी कहा है। इनको पार कर शब्द जब मेरूदण्ड पर आता है, यही मेर सुन्न घर नोपत लाना है।

ममंकार माया यहां त्यागी, ररंकार आगे धुन लागी।
ईक डंक्यो बाजे इक घाई, लोक लोक में बटे बधाई ।। १८।।

ममंकार याने मेरूदण्ड तक माया का देश है, इससे आगे ररंकार याने ब्रह्म का देश त्रिकुटी से चालु हो जाता है, वहां सतशब्द की धुन आठ पोहर गरजती है वो ही इक डंक्यो बजना है। लोक लोक में शब्द का अनुभव होना ही व आनन्द आना ही बधाई बटना है।

सब देवत सामा चल आवे, जै जै बांणी कलश बधावे।
ज्यूं दुनियां राजा कूं माने, यूं देवत संत जन को जांणे ।। १९।।

मेरूदण्ड के आस पास सब देवताओं की पुरिया हैं। जब सतशब्द के साथ आत्मा इनके लोको में होकर निकलती है तब सब देवता इनकी जै जै कार करते है। जैसे दुनियां राजा को मानती है वैसे देवता संतो को जानते है।

ईन्दर लोक ब्रह्म लोकज आवे, विष्णु लोक में विष्णु बधावे।
तप लोक सत लोकज मांही, जन लोक जे जे होई जाई ।। २०।।

ईन्द्र लोक, ब्रह्म लोक, विष्णु लोक, तपलोक, सतलोक, जनलोक में इन सब लोकों में जय जयकार होती है।

मेहर लोक ये सातों भवना, लोकी लोक तेज तप दूना।
दूने भाग तेज तप सारा, शेष लाख कहा क्रोड विचारा ।। २१।।

सातो लोको की संतो के ऊपर मेहर होती है। इन लोको में एक से एक में दूणा से दूणा तप तेज व सुख है।

सूरज च्यार सूं गिणती कीजे, लोक लोक दूणा गिण लीजे।
शब्द तेज सब ही सूं न्यारा, रवी ऊगा दीपक ज्यूं सारा ।। २२।।

कंठ पर चार पांख है याने चार सूर्य के प्रकाश जितना सतशब्द का तेज है, उससे आगे दूणा से दूणा समझ लो। शब्द का तेज सबसे न्यारा है। जैसे सूरज के उगने पर दीपक की रोशनी मंद पड जाती है, ऐसे ही अग्यान रूपी अंधकार मिट कर ग्यान रूपी सूर्य का प्रकाश हो जाता है।

सन्त तेज बरणीयो नही जाई, शब्द तेज जन मांही समाई।
ज्यूं सूरज को तपसी होई, जांकी नजर न झेले कोई ।। २३।।

सतशब्द का तेज जन में समाता है। तब उन जनो का तेज का वर्णन नही किया जा सकता। जैसे सूर्य के तपसी की नजर झेल नही सकते, इसी प्रकार संतो का तेज नेत्रो में रहता है।

दिव्य नैण खुल्या घट मांही, दिन दिन तेज बदतो जाई।
दिव्य तेज नैण बिच भारी, और तेज की कौन चिकारी ।। २४।।

सुरत रूपी नेत्रो से शब्द ब्रह्म का आनन्द हरिजन लेते है। तब आत्म चेतन का तेज बढता जाता है और तेज इसके सामने ठहरता नही है।

नैण पुतली मांय समावे, धर आसमान दिष्ट में आवे।
यूं जन कूं सारो जग सूजे, तीन लोक चवदह भवन बूजे ।। २५।।

जब हरिजन में सतशब्द का तेज बढता है तब नेत्रो की दृष्टि अंतर में खुल जाती है, जिससे तीन लोक चौदह भवन पिंड खंड ब्रह्मण्ड सूजते है। तीन लोक चवदेह भवन में संतो की महिमा होती है।

जब त्रिवेणी सुन्न सन्त बिराजे, इक लख सूर तपे ऊण छाजे।
मंगल गावे बजे बोहो बाजा, सब पुर दौडे दरशन काजा ।। २६ ।।

जब सतशब्द त्रिकुटी सुन्न पर आता है तब हरिजन अेक लाख सूर्य के समान सत शब्द का आनन्द लेते है। तब सब ही देवताओं के लोको में मंगल व बाजे बजते है व संतो के ग्यान व शब्द की महिमा करते है।

हीरा जोत जिगामिग लागी, ईमरत बूंद जोत रवि जागी।
अला पिंगला पांव पखोले, सुखमण आरती आंण ऊतारे ।। २७ ।।

शब्द का निरन्तर अनुभव होकर आनन्द आना ही ईमरत बूंद जोत रवी जागी है। अला पिंगला सुखमणा में ध्यान भजन होना ही पांव पखोलना व आरती उतारना है।

ज्यूं सिख साख सतगुरू की महिमा, यूं पूजे त्रृगुटी की धामा ।
तीन लोक का अे सुख त्यागे, तेरह लोक त्रृगुटी आगे ।। २८ ।।

जैसे शिष्यो की मंडली में सतगुरू की महिमा है ऐसे सन्त त्रृगुटी में पहूंचते है तब उनकी पूजा व महिमा होती है। तीन लोक चवदह भवनो से आगे बढना ही इनका सुख त्यागना है। तीन ब्रह्म के तेरह लोक त्रृगुटी से आगे है।

अब तेरह लोक बरण कहूं सारा, सुन्न सुन्न बीच धाम है न्यारा ।
त्रिगुटी में पांचु सुख आवे, मैमा ही देवत सुख आवे ।। २९ ।।

अब तेरह लोको का सारा वर्णन करता हूं। जितने धाम है उतनी ही सुन्न है। जब शब्द त्रृगुटी में आता है तो जो सुख पांचो इन्द्रियो को अनुभव होता है वैसा ही सुख वहां अनुभव होता है। देवताओं को जो सुख है वैसे ही सुख का अनुभव होता है उसको मैमा ही देवत सुख आवे कहा है।

प्रगत लोक प्रेम घट आंणे, जोत लोक ज्योति सुख मांणे।
अजर लोक अलख बिराजे, आणंद लोक में नादज गाजे ।। ३० ।।

प्रगती के लोक में प्रेम घट आता है, जोत लोक में ज्योति का अनुभव होता है जो लखने में नही आता है। उसको अजरलोक कहते है। आणंदलोक में शब्द गरजता है।

बजरलोक में ब्रह्म ही पाया, चेतन स्वाद सबी वहां आया।
ईखर लोक समाध लगाई, अनहद ताख खोल जन जाई ।। ३१ ।।

बजरलोक में ब्रह्म का पद है जो आत्म चेतन को सब अनुभव होता है, वो ब्रह्म लोक है। ईखर लोक में समाधी लगती है। त्रिगुटी में जो बिना किये शब्द की ध्वनि हो रही है उसका अनुभव करके आगे बढना ही अनहद ताख खोल जन जाई है।

अेक निरंजण ब्रह्म लोक निराकारी, तेज ही तेज तपे बोहो भारी।
कोटक सूर उदे प्रकाशा, नो तत देह भई वहां नासा ।। ३२ ।।

अेक निरंजण निराकार ब्रह्म का पद है इसको ही निरंजण निराकार लोक कहा है। शब्द का अनुभव होना ही तेज ही तेज तपे बोहो भारी है। उसके प्रकाश को महाराज ने करोडो सूर्य की उपमा दी है। नो तत देह भई वहां नासा याने पांच प्राण व मन बुद्धि चित अहंकार से अलग होना

ही नो तत देह का नाश होना है।

लिंग शरीर गले जीण जागा, सूरत रूप चल्या जन आगा।
अब शीव लोक में आ बिध जाणी, ज्यूं सायर में बूंद समाणी।। ३३।।

म:फ: है कि जिस जगह कारण शरीर से अलग होते है वो ही लिंग शरीर गले जिण जागा है। अब सूरत याने आत्म चेतन को शब्द का अनुभव होना ही सूरत रूप चल्या जन आगा है। अब शीव लोक में ऐसी विधि है जैसे बिन्दू सिन्धु में समाती है।

जीव शीव अेको हो जावे, नींद सुसोपती जूं सुख आवे।
साहिब अंछा खेल पसारे, जन्म धरे ज्यां दुख सुख लारे ।। ३४।।

जीव शीव यहां एक हो जाता है याने ब्रह्म हो जाता है। उस जगह सुषोप्ति अवस्था में नींद का सुख आता है। वैसा ही सुख का अनुभव होता है। पारब्रह्म से करता पद की साहिब की इच्छा याने सृष्टि की उत्पति होती है। जन्म धारण करते ही सुख दुख उनके साथ हो जाते है।

ज्यूं तरूबीज मिल्यो धर मांही, बिरखा समै उग सब जाई।
अब महा सुन्न घर जायर पूगा, कोटक कली कोट रवि ऊगा ।। ३५।।

जैसे वृक्ष का बीज धरती में मिल जाता है बरसात होने पर वापिस उग जाता है। आगे महासुन्न जो पारब्रह्म परमात्मा का पद जो असत माया का पद है यहां अनन्त पांख का कंवल का अनुभव होना करोडो सूर्य के प्रकाश की उपमा दी है।

ईमरत कुंड पीवे जल नहावे, दिव्य रूप देही बण जावे।
सुरत रूप तजी यहां काया, दिव्य रूप जन होय सिधाया ।। ३६।।

उस पद में याने के:पद में सतशब्द का अखण्ड अनुभव का दिव्य रूप से आनन्द आना ही ईमरत कुण्ड में न्हाना व पीना है व देही का दिव्य रूप बनना है। यहां सुरत का शब्द में समाना ही सुरत रूप तजी यही काया है यहां दिव्य रूप हो जाता है।

<u>दोहा</u> : ईमरत बुंदा कण जड़े, बरसे अमोलक हीर।
हंस बैठा सुखराम कै, सुन्न सागर की तीर ।। ३७।।

शब्द का बिना किये अखण्ड अनुभव होना व उसका आनन्द आना ही अमोलक हीर बरसना है। आत्मा के निरंजण निराकार पद में शब्द का अनुभव होना ही सुन्न सागर की तीर पर बैठना है।

सुन्न सागर आगे बसे, पारब्रह्म को लोक।
वहां लांग्या सुखराम के, हंस पहुंता मोख ।। ३८।।

पारब्रह्म का लोक जो असत माया का आधार है याने अहंकार इच्छा शक्ति का आधार है इस पद को लांघने पर के:पद को पार करके ही आनन्द ब्रह्म में जाता है यही आत्म चेतन का मोक्ष में मिलना है।

जहां जींग शब्द धुन हो रही है, झिलमिल जोत अपार।
अब हंसा सुखराम कहे, पहुंता दशवे द्वार ।। ३९।।

इस केवल के पद में शब्द की ध्वनि जो अधर हो रही है। वो गहरी याने ऊंडी आवाज आती है उसको जींग कहा है व उस शब्द को झिलमिल जोत अपार की ऊपाधि दी है। म:फ: है कि आत्म चेतन निरंजण निराकार पद से उसका अनुभव करना ही दशवे द्वार पर जाना है।

चौपाई : दशवे द्वार समाधि होई, मुख सांसा सुमरण नही कोई।
सहजा सुमरण जिण घर आया, रूम रूम रसणा लिव लाया ।। ४०।।

दसवे द्वार की समाधि को सता समाधि कहते हैं, इसमें वाणी से स्वांसा के आधार से सिमरण नहीं होता, सहजा सुमरण याने बिना किये होता है। रोम रोम में शब्द का अनुभव होना ही रोम रोम रसना लिव लाया है।

सतसरूप साहब वा कहावे, सरब लोक जाको जस गावे।
वे सिरजणहार शकल का भाई, ज्यां सुं आ अंछया चल आयी ।। ४१।।

उस पद को सत सरूप व सत साहिब कहते है सरब लोक जिसका जस गाते है सारी सृष्टि की उत्पति आत्म तत्व की व पांच तत्वों का आधार भी वो ही पद है।

ऊण अंछया का शकल पसारा, तीन लोक चवदा भवन सारा।
जन सुखराम समादि पूगा, अनन्ताई दीपक घट में ऊगा ।। ४२।।

तीन लोक चवदा भवन का सारा पसारा उसी परब्रह्म परमात्मा का है। म:फ: है कि मैं भक्ति करके समाधि देश में पहुंचा तब मेरे रोम रोम में प्रकाश हो गया।

सब घट मांही शब्द उजाला, जुरा मरण जित्ये जमझाला।
सतगुरू पदवी जिणा कूं छाजे, दशवें द्वार शब्द धुन गाजे ।। ४३।।

जिनको परब्रह्म परमात्मा ने सदगुरू पदवी दी है उनके ज्ञान के द्वारा जो हंस वृति आत्मा भक्ति करती है उन सब के घटो में शब्द ब्रह्म का प्रकाश होता है तथा दशवें द्वार पर शब्द की ध्वनि गरजती है, जिससे उनकी जन्म मरण की ज्वाला मिट जाती है।

वे जन मिलता ही जीव जागे, भरम करम मन का सब भागे।
वे जन चाल जीणा घर आवे, सुता हंसा शब्द जगावे ।। ४४।।

ऐसे ओधाधारी सदगुरू के मिलते ही जो जीव उनके बताये माफिक ज्ञान धारण करते है तब उनके मन के भरम करम मिट जाते है। ऐसे सदगुरू जहां पर आते हैं उनको ज्ञान के द्वारा चेतन करते है एवं विधि बताकर सतशब्द की जागृति करा देते हैं।

जे हंसा गुरू शरणे जावे, सतगुरू कृपा मोख पद पावे ।
यूं अे सुन्ना चूर कोई जावे , से हंसा अमरापुर पावे ।। ४५।।

जो हंस सतगुरू की शरण लेकर सतगुरू की कृपा से मोक्ष पद की प्राप्ति करते है, ऊपर बताये मुजब सुन्नो को पारकर जो हंस जाता है। उस हंस को अमरलोक की प्राप्ति होती है।

सुन्न बीच सुन्ना बोत है भाई, मैं बिरली सी भाख सुणाई।
सरब लोक जे जे करे बंदे विष्णु महेश, जब पहुंता सुखराम कह संत समाधि देश ।। ४६।।

म:फ: है कि सुन्नो से सुन्ने बहुत है। मैने तो प्रमुख सुन्नो का वर्णन किया है सरब लोक उनकी जय जयकार करते है, विष्णु व महादेव भी वंदे याने पुत्र को धीन धीन करते है जब केवली सन्त समाधि देश पहुंचते है।

दोहा : सरब लोक सुन्ना कयो, कयो शब्द को भेव।।
अब अमरलोक को सुख कहो, वो कैसा गुरूदेव ।। ४७।।

आपने सब लोको की सुन्ने कही है व शब्द का भेद कहा है, शिष्य प्रार्थना करता है कि अब

सतगुरूदेव अमरलोक के सुखो का वर्णन करिये वो कैसा है।

अमरलोक तो थिर सदा, नही आवे नही जाय।
किण सारे हंस पूंचसी, मुख शिवरण थक जाय ।।४८।।

शिष कह रहा है कि अमरलोक तो सदा थिर है न आता है न जाता है किसके आधार से हंस पहुंचता है क्यों कि मुख का सिमरण तो पहुंचता नही है।

जन निपजे सुखराम केहे, मरत लोक के मांय।
बावन गादी प्रेसता, हंस ले ले वहां जाय ।।४९।।

म:फ: है कि अेसे केवली भगवन्तो का जन्म मृत्यु लोक में हंसो को तारने के लिये होता है, बावन अक्षरो में रकार मकार का सांस उसांस में रटणा कराकर सत शब्द के साथ मोक्ष ले जाते है।

चौपाई : अमर प्रेसता बावन गादी, अमरलोक में अमरापुर सादी।
कोई केवल ज्ञानी सन्त कहावे, ज्यारो अंत समयो ओ आवे ।।५०।।

रकार मकार को सांस उसांस में रटणे से अमर प्रेसता याने सतशब्द आता है और हंसो को अमर लोक ले जाता है। ओधाधारी सदगुरू के संग जो आत्मा भक्ति करती है। तो उनके जन्मने मरने का अंत आ जाता है।

दशवों द्वार खोल जन जाई, अमरलोक में बटे बधाई।
अमर प्रेषतो सन्त पठावे, अमर बिवाण बैठ जन जावे ।।५१।।

वे भक्ति करने वाली आत्मा दशवे द्वार को खोलकर आ:पद की प्राप्ति करती है। तब अमर लोक में बधाई बटती है कि आज मृत्युलोक से कोई संत पधार रहे है। यह अमर प्रेषता ओधाधारी सदगुरू के द्वारा आता है तब हंस वृति आत्मा उसके साथ अमरलोक जाती है। यही बिवाण में बैठना है।

उण बेवाण हेटे जन आसी, पांचू ज्ञान गैब का पासी।
उण बिवाण में ओ है गुण भाया, ज्यूं हुमाव पंछी की छाया ।।५२।।

भक्ति करने वाली आत्मा के दसवें द्वारा पर शब्द आ जाता है तब उसके पांचू ज्ञान गेबऊ प्राप्त हो जाते हैं। जैसे जगत में हुमाव पंछी की छाया में जो मनुष्य आ जाता है तो वह उसी शरीर से राजा बनता है। इसी तरह जो आत्मा सतशब्द रूपी बिवाण की छाया में आती है तो उसे इसी शरीर से मोक्ष प्राप्त होता है।

भगवत समो मोख इधकारी, केवल नाम रटे नर नारी।
उ तो मारग सरूं सदाई, क्रोडा हंस समे उण जाही ।।५३।।

सतगुरू सता की जागृति कराने वाले सदगुरू संसार में रहते है जो नर नारी उनके संग से राम रटते है वो मोक्ष में जाने के अधिकारी होते हैं। यह केवल ज्ञान आदि अनादि से चल रहा है। ऐसे ओधाधारी सदगुरू के समय में करोडो ही जीव मोक्ष में जाते है।

सरब लोक सुं भया ऊदासी, वे जन अमर लोक का वासी।
आज्ञा करे प्रेसतो जावो, उन संत जना को यहां ले आवो ।।५४।।

जो हंस तीन लोको के सुख व पदवी की इच्छा नही रखता है वही आत्मा अमरलोक में जायेगी। तब सतस्वरूप भगवान प्रेशता को आज्ञा करते है कि उस हंस वृति आत्मा को अमरलोक में लेकर आवो।

बावन गादी ढील न खावे, अेता हंस लोक ऊण जावे।
व्हे साध ही अमरापुर पावे, कोई मरतलोक सुं संत पधारे ।।५५।।

बावन अक्षरों में जो रकार मकार उसका सतगुरू विधि से ताकीदी से भजन करने वाले हंस ही सतलोक जाते है। तब सतस्वरूप के लोक में यह खबर पहुंचती है कि आज मृत्युलोक से संत पधार रहे है।

सत का वस्त्र ले पहराई, सत जल सुं स्नान कराई।
दरशण करतन तृपती नही होवे, ईमरत बाणी जन कूं मोवे ।।५६।।

तब सतस्वरूप के लोक में उस आत्मा को सतजल से स्नान कराते है, सत के वस्त्र पहनाते हैं एवं उनके दर्शन करते हुये धन्य धन्य कहते हैं। तब उस हंस को उनकी मीठी वाणी बहुत अच्छी लगती है।

चवदे चोक छपन जुग जावे, मिलत मिलावत पार नही पावे।
नित नित नवला नेह सदाई, निमख अेक बिसरयो नही जाई ।।५७।।

म: सतलोक की महिमा का वर्णन कर रहे है कि वहां का सुख अखण्ड व उसका कोई वार पार नही है। असंख जुग बीतने पर भी वो सुख अेक सा रहता है अेक क्षण भी अलग नही होता है।

वांकी शोभा कहा मैं गावुं, बस्त बानगी माय बतावुं।
वा विध का सुख कही न जावे, बिन टेके सत धाम कहावे ।।५८।।

म:फ: है कि उस सतलोक की महिमा का वर्णन कहां तक करूं। वस्तु का नमूना बताते है उसी अनुसार कर रहा हूं। उस पद के सुख कहने में नही आते। उस सत का सबके आधार है, उसके किसी का आधार नही है।

अधर दीप अमर अेवासा, अनन्ताई भाण भवन प्रकाशा ।
अमर बैराट एक सत खंबा, मोती बडा सवामण लूंबा ।।५९।।

वो सत लोक अधर स्थान है। वहां पर हंसो का अमर निवास है। सब भवनों में करोडो सूर्य का प्रकाश है। वो अमर बेराट है, उसके सत का ही आधार है। वहां पर बहुत बडी बडी मोतियों की लडे है।

अमर सुख अमर वहां माया, अमर अेवास अमर ही काया।
अमर सुख सेजा ज्यां वो ही, अमर ओस्था पलटे नांही ।।६०।।

उस सतलोक में अमर सुख, अमर माया, अेवास अमर, काया व अमर सुख सहज में ही प्राप्त होता है। अमर अवस्था कभी नही पलटती।

सुख संपत अणचित्या आवे, दुख दालीदर बंचत नही पावे ।
सब भोग हाजीर उण धामा, नर नारी नेहचल नैह कामा ।। ६१ ।।

उस पद में सुख है, दुख का लेस भी नही है। जो स्त्री पुरूष उस पद की प्राप्ति करते है, वो अमर हो जाते है। उनके किसी प्रकार की कामना नही रहती है। सब भोग उस धाम में हाजिर रहते है।

बांझ नार को ही कुख बंधावे, उतपत खपत वा नही चावे।
अनन्ताई चीज वस्तु बिन पारा, अनन्ताई रिद्ध सिद्ध भरया भंडारा ।। ६२।।

आत्मा रूपी नारी अब मनुष्य जीवन में आ गयी, अब अगर जन्मना मरना मिटाना चाहती है तो केवल भक्ति धारण करने से सतशब्द रूपी बालक उसके आ जायेगा, यही कूख बंधाना है। और फिर आत्मा उस देश में पहुंचने पर वहां के अखण्ड सुख हमेशा हाजिर है। रिद्धि सिद्धि के भण्डार भरे है।

आ अपनी नही चीज पराई, जो चावे सोई ले ले जाई।
बालक रूप सदा हंस सारा, नही शत्रु नही मित्र प्यारा ।। ६३।।
काम किलोल नही कोई अेको, मेल मिलाप करो सुख देखो।
काल न पूंते झूरा न झांपे, नही कोई कोप करे नहीं कांपे।। ६४।।
निद्रा रेण नही विश्रामा, ये सुख है केवल की धामा।
हीरा चोक पुरिजे सारा, हीरा रतन अनन्त ऊजियारा ।। ६५।।
कैइक चोक नाम अमी कूंपा, केई अेक कलब्रछ चोक अनूपा।
कोई चिंत्रामण चोक संजीवण, तीन लोक में जांकी जीवन ।। ६६।।
मिणीयां चोक लाल कोई नामा, जको जडाव जडयो जिण धामा।
यह सब चोक अष्ट प्रकारा, अेक ही अेक भवन के लारा ।। ६७।।
सोडस नाम भवन प्रकारी, सो बिद बरण सुणाऊं सारी।
हीर भवन कोई मिण मोताला, रतन भवन कोई पद सम लाला ।। ६८।।
कलबरछ भवन केई अमरत धारा, केई चित्रावण संजीवण न्यारा ।
ध्यान भवन भवन केई ज्ञाना, सुख धारा समता विध नाना ।। ६९।।
प्रेम फुवारा आनन्द कहूं तोही, इण बिद नाम भवन का होई।
अब देह का रूप कहत हूं न्यारा, लील बिलास घरो घर सारा ।। ७०।।
कोटक सूर रूम उजियाला, सबके गले मोतियन की माला ।
ओ सुण तेज रूम इक मांही, असंख संख की गिनती नांही ।। ७१।।

साख ६३ से ७१ में संसार की चीजों का वर्णन करके उस पद की शोभा करते है।

दोहा : अगम आवाजा गेबकी, गरज रहयो बैराट।
भवन भवन में चानणो, बदन करे भरलाट ।। ७२।।

उस लोक में गेबऊ गरजना होती है सभी भवनों में प्रकाश है। और उनकी काया दिव्य रूप होती है। यही बदन करे भरलाट है।

दिव्य रूप मुख भल हले, बरसे निर्मल नूर ।
नख चख बिच सुखराम कह, उगा कोटक सूर ।। ७३।।

वहां की काया दिव्य रूप है, मुख भलभलाहट करता है, जैसे निर्मल नूर बरसता है। पूरे शरीर में करोडो सूर्य का प्रकाश होता है।

इसी जिगमिग भवन में, अरस परस दीदार। नित दूल्हा सुखराम कहे, मोड बंदे नर नार ।।७४।।

ऐसे जिगमिग भवन में आत्मा व परमात्मा का साक्षात्कार हो रहा है। सब हंसो के रोजाना नया नया आनन्द आता है।

अमर बस्तर नित नवा, सदा सुगन्धी चीर। जडे पनंगा प्रेम का, हंसता ढलके हीर ।। ७५।।

वहां पर अमर बिस्तर नित नया तथा उनमें से सुगन्ध आती है। उन पर प्रेम रूपी नग जडे हुये है। जब हंस हंसते है तो हीरों की बरसात होती है।

अनन्त सुख आगे खड़ा, अनन्ताई लील बिलास।
अनन्त संत केला करे, निरभय नेःचल वास ।। ७६।।

वहां पर हंसो के लिये अनन्त सुख एवं लील विलास हाजर है। अनन्त संत उस पद में आनन्द कर रहे हैं। वहां का निवास स्थिर है।

घर घर रली बदावणा, घर घर मंगलाचार। काम धेनु कलब्रछ, ज्युं दुजे घर घर बार ।।७७।।
अमरफल इमरत गणा, नाना चीज अनूप। इमरत कूंपा नावणा, देही चढे सरूप ।।७८।।
रंग राग घर घर हुवे, बाजे अनहद बाव। सदा हरष सुखराम कहे, ज्यूं आगम मिठा ब्याह ।।७९।।

जैसे घर घर में मंगलाचार, कामधेनु, कलब्रछ, अमरफल, इमरत जडी व नाना प्रकार की वस्तुओ का सुख होता है। उससे भी बढकर उस पद में आनन्द आता है।

मरत लोक में पडत है, संता की टकसाल। वां पूता सुखराम कहे, सो जीता भवकाल ।।८०।।

मृत्युलोक में संत उस पद का ज्ञान देते हैं यही टकसाल है। उस पद की प्राप्ति कर जन्म मरण से रहित होना ही भवकाल को जीतना है।

अमर माया अमर सुख, अमर ही ऊ धाम।
ओ मोख पंथ सुखराम केहे, हम देख्यो रट राम ।।८१।।

उस पद में माया व सुख अमर है, वो अमरधाम है। म.फ. है कि यह मोक्ष का रास्ता राम राम रटके देखा है याने उस पद की प्राप्ति की है।

सुखराम अधर सतलोक है, अधर जमी वां जांण।
वो दीठा आ अेथली, कर नर हाथ पिछाण ।।८२।।

म:फ: है कि सतलोक अधर है याने उसके किसी प्रकार का टेका नहीं है। वहां की धरती भी अधर है। वहां का अनुभव यहां इस प्रकार होता है जैसे अंधेरे में किसी दूसरे के हाथ के स्पर्श से उसकी पहचान होती है।

गुरू बीरम सुं बिनती, बार बार प्रणाम।
ज्यां परताब सुखराम कहे, हम पायो निज नाम ।।८३।।

गुरू बीरमदासजी महाराज से बार बार प्रार्थना व प्रणाम है, जिनकी कृपा से मुझे भी पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति हुई है।

<u>कुण्डलिया</u> : सतगुरू बीरमदासजी, निरधारयां आधार, जीवां कारण देह धरी,
वे सागे सिरजण हार।। वे सागे सिरजण हार, अनंत कहां लग गावुं।
अेक जीभ मुख मांय, गुणा को पार न पावुं।। सुखराम संत भला शिरजिया,
वे साहब को अवतार। सतगुरू बीरमदासजी, निरधारयां आधार ।।८४।।

सतगुरू बीरमदासजी महाराज जिनके निराधार परमात्मा का आधार है। जीवो का उद्धार करने के लिये ही शरीर धारण किया है, वो साक्षात परमात्मा के रूप है, उनमें अनन्ता ही गुण है। उनका कहां तक बखाण करूं। मेरे मुंह में तो एक जीभ है, उनके गुणो का पार नही है। परमात्मा संतो को संसार का भला करने के लिये ही भेजते है। सता रूप में ही उनमें परमात्मा प्रगट होते है। जीवों का उद्धार करने के लिये ही होते है।

।। इति श्री अलौलिक ग्रन्थ सम्पूर्ण ।।

卐 निरगुण बोध ग्रन्थ 卐

साखी : सुरगुण निरगुण बीच में, अे अरथा मध थाय।
सुरगुण सुख सुखराम कह, निरगुण जन्म मिटाय ।। १ ।।

सुरगुण निरगुण के बीच में यह अरथ होता है सुरगुण की भक्ति करने से सुखो की प्राप्ति होती है निरगुण की भक्ति करने से आवागवण मिट जाता है।

पंडित घर जल कुम्भ में, साजे संत निर्वाण।
जन सुखिया को जीतसी, पंडित साध सुं आंण ।। २ ।।

पंडितो का बावन अक्षरों का ज्ञान घडे में भरे हुये पानी की तरह है। संतो का ज्ञान जल से भरे हुए जलाशय की तरह है। म:फ: है कि पंडित संतो से कैसे जीत सकते है।

पंडित घर धन साह को, साध द्रव्य की खांण।
जनसुखिया किम जीतसी, पंडित साध सुं आंण ।। ३ ।।

पंडितो का ज्ञान घर में साहुकार के धन की तरह है। साधुओ याने संतो का ज्ञान द्रव्य की खान की तरह है। म:फ: है कि पंडित साध से कैसे जीत सकते है।

हरि गुरू साधु एक है, सब मिल ज्ञान सराय। सुखिया सुखरत प्रगटे, तब दरशे ऊर मांय ।। ४ ।।

परमात्मा सतगुरू पहुंचे हुए साधु तो एक है सब मिलकर ज्ञान की सराहना करते है। म:फ: है कि पुण्योदय होने पर ही हृदय में शब्द ब्रह्म के दर्शन होते है।

करम बहुत करणियां घणी, रोग रहयो घट छाय।
यूं सुखिया नही ऊपजे, राम रटण नर चाय ।। ५ ।।

बहुत तरह की कर्म व करणियां है। यह रोग सब मनुष्य को लग रहा है। म:फ: है कि जो मनुष्य करणी कर्म में लगे हुए है, वो उसी ज्ञान को प्रधानता देते है, भजन करने की इच्छा नही होती।

जुर जेम पिण्ड तेजरी, भोजन बास न सुवाय।
यूं करमा बस सुखराम केह, राम न आवे दाय ।। ६ ।।

शरीर में बुखार व तेजरा आता हो तो भोजन की सुगन्ध भी अच्छी नही लगती। म:फ: है कि इसी तरह कर्मो व करणियों के करने वाले को राम भजन अच्छा नही लगता।

धन धीणो हासल नही, करे मजूरी जाय। सुध बुध बिन सुखराम केह, राम न आवे दाय ।। ७ ।।

न तो धन है, न दुधारू जानवर, न कोई आमदनी है, मजुरी करता है। म:फ: है कि बिना सुध बुध के रामजी का भजन अच्छा नही लगता।

नर पीनस तन रोग है, बास न आवे ताय। जनसुखिया कर कपूर ले, दूरी देत बगाय।। ८ ।।

जिस मनुष्य के नाक में पीनस रोग है उसको कोई गन्ध नही आती। म:फ: है कि उसको बढिया से बढिया कपूर जैसी सुगन्ध वाली चीज हाथ में लेकर सुघांते है तो भी सुगन्ध नही आती है, मेरे यह किसी काम की नही है।

चौपाई : प्रथम हम सत संगत कीनी, सुद बुद ज्ञान अकल सब लीनी।
तब हिरदे ऐसी दरशावे, कहां सुं जाय कहां सुं आवे ।। १ ।।

पहले हमने सतसंग करी, जिससे सुध बुध अकल सब प्राप्त हुई। तब हृदय में ऐसा अनुभव

होने लगा कि यह जीव कहां से आता जाता है।

ओकुण मरे जन्मे कुण जाय, यह मुज मन अंदेश उपाय।
अेसा भेव भिन्न भिन्न कर भाखे, सो समरथ मुझ शरणे राखे ।
अष्टांग जोग कोई सांख बतावे, हद कूं छाड परे नही जावे ।। २।।

यह मरने वाला कौन है। जन्म कौन लेता है। यह मेरे मन में शंका हो रही है। इस रहस्य को कोई अलग अलग समझावे, वो ही सतगुरू समरथ है, वो ही मुझे शरण में रख सकता है। कोई अंष्टाग योग की व कोई सांख्य योग की साधना बताते है परन्तु यह साधन करने वाले हद याने तीन लोकों को छोडकर परे याने ब्रह्म पद में नही जाते।

जग में ज्ञान सकल मुझ सुज्या, खट दरशण सब ही ले बुज्या।
ऋषि मुनि पिंडत जग सारा, हद की हद में करे बिचारा।
दाणु देव शकल सोई धूजे, सन्मुख आय साध कूं पूजे ।। ३।।

जगत में जितने भी ज्ञान है उन सब को मैने देखा है। खट दरशणियो को सब ही ज्ञान के बारे में पूछा है। जगत में ऋषि मुनि पिंडत सारा संसार तीन लोको में रहने का ज्ञान देते है। सतस्वरूप आःपद की भक्ति ग्यान के सामने सकल ही देव दाणव व समस्त त्रिलोकी केवली भगवंतो के ग्यान के सन्मुख रहते है।

हद में काल निरन्तर लूटे, जम धामा परथ न छूटे।
सब ही अरथ बूझ हम लिया, इण से काल जम नही बिया ।। ४।।

तीन लोको में काल बराबर आता जाता है। जमराज के स्थान पर जाने से छुटकारा नही होता। सब ही अरथ मैंने पूछा, इनसे काल जमराज नही डरता, जन्म मरण से छूटकारा नही होता।

धरणी ध्यान धर्म लग लूटे, सुरगुण शरण हंस नही छूटे।
मैं बूझत हूं यही विचारा, किस विध हंस जम हुवे है न्यारा ।। ५।।

ध्यान धारणा धर्म कोई भी साधन करो इनसे आवगवण नही मिटता। सुरगुण याने वाणी के आधार से जो भक्ति होती है उससे जन्म मरण नही मिटता। मैं यही विचार पूछता हूं कि हंस जन्म मरण से दूर कैसे हो सकता है ?

आवागवण बोहोर नही आवे, यह मुझको कोई ज्ञान बतावे।
सुरगुण भक्त विष्णु की साजे, तब लग काल शीष पर गाजे ।। ६।।

जन्म मरण में फिर नही आना पडे यह ज्ञान मुझे कोई बतावे। सुरगुण भक्ति याने नवधा भक्ति की कोई साधना करे तब तक उसका जन्म मरण नही मिटता।

सांख जोग कोई रहे समाई, नेचे काल न माने काई।
जोग साज जम कूं ही जीते, नेचे काल कर्म नही बीते ।। ७।।

कोई सांख जोग की साधना करे तो भी काल से छूटकारा नही होता, अष्टांगयोग की साधना कर शरीर को अमर कर लेते है। जम को जीतता है परन्तु महाप्रलय में मरना पडता है।

चन्द्र सूर पवन अर पाणी, धर ब्रह्मण्ड आकाश बखाणी।
तीनों देव सगती ने खावे, जम जोगी के पास ने आवे ।। ८।।

चन्द्रमा सूर्य हवा पानी पृथ्वी ब्रह्मण्ड आकाश है व तीनो देवता ब्रह्मा, विष्णु, महादेव व शक्ति

को भी काल खाता है। परन्तु भक्ति योग की साधना करने वालों का जन्म मरण मिट जाता है। यही काल का उनके पास नही जाना है।

कह सुखराम सुणो संत सारा, ब्रह्म जोग का भेव न्यारा।
ब्रह्म जोग सोजो तुम भाई, आवागवण मिटे दुख दाई ।। ९ ।।

म:फ: है कि सब ही सन्त सुणो ब्रह्म जोग याने सतस्वरूप की भक्ति का भेद अलग है तुम भी सतस्वरूप आ:पद की प्राप्ति की साधना करो। तुम्हारा जन्मना मरना मिट जायेगा।

उदबुद रीत ब्रह्म की होई, बिरला संत लखे जन कोई।
सांख जोग नवध्या सुं न्यारा, मन पवना सुं परे विचारा ।। १० ।।

ब्रह्म योग की विधि ऊदबुद है, उसको बिरले ही संत जो सतशब्द की भक्ति करने वाले ही अनुभव करते है। सांख जोग व नवधा भक्ति से अलग है मन व स्वांसा से भी आगे है, इसका विचार करो।

ब्रह्म जोग सोई जन साजे, ऊभय अंक रसणा लिव गाजे।
सेहजा सजे ध्यान धुन सारा, रटणा नाम जिभ्या विस्तारा ।। ११ ।।

जिनके जबान से रकार मकार का लिव बंध भजन होता है वे ही भक्त ब्रह्म जोग की साधना करते है। सतगुरू विधि से जीभ से भजन करने पर शब्द की जाग्रति होकर, ध्यान धुन सहज में सध जाते है।

साजन सोच एक नही राखे, निश दिन नाम निकेवल भाखे।
रटत रटत रसणा लिव लागी, मन सो पवन सूरत सो जागी ।। १२ ।।

किसी साधन का सोच न रखे, रात दिन परमात्मा के नाम का भजन करते रटते रटते रसणा से लिव लग जाती है। सूरत लगाकर भजन करने से मन भी स्वांसा में लग जाता है।

जागे सूरत शकल चेतावे, सावधान सब ही होय आवे।
तीन लोक में हुवे हैकारा, जब जन चल्या ब्रह्म के द्वारा ।। १३ ।।

शब्द की जागृति होने पर सूरत से सारे शरीर में सब जगह अनुभव होना ही सबको चेताना है। चित मन बुद्धि सब भजन में लग जाते है। खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड इन तीन लोक में सब जगह रंकार की ध्वनि होने लग जाती है। चौथे पद में जाना ही ब्रह्म के पद में जाना है।

हाजर शहर शकल सोई देवा, नव से नार संत सुखदेवा।
चोबीसुं तां मांय बखाणे, तीनूं संत सहज सुख माणे ।। १४ ।।

सारे शरीर में व नो सो नाडियो में शब्द का अनुभव होना ही चौबीस नाड में इडा पिंगला सुखमणा में शब्द का अनुभव होना ही तीनूं संत सहज सुख मांणे है।

नवसे नार निनाणु बोले, हरखी सब ही आंतर खोले।
मरदंग ताल जिजंकर लेवे, राग छतीस अेक सुर देवे ।। १५ ।।

नो सौ निनाणवे नाडियो में शब्द का अनुभव होना ही सब नाडियो का बोलना है, यही हरखी व आंतर खोलना है। शब्द तो एक ही है। इसी में सब रागे हो रही है।

भंवर गुंजार पांख पर बाजे, बरगु ढोल कोक धुन गाजे।
मुरली बीण संख धुन होई, डफ जंतर बोले मुख सोई।
प्रजा आंण हाट हुवो भेली, के कुटे बस्ती गल छेली ।। १६ ।।

शब्द की ध्वनियां ही भंवर गुंजार बरगु ढोल कोक धुन मुरली बीण संख धुन डफ जंतर है। जिस तरह हाट बाजार में मनुष्य इकट्ठे होते है। कोलाहल मचता है।

सुवा मोर पपैइया बोले, चेत्यी मास शकल मुख सो खोले।
तेरे ताल मजीरा बाजे, नारी निरत राग रंग छाजे ।। १७।।

शब्द की ध्वनियां ही सुवा मोर पपैया बोलना मुख खोलना व तेरे ताल मजीरा बजना व नारी का नाच राग रंग छाजे है।

छप्पन राग छतीसुं गावे, हरिजन सुण संत सुख पावे।
जन सुखराम जोग गत भाखूं, भिन्न भिन्न भेद शकल सब दाखूं ।। १८।।

शब्द की ध्वनियां ही छप्पन रागा छतीसुं गाना है। सन्त ध्वनियों को सुनकर खुश होते है। म:फ: है कि सतशब्द की भक्ति का भेद भिन्न भिन्न कर वर्णन करता हूं।

जब जोगी तन मांय समाया, तीन लोक देखण मध आया।
चाले इच्छुक भवरूं जोगी, तीन लोक माया रस भोगी।। १९।।

सतशब्द का सारे शरीर में खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड में अनुभव होना ही तीन लोक देखना है। सतशब्द की भक्ति करने वाले आगे चले जाते है, बाकी सब तीन लोक माया का रस भोगते है।

बोल्या बैण संग कर लिया, शिर पर बोज राम गुण दिया।
बेगारी कूं पकड मंगाया, नारी सेहेत हाजिर ले आया ।। २०।।

जो वृतियां इधर उधर जाती है वो भी साथ लेकर राम भजन में लग जाती है, यही सिर पर बोज राम गुण दिया है। बेगारी याने मन भी सूरत के साथ राम भजन में लगा रहता है।

जोगी रोष बहुत विध किया, मन पवना आगु कर लिया।
तिजी सूरत सगति संग आवे, बेगारी संग हुक्म हलावे ।। २१।।

सतशब्द की भक्ति करने वाले स्वांसा में मन व सूरत को लगा देता, सूरत लगने पर मन, इच्छा भी भजन में लगा रहता है।

जे कोई टले फाटण की भाखे, सोद घेर मुख आगे राखे।
निश दिन करे जाबतो भारी, सुन्न शहर की गेल विचारी ।। २२।।

जो कोई वृतियां इधर उधर जाती है तो नही जाने देकर भजन में लगी रहती है, रात दिन भजन करके के:पद की प्राप्ति करना चाहती है।

सब ही संगत गुष्ट ज्ञान सो देवे, सब कूं पलटाय आप संग लेवे।
परमोदे यूं नार विचारी, धिन धिन तुज भाग्य बण्यो भल भारी बेगारी ।। २३।।

सबको ज्ञान देकर भजन में लगाये रखती है। सबको सूरत ऐसा ज्ञान देती है। हे मन तेरा अहोभाग्य है जो भजन में लग रहा है।

मुगत मोख के पंथ सिधावे, प्रांण पुरूष आगे ले धावे।
सब ही पलट अेक घर आया, जोगी प्रांण गिगन कूं ध्याया ।। २४।।

मोक्ष प्राप्ति का साधन करना ही मोक्ष के रास्ते जाना है। प्राणो को भी शब्द के साथ कर लिया है, सब ही भजन करने लगे, संत के प्राण गिगन की तरफ चले है।

समजा शकल द्वेत हूं बारा, अेकण अंग संत जन सारा।

गेली गेल निशो दिन ध्यावे, उठ बैठ सुतो नही चावे ।। २५।।

सब समझकर द्वेत भाव से हटकर सब एक अंग होकर रात दिन भजन करना ही उठ बैठ सुतो ही ध्यावे है। फालतु उठना बैठना सोना नही सुहाता।

घाटा भांज मेर कूं मारया, दाणु दुष्ट चोर संगाहारया।
घाट घाट बोहता जुध किया, जित्या संत पंथ सुध लिया ।। २६।।

सब स्थानो व मेरू को पारकर भक्ति में जो वृतियां बाधक है उनको वश में करके स्थान स्थान पर सूरत लगाकर भजन करना ही जुध करना है। सतशब्द की भक्ति भजन में लगा रहना ही जीत नांव सुध रास्ता पकडना है।

आस पास गांठिया सब ढाई, लडता तिके मिल्या सब मांही।
रटण फोज आगे कर लीजे, पहला घाट भांज यूं दीजे ।। २७।।

सब स्थानो को पार करना ही गांठिया ढहाना व वृतियां अलग जाती थी। वो सब भजन में लगना ही मिल्या सब मांही है। भजन करना ही रटण फोज आगे करना वह पहला घाट भांजना है।

दूजे घाट चाल शिर आया, गेब फोज निसाण गुराया।
धूजे शकल भोमिया थरके, हुवे है आगा पिछा सरके ।। २८।।

दूसरे स्थान पर सतशब्द अनुभव होना ही निशाण गुराना है। भजन होने से चित मन बुद्धि अहंकार का भजन में न लगकर दूसरे विचारो में लगना ही आगे पीछे सरकना है।

तीजे घाट राड भई भारी, जूंझे शकल नगर नर नारी।
जब सिद्ध संत सूर दिराया, चढी जोध भेलू गढ काया ।। २९।।

सतशब्द तीसरे स्थान पर सूरत लगाकर खूब भजन करना ही तीजे घाट राड भई भारी है। सतशब्द में सब वृतियां लगाकर भजन करना ही जूझें शकल नगर नर नारी है। संत ऊपदेश करके चौथे पद की प्राप्ति का ज्ञान देते है। यही सिन्धु राग गाना व भेलु गढ काया है।

मन चित पवन सुरत गह लिया, छेद पंयाल पिछम कूं दिया।
ब्रह्म जोग क्रिया मैं सब भाखूं, भक्त जोग हिरदे धर राखूं ।। ३०।।

स्वांसा में चित मन सूरत लगाकर भजन करना ही ब्रह्मा गणेश शेष को पार करके पिछम में उलटना ही छेद पंयाल पिछम कूं दिया है। सतशब्द की प्राप्ति का साधन ही ब्रह्म जोगी की क्रिया व भक्त जोग हिरदे धर राखूं है।

दशदा भक्त भेद यूं लिजे, आनदेव बदला में दीजे।
भांजी भोम पटा सब लिया, हरिजन राज अेक कूं दिया ।। ३१।।

नवधा भक्ति के पश्चात दसवी केवल भक्ति आने पर आनदेव रूपी शरीर को भक्ति में लगा दे। खुद को राई के दाने के बीसवा हिस्सा समझे, तब पिंड खंड ब्रह्मण्ड से अलग होकर सतशब्द के साथ आत्मा को परमपद में मिलने का राज प्राप्त होता है।

पूर्व जीत पिछम कूं आया, पांचू जोधा संग ले आया।
समजया सेन सन्त कूं दीजे, सन्मुख राड आंण संत लीजे ।। ३२।।

पूर्व के स्थानों को तय करके पिछम में आया तब काम क्रोध लोभ अहंकार मोह एवं पांचु इन्द्रियों के साथ सूरत लगाकर भजन करना ही पांचु जोध साथ लेना है समझ कर भजन करना ही सन्मुख राड करना है।

पिछम देश जोरावर होई, कागद पत्र न माने कोई।
जब संत सूर किया दलभेला, पूर्व पिछम अेक घर में मेला ।। ३३।।

सतशब्द की भक्ति करने वाले पिछम दिशा में जाते है। संखनाल व शास्त्रों का साधन करने वाले नही जाते है। यही कागद पत्र नही मानना है। सन्त सब वृतियां भजन में लगाकर करते, यही दल भेला करना है। पूर्व पिछम के स्थानों को पार करना ही मेला करना है।

मन की तोप सूरत ले दागे, गोला नाम घडी सो लागे।
पडिया ताव पिछम दिस भागा, हरिजन जाय मेर सूं लागा ।। ३४।।

सांस उसांस में मन व सूरत लगाकर भजन करना ही गोला चलाना है। सतगुरू विधि से भजन करना ही पडया ताव पिछम दिश भागा है। सन्त इक्कीस सुरगों को पारकर मैरू पर पहुंच जाते है।

अेक बीसुं गढ कोट ऊडाया, जब सन्त शिरे त्रकुटी आया।
पूर्व देश पिछम हुवा सूना, चवदे क्रोड जम मिल रूना ।। ३५।।

त्रिकुटी में आना ही इकीसुंगढ कोट उडाना है। पूर्व पिछम के सब स्थानो का पार होना ही सूना होना है। जमराज के स्थान को पार करना ही चोदह क्रोड जम मिल रूना है।

धर्मराज का देश उजाडया, गढ सो कोट किला सब पाडया।
पांच पचीस तीन नव तेरे, उलटा आंण त्रिकुटी टेरे ।। ३६।।

मेरूदण्ड से ऊपर जाना व दूसरे सब स्थानो को पार करना ही कोट किला सब पाडया है। पांच तत्व, पच्चीस प्रकृतियां, तीन गुण, नव तत लिंग शरीर, तेरे लोक ऊलटकर ब्रह्मण्ड से ऊपर जाना ही ऊलटा आंण त्रकुटी टेरे है।

जब थिर राज चले नही कोई, दुश्मण पलट सेंण सब होई।
सिंहासन जन जाय बिराज्या, नोपत नांव सरूरी बाजा ।। ३७।।

के: पद की प्राप्ति होना ही थिर राज होना, दुश्मण पलट सेण सब होई है। के:पद में अधर ध्वनि का अनुभव होना ही सिंहासन पर बिराजना व नांव की नोपत बाजना है।

पाल्या फिरया अमीरस पिया, बैरी सैण आप दिश लिया।
तीना के सब मांय मिलाया, अे अब ही पलट अेक में आया।। ३८।।

सतशब्द का अनुभव होना ही पाल्या फिरया अमीरस पीया है। वृतियों का भजन में लगना ही बैरी सेण आप दिश लिया है। इडा पिंगला सुखमण में भजन होकर सुखमणा में भजन होना ही सब ही पलट अेक में आया है।

जागी जोत भया ऊजियाला, इण बिध साधु हुवा निराला।
आप ही आप और नही कोई, ज्यां संग नार रमे मिल दोई ।। ३९।।

सतशब्द का अनुभव होना ही जागी जोत भया उजियाला है। इस तरह साधु का सबसे अलग होना ही निराला होना है। शब्द का सूरत निरत के आधार से भजन होना ही दो नार का मिलना है। सतशब्द के सिवाय और कोई नही है।

दोही तज अेकण में आया, जहां निज ब्रह्म पास नही माया।
जहां सुखराम वे है जन भेला, माया ब्रह्म सहज का मेला ।। ४०।।

सूरत निरत से अलग होकर शब्द अनुभव होना ही दोई तज अेकण में आया है। माया के पद

से अलग होकर शब्द का अनुभव होना ही, ब्रह्म पास नही माया है। उस पद की प्राप्ति होने पर के:पद की प्राप्ति होना ही माया ब्रह्म सहज का मेला है।

दुख सुख व्यापे नही कोई, उण घर सन्त बिराजे सोई ।। ४१ ।।

सन्त उस घर की प्राप्ति करते याने बिराजते है उस पद में दुख सुख का अनुभव नही होता ।

।। इति श्री निरगुण बोध ग्रन्थ सम्पूर्ण।।

卐 भगत ऊपज का अंग 卐

भगत भाव सूं ऊपजे, सुणज्यो सब संसार। जन सुखदेवजी कहत है, सब बिद बेद विचार ।। १ ।।

म:फ: है कि मैं सब वेदों के ज्ञान विचार कहता हूं, सब संसारी सुणो भक्ति भाव से पैदा होती है।

प्रथम दया विचारिये, छूटे कडवी बांण। तो भगती सुखराम कह जद तद ऊपजे आंण ।। २ ।।

म:फ: है कि प्राणी मात्र पर दया रखो, जिससे खराब आदतें छूट जायेगी, जिससे जब कभी भी भक्ति पैदा हो सकती है।

साख शब्द कूं कान दे, बैठे संगत में जाय। तो भगती सुखराम कह, जद तद ऊपजे आय ।। ३ ।।

म:फ: है कि महापुरूषो के साख शब्द कूं ध्यान से सुने व सतसंग में जाकर बैठे तो जब कभी भक्ति पैदा हो सकती है।

सन्ता री संगत करे, ज्यों त्यों करके आंण। तो ऊपजे सुखराम कह, भक्ति भेद बखाण ।। ४ ।।

म:फ: है कि जो सन्त सत स्वरूप आ:पद की भक्ति करते है उनकी संगत जैसे तैसे करे और भेद सहित भक्ति का बखाण सुनने से भक्ति पैदा हो सकती है।

हरजन के घर आय के, अन जल करे अहार। इण गुण सुं सुखराम कहे, उपजे भगत विचार ।। ५ ।।

म:फ: है कि रामजी की भक्ति करने वालों जनो के यहां जाकर अन्न जल का प्रसाद करते है, इस गुण से भक्ति के विचार पैदा होते है।

अेसो आदर भाव को, जो नर राखे कोय। तो भक्ति सुखराम कह, जद तद ऊपजे जोय ।

म:फ: है कि जो संतो के अणभै ग्यान का आदर भाव रखे तो कभी भक्ति का भाव पैदा हो जाता है।

हरिजन की महिमा करे, पख खांचे बिन छेह। तांकू हर सुखराम कह, भक्ति दे इण देह ।। ७ ।।

म:फ: है कि संतो के अणभै ग्यान की महिमा करे, सतगुरू विधि को ही प्रधानता दे तो परमात्मा इसी नर देही में भक्ति का गुण प्रगट कर देते है।

हरजन के सामो मिले, जो लुल लागे पांय। ताकुं सुण सुखराम कह, भगत ऊपजे आय ।। ८ ।।

म:फ: है कि रामजी की भक्ति विधि व संतो के ग्यान को प्रणाम करे तो अवश्य ही भक्ति उपजेगी।

हरजन सु अडबी करे, झगडे सन्मुख आय। तां घट सूं सुखराम कह, जद तद भगती जाय ।। ९ ।।

म:फ: है कि संतो के ग्यान से अडवी वाद विवाद करते है तो घट में भक्ति ग्यान आया हुआ भी चला जाता है।

भूलो चूको आंण के, जे मेले परसाद। इण गुण से सुखराम कह, छूटे विषे जुग बाद ।। १० ।।

म:फ: है कि अनजाने में भी संतो के अणभै ग्यान के अरपण किया हुआ परसाद मिल जाता

है तो उस प्राणी के विषय रस वाद विवाद छूटता है।

हरजन जहां चरचा करे, जो देखण कूं जाय। या गुण सुं सुखराम कह, भगती ऊपजे आय ।।११।।

म:फ: है कि जहां रामजी की भक्ति की भक्त जन चरचा करते है उसको देखने सुनने जाने वालो के भक्ति पैदा होती है।

कोगत यारो होय के, जन कूं देखे आंण। वा गुण सुं सुखराम कह, जद तद पलटे बांण ।।१२।।

यदि तमाशे के रूप में भक्त जनों को जाकर देखता है तो म:फ: है कि उस गुण से भी जब कभी आदत बदल जायेगी।

ले परसादी संत की, करे टेल बोहो भांत। या गुण सु सुखराम कह, ऊपजे लीव की खांत ।।१३।।

म:फ: है कि सन्तों के ग्यान से निकले वचनो की पालना करना ही परसादी लेना है। सन्तो के ग्यान को धारण करने के गुण से भी लिव बन्ध भजन करने की इच्छा होती है।

हरिजन की महिमा करे, जे आडो फिर कोय।
या गुण सु सुखराम कह, जद तद हरिजन होय ।।१४।।

रामजी की भक्ति व संतो के अणभै ग्यान की महिमा करने से जब कभी वह भी हरिजन होता है। याने वो भी भक्ति करने में लग जाता है।

जीण घर की सुण चीज रे, हरिजन के अंग लाग।
या गुण सु सुखराम कह, जद तद जागे भाग ।।१५।।

म:फ: है कि अणभै ग्यान के शब्दो का गुण भक्तों के अंग लग जाता है तो उस गुण से भी भाग्य उदय हो जाते है।

सन्ता के प्रताप सुं, ऊपजे भक्ति भेव विचार ।
ज्ञान ध्यान सुखराम कह, शुभ करणी मन मार ।।१६।।

म:फ: है कि संतो के प्रताप से भक्ति के भेद व विचार पैदा होते है। ज्ञान ध्यान अच्छी करणी करने की इच्छा मन मारने की विधि पैदा हो जाती है।

जन के पगतल आय के, जो जीव छोडे प्रांण।
ताकुं भगती ऊपजे, कह सुखदेव बखाण ।।१७।।

म:फ: है कि जो जीव जन्तु केवल भक्ति कराने वाले जन के पैर के नीचे अनजान में जो जीव जन्तु आ जाते है फिर प्राण छोडते है उनके भक्ति का भाव पैदा हो जाता है।

जहां जहां हरिजन पग धरे, वा रंज जे मुख जाय।
या गुण सुं सुखराम कह, भगती उपजे आय ।।१८।।

जहां जहां रामजी की भक्ति करने वाले जन पैर धरते है वो रंज मुंह में चली जाती है तो म:फ: है कि इस गुण से भक्ति का भाव पैदा होता है।

जन की झूटण गिरत है, भूलर पावे कोय।
वो कण मुख में जात है, भक्ति ऊपजे सोय ।।१९।।

जहां जन प्रसाद करते हैं वहीं कोई झूंठा कण गिर जाता है वो कण भूल से भी किसी के मुख में चला जाता है तो उससे भक्ति का भाव पैदा होता है।

परम भक्ति सो ऊपजे, सो यहां कही बखाण।

सुणज्यो सब सुखराम कह, साध संत सब आंण ।। २० ।।

परम भक्ति जिससे पैदा होती है उसको यहां विस्तार से कहा है। म:फ: है कि सब ही साधु संत आकर सुणो।

पूर्व जन्म में भक्ति रे, किवी जात कुल खोय।
ताकूं सुण सुखराम कह, भक्ति प्रगटे जोय ।। २१ ।।

जिसने पूर्व जन्म में जाति कुल को खोकर जिन्होंने भक्ति की है। म:फ: है कि सुणो उनके केवल भक्ति प्रगट होती है।

पूर्व जन्म में भक्ति रे, भजन कियो भरपूर।
जे निपजे सुखराम कह, मिलत चढे मुख नूर ।। २२ ।।

जिन्होने पूर्व जन्म में भरपूर भक्ति भजन किया है। म:फ: है कि वो संसार में पैदा हुवे है तो उनके इस जन्म में ज्ञान सुनते ही सांस उसांस में रटणा चालू हो जाती है व सतशब्द प्रगट हो जाता है।

ओ गुण पाछे मैं किया, तेबीस साख के मांय।
प्रेम भक्ति सुखराम कह, या बिद ऊपजे आय ।। २३ ।।

तेबीस साख में मैंने केवल भक्ति पैदा होने की बात कही है। म:फ: है कि इस विधि से प्रेमा भक्ति पैदा होती है।

।। इति श्री भक्त ऊपज का अंग सम्पूर्ण ।।

卐 जती का संवाद 卐

त्रिगुटी में सुर तीन मिल, आगे सुर मिल जात।
जती बुज्यो सुखराम कह, सुणो ब्रह्म की बात ।। १ ।।

त्रिगुटी में तीन सुर इडा पिंगला सुखमणा मिलती है व आगे फिर एक होकर आगे बढती है। जती बुज रहा है म:फ: है कि ब्रह्म की बात सुणो।

त्रिगुटी में हद जांणिये, माया लग सब जोय। जती बुजे सुखराम कह, ब्रह्म अगम में होय।। २ ।।

म:फ: है कि हे जती त्रिगुटी तक हद है और माया का पद है और ब्रह्म का पद अगम में है।

माया ब्रह्म की हद है, जहां लग हद पिछाण। जती बुजे सुखराम कह, ब्रह्म अगम में जांण ।। ३ ।।

म:फ: है कि हे जती माया के साथ ब्रह्म का पद है जहां तक हद है। ब्रह्म का पद अगम में है याने ब्रह्मण्ड से परे है।

बाजा रह गया शहर में, हम पूतां अगम अस्तान।
जती बुजे सुखराम कह, जहां देह बिन धरणो ध्यान ।। ४ ।।

सारे शरीर में जो ध्वनियां हो रही थी वो शहर में याने शरीर में रह गई। मैं अगम स्थान के:पद आ:पद में पहुंचा हूं। म:फ: है कि वहां बिना देही के ध्यान होता है। उसको देह बिन ध्यान धरना कहा है।

कर माला नही फेरिये, बिन रसणा को जाप। जती बुजे सुखराम कह, जहां निरंजण आप ।। ५ ।।

हाथ से माला नही फेरी जाती। बिना रसणा के जाप होता है। म:फ: है कि वो निरंजण का पद है।

नही काला नही सेत है, नही पांच तत्व के मांय।

जती बुजे सुखराम कह, रंग बिन रंग दिखाय ।। ६ ।।

ब्रह्म का पद काला याने रात्रि से, सेत याने दिन से व पांच तत्वो से अलग है। वहां रंग के बिना रंग दिखाता है।

सात धात गुण तीन नही, परगत नही पचीस।
जती बुजे सुखराम कह, जहां मूरत बिस्वाबीस ।। ७ ।।

जहां सात धातु का शरीर, गुण तीन सत रज तम नही है। प्रकृति के पचीस गुण भी नही है। म: जती से फ: है कि जहां बिस्वाबीस शब्द का अखण्ड अनुभव होता है यही मूरत बिस्वाबीस है।

लखणे में कुछ आवसी, देखण में कछु नांय। जती बुजे सुखराम कह, सन्त बतावे मांय।। ८ ।।

म: जती से फ: है कि लखने में याने वो पद अनुभव में आता है देखने में नही आता। संत बतावे मांय याने सन्त आत्मा में बतलाते है।

शुद्ध बुद्ध जहां पहुंचे नही, मन पवना नही जाय।
जती बुजे सुखराम कह, सन्त रहया लिव लाय ।। ९ ।।

म: जती से फरमा रहे है कि शुद्ध बुद्ध मन स्वांसा वहां नही जाते, सन्त उस पद को लिव लाय याने अखण्ड भजन सुमरण से अनुभव करते है।

<u>कवित</u> : पिता शीष था बास हमारा, संख नाल होय आया।
माता गर्भ सो लिया बसेरा, वा मैं जीव कहाया ।। १० ।।

बिन्दु का स्थान पिता के सिर में है वहां मेरा निवास था। संखनाल के रास्ते से माता के गर्भ में आकर विश्राम लिया, जब मैं जीव कहलाने लगा।

शुभ सु अशुभ ऊंच सु निचा, मैं भुगतु भुगताया।
मेरा रिजक हमारे सहारे, इच्छा सुं चल खाया ।। ११ ।।

अच्छी बुरी ऊंची नीची जैसी मैं करणी करता हूं वैसा ही भोग मुझे भोगना पडता है। मेरे कर्म मेरे साथ है। जैसा करेगा वैसा ही भोगता है।

अंतकाल जो होती वासना, जहां मैं बासा पाया।
कह सुखराम बासना ऊपर, कर असवारी आया ।। १२ ।।

अंत समय में जैसी जीव की वासना रहती है वही उसका जन्म होता है। म:फ: है कि मैं उस केवल ब्रह्म के पद से जहां किसी तरह की वासना नही है वहां से आया हूं।

ना मैं ब्राह्मण ना बैरागी, ना मैं फरक फकीरा। ना मैं जंगम ना मैं जोगी,
ना मैं सिद्ध न पीरा।। ना मैं जती नही मैं श्यामी, ना मैं पाखण्ड होई।
ना मैं भेक अभेक ना सुण रे, लखसी बिरला कोई। चारूं वरण जात नही मेरे,
जती अरथ कर लीजे। कह सुखराम समझ बिना मिथ्या, पाछो जवाब न दीजे ।। १३ ।।

न मैं ब्राह्मण हूं, न बैरागी हूं, न मैं फरक फकीर, न मैं जंगम व न मैं जोगी हूं, न मैं सिद्ध, न मैं पीर, न मैं जती, न मैं श्यामी, न मैं पाखण्ड में हूं, न मैं भेक में हूं, न मैं अभैक में हूं, कोई बिरले ही केवल ब्रह्म का अनुभव करते है। न मैं चार वर्ण में, न कोई जाती में हूं, जती से म:फ: है कि इसका अर्थ कर लो। इसको समझे बिना झूंठ ही वापस जवाब नही देना चाहिये।

।। इति श्री जती का संवाद सम्पूर्ण ।।

卐 स्यामी का संवाद 卐

श्रोता वक्ता आप ही हुवा स्वामी, सन्यास कहो कहां से आयो। देह धर जुग में कुण पेल गायो,
ओऊं अजपा की किण रीत होई। कह सुखदेव दे भेद मोही ।। १ ।।

आपने प्रश्न किया व आपने ही जवाब दिया, सन्यासियो का सम्प्रदाय कहां से जगत में आया। शरीर रूप से किसको गुरू माना, ओऊं से अजपा कैसे जागृत होता है, इसका मुझे भेद दो।

स्वामी कहे सुणो सुखदेवजी, सन्यास शिव सु चल आयो। देह धर युग में दत पेल गायो,
ओऊं से अजपो सुण वाय होई। धरे ध्यान न्यारो लखे जन कोई ।। २ ।।

स्वामीजी म: से कह रहे है कि सन्यास की उत्पति शिवजी से हुई है। जगत में शरीर धारियों में दतात्रेयजी को गुरू माना है। ओऊं का अजपा स्वांसा के आधार पर होता है इसका ध्यान करके कोई उसका अनुभव करते है।

चौपाई : कौन देश में मंडी तुम्हारी, कौन शब्द कूं गावो।
सुखदेव कहे सुणो स्यामीजी, किसे पंथ को ध्यावो ।। ३ ।।

तुम्हारा स्थान किस देश में है। खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड के किस स्थान का ध्यान है। किस शब्द का जाप करते हो। म:फ: है कि तुम्हारा रास्ता संखनाल का है या बंकनाल का है।

दोय पंथ दोय है गेला, दोय नाला दोय बांणी।
सुखदेव कहे सुणो स्यामीजी, किसी राह तुम जांणी।। ४ ।।

ऊपर चढने में जगत के संखनाल व बंकनाल के यह दो रास्ते व नाल है। एक सांस उसांस ये दो बाणी है। तुमने कौनसा रास्ता चुना है याने जाना है।

कैसो पंथ तुमारो कहिये, कोण नाल को छेदी।
सुखदेव कहे सुणो स्यामीजी, किसे पंथ का भेदी ।। ५ ।।

तुम्हारा साधन संखनाल का है या बंकनाल का है। म:फ: है कि तुम किसके आधार से साधन करते हो।

कौन तुमारा गुरू गुंसाई, कौन तुमारो चेलो।
सुखदेव कहे सुणो स्यामीजी, कौन संग नित खेलो ।। ६ ।।

तुम्हारे गुरू कौन है व चेला कौन है। म:फ: है कि तुम्हारा साधन सांस के आधार का है या उसांस के आधार का है।

स्वामी वाच: सतशब्द है गुरू हमारा, चित हमारो चेलो।
स्यामी कहे सुणो सुखदेवजी, मन सुरत संग खेलो ।। ७ ।।

स्यामीजी म: से कह रहे है कि हमारा गुरू सतशब्द है। चित से चिन्तन होता रहता है, यही चेला है। मन लगाकर सुरत के द्वारा सतशब्द का ध्यान करता हूं।

मा. प्रश्न: कौन शब्द सु ऊठो बैठो, कौन शब्द ले ध्यावो।
सुखदेव कहे सुणो स्यामीजी, किसे शब्द संग गावो ।। ८ ।।

कौन शब्द याने किस श्वांसा के साथ ऊठते व किसके साथ बैठते हो। किस शब्द का सिमरण करते हो। म:फ: है कि हे स्यामीजी किस शब्द का ध्यान करते हो।

स्वामी वाच: सोऊं शब्द संग ऊठां बैठां, राम शब्द कूं ध्यावा।

ओऊं शब्द सू राग ऊचारा, सुरत सबद संग गावां ।। ९ ।।

सांस उसांस में भजन करना ही स्वांसा के साथ उठना बैठना है। राम शब्द वाणी उच्चारण करना ही राग ऊचारना है। सुरत के द्वारा शब्द का ध्यान होना ही गाना है।

मा. प्रश्नः कोण पुरूष को ध्यान धरो हो, कोण पुरूष को मारो।
कह सुखदेवजी सुणो स्यामीजी, कहो कौन कूं तारो ।। १० ।।

किस पुरूष का ध्यान करते हो, कौन पुरूष को मारते हो। मःफः है कि हे स्यामीजी सुणो कहो किसको तारते हो।

स्वामी वाचः पारब्रह्म का ध्यान धरां हां, पांच पुरूष कूं मारां।
स्यामी कहे सुणो सुखदेवजी, प्राण पुरूष कूं तारां ।। ११ ।।

पारब्रह्म परमात्मा का ध्यान करते है। पांच विषयो को वश में करना ही मारना है। स्यामीजी महाराज जी से कहते है कि प्राणो का उद्धार करना ही प्राण पुरूष को तारना है।

मा. प्रश्नः कौण काज तुम भेख पेरियो, कौन काज तुम मांगो।
कहे सुखदेव सुणो स्यामीजी, देह काहि कूं भांगो ।। १२ ।।

तुमने भेख किस लिए लिया है किसलिए मांगते हो। मःफः है कि हे स्यामीजी शरीर से कौनसा साधन करते हो।

स्वामी वाचः रामकाज हम भेख पेरियो, क्षुधा काज सो मांगा।
स्यामी कहे सुणो सुखदेवजी, मोक्ष काज देह भांगा ।। १३ ।।

रामजी की प्राप्ति के लिये भेष लिया है। भूख मिटाने के लिए मांगते है। स्यामीजी मः से कह रहे है कि शरीर से मोक्ष प्राप्ति के लिए साधन करते है।

मा. प्रश्नः किसके काज गोत कुल छाडयो, कौन काज बन सेवो।
केह सुखरामजी सुणो स्यामीजी, जाब इसी को देवो ।। १४ ।।

तुमने गोत कुल को किसलिए छोडा है, किस लिए बन में रहते हो। मःफः है कि हे स्यामीजी इसका जवाब दो।

स्वामी वाच : बेहद काज गोत कुल छाडयो, राम काज बन सेवा।
स्यामी कहे सुणो सुखदेवजी, जवाब अन्त यो देवा॥ १५ ॥

ब्रह्म की प्राप्ति के लिये गोत कुल को छोडा है। रामजी की प्राप्ति के लिये बन में रहते है इसका यही जवाब है।

मा. प्रश्नः दोडया फिरो जगत के मांही, बैण विधो विध बोलो।
केह सुखदेवजी सुणो श्यामीजी, क्या हेरता डोलो।। १६ ।।

जगत में विचरते हो, वचन समझकर बोलते हो। मःफः है कि हे श्यामीजी किसको ढूंढते फिरते हो।

स्वामी वाचः दोडया फिरां मन का घाल्या, बैण टलण कूं बोला।
स्यामीजी कहे सुणो सुखदेवजी, सन्त हेरता डोला ।। १७ ।।

मन के विचारो से ही विचरते है, मन को वश में करने के लिए बोलते है। श्यामीजी ने महाराज से कहा है कि संतो की प्राप्ति के लिए फिरते है।

मा. प्रश्नः किसकूं दवा बेदवा देवो, किसकूं ज्ञान बतावो।
केह सुखदेवजी सुणो स्यामीजी, चुपक कोण सुं ल्यावो।। १८।।

किसका भला बुरा चाहते हो किसको ज्ञान बताते हो। मःफः है कि हे स्यामीजी मौन कैसे धारण करते हो।

स्वामी वाचः जग कूं दवा बेदवा देवां, मन कूं ज्ञान बतावां।
स्यामी कहे सुणो सुखदेवजी, आपो देख सम्भावा ।। १९।।

जगत को भला बुरा समझाते है, मन को ज्ञान बताते है। स्यामीजी मः से कह रहे है कि जैसे अपने को समझता है उसी माफिक रहना ही आपो देख संभाना है।

मा. प्रश्नः कौन तुमारी बेन भानजी, कौन तुमारी माता।
कहे सुखदेव सुणो स्यामीजी, किसे ख्याल रंग राता ।। २०।।

तुमारी बेन भाणजी व माता कौन है। हे स्यामी जी किस ध्यान में रत रहते हो।

स्वामी वाचः शरम हमारी बैण भानजी, सुरत हमारी माता।
स्यामी कहे ख्याल सिमरण के, सतशब्द सु राता ।। २१।।

स्यामीजी कह रहे है कि शरम बैण भाणजी व सुरत हमारी माता है। विधि से सुमरण कर सुरत के द्वारा शब्द का अनुभव करना ही सतशब्द सु राता है।

मा. प्रश्नः पेरो पगा खडावु खासा, जीव कीट कूं पेसो।
दरगे जवाब कहे सुखदेवजी, कहो कौन विध देसो ।। २२।।

तुमने जो खडावु पहन रखी है उससे जीव जन्तु दुख पाते है। मःफः है कि परमात्मा के दरबार में क्या जवाब दोगे।

स्वामी वाचः राम नाम शिवरण मेरे, आठ पोहर निरधारा।
स्यामी कहे कीट सो कीड़ी, पावे गत द्वारा ।। २३।।

स्यामी कह रहे है मेरे राम नाम का आठ पोहोर शिमरण निराधार होता है, कीट कीडे जो पैरो के नीचे आते है, उनकी गती हो जाती है।

मा. प्रश्नः कैसी ढाल ठांठरी बांधो, कौण शमसेर संभावो।
केह सुखदेवजी सुणो स्यामीजी, कौण पुरूष शीर बावो ।। २४।।

मः स्यामीजी से कह रहे है कि शरीर पर कैसे ढाल ठांठरी बांधते हो, कैसे तलवार समाते हो, किस पुरूष के शिर पर चलाते हो।

स्वामी वाचः धीरज ढाल ठांठरी बांधा, लिव शमसेर सम्भावा।
स्यामी कहे करम के ऊपर, आ शमसेर बुहावा ।। २५।।

धीरज धारण करना ही ढाल ठाठरी बांधना है। लिव बंध भजन करना ही तलवार संभाना है, श्यामी कह रहे है कि करमों का नाश करने के लिए यह चलाते है।

पांच हथियार जुगत का बान्ध्या, भेख राम को धारयो।
स्यामी कहे सुणो सुखदेवजी, हुलस मन मैं मारयो ।। २६।।

मत, श्रुत, अवध, मनपरचा व केवल ज्ञान की जुगत से जानकारी करना ही पांच हथियार बांधना है। रामजी की भक्ति करना ही भेख पहरना है। श्यामीजी कह रहे है हे मः भजन करने से

मन में जो खुशी हो रही है यही मन का मारना है।

मा. प्रश्नः धुणी मांय जीव सो जालो, नित जल जाय सतावो।
अे शिर करम बंधे नित स्वामी, के सुखदेव भेद बतावो।। २७।।

हमेशा धुणी में जीव जलाते हो, जल से नहाना धोना करते हो। उसमें भी जीव सताते हो, ये करम बंधते है इसका भेद बतावो।

स्वामी वाचः जल की देह जल ही की काया, जीव जल ही का होई।
स्यामी कहे भजन के नेडा, पाप आवे न कोई ।। २८।।

यह शरीर काया जल ही की है। जीव भी जल ही के है। श्यामीजी कहते है कि भजन करने से पापो का क्षय हो जाता है।

मा. प्रश्नः आवो स्वामी राम राम है, प्रेम प्रीत को भाई।
कहे सुखदेव त्रिगुटी लांगिया, बैठ बराबर आई।। २९।।

मःफः है कि हे श्यामी प्रेम प्रीत का राम राम है, त्रिगुटी याने पारब्रह्म से उपर के:पद में पहुंचने वाले को ही बराबर का ज्ञान करने वाला माना है।

पूरब दिशा चढया जे ऊंचा, खेंच पवन को सोई।
तो सुखदेव कहे स्यामीजी, देश मिले नही कोई ।। ३०।।

शंखनाल के रास्ते स्वांसा को खेंचकर ऊपर चढते है। मःफः है कि उनको के:पद की प्राप्ति नही होती। यही कोई देश का नही मिलना है।

देशी मिल्यां बिना चरचा सुं, कियां सुख नही पावो।
ताते कहे सुणो सुखदेवजी, जीम उलट घर जावो ।। ३१।।

अेक देशी मिले बिना चरचा करने से सुख नही मिलता। जैसे उसको जिमाकर घर भेज देना ही जीम उलट घर जाना है।

दशवें द्वार पुतियां स्यामी, तो तुम गुरू हमारा।
कह सुखराम ढोलिये आवो, मैं हूं शिष्य तुम्हारा ।। ३२।।

जब दशवें द्वार में पहुंचोगे तब गुरू पद की प्राप्ति हो जावेगी। मःफः है कि गुरू पद की प्राप्ति होने पर हमारा व तुम्हारा ज्ञान बराबर है। यही ढोलये आना है।

अनहद लांघ लंघी जे बारी, तो परदक्षिणा देवुं।
के सुखदेव सुणो स्यामीजी, नही तो शिष्य कर लेवुं ।। ३३।।

ब्रह्मण्ड में बिना किये जो शब्द ध्वनि हो रही है उसे अनहद कहते है। उसके उपर पारब्रह्म व केवल की बारी के आगे सतशब्द का अधर अनुभव होता है। उसको लांघकर आ:पद की प्राप्ति की है तो मैं परिक्रमा करता हूं। मःफः है कि नही तो आपकी स्थिति शिष्यो की तरह है।

सीखी बात आगली कहोगा, यारे करूं न कोई।
के सुखदेव तुमारे घर है, सो विधि कहो बजाई ।। ३४।।

सीखी हुई बातों को कहोगे तो मैं स्वीकार नही करता, आपको जो अनुभव शरीर में हुवा है, वो कहो।

ज्यांरे घर आनन्द धन हुवा, त्यां सु सुख पाया सोई।
के सुखदेव बखाणो लारे, कहो मिलेगा तोई ।। ३५।।

आनन्द पद की जिनको प्राप्ति हुई उन्हे ही आनन्द का अनुभव हुआ है। म:फ: है कि केवल वाणी से महिमा करने वालो को उस आनन्द का अनुभव नही होता।

त्रिगुटी लग शिष्य है मेरा, बारी लंगी सो भाई।
कह सुखदेव सुणो स्यामीजी, दशवें गुरूस होई ।। ३६।।

ब्रह्मण्ड व पारब्रह्म तक का साधन करने वाले शिष्य के जैसे है। दशवें द्वार याने केवल की बारी को पारकर के:पद आ:पद की प्राप्ति करना ही गुरूपद की प्राप्ति करना है।

ध्यान शब्द की सब कीमत में, जे समझत हो नांही।
कह सुखदेव रीस नही स्यामी, बेस ओठले जाही ।। ३७।।

म:फ: है कि ध्यान शब्द की बात नही समझते हो तो क्रोध मत करो और अलग जाकर बैठ जावो।

जे तुम अडो ज्ञान ले स्वामी, तो बलिहारी लेवुं।
के सुखदेव गुरू होय जासो, काय शिष्य कर लेवुं ।। ३८।।

अगर ज्ञान से जो के:पद का आपको अनुभव हुवा है तो आप धिन है। म:फ: है कि तो तुम्हे गुरू पद की प्राप्ति होना है। दूसरे पद शिष्य की तरह है।

ज्ञानी तो है शिष्य हमारा, भेदी सो गुरू भाई।
के सुखदेव अज्ञानी जुग में, ज्यांरी कुछ न काई ।। ३९।।

ज्ञानी है वो तो शिष्य की जैसे है। सतशब्द का भेद जानते है वो गुरू भाई है। म:फ: है कि अज्ञानियो के लिए कुछ नही कहना है।

ज्ञानी मिल्या ज्ञान मैं देवुं, भेदी कूं समझावुं।
के सुखदेव अज्ञानी आगे, हाथ जोड मैं आवुं ।। ४०।।

ज्ञानी मिलता है तो उसको ज्ञान देता हूं। सतशब्द के भेदी को समझाता हूं। अज्ञानी से मैं दूर रहता हूं।

देही पहल कहां थे स्यामी, कोण गेल होय आया।
के सुखदेव अरथ ओ दीजे, काय शिष्य होय भाया ।। ४१।।

शरीर के पहले कहां थे और किस रास्ते होकर आये हो। म:फ: है कि इसका जवाब दो नही तो शिष्य के रूप में ही हो।

जुग में फिरो डोलता स्यामी, ज्ञान जगत कूं दिया।
के सुखदेव नाम तुम लेवो, तको कहां क्या किया ।। ४२।।

जगत में फिरते हो जगत को ज्ञान देते हो। म:फ: है कि जो तुम नाम लेते हो उससे किस पद की प्राप्ति होती है।

साखी : राम राम सम्मान करिज्यो, हरिजन आया द्वारे।
कह सुखराम रीज तो लेणी, भाव भक्ति के सारे ।। ४३।।

भक्ति करने वाले जो हरिजन घर घर पधारते है उनसे राम राम करना ही सन्मान करना है। म:फ: है कि भक्ति का भेद तो उनसे भाव रखने पर ही मिलता है।

शिष्य की दशा तके तो चरणा, आंण लगो सब लोई।

के सुखराम तत है ऊंचो, सो कोई निमो न मोई ।। ४४।।

अगर केवल की बारी के नीचे हो तो जो शिष्य अवस्था में है, उनको तो केवल ग्यान को नमन करते रहना चाहिये। म:फ: है कि जिन्होंने के: पद की प्राप्ति कर ली है तो आप और हम भाई है।

नीचे तत रहया जो बैठा, तो बुजेगा बाता।
के सुखराम समझ कर रहियो, गेलो मिलेगा जाता ।। ४५।।

जिनका ज्ञान नीचा है वो ऊंचा ज्ञान वालो से नही पूछता है तो ऊंचा ज्ञान नही मिलता। म:फ: है कि उसको इस बात को समझ लेना चाहिये कि साधन करते हुये भी उसके आगे का रास्ता मिल जायेगा।

त्रगुटी लग बास है तेरा, तो तल ऊपर आवो।
के सुखराम अहूं धर बैठा, दरगा दाद न पावो ।। ४६।।

त्रगुटी तक भी तुम्हारा साधन है तो भी तुम नीचे हो। उपर पहुंचने का साधन करो। म:फ: है कि अहूं भाव धारण करने से उपर के:पद की प्राप्ति नही होती ।

ऊंचे तत उतारया दोषण, कम तत रे सो बैठा।
कह सुखराम न्याय सुं रैणा, देख राज की पैठा ।। ४७।।

ऊंचे ज्ञान को धारण करने पर भी नीचा ज्ञान धारण करता है उसको दोष है तो नीचे के ज्ञान वाला ऊंचा ज्ञान धारण करता है तो उसको दोष नही है। म:फ: है कि यही न्याय की बात है यही राज का कार्य है।

नीचे तत ढोलिये बेसे, ऊंचे तत चल आई।
के सुखराम दोष है वांकू, कहे सन्त सब भाई ।। ४८।।

नीचे ज्ञान वाला अहंभाव से उसको ऊंचा समझता है। ऊंचा ज्ञान करने वाला उसको छोडकर नीचा ज्ञान धारण करता है वो दोषी है सब सन्त कहते है।

हरिजन मिल्यां पारखां कीजे, साख शब्द की बाणी।
आ मनवार कहे सुखदेवजी, बोलो तत पिछाणी ।। ४९।।

हरिजन याने सन्तो की परीक्षा साख शब्द व उनकी वाणी से करना चाहिये। म:फ: है कि उनसे ब्रह्म प्राप्ति का ज्ञान प्राप्त करो। यही उनकी मनवार है।

दरगे दाद सांच सुं पास्यां, झूंठ कयां हर खिजे।
के सुखराम जहां लग पूगा, सोई जवाब सत दीजे ।। ५०।।

परमात्मा की प्राप्ति सत की भक्ति से होती है। झूंठ बोलने से परमात्मा नाराज होते है। म:फ: है कि जहां तक की पहुंच है वो सत कहना चाहिये।

साधा कहो सेनांणी वांकी, मैं बुजण कूं आया।
कह सुखराम ढोलिया छाडो, काय अरथ दे भाया ।। ५१।।

म: सन्तो से फ: है कि के:पद आ:पद की प्राप्ति कैसे होती है यह मैं तुम्हे पूछता हूं कि नही जानते हो तो अहंकार को छोडो या अरथ बतावो।

गुरूमुखी होय ज्ञान जो माने, समझ सोच रे भाई।
कह सुखराम अरथ सो दीजे, काय बेस तल आई ।। ५२।।

संत अणभै ग्यान गुरूदेव के बताये माफिक ज्ञान धारण कर साधना करना ही गुरूमुखी होना है। अणभै ग्यान कहे उस ज्ञान के माफिक अर्थ नही आता है तो आप नीचे बैठ जाओ।

मैं बुजु तुम कहो ऊचारी, तुम बुजो मैं भाखुं।
कह सुखराम मिल्या से मुंडे, भरम काय को राखुं ।।५३।।

मैं पूछता हूं बतावो, तुम पूछो मैं कहता हूं। म:फ: है कि सन्मुख मिलने पर किसी तरह की कसर किसलिये रखे।

बोलो सत ऊचारो बांणी, अहूं भाव कूं छोडो।
के सुखराम साध सु मिल्या, कुबुद्धि रांड कूं काडो ।।५४।।

अहंभाव को छोडकर सत बोलो। म:फ: है कि साध से मिलने पर कुबुद्धि को छोड दो।

हंस हंस मिलो करोनी चरचा, हम आया तुम पासे।
कह सुखराम पुष्प को क्या गुण, छेडया नेक न बासे।।५५।।

खुश होकर मिलो, ज्ञान चरचा करो, हम तुम्हारे पास आये है। म:फ: है कि पुष्प का क्या गुण है छेडने से उसकी सुगन्ध नही आवे तो किस काम का है। ऐसे ही सन्त से मिलने पर ज्ञान चरचा नही करे तो मिलने का क्या गुण है।

हरिजन चाल जिनाके आया, आ मनवार करिजे।
कह सुखराम भाव सो बाणी, अन्न जल आन धरिजे ।।५६।।

जिनके यहां जन याने सन्ते पधारते है तो उनको भाव से वचन बोलकर अन्न जल से सेवा करनी चाहिये और ग्यान से नाव रूपी जल निज नांव रूपी अन्न से आत्म ग्यान का आदर करना चाहिये।

चरचा मांय पक्ष नही लीजे, ज्ञान कहे सो केणा।
कह सुखराम न्याय सो चोडे, पकड खाट तल देणा ।। ५७।।

म:फ: है कि ज्ञान चरचा में पक्ष की बात नहीं करनी चाहिये। ग्यान जो कहता है वो ही करना चाहिये। पक्ष नही करनी चाहिये, यही सच्चा न्याय है।

दास भाव सारो कर लीजे, निवण खिवण सुं रेणा।
कह सुखराम बेस चरचा में, पखे बात नही केणा।।५८।।

म:फ: है कि नम्रता धारण करके नम्रता व क्षमा में रहना चाहिये। ग्यान चरचा में पक्ष की बात नही करनी चाहिये।

चरचा मांही लाठियां आवे, तोहि राम न कोपे।
कह सुखराम भक्ति है मेरी, संत सूर पग रोपे ।।४९।।

ज्ञान चरचा में किसी को आवेश आ जावे तो भी रामजी नाराज नही होते। म:फ: है कि केवल भक्ति को शूरवीर संत ही धारण करते है।

देवे भेद कसर सो काढे, आप कढावे भाई।
कह सुखराम सन्त सो सुरा, भोलप रखे न मांही ।।६०।।

म:फ: है कि सब कसर निकालकर ज्ञान का भेद देवे व अपनी कसर हो तो निकाल देवे। म:फ: है कि शूरवीर वो संत है जो कसर निकालने में कोई गलती नही रखे।

।। इति श्री स्यामी का संवाद सम्पूर्ण।।

卐 गर्भावली ग्रन्थ 卐

चित्रावली गर्भावली, सुणज्यो चित लगाय। जन सुखदवेजी बोलिया, कसर न राखी काय ।।१।।

गर्भ में जीव जो दुख भोगता आया है, उस दुख को याद करना, म: ने दुखो का बखाण करने में कोई कसर नहीं रखी है।

मेरी बुद्धि सुक्ष्म है, मोपे कहयो न जाय। हरि गुरू कृपा कीजिये, जब सब देवुं सुणाय ।।२।।

मेरी बुद्धि छोटी है, मेरे से कहा नही जाता, रामजी की व गुरू की कृपा होने से ही सब सुना सकता हूं।

गरभवास का भेद रे, सब सुण लिज्यो लोय। अब सुखदेव ना भुलियो, मरे फिर त्यारी होय ।।३।।

सब संसार वाले गरभ वास का भेद सुणो। म:फ: है कि उस दुख को मत भूलो, अगर भूल गये तो मरे और फिर गरभ में जाना पडेगा।

जन सुखदेवजी ज्ञानी सुणो, कसके अन्तर मांय ।
सब सुख छाडो जुग का, ले हरि पद संभाय।।४।।

म:फ: है कि हे ज्ञानियो सुणो व अन्तर में विचार करो, जगत के सब सुखो को छोडकर परमात्मा के पद की प्राप्ति करो।

मूढ मूरख को जीव रे, सुणे न समझे आय।
जन सुखिया जुग सुख दुख में, देवे जन्म गमाय ।।५।।

मूरख मनुष्य न तो ज्ञान सुनता है न समझता है। म: फ: है कि जगत के सुख दुख में ही मनुष्य जनम को गमा देता है।

जन्म अमोलक पावियो, जे जाणे कोई भेव। जन सुखिया इण देह में, मिले देव को देव ।।६।।

यह मनुष्य जन्म अमूल्य है जो कोई इसके प्राक्रम को जाने तो इस शरीर में आत्म देव को परमात्म देव की प्राप्ति हो सकती है।

अबके अवसर चूकियां, लख चौरासी जाय।
जन सुखिया जहां तहां पडे, गरभवास के मांय ।।७।।

इस मनुष्य जन्म में परमात्मा के पद की प्राप्ति नहीं हुई तो चौरासी का दुख भोगना पडेगा व जहां तहां गरभ का दुख भोगना पडेगा।

गरभवास की ताप से, कांपे सुर नर देव। जन सुखिया भय मानकर, लग्या ब्रह्म की सेव ।।८।।

गरभवास के दुख से देवता मनुष्य सब कांपते है। म: फ: है कि गर्भ के दुख के डर से ब्रह्म की भक्ति करते है।

ब्रह्म ध्यान में गरक है, गाले पिण्ड शरीर। सुखदेव गरभ का ज्ञान में, मन सो धरे न धीर ।।९।।

ब्रह्म ध्यान याने के: पद आ: पद की प्राप्ति जीते जी सतशब्द के साथ पांच तत्वों के शरीर से अलग होकर उस पद की प्राप्ति करना ही पिण्ड शरीर को गालना व ब्रह्म ध्यान में गरक होना है। म:फ: है कि जिस ज्ञान से गर्भ में आना जाना नही मिटता उस ज्ञान से मन प्रसन्न नही होता।

ताला बेली ऊपजे, सुणो गरभ की बात। जन सुखिया सब छाड दे, शकल जुग की तांत ।।१०।।

गरभवास के दुख को सुनकर मन में बडा भारी भय लगता है इसलिए म:फ: है कि जगत में स्नेह मोह नही करते व भजन में लग जाते है।

सोच करे गरभवास को, यह दुख सहया न जाय।
जन सुखियां यूं ऊपजे, मिले साध सूं आय ।। ११ ।।

मन में ऐसा सोच करते है कि गरभ का दुख सहन नही हो सकेगा। ऐसा विचार कर जो संत सत स्वरूप की भक्ति का ज्ञान बताते है, उस ज्ञान को धारण करते है।

साध बडा परमारथी, इण सम और न कोय ।
जन सुखिया गरभवास की, ताप मिटावे जोय ।। १२ ।।

सतशब्द का ज्ञान देने वाले अणभै की परवानगी लाने वाले साधु बडे परमारथी है। उनके बराबर कोई नही है। म:फ: है कि ऐसे संत ही जन्म मरण से रहित कर सकते है।

ऐसा दे गुरू ज्ञान रे, सब सुख आनन्द होय। जन सुखिया गर्भवास में, फेर न आवे कोय ।। १३ ।।

सतस्वरूप आ:पद की भक्ति बताने वाले केवली संतो का ज्ञान धारण करने से अखण्ड आनन्द मिलता है और गरभवास का दुख नही भोगना पडता।

ब्रह्म ज्ञानी गुरूदेव की, यह सब बातां होय।
जन सुखिया मत भूलज्यो, हद गुरू किया कोय।। १४ ।।

जो सन्त अणभै वाणी की परवानगी लाने वाले के: पद आ: पद की प्राप्ति कराने वाले है। उनका ज्ञान धारण करो। म:फ: है कि जो तीन लोको में रखने वाले गुरू है उसका ज्ञान मत धारण करो और सतगुरू का ग्यान मत भूलो।

ब्रह्म ज्ञानी गुरु भेटिया, मिले ब्रह्म में जाय।
जन सुखिया गरभवास में, पडे कबु नही आय ।। १५ ।।

जो सतस्वरूप की भक्ति कराने वाले केवली संत मिलते है तब ही ब्रह्म पद की प्राप्ति होती है। म:फ: है कि वो जीव कभी गरभवास में नही पडता है।

वेद पुकारे चार ये, इण सम दुख न कोय। जन सुखिया गरभवास को, सोच करे नर लोय ।। १६ ।।

चारों वेद भी यही कहते है कि गरभवास के दुख के समान कोई दुख नही है। म:फ: है कि इसीलिए मनुष्य गर्भवास में पडने से डरते है।

मरग जल संसार है, देखर भूला जाय। जनसुखिया आकार रे, सब ही झूंठा थाय ।। १७ ।।

संसार मृगजल के समान असत है, संसार के नाशवान सुख को सुख मानकर परमात्मा को भूल रहे है। जो नेत्रो द्वारा दिखता है व इन्द्रियो द्वारा अनुभव होता है, वो सब असत है, चाहे वो कैसा भी आकार हो।

आकारी को सेविया, गरभ ताप नही जाय।
जन सुखिया निराकार रे, छिन में देत मिटाय ।। १८ ।।

जिस आत्मा ने शरीर रूपी भेष पहन रखा है उनके आधीन रहने से जनम मरण नही मिटता। म:फ: है कि निराकार की भक्ति करने से ही जन्म मरण का दुख मिटता है।

निराकर की सेव कर, आकारी गुरूभाव। जनसुखिया कर भजन रे, ब्रह्म मिलण के चाव ।। १९ ।।

सतगुरू सुखरामजी के ग्यान रूपी आकारी का गुरूभाव रखकर निराकार की भक्ति करो। म:फ: है कि ब्रह्म पद की प्राप्ति के लिए सतशब्द ने: अंच्छर की भक्ति करो।

भजन कियाँ गरभवास की, मिटे जम की त्रास।

जनसुखिया सब काटकर, बसे ब्रह्म के पास।। २०।।

सतगुरू विधि से भजन करने से ही गरभवास व नरको का दुख मिटता है। म:फ: है कि कर्मो का नाश होकर ब्रह्म की प्राप्ति करना ही ब्रह्म के पास बसना है।

सब दुख काटया चाहिये, ब्रह्म ज्ञान उर धार।
जन सुखिया निश दिन रटे, चले नाम की लार ।। २१।।

सब दुखो से छुटकारा पाना है तो पारब्रह्म परमात्मा के निज नाम सतशब्द का ज्ञान धारण करो। म:फ: है कि दिन रात भजन करके नाम के साथ के: पद आ: पद की प्राप्ति करना ही नाम के लारे चलना है।

गरभवास में आवणो, जहां वहां हुवे हवाल। जन सुखिया कर भजन रे, गर्भवास कूं पाल ।। २२।।

गर्भवास में आने पर जहां तहां दुख भोगना पडता है। म:फ: है कि सतस्वरूप के: पद आ: पद की प्राप्ति का भजन कर गर्भवास में आने से बचो।

गरभवास में दुख घणो, ऊंधे मुख मल मांय।
जनसुखिया यों सोचकर, रहो राम लिव लाय ।। २३।।

गरभवास में बहुत दुख है। ऊंधे मुंह मल मूत्र में झूलना पडता है। म:फ: है कि यह सोचकर रामजी का लिव बन्ध भजन करो।

चौपाई :- सुण रे जीव शब्द तूं मेरा, गरभवास का कहूं दुख तेरा।
नव नव मास गरभ के मांही, ऊंधे मुख तूं झूले जाई ।। २४।।

हे जीव तूं मेरे वचनों को सुण, गरभवास के तुझे दुख कहता हूं। गरभवास में तुझे ऊंधे मुंह से झूलना पडेगा।

मल मूत्र सब ही ले खावे, निश दिन पडयो नरक में जावे।
जठरा अग्नि की आंच करारी, वे दुख सहे शिर पर भारी ।। २५।।

गर्भवास में मल मूत्र खाना पडता है, व रात दिन नरक में रहना पडता है। जठरा अग्नि का दुख बहुत है। उन दुखो को सहना पडेगा।

शगोच्यो रहे गरभ के मांही, पांव पसारियां जावे नांही।
गर्भवास में वे दुख लिया, वे दिन भूल मति तूं जिया ।। २६।।

गर्भवास में सिकुडा हुआ रहना पडता है, पांव भी नही पसारे जाते। म:फ: है कि हे जीव गर्भवास के ऐसे दुखो को तुम मत भूल।

गर्भवास में करे पुकारा, सुणो हो सांई शिरजण हारा।
दूजा दूख मोय भुगतावो, गर्भवास से बाहिर लावो।। २७।।

गर्भवास मे जीव परमात्मा से प्रार्थना करता है कि दूसरे दुख मुझे कितने ही दो परन्तु गर्भवास से बाहर कर दो।

सांई त्रास अब मोय सुण लिजे, गर्भवास से बाहिर कीजे।
अब तो बेखातर मैं हुवा, हर हर करूं रहूं नही जुवा ।। २८।।

हे परमात्मा मेरे दुखो को सुनो व गरभवास से बाहिर करो। पहले तो मैं आपकी भक्ति को भूल गया परन्तु एक क्षण भी आपके नाम को नही भूलूंगा।

गरभवास की मत दे त्रासा, अब तो रहूं हरि के पासा।
हरि भगती करूं होय गाढो, अब के गरभवास से काढो ।। २९।।

मुझे गर्भवास का दुख मत दो, मैं अब दृढता से राम भजन करूंगा। आपको एक क्षण भी नही भूलूंगा आप मुझे बाहिर कर दो।

अब के बाहिर करो बसेरा, निस दिन जाप करूं हरि तेरा।
तुझे भूल कभी नही जावुं, जे हरि अब के बाहिर आवुं ।। ३०।।

अबके जब मैं गर्भ के बाहर आवूंगा। रात दिन भजन करूंगा, हे परमात्मा अब बाहर आने पर आपको कभी नही भूलूंगा।

अेसा वचन गरभ के मांही, हरि से कोल किया था यांही।
हरि को छोड आन नही ध्यावुं, जे हरि अबके बाहिर आवुं ।। ३१।।

इस तरह जीव ने गरभवास में परमात्मा से वादा किया था। अबके गर्भ से बाहिर आने पर आपकी भक्ति छोडकर आन याने नाशवान शरीर के अधीन रहकर भक्ति नही करूंगा।

त्राही त्राही अब रहयो पुकारी, गरभवास का है दुख भारी ।
हे हरि मुझ पर किरपा कीजे, गर्भवास सुं बाहिर लीजे ।। ३२।।

इस तरह परमात्मा से बार बार प्रार्थना करता है कि गरभवास का बहुत दुख है, परमात्मा मेरे पर कृपा कर गर्भ से बाहर करिये।

मैं तो दुखी बोहोत विध स्वामी, तुम सब जानो अन्तरजामी।
तुम सुं कछु छिपे नही कांही, रोम रोम कहो हर है मांही ।। ३३।।

हे परमात्मा मैं तो बहुत दुखी हूं, हे अन्तरजामी आप सब जानते है। आप से कुछ छिपा नही है। रोम रोम में परमात्मा व्यापक है।

अन्तर की सब सारी जांणो, बाहिर भीतर सबे पिछाणो।
मेरा दुख कहां में गावुं, कर कृपा हरि बाहिर आवुं ।। ३४।।

हे परमात्मा आप अन्तर की बाहर की भीतर की सब जानते हो। मेरे दुखो को कहां तक कहूं, हे परमात्मा कृपा करो जिससे मैं बाहर आ जावुं।

धनी घाटी की ताप करारी, कृपा कर हरि काड मुरारी।
अबकी घाट गेल है थोरी, किस विध निकलन होगी मोरी ।। ३५।।

गर्भवास से निकलने का बडा भारी दुख है। हे परमात्मा कृपा कर बाहिर निकालो, रास्ता कठिन है, जगह थोडी है, मेरा कैसे निकलना होगा।

रोम रोम सब धूजे मेरा, किस बिध प्रभु बाहिर करसुं डेरा ।
आ आंण बणी शिर अेसी, चन्द्र सूर्य ग्राह तेसी ।। ३६।।

मेरा रोम रोम थर्रा रहा है कि कैसे में बाहर आवूंगा। मेरे पर ऐसा दुख आ पड़ा है जैसे ग्रहण के समय चन्द्र सूर्य का होता है।

अबकी बैर पडी मुज मांही, तुम बिन कौन छुडाय गुंसाई।
कर कृपा हरि बाहर लिजे, अगला गुन्हा बगस सब दीजे।। ३७।।

इस समय मुझ पर बहुत दुख आ पडा है, हे परमात्मा आपके बिना इस दुख से कौन छुटकारा करायेगा हे परमात्मा कृपा कर बाहिर करो। अगले सब दोषो को माफ कर दो।

।। इति श्री गर्भावली ग्रन्थ सम्पूर्ण।।

卐 मूल ज्ञान का ग्रन्थ 卐

प्रश्नः सवैया :- कहोजी जीव परालब्द कैसे, तिथ बधी सोइ बात बतावो।
आव की मेर बंधे दम मोवण, तनकूं छाड किसी विधी जावे।।
शुभ होय अशुभ अनेंको, कन धनी तुज कौन कहावे।
सोच विचार कहे सुखदेवजी, ज्ञानी हुवे सोइ भेव बतावे ।। १ ।।

मः प्रश्न करते है कि जीव का प्रालब्ध कैसे बना है, स्वांसा के आधार से आयु कैसे बनी है, तिथ याने आयु की अवधि कैसे बनी है, यह बतावो यह शरीर छोडकर कैसे जाता है, अच्छी व बुरी करणियां अनेक तरह की है वो कैसे होती है, तुम कौन हो व स्वामी कौन है। मःफः है कि ज्ञान से सोच विचार कर इसका अर्थ बतावो।

उत्तर : सुणोजी जीव प्रालब्ध अैसे, हाथ करी सब शीष लिखिजे।
आव मरजाद सबे तन पाछे, दम को सोज प्रवाण लिखिजे।।
किया सो देह दिया सब आपे, खूट गया तत्काल सिधाया।
सोच विचार कह सुखदेवजी, जीव के नही धणी शीर भाया ।। २ ।।

मःफः है कि सुणो जीव जैसी करणियां करता है वैसा ही उसका प्रालब्ध बनता है, यही हाथ करी सब शीष लिखिजे है। आयु की अवधि जैसे जैसा शरीर मिलता है उसी माफिक होती है। आयु की अवधि स्वांसा पर है, शरीर द्वारा जैसे जैसे कर्म व करणियां होती है उसी माफिक फल मिलता है। आयु समाप्त होने पर शरीर छूट जाता है यही तत्काल सिधाया है। मःफः है कि जीव के शिर पर कोई स्वामी नही है।

प्रश्न : जग की गत कहो सब मोही, कौन है जीव ऊपावण हारा।
सुख सो दुख सबे विष जोला, परा सो ब्रह्म कह सब न्यारा।।
तार न मार नही गत ओपत, सुन्न सरूपत बेत विचारा।
सोच विचार कहे सुखदेवजी, जीव किणे वश डोलण हारा ।। ३ ।।

मः प्रश्न कर रहे है कि जगत में जीव को पैदा करने वाले कौन है। जीव को सुख दुख व विषयो का दुख कैसे होता है, पारब्रह्म परमात्मा के पद को सब अलग बताते है, उस पद में तारना मारना व जन्म मरण नही है। वो पद निरंजण निराकर सत चेतन सर्व व्यापक सबसे न्यारा है। मःफ है कि यह जीव किसके वश डोलता है।

उत्तर : जग की गत सो ज्ञान विचारा, तत सु जीव उपजे है आई।
सुख सो दुख किया नर हाथे, तरखा सो मन उपाव है लाई।।
किया सो करम बंधे फिर माथे, ताही आधीनत डोले है आई।
सोच विचार कह सुखदेवजी, जीव स ब्रह्म नही दोय भाई।। ४।।

जगत की रचना का ज्ञान से विचार करो, ब्रह्म से ही सब जीवो की उत्पति हुई है। मनुष्य अपने हाथ से ही सुख दुख की प्राप्ति करता है। मन से तृष्णा उपजती है, जैसे काम करता है। वैसा फल भोगना पडता है, यही माथे बंधना है। कर्मों के आधीन हो कई योनियों में सुख दुख भोगता है, जीव तो ब्रह्म ही है। हे भाई दो नही है।

प्रश्न : पांच तत्व कैसे बने?

उत्तर : सुन्न में आद आकाश बंध्यो जु, ताय के झोकत पवन चाली।
बाय सु तेज पडयो कण तोय, महीज दूधर थर कण खाली।।
पांच सो तत बण्या जग ऐसे, जीव अनन्त ऊपना है माली।
सोच विचार कह सुखदेवजी, मूल निधान साख इम चाली ।।५।।

सुन्न याने निरंजण निराकर सतचेतन के आधार पर आकाश है। आकाश से हवा, हवा से तेज याने अग्नि, अग्नि से जल व जल से पृथ्वी बनी है। पानी पर पृथ्वी ऐसे है जैसे दूध पर थर। इस तरह पांच तत्वो से जगत बना है, इसी से अनन्त जीवों की उत्पति हुई है। म: फ: है कि इस तरह सृष्टि की उत्पति का कार्य चला है।

प्रश्न : राक्षस भूत सबे सिद्ध साधक, पहिली सो लोय क देव बण्यो है।
नर सो नार गुरू सुण चेला, पहल पढयो कन वेद गुणयो है।।
राव सो रंक भले सुण भूपत, पेल सो हाक क कान सुणयो है।
सोच विचार कह सुखदेवजी, जीव में पहल सो कोण बण्यो है।।६।।

म: प्रश्न कर रहे है कि राक्षस भूत सिद्ध साधक पहले यह बने है या देवता बने है, पहले पुरूष हुआ या स्त्री, पहले गुरू हुआ या चेला, पहले पढा है या बेदो को गुणा है, पहले राजा हुआ है या रंक या सुणो बादशाह हुआ है। पहले आवाज हुई या कानो से सुना है। म:फ: है कि सोच विचार कर कहो, इनमें पहले कौन बना है।

उत्तर : रेत सो पहल, पछे दूजा दानव, नर के पहले नार बणी है।
पहल स हाक, सुणे जग लारे, करणी कामस होय धणी है।।
शिष सो सुत गुणे, पढज पेलात ता पीछे मंड अेम बणी है।
सोच विचार कह सुखदेवजी, सुन्न सरूपत आद धणी है ।।७।।

पहले रैयत बनी है पीछे देवता व राक्षस बने है। गर्भ में पहले आकार बनता है फिर चेतना का आना ही नर के पहले नार का बनना है। पहले आवाज निकलती है फिर कान सुनते है। जैसे करणी कर्म करोगे वैसा फल भोगना पडेगा, यही धणी होना है। शिष्य व लडका पहले गुणता है। पीछे पढता है इस प्रकार इस सृष्टि की रचना हुई है। म:फ: है कि सुन्न सरूपत याने निरंजण निराकार सतचेतन आनन्द आदी से सबके उसी का आधार है।

श्लोक :- निरलेप निरदोष निराधार देवा, ता मांय अंछया ऊतपत भेवा।
ता बोल ओऊं से सोऊं उचारे, कह सुख विष्णु रूप तबे देव धारे ।।१।।

पारब्रह्म परमात्मा का पद निरलेप निरदोष निराधार है उनकी इच्छा से ही सृष्टि की उत्पति हुई है उनसे ही ओऊं आत्मा सोऊं याने ब्रह्मकी उत्पति है। इस तरह म:फ: है कि विष्णु की उत्पति हुई।

ता नाभ कमलो ब्रह्मा प्रकाशे, शिव दुज भृकुटी तां होय भाषे।
आकाश पवना तेजोस तोय, कह सुख पहिली अे तत जोय ।।२।।

फिर विष्णु भगवान की नाभि से ब्रह्माजी भगवान की उत्पत्ति हुई। उसके पश्चात ब्रह्माजी की भृकुटि से शिवजी की उत्पत्ति हुई। लेकिन इनकी उत्पत्ति से पहले ही पांच तत्व (आकाश, वायु, तेज, पानी, पृथ्वी) बने।

धर तत पहिली देह तन किया, नर नार बेरा आकार दिया।

इंड खांण, आकूंर, जर खांण है तो, कह सुखिया होय कर पंथ बेतो ।। ३ ।।

पृथ्वी तत से ये सब शरीर बने है। स्त्री पुरूष का आकार बना है। पांच तत्वों से इण्ड अंकुर व जर खाण बने है। म:फ: है कि इस प्रकार सृष्टि की रचना हुई है।

बोह जीव कहता बिन पार होई, लख जात बियासी दोयस जोई।
ब्यावो चावो नामो न मेला, कह सुख युं जीव सर्व जात भेला ।। ४ ।।

जिसका कोई पार नही ऐसे अनन्त जीव है। चोरासी लाख योनियां है। इस तरह सब जाति के मनुष्य शामिल थे। न ब्याव था न चाव था न मेला था।

हुक्मो न हासल ना ज्ञान कोई, देवो न शोभा परब्रह्म लोई।
तब सोच ब्रह्मा औतार धारे, कह सुख करणी किसब ऊचारे ।। ५ ।।

न हुक्म था, न हासल था, न ग्यान था, न देवताओं की भक्ति थी, न पारब्रह्म की भक्ति थी, तब ब्रह्माजी औतार धारण करके करणी व किसबों का ज्ञान दिया।

शेष अठयासी सुत जन आया, ते जग ज्ञानो देणन आया।
तब सोच ब्रह्मा बोहो भांत कियो, कह सुखदेव जब शीव ज्ञान दियो ।। ६ ।।

जगत को ज्ञान देने के लिए अठयासी हजार ऋषियो का प्रादुर्भाव हुआ, जब ब्रह्माजी इस पर विचार करने लगे तो म:फ: है कि पारब्रह्म से हंस अवतार लेकर आये और ब्रह्माजी को ब्रह्म के नाम का ग्यान दिया।

धर देह मानव जग मांय चालो, सब जीव घेरो विध ढोल घालो।
ध्यानोन ज्ञानों सब बेत कीजे, कह सुख देखी सब जीव रीजे ।। ७ ।।

मनुष्य शरीर धारण कर जगत में चलो और सब जीवों को ऐसे ज्ञान व ध्यान की विधि बतलावो, जिससे सब जीव उसमें रीज प्रसन्न होकर उसमें लग जावे।

तब दुज शिव साम विध वेत किया, दिश चार जोधा औतार लिया।
बोह पहुंच भारी बलबन्त होई, कह सुख सब जीव गह पास सोई ।। ८ ।।

तब ब्रह्मा, विष्णु, महादेव ने ऐसी ज्ञान विधिये बतलाई, चारो दिशाओं में चारो दिगपालो का औतार हुवा इन दिगपालो की बहुत पहुंच थी व बहुत बलवान थे। म:फ: है कि इन्होंने जब जीवों को करणी कर्मो में लगा दिया यही गह पास लोई है।

प्रथम कृषो देह व्यवहार सारो, संज सुत आवध गह कूट मारो।
हुक्मो न हासल तां दिन किया, कह सुख औतार कासब लिया ।। ९ ।।

पहले शरीर का व्यवहार का व खेती का ज्ञान दिया व मारने कूटने का संज सूत हथियार व हुक्म हासल उस दिन बने। जब कश्यपजी ने अवतार लिया।

तब राज रीतां घोडाज हाथी, सुख सेज अेवास बोह जोध साथी।
वां चार बरणा गह जात पाडी, कह सुख यूं मांय छतीस बाडी ।। १० ।।

राज की रीति रिवाज हाथी घोडे महल सुखों के साधन बहुत योद्धा चार वर्ण छतीस जाति इस तरह बनाई।

सब लोय किसब बहु भांत सारा, भिन्न भिन्न आपो दिया विचारा।
तब जीव किसबो बोह बुध आई, कह सुख या विध ढोल लगाई ।। ११ ।।

सब मनुष्य अपना किसब बहुत तरह से करने लगे। सबको अपना कार्य करने का ज्ञान दिया। जब मनुष्यो को अपना किसब करने की बुद्धि आई। म:फ: है कि इस तरह सबको अपने काम में लगा दिया।

सब जीव हासल देह बुहार खेचे, देवो न महिमा नामो न लेवे।
तब सोच मन मांय या विध सारी, कह सुख ब्रह्मा हरि आवो मुरारी ।। १२।।

सब मनुष्य देह के व्यौहार में लग गये न तो देवताओं की भक्ति का ज्ञान है न परमात्मा का नाम लेते है। तब ब्रह्माजी ने परमात्मा से प्रार्थना की कि आप ज्ञान रूप से हमारे में प्रकट होवो।

तब ज्ञान बाणी मुख च्यार बोल्या, आदो न अन्तो सब ताक खोल्या।
चहूं फेर लोई सब चाल आवे, कह सुख ज्ञान सब धार जावे ।। १३।।

ब्रह्माजी ने चार मुखारबिन्दों से चार वेदो का ज्ञान उच्चारण किया, आदि से लेकर अंत तक सब ज्ञान दिया। चारो दिशाओं से मनुष्य आकर यह ज्ञान धारण करने लगे।

पूर्वोज मुख ऋगवेद बोले, यजुरोज दिक्षण बिध ताक खोले।
उत्रोज अर्थवण पिछमोज सामा, कह सुख निगमो ये चार धामा ।। १४।।

पूर्व के मुख से ऋगवेद, दक्षिण मुख से यर्जुवेद, उतर मुख से अर्थववेद व पछिम मुख से सामवेद का उच्चारण किया। म:फ: है कि इस तरह चारो वेद बनाये है।

सेवाज पूजा पुन बिध पापं, ज्ञानोस ध्यानो ब्रह्मोस जापं।
करणिस क्रिया सब नाम भाखे, कह सुख जीव सब शीष परब्रह्म राखे ।। १५।।

ब्रह्माजी ने वेदो में सेवा पूजा करना पुन्न व पाप की विधि का ज्ञान ब्रह्म की भक्ति करणी व क्रियाये सब नामों के शिमरण की विधि बतलाई। म:फ: है कि इन सबके उपर ब्रह्म की भक्ति बताई।

ध्यानोस ज्ञानो सब ताक खोले, परब्रह्म भेवा बहु छाण बोले।
गुरूदेव धरमो बिध गम दाख्या, कह सुख ध्यानो परब्रह्म भाख्या ।। १६।।

ज्ञान ध्यान करने की सब साधना बताई। परब्रह्म की भक्ति करने का बहुत तरह से उपदेश दिया। गुरूधरम की विधि का ज्ञान बताया। म:फ: है कि पारब्रह्म का ध्यान करने की विधि बताई।

कण कण सोजी सब नाम दिया, आगोन पाछो सुख सोज लिया।
जे उण बाता बोह जग मांही, कह सुख आ गम भाख सुणाई ।। १७।।

जितनी चीजे संसार में है। सबके नाम अलग अलग रखे, आगे पीछे जो भी सुख मिलने वाले है। उनकी प्राप्ति का ज्ञान बताया। जगत में जो भी पहले होने वाला है ब्रह्माजी ने उसे पहले ही बता दिया।

पढबोस गुणबो अंछर सारा, ता दिन ब्रह्मा सेंग उचारा।
सब मंड चीजां सुरलोक लोई, कह सुख बावन हर्फास जोई ।। १८।।

पढना व सब अक्षरो का उच्चारण करना सृष्टि की सब चीजे देवताओं के लोको का वर्णन सब बावन अक्षरो में आ जाते है। ऐसा म:फ: है।

गह चार अडतीस अे अंक भाख्या, सब मांड चीजां कण सोज राख्या।
जे मुख बोली कह जीभ बांणी, सो सुख बावन मांय बखाणी ।। १९।।

चारो वेदो में जगत में सुख कैसे प्राप्त हो उनका अलग-अलग वर्णन किया, जिससे लोगों में भक्ति के प्रति भ्रम उत्पन्न हो गया। मुंह से बोलना वाणी से उच्चारण करना, म:फ: है कि ये सब बावन अक्षरों में बोले जाते है।

मुक्तिस मोखो गत ज्ञान भेवा, ओऊं सोऊं पद तत देवा।
जोगोस जिगना भक्तिस विधो, कह सुख सोजी सब भाख सिधो ।। २०।।

मुक्ति मोक्ष स्वर्ग की प्राप्ति का ज्ञान का भेद, ओऊं सोऊं का जपा अजपा, ब्रह्म पद की प्राप्ति का भेद, योग, यज्ञ, भक्ति का ज्ञान, म:फ: है कि सबका वर्णन किया।

सब ज्ञान ध्यान गुरूशिष भेवा, पूजासपाती, नामोस लेवा।
तालान कूंची सब ज्ञान खोले, कह सुख दुजंग बोह भांत बोले ।। २१।।

सब तरह का ज्ञान करने की विधि व गुरूशिष्य का भेद पूजा करने की विधि व लेना सब तरह के ज्ञान का भेद बताया। म:फ: है कि ब्रह्माजी ने कई तरह से समझाया।

सब जीव समजा गत गेल लागा, बहुत ज्ञान भाख्यो तब भरम भागा।
पशु मन बुधंग सब शिष्ट लोई, कह सुख या विध दुज समोई ।। २२।।

सब जीवो ने ज्ञान को समझकर धारण किया, बहुत तरह से ज्ञान समझाया जब सबका भरम दूर हुवा जगत की पशु जैसी बुद्धि थी। म:फ: है कि इस तरह ब्रह्माजी ने सब विधि बताई।

बरणोज चारूं तां दिन भाखे, मुख ज्ञान ब्रह्मा खट धरम राखे।
किरयास करणी दे बुहार बोले, तत ध्यान सेवा त्रिगुटीज खोले ।। २३।।

चारो वर्णो के धर्म का वर्णन किया, ब्रह्माजी ने खट दरशणियों के धर्म का वर्णन किया, क्रिया करणी का, शरीर के व्यौहार का, ब्रह्म का ध्यान करने की विधि त्रिकुटी में बताई।

सो सुत आये विध हेत आयो, तां शिर अपनो सरूप पेरायो।
सब जीव घेरी दुज पास लाया, कह सुख सुत हेत चरणा लगाया ।। २४।।

ब्रह्माजी ने अठयासी हजार ऋषी मुनियों को अपना ज्ञान देने का अधिकार दिया। सब जीवों को ब्रह्माजी का ज्ञान देना ही घेर कर पास लाना है। म:फ: है कि ब्रह्माजी ने ऋषियो का ज्ञान बताकर हित करना चरणा लगाना है।

दुजोस न्याती कर जोड आयो, भुज बल आवध बिध राज पायो।
सब राज रीतां बिध बेत भाखी, कह सुख पूजा सरूपोज राखी ।। २५।।

ज्ञान द्वारा भुज बल का, शस्त्रो का राज करने की विधि का, सब राजरीतों का व कई तरह की विधी का ज्ञान दिया। म:फ: है कि सरूपो याने गुरू की पूजा रखी है।

गह चार, जीवा बोह ज्ञान किया, तत भेद सरूपो ता शीष दिया।
अे पांच दीदार है सत भाई, कह सुख दूजा सब मांड मांई ।। २६।।

सब जीवों को वेदों का बहुत ज्ञान दिया और केवल पद के ज्ञान को सर्वोच्च बताया यानि तत्व प्राप्ति का भेद भी बताया। इन पांचवे ज्ञान को ही सत बताया बाकि ज्ञान मांड में ही रखने वाले हैं।

फिर सोज दरशण ओ दुज भाखे, अमरत रूपो सरब जीव चाखे।
षट जोग भेवा गुण षट किया, कह सुख सब जाग अे पद दिया ।। २७।।

ब्रह्माजी ने छ: दरशणीयों को फरमाया कि सब जीवों को इस अमृत रूपी ज्ञान का पान करावो। छ: दरशणियों को छ: योग का ज्ञान व छ: गुणों का भेद बताया व सब जगह खट दरशनियों को नियुक्त किया।

सब ज्ञान बातां परकाज कीवी, जड जीव जगायर या शोभ दीवी।
बोह बलवान हुआ परख सारा, कह सुखदेव तब ध्यान ज्ञान ऊचारा ।। २८।।

दूसरे सब जीवों के हित के लिए यह ज्ञान बताया जड जीवों को जगाने के लिये यह ज्ञान बताया। इस ज्ञान को धारण करना ही बलवान होना है। म:फ: है कि तब ये संसार को ज्ञान देने लगे।

तत पांच चीजा सब लोय जांणो, ता रूप दीदार षट भेष कवाणो।
शिव जांण ब्रह्मा विष्णु जो साधी, कह सुख तीना मरजाद बांधी ।। २९।।

सारी सृष्टि को पांच तत्वों की समझो, खट दरशणियों के दरशण करना ही इनके दरशण करना है। म:फ: है कि इस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु, महादेवजी ने जगत में मर्यादा बांधी है।

विष्णोज रूपं सुन सरूप देवा, तत सेव ध्यानं गह जीव भेवा।
युं लोय थापी अेज्ञान दिया, कह सुख तां दिन राह बीर किया ।। ३०।।

तीनों देवता विष्णु भगवान का ही रूप है तथा परब्रह्म की सेव का भेद दिया। इस तरह जगत की स्थापना कर यह ज्ञान दिया। और जगत ने उसी दिन से यह ज्ञान धारण किया।

गुरू इष्ट पूजा जग आद थापी, परब्रह्म बंदगी घट ज्ञान आपी।
षट भेष दीदार ओ मान लिज्यो, परिब्रह्म सेवा अे निश किज्यो ।। ३१।।

गुरू व अपने इष्ट की पूजा की जगत में अनादि से स्थापना की, परब्रह्म की भक्ति शरीर में करने का ज्ञान दिया। छ: दरशणियों के आकार में दरशण बताये, इस तरह परब्रह्म की रात दिन भक्ति करने का उपदेश दिया।

या विध तिरलोक दुजो चेतायो, गुरूधरम अपनो ब्रह्मा बताया।
या विध पूजा हम नित्य किज्यो, कह सुख अे निश पद चित दिज्यो ।। ३२।।

ऐसे ब्रह्माजी ने ज्ञान देकर तीन लोको के जीवों को ज्ञान दिया व अपना गुरूधर्म बताया, इस तरह हमेशा मेरी पूजा करो। म:फ: है कि इस तरह रात दिन ब्रह्म की भक्ति करो।

सेवा पूजा टहल बताई, कर नित जोडी को मुख भाई।
प्रदक्षिणा दे पत भाव गहिजे, गुरूधरम मेरो या विध लहिजे ।। ३३।।

हाथ जोडकर सेवा पूजा व प्रदक्षिणा प्रणाम करना व गुरू में भाव रखना, इस तरह से गुरूधर्म धारण करना है।

मेरीस सेवा वक्त विचारो, परिब्रह्म बंदगी अे निश धारो।
मेरास सांई तुम हम मांई, कह सुख या विध सेवा बताई ।। ३४।।

मेरी सेवा तो समय पर करो, पारब्रह्म की भक्ति रात दिन करो, वो ब्रह्म तुम्हारे व हमारे में है। म:फ: है कि ब्रह्माजी ने इस तरह का साधन बतलाया।

गुरूधरम व सेवा बहुत बखानो, विष्णोज शिव रूप मम जोड जांणो।
अै देव सदा नित ऊठ किजे, कह सुख पीछे पद चित दीजे ।। ३५।।

गुरूधरम व सेवा की बहुत महिमा की। विष्णु व शिव को मेरा ही स्वरूप समझो। इन तीनो की सेवा हमेशा उठकर करो। म:फ: है कि उसके बाद ब्रह्म की भक्ति व ध्यान करो।

देहे लछ शोभा सब मोय सोवे, जो तुम धारो सो सब होवे।
जो कुछ रीता तन धर चाहो, सो सब पूजा हम पूज पावो ।। ३६।।

देही धारण करके जो अच्छे अंग लक्षण रखता है वो प्राणी मुझे अच्छा लगता है। और जो तुम मन में धारो सो तुम्हारा काम हो जायेगा। तन धारण करके जिस चीज की आवश्यकता हो तो हमे पूज कर प्राप्त कर सकते हो।

भावो परभावो बोह भांत कीजे, आत्म देवो बोहो सुख दीजे।

ज्युं हाथ करियो सो सब पावो, मम पास या विध सब चल आवो ।। ३७।।

समस्त देवताओं के प्रति वन्दनीय भाव रखकर आत्मदेवों को सुख पहुंचावो। जैसे करोगे उसी माफिक प्राप्ति होगी, इस तरह भक्ति करके मेरे लोक की प्राप्ति करो।

लछोस गछो मत प्रेम सारा, गुरू धरम सेवा सरब ऊचारा।
या विध इष्टो नेमोस राखो, कह सुख हम तुम पद प्रेम भाखो ।। ३८।।

अच्छे लक्षण धारण करना, बुद्धि से प्रेम भाव करना, इस तरह गुरूधरम व सेवा का ज्ञान दिया। इस तरह मेरा इष्ट व नेम धारण करो। म:फ: है कि इस तरह ब्रह्माजी ने हमको पद में पहुंचने का ज्ञान बताया।

प्रजा वाच :- तब लोय युं बैण कह मुख आशा, हो दूज हो साम रहो मम पासा।
तुम बिन यो भेव कौन बखाणे, सब जीव जडता कुछ नांय जाणे ।। ३९।।

सब प्राणियों ने ब्रह्माजी से यह प्रार्थना की भगवान आप हमारे पास रहिये। आपके सिवाय यह ज्ञान हमें कौन दे सकता है। सब जीव मूर्ख थे। वो क्या जान सकते थे।

प्रजा वाच :-तज ध्यान देही या नांय पांवा, हे दूज ता दिन को पास जांवा।
ब्रह्मा वाच : ये षट रूप थाप्या सो मम जानो, नित नेम भाख्यो ज्ञान बखाणो ।। ४०।।

शरीर से परमात्मा का ध्यान छूटने पर हे ब्रह्माजी उस दिन हम किसके पास जावें। तब ब्रह्माजी ने कहा कि छ: दरशणियों को मेरा ही स्वरूप समझो ऐसा ज्ञान ब्रह्माजी ने बताया।

षट रूप दरशण से थाप दिया, तत संग सोजी गुण भाव लिया।
आकाश दरशण सन्यास किया, अंग खाख रंग श्याम दीदार दिया ।। ४१।।

पांच तत्वों का अलग अलग गुण व भाव बताया, आकाश तत्व का दरशण सन्यासी में व शरीर पर गेरवा वस्त्र पहनना व ब्रह्म की भक्ति बतलाया।

धरण रूप जोगी गह थाप दीनो, रंग रूप पीलो आ वाह कीनो।
जल रूप तत सो सुत हेत दिया, कह सुख आभरन बोह बृछ किया ।। ४२।।

पृथ्वी का रूप जोगी को बतलाया, पीला वस्त्र धारण करना बतलाया, जल का रूप ब्राह्मण व कई प्रकार के वस्त्र धारण करना बतलाया। म:फ: है कि यही आभरण व वृछ किया है।

सत वाय रूपं सो लील भाया, ता शिष दरशण फकीर कहाया।
तेजग ततंग बोह लाल होई, तस रूप जंगम कह सुख लोई ।। ४३।।

वायु का रंग लीला याने हरा है। फकीर हरे कपडे धारण करते है। फकीर का दरशण वायु तत का दरशण है। अग्नि का रंग लाल, जंगम लाल कपडे पहनते है। जंगम के दरशण ही अग्नि के दरशण है।

अे पांच दीदार गह सोज किया, शीर रूप जती धर नाम दिया।
थे जस मेरा पद अेक गावो, कह दूज लोई सब पास जावो ।। ४४।।

इस तरह पांच तत्वों से पांच दरशणीयों को बणाया, छटा दरशनी जतीयों को बनाया है। इस तरह छ: दरशणियों से ज्ञान लेकर ब्रह्म की भक्ति कर ब्रह्म पद की प्राप्ति करो।

दीदार पूजा आ सत होई, षट रूप आगे सरूपो न कोई।
घट ब्रह्म सेवा सब कोई ध्यावो, कह दुज मेरा सरूप मनाओ ।। ४५।।

आकार की पूजा छः दरशणियों की है, इन छः के आगे कोई सरूप नही है। घट याने शरीर से ब्रह्म की भक्ति करो व छः दरशणियों को मेरा सरूप समझकर उनके ज्ञान को धारण करो।

मेरास धरमो सरूपोज कहावो, परिब्रह्म सेवा ले डोर लावो।
अे दोय बाता सो जीव राखे, कह ताय सोभा सब देव भाखे ।। ४६ ।।

छः दरशणियों की सेवा ही मेरी पूजा समझो। परब्रह्म की भक्ति लिव लगाकर याने हर समय करो। इन दो बातों को जो धारण करेंगे, उनकी शोभा देवलोक में भी होगी।

गुरू ईष्ट सेवा पुनो बताया, देह धार ओऊं, गह मंत्र लाया।
ओ धरम मेरो नित नेम राखो, कह दुज परिब्रह्म अै निश भाखो ।। ४७।।

गुरू व ईष्ट की सेवा करना ही पुन्न है। शरीर धारण कर श्वांसा के आधार से राम भजन करना ही मंत्र लाना है, यही मेरा धरम है। इसका नित्य नियम से पालन करो। पारब्रह्म की भक्ति रात दिन हर समय करो।

<u>दोहा</u> :- या विध दुज घर पेड में, कहयो ज्ञान समजाय।
पारब्रह्म मेरो धणी, सो तुम हम सब मांय ।।। ४८।

इस तरह मनुष्यों को ब्रह्माजी ने ज्ञान को सब विधि से समझाया। पारब्रह्म परमात्मा ही सबका स्वामी है। वो तुम हम सब में है।

रात दिन लागा रहो, सिमरो ब्रह्म विचार। मम पूजा गुरू इष्ट है, तुम हम सब पद पार ।। ४९ ।।

इस तरह विचार व ब्रह्म भक्ति रात दिन करते रहो। गुरूपूजा ही मेरी पूजा है। इससे ही हम तुम सब ब्रह्म पद की प्राप्ति कर सकते है।

भांत भांत कर बरणीयां, सबे ज्ञान तत सोज।
तां दिन सुण सुखराम कह, गहयो शकल जग खोज ।। ५० ।।

इस तरह ब्रह्माजी ने ब्रह्म प्राप्ति का सब ज्ञान भिन्न भिन्न करके समझाया। मःफः है कि जब सब जगत ने उस ज्ञान को धारण किया।

जगत गुरू ब्रह्मा सही, तामें फेर न सार। आद अन्त सुखराम कह, दियो ज्ञान विचार ।। ५१ ।।

जगत के गुरू ब्रह्माजी है। इसमें किसी तरह का फरक नही है। मःफः है कि आदि से लेकर अन्त तक का ज्ञान ब्रह्माजी ने दिया है।

तां पेली नही ऊपना, जीव जंत नर कोय।
सब जग सुण सुखराम कहे, युं ब्रह्मा का सुत होय ।। ५२ ।।

उसके पहले किसी भी जीव जन्तु व मनुष्य की उत्पति नही हुई थी। सब जगत की ब्रह्माजी से उत्पति हुई है। मःफः है कि इसलिए सब ब्रह्माजी के बेटे बेटी है।

ज्ञान ध्यान सब बात सो, नाना विध की होय। आदमूल ब्रह्मा सही, पांच तत गुण जोय ।। ५३ ।।

ज्ञान ध्यान व सब तरह की विधि बताने वाले आद से मूल ब्रह्मा ही है व पांच तत्वों से सृष्टि बनी है।

ब्रह्मा जग परमोद के, दिया बहुत विध ज्ञान। तुम हम सब ही आत्मा, पांच तत की जान ।। ५४ ।।

ब्रह्माजी ने इस तरह बहुत विधि से जगत को ज्ञान देकर कहा कि तुमारी व हमारी आत्मा पांच तत की है।

पांच तत अे अेकठा, बोले प्रगट आय। आत्म में परमात्मा, सब सुर पोख्या जाय ।।५५।।

ये पांच तत्व जहां इकठे होते है। वहां ही चेतन के आधार से प्रगट बोलते है। आत्मा में ही परमात्मा है। इन सब घटों का पालन पोषण देवता करते हैं।

आत्म में परमात्मा मेरा सब स्थूल। यामें दोय नां जाणज्यो जड चेतन क्या थूल ।।५६।।

आत्मा में परमात्मा है यह सब स्थूल शरीर मेरे ही हैं। जड व चेतन सबको परमातम का स्वरूप समझो, दो मत जाणो।

श्लोक :- जल तत लोही पवनाज सांसो, धर हाड नेणो गह तेज वासो।
आकाश तत देह मध पोलम, अे तत पांच ही जग रूप खोलम ।।५७।।

जल तत्व शरीर में खून है व वायु श्वांस है। पृथ्वी तत्व शरीर में हड्डिया है। तेज तत्व शरीर में नेण है, आकाश तत शरीर में पोल है, इस तरह पांच तत्वों से जगत बना है।

साखी :- ज्युं ज्युं दिन आडा पडे, त्युं त्युं बुध कम होय।
गुरूपूजा जग रहत है, तहां पद बिसरे लोय ।।१।।

ज्यों ज्यों दिन ज्यादा होते है त्यों ज्यों जगत में शरीर गुरूपूजा रह जाती है। भक्ति भजन को भूलकर ब्रह्म प्राप्ति के ज्ञान को भूल जाते है, यही बुध कम होना है।

सेवा पूजा धर्म सो ओ बायर दिखलाय। तांते ढीली रहत है, गुरू सेवा जग मांय ।।२।।

सेवा पूजा धरम यह बाहर देखने में आते है। यह गुरू सेवा यानि ब्रह्म भक्ति जगत में ढीली रह जाती है।

परमपद कूं बिसरे, दरशण ऊर मम चाय। गेह माया के वास्ते, धामी धाम बताय ।।३।।

परमपद की प्राप्ति का ज्ञान तो भूल जाते है। छः दरशणियों की हृदय में चाहना रह जाती है, माया प्राप्ति वास्ते धामी धाम पूजाने लगते है।

तीन जुग में रहत है, खट दरशण मत सार। चौथे में सुखराम के, भूले पद विचार ।।४।।

तीन जुगो में खट दरशणियों का ज्ञान रहता है। चौथे युग में ब्रह्म की प्राप्ति के ज्ञान को भूल जाते है।

बिरली जागा रहत है, निपट नाश न कोय। कलजुग में सुखराम केह, पाखण्ड पूजा होय ।।५।।

ब्रह्म प्राप्ति का ज्ञान बिल्कुल तो नही मिटता, परन्तु बिरली जगह रह जाता है। मःफः है कि कलयुग में पाखण्डियों को मानने लग जाते है।

किम पाखण्ड किम सांच है, तांको कहो विचार। निरपखे सुखराम कह, कहिये शब्द ऊचार ।।६।।

पाखण्ड क्या है व सांच क्या है इसका निरपक्ष विचार करो। मःफः है कि निरपक्ष शब्द का उच्चारण करो।

पांच तत को रंग है, सो दरशण शिर होय। वो बेमुख सो भेष रे, से पाखण्ड सब कोय ।।७।।

दरशणी श्रेष्ठ है जो पांच तत्व के रंग के कपडे पहनते है। जो खट दर्शण में नही है वे सब भेषधारी पाखण्डी है।

वां शिर अेता खून है, पार न वांको पाय। जद तद सुण सुखराम कह, धणी पहुंते आय ।।८।।

उनके सिर पर पाखण्ड का भेष धारण करने का अपार दोष है, जिसका कोई पार नही है। इन पाखण्डी भेषधारियों की परमात्मा ही खबर लेंगे।

रंग रूप जग स्वाद है, अे इनका सब होय। पांच तत्व सुखराम कह, ब्रह्मा शिव हरि जोय ।।९।।

जगत में जितने भी रंग रूप स्वाद है वे सब पांच तत्वो के है। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव यह भी पांच तत्वों के है।

यां बांधी मरजाद कूं, खट दरशण संसार। सो गुण मुख ते ऊथपे, आपा पंथ विचार ।।१०।।

ब्रह्मा, विष्णु, महादेव ने जगत में तीन लोक की मर्यादा के लिये खट दरशणियों को बनाया है। उनके गुण को नही मानना ही आपा पंथी है।

पांच तत बिन जग में, रूप स्वाद नही कोय।
तीन देव सुखराम कह, शकल लोक शिष होय ।।११।।

पांच तत्वों के बिना जगत में न तो कोई रूप है, न कोई स्वाद है। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव इन तीनों के तीन लोक शिष्य है।

बिजा बोहता भेष ने, खटदरशण कह जोय। मुख ते गुण राखे नही, युं पाखण्ड नर होय ।।१२।।

दूसरे बहुत से भेष धारियों को खट दरशणी कहते है, परन्तु वे खट दरशणी नही है। न ही उनमें गुण है, ऐसे नर पाखण्डी है।

ज्ञान ध्यान सब बात सो, नाना विध की लोय। आद मूल ब्रह्मा सही, पांच तत गुण जोय ।।१३।।

ज्ञान ध्यान सब बातें सब तरह की ब्रह्माजी की बनाई हुयी है। सारी सृष्टि पांच तत्वों की है।

कहणे मातर बात थी, सो सब कही अनाद। पीछे दुज की बुध ले, कहे शकल जग साद ।।१४।।

जो कहने की बात थी सो अनादि से ब्रह्माजी ने कह दी, पीछे उनके ज्ञान के आधार से ही सारा जगत व साधक कहते है।

पांच तत का पिंजरा, ब्रह्मा की सब मांड। दरशण गुण मुख ऊथपे, सो नर पाखण्ड भांड ।।१५।।

सब शरीर पांच तत्वो के है। सारी सृष्टि ब्रह्माजी की बनाई हुई है। उनके बनाये हुए दरशणियो को नही मानने वाले पाखण्ड भांड है।

अेक घडी इन बायरो, प्राण न जीवे कोय। सो गुण मुख ते ऊथप्या, मुक्त कहां ते होय ।।१६।।

पांच तत्वों के बिना कोई प्राणी एक घडी भी जिन्दा नही रह सकता। उनके ज्ञान को नही मानने वालों की मुक्ति कैसे हो सकती है।

जहां पांचु तहां आप है, ओऊं शिरजण हार। या पूजा तुम कीजियो, मम देह रूप विचार ।।१७।।

जहां पांच तत्व है वहां ही आत्मेचतन है। आत्मचेतन से सारी सृष्टि की उत्पति हुई है। सब आत्माओं को सुख पहुंचाना ही मेरी सेवा है।

पांच तत ये अेकठा, बोले प्रगट आय। आत्म में परमात्मा सब सूर पोख्या जाय ।।१८।।

जहां पांच तत्व ये इकठे होते है वांहा ही प्रगट बोलने लगते है, आत्मा में ही परमात्मा है। सबका पोषण करने वाले देवता है।

मम देवो मम आत्मा, मैं ही शिरजणहार। मम ऊपर पर ब्रह्म है, सो कुछ तार न मार ।।१९।।

ब्रह्माजी कह रहे है कि सभी देवता एवं सभी आत्मा मेरी ही है। उनका सबका पालन पोषण मैं ही करता हूं। मेरे ऊपर जो परब्रह्म परमात्मा है, वो किसी को तारते भी नहीं व मारते भी नहीं। अर्थात यह कार्य भी मैं ही करता हूं।

।। इति श्री मूल ज्ञान का ग्रन्थ सम्पूर्ण।।

卐 सुख विलास ग्रन्थ 卐

दोहा :- प्रथम वन्दन गुरूदेवजी, जिन दियो नाम तत सार।
द्वितीये वन्दन रामजी, जिन मेटया भरम विकार ।। १ ।।

पहले सत केवल ग्यान रूपी सतगुरूजी को प्रणाम करता हूं। जिन्होंने ब्रह्म के निज नाम जाग्रत होने की विधि का भेद भांत भांत से लिखा है तब परमात्मा की प्राप्ति हुई है, दूसरा प्रणाम रामजी को करता हूं जिन्होंने भरम रूपी अन्धकार व विकार को मिटाया है।

तृतीये वन्दन सब सन्त जन, अनन्त कोट जन सार।
ज्यांकी पद रज परसता, हंस ऊतर जावे पार ।। २ ।।

तीसरा प्रणाम सब सन्तजनो को व अनन्त क्रोड भक्तों को करता हूं। जिनके चरण कमलों की रज धारण करने से व संगत करने से हंस भवसागर से पार ऊतर जाता है।

चौपाई :- अनन्त कोट दासन के दासा, बरणु भगती जोग अरू सुख विलासा ।। ३ ।।

मैं अनन्त बार परब्रह्म परमात्मा के दासों का दास हूं। मैं भगती जोग और सुख विलास का वर्णन करता हूं।

शब्द सुण्यां सतगुरू का बेणां, देख्या शकल आपका नेणां ।। ४ ।।

सतगुरू के वचनो में शब्द प्राप्ति का भेद सुणा और सुरत नेत्रों से उसका अनुभव किया।

देखी कही सुणी नही मानु, सतगुरू शब्द शकल घट जांणु।
पेली शब्द श्रवणा आवे, जब तो मन में हरक बधावे ।। ५ ।।

देखी हुई कहता हूं सुनी हुई को नही मानता। सतगुरू का सतशब्द सब घटो में प्रगट हो जाता है। पहले शब्द कानो में सुनता है। तब मन में खुशी होती है।

ऊठत बैठत सांस ऊसांसा, रसना नाम रटो निश वासा।
निरत नैण ठेरावत नाशा, सूरत पकड तोलत है सांसा ।। ६ ।।

ऊठते बैठते सांस ऊसांस में रसना राम नाम से रात दिन रटते रहो। निरत रूपी नेत्र श्वांसा में लगाये रखो। सूरत सांस को देखती कितने सांस में कितने उसांस में आते है।

तोलत सांस चले जूं चकरी, तां संग सूरत लगी ज्यूं मकडी।
मनवा करे पवन सूं मेला, सूरत शब्द दोनो भये भेला ।। ७-८ ।।

सांस ऊसांस में बराबर नाम ले भजन करना ही चकरी चलना है। सूरत श्वांस के साथ लगी रहती है मन भी श्वांस के साथ लगा रहता है। शब्द में सूरत लगाकर भजन करना ही भेला होना है।

आ साजन रसणा गुण गावे, इमरत चाख बहुत सुख पावे ।। ९ ।।

इस तरह से साधन करे, रसना से भजन करे। भजन का आनन्द आना ही इमरत चाखना व बहुत सुख आना है।

गले गिल गिली होवे चमकारा, ईमरत ऊतरे बारंबारा।
इमरत सीर चली इक धारा, ऊपज्या प्रेम भया पतियारा ।। १० ।।

गले में गिलगिली होती है, यही चमकारा है। भजन करने से जो आनन्द आता है वही ईमरत ऊतरना है। आनन्द आने से ही प्रेम से भजन होता है व विश्वास आता है।

भई प्रतीत रटया नित रामा, रात दिवस नही पल विश्रामा ।। ११ ।।

विश्वास होने पर रात दिन सतगुरू विधि से भजन करना, अेक पल नही छोडना है।

जमक जमक नाडी सब जमके, चमक चमक मनवो डर चमके।
शीतल लहर शकल तन कांपे, रात दिवस निद्रा नही झांपे ।। १२ ।।

नाड नाड में शब्द का अनुभव होना ही नाड नाड का जमकना, मन का भजन में लगना ही चमकना है। ठंडी लहरे आती है, शरीर थरराने लगता है। रात दिन भजन करने की लगन लगी रहती है, यही निद्रा का नही झापना है।

गदगद बांणी सिसके सांसा, नैणा नीर चवे चौमासा ।
चाले बेल पीवे कंठ क्यारी, फूल्या कंवल पांखडी चारी ।। १३ ।।

भजन करने वाले की वाणी गद गद हो जाती है, आंखो से आंसू आ जाते है। यही सिसके सांसा है। नेत्रो से ज्यादा पानी आना चौमासा चवना है। शब्द का कंठ से आगे चलना ही बेल का चलना व कंठ का पीना है। कण्ठो में चार पांख का कमल है।

तांका वर्ण पेड़ है पीला, तां पर श्याम पांख तल लीला ।। १४ ।।

चार पांख के कंवल का पीला वर्ण है ऊपर श्याम रंग नीचे लीला रंग है।

बीचे लाल सेत है पंखिया, आ देखे साधु सुरत की अंखिया।
रसना नाम रटया अेकमासा, जब हिरदा में भया प्रकाशा ।। १५ ।।

बीच में लाल व सफेद पांखडिया है, साधना करने वाले सूरतरूपी चक्षु से उसका अनुभव करते हैं। रसना से एक महिना भजन किया जब कंठ से हृदय में शब्द आ गया।

भया प्रकाश कमल ज्यां फूलया, प्रेम होद में हंसा झूल्या ।। १६ ।।

हृदय में सतशब्द का अनुभव प्रेम से भजन करने पर होना ही भया प्रकाश कमल व प्रेम होद में झूलना है।

हंस लवलीन प्रेम जल मीना, मगन भया मन ज्यूं जल भीना।
चाले बेल भरिजे ताली, सींचे कमल सूरत बन माली ।। १७ ।।

प्रेम से लिव बन्ध भजन होना ही प्रेम जल भीना है। मन में बडी खुशी होती है। जैसे मछली पानी में खुश रहती है। शब्द का आगे बढना व सूरत लगाकर भजन करना ही माली का बन सींचना है व शब्द का आगे बढना ही बेल भरिजे ताली है।

श्याम सेत जरदी रंग बीचे, हरया वर्ण पांख के नीचे ।। १८ ।।

काला व सफेद व पीला रंग बीच में है। पांख के नीचे हरा वर्ण है।

अस्टा पांख बरण है लाली, देख्या कमल भई खुशयाली।
दीरग पेड पांखडी लगुता, हिरदा कंठ कमल की जुगता ।। १९ ।।

हृदय में आठ पांख का कमल है जिसका वर्ण लाल है। हृदय में शब्द का आना ही खुशी होना है पेड लंबा पांखडी छोटी है, ऐसा हृदय कंठ में कमल है।

घट फिरे चकरी की नांई, पल पल रोज कमल बिगसाई ।। २० ।।

सांस ऊसांस में भजन होना ही घट चकरी की तरह फिरना है। पल पल में रोज आना ही कमल बिगसना है।

रात दिवस घूमें मन मांही, आ अेनाण हिरदे ज्यांही।
दस बीस दिन हिरदे ध्याना, अब धरणी कूं किया पयाना ।। २१ ।।

रात दिन मन भजन में लग रहा है यही घूमना है। शब्द का हृदय में जाने पर ऐसा अनुभव होता है। दस बीस दिन हृदय में सूरत लगाकर भजन किया, अब शब्द पृथवी की तरफ आगे बढने लगा।

हिरदे नाभ बीचे खट कमला, पिवत बेल भया सब संवला ।। २२ ।।

हिरदे नाभी के बीच में छः कमल है शब्द का नाभी में आना ही पीवत बेल भया सब संवला है।

फूटे बास चहूं दिश जावे, पच रंग पांख भंवर बिलमावे।
पांच कंवल पांचू रंग जाणो, छटा कंवल रंग कौण पिछाणों।। २३ ।।

शब्द का अनुभव होना ही बास फूटना है, चहूं दिश जाना है। इस कमल की पांखो का पांच रंग है। शब्द यहां गुंजार कर रहा है। पांच रंग ही पांच कंवल है, छटा कंवल के रंग को कौन जानता है।

केसा बरण पांखडी केती, ले देखो दीपक कर सेती ।। २४ ।।

केसा बरण पांखडी कितनी है हाथ में दीपक याने ज्ञान से अनुभव करो।

अब तो शब्द नाभ कूं चाल्यो, जब करमा पर घेरो घाल्यो।
नाभ कमल ऊठयो घरणाई, बौतर नाडी बीण बजाई।। २५ ।।

अब शब्द का नाभी में अनुभव होने लग गया। यह करमों का क्षय करने का साधन है, यही करमों पर घेरा घालना है। नाभ कमल में बहोतर नाडियो में भी शब्द का अनुभव होने लगा।

बाजे बीण जीण पद गावे, प्रेम कलश ले पीव बधावे ।। २६ ।।

शब्द की गुंजार ही बीण बजना व जीण पद गाना है। प्रेम से भजन करना ही प्रेम कलश ले पीव बधाना है।

भंवर गुंजार गिगन धुन गाजे, रूम रूम में बाजा बाजे।
इमरत बेल बहे जल धारा, आत्म बाग पीवे बन सारा।। २७ ।।

शब्द की जो ध्वनि हो रही है यह भंवर गुंजार है। सब जगह अनुभव होना ही गिगन धुन गाजना है। रूम रूम में शब्द का अनुभव होना ही बाजा बाजना है। भजन का आनन्द आना ही इमरत बेल बहे जल धारा है। सारे शरीर में अनुभव होना ही आत्म बाग पीवे बन सारा है।

हरी पांख तल पेड़ सूरंगा, संग जरदी शिर सेत पर संगा।। २८ ।।

हरी पांख है, पेड सूरंग है, साथ में पीला सफेद सब रंग है।

बीचे श्याम भंवर ता भणके, नाड नाड न्यारी सब झणके।
पांख बतीस नाभ दल फूले, ज्यां अेक गली गुप्त की खुले ।। २९ ।।

बीच में शब्द का गुंजार काले भंवरे की तरह हो रहा है। यह सांस उसांस में भजन करते है जब ध्वनि होती है, यही काले भंवरे की गुंजार। नाड नाड में शब्द का अनुभव होना ही नाड नाड झणके है। नाभी में बतीस पांख का कमल है, जहां पर अेक गुप्त रास्ता खुलता है।

ऊंची दृष्टि कमल अेक दरशे, पांख पचीस बरण अेक सरसे ।। ३० ।।

नाभी के नीचे आगे दृष्टि करने से अेक कमल दरशता है। पांख पचीस बरण अेक सरीसा है।

सोडस भंवर गेण गरणाया, द्वादश बरस नाभ में ध्याया।
दोय कमल देखया ता नीचे, खट सो पांख ब्रह्मा तां बीचे।। ३१ ।।

सोलेह भंवरो की गुंजार की जैसे शब्द की गुंजार हो रही है। नाभी में बारा बरस तक भजन किया। नाभी के नीचे दो कमल है। छः पांख के कमल पर ब्रह्माजी का स्थान है।

जरदी बरण पांखडी खाटी, चार पांख गणपत की घाटी ।। ३२।।

जिसका बरण पीला व पांख खाटी है। चार पांख का कमल गणेश के स्थान पर है।

अब तो शब्द पिछम कूं जावे, बंकनाल मीठो रस खावे।
ऊलटयो शब्द पिछम दिश आया, सूरत शब्द का मेल थपाया।। ३३।।

अब शब्द पिछम की ओर जाता है, बंकनाल में शब्द का अनुभव होना ही मीठा रस खाना है। शब्द ऊलटकर पिछम दिशा में आया है। सूरत शब्द का मेल हो गया है।

गरजे गिगन धरण सोइ धूजे, स्वरस मांय सूर संत झूंझे ।। ३४।।

सारे शरीर में शब्द का अनुभव होना ही गिगन व धरती का धूजना है। उस आनन्द का अनुभव होना ही शूरवीर संत का जूझना है।

शब्द पांवडा साध बखाणे, सूर मंडिया जाय हृदय निसाणे।
पांचू पकड पगातल दिया, जम कूं जीत काल बश किया।। ३५।।

सूरत शब्द का आगे बढना ही शब्द पांवडा साध बखाणे है। शब्द में सूरत रखकर भजना करना ही शूरवीर का निसाणे मंडना है। पांच विषयो को जीतना ही पगातल देना है। मेरूडण्ड पर शब्द का पहुंचना ही जम को जीतकर काल वश करना है।

सूरत शब्द मिल चढया आकाशा, छेदा मेर गिगन किया बासा।। ३६।।

सूरत शब्द मिल मेरूडण्ड से ऊपर चढना ही मेरू को छेदना व गिगन में जाना है।

दोहा :- ऊलटी गंग पयांल सूं, जाय लगी अशमान।
धरणी गिगन बिच एक लिव, ऊग्या इन्द्र भांण।। ३७।।

शब्द पहले पाताल याने गणेश स्थान पर गया, पीछे बंकनाल में उलट मेरू पर गया, यही आकाश में जाना है। धरती से आकाश तक शब्द का अनुभव होना एक लिव है। शब्द का अनुभव होना ही इन्द्र भांण ऊगना है।

ररंकार की घोर सूं, छिक गया सुरग इकीस।
सूरत नटणी बरता चढी, देख रया जगदीश।। ३८।।

ररंकार की ध्वनि के साथ इक्कीस सुरगो को पार किया, यही इक्कीस सुरग छिकना है। सूरत शब्द का अनुभव ऊपर कर रही है, यही जगदीश का देखना है।

चौपाई:- मेर मांय थकिया ममंकारा, आगे चल्या शब्द ररंकारा।
अरध ऊरध मिल्या शशी सूरा, शादी बटी बाजे है तूरा।। ३९।।

ममा याने माया का देश मेरु पर ठहर जाता है। आगे ररंकार चलता है याने ब्रह्म का देश है। उठते बैठते स्वांस में भजन करने से मेरूडण्ड से इडा पिंगला जागृत हो गई, शादी बटी याने खुश होना है। शब्द का अनुभव होना ही तूर याने बाजे बजना है।

सुखदेव चढिया त्रकुटी छाजे, तां पर घोर अनाहद बाजे ।। ४०।।

म:फ: है कि साधक त्रिकुटी में पहुंचे, वहां शब्द का अनुभव होना ही घोर अनाहद बाजा बजना है।

दीपक माला जिगमिग लागी, झिलमिल जोत ब्रह्म की जागी।
झिलमिल नूर दिशो दिश दरसे, प्रेम फुवांरा पैंप घन बरसे ।। ४१ ।।

शरीर में सब जगह शब्द का अनुभव होना ही दीपक माला झिगमिग लागी है, शब्द की ध्वनि का अनुभव होना ही झिलमिल जोत ब्रह्म की जागी है, शब्द ध्वनि का सारे शरीर में अनुभव होना ही झिलमिल नूर दशो दिशा परसना है। प्रेम से भजन होकर उसका आनन्द आना ही प्रेम फुवारा पैंप घन बरसना है।

झिलमिल नूर दिशो दिश भेटिया, जन्म मरण का सांसा मेट्या ।। ४२ ।।

शब्द का सारे शरीर में अनुभव होना ही झिलमिल नूर दशो दिश भेंटना व जन्म मरण का दुख मिटना है।

अला पिंगला सेज सुवारे, प्रांण पुरूष जहां महल पधारे।
सुखमण भरे अगम का प्याला, पीवत अवधु रहे मतवाला ।। ४३ ।।

अला पिंगला में भजन होना व उसका अनुभव होना ही सेज सवारना व प्राण पुरूष का महल पधारना है। सुखमण में भजन होना ही अगम का प्याला पीना है व आनन्द आना ही अवधु का मतवाला रहना है।

प्रेम पियाला पावे पीवे, अमर संत जुगे जुग जीवे।
सदा सुहागण सुन्दर नारी, अरध नाम सुं लागी यारी।। ४४।।

प्रेम से भजन करना व कराना ही प्रेम का प्याला पीना पिलाना है। परम पद की प्राप्ति करने वाले संत जन्म मरण में नही आते, यही जुगे जुग जीना है। सुरत के द्वारा रंकार का भजन करना व उसका आनन्द आना ही सुहागण सुन्दर अरध नाम से लागी तारी है।

सुखमण घटा अमीरस बूंठा, बरसे हीर हंस बोहो लूटा।
सुखमण सीर खीर बोहो मीठा, तीन ताप का बुज्या अंगीठा।। ४५ ।।

सुखमणा में भजन होना ही घटा का उमडना, आनन्द आना ही अमीरस बरसना है। सूरत द्वारा अनुभव होना ही बरसे हीर हंस बोह लुटना है। सुखमणा में भजन होना व असका आनन्द आना ही सुखमण सीर खीर बोह मीठा है। तीन ताप याने अधीदेव अधीभूत अध्यात्म इनसे अलग होना ही तीन ताप का दुख मिटना है।

तीन ताप दाजे जुग सारा, उबरया संत साहेब का प्यारा।
भवसागर बीच अमरत बेरी, साध सिंगी मछ पावे सेरी।। ४६ ।।

तीन ताप का दुख सब जगत वाले अनुभव करते है यही दाजना है। जो सन्त शब्द की भक्ति करते है वो ही तीन ताप के दुख से दूर होते है। भवसागर याने तीन लोक में जो सत स्वरूप आ:पद की भक्ति करते हैं व उसका आनन्द आना ही खारे समुद्र में सिंगी मछ की तरह उसमें से मीठे पानी की सीर पाना है।

बडवा अग्र नीर सब सोखे, ईमरत सीर सिंगी मछ रोके।। ४७।।

बडवानल अग्नि समुद्र का पानी सोखती है। इमरत की मीठी सीर सिंगी मछ पीता है।

तीन लोक में आंण हमारी, चौथे लोक चलण की त्यारी।। ४८ ।।

तीन लोक में याने खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड तक पहुंच हो गई, अब चौथे लोक याने के:पद आ:पद

में चलने की तैयारी हो गई।

पांव बिना निरत करे बोहो नारी, बिन रसनां तां राग ऊचारी।
ताना करे तांत तुणकावे, राग छतीस बसन्त ऋतु गावे।। ४९ ।।

चौथेपद में बिना किये जो शब्द की ध्वनि का अनुभव होता यही पांव बिना निरत करे बोहो नारी है। बिना रसना से भजन हो रहा है। यही राग ऊचारना है, शब्द की ध्वनि का अनुभव होना ही ताना करे तांत तुणकना, बसन्त ऋतु में रागा का गाना है।

गिगन घोर रिमझिम लागी, भेरी सुरणाई मुरली बागी ।। ५० ।।

यही गिगन घोर रिमझिम लागी है, भेरी सुरणाई मूरली बाजना है।

नोपत घुरे नंगारा गाई, जै जै शब्द भयो पुर मांही।
संख सतार बजे तरबीणा, खमायच गावे सुर जीणा।। ५१ ।।

यही नोपत घुरना, नगारा घुरना, सारे शरीर में उसका सुख आ रहा है। यही जे जे शब्द भयो पुर मांही है। यही संख सतार का बजना खमायच का गाना है।

तूथी उपंग आरबी बाजे, मरदंग ताल गिगन धुन गाजे।। ५२ ।।

यही तूथी उपंग आरबी बाजना है। मरदंग ताल गिगन धुन गाजना है।

फेरी फिरे फेर रिजावे, रूप बिना बोहो रूप दिखावे।
अनहद जालर लगे टिकोरा, चंद बिना तां चुगे चिकोरा।। ५३ ।।

यही फेरी फिरे रिजाना है, बिना रूप के अनुभव होना ही रूप दिखाना है, बिना किये ही अपने आप ध्वनि हो रही है, यही टिकोरा लगाना व चंद बिना चुगे चिकोरा है।

सोरठा:- सुखमण घटा घनघोर, बिन दादुर लेवे।
बोले चात्रंग मोर, अगम कथा चकवा कहे ।। ५४ ।।

सुखमणा में खूब भजन होता है, शब्द की आवाज आना ही घटा घनघोर, यही दादुर लेवे, बोले चात्रक, आगम कथा चकवा कहे है।

झिर मिर बरसे मेह, देह सूरत भीजत भई। मोती जड़े अछेह, बिन बादल बिरखा भई।। ५५ ।।

शब्द की ध्वनि का अनुभव देह रूपी सूरत भीज रही याने उसका अनुभव सूरत कर रही है यही मोती जडना बिना बादल वर्षा होना है।

चौपाई :- रूम रूम में जर है जरणा, रूम रूम बिच पाया शरणा ।। ५६ ।।

रूम रूम में शब्द का अनुभव होना ही जरणा जरना है व रोम रोम बीच पाया शरणा है।

रूम रूम बोले ररंकारा, रूम रूम बीच लगी पुकारा।
रूम रूम में जिगमिग नूरा, रूम रूम बीच उग्या सूरा।। ५७ ।।

शब्द का रोम रोम में अनुभव होना ही ररंकार का बोलना है व रूम रूम बीच लगी पुकारा है। यही रूम रूम में जिगमिग नूर व रूम रूम बीच उग्या सूरा है।

रूम रूम में अगम उजाला, सुरत शब्द मिल रमे निराला।
कमल अेक जहां पांख हजारा, कली कली बरसे रस न्यारा।। ५८ ।।

रूम रूम में शरीर में शब्द का अनुभव होना ही अगम उजाला होना है। यह शरीर से अलग सूरत से अनुभव होना ही सूरत शब्द मिल रमे निराला है। जहां पर हजार पांख का कमल है।

अष्टकमल जामे ले परकाशा, जहां आप ब्रह्म का वासा।। ५९।।

आठ कमल में शब्द का प्रकाश होने के बाद ऊपर अनुभव होना ही ब्रह्म के पद में होना है।

अनंत कोट फूली गुल क्यारी, अनंत भंवर ज्यां करे गुंजारी।। ६०।।

यही अनन्त कोट फूली गुल क्यारी व अनन्त भंवरो का गुंजार करना है।

अनन्त कोट संत धरे है ध्याना, अनंत कोट प्रकाशे ज्ञाना ।। ६१।।

अनंत कोट संतो ने शब्द का अनुभव किया है। यही अनन्त कोट प्रकाशे ज्ञाना है।

अनन्त भोग अनन्त सुख विलासा, आ रूत है छत बारा मासा।। ६२।।

अनन्त भोगो का आनन्द आता है। वैसा सुख अनुभव हो तो ऐसी स्थिति बारा महिना एक सरिसी रहती है।

जे जन कोऊ ऐसा सुख चावो, तो राम राम रसणा सुं गावो।। ६३।।

जो संत कोई ऐसा सुख पाना चाहो तो सतगुरू से भेद लेकर सतगुरूविधि से भजन करो।

राम राम रसणा लिव लावे, ज्यूं चिंत्रामण चावे सो पावे।
अंछर दोय रकार मकारा, यां बिच ये सुख देख्या सूरा।। ६४।।

रसणा से राम राम का लिव बंध भजन होने पर परमानन्द की प्राप्ति हो जाती है। जन्म मरण से छुटकारा मिलता है जैसे चिन्तामणी से जो भी चितवन करते है, उसकी प्राप्ति हो जाती है। ये दो अक्षर रकार मकार है, इनसे ही सब सुखो की प्राप्ति हो जाती है।

दोहा :- मारग मांही देखकर, पाया सुख विलास।
ओ साजन सुखराम कहे, शिंवरो सांस ऊसांस ।। ६५।।

खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड का यह साधन मार्ग का जैसे है। इसकी प्राप्ति कर अनन्त सुखो का आना ही सुख विलास है। म:फ: है कि यह साधन सांस ऊसांस में भजन करने से सफल होता है।

सूरत शिखर में रम रही, ररंकार सूं बात।
ओ समयो सुखराम कहे, जन्म मरण लग साथ।। ६६।।

सूरत चौथे पद में रम रही है याने ररंकार का अनुभव कर रही है यही बात करना है। म:फ: है कि ऐसा आनन्द का अनुभव जब तक शरीर रहता है तब तक आता रहता है।

बरस चोइसे सुध भई, किनी प्रांण पुकार।
सुखिया सांई शिरजिया, गुरू बीरम जीण वार।। ६७।।

संवत १८२४ में महाराज को सुरत शब्द का मेल हो गया। इस काम के वास्ते परमात्मा ने गुरू बीरमदासजी महाराज को सिरजा है।

सोरठा :- सुरत शब्द बिजोग, मन पवना न्यारा रहे। चारूं मिलन संजोग,
भक्ति जोग ज्यां सुं कहे।। सुरत शब्द सुं मेल, मन पवना दोनों गेह।
तो लिव लागी जिण बार, आठ पोहोर ईमरत चुवे।। ६८।।

सुरत शब्द मन व स्वांसा सब अलग अलग है। इन चारो के मिलन को ही भक्ति योग कहा है। सुरत शब्द से मेल होकर मन व श्वांसा उसके साथ होने पर लिव बंध भजन होने लगता है। उस आनन्द का आठ पोहोर अनुभव होना ही ईमरत बरस रहा है।

।। इति श्री सुख विलास ग्रन्थ सम्पूर्ण।।

卐 अजर लोक ग्रन्थ 卐

अजर लोक से मैं चल आया, विपर के घर जामा पाया।
विपर किसब करूं नही कोई, आ विध जांण लखे नर सोई।। १।।

सता रूप से म:फ: है कि मैं अजर लोक से चलकर आया हूं। ब्राह्मण के शरीर में प्रगट हुवा हूं। ब्राह्मणो का किसब नही करता हूं। इस विधि को जानने वाले मनुष्य ही मुझे पहचान सकते है। अजरलोक अमरलोक सतलोक सब एक ही पद के नाम है।

विपर किसब सबे छिटकाया, राम नाम हिरदे लिव लाया।
देश देश का हंसा आवे, न्यारी भाषा के बैण सुणावे।। २।।

ब्राह्मणों के किसब को छोडकर राम नाम की भक्ति हिरदे में धारण की है। अलग अलग साधन करने वाले हंस आते है। वह अपनी अलग अलग साधन की बातें सुनाते है।

विपर किसब वेद ये चारी, तिण में बंधिया जुग संसारी।
पिंडत भूला और भूलाया, दिशा भूल के बालक आया ।। ३।।

चारो वेदो के ज्ञान करना व कराना ब्राह्मणो का कार्य है। वेदों के ज्ञान से ही सारा जगत लगा हुवा है। पंडित वाणी के आधार की भक्ति करते है व संसार से कराते है, जिससे सुखों की प्राप्ति होती है, मोक्ष नहीं होता है। यही दिशा भूलकर बालक आना है।

च्यारों वेद अे त्रिगुणी माया, तिण में सब ले जगत बंधाया।
ऊपजे खपे पार नहीं पावे, संकट जूण जन्में जन्मावे।। ४।।

च्यारो वेद तीन लोक सृष्टि करता पद तक की प्राप्ति का ज्ञान देते है। उसी ज्ञान को सारे संसार ने धारण कर रखा है। परन्तु इससे जन्म मरण से रहित न पंडित न ही सुनने वाले हो सकते याने नही मिट सकता।

तीन लोक का फेरा होई, घाणी बैल फिरे ज्यूं सोई।
चार वेद में त्रिगुणी माया, लख चौरासी जीव बंधाया।। ५।।

चारो वेदो में साधन का ज्ञान है जिससे तीन लोक में सुख दुख की प्राप्ति होती रहती है। साधन द्वारा होणकाल ब्रह्म याने सृष्टि करता पद तक की प्राप्ति हो सकती है, जैसी करणी करते है उसी अनुसार तीन लोक में आते जाते रहते है। जैसे घाणी का बैल जहां सुबह जुतता है दिन भर फिर कर शाम को उसी जगह छूटता है।

तीन लोक घाणी ज्यूं फेरो, ऊदे अस्त ज्यूं होय निबेरो।
सब दिन दौड़ पेन्ड नही जावे, ज्यां जुते ज्यां ही छिटकावे।। ६।।

तीन लोको में फिरना घाणी के बैल की तरह है। सुबह से लेकर शाम तक फिरता है परन्तु उसी जगह छूटता है। इसी तरह करणियो में तीन लोक में फिरते रहते है। सारा दिन दौड़ते हुए भी एक पेण्ड भी आगे नही बढ़ते, जहां जुतता है वही छूटता है।

बाहेर क्रिया बोहो बिध कर है, ज्यां ऊपजे त्यां ही फिर खप है।
तीन लोक में त्रिगुण माया, ब्रह्म धाम चौथे पद भाया।। ७।।

बाहर की क्रियाये बहुत विधि से करते है, तीन लोको में ही जन्मते मरते रहते है। तीनो लोको

में त्रिगुणी माया का पद है व ब्रह्म धाम चौथे पद में है।

त्रिगुण मांय लेश नही आवे, ब्रह्म धाम कैसी विध जावे।
पूरब जाय पिछम कूं जोवे, दोय गेल मेला क्यों होवे।। ८।।

त्रिगुणी माया के ज्ञान से ब्रह्म प्राप्ति का ज्ञान नहीं मिलता, तो ब्रह्म प्राप्ति कैसे होती है। पूरब याने शंखनाल की साधना करने वाले पिछम में नहीं जाते। शंखनाल व बंकनाल का रास्ता अनादि से है। दोनों रास्ते एक नहीं हो सकते।

धरम पुन्न जिग करे है भारी, जन्म धरे भुगते संसारी।
लोहो कंचन की बेडी कुवावे, दोनो मांय संकट बोहो पावे ।। ९।।

धरम पुन्न जिग बहुत भारी करते है, फिर जन्म धारण करके उनका फल भोगना पड़ता है। पाप करना व पुन्न करना लोहे व सोने की बेडी है। दोनो का फल संसार में भोगना पड़ता है।

शुभ ही करम अशुभ ही कवावे, इण दोनो बिच जगत बंधावे।
देता दुख लेवता सोई, भुगत्या बिना न छूटे कोई ।। १०।।

जगत में शुभ करम व अशुभ करम है। जगत में इस तरह दोनो करम करते है। यही दोनो बीच जगत का बंधना है, चाहे लेवो या देवो। दोनों में दुख व सुख भोगना पड़ता है भोगे बिना नहीं छूटता।

इनकी आश जब लग मांही, तब लग धाम न पहुंचे जाई।
सेजा रहे मांय है दूरा, नख चख सबे ब्रह्म का नूरा।। ११।।

फल की इच्छा करणी कर्मो की जब तक अन्दर में रहती है तब तक परमपद की प्राप्ति नहीं होती। नख चख में याने सर्वत्र ब्रह्म व्यापक है तो भी उससे दूर रहते है। उस ब्रह्म पद की प्राप्ति के ज्ञान बिना ब्रह्म की प्राप्ति नहीं होती।

ब्रह्म बिना नहीं आन दिखावे, द्रव बिना न गेणो कवावे।
ऐसो ज्ञान उपजे मांही, बिना ब्रह्म कुछ दिशे नांही ।। १२।।

ब्रह्म प्राप्ति के ज्ञान को छोड़ माया प्राप्ति का ज्ञान करते है, जैसे सोने व हीरे के जेवरो की बराबरी कथीर का गहना कैसे कर सकता है, ऐसा ज्ञान उसके अन्दर होता तो उसे ब्रह्म के सिवाय कुछ नहीं दिखता।

ज्यां देखत तहां ब्रह्म दिखावे, दुतियाभाव मन नहीं लावे।
नेः चल होय ध्यान जब धारे, ब्रह्म देश में संत पधारे।। १३।।

सर्वत्र ब्रह्म को व्यापक देखे। मन में दूसरा भाव नहीं लावे। नेः चल होय याने निश्चय करके सतगुरू विधि से भजन करने पर ही ब्रह्म देश याने परमपद की प्राप्ति होती है।

ब्रह्म ध्यान में अजब तमाशा, भाषे संत सुणे को दासा।
ब्रह्म ज्ञान बिन ज्ञान अधूरा, पुन्युं बिना चन्दर ज्यूं नूरा।। १४।।

ब्रह्म धाम याने केः पद में सतशब्द के अनुभव का अखण्ड आनन्द आना ही अजब तमाशा है। जिन सन्तो को उस पद की प्राप्ति हुई है उन्हें ही भाषता है। जो दास उस पद की प्राप्ति की इच्छा रखते है वो सुणते है याने धारण करते है। ब्रह्म की प्राप्ति के बिना सब ज्ञान अधूरे है। जैसे पूनम के चन्द्रमा बिन सब चन्द्रमा अधूरे है।

सब पर ज्ञान ज्ञान सो ओई, ब्रह्म ज्ञान सम ज्ञान न कोई।
बाहला नदी बोहत बिध आवे, समंद पडया सब नाम मिटावे ।। १५।।

सब ज्ञानो से ऊंचा ज्ञान यही है। ब्रह्म प्राप्ति के ज्ञान के बराबर और कोई ज्ञान नहीं है। जैसे बरसात में नदी बाहले बहुत आते है। जब समुद्र में मिल जाते है तो इनका कोई नाम नहीं रहता, ऐसे ही माया प्राप्ति के ज्ञान नांव रूप वो सब बाहला नदी के समान है। उससे आवागमन नहीं मिटता है। ब्रह्म प्राप्ति का ज्ञान समुद्र की तरह है। उस पद में नाम रूप नहीं रहता है व जन्म मरण से रहित हो जाता है।

चौथे पद मिल्या जन जाई, सब त्रिगुण की लेस मिटाई।
त्रिगुण जाय गिगन घर किया, माहा सुन्न पर डेरा दिया।। १६।।

चौथे पद याने के: पद में सतगुरु विधि से साधन करके उस पद में मिलने वाले त्रिगुण माया के शरीर से अलग होकर आत्म चेतन से के: पद में मिलकर आ: पद में मिलना ही महा सुन्न पर डेरा देना है।

मैं हरिजन हूं ब्रह्म बिलासी, जग सेती मैं रहूं उदासी।
हेला पाड़ कहूं जग मांही, ब्रह्म ज्ञान बिन मुक्ति नांही।। १७।।

मैं ब्रह्म की भक्ति करने वाला हरिजन हूं। जगत की करणी व कर्म से अलग रहना ही जगत से मेरा उदास रहना है। जगत में जीवों को उपदेश करता हूं कि ब्रह्म ज्ञान याने चौथे पद की प्राप्ति के बिना जन्म मरण से रहित नहीं होता।

बाहर आंण नगर सब देखे, मांय धस्या बिन क्या ले पेखे।
त्रिगुण करे, करावे बारे, लागी भूक, नीर के सारे।। १८।।

बाहर की करणी कर्म करने से उस पद की प्राप्ति नहीं होती, इनको बाहर नगर देखना कहा है। शहर में क्या है, अन्दर गये बिना मालूम नहीं पड़ता। सतगुरु का ज्ञान आत्म चेतन के आधार से होता, वो शहर को अन्दर से देखना है। त्रिगुण माया की भक्ति बाहर होती है। जिस तरह अन्न जल खाते पीते है उससे भूख प्यास नहीं मिटती। ऐसे ही इन साधनो से जन्म मरण से रहित नहीं होते।

छप्पन भोजन कर कर लावे, जिम्या बिना भूख नहीं जावे।
हेले बिना सुणे नहीं कोई, हेत बिना घर जाय न कोई ।। १९।।

भोजन बना बनाकर लावे, परन्तु भूख परसाद किये बिना नहीं मिटती। आवाज दिये बिना कोई नहीं सुनता, बिना प्रेम के कोई किसी के घर नहीं जाता।

जल में बेष पेश कोई आवे, पियां बिना प्यास नहीं जावे।
अंतर मिल्या बिना नहीं माने, केती बात कहे कोई छाने।। २०।।

कोई जाकर जल में बैठ जावे परन्तु पिये बिना प्यास नहीं जाती। अंतर में एक दूसरे का आपस में विश्वास नहीं होता। जब तक कोई किसी की बात नहीं मानता।

इस बिध किरया सबे करावे, घट बिन भेद जलण नहीं जावे।
आत्म मांय बिराजे रामा, तन कूं सोज सरे सब कामा।। २१।।

इस तरह से सब करणियों व कर्म करने से घट में ज्ञान का भेद मिले बिना अन्तर की जलन नहीं जाती। आत्मा में ही परमात्मा बिराज रहे है। शरीर से सतगुरु विधि से भजन करने से ही सारे शरीर में अनुभव होकर पांच तत्वों के शरीर से अलग होकर के: पद का अनुभव कर आ: पद में मिलना ही सब काम सरना है।

सूरज स्हेस ऊदे होय आवे, घट में रेण तिमिर नहीं जावे।

अेक लख चन्द्र स्हेस लख सूरा, तिण मध बास रहे नहीं दूरा।। २२।।

हजारो सूर्य के उदय होने पर घट में अज्ञान रूपी अंधकार है वो नहीं मिटता। एक लाख चन्द्रमा हजारो सूर्य जहां उदय हो जावे वहां जाकर बैठने से भी घट का अन्धकार दूर नहीं होता।

अेता ऊदे हुवो तो काई, तन बिन भेद ऊजालो नांही।
सतगुरु मिले भेद जब पावे, असंख सूर मांही दिखलावे।। २३।।

इतने सूर्य चन्द्रमा उदय हो तो क्या है। ज्ञान का भेद बिना मिले घट में प्रकाश नहीं होता है। सतगुरु की शरण मिलने पर ही उससे ज्ञान का भेद मिलने पर असंख सूर मांही दिखलावे याने सतशब्द घट में जागृति होने पर खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड व रग रग रोम रोम व अगम देश का ज्ञान से अनुभव होना ही असंख सूर दिखलाना है।

ज्यूं दरपण में आप दिखाया, सतगुरु भेद ब्रह्म यूं पाया।
तीन लोक काया में कवावे, सतगुरु भेव लखण में आवे।। २४।।

जैसे कांच में अपना चेहरा दिखता है ऐसे ही सतगुरु से भेद मिलने पर ही आत्मा परमात्मा पद की प्राप्ति करती है। तीन लोक याने खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड इस शरीर में ही सतगुरु से भेद मिलने पर ही उसका अनुभव होता है।

घट मध भेव ब्रह्म भर पूरा, सतगुरु भेद परसिया नूरा।
मैं हरजन होय जग में आया, हंसा कूं कहे ज्ञान सुणाया ।। २५।।

घट में ब्रह्म आत्मा चेतन रूप से भरपूर है, सतगुरु से भेद मिलने पर पांच तत्व से आत्मा अलग होती है, तब ही ब्रह्म पद की प्राप्ति होती है। मैं निज नाम की भक्ति का प्रचार करने के लिये हरिजन होकर जगत में आया हूं। हंसों को निज नाम की भक्ति का ही केवल ग्यान देता हूं।

हंसा सुणो हमारी वाणी, तन मन भेद कहूं सब आंणी।
अमरापुर से मैं चल आया, तुम कारण मुझ ब्रह्म पठाया।। २६।।

सता रूप से म:फ: है कि सब हंस मेरे वचन सुणो, तन याने शरीर व मन का सब भेद बताता हूं। मैं अमरलोक से चलकर आया हूं। सतस्वरूप के पद से आया हूं। तुम्हारे लिये ही ब्रह्म ने भेजा है।

मोकूं लखो ज्ञान कर सोई, उठ बैठ क्या मेरी होई।
बोली सबे बात सब ठाणो, करूणारत सुं मोय पिछाणो।। २७।।

ज्ञान रूप से म:फ: है कि मुझे ज्ञान दृष्टि से पहचानो, ज्ञान से मेरे साधन को देखो, सांस ऊसांस में भजन करना ही मेरी उठ बैठ समझना है। मेरे ज्ञान व बात को करूणा से मेरे ज्ञान को प्रेम भाव से धारण करो। यही करूणारत से मोय पिछाणना है।

अजपे संग राम लिव लागी, रेणी ध्यान भरम भिन्न भागी।
राम नाम मेरे इधकारा, अजर लोक अेनाण विचारा ।। २८।।

सतगुरु विधि से राम नाम का भजन कागलिया की धुन के साथ रटणे से निजनाम के संग से ग्यान ध्यान में आत्मा लीन होकर भरम करम से अलग हो गई, ये अजर लोक की निशाणी है।

अे अेनाण देखिये सोई, निश दिन बात ब्रह्म की होई।
मैं भी ब्रह्म ब्रह्म कूं गांवू, ब्रह्म ब्रह्म कूं कहे समझावूं।। २९।।

म:फ: है कि रात दिन ब्रह्म का बखाण करते हुए ब्रह्म का ध्यान कर देखो। मैं भी ब्रह्म हूं ब्रह्म

का ज्ञान करता हूं। ब्रह्म ही ब्रह्म को कह रहा है। ब्रह्म ही ब्रह्म को समझा रहा है।

ज्यूं गजराज गज समझायो, अपणो बल ले तुरत बतायो।
संगत गधा भूल गयो आपो, गज मत छाड गधा मत थापो ।। ३०।।

जैसे हाथी ने हाथी को समझाया, हाथी अपने बल व स्वरूप को भूल गया था तो हाथी ने उसके बल व स्वरूप का ज्ञान कराया। हाथी गधो की संगत में अपने बल व स्वरूप को भूलकर अपने को गधा समझने लगा और गधिया हाथी समझने लगा। जैसे आत्मा तो ब्रह्म ही है परन्तु पांच तत्वो व तीन गुणो के साथ अपने को जीव समझने लग गया है।

पटक्या गधा कुमारस मारयो, तब आपो गजराज संभारयो।
जब वो जाय बन्धयो दरबारा, खान पान ऊतम सब चारा ।। ३१।।

हाथी को अपने स्वरूप व बल का ज्ञान हो गया तब उसने गधो को भी पटक दिया, कुम्हार को भी मार दिया, ऐसे ही आत्मा को अपने ब्रह्म स्वरूप का ज्ञान होने पर करणियो व करमों से अलग होना ही गधो को पटकना हैं। आयु अवधि याने पांच तत्व के शरीर को नाम निज नाम की भक्ति करके जीते जी शरीर को छोड ब्रह्म की भक्ति करना ही कुम्हार को मारना है। जब हाथी राजदरबार में पहुंचा तो उसका खान पान व व्यवहार सब अच्छे हो गये। ऐसे ही आत्मा जब केवल की भक्ति में लगती है, तो परमपद की प्राप्ति कर जन्म से रहित हो जाती है।

यूं हंसा कूं कह समझावूं, अपणो सरूपज मांय दिखावूं।
तुम तो ब्रह्म और नही कोई, आपो भूल रहया यूं सोई।। ३२।।

म:फ: है कि हंसो को मैं ज्ञान से समझाता हूं। आत्मा को परमात्मा पद की प्राप्ति कराना ही अपने स्वरूप को मांय दिखाना है। तुम तो ब्रह्म हो, जीव नहीं हो, अपने स्वरूप को भूल रहे हो।

देश देश का हंसा आवे, न्यारी बोली बैण सुणावे।
अजरलोक का बायक न्यारा, बिरला लखे शब्द संसारा।। ३३।।

अलग अलग साधना करने वाले हंस आते है। वे अपने साधन की अलग अलग बात कहते है। अजरलोक की प्राप्ति का साधन इन सबसे अलग है। इसे बिरले ही करते है।

दुभास्यो नर जब चल आवे, आप समझ औरां समझावे।
अमरलोक की बैठक ऐसी, हले न चले न डोले नहीं तैसी।। ३४।।

दो भाषा जाणने वाले आप समझते व ओरो को भी समझाते है अेसे तीन लोक का ग्यान भी जाणे और चौथे लोक में मिलने का ग्यान भेद जाने तो माया से हिलते नहीं, इच्छा से चलायमान नहीं होते, मन से डोलते नहीं, ये ही अमरलोक में जाने वाले हंसो की पहचान है।

देही बधे चढे आकाशा, ऊथले नेण सुन्न घर बासा।
त्राटक बंध लगे जब सोई, नाभी पवन झीण सो होई।। ३५।।

ध्यान करते हुये ध्यान ऊपर जाता है उसको देही बढना व आकाश में चढना कहा है। यहां से ध्यान आगे सुन्न में अनुभव होता है उसको ऊथले नेण सुन्न घर बासा कहा है। त्रिकुटी में शब्द आता है वहां त्राटक बंध लगता है, तब स्वांसा से अलग हो जाता है, यही नाभी पवन झीण सो होई है।

रेचक पूरक कुंभक ध्यानी, अजरलोक की या सेनाणी।
बैठा हले चले नहीं कोई, मुख दे चुपक बात नहीं होई ।। ३६।।

जिस साध के रेचक, पूरक, कुंभक ध्यान लगता है तब समझो उसके अजरलोक जाने का मार्ग प्रशस्त हो रहा है, अखण्ड ध्यान होना ही बैठा हले चले नहीं कोई है, और मुंह से आवाज बंद हो जाती है।

रेचकी ध्यान पर मन नासा, पुरकी ध्यान मन चख बीच बासा।
कुंभक भंवर गुफा लग जावे, जहां कोई जुरा काल नहीं आवे।।
अला चन्द्र पिंगला घर सूरा, सुखमण बरसे झिलमिल नूरा।
खट कंवला खट चक्र सोधे, गुरु के ज्ञान मन प्रमोदे।।
द्वादस कमल परे इक बारी, सो लांघे सो सन्त इधकारी।
रसणा जप्यां अजपो आवे, रग रग रोम रोम लिव लावे।।
नौ दरवाजा काल का बासा, दशवे द्वार अमर अेवासा।
महासुन्न में जाय समावे, अदबुद बात केण नहीं आवे।
बस्तु बानगी ले कोई आया, यूं हरजन ने बैण सुणाया।। ३७ ।।

रेचकी ध्यान नाक की अणी पर मन लगाकर किया जाता है, पूरक ध्यान दोनों नेत्रो के बीच लगाना पड़ता है, कुंभक ध्यान भंवर गुफा तक जाता है। अला पिंगला चन्द्र सुर्य जब त्रिकुटी पर शब्द आता है और सुखमण में भजन होता है तो साध का नूर उस सत शब्द से झिलमिल करने लगता है। छह कंवल पूर्व के, छह कंवल पश्चिम के सोधी करता है। और ऐसे ओधाधारी गुरु का अणभै ज्ञान सुनकर मन प्रफुल्लित होता है। बारवें कंवल पर केवल की बारी है जो उसको पार कर लेता है वो संत वृति आत्मा अजरलोक की अधिकारी होती है। मुखार बिन्द से राम का नाम संतों की विधि से जपने पर यह ने: अक्षर ब्रह्म वेराट से आता है तब रोम-रोम से राम नाम होता है। नौ दरवाजे तक तो काल का वासा है और जो आत्मा दसवें दरवाजे से निकलती है उसका अमर अेवास केवल पद में होता है। महासुन्न याने आ: पद में लय होता है तो वहां की बात कहने में नहीं आती, क्योंकि वो ऊदबुद बात है। अणभै ज्ञान की बानगी जिससे ने: अक्षर आता है वो लेकर ओधाधारी सतगुरू आते है और आत्मा परमात्मा में कैसे मिले, वो वचन सुनाते है।

ध्यान बंधको चेन दिखावे, बूठा मेहे सुभावल आवे।
बिरखा सुख कहो क्या होई, सीखत ज्ञान सब सुख होई।। ३८।।

ध्यान करने वाले ध्यान का अनुभव बताते है तो सुनने वाले को ऐसा सुख मालुम देता है जैसे बरसात तो हुई नहीं, उसकी ठंडी हवा से सुख होता है। सीख कर ज्ञान करने वालों को उस पद की प्राप्ति होती है। बरसात जहां बरसती है अन्न वहां ही पैदा होता है, सुभावल याने ठंडी हवा से अन्न नहीं पैदा होता है।

अमरलोक सूं मैं चल आवुं, झूंठ सांच को न्याव चुकावुं।
परमभक्त बिन मुक्त न होई, धाम भजन बिन जाय न कोई।। ३९।।

सता रूप से म:फ: है कि मैं अमरलोक से चल कर आता हूं। माया क्या है, ब्रह्म क्या है, का अलग निरणा करता हूं। केवल भक्ति के बिना मोक्ष नहीं हो सकती है और उस धाम (केवल पद) में बिना भजन के कोई नहीं जा सकता है।

हेला पाड़ कहूं जग मांही, बिना राम कहूं मुक्ति नांही।

कर आचार उतम घर जावे, धरम जिग इन्द्र लोक सिधावे ।। ४० ।।

मैं जगत में आवाज देकर कहता हूं रामजी की भक्ति किये बिना मुक्ति नहीं मिलती। आचार विचार रखने से उत्तम घर में जनमता है। धरम करने से जिग करने से स्वर्ग में जाते है।

तीन लोक में भुक्ते सोई, शुभ सो कर्म अशुभ संग होई।
बोहो प्रकार करे नर कोई, करम भजन बिन गले न लोई।। ४१ ।।

शुभ व अशुभ कर्मो को तीन लोको में भोगना पडता है। कितने ही प्रकार से कर्म करो, कर्म भजन किये बिना नष्ट नहीं होते।

सोगी मेल द्रव्य कूं गाले, अंतर भजन करम सब जाले।
घर में लाय लगे जब सोई, डोरा रस्सी रहे न कोई।। ४२ ।।

सोगी डाले बिना सोना नहीं गलता, इसी तरह सतगुरु विधि से भजन किये बिना कर्म नष्ट नहीं होते। दृष्टान्त देकर समझाते है। जब घर में अग्नि लग जाती है तो घर का सब सामान जल जाता है। कुछ भी नहीं रहता है।

बन दू देत कोई जाई, घर कूं ताव न पहुंचे आई।
बाहिर क्रिया करम न धुजे, हाता किल्लो मोरचा जुझे।। ४३ ।।

बन में जाकर आग लगाने से उसकी आंच घर में नहीं आती। बाहर की क्रिया करणी करने से कर्म नष्ट नहीं होते। मोरचे पर जाकर लड़ाई लड़ते है। जब ही किल्ले पर कब्जा होता है।

तब लग मांय धंसे नहीं कोई, जब लग बात सही नहीं होई।
मन करमा को राजा कुवावे, बाहिर भटक हाथ नहीं आवे।। ४४ ।।

जब तक किले में प्रवेश नहीं होता तब तक किला कब्जे में आना नहीं समझा जाता। ऐसे ही मन कर्मों का राजा है सब कर्म मन से ही होते है। बाहिर की करणी व कर्म करने से मन वश में नहीं होता।

सरप वास बंबी में होई, बाहिर कूटिया मरे न कोई।
मन कूं बांध सूरत कूं धारे, शब्द लठ ले मांय पसारे ।। ४५ ।।

म: दृष्टान्त से समझाते है कि सांप बंबी में रहता है लेकिन बंबी को बाहर से कूटने से सांप नहीं मरता। मन व सूरत लगाकर सांस उसांस में भजन कर शब्द लठ को मांय पसारना है।

सांसो ऊसांस धंवे तब मांही, यूं मन सरप मारियो जाई।
परमपद परमात्म देवा, रटिया बिना मिले न भेवा ।। ४६ ।।

सांस ऊसांस में भजन करने से मन से आत्म चेतन अलग हो जाता है। यही मन रूपी सरप को मारना है। परमपद से ही परमात्मा की प्राप्ति होती है। सतगुरु विधि से भजन किये बिना परमपद की प्राप्ति का भेद नहीं मिलता।

नौधा भक्त जगत में जांणे, परम भक्त कूं साध पिछाणे।
नवधा भक्त करे कोऊ भारी, विष्णु लोक को हुवे इधकारी।। ४७ ।।

जगत में सब नवधा भक्ति करते है, कोई सन्त ही सतसरूप की भक्ति करते है, जगत में कोई नवधा भक्ति विधि पूर्वक करे तो उन्हें बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

शिव ब्रह्मा सो शक्त कवावे, इनकूं लोप कबहूं नहीं जावे।
जब लग काल न पुचे आई, बेस बैकुण्ठ परम सुख पाई।। ४८ ।।

शिव, ब्रह्मा और शक्ति की मर्यादा को नहीं मानने वालों को विष्णु लोक में स्थान नहीं मिलता है। बैकुण्ठ में जाने वाले वहां के सुख जब तक भोगते है, जब तक काल नहीं पहुंचता है।

जब वो काल विष्णु को ढावे, चाकर धणी गरभ में आवे।
ऊथल पुथल या तीना किया, जीव ब्रह्म का वे घर लिया।। ४९ ।।

किसी समय जब विष्णु भगवान की भी आयु अवधि पूरी होती है तब वहां पर बैठी आत्मा तथा विष्णु भगवान को भी गर्भ में आना पड़ता है। शिव, ब्रह्मा और शक्ति बैकुण्ठ निवासियों को स्थान खाली करने को कहते है यही ऊथल पुथल या तीना किया है। तब वे पुनः मृत्यु लोक में अपने कर्मानुसार खोली पाते है।

चाय बडाई सब में होई, सांची बात कहे नहीं कोई।
चाय जहां लग निरपख नांही, पख खांच कर बात सुणाई।। ५० ।।

कामना व बडाई की लालसा सब में है। जब तक लालसा रहती है तब तक सच्ची बात नहीं कहते। जहां चाहना होती है वहां पक्ष की बातें करते है। निरपक्ष बात नहीं कहते, क्योंकि ग्यानी अपने आपको ऊंचा समझते है, ग्यान के निरपख निरणे की जगह मन विचारो से ग्यान कहते है।

निरपख ब्रह्म पखो नहीं राखे, केवल ब्रह्म सत कर भाखे।
केवल ब्रह्म बिना सब वाणी, पखे पखे बोल्या सब आणी ।। ५१ ।।

ब्रह्म प्राप्ति का ज्ञान निरपक्ष है। केवल अणभै वाणी का निरणा तो माया ब्रह्म से न्यारा है और निरणा करने वाले ग्यानी अगर माया ब्रह्म को अेक बताते है तो पक्ष की वाणी बोल रहे है।

बात कहे कोई ज्ञान सुणावे, केवल बिना पखे सब लावे।
केवल उरे करम है लारे, जब लग कहे पखेन ही सारे।। ५२ ।।

कोई अपनी बात कहते है ज्ञान सुनाते है। वे सब केवल ब्रह्म के सिवाय सब अपने पक्ष का ज्ञान व बातें सुनाते है। केवल पद की प्राप्ति के बिना कर्म क्षय नहीं होते। कर्म साथ ही रहते है। जब तक पक्ष की बात कहने में आती है तब तक सार की बात नहीं है।

कुछ करमा की रेस रहावे, पखे बात आवे सो आवे।
थोडो गणो पखो जो होई, निरपख भक्त न होवे कोई ।। ५३ ।।

जब तक करमा की रेस याने कामना होती है तो पक्ष की बात करते है। जब तक थोडा बहुत पक्ष रहता है तब तक निरपक्ष ब्रह्म पद की भक्ति नहीं होती।

भजन भक्त शिष भाव कूं चावे, अे सुख पखे बिना नहीं आवे।
पण बिन भक्त न होवे कोई, घट बिन बोल वचन नहीं होई ।। ५४ ।।

भजन व भक्ति कराना चाहते है करने वालो को अपने में शिष्य भाव रखाना चाहते है तो ऐसे सुख पक्ष बिना नहीं आते। दृढ़ विश्वास बिना भक्ति नहीं होती, बिना शरीर के उपदेश नहीं होता, यही घट बिना बोल वचन नहीं होई है।

निरपख ब्रह्म पखो नहीं कोई, मून पकड नहीं निरपख होई।
मन मत बांध गरीबी धारे, निरपक्ष नहीं वो मत विचारे ।। ५५ ।।

ब्रह्म पद की प्राप्ति का निरपक्ष निरणा ही निरपक्ष है, मौन धारण करना निरपक्ष नहीं है। मन के विचारो से गरीबी धारण करना भी निरपक्ष नहीं है। वो अपने मन का विचार करते है।

मत में बंधे करे जां कांई, निरपख नहीं मत के मांही।
आदर गरीबी समता सोई, तीनूं लछ मत का होई ।।५६।।

दूसरों का आदर करना, गरीबी धारण करना, समता रखना, ये तीनो लक्षण मन के विचारो के है। मन के मत में बंधकर कोई काम करो, वो मन के विचारो के साथ ही है। निरपक्ष नहीं है।

ज्ञानी सुं मैं मत बखाणु, मत से ध्यान बंदगी ठाणु।
ध्यान सिरे मन धीरज आवे, मांही उलट ब्रह्म जब पावे।।५७।।

म:फ: है कि मैं ज्ञानियो से मेरा विचार बताता हूं। भक्ति करने का, ध्यान ज्ञान करने का विचार बताता हूं। जब केवल का ध्यान होने लगता है, तो वो श्रेष्ठ है। तब ही मन को धैर्य आता है। वो अन्दर ही उलट कर आत्मचेतन परमपद की प्राप्ति करता है।

गिरवर सुं हंस उतरे आई, सोई संखनाल के गेले होई।
बंकनाल होय उलट सिधावे, कंवल छेद घर मेर समावे।।५८।।

ब्रह्म वेराट से यह ने: अक्षर आता है और संखनाल से होता हुआ उलट कर बंकनाल से होकर मेरूदण्ड पर आता है। सभी कंवलो का छेदन करते हुए। जैसे भृकुटी में बिन्द का स्थान है संखनाल के रास्ते से वहां से उतर कर आता है।

ऊलंग्या हंस गिगन घर लिया, भंवर गुफा में आसण किया।
त्रिगुटी मांही अनाहद गाजे, अनन्त कोट जहां बाजा बाजे।।५९।।

मेरूदण्ड से त्रिगुटी में आना ही ऊलंगना है, त्रिगुटी से आगे ब्रह्मण्ड में पहुंच कर भंवर गुफा में ध्यान होना ही आसण करना है। त्रिगुटी में कई तरह की ध्वनि होना ही अनाहद का गरजना व बाजा बजना है। ध्वनियों का खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड में रग रग रोम रोम में अनुभव होना ही अनन्त कोट बाजा बजना है।

ईमरत झरे पीवे जन सोई, वां जन पी मतवाला होई।
बांणी कहे छेह नहीं आवे, पारब्रह्म का भेव बतावे।।६०।।

भजन ध्यान का आनन्द आना ही ईमरत झरना है। उस अनुभव का आनन्द लेना ही पीना व मतवाला होना है। उस पद का बांणी से वर्णन नहीं होता। अनुभव के द्वारा ही उस पद का भेद बताते है।

त्रुगुटी चढे अगम घर सूजे, सूरा संत रात दिन जुझें।
आगे धस्या समंद में सोई, शब्दा अरथ और नहीं कोई।।६१।।

त्रृगुटी याने पारब्रह्म को पार करने पर के: पद का अनुभव होता है। शूरवीर संत रात दिन भजन ध्यान करते है यही जूझना है। आगे सता समाधि में लय होना ही समुद्र में धसना है व लहरों का आनन्द लेना ही सुन्न समाधि में लय होना है। जब शरीर का कोई भान नहीं रहता। इसलिए शब्दों से उसका वर्णन नहीं होता।

जल में पेस कहां कोई भाखे, जलबंब ब्रह्म प्रकास्यो आखे।
जब लग नीर तीर लग जावे, तब लग ठाम केण में आवे।।६२।।

जल में प्रवेश कर क्या कोई उसका वर्णन कर सकता है। ऐसे ही ब्रह्म पद की प्राप्ति से ब्रह्म रूप हो जाता है तो के: पद आ: पद में समाना है। जब तक पानी की तीर तक जाता है तब तक वो जगह कहने में आती है। याने भंवर गुफा नव तत लींग शरीर त्रीताप है जब तक किनारे ही है

जल में घुसने के बाद जल ही जल है। ऐसे ही ब्रह्म पद की प्राप्ति होने पर ब्रह्म ही ब्रह्म है।

सब सो धस्या नीर के मांही, नीर ही नीर और कछु नांही।
ब्रह्म धाम का भेद बताया, दशवे द्वार ब्रह्म वर पाया।। ६३।।

जब जल में प्रवेश करते है तो जल ही जल और कुछ नहीं है। इस तरह ब्रह्म पद की प्राप्ति का भेद बताया है। दशवां द्वार पार करने पर ब्रह्म पद की प्राप्ति हुई है।

दशवे द्वार केवली होई, करम कसर रहे नहीं कोई।
कटिया करम भरम सब भागा, दशवों द्वार केवली जागा ।। ६४।।

दशवें द्वार में के. का पद है, वहां पहुंचने वालों के सब करमों का क्षय हो जाता है, सभी करम व भरमों का नाश हो जाता है। फिर उस साध के केवल में जाने का मार्ग प्रशस्त होता है।

मन की सूते, सबे नहीं जावे, या कसर केवल नहीं आवे।
शिव जूं आपी सतजुग सारे, आ देह पडे जलम वां धारे।। ६५।।

केवल में मिले बिना मन के संकल्प विकल्प सब समाप्त नहीं होते याने नहीं जाते। सतयुग में सत ही था उससे शिव ब्रह्म की प्राप्ति होती थी परन्तु समय पाकर शिव ब्रह्म से भी वापिस आकर जन्म धारण करना पड़ता है।

कलजुग संत एक भवतारी, क्षेत्र विदे मोक्ष इधकारी।
भगवत समो सदा वां बीसी, सतजुग त्रेता द्वापर जैसी ।। ६६।।

कलजुग में कोई संत सतगुरु विधि से भजन कर सतशब्द की जागृति कर उसके साथ खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड से पार आत्मा के निरजंण निराकर पद में शरीर से अलग के: पद आ: पद के अनुभव वालों केवली भगवंतो के ज्ञान व सतशब्द को ही भवतारी सन्त कहते है वो ही विदेह क्षेत्र है। उनके द्वारा ही उनका ज्ञान धारण करने से हंसो को मोक्ष की प्राप्ति होती है। यह ज्ञान सब जुगों में स्थायी रहता है। यही भगवत समो सदा वा बीसी है।

केवल होय नकेवल होई, फेर जलम नहीं धारे कोई।
केवल मिले नकेवल मांही, तब है ब्रह्म और कुछ नांही।। ६७।।

के: पद की प्राप्ति होने पर ही आ: पद की प्राप्ति होती है। उस पद की प्राप्ति के बाद फिर जन्म धारण नहीं करता। के: पद मिलने पर ही आ: पद की प्राप्ति होती है। जीव पद में भी आत्मा ब्रह्म ही थी पर अपने सरूप को भूल रही थी। अब आ: पद की प्राप्ति होने पर आ: ब्रह्म हो गयी है।

माया जलम धरे सो आई, भूला कहे ब्रह्म है भाई।
धरी देह अवतार कहावे, केवल ब्रह्म कूख नहीं आवे।। ६८।।

जन्म तो माया धारण करती है, अज्ञानी उसे ब्रह्म मानते है। देह धारण करते है उन्हें अवतार कहते है। केवल ब्रह्म तो प्रकट होता है जन्म नहीं लेता।

धरिये कूं पूजे पूजावे, पूरण ब्रह्म कछु नहीं पावे।
धंधो करे जगत के मांही, केवल पंथ शिर पे बेहे जाई ।। ६९।।

जो माया का स्थूल शरीर धारण करते है वो गुरु हो चाहे शिष्य हो, उनकी ही महिमा करने से पूरण ब्रह्म का ग्यान नहीं समझ सकते। नाशवान शरीर को पूजना व पूजवाना तो संसार के धंधे के समान है। केवल की भक्ति तो राम नाम को सास उसांस में रटणे से ही ब्रह्मण्ड को पार कर सकते है।

झूंठी बात सांच नहीं होई, माया ब्रह्म फेर कहूं ओई।
करत बात दोनुं दिखलावे, सांची रहे झूंठ सब जावे।।७०।।

म:फ: है कि झूंठ कभी सत नहीं होता। माया व ब्रह्म में यही फरक है, बात करने में माया व ब्रह्म दोनो साथ है, शरीर जो माया का है वो तो चला जाता है। आत्म चेतन सत है उसका नाश नहीं होता।

ने: चे ब्रह्म झूंठ है माया, धरी देह अवतार कहाया।
झूंठ पकड़ जूंझे नर कोई, नेचे हार, जीत नहीं होई।।७१।।

निश्चय ब्रह्म तो सत है, माया असत है। ऐसे शरीर धारण करने वालों को अवतार कहते है। कोई असत को सत बतावे तो कभी भी सत नहीं होता। उनकी निश्चित हार होगी, जीत नहीं होगी।

कण बिन आंण फूंस कूं कूटे, नागे को क्या नागा लूटे।
त्रिया, पुरूष बिना, होय नारी, हेत प्रीत सुं रमें पियारी।।७२।।

कण याने अन्न रहित भूषे को कुटने से अन्न की प्राप्ति नहीं होती। जिसके पास कुछ नहीं है उसको लूटने से उसके पास क्या मिल सकता। जैसे पुरूष के बिना दो स्त्रियां साथ रहती है।

बोहोत बरस दिन भेला होई, दोयां सुं नहीं तिजो कोई।
गारो कीच लग्यो आय अंगा, पाणी बिना न होवे चंगा ।।७३।।

दोनो स्त्रियां कितने ही बरस साथ रहे तो भी दो से तीसरा नहीं होता। शरीर पर कीचड लग जाता है तो बिना पानी के साफ नहीं होता।

नौधा, जन्म मरण है लारे, निरगुण बिना कहो कोण ऊबारे।
गुण सो मिले, गुणा में जाई, निर्गुण ब्रह्म आप है भाई ।।७४।।

नवधा भक्ति करने से जन्म मरण नहीं मिटता, बिना निरगुण भक्ति के कैसे मिट सकता है। पांच तत्व, तत्वों में तीन गुण, गुणों में मिल जाते है। पांच तत्व तीन गुणो से अलग होने पर ब्रह्म ही है।

निरगुण भक्त भेव नहीं आवे, सुरगुण सुरगुण सब ही गावे।
काजी पिंडत मरम न जांणे, सतगुरू बिना कहो कुण पिछाणे।।७५।।

जब तक निरगुण भक्ति का भेद नहीं मिलता तब तक सुरगुण की भक्ति करते है। काजी पंडित निरगुण भक्ति का मरम नहीं जानते। सतगुरु शरण लिये बिना निरगुण याने भजन का भेद नहीं मिलता।

<u>दोहा</u> :- तीन लोक चहूं चख सूं, है ऊंचा अंवास।
गुरु शरणे सुखराम कह, हंस करे जाय बास ।।७६।।

तीन लोक चवदह भवन से वो पद ऊपर है। उस पद की प्राप्ति सतगुरु की शरण लेने पर ही होती है। याने सत्य केवल्य ज्ञान को धारणा करना।

अमरलोक सुखराम कहे, या विध सुं हंस जाय।
सांचा सतगुरु शिर धरे, रहे राम लिव लाय ।।७७।।

म:फ: है कि अमरलोक इस विधि से हंस जाते है। सत की घट में जागृति सांचा सतगुरु याने सत केवल ग्यान को बुद्धि पर विवेक रखकर धारण करें व राम नाम के भजन का सांस उसांस में रट कर बारा ही कंवलो की जानकारी करके परम पद में मिले।

।। इति श्री अजर लोक ग्रन्थ सम्पूर्ण।।

卐 ब्रह्म विचार का अंग 卐

कवित : प्रतिपाल परवार राम सोई तुज कहावे, अलख अमर जगदीश तुज ही तोही को गावे। निराकर निरबन्ध और बन्धन में तुं ही, सत साहिब भगवान आप करता सो होई।।
तुं ही माया तुं ब्रह्म है, तुं सत जीवर शीव, कह सुख देव अब समझीया तुम हो नारी पीव।। १ ।।

सब संसार के परिवार की रक्षा करने वाले रामजी आप ही है। आप किसी के लखने में नहीं आते, आप अमर है, आप जगत के ईश्वर है, सब आपको ही गाते है। आपका कोई आकार नहीं है। आप किसी के बंधन में नहीं है। पांच तत्वों व आकार के साथ आप बंधन में है। सतसाहिब का पद भी आपका ही है, भगवान भी आप ही है। आप ही सृष्टि करता है, आप ही माया व आप ही ब्रह्म है, आप ही सत है, जीव भी आप व शीव भी आप है। म:फ: है कि अब समझ में आया कि आप ही स्त्री आप ही पुरूष है।

निरालंब निराधार आप आरब अविनाशी, तूं शंकर शीव शेष तुज बैकुंठा बासी।
प्रजा जगत जिहान पशु पंखी बन सारा, तूं तूं तूंही तुज तुज है शकल पसारा, पांच तत्व तूं ही बण्यो ब्रह्मा शक्ति स्वरूप, कह सुखदेव निराकार तूं सब जग हरी को रूप ।। २ ।।

आपके किसी का सहारा नहीं है। आप निराधार है आप ही आरब है। अविनाशी भी आप ही है। आप ही शंकर शिव शेष है। आप ही बैकुण्ठ वासी है। प्रजा जगत जहान पशु पक्षी बन सब जगह आप ही है। संसार में सब जगह आप ही का पसारा है। पांच तत्व भी आप ही बने है। ब्रह्मा व शक्ति का स्वरूप भी आप ही है। म:फ: है कि निराकार भी आप है। यह सारा संसार ब्रह्म का रूप है।

तूं ही दाणु औतार सारे सेवे सो स्यामी, जख राक्षस जंजाल भूत शिलो तत कामी।
करणी करता आप जड भोला बिड रूपा, शिष्ट अंबर छांय पंच बेलु शशी धूपा।।
हर हरियो करतार है तामें मीन न मेख, कह सुखदेव चालो करे तेसा सुख दुख पेख ।। ३ ।।

आप ही राक्षस है, आप ही अवतार है, सार सेव व स्वामी आप ही है। जख, राक्षस, जंजाल, भूत शिलो तत कामी करणी करता भी आप है। जड भोला बिड रूप सृष्टि अंबर छाया पंच बेलु चन्द्रमा सूर्य हर हरिया करतार सब आप ही है, इसमें किसी तरह का फरक नहीं है। म:फ: है कि जैसा करता है वैसा ही सुख दुख मिलता है।

हनुमत सीत समंद राम रावण सो ओही, कुंभकरण महिरावण बाल लक्ष्मण संग सोही।
भरत विभीषण मृग जटायु युध हुवो, लवकुश सुण सुग्रीव, नहीं तो बिन हर जुवो।
इत ऊत तरफा आप ही हार जीत तूं होय, कह सुखदेव करतार बिन और न दूजो कोय ।। ४ ।।

हनुमान सीता समुद्र रावण राम सब आप ही हो, कुंभकरण महिरावण बाली लछमण सब आप ही हो, भरत विभीषण मृग जटायु से लड़ने वाले भी आप हो, लवकुश सुग्रीव आपके बिना दूसरा कोई नहीं है, इधर उधर जहां कही भी आप है, हार जीत भी आप ही है। म:फ: है कि ब्रह्म के सिवाय और कोई दूसरा नहीं है।

रूखमण राधाकृष्ण कंस बसुदेव कहाणो, पृथु भरत सुखदेव रूम रिषी अटल रहाणो।।
पीर तीर्थंकर पाप धर्म आभो तु धरणी, मन्त्र जन्त्र मान कर्म केशु करणी।।
बरण्या शकल बमेख जगत जंवरो तू ही जोगी, सुण सुखदेव कह सांच रे तू वैदक तू ही रोगी ।। ५ ।।

रूखमण राधा कृष्ण कंस बसुदेव आप ही कहलाते हैं पृथु भरत सुखदेव लोमेश ऋषि अटल रहने वाले भी आप है। पीर तीर्थंकर पाप धर्म आकाश पृथ्वी मन्त्र जन्त्र मान कर्म केशु व करणी वर्णन करने वाला सब ज्ञान जगत जंवरो जोगी आप ही है। म:फ: है कि सच कहता हूं आप ही वैद्य व रोगी है।

मच्छ कच्छ बराह, मोर परस नरसिंह प्रहलादु। बावन बल सुण बाल, जेत जोशी तू ही जादू।।
दत व्यास गज दीन हंस हंसा हग्रीवा। वेद धनंतर बांण साम साहिब सुण सुग्रीवा।।
सनक सनन्दन साम, तुं नर नारायण नाम। कह सुखदेव हरि का बन्या गण गंद्रप सुरगाम।। ६ ।।

मच्छ कच्छ बराह मोर व परशुराम नृसिंह प्रहलाद बावन बली जेत जोशी दतात्रेय वेदव्यासजी हाथी हंस हंसापुर हग्रीव धनवन्तरी वैद्य बांण साम साहिब सुग्रीव सनक सनंदन साम आप ही है। म:फ: है कि नर नारायण नाम वाले गण गंद्रप देवता गांव सब ब्रह्म के है।

ऋषभदेव तूं राम कपिल विधाधर कहाणो। बुध निकलंक बलवंत ज्ञान होय प्रगट गवाणो।
भरत पृथु भगवान चैत औतार कहायो। रमता तुं सुखराम आप बिन नजर न आयो।।
परखुं दिष्ट पसार नेक दिशे नहीं न्यारो। तुं ही तुं करतार प्रगट हर आप पसारो ।। ७।।

ऋषभदेव राम कपिल मुनि विद्याधर भी आप कहलाये। बुद्ध निकलंक बलवन्त ज्ञान होकर प्रगट में गाये जाते है। भरत पृथु भगवान चेतन्य औतार भी आप ही कहलाये। रमता भी आप है। म:फ: है कि आप के बिना दूसरा कोई नजर में नहीं आया है। दृष्टि पसार कर देखता हूं जरा सा भी अलग नहीं दिखता सब जगह आप ही आप है। इस प्रगट पसारे में आप ही है।

आरब अल्ला अतीत तुरक हिन्दु तुं ही तत है, जुग बरण्या तुं ही जात वेश्य करसो तुं ही खेत है।।
नर नारी तुं ही नाम, माय पुत्र नर मेहरी राजा तुं ही अमराव शेष केरू तुं ही शहरी।।
प्रगट तुं द्रगपाल कंस केरू तु कहाणो, सर्व सम सुमेर जहां तहां साहिब जांणो।। ८ ।।

आरब अला अतीत हिन्दु मुसलमान सब ब्रह्म ही है। जुग भी आप ही, जात भी आप ही, महाजन किसान व खेत भी आप है। स्त्री पुरूष व नाम माता पुत्र नर स्त्री राजा अमराव शेष केरू व शहर द्रगपाल कंस केरू भी आप कहलाये सब जगह बराबर सुमेर जहां कही ब्रह्म है।

<u>प्रश्न</u> : थे किसा राम ने गाओ?

<u>रेखता</u> : पांच जीण तत बैराट यो थिरपियो, विष्णु ब्रह्मा हर पैदा किया।
पीर औतार शिव शक्ति के उपरे, दूज कूं ज्ञान का मूल दिया।।
अलख अलेख अल्ला खुदाय सो, काल होणहार उण राम सारे।
पलक में मांड नर नार सो थरपिया, छिनक में सबकूं मार डारे।।
कागदा उपरे राम मंडे नहीं, मुख में जीभ पर नांय आवे।
दास सुखराम परब्रह्म ने रट रहया, संत कोई शूरवां भेद पावे।। ९ ।।

पांच तत्वों व ब्रह्म बैराट की रचना की है। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव को बनाया है। पीरों अवतारो शीव व शक्ति के जो ऊपर है। ब्रह्माजी को मूल ज्ञान देने वाले अलख अलेख खुदा काल होणहार ऊण राम के सहारे है। पलक में सब सृष्टि व स्त्री पुरूषों को प्रगट किया है। क्षण भर में सब को मिटा देता है। राम का निजी नाम कागज पर नहीं मंडता, जबान मुंह पर नहीं आता। म:फ: है कि पारब्रह्म परमात्मा की भक्ति का भेद शूरवीरता से भजन करने वाले ही जानते है।

छंद जात भुजंगी : नथो बाप मईया नको बैन भईया, नथो जात पांती नको रंग भाती।
नथो रूप रूपं नको गृह चूपं, नथो देव सेवा नको भोल भेवा।।
अखण्डी निजा नाम, ब्रह्म हूं विचारंग।। १०।।

न बाप न माता न बहन न भाई न जाति न पांति न कोई रंग न भाती है उसके कोई रूप नहीं है न गृह है न चुप है, देव है न सेव है, न भोल भेवा है, ब्रह्म का जो निज नाम है, अखण्ड है उसकी सोच समझकर भक्ति करो।

जहां देश वासंग नहीं तीस लारं, बिना ब्रह्म भक्ति मिले सब छारं।
बिना रूप रूपं बिना नैण न्यारं, धरे ध्यान सोई यूं ब्रह्म विचारंग।।
नथो हार जीतंग नको खांण दीपंग, नथो बन रोही नको नगर होई।
नको देव मायंग नको देश कायंम, नथो राग बागंग नको महल छाजंग।।
अखण्डी निजा नाम, ब्रह्म हूं बिचारंग ।। ११।।

जहां वे बिराजते हैं वहां जाने पर फिर किसी तरह की प्यास (इच्छा) बाकी नहीं रहती। ब्रह्म की भक्ति किये बिना सब खाक में मिल जाते है। उसका कोई रूप नहीं है, न चर्म चक्षुओं से दिखता है। ब्रह्म का विचार कर ध्यान करो। न हार में, न जीत में, न किसी खांण में, न दीप में, बन में, न रास्ते न नगर में, न देवता में, न उसका कोई देश है, न कोई राग में, न कोई बाग में, न महलों में है। पारब्रह्म का निज नाम अखण्ड है। उसकी सोच समझकर भक्ति करो।

नथो जाम जाया नको कूख आया, नथो त्याग त्यागी नको पंच जागी।
नथो सूर होई नको हीण कोई, नथो जीव जीतंग नको बुध वितंग।।
अखण्डी निजा नाम, ब्रह्म हूं विचारंग।। १२।।

उसे न किसी माता ने जाया है न वह कूख में आया है। न वह त्याग में न त्यागी में, न पांच तत्वों में, न शुरवीरता में, न हीणता में, न जीव की जीत में, न बुद्धि में, न धन में, जो पारब्रह्म का निज नाम अखण्ड है। उसकी सोच समझकर भक्ति करो।

नथो जोग जोगी, नको गृह भोगी। नथो खाख अंगा, नको फेर चंगा।।
नथो बैण बोले, नको जग डोले। नथो हीण होई, नको ऊंच कोई।।
अखण्डी निजा नाम, ब्रह्म हूं बिचारंग ।। १३।।

न तो जग है न जोगी है, न गृह में है न भोगी है, उसके अंग में न राख है, न वह फेर है न चंगा है। न वह वचन बोलता है न वह जगत में फिरता है, न वह हीण है न वह ऊंच है।

नथो बिरल बांणी, नको मूल ठाणी। नथो वेद बांचे, नको जाय जांचे।।
नथो अर्थ किनं, नको भेद चिनं। नथो मुढ होई, नको ज्ञान कोई।।
अखण्डी निजा नाम, ब्रह्म हूं बिचारंग ।। १४।।

न वह बिरल वाणी है न मूल न ठांणी है, न वह वेद बांचता है न वह जाकर जांचता है। न वह अर्थ करता है न कोई चीनता है, न वह मूर्ख है न वह कोई ज्ञानी है।

नथो पाप पुन्न, नको शरर सुनं। नथो तेज तारं, नको निरट धारं।।
नथो चाय चाल, नको कहण पाल। नथो बाल तरूणा, नको कंवार परणा।।
अखण्डी निजा नाम, ब्रह्म हूं बिचारंग ।। १५।।

न वह पाप पुण्य है न वह शरर सुन है, वह तेज नहीं व तार है वह निरट धार है, न वह चाय चाल है, न वह कहण पाल है, वह न बालक न जवान है, न कंवारा न परणा है।

नथो ओत पोती, नको कमल जोती। नथो ऋषि राया, नको कर्म काया।
नथो दिष्ट कोई, नको भूल होई। कह सुखराम, धरो ध्यान श्याम।।
अखण्डी निजा नाम, ब्रह्म हूं बिचारंग।। १६ ।।

वह न ओत पोत है, न वह कमल ज्योति है, वह न ऋषि राया है। न वह कर्म काया है न वह कोई दिष्ट में है, न वह भूल में है। म:फ: है कि उस परमात्मा का ध्यान करो।

कवित : नहीं बाप हर मांय, नहीं बैनर सुण भईयां। नहीं देश कुल गांव,
नही किणी शरणे रहया।। नही ज्ञान गुरु शिष, नहीं आपो तन काया।
नहीं वार कुछ पार, नहीं कहूं जाय न आया।। अैसा अद्भुत राम है,
जांकू शिमरूं वीर। ताकूं सुण सुखराम कह, भजियो दास कबीर।। १७।।

उसके न मां है न बाप है, बहन भाई भी नहीं है, न ही उसका कोई देश कुल व गांव है, न वह किसी के शरण में रहता है न वह ज्ञान गुरु शिष्य है, न उसके तन काया है, न उसका वार पार है, न वह कहीं गया न आया है, ऐसे अदभुत राम है, मैं उनका सिमरण करता हूं। म:फ: है कि सुणो उसको ही कबीर जी महाराज ने भजा है।

कुण्डलिया :- ज्ञान सुख आनन्द सो, जहां भास्यो तहां होय। माया सुख बिन जुंझिया,
कदे न पावे जोय ।। कदे न पावे जोय, पाय फिर दुखिया होई।
यूं करणी कर जीव, पार पहुंचे नहीं कोई।। सुखराम इन्द्रियां सुख रे,
पचियां पावे लोय।। ज्ञान सुख आनन्द सो, जहां भास्यो तहां होय ।। १८।।

ज्ञान सुख याने पार ब्रह्म से उपर के: पद में सतशब्द का अखण्ड अनुभव हो रहा है। उसका आनन्द तो जिनको अनुभव होता है उनको ही आता है। माया का सुख बिना मेहनत किये कभी नहीं मिलता, माया का सुख मिलकर समाप्त होने पर ही पुन: दुखी होना पड़ता है। माया का सुख स्थायी नहीं है। ऐसे ही शुभ करणियां करम करके कोई भी परम पद की प्राप्ति नहीं कर सकता। म:फ:है कि इन्द्रियो का सुख मेहनत करने से मिलता है।

चौपाई : भेद सहित ज्ञान घट आवे, प्रेम भाव नेचो मन पावे।
मोख मिलण की यही ऊपाई, दुजी नहीं शिष्ट में भाई ।। १।।

सतगुरु विधि को धारण करके प्रेम व भाव विश्वास के साथ मन लगाकर भजन करने से ही ज्ञान घट में आता है। मोक्ष प्राप्ति का यही उपाय है। इसके सिवाय मोक्ष प्राप्ति का दूसरा उपाय नहीं है।

ओतो जीव ब्रह्म सुण होई, यांकू पकड सके नहीं कोई।
सब ही कर्म जीव इण स्याया, सुख के काज जगत हुवो भाया।। २।।

जीव तो सुणो ब्रह्म ही है इसको कोई पकड़ नहीं सकता। जगत में जितने कर्म है वो सब जीव के सुखो के लिये बने है। यह जगत भी जीव के सुखो के लिये ही बना है।

ब्रह्म जहां सुख दुख सुण नांही, लेणा एक न देणा कांई।
ता कारण यो खेल बणायो, पांच भूत कर संग होय आयो।। ३।।

परब्रह्म के पद में न सुख न दुख, लेणा न देणा है। जीव को सुखो की प्राप्ति के लिए ही जगत

की रचना हुई है। पांच तत्वों के साथ आया है।

साखी : मैं मेरा शिमरण करूं, मैं मोकू गावूं। रमता बिन सुखराम कह, दुजो नहीं ध्याऊं।। ४।।

मेरा सिमरण मैं ही करता हूं, मैं ही मेरे को गाता हूं। खुद का भजन खुद को ही करना पड़ता है। दूसरो से नहीं कराया जाता। जो राम सब घटो में रम रहा है। उसके सिवाय दूसरो की भक्ति नहीं करता।

।। इति श्री ब्रह्म विचार का अंग सम्पूर्ण।।

卐 तत्त भेद का अंग 卐

चौपाई : परम तत्त का जाणो भेवा, सो जन साधु जग में देवा।
देवलोक सुं देवत आवे, परम तत सोई जन पावे।। १।।

हे हंसवृति आत्माओं परम तत कैसे आता है उसके भेद को तुम जाणो, और जिसने यह भेद जान लिया वह साधना करने वाला जगत में देवता के समान है और जो आत्मा देवलोक से अर्ज करके नर शरीर धारण करती है, उन्हें ही यह परम तत्व का भेद मिलता है।

करमी जीव मिनख गत होई, परमतत नहीं पावे सोई।
रूप देख देखण के मांही, दिष्ट मुष्ट में आवे नांही।। २।।

जो व्यक्ति लख चौरासी भुगतने के बाद मनुष्य योनि में आता है, उसे नर शरीर तो मिल गया परन्तु उसके कर्म इतने ज्यादा है कि वो परम तत्व नहीं पाता है। वो सिर्फ रूप को देखता है व रूप की पूजा करता है और परम तत्व न दिखता है न मुट्ठी में पकड़ा जाता है वो सिर्फ अनुभव होता है।

शब्द दिष्ट में देख्या जावे, से शब्दा में साध बतावे।
अंछर मण्डे न काना लागे, सो भेद मिल्यां भरम सब भागे ।। ३।।

ने: अक्षर को कैसे देखा जावे यानि अनुभव किया जावे, उसे ओधाधारी संत अणभै ज्ञान से बताते हैं। वो तत्व अक्षर में नहीं लिखा जा सकता है, न कोई काना मात लगती है, वो तो कैसे आवे उसका भेद मिलने से ही सब भरमों का खात्मा होता है।

भरम करम रेहण नहीं पावे, ज्यों अग्नि सब फूस जलावे।
बावन अक्षर जब लग जांणे, भरम करम कर बोहोत बखाणे।। ४।।

जिस आत्मा के ने: अक्षर आ गया फिर उसके भरम करम नहीं रहते हैं, जैसे अग्नि लगने पर सब फूस व कचरा जल जाते है और जब तक बावन अक्षरों के ज्ञान में रहेगा तब तक तो वह भरम व करम से बरी नहीं होगा, क्योंकि उससे तत्व नहीं आता है।

बावन अंच्छर है जग मांही, सातूं मात लगे अे नांही।
बावन अंच्छर है बिस्तारा, पंडित पढ़े शकल ये सारा ।। ५।।

जगत में बावन अक्षरों का ज्ञान है। परम पद का ज्ञान सातुं मात्राओ व बावन अक्षरो में नहीं है। बावन अक्षरो का विस्तार शास्त्र है। पंडित सब इनको ही पढ़ते है।

बावन अंच्छर सब कोई खोजे, परमतत काहू नहीं सूजे।
पद बिन ज्ञान सबे नर अंधा, ऊलटा पडया गले बोहो फंदा।। ६।।

परम पद बावन अक्षरों में नहीं है यानि सभी शास्त्रों में यह तत का भेद कोई खोजता है तो

उसमें उसे यह तत्व कैसे आवे उसका भेद नहीं मिलता है, फिर भी कोई उनमें ढूंढता है तो वो नर अंधा है और उसका जन्म मरण का फंदा नहीं मिटता।

मन अर पवन शकल सुं न्यारा, सो पद लखे संत जन सारा।
मन पवना सुं न्यारा होई, पूरा संत लखे जन सोई ।।७।।

मन और पवन से जो अलग हो जायेंगे, उसे वो पद मिलेगा, और जो यह करेगा उसे पूरा संत की पदवी मिल जायेगी।

ज्ञानी पंडित पढ़ भरमाणा, परमतत का मरम न जांणा।
पढ़ पढ़ ज्ञान बतावे सोई, आप न समझे भूला दोई ।।८।।

मन याने विचारो के द्वारा ज्ञान करने वाले व पढ़ पढ़ कर ज्ञान करने वाले ज्ञानी परमतत की प्राप्ति चाहते है लेकिन होती नहीं, इसलिए परम तत के मरम याने ज्ञान में नहीं समझते। पढ़ पढ़ कर ब्रह्म पद की बहुत महिमा करते है केवल महिमा करने से ब्रह्म पद की प्राप्ति नहीं होती। इसलिए आप भी उस पद की प्राप्ति नहीं कर सकते तो दूसरो को कैसे करा सकते है।

परमतत कूं सार बतावे, सो पद छोड आन क्यों सयावे।
पंडित का क्या कहिये ज्ञाना, छाड़ पेड़ डाल कूं जाना ।।९।।

समस्त शास्त्र व पंडित भी परम तत को ही सार बताते है लेकिन वो खुद इसे छोड़कर आन यानि शरीर धारी गुरू की सराहना करते है। इसलिये पंडितो के ज्ञान का क्या कहना, जो मूल यानि सारी सृष्टि का मालिक है, उस भक्ति को छोड़कर अन्य से मोक्ष बताते है।

पढ़ पढ़ वेद जन्म यूं जाई, परमतत वे लखे न भाई।
ऊदबुद कला कहां तक भाखूं, दिव्य दिस्ट की देखी आंखू।।१०।।

पढ़ पढ़ कर ज्ञान लेने वालों का जन्म यूं ही चला जाता है। वे परमतत के: पद आ:पद की प्राप्ति नहीं कर सकते। के: पद आ: पद शरीर के साथ चेतन पद से अलग अनुभव होता है। वह चर्म चक्षुओ से नहीं दिखता। ज्ञान व सूरत चक्षु से भी अलग दिव्य चक्षु से अनुभव होता है।

सुणता करम भरम सब जावे, ज्यों प्यासे को नीर पिलावे।
बिन समज्यां पिवे नहीं कोई, कहा कहूं इचरज यो होई ।।११।।

सतपद का ज्ञान सुण कर धारण करने से करमों व भरमो से अलग हो जाता है और शान्ति अनुभव होती है। जैसे प्यासे को पानी पिलाने से होती है। बिना समझ वाले सत पद के ज्ञान को धारण नहीं करते, क्या कहूं यही आश्चर्य है।

नारी पुरूष गम एक ठामा, बिन शब्दा नहीं परस्या जामा।
परमतत यूं सब में होई, सतगुरु बिना लखे नहीं कोई।।१२।।

स्त्री पुरूष कैसा भी ज्ञान करो बिना सतशब्द के उस पद की प्राप्ति नहीं कर सकते। परमतत याने के:पद आ: पद सब में है। परन्तु सतगुरु विधि धारण किये बिना सतशब्द जाग्रत नहीं होता इसलिए परमपद की प्राप्ति नहीं होती।

गुरु किरपा कर हम कूं दिया, शिष आधीन बोहोत होय लिया।
जग में हम लिया औतारा, परमतत का करूं पसारा ।।१३।।

परब्रह्म रूपी गुरु ने कृपा करके सतपद का ज्ञान हमको दिया और शिष्य ने उनकी शरण में

जाकर धारण किया। जगत में आकर मैं परमतत याने के:पद आ:पद के ज्ञान का विस्तार करूं।

मेरा शब्द अगम की बांणी, समज्या हंस मिलेगा आंणी।
ततशब्द हम जब ही पाया, गुरु किरपा सूं भेव लखाया।। १४।।

मेरा ज्ञान शरीर चेतन से अलग आत्मा के निरंजण निराकार पद में के:पद आ:पद का है। जो समझदार हंस है। वे ही आकर धारण करेंगे याने मिलेंगे। तब ही तत याने पारब्रह्म के निज नाम सतनाम की प्राप्ति हुई। गुरु कृपा से उसकी प्राप्ति करने की विधि याने साधन बीरमदासजी ने बताया।

आत्म मध, अगाध ज्यूं बाणी, समज्या हंस मिलेगा आंणी।
प्रथम रसना जब लीव लागे, भागे भरम आत्मा जागे।। १५।।

जिस तरह शरीर में आत्मा है लेकिन उसका थाह कोई नहीं पा सकता। ऐसे ही सतशब्द आने की अणभै वाणी अगाध है। जो इस मेरी बाणी को समझेगा वो ही धारण करेगा। तब वह राम नाम की विधि धारण करता है, तब उसके भरम दूर होकर आत्मा चेतन हो जाती है।

वे देह मूल सूरत घर लावे, मन पवना के गांठ घुलावे।
मन सो पवन मिले घर आई, नख चख रोम लखे सब मांई।। १६।।

वो व्यक्ति अपनी देह में मूल रूप से सूरता को लगा देवे, मन को स्वांसा के साथ मिला लेवे, जो इस प्रकार इस शरीर रूपी घर में मन व पवन को एक करके रटना करता है तो उसे नख चख सकल रोमावली में सतशब्द का अनुभव होगा।

रसणा डोर लगे अेक धारा, नाभ कमल में करे पसारा।
निश दिन रटे अेक मन होई, कंठ कमल छेदे जन सोई।। १७।।

सांस ऊसांस में भजन करने से नाभ कंवल याने नाभी तक सांस ऊसांस के भजन की एक घोर हो जाती है। इस प्रकार मन लगाकर रात दिन भजन करने से कंठ कंवल पर सतशब्द जाग्रत हो जाता है।

मुख मिश्री मन मांय लखावे, ज्यूं ज्यूं रटे मन घर आवे।
सो गुरुदेवजी भेद बतावे, जो कुछ दिस्ट मुस्ट में आवे।। १८।।

ज्यों ज्यों रटते है मन भी उसमें लग जाता है, मन लगने से ऐसा अनुभव होता है कि जैसे मुख में मिश्री हो, बडा भारी स्वाद आता है। सतगुरु विधि से भजन करने से ज्ञान दृष्टि व सूरत दृष्टि से अनुभव हुआ।

गद गद बाणी हुवे प्रकाशा, कण्ठ कंवल जहां जीव निवासा।
कण्ठ कमल दल चारज कहिये, जीव पुरूष का वासा लहिये।। १९।।

गद गद वाणी याने विरह के साथ भजन होने लग गया। कण्ठ कंवल जहां जीव का निवास याने स्थान है वहां चार पांख का कमल है जहां जीव पुरूष का वासा है।

सो हम भले देखिया आई, जीव जुक्त कर बैठो मांही।
पांचू साव परख ले सोई, जीभ्या स्वाद कमल मुख होई ।। २०।।

हमने जाकर देखा वहां जीव जुगती के साथ बैठा है। कंवल मुख जीभ्या है। उसके द्वारा पांच प्रकार के स्वाद को परख लेता है।

सब रस स्वाद जीव रस लेवे, आप अघाय पांच कूं देवे।
पांचु पोस मिले जहां तांई, पच पच मरे जीत सी नांई।। २१।।

जीव सब रस का स्वाद लेकर पांच तत्व के शरीर को दे देता है। पांच तत्व का शरीर पोखकर जहां से पैदा हुवा वहीं मिल जाता है। ऐसे जीव स्वाद लेता रहे तो भक्ति का सुख नहीं ले सकता है।

प्रश्न : पांख पांख में बेरो भाई, विष कूं छोड अमीरस खाई।
कहो इमरत क्या कहिये सोई, तांका भेव बतावो मोही ।। २२।।

विषयों को छोड़कर शरीर के सभी अंगों से भक्ति कर उसका आनन्द लेना ही अमीरस खाना है। गुरु म:फ: है कि ईमरत क्या है। इसका भेद बतावो।

उत्तर : साधा संग ज्ञान सुण लीजे, अमरत नाम निशो दिन पीजे।
संगत अमरत ज्ञान विचारिया, अनन्त कोट साधु जन तारया।। २३।।

संतो के अणभै ग्यान को सुणो फिर इमरत के समान राम नाम को सांस उसांस में रटो और उस ग्यान का विचार करने से अनन्त साधु जनो का उद्धार हुआ है।

ज्ञान बमेक बुध तब आवे, सत संगत गुरुदेव मिलावे।
संगत कर गुरुदेवजी पावे, गुरु समरथ गोविन्द मिलावे ।। २४।।

ज्ञान विवेक बुद्धि तब आती है जब राम गुरुदेव की उस पर कृपा होती है और ऐसी संगत से गुरुदेवजी यानि सतशब्द प्राप्त होता है। इसके लिये ओधाधारी गुरु चाहिये तभी ने: अक्षर रूपी गोविन्द का मिलन होता है।

सत संगत सब में शिरदारा, खान पान बिसरावे सारा।
पांचु अंग पलटे सोई, निशदिन ज्यां सत संगत होई।। २५।।

सतसंग सबसे श्रेष्ठ है जब यह प्यारी लगने लगती है तो सब खान पान भूल जाता है। रात दिन सत का संग रहने में पांच अंग विषय में लग रहे थे। वह सब भजन में लगने लग जाते है।

संगत मुगत मोख की दाता, माया जाल मेटे सब तांता।
सो संगत वा कैसी कहावे, माया टले ब्रह्म वर पावे।। २६।।

संगत मुक्त व मोख की देने वाली है वो संगत कौनसी है। जो जीव अनन्त जन्मों से माया के साथ है। उससे अलग कर ब्रह्म पद की प्राप्ति करा देवे।

संगत जग में बोहली कहिये, चोर जार शाह पंडित लहिये।
चारू संगत अे जुग लहिये, सतगुरु संगत न्यारी कहिये।। २७।।

संसार में बहुत प्रकार की संगते है। चोरो की, जारो की, साहूकारो की, व पण्डितो की, ये चार संगत जगत की है। व सत संगत इन चारो संगतो से न्यारी है।

इन चारों से वां कहिये न्यारी, सतसंगत सुं हुवे मोख इधकारी।
निश दिन रहे मगन मन माता, ने: चल चित काहू नहीं जाता।। २८।।

सतसंग इन चारो संगतो से न्यारी है, सतसंगत से ही मोक्ष का अधिकारी होता है। उससे ही मन में रात दिन मगनता रहती है, चित भी ने: हचल रहता है।

कहणी नहीं सुणी नहीं आवे, सो शब्दां कर साध बतावे।
पंडित लखे न ज्ञानी कोई, पढ़ पढ़ जन्म बिगोवे दोई।। २९।।

वह पद कहने सुनने में नहीं आता है। अणभै ग्यान के शब्दो से ही जानकारी होती है, बावन अक्षरों को पढ़ने वाले पंडित व विचारो द्वारा ज्ञान करने वाले, पढ़ने विचारने में ही अपनी आयु गमा रहे है। उन्हें उस पद की प्राप्ति नहीं होती।

मतवादी मत कूं नित ठांणे, परमतत का मरम न जांणे।
सतगुरु संत सर्व प्रवीणा, आनन्द ब्रह्म लखे पद जीणा।। ३०।।

मन के आधार से ज्ञान करने वाले मतवादी परमतत जो मन से अलग है उसका भेद नहीं जानते है। अणभै ग्यान को धारण करके संत वृती आती है वो ही संत सर्व प्रवीण है। वो ही आः ब्रह्म के पद का अनुभव कराते है।

।। इति श्री तत भेद का अंग सम्पूर्ण।।

卐 ढूंढिया का संवाद 卐

साखी :-दया पाल, इण नाम बिन, जीव मोख किम जाय।
कह सुखदेव सुण ढूंढिया, यांको भेव बताय ।। १।।

मः फः कि आप दया पालते हो, लेकिन परमात्मा के नाम के बिना जीव मोख में कैसे जा सकता है इसका भेव बताओ।

दया पुन्न को मूल है, पुन्न भुक्तो देह धार। कह सुखदेव सुण धर्म सुं, किस विध ऊतरे पार ।। २।।

मः फः है कि दया पुन्न की जड है, पुन्य का फल शरीर धारण कर भोगा जाता है। मः फः है कि धर्म से किस तरह पार जा सकते हो।

नाम आसरे बाहिरो, जीव ब्रह्म नहीं होय। कह सुखदेव सुण ढूंढिया, भेद बतावुं तोय ।। ३।।

जो परमात्मा के निज नाम के बिना है वो जीव परमात्मा स्वरूप नहीं हो सकता। मः फः है कि ढूंढियाजी सुणो इसका भेद मैं तुम्हें बताता हूं।

दया कर्म है हद का, सुख दुख भुक्तो जाय। कह सुखदेव बेहद कूं, नाम नकेवल जाय ।। ४।।

दया करने वाले करणी कर्म करने वाले हद याने तीन लोको में सुख दुख भोगते है। मः फः है कि बेहद याने ब्रह्म के पद में रामशब्द के साथ जाते है।

दया कहां लग पालसी, सुण समझावूं तोय। जीव बिना सुखराम कह, जीव न जीवे कोय।। ५।।

दया कहां लग पालोगे, सुणो मैं यह समझाता हूं। मः फः है कि बिना जीव के कोई भी जीव जिन्दा नहीं रह सकता।

पांच तत को आप ही, करो पांच को ही आहार। दया पले किण रीत सूं, कह सुखदेव विचार ।। ६।।

आपका शरीर पांच तत्वों का है, पांच तत्वो की बनी चीजो का ही आहार करते हो। मः फः है कि दया किस तरह पाली जाती है।

नव लख जल में जीव है, सो पीवो तुम आंण।
कह सुखदेव सुण ढूंढिया, दया किस विध जांण।। ७।।

नो लाख तरह के जीव जल में है, उसे तुम पीते हो। मः ढूंढियाजी से फः है कि सुणो दया किस विधि से समझी जाती है।

सरब जीव सम जीव जल, सो पिवो कन नांय।
कह सुखदेव सुण ढूंढिया, समझ सोच मन माय ।।८।।

सब जीवो के बराबर ही जल में रहने वाले जीव है। उस जल को तुम पीते हो या नहीं। ढूंढियाजी सुणो मन में सोचो और समझो।

पृथ्वी का सुण जीव रे, बीस लाख सुण होय। कह सुखदेव धर पर चलो, दया कहां रही जोय ।।९।।

बीस लाख तरह के जीव पृथ्वी पर रहने वाले है। म:फ: है कि पृथ्वी पर चलते हो तब बतावो दया कहां रही।

जीव दया के कारणे, मुख बूंदयो तुम आय।
कह सुखदेव नासा खुली, दया कहां तुम मांय।। १०।।

जीवो पर दया करने के लिये तुमने मुंह पर मुमती लगा रखी है। म:फ: कि नाक खुला हुआ है तब पूर्ण रूप से दया कहां हुई है।

पांच आत्मा आप में, जो कस मारो नित। कह सुखदेव सुण ढूंढिया, कहां दया पर चित ।।११।।

म:फ: है कि पांच प्राणो को हमेशा कष्ट देते हो दया पर चित कहां है।

प्रथम पांचू आत्मा, सुण तेरे घट मांय। कह सुखदेव याने कसो, दया किसी विधी कहाय ।।१२।।

तुम्हारे शरीर में पांच प्राण है। म:फ: है कि इनको कष्ट देते हो तो यह दया किस विधि से कहलाती है।

प्रथम कलपे बाप मांय, जोरू रोवे जोय। कह सुखदेव सुण ढूंढिया, दया कहां रही तोय।।१३।।

तुम जब साधु बने थे। उस समय तुम्हारे माता पिता दुखी हुए व स्त्री रो रही थी। म:फ: है कि ढूंढियाजी तुम्हारे में दया कहां रही।

तिरपेणी में जल न्हावता, मारो जीव अपार।
कह सुखदेव सुण ढूंढिया, दया कहां तुम लार।। १४।।

पातरे के पानी से स्नान करने से असंख्य जीव मरते है। म:फ: है कि हे ढूंढियाजी तुम्हारे साथ दया कहां है।

दया क्षमा अरूशील कूं, सजे सुरगा को नर जाय।
कह सुखदेव सुण ढूंढिया, विषे रस वां खाय।। १५।।

दया क्षमा व शीलव्रत की साधना करके स्वर्ग की प्राप्ति होती है। म:फ: है कि हे ढूंढियाजी सुणो वहां स्वर्ग में देवता योनी से भोगते है।

शील तप को साज के, सुरगलोक नर जाय। यहां छाडे सुखराम कह, देवलोक में खाय।।१६।।

शीलव्रत धारण से तपस्या की साधना कर स्वर्गलोक में जाते है। म:फ: है कि यहां विषयो को छोडते है, स्वर्ग में उसका दूना फल भोगते है।

देव लोक सुख भुक्त के, ऊलट पडे धर आय। पीछे सुण सुखराम कह, चहूं खांण में जाय।।१७।।

स्वर्ग का सुख भोग कर पीछे पृथ्वी पर आ जाते है। म:फ: है कि सुणो पीछे वो चारों खाणो में याने चौरासी भोगते है।

तप सुं ऊलटी ईन्द्रिया, बलाकार सुण होय।
कह सुखदेव बिन नाम रे, मुक्त ना हुवेली कोय ।।१८।।

तपस्या करने से ईन्द्रिया बस में होती है। म:फ: है कि बिना निज नाम के मोक्ष नहीं होगी।

मैं तुज बुजुं ढूंढिया, यांको अरथ निहार। चादर ओघो तिरपणी, या सिर ही करतार ।। १९ ।।

हे ढूंढियाजी मैं तुमको पूछता हूं कि इसका अर्थ विचार करके देखो। केवल चादर ओघा पातरा धारण करने से परमात्मा नहीं मिलते।

प्रोटण हारा करम है, घडिया सो करतार। काठ सूत ज्यों ब्रह्म है, जल ज्यूं श्री भरतार ।। २० ।।

करमों का फल ही सबको भोगना पड़ता है। सृष्टि कर्ता परमात्मा तो काठ में, मणियो में सूत व पानी वृक्ष बीज में सब में व्यापक है।

जल ऊपर ज्यों तेज है, तेज ऊपरे बाय। बाय ऊपरे आकाश जूं, ता सिर अवगत गाय ।। २१ ।।

जल के ऊपर तेज है, तेज पर हवा है, हवा पर आकाश है, उसके सिर पर अवगत परमात्मा का पद है।

तन को खांवद सांस है, सांसा अंच्छा होय। अंच्छया खांवद ब्रह्म है, कर्मा को मन जोय ।। २२ ।।

शरीर का आधार सांस है, सांस का आधार ब्रह्म की ईच्छा आत्मचेतन है। आत्मचेतन का आधार ब्रह्म है, कर्मों का करता मन है।

आद जिके दिन ऊपना, क्या कर्म था लार। किण सूं पांच प्रगटिया, सो मुझ कहो विचार ।। २३ ।।

शुरू में जब संसार की रचना हुई तब कौन से कर्म साथ थे। यह पांच तत्व किस से प्रगट हुए है। सो मुझे विचार कर कहो।

महाप्रलय में पांच ही, बिले होय सब जांण।
पाछा कहां सुं प्रगटिया, सो विध कह मुज आंण। २४ ।।

पांचो तत्व महाप्रलय में विलय हो जाते है, वापिस कहां से प्रगट होते है। सो विधि मुझ से कहो।

भीड़ पडे जब देव में, तब सुर करे पुकार। कह सुखदेव जब प्रगटे, सांई शिरजणहार ।। २५ ।।

आत्म देवो में कष्ट आता है तब देवता प्रार्थना करते है। म:फ: है कि जब परमात्मा जो सृष्टि करता है प्रगट होता है।

<u>कुण्डलिया</u> :- ज्ञान खडग अर आग रे, अेता पखा न कोय। जहां जहां सेरया संच रे,
तहां तहां सेंपट होय।। तहां तहां सेंपट होय, आपरो कबहूं न जाणे।
आ अणभै की रीत, न्याव अरथा पर आंणे।। यामें बुरो न मानिये,
जे कजी आप में होय। ज्ञान खडग अर आग रे, अेता पखा न कोय।। २६ ।।

ज्ञान, तलवार, अग्नि यह पक्ष नहीं करते, जिस जिस तरफ से निकलते है। उसका सफाया करते है। अपना कभी नहीं जानते। यही अणभै में है। सत है वो ही कहने में आता है। वो पक्ष नहीं रखता, यदि किसी में गलती हो तो उसको निकाल देनी चाहिये। मेरी बात का बुरा मत मानना।

<u>पद राग ढाल</u> :- मैं तुज बुजूं ढूंढिया मुवा जल किम होय।
भेद बतायर चालियो, गुरु की सोगन तोय ।। टेर।।
पाप पुन्न बिन दोष सूं किस विध जीमें आंण।
निकमो अन्न किम जाय, सो मुझ कहोनी बखाण।। १ ।।
तूं पीवे जीण नीर कूं, पावे है वन कूं लाय। ऊ फल फूलां आवसी, कन ऊ निरफल जाय ।। २ ।।
तुझ को देवे रोटियां, जाने पुन्न कन पाप। दोष किसी विध टालिया, ओ अरथ किजे आप।। ३ ।।
मुख सुं जाला नाश में, बेह है ईधक करूर। मुख रोक्यां सूं क्या भयो, जीव तूं हते जरूर ।। ४ ।।
वास किया सुं दोष रे, जे सुण ऊतर जाय। तो सिंह जासी मोख ने, ऊ दिन तीसरे खाय ।। ५ ।।

अे प्रपंच सब छोड दे, सिमरो शिरजणहार। कह सुखदेव सुण ढूंढिया, ज्यूं तुम उतरो पार ।।६।।

हे ढूंढियाजी मैं तुमसे पूछता हूं मरा जल कैसा होता है, इसका भेद बताओ। तुम्हें गुरु की सोगन है। बिना दोष व बिना पाप पुण्य के किस तरह जीमते हो, व्यर्थ अन्न कैसे जाता है, उसका बखाण कर कहो, तुम जिस जल को पीते हो उस जल को वन के वृक्षों को पिलावे तो उनके फल फूल आवेंगे या वो निरफल जावेंगे, यह कहो कि तुमको जो रोटियां देते है उनको पाप होता है या पुण्य होता है, किस तरह दोष टाला जाता है इसका अर्थ करो। मुंह के बजाय नाक से गर्म हवा बहुत निकलती है, मुंह पर मुमती लगाने से क्या होता है, नाक की हवा से जीव जरूर मरते है। उपवास करने से यदि शरीर के दोष उतर जाते है तो सिंह तो तीसरे दिन खाता है तो वह मोक्ष में क्यों नहीं जायेगा। इन सब प्रपंचो को छोड़कर सृष्टि कर्ता परमात्मा का सिमरण करो जिससे हे ढूंढियाजी इस भवसागर से पार हो जाओगे।

।। इति श्री ढूंढिया का संवाद सम्पूर्ण।।

卐 होतब का अंग 卐

<u>सवैया मनहर छन्द</u> : होने की बात अहोनी न होगी, लाख उपाय करो नर आई।
नारदमुनि जोगेश्वरपूरा, तिनका भेव बताऊंस लाई।।
घड़ी सो पहर पलक न ठाडो, भ्रमता जुगस जाय बिलाई।
यूं होने की बात कह सुखदेवजी, टारी टरे ना किणी सूं भाई ।।१।।

होने की बात होकर रहती है। मनुष्य लाख उपाय करे तो भी होणहार होकर ही रहेगा। नारदमुनि पूरे जोगेश्वर है उनका भेद बताता हूं। अेक घड़ी व पहर भी पलक भी एक जगह नहीं ठहरते। उन्हें फिरते हुये कितने ही जुग बीत गये। म:फ: है कि होणहार है वह किसी के टालने से नहीं टलता।

सूरज देव तपे सिर सारे, आप तो भाग कासीद लिखाई।
चंद जूं देव निरमल अेसा, धोती को दाग लग्या तन मांही।।
समंद नाम सायर सो मोटा, खारो सो नीर पीवे नहीं कोई।
यूं होने की बात कह सुखदेवजी, टारी टरे नहीं किणी सूं लोई।

सूरज सारे संसार के सिर पर तपता है और सूरज ने अपने भाग्य में तपना ही लिखा रखा है। चन्द्रमा जैसे निरमल देवता के भी बुरे आचरण का दाग शरीर से लगा है। समुद्र बहुत बड़ा है किन्तु समुद्र का पानी खारा होने से कोई नहीं पीता है। म:फ: है कि हे संसारियो जो होने वाला है वह होकर ही रहेगा, किसी से टाले नहीं टलता।

शीव जूं राज दे धन पुत्र, आप तो अंग में खाख लगावे।
आक धतुरा भांगज पीवे, जुगे जुग डेरूस जोय बजावे।।
विष्णु ले औतार गरभ में, मानुष देह सो आन धराई।
यूं होने की बात कह सुखदेवजी, टाली टले नहीं बहुत सराई।।३।।

शिवजी दूसरो को याने उनकी आराधना करने वालो को धन व पुत्र देते है। आप खुद शरीर में भस्मी रमाते है आकडा धतूरा भांग पीते है, जुगो जुगो से डमरू बजाकर साधना करते है। विष्णु अवतार लेकर गर्भ में आकर मानव शरीर धारण करना पडा है। म:फ: है कि जो होने की बात है

बहुत सराने पर भी टाली नहीं टलती है।

अब सीता को हरण मरण पिताजी को, राम ऊचर्त हुवा वन मांई।
जाजुंल ऋषि समाद अंदेशो, उठ तुला पर पूछण जाई।।
लव सो कुश भयो जब भरत, चांरूही गारथ सो सुन्न होई।
यूं होने की बात कह सुखदेवजी, टारी टरे नहीं किणी सूं भाई।।४।।

वन में सीताजी का हरण हो गया इधर पिता दशरथजी की मृत्यु हो गई। रामजी वन में बिचरने लगे, जांजली ऋषि ने बहुत बडी समाधि लगाई, समाधि खोली तो मन में विचार था कि मेरे समान कौन तपस्वी होगा। जब बन के पक्षी व मनुष्य तुलाधार की प्रशंसा करने लगे, तो तुलाधार को ज्ञान पूछने गये। लवकुश के साथ जब चारो भाइयो की लडाई हुई तो लवकुश ने चारो ही भाइयों को गारत व सुन्न कर दिया। म:फ: है कि होने की बात किसी से टारी नहीं टरती है।

यूं होने की बात अनहोनी न होगी, लाख उपाय करो नर आंणी।
जन्म लिया जब गीत न गाया, मृत्यु भई सुण रण में प्राणी।।
शेष फणाधर शेष कहावत, नाक में नाथ सो आंण पहराई।
यूं होने की बात कह सुखदेवजी, टारी टरे नहीं किणी सुं भाई।।५।।

होने की बात है वो हुये बिना नहीं रहेगी, मनुष्य चाहे लाख उपाय करो। कृष्ण का जन्म जेल में हुवा जब कोई गीत गाने वाले नहीं थे। मृत्यु लडाई के मैदान में हुई जब रोने वाला कोई न था। शेष हजार फण धारण करने वाले है उनके नाक में नाथ पहरादी। म:फ: है कि जो होने की बात है वो किसी के टारे नहीं टरती है।

पांडू पांच सती जन सूरा, हिमालय जाय गलावण लागा।
राम लक्ष्मण राम कहावत, राक्षस बांध पातालां भागा।
पाहण को तोक चल्या हनु सूरो, पांव में तीर लग्यो जब जोरे।
यूं होने की बात कह सुखदेवजी, तीन त्रिलोकी में मोडी न मोरे।।६।।

पांचो पाण्डव सन्त व शूरवीर जन थे सो हिमालय में गलने के लिये गये। राम लक्ष्मण जिन्हें भगवान राम कहते है उन्हें राक्षस, बांधकर पाताल में लेकर चले गये। हनुमान जी संजीवनी लेने गये, पहाड को उठाकर लाये थे। तब भरतजी के हाथ का बांण पैर में जोर से लगा। म:फ: है कि जो होने की बात है वो तीन लोको में मोडे नहीं मुडती।

मनहर छन्द : सुणो सब ज्ञानी ध्यानी अेसो कौन जाणिये, होनहार होतब सो टारी नहीं टरे है।
बडे बडे भूप सोई बादशाह बखाण कहूं, देव दाणू राज ऋषि कैसे कर मर है।।
सिंगी से सरस ऋषि तप ध्यान जोर है, ताय के करूर तेज इन्द्र मेघ डर है।
कह सुखराम यो तो होतब सो जोर है, ऋषि जोगी देव सूं ही रती नहीं टरे है।।७।।

सब ही ज्ञानी ध्यानी सुणो ऐसा कौन है जो होणहार होतब को टाल सकता हो, बडे बडे राजा व बादशाह का बखाण करता हूं, देवता व राक्षस राज करने वाले आपस में क्या कर मरते है, श्रृंगी जैसे अच्छे ऋषि जो तपस्या में ध्यान में जोरावर थे उनके महान तेज से राजा इन्द्र भी डरता था। म:फ: है कि यह तो होणी का जोर है ऋषियो से योगियो से देवताओं से भी रती भर भी नहीं टरती है।

शिंभु सो श्राप जाप दूज सेती जानिये, पुत्री संजोग भोग धूम ऋषि धारे है।

राम से भरतार ताय हनू लछ पायक सू, रावण से आन ग्रह सीता बन हर है।।
कह सुखराम सो तो होतब सो जोर है, देह धरी दुज के ही बस नहीं कर है।।८।।

भगवान विष्णु ने मोहनी रूप धारण किया जब शंकर जी ने श्राप दिया था। धुम ऋषि ने पुत्री के साथ संजोग किया। सीताजी के राम जैसे पति हनुमान लछमण जैसे सेवग थे। वन में कुटिया से रावण हर कर ले गया। म:फ: है कि यह होणहार का जोर है। शरीर धारी ब्रह्मा जी भी उसको वश में नहीं कर सकते।

महान से मछंद्र जोगी, शिष ताही गोरखा, ग्रह जाय बंधयो गुरुजणे घर पोरखा।
नारद न्याव नेम तरूण रूप पेखिये, साठ सुत जाये सही होनहार देखिये।।
अंजनी अनोप ताही पहाड़ मज वास रे, ग्रह गांव प्रीत बिना बंधी सुत आसरे।
गौतम गंभीर ऋषि इन्द्र विध देखिये, कह सुखराम सो तो होणहार जग कुछ नहीं पेखिये।।९।।

मछेन्द्रनाथ जी महान योगी थे। गोरखनाथ जी उनके शिष्य थे वे भी स्त्री के प्रेम में घर में जाकर बंध गये। नारदजी ने स्नान करने के लिए एक तालाब में डुबकी लगाई तो युवा तरूणी बन गये और उससे साठ लडके हुये। होणहार को देखो अंजनी पहाड़ में निवास करती थी न घर न गांव था बिना प्रीति के ही लड़के की आशा बंध गई। गौतम बडे गंभीर ऋषि थे। इन्द्र ने उनकी स्त्री के साथ क्या विधि की। म:फ: है कि यह सब होणहार है। संसार में कुछ नहीं देखा है।

ऊंच नीच बात सो तो होणहार बस है, मोही कूं कुजस जस बिच देर मारे है।
मेरा किया कहा होय मैं तो बहुत चाहूं हूं, राजपाट सुखधाम मोख मन धारे है।।
रति सो रीजक बात मेरे बस नांय है, करणहार जोग प्रभु आप ही प्रसिद्ध हो।
कह सुखराम सो तो ज्ञान कर देखिये, ठाम ठाम जागा हरि श्याम राम आप हो।।१०।।

ऊंची व नीची बात जो भी होती वो सब होणहार के वश में है। मेरे को अच्छा व बुरा जस देकर बीच में ही मार रहे है। मेरा किया हुवा क्या होता है। मैं तो बहुत चाहता हूं कि राजपाट व सब तरह का सुख व मन चाहता है कि मोख भी मिल जाय लेकिन जरा सी बात मेरे वश में नहीं है। हे परमात्मा करने वाले आप ही संसार में प्रसिद्ध हो। म:फ: है कि ज्ञान से देखो सब जगह सर्वत्र ही रामजी व्यापक है।

तुम ही करणहार होणकार सांईयां, मन का कियास कदे होत नहीं कबहूं।
ज्ञान सो विज्ञान हम सारे सोज देखियो, करम सो बिधंसु भरम भागा सब जबहूं।।
होणहार बात सो तो पाली नहीं जात है, जोग विध चावता सो होय बिजोग सोई।
कह सुखराम प्रभु तुम बिन करणहार, और बातां विध हम देखियो न कोई है।।११।।

हे परमात्मा आप ही सब करने वाले होणकाल ब्रह्म हो, मन से विचारा हुवा कभी नहीं होता। ज्ञान से विज्ञान से हमने सब सोध करके देखा है। करमो का नाश सब भरम भागने से होता है। होणकार बात है सो तो पाली नहीं जाती है। जिसका जोग चाहते है उसका वियोग हो जाता है। म:फ: है कि हे परमात्मा आपके बिना और कौन करने वाला है। और बात व विधि हमने कोई नहीं देखी है।

<u>इन्द व छन्द</u> : कोऊ कह सब राम करे है, कोई स होण पदारथ बोले।
कोई सो जीव परालब्ध गावे, हाथ करि से सोई हरि तोले।।
राई सो मेर नहीं कम जाफा, इसो प्रमाण अचकत बोले।
सोच विचार कह सुखदेवजी, ज्ञानी होवे सो ही ओ भर्म खोले।।१२।।

कोई कहते है कि सब राम करते है, कोई कहता है कि जैसा होणहार होता है वही होता है, कोई कहता है कि जीव हाथ से करता है वैसे ही उससे प्राप्ति होती है। न तो राई के बराबर कम व न मेर के बराबर ज्यादा अेसा प्रमाण अचूक बोलते है। म:फ: है कि सोचो विचारो व समझो ज्ञान से ही सभी भरम मिटेंगे।

बूजत हूं एक बात विचारा, ज्ञानी होवे सोई कान धरिजे।
जीव सो बस किणे गेह राख्या, ताहिको जाब सबाब करीजे।।
नीचे कूं ऊंच मिले किम मोजां, ऊंचो किम घेर रसातल दीजे।
सोच विचार कहे सुखदेवजी, सो जीव को खोज विचार जो कीजे।। १३।।

एक बात का विचार पूछता हूं जिस पर ज्ञानी ही विचार करेंगे। जीव को किसने वश में करके पकड रखा है उसका जवाब दो। नीची जाति में जन्म लेने वालो को ऊंचा पद व मौज आनन्द कैसे मिलता है तथा ऊंचे को किस तरह नीचे पद की प्राप्ति हो जाती है। यही ऊंचो किम घेर रसातल देना है। म:फ: है कि सोचो विचारो व जीव के खोज का विचार करो।

कहोजी जीव किणे वश डोले, खाय पिये सोई कौन के सारा।
करणी काम सबे सुख संपत, किम मिले सब अरथ विचारा।।
जीव के वश है कन नांही, करणी काम सबे जग लारा।
यूं सोच विचार कह सुखदेवजी, सो अर्थ करे सोई गुरु हमारा ।। १४।।

जीव संसार में किसके वश डोलता है, खाता है पीता है सो किसके सारे है। सब ही तरह की सुख सम्पति कैसे मिलती है। सब ही अरथ का विचार करो। करणियां व कामना संसार में साथ होती है सो जीव के वश में है या नहीं है। म:फ: है कि जो इसका अर्थ करेगा उसको गुरुपद की प्राप्ति होगी।

कुण्डलिया : सो नर को होणो लिख्यो, सो मत आवे दाय। प्रभाते नर उठ कर,
वाही करे ऊपाय।। वाही करे ऊपाय, परथ चूके नहीं कोई।
होय पतंगो जीव, पडे दीपक के मांही।। जले गडे सुखराम कह,
परथ न काची खाय। ज्यूं नर को होणो लिख्यो, सो मत आवे दाय।। १५।।

मनुष्य के जैसा होणहार लिखा होता है उसे वैसी ही मति पसन्द आती है। सुबह से मनुष्य उठकर वहीं उपाय करता है, एक दिन भी नहीं चूकता है। जैसे जीव पतंगा बनकर दीपक पर पडता है पडने से जलता है गलता है तो भी पीछे नहीं हटता है। इसी तरह मनुष्य का जैसा होणहार होता है उसको वैसी ही मति पसन्द आती है।

। इति श्री होतब का अंग सम्पूर्ण।।

卐 कीरतदान का अंग 卐

कवित : चाकर चारण भाट, और ओधायत सारा। व्हो विध व्है आधीन, निव सो चले विचारा।।
जहां किनो पुन्न अेह कीरत सुण होई। जामण मरणो परण, बैन बैटी कहूं तोही।।
सुखराम दास अे पुन्न तो, घर का घर में होय। परमधर्म अेको नहीं, संग न चाले कोय।। १।।

खुद के नौकरी करने वाला हो, चारण भाट राज के ओधे पर हो, जो सब तरह से आधीन

रहकर उनके कहने के माफिक चले, उनको जो दान देते है यह तो कीरतदान है। जन्म मरण व बहिन बेटी के ब्याव में, इनमें जो खर्च करते है इसे पुण्य समझते है। म:फ: है कि यह पुण्य तो घर का घर में ही है। यह परमधर्म नहीं है न ही साथ चलता है।

कुण्डलिया : भाट जाट अर बानियां, तीनां अेक स्वभाव। प्रथम पुन्न बंछे नहीं,
करे तो करमां चाव।। करे तो करमां चाव, देह का किरतब देखे।
आठ पोहोर गुलाम, ताय बामण कर लेखे।। सुखरामदास अे पुन्न तो,
हरि बेमुख का डाव। भाट जाट अर बानियां, तीनां अेक स्वभाव ।। २।।

भाट जाट और बाणियां तीनो का स्वभाव अेक है। पहले तो पुण्य करने की इच्छा ही नहीं रखते है जो काम करने वाला अपने यहां है उसके शरीर का करतब देखते है, यह अपने यहां काम करने वाला है या नहीं, जो रात दिन काम करता है उस ब्राह्मण को देते है। म:फ: है कि ऐसा दान जो परमात्मा से बेमुख है वहीं करते है।

साखी : सतगुरू पे माया चढी, सो तो चढगी राम।
बाकी की सुखराम कह, दाम गमया बेकाम ।। ३।।

राम सतगुरु पे माया चढगी यानि प्राणि मात्र जो उस परमात्मा के बन्दे है उन बन्दो के लिये माया लगा देवे वो माया रामजी के लेखे लग गयी। बाकी की महाराज कह रहे हैं बेकाम गयी। इधर आध्यात्मिक में जो स्वांसा रूपी पूंजी भक्ति में लग गयी वो रामजी के लेखे गयी, बाकी बेकार हो गयी।

।। इति श्री कीरतदान का अंग सम्पूर्ण ।।

卐 साध भेद का अंग 卐

चौपाई : ना मैं हेत बेर नहीं बांधू, ना मैं जांच अजांची।
ना मैं अडू मूडू नहीं कोई, ना मैं बांच अबांची।। १।।

म:फ: है कि सतशब्द कहता है कि मेरे किसी से हेत है न बेर है, न मैं मांगता हूं न बिना मांगे भी रहता हूं, न मैं अडता हूं न मुडता हूं, न मैं बांचता हूं न मैं बिना बांचे रह सकता हूं।

ना मैं रिद्ध सिद्ध नहीं नासत, ना मैं असत न सांचा।
ना मैं घडु घडावु नांही, ना मैं खरा न काचा।। २।।

न मैं सिद्ध हूं, न मैं रिद्ध हूं, न मैं सत हूं, न मैं असत हूं, न साचा हूं, न मैं घडता हूं, न घडवाता हूं, न मैं खरा हूं न खोटा हूं।

ना मैं बाद विरोधी समता, ना मैं सुखी न दुखिया।
ना मैं चलुं अचल भी नांही, ना मैं रेत न मुखिया।। ३।।

मेरे वाद विवाद विरोध नहीं है, न ही समता है, न मैं सुखी हूं, न मैं दुखी हूं, न मैं चलता हूं, न अचल भी हूं, न मैं प्रजा हूं, न राजा हूं।

ना मैं धरम करम में नांही, ना आचार न मेला।
तिरिया नार नहीं मैं पुरूषा, ना मैं ऊल न पेला ।। ४।।

न मैं धर्म, कर्म में नहीं हूं, न आचारी हूं, न मेला याने बिना आचार का हूं, न मैं स्त्री हूं, न मैं पुरूष हूं, न मैं ऊली तरफ हूं, न पेली तरफ हूं।

ना मैं गांव जंगल में रोही, ना मैं ग्रही ना मैं त्यागी।।
ना मैं भेष जक्त सो नांही, ना मुझ आड न भागी ।।५।।

न मैं गांव जंगल रास्ता हूं न मैं गृहस्थी न मैं त्यागी हूं न मैं भेषधारी हूं। न मैं संसारी हूं न मेरे कोई आड है न आड भी भागी है।

ना मुझ ज्ञान भरम नही कोई, ना मैं बंधया न छूटा।
ना सो नेम नेक नहीं ढीला, ना साबत ना फूटा ।।६।।

मेरे न ज्ञान है, न मेरे भरम है, न मैं बंधा हुवा, न मैं छुटा हूं, न मेरे कोई नियम है, न मैं ढीला हूं, न मैं साबत हूं, न फूटा हूं।

ना मैं जती नहीं मैं भोगी, ना मैं बांज ना ब्याया।
ना मैं सूम नहीं मैं दाता, ना मैं गया न आया।।७।।

न मैं जति हूं, न भोगी हूं, न मैं बांझ हूं, न मेरे संतान हुई है, न मैं सूम हूं, न मैं दाता हूं, न मैं कहीं गया, न आया हूं।

ना मैं मरूं ना मैं जीवु, ना मैं अमर न प्रलय।
ना कोई मात पिता नही बंधु, ना मैं हंसे न कुरलाया ।।८।।

न मैं मरता हूं, न जीता हूं, न मैं अमर हूं, न मैं जनम मरण में आता हूं। मेरे माता पिता बन्धु नहीं है, न मैं हंसता हूं, न मैं दुखी होता हूं।

जाया नहीं खूख पण आया, परण्या नहीं कंवारा।
बालक नहीं देह पण छोटी, है पण सब सू न्यारा।।९।।

मैं जाया नहीं खूंख में आया हूं मैंने शादी की है न मैं कंवारा हूं। मैं बालक नहीं हूं पर शरीर छोटा है और सबसे अलग है।

देवल नहीं देवरे जावुं, निश दिन बैठा मांही।
धूप ध्यान प्रसाद न चाहुं, बिना पूज्या रहूं नांही।।१०।।

सतशब्द कहता है कि मैं शरीर रूपी देवल में नहीं रहता हूं बल्कि उसके देवरे यानि दसवें द्वार पर गिगन में रहता हूं और मैं उस साधना करने वाले से किसी प्रकार का धूप ध्यान प्रसाद नहीं चाहता हूं परन्तु यदि वो मेरी पूजा यानि रटना नहीं करेगा तो मैं उसके नहीं रहूंगा।

तीरथ बरत एक नहीं करस्यूं, न्हायां बिना न रहिया।
अडसठ तीरथ क्रोड निनाणु, झूलर सब सुख किया ।।११।।

तीर्थ व्रत एक भी नहीं करता, स्नान किये बिना भी नहीं रहता, अडसठ तीर्थ क्रोड निनाणु सब का अनुभव कर सब सुख किया है।

ज्ञान ध्यान मैं कबु न बांचु, मून पकड नहीं बैठा।
ना मैं बली नहीं मैं निर्बल, ना कुछ हुवे सेंठा ।।१२।।

न ज्ञान करता हूं न ध्यान करता हूं, न कभी बांचता हूं न मौन पकड़कर बैठता, न मैं बलवान हूं न मैं निर्बल हूं, न कुछ सेंठा हुवा हूं।

ना मैं पढया अपढ सो नांही, ना मैं बकु न मौनि।
ना मैं कहन कसर नहीं राखी, ना मिल फेर कहूनी।।१३।।

मैं न पढा हुवा हूं न अपढ हूं, मैं न बोलता हूं न मैं मोनी हूं, न मैं कहता हूं न कहने में कसर रखता हूं, न मिलकर फेर कहता हूं।

ना मैं बेद रोग सब जांणु, औषद जडी न राखुं।
निश दिन घोट पिऊं जड सुधी, निरख परख ले चाखुं।। १४।।

मैं वैध नहीं हूं, सब रोग भी जानता हूं, औषध जडी नहीं रखता हूं, रात दिन घोटकर जड सहित पीता हूं, देख परीक्षा कर चखता हूं।

ना मैं सूता ना मैं बैठा, ना मुझ भूख न धाया।
ना मैं धनवंत ना मैं निरधन, ना खोया ना पाया।। १५।।

मैं न सोया हूं न बैठा हूं, मुझे न भूख है न धाया हूं, न मैं धनवान हूं न गरीब हूं, मैंने न कुछ खोया न पाया है।

सबको त्याग शकल मैं खावूं, सहज शकल मैं राखी।
कथनी कथूं सुणी न कांई, साख बहुत मैं भाखी।। १६।।

मेरे सब का त्याग है और खाता हूं सहज में ही सबको रख छोड़ा है, कथनी कथता हूं कुछ भी नहीं सुना है बहुत साख भी कही है।

ना अहंकार नहीं मैं मिलता, ना सो गर्व न सहणा।
ना सो मान अमान न मेरे, ना सो सुणू न कहणा ।। १७।।

मेरे न अहंकार है न मैं मिलता हूं, न मैं गर्व सहता हूं, न मेरे मान है न अमान है, न मैं सुणता हूं न मैं कहता हूं।

ना मैं बाद हटू सो नांही, चरचा करूं न न्यारा।
जैसे तत्त शीव सब मांही, यूं जन शकल बुहारा।। १८।।

न मेरे वाद है न मैं हटता हूं न चरचा करता हूं, जैसे ब्रह्म शीव सब के अन्दर है, ऐसे जनों का सब बुहार है।

ना मैं तुरक नहीं मैं हिन्दू, ना मैं जात अजाती।
ना मैं बरण बिना कुल नांही, नां मैं अेक न साथी।। १९।।

न मैं हिन्दु हूं न मुसलमान हूं, मेरे कोई कुल बरण नहीं है, न मैं अकेला हूं न किसी के साथ हूं।

ना मैं खांण बिना नहीं हुवा, बाण नहीं मैं बोलु।
बामण नहीं कहूं पण सारा, बिणज करूं नहीं तोलु।। २०।।

मैं न खाण में हू न बिना खांण के हुवा हूं, मेरे बांणी नहीं है बोलता भी हूं। मैं ब्राह्मण नहीं हूं पर उनकी सब बातें बताता हूं मैं बिणज करता हूं पर तोलता नहीं हूं।

सब के मांय शकल सुं न्यारा, मरम लखे कोई बिरला।
जन सुखराम देत है हाका, मारत है नित किरला।। २१।।

सबके अन्दर सबसे अलग हूं बिरले ही मरम को जानते है, म:फ: है कि आवाज देकर कहता हूं कि सतशब्द ही कर्म व भर्म का खात्मा करता है।

ज्ञानी लखे नहीं कोई पण्डित, खट दरशण ना जैनी।
जन सुखराम मोय सो जाणे, चल्या गिगन के कानी।। २२।।

ज्ञानी पंडित खटदरशनी व जैनी ब्रह्म के पद का अनुभव नहीं कर सकते। म:फ: है कि जो मेरे सतशब्द के ज्ञान को समझेगा वहीं गिगन घर जायेगा।

पवन खांच भृकुटी चाडे, सो नर लखे न मोई।
जन सुखराम अगम घर खेले, रात दिवस नही दोई।। २३।।

स्वांसा को खेंचकर संखनाल के रास्ते भृकुटी होकर चढ़ने वाले गिगन में नहीं पहुंचते याने के: पद आ:पद की प्राप्ति नहीं करते। म:फ: है कि जो संत अगम घर याने के: पद आ: पद में पहुंचते है, वहां रात दिन नही होते।

मन हर काम नहीं वहां पवना, सूरत निरत नहीं अेको।
जन सुखराम देह सूं न्यारा, परे परम पद देखो।। २४।।

परमपद में मन कामना श्वांसा सूरत निरत ये नहीं है वो पद देही से भी अलग है उसका अनुभव करो।

तपसी तपे तपस्या साजे, फिर आचार चलावे।
जन सुखराम साध गत झीणी, ऊ पंथ हात न आवे।। २५।।

तपसी तपस्या करने की साधना करते है आचार रखते है। म:फ: कि सतशब्द आने की गति झीणी है उस साधन को वे नहीं जानते।

जोगी जंगम फरक फकीरा, खट दरशण जग सारा।
जन सुखराम साधगत जीणी, ये नहीं लखे लिगारा।। २६।।

जोगी जंगम फकीर खट दरशणी व सारा जगत साधगत झीणी याने सतस्वरूप आ:पद की प्राप्ति का ज्ञान नहीं जानते।

जंत्र मंत्र बोला साजे, देव करे बस सोई।
जन सुखराम साधगत झीणी, आ सेन लखे नहीं कोई।। २७।।

जंत्र मंत्र व कई प्रकार से साधना कर देवताओं को वश में कर लेते है। म:फ: है कि वो साधगत झीणी याने सतस्वरूप आ: पद की प्राप्ति के ज्ञान को नहीं जानते।

पढयां गुणयां हाथ नहीं आवे, सिख्या सुण्यां न जांणे।
जन सुखराम साधगत झीणी, सतगुरु शरण पिछाणे।। २८।।

पढ़ने गुनने से सीखने सुनने से सतशब्द हाथ नहीं आता व नही जान सकते। म:फ: है कि साधगत झीणी याने सतस्वरूप आ: पद का ज्ञान ओधाधारी सतगुरु का ज्ञान धारण करने व उनकी विधि से भजन करने पर प्राप्त होता है।

बिना रूप स्थूल बना है, अरस परस का मेला।
जन सुखराम भेद सतगुरु के, नाम रटयां व्हे भेला।। २९।।

बिना शरीर बिना रूप के आत्मचेतन को सतशब्द का अखण्ड अनुभव होना ही अरस परस का मेला है। म:फ: है कि सतगुरु के ज्ञान से भेद लेकर निज नाम का भजन करने से ही के:पद आ: पद की प्राप्ति होती है।

रसणा रटे घम कूं बंधे, सूरत निरत घर लावे।
जन सुखराम ऊलट चढ ऊंचा, हरि दीदार दिखावे।। ३०।।

रसणा से रटते है सांस उसांस में भजन करने से घोर बंधती है, सूरत निरत लगाकर भजन करके बंकनाल के रास्ते शब्द के साथ उलटकर चढने से परमपद की प्राप्ति होना ही परमात्मा का दर्शन करना है।

जोडे रटे घम कूं साजे, लेवे सांस ऊसांसा।
जन सुखराम सजे सब काया, करे गिगन घर बासा।। ३१।।

रकार मकार का सांस ऊसांस में भजन करना ही घम कूं साजना है। म:फ: है कि सारे शरीर में सतशब्द का अनुभव होकर दशवे द्वार के ऊपर गिगन में अनुभव होना ही गिगन में बासा करना है।

साधगत सोई जन जांणे, रटे नाम निरधारा।
जन सुखराम ररे मिल ममो, आठूं पोहोरा ऊचारा।। ३२।।

सत स्वरूप आ: पद की भक्ति को वे ही संत जानते है जो निराधार निज नाम का भजन करते है। म:फ: है कि रकार मकार का आठोपहर याने रात दिन हर समय भजन करते है।

ररे ममे बिच भेद बिचारे, तज दे फेर मिलावे।
जन सुखराम साधगत से नर, पच्छे कदे नहीं पावे।। ३३।।

राम नाम की इस विधि पर मन में शंका रखता है, कभी करता है कभी छोड़ देता है। यही ररे ममे बिच भेद विचारना है। म:फ: है कि वो सतशब्द की प्राप्ति कभी नहीं कर सकते।

दोनो शब्द जुगत सुं रटणा, गरभ बंधे संग मिलियां।
जन सुखराम पुरूष ज्यो नारी, करे गरज मन मिलियां।। ३४।।

ररा ममा दोनों शब्द को सतगुरु विधि से रटणा ही जुगत सु रटणा है। विधि से ही रटने से ही सतशब्द की जागृति होती है, ऐसे ही स्त्री पुरूष का साथ होने से ही गर्भ रहता है।

पंखी उडे पंख दोय जैसे, थिर व्हे पवन सहारे।
पंथी दोय चरण ते चाले, युं अंछर ऊभै ऊधारे।। ३५।।

पक्षी दोनों पंखो से उड़ता है ऊपर जाकर हवा के सहारे बिना पंख हिलाये उडता रहता है जैसे रास्ता चलने वाला दोनो पैरो से चलता है ऐसे ही यह दोनो अक्षर का विधि से भजन करने पर उद्धार कर देते है याने के:पद आ:पद की प्राप्ति हो जाती है।

अेकलख जतन लाख कर बंधन, सेंसर और अठांसी।
जनसुखराम भेद बिन भक्ति, कटे न जम की फांसी।। ३६।।

एक लाख जतन कर लेवे, लाख तरह के बंधन कर लेवे, अठयासी हजार ऋषियों के ज्ञान को भी धारण कर लेवे। म:फ: हैं कि भेद से भजन किये बिना जन्म मरण नहीं मिटता।

छन्दअर्ध भुजंगी : गुरु सेव किने, सब भेद दिने। किये ज्ञान सारा, ब्रह्म हूं विचारा।।
भिदे भेद मांही, लिये शरण जांही ।। ३७।।

सतगुरु का ज्ञान धारण करने पर ही सब भेद मिलते है। सारा ज्ञान करके ब्रह्म पद की प्राप्ति करना शब्द का शरीर में अनुभव होना व शरण में जाना है।

दियो ज्ञान मोही, सबे सुख होई। बिना ब्रह्म प्रसंग।
सबे झूंठ दरसंग।। कह देव सारा, ब्रह्म हूं उचारा।। ३८।।

मुझे ऐसा ज्ञान दिया है मेरे सब सुख हो गये। ब्रह्म की प्राप्ति के बिना सब साधन झूंठे है। सब देवता कहते है कि हम भी मनुष्य जन्म की प्राप्ति कर ब्रह्म पद की प्राप्ति करें।

सबे देव सेवा, निजो तत भेवा। भजो राम रामंग।
तजो सब कामंग।। गुरू भेद दिया, शिषो जाय लिया।। ३९ ।।

निज तत याने ब्रह्म पद की प्राप्ति का भेद मिल जाता है तो सब देवताओं की सेवा हो जाती है, राम राम भजो सब कामना छोडो। ज्ञान गुरु म: ने ऐसा भेद दिया शिष्य ने धारण किया।

खंडे खंड जाई, सबे पिण्ड मांई। लखे गुरु ज्ञानंग,
पिण्डे भेव जानंग। भजो राम रामंग, तजो सब कामंग।। ४० ।।

खण्ड में है वो पिण्ड में है। सतगुरु के ज्ञान से ही पिण्ड का भेद जान सकते है। इस तरह सब कामनाओं को छोड़कर रामजी की भक्ति याने राम राम करो।

मिले मन मांही, निजे मन जांही। निरभय नाम सूजे,
गुरु जाय बुझे।। तबे लेण लागा, भिनो भरम भागा।। ४१ ।।

मन लगाकर निज मन से भक्ति करने पर निरभय नाम याने परमात्मा के निज नाम की प्राप्ति होती है। सतगुरु से ज्ञान पूछने पर ही भक्ति करने में लगते है। जब भरम व द्वेतपना मिटता है।

लिया पण साधंग, नाम जे आराधंग। भजो राम रामंग,
तजो सब कामंग।। हमें हीर पाया, निरखे मझ काया।। ४२ ।।

इस तरह साधना करने से नाम की भक्ति होती है, सब कामनाओ को छोड़कर राम राम करो, शरीर में सतशब्द की जागृति होना ही काया मज हीरा पाना है। सतशब्द का अनुभव होना ही निरखना है।

भयो ऊजियारो, गयो तिमीर सारो। सबे चीज सूजे,
सो सो जाय बूजे।। तिहूं लोक सारो, भयो ऊजियारो।। ४३ ।।

ज्ञान रूपी सूर्य के उदय होने से अज्ञान रूपी सब अन्धकार मिट जाता है। सतगुरु जो भेद बताते है उन सब का अनुभव होना ही सब चीज सूझना व बूझना है। खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड में सब जगह सतशब्द का अनुभव होना ही तिहूं लोक में ऊजियारा होना है।

सातूं दीप सोई, नव खण्ड होई। बरसे मेघ भारी,
गरजे गेण सारी।। चले नीर धारा, पिये बन सारा।। ४४ ।।

सात द्वीप व नवखण्ड याने सारे शरीर में शब्द का अनुभव होना ही मेघ का बरसना है व गेण गरजना है। सारे शरीर में रग रग रोम रोम में अला पिंगला सुखमणा में शब्द का अनुभव होना ही नीर धारा चलना व बन का पीना है।

फूले बन जांही, बडे पोप मांही। बोले मोर सूवा,
भंवर गुंज हुवा।। चली नेम सिलता, न्हावे नीर मिलता ।। ४५ ।।

सारे शरीर में द्वादस कंवलो पर शब्द का अनुभव होना ही बन का फूलना व बडे पोप याने फूल है। शब्द की ध्वनि का अनुभव होना ही मोर सुवा व भंवरो की गुंजार होना है। सुखमण में भजन होना ही नदी का चलना है व उसका आनन्द आना ही नदी में स्नान करना है।

अब भरे नीर जाई, सातुं सुर मांही। ऐसी अेक देखी,
कहूं नैण पेखी।। जमी भीज बरसे, गिगन जाय दरसे।। ४६ ।।

शरीर में सब जगह शब्द का अनुभव होना ही सातू सुर में नीर भरना है। ऐसी एक बात मैं अनुभव कर कह रहा हूं कि बाणी से भजन होना जमी भीज बरसना व गिगन में अनुभव होना ही गिगन जाय दरसे है।

ऐसा नीर चले, नदी पूर छले। मुदे तीन जांणी,
चढ़े पहाड़ पानी, तिहूं लोक मांही। बरसे बरस जांही।। ४७।।

सारे शरीर में शब्द का अनुभव होना ही नीर का चलना है, अला पिंगला सुखमणा में भजन होना ही तीन नदियो का पूर चलना है। मेरूडंड पर शब्द का अनुभव होना ही पहाड पर पानी चढना है। खंड पिंड ब्रह्मण्ड में अनुभव होना ही तिहूं लोक बरसना है।

थके विणज बोहारा, तिहूं लोक सारा। हली हल छूटे,
गिगन मेघ बूटे। पडयो काल भारी, मुवा पांचो हारी ।। ४८ ।।

आत्मा का खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड से सतशब्द के साथ अलग होना ही तिहूं लोक का बिणज बोहार थकना है। बरसात अधिक होने पर हाली का हल छूट जाता है, ऐसे ही शरीर से अलग ब्रह्मण्ड से ऊपर बाणी के भजन से अलग बिना बाणी का भजन का होना ही हली हल छूटना व गिगन मेघ बूंटना है। पांच प्राणों से अलग होकर पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति होकर जन्म मरण से रहित होना ही काल का पडना व पंच का हारना है।

भातो लेर आई जीमें कौन भाई, चली मतवारी।
ऊलट सुरत नारी, अबे पीर जाई, पिता घर आई।। ४९ ।।

आत्मा शरीर के साथ ईन्द्रियो के भोगो का अनुभव करती थी वो अब उनसे अलग हो गई यही भातो लेर आई जीमें कौन भाई है। सूरत का शब्द के साथ बंकनाल में उलटकर ऊपर चढ़ना ही चली मतवारी ऊलट सूरत नारी है। आत्मा को परबह्म के पद की प्राप्ति होना ही पीर जाना व पिता का घर आना है।

जुगे आश थाकी, किया मन साखी। कह सुखरामा।।
मिले हरि श्यामा, आदू घर आया। परमपद पाया ।। ५० ।।

मन लगाकर भजन करने से जन्म मरण से रहित होना याने पारब्रह्म पिता का देश छोडकर के: पद आ: पद पति के देश में जाना ही जुगे आश थाकी है। म:फ: है कि इस तरह भजन करने से पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति होना ही आदू घर आना व परमपद पाना व श्याम का मिलना है याने परमात्मा की प्राप्ति का होना है।

।। इति श्री साध भेद का अंग सम्पूर्ण।।

卐 साध सिद्ध पारख का अंग 卐

रेखता : देख संसार की झूंठ बाजी रची, समझ जड़ जीव तूं मन मेरा।
सांच कूं ऊथपे झूंठ कूं थोप दे, धिरग धिरग नर जन्म तेरा।।
जल की बूंद सूं पिण्ड पैदा किया, रिजक ही आण कर तोय देवे।
घाट ओघाट में राम रिछया करे, ताय को नाम तूं नांय लेवे।।
आद अनाद में नाम सांचो संगी, रिजियां मोज ले मोख देवे।
दास सुखराम कह धिरग मन तोय रे, राम कूं छाड क्यों आन सेवे।। १ ।।

यह संसार की रचना राम रूपी बाजीगर की बाजीगरी है हे मूर्ख जीव इसको तू समझ ले। जो सत है उसकी भक्ति नहीं करके जो असत है उसकी भक्ति करता है, यही सत का उथापना व झूंठ का थापना है। हे मनुष्य तेरा जन्म धिक्कार है धिक्कार है जो उस परमात्मा की तूं भक्ति नहीं करता। जिसने एक पानी की बूंद से सर्वगुण सम्पन्न तेरा शरीर बनाया व तेरी सब जरूरते पूरी करता है तथा घाट ओघट याने सब जगह तेरी रक्षा करता है। आदि अनादि से जो परमात्मा का निज नांव है वो ही तुम्हारा सच्चा साथी है, उसकी कृपा होने से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। म:फ: है कि हे मन तुझे धिक्कार है जो रामजी को छोड़कर आन की भक्ति करता है।

चेत बिरियां थको समझ विचार कर, लोह का ताव ज्युं आव जावे।
बहुत पिस्तावसी अन्त लोहार ज्यूं, ताव सूं काड घण नांय बावे।।
मानखो जन्म नर नीठ ते पावियो, शुभ सो काम हल बेग कीजे।
जगत के संग तूं मुक्त नहीं पावसी, साध की संगत कोई हेर लीजे।।
जम का दूत बिना भजन तोय मारसी, नरक निगोद के बीच डारे।
दास सुखराम कह अेह लोक के वास्ते, जीत पासो पडयो काय हारे।। २ ।।

समय रहते जल्दी से चेत जावो, लोहे के ताव जैसे आयु जा रही है। लुहार जैसे अग्नि से लोहे को निकालकर चोट लगाकर औजार नहीं बनाता तो ठंडा होने पर नहीं बनता, फिर उसको पछताना पडता है। तुझे मनुष्य जन्म मुश्किल से मिला है। अच्छे से अच्छा काम जो भक्ति भजन करना है इसको जल्दी से जल्दी करो। जगत के साथ जगत की करणियां करने से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होगी। साध जो सतस्वरूप आनन्द पद की भक्ति करते है उनका साथ कर। बिना भजन किये चौरासी व नरकों में जाना आना पडेगा। यही जम के दूतों का मारना है। म:फ: है कि यह मनुष्य जन्म मिला, यही जीत का पासा पडा है। इसमें भक्ति नहीं करना ही मनुष्य जन्म हारना है।

बेद झाडागरा जगत आधीन रे, पित्र कूं पूज बोह रिण भाखे।
पीर भोपा तणी मान संसार रे, आन की ईष्ट ले शीष राखे।।
भेष अवधुत रो पहर आसण करे, मून सो पकड कछु होय भोला।
रोग मथवाय धन पुत्र की चाय ले, सिध कर नार नर फिरत डोला।।
साध निज नाम की गम नहीं जगत कूं, मोख परलोक की चाय नांई।
दास सुखराम रिध सिध के वास्ते, रात दिन नार नर पचत जाई।। ३ ।।

वैद्यो व झाडा देने वाले झाडागरों के जगत वाले अधीन रहते है, पित्रो को मानते है तो पित्र

अपना दोष बताते है, तुम मेरी इस तरह से मान्यता करो जब तुम्हारा दुख दूर होगा। पीरों व भोपों की संसार में मान्यता है। भक्ति करते है तो आन देव की करते है, भेष पहनकर अवधूत बनते है, आसण लगाकर बैठकर मौन धारण कर भोले बनकर बैठे जाते है। संसार वाले उनके पास जाकर धन पुत्र प्राप्ति की व रोग मिटाने की प्रार्थना करते है, इस कामना को लेकर उनके पास आते जाते रहते है। साध जो निज नाम याने परमात्मा की भक्ति करते है निज नाम जो प्रकट होता है उसको संसार वाले नहीं जानते। जगत वालों को मोक्ष प्राप्ति की इच्छा नहीं है। म:फ: है कि सब ही स्त्री पुरूष रिद्धी सिद्धी प्राप्त करने की रात दिन इच्छा रखते है।

जोग निशो दिन काल के बश है, बहुत प्रसाद तोई भूख लागे।
एक सो बार जो चोर ठग जात है, नेट निधान सो धणी जागे।।
हठकर दान दातार सूं लेत है, अखूट धन द्रब सो देत नांही।
सिद्ध की बात संसार सो हद में, तोल जूं मोल फिर माप मांही।।
रेखतो बांच ईतबार सब मानियो, अर्थ निज तत सब मांय लिया।
दास सुखराम अमरीष निज साध था, ऋष कर कोप जो श्राप दिया।। ४।।

अष्टांग योग अथवा कोई योग ही जिससे शरीर अमर हो जाता है पर महा प्रलय में मरना पडता है। भूख भोजन करने पर भी लग ही जाती है। चोर सौ बार चोरी कर लेता है अन्त में कभी न कभी पकड में आ ही जाता है, यही धणी का जागना है। दातार से जिद करके दान लेते है तो साधारण मिलता है देने वाले के पास अखूट धन हो तो भी मामूली देते है। सिद्ध की बात संसार में हद में ही है। तोल मोल जो माप है इस बात को सच मानो, इसका यही अर्थ है कि रिद्धियां सिद्धियां का फल यही भोगता है इनसे मोक्ष नहीं होती। म:फ: है कि अमरीष राजा साध थे। दुर्वासा ने क्रोध कर श्राप दिया।

ऋषि का वचन सो ऋषि में उलटिया, अेक सूं शेष होय माय आया।
सुरग पाताल तिहूं लोक सो डोलियो, साय नहीं होत यां नेक भाया।।
विष्णु पे जाय ऋषि करत स्तूत रे, साय हरि श्याम जो करो मेरी।
लाय में अंग हरि प्राण जो प्रजले, राख करतार अब शरण तेरी।।
दुर्वासा ऋषि सिद्ध कहत भगवान सत सांभलो, ऋषि साध का वचन मोय फिरे नांही।
तुम सो जाय अमरीष का चरण लो, साय तुम चैन सो हुवे नांही।।
साध को वचन तिहूं लोक सब देवता, ऊलट पलटाय नहीं फेर दिया।
दास सुखराम कह सांभलो सरब रे, साध और सिद्ध अे फेर किया।। ५।।

ऋषि के श्राप देने से राजा अमरीष का कुछ नहीं बिगडा। दुर्वासा को ही उसका दुख भोगना पड़ा। स्वर्ग में पाताल में तीनो लोको में फिरे, किसी जगह जरा सी भी उनकी सहायता नहीं हुई। जब विष्णु भगवान के पास जाकर ऋषि ने प्रार्थना कि हे प्रभु मेरी सहायता करो। मेरा शरीर अग्नि में जल रहा है। प्राण भी बहुत दुखी हो रहे है। हे प्रभु मेरी रक्षा करो याने आपकी शरण में लो। दुर्वासा ऋषि सिद्ध थे उनको विष्णु भगवान ने कहा हे ऋषिजी साध के वचन को मैं नहीं फेर सकता। तुम जाकर अमरीष की शरण लो वहां ही तुम्हारे दुख दूर हो सकते है। साध के वचन को तीनो लोको में सब देवता वगैरह कोई भी उलट व फेर नहीं सकता है। म:फ: है कि सब ही सुणो

साध और सिद्ध में यही फरक है।

सिध और साध बिच आंतरो बहुत है, धरण ब्रह्मण्ड शाह चोर होई।।
सूरज प्रकाश कहां रेण मुसाल रे, ओस को नीर कहां समंद कोई।।
चित चित्रावणी, कनक सब धात रे, ईन्द्र की धेन कहां गाय दूजे।
राव हर रंक सब भूप प्रधान रे, बादशाह ईन्द्र को जाय बुजे।।
रांधियो अन्न बोहो भांत सुं स्वाद रे, साबते नाज बिन होम नांही।
दास सुखराम यूं साध ज्यूं सिध के, आंतरो भंवर ज्यों कीट मांही।। ६ ।।

साध और सिद्ध में बहुत फरक है जैसा धरती व आकाश में है। साहूकार व चोर में फरक है, सूर्य के प्रकाश व रात को मशाल जलाते है इतना फरक है। कहां समुद्र का पानी व औस के पानी में फरक है। चित्रांमणी में, सोने में, सब धातुओं में जितना फरक है उतना फरक है। कामधेनू गाय व साधारण गाय में जितना फरक है। राजा रंक व राजा के प्रधान में बादशाह व इन्द्र में जितना फरक है वैसा फरक है। रंधा हुवा अन्न बहुत स्वादिष्ट होता है परन्तु साबते अन्न बिना हवन नहीं होता। म:फ: है कि साध व सिद्ध में भंवरा व लट कीडा जितना फरक है।

साध करतार सूं अधिक संसार में, ज्ञान विचार बिन नांय सूजे।
मुढ बाजार में दाम गांठि बिना, बुद्ध बिन बस्त को नाम बूजे।
नैण बिन रूप सो ध्राण बिन बासना, जीभ बिन स्वाद सो नांय आवे।
प्यास बिन नीर तज भूख बिन अन्न रे, पारख बिन हीर कूं नांय लावे।
शहर कुल गांव बिच गेल इधकार है, अगम आगे चले सरस भाई।
दास सुखराम यूं संत जन इधक है, दास कूं राम मिले साध मांई।। ७ ।।

उपरोक्त उदाहरण से हमको समझाया है कि ओधाधारी साध तीन लोक के ओधाधारी से अधिक है। यह बात ज्ञान की गम बिना नहीं समझ सकते। जैसे कोई मूर्ख बाजार जाता है, पास में धन भी नहीं है व बुद्धि भी नहीं है तो वस्तु का क्या नाम बुझेगा। तो वह ऐसा है जैसे नैत्र नहीं है तो वह रूप क्या देखेगा। नाक के बिना खुशबु नहीं, जीभ के बिना स्वाद नहीं बता सकता। जैसे बिना पानी के प्यास नहीं जाती, बिना अन्न के भूख नहीं जाती। बिना पारख के हीरा नहीं ला सकता। गांव जाओ चाहे शहर जाओ रास्ता मालूम होना चाहिये तब पहुंचते हैं। इस तरह ओधाधारी संत का महत्व अधिक है। उनके द्वारा सतशब्द रूपी परमात्मा आते है तब आत्मा के: पद में पहुंचती है।

राम रिसावियां संत जन राख ले, काल की ओट सब चोट टाले।
तेज सुं नीर प्रकाशिया संसार में, काठ कूं शरण ले प्रीत पाले।।
अप सुं धरण ये पाहण प्रकाशिया, महल ज्यूं मालिया चूणयां भाई।
कोपिया नीर सो जीव शरणे लिया, बूंद सो छांट न लगे आई।
ढाल जंजीर शीर टोप की रीज रे, सरस सूं सरस बणाय देवे।
दास सुखराम लोहार ज्यूं कोपिया, वाइ कूं शरण सो राख लेवे ।। ८ ।।

रामजी नाराज हो जावे तो संत रामजी की भक्ति करने वाले जन उसकी रक्षा कर सकते है। काल से उसकी रक्षा कर लेते है। अग्नि से पानी की उत्पति है। अग्नि की ज्वाला लकडी को जलाने

से लग जाती है। यदि वह लकडी पानी की शरण में आ जाती है तो पानी रक्षा कर लेता है। पानी से धरती व पत्थर प्रकट हुये है। पत्थर व पानी से ही महल चुना जाता है। पानी जीवों पर कोप कर खूब बरसता है। तो जीव पत्थर व मिट्टी के बने मकानो में बैठ जावे तो मनुष्य की रक्षा कर एक बूंद भी नहीं लगने देता है। जैसे लोहार लोहे की अच्छी से अच्छी टोप बगतर व ढाल बनाता है। अब इनको पहनने वाले पर लोहार कोप करके भी आवे याने लडे तो भी जरा सा भी घाव नहीं होने देते, ऐसे ही संत रामजी के बनाये हुये है। यदि रामजी किसी पर कोप भी करे और वह संतो की शरण में आ जाता है। तो संत उसकी रक्षा करते है याने उसे जन्म मरण से रहित कर देते है।

वेद विचार सो ऋषि की शरण ले, राज की रीत सो भूप पासा।
विध बोपार की साह सुं होत है, नार नर संग जहां पुत्र आसा।।
चोर के संग सो कुब्द केती लेह, सोग संग मिल दुख होई।
बेद के संग ज्यूं दरद की पारखा, ओषधी संग मिल जाण दोई।।
बात ज्यूं बिगत सब किसब बिस्तार है, संग सा फूल फल खाय जाई।
दास सुखराम यूं संत की संगत सूं, रमता राम सूं मिले मांही ।। ९ ।।

वेदो के ज्ञान ऋषियो की शरण लेने से मिलता है, राजकाज सीखना हो तो राजा के पास रहने से सीखा जाता है। व्यौपार का काम साहूकार के पास रहने से सीखा जाता है। पुत्र की आशा हो तो स्त्री पुरूष का साथ होने से पुत्र प्राप्त हो जाता है। कुबुद्धि सिखना हो तो चोरो का साथ करो। चोर में चौरासी कला होती है। सोग वाले का साथ करने से दुख होता है। दर्द की परीक्षा वैद्य का संग करने से होती है व दवाई मिल जाती है। बात बिगत सब किसब के साथ है, जैसे संग करता है वैसा ही फल मिलता है। म:फ: है कि इसी तरह संतो की शरण लेने से जो राम जी सब में रम रहे है उन रामजी की प्राप्ति घट में हो जाती है।

।। इति श्री साध सिद्ध पारख का अंग सम्पूर्ण ।।

卐 निरणा का अंग 卐

कुण्डलिया : बिन निरणो सुणिया बिना, भक्त करे जुग मांय। से नर जुग में ओतरे,
लोक किणी नहीं जाय।। लोक किणी नहीं जाय, मोह घर को घर मांही।
अंतकाल में जीव छाड, कोण दिशा जाई। सुखराम अेक नही पहुंथियो,
ना अब पहुंचे जाय।। बिन निरणो सुणिया बिना, भक्त करे जुग मांय ।। १ ।।

बिना जानकारी के जो जगत में भक्ति करते है, वे जगत में कोई भी शरीर धारण करते है, किसी लोक को नही जाते, जैसे किसी आदमी का मोह शरीर रूपी घर में होता है वह कहीं भी नही जाय फिर वापिस घर में ही आत्मा रहती है। अन्तकाल में जीव बिना जानकारी के किस लोक में जायेगा। म:फ: है कि बिना जानकारी के न तो आगे कोई पहुंचा है न अब कोई पहुंचेगा, बिना जानकारी के जो जगत में भक्ति करते है।

भिन्न भिन्न कर निरणो सुणे, लोक लोक रो जाय। रेहणी संग विचार सुख,
सबका मालूम होय।। सबका मालूम होय, तबे डहके नर नांही।
जब पुगे किणी लोक, ज्ञान में सुणियो याही।। सुखराम गेल वा ही गहे,

जां ऊर नेहचो होय। भिन्न भिन्न कर निरणो सुणे, लोक लोक रो जाय ।। २।।

लोक लोक की अलग अलग जानकारी करे कि किस साधन से किस लोक की प्राप्ति के लिये किसका संग, एवं रहणी विचार सुख अंग लक्षण मालूम रहे, तब वो मनुष्य नही बहकता। ज्ञान में यही सुणा है किस साधन से किस लोक की प्राप्ति होती है। म:फ: है कि वो ही साधन करो जिसको जिस लोक में जाना है। लोक लोक की अलग अलग जानकारी करे।

सर्व लोक की रीत सुण, निज मन निसर जाय। ज्यों उलटी को परहरे,
यूं त्यागे मन मांय।। यूं त्यागे मन मांय, मोख प्यारी जब लागे।
ज्यूं बालक मां हेत, काम कामी शिर जागे।। सुखराम ज्ञान प्रकाशिया,
केवल ऊपजे आय। सर्व लोक की रीत सुण, निज मन निसर जाय ।। ३।।

निज मन से सब लोको की रीति सुनने पर यह जानकारी हो जाती है, जिण लोको में जाने से वापिस आना पडता है, इसलिए उन लोको में जाने का साधन नही करता। जैसे किसी को उल्टी हो जावे तो उसे वह त्याग देता है, ऐसे ही निज मन से उन लोको में जाने का साधन नही करता। तब ही उसे मोक्ष अच्छा लगता है जैसे बालक को माता प्यारी लगती है, जैसे कामी को कामिनी प्यारी लगती है। म:फ: है कि इस तरह सतस्वरूप आ:पद की भक्ति करने से केवल याने सतशब्द जागृत हो जाता है।

बिन निरणो सुणियां बिना, परम मोख नही जाय। करणी साजी छेह बिना,
गरज सरे नही कांय।। गरज सरे नही कांय, अर्थ जांको यो होई।
बिन सुणियां किणी गांव, कौण विध पूंथे कोई।। चालण की सरदा घणी,
पण फिर फिर गोता खाय, बिन निरणो सुणियां बिना, परममोख नही जाय ।। ४।।

बिना जानकारी के साधन किये बिना परममोक्ष की प्राप्ति नहीं होती, कई तरह की अनन्त करणियां करो परमपद की प्राप्ति नहीं होती। उसका यह अर्थ है कि बिना किसी गांव की जानकारी के उस गांव में कैसे पहुंच सकता है। चलने की बहुत सरदा है पर ग्यान भक्ति की जानकारी के बिना पहुंच नहीं सकता। बिना जानकारी के परम मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती।

बिन निरणे भक्ति करे, सो नर नारी बेकाम। भडभेटा खाता फिरे,
किणीयन पूंथे धाम ।। किणीयन पूंथे धाम, पंथ पकडया बिन कोई।
आ कर्ता की रीत, मत जैसा हरि होई।। सुखराम नाम कारण नहीं,
जो सुध हुवे आत्म राम। बिन निरणे भक्ति करे, सो नर नारी बेकाम।। ५।।

बिना जानकारी के जो भी स्त्री पुरूष साधन करते है, वह साधन कुछ काम नहीं आता। साधन करने पर भी किसी पद की प्राप्ति नहीं होती, यह इधर उधर भटका खाना है। सही रास्ता पकडे बिना किसी गांव को नहीं पहुंचता। यह परमात्मा की रीति है। जैसी साधक की इच्छा होती है। उसे उसी पद की प्राप्ति होती है, यह मत जैसा हरि होई है। म:फ: है कि जो शुद्ध आत्मा से जिस नाम की भक्ति करता है उसे उसी लोक की प्राप्ति हो जाती है। यही नाम का कारण नहीं है।

मुल्क रीत जांणे नहीं, ना सुख सुण्यो न कोय।। दिशा नाम की गम नहीं,
कहो किम पूंथे कोय।। कहो किम पूंथे कोय, धन बल है घर मांही।
यूं करणी बिन ज्ञिनान, रहत सब हदके मांही।। सुखराम धन बुद्ध हीण के,

किम सुख लेवे जोय। मुल्क रीत जांणे नहीं, ना सुख सुण्यो न कोय।। ६ ।।

मुल्क की रीति को न जानता न उसके सुख को सुना है वो मुल्क किस दिशा में है याने नाम की जानकारी नहीं है तो वहां कैसे पहुंच सकता है। धन बल याने साधन करने की शक्ति बहुत है यूं बिना ज्ञान के करणी करने से सब हद में याने तीन लोको में रह जाते है। म:फ: है कि जैसे बिना अकल वाले के पास धन हो तो धन का सुख कैसे भोग सकता है। न तो मुल्क की रीति जानता है न उसका सुख सुना है।

धन अपार अंग सूरबी, रीत न जांणे कोय। यूं करणी कर भेद बिन,
जाय न सके कोय।। जाय न सके कोय, रीत कुल की सब कीवी।
ज्यां लग सुण जग मांय, तहां लग सोजर लीवी।। सुखराम लोक की गम नहीं,
मुक्त कोण विध होय। धन अपार अंग सूरबी, रीत न जांणे कोय।। ७।।

अपार धन है शरीर शक्तिशाली भी है परन्तु रीति नहीं जानता, ऐसे ही सर्वगुण सम्पन्न है, साधन करने में शूरवीर है, परन्तु साधन की रीति नहीं जानता। करणियां खूब करता है पर बिना भेद के करता है, इसलिए नही जा सकता। कुल की रीत याने ब्रह्म का साधन, शुभ करणियां, ज्ञान, सिमरण, योग ये सब साधन खूब करते है, जगत में सुणा वे सब साधन किये। म:फ: है कि किस लोक में कौनसा साधन जाता है उसका ज्ञान नहीं है तो उसकी मोक्ष कैसे हो सकती है।

परममोख जांणो करे, गेल मोख की नांय। तो नहीं पहुंथे हटकर,
मोह तज बन में जाय।। मोह तज बन में जाय, गेल पावे नर कोई।
यूं नहीं पहुंथे जाय, लोक की पारख न होई।। सुखराम परख बिन अड रहे,
कुल गांवडिया मांय। हरि गेले बिना पहुंथे नही, तसतीक करके जाय।। ८।।

परममोक्ष की प्राप्ति करना चाहता है परन्तु परम मोक्ष का साधन नहीं करता। घर का मोह छोड़कर बन में चले जावे, इस हटसे भी उस की प्राप्ति नहीं होती। जो मनुष्य साधना को जानता है वही जा सकता है। जिस लोक में मनुष्य जाना चाहता है परन्तु उसकी प्राप्ति के साधन का ज्ञान नहीं है तो नहीं जा सकता है। म:फ: है कि बिना जानकारी के तीनों लोको में ही रह जाते है। परमात्मा के निज नाम के बिना नहीं पहुंच सकता, चाहे कितनी मेहनत करके साधन करो।

गेल लोक की चाहिये, सोजो सब अेनाण। जब पहुंचे हंस लोक कूं,
आ बिध कह गुरुआंण।। आ बिध कह गुरु आंण, लोक सब तोल बतावे।
इण विध मोह तोडाय, अेक पर ने: हचो लावे।। सुखराम कह सब सांभलो,
ज्ञानी ज्ञान पिछाण। गेल लोक की चाहिये, सोजो सब अेनाण।। ९।।

जिस लोक में जाना है उस लोक में पहुंचने का साधन जानने पर ही उस लोक की प्राप्ति हो सकती है। उस साधन की जानकारी सब विधि के साथ संतो का अणभै ग्यान बताता है, हे ग्यानी अगर मोक्ष की चाह हो तो तीन लोक की रहणी सहणी, चौथे लोक के ग्यान को सांभलो, तब पंच तत नवतत व त्रीताप से आत्मा का मोह छूट जायेगा।

कवित : नर के घोडा ऊंट, रथ पालकियां होई। धन माया भरपूर,
अंग सुरातन सोई।। पण सोजी लग जाय, सुण्यां बिना जाय न सके।
यूं छते बल नर नार, मान सुख यहां ही थके।। सुखराम परख बिन चीज रे,

सुण बदले ले और। यूं परममोख मुख से कहे, पण पकड रहया हद ठोर।। १०।।

मनुष्य के घोडा ऊंट रथ पालकियां धन माया बहुत होते है, शरीर भी शूरवीर है, जहां तक उसकी जानकारी है वहां तक ही जाता है। दूसरी जगह आना है तो दूसरो से याने जानकार है उनसे जानकारी करके ही जा सकता है। इसी तरह सब स्त्री पुरूष बल होते हुये भी तीन लोको में सुख मानकर यही रह जाते है। म:फ: है कि परीक्षा नहीं जानता है तो बदले में दूसरी चीज ले लेता है। मुख से तो कहते है कि हम जो साधन कर रहे है वो परममोक्ष की प्राप्ति का है पर वह जो साधन करते है वो परममोक्ष की प्राप्ति का नहीं होने से हद में याने तीन लोको में ही रह जाते है।

हाकम ऊतर जाय, फेर थाणायत पलटे। राणी मना ऊतार,
बहुत खवास सुं लुटे।। मोदी पणो वकील, फेर सो पटा ऊतारे।
जिण संग देवे फोज, सोज ताही कूं मारे।। छोटा मोटा जांण,
मार सब ही शिर देवे। कंवरा कूं सुखराम, गांव कोऊ नाम न लेवे।। ११।।

हाकम दूसरा आ जाता है थाणेदार बदल जाता है। रानी भी मन से ऊतर जाती है। फिर दासियों से प्रेम करने लग जाता है। मोदीपणा वकील का पट्टा भी खत्म कर देते है। जिसके साथ में फोज देते है वो सोधकर उसको ही मार देते है। चाहे छोटा हो या मोटा सबको सजा मिलती है। परन्तु जो राजा का कंवर होता है उसकी सब रक्षा करते है। उसे गांव वाले व दूसरे भी तकलीफ नहीं देते।

हाकम पावे रीज, गढ को धणी न होई। बडा पटायत जाण,
तख्त कूं लहे न कोई।। नाजर खवासा लोग, और राणी बोह कहावे।
माया करो बिलास, राज सपने नहीं पावे।। आज काल दिन पांच में,
नेहचे सरस बखाण। सब ही सिर सुखराम कह, कंवर भूप हुवे आंण।। १२।।

हाकिम इनाम पाता है। राज का मालिक नहीं हो सकता। बडे से बडे पटायत भी तख्त पर नहीं बैठ सकते। नाजर नौकर और बहुत रानियां ये सब राज सम्पत्ति सुख भोग सकते है सपने में भी राज नहीं मिलता। आज कल पांच दिन में निश्चय जान लो। सब के ऊपर राजा का कंवर ही राजा बनता है।

साखी : कंवर रह सुखराम कह, गढ ऊपर दिन रात।
खाणो पीणो महल में, वे सुख शैय्या साथ।। १।।

राजा का कंवर राजा के साथ गढ़ में ही रहता है। महलों में खाना पीना सोना सब राजा के साथ होता है।

जहां राजा का महल है, कंवर बिराजे मांय।
हाकम सुण सुखराम कह, वहां लग कदे न जाय।। २।।

राजा के महल में राजा के कंवर ही बिराजते है हाकिम राजा के महलो में कभी नहीं जा सकता।

बडा पटायत शूरवां, तो जग महिमा होय।
सपने ही सुखराम कह, तख्त न बेसे कोय।। ३।।

बडे से बडा पटायत बहुत शूरवीर है तो जगत में उसकी महिमा हो जाती है। म:फ: है कि सपने में भी वो राजा की गद्दी पर नहीं बैठ सकता।

कवित : हाकम सुर अवतार, देव थाणायत जाण्यो। ऋषि मुनि अमराव,

सिद्ध फिर पीर बखाणो। गावे शब्द रसाल, भक्त सुरगुण सो होई।
अे सब नाजर खवास, आण जाणे सब लोई।। निरगुण ब्रह्म ऊपास,
राम रट गिगन संभाया। सो साधु सुखराम, भूप राणी सुत जाया।। ४।।

ब्रह्मादिक देवता हाकम व अवतार थाणेदार की तरह है, ऋषि मुनि सिद्ध पीर यह अमराव की तरह है, सुरगुण की भक्ति करने वाले आन की उपासना करने वाले सब नाजर व नौकरो की तरह है, जो निरंजण निराकार सतचेतन आनन्द पद जिसका निज नाम सतशब्द ने: अंच्छर है उसकी भक्ति कर सतगुरु विधि से सांस उसांस में राम रट, गिगन याने ब्रह्मण्ड से ऊपर के: पद आ: पद की प्राप्ति करने वाले साधु राजा के कंवर की तरह है।

हाकम संग दे फोज, फेर थाणे सिर मेले। जो मोटा अमराव,
जांण तांही संग पेले।। दूजा सरस वकील, तांय संग फोजा दिवी।
मोदी खवास बखाण, और राणी संग लिवी।। रीज मोज सब देत है,
सरस निरस सब जांण। पण कंवरा कूं सुखराम कहे, जडे गढ में आंण ।।५।।

ब्रह्मादिक देवता व अवतार हाकिम की तरह है। रिद्धि सिद्धि करामात परचा देना यह सब इनकी फोजे है। देवता ऋषि मुनि सिद्ध पीर थानेदार व अमराव है, ये सब सुरगुण की भक्ति करते व उसको ही गाते है, आन की उपासना करने वालो में वकील, मोदी व खवास व राणी है। जो जैसी उपासना करता है। उनको उसी मुजब अच्छे व बुरे फलो की प्राप्ति होती है। सन्त जो सतशब्द की भक्ति कर ब्रह्मण्ड से ऊपर के:पद आ:पद की प्राप्ति कर जन्म मरण से रहित हो जाते है। के: पद याने सता समाधि में चोइस घंटे रहते है, यही कंवर का राजा के पास गढ में रहना है।

सवैया मनहर छन्द : हाली सुण चौधरी को, डरे नही गांव ही सुं। पटायत को खवास वान,
पटेली सो कौन है।। चेला सुण राजाजी का, छिन अमराव कह। पातशाह को अेधी सो तो,
भूप कूं न माने है।। काजी सो कुराण पढ, बादशाह को रद्द करे। मुल्ला सो पुकार बांग,
कुराण नहीं माने है।। कह सुखराम साधु, रामजी का बेटा बेटी।
आन देव सब ही कूं, ऐसी बिध जाने है।। ६ ।।

चौधरी के पास रहने वाला नौकर गांव वालो से नहीं डरता। पटायत याने भोमियो का आदमी पटेलो से नहीं डरता है। राजा के पास रहने वाला अमरावों को नहीं गिनता। बादशाह का दीवान तो राजाजी को भी नही मानता है। काजीजी कुराण पढकर बादशाह की बात नहीं मानता। कुरान की बात मानता है। मुल्ला मस्जिद में जो बांग देता है वो कुराण से अलग है। म:फ: है कि साधु जो सतशब्द की भक्ति करते है वे रामजी के सिवाय आनदेव को नहीं मानते है।

।। इति श्री निरणा का अंग सम्पूर्ण।।

卐 भर्म विधुंष का अंग 卐

कुण्डलिया : मन की ब्रह्मा शिव कहे, मन की कहे औतार। मन की कहे शिकोतरी,
कहे अनसोया नार।। कहे अनसोया नार, पहुंच प्राक्रम सब सारा।
आठ सिद्ध नव निद्ध, जके करता की लारा।। सुखराम कहे केवल नही,
जांको कहा विचार। मन की ब्रह्मा शिव कहे, मन की कहे औतार।। १ ।।

मन की बात ब्रह्माजी व शिवजी कह देते है। औतार भी मन की कह देते है। शिकोतरी मन की कह देती है। अनसुयाजी जो अत्री ऋषि की पत्नी है वह भी कह देती है। जिसकी जैसी पहुंच प्राक्रम है। वैसा ही सब होता है, आठ सिद्धि व नव निधि सब करता पद में है। म:फ: है कि यह सब होणकाल ब्रह्म में है यहां तक के: पद नहीं है जिसका क्या विचार है।

छन्द जात अर्ध भुजंगी :- मिले राज पाटंग, मिले सुख खाटंग। मिले बुद्ध भारी,
मिले सुध सारी।। मिले धन सोई, नगर सेठ होई। बिना राम रटणा,
सबे झूंठ कहाई।। मिले सुख सारा, सोऊं खाख मांही।। १।।

राजपाट मिले, ऐसा सुख मिले जो कभी खत्म न हो। बडी भारी बुद्धि मिल जावे, सब जानकारी मिल जावे, इतना धन मिल जावे कि नगर सेठ हो जावे। बिना सतगुरु विधि से राम रटे बिना इनसे जो सुख मिल रहे है। वो सब खत्म होने वाले है।

पढे वेद सोई, पडे पांव लोई। सबे देव सारा, मिले बारम्बारा।।
चले मन तांई, जहां चल जाई। बिना राम रटणा, कदे मोख नांही।।
अणिमां महिमा, गरिमा लछिमा। प्रप्ती प्राकांम्य ईशत्व बशीत्व।।
ऋग यजूर साम अर्थव। मिले सुख सारा, सोऊं खाख मांही।। २।।

वेदो को पढते है सब चरणो में पडते है। सब देवता भी आकर बारम्बार मिलते है जहां तक मन जाता है वहीं पर आत्मा जायेगी। बिना रामजी का भजन किये कभी मोक्ष नहीं होती, सब रिद्धियां व चारों वेदों के ज्ञान का सुख सब खत्म होने वाला है।

गुणे बहुत भांती, करे मन खांती। कह बात भारी, बडे तप धारी।।
सूजे मन मांई, लाखा कोस तांई। बिना नाम रटणा, कदे मोख नांही।।
मिले सुख सारा, सोऊं खाख मांही।। ३।।

पढ़कर बहुत तरह से गुणता है, मन में जो इच्छा होती वो ही करता है। भारी भारी बातें कहता है, बडे तप करने वाले है, लाखो कोसो की बात मालूम हो जाती है, पर राम भजन किये बिना कभी मोक्ष नहीं होती, जो सुख मिल रहा है वो सब खत्म होने वाला है।

महारूप पाया, सब लछ आया। रमे पीव संगा, करे ख्याल चंगा।।
दासी संग होई, चंपे पांव सोई। बिना राम रटणा, कदे मोख नांही।।
मिले सुख सारा, सोऊं खाख मांही।। ४।।

महारूपवती है, सब लक्षणो से सम्पन्न है, पति के साथ रहती है, अच्छे विचार रखती है, दासिया साथ में रहती है। जो पांवो की पग चंपी करती है पर रामजी का भजन किये बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती।

गडे उड जाई, मनो बात पाई। जले काठ संगा, हुवो नायभंगा।
चले नीर सोई, सिरे बाट होई। बिना राम रटणा, कदे मोख नांही।।
मिले सुख सारा, सोऊं खाख मांही ।। ५।।

जमीन में गडते है, मन की इच्छा माफिक प्राप्ति हो जाती है, लकडियों में जलने पर भी शरीर भंग नहीं होता, पानी पर सड़क पर चलते है वैसे चलते है, परन्तु रामजी का भजन किये बिना मोक्ष नहीं होती।

करे बहुत सेवा, मिले आंण देवा। सजे जोग सोई, अखी जुग होई।।
देवे शीश कूंची, चढे पवन ऊंची। बिना राम रटणा, कदे मोख नांही।।
मिले सुख सारा, सोऊं खाख मांही।। ६ ।।

मंत्रो की बहुत साधना करने से देवता आकर मिलते है, योग की साधना करके जगत में अमर हो जाते है। शिष्यो को ऐसा ज्ञान सीखा देते है जो स्वांसा को ऊंचा उठा लेते है। रामजी का भजन किये बिना मोक्ष कभी नहीं होती है। जो सुख मिल रहा है वो सब नाश होने वाला है।

जबे काल आवे, चढ गिगन जावे। ऐसी विध पाई, सब सिद्ध आई।।
सुणो सब कोई, नवो निध होई। कह सुखरामा, बिन सुण श्यामा।।
वृथा बिन भक्ति, भेष गृह धामा।। ७।।

जब काल आता है तो स्वांसा को ब्रह्मण्ड में चढा लेते है। ऐसी विधि प्राप्त कर ली है। सब सिद्धिया मिल गई। सब ही सुनो, नव निद्धियो की प्राप्ति हो गई है। म:फ: है कि बिना रामजी की प्राप्ति के व बिना भक्ति के चाहे गृहस्थ हो या भेषधारी हो सब वृथा है।

<u>कवित</u> :- हीण पुरूष जती जोर, काछ सपने नहीं खोले। तपसी या सम नांय,
रूंख बागल नित झूले।। त्यागी स्वान समान, जांण जग में नहीं कोई।
भेड सरोवर अंग, फेर गरीबी नहीं होई।। मैना सम बोली नहीं,
गुंगे समान न मून। बिन रटणा सुखराम कह, मोख न पूंतो कोन ।। १ ।।

हींज पुरूष जोरदार जती है। सपने में भी काछ नहीं खोलता। बागल के बराबर कोई तपस्या करने वाला नहीं है। वो हमेशा ऊंधी झूलती है। कुत्ते के बराबर जगत में कोई त्यागी नहीं है। किसी भी चीज का संग्रह नहीं करता। भेड के बराबर कोई गरीब जानवर नहीं है। कुत्तो के फाडने पर भी मुंह से चुंकारा नहीं करती। मैना के बराबर मीठी बोली नहीं। गूंगे के समान मौन नहीं है। म:फ: है कि बिना रामजी का भजन किये मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती।

जरणा जमी समान, रूंख सम सती न कोई। दाता इन्द्र समान,
सिद्ध पारस सम लोई।। पवन अेकूं कार, बुत सम नांय सयाणी।
लाख कोस की बात, बस्त शिकोतर जांणी।। अे अंग मत लछ पहुंतिया,
फिर बोहता में होय। बिन रटणा सुखराम कह, मोख न पहुंथे कोय।। २।।

पृथ्वी के बराबर धैर्य धारण करने वाला कोई नहीं है। वृक्ष के बराबर कोई सती नहीं है। ईन्द्र के समान कोई दाता नहीं है। सब जगह वर्षा करके प्राणी मात्र को पोषता है। पारस के समान सिद्ध नहीं है, हवा सब जगह एक सरीसी चलती है। मूर्ति (बूत) के बराबर कोई सयानी नहीं है। शिकोतरी लाखो कोसों की बात जान जाती है। ऐसे अंग व मती बोहोत सो में होती है और भी अच्छे लक्षण होते है। म:फ: है कि रामजी के भजन किये बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती।

बन में बास नचित, रोज हिरणयां नित होई, मूशो गुफा बणाय।
सिंह संग रहे न कोई।। ओऊं घट घट जांण, भेष टिली बोह किया।
निरमोह नागण होय, भंवर बागा चित दिया।। अलमस्ता ईजगर रह,
अे लछ बोहता होय। बिन रटणा सुखराम कह, मोख न पूंथे कोय ।। ३।।

हरिण वन मे हमेशा निश्चिंत रहते है, चूहा बिल बनाकर रहता है, सिंह के साथ कोई नही

रहता, आत्मा सब घट घट में है, गिरगिट कई तरह के भेष बदलता है, सरपणी निरमोही होती है, भंवर सुगन्ध के लिए बागो में उडता है, अजगर अलमस्त पडा रहता है, ऐसे लक्षण बहुतों में होते है, पर रामजी का भजन किये बिना मोक्ष नही जाते।

तरक फरक गृह त्याग, मद गरीबी बक मौनी। रोही जंगल गांव,
बास कांहि दिस सुनी।। कायर सुरा बैठ, बाद ठंडा बोहो होई ।
दाता मुंजी, ज्ञानी मूढ मूरख नर लोई।। लख चौरासी जूण में,
अे सब लछमत होय। बिन रटणा सुखराम कहे, मोख न पूंथे कोय ।। ४।।

तर्क फरक करते है, घर को छोड देते है। अहंकारी है, कोई नम्रता रखता है, कोई बकवास करता है, कोई मौन रहता है, कोई जंगल में, कोई गांव में रहता है, कोई दिशा सुनी नही है, कोई कायर, कोई शूरवीर है, कोई वाद विवाद करता है, कोई शान्त रहता है, कोई दानी, कोई कंजूस, कोई ज्ञानी है, कोई मनुष्य मूर्ख है। चौरासी लाख योनी में ऐसी मति व बुद्धि होती है, म:फ: है कि रामजी का भजन किये बिना मोक्ष में कोई नही जाता है।

चौपाई : तप कर राज, रूप तीर्थ कर, पर ऊपगार सहाई।
जिग कर धन, बरत सुख सम्पत, देह निरोगी पाई ।। १।।

तपस्या करने से राज, तीर्थ करने से रूप, दूसरो का भला करने से अपना भला होता रहता है। जिग करने से धन प्राप्त हो जाता है। व्रत करने से सुख सम्पति मिलती व शरीर निरोग हो जाता है।

जत कर जुक्त सत कर कोई, देवलोक में जावे।
काशी करव्रत झांप झूरे जुर, अेक मन चित्यो फल पावे ।। २।।

जतिपना धारण करने सत बोलने से स्वर्ग की प्राप्ति हो जाती है। काशी में करोवत झांप लेने से मन वांछित फल प्राप्त होता है।

करणी क्रिया कस्यां बोहो काया, सब फल दायक कीना।
कह सुखराम नाम बिन रटियां, फिर चौरासी दीना ।। ३।।

करणियां करने से, शरीर को कष्ट बहोत देने से सब फल मिलते है। म:फ: है कि बिना रामजी का भजन किये फिर चौरासी में आना जाना पडता है।

।। इति श्री भर्म विधुंस का अंग सम्पूर्ण।।

卐 अगाध बोध ग्रन्थ 卐

श्लोक : सतसरूप निज नाम, केवल पदे। गुरु दयाल सतस्वरूप परम नाम परम गते।।
बैरागम परम् भागम् सन्तोषम् परम् धनम्। कुल ज्ञान निरन्तरम् सो परम जोगी नमस्ते ।।
सतस्वरूप केवल पदे, अखंडे नमस्ते नमस्कार।
चौपाई : ज्ञानी सरब भरम में भूला, सो मुझ नांय पिछाणे।
ऊलटी करे निंदा जुग मांई, निरणो छांण न आंणे ।। १।।

महाराज सतारूप से फ: है कि जो बावन अक्षरो का ज्ञान करते है वो ज्ञानी भरम में भूल रहे है, वो ने:अँच्छर के ज्ञान को नही जानते ऊलटी उसकी निंदा करते है।

वेद भेद लग बुद्ध है सब में, पारब्रह्म लग सोई।

सत स्वरूप को कोई नही जांणे, ज्ञानी ध्यानी लोई ।। २ ।।

सतस्वरूप के ज्ञान को, ज्ञान करने वाले ग्यानी, ध्यान करने वाले ध्यानी व संसारी नही जानते। क्यों कि वेदो के ज्ञान, अष्टांग योग का साधन व पारब्रह्म प्राप्ति का ज्ञान जानते है।

ब्रह्म ब्रह्म लग सब ही ने गायो, साधा सिद्धा से कोई।
सतस्वरूप आनन्द पद कहिये, सो इन आगे होई ।। ३ ।।

यहां तक साधना करने वाले साधक व सिद्धो ने करता पद का बखाण किया है। सतस्वरूप आ:पद का ज्ञान इन सबसे आगे का है।

नही नही दोष ज्ञानी कूं भाई, कुदरत कला न जांणे।
करणी शकल जगत का बंधन, तांकू ताण बखाणे ।। ४ ।।

ज्ञानियो व संसारियो को दोष नही है वो ने:अंच्छर का ज्ञान नही जानते। जप करना, तप करना, मन से ज्ञान करना, विचारो द्वारा विचार करना, ये सब साधन तीन लोको में ही रखने वाले है। उस ज्ञान की जोर देकर महिमा करते है।

ब्रह्मा विष्णु महेशर शक्ति, जिण अे बंधन दिया।
सत बैराग बिना नही टूटे, बोहो बिध गाढा किया ।। ५ ।।

पंच तत्व के शरीर को रखने के लिये त्रिगुणी माया जरूरी है। चारो देवता का यह चकडोल शरीर है जिसे त्रिगुणी माया से बांध रखा है। अब इस जन्म मरण रूपी बंधन से छूटना है तो संतो के ब्रह्म ज्ञान के बिना नही छूटता।

नही नही दोष जहान कूं भाई, अे ज्ञानी सबे विचारा।
तीन ताप में सब ही बंधिया, कोई नहीं छूटण हारा ।। ६ ।।

म:फ: है कि संसारियो व ज्ञानियो को कोई दोष नहीं है। क्योंकि ये तीन ताप आधी व्याधि उपाधि के बंधन में बंधे हुये है। इनसे छुटकारा किसी तरह से नहीं हो सकता।

क्यूं कर लखे अगम गत भाई, कहियां किस विध माने।
काना सुणी न आंख्या देखी, ना सत वेद बखाणे।। ७ ।।

म:फ: है कि अगम गत याने के:पद आ:पद के ज्ञान का कैसे अनुभव कर सकते है व कहने से कैसे मान सकते है। क्योंकि उसे न कानो से सुना है न आंखो से देखा है। न वेद ही उस के:पद आ:पद के ज्ञान का बखाण करते है।

नही नही दोष किसी कूं भाई, ओ अचरज मांडया होई।
सत सरूप आनन्द पद कहिजे, आ गत लखे न कोई ।। ८ ।।

जो सत सतस्वरूप आ:पद कहते है उसका अनुभव कोई नही करता है और सुनने से आश्चर्य होता है इसलिए म:फ: है कि किसी को दोष नहीं है।

केवल बीज सत ओ मारग, सहज सता घट जागे।
उलटर हंस चढे गढ उपर, ध्यान समादी लागे ।। ९ ।।

सहज में ही सतशब्द ने: अंच्छर की घट में जागृति होना यही केवल का बीज है। यही के:पद आ:पद की प्राप्ति का सच्चा रास्ता है। इस साधन से हंस बंकनाल में होकर गढ याने ब्रह्मण्ड से उपर चढ जाता है व ध्यान समादि लग जाती है।

आ गत सुणे न जाणे जोगी, ज्यां गढ पवन चढाया।
सुरगुण निरगुण कहो क्या जाणे, राज जोग की भाया ।। १०।।

सतशब्द के साधन को जो श्वांसा को ब्रह्मण्ड में चढा लेते है वे योगी नही जानते। म:फ: है कि इस सतशब्द की साधना को सुरगुण व निरगुण की भक्ति व उपासना करने वाले नही जानते।

ज्ञानी अरथ मांय सो जोवे, ओ अरथा सूं न्यारा।
क्यूं कर मिले पंडित को सायब, सतस्वरूप विचारा ।। ११।।

म:फ: है कि ज्ञानी बावन अक्षरो के ज्ञान में खोजते है, यह सतशब्द का ज्ञान बावन अक्षरो के ज्ञान से परे है। पंडितो को सतस्वरूप का ज्ञान कैसे मिल सकता है।

अे तो शकल भरम कर जाणे, निज रूप के तांई।
मुख सुं कहे परमपद सत है, पण पायां समझे नांही ।। १२।।

आत्मा के निरंजण निराकार सचिदानन्द पद को सच्चा कहते है। परन्तु सत शब्द का ज्ञान इन्हें मिल भी जाय तो भी उसको न समझकर भरम जानते है।

इण की मति भाग ही अैसो, काहा अे करे विचारा।
दरशण भेष मान नही सके, ओ केवल भेद हमारा ।। १३।।

म:फ: है कि इनका भाग्य व बुद्धि ही ऐसी है इसका ये क्या कर सकते है। छ: दरशणी व भेषधारी सतशब्द के ज्ञान को नही मानते।

अे तो शकल फांस में बंधिया, ज्ञानी पिंडत सारा।
एक ब्रह्म जहां तत पिछाणयो, तां कोई वार न पारा ।। १४।।

अे तो ज्ञानी व पिंडत करणियो के ज्ञान में लगे हुये है, जिस ब्रह्म के तत को इन्होने पहचाना है वो ब्रह्म एक में अनेक, अनेक में एक है उसका कोई वार पार नही है।

अे तो शकल शिष्ट का ज्ञानी, होणकाल लग जाणे।
होणी सोई होवसी आगे, ओ ब्रह्म ज्ञान बखाणे ।। १५।।

ये तो संसार के ज्ञानी होणकाल याने करता पद तक जानते है, सृष्टि कर्ता पद से हुई है। आगे भी उसी से होगी, इसे ब्रह्म ज्ञान बखाण करते है।

जैसो सुनो सानिया जुग में, अैसा सब तत ज्ञानी।
करणी करे रात दिन काठी, से करसा सम जानी ।। १६।।

म:फ: है कि सुनो जैसे संसार में बेसमझ लोग है वे माया को ही ब्रह्म बताते है। वैसे ही यह विचारो द्वारा ब्रह्म ज्ञान कराने वाले है। रात दिन करणियां करके फलो की इच्छा करते है वो किसान के समान है।

कथा व्यास ज्ञानी जे जुग में, अे बाणी वेद सुणावे।
अे चारण सब भाट कहिजे, आनन्द पद नही पावे ।। १७।।

पुराणो की कथा करने वाले अवतारो की महिमा करते है। बाणी द्वारा वेदो का ज्ञान करने वाले ज्ञानी ब्रह्म का बखाण करते है। चारण भाट की तरह महिमा करते है। ये के:पद आ:पद को नही पाते।

करसो सुनो सानिया चारण, ऊधम करे सब लोई।

भाग पुरूष इण सबसे न्यारो, राज करे कहूं तोई ।। १८ ।।

करणिया करने वाले अवतारो व ब्रह्म की महिमा कर करणियो द्वारा फलो की प्राप्ति करते है। परन्तु भाग्यशाली पुरूष इन सबसे अलग है। वो राज करते है।

यूं ओ जोग हमारो केवल, सब जोगन को राजा।
करणी शकल खडी ज्यूं बांदी, म्हें सब का सारूं काजा ।। १९ ।।

म:फ: है कि सतशब्द के:पद का ज्ञान सब योगो का राजा है। करणियो द्वारा फलो की प्राप्ति होना व सतशब्द के द्वारा के:पद का प्राप्त होना ही सबका काम सारना है।

सुणज्यो शकल शिष्ट के ज्ञानी, केवल पंथ हमारा।
सुरगुण निरगुण अे दोई भगती, माया ब्रह्म विचारा ।। २० ।।

म:फ: है कि संसार के सभी ज्ञानी सुणो, सतशब्द का ज्ञान के:पद आ:पद की प्राप्ति कराने वाला है। सुरगुण व निरगुण भक्ति माया ब्रह्म की भक्ति है।

मात पिता ज्यूं जग में कहिये, यूं अे भगती जाणो।
सत बैराग आनन्द पद गुरु है, यूं आ सता बखाणो ।। २१ ।।

जिस तरह संसार में मात पिता की सेवा है उसी प्रकार माया ब्रह्म की भक्ति है। सतस्वरूप ने:अंच्छर की भक्ति याने गुरुपद की है। इस प्रकार इस ज्ञान को समझो।

मानो वचन हमारा सतकर, नार पुरूष सब ज्ञानी।
प्रगट कला हंस कूं भ्यासे, नही रह जुग में छानी ।। २२ ।।

म:फ: है कि सभी स्त्री पुरूष व ज्ञानी मेरे वचनो को सत समझो। जो सतशब्द ने:अंच्छर का साधन करते है, उनके सतशब्द की जागृति होती है। वो जगत में छिपी नही रहती है।

पीछे शकल जुरोगे भाई, अणभै सुण सुण सारा।
अैसो संत फेर इण जग में, कोई समयो प्रगटण हारा ।। २३ ।।

म:फ: है कि कलयुग में सतगुरु सुखरामजी महाराज के नाम से भगवत बीसी चल रही है याने केवल की सता जाग्रत हो रही है, उनके अणभै ग्यान को सुन सुन कर हे हंसो भक्ति धारण कर लो, नही तो पीछे पश्चाताप करना पडेगा क्योकि केवली भगवंत तो समय आने पर ही प्रकट होते है।

बार बार या सता न आवे, हंस तारण जुग मांही।
पीछे सकल धरम सोई ढरडा, तामें कारज नांही ।। २४ ।।

म:फ: है कि ऐसे सता की जागृति कराने वाले महापुरूष हंसो का उद्धार करने के लिए संसार में बार बार नही आते है। उनके पीछे सतशब्द की जागृति नही होने से केवल उनके ज्ञान की व उनकी व उनके स्थानो की महिमा करते रहना ही ढरडा है।

वाद विवाद करे सब जग में, सब आपे दिश ताणे।
केवल जोग कहण में नांही, किस विध जगत पीछाणे ।। २५ ।।

संसार में सब वाद विवाद द्वारा अपनी बात सत्य नही होने पर भी उसकी पुष्टि करना चाहते है। यह सतशब्द ने:अंच्छर वाणी पर प्रगट नही होता, लिखने में नही आता, विचारो द्वारा उसका अनुभव नही होता, सिर्फ सूरत याने आत्म चेतन के आधार से ही अनुभव होता है, इसलिए संसार इसको कैसे जान सकता है।

जे कोई अरथ आद सूं लेवे, राज जोग को भाई।
जो जो संत केवली हुवा, वे पंथ सोजो आई ।। २६।।

म:फ: है कि सतशब्द ने:अंच्छर का ज्ञान अनादि से चला आ रहा है। परन्तु जो जो संत केवली याने ने:अंच्छरी हुये है उनका अणभै ग्यान पढो कि राज योग को धारण करने की विधि क्या है।

जे वा सता पंथ में अब ही, तो जाग जाग तो जागे।
तो हरजन को कारण नांही, भरम ज्ञान सुंई भागे ।। २७।।

म:फ: है कि उन महापुरूषो के ज्ञान द्वारा सता जागृति होती है वो सता मौजूद है तो महापुरूषो के रहने का कोई कारण नही है, उनके ज्ञान को धारण करने से ही भरमो का नाश हो जाता है व सता जागृत हो जाती है।

जो हद पडी संत उन ही से, आगे चली न कोई।
तो तारणहार संत ही जुग में, और ऊपायन होई ।। २८।।

म:फ: है कि उन महापुरूषो के ज्ञान द्वारा सतशब्द ने:अंच्छर की जागृति नही होती है तो समझ लो हद पड गई है। उसको ही आगे नही चलना कहा है। हंसो का उद्धार करने वाले महापुरूषो के प्रगट होने पर ही सतशब्द की जागृति होती है। दूसरा कोई उपाय नही है।

समझो सकल नार नर आंणी, पंथ आगला त्यागो।
वैसो ही संत प्रगटे जुग में, तांके चरणा लागो ।। २९।।

म:फ: है कि सब स्त्री पुरूष मेरे ज्ञान को समझो तथा जो साधन कर रहे हो उसको छोड सतशब्द की जागृति होती है वो विधि ग्यान धारण करो।

आपो खोज समझ सो कीजे, मैं उन में हूं भाया।
आगे हंस तार जन ले गया, अब मैं तारण आया ।। ३०।।

म:फ: है कि हृदय में समझो कि आगे भी हंसो का उद्धार करने संत आये है। मैं भी उन्ही में से हूं, जिस तरह आगे भी महापुरूषो ने हंसो का उद्धार किया वैसे मैं भी करूंगा याने करने आया हूं।

दरशण भेख जगत नर नारी, सब मुझ पासे आवो।
राव रंक सकल कूं तारूं, आ सत शरण संभावो ।। ३१।।

म:फ: है कि छ: दरशणी भेखधारी व संसार के स्त्री पुरूष सब सतशब्द ने:अंच्छर का ज्ञान धारण करो यही पास आना है। राजा हो या रंक हो सबको इस सत ज्ञान को धारण करने से के:पद आ:पद की प्राप्ति होती है। यही सबको तारना है।

चूको मती सत कर मानो, जे आणंद पद चावो।
डाकर पडो जगत कूं छाडर, तो घट परचो पावो ।। ३२।।

म:फ: है कि यदि मोक्ष चाहते हो तो इस अवसर को मत चूको, मेरी बात सत समझो, दूसरे ज्ञानो को छोड यह ज्ञान धारण करो तो तुम्हारे घट में भी सतशब्द ने:अंच्छर की जागृति हो जायेगी, यही घट परचा पाना है।

जोजो सन्त मांड में आया, हंस तारण कूं सोई।
से देह थकां निन्दा जुग किवी, चरणां पड्या न कोई ।। ३३।।

विश्व में जो जो सन्त हंसो का उद्धार करने के लिये आये उन महापुरूषो का शरीर संसार में

रहा तब तक संसारियो ने उनकी व उनके ज्ञान की निन्दा की। कारण वे मोक्ष की प्राप्ति का ज्ञान देते थे। संसार सांसारिक सुख चाहता है यही निन्दा करना व चरणो में नही पडना है।

पीछे सकल करे जुग महिमा, ढरडो सकल सरावे।
जामें काज नही कुछ कांही, सो सब के मन भावे ।। ३४।।

ऐसे महापुरूषो के शरीर छूटने के पश्चात संसार उनकी व उनके ज्ञान की महिमा करता है, यही ढरड़ा है। जिससे किसी को कुछ भी प्राप्त नही होता। लेकिन यह बात सबको अच्छी लगती है।

का मैं कहूं जगत की भाई, इनका अेही विचारा।
सांच वचन सांची चल त्यागे, कुडी लगे पियारा ।। ३५।।

म:फ: है कि मैं संसारियो की कहां तक कहूं इनके विचार ही ऐसे है। जो आत्मा अनेक जन्मो से जन्म मरण में आ रही है वो जन्म मरण से रहित होने के सच्चे ज्ञान को छोडकर सांसारिक सुख प्राप्ति के ज्ञान में लगता है।

समज सको तो हंसा समझो, मत जुग संग बह जावो।
सतस्वरूप केवल पद आनन्द, तासुं यो मन लावो ।। ३६।।

सतगुरुजी म: हंस याने जो माया ब्रह्म के ज्ञान को समझते है उनसे फरमा रहे है कि मेरे सत ज्ञान को समझ सकते हो तो समझो। सांसारिक सुखो के ज्ञान के साथ मत लागो। सतस्वरूप आ:पद का ज्ञान धारण करो, सांसारिक सुखो की प्राप्ति करने वाले ज्ञान से जन्म मरण नही मिटता।

कहे सुखराम मोख जब पहुंचे, जुग मांसु हंस कोई।
अेसो संत आंण यहां प्रगटे, कला सरूपी जोई ।। ३७।।

जब संसार में अणभै ग्यान के ओधाधारी संत प्रगट होते है तब ही ने:अंच्छर जाग्रत होकर हंस मोक्ष में पहुंचते है।

कला कला मे फेर कहावे, जे समझे नर नारी।
होणकाल की कला बोहोत है, सो सब तजो विचारी ।। ३८।।

म:फ: है कि सब ही स्त्री पुरूष समझो, सतस्वरूप व होणकाल की कला में अन्तर है। होणकाल की कलाये बहुत है। उनको समझ कर सब कलाओं को छोडो।

रिद्ध सिद्ध परचा सो बारे, होणकाल सुं ही होई।
ज्ञान ध्यान करणी सब सारी, के मुख सुं सो होई ।। ३९।।

म:फ: है कि होणकाल याने करता पद में रिद्ध सिद्ध परचा ज्ञान ध्यान सब करणिये जो मुख से कहने में आती है। सतस्वरूप का ज्ञान इन सबसे अलग है।

तत्त चिन्यां निरभे थिर होई, ब्रह्म कला सोई जाणो।
सतसरूप की कला नियारी, वा जन सोज पिछाणो ।। ४०।।

पारब्रह्म की प्राप्ति करने वाले भी ब्रह्म पद का अनुभव करते हुये करणियो से रहित होकर उस पद में निरभय व स्थिर हो गये, इस पद को ब्रह्म कला समझो। म:फ: है कि सतस्वरूप आ:पद की कला अलग है। उसकी साधना कर उस कला को प्राप्त करो।

वा विद बिना कोई नही पावे, आनन्द पद कूं भाई।
पारब्रह्म सूं सब ही ऊपज्या, उलट मिल्या तां मांही ।। ४१।।

म:फ: है कि केवल पद की प्राप्ति के बिना आ:पद की प्राप्ति नही होती। पारब्रह्म के पद में आदि से ही उत्पति होती है। ऊलट कर जाकर भी उस पद में ही मिलते है।

आगे कदे न पुथे हंसो, कोट कला अे पावे।
पूरण ब्रह्म तक हंसा पुंथा, फिर फिर पाछा आवे ।। ४२।।

म:फ: है कि करता पद की करोडो कला प्राप्ति होने पर भी पारब्रह्म पद तक की प्राप्ति होती है, वहां से फिर कर वापिस आ जाते है। के:पद आ:पद की प्राप्ति नही होती।

ताते कला शकल ये झूंठी, मोख न पूंथे कोई।
आवागवण मिटे नही जन की, जो ब्रह्म जैसा होई ।। ४३।।

करता पद की कला से के:पद आ:पद की प्राप्ति नही होती। होणकाल से ही सृष्टि की उत्पति होती है। इसलिए उस पद की प्राप्ति होने पर भी जन्म मरण से रहित नही होता।

कह सुखराम समझ रे प्राणी, सत कला जहां जागे।
अखण्ड घट में हुवे ऊजियालो, नख चख में धुन गाजे ।। ४४।।

म:फ: है कि हे प्राणियो मेरे ज्ञान को समझो, सतशब्द ने:अंच्छर की जागृति होने पर अखण्ड सतशब्द का ध्यान होता है। व सारे शरीर में नख चख में उसका अनुभव होता रहता है।

कुदरत कला नाम इस ही को, कोई जन जांणे नांही।
करणी बिना, किया बिन साजन, ऊलट आद घर जांही ।। ४५।।

इस सतशब्द ने:अंच्छर की जागृति को ही कुदरत कला कहते है। इसको हर एक जन नही जानते बिना करणी साधन के श्वांस उश्वांस में भजन कर बंकनाल में ऊलट कर के:पद आ:पद की प्राप्ति करना ही आद घर में जाना है।

नख चख मांय अखण्ड धुन लागे, निमख न खंडे न कोई।
मुख सुं कहियां रीत नही आवे, वा कुदरत सुण होई ।। ४६।।

इस साधन से नख से चख तक सारे शरीर में शब्द की ध्वनि का अनुभव होना ही नख चख में धुन लगना है। वो ध्वनि क्षण भर भी खंडित नही होती, कुदरत की जागृति मुंह से कहने से नही होती है, ऐसी कुदरत कला है।

पांच रंग को ना रंग वामे, ना पांचु रस भाई।
पांच प्रेम सुं ही प्रेम नियारो, मैं कहुं कौण विध लाई ।। ४७।।

पांच तत्वो के पांच रंगो से पांच रस याने शब्द स्पर्श रूप रस गंध से व पांच प्रेमो से ही वो रंग रस व प्रेम अलग है। इसका मैं किस प्रकार वर्णन करूं।

अैसी बस्त नहीं जुग मांही, मैं नकला मांड बतावुं।
सब नासत, आ सत नहीं या बिन, किस विध जोडे लावुं ।। ४८।।

ऐसी चीज संसार में कोई नहीं है जिसकी बराबरी में उसको बतावुं। यहां सब नासत याने नाश होने वाली है, और यह सत है उसका कभी नाश नहीं होता।

भगत जोग साजन सब तपस्या, सुरगुण निरगुण दोई।
सब ही असत सत है नांही, कहां लग किण कहूं तोई ।। ४९।।

अष्टांग योग के साधन से, सब प्रकार की तपस्या से, सुरगुण व निरगुण की भगती से, के:पद

आ:पद की प्राप्ति नहीं होती। इसलिए इन्हें असत बताया है और कहां तक कहूं।

समझ समझ सतगुरु संग कीजे, जहां संग कुदरत जागे।
और गुरु तज ज्ञान ऊपायां, जहां संग धुन नहीं लागे।।५०।।

म:फ: है कि समझ समझ कर सतगुरु की शरण लो जिनके द्वारा सतशब्द कुदरत कला की जागृति हो जावे और दूसरे गुरु जो ज्ञान व साधन बतलाते है उनका संग मत करो। उनसे ने: अंच्छर की जागृति नहीं होती है।

कह सुखराम हंस करणी कर, आनन्द पद नहीं पावे।
ज्यूं संसार राज कर उधम, कंठ वेद किम गावे ।।५१।।

हंस करणी व करम के द्वारा आ:पद की प्राप्ति नहीं कर पाते, जैसे ऊधम करने से राज हो सकता है, राजा को वेद कंठस्थ याद नहीं हो सकते। ऐसे ही करणिये करने से आ:पद की प्राप्ति नहीं होती।

हिरदे ज्ञान कौन विध बेसे, दया करे किम कोई।
ज्यूं उधम यूं सब ही ये करणी, या वा सत न होई ।।५२।।

म:फ: है कि हृदय में ज्ञान करने से सतस्वरूप की प्राप्ति कैसे होती है। कोई भी इसके लिये दया कैसे कर सकता है। जैसे दूसरे साधन से आ:पद की प्राप्ति नही होती यानि उन साधनों से सतशब्द नही आता।

उधम मांय पांचू सुख सारा, नाना विध का पावे।
करामात यूं करणी में, रिद्ध सिद्ध दौडी आवे ।।५३।।

म:फ: है कि मेहनत करने से पांचू विषयो के सुखो की प्राप्ति हो सकती है। अनेक तरह के सुख मिल सकते है। करणियां करने से करामात व रिद्धि सिद्धियो की प्राप्ति होती है।

समझवान बिन कोय न समझे, मैं कहां लग कहूं विचारी।
परचा शकल राज ज्यूं सारो, आ ज्ञान दिष्ट से न्यारी ।।५४।।

म:फ: है कि इस ज्ञान को समझने वाले ही समझ सकते है। विचार करके समझो कि मैं इसके लिए कहां तक कहूं। परचा व करामात सब राज की तरह है ये ज्ञान की दृष्टि से अलग है, यह विज्ञान है।

यो सत भेद हमारो सुणज्यो, आनन्द लोक कूं जावे।
सतस्वरूप की कला प्रगटे, सो सतशब्द कहावे ।।५५।।

म:फ: है कि सब ही सुणो सतशब्द ने: अंच्छर के ज्ञान से आ: लोक की प्राप्ति होती है। सतस्वरूप ने: अंच्छर की कला प्रगट होती है उसको ही सतशब्द कहते है।

फाडर पीठ चढे नित ऊंचो, पाछो कबुं न आवे।
नख चख सोज अगम कूं ऊडे, इण हंसा कूं ले जावे ।।५६।।

सतगुरु की शरण लेने पर सतगुरु विधि से भजन करने से जो सतशब्द की जागृति होती है वो बंकनाल रास्ते पीठ में हमेशा ऊंचा चढता है। पीछा कभी नहीं आता। सारे शरीर याने नख चख को सोजकर आत्मचेतन को के:पद आ:पद की प्राप्ति होना ही अगम कूं उडना है।

जात जात ऊंचो नित जावे, मिणिया सब ही छेके।
तन बैराट मांय विध सारी, भिन्न भिन्न कर सब देखे ।।५७।।

म:फ: है कि बंकनाल में इक्कीस स्वर्गो को छेदन करता हुवा शरीर बैराट में सब जगह अनुभव

करना ही भिन्न भिन्न कर देखना है।

सब ही ध्यान कूंचिया मुद्रा, सब सेजां सज जावे।
जोग भगत निरगुण सो सुरगुण, सब बिद चैन लखावे ॥५८॥

म:फ: है कि सब तरह के ध्यान कूंचिया मुद्राये इस सतशब्द के साधन को करने से सहज में ही हो जाती है। संखनाल के साधन से जिन स्थानों को पार करते है वे स्थान इस साधन में सहज में ही सध याने अनुभव हो जाते है।

निज नांव जाग्या सब करणी, सहजां सजे सब कोई।
जेता ध्यान संत पच पचकर है, से हाजर यूं सोई।।५९।।

निज नांव याने सतशब्द की जागृति होने पर जप तप शिवरण भजन ध्यान सब सहज में होते रहते है। जितने साधन को संत पच पच कर करते है वो सब सहज में ही अनुभव हो जाते है तथा सतशब्द का अनुभव अलग होता रहता है।

खिडकी सबे शब्द ही खोले, मन साजन कछु नांही।
काहा कहूं ऊद बुध बिध भारी, जो जांणे तां मांही।।६०।।

म:फ: है कि सतशब्द ही सब स्थानो को पार करता है, मन से कोई साधन नहीं करना पडता है। इसके लिये मैं क्या कहूं। जिसने इनका अनुभव किया है वो ही जानता है, यही उदबुध विधि भारी है।

और जोग ऊतर चढ जावे, से जन सारे होई।
राज जोग प्रगटे यो घट में, मन के वश नहीं कोई।।६१।।

अष्टांग योग का साधन करते है तब तक ही साधन का अनुभव होता है, यह साधन करने वाले के आधीन है, परन्तु सतशब्द ने: अंच्छर की जागृति आत्म चेतन के आधार पर होती है। यह साधन मन के द्वारा नहीं है यही मन के वश में नहीं है।

आपे मते चढे तन मांही, करम धरम नहीं माने।
जन का अंग कछु न देखे, नित अगम दिश ताणे।।६२।।

यह सतशब्द पूरे शरीर में सभी कंवलो का छेदन करते हुये अपने आप ऊपर की ओर चढता है और भक्ति करने वाले के भक्ति से पहले के करम व धरम को नहीं मानता और नहीं उसके अंगलक्षण देखता है वो तो प्रतिदिन अगम देश की ओर बढता है।

<u>दोहा</u> :- शुभ कर्म कर सरगा जावे, अशुभ कियां चौरासी।
कह सुखराम भक्ति कर केवल, परम धाम जन जासी।।
<u>चौपाई</u> :- जोग भोग को कारण नांही, ना रहणी को भाई।
जे जन तज्यो शब्द कूं चावे, तोई पद बिरचे नांही।।६३।।

म:फ: है कि सतशब्द की जागृति होने पर साधन करने वाला शब्द को छोडना चाहे तो भी शब्द उसको नही छोडता, यही पद नही बिरचना है, इसमें जोग भोग याने त्याग व गृहस्थ का कारण नही है चाहे किसी अवस्था में हो।

ज्यूं नर आप हाथ गल फांसी, लेर झूले कूं कोई।
पीछे कछु खोलने लागो, तो वा नरम न होई।।६४।।

मनुष्य अपने हाथ से गले में फांसी का फंदा डालकर लटके फिर उसे खोलना चाहे तो वो नही खुलती।

अैसो सतशब्द ओ कहिये, अंग को कारण नांही।
अे तो हंस लेर वहां जासी, पूरण पद के मांही।। ६५ ।।

सतशब्द का ऐसा पराक्रम है यह आत्मचेतन को पूरण पद में लेकर जावेगा। इसमें कोई संशय नही है। चाहे स्त्री पुरूष या कोई वर्ण आश्रम हो, सबको उस पद की प्राप्ति होती है।

अटके नही बिचे किसी हूं से, ना कोई आडो आवे।
माया ब्रह्म शकल ही धूजे, सब कोई दरशण चावे।। ६६ ।।

सतशब्द आने पर यह बीच में किसी से अटकता नहीं है, नांही कोई इसके आडे आता है। ब्रह्म आत्मा जो इस माया के शरीर में बैठी है अब सतशब्द आने से मन, इन्द्रिया, पाप व कर्म सब ही धुजने लग जाते हैं और यह सभी उस सतशब्द के दर्शन करना चाहते है।

मिणियां छेक मेर कूं बिंदे, अला पिंगला जागे।
दोनु दिशा गिगन कूं घेरियो, ध्यान त्रिगुटी लागे।। ६७।।

शब्द बंकनाल में आकर इक्कीस सुरगो को छेककर मेरूडण्ड लांघता है, यहां से इडा पिंगला की जागृति होकर मेरूडण्ड से सिर पर होकर त्रिकुटी में आना ही गिगन को घेरना है। त्रिकुटी में शब्द का अनुभव होना ही ध्यान लगना है।

सुखमण पोल गिगन की खोलर, सिर ऊपर होय आवे।
त्रिगुटी महल खोल धस मांही, नैन उलट पलटावे।। ६८ ।।

सुखमणा मेरूडण्ड से अला पिंगला के बीच में से सिर उपर होकर आती है, यही गिगन की पोल खोलना है। त्रिकुटी में सुरत के आधार से शब्द का अनुभव होना ही नैन उलट पलटाना है।

सुखसो रीत कहण की सरधा, मुख की हाजत नांही।
जो हंस सुणो जाणसी आ बिद, उलट आद घर जांही ॥ ६९ ॥

त्रिकुटी में ऐसा सुख अनुभव होता है जिसका वर्णन मुंह से नही हो सकता है। जो साधक उलट कर बंकनाल से त्रिकुटी में पहुचेंगे वे ही आद घर के:पद आ:पद की प्राप्ति करेंगे।

कहां लग कहुं जगत यूं दिशे, ज्यूं बालक जुग होई।
मैं जो चढया शिखर पर ऊंचा, ज्युं जुग बास न कोई ॥ ७० ॥

म:फ: है कि संसार में करणियो के साधन है उनसे फलो की प्राप्ति होती है। परमपद की प्राप्ति नही होती, ये सब साधन बच्चो के खेल की तरह है। खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड को पारकर के:पद आ:पद की प्राप्ति होना ही जगत में बास नही व शिखर पर चढना है।

नैण मांय नीर बह चाल्यो, तरगड मारिया फाटे।
डरपयो मन चख नही बंछे, सुख अनन्त इण घाटे ॥ ७१ ॥

त्रगुटी में शब्द आने पर आंखो से पानी बह चलता है, कनफटियां व सिर फटने लगता है, इस तरह अनेक सुख का अनुभव होता है मन भी उसमें लग जाता है नेत्र भी नही खुलते।

और तमाशा माया रूपी, जोत उजाला होई।
जिण कुं करे कहो कुण आरे, नाना विध का सोई ॥ ७२ ॥

म:फ: है कि माया के कई प्रकार के चेन ज्योति व उजाला नजर आते है। किन्तु साधक उस तरफ ध्यान नही देते। सिर्फ शब्द में सुरता रखकर भजन करते है।

शब्द सुख भारी गढ ऊपर, अेक नकल कहूं तोही।
इन्द्री तेज भग संग किया, ओ सुख निश दिन होई ॥ ७३॥

शब्द का पारब्रह्म के उपर के:पद में अखण्ड सुख अनुभव होता है। यह सुख रात दिन बराबर रहता है। म:फ: है कि स्पर्श ईन्द्री को भग का साथ होता है। जब तक ही सुख का अनुभव करता है, परन्तु यह सुख अखण्ड रहता है।

रात दिन सूता चल बैठा, नेक जोल नही खावे।
इकरस तेज सदा सुख भारी, मेहमा कहत न आवे ॥ ७४॥

रात दिन सोते बैठते चलते बराबर अखण्ड सुख का अनुभव होता है यही नेक जोल नही खाना है। अेक सरीसा तेज सदा भारी सुख आता रहता है, जिसकी महिमा कहने में नही आती है।

त्रृगुटी छाड चले जब आगो, सोई जन के वश नांही।
आपी मते उडे हंस निश दिन, परवश बंधियो जावे ॥ ७५॥

त्रृगुटी से आगे जब शब्द चलता है तो साध के वश में नही रहता। कारण त्रृगुटी के नीचे मेरूडण्ड से सुरत लगाकर भजन करना पडता है। जहां तक पिण्ड में स्वांसा चलती है आगे सुरत याने आत्मचेतन शब्द के साथ हो जाती है, यही पराये वश होकर बंधना है, याने रात दिन हंस का आपे मते उडना है।

महामाया और जोत प्रगती, तहां लग चेन अपारा।
कहां लग कहूं गिणत नही आवे, यां सुं शब्द नियारा ॥ ७६॥

महामाया जोती व प्रगति के लोक तक कई तरह के चेन मालुम पडते है। उसके लिये कहां तक कहूं। उन चेनो की गिनती नही है। परन्तु शब्द का अनुभव अलग होता रहता है। साधक को उन होने वाले चेनों में ध्यान न देकर निरन्तर भजन करने में ध्यान लगाना चाहिये।

दिन दिन चढे अगम दिश जावे, पाछो नेक न जोवे।
हंस कूं पकड कियो मुख आगे, आत्म पांचु रोवे ॥ ७७॥

शब्द निरन्तर आगे से आगे अगम में जाने को बढता रहता है, पीछे जरा सा भी नही देखता। हंस कूं याने आत्मचेतन का शब्द के साथ जाना ही मुख के आगे करना है। आत्मा पांच प्राणो को छोडकर आगे शब्द के साथ जा रही है यही पांच प्राणो का रोना है।

सतशब्द की कथा सुणो या, सुणज्यो ज्ञानी ध्यानी सारा।
दशवो द्वार फोडकर निकसे, नही कोई अटकण हारा ॥ ७८॥

म:फ: है कि सब ज्ञानी ध्यानी सतशब्द का प्राक्रम सुणो। शब्द दशवे द्वार को फोडकर बाहर हो जाता है। तो उसे कोई रोकने वाला नही है।

और जोग सब फिर फिर आवे, दशवे द्वार लग जाई।
से हंस शकल आप बल चढ है, ताते अटके भाई ॥ ७९॥

म:फ: है कि दूसरे योगो की साधना करने वाले दशवे द्वार तक जाकर फिर फिर कर वापिस आ जाते है। वे साधना करने वाले हंस अपने बल याने स्वांसा को खेच कर ऊपर चढते है इसलिए दशवे द्वार पर जाकर अटक जाते है।

आगे कहो कोण बल जावे, वो तो देश नियारो।

माया ब्रह्म अेक नही जाणो, ज्युं जुग ज्ञान पियारो ॥ ८० ॥

म:फ: है कि आत्मा जो कि ब्रह्म ही है। पांच तत्वो के माया के पद के साथ रहती है। जब तक इसको के:पद आ:पद की प्राप्ति नही होती, यह नही जानना है। आगे किसके बल से जा सकते है। वह देश अलग है जगत में करणियां का ज्ञान जप तप ही अच्छा लगता है।

दे उपदेश संत जुग आंणी, जुग कुल सुं जीव काढे।
युं निज नाम हंस कूं ले गयो, सो हद बेहद छाडे ॥ ८१ ॥

सताधारी महापुरूष द्वारा जीवों को उपदेश देकर माया ब्रह्म के पद से अलग कर देते है। यही जीव को कुल से निकालना है। जैसे निज नाम याने सतशब्द ने:अंच्छर हंस याने आत्मचेतन को साथ ले जाकर के:पद आ:पद की प्राप्ति करना ही हद बेहद को छोडना है।

नही नही बस हंस को तामे, परवश पडियो भाई।
सतगुरु मेहर सता घट जागी, जिण बस कियो मांई ॥ ८२ ॥

म:फ: है कि सतगुरु मेहर से घट में सता की जागृति होना ही हंस का साथ जाना व बस में होना है। क्योंकि हंस का बस नही चलता, वह परवश हो गया है।

पत्थर बांध कूप में पड ही, भोलप में विष खावे।
फांसी लेर रूंख सो जुरयो, ज्युं ओ जोग कहावे ॥ ८३ ॥

जैसे कोई शरीर के पत्थर बांध कर कुवे में पडेगा तो निश्चय डूबेगा। भोलप में कोई जहर खावेगा तो भी मरेगा। फांसी का फन्दा गले में डाल वृक्ष के झूलेगा तो मरेगा ही। इसी तरह जिनके सतशब्द की जागृति हो गई उन्हें मोक्ष की अवश्य ही प्राप्ति होगी।

मेहर भई सतगुरु की तां दिन, सता उदे घट होई।
ज्यां दिन तिथ लिखी केवल की, तामें कसर न कोई ॥ ८४ ॥

सतशब्द ने:अंच्छर की जागृति जिस दिन हुई वो ही सतगुरु की मेहर हुई है तथा के:पद आ:पद की प्राप्ति की तिथि लिखी गई है। उसमें किसी तरह की कसर नही है।

जात जात आनन्द घर जासी, आगे पीछे सोई।
मिनखा देह बिना और देही रे, ओ हंस धरे न कोई ॥ ८५ ॥

निश्चित ही जल्दी या धीरे साधन करते करते अवश्य ही आ:पद की प्राप्ति करेगा। सतशब्द की जागृति के बाद हंस मनुष्य शरीर के सिवाय दूसरा शरीर धारण नही करेगा।

ना धणियाप करे नही पाले, तीन लोक में कोई।
पारब्रह्म लग पुच्यो चावे, ओ अेसो पद होई ॥ ८६ ॥

तीन लोको में कोई सतशब्द की साधना करने वालो पर अपना प्रभुत्व नही करते। यह पद ऐसा है कि पारब्रह्म के पद याने के:पद आ:पद की प्राप्ति करा देता है।

केवल बीज शब्द यो कहिये, सता जन घट जागे।
और शब्द सब माया रूपी, ध्यान समादि लागे ॥ ८७ ॥

जिस जन के सता की जागृति होती है उसे यह सतशब्द ही के:पद की प्राप्ति कराता है। यह केवल का बीज है। दूसरे सब साधन व शब्द माया के पद में खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड में जो ध्यान समाधि लगती है, वो सब माया के पदो में है।

ब्रह्म रूप सो शब्द कहावे, सो सोहंग घट मांही।
होणकाल से उतपत यांकी, सतशब्द यो नांही ॥ ८८ ॥

पूरब की साधना करने वाले सोहं शब्द से जपा अजपा करके ब्रह्म की प्राप्ति करते है। वो ही ब्रह्म का रूप है। इसकी उत्पति होणकाल ब्रह्म से है। सतशब्द नही है। यह सोहंग शब्द घट में ही है।

पारब्रह्म केवल कह कोई, होणकाल के तांई।
तांसु शब्द आद यो उपज्यो, जिंग शब्द घर मांही ॥ ८९ ॥

होणकाल के पद को पूरब की उपासना वाले पारब्रह्म को ही केवल कहते है। उस शब्द से जिंग शब्द की उत्पति है।

तांकी सता देह या कहिये, सो बैराट कहावे।
जामे शब्द अनाहद उपज्यो, सो ब्रह्मा मन भावे॥ ९० ॥

होणकाल के पद में सारी सृष्टि की उत्पति है उसकी सता से यह शरीर बना है। शरीर में ही अनाहद होता है। जिसके अनाहद होता है वो जन ब्रह्माजी को प्रिय है।

तामें नाद उपनो आई, सोऊं नाभ कमल में आयो।
रग रग रोम आत्मा पांचु, चेतन होय सुख पायो ॥ ९१ ।।

म:फ: है कि इस शरीर मे ही नाद याने स्वांस की उत्पति हुई है वो सोऊं नाभी कमल में आने से शरीर में चेतनता होने से पांच तत्वो के साथ आत्मा को सुख का अनुभव हुवा।

सोऊं शब्द सुं उत्पत सारी, जो मुख बोल सुणाया।
सतसरूप की सता नियारी, कहो किणीहन पाया ॥ ९२ ॥

मुंह याने बाणी द्वारा जितने भी शब्द उच्चारित होते है उन सबकी उत्पति स्वांसा से है। सतसरूप की सता शब्द अलग है सो संखनाल से साधन करने वालो को प्राप्त नही होती।

नाद अनाद जिंग सो सोहं, सब ब्रह्म माया होई।
जहां लग कथे बके सो ज्ञानी, जां पद लख्यो न कोई ॥ ९३ ॥

नाद अनाद याने शब्द त्रिकुटी में जिंग ब्रह्मण्ड में सोहं याने स्वांसा त्रिकुटी से नीचे ये सब ब्रह्म व माया के है। वाणी के आधार से बोलने वाले मन व विचारो से ज्ञान करने वाले उस के:पद आ:पद का अनुभव नही करते ।

क्या अवतार पीर ऋषि साधु, सबने ब्रह्म बतायो।
पारब्रह्म निरगुण लग पुतां, सत को भेद न आयो ॥ ९४ ॥

अवतार पीर ऋषि व साधना करने वालो ने सबने ही ब्रह्म पद तक का ज्ञान बताया है। निरगुण उपासना पारब्रह्म तक पहुंचाती है। इन सबको सतशब्द का भेद नही मिला।

कह सुखराम दोष नही यांमे, ना वांमे सुण भाई।
आ तो विधि मिल्या है कारज, ऊंच नीच के मांही ॥ ९५ ॥

म:फ: है कि इसमें किसी का दोष नही है। सतशब्द ने: अंच्छर की प्राप्ति की विधि मिलने से ही कारज होता है, चाहे ऊंचा हो या नीची जाति का। सतगुरु विधि से भजन करने पर सबको प्राप्त होता है।

अेक बात कहूं सब मानिजे, जे कोई समझे भाई।
इण नाका सुं चुक गया बुद्धि, आ फिर मिले न कांई ॥ ९६ ॥

जो कोई समझते हो तो मेरी बात मानो मैं सबको एक बात कहता हूं, सांस सांस में भजन करने से उस पद की प्राप्ति नही होती। सांस उसांस में भजन करने से ही होती है, यदि मनुष्य शरीर से परम पद की प्राप्ति नही हुई तो फिर यह नही मिलती।

जांसे हंस ऊपनो आदु, सो तो पिता कहावे।
माया आद हंस की जोरू, मूरख भेद न पावे ॥ ९७॥

जिससे सृष्टि की उत्पति होती है वो पद पिता का अनादि से है। माया आदि से हंस की स्त्री है। मूर्ख मनुष्य इसका भेद नही जानते।

या दोनुं सुं अगम अगोचर, सत सरूप सुण होई।
रिद्ध न सिद्ध न संग नही वांके, ज्ञान रूप वे जोई ॥ ९८॥

दोनु याने माया ब्रह्म के पद से वो पद अगम अगोचर इन्द्रया तीत है। वो पद सतस्वरूप का है उस पद में रिद्धियां व सिद्धियां नही है। उस पद का विज्ञान द्वारा अनुभव होता है।

ज्ञान ही कला, ज्ञान बल वांके, ज्ञान रूप रंग जाणो।
ज्ञान ही खाण पीण सुख सारा, ज्ञान ही देह बखाणो ॥ ९९॥

उस पद के ज्ञान ही कला है, ज्ञान ही बल है, ज्ञान ही रंग रूप है। उस पद में खान पान सुख व शरीर सब ही ज्ञान रूप है।

आनन्द रूप पद वो ऐसो, नकल कही मैं आंणी।
माया ब्रह्म शकल ज्यूं धंधा, ज्यूं जुग च्यारूं खांणी ॥ १००॥

आ:पद ऐसा है ज्ञान का दृष्टान्त देकर समझाया है। माया व ब्रह्म के पद में तो सब करणियां है। उससे करमो का नाश नही होता, इसलिए चारो खानो में आना जाना पडता है।

ऊपजे, खपे, नही थिर कोई, सुख दुख सब ही पावे।
पारब्रह्म लग है दुख लारे, कम जाफा होय आवे ॥ १०१॥

माया ब्रह्म के पद मे जन्मता मरता रहता है, कोई थिर नही रहता है। सब को ही सुख दुख भोगना पडता है। पारब्रह्म के पद से भी वापस आता है यही कम जाफा दुख होना है।

जन सुखराम सांच मुख भाखियो, बाधा रखी न कोई।
केवल मत समझ परे पेली, सो नर समझे आई ॥ १०२॥

म:फ: है कि मैंने जो कहा सत्य है, किसी तरह का छिपाव नही रखा है। पहले हे नर तूं केवल ज्ञान को समझ ले।

और शकल जुग मान न सके, केवल मत बिन कोई।
आगे लारे समझ हुवे केती, नेक न भ्यासे सोई ॥ १०३॥

जिन्हें केवल पद का ज्ञान है वो ही के:पद के ज्ञान को मानते है। आगे याने ब्रह्म और लारे याने माया के पदो का जिनको ज्ञान है वो के:पद के ज्ञान को नेक याने जरा सा भी नही जानते।

अेक अरथ मैं खोल बतावूं, परगट सुण्ज्यो सारा।
पारब्रह्म आनन्द पद तांको, केहू विध भेद विचारा ॥ १०४॥

म:फ: है कि पारब्रह्म पद का व आ: ब्रह्म पद के ज्ञान का अरथ खोलकर याने विस्तार से मैं बताता हूं। सब ही सुणो, उसको प्राप्त करने की विधि भेद व विचार सबको बताता हूं।

ज्यूं जुग की कला विध सारी, यूं रिद्ध सिद्ध सब होई।
सब बैराग विज्ञान कहावे, ज्यूं आनन्द पद जोई ॥ १०५ ॥

जगत में उधम करने से सुखो की प्राप्ति होती है। ऐसे ही माया के पद में करणियां करने से रिद्धियां सिद्धियां प्राप्त होती है जैसे जगत में बैराग होने से परिवार से अलग हो जाता है, ऐसे ही सत बैराग, जिसे ज्ञान बैराग कहते है, उससे माया ब्रह्म के पद से अलग होकर के:पद आ:पद की प्राप्ति होती है।

पूर्ण ब्रह्म कहो तुम केवल, तामे रिद्ध सिद्ध सारी।
ज्यूं कोई शहर मांय सब सस्तर, नाना विध का भारी ॥ १०६ ॥

पारब्रह्म के पद को के:पद बतलाते हो उसमें तो करणियां व रिद्धियां सिद्धियां है। जैसे राजा के यहां शहर में कई प्रकार के सस्तर होते है।

सब ही केह सब जगत में होई, अेक विध या नांही।
ज्यूं विज्ञान केवूं मैं तुमको, तांकी समझ न मांही ॥ १०७ ॥

जगत में सब करणिये व रिद्धि सिद्धि की प्राप्ति होती है। के:पद प्राप्ति की विधि नही होती, मैं तुमको विज्ञान की बात याने सतशब्द ने:अंच्छर के ज्ञान को कहता हूं। जिसकी समझ किसी में नही है।

यूं अवतार ब्रह्म ने ही जाणे, सतसरूप के तांई।
इनके कला रिद्ध सिद्ध होई, ज्यूं लश्कर जुग मांही ॥ १०८ ॥

अवतार भी ब्रह्म के पद को सतस्वरूप का पद मानते है, इनकी कला रिद्धि सिद्धि होती है। जैसे संसार में राजा के लशकर याने फोजे हाथी घोडे आदि रहते है।

ज्यूं विज्ञान रूप जन जुग में, तिनके सता कहावे।
और किसब जुग को कुछ नांही, ना उस पद में मावे ॥ १०९ ॥

विज्ञान याने ज्ञान बैराग संसार में जिस ओधाधारी जन में प्रगट होता है उसे सता कहते है। के:पद में संसार की कोई करणी नही है न उस पद में समाती है।

यूं सुखराम कहे सब सुणज्यो, सत भगत बिद न्यारी।
तामें काल रूप सो करणी, ज्ञान दृष्ट ऊर भारी ॥ ११० ॥

म:फ: है कि सब सुणो सतस्वरूप भगती की विधि सबसे अलग है। सतस्वरूप पद में करणी नही है। करणियो के ज्ञान से जन्म मरण रहित नही होते, उस पद का अन्तर में ज्ञान से ही अनुभव होता है।

कह सुखराम सुणो सब ज्ञानी, समझ भेद यो लिजे।
केवल ब्रह्म परे पद पूरण, तांको सुमरण कीजे ॥ १११ ॥

म:फ: है कि सब ज्ञानी सुणो, समझकर इस भेद को याने ज्ञान को धारण करो। पारब्रह्म के पद से केवल ब्रह्म का पद आगे है। उस पद की प्राप्ति का साधन करो।

पाप न पुन्न माने अेकी, ना किया डंड लागे।
उलटा करम धरम सो चावे, भाग हमारो ही जागे ॥ ११२ ॥

जिस साधक ने केवल भक्ति धारण करली तो इस विधि की करणी में किसी प्रकार का पाप अथवा पुण्य नही बंधता, और जो साधक ने भक्ति धारण करने से पहले कर्म किये हैं, उसका दण्ड नहीं लगेगा। उलटे वो करम व धरम भी चाहते हैं कि आज इस आत्मा ने यह केवल भक्ति धारण कर ली तो हमारे भी भाग्य जग गये।

जो कोई चीज अरथ सो लागे, तो सब ही सुख पावे।
पांचु भोग आत्मा खुश होवे, दावो कोई न चावे ॥ ११३ ॥

भक्ति करने वाले जनों के जिस घर का अन्न जल लग जावे तो खाने वाला तथा खिलाने वाला दोनों की आत्मा खुश होती है तथा खिलाने वाला उनसे वापस कोई प्राप्ति की इच्छा नहीं रखता।

घणी कहां लग कहूं तुम तांई, जो देवल कोई ढावे।
तो पण पाप न लागे जन कूं, वो हंस पदवी पावे ॥ ११४ ॥

मैं ज्यादा कहां तक कहूं जो केवल भक्ति करते हैं उनके द्वारा अज्ञान अवस्था में कोई जीव की हिंसा हो जावे तो भी इसका पाप भक्ति करने वाले जन को नहीं लगता उलटा मरने वाले को मनुष्य जीवन मिल जाता है।

तांको सुणो भेद सब ज्ञानी, जग दृष्टान्त बतावुं।
राज जोग यो राजा जैसो, फिर जन का गुण लावुं ॥ ११५ ॥

सब ज्ञानी इस भेद को सुणो, संसारी दृष्टान्त देकर बताता हूं। केवल की भक्ति राज योग है, जैसे जगत में राजा का पद है। फिर के: भक्ति करने वाले जनो का गुण बतलाता हूं।

या दोनो कूं डण्ड न लागे, किसी रीत को कोई।
सायब सोख भग संग भोगे, बैर न बांधे है लोई ॥ ११६ ॥

जैसे जगत में राजा कोई भी काम करता है तो किसी भी प्रकार का जोर प्रजा का नही चलता है। राजा अपने शौक के माफिक भोग भोगता है तो भी प्रजा उससे नाराज नही होती। ऐसे ही केवल की भक्ति करने वाले जनो का शरीर में दश ईन्द्रिया चित मन बुद्धि अहंकार द्वारा जितनी भी करणियां है वो सब राजयोग की साधना करने वालो के लिये रैयत की तरह है। जैसे राजा पर प्रजा का जोर नही चलता, ऐसे ही साधक पर शरीर द्वारा की गई करणियो का जोर नही लगता। साधक बूरे कर्म व विचार सपने में भी नही करता। उनका ध्यान शब्द में अखण्ड निरन्तर होता रहता है व शरीर की क्रियाये अलग होती रहती है।

जो कोई चीज मंगावे राजा, खुशी हुवे घर सारो।
धिन धिन भाग शकल यूं केह, अब कुछ होणे हारो ॥ ११७ ॥

जिस तरह राजा प्रजा से कोई चीज मंगाता है तो घर के सब प्राणी खुश होते है। सब ही यह कहते है कि हमारा भाग्य धिन है, अब हमारा कार्य अवश्य होने वाला है।

हाथ घाल कर ले कुछ कांही, तो पण बुरो न माने।
बेटी बहन नार लग खेंचे, जब लग रहे सब छाने ॥ ११८ ॥

राजा प्रजा की बिना ईच्छा के कोई भी काम कर लेता है तो भी प्रजा बुरा नही मानती। यहां तक की राजा बहन बेटी व स्त्री तक को बुरी निगाह से भी देख लेता है तब तक भी सब शान्ति रखते है।

ज्यूं बैराग लिया कुल दावा, सब जग का रद्द होई।
उलटा शकल पूजणे लागे, डण्ड न मांगे कोई ॥ ११९ ॥

बैराग ले लेने पर कुटुम्ब व जगत का जोर उस पर नही चलता उलटी सब बैराग लेने वाले की वन्दना करते है, राजा भी डंड नही लेता।

बहो बिद चीज खुवावे लायर, पांच भोग लग भाई।

ना बदले कुछ जिम्यो चावे, जन के घर वे आई ॥ १२० ॥

बैराग लेने वाले को कई तरह की चीजो का प्रसाद कराते है जिसमें पांचो रसो का स्वाद आता है। बदले में बैराग लेने वालो के यहां जीमने की इच्छा नही रखते।

यूं अे पाप पुन्न नही लागे, राज जोग कूं भाई।
ज्यूं बैराग लियां सुण तूटे, दोय डण्ड इण काई ॥ १२१ ॥

ऐसे ही राज योग के साधक को भक्ति करने के पहले के पाप पुण्य नहीं लगते, जैसे जगत में कोई बेराग ले लेता है तो फिर उससे कोईभी राजडण्ड या हासल नहीं लेता।

कुल गिन्यात ऊलट कर पूजे, दावो करे न कोई।
भावे तिकण मते वे चालो, सब जग हाजिर होई ॥ १२२ ॥

जाति व परिवार वाले उलटी उसकी भाव से वन्दना करते है वे अपनी इच्छा माफिक संसार में जीवन व्यतीत करते है। सारा जगत महिमा करता है। यही सब जग हाजिर होना है।

राज डण्ड हासल नही मांगे, वो विध पूजे आई।
बेटी धुराधुर सो देवे, राज जना को भाई ॥ १२३ ॥

राजा उनसे डण्ड व लगान नही लेता। सब तरह से मान प्रतिष्ठा रखते हुवे अपनी लडकी कोभी राजा उन्हें देना चाहता है, याने शादी करना चाहता है।

यूं अे पाप पुन्न हुवे वे हाजर, दावो करे न कोई।
माया ब्रह्म शकल सो बंदे, को डण्ड ले कहूं तोई ॥ १२४ ॥

ऐसे ही राजजोग याने सतशब्द की साधना करने वाले करणियो से अलग रहते हुये अखण्ड ध्यान होता रहता है इसलिए पाप पुण्य से रहित रहते है। उस पद की प्राप्ति करने वालो की माया ब्रह्म भी वन्दना करते है तो फिर डण्ड लेने का सवाल ही नही रहता।

अेतो कहे सदा धिन दोनुं, दरशण जन का चावे।
हाजर लियां खडा नित आगे, जो जन के मन भावे ॥ १२५ ॥

माया ब्रह्म तो हमेशा राज योग की साधना करने वालो को धन्य समझते है। उन जनो के दरशण चाहते है। जो जनो की इच्छा होती है। वो सब हाजिर रखते है।

नित आधीन ब्रह्म सो माया, जन नही चावे कांई।
रिध सिध आंण धरे कहूं चरण, पिण जन माने नांही ॥ १२६ ॥

माया ब्रह्म हमेशा हाजिर रहते है परन्तु जन उनसे कुछ भी नही चाहते। रिद्धि सिद्धि भी जनों की सेवा करना चाहती है। परन्तु जन नही चाहते, यही नही मानना है।

तांको सुणो भेद मैं भांकू, दृष्टांग देर सुणाऊं।
ज्यूं विज्ञान ऊपजे किसकूं, वो परसंग सुण लावूं ॥ १२७ ॥

म:फ: है कि इसका भेद वर्णन करता हूं दृष्टान्त देकर समझाता हूं। जैसे किसी को बैराग संसार में उत्पन्न होता है उनका प्रसंग बतलाता हूं।

मां अर बाप सन्मुख जायर, अरज करे आ जाई।
परणो आप धन बोहो लेवो, तो नही माने कांई ॥ १२८ ॥

संसार में जिनको बैराग उत्पन्न होता है उनको उनके मां बाप जाकर अरज करते है कि शादी

करो बहुत द्रव्य लेवो तो भी वे स्वीकार नही करते।

पुनः प्रसाद सेज में नित प्रति, प्रेम प्रीत सुं ल्यावे।
तांको नही कुछ भर कारण, पांच भोग लग पावे ॥ १२९ ॥

हमेशा प्रसाद प्रेम व प्रीती से करवाते है उसकी कोई बात नही है। प्रेम से जो भी प्रसाद कराते वो पा लेते है।

यूं गत राज जोग की भाई, रिध सिध कला न माने।
हंसा हेत सेज तन मन लग, शिष सेवा सत जाने ॥ १३० ॥

म:फ: है कि यह राज योग की विधि है। राज जोग की साधना करने वाले रिद्धि सिद्धि व कला को नही मानते। हंस वृति आत्मा के हित के लिये ऐसे ओधाधारी संत अपना तन मन लगाते है। और शिष्य की सेवा को ही सत जानते हैं। क्यों कि वो हंसो का उद्धार करने के लिये ही आते हैं।

ज्यूं संसार मांय जन हुवा, दावो मुदो न कोई ।
ना कुछ रीज देण कूं आया, ना कुण की पछ होई ॥ १३१ ॥

ऐसे ही संसार में जिन्हे बैराग होता है वे न किसी पर जोर रखते है, न किसी से कुछ चाहते है, संसार में न किसी से मोह करते है, न किसी का पक्ष करते है।

कुल सुं जोर न जुग सूं दावा, राज धुराधर भाई।
यूं सत सरूप ब्रह्म से ही न्यारा, रिध सिध जोर ना मांई ॥ १३२ ॥

बैराग्यवान पुरूष न कुल, न संसार, न ही राजा से, किसी चीज की इच्छा रखते है। इसी तरह सत स्वरूप का पद ब्रह्म के पद से भी अलग है। उस पद में रिद्धि सिद्धि नही है।

मार कूट और त्रास बतावे, धन पदवी दे माया।
आ तो रीत ब्रह्म के घर में, ज्यूं जग कुल में भाया ॥ १३३ ॥

ब्रह्म के पद में सुख दुख डर बताकर धन पदवी व माया याने रिद्धि सिद्धि ये सब ब्रह्म के पद में है जैसे जगत में कुल में यही बात है।

सत स्वरूप सत ज्यों होई, ज्ञान दृष्ट सुण लीजे।
बिना ज्ञान कोई जोर न जन में, इयां उर निरणो कीजे ॥ १३४ ॥

सतस्वरूप का पद तो सत है। ज्ञान की दृष्टि से ही अनुभव होता है, जैसे संत ज्ञान का उपदेश करते है और कोई जोर नही करते, इस प्रकार अपने हृदय में इसको समझो।

केह सुखराम सुणो सब ज्ञानी, समझ भेद यो लीजे।
केवल ब्रह्म परे पद पूरण, तांको शिवरण कीजे ॥ १३५ ॥

म:फ: है कि सब ही ज्ञानी सुणो, इस भेद को समझो, पारब्रह्म के पद से के:पद आ:पद परे है याने आगे है उसका सिमरण करो।

पारब्रह्म लग है दुख लारे, निरभे मोख न होई।
जे तुम मान सको नही भाई, तो भेद बतावुं तोई ॥ १३६ ॥

पारब्रह्म के पद से सृष्टि की उत्पति होती है व उस पद में आना जाना नही मिटता यही दुख साथ में है। पारब्रह्म के पद में मोक्ष की प्राप्ति नही होती। म:फ: है कि मेरी बात को नही मानते हो तो मैं तुमको इसका भेद बतलाता हूं।

जग को देर दाखलो तोने, सत यो न्याव सुणावुं।
ज्युं नर धंधो करे जग मांही, अेक कहे तज जाऊं ॥ १३७॥

जगत का दृष्टान्त देकर सच्चा न्याव सुणाता हूं। जैसे जगत में एक आदमी तो धन्धा करता है एक धंधा छोडकर अलग हो जाता है।

वो सो जीव ब्रह्म यो कहिये, फंद करे सो भाई।
वो तज काम नचितो हुवो, धोको कुछ न मांही ॥ १३८॥

हे ग्यानी ये तो जीव आद अनादि से ही ब्रह्म था, किन्तु पांच तत्व में आकर फंद में पड गया, जब ने:अंच्छर निज नाम की भक्ति करेगा। तब इच्छा शक्ति कामना से अलग होकर निश्चिंत होगा, फिर पंच तत्व में आने का धोका नही रहेगा।

एक दुख काज फंद त्याग्या, कहे मुझ धन्धो न होई।
केवल ब्रह्म सुणो इन पडचे, नेहचे दुख न कोई ॥ १३९॥

अेक ने दुख समझकर उसको छोडा है कि मुझ से धन्धा नही होता। तब उन्होंने घर छोड दिया। इसी प्रकार हंस वृती आत्मा के:पद आ:पद की भक्ति करके पंच तत रूपी घर को छोड दिया, फिर जन्म मरण के दुख से निश्चिंत हो गयी।

सब फंद काट नचिता हुवा, कसर रही नही कांई।
एक जात कुल छूटे नांही, ज्ञान न ऊगो मांही ॥ १४०॥

एक व्यक्ति ने तीन लोक के सभी साधन को छोडकर केवल पद की प्राप्ति कर ली। तो उसका जन्म मरण मिट गया तथा एक ने परब्रह्म तक का साधन किया तो उसका कुल छूटा नहीं, क्योंकि उसके केवल भक्ति का बीज उदय नहीं हुआ।

जब किणी समय न्यात में चरचा, काम पडियो बिध आंणी।
जब वा घेर धन दियो, बोहो विध आणी ॥ १४१॥

घर व काम को छोडकर अलग हो जाता है बैराग नही लेता है तो वो घर में जाति में काम पडने पर वापिस आ जाता है। जो बैराग ले लेता है वो वापिस नही आता है। जहां से वापिस नही आता है वो के:पद आ:पद है। पारब्रह्म के पद से अनादि से आने की रीति है।

ई यूं ब्रह्म होय जीव होवे भाई, सुण शकल जग ज्ञानी।
जो बैराग ज्ञान पद हो तो, तो नही पडतो आंणी॥ १४२॥

ऐसे जीव पारब्रह्म के पद से भी वापिस आ जाता है, सब जगत के ज्ञानी मेरी बात सुनो, यहां संसार में भी जो ज्ञान से बैराग ले लेता है तो जात व कुल में काम पडता है तो वापिस नही आता। ऐसे ही आत्मचेतन को ज्ञान बैराग प्रकट होने पर के:पद की प्राप्ति हो जाती है। वो वहां से वापिस नही आता है।

त्यागी न्यात लेत सो मांही, जे वाको मन चावे।
ईऊं सतसरूप की कला प्रगटियां, आवागवण न आवे ॥ १४३॥

जिसने जाती त्यागी है यदि उसका मन चाहता है तो जाति वाले उसको ले सकते है। ऐसे ही सतस्वरूप की कला सत शब्द ने:अंच्छर के प्रकट होने पर माया ब्रह्म के पद से अलग होकर के:पद आ: पद की प्राप्ति करने पर आवागवण में नही आता है।

निरभे मोख ज्ञान पद पायां, ब्रह्म हुवा सुण नांही।
ओ तो अंग अेक सुख रूपी, रहे कुल पंगत मांही ॥ १४४॥

म:फ: है कि ज्ञान पद याने सतशब्द ने:अंच्छर से ही के:पद की प्राप्ति होती है। ब्रह्म पद से नही होती। पारब्रह्म का पद माया ब्रह्म का आधार है यह पद सुख रूपी है।

आवागवण मिटे नही यांकी, ओ फिर किसब कमायो।
ऊण तो सतसरूप नही पायो, वो कुल तज नही आयो ॥ १४५॥

ब्रह्म के पद से आवागवण नही मिटता, फिर जन्म लेकर भी ब्रह्म के पद में जाने का ही मार्ग अपनाता है और बैराग की केवल भक्ति नर देही पाकर नही करते है तो कुल में ही है।

ब्रह्म होण को दोय ऊपायां, सुण पंडित कहूं ज्ञानी।
जो दोनू हंस बस भाई, प्रगट नही जग छानी ॥ १४६॥

म: ज्ञानी व पंडितो से फ: है कि जीव के ब्रह्म बनने के दो ऊपाय है, अेक ग्यानी तो कहता है मैं ब्रह्म हूं। याने अहम ब्रह्म हूं जीव नही हूं तो ब्रह्म में समा जायेगा, दूसरा महाप्रलय में वापस ब्रह्म में समाता है। यह दोनों हंस के बस में है। यह जगत में प्रगट है।

ज्यूं धन क्षीण सहज में होय गयो, दमडी एक न होई।
दूजे सरब त्याग धन दियो, कवडी रही न कोई ॥ १४७॥

जैसे किसी का धन धीरे धीरे खत्म हो गया व दूसरे ने एकदम त्याग दिया, दोनो के पास कुछ नही रहा।

दोनुं सुखी धंध फंद छूटा, मन निरमल हुवो भाई।
यूं महाप्रलय लग सर्व शिष्ट आ, मिले ब्रह्म में जाई ॥ १४८॥

म:फ: है कि कोई साधन करके ब्रह्म पद की प्राप्ति करता है, दूसरा करम भोगते भोगते महाप्रलय में ब्रह्म पद की प्राप्ति करता है, जब तक सृष्टि की उत्पति नही होती जब तक उस पद में रहना व जन्म मरण में नही आना ही धंध फंद छूटना व सुख होना है। परन्तु रचना के समय वापिस आ जायेगा।

निर्धन दोय रीत सुं होवे, सो हंसे वश जाणो।
ओ दृष्टान्त ज्ञान किम सीखे, ईऊं आ कला पिछाणो ॥ १४९॥

हे ग्यानी निर्धन होने की दो रीत है अेक तो धन छोड देना दूसरा खुट जाना।

मेरी मेहर बिना कोई हंसो, आनन्द लोक न जावे।
ज्यूं कोई ज्ञान न सीखे गुरु बिन, कोट करम कर आवे ॥ १५०॥

मेरी मेहर याने सतस्वरूप के:पद के ज्ञान के बिना आ:पद की प्राप्ति नहीं होती। जैसे गुरु के बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती। चाहे करोडो ही उपाय करो।

यूं सतलोक पठावु मैं ही, और ऊपाय न कांई।
ज्यूं गुरु वेद नांही, सो कर कीमत जग मांही ॥ १५१॥

सतलोक प्राप्ति कराने का ओधा मेरे को है। इस ज्ञान के बिना दूसरा कोई ऊपाय नहीं है। ऐसे ही गुरु बिना ज्ञान नही मिलता चाहे कितने ही उपाय करो।

ब्रह्मा विष्णु महेशर शक्ति, फिर अवतार कहावे।

इनकी मेहर धन, निर्धन लग, ज्ञान दिष्ट नही पावे ॥ १५२ ॥

ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, शक्ति व अवतारो की मेहर धनवान व निर्धन दोनो पर हो सकती है। सतस्वरूप के ज्ञान की प्राप्ति नही होती।

अे तो सर्व हमेशा भाई, कुल ऊजियागर होई।
हम कुल छाड हुवा सतरूपी, रिध सिध रखुं न कोई ॥ १५३ ॥

ये तो हमेशा माया ब्रह्म की प्राप्ति रिधि सिधी परचा व शुभ अशुभ करणियो का ज्ञान देते है। मैने माया ब्रह्म के पद से रिधि सिधि शुभ अशुभ करणियो से अलग होकर सतसरूप की प्राप्ति कर ली है।

गुरुसो पदवी हमारी कहिये, वे कुल राजा होई।
बिना भेद कोई मोहे न जाणे, ज्ञानी पंडित लोई ॥ १५४ ॥

म:फ: है कि परब्रह्म द्वारा गुरुपद का ओहदा मुझको देकर भेजा है तथा ब्रह्मा विष्णु महादेव तीन लोक में राजा की तरह है। बिना भेद के मेरे इस ओहदे को यह ज्ञानी पंडित व जनता जानती नहीं है।

मैं गुरुदेव शिष्ट सब ही का, जांण मां जाणो कोई।
मोसुं मिल्यां अगम घर मेलूं, आनन्द पद में सोई ॥ १५५ ॥

इसलिये मैं सारी सृष्टि का गुरुदेव हूं, चाहे कोई जाणो या नहीं जाणो। अब कोई भी मेरे इस ज्ञान को धारण करेगा उसको मैं आनन्द पद में भेज दूंगा।

मेरो अंग आद से यो ही, ज्यूं जग ज्ञान कहावे।
सतलोक कूं हंस पठावूं, ज्यूं दुख, ज्ञान ना भावे ॥ १५६ ॥

मै आदि अनादि से यही सता लेकर आता हूं। जैसे जगत में कई तरह के ज्ञान है। मैं सतलोक में हंसो को भेजता हूं। जगत में जैसे दुख किसी को अच्छा नहीं लगता ठीक इसी प्रकार मेरा ज्ञान अच्छा नहीं लगता।

मेरो किसब कला सोई आई, रीज मोज धन माया।
सतलोक में हंस पठावूं, ओ बिडद ले मैं आया ॥ १५७ ॥

सतसरूप के ज्ञान का प्राक्रम कला व रीज मोज धन माया यही है कि हंसो को सतशब्द के द्वारा के:पद आ:पद में भेजता हूं। सतगुरु सता का यही बिडद अब मैं लेकर आया हूं।

ब्रह्म ब्रह्म तुम सब ही गावो, ब्रह्म हुवा क्या होई।
किस दिन ना ब्रह्म तुम सारा, सो दिन कहिये मोही ॥ १५८ ॥

म:फ: है कि तुम सब ब्रह्म ब्रह्म का गान करते हो तो ब्रह्म होने से क्या होता है ? ब्रह्म पद से के:पद आ:पद की प्राप्ति नही होती। जब तुम पांच तत्वो व तीन गुणो से इस शरीर के साथ नही थे। तब तो ब्रह्म ही थे फिर परम पद की प्राप्ति क्यों नही हुई ?

ओ तो आद अनाद अगम लग, ब्रह्म रूप सुण होई।
ना कुछ घटे बदे कुछ नांही, काम रूप फल दोई ॥ १५९ ॥

म:फ: है कि यह आदि अनादि अगम से ही ब्रह्म रूप ही है। यह आत्मचेतन न तो घटता है न बढता है, एक तो शुभ अशुभ करणियो में लगने से जीव भाव से सुखो की प्राप्ति होती है व सतसरूप की सता से के:पद आ:पद की प्राप्ति होती है। यही काम रूप फल दोई है।

ज्यूं नर किसब छाड कर देवे, तो ही नर को नर होई।

यूं ब्रह्म, माया त्याग दूर होय, तोई कम बधो न कोई ॥ १६० ॥

म:फ: है कि जैसे मनुष्य धंधा ऊधम छोड दे तो भी मनुष्य ही रहता है ऐसे ही ब्रह्म भी माया से अलग हो जाय तो भी वो ब्रह्म ही है।

यूं ओ सदा ब्रह्म ही जाणो, तामें कसर न कांई।
ज्यूं ओ करे सोई बिद होवे, हद बेहद के मांही ॥ १६१ ॥

म:फ: है कि आत्मा तो ब्रह्म ही है जिसमें किसी तरह की कसर नही है। जैसी यहां पर हंस करणी करता है वैसी उसकी हद बेहद तक पहुंच हो जाती है।

करणी सकल छाड कर देवे, तोई कुछ दुजो नांही।
ज्यूं नर ज्ञानी, कला नार में प्रगटे, सत बिन जले न आई ॥ १६२ ॥

आत्मा करणियो से अलग हो जाती है तो भी ब्रह्म ही है। दूसरा नही है। जैसे ज्ञानी पुरूष में सतसरूप का ज्ञान सतशब्द ने:अंच्छर प्रकट होने पर ही के:पद आ:पद की प्राप्ति होती है। ऐसे ही सत प्रकट हुये बिना सती पति के साथ नही जल सकती है।

ज्ञानवंत कुल सुध असल हुवे, फिर परणी जग मांही।
बिना सत सुण जल्यो न जावे, यूं ब्रह्म को बल नांही ॥ १६३ ॥

स्त्री ज्ञानवंती हो। सुध कुल की हो, फिर जगत में परणी हुई हो तो भी सत प्रगट हुये बिना जल नहीं सकती। ऐसे ही आत्मा को ब्रह्म के पद से के:पद आ:पद की प्राप्ति नही होती।

सत की मेहर भई तिण ऊपर, सोई सुण जलणे जावे।
राणी खाश छोकरी बिचे, कारण कोई न कहावे ॥ १६४ ॥

जिस स्त्री में सत प्रकट होता है वो ही पति के साथ जलने के लिये जाती है इसमें राणी का या दासी का कोई कारण नही है। जिसमें सत प्रगट हुवा है वो ही जलती है।

वो सतसरूप मेहर ज्यां कर है, से हंसा वां जावे।
आनन्द लोक में जाय पहुंचे, पाछो कोइयन आवे ॥ १६५ ॥

जिसके ऊपर सतसरूप की मेहर याने कृपा होती है उसके ही सतशब्द ने:अंच्छर की जागृति होती है। वो हंस याने साधना करने वाले ही आ:लोक में पहुंचते है फिर वहां से वापिस कोई नही आते याने आवागवण से रहित हो जाते है।

कहे सुखराम सुणो, ज्ञानी ध्यानी पंडित सारा।
राज जोग बिन कोई हन पहुंचे, आनन्द लोक विचारा ॥ १६६ ॥

म:फ: है कि हे ज्ञानियो, ध्यानियों, पंडितो मेरी बात को सुणो। राज जोग की भक्ति के बिना कोई भी आनन्द लोक में नहीं पहुंच सकता।

मेहर बिना यूं नांही पहुंचे, सतलोक कूं जाई।
अेक पद में ओगुण आदू, धिंग न तारे आई ॥ १६७ ॥

जब तक सतसरूप परमात्मा की मेहर नहीं होती जब तक उस पद में कोई नहीं पहुंच सकता। उस सतसरूप के पद में आदि अनादि से एक नियम (अवगुण) यह है कि वो धिंगो को नहीं तारते। धिंग का मतलब जिसे किसी भी चीज का अहंकार है जैसे – मैं ज्ञानी, मैं पंडित, मैं ध्यानी वगैरह।

गरीब निवाज बिडद है वांको, धींग निवाज न होई।

यूं अे बडा पुरूष नही पावे, सतसरूप कहूं तोही ॥ १६८ ॥

इसलिये महाराज कह रहे है कि जो व्यक्ति अहंकार छोडकर दास भाव रखता है, उसे तारते हैं। धिंगो को नहीं तारते। इसलिये यह ज्ञानी ध्यानी पंडित जो अपने आप को बडा मानते हैं, उनको यह सतस्वरूप का पद नहीं मिल सकता।

ब्रह्मा बिशन महेशर शक्ति, केवल ब्रह्म कहावे।
वे तो धिंग धिंग सूई धिंगा, क्यों कर वो पद पावे ॥ १६९ ॥

ब्रह्मा, विष्णु, महादेव व शक्ति केवल ब्रह्म (आत्मा) है। इनके शरीर नहीं है। तुम इन्हें बडा पुरूष मत समझना। वे यानि जो ज्ञानी, ध्यानी, पंडित जगत में हैं और अपने आप को बडा समझते हैं वो धिंग है, इसलिये उन्हें वो पद नहीं मिलता।

ज्यां को सुणो दिष्ट दिख लावूं, जो कोई विद्या चावे।
बाल थका मेहर सरस्वती की, पढे पाठ कंठ आवे ॥ १७० ॥

दृष्टान्त से समझाता हूं कि यदि विद्या बडा होने पर पाना चाहे तो नही पा सकता क्योंकि अहंकार के साथ है बालपने में अहंकार रहित होता है इसलिये विद्या कंठस्थ हो जाती है।

जोबन जोर छते जो होवे, धन राज मद मांही।
तो नही मेहर सरस्वती कर है, वेद न सिख्या जाई ॥ १७१ ॥

जवानी का जोर, धन राज का मद याने अहंकार हो तो उस पर सरस्वती की कृपा याने वो विद्या नही पढ सकता।

बालक बहुत गुरां सूं धूजे, ईन्द्रिया जोर न कोई।
जब वा मेहर सरस्वती कर है, यूं सतगुरु विध जोई ॥ १७२ ॥

बचपन में बालक गुरुजी का भय मानते है क्योंकि उनके ईन्द्रियो का जोर नही रहता है तब सरस्वती याने बुद्धि पढने में लगती है। ऐसे सतगुरु के के:ग्यान का भय होगा तब विधि से साधन करने से ही परम पद की प्राप्ति होती है।

और किसब चावे सो करले, धन जोबन हुवे राजा।
एक वेद व्याकरण नही सूजे, वो केवल नही काजा ॥ १७३ ॥

जवानी में उधम करने से धनवान हो जाता है राजा बन जाता है लेकिन जवानी में व्याकरण नही सूजता है ऐसे ही केवल की प्राप्ति नही होती।

जो कोई जोर शकल ही त्यागे, तो देह गुण नही जावे।
बालक, जवान कोण विध होवे, इयूं केवल गुण कहावे ॥ १७४ ॥

जवानी में अहुं बल को छोड देता है परन्तु शरीर का गुण याने शरीर से बालक नही हो सकता। ऐसे ही बालक जवान कैसे हो सकता है इसी तरह केवल पद की प्राप्ति अहंकार से अलग होने पर ही होती है।

बालक बहुत गुरां सूं धूजे, ऊंच नीच के मांही।
केवल माय दोष नही कोई, पूरण पण पणो न जावे ॥ १७५ ॥

बालक चाहे राजा का हो या रंक का गुरु से भय माने बिना विद्या प्राप्त नही होती। ऐसे ही के:पद की भक्ति करने वालो को अहंभाव से अलग होने से परम पद की प्राप्ति होती है।

सतसरूप को है अंग यो ही, गरीब नवाज व्हे आवे।
केह सुखराम ब्रह्म अर माया, यूं सतसरूप न आवे ॥ १७६ ॥

सतस्वरूप के पद का यही अंग है कि अपने अहंकार का त्याग करके आने पर ही उस पद की प्राप्ति होती है यही गरीब निवाज होना है। म:फ: है कि माया व ब्रह्म की भक्ति करता है तब तक वो देश आने वाला नहीं हैं।

ज्यूं संसार बंध्यो आपे में, गुरुवश कोई न आई।
फल फूल पात झड पडियो, है सब तरूवर मांही ॥ १७७ ॥

संसारी माया ब्रह्म तक का साधन करते है सतगुरु पद का ज्ञान धारण नही करते माया ब्रह्म से ही सारी सृष्टि की उत्पति है। साधन करके भी उसी पद में जाकर मिलते है जैसे फल व फूल व पते झडकर पड जाते है, वापिस उसी वृक्ष से उत्पति हो जाती है।

जल में जाय मिल्यो जल जांही, वे जब क्या ईधका होई।
रूंख राय घट घट ब्रह्म भरियो, ज्यां ही जल और न कोई ॥ १७८ ॥

जल जाकर जल में मिल जाता है। ऐसे ही आत्मा ब्रह्म ही है व ब्रह्म पद में जाकर मिल जाती है तो क्या इधक हुआ है। ऐसे ही घट घट में जो आत्मचेतन है उन सब में सर्वत्र ब्रह्म व्यापक है।

ज्यूं घर ताड़ खडा कर दिया, क्या धरण गुण जावे।
पाछी पडया दाद कहां होई, ईयू ब्रह्म जीव कुवावे ॥ १७९ ॥

जैसे पृथ्वी पर चूना ईट पत्थर से मकान खडे कर दिये है। वह मकान गिरते है तो पृथ्वी पर पडकर उसी में मिल जाते है। पृथ्वी से अलग नही होते, ऐसे ही जीव ब्रह्म से ही आया है व ब्रह्म में ही जाकर मिलता है।

नाना विध किया आभूषण, सो ही कंचन है सारा।
पाछो भांग घाटसो मेटे, जब क्या ईधक विचारा ॥ १८० ॥

ऐसे ही सोने के कई तरह के आभूषण बने है वो सब सोना ही है, पीछे सब को भांगकर तोडकर उन सब का नाम व रूप मिटा दिया है तो भी वह सोना ही है।

जात छाड वैश्या होय बैठी, क्या गयो घट भाई।
पांचु भोग नार वा सागे, सो पतिव्रता मांही ॥ १८१ ॥

जैसे कोई स्त्री अपनी जाति को छोडकर वेश्या बन गई है, उसके स्त्रीपना में क्या कमी आई है। जो पतिव्रता में पांचु भोग है वो ही उसमें है, वो स्त्री है वैसे ही वो स्त्री है।

राजा रंक हुवे जो कब ही, क्या गयो घट सोई।
नर को नर ही बण्यो वे सागे, पदवी घट बढ होई ।। १८२ ॥

म:फ: है कि राजा कभी रंक हो जाता है तो उसके मनुष्य पने में क्या कमी हुयी है। वह तो मनुष्य, मनुष्य ही है, पदवी घट बढ हुई है।

जो नर नार परण घर ल्यायो, पुरूष पणो नही जावे।
जो नर जन्म ब्याह नही कियो, तो ही नर पुरूष कहावे ॥ १८३ ॥

जो नर स्त्री को परण कर घर लाया तो भी उसके पुरूष पणे में कोई कमी नही हुई है। जिस पुरूष ने जन्म भर ब्याह नही किया तो भी वो नर भी पुरूष का पुरूष ही है।

जात पांत सुं दूरो कर दे, धसे और कुल मांही।
कहो जी घटयो क्या ऊण नर को, यूं ब्रह्म जीव कहाई ॥ १८४॥

किसी मनुष्य को जाति पांती से अलग कर देवे वह मनुष्य दूसरे कुल में चला जावे तो उस मनुष्य पने में क्या कमी हुई है। इसी तरह पांच तत्वो व तीन गुणो का शरीर धारण कर ब्रह्म जीव पद में आ गया है।

है तो आद ब्रह्म अर माया, तिजो पद सुख मांही।
ताकुं कहे आनन्द पद सारा, ज्यां सत चिनयो नांही ॥ १८५॥

ब्रह्म और माया का पद आद याने अनादि से है। माया व ब्रह्म ये दो पद है तीसरा पारब्रह्म का पद है, सुख रूपी है, इसको ही जगत आ:पद मानता है, जिन्होंने के:पद आ:पद की प्राप्ति नही की है उन्होंने पारब्रह्म के पद को ही आ:पद मान लिया है।

यूं दृष्टान्त देर समजावूं, ज्ञानी बुध घट लावो।
सतसरूप ज्यां मैं सतगुरु हूं, तुम ओ भेद न पावो ॥ १८६॥

म:फ: है कि हे ज्ञानियो अपनी बुद्धि घट में लाओ, मैं आपको उदाहरण से समझाता हूँ। सतस्वरूप के: पद में भेजने का ओहदा मुझे हैं। यह भेद तुम नहीं जानते।

ज्यूं संसार बन्धयो पख मांही, कुल गिन्यात पिछाणो।
राम राम की केबत मुख में, मिलियां प्रीत न ठांणो ॥ १८७॥

संसार अपने अपने पक्ष में बंधा हुआ है। चाहे परिवार या न्याती हो। और सभी मुख से राम राम कहते हैं परन्तु जो राम राम विधि से बताते हैं, उसमें प्रीति नहीं है।

यूं वे शकल शिष्ट का ज्ञानी, मेरो भेद न पावे।
ब्रह्मा बिश्न महेशर शक्ति, पूरण ब्रह्म लग न जावे ॥ १८८॥

म: सता रूप से फ: है कि सारी सृष्टि के ज्ञानी मेरा भेद याने सतसरूप के निज नाम का भेद नही पाते। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, शक्ति की भक्ति व आराधना तीन लोको में फलो की प्राप्ति कराते है। पारब्रह्म के के:पद आ:पद तक नही पहुंचते यही पूरण ब्रह्म लग न जावे है।

इनकी शकल कहे जग शोभा, ज्ञानी पंडित सारा।
तांको सुणो अरथ यो कहिये, ज्यूं कुल धर्म बुहारा ॥ १८९॥

सारा जगत ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, शक्ति की ही भक्ति करते है। ज्ञानी व पंडित सब इनकी महिमा करते है। क्यों कि ये कुल की भक्ति है कुल का धर्म व्यौहार है।

ब्रह्मा बिश्न महेशर शक्ति, अे मां बाप ज जांणो।
पूरण ब्रह्म जिस्या कुल राजा, यूं सत भेद पिछाणो ॥ १९०॥

ब्रह्मा, विष्णु, महेसर, शक्ति ये तीन लोक के माता पिता है और पारब्रह्म का पद राजा की तरह है। ऐसे समझकर सतसरूप आ:पद के भेद को पहचानो।

सतसरूप ज्यूं गुरु जग मांही, ओ परसंग सुण लिजे।
केता जीव गुरां में समझे, सो मुझ निरणो दिजे ॥ १९१॥

सतसरूप का पद जगत में गुरु पद है इस प्रसंग को सुणो। जगत में सब जीव माता पिता को जानते है, परन्तु गुरु पद को कौन जानता है इसका तुम मुझे खुलासा कर बतावो।

मां अर बाप में सब ही समझे, लडका लडकी भाई।
बांदी बहू पशु शूकर लग, सब सन्मुख हुवे आई ॥ १९२ ॥

जगत में लडका व लडकी माता पिता को जानते है, दासी बहू पशु व शूकर याने सब ही माता पिता को जानते है। याने माया ब्रह्म के पद तक का ज्ञान तो सब ही जानते है।

कुल राजा कूं अे नही जाणे, पशु श्वान नर नारी।
यूं पूरण ब्रह्म पिछाणे कोईयक, ज्यां में है बुध भारी ॥ १९३ ॥

जैसे पशु व कुता स्त्री पुरूष माया ब्रह्म के पद से आगे जो पारब्रह्म का पद है वो राजा की तरह है उसको ये नही जानते। पूरण ब्रह्म का पद जो माया ब्रह्म का आधार है उसको कोई भारी बुद्धि वाले ही जानते है।

मेहमा कियां शकल ही समझे, अे गुण राजा मांही।
छोटे बडे सकल सुख पायो, पशुवां कूं गम नांही ॥ १९४ ॥

जो राजा होता है उसकी महिमा सभी करते हैं अर्थात ब्रह्मा, विष्णु, महादेव व शक्ति तीन लोक के राजा हैं और सभी उनकी महिमा करते हैं। परन्तु जो पशु होते हैं उनको इस बात की जानकारी नहीं होती है।

गुरु की करे आंण कोई शोभा, कहो कुण समझे भाई।
और गुरु की मत उठावे, तो सब बरजे आई ॥ १९५ ॥

सतस्वरूप के:पद आ:पद के ज्ञान की कोई शोभा करे तो उसमें कौन समझता है। माया ब्रह्म के पद से अलग होने का कोई ज्ञान धारण करता है तो उसको सब बरजते है। जैसे जगत में कोई बैराग लेता है तो उसको घरवाले व गांव वाले सब ही बरजते है।

मात पिता राजा की महिमा, चाल शकल मन भावे।
गुरु की टहल तिसी कोई पकडे, तो सब ही दुख पावे ॥ १९६ ॥

माता पिता माया ब्रह्म व राजा ब्रह्मा विष्णु महादेव की महिमा सभी को अच्छी लगती है और जो गुरुपद याने सतशब्द ने:अंच्छर की भक्ति धारण करते हैं तो मन इन्द्रिया और कर्म दुखी होते हैं कि अब इस पर हमारा जोर नहीं चलेगा। जैसे जगत में कोई बैराग लेता है तो सब घर वाले दुखी होते हैं।

माया ब्रह्म सुणो शिष्ट का, शकल कुल होई।
पूरण ब्रह्म लग सब महिमा, ज्यूं कुल राजा जो होई ॥ १९७ ॥

माया ब्रह्म का पद सारी सृष्टि का कुल है। सब की उत्पति उसी से है। पारब्रह्म का पद कुल में राजा की तरह है याने जो पारब्रह्म की भक्ति करते है वो राजा की तरह है।

ज्ञानी साध संत ये जुग में, ज्यूं सेणा कुल मांही।
इनकी पदवी नही गुरुदेव की, भोला समझे नांही ॥ १९८ ॥

जिस प्रकार जगत में सभी नर नारी होते हैं उनमें से यह ज्ञानी, साध व संत समझदार कहलाते हैं, ठीक इसी प्रकार कुल परिवार में भी कोई एक समझदार होता है। इसलिये जनता इन ज्ञानी साध व संत को गुरु मान लेती है जब कि इनकी गुरु की पदवी नहीं है, परन्तु जनता भोली है, वो समझती नहीं है।

गुरु तो पदवी हमारी आदु, सुण ज्ञानी कहूं तोही।,
भोला जीव भेष सूं डरपे, इयूं नही माने मोही ॥ १९९ ॥

हे ज्ञानियो सुणो आद अनादि से गुरु पदवी मेरे को सिरजण हार से मिली है लेकिन जिन्होंने गुरुओं का भेष पहन रखा है, उनसे भोले जीव डरते है इसलिये मेरे को व मेरे ग्यान को नही मानते।

सुणो खून शकल सिर भारी, ब्राहमण जांणर ज्यां मुझ त्यागे।
ओ सुण खून कहूं नही छूटे, जे मो सुंई ना लागे ॥ २०० ॥

म:फ: है कि जो मेरे को ब्राह्मण याने पंडित समझकर सतस्वरूप आ:पद के ज्ञान को धारण नही करते, उनका जन्म मरण नही मिट सकता। सतस्वरूप ने:अंच्छर के ज्ञान को धारण नही करना ही मोसु नही लगना है।

बेमुख फिरे भटकता आंधा, माया को गुण गावे।
सतसरूप आनन्द पद कहिये, यो कोई भेद न पावे ॥ २०१ ॥

जो प्राणी शरीर रूपी माया का ही गुणगान करते है वे सत ग्यान से बेमुख होकर व अंधे होकर भटकते और सतस्वरूप आनन्द पद का भेद नही पाते है।

कहे सुखराम सुणो सब ग्यानी, मैं यो भेद बतावुं।
तीन पद आगे पद चौथो, सो प्रगट कहे जावुं ॥ २०२ ॥

म: सब ग्यानियो से फ: है कि सुणो मैं तुमको भेद बताता हूं। माया ब्रह्म व पारब्रह्म के पद से आगे जो सतशब्द ने:अंच्छर का पद है वो चौथा पद है। उसको प्रगट कहता हूं।

ज्ञानी सबे तीन पद जाणे, चौथे लग बुध नांही।
जे कोई कहे परमपद चौथो, तोई तीना के मांही ॥ २०३ ॥

सब ज्ञानी तीन पद को ही जानते है। चौथे पद को नही जानते। जो पारब्रह्म के पद में शब्द का अनुभव होता है उसको कोई चौथा पद मान लेते है तो वो पद भी तीन में ही है।

ताको सुणो भेद मैं भाकूं, प्रगट कहूं बजाई।
महाज्ञान सूं ही ज्ञानी ध्यानी, से सब समझो आई ॥ २०४ ॥

उसका मैं भेद वर्णन प्रगट करता हूं कि महाज्ञान याने के:ग्यान से ग्यानी क्या ध्यानी अपने आप को ज्यादा समझते है सो ग्यानी समझो।

करणी कियां परमपद मिलसी, जै ऐसी केहे आई।
जे सब सुण सुख लग गावे, तीन पद के मांही ॥ २०५ ॥

हे ग्यानी शुभ अशुभ करणी करते और सब ही जीव भाव से सुखो का वर्णन करते है तो तीन पद के अन्दर ही है।

जांको सुणो अरथ यो प्रगट, जग में तोहे बतावुं।
नाना विध ऊधम कर सुख हुवे, सो तिजो पद गावुं ॥ २०६ ॥

जगत का दृष्टान्त देकर कहता हूं जगत में जो नाना विधि का ऊधम करने से सुख मिलता है इसी प्रकार शुभ अशुभ करणिया द्वारा तीसरे पद का सुख मिलता है वो थिर नही रहता।

जीऊं जग सब ऊधम कर सुख ले, राज धुराधर भाई।
आनन्द मिले सकल करमा कर, ईऊं करणी जग मांही ॥ २०७ ॥

जैसे उधम करने से राजा होता, फिर राज के सुख का आनन्द मिलता है ऐसे ही करणियो द्वारा तीसरे पद का आः मिलता है।

तीजो पद करम कर लेवे, बोहो करणी कर भाई।
जिऊं संसार ब्होत कर हिकमत, गृहे सुख लुटे जाई ॥ २०८ ॥

जैसे नाना प्रकार की करणी करके तीसरे पद की प्राप्ति करते है ऐसे संसार में बोहोत प्रकार के उधम करके गृहस्थ का सुख लेते है।

चोथो पद करम से न्यारो, सुण लो सब नर भाई।
जिऊं विज्ञान ऊपजे नर कूं, कोण उधम से आई ॥ २०९ ॥

म:फ: है कि चौथा पद शुभ अशुभ करणियो से अलग है। सब ही मनुष्य सुणो विज्ञान कोण से उधम से होता है।

जोग तो आण तप कर सुख लेवे, आनन्द उनके ही होई।
ज्ञान आनन्द पद सब सूं ही न्यारा, गुरु कृपा करे सोई ॥ २१० ॥

हे ग्यानी ध्यानी सुणो अष्टांग जोग की तपस्या करके आनन्द सुख लेता है वो करते है तब तक ही रहता है और केवल ग्यान गुरु कृपा से प्राप्त होता है वह आनन्द पद पारब्रह्म से अलग है।

ज्ञान भेद आनन्द सुख लीजे, तांकी एक ऊपाई।
गुरु आधीन ज्ञान ही पढणो, और कुछ नही भाई ॥ २११ ॥

केवल ग्यान की विधी का आनन्द सुख प्राप्त करने का अेक ही उपाय है कि गुरु ग्रन्थ के आधीन होकर ग्यान पढो और विधी धारण करके सतशब्द का अनुभव करो, इसके अलावा कोई ऊपाय नही है।

ईउं सतस्वरूप आनन्द पद चोथो, जीऊं विज्ञान कहावे।
तिजो आणंद जगत सुख जैसे, सो करमा कर पावे ॥ २१२ ॥

सतस्वरूप आ:पद चौथा पद है उसे विज्ञान कहते है और स्वांस ऊसांस की रटणा होती है और भी बिना किये सतशब्द का अनुभव होना ही विज्ञान है। तीसरा पद याने पारब्रह्म के पद का सुख जगत के सुख के जैसे है वो शुभ अशुभ करणियो द्वारा प्राप्त होता है।

केह सुखराम सत यूं सब ही, ना सत तो कुछ नांही।
आनन्द होय फेर दुख आवे, आ कसर वां मांही ॥ २१३ ॥

म:फ: है कि जो भी साधन करते हो वो सब अच्छे है। कोई गलत नही है। पारब्रह्म तक के ग्यान से आनन्द आता है परन्तु वहां से आने का दुख है क्योंकि वहां से आने की रीत है आगे भी वहां से आया है।

जीऊं जग आनन्द पाय दुख पावे, राज धुराधर भाई।
इऊं जन मिल्या तीसरे पद में, पडे संकट मांई ॥ २१४ ॥

जगत में जैसे राजा को राज सुख का आनन्द मिलकर फिर दुख आ जाता है। इसी तरह तीसरे पद में मिलने वाले जन भी वापिस आ जाते है यही संकट में पडना है।

जीऊं विज्ञान ऊपज्यां, निरभै बैरी शिर नही होई।
ईऊं सतस्वरूप पद वो चोथो, धारे है बिरला कोई ॥ २१५ ॥

जैसे बैराग्य पैदा होने पर निरभै हो जाता है। जगत में उसके सिर पर कोई बेरी नही रहता है ऐसे ही सतस्वरूप आ:पद चौथा पद है, उसको कोई बिरला ही धारण करता है।

चौथा पद मिलण की जग में, सतगुरु एक ऊपाई।
करणी शकल पद तीजे की, नाना विध कर भाई ॥ २१६ ॥

चौथे पद की प्राप्ति का जगत में एक यही ऊपाय है कि सतगुरु विधि से भजन करो। कई प्रकार की नाना विधि से करणियां करने से तीसरे पद की प्राप्ति होती है।

सतगुरु मेहर सता घट जागे, से सतगुरु सत जाणो।
करणी ज्ञान बतावे आयर, जे गुरु कुलस पिछाणो ॥ २१७॥

सिरजण हार से अणभै ग्यान की परवानगी लाने वाले सतगुरु की मेहर से ही सतशब्द ने:अंच्छर की जागृति होती है उन्ही को सतगुरु की पदवी है। शुभ अशुभ करणी का ज्ञान बताने वाले को तीन लोक के गुरु समझो।

केह सुखराम सतगुरु सोई, सत की भक्त बतावे।
सतस्वरूप घट मांहे प्रगटे, ऊलट अगम घर जावे ॥ २१८ ॥

म:फ: है कि सतगुरु से ही सत की भक्ति आती है वो ही सतगुरु है। फिर सतशब्द प्रगट होकर बंकनाल होकर अगम में ले जाता है।

सतगुरु सोई सहज में, शिष कूं नांव प्राप्त होई।
नख चख माहे सत प्रकाशे, निमष खंडे नही कोई ॥ २१९ ॥

सत गुरुदेव वे ही है जो हंस वृति आत्मा भजन करे उसी शिष के घट में सहज ही निज नांव की प्राप्ति हो जावे। नख से चख तक खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड सारे शरीर में शब्द का अनुभव होता है एक क्षण भी खंडित नही होता।

ओर शकल गुरु वचन सरूपी, जे जिऊं कुल में ज्ञानी।
सब ही बूज करम कूं लागे, न्यात पांत लग जानी ॥ २२० ॥

जैसे कुटुम्ब में कोई समझदार हो तो उसे पूछकर ही न्यात पांत का काम करते है। ऐसे ही वचनो द्वारा उपदेश करने वाले गुरु माया ब्रह्म के पद का उपदेश करते है।

आप आप के सब वंश मांही, समजवान कूं बूजे।
जात पांत कुल चाल कसर सो, सब सेणे कूं सूजे ॥ २२१ ॥

आपके कुटुम्ब में जो समझदार होता है उसे ही पूछते है। जात पांत में व परिवार में जो भी कसर होती है वो समझदार को मालूम होती है।

करणी आंण बतावे कोई, शिवरण लग जन कांई।
से सब गुरु जगत में सेणा, हद बेहद लग भाई ॥ २२२ ॥

शुभ अशुभ करणियां व सिवरण का ज्ञान बताने वाले गुरु हद बेहद तक का ज्ञान बताते है। वो जगत में समझदार की जैसे हैं।

कुल गिनान मांहे सब समझे, राज रीत लग जांणे।
यूं अे गुरु शकल कनफूंका, माया ब्रह्म बखाणे ॥ २२३ ॥

कुल माया ब्रह्म व राज रीत याने पारब्रह्म के पद तक का ज्ञान बताते है वे गुरु वाणी व स्वांसा

के आधार का ज्ञान बताते हुए माया ब्रह्म की महिमा करते है। इनको कनफूंका गुरु कहते है।

अे सब गुरु शकल सो न्यारा, जात पांत ज्यूं होई।
कुल मरजाद जिसी इण सब की, पाप पुन्न में दोई ॥ २२४॥

जैसे जाति पांती सबकी अलग होती है ऐसे ही ये सब गुरु अलग अलग साधन बताते है जैसे परिवार में मर्यादा रहती है ऐसे ही ये गुरु पाप पुण्य का बखाण करते है।

इनको गुरु कहे सो भोला, गुरुपद इनके नांही।
आ तो सकल कहण की शोभा, जिऊं दीपक जग मांही ॥ २२५॥

शुभ अशुभ करणियां बताने वाले को गुरुपद की प्राप्ति नही है। यह तो नकल है कहने मात्र की शोभा है, जैसे जगत में दीपक के प्रकाश को कह देते है कि सूर्य जैसा प्रकाश हो रहा है।

अे तो सकल ऊजागर कुल का, ब्रह्म भेद कूं जांणे।
सो पद सकल शिष्ट कूं करता, तांकू ताण बखाणे ॥ २२६॥

सब ही माया का बखाण करने वाले है, पारब्रह्म पद तक के भेद को जानते है। जो पद सारी सृष्टि का करता है उसकी महिमा करते है।

से गुरु नही सुणो नर नारी, जे कुछ कारण राखे।
नार पुरुष न्यारा गुरु करणा, ऐसी दुरमत भाखे ॥ २२७॥

म:फ: है कि इनको गुरु पदवी नही है। स्त्री पुरूष सुणो इसका कारण यह है कि ये ऐसी द्वेत की बात कहते है, स्त्री व पुरूष एक ही गुरु करे तो भाई बहन हो जाते है, इसलिये अलग अलग गुरु करने की कहते है।

अे तो मधम गुरु जग मांही, माया का गुण लावे।
ज्यूं मरजाद जगत में बांध्या, कोई न छूटण पावे ॥ २२८॥

जगत में जो मध्यम गुरु है वो करणियों का उपदेश करके माया के पद में रखना चाहते है। जगत मर्यादा में बंधा हुआ है उससे कोई नही छूट सकता।

मधम गुरु सो सब ही जुग में, जां मरजादा बांधी।
एक ब्रह्म बिचे कर दुबध्या, बैर दिष्ट कर सांधी ॥ २२९॥

म:फ: है कि जो मध्यम गुरु है उन्होने जगत में अपने हिसाब से मर्यादा बना दी। जब कि सारी सृष्टि का परमात्मा एक है लेकिन इन्होंने अपने अपने हिसाब से द्वेत भाव कायम करके जगत में साम्प्रदायिकता कायम कर दी।

न्हाक्यो भरम झूंठ केवत को, ज्यां बिच लेणा न देणा।
ऊलटा बैर बंधे हंस ऊर, जुग जुग दावा लेणा ॥ २३०॥

माया जो असत है उसे सत बताकर जगत को भरम में डालते है, उससे ब्रह्म की प्राप्ति नही होती। यही ज्यां बिच लेणा न देणा है। ऊलटा हंस जन्म मरण में बंध जाता है। जुगानजुगो तक इससे छुटकारा नही होता है।

मधम गुरु की ये सब बातां, भरम दरडावे आंणी।
गुण ओगुण माया का देखे, ब्रह्म न चिने प्राणी ॥ २३१॥

म:फ: है कि जो मध्यम गुरु है उनकी ये सब बाते है, माया को ब्रह्म बताना ही भरम को

दिढाना है। माया के पद के ज्ञान में रहते है। तब तक प्राणियो को ब्रह्म की प्राप्ति नही होती है।

देहे आकार किसब सो देखे, माया का गुण गावे।
ब्रह्म अखण्ड अपर बल मांही, सो गुण सरब ऊठावे ॥ २३२॥

जो आत्मा आकार रूपी शरीर में आती है फिर करामात, करतूत सिद्धाई दिखाते है तो माया के गुण गाते है। ब्रह्म अखण्ड है अपार बल है, उसकी महिमा नही करना ही सब गुण उठाना है।

मधम गुरु की ये सब बातां, सुणज्यो सब नर नारी।
ब्रह्म छाड माया कूं पूजे, ब्हो शिर किरया धारी ॥ २३३॥

म:फ: है कि जो मध्यम गुरु है उनकी ये सब बाते है सब ही स्त्री पुरूष सुणो। ब्रह्म को छोडकर माया के पद का ज्ञान करते है वो अनेक तरह की शुभ अशुभ करणिया करते है।

इनकी बुध अकल सो आई, आगे दौड न कोई।
जिऊं बश नार कियो नर सेंती, ईऊं अे ज्ञानी सोई ॥ २३४॥

इनकी बुद्धि व अकल इतनी ही है, ब्रह्म का ज्ञान नही कर माया का ही ज्ञान करते है। जैसे पुरूष स्त्री के वश में हो जाता है, ऐसे ही ये माया के ज्ञान को प्रधानता देते है। यही वश होना है।

ब्रह्म रूप ऊजल गुरु कहिये, से सब भरम उडावे।
कारण मेर तोड मरजादा, ब्रह्म देश पर लावे ॥ २३५॥

उतम गुरु वे ही है जो ब्रह्म पद की प्राप्ति का ही ज्ञान देकर माया व करणियो से अलग करते है यही भरम उडाना है। करणियो व कर्म काण्डो से अलग कर ब्रह्म पद प्राप्ति का ज्ञान देना ही ब्रह्म देश पर लाना है।

करणी सकल भरम माया का, सो नही माने कांई।
केवत सकल झूंठ कुल करणी, से मरजाद बणाई ॥ २३६॥

करणियां व माया के पदों की प्राप्ति के ज्ञान को ये नही मानते, जगत कहावते व करणी झूठी है, उससे ब्रह्म पद की प्राप्ति नही होती।

अेकी ब्रह्म शकल में देखी, माया गुण नही माने।
उतम गुरु से ही जग केहे, पाप न पुन्न न जाणे ।। २३७॥

अेक ब्रह्म सर्वत्र व्यापक है। माया के गुण, उपजना खपना, पाप पुण्य है। इनसे अलग होकर ब्रह्म की प्राप्ति करना उतम गुरु के लक्षण है।

बेटी नार बहन सो चेली, नामा को गुण जाणे।
सब ही त्याग भावे बरतो, सब में ब्रह्म पिछाणे ॥ २३८॥

बेटी स्त्री बहन चेली व माता सबको एक ब्रह्म रूप में ही देखते है। सब ही का त्याग कर देवे चाहे साथ रखे वे ब्रह्म ज्ञानी विषय विकारो से अलग रहते है, जैसे बालक शरीर से अपने खाने पीने की सब क्रियाऐ करता हुवा विषय विकारो से रहित होता है ऐसे ही ब्रह्म ज्ञानी अपने शरीर की सब क्रिया करते हुये भी विषय विकारो से दूर रहते है।

उजल गुरु तिके सुण कहिये, भरम ऊडावे सारा।
पांचु भोग आत्मा भाडो, ब्रह्म नही डूबण हारा ॥ २३९॥

म:फ: है कि उतम गुरु वो ही है जप तप करणियो से अलग करा के शरीर रखने के लिये

आत्मा को भाडे के रूप में अनासक्त भाव से भोगो का उपयोग खाने पीने का कार्य कराते हुये कर्म बन्धन नही मानते, यही ब्रह्म नही डूबणहारा है।

ओ तो आप भरम में भूला, करमा के बश होवे।
भरम ज्ञान सुण गेहे करमा कूं, उलटो उनको रोवे ॥ २४० ॥

इस तरह ये ज्ञानी शुभ अशुभ करणियो के ज्ञान को प्रधानता देते हुये करणिया करते है। करणियां करने से पाप होता है व पुण्य भी होता है, पाप होने से कर्म बन्धन हो जाता है और कर्मो का फल भोगना पडता है, यही करमो के वश होना व उनका रोना है।

नही तो क्या करम कर सके, जे आपो ओ जाणो।
ओ तो ब्रह्म अगन की जाला, कहां गेहे कचरो ताणो ॥ २४१ ॥

ब्रह्म का पद अग्नि की ज्वाला की तरह है व करम करणियां कचरे की जैसे है। अग्नि कचरे को कैसे पकडती है वो तो पडते ही भस्म हो जाता है। ऐसे ही ब्रह्म पद में कर्म व करणियां नही रहती, जीव पद में रहती है। यही करम क्या कर सके है।

ओ तो वचन रूप सुण होई, कहो कुण गेहे विचारो।
सातु भांत भोग कर निकसे, कहीं नही अटकण हारो ॥ २४२ ॥

ऐसे ब्रह्म तो वचन रूप है दो कान दो नाक दो आंख व मुंह ये सातो इन्द्रियों को भोग देने से ब्रह्म पणे पर फर्क पडने वाला नही है।

निजर पाड भिष्टा पर पडगी, फिर इमरत पर जाई।
तिल भर बोज वास नही वांकू, ईऊं ब्रह्म है करम मांई ॥ २४३ ॥

नजर भिष्टे पर पडे और इमरत पर भी पडे, इन दोनो का असर ब्रह्म पर नही होता। ऐसे कर्म शरीर द्वारा होते है ब्रह्म उस का अनुभव करते हुये भी उसके ब्रह्म पणे में कोई फर्क नही पडता। इस तरह आत्मा कर्मो के साथ है।

ईयां कूं करम न लागे कोई, ज्यूं पर अंग न भिजे।
ओ तो ऊलट गेहे करमां कूं, सोच करे कर छिजे ॥ २४४ ॥

आड पक्षी का शरीर व पर पानी में रहते हुये भी नही भिजता। ऐसे ही आत्म ब्रह्म शरीर में रहते हुये भी इसको कर्म बन्धन नही होता। अपने स्वरूप को भूल कर्म बन्धन मानकर छीजता है।

करम विचारा क्या कर सके, जे बस्तर सम होई।
ज्यूं धन माल हवेली घोडा, नर पकडया कहूं तोही ॥ २४५ ॥

बस्तर शरीर से अलग है ऐसे ही आत्म ब्रह्म शरीर से अलग है। जैसे धन माल हवेली घोडा मनुष्य ने अपना समझ रखा है यदि छोडकर जाता है तो ये मनुष्य को नही पकडता।

छाडर चले डार नर इनकूं, जब कुण पकडे आई।
यूं सब धरम करम सो माया, जे समझे ब्रह्म भाई ॥ २४६ ॥

धन माल हवेली घोडा मनुष्य छोड जाता है तो ये नहीं पकडते। मनुष्य के ऐसे ही सब धरम करम माया के पद में है। जो इसको समझे तो ब्रह्म पद में ये नही है।

केहे सुखराम करम को कांई, जे अपणे वश सारा।
सतगुरु बिना छूट नही सके, मूरख जीव बिचारा ॥ २४७ ॥

म:फ: है कि कर्म व शुभ अशुभ करणियो से अलग होना मनुष्य के वश में है, परन्तु सतगुरु पद के ज्ञान को धारण किये बिना अज्ञानी जीव इनसे अलग नही हो सकते।

ज्यूं आधीन भरम सुण कोई, पाखण्ड के वश हुवा।
ईऊ आधीन करम से हंसो, भेद न जाणे जुवा ॥ २४८ ॥

जैसे कोई पाखण्डी के वश हो जाता है ऐसे ही हंस अज्ञान अवस्था में शुभ व अशुभ करणियां व जप तप के आधीन होना ही कर्म भर्म के वश में होना है। इनसे अलग होने वाले ज्ञान के भेद को नही जानते।

सतगुरु मिले तबे सुध आवे, कहा करम अटके मोही।
जे सब जीभ भछण खाने की, चाह बराबर होई ॥ २४९ ॥

सब चीजे जीभ से खाने की खाई जाती है फिर भी जीभ को खाने की बराबर चाहना बनी रहती है। ऐसे ही शुभ अशुभ करणियां कर्म करने वाले निरन्तर इनमें ही लगे रहते है। सतगुरु से गुरु पद का ज्ञान मिले तब जीव को भान होता है कि ये करणी कर्म तुझे कैसे अटका सकते है।

पवन बास लेत सब सारी, कुछ नही छोडे भाई।
कहो वा चीज कोण सी छोडर, गहे पवन कूं भाई ॥ २५० ॥

घ्राण इन्द्री अच्छी व बुरी सब गन्ध लेती है किसी को नही छोडती। म:पूछते है कि कहोजी वो कौनसी चीज है जो पवन को पकडती है।

यूं सब करम हंस से न्यारा, जे सोजी सुध पावे।
मन मांगे सोई करो जगत में, आडो कोई न आवे ॥ २५१ ॥

इसी तरह सब करमो से अलग है यदि उसको शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति हो तो सब उसकी इच्छा हो जैसी भक्ति करने में लग जावो, चाहे करणी कर्म करो, चाहे ब्रह्म प्राप्ति का ज्ञान धारण करो कोई आडे नही आता है, यही मन माने सो करना है।

ऐसो भेद ऊतम गुरु पाया, मिले हंस के तांई।
पूरण ब्रह्म लग सो पहुंचे, आगे की गम नांई ॥ २५२ ॥

म:फ: है कि उतम गुरु के मिलने पर ऐसा भेद हंस को मिलता है। वह साधना करने वाला पारब्रह्म के पद तक पहुंचता है। इसके आगे सतस्वरूप आ:पद के ज्ञान की इनको जानकारी नही है।

उत्तम गुरु जगत में ऐसा, ब्रह्म सरूपी जाणो।
जिण प्रताप ब्रह्म हुवे हंसा, ऊदबुद कला पीछाणो ॥ २५३ ॥

म:फ है कि उत्तम गुरु को जगत में ब्रह्म का स्वरूप समझो। जिनके प्रताप से हंस को ब्रह्म पद की प्राप्ति होती है। हे ग्यानी इसके आगे ऊदबुद कला याने केवल ग्यान है उसकी विधि समझो।

महा परले लग रहे पद मांही, पीछे सब यहां आवे।
निरभै मोख नही इण गुरु से, जे निरगुण पद जावे ॥ २५४ ॥

म:फ: है कि पारब्रह्म के पद में महाप्रलय तक हंस रहता है, पीछे सब वापिस आ जाते है। इन उत्तम गुरुओ से के:पद आ:पद की प्राप्ति नही होती। उत्तम गुरुओं से पारब्रह्म तक की प्राप्ति होती है।

के सुखराम सतगुरु समरथ, सता सरूपी होई।

निरभै मोख हंस सो पावे, से गुरु कहूं अब तोई ॥ २५५ ॥

म:फ: है कि सिरजण हार परमात्मा अणभै ग्यान की सतगुरु पदवी देकर भेजते है, वो सता स्वरूपी है, ऐसे सतगुरु से ही व उनके ग्यान से निश्चय ही मोक्ष होती है।

और गुरु सब कहे ऊपाया, कर करणी जग मांही।
सतगुरु मेहर सता घट जागे, करणी कुछ भर नांही ॥ २५६ ॥

दूसरे गुरु जगत में करणी व करम का ज्ञान बतलाते हैं और सतगुरु की मेहर याने कृपा से घर में सतशब्द ने:अक्षर की जागृति होती है और उसके लिये कुछ विशेष करना भी नही पडता है, सिर्फ सतगुरु विधि से भजन करना होता है।

राव रंक करमी धरमी, शरणे आया सारा।
सता शकल घट जागे तन में, ऊलटर चढे विचारा ॥ २५७ ॥

चाहे राजा हो, रंक हो, धरमी हो या करमी हो, सतगुरु याने सत ग्यान की शरण में आने पर सबके घट में सतशब्द की जागृति होती है। शब्द के साथ बंकनाल में उलट कर ऊपर चढते है।

सतगुरु दया सोई सब करणी, भजन भाव सब सारा।
साजन जोग तप सो किरया, दरशण हेत बिचारा ॥ २५८ ॥

सत ग्यान गुरुदेव की विधि धारण करना ही सतगुरु की दया है फिर सतशब्द की जागृति होने पर सब साधन करणी भजन भाव जोग तप क्रिया दरशण सब साधन सतगुरु विधि से भजन करने में सब आ जाते है।

हंसे वश नही कछु कांई, जोग रीत बिध होवे।
उलटर पीठ फाड़ चढे जो, दशवों द्वार जाय खोवे ॥ २५९ ॥

म:फ: है कि राज योग के साधन में हंस के वश में कुछ नही है। स्थान स्थानपर सूरत लगाकर भजन करने से ही शब्द आगे बढता है। यही जोग रीत बिध है। शब्द बंकनाल में उलटकर पीठ फाड ऊपर चढकर दशवां द्वार जाकर खोलता है।

करम न धरम न लागे कोई, सब हाजर हुवे आई।
महानीच सुंई नीच करम है, सेई सब ऊधरे भाई ॥ २६० ॥

म:फ: है कि चाहे करमी हो या धरमी, चाहे महानीच से नीच करम करने वाला हो, सत ग्यान को धारण कर सतगुरु विधि से भजन करने से शब्द की जागृति होकर शरीर की सब करणिये होते हुये भी शब्द का अनुभव होता रहता है। यही सब हाजर होना है। सतगुरु विधि से भजन करने वाले सब बुरे कर्म त्याग कर भजन करने से ही उस पद की प्राप्ति होती है।

सतलोक आणंद पद पावे, निरभै वे हंस होई।
महाप्रलय ऊतपत हुवो केती, ऊठे से डिगे न कोई ॥ २६१ ॥

म:फ: है कि सतगुरु विधि से भजन करने से सूरत शब्द में लय होकर सतलोक आ:पद की प्राप्ति होती है व हंस निरभै हो जाता है। कितने ही महाप्रलय हो कितनी ही बार सृष्टि का ऊदभव हो लेकिन सतलोक से हंस नही डिगता है।

सतगुरु सकल शिष्ट का गुरु है, भेद बिना नही जांणे।
ईमरत जडी संजीवण जग में, खिण नर कोई न आंणे ॥ २६२ ॥

ओधाधारी सतगुरु सारी सृष्टि के गुरु है। लेकिन बिना भेद के इनको नही जानते है। जिस तरह अमरत जडी व संजीवणी जडी जगत में है जिसको कोई नही जानने से खोदकर नही लाते है, इसी तरह इस ज्ञान को संसारी नही जानते, ने: अंच्छरी संत ही जानते है।

घास काट सब ही घर आंणे, अष्ट धातु कूं खोदे।
चिंत्रामण कूं कोई न चिन्हें, ना कस कर नर सोधे ॥ २६३ ॥

घास याने शुभ अशुभ करणियो के ज्ञान को सब ही जानते है अष्ट धातु को खोद याने ब्रह्म पद का ध्यान भी करते है। के:पद आ:पद का ज्ञान कोई नही धारण करता न उस ज्ञान को प्राप्त करने की कोशिश करता है। यही चिंत्रामण कू कोई न चिन्हें ना कसकर नर सोधे।

सोध्यां जहां रतन नही पावे, नर इण जग के मांही।
जे कहूं सेज मिले नर सेती, तो ओ माने नांही ॥ २६४ ॥

जगत में मनुष्य माया व ब्रह्म पद के ज्ञान से के:पद आ:पद का ज्ञान प्राप्त करना चाहते है तो वो उससे नही मिलता यही सोध्या जहां रतन नही पाना है। यदि सहज में मनुष्य को जहां प्राप्ति होती है तो उसको विश्वास नही होता।

किऊं ऊण चीज सुणी यह शोभा, लिदी कदे न कोई।
कैसे परख पले यो बांधे, केण चीज गुण दोई ॥ २६५ ॥

पूर्ण परमानन्द पद की शोभा सब सुनते है परन्तु उस पद की प्राप्ति का ज्ञान किसी को नही मिला। किस तरह उस ज्ञान को समझकर धारण कर सकते है, उस पद की शोभा करना व उस पद की प्राप्ति करना ये दो गुण है।

बातां गल्ला सुणी जग मांही, तामे भेल अपारा।
खंड बंड इधकी कहूं ओछी, किऊं कर गहे विचारा ॥ २६६ ॥

उदाहरण देकर म:समझा रहे कि उस ब्रह्म पद की शोभा सुणी है, सुणकर शोभा करने से कही ज्यादा व कही कम होती है। खाली शोभा करने से उस पद की प्राप्ति कैसे हो सकती है?

मिलियां भरम खडो हुवे मांही, वो वां बातां को ले जोवे।
जे कहूं सुणी मांहे कम इधकी, तो मन खुशी न होवे ॥ २६७ ॥

म:फ: है कि परम पद मिल भी जाय तो भी उस पर विश्वास नही होता, वो उस ब्रह्म की शोभा कम ज्यादा सुनी हुई है वो उसको देखता है, जिससे उसके मन को विश्वास नही होता।

चीज सकल की शोभा जग में, कम जाफा सुण होई।
जाको सुणो अरथ यो कहिये, भेद बतावुं तोही ॥ २६८ ॥

जगत में किसी चीज की शोभा सुनकर करने से कम ज्यादा होती है उसका अर्थ यह है कि मैं इसका तुमको भेद बताता हूं।

मेहेमा सुण करे जो शोभा, घट बध कहत बावे।
कोई चीज की सुण लो जग में, ईउं सब पुराण कहावे ॥ २६९ ॥

जगत में किसी चीज की शोभा सुनकर कहते है तो वह कम ज्यादा कहने में आती है। इसी तरह पुराणो में पूर्ण परमानन्द की शोभा करी है।

च्यार सिलक सांभले ब्रह्मा, चारूं वेद बणाया।

सो सत सुण्यो व्यास नारद सुं, पुराण अठारूंई गाया ॥ २७० ॥

परा, पश्यन्ती, मध्यमा व बेखरी इन चारो वाणी से ब्रह्माजी ने सारी सृष्टि को ज्ञान दिया, बेखरी मध्यमा व पश्यन्ती का ज्ञान तीन लोको में है व परा वाणी द्वारा ब्रह्म की प्राप्ति का ज्ञान दिया है। इस ज्ञान का चारो वेदो में वर्णन किया है। उस ब्रह्म पद की प्राप्ति के ज्ञान को नारद जी द्वारा व्यासजी ने सुणा। उस ज्ञान को सुनकर व्यासजी ने अठारा पूराणो की रचना की है।

प्रथम बेखरी कर मुख सिमरण, फिर मध्यमा कंठ टेरे।
पुनः पश्यन्ती हेर हृदय में, परा गिगन कुल टेरे ॥ २७१ ॥

हे ग्यानियों मुंह से रटणा करना बेखरी वाणी, कंठ से राम का ऊचारण करना मध्यमा है, हृदय में मन बुद्ध, सुद्ध, सुरता से ग्यान करना ही पश्यन्ती वाणी, परा वाणी याने ब्रह्मण्ड का अनुभव कर वर्णन करना है।

साधु रिष बोलिया जग में, व्यास बुध ले भाई।
कथा किरतन डिंगल पिंगल, बक्या बोहोत जग मांही ॥ २७२ ॥

जगत में साधु ऋषि वेद पुराणों के ज्ञान के आधार से बोले, यही व्यास बुद्धि है। कोई शास्त्रों की कथा सुनाते हैं, कोई कीर्तन कराते हैं, कोई ढोंग पाखण्ड चलाते हैं और अपने हिसाब से परमात्मा की प्राप्ति बताते हैं। यही बक्या बहुत जग माही है।

इतना कहो किणे ब्रह्म देख्यो, सुण सुण शोभा किवी।
जैसी मति बुध थी ऐसी, सो सो खेंचर लिवी ॥ २७३ ॥

मःफः है कि पुराणो द्वारा ब्रह्म की शोभा करने वालो ने पारब्रह्म की प्राप्ति नही की है, उस पद की सुन सुन कर शोभा की है, जैसी उनमें बुद्धि थी उसी माफिक पारब्रह्म के पद का वर्णन किया है।

चार हरप जिण बोल्या पेली, सो ब्रह्म रीत पीछाणो।
पीछे सकल सुण सुण गायो, जे कुछ भेद न जाणो ॥ २७४ ॥

चार हरफ याने चार वाणी पहले ब्रह्माजी बोले है। वह ब्रह्म पद की प्राप्ति का ज्ञान है उनके पीछे से ब्रह्मा की शोभा सुन सुनकर कर रहे है उन लोगों को ब्रह्म पद की प्राप्ति नही होती।

मूल बस्त ज्यां देखी जग में, वे केवत ना माने।
यूं ब्रह्म जिका देखियो संत, वेद से झूंठ बखाणे ॥ २७५ ॥

जगत में जिन संतो ने सतशब्द नेःअंच्छर की प्राप्ति कर मूल बस्त याने केःपद आःपद की प्राप्ति की है वो कहने की बात नही मानते व शास्त्रो के ज्ञान से उस पद की प्राप्ति नही होती, विज्ञान से होती है। ज्ञान उसे कहते है जो आत्मचेतन से मन वाणी व स्वांसा के आधार पर होता है। विज्ञान उसे कहते है मन वाणी स्वांसा के आधार पर होकर पांच तत्वो व नव तत लिंग शरीर से अलग होकर आत्मा के निरंजण निराकार पद में बिना किये अखण्ड होता है।

भोलो शकल केहेण गेह राखे, मूल मिलयां ही नही चावे।
जिऊं लड़का गेवर कर खेले, देख्या सब भग जावे ॥ २७६ ॥

जो भोले मनुष्य है वो जगत में ब्रह्म की महिमा के ज्ञान में लगे रहते है यदि उन्हें ब्रह्म की प्राप्ति का ज्ञान मिल जाये तो भी उस पर विश्वास नही करते, जैसे बालक मिट्टी का हाथी बनाकर खेलते

है और असली हाथी आने पर भाग जाते है।

ऐसी मत शकल पंडिता की, बालक रूपी होई।
केवत पकड़ करी या गांठी, मूल न चिने कोई ॥ २७७॥

जगत में सभी पंडितो की बुद्धि बालक जैसी है, वो ज्ञान से ब्रह्म पद का बखाण कर ब्रह्म पद की प्राप्ति मानते है। मूल याने निज नाम से ब्रह्म प्राप्ति होती है उसको नही पहचानते।

मूल बस्त जिण जन ने पाई, तिणने ये नही माने।
ज्यूं लड़को गेवर सूं भागे, यूं अे निंध्या ठांणे ॥ २७८॥

पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति होने वाले संतो के ज्ञान को नही मानकर उलटी ज्ञान की निन्दा करते है। जैसे लडके असली हाथी को देखकर भाग जाते है।

ब्रह्म लग इनकी बुद्धि नांही, जे मोकूं क्या जांणे।
पूरण ब्रह्म आप ही तिलभर, मोकूं नांय पीछाणे ॥ २७९॥

म:फ: है कि इन ज्ञानी, ध्यानी, पंडितो की बुद्धि पारब्रह्म तक के ज्ञान की भी नहीं है तो वे मेरे केवल ज्ञान को क्या जानेंगे। पूरण ब्रह्म याने राम कृष्ण भी जो अवतार लेकर आते हैं वो भी मेरे केवल ज्ञान को नहीं जानते।

जे आ बात सुणे नर कोई, मान सके नही भाई
तो दिष्टांग बतावूं जग में, प्रगट कहूं मैं लाई ॥ २८०॥

म:फ: है कि मेरी बात सुनकर जो इसको नही मानते हो तो जगत का दृष्टान्त देकर प्रगट में बतलाता हूं।

जिऊं मां बाप जग में दोई, सुत वित नार कहावे।
जहां बैराग ऊपनो ताकूं, सोई कुल तज बन जावे ॥ २८१॥

जैसे जगत में माता पिता लडका धन व स्त्री सब ही है जिसे बैराग होता है वो ही इन सबको छोडकर जाता है।

यू सतस्वरूप चिन्यां मांय, ब्रह्म पणो सब जावे।
ओपत खपत काहे कूं होती, जीव ब्रह्म क्यूं कवावे ॥ २८२॥

सतस्वरूप के:पद आ:पद की प्राप्ति होने पर माया ब्रह्म के पद से अलग हो जाते है उस पद में उत्पति प्रलय नही है इसलिए आवागवण में नही आते है। जीव ब्रह्म के पद से आता है के:पद आ:पद से नही आता है यही जीव ब्रह्म क्यूं कुवावे है।

अेक और दिष्टांग बतावुं, ब्रह्म घटो घट होई।
वेद पाठ पढिया बिन राजा, रंक न बोले कोई ॥ २८३॥

म:फ: है कि अेक और दिष्टान्त बताता हूं, ब्रह्म सब घटो में व्यापक है, ज्ञान प्राप्त हुये बिना चाहे राजा हो चाहे रंक हो, वेदों को नही पढ सकता।

अकलवान बलवान सूर वौ, बादस्या लग भाई।
वेद पढयां बिन बोल न सके, ईउं कुदरत है कांई ॥ २८४॥

ज्यादा बुद्धि वाला हो, बलवान हो, शूरवीर हो, चाहे बादस्या हो, ज्ञान हुवे बिना वेद नही पढ सकता। ऐसे ही कुदरत याने सतशब्द ने: अंच्छर की प्राप्ति के बिना के:पद आ:पद की प्राप्ति नही होती है।

एक और दिष्टांग बतावुं, पिंडत वेद सरावे।
मूढ न सुणत विज्ञान ऊपनो, वो वे घर छोड न जावे ॥ २८५ ॥

एक और दृष्टान्त बताता हूं। पंडित वेदों के ज्ञान की सराहना करते हैं। म:फ: है कि मेरा केवल ज्ञान विज्ञान है, जो मूर्ख होते हैं वो इसको नहीं सुणते यानि वे जो साधन कर रहे हैं वो नहीं छोडते।

ईऊं ब्रह्म सुणो सत केऊं, जांणे धार सके नही कोई।
ज्यूं विज्ञान समझकर सत बिन, पच पच मुवा न होई ॥ २८६ ॥

जैसे ब्रह्म को सब सत कहते हैं लेकिन सत प्राप्ति का ज्ञान धारण नहीं करते। यह ज्ञान, विज्ञान है। और साधनों से यह सत यानि ने:अक्षर नहीं आता। चाहे पच पच कर मर जाओ।

॥ इति श्री अगाध बोध ग्रन्थ सम्पूर्ण ॥

卐 ध्यान समाद 卐

मिलिया जाय अरूप सूं, सुख सागर के मांय ।
ज्यां हां पूंता सुखराम कह, जामण मरणो नांय ॥ १ ॥

निरंजण निराकार अरूप याने आ:ब्रह्म में जाकर मिले है जहां सुख मिल कर नही मिटता, इसलिए इसको सुख का सागर कहा है। म:फ: है कि वहां पहुंचने पर जन्म मरण से रहित हो जाते है। निरंजन निराकार केवल पद आनन्द पद ही अरूप है।

ईस न आद न उत्पति, ना दुजा को भेल। सुखराम अरूपी बाग में, आक न आम न केल॥ २ ॥

निरंजण निराकार के:पद में शिव ब्रह्म व शक्ति नही है, न ही उत्पति है, न ही किसी दूसरे का भेल है। उस अरूपी बाग में यहां के फलों के वृक्ष वहां नही है।

गरजे बोहो मेहके घणो, दिष्ट न देखयो जाय।
सुखरामदास उण बाग में, अेक तमाशो मांय ॥ ३ ॥

शरीर रूपी बाग में सतशब्द की बहुत गरजना हो रही है। महके याने बहुत ही सुख आ रहा है। दृष्टि से देखा नही जाता है उस बाग में अन्दर अेक तमाशा और हो रहा है।

बिन पांखा पर बायरो, भंवर भणके मांय। दिष्ट मुष्ट में न बंधे, भोलप रती न काय ॥ ४॥

बिना पांखा बिना परा के भंवर भणके याने शब्द अन्दर गुंजार कर रहा है। वह न तो दृष्टि में है, न ही मुठी में बंधता है और रती भर भी भोलप नही है। ऐसा भी कह सकते है यहां शब्द को भंवर की उपमा देकर समझाया है।

भंवरे बाग ढंढोलिया, कली कली रस लेह। पीवत परसत प्रेम रस, दिष्ट न आवे देह ॥ ५ ॥

शब्द ने सारे शरीर रूपी बाग को ढूंढा है। शरीर में सब स्थानो पर अनुभव करना ही कली कली रस लेना है प्रेम से शब्द के रस का अनुभव करते हुये भी दृष्टि में नही आता याने चर्म चक्षुओ से नही दिखता है।

ब्रह्म बाग में रम रहयो, मगन भयो मन मांय।
सुखरामदास ऊंण भंवर के, अे निश सरभर जांय ॥ ६ ॥

ब्रह्म बाग यानि शरीर रूपी बाग में रम रहा है, मन में खुशी हो रही है। म:फ: है कि जैसे बाग में भंवरा फूल पर मंडराता है वैसे उस भंवरे के समान शरीर रूपी बाग में सतशब्द मंडरा रहा है।

फूल फूल की बास ले, भंवर रहयो मसताय।
सुखराम तलब पाछी पड़ी, ऊड नही दूरो जाय ॥ ७॥

शरीर के सभी कंवलो पर सतशब्द आकर आगे बढता है और गिगन पर आकर अपना निवास कर लेता है। आत्मा को जब भी उस भंवरा यानि ने:अक्षर के दीदार की तलब पडती है तो वह उस शरीर के ऊपर ही अखण्ड रहता है। दूर नही है।

मूदे बाग में रूंख बो, सिरे पोप में फूल। सुखराम ऊं भंवर सो, रहयो रात दिन झूल ॥ ८॥

म: उदाहरण से समझा रहे हैं कि जैसे बाग में खूब पेड होते है और उनके सिरे यानि ऊपर फूल होते हैं और उन फूलो पर भंवरा मंडराता है और उनकी खुशबू का आनन्द लेता है। ठीक इसी प्रकार चौरासी लाख योनिया पूरी सृष्टि में है और उनमें से नर शरीर रूपी जो पेड है और उनमें से भी जो नरनारी ब्रह्म ज्ञान धारण करते है तो उनके सिर के ऊपर यह ने : अक्षर रूपी भंवरा रात दिन झूलता है।

पोप न छोडे पलक जूं, रहयो रीज उण धाम। सुखराम दास इण फूल में, चंचल चेतन काम ॥ ९॥

त्रिकुटी में शब्द का अनुभव कर यह क्षण भर भी नही छोडता है। उस स्थान पर खुश हो रहा है यहां से ही सृष्टि की उत्पति होती है, यही चंचल चेतन कामना है।

दोय पांख के बीच में, ईमरत चुवे सुबास। सो रस ले सुखराम के, भंवर तजे जुग आस ॥ १०॥

त्रिकुटी के स्थान पर शब्द का आनन्द आना ही ईमरत के जैसा स्वाद आता है। म:फ: है कि उसका आनन्द लेकर जगत की आशा छोड दी है।

निरभे ने:चल मगन सो, आद न आस न चाय ।
सुखराम सहज सुख त्रिगुटी, भंवर बिराजे मांय ॥ ११॥

यहां निरभै ने:चल व खुश है व संसार की चाहना नही है, यही आद न आस न चाय है। म:फ: है कि शब्द का अनुभव त्रिकुटी पर होना ही भंवर बिराजे मांय है।

सातग राजस तामसी, अे तीनो उण धाम।
सुखराम निरत कर परखिया, काया उतपत काम ॥ १२॥

सातग राजस तामसी याने विष्णु, ब्रह्मा, महादेव तीनो के धाम यहां है। म:फ: है कि मैंने इसको अनुभव किया है। काया उत्पति का स्थान भी यही है।

ज्यां सुं उड जुग आविया, देखयो वो घर जाय। सुखिया बरसे तेजसो, देव बिराजे मांय ॥ १३॥

आत्मा परब्रह्म से के:पद में जाने के लिये बिछडी थी और उसने केवल पद पा लिया। उस पद में तेज बरसता है और आत्मा वहां बिराजती है।

इण घर सुं हम बिछडिया, भंविया भवन अपार।
दुख सुख सो सुखराम केहे, लागा हंस जुग लार ॥ १४॥

परब्रह्म पिता के देश को छोडकर कई शरीर धारण किये है यही भंविया भवन अपार है। शरीर धारण करने से कई सुख दुख इसके साथ लग गये है।

सुखराम केहे सब सांभलो, अेक देश के मांय।
मन पवना दोनो मिले, सांस शब्द गरणाय ॥ १५॥

म:फ: है कि सब सुणो नाभी स्थान पर स्वांसा के साथ मन लगाकर भजन करना ही सांस

शब्द गरणना है।

दुजी पोल्या में सुणो, उभै अधिक पैदास। तां आगे सुखराम केह, शेष पंयाला बास ॥ १६ ॥

दूसरी पोल याने ब्रह्मा के स्थान से सृष्टि उत्पति है। उससे आगे पाताल में शेषजी का स्थान है।

अेक अंचबो देखयो, नाग लोक में जाय। दुनियां कूं सुखराम कह, नागण शेष ने खाय ॥ १७॥

नाग लोक में जाकर अेक अचम्भा देखा है। म:फ: है कि केवल भक्ति करने वाले को शेष के स्थान पर कोई बाधा नही रहती याने कोई नही रोकता, यही नागण शेष ने खाय है।

लोक बसे पाताल में, तिनकी या बिद होय। सब सिर छत्र धात का, नर नारी के जोय ॥ १८ ॥

जो नर नारी भजन कर शेष के स्थान मे जाते है। उनके सात धातु का शरीर ही छत्र धातु का है।

च्यार नार नर अेक है, रहे बराबर जोय। अेक पुरूष के मान है, दुजी कम कम होय ॥ १९ ॥

सुरत निरत लिव विरह ये चार नार, पुरूष अेक याने शब्द के साथ बराबर रहती है, अेक नार याने लिव तो शब्द के साथ बराबर रहती है दूसरी कम कम है।

अेक अेक सुं खाटरी, तिजी उंण सुं जांण। चौथी तो सुखराम कह, निपट बावनी ठांण ॥ २० ॥

लिव से सुरत निरत को छोटी इसलिये कहा है कि लिव लगने के बाद अखण्ड रहती है और सुरत निरत लगानी पडती है। म:फ: है कि चौथी याने विरह तो बावनी याने कभी कभी ही आती है।

शेष लोक सब देखियो, अेक तमाशो और।
सुखराम छत्र नर नार सिर, दिन दिन काढे मोर ॥ २१ ॥

शेष लोक सब देखा उसमें अेक तमाशा है। सब नर नार के सिर पर छत्र है। ऊंचा नीचा शरीर होता है यही दिन दिन काढे मोर है।

ऊंचा नीचा होत है, इत ऊत पलट न जाय। शेष लोक सुखराम कहे, सबके अे अंग माय ॥ २२ ॥

इधर उधर पलटे नही है। यही ऊंचा नीचा होना है। म:फ: है कि शेष लोक स्थान में सबके ये अंग है।

मुख शेहंसर जीभ्या घणी, सब फण नीचे होय।
ररंकार सुखराम केह, रटे निशो दिन जोय ॥ २३ ॥

शेषजी के एक हजार मुख है, उन सबमें दो दो जीभ है, सब के फण नीचे है। म:फ: है कि वे रात दिन ररंकार का भजन कर रहे है।

अनन्त तमाशा और है, कहां लग केहे सुखराम ।
हम ताकिदी जल्दी सुं, जाणो सत उण धाम ॥ २४॥

म:फ: है कि अनन्त तमाशे है मैं कहां तक वर्णन करूं मुझे जल्दी से सतधाम को जाना है।

नार तीन चंचल भई, हमको किया उदास।
शेष लोक सब देखियो, तजयो पंयाल को बास ॥ २५ ॥

सुरत निरत लगाकर विरह के साथ भजन किया यही उदास होना है। शेष लोक का अनुभव करना ही देखना है, उससे आगे बढना ही पंयाल का बास छोडना है।

भूल रया था देश कूं, आद ठिकाणो राम। सुखिया सतगुरु भेद दे, पुंचाया निज धाम ॥ २६ ।

आद ठिकाणो याने पारब्रह्म परमात्मा के स्थान को भूल रहे थे। म:फ: है कि सतगुरु ने भेद देकर उस पद की प्राप्ति करा दी।

काया में ब्रह्मण्ड रे देखया तिनूं लोक। सुखिया तां पर और रे, दरसी सतपद मोख ॥ २७॥

खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड का शरीर में अनुभव होना ही तीन लोक देखना है। म:फ: है कि इसके ऊपर याने पारब्रह्म के ऊपर के:पद आ:पद का अनुभव होना ही सत पद मोख दरसना है।

ताला तोडूं भेद सूं, खोलूं पोल विचार। सुखराम दास गढ पर चढे, शिरे पोलिया लार ॥ २८ ॥

भेद से भजन करना ही ताला तोडना है। विचार करना पोल खोलना है। म:फ: है कि के:पद आ:पद की प्राप्ति के लिये सतशब्द का साथ रहना ही सीरे पोलिया लार है।

धुजाया सब शहर कूं, कियो जेर निराट।
सुखराम ब्रह्म मुजरे चल्या, ज्यां खुली मेर की बाट ॥ २९ ॥

शब्द की जागृति होना ही शहर का धूजना है। सब वृतियां को वश में करना ही जेर निराट करना है। म:फ: है कि ब्रह्म के मुजरे याने प्राप्त करने हेतु चले तब मेरू का रास्ता खुला है।

मानी संक निराट ले, मिल्या अगावुं आंण। सब नगरी सुखराम केहे, छोडी कडवी बांण ॥ ३० ॥

सब वृतियो का भजन में लगना ही सब शंका मानकर आगे निकलना है। शरीर में बुरे विचार कर्म छोडना ही कडवी बांण छोडना है।

बडा पटायत भोमिया, हाकम सहेत बखाण।
सुखराम चल्या सत श्याम पे, हुवा लीण सब जांण ॥ ३१ ॥

काम क्रोध अहंकार मद और हाकम मन के सहित सत श्याम को प्राप्त करने वाले जनो के यह निर्मल होवे तब जनो को उस पद की प्राप्ति होती है।

पेली पोल उगाड़ दी, प्रेम सिपाही जाग। तब हम आगे ये हुवा, मन बुध चित बैराग ॥ ३२ ॥

प्रेम के साथ मन बुद्धि चित बैराग के साथ भजन करना ही पेली पोल उगाडना है।

खोली पोल खटाकदे, वहां ढील नही होय। धुजी धर सुखराम के, बस्ती नगरी लोय ॥ ३३ ॥

सतगुरु विधि से भजन करने से शब्द की जागृति होना ही शरीर का बस्ती नगरी का धूजना है व पोल खोलना है।

दुजी लग सुखराम के, आगु किया तब प्रांण।
तीन लोक धर शहर को, आयो मुदी बखांण ॥ ३४।।

दूसरी पोल में प्रांणो को आगे कर दूसरे स्थान पर शब्द का अनुभव होना व तीन लोक और शरीर से अलग करने वाला शब्द का अनुभव होना ही आयो मुदी बखाण है।

जाणे वो आगे किया, पाछे संत सुजाण। अे जोधा सुखराम के, तिजी पोल बखाण ॥ ३५ ॥

शब्द आगे है पीछे सूरता है। शब्द के साथ सूरता जाती है इसलिए जोधा कहा है याने शब्द नाभी में आना है।

पावन परसण शील जल, तीन लोक नो नाथ।
वहां बिलम्या सुखराम के, राग रूप बोहो भांत ॥ ३६ ॥

स्वांसा के आधार से साधन करने वाले व नो नाथो का साधन करने वाले तीन लोको के राग रूपो व खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड में ही रहते है।

अेता चाला चालिया, करे अनोपम ख्याल।
सनमुख सच सुखराम के, दसुं दृग लिया पाल ॥ ३७॥

रिद्धि सिद्धि के अनुपम ख्यालों में लगे रहकर दसो इन्द्रिया व स्वांसा से अलग नही हो सकते।

बावन चोवटा बीस ले, फिरिया गली अनेक।
बिध बिध का सुखराम के, दरसण परसण पेख ॥ ३८॥

बावन अक्षरो के ज्ञान का साधन करने से सभी जगह फिरी। यानि तीन ब्रह्म के तेरह लोक जीव ब्रह्म व जीव ब्रह्म के तीन लोकों में यानि इन जगहों पर कई बार शरीर धारण किये।

तीन चोवटा राग हुवे, दोया ज्ञान विचार। छठे में सुखराम कह, सब तत छांणण हार ॥ ३९॥

तीन चोवटा यानि बेद भेद लबेद तक राग रंग है। दोय ज्ञान यानि सुक्ष्म वेद तथा सुक्ष्म वेद का भेद का विचार किया। तब छठे में ने:अक्षर के साथ आत्म तत ने परमात्म तत को रट कर परमतत का संग कर के:पद में चली गयी।

दोय चोवटा ख्याल है, लीला भोग अनेक। बिसा में सुखराम कह, सब जुग नाचे देख ॥ ४०॥

दोय चोवटा यानि माया व ब्रह्म के पद में अनेक लीला व भोग है। उनके साथ तीन ब्रह्म, तीन ब्रह्म के तेरह लोक, जीव ब्रह्म व जीव ब्रह्म के तीन लोक यानि इन बीस जगह तक आना जाना इसका लगा रहता है। यही सब जुग नाचे देख है।

सब चोवटा के बिच में, हाटां माल अनेक। विध विध का सुखराम कह, खेल तमाशो पेक॥ ४१॥

सब साधनो से फलो की प्राप्ति हो रही है यही खेल तमाशे तरह तरह के नजर आ रहे है।

यां माया आडी फिरे, लुललुल लागे पांय। कांचे कूं सुखराम के, राखे यां उलजाय ॥ ४२॥

यहां तक के साधनो में माया के फलो की प्राप्ति होती है, यही माया का आडा फिरना है, माया के फलो की प्राप्ति की इच्छा से साधन करने वाला माया के फलो को प्रधानता देते है।

हम सारी विध देख के, लियो तत विचार। छाढी अब सुखराम केहे, माया चोपड सार ॥ ४३॥

हमने सारी विध देखकर तत याने ब्रह्म के निज नाम सत नाम के साधन का विचार किया। म:फ: है कि माया प्राप्ति के साधन को छोडना ही माया चौपड से अलग होना है।

प्राण पुरूष कूं पकडियो, शिवगण लियो हाथ। ले नारी सुखराम के, निरपख बोली बात ॥ ४४॥

प्राण पुरूष याने आत्मचेतन के द्वारा सतशब्द का सूरत लगाकर लिव बंध भजन करके आनन्द पद की प्राप्ति का ज्ञान धारण करना ही निरपक्ष बोलना है।

तीन नार नर दोय ले, खोली पोल विचाल। सुखरामदास आगे धस्या, थर रया तेरूपंयाल ॥ ४५॥

सूरत निरत लिव तीन नार, मन व चित ये दो नर के साथ नाभी में भजन किया, यही पोल खोलना है। म:फ: है कि आगे गणेश व शेष के स्थान पर शब्द का आना ही थर रया तेरूपंयाल है।

ब्रह्म जल मंड रूप ले, कोरम शेष बखाण।
सब धुज्या सुखराम के, सगत सेहत चहूं खांण॥ ४६॥

ब्रह्म जल ने मण्ड यानि धरती का रूप लिया। कौरम यानि कछुआ उस पर शेष भगवान बिराजमान होकर पूरी धरती को अपने फन पर धारण कर लिया। यही स्थिति हमारे शरीर की है। जब शब्द शेष के स्थान पर आता है तो सारा शरीर धूजता है।

दोय देश हम देखिया, रूम रूम सुलजाय। जन सुखिया उदास होय, देश तीसरे जाय ॥ ४७ - ४८ ॥

माया ब्रह्म देश है मैने देखे है। इन पदो का अनुभव होना ही रूम रूम सोजना है। अब उदास होकर पारब्रह्म के पद में जाना ही तीसरे देश में जाना है।

तीन पोल में अे मिल्या, बिरह मद बैराग। पांच दोय सुखराम के, संग आठ मो भाग ॥ ४९ ॥

कंठ हृदय नाभी में विरह बैराग के साथ भजन करना ही मिलना है। मन बुद्धि चित अहंकार सूरत निरत लिव और बिरह ये संग लेकर भजन किया।

सातअंश कूं सोजके, किया अेकण सूत। अेता मिल सुखराम के, ली काशी सब थूत ॥ ५० ॥

सात धात के इस शरीर को सोधकर भजन में लगाना ही अेक सूत करना है। इतने मिलकर काया रूपी काशी को सोधा है।

पांचु पंडित हारया, फिर जगजीवन व्यास। काशी सब सुखराम के, छाडी वेद उपास ॥ ५१ ॥

पांचू पंडित यानि पांचो विषय रस हार गये तथा मन भी निजमन हो गया। काया रूपी काशी से जो पहले साधन करती थी उनको छोड दिया।

धुन अेको सब शहर में, रंकार की होय। सुरगुण में सुखराम कह, निरगुण पायो जोय ॥ ५२ ॥

सारे शरीर में ररंकार की ध्वनि हो रही है। इस सुरगुण शरीर में शब्द ब्रह्म की प्राप्ति होना ही निरगुण पायो जोय है।

अमल जमायो शहर में, रंकार को राज। काशी मे सुखराम कह, व्हे अणभै धुन गाज ॥ ५३ ॥

सारे शरीर में ररंकार का अनुभव होना ही राज होना है। काया रूपी काशी में शब्द का अनुभव होना ही अणभै की गरजना है।

जमना काटे लोक सो, बैठा आसण मार। काशी तज सुखराम के, ले गंगा की धार ॥ ५४ ॥

इडा पिंगला सुखमणा के साथ शरीर रूपी काशी को छोडकर सिर उपर होकर त्रिकुटी की धार नहावे।

ज्यां सुं जमना उतरे, गंगा फेर बखाण। या सुध ले सुखराम के, बैठा नावे आंण ॥ ५५ ॥

ज्यां सु जमना उतरे याने मेरूडण्ड पर इडा पिंगला का प्रकट होना ही गंगा जमुना की सुध लेना है व अनुभव होना ही बैठा नहाना है।

मरत लोक में बेह रही, ज्यां हम देखी आय। घाट घाट सब धाम में, नाया बोहो बिद मांय ॥ ५६ ॥

सांस उसांस में भजन करके स्थान स्थान का अनुभव करना नहाना व साधन करना ही देखना है।

अेक घाट पर मानवी, पेडी सोले बखाण। सरब रस सुखराम के, नायर पिया जांण ॥ ५७ ॥

चौरासी लाख योनियो में एक मनुष्य शरीर में ही देवताओं के सोलह विमान होते है। म:फ: है कि सबका आनन्द मैंने भक्ति करके जाणा।

दुजो धाम जुवारियो, ज्याहां जोगी सिन्यास।
पेडिया सुण सुखराम कह, द्वादस परसो बास ॥ ५८ ॥

मैंने हद बेहद दोनों को छोडा जहां जोगी व सन्यासी पहुंचते है। सांस उसांस में भजन कर बारह कंवलो का अनुभव करना ही द्वादस परसो बास है।

बिचे घाट अनेक है, ज्यां त्यां नावे लोय। सुखरामदास ये धाम रे, साधु परसे कोय ॥ ५९ ॥

बीच में कई प्रकार के साधन है। जो मनुष्य अलग अलग नहाते है। बारह कंवलो के ऊपर के:पद आ:पद को साधु याने संत ही परसते है।

तीजे धाम पधारिया, ज्यां गंगा कुण्ड होय। सप्त दीप नवखंड में, चली चहूं दिश जोय॥ ६०।।

तीजे धाम याने नाभी से जो भी साधन किया जाता है नाभी ही गंगा कुण्ड है। जो भी साधन किया जाता है व नाभी से ही सप्त दीप नो खंड में फैल जाता है क्योंकि यहां चौईस नाड का बंध है।

मरतलोक में बेह रही, जाणे बेद कुराण। नो खण्ड बिचे आठ है, जमना गंग बखाण ॥ ६१ ॥

मरतलोक में बेह रही है याने स्वांस के आधार के जितने भी साधन है उनको बेद कुराण जानते है। शरीर में नो खण्ड नो तत लिंग शरीर उसमें पांच प्राण इडा पिंगला, सुखमणा का वर्णन है।

च्यार गंग में दीप सो, नावे तहां नर लोय। सुखराम पांचवी गंग रे, जाणे साधु कोय ॥ ६२ ॥

पारब्रह्म, शिवब्रह्म, चिदानन्दब्रह्म, जीवब्रह्म, इन चार पदों का साधन सब करते है। इनके साधन का सुख आना ही चार गंगा में नहाना है। पांचवा पद के:पद का अनुभव संत ही करते है।

ज्यां चाले आसमान कूं, उलटी फिर वांहा जाय।
सुखराम धार ज्यां सुं पडे, गंगा कुण्ड के मांय ॥ ६३ ॥

संत सांस उसांस में भजन कर सतशब्द की जागृति कर बंकनाल में उलट कर ब्रह्मण्ड से उपर पारब्रह्म के पद में जो सत माया के साथ जो सतशब्द का आधार है वहां पहुंचते है। यही गंगा कुण्ड में धार पडना है। पांच तत्वो का आधार व आत्म ब्रह्म का आधार भी पारब्रह्म का ही पद है।

ऊण धार का अंश सो, च्यार गंग में होय।
फिर यांही सुखराम केहे, बोहो जल भिलीयो जोय ॥ ६४॥

पारब्रह्म के आधार पर शिव ब्रह्म, चिदानन्द ब्रह्म, व जीव ब्रह्म का पद ये चार गंग है, फिर पांच तत्वो के साथ जीव भाव में दस इन्द्रियो के आधार के साधन में लगना ही बोहो जल भिलियो है।

सो हम चांरू परस ली, तीरथ किया अनेक।
सप्त दीप पाताल का, सुखिया भिन्न भिन्न पेख ॥ ६५ ॥

ऊपर माफिक चारो पदो का अनुभव करना ही परसना व तीरथ करना है, सारे शरीर में खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड का अनुभव करना ही भिन्न भिन्न देखना है।

सब जोया सब परसिया, सारा जुग को खेल। ऊण गंगा के घाट पर, सुखिया सातू पेल ॥ ६६ ॥

म:फ: है कि मैंने सब देखा है, सारे शरीर का अनुभव किया है, ऊण गंगा के घाट पर याने के:पद आ:पद में पहुंचने पर सात धात के शरीर से संबंध नही रहता है, यही सातू पेल है।

जोगी जंगम सेवडा, खट दरशण सब लोय। ओ घाटो सुखराम कह, बिरला परसे कोय ॥ ६७॥

खट दरशणी जोगी जंगम सेवडा व सब संसारी जो स्वांसा के आधार के साधन करने वाले केवल पद आ:पद की प्राप्ति नही कर सकते। म:फ: है कि उस पद की प्राप्ति बिरले ही करते है।

पिंडत तो जाणे नही, जोगी पावे नांय। आ गंगा सुखराम कह, उलटर वां घर जाय ॥ ६८ ॥

लिखे हुये शब्दो को वांणी व विचार के आधार का साधन करने वाले पंडित व योग के साधन करने वाले को उस पद की प्राप्ति नही होती। सतशब्द के साधन करने वाले ही उलटकर उस पद याने गंगा की प्राप्ति करते है।

हम सारा सब सोजिया, तीरथ धाम मुकाम।
माया अंग सुखराम के, आतम परसण राम ।। ६९ ।।

हमने तीर्थो धामो व स्थानो को देखा, सब माया के है। फलो की प्राप्ति व आत्मा को प्रसन्न करने के साधन है।

मेरा मन माने नही, चंचल हुवा उदास। अे सब उला धाम है, नेहेचल ले सत बास ।। ७० ।।

म:फ: है कि उन स्थानो पर मेरा मन नही मानता, इसलिये यह चंचल होकर उदास हो रहा है। क्योंकि यह सब उली तरफ के है, आगे जो निश्चल व सतधाम है उसे परसना है।

पूरब का सब छांण के, खोली पिछम पोल। आंतर सुं सुखराम के, घाली सुरपुर रोल ।। ७१ ।।

पूरब के सब स्थानो को पारकर बंकनाल की पोल खोली, आगे देवताओं के लोक में आना ही घाली सुरपुर रोल है।

मन निज मन बैराग रे, सूरत निरत ले नार। चौथी सुण सुखराम के, ब्रहन करे पुकार ।। ७२ ।।

मन निज मन याने आत्मचेतन और बैराग सूरत निरत लिव लगाकर चौथी बिरह के साथ भजन करना ही ब्रहन करे पुकार है।

अे सातुं ले उलटिया, तोडिया अवघट घाट। तब सुजी सुखराम के, पिछम सुर की बाट ।। ७३ ।।

मन निजमन बैराग सुरत निरत लिव विरह इन सातो के साथ भजन किया, तब अवघट घाटो को पार किया, तब जाकर पिछम का रास्ता खुला।

या चोकी गणदेवकी, सुध बुध सुमती बात। सातां संग सुखराम के, अे पण किया साथ ।। ७४ ।।

नीचे गणेश का स्थान है वहां पर निज मन, मन, सूरत लगाकर निरत व लिव विरह और बैराग इन सातो के साथ सुध बुध समता को लिया, ये दस साथ हो गये।

सब का चित मन अेक हुवा, जाग्या भाग भल सूर।
पिछम दिश सुखराम केह, बागा अनहद तूर ।। ७५ ।।

सबको साथ लेकर भजन करना ही भाग्य जागना रूपी सूर्य का उदय होना है। पिछम दिशा याने बंकनाल में शब्द का अनुभव होना ही बागा अनहद तूर है।

थररयो सब सुरलोक बहो, जेजे परबत मांय। कर जोड़े सुखराम के, सनमुख सारा आय ।। ७६ ।।

मेरूडण्ड पहुंचना व शरीर का थरथर्राना ही देवताओं के लोक का धूजना व कर जोड कर केवल ग्यान व सतशब्द के सन्मुख रहना है।

जे परबत धर मांय थो, यामें पुरिया होय। सो सारा सुखराम के, परसण पूजे लोय ।। ७७ ।।

पृथ्वी पर जो सुमेरू पर्वत है वैसे ही शरीर रूपी धरती पर मेरू का स्थान ही पर्वत है। इसमें ही देवताओ की पुरीयां है। सारे संसारी देवताओ को प्रसन्नता से पूजते है।

इत कूं गंगा खल हले, इत जमना बहे पूर। तां बिचे सुखराम के, चाले हरिजन सूर ।। ७८ ।।

मेरूडण्ड से बांयी तरफ इडा याने जमना दांयी तरफ पिंगला याने गंगा है बीच में याने इडा पिंगला सुखमणा के साथ भजन करने वाले आगे बढते है।

बिचे बोहो पुरियां घणी, सुर देवां को लोक। डेहकावे सुखराम के, जांणन देवे मोख ।। ७९ ।।

सुमेरू के बीच देवताओं के लोक व पुरीया है, ये सभी देवता साधक को यहां रोकते है क्योंकि अंग लक्षण सही नही है तो आगे जाने से अटकाते है यहां अनेक प्रकार की ध्वनियां में फंसाकर

साधक को आगे नही बढने देते।

घर घर अटके देव सो, लोक पुरी के मांय।
सुख दुख दे सुखराम के, जीण जीण पुरियां जाय ॥८०॥

साधक को हर देवता अपने अपने स्थान में रोकते है क्योंकि देवताओ के स्थान को अपनी ताकत से पार नही कर सकता है। निर्मलता रखेगा तब आगे बढेंगे। उनके लोक व पुरी को जैसे जैसे साधक पार करता है, उसमें सुख दुख का अनुभव होता रहता है।

उलटा जन कूं वश करे, राख्यो चावे मांय। या विध है सुरलोक में, हम देखी है जाय ॥८१॥

देवलोको की ऐसी विधि है देवता जन को अपने वश में रखना चाहते है, आगे नही बढने देते है।

मत मानो सूर लोक की, जे जन मेरा होय। सुख दुख सुं डेहको मती, आराधो अंक दोय ॥८२॥

मेरे बताये माफिक साधन करने वालो को चेताता हूं कि तुम देवताओ के लोक के चेनो को मत मानो और वहां के सुख दुख से घबरावो मत तथा रकार मकार इन दोनो अंक से भजन करते रहो।

जे थोडी सी मान के, हरजन देवे कान। तो दिशे सुखराम के, लीला बोहो बिध आंण ॥८३॥

साधक देवताओ की लीला में जरा सा भी ध्यान देता है तो उसे अनेक तरह की लीलाए नजर आने लग जाती है।

देवलोक सो देखियो, सबके सेत बिमाण। आद जाग सुखराम के, परबत मांय बखाण ॥८४॥

मैंने देवलोक देखा उसमें सब देवताओ के विमान है, सुमेरू में ही देवताओ की आदु जाग याने स्थान है।

ज्यां होय गेलो संत को, घेरे सुर अस्तान। जब सारा सुखराम के, सहज मिले घर आंण ॥८५॥

संतो का रास्ता सुमेरू में ही है। देवता संत को अपने अपने स्थानो में रोकते है। जब संत निरबल होकर भजन में लगे रहते है तो सब देवता खुश होते है जन को रोकते नही है।

सुर तेतीस क्रोड है, दाणु बहोत बखाण। सब बसे सुखराम के, ज्यां सबका घर जांण ॥८६॥

तैतीस क्रोड देवता है, राक्षस भी बोहोत है, उन सबका स्थान मेरूडण्ड में ही है।

जम चवदे मोटा सही, क्रोड क्रोड उण लार। सब बसे सुखराम के, ज्यां ही धरम दरबार ॥८७॥

चवदेह मोटे जम है उनमें अेक एक के साथ क्रोड क्रोड जम किंकर है, ओर सब धर्मराय दरबार याने स्थान में रहते है। याने मेरूडण्ड में ही सबका निवास है।

और ऊपायां क्रोड ले, कर देखी सब कोय। जम दाणु सुखराम के, वश नही हुवे जोय ॥८८॥

करोडो साधन करके देखे, लेकिन जम बस में नही होता, दूसरे साधनो से जन्म मरण से रहित नही होते है।

अेके कूं गेह घेरियो, दुजो निकसर जाय। मूल बिना सुखराम के, पच पच मरे बलाय ॥८९॥

दस इन्द्रिया चित मन बुद्धि अहंकार, ये चोवदह जम है, इनमें अेक को बस में करते है तो दूसरा निकल जाता है। सतशब्द ही इन चोवदह जमो से अलग करता है, दूसरे साधन से इन जमों से अलग नही हो सकते। सांस उसांस में भजन किये बिना उस पद की प्राप्ति नही होती। दूसरे साधन करना पच पच मरे बलाय है।

हम कीमत कल देखली, सब का घर अस्तान।
दुजा बस हुवे सुखराम के, सब अेके घर आन ॥ ९० ॥

हमने सब साधन करके देख लिये है, दूसरे सब अेक ही घर में आकर वश में हो जाते है सतशब्द के साधन से ही हंस जम दाणुं व देवताओं के स्थानो को पार कर सकते है।

पांच पचीस चार ले, इत उत नाटा जाय। सब बस हुवा सुखराम के, बंकनाल में आय ॥ ९१ ॥

पांच विषय पचीस प्रकृति गुण चार चित मन बुद्धि अहंकार ये इधर उधर जा रहे थे सो सब बंकनाल में आकर वश में हो गये।

सब का घर ज्युं मेर में, जित सूरज उदि आय।
चहूं दिश जुग में खेल है, नेःचल उण घर मांय ॥ ९२ ॥

सब देवताओ के घर मेरू में है। सतशब्द का साधन ही मेरू को पार करता है, वो ही ज्ञान रूपी सूरज का उगना है। संसार में जितने भी दूसरे साधन है वे सब खेल है। सतशब्द के साथ केःपद आःपद की प्राप्ति होना ही निश्चल होना है।

जित सूरज ऊगे सदा, पिछम सरस बखाण। आ साखी सुखराम के, अरथां सुलटी जांण ॥ ९३ ॥

सूर्य हमेशा पूर्व में उदय होता है, पूर्व के साधनो से केःपद आःपद की प्राप्ति नही होती, पिछम के साधन से होती है, इसलिये संत इसे श्रेष्ठ मानते है। मःफः है कि इस साखी का सुलटा अरथ है।

जब पायो हम देश ओ, मेर मूल मूलतान।
सुरपुर नरपुर नागपुर, फिरयो शकल जुग आन ॥ ९४ ॥

सुरपुर याने देवता के लोक बंकनाल मेरू के बीच है। नागपुर पाताल याने गणेश व शेष का स्थान नाभी तक नरपुर है। इन सबमें फिरने के बाद मेरूडंड पर आये।

सब सुर देख्या अेकठा, ईन्द्रलोक में आय। गण गंदरप गावे घणा, बोहो सुर राग बजाय ॥ ९५ ॥

ईन्द्रलोक में आकर सब देवताओं को इकट्ठा देखा, वहां गण गंदरप गाते है। वहां अनेक रागे होती है।

नाचे खेले कम कमे, तरसावे बोहो रीत। इन्द्रलोक सुखराम के, बोहो दिन आसी चीत ॥ ९६ ॥

देवता देवलोक में नाचते है खेलते है कंप कंपाते है, साधक उन रागनियो को सुनने की इच्छा रखता है, यही तरसना है। ईन्द्रलोक बहोत दिनो तक याद आयेगा।

देवलोक में दुख घणो, जहां आद अस्तान। सुखियां यूं सब जाण के, धरयो ब्रह्म को ध्यान ॥ ९७ ॥

देवतालोक में बहुत दुख है, उनका आदू स्थान मेरूडण्ड है। यह जानकर ब्रह्म का ध्यान ही किया।

हम यामे फिरिया सही, सरब लोक सुरराय। नही मानी सुखराम के, अेक सूं दूजी आय ॥ ९८ ॥

देवता के सब लोको में फिरे परन्तु शब्द के ध्यान के अलावा दूसरी बात धारण नही की।

कर जोड़े अे बीणवे, अेक पग के पांण। देवलोक सुखराम के, हाजर चढी कबाण ॥ ९९ ॥

हाथ जोडते, विनती करते, अेक पग के आधार से खडे रहकर याने मेरूडण्ड पर शब्द आता है जब ऊतानपात बन्ध लगता है। शरीर कबाण की तरह झूक जाता है और साधक के अेक स्वांस में ही भजन होता है, बंध से उसांस रूक जाता है।

अेक तमाशो उण लोक में, सुणज्यो सब जन लोय।

ताव पडे सुरलोक में, चढण ने देवे कोय ॥ १०० ॥

देवलोक में अेक तमाशा है जन सुणो, साधक को यह कष्ट होता है कि सुरता शब्द का आनन्द नही ले सकती, ये ही रूकना है।

वा सतगुरु का बैण सुं, लिया सुरत संभाल।
इत हम कूं सतगुरु कयो, सुखिया सुरपुर काल ॥ १०१ ॥

सतगुरु के वचनो के माफिक सुरत लगाकर भजन किया और इधर सतगुरु ने कहा देवलोक तक काल है।

ज्यां हां हम ज्ञान संभालियो, निज मन कियो विचार।
इण जागा सुखराम कहे, बोहो जन चल्या हार ॥ १०२ ॥

देवलोक में पहुंचकर ज्ञान से सोच विचार कर निजमन याने आत्मचेतन से विचार किया। म:फ: है कि देवलोक में बहोत से साधक आकर रूक जाते है, आगे नही जाते है।

सुखदेव सा पाछा पडया, सो सुण यो अस्तान।
सुखिया सतगुरु याद कर, तब देवे अे जान ॥ १०३ ॥

व्यासजी के पुत्र सुखदेवजी भी राजा जनक से ज्ञान प्राप्त करने से पहले इस स्थान से आगे नही जा सके। म:फ: है कि सतगुरु विधि से भजन करने पर ही साधक यहां से आगे जा सकता है।

सातू जोधा संग ले, तीन अगावु राख। परवानो सुखराम के, निश दिन आगल भाख ॥ १०४ ॥

सात जोधा मन निजमन बैराग सुरत निरत लिव विरह है। तीन अगावु सुध बुध समता है तथा परवाना सतशब्द के साथ इन दसो के साथ रात दिन भजन किया।

देवलोक में चालणो, खरा खरी को काम। जन सुखिया इन्द्र डरे, सुरग लोक सब धाम ॥ १०५ ॥

शरीर में जहां देवों की पुरिया है वहां चलना बड़ा मुश्किल है। म:फ: है कि शरीर का राजा मन रूपी इन्द्र भी डरता है। कि अब मेरा राज चला जायेगा।

डरता भेजे मोगणी, पांच बांण दे हात। कल कीमत सुखराम के, सब पाडण की बात ॥ १०६ ॥

मन रूपी इन्द्र भी आत्मा को डराने के लिये पांचो विषय रस को तेज कर देता है। और अपनी सारी ताकत लगा कर साधक को रोकना चाहता है।

सुरग लोक हम देखियो, दगाबाज सब होय।
सब घाटा सुखराम के, बोहो विध बांध्या जोय ॥ १०७ ॥

शरीर रूपी स्वर्ग लोक को हमने देखा, सब जगह साधक को रोकना चाहते हैं। सभी घाटों को बहुत विधि से बांध रखा है।

जन कूं रोके बीच में, चढण न देवे ठोड। सुरगलोक सुखराम कह, दे नित पाछो मोड ॥ १०८ ॥

शरीर में जब शब्द देवों की पुरियों में आता है यानि स्वर्ग लोक में आता है वहां का राजा मन साधक को वहां से मोड देता है। आगे नही बढने देता है।

घणा घणी जो बल करूं, ज्यूं ज्यूं लिव संग लेह।
सुरग लोक सुखराम कह, तो ही जाण न देह ॥ १०९ ॥

बहुत शुरवीरता से लिव बंध भजन करता हूं तो भी स्वर्ग का राजा मन नित्य वापस साधक को मोड देता है।

परथम पाडे अवस कर, तिण में फेर न सार।
देवलोक सुखराम के, हम देख्यो ज्यो जार ॥ ११० ॥

प्रथम साधक को अवश्य पीछे फेर देते हैं, इसमें कोई फेर सार नही है। हमनें शरीर में देवलोक के स्थान को देखा है।

सुरग ईकीसो देखिया, सबकी आ बिध रीत।
सुखिया गेले बीच में, दुख सुख आसी चीत ॥ १११ ॥

इकीस स्वर्गो को देखा, इनकी भी यही रीति है। ऊपर जाने के रास्ते सुख दुख का आना ही सुख दुख आसी चीत है।

पुरियां सबे सुमेरू में, इण उणयारो होय। सुखिया इंडो ढेल को, चौपड पासो जोय ॥ ११२ ॥

शरीर में देवताओं की पुरिया सुमेरू में हैं उनका उणियार इस तरह का है जैसे मिट्टी का ढेला होता है वैसी। तथा चौपड में पासा जीतता है। तो जो साधक रटना रूपी पासा चलायेगा तो मिट्टी के ढेले जैसी पुरिया अपने आप फूट जायेगी, और साधक उस स्थान से आगे बढ जायेगा।

सोले बडा विमान है, तिण में आठ बखाण।
जन सुखिया ये देवता, फिरे शकल जुग आंण ॥ ११३ ॥

देवताओं के सोलह विमान बडे है, जिनमें आठ मुख्य है। सब देवता इन विमानो में ही जगत में फिरते है।

पुरियां सब सुमेरू में, हम सब देखी जाय।
जन सुखिया जुग में फिरे, सबे बिमाणा मांय ॥ ११४ ॥

सब देवताओ की पुरियां सुमेरू में है हमने देखी है। विमानो से ही देवता सारे संसार में फिरते है।

ब्रह्मा इन्द्र महेश का, बिसन सगत शिव सूर।
इनका बडा विमान है, प्रीतम का बोहो नूर ॥ ११५ ॥

ब्रह्मा, इन्द्र, शंकर, विष्णु, शक्ति और सूर्य के विमान बडे है। लेकिन जब तक उस परमात्मा का नूर आत्मा शरीर में है तब तक वो विमान काम में आते है।

कामदेव गणपत रे, गवर सरस्वती होय। सब देवत सुखराम कह, बिना विमाण न कोय ॥ ११६ ॥

कामदेव गणपत पार्वती सरस्वती याने सब देवताओ के विमान है, बिना विमान कोई देवता नही है।

वां ब्रह्मा के हंस है, यां कहिये सो हाथ। जन सुखिया खण्ड पिण्ड की, सारी अेको बात ॥ ११७ ॥

वहां ब्रह्मा वाहन हंस है शरीर में वाहन हाथ है। म:फ: है कि खण्ड पिण्ड की बात एक सरीसी है।

हम काया सब थूथ के, देख्या तीनूं लोक। सुरग नरक सुखराम के, इस विध सारा थोक ॥ ११८ ॥

सारे शरीर को सोजनकर तीनो लोको को देखा है इसमें स्वर्ग और नरक भी है।

खंवा विस्न, शशी सूर के घ्राण, सगत के सांस। ईन्द्र के सुखराम के, पांव अंगूठे बास ॥ ११९ ॥

शरीर में विष्णु का वाहन कंधा, चन्द्रमा व सूर्य का नाक, सगती का सांस है। ईन्द्र का निवास पांव के अंगूठे में है।

शंकर के चख नेण है, कतर श्याम मुख होय।
बिवाण कहया सुखराम के, काया मध सब जोय ॥ १२० ॥

इस तरह शरीर में आंखे शंकर की, मुख कार्तिक स्वामी का वाहन है। म:फ: है कि यह सारे विमान शरीर में ही है।

कवित्त : ब्रह्मा वाहन हंस, बिसन के खग कहिजे। चन्द्र सूर के घ्रांण, मिरग बाहण लहिजे॥
ईस नांदियो नैण, सगत सिंह सांस बखाणो। कतर श्याम मुख मोर, ईन्द्र काना कुंजर ठाणो॥
सब देवत के विमान है, देवा आगे लीण। सुखरामदास काया मधे, लिया बिवाण सब चीन ॥ १२१ ॥

ब्रह्मा का वाहन हंस व विष्णु का गरूड पक्षी है। चन्द्रमा और सूर्य का वाहन शरीर में नाक है वहां पर मिरग पशु है। महादेव का वाहन शरीर में आंख बाहर नंदेश्वर है। सगत का सांस व सिंह है। कार्तिक स्वामी का मुख व मोर है, इन्द्र का कान व हाथी है। म:फ: है। ये सब विमान काया में ही है।

साखी : सब देवत के विमान है, काया में सुर धाम।
सब देख्या सुखराम के, मुख शिवरण कर राम ॥ १२२ ॥

देवताओं के सबके विमान है। इनके स्थान भी शरीर में है, इन सबका सतगुरु विधि से भजन कर अनुभव किया है।

पूरब सोजी पंयाल कूं, पिछम सुर नो देश। धामा बिच सुखराम के, न्यारा व्हे नर बेस ॥ १२३ ॥

पूरब में कंठ कंवल से गणेश स्थान तक सोजना की है। पिछम में देवताओं के लोको को सोधा जो अलग अलग देवताओं के अलग अलग धाम है।

सुरग ईकीसो देखिया, सब के सिर जम दूत। हम आया उण देश में, झूंठा दरशे पूत ॥ १२४ ॥

ईकीसो स्वर्गो को देखा उनके ऊपर जमराय का स्थान मेरूडण्ड है यहां तक के पद के सब सुख झूंठे दरसते है।

तीन लोक कूं घेरियो, सब कूं कियो जेर। मेर घाट सुखराम के, ऐसा दुर्लभ न फेर ॥ १२५ ॥

यमराज ने तीन लोको में सबको वश में कर रखा है, यही घेरना है। म:फ: है कि मेर स्थान को पार करना बडा मुश्किल है।

तकड़ बंध गाढा करे, देवे बहो शीर मार। ऊण आगे सुखराम के, सब जुग चाल्यो हार ॥ १२६ ॥

मेरू स्थान पर शब्द आने पर उतानपात बंध लगता है। इस स्थान पर सब साधक हार जाते है।

दुजा की मैं क्या कहूं, मेरी करूं पुकार। मेर मांय सुखराम के, सतगुरु जाणन हार ॥ १२७ ॥

म:फ: है कि मैं दूसरो की क्या कहूं मेरी ही बात कहता हूं कि मेर का घाटा बडा कठिन है। इसे केवल ग्यान से ही समझ सकते है।

ऐसा दरशे जोर सो, तेज खीयो नही जाय। मन पुठा सुखराम के, ऊण घर चढे न आय ॥ १२८ ॥

उस तेज को सह नही सकते, ऐसा दरशता है। भजन में मन नही लगना ही पीछा पडना है, आगे नही बढने देता।

पाछा आवे ढेल के, सुरग लोक के मांय। जम छाया सुखराम के, मोसे सही न जाय ॥ १२९ ॥

म:फ: है कि जमराज की छाया मुझ से सहन नही होती, ध्यान देवताओं के लोक में पीछा आ जाता है, यहां जम का व देवता का बडा जोर है। निरबल के बिना आगे नही बढ सकता।

सनमुख क्युं कर सेहेत है, जम जालम के घाट।
यम राह डांडी पीठ में, शिर ऊपर कर बाट ॥ १३० ॥

यमलोक में यमराजजी का तेज सन्मुख सहन नही कर सकता क्योंकि यह यमराज जी के यहां कई बार मार खा कर गया है। यमराज जी का रास्ता शरीर में पीठ के पीछे सिर के ऊपर से होकर जाता है।

वो तेज करूर है, जमराय के मांय। सुखराम दास कोई सूर वां, सो शिर पर होय जाय ॥ १३१ ॥

यमराज का तेज बडा भारी है। कोई शूरवीर ही यमराज के सिर पर होकर जाता है।

बडो अचंबो एक यो, पांव पडे सब कोय। जम दाणुं सुखराम के, हरजन पे बस होय ॥ १३२ ॥

यह बडा अचम्भा है कि वहां जमराज जी के सब पांव पडते है। लेकिन म:फ: है कि जमराज भी सतशब्द की भक्ति करने वालों के वश में होता है। क्योंकि साधक के ऋण व कर्मो का खात्मा हो जाने से जमराज जी आगे जाने देते है।

धूजे निपट निराट सो, बोहो दरशण की चाय।
तोई जम छाया सुखराम के, मोपे सही न जाय ॥ १३३ ॥

जमराज भी जन सु धूजता है और बोहोत दरशण की इच्छा भी रखता है तो भी जमछाया याने तेज सहा नही जाता है।

देख्या जम अस्तूल सो, बोहोत करारो काम।
बंध लागे सुखराम के, चिगसणन दे उण धाम ॥ १३४ ॥

जमो का काम बडा करारा है उस स्थान पर ऐसा बन्ध लगता है कि ईधर उधर नही सरक सकता। मेरूडण्ड याने जम के स्थान पर जाकर देखा।

आगो पाछो सोज के, नख चख शकल शरीर ।
मेर जम अस्तान में, चिगसणन पावे बीर ॥ १३५ ॥

मेरू स्थान पर ऐसा बन्ध लगता है ईधर उधर नही सरकता है आगे पीछे याने शरीर की सोजना की है।

मन बुध चित बैराग ज्युं, हाजर व्हे उण धाम।
तो जीते सुखराम के, जम जालम का गांव ॥ १३६ ॥

जम स्थान पर मन बुध चित बैराग के साथ भजन करने पर ही जमराज के स्थान को पार कर सकता है।

सुध बुध मंछा मान ले, सब हाजर यो होय।
जम मेर अस्तान में, चिगण न पावे कोय ॥ १३७ ॥

सुध बुध इच्छा को मान मनुहार के लिये रखता है तो मेरू के स्थान से आगे नही बढ सकता।

अेसा ग्रह काठा करे, हाथ पांव सब देह।
मुख जीभ्या सुखराम के, भोजन भजन न लेह ॥ १३८ ॥

सारे शरीर के हाथ पांव को जकड लेता है। जिससे मुंह और जीभ्या से न तो भोजन कर सकता है न भजन कर सकता है।

चलण न देवे पेंड भर, इत ऊत मुड़िया न जाय।

अैसो दुख सुखराम के, जम लोक के मांय ॥ १३९ ॥

जमलोक में ऐसा बडा दुख है कि साधक अेक पेंड भी याने थोडा सा भी नही चल सकता है न इधर उधर मुड सकता है। ऐसा बंध लगता है।

आगे पाछे सोज ले, सांच झूंठ अेनाण। जमघर में सुखराम के, सब करणी को छांण ॥ १४० ॥

आगे पीछे जो भी साधन किया है उसकी सांच झूंठ की परीक्षा जमराज के स्थान में होती है। यह सब करणियो का छांण है।

काचा पाका परख है, मेर डण्ड के मांय।
जमलोक सुखराम केह, बिरला जित्यो जाय ॥ १४१ ॥

भजन करने वाले साधक की परीक्षा मेरूडण्ड में होती है। कच्चा है या पक्का। बिरले जन ही मेरूडण्ड को जीत सकते है।

तड़ फड़ उठे जीव सो, ले काया गढ़ घेर। कुण बांधे सुखराम के, जम सामी शमसेर ॥ १४२ ॥

जीव जम स्थान में घबडा जाता है। शरीर रूपी गढ घेर लिया जाता है। जमराज के सामने कौन ठहर सकता है।

चवदे तिनूं लोक सो, सब घेरे जमराय।
कुण जीते सुखराम के, जम जालम सुं जाय ॥ १४३ ॥

तीन लोक चवदा भवन को जमराज ने घेर रखा है याने वश में कर रखा है। जमराज के सामने कौन ठहर सकता है?

धरम पुन्न जिग जाप की, जप तप करणी अेक।
हम देखी सुखराम कह, सब ही की जम घर देख ॥ १४४ ॥

धरम पुन्न जिग जप तप करणी इन सब की पहुंच देवलोक तक की है। वहां से आना जाना है।

हम देख्या संत सूरवा, दिवी दाद निराठ। सात रोज सुखराम के, घेरी जन की बाट ॥ १४५ ॥

संतो की कृपा से सतगुरु विधि से भजन करने पर भी म:फ: है कि मुझे भी सात दिन तक रोक लिया ।

पावन चाडे कष्ट सुं, पूरब खेचे सांस।
जिन का घर सुखराम के, जमपुर सनमुख बास ॥ १४६ ॥

पूर्व के संखनाल के साधन सांसो को खेंचकर ऊपर चढाने वाले जन्म मरण से अलग नही हो सकते। यही जमपुर सनमुख बास है।

अेक न माने जम सो, सब कूं राखे घेर। ब्रह्म भेदी सुखराम के, तां आगे जम जेर ॥ १४७ ॥

जमराज किसी की बात को नही मानता उसने सबको घेर याने वश में कर रखा है। म:फ: है कि ब्रह्म भेदी याने सतशब्द का साधन करने वालों के वश में हो जाता है।

तो ही गुण बरते खरो, हम देख्यो है जाय। सात रोज सुखराम के, हम अटकाणां मांय ॥ १४८ ॥

जमराज ने हमको सात रोज तक जमलोक में रोक लिया। जमराज का स्थान प्राक्रम बरतता ही है।

मेर लंघे सो सूरवा, धरमराय को घाट। सुखराम दास इण प्रांण कू, दुरलभ पिछम बाट ॥ १४९ ॥

मेरू का स्थान पार करने वाला शूरवीर है, पिछम का रास्ता प्राणो के लिये मुश्किल है।

मेरूडण्ड सुं फेर दे, तिण में फेर न सार। हम देख्या सुखराम के, अवघट घाट विचार ॥ १५० ॥

भजन करने वाले साधक को मेरू के स्थान से पीछा फेर देते है। इसमें फेर सार नही है। म:फ: है कि यह अनुभव करके हमने देखा है।

लांघण को सांसो भयो, घाटे थाह न कोय। अेकण दिन सुखराम कह, हमने दिया रोय ॥ १५१ ॥

मेरूडण्ड को पार करना दुर्लभ है घाटे याने स्थान का थाह नही है। म:फ: है कि एक दिन मुझे भी रोना आ गया।

धीर बंधाई ज्ञान ने, जम जालम के गांव। उतरे यूं सुखराम के, ले सायब को नाम ॥ १५२ ॥

मेरूडण्ड को पार करने के लिये ज्ञान ने धैर्य बंधाया, इस तरह सतगुरु विधि से भजन करके ही मेरू डण्ड को पार किया।

नौका नांव जहाज में, हम बैठा तां माय।
बिना खेया सुखराम के, घाट न उतरयो जाय ॥ १५३ ॥

परमात्मा की नांव रूपी नौका व जहाज में बैठा पर खेये बिना आगे नही बढता, ऐसे ही भजन किये बिना शब्द आगे नही बढता।

खीवी नांव जिहाज कूं, धजा बांध निसाण।
पावन संग सुखराम के, निश दिन चाली जाण ॥ १५४ ॥

जिस स्थान पर शब्द का अनुभव होता है वहां पर सुरत लगाकर रात दिन सांस उसांस में भजन करना ही, खीवी नांव जहाज कू धजा बांध निसाण है।

जब हम घाटो लांगियो, निमख न लागी बार। जब जाय सुखराम के, हुवा यूं पेले पार ॥ १५५ ॥

ऐसे भजन कर मेरू को पार किया तो जरा सी भी देर नही लागी। जब जाकर मेरूडण्ड से आगे बढे, यही पेले पार होना है।

एक तमाशो और है, फेर कहूं मैं आंण। बाजा बोह सुखराम के, धरमराय के जांण ॥ १५६ ॥

धरमराय के स्थान में एक तमाशा यह है कि मेरूडण्ड पर अनेक बाजो की आवाजे आने का अनुभव होता है।

डावे सरवण बाज है, बाजे राग अनेक।
भिन्न भिन्न कर सुखराम के, निरख्या जमपुर देख ॥ १५७ ॥

बांये कान में अनेक तरह की रागे सुनने में आती है। म:फ: है कि मैने भिन्न भिन्न करके जमराज के स्थान को देखा है।

रागा बोहोत अनहद हुवे, जो रीजे जन कोय। चलण न देवे पंथ कूं, अैसी रागा होय ॥ १५८ ॥

अनहद बिना किये अनेक तरह की रागे हो रही है। जो इन रागो में रीज जाता है वो आगे नहीं बढ़ सकता, ऐसी रागे होती है।

सुणज्यो सब शिष पाछला, ओ दिष्टांग अेनाण।
अनहद बाजा झूंठ है, मन मत देज्यो जांण ॥ १५९ ॥

म:फ: है कि सब पिछले शिष्य सुणो, अनहद के बाजे झूंठे है। मन को उसमें मत लगाना।

बाजे जूं छो बाजता, मन राखो घर अेह। जागत गोला शब्द का, निरखो उन धर देह ॥ १६० ॥

जो बाजे बाज रहे है उनको बजने दो, मन को भजन में लगाये रखो। शब्द जिस स्थान पर है वहां सूरत लगाकर भजन करो।

हम सारा सब देखिया, पवन पांचु घेर। नरपुर जीता नाग सूं, सुरग इकीसो मेर ॥ १६१ ॥

म:फ: है कि हमने पंच तत्व से सांस उसांस रटणा करके नरपुर नागपुर इकीस सुरगो को भजन कर मेरू को जीता है।

जमपुर जीता अेक घर, छोडो पुन्न हर पाप।
आठ पोहोर सुखराम के, अेक निरंजण जाप ॥ १६२ ॥

ऊसांस की उपासना से पाप पुण्य नही होते। रात दिन ब्रह्म का भजन करना ही पाप पूण्य से अलग होना है।

सिध आसण कूं साजियो, बैठा मन कूं घेर।
लिव माला सुखराम कह, निश दिन उर में फेर ॥ १६३ ॥

सिद्धासन लगाकर मन को भजन में लगाते हुये लिव बंध भजन करना ही माला का रात दिन फेरना है।

जमराजा सुं राड़ कर, निश दिन अेके ताय।
जब जीता सुखराम के, लिव शमसेर बजाय ॥ १६४ ॥

के: पद में जाने के लिये रात दिन निरन्तर भजन करना ही लडाई करना है। जमराज के स्थान से आगे बढना ही जमराज को जीतना है। व लिव शमशेर बजाना है।

मन बुध चित बैराग सुं, सुरत निरत ले साग।
अेता मिल सुखराम कह, जीता जम घर जाग ॥ १६५ ॥

मन बुद्धि चित सुरत निरत बैराग के साथ भजन करने से ही जमराज का स्थान पार होता है यही जम घर जाग जीतना है।

सुर, नर रह पाताल में, तीन लोक सुख होय।
अब आया गोलोक में, सुर घर जाणी जोय॥ १६६ ।।

सुरलोक नरलोक और पाताल लोक में तीनो लोको में सुख का अनुभव कर त्रिकुटी में आना ही गोलोक में आना है। देवताओं के लोको का अनुभव करना ही सुर घर जाणी जोय है।

बाजा खुलिया दाहिणा, नाद घुरे इण रीत। के किण सुं सुखराम के, राम न आवे चीत ॥ १६७ ॥

दाहीने कान में बाजे के शब्द का अनुभव होना ही नाद घुरना है। साधक का मन इसमें लग जाता है। तो भजन करना भूल जाता है।

जबर घुरे निसाण सो, ईन्द्र गाजन होय। नाद घुरे सुखराम के, उदबुद बाणी जोय ॥ १६८ ॥

शब्द की कई तरह की ध्वनियां हो रही है। वही ईन्द्र की गरजना है। बिना किये ही शब्द होता है। उसे ही उदबुद बाणी कहते है।

आठ पोहोर अखण्ड रहे, एक राग धुन बांण।
अनहद सुण सुखराम के, नाद छिपाया जांण ॥ १६९ ॥

आठ पोहोर अखण्ड अेक सरीसी राग की धुनि हो रही है। अनहद की रागे सुनकर शब्द में सूरत लगाकर भजन ध्यान करना भूल जाता है।

लिछमी के गोलोक में, बोहो सुख लील विलास।
हम पिया सुखराम के, इमरत सांस ऊसांस ॥ १७० ॥

त्रिकुटी में लक्ष्मी गोलोक में बहुत सुख लीला बिलास है। म:फ: है कि मैंने सांस ऊसांस भजन किया है।

ज्ञान ध्यान मुख शिवरण, राम राम करे पुरी के लोग।
कहूं कह नाचे कमकमे, मून गहे कब सोग ॥ १७१ ॥

त्रिकुटी में शब्द आने पर भजन ज्यादा होता है व देवपुरी में ज्ञान ध्यान करते हुये कई ध्वनियां होने लगती है। यही नाचे कम कमे व मून धारण कर भजन करना है।

पूर्व पिछम छाड़कर गऊ लोक में आय। अब दरसत सुखराम के, घाटा सुं पलटाय ॥ १७२ ॥

पूर्व व पिछम के सब स्थान पर पार कर त्रिकुटी में आना ही गोलोक में आना है। अब अनुभव हो रहा है कि मेरूडण्ड के स्थान से अलग हुवे है यही घाट पलटना है।

मस्तक धूणे लोक सो, मुख मोडे ये जाय। लिछमी बर सुखराम के, अेहे तमाशो मांय ॥ १७३ ॥

त्रिकुटी में शब्द का ध्यान होने पर मस्तक ऊंचा नीचा होता है यही मस्तक धुणना व मुख मोडना है। म:फ: है कि त्रिकुटी में ऐसे चेन दरसते है।

बाजा कहूं नाचे सही, आडी रोल बखाण। मुख चाडे सुखराम के, गाय जूंज सब जांण ॥ १७४ ॥

त्रिकुटी में ऐसी शब्द की ध्वनियां अनुभव होती है कि बाजे बाजना व नाचना व घूमर लगाना व मुख चढाना व गाय कर जूंजना है।

इयां ते सिलता बिछडे, सुरसत जमना गंग। बहां बाज्या सुखराम के, उदबुद बांणी जंग ॥ १७५ ॥

गंगा जमुना सरस्वती ये तीनो नदियां मेरू से चलती है। म:फ: है कि त्रिकुटी में शब्द कई प्रकार से अनुभव होता है। यही उदबुद बांणी जंग है।

ईत गंगा बिच सुरसती, ईत जमना को धाम। तीनूं सुण सुखराम के, चाली परसण राम ॥ १७६ ॥

इधर गंगा याने इडा, उधर जमना याने पिंगला, बीच में सुरसती याने सुषमणा, तीनो रामजी को परसने चली याने प्राप्त करने चली है।

गऊ कुंड से निसरे, दोय दिशा दिश जाय। तिजी सुण सुखराम के, शिर पर चढगी धाय ॥ १७७ ॥

मेरूकुण्ड से दोनो कानो की तरफ निकल कर ईडा पिंगला जाती है। तीसरी सिर ऊपर होकर सुखमणा जाती है।

गुण जेती पुरियां सिरे, गंगा बेहे छे छेक। तिनां शिरे सुखराम के, जमना उदबुद पेक ॥ १७८ ॥

तीन गुण है ऐसे ही तीन पद है चिदानन्द ब्रह्म का त्रिकुटी में, शिव ब्रह्म का जहां हजार पांख का कमल है, पारब्रह्म का पद जहां अनन्त पांख का कमल है। वहां सुखमणा में ध्यान होना ही गंगा का छेक बहना है। इन तीनो पदो के उपर के:पद आ:पद में अखण्ड निराधार ध्यान होना ही जमना ऊदबुद पेक है याने सुखमणा बडी मजबूत है।

ईत ऊत सुं दोनो मिली, जहां ब्रह्म का पांव। पग धोवे नित प्रीत सुं, साजे सुध बुध भाव ॥ १७९ ॥

इधर से उधर से इडा पिंगला मिलती है। जहां ब्रह्म का पांव है सुध बुधका भाव साधना करना व सतशब्द का ध्यान होना ही ब्रह्म का पांव धोना है।

बीचे सुखमण गंग में, उलजी दोय महलाण।

पीछे सुण सुखराम के, ढुली बीच मझ आण ॥ १८० ॥

त्रिकुटी में ईडा पिंगला सुखमणा में मिल जाती है यही उलजी दोय महलाण है। म:फ: है कि सुखमणा में भजन ध्यान होना ही ढुली बीच मझ आंण है।

ज्यां हा बैठा तिनूं शिरे, ब्रह्मा विष्णु महेश। तां ऊपर सुखराम के, झिलमिल जोती बहेस ॥ १८१ ॥

त्रिकुटी में याने तीनो लोको में ब्रह्मा, विष्णु, महादेव का पद है, इनके ऊपर सतशब्द ज्योति के लोक में जाता है।

जहां तिनुं सिलता मिली, त्रिबेणी के घाट।
जन सुखिया पुरियां बिचे, लछमी बर को पाट ॥ १८२ ॥

त्रिवेणी के घाट में तीनो नदियां गंगा जमना सुरसती मिली है। म:फ: है कि त्रिकुटी में ही बैकुण्ठ का स्थान है, यही लिछमी वर का पाट है।

गंगा जमुना सुरसरी, ढुली कुण्ड में आण। ईण घर ते सुखराम के, बिछडी आदू खांण ॥ १८३ ॥

गंगा, जमुना, सरस्वती मेरूडण्ड से आकर त्रिकुटी में मिली है यही कुण्ड में आकर ढुलना है। बिंद का स्थान भृकुटी में है। चारो खाणो की उत्पति यही से होती है यही बिछडी आदू खांण है।

जिनकी जामें मिल गई, पाछे सत न होय। त्रिवेणी के घाट में, बोहो जल भिरियो जोय ॥ १८४ ॥

इडा पिंगला का सुखमणा में मिलना ही जिनकी जामें मिलना है। अला पिंगला का पीछे अलग नही रहना ही सत न होना है। म:फ: है कि त्रिवेणी में जल भिरियो जोय है।

आठूं पुरियां मगन है, तामें दोय बखाण। ता बिचे सुखराम के, ईमरत बरसे आंण ॥ १८५ ॥

त्रिकुटी में ब्रह्मण्ड तक सुखमणा में ध्यान होना ही आठू देवताओ की पुरिया मगन है व बीच में ईमरत बरसना है।

तेजी निपट निराट है, विशन लोक के मांय। सुख अेतो सुखराम के, मोपे कही न जाय ॥ १८६ ॥

त्रकुटी में ध्यान होना व आनन्द होना ही तेजी निपट निराट है। म:फ: है कि ऐसा सुख आता है जिसका वर्णन नही होता है।

卐 समाद 卐

ईमरत बरसे कण जडे, बागे राग अनेक। मुख आगे सुखराम के, क्युं नही चाले पेक ॥ १ ॥

हजार पांख का कमल याने ब्रह्मण्ड में शब्द का जरना ही कण जडना है, आनन्द आना ही ईमरत बरसना है, फिर भी शब्द आगे नही बढ रहा है।

त्रिवेणी के घाट में, एक तमाशो और। देवल में सुखराम कह, निश दिन बोले मोर ॥ २ ॥

त्रिकुटी के स्थान में एक तमाशा है कि देवल याने शरीर में रात दिन मोर याने शब्द की ध्वनि हो रही है। त्रिकुटी में शब्द का अनुभव होना ही मोर बोलना है।

देख्या निरत निहार के, अेतो मोर न होय। निज हंसा सुखराम के, आंण बिराज्या जोय ॥ ३ ॥

निरत याने ध्यान लगाकर देखा यह शब्द की ध्वनि हो रही है। मोर नही है। आत्मचेतन को शब्द का अनुभव हो रहा है। यही निज हंसा का आण बिराजना है।

त्रिवेणी के घाट में, हीरा चुणे अमोल। हंसा कूं सुखराम के, जुग जुग बांध्यो तोल ॥ ४ ॥

त्रिगुटी के स्थान पर शब्द का अनुभव होना ही हीरा चुणना है। म:फ: है कि जुगानजुग में हंसो

के कर्मो का निरणा तीनों देव करते है कि अब इनको कहां भेजना।

केला करे किलोल सो, हंसे हरख अपार। खीर नीर सुखराम के, न्यारा कियो विचार ॥ ५ ॥

त्रिगुटी में सुखमणा में भजन होने लगता है तो कई तरह के सुख आनन्द अनुभव होते है। माया ब्रह्म का न्यारा विचार करना ही खीर नीर का न्यारा न्यारा करना है।

त्रिवेणी के घाट में, हंसा गयो दुख भूल। हीरा चुण सुखराम के, मगन भयो प्रफूल ॥ ६ ॥

त्रिगुटी के स्थान में हंसा सारे संसार का दुख भूल गया है क्योंकि ध्यान के आनन्द का अनुभव करना ही प्रफुलित होना व हीरा चुणना है।

उडने की अब न करे, पाया सुख अनेक। सुण हंसा सुखराम के, ओ नेहचल बेसे न पेक ॥ ७ ॥

म:फ: है कि साधक वहां से आगे नही बढना चाहता क्योंकि उसे वहां अनेक तरह के सुखो का अनुभव हो रहा है। लेकिन सतगुरु हंसो को चेतावनी दे रहे है कि यहां निश्चल होकर मत ठहरो आगे बढो।

जावेगा सुखधाम ओ, फिर यांही का सब भूप।
चल हंसा सुखराम के, ज्याहां साहेब बिन रूप ॥ ८ ॥

यहां के सभी सुख व यहां के राजा ब्रह्मा, विष्णु, महादेव और इनका लोक स्थायी नही है। म:फ: है कि हंसा तूं वहां चल जहां परमात्मा बिना रूप के है।

काल न पुंचे कामना, वहां माया नही जाय। सुण हंसा सुखराम के, ऊ सतधाम कहाय ॥ ९ ॥

सतधाम में न तो काल न कोई ईच्छाये व न माया की पहुंच है वो ही सतधाम है।

ओ माया को देश है, काल पहुंचे आय। सुण हंसा सुखराम के, तूं मत भूले सुख मांय ॥ १० ॥

त्रिवेणी के स्थान तक माया का देश है और काल की पहुंच है। म:फ: है कि हे हंसा तू यहां के सुख में मत भूल।

मान हमारी बात कूं, ऊड छाडो यो धाम। चल हंसा सुखराम के, ज्यां हां माया बिन राम ॥ ११ ॥

हमारी बात मानकर इस स्थान को छोड आगे बढो। हे हंसा तुम वहां चलो जहां माया के पद से अलग के:पद आ:पद है।

अमर आशा ईधक है, बिन टेके सतधाम। चल हंसा सुखराम के, वां हम ही तुम राम ॥ १२ ॥

वो स्थान अमर है वो सतधाम बिना आधार के है। हे हंसा तू वहां चल जहां सतशब्द व चेतन ब्रह्म अेक परमात्मा स्वरूप है व स्वयं प्रकाश देश है।

बांता सुण चंचल भया, हंसे लागी ऊदास। कब देखुं सतलोक कूं, नेहचल निरभै बास ॥ १३ ॥

सतगुरुदेव की सतलोक की बाते सुनकर हंसा चंचल हुवा, उसे त्रिगुटी स्थान से उदासी हुई, अब उसकी यही इच्छा है कब जाकर सतलोक याने निश्चल निरभय पद की प्राप्ति करूं।

आठ पोहर चोसठ घड़ी, अे सुख माने नांह। हंसे की सुखराम केह, अंछया सतपुर जाय ॥ १४ ॥

हंसा त्रिगुटी के सुखो को आठो पोहर चौसठ घडी नही मानता। उसकी तो एक ही इच्छा है कि कब जाकर सतलोक की प्राप्ति करूं।

लागो फेर ऊदास होय, उपजी पीड शरीर। अे निश सुण सुखराम के, हंसो धरे न धीर ॥ १५ ॥

हंसा उदास होकर रात दिन भजन में लग रहा है। जैसे पीडा को नही भूलता वैसे ही रात दिन भजन नही भूलता। एक क्षण भी धैर्य धारण नही कर रहा है।

त्रिवेणी छल ऊबकी, हंसे कियो ऊठाव। धार चली सुखराम के, घी छीणा केह साव ॥ १६ ॥

त्रिगुटी में जोर से भजन करने पर खूब आनन्द आने लगा सो हंसा भी आगे बढने लगा, इस तरह आनन्द की धारा चली, जैसे घी के प्रसाद का स्वाद का वर्णन नही होता, ऐसे ही भजन के आनन्द का वर्णन नही होता।

बरसे तेज अनोप सो, मोपे कहयो न जाय। पूरियां चारूं बीच में, रहयो अटल मट छाय ॥ १७ ॥

शब्द का तेज अनोप है, वाणी से जिसका वर्णन नही होता है। याने त्रिकुटी ज्योति लोक ब्रह्मण्ड पार ब्रह्म इन देवो की पुरिया अटल है और सकल ही प्राणी मात्र के छाई हुई है।

त्रिवेणी चढ सूर बीच, लागो थंब विचार। सुर डांडी सुखराम के, इमरत चुवे सार ॥ १८ ॥

म:फ: है कि गौलोक धाम में सूरवीर ही पहुंचते है। वहां के सुखों को देखकर रूकने का विचार करते है। गौलोक धाम में अमृत का स्वाद लेते है।

माया सुख अपार है, बाहिर या बिद होय। चिगे सुण सुखराम के, न्यारी करके जोय ॥ १९ ॥

माया के सुख आपार है, बाहर इसी का अनुभव होता है। अन्दर में सतशब्द के आनन्द का अनुभव हो रहा है। वह माया के सुखो से अलग है।

डांडी सुण सब घ्रांण की, घी से चुपडी आंण।
सब मुख बरसे तेज सो, सुखिया निस दिन जांण ॥ २० ॥

सभी इन्द्रियों का अपना अपना आहार मिलना ही गृहण करना है, जैसे चेहरे पर घी लगाने से चमक आती है, वैसे ही चमक भक्ति करने वाले जन के मुखार पर निशदिन होती है।

स्वाद आद मीठो घणो, चिकणाई बोहो होय। सुखमणा सुख सुखराम के, ठंडी बरसे लोय ॥ २१ ॥

सुखमणा में भजन का आनन्द आना ही ठंडी लहर आना है याने सातो मुख शीतल रहते है। जीभ पर अमी रहना व कंठो में आनन्द आना ही मीठा साव है व मार्ग बडा चिकना है।

त्रिवेणी तीनूं मिले, ज्यांहा हंसा की बाट। पूरियां दोय सुखराम के, उथले तेज निराट ॥ २२ ॥

त्रिवेणी में ईडा पिंगला सुखमणा मिलती है। वो हंसो का रास्ता है। वहां पर दो पुरिया ब्रह्मण्ड पार ब्रह्म का तेज अनोप है। इस कारण साधक तेज का प्रभाव सहन नही कर सकता।

गंगा जमुना सुरसरी, मिले त्रिवेणी मांय। सुखिया अन्तर फेर है, धारा तीन लखाय ॥ २३ ॥

तीनो नाडियां याने गंगा जमना सरस्वती त्रिवेणी में, मिलती है। म:फ: है कि अन्तर मे फरक है। तीनो धारा अलग अलग मालूम पडती है।

सुखमण आई घोर के, शशी सूरज बीच होय।
हीरा कण सुखराम के, निश दिन बरसे जोय ॥ २४ ॥

सुखमणा नाडी चन्द्रमा और सूर्य के बीच होकर आती है। सुखमणा में शब्द के अनुभव का आनन्द आना ही निश दिन हीरा कण बरसना है।

ऊत सूरज इत चन्द्र है, बीचे आ बिद होय। नाम लिया सुखराम कह, जीव पलटकर जोय ॥ २५ ॥

एक तरफ सूरज एक तरफ चन्द्रमा है बीच में सुखमणा है। भजन करने से जीव भाव से उलटकर आत्मचेतन होकर शब्द ब्रह्म का अनुभव करता है।

हंसो वां थिर हो रहयो, निश दिन निरखे अेह। जल बूंदा सुखराम कह, ईमरत बरसे मेह ॥ २६ ॥

त्रिवेणी में हंस का ध्यान करना ही थिर होना है खूब भजन करने से जिस तरह आनन्द आ रहा

है यही ईमरत बरसा व जल बूंदा गिरना है।

वां तिनो अेको मिले, अन्तर नही लिगार। ओथ पोथ सुखराम के, शशी सूरज के वार ॥ २७॥

आगे जाकर तीनो नाडिया एक हो गई उसमें कोई अन्तर नही रहा। म:फ: है कि चन्द्र और सूर्य का सुखमण में मिलना ही ओथ पोथ होना है।

गंगा जमुना सुरसरी, मिले सुलट कर जाय।
पूरियां सुण सुखराम के, अब तिरबेणी मांय ॥ २८॥

गंगा जमुना सुरसरी उलटकर एक हो जाती है। फिर सुलट कर याने त्रिकुटी से ब्रह्मण्ड पारब्रह्म की पुरियों का हंस अनुभव करके सुखमणा का आनन्द लेता है।

बतीसुं हलचल भई, पलटाणी अब डोर। सातूं सूर सुखराम के, अे निश दिन बोले मोर ॥ २९॥

बतीस याने पांच विषय पच्चीस प्रकृति माया व ब्रह्म इन सब में हलचल मच गई यानि शरीर में इन्होंने रास्ता बदला है। म:फ: है कि सातु सुर भक्ति में सहयोगी हो गये।

एक तमाशो देखियो, हंसा के उणयार। मुख अेता उण पंछी के, ज्यूं तिथि लारे वार ॥ ३०॥

भक्ति करने वाले साधक के चेहरे पर एक अलग तमाशा देखा कि उसके सातो सुरो से भक्ति हो रही है। जैसे तिथि के सात वार है।

उत्तर दिशा कूं एक है, दूजी दिखन होय। पूरब कूं सुखराम के, पांचू दरशे मोय ॥ ३१॥

उत्तर दिशा में एक कान, दक्षिण दिशा में दूसरा कान है। पूरब दिशा में पांच दरसते है। याने दो नाक दो आंख एक मुंह है।

ऐसो उदबुद हंस है, ता गत कही न जाय। दोय मुखा से बास ले, सुखराम तीजो खाय ॥ ३२॥

हंसा ऐसा ऊदबुद है जिसकी गति कहने में नही आती है। दो मुख से बास लेता याने नाक से सुगंध लेता व तीसरे मुंह से खाता है।

देख परख ले दोय सुं, दोया सुण ले ज्ञान। से हंसा सुखराम के, हम देख्या परवाण ॥ ३३॥

दोनो नेत्रो से देखता है और दोनो कानो द्वारा सुनता है, ऐसा सुरो से ग्यान भक्ति का अनुभव करते देखा है।

बारी तिल परवाण है, फिर राई ऊनमान। अब हंसो सुखराम के, अटक रहयो वहां आंण ॥ ३४॥

भंवर गुफा का रास्ता तिल के समान बहुत छोटा है फिर राई के जैसे है। म:फ: है कि अगर भजन करने वाले राई के दाने से बीसवा भाग नही बनेंगे तो भंवर गुफा की अणी याने केवल की बारी लांघ नही सकेंगे।

ता पर और विचार है धजा फरूके शीष। तहां एक सुखराम के, गेलो बिस्वा बीस ॥ ३५॥

भंवर गुफा में शब्द सिर के ऊपर खीचता सा व उडता हुवा अनुभव होता है। म:फ: है कि यहां से ही केवलपद में जाने का रास्ता जरूर है।

मुख शिवरण पहुंचे नही, स्वांसा सके न जाय।
वा बारी सुखराम केहे, कहो कुण खोले आय ॥ ३६॥

म:फ: है उस देश में स्वांसा व सिवरण पहुंचते नही है तो बारी खोलकर उस में कैसे मिले।

हंसा को बल ना लागे, बारी सिर पर होय।
सात मुख सुखराम केहे, चहूं दिश पसरिया जोय ॥ ३७॥

बारी खोलने में हंस का बल नही लगता, बारी सिर के ऊपर है। सातूं इन्द्रियां चारो तरफ अपने अपने विषयो में लग रही है।

अे मुख बरज्या ना रहे, चहूं दिश लेहे अहार।
वहां बडता सुखराम कहे, हंसे सिर बोहो मार ॥ ३८ ॥

यह ईन्द्रियां रोके हुये भी नही रूकती, चारो दिशाओ से अपना अपना आहार लेती है। बारी में प्रवेश करने के लिये हंस के ऊपर यही बडी मार है।

सुरत निरत अंछया धरे, वहां लग पूगे जाये। बारी में सुखराम कह, आगे धसे न मांय ॥ ३९ ॥

सूरता अभी इच्छा में है तो तू उनको पूज रहा है। तो उस बारी यानि भंवर गुफा से आगे नही जा सकता।

पांचू उतते बावड़े, फिर इन ही का शिरदार। बारी लग सुखराम के, अे नही पहुंचणहार ॥ ४० ॥

पांच ज्ञान इन्द्रिया वहां से लौट जाती है और सरदार मन भी उस बारी तक नही पहुंच सकता है।

दुरलभ दीठा जोर सूं, ऐसो घाट न कोय। शिव शक्ति सुखराम के, ये भी नीचा होय ॥ ४१ ॥

ऐसा स्थान कोई दूसरा नही है। इसको पार करना बडा मुश्किल है ऐसा अनुभव होता है कि शिव शक्ति का स्थान भी नीचा है।

नव तत लिंग शरीर है, अे भी ऊली बार। हम देख्या सुखराम के, बारी खोल किंवार ॥ ४२ ॥

उस पद में पहुंचकर अनुभव किया कि नव तत लिंग शरीर याने पांच प्राण व चित मन बुद्धि अहंकार भी बारी के नीचे है।

धसिया गुरु परताब सुं, सायब सनमुख होय।
हम बल सुं सुखराम के, बारी खुली न कोय ॥ ४३ ॥

म:फ: है कि सत केवल ग्यान व सिरजण हार रामजी के प्रताप से ही बारी खुली है, हमारे बल का जोर नही लगा।

जिण पल में खिडकी खुली, तब ऐसी बिद होय। सात मुख सुखराम के, हंसे सुध न कोय ॥ ४४ ॥

म:फ: है कि जिस समय केवल की बारी खुलती है तब साधक की स्थिति अेसी होती है कि सातु मुख को ही विषय भोग की सुद्धि नही रहती है, शीतल हो जाते है, ये ही शील वृत धारण करना है।

आगे पीछे मध्य में, एक न दरसी मोय। बारी खुली जिण बार में, ऐसी या बिद होय ॥ ४५ ॥

आगे पीछे मध्य में खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड में यह बात मालूम नही हो सकी, जिस समय बारी खुली, जब यह विधि मालूम हुई।

रटणा थाकी त्रिगुटी, भंवर गुफा के घाट। बारी लग सुखराम के, धुन चाली सुध बाट ॥ ४६ ॥

म:फ: है कि रटणा की दौड त्रिकुटी भंवर गुफा तक है, उस देश में चेतन व सत शब्द की धुनी ही गरजती है।

त्रिगुटी में मुख तीन सुं, हंसे चरयो न जाय। चारूं सुं सुखराम के, क्युं एक भोजन खाय ॥ ४७ ॥

त्रिगुटी में मुख तीन याने मुंह व दोनो नाक से उस पद का कोई अनुभव नही होता, दोनो कान दो आंख इन चारों से वहां का कुछ होने का अनुभव होना ही क्यूं एक भोजन खाय है।

सप्त दीप को वास तज, मिले आद घर मांय। तब तन सुखराम के, हंसे कबू न आय ॥ ४८ ॥

सात धात के शरीर से अलग होकर आद घर यानि के.प. आ.पद की प्राप्ति करना ही आद घर में मिलना है। म:फ: है कि फिर हंस वापस तन में कभी नही आता है।

पांच पचीसों हंस का, थाके ये बल पाण। वां आगे सुखराम के, च्यारूं संग बखाण ॥ ४९ ॥

म:फ: है कि पांच विषय पच्चीस प्रकृतियो का बल थक जाता है तब हंसा इन चारो के संग आगे बढता है।

चित चेतन निज मन रे, निरत खुले सत नेण। सब दरशे सुखराम के, बोल सके नही बैण ॥ ५० ॥

चित चेतन निजमन और निरत के द्वारा आत्मा के निरंजण निराकार पद में सतशब्द के अखण्ड ध्यान का अनुभव होना ही सत नेत्र खुलना है। उस देश का आनन्द ले सकता है पर बोलकर बता नही सकता याने समुद्र में बूंद मिल सकती है छेह नही ले सकती।

भंवर गुफा आसण रहे, ताहां गुंज धुन होय। दरशे सब सुखराम के, गिगन तमाशा मोय ॥ ५१ ॥

भंवर गुफा में शब्द का अनुभव होना व शब्द की गुंजार होना ही गुंज धुन होना है। म:फ: है कि भंवर गुफा का अनुभव होना ही गिगन तमाशा दरसना है।

भंवर गुफा कूं छाड के, उडे हंस तिण बार। तीन लोक सुखराम कह, खाली भया विचार ॥ ५२ ॥

भंवर गुफा को छोडकर आगे बढता है, तीन लोक से अलग होना ही खाली भया विचार है।

निरअंस को निज हंस है, फिर झीणे सुं झीण। बाजा सुण सुखराम के, थाकी अनहद बीण ॥ ५३ ॥

हंस का निरंजन निराकार ब्रह्म के पद की प्राप्ति करना ही निज हंस होना है, यही झीणे से झीण है। भंवर गुफा के स्थान से के.प. की प्राप्ति होना ही अनहद बाजे थकना है।

पवन थोतो बहत है, हंसे का अस्तूल। ज्यां घी बिन सुखराम कह, गोरस घर घर मूल ॥ ५४ ॥

हंस स्थूल शरीर से अलग होकर के: पद की प्राप्ति होना ही पवन का थोथा बहना है। के: पद प्राप्ति के बिना शरीर से सब शुभ अशुभ करणियो का होना गोरस याने छाछ की तरह है।

दही बिलोयर काढियो, न्यारो कियो हलाय। पवन सुं सुखराम के, यूं हंस बिछडिया मांय ॥ ५५ ॥

आत्मचेतन के आधार से सांस उसांस में भजन कर श्वांस से अलग होना ही दही बिलोकर काढना व श्वांसा से अलग होना है।

पिछम दिशा कूं पलटिया, तब माखण ज्यों होय।
क्यूं ई गोरस को भेल है, लेवा लेहे नही कोय ॥ ५६ ॥

शब्द पिछम में ऊलटता है वो मक्खन की तरह है जैसे मक्खन में गोरस का भेल है। वैसे ही शब्द माया के साथ है यही लेवा लेहे नही कोय है।

यूं भंवर गुफा लग हंस के, माया पवन को मेल।
सुखिया छाडे त्रकुटी, तां दिन रती न भेल ॥ ५७ ॥

भंवर गुफा तक हंस माया व सांस के साथ रहता है जिस दिन त्रकुटी छोडता है उस दिन रती भर मेल नहीं रहता है। दो पांख से अनन्त पांख के कंवल तक त्रिकुटी है। भंवर गुफा तक त्रिकुटी माना है। भंवर गुफा से आगे बढने पर माया से अलग हो जाता है।

घी ज्यूं ताय नितारया, जब मान्या सा राम।
सुखिया गोरस फूल ज्यों, सब ही रहया इण धाम ॥ ५८ ॥

जैसे घी तपाकर नितार लेते है ऐसे ही के:पद प्राप्ति होना ही राम रूप होना है। माया का पद भंवर गुफा तक है यही गोरस फूल का रहना है।

हंसो हुवो नकेवलो, सबसुं न्यारो जोय। आगे यूं सुखराम के, कछुहन दरसे मोय ॥५९॥

के:पद आ:पद में लय होना ही सबसे न्यारा व निकेवल होना है। म:फ: है कि इसके आगे कोई पद नही है।

बारी के अदबीच में, एक फूल है और। तांके कली हजार है, ज्यां माया की ठौर ॥६०॥

बारी के अदबीच में याने भंवर गुफा के ऊली तरफ ब्रह्मण्ड में हजार पांख का कंवल है। ये पद माया के साथ है।

ईमरत कुंड तामें भरयो, जहां लग हंसो जाय।
सपने ज्यूं सुखराम के, सुख दरशे तां मांय ।।६१॥

हजार पांख के कंवल पर शब्द का सूरत से ध्यान का आनन्द आना ही अमरत कुंड भरना है यहां पर सपने के जैसा शब्द का आनन्द आता है।

तां कुंड के शिरे ऊपरे, जायर बेसुं तीर। पाछा सुण सुखराम के, याद न आवे बीर ॥६२॥

हजार पांख के कंवल के ऊपर पारब्रह्म के पद यानि अनन्त पांख को पारकर के.पद की प्राप्ति करना ही आ.पद की तीर पर बैठना है। म:फ: है कि यहां पहुंचने पर पहले जहां भी थे वो अब याद नही आते है।

आगे सुन्न सागर भरियो, वार पार नही छेह। वां हंसो सुखराम के, पटके सब तन देह ॥६३॥

के.पद आ.पद में लय होने पर आत्मा किसी भी देही में वापस नहीं आती है। वो उस पद में जहां सुन्न सागर भरा है जिसका वार पार नही है। वहां चली जाती है।

अनन्त पांख को फूल है, सुन्न सागर के मांय।
तां आगे सुखराम के, कित आवे कित जाय ॥६४॥

सुन्न सागर यानि पारब्रह्म के पद में ही अनन्त पांख का फूल है। वहां पर पहुंचने पर साधक का ध्यान हट जाता है कि मैं अब किधर जाऊं।

पाछो आवे फेर यां, तब भेटे सुर लोक। वां आवे सुखराम के, जब लग पांचू भोग ॥६५॥

म:फ: है कि सातो मुख को पांचो विषय भोगो की चाहना रहेगी तो देवता भंवर गुफा तक भी पहुंचे हुये को भी वापिस मृत्यु लोक में भेज देंगे।

अे निश आसन इडग रहे, भंवर गुफा के मांय। सतधाम सुखराम के, कबुएक देखे जाय ॥६६॥

म:फ: है कि भंवर गुफा में जाकर हंसा आसण जमा लेता है तो सतधाम के:पद आ:पद कब जाकर देखुंगा।

ऐसी गत करतार की, काहा सुणावुं आण। रूप ने दिखे रंग सो, सुखिया नाद बखाण ॥६७॥

पारब्रह्म परमात्मा की ऐसी गति है। के:पद में न रंग है न रूप है वहां सतशब्द का अखण्ड अनुभव होना ही नाद का अनुभव होना है।

ज्यूं निंदरा में नर पोढ कर, हंस कला जग भूल। यूं ऊथे सुखराम के, हंसे यो सुख झूल ॥६८॥

जैसे हंस नींद में सोकर संसार में सब चेतन कार्यो से अलग हो जाता है। म:फ: है कि ऐसे आत्मचेतन भी आ:पद में कुछ क्षण के लिये आनन्द में लय होने पर सुद्धि बुद्धि भूल जाता है।

निरखत निरखत गिगन कूं, सबे चैन मिट जाय।
ज्यूं नर कूं सुखराम के, नींद गिरासौ आय ॥ ६९ ॥

म:फ: है कि जैसे नर नारी को गहरी नींद आती है वैसे ही रटणा करते करते व सतशब्द की ध्वनि सुनते सुनते कुछ क्षण के लिये सुद्धि बुद्धि नही रहेगी।

अेसी बिद सतलोक की, कहत बणे नही कोय। जो जाणे सुखराम के, सो मेरा गुरु होय ॥ ७० ॥

सतलोक आ:पद की ऐसी विधि है जो कहने में नही आती, जिसे उसकी प्राप्ति होती है वो ही जानता है। आ:पद ही गुरुपद है।

कहत सुणत को क्या सरे, देखया ई सुख होय।
बिन पहुंता सुखराम के, भेद न आवे कोय ॥ ७१ ॥

कहने सुनने से कुछ नही होता, उस पद की प्राप्ति करने पर ही आनन्द का अनुभव होता है। बिना पद की प्राप्ति हुवे उसके भेद को कोई नही जानता।

केबा की कुछ नांय है, न सुणणे की होय। परस्या सुं सुखराम के, सब जुग दरशे जोय।। ७२ ॥

न तो कहने का न सुनने का विषय है। उस पद की प्राप्ति से ही जगत में प्राप्ति करने वालो को दरसता है।

ऊदबुद बात अनोप है, ऐसी और न कोय। देख्या ही सुखराम के, केहत न आवे मोय ॥ ७३ ॥

मैंने उसका अनुभव किया तो भी मेरे से वर्णन नही होता, ऐसी उदबुद बात है। उसकी कोई ऊपमा नही है, संसार में ऐसी कोई बात नही है।

नासत कूं तो सत है, सब वांकी पैदास। च्यार जुग सुखराम के, बंधे तिनुं बास ॥ ७४ ॥

पारब्रह्म परमात्मा का पद नासत नही है सत है। माया ब्रह्म का पद चार जुग व तीन लोक सब उसी के आधार पर है।

पांच तत गुण धात जूं, सब यां ही से होय। वे ऐसा सुखराम के, वां रूप न दरशे कोय ॥ ७५ ॥

पांच तत्व, तीन गुण, सात धात का आधार वो पद है, वो पद ऐसा है जिसका कोई रूप नही दरसता है, वह पद निरंजन निराकार है।

सतलोक महिमा कहूं, सुणो शकल जन आय।
भंवर गुफा सुखदेव के, मत भूलो या मांय ॥ ७६ ॥

सब ही संत सुणो सतलोक याने आ:पद लोक की महिमा कहता हूं। म:फ: है कि भंवरगुफा के सुख को देखकर उस पद को मत भूलो।

सुन्न सरूपी ब्रह्म है, ताप सरूपी धाम। मैमा सुण सुखराम के, क्यूं कर गेहू राम ॥ ७७ ॥

म:फ: है कि उस पद की महिमा का वर्णन कैसे करूं, आनन्द लोक में आनन्द ही आनन्द है। देही ब्रह्म में भी आनन्द है व विदेही मंडल में भी आनन्द है।

रूप कहूं दिसे नही, रंग न दीसे मोय। मैमा सुण सुखराम के, क्यूं कर गेहू तोय ॥ ७८ ॥

आनन्द लोक में रंग रूप नही है उस पद की महिमा कैसे करूं व कैसे प्राप्त करूं।

छोटा कूं तो छे नही, वार न दिशे पार। ऐसा सुण सुखराम के, सांई शिरजण हार ॥ ७९ ॥

पारब्रह्म परमात्मा का पद सबका आधार है उसको छोटा कहूं तो उसका छेह याने वार पार नही है। म:फ: है कि वो पद इस तरह का है।

सुख दुख एक न सांच रे, जे तीन लोक में होय। वांकी बिद सुखराम के, न्यारी दरशे मोय ॥८०॥
तीन लोको में जो सुख दुख है वो वहां नही होता है उसकी विधि अलग ही दरश रही है।
केहेण में आवे नही, मुस्ट न पकडया जाय। क्या केहे बरणु ब्रह्म कूं, वांका सुख यां आय ॥८१॥
ब्रह्म की महिमा कहने में नही आती है न मुट्ठी में पकडी जाती है। क्या कहकर ब्रह्म के सुखों का कैसे वर्णन कर सकता हूं।
मीठा कूं तो झूंठ है, कडवा रती न होय। सेज सुख सुखराम के, क्यूं कर बरणे लोय ॥८२॥
मीठा कहूं तो झूंठ है रती भर भी कडवा नही है। जैसे सेज के सुख को पाकर भी उसका वर्णन नही कर सकते, ऐसे ही वहां के सुखो का वर्णन नही होता है।
घीरत साव सुख सेज का, अे तो दिष्टंग होय। वांका सुख सुखराम के, उदबुद दरशे मोय ॥८३॥
घी का स्वाद व सेज के सुख का दृष्टांत देकर कहता हूं कि उस ब्रह्म का सुख तो मुझे अदभूत दरसता है।
लेवे सुख सो जाणसी, दूजा पारख नांय। सुणज्यो सब सुखराम के, अे सुख काया मांय ॥८४॥
जो इस सुख को लेता है वही जानता है, दूसरो को इसका ज्ञान नही होता। म:फ: है कि सब सुणो यह सब सुख शरीर में ही है।
काम न व्यापे क्रोध वां, ना माया लवलेश। ईखर है सुखराम के, नित प्रति एको वेश ॥८५॥
वहां न तो कामना है, ना क्रोध है, वहां माया का लवलेश भी नही है, वह सत्य है, वह हमेशा सत रहता है।
इधका ओछा ना हुवे, ना कोई वार न पार। हम देख्या सुखराम के, यूं सतधाम विचार ॥८६॥
वो सतधाम न अधिक न कम होता है। उसका वार पार नही होता है। म:फ: है कि उस सत पद का ऐसा विचार देखा है।
खराखरी बाता कहूं, वहां की यहां मैं लाय। केता है सुखराम के, दुख सुख एक न मांय ॥८७॥
वहां की सच्ची सच्ची बातें कर रहा हूं। वहां सुख, दुख एक भी नही है।
ऐसो ब्रह्म विचार है, सुणता हो सब कोय। सुन्न सागर सुखराम कह, ऐसा साहिब होय ॥८८॥
सब ही सुणो, इस तरह ब्रह्म का पद है। सुन्न सागर में याने निरजंण निराकार ब्रह्म का पद ऐसा है।
परस्या दशवे द्वार कूं, तिण में फेर न कोय। केवल बिन सुखराम के, वां जन सत न होय ॥८९॥
मैंने दशवें द्वार को देखा, इसमें किसी तरह का फरक नही है। म:फ: है कि के:पद की प्राप्ति किये बिना आ:पद की प्राप्ति नही होगी याने सता समाधि के बिना सुन्न समाधि नही आयेगी।
बडा तीर्थंकर सूरवां, केवल में सब सार। तांही को सुखराम कहे, यो धाम विचार ॥९०॥
तीर्थंकरो का भी यही धाम है, के.पद ही श्रेष्ठ है। म:फ: है कि तीर्थंकरों का यही पद है यानि इसी पद की प्राप्ति की है।
केवल हुवा अनेक ज्यूं, गिणत न आवे कोय। चोइसुं सुखराम के, सब ही के शिर होय ॥९१॥
अनेक जनो ने के:पद की प्राप्ति की, जिनकी गिनती नही है। चौईस तीर्थंकरो के साथ में नौ करोड जन के:पद में गये।
यामे मोमे फेर बोहो, वां बीच इनके मांय। आगे सुण सुखराम के, पहुंता एक ही गांव ॥९२॥

म:फ: है कि मेरे में व तीर्थंकरो के बीच में इतना फरक है कि उनकी यहां महिमा है किन्तु अभी मेरी जगत को गम नही है पर आगे सब एक ही जगह पहुंचे है।

चौइसुं इधकार है, सुरनर पुजे आय। आगे सुण सुखराम के, ऐ कौह बस्ती जाय ॥ ९३-९४॥

चोइस तीर्थंकरो का ऐसा प्रभाव है, उन्हें मनुष्य व देवता सब मानते है। लेकिन इनको पूजने से आत्मा कहां जायेगी ?

यूं कुदरत को खेल है, केवल ऊपजे नांह। बैठा तो सुखराम कह, सुद बुद दशवां मांह ॥ ९५॥

इन चौबीस तीर्थंकरो से केवल नहीं उपजता, हांलाकि यह केवल पद में बैठे है। यह कुदरत का खेल है।

विस्वाबीस ईकीस सो, ईण में फेर न कोय। केवल में सुखराम के, पोरा को गुण जोय ॥ ९६॥

मेरी बात बीस आना नही इक्कीस आना सच है, इसमें कोई फेर सार नही है। केवल पद में तभी पहुंचेंगे जब पोरा यानि उस वक्त जिनको ओधा मिला हुआ हो यानि जिसके नाम से सता चल रही हो।

मोख पंथ में फेर नही, सुध बुध सागे धाम।
केवल में सुखराम कह, कुछ करणी को काम ॥ ९७॥

मोख के रास्ते में किसी तरह का फेर नही है, वो सुध बुध सच्चा धाम है। म:फ: है कि केवल में कुछ करणी का काम याने सतगुरु विधि से भजन करके जो के:पद की प्राप्ति होती है व केवल का ज्ञान प्रगट होकर के:पद की प्राप्ति होती है। वो पद दोनो का एक ही है। उसमें कोई फरक नही है।

राजा चढे दिसावरा, फोजा संग न होय। नही धूजे सुखराम के, पांवा लगे न कोय ॥ ९८॥

राजा दूसरे पर चढाई करे और साथ में फौज नही होती है तो म:फ: है कि उससे कोई भय नही खाते न ही पेरो पडते है।

करणी संग फोजा रहे, निवे भूप इम जोय। तब सारा सुखराम के, सुर नर धूजे लोय ॥ ९९॥

सतगुरु विधि से भजन कर के:पद आ:पद की प्राप्ति करने वालो के संग अणभै ग्यान की फोजे साथ होगी तो देव व नर सब ही ग्यान से धूजेंगे।

हाकम संग फौजा चढे, फिर बाजे निसाण।
तब सारा सुखराम के, सनमुख मिलियां आंण ॥ १००॥

म:फ: है कि राज योग की भक्ति में सतशब्द रूपी हाकम व अणभै ग्यान रूपी फोजे साथ है तो भक्ति में बाधा डालने वाले आत्म समर्पण कर देंगे।

कागद मिले गढ पर चढे, तांकू लखे न कोय। आई बिद सुखराम के, केवल के घर होय ॥ १०१॥

म:फ: है कि के:पद में मिलकर कागद रूपी पट्टा लायेंगे फिर सिरजण हार से परवानगी मिलेगी, तब अणभै वाणी बनायेंगे, उनको आज भी तारने का औधा है किन्तु उनको नही मान कर विधि बताने वाले व ग्यान कहने वाले ही तारने वाले बन जाते है।

चढिया ढोल बजाय के, तिण में फेर न सार। केवल की सुखराम के, साहेब जाणंण हार ॥ १०२॥

शब्द के साथ साधना कर चढना ही ढोल बजाकर चढना है। इसमें कोई फेर सार नही है। म:फ: है कि के:पद प्राप्ति की तो सायब ही जानते है।

क्या जाणु पोरो नही, के कुछ करणी फेर। चढियो तो सुखराम कह, सुध बुध पांचो घेर ॥ १०३ ॥

म:फ: है कि जाग्रत का समय क्यों नही है, साधक के करणी करने का फेर उसांस सांस के साथ राम रटणा सही करेंगे तो छ: पूर्व के व छ: पश्चिम के कंवलो का छेदन कर पांचो ग्यान इन्द्रियो को भजन में लगाकर सुध बुध के साथ गढ पर चढेगा।

आ कसर सूजे नही, ज्ञान कहे समजाय।
सुख दुख सूं सुखराम के, क्यों मन गोता खाय ॥ १०४ ॥

ज्ञानियों को यह कसर नही सूजती है कि ज्ञान क्या कह रहा है। म:फ: है कि सुख या दुख आने पर मन गोता खा जाता है।

कलयुग केवल नांव है, ओ हम कियो विचार। पुंता हंसा सुखराम के, सागे मोख दुवार ॥ १०५ ॥

कलयुग में सतगुरु विधि से भजन करके केवल नाम याने ने:अँच्छर की जागृति करके जो आत्म चेतन पर प्रकट होता है उस सतशब्द के साथ के:पद आ:पद की प्राप्ति करना ही मोक्ष की प्राप्ति करना है।

सिद्ध शिला देखी सही, ताको यो ऊनमान। पंखी पर सुखराम के, तांसु झीणी जान ॥ १०६ ॥

ब्रह्मण्ड के ऊपर शब्द का अधर अनुभव होना ही सिद्ध शिला का सही देखना है। उसका ऐसा अनुमान है कि पक्षी का पर पतला होता है उसका तो आकार है और शब्द की ध्वनि का आकार नही है इसलिये उसे उससे भी झीणा बताया है।

चोडी चवदा लोक में, सब आयो ऊण हेट। वां फोडया सुखराम के, व्हे सायब सुं भेंट ॥ १०७ ॥

खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड तीन लोक चवदा भवन के ऊपर अनुभव होना ही सब आया उण हेट है। आ:पद में लय होना ही फोडना व सायब से भेंट होना है।

इन उनमानज पातली, ओ रंग ऐसो घाट।
चांदी सेती सुखराम के, तासक सुण घट जाट ॥ १०८ ॥

इस अनुमान से पतली व ऐसा रंग है ऐसा घाट है। म:फ: है कि जैसे चांदी सफेद होती है। वैसे ही वो शुद्ध ज्ञान है वो गोल दरशती है। इसलिये ताशक की ऊपमा दी है।

गोल घट दरशे सही, खुणो एक न होय। सिद्ध सिला सुखराम के, ऐसी दिशे मोय ॥ १०९ ॥

शब्द गोल गट दरसता है इसलिये उसके कोई कोना नही है। म:फ: है कि सिद्ध सिला मुझे ऐसी दिख रही है।

वा माया सुं फोडनी, दूजो नांय ऊपाय। सुरांई सुखराम के, वहां अटकाणा आय ॥ ११० ॥

माया के शरीर से रटना करने से ही सिद्ध सिला फूटेगी, दूसरा ऊपाय नही है। म:फ: है कि शुरवीर भी वहां आकर अटक जाते है।

वां ते पाछो बावडे, ऊलटा आवे जांण। सात सुर सुखराम के, ज्यां सुख माणे आंण ॥ १११ ॥

म:फ: है कि सात मुख आहार में पसर जायेंगे तो सिद्ध सिला तक पहुंचे हुये भी जन्म मरण में आ जायेगा।

यां सुखा बोहला पार बिन, छाडे नही हंस धाम।
बडभागी सुखराम के, सो जन लागे काम ॥ ११२ ॥

यहां के सुखो का कोई पार नही है, इस धाम को हंस नही छोडना चाहता है। म:फ: है कि

जो भाग्यशाली होते है, वही इन सुखो की कामना छोडते है।

सिद्धशिला कू फोड के, चढिया संत सधीर। वां आ बिद सुखराम के, हंसो सायर तीर ॥ ११३ ॥

समझदार संत ही के:पद से आ.पद की प्राप्ति करते है। म:फ: है कि के:पद तो सुन्न सागर की तीर है व आ:पद में लय होना ही सुन्न सागर में समाना है।

जे वां से आगो निसरे, तो अब वार न पार। निरभे सो सुखराम कह, बैठो हंस विचार ॥ ११४ ॥

के:पद आ:पद में लय होने पर उसका वार पार नही है यही निरभय होना व हंस का विचार कर बैठना है।

दिन दिन हंस व्हे दुबलो, खीण पडे सब देह। थाके मन सुखराम कह, केवल पांचू अेह ॥ ११५ ॥

ध्यान करते करते ज्यों ज्यों ध्यान में के:पद का आनन्द लेता है तब मन हताश होकर पंगु व गरीब होगा तब पांचो विषय रस स्वत: ही थक जायेंगे।

ज्यों सूरज का तेजु सूं, पालो गले विचार।
ऊण धाम सुण सुखराम के, हंसा शीर या मार ॥ ११६ ॥

म:फ: है जैसे सूरज के तेज से पाला याने बर्फ गल जाता है, ऐसे ही हंसा के:पद आ:पद की धाम पहुंचने के लिये ग्यान भक्ति में शूरवीर, शरीर व मन से गरीब बनना पडेगा।

जेतो गले तेतो मिले, पल पल निवतो थाय। यूं हंसो सुखराम के, दिन दिन पलटे जाय ॥ ११७ ॥

म:फ: है कि ज्यों ज्यों हंसा भक्ति ग्यान में लीन होकर विनम्र बनता जायेगा तो ध्यान, ब्रह्म, ईखर समाधियो को पार करके सता समाधि व सुन्न समाधि का आनन्द लेना ही पलटना है।

सिद्ध सिला पर बेस रे, थोडी बेर विचार। जब हंसो सुखराम के, भूलो सुध बुध लार ॥ ११८ ॥

म:फ: है कि ईखर समाधि रूपी सागर के किनारे बैठकर विचार करते करते हंस तीन लोक के सुख दुख भूल जाता है।

चहूं दिश सुन्न सागर भरियो, दिष्ट न आवे धाम।
हंसा कूं सुखराम के, ओसर आयो राम ॥ ११९ ॥

म:फ: है कि समुद्र की तीर बैठने पर चारों तरफ सागर ही सागर दिखाई देता है तो हंस के रटणा जबर चालू होकर रामजी में मिलने का समय आ गया।

जे वां पूंता मोख कूं, मिलिया दशवें द्वार। अब सांसो सुखराम के, मेरे नही लिगार ॥ १२० ॥

दशवे द्वार के:पद आ:पद में पहुंचना ही मोक्ष में मिलना है। म:फ: है कि अब बिल्कुल भी संशय नही है।

विध होणो सोई लिख्यो, तेसो हुवो आंण। हम न्यारी सुखराम के, किवी जाग बखाण ॥ १२१ ॥

जैसा होने का योग था वैसा ही हुवा। म:फ: है कि मैंने तो पांच तत्वो के शरीर व पांच प्राणो से आत्मचेतन से अलग पद का बखाण किया। यही किवी जाग बखाण है।

मन पवना मिल पांच जूं, अे दुखदाई होय। हम छाडया सुखराम के, त्रगुटी के घर जोय ॥ १२२ ॥

मन स्वांसा व पांच विषय ये दुख देने वाले है। म:फ: है कि हमने इनको त्रिगुटी में आकर छोड दिया है।

ओऊं सोऊं छाडिया, चन्द सूर घर आंण। हम किवी सुखराम के, न्यारी तत पिछाण ॥ १२३ ॥

ओऊं यानि माया का शरीर सोऊं यानि परब्रह्म के एरिये को भी छोडा। चन्द्र सूर्य का घर भी

छोड दिया। म:फ: है कि मैंने यह कार्य न्यारा तत पिछाण के किया।

भंवर गुफा में मन थक्यो, पवन पांचू आंण।
हम छाडया सुखराम के, ज्यों कण छाडे पान ॥ १२४॥

भंवरगुफा में आकर स्वांसा व प्राणो से ऐसे अलग होता है जैसे कि कण पकने पर पतो से अलग हो जाता है।

निज मन मिलियां निरत सूं, कियो सबे विचार।
यूं छटया सुखराम के, ज्यूं घी माखण सार ॥ १२५॥

म:फ: है कि हंसा का आत्म चेतन सतशब्द का विचार करके निरखने का आनन्द लेने लगा। जैसे मक्खन को तपाने से छाछ से घी अलग होता है।

गोरस ज्यो क्रिया सबे, ओऊं माखण होय। तत ऐसो सुखराम कह, घी कर तायो जोय ॥ १२६॥

स्वांस स्वांस की क्रिया सब गोरस की तरह है। ओऊं आत्मचेतन याने पार ब्रह्म का पद माखण की तरह है। म:फ: है कि केवल का ग्यान उसांस सांस की क्रिया करने से ने:अँच्छर रूपी घी प्राप्त होता है, फिर पार ब्रह्म के पद से आगे के:पद व आनन्द पद की प्राप्ति होती है।

माखण मिसला जायगो, गोरस तुरत विणास।
घी तायो सुखराम के, दिन दिन परमल बास ॥ १२७॥

माखण याने असत माया के साथ जो ब्रह्म का पद है वहां से उस पद से वापिस आने की रीति है। आत्मा के द्वारा शुभ अशुभ करणियो के साधन तो गोरस की तरह है। वहां से तो आता जाता ही रहता है। के:पद आ:पद तो तपाये हुये घी की तरह है, उस पद से वापिस नही आता है।

घी माखण सब गोरस सूं, सब पैय की पैदास। धुर खूटा सुखरामजी, गायां के घट बास ॥ १२८॥

घी, मक्खन, छाछ सब दूध की पैदास है लेकिन मूल में यह सब गायों से मिलता है। यानि सारी उत्पति परब्रह्म की है।

नित ऊपजे विणसे सदा, अथिर रहे न कोय।
यूं ओऊं सुखराम के, नेहचे ही साहिब होय ॥ १२९॥

चर्म चक्षुओं से जो माया का स्वरूप दिखता है वह तो होता रहता है, मिटता रहता है। आत्मचेतन का पद सत है व आत्मचेतन ही सतशब्द के साथ आनन्द याने पूर्ण परमानन्द में लय होता है।

केबो सुणबो सीखबो, आ बीद सेहेल बिराट।
दुरलभ सो सुखराम कह, पिछम सुर की बाट ॥ १३०॥

कहना सुनना सीखना यह विधि सरल है। म:फ: है कि पिछम के रास्ते के साधन का ज्ञान मिलना दुर्लभ है।

वाणी केहेणी सेल है, क्या अणभै सुखराम। दुरलभ सो सुखराम केहे, कहिये चौथी धाम ॥ १३१॥

वाणी से उपदेश करना व सुन सुन कर अणभै की बात कहना सरल है। म:फ: है कि चौथी धाम याने के:पद की प्राप्ति करना मुश्किल है।

साख शब्द सेहल है, अणभै करे उचार। भेद अरथा सुखराम के, बिरला जानन हार ॥ १३२॥

साख शब्द का कहना सब सरल है, कोई अणभै ग्रंथ का उच्चारण करे वो भी सरल है। परन्तु

इसमें क्या लिखा उसका भेद व अर्थ तो विरले ही जानेंगे।

केहेण हारा बोहोत है, सुणने वारा अनेक। रटणा यूं सुखराम के, लिव बंध बिरला पेक ॥ १३३ ॥

कहने वाले भी बहुत है सुनने वाले भी अनेक है। रसणा से भजन करके लिव बंध भजन करने वाले बिरले है।

॥ इति श्री समाद का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 रचना ग्रन्थ 卐

चौपाई : परापरी परमात्म देवा, अमर पुरूष अविनाशी।
तां अंछा एक पुरूष ऊपना, सतलोक के बासी ॥ १ ॥

पारब्रह्म परमात्मा अमर पुरूष अविनाशी है, उनकी इच्छा से एक सतपुरूष पैदा किया जिसे सतलोक में बिठाया।

वांकी इच्छा निरंजण कहिये, ओऊंकार सो हुवा।
ओऊं कार, करे ले मेहतत, पांच तत गुण जुवा ॥ २ ॥

पारब्रह्म परमात्मा की इच्छा ही निरजंण निराकार सत चेतन है। उसको ही ओऊं व होणकाल ब्रह्म कहते है। निरंजण निराकार सत चेतन ही ब्रह्म का पद है उसको ही महतत कहते है। उससे पांच तत्व व तीन गुण अलग है।

ऊपजी सगती महातत मांही, गुण तिनुं परकाशा।
ऊभी शक्ति महातत आगे, कोण पुरूष को दासा ॥ ३ ॥

महतत ब्रह्म से ही शक्ति व तीन गुण हुये है। शक्ति ने महतत ब्रह्म से पूछा कि मेरा पुरूष याने स्वामी कौन व दास कौन है?

हुवो साकार शब्द सो बंदिया, तीन लोक सो कीजे।
अेसी दया करी सायेब ने, सत मान सुण लीजे ॥ ४ ॥

महतत ब्रह्म से यह शब्द हुवा कि तीन लोक की रचना करो। ऐसी सायब की तुम्हारे पर दया हुई है, इसको सत मानो।

चिंता पडी ईसरी मांही, कुण विध जग बांधु।
दिशे नही कहा अब कीजे, हुकम कुण पर साधु ॥ ५ ॥

अब ईश्वरी याने शक्ति को चिन्ता हुई कि तीन लोको की रचना कैसे करूं। मुझे कोई नजर नही आ रहा है, किस पर हुक्म चलावुं, कैसे रचना करूं।

ऐसो मतो कियो इण देवी, ध्यान पुरूष को कियो।
ईण्ड कटास ब्रह्म जल मांही, जन्म विष्णु वां लियो ॥ ६ ॥

उस ईश्वरी शक्ति ने विचार कर पुरूष का ध्यान किया तो इण्ड कटाक्ष ब्रह्म जल से विष्णु का जन्म हुवा याने ब्रह्म जल से विष्णु प्रकट हुवे।

सुता विष्णु नाभ में छूटो, चढियो कंवल आकाशा।
ब्रह्मा जन्म कंवल में लियो, अवनी आस न बासा ॥ ७ ॥

सोते हुये विष्णु की नाभी से कमल प्रकट हुवा, वो कमल आसमान में जा चढा, उस कमल की डण्डी में ब्रह्मा ने जन्म लिया। ब्रह्म आत्मा का पृथ्वी पर आसा वासा नही था।

ब्रह्मा शीष भरगुटी मांही, सुण शिंभु सोई जाया।
वां सोई सगती विष्णु के पासा, सुण किरपा कर आई ॥ ८ ॥

ब्रह्मा की भृगुटी से शंकर का जन्म हुवा तो ईश्वरी शक्ति कृपा कर विष्णु के पास आकर बोली।

मोकूं परण करो घर वासा, तीन लोक सो कीजे।
नारी पुरूष बसाओ जुग में, हुक्म मान सो लीजे ॥ ९ ॥

मेरे से विवाह कर गृहस्थ बनो व तीन लोको की रचना करो। स्त्री पुरूषो को जगत में बसावो, यह मेरी आज्ञा मानो।

परणु नही विष्णु युं बोले, तुम जरणी मैं जाया।
मेटयो हुक्म कियो तब परले, उलट उसी कूं खाया ॥ १० ॥

विष्णु बोले मैं आपके साथ विवाह नही कर सकता। क्योंकि आप मेरी माता है, जब विष्णु ने शक्ति की आज्ञा नही मानी तो उसको वापिस मिटा दिया।

ब्रह्मा पास आण कर बोली, परण परण मुज तांई।
के तुज मार खाख में मेलूं, समज सोच उर मांही ॥ ११ ॥

शक्ति ब्रह्माजी के पास आकर बोली, मेरे से विवाह करो। हृदय में सोचो, समझो, विवाह नही करोगे तो तुमको भी मिटा दूंगी।

ब्रह्मा नटयो, दफे जब कियो, शिव कूं कह बतलायो।
परण परण के मार मिटाऊं, सुत आय उरभायो ॥ १२ ॥

जब ब्रह्माजी ने मना किया तो उनको मिटा दिया और शिवजी से कहने लगी मेरे साथ विवाह करो, तुम मुझे पसन्द हो विवाह नही करोगे तो मैं तुमको भी मिटा दूंगी।

शिंभु सोच ध्यान जब कियो, काहा ख्याल यो होई।
तुम सो कुंण कहां सुं आई, भेद बताओ मोही ॥ १३ ॥

शंकरजी ने मन में सोचा व ध्यान किया कि यह क्या खेल है, शंकर ने शक्ति से कहा कि आप कौन है व कहां से आई है इसका मुझे भेद बतावो।

ईछया आद महातत कहिये, वहां उतपत है मेरी।
इण्डकटास ब्रह्म जल तिनूं, जहां उतपत है तेरी ॥ १४ ॥

पारब्रह्म परमात्मा की इच्छा ही निरंजण निराकार सत चेतन है उसे ओऊं व होणकाल ब्रह्म कहते है । निरंजण निराकार सतचेतन ही ब्रह्म का पद है उसे ही महतत कहते है। उस महतत से मेरी उत्पति है, इण्ड कटाक्ष ब्रह्म जल से विष्णु ब्रह्मा व तुम्हारी उत्पति है।

तीनूं लोक बसावण काजा, सायब रीत बणाई।
दिया हुक्म बोहो हुसियारा, तब मैं चालर आई ॥ १५ ॥

तीन लोको की रचना करने के लिये परमात्मा ने स्त्री और पुरूष की रीति बनाई व तीन लोको की रचना की। मुझे आज्ञा हुई है जब मैं तुम्हारे पास आई हूं।

शिंभु कहे दुरष हम मानी, ब्रह्मा विष्णु ऊपावो।
मैं नही हुक्म आपको फेरूं, करो तिके तुम चावो ॥ १६ ॥

तुम्हारा कहना सच है मैं मानता हूं शंकरजी ने कहा, परन्तु ब्रह्मा, विष्णु को वापस बनाओ। मैं आपकी आज्ञा नही फेरूंगा, जो आपकी इच्छा हो वही करो।

किया पुरूष फेर सो दोनु, यां अब मतो उपाया।
परणो निसंग डरो मत कोई, तुम हम औरन माया ॥ १७॥

शक्ति ने ब्रह्मा, विष्णु, दोनो को फिर प्रकट किया अब इन तीनो ने विचार किया तब शंकर बोले इसके साथ निश्चिंत होकर विवाह करो तुम हम शक्ति एक ही मायास्वरूप है।

शिंभु कहे धरो बप दूजो, गोरा शिव घर आई।
लक्ष्मी स्वरूप विष्णु को बरियो, सावतरी दुज ब्याई ॥ १८ ॥

शंकर ने शक्ति से कहा तुम दूसरा शरीर धारण करो, तब गोरा याने पार्वती से शिवजी ने, लक्ष्मी के रूप से विष्णु के साथ व सावित्री के रूप में ब्रह्माजी के साथ ब्याह किया।

चारूं मिल्या हुवा अब राजी, सुण चकडोल बणायो।
धर आकाश पयांल सो बांधिया, सगती महासुख पायो ॥। १९ ॥

शक्ति ब्रह्मा विष्णु महादेव चारो मिलकर प्रसन्न हुये और तीन लोको का चकडौल याने आकार बनाने लगे। धरती आकाश पाताल की रचना की, यह देखकर शक्ति बहुत प्रसन्न हुई ।

थुंभै नही होय मिट जावे, कर कर पच पच थाकी।
तब सुण आवाज भई घट भीतर, सतशब्द कर साखी ॥ २० ॥

पृथ्वी स्थिर नही हुई, प्रयत्न कर कर थक गये। जब घट में आवाज सुणाई दी कि सतशब्द जो ब्रह्म का नाम है वो सत है। उसके आधार से रचना करो।

जब सुण ध्यान धरयो घट भीतर, सुध बोहोत बिध आई।
दियो जस श्याम सिमरथ कूं, करूणा बोहो बिध गाई ॥ २१ ॥

जब सबने हृदय में ध्यान किया तो सब तरह से शुद्ध ज्ञान प्राप्त हुवा। हे परमात्मा पृथ्वी ठहरने का यश आपको है, तब करूणा कर बहुत विधि से प्रार्थना की।

थुंभीया पंयाल धरण थोभाणी, फिर आकाश थुंभायो।
ब्रह्मा विष्णु महेसर सगती, नांव ईधक तब जाण्यो ॥ २२ ॥

पहले पाताल ठहरा, फिर पृथ्वी ठहरी, फिर आकाश ठहरा, जब ब्रह्मा, विष्णु, महादेव व शक्ति ने सतशब्द ब्रह्म के नाम को सबसे अधिक समझा।

तीनुं रच्या भिन्न भिन्न के, चवदे भवन बणाया।
धर पाताल किया सुण तेहेरे, सुरग इकीस कहाया ॥ २३ ॥

स्वर्ग मध्य पाताल इन तीन लोको की अलग अलग रचना की। भूर, भव, स्व, महर, जन, तप, सत, तल, अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल चोवदह भवन बनाये। तेरह पंयाल व ईकीस स्वर्ग बनाये।

थुंभिया शब्द चिदानन्द टेके, सतशब्द आधारा।
दिवी सता ब्रह्म जल थुंभियो, मांड रची तां बारा ॥ २४ ॥

ये सतशब्द के आधार से ठहरे व सचिदानन्द ने सतशब्द के आधार से आपकी सता दी तब ब्रह्म जल ठहरा तब पृथ्वी की रचना की।

मंडपे शीष विराजे कोरम, दस दिरगपाल बणाया।
कोरम पीठ शेष को आसण, तां पर धरणी लाया ॥ २५ ॥

मैंढक के ऊपर कुर्म यानि कछय्प (काछबा) को रखा। दस दिरगपाल बणाये। कछय्प की पीठ पर शेष का आसन किया व शेष के ऊपर पृथ्वी ठहराई।

रच्यो सुमेर समंद सो किया, सपत दीप तब बागा।
सुरग इकीस रच्या गिरवर में, चारपुरी, सिर जागा ॥ २६ ॥

पृथ्वी पर सुमेरू पर्वत की रचना की, सात समुद्र बनाये जिससे सप्त दीप अलग कहलाने लगे व मेरू में इक्कीस स्वर्ग की रचना की, उसमें चार पुरी सबसे श्रेष्ठ जगह बनाई।

कर अस्थान मांय सो बैठा, अब हंस पुरूष बणावे।
तिनुं लोक बसे जीव सारा, ज्युं सायब मन भावे ॥ २७ ॥

इस तरह स्थान बनाकर उसमें बैठ गये वहां अब हंस पुरूष बनाने लगे और समझा की तीन लोको में सभी तरह के जीव बस जावेंगे। तब परमात्मा को अच्छा लगेगा।

ब्रह्मा विष्ण महेसर सगती, निश दिन पुरूष बणावे।
जुग में एक रह नही कोई, पिछा हर हरजावे ॥ २८ ॥

ब्रह्मा, विष्णु, महादेव व शक्ति रात दिन मनुष्य बनाने लगे। परन्तु जगत में एक भी नही रहा वो जीव ब्रह्म ध्यान करके ब्रह्म में मिल गये।

दिष्ट पसार ध्यान कर देख्या, पुरूष न दिशे कोय।
तीनुं लोक पडया सब सुना, कहो कहा बिद होय ॥ २९ ॥

जब ब्रह्मा, विष्णु, महादेव ने दृष्टि पसार कर ध्यान से देखा तो एक भी मनुष्य नजर नही आया। तीन लोक खाली पडे है, तब बोले यह क्या हुवा है।

नारी पुरूष एक नही दिशे, तुम हम बहुत बणाया।
कहोजी गया कहां उड बैठा, खबर करो किण खाया ॥ ३० ॥

एक भी स्त्री पुरूष नजर नही आ रहा है। तुमने व हमने बहुत बनाये है, वो कहां चले गये, कहां उड बैठे है या कोई उन्हे खा गया है। इसका पता लगाओ।

धरियो ध्यान विष्णु शिव ब्रह्मा, खबर जीव की आंणी।
मिलया उलट जाय सायब में, बोल्या उदबुद बांणी ॥ ३१ ॥

ब्रह्मा, विष्णु व शिवजी ने ध्यान किया और जीवों की खबर की तो जीव ब्रह्म ध्यान कर ब्रह्म में मिल गये, ऐसी उदबुद बाणी बोलने लगे।

ब्रह्मा कहे विष्णु जुं आगे, शिव जो सगती बुलावो।
जे जुग तीन बसण की आसा, तो कल कीमत लावो ॥ ३२ ॥

तब ब्रह्मा, विष्णु से कहा कि शिव व शक्ति को बुलावो जो तुमको तीन लोक बसाने की आशा है तो कला व प्रयत्न करके जीवों को ब्रह्म ध्यान करना भूला दो।

चारूं मिल्या कियो मन सोबो, बोहो बिद सुख बणावो।
चाला करो बहुत विध भारी, जीव रीज तां लावो ॥ ३३ ॥

ब्रह्मा, विष्णु, महादेव शक्ति ने मिलकर सलाह मशविरा किया कि जीवो के लिये अनेक प्रकार के सुख बणाओ उन सुखो में रीज कर जीव उसमें फंसकर ब्रह्म ध्यान करना भूल जावेंगे।

ब्रह्म ध्यान सोदो चुकलाई, ऐसी करो उपाया।
ध्यान ज्ञान बोहता कर डारो, छेडो छेह न गाया ॥ ३४॥

ऐसा ऊपाय करो जिससे जीव ब्रह्म ध्यान करना भूल जावे। ध्यान ज्ञान इतने कर डालो कि उनको करते करते उनका छेह पार नही आवे।

जब सुण विष्णु उठकर बोल्या, मैं ब्रह्म ध्यान छुडावुं।
रिध सिध कला करूं बोहो तेरी, धर अवतार रिजावुं ॥ ३५ ॥

विष्णु ने कहा कि मैं जीवो को ब्रह्म का ध्यान करना छुडा दूंगा। मैं बहुत सिद्धी व कलाये बना दूंगा, जिसमें लगकर जीव ब्रह्म ध्यान करना भूल जावेंगे। मैं अवतार धारण कर सब जीवो को रिजा लूंगा।

रिखब देव धुर पंथ कहाणा, राज रसायण किया।
कर कर कला हंसा डेकाया, शरण विष्णु की लिया ॥ ३६ ॥

जिस प्रकार ऋषभ देवजी ने आकर राज रीति बनाई इनके पहले राज रीति नही थी। लेना देना माप तोल रूपये पैसे नही थे। अनेक प्रकार की कला रचना कर जीवो को उसमें उलझाया व विष्णु की शरण लेने का उपदेश दिया।

माया चैन तप बोहो साजन, ओऊं शब्द सराया।
पूजा अरच धाम सो बांध्यो, सुख संपत सो लाया ॥ ३७॥

अनेक तरह के साधन तप व माया के चैन बना दिये, ओऊं शब्द की सराहना करके पूजा पाठ करने की महिमा करी। बहुत से सुख व संपति प्राप्ति के साधन बना दिये।

च्यारूं खांण बाण सो किवी, बोहो विध जीव बणाया।
ब्रह्मा विष्णु महैसर सगती, जहां चारूं चल आया ॥ ३८ ॥

अंडज जरायुज आंकूर उदबुद ये चार खान परा पश्यन्ती मध्यमा बेखरी ये चार बांणी बनाकर अनेक तरह के जीव बनाये। बाद में ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, शक्ति चारो ही वहां चलकर आये।

तो पण हंस ध्यान नही छोडे, तब ब्रह्मा उठ बोल्या।
चारूं वेद किया बोहो भारी, भिन्न भिन्न ताला खोल्या ॥ ३९ ॥

आकर देखते है तो हंस ब्रह्म ध्यान करना नही छोडते तब ब्रह्माजी बोले मैंने चार वेद ऋजु, यजु, शाम, अथर्व बनाये है। सब वेदो में भिन्न भिन्न प्रकार का ज्ञान है। जो जीव वेदो के ज्ञान में लग जावेंगे।

फिर अवतार मेलिया जुग मांही, जप तप जीग बोहो विध किया।
मंतर ध्यान सजीवण कर कर, सत करे कर दिया ॥ ४० ॥

ब्रह्माजी ने कहा मेरे अवतार अठ्ठासी हजार ऋषियो को जगत में भेजा वो जीवो को जप करना, तप करना, यज्ञ करना बता देंगे। मंत्र ज्ञान व संजीवणी विधा करके सच्ची करके बता देंगे,

उससे जीव ब्रह्म ध्यान छोडकर वो विधि करने में लग जायेंगे।

उडे गडे देह बोहो बणावे, च्यार भूजा धर लेवे।
अेसा मंतर किया बोहो पैदा, हार कबू न रहवे ॥ ४१ ॥

ब्रह्माजी ने कहा वेदो मे ऐसे मंत्र बनाये जिसके साधन से आकाश में उडना, धरती में गडना, उन मंत्रो के प्रभाव से चार भुजा धारण करना, ऐसे बहुत मन्त्र बनाये, जिससे कभी हार नही होगी।

किया पुराण ब्रह्म कूं फाटो, न्यारा अंग दिखाया।
मैमा करी बोहत विध भारी, किरिया करणी ल्याया ॥ ४२ ॥

पुराण बनाकर ब्रह्म को अलग करके जिसका पुराण उसकी महिमा अनेक तरह से करके क्रिया करणी करने की विधि पुराणो में बताई।

तो पण हंस करेक नही यारे, ब्रह्म ध्यान नहीं छाडे।
जब शिव शगती गही कल कीमत, कसर कोर बोह काढ़े ॥ ४३ ॥

इतना करने पर भी हंस याने जीव इनकी नही मानते हुए ब्रह्म का ध्यान करना नही छोडते, तब शिव शक्ति ने कला व हिकमत कर जो उनमें कमी थी उसको निकाली।

कियो रोग बीर बोहो पैदा, कवी सुर वैद बणाया।
कामर क्रोध मोह अर ममता, ये चारूं अंग ल्याया ॥ ४४ ॥

इन्होंने रोग बनाये, बीर भोपे बनाये, कविता सुनाने वाले कवि बनाये। रोग निदान हेतु वैद्य बनाये। शरीर में कामनायें, क्रोध, मोह और ममता जागृत करी। इस तरह ब्रह्म ध्यान में बाधा उत्पन्न करी।

खुध्या चाह भरम दुख तरसना, निद्रा अे बिस्तारी।
कियो भरम कपट झूंठ सो पैदा, कुबदर कला विचारी ॥ ४५ ॥

भूख पैदा की, चाह, भरम, दुख, तृष्णा, नींद का विस्तार किया, भरम कपट झूंठ पैदा किये तथा नाना प्रकार की विधियां जिससे ब्रह्म भक्ति भूले ऐसी कलायें की।

मूरत बांध कियो सत पैदा, अशुभ शुभ जग मांही।
हंसा निकट एक नही आवे, सब दोला फिर जांही ॥ ४६ ॥

मूर्ति बनाई, मूर्ति में सत पैदा किया और जगत को उसकी पूजा करने से शुभ फल व नहीं करने पर अशुभ फल होंगे। यह सारी बाते बताई, फिर भी हंस एक भी निकट नहीं आते। दोला फिरना यानि इतना करने पर भी ब्रह्म ध्यान नहीं छोडा।

जब सुण जोग बहु बिद लाया, समझ सरोधो कियो।
काया मांह खण्ड पिण्ड सोजर, ज्ञान ब्रह्म ले दियो ॥ ४७ ॥

योगो की विधि अष्टांग योग, सांख्य योग अनेक प्रकार के योग बताये। स्वरोदय किये योगाभ्यास से शरीर में खण्ड ब्रह्मण्ड में वही पिण्ड में बताकर यही ब्रह्म ध्यान है ऐसा बताया।

बिछु सांप बणाया केता, धर धर देही धारया ।
च्यांरू बरण किया खट दरशण, बहो बिद शब्द ऊचारया ॥ ४८ ॥

कितने ही तरह के बिच्छु सांप व जहरीले जानवर पृथ्वी पर बनाये। चार वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र बनाये। छ खट दर्शणियो को बनाया। जोगी जंगम, सेवडा, सन्यासी, दरवेश और

ब्राह्मण किये, इनके द्वारा अनेक प्रकार के शब्द, तरह तरह का ज्ञान का उच्चारण करवाया।

जंतर किया मंतर बोहो तंतर, झाडा बोहत बणाया।
बाजी ख्याल किया जुग हूनर, विध विध रामत ल्याया ॥ ४९ ॥

जन्त्र मन्त्र किये, जाडा झपाडा बहुत किये, गारोडी बाजी खेल जग में कई प्रकार के हुन्नर किये। अनेक प्रकार के खेल तमाशे किये और उसमें हंस लग गये।

किया बरत बहोत भरमाया, ब्रह्म ध्यान के काजा।
विध विध राग छतीसुं ल्याया, अनंत कोट सो बाजा ॥ ५० ॥

बहुत व्रत ऊपवास बताये, इससे जीव की भलाई है। ऐसा बताकर जीवो को भरमा दिया। ब्रह्म ध्यान भुलाने के लिये छः राग छतीस रागणी पैदा की व बजाने के बाजे तो अपार अनन्त पैदा किये।

किया पंथ बोहोत विधभारी, बारे राह चलाया।
भिन्न भिन्न भेद किया सुखदायक, वहां ले सांच लखाया ॥ ५१ ॥

अनेक प्रकार के भारी भारी पंथ करके सबके अलग अलग रास्ते किये। उसमें बाहर के साधन अलग अलग बताये जिससे यहां सुख मिलेगा। ऐसे तरह तरह के भेद बताये। उसमें जीव को सुख का अनुभव होने लगा। तब जीव उन्हें सच मानकर विश्वास करने लगे।

अबे बस हुवा हंस सब सारा, सनमुख आयर बूजे।
कोहो क्या करा हम स्वामी, ब्रह्म ध्यान नही सूजे ॥ ५२ ॥

अब सभी जीव इनके वश में हो गये और सन्मुख जाकर पूछने लगे स्वामीजी अब हम क्या करें, हमें ब्रह्म ध्यान तो अब सुजता ही नही है।

जब शिव शब्द लाख सो किया, खट शाषतर भारा ।
नाख्यो भरम ब्रह्म दिखलायो, छः मत छः अंग नियारा ॥ ५३ ॥

शिवजी ने लाख शब्द किये। छः शास्त्र बहुत भारी बनाये उन शास्त्रो से ही ब्रह्म पद की प्राप्ति हो जायेगी, यह भरम डाल दिया। शास्त्रो के छः अलग अलग मत बनवाकर छः तरह के स्वभाव बनाये।

अब सुण हंस अडण कूं लागो, भरम ऊपना मांही।
ओ कह ब्रह्म ऐसी विध पावे, ऊ कहे तुज घम नांही ॥ ५४ ॥

शास्त्रो को सुन सुनकर देख देखकर जीव अडने लग गये, उनके आपस में भरम पैदा हो गया। एक बताता ब्रह्म ऐसी विधि से प्राप्त होगा, दूसरा कहता इस विधि से प्राप्त होगा, तुम्हें नही मालूम है। मैं कहता हूं वो सच्च है। ऐसे आपस में झगडने लगे।

चूका ध्यान बन्ध कर मोह ये, माया धरम उठायो।
अबे बोहो बात गई जुग फेली, ब्रह्म ध्यान नही पायो ॥ ५५ ॥

इनमें बंधकर इस तरह ब्रह्म ध्यान करना भूल गये और माया का धर्म धारण कर लिया, यह बात अब जगत में फैल गयी, इस कारण ब्रह्म ध्यान नही मिला अदृश्य हो गया।

लागा धन्ध ध्यान अब भूला, बोहो मत धरम संभाया।
थाका जीव मोख कूं जाता, ऊलट जगत में ही आया ॥ ५६ ॥

इस धंधे में लगकर ब्रह्म ध्यान भूल गये, बहुत तरह के मत व तरह तरह के धर्म लोगो ने धारण किये। जीव मोक्ष में जाते रूक गये और वापिस जगत में ही आने लगे।

मरतलोक अब बसणे लागो, जात पांत नही कोई।
तपस्या धर्म मुगत की बांता, निश दिन रहा संभाई ॥५७॥

इस कारण मृत्युलोक बसने लगा, इस समय तक जाति पांति कुछ नही थी, तपस्या व धर्म यही मुक्ति की बात रात दिन धारण करने लगे।

ब्रह्मा विष्णु महेसर सगती, फिर एक मता ऊपावे।
सुरग पंयाल बसे सो कीजे, हंस आपणे ही आवे ॥५८॥

ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शक्ति ने मिलकर विचार किया की मृत्युलोक तो बसने लग गया परन्तु स्वर्ग पाताल में जिस ऊपाय से हंस बसे वो ऊपाय कीजिये।

तब सुण राह किया सब पैदा, पंयाल सुरग का न्यारा।
करणी ज्ञान पंथ फाटया, नाना विध का सारा ॥५९॥

तब स्वर्ग व पाताल के रास्ते अलग अलग बनाये, करणी व ज्ञान से अलग अलग रास्तो पर चलने लगे।

तपस्या सत जत ओ मारग, सुरग लोक कूं किया।
तीरथ व्रत नारदी भक्ति, विष्णु पंथ धर लिया ॥६०॥

तपस्या सत जत का साधन करने वालो को स्वर्ग की प्राप्ति होती है। तीरथ व्रत नारदी भक्ति कीर्तन शिवरण करने से विष्णु लोक के रास्ते किये।

मंतर धरम गायत्री क्रिया, दुज लोक को गेलो।
शिव की सीख धरम जप शिव को, सो कैलाशर जैलो ॥६१॥

वेद के मंत्र धर्म व गायत्री क्रिया करम ये ब्रह्मा के लोक में जाने का रास्ता बनाया। शिव का इष्ट धरम व जप करना ये कैलाश में जाने का रास्ता बनाया।

किन्या धरम आत्मा पांचू, ब्रह्म जांण कर पूजे।
ओ सुण पंथ सगती को कहिये, विष्णु परे लग सूजे ॥६२॥

कन्यादान करना पंच भुती आत्मा को ब्रह्म मान के पूजना यही शक्ति के लोक का रास्ता विष्णु लोक से ही आगे जाने का बताया।

अभैदान सुख सेज सहेती, गेहणो बसतर लावे।
ओ सुण पंथ विष्णु के आगे, सगती लोक जहां जावे ॥६३॥

स्त्री को गहने कपडे सहित दान करके वापिस मोल लेना ही अभैदान कहलाता है। सुख सेज सहित पलंग गादी रजाई बिछौना आदि दान करना, यह विष्णु लोक से आगे का रास्ता शक्ति लोक में जाने का रास्ता बनाया।

आंण सुध कोई धरम न पकडे, सेल भेल सब गावे।
ओ सुण पंथ उलट कर पाछो, भू लोक में आवे ॥६४॥

और कोई विचार करके एक धर्म न धारण करने वाले तथा सभी सेल भेल की भक्ति करने वाले वापिस भूलोक याने मृत्युलोक में आते है।

सुण पाताला पंथ यो जासी, दया बिना तप किया।
बिन गुरुगम पांच कूं पकडे, मन जहान पर दिया ॥ ६५ ॥

जिस धर्म में दया नही है बिना दया तपस्या करते है, गुरु के ज्ञान बिना पांच विषयो पर काबू करते हैं, मन संसारी कार्य में लगाते हैं, वो पाताल में जाते हैं।

ब्रह्मा कहे शक्ति के तांई, करम पंथ ओ होई।
वे कोहो कोण नगर कूं पुंचे, तके बतावो मोही ॥ ६६ ॥

ब्रह्मा ने शक्ति से कहा यह कर्म पंथ है, यह अशुभ कर्म करने वाले कहां जायेंगे, यह मुझे बतावो।

तब तो शक्ति कहे सुण ब्रह्मा, जमराय सो कवावे।
वांको नगर रच्यो गिर ऊपर, करम पंथ वहां जावे ॥ ६७ ॥

तब शक्ति ने कहा ब्रह्माजी सुणो जिसे यमराज कहते है उनका नगर सुमेरू पर है। ये अशुभ कर्म करने वाले कर्म पंथी वहां जायेंगे।

ब्रह्मा कहे जम सो कुण है, काहा प्राक्रम होई।
कृपा करो कहो भिन्न भिन्न के, भेद बतावो मोई ॥ ६८ ॥

ब्रह्माजी बोले यम कौन है, उनका प्राक्रम क्या है, कृपा कर अलग अलग भेद बतावो।

बोली सगती आप ऊगत सुं, सूरज के है सुत जाया।
तुम हम शिरे पुंच है भारी, धरमराय जम कुवाया ॥ ६९ ॥

शक्ति विचार कर बोली कि यमराज सूर्य का पुत्र है। तुम्हारे व मेरे पर यमराज की सता व पहुंच है इससे धर्मराज यम कहलाया।

जब शिव विष्णु कही आ गाथा, धरमराय मत आणो।
तुम हम शक्ल बस सो हुवा, तांको काय ऊपाणो ॥ ७० ॥

शिव व विष्णु बोले धर्मराज को मत बुलाओ, हम और तुम उसके वश हो गये तो उसको पैदा क्यों करते हो।

सगती कह पाप पुन्न दोई, भेला सदा न होई।
जमराय बिन कोण भुगतासी, नरक कुंड कहूं तोई ॥ ७१ ॥

शक्ति ने कहा पाप पुण्य साथ नही रह सकते तो यमराज बिना, पापी जीवों को नरक कौन भुगतावेगा।

किनो जम दिवी कोटवाली, जम किंकर सब न्यारा।
पासी गुरज दिया कर आवध, पकड लिया जीव सारा ॥ ७२ ॥

जमराज को पैदा करके कोतवाल बना दिया और जमराज के दूत अलग बनाये, उनके हाथो में फांसी व गुरज हथियार दिये, जिससे सब जीवो को पकड कर बस में कर लिया।

परबस पडया हुवा जीव बेमुख, अब कहो कौन ऊबारे।
ब्रह्मा विष्णु महेशर शक्ति, अेई मारे अेई तारे ॥ ७३ ॥

सब जीव पराये वश होकर ब्रह्म से बेमुख हो गये, अब उनका उद्धार कौन करे। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव और शक्ति यही मारने वाले तथा यही तारने वाले हो गये।

भोमा तो भगवत बन बैठी, ब्रह्मा भयो विधाता।
विष्णु आप ईश्वर बन बैठो, काल रूप शिव नाथा ॥ ७४ ॥

शक्ति तो भगवत बन बैठी, ब्रह्मा रचना करने वाला विधाता बन गया। विष्णु तो प्रतिपाल करने वाले ईश्वर हो गये। शिवजी कालरूप बनकर संहार करने लग गये।

भयो अन्याव न्याव कुण बुजे, परवश पडया पुकारे।
पेली लेकर भोग भोगावे, पीछे गरदन मारे ॥ ७५ ॥

अब जीवो पर अन्याय होने लगा, न्याय करने वाला कोई नही रहा, जीव परवश हो गये, पहले तो जीवो को भोगो में लगा दिया, फिर भोगो में दोष बताकर सजा देने लगे अर्थात जीवो को शुभ करणियों में फलो की प्राप्ति बताकर शुभ करणियो में लगाया परन्तु करणियां करने में नही चाहने पर अशुभ भी हो जाता है।

सूना जीव धणी बोहो तेरा, जिण तिण हाथ बिकाया।
धरमराय कूं अग्या किनी, पाप पुन्न भुगताया ॥ ७६ ॥

सुना याने मालिक बिना मालिक के जीवों को संभालने वाला एक मालिक नही रहा, एक दूसरे की आज्ञा मानने को परवश कर दिया और धर्मराय जीव को पाप पुण्य का फल भुगताने लगे।

जम की त्रास सही नही जावे, रूदन करे कर जीव रोवे।
चितरगुप्त घट घट में बैठा, लिख लिख सेनप जोवे ॥ ७७ ॥

जमराज की मार सहन नही कर सके। जीव रो रोकर रूदन करने लगे। इधर चित्रगुप्त घट घट में बैठकर जीवों के अच्छे बुरे कर्मो को लिखने लगे।

चवदे क्रोड चढे जम किंकर, मंड में धूम मचाई।
हाहाकार करे हंस करूणा, जब साहेब सुण पाई ॥ ७८ ॥

जमराज के चौदह करोड जमदूतो ने जगत में धूम मचा दी। जीवो ने करूणा कर परमात्मा से प्रार्थना की, तब जीवो की प्रार्थना परमात्मा ने सुण ली।

उपजे खपे पडे जीव परले, वे दुख सुख वार न पारा।
जब सुण बाज भई अवगत की, सिरजुं संत हमारा ॥ ७९ ॥

परमात्मा ने देखा कि जीव ऊपजते है मरते है और उसका सुख दुख भोगते है। उनके सुख दुख का कोई वार पार नही है याने थाह नही है। सुकर्मो से सुख व बुरे कर्मो से दुख भोगने लगे तब आकाशवाणी परमात्मा की हुई कि मैं जीवो का उद्धार करने के लिये संतो को भेजता हूं।

ऊठी धुन शकल जुग धुज्यो, सुर नर करे विचारा।
शिरजण हार संत कूं भेज्या, दिया शब्द आधारा ॥ ८० ॥

आवाज की ऐसी धुन हुई कि सारा जगत धूजने लगा। मनुष्य व देवता विचार करने लगे कि परमात्मा ने शब्द का आधार देकर जीवो का उद्धार करने के लिए जगत में संतो को भेजा है।

साध आप साहेब अवतारी, पूजा विष्णु उठाई।
जोग ध्यान शंकर तज भागो, ररंकार लिव लाई ॥ ८१ ॥

इस आवाज को ब्रह्मा विष्णु महादेव व नर नारियों ने सुनी, सुनकर सबसे पहले तीनों देवता पहुंचे, अब उनसे बात करी, आप कौन हो, किसलिये पधारे हो, किसने आपको भेजा है? तब संत

जी बोले परमात्मा ने जीवात्मा का उद्धार करने के लिये सतशब्द रूपी आधार देकर भेजा, जिससे हंसो का पाप पुण्य का खत फट जावे, इस राम के नाम को श्वांस प्रश्वांस में रटने से एक श्वांस में सत्तर करोड की कमाई हो जावे। यह बात सुनकर के विष्णु भगवान जो अपना साधन करते थे उसको उठाकर के यह साधन धारण कर लिया इसी तरह शंकर भगवान जो जोगारम्भ करते थे उन्होने भी यह विधि धारण कर ली।

ब्रह्मा वेद किया सब झूंठा, धरमराय डण्ड डारया।
चित्रगुप्त लेखन धरी मेली, पाप पुण्य खत फाडया ॥८२॥

तब ब्रह्मा जी ने कहा कि मेरे वेदों के ज्ञान से सतशब्द नहीं आता है और बिना सतशब्द के मोक्ष में नही जाया जा सकता, इसलिये मोक्ष के लिये मेरे वेदों का ज्ञान झूंठा है। तब धर्मराय जी ने देखा कि एक श्वांस में सत्तर करोड नाम आते हैं तो सहज में ही उनके पाप व कर्मो का खात्मा हो जाता है तो धर्मराज जी भी ऐसी आत्मा को तीन लोक के बंधन से मुक्त कर देंगे। इस प्रकार इतनी भक्ति होने से चित्रगुप्त ने भी अपनी लेखनी बंद कर दी और पूर्व के जो भी पाप कर्म थे उन खतों का फाड दिया।

नाम निशाण रूप्यो मरतू मण्डल, घट में नोबत बागी।
सुण कर आवाज सकल हंस चेत्या, राम भजन धुन लागी ॥८३॥

म:फ: है कि संतो के अणभै ग्यान का मृत्यु मंडल में डंका बजा तब हंस वृति नर नारी ग्यान सुणकर चेते और शरीर रूपी घट में सांस ऊसांस में राम भजन की धुन्न लग गई।

बेमुख जीव हुवा सब सन्मुख, मोख पंथ किया बेता।
बाट घाट कोई विध्न न व्यापे, राम राम मुख केता ॥८४॥

सब जीव परमात्मा से बेमुख थे सो सन्मुख हो गये याने भजन करने लगे। मोख का रास्ता चालू हुवा, राम राम का भजन सांस ऊसांस में करने से मोख के रास्ते कोई बाधा नही रही।

मेटया मत, किया तत निरणा, नीर खीर ज्युं न्यारा।
माया ब्रह्म किया उलजेडा, न्याव चुकाया सारा ॥८५॥

सभी मन के मते का ग्यान मिटाकर ब्रह्म का निरणा हुआ, जैसे हंस दूध व पानी को अलग अलग कर देता है, ऐसे ही हे हंस माया क्या है ब्रह्म क्या है इस उलजेडा में जीव नही समझते थे उसका अलग अलग भेद समझा कर निरणा किया।

जै जैकार भयो जुग सारे, हंस बंधते छूटा।
ब्रह्मा विष्णु करे अस्तुती, सब मेबासा तूटा ॥८६॥

सारे जगत में संतो के ब्रह्म ज्ञान की महिमा होने लगी व जीव जन्म मरण के बंधन से छूटने लगे। ऐसे संतो की ब्रह्मा विष्णु स्तुति करते हैं। जो जीव का पहले तीन लोक में जन्म मरण का तांता लग रहा था वो टूट गया।

सगती आय भई संत दासी, शंकर शीष निवावे।
धरमराय कूं मेल पगातल, हंस मोख कूं जावे ॥८७॥

शक्ति भी ऐसे संतो के ज्ञान की सराहना करने लगी, शंकर भगवान भी ऐसे संतो को शीष नवाते है। इस मनुष्य शरीर में आत्मा जो मन रूपी धर्मराय के अण्डर में थी अब इस ज्ञान से आत्मा

शूरवीर बनकर के मन को अपने पक्ष में करके मोक्ष में जाने लगी।

धिन्न धिन्न साध धिन हो साहेब, धिन्न धिन्न सता तुमारी।
काट जंजाल जीव निस्तारया, किया मोख इधकारी ॥ ८८ ॥

संतो के ऐसे ज्ञान को समस्त देवता व नरनारी धन्य धन्य करने लगे, उस परमात्मा व उसकी सता को भी धन्य धन्य कहने लगे, क्यों कि जीवों का जन्म मरण का तांता मिट गया व मोक्ष जाने का मार्ग प्रशस्त हो गया।

सागर शिखीर सम्यै किणी ब्रह्मा, सुरपत जाय पुकारे।
लूं अवतार हुवे नभ वाणी, असुर मार सुर तारे ॥ ८९ ॥

जो संत अवतार धारण करके पधारे थे वे वापस मोक्ष धाम चले गये। अब उस समय के ब्रह्मा विष्णु महादेव भी पद मुक्त हो गये। व पुनः इन ओधो पर दूसरे ब्रह्मा विष्णु महादेव आ गये। सृष्टि कर्ता परमात्मा का नियम है कि जो ब्रह्मा विष्णु महादेव की भक्ति करते हैं वह उनको वरदान देते हैं। इस तरह नर शरीर में इन देवों की भक्ति करके उनसे वरदान प्राप्त करके फिर सृष्टि के नियमों की अवहेलना करते हैं। उस वरदान का दुरूपयोग करते है। देवताओं व मनुष्यों को दुख देते हैं तब उनका नाम राक्षस हो जाता है जैसे हिरणाकश्यप, रावण, कंस इत्यादि इसके उदाहरण है। ब्रह्मा विष्णु महादेव से जब यह राक्षस नही मरते तब ब्रह्माजी व देवताओं का राजा इन्द्र मिलकर के क्षीर सागर में सोये हुये विष्णु के पास जाते हैं। उनकी बात को सुनकर के राम कृष्ण आदि के रूप में अवतार लेकर के धराधाम पर आकर के देवताओं द्वारा दिये गये वरदान की मर्यादा रखते हुए उन राक्षसों का वध करते है व देवताओं की रक्षा करते हैं।

युं अनीत करे अे देवा, पंथ आपणो थापे।
तत पंथ आद ब्रह्म को मेटे, जब ब्रह्म ही आप ऊथापे ॥ ९० ॥

अब ब्रह्माजी व इन्द्र देवता ने उस अवतार से बात करी, तब अवतार ने कहा कि आप हमारे को कष्ट देते हो तब ब्रह्माजी ने कहा कि यह मनुष्य जो वरदान लेकर के अपने पंथ की स्थापना करते है एवं ब्रह्म परमात्मा के आदि अनादि से ब्रह्म भक्ति के पंथ की उथापना करते है।

शिरजण हार काज इण शिरज्या, थे जाय रचो संसारा।
ये आप आप ही शिरजण होय बैठा, बण बैठा बटफाडा ॥ ९१ ॥

तब अवतार रूप में आने वाले देवता ने कहा कि इसमें गलती आप ही की है। आप ही ने इनको पैदा किया व वरदान भी आपने ही दिया अतः गलती आप की ही हुई। तब ब्रह्माजी बोले – परब्रह्म परमात्मा ने हमारे को सृष्टि रचना का हुक्म दिया था एवं हमारी भक्ति करने पर वरदान देने के लिये भी कहा था। अब यह राक्षस वृति मनुष्य जगत में वरदान लेकर के स्वयं सिरजणहार बन जाते है एवं सृष्टि के नियमों की उथापना करते हैं। यही बण बैठा बटफाडा है।

मारे बाट देवे बटफाडा, मोख पंथ अटकावे।
अमर पुरूष अजुणी साहेब, जुग में सन्त ऊपावे ॥ ९२ ॥

इस तरह राक्षस रूपी मनुष्य जगत में राम राम नहीं करने देते व मोक्ष पंथ में बाधा उत्पन्न करते हैं तब जीव मोक्ष में जाना बन्द हो जाते है। तब परब्रह्म परमात्मा मृत्युलोक में केवली भगवन्त रूपी संत को भेजते हैं।

दोहा : या रचना बैराट की, रची इसी विध राम।
दूजो समरथ को नही, बोहोर रचे सुखराम ॥ ९३ ॥

म:फ: है कि रामजी ने बैराट की रचना इस तरह की है, दूसरा कोई सिमरथ नही है सो फिर रचे।

तीन लोक जब ही रच्या, दियो नांव आधार।
सुखदेव ब्रह्मा विष्णु शिव, सब बैठा पच हार ॥ ९४ ॥

म:फ: है कि तीनो लोक की रचना ब्रह्म नाम का आधार देने से हुई। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव सब पचहार बैठे परन्तु ब्रह्म नाम के आधार बिना संसार की रचना नही हुई।

राम नाम सत पंथ है, चौथा पद कूं जाय।
और पंथ तिहूं लोक में, फिर फिर गोता खाय ॥ ९५ ॥

राम नाम का पंथ सत है जो चौथे पद को जाता है। दूसरे पंथ तीन लोक स्वर्ग, मृत्यु पाताल लोक में फिर फिर कर गोते खाते है।

सांचा सतगुरु जब मिले, मेटे यो ऊलजाड।
सतगुरु बिन सुखराम कह, सब जग पडयो ऊजाड ॥ ९६ ॥

परब्रह्म परमात्मा के द्वारा ओधा लेकर जो संत मृत्युलोक में आते हैं तब उनके सतज्ञान से जन्म मरण का तांता मिटता है, इन संतो के ज्ञान के अलावा जितने भी साधन है उनसे जन्म मरण नहीं मिटता।

ब्रह्म अजुणी अमर है, निराकार निरधार।
अन्त अनीत देवा करे, जब लेवे जन अवतार ॥ ९७ ॥

ब्रह्म परमात्मा अजन्मा है, अमर है, निराकार है एवं उनके किसी का आधार नहीं है। उनके द्वारा रचित संसार में वरदान पाकर जो मनुष्य अनीति करते है तब दोनों तरह के नित्य व नीमित अवतार आते है। भक्ति के लिये संतरूप में तथा राक्षसों का संहार करने के लिये राम कृष्ण के रूप में आते है। इस तरह अपने बिडद की व रचना की रक्षा स्वयं रामजी करते हैं।

॥ इति श्री रचना ग्रन्थ सम्पूर्ण ॥

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत्, अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम्
परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम्, धर्म संस्थापनार्थय संभवामि युगे युगे।

कृष्ण भगवान-गीता

卐 आत्मसार ग्रन्थ 卐

अमर देश अस्थान हमारा, ज्यां सुं हम चल आया।
हंसा काज रमुं जुग मांही, अवगत मोही पठाया ॥ १ ॥

म:फ: है कि अमर देश मेरा याने सतशब्द के रहने का स्थान है, जहां काल की पहुंच नही है वहां से चलकर मैं जगत याने पांच तत्व शरीर में प्रगट हुआ हूं। हंसो का उद्धार करने के लिये ही मैं जगत में रमता हूं विचरता हूं। अवगत परमात्मा जिनकी गति अनुभव में नही आती है उसने ही मुझे भेजा है।

सांच झूंठ का करूं निवेडा, बेदा भेल न राखूं।
सब ही करूं न्याव सूं दूरा, असत मुख नही भाखूं ॥ २ ॥

सांच ब्रह्म व झूंठ माया का निरणा कर दूं। इसलिये संसार को बता दूं कि ब्रह्म क्या है माया क्या है यानि तीन लोक व चौथे लोक के साधनों की पहुंच का निरणा करूं। किसी तरह की बाधा व भेल नही रखूं और कोई भी बात असत्य मुंह से नही बोलूं।

पंडित सुणो सकल जुग श्रोता, भेद अभेद बखाणुं।
पूरण ब्रह्म पुरातम पेला, ता मिल रामत ठाणुं ॥ ३ ॥

पंडितो व संसार के ज्ञान सुनने वाले सब श्रोता मेरी बात सुनो। भेद यानि ब्रह्म अभेद यानि माया का बखाण करता हूं। पूरण ब्रह्म (सतस्वरूप) परमात्मा पुरातम यानि आदि का पद है उसके ज्ञान का वर्णन करता हूं।

सांची कहूं झूंठ नही भाखूं, सब काना सुण लिजो।
रमता राम सकल घट व्यापक, परमपद चित दीजो ॥ ४ ॥

सबको सच्ची बात कहता हूं झूंठ नही बोलता हूं। सब कानो से सुण लीजो, रामजी संसार के सब घटो याने शरीरो में व्यापक है परन्तु तुम अपना चित परमपद में लगावो।

ररंकार निरधार अगम में, ता मिल भेद पिछाणु।
ज्योति जगे अगम घर मांही, वासूं परे पियाणु ॥ ५ ॥

चार प्रकार के ररंकार है, १. कानो द्वारा सुना जाता, २. वाणी से ममा के साथ ररंकार, ३. सूरत के आधार पर ररंकार, ४. निराधार ररंकार, जो अगम है उसके साथ मिलकर परमात्म तत के भेद को पहचानो। ज्योति अगम घर में जल रही है याने सतशब्द की दिव्य ज्योति है उसके आगे जाना है।

ढीला काय भरम मत भूलो, माया चैन दिखावे।
यांके परे परम पुरूषोतम, जहां लग सूरत न जावे ॥ ६ ॥

भरमो में अपने को मत भुलावो। माया अपने चरित्र दिखा रही है, इस माया से परे परम पुरूषोतम का स्थान है। वहां तक सूरत भी नही जाती है, जितने चैन है वो सब माया के है।

दिशे चैन नैण सुं निरखे, काना आवाज सुणिजे।
तब लग ऊरे, परे नही पहुंता, नाद सुणे मन भीजे ॥ ७ ॥

माया के चैन नेत्रो से दिख रहे है, कानो में आवाज सुनाई दे रही है, वहां तक ऊरे याने हद में है। बेहद में नही पहुंचे नाद याने शब्द को सुन सुनकर मन भीज याने खुश हो रहा है।

अनहद घुरे सुणे जन मांही, ऊंची मूठ लखावे।
तब लग देश मांय जन पेंडा, देवलोक मज आवे ॥ ८ ॥

त्रकुटी में बिना किये अपने आप जो आवाज होती है उसे अनहद कहते है। उसको जन अन्दर सुनता है ऊंची मुठ लखावे याने त्रकुटी के आगे शब्द उपर उठता हुवा अनुभव होता है, वहां तक जन देवताओ के लोक में पहुंचे है।

चवदे भवन लोक सब चूरे, त्रिगुटी तम्बू दिवाणा।
अनहद घूरे मूठ कुछ नीची, हरिजन ध्यान लोभाणा ॥ ९ ॥

तीन लोक चवदा भवन को पार करके त्रिगुटी दिवाणा याने ध्यान करना है। त्रिगुटी का अेरिया भंवर गुफा सिद्ध शिला केवल की बारी तक है। अनहद घुर रहा है, हरिजन ध्यान में मगन है, पारब्रह्म में शब्द झर रहा है, सूरत अनुभव कर आनन्द ले रही है। यह ही नीची मूठ है।

यांके परे परम गुरु न्यारा, तां गत लखे न कोई।
हद में देव मानवी मोसर, हर साध त्रिगुटी होई ॥ १० ॥

म:फ: है कि हर की भक्ति करके त्रिकुटी से नीचे हद तक देव या मनुष्य है, बेहद याने त्रिगुटी भंवर गुफा केवल की बारी तक साध है, इनके आगे अगम याने के:पद आ:पद वो परमगुरुपद है। उसकी गति लखने में नही है।

यांकू लोप चले जन कोई, सतगुरु रूप कहिजे।
माया रहे हद के मांही, बेहद बासे लहिजे ॥ ११ ॥

हद बेहद को छोडकर अगम याने सुन्न में के:पद की प्राप्ति करना ही सतगुरु रूप होना है। माया का पद हद में भृकुटी तक है उसके आगे बेहद है।

नव स्थान देश है भाई, त्रिगुटी परे बताया।
वांकू लोप चले जन पेली, निज पद मांय संभाया ॥ १२ ॥

१. महामाया, २. प्रगत, ३. जोत, ४. अजर, ५. बजर, ६. ईखर, ७. आनन्द, ८. शिव, ९. ब्रह्म, ये नो स्थान त्रिगुटी से आगे है। इनको लोप कर जन जाते है, जब के:पद आ:पद में समाते है।

ऐसी बात तत मैं भाखूं, निज पद नेट निसाणा।
सुणज्यो आंण शकल जुग हंसा, एक हरिजन ध्यान लोभाणा ॥ १३ ॥

ऐसी तत याने ब्रह्म की प्राप्ति का वर्णन कर रहा हूं। जिससे के:पद आ:पद की प्राप्ति होती है। सारे संसार के हंस आकर सुणो के:पद का अखण्ड ध्यान होना व आनन्द आना ही हरिजन का लोभाणा है।

रटियो नांव निरन्तर न्यारो, रोम रोम रस पीया।
हरिया हुवा मेघ घण बूंठा, मुवा मिंडका जीया ॥ १४ ॥

सतगुरु विधि से नांव को निरन्तर याने रात दिन रटा, जिससे शब्द का अनुभव होना ही रोम रोम रस पीना है। मेघ के बरसने से हरियाली हो जाती है व मेंढक बोलने लगते है, उसी तरह खूब भजन करने से रग रग रोम रोम में शब्द का अनुभव होना ही मुवा मिंडका जीना है।

नव से नदियां निनाणु चाली, खलक्या नीर पहाडा।
रिलिया माल पिया बन सारा, लग्या फूल फल झाडा ॥ १५ ॥

नो सो निनानवे नाडियो में भजन का अनुभव हुवा। खूब भजन करने से शब्द मेरू पर आ जाता है मेरूडण्ड पर शब्द का अनुभव होना ही पहाडो पर पानी चढना है। रिलिया माल याने सारे शरीर में याने बारह कंवलो पर शब्द का अनुभव होना ही फूल फल लगना है।

भार अठारह चैत बिन फूले, महक रहया गरणाई।
हरिजन हरक भयो मन भारी, निरख निशो दिन जाई ॥ १६ ॥

साढे तीन क्रोड रोमावली में शब्द का अनुभव होना ही भार अठारे चैत बिन फूले है, उसके आनन्द का अनुभव होना ही महक रहया गरणाई है। जब भजन करने वाले जन को बडा हर्ष होता है तब वह रात दिन उसी का अनुभव करता है।

ऐसा एक अचंबा भारी, अजब ख्याल दिखलाया।
सातूं समंद डेडरे सोख्या, सिंह बाकरी खाया ॥ १७॥

ऐसी एक बडी भारी अचम्बे की बात है अजब ख्याल देखने में आ रहा है। डेडरे याने ज्ञान ने सातो इन्द्रियो को काबू में कर लिया है। सिंह रूपी अहंकार को समता रूपी बकरी ने खा लिया।

तरवर तले गोड आकाशा, डाला चल्या पिंयाला।
ऐसा अजब ख्याल हम देख्या, फाडी भेस सिंयाला ॥ १८ ॥

ब्रह्म का पद आकाश याने ब्रह्मण्ड में है। शरीर में आत्मा आती है तब संतो का ग्यान धारण करती है तब रोम रोम में शब्द का अनुभव होता है तो ऐसा अजब ख्याल देखने में आ रहा है कि ममता रूपी भैंस को संतोष रूपी सिंयाला ने खत्म कर दिया।

तरवर जाय अधर फिर सिंच्या, डाल पेड गरणाया।
फल सो लग्या जडा मध बिचे, सूवा ऊड वहां आया ॥ १९ ॥

राम नाम की सांस ऊसांस में रटणा की, तब सतशब्द रूपी फल आया, फिर आत्म चेतन शब्द का अनुभव कर शरीर के ऊपर विदेही ब्रह्म में आसण करने पर रोम रोम रस पिया।

निरख्या जाय नैण हम देख्या, फल का काम करारा।
अनन्त कोट संता ने खाया, सो फल सही हमारा ॥ २० ॥

म:फ: है कि मैंने उसका अनुभव किया, यही नेणो में देखना है। फल याने सतशब्द का काम करारा है, इसी से आ:पद की प्राप्ति होती है। उस फल को याने पद को अनन्त क्रोड सन्तो ने प्राप्त किया, वही हमारा भी सच्चा फल है।

सूवे जाय अगम फल चाख्या, पाय बहुत सुख आया।
ऐसा एक अचम्बा भारी, मंडे काल कूं खाया ॥ २१ ॥

सूवे याने आत्मा चेतन ने अगम में जाकर फल याने के:पद को प्राप्त किया और प्राप्ति से बहुत आनन्द आ रहा है, ऐसा एक अचम्बा भारी है। काल जो अनेक जन्मों के साथ लगा हुआ था उसको खत्म कर दिया याने जन्म मरण से रहित होना ही मंडे काल कूं खाना है।

सूवो जाय हुवो वहां चेतन, बोले बैण रसीला।
निरभय भयो आद घर मांही, करम काट सब जाला ॥ २२ ॥

आत्मा चेतन होकर अणभै वाणी के वचनो का रस पीने लगी तब सब ही जन्मों के करमो को काटकर के:पद आ:पद की प्राप्ति करके निरभय हो गई।

बोलत सुवो बैण रस प्यारा, सुणत सकल मन भावे।
निरभै नाम निरन्तर निका, तां मिल भेद बतावे ॥ २३ ॥

आत्मा निरंतर निज नाम का भेद धारण कर अणभै वाणी के वचनो का निरपख निरणा बोलने लगी, तब सब ही हंस वृति आत्माओ को अच्छा लगा।

देख्या नगर शहर बोहो भारी, तां मध हाट मंडाणा।
नाना भांत बसत बोहो बिणजे, नित शाह करे छुडाणा ॥ २४ ॥

शरीर रूपी नगर में सभी प्रकार की हाट लगी हुई इसी नर देही की कुमाई आत्मा को खानी पडती है। कमाई रूपी जैसा साधन करेगा वही पहुंचेगा। ओधाधारी संत ही अणभै ज्ञान के द्वारा जन्म मरण से छुडाते है।

लंबो बोहोत चहूं दिश निरख्यो, तीनू लोक समाया।
सरब धात का कोट कांगरा, तामें हम फिर आया ॥ २५ ॥

शरीर रूपी शहर बहुत लम्बा है, जिसे चारो तरफ से देखा है। तीन लोक खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड उसमें समा रहे है, यह सात धात से बना है। इसमें आत्म चेतन सबका अनुभव करना ही फिरना है।

गलिया बोहोत बहोतर किला, एक अचंबो भारी।
एकण दुखी हुवे सो दुखिया, शकल शहर नर नारी ॥ २६ ॥

शरीर में अनेक नाडिया ही गलिया है, बहोतर मुख्य नाडिया ही किला है। इसमें एक बडा अचंबा है, शरीर में जब एक जगह तकलीफ होती है तो सारा शरीर दुखी हो जाता है।

बीचे एक बाजार मंडाणा, शिरे हाट उण मांही।
भूंडि भली सकल सो चीजां, उण घर नासत नांही ॥ २७ ॥

शरीर रूपी शहर में करणियों की दुकाने लगी हुई है। उसमे सतगुरु पद के ज्ञान की दुकान सबसे श्रेष्ठ है। अच्छी व खराब करणियां शरीर से ही होती है। अच्छी बुरी करणियां सत पद की प्राप्ति नही करा सकती है।

अेको भरे भरया सब कोठा, ऐसी कला बनाई।
पीवे शहर नख चख सारो, दुबध्या रहे न मांई ॥ २८ ॥

मुंह से सब तरह का प्रसाद करते है वो नाभी में पहुंचकर सारे शरीर में उसका असर होता है परमात्मा ने ऐसी कला बनाई। सारे शरीर में नख से चख तक सब जगह तृप्ती हो जाती है। कोई तरह की कमी नही रहती है।

चारूं बरण एक घर देख्या, राव रंक सब लोका।
अेकू कार एक घर जीमे, देव दृग सब झोंका ॥ २९ ॥

सिर ब्राहमण, भुजा क्षत्रिय, उदर वैश्य व पैर शुद्र ये चारो शरीर में है। राजा व रंक तीन लोक सब शरीर में है। सारे शरीर में देवता व राक्षसो सबका अेकूंकार एक घर में जीमना है।

दुबध्या नही ऊंच नही नीचा, शहर बसे चहूं फेरा।
ता मध राज करे मन हाकम, पांच जोध संग चेरा ॥ ३० ॥

परमात्मा ने इस शरीर में सब ही वरणो के भोजन करने का अेक ही मुख द्वार बनाया है लेकिन सबके शरीर में मन हाकम व पांचो जोधा, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार छाये हुये है।

निरख्यो नगर दिष्ट सब आयो, गली गली हम फिरिया।
चवदे शेष पिछन्तर छांसट, अे लंघ पार उतरिया ॥ ३१ ॥

शरीर रूपी शहर में फिरने से नाड नाड गली गली देखी है। पांच कर्म पांच ज्ञान इन्द्रिया, मन, बुद्धि, चित, अहंकार ये चवदे शेष पिछन्तर छांसठ घाटे को लांघ कर पार किया है।

चवदे सेण किया हम पेली, पांच बीस जुग बांध्यो।
तीन मांय एक सुं यारी, प्रेम बांण मन सांध्यो ॥ ३२ ॥

पांच कर्म व पांच ज्ञान इन्द्रिया मन, बुद्धि, चित, अहंकार इन चवदो को अपना हितेषी बनाया। पांच बीस याने पचीस प्रकृति के गुणो को काबू किया। तीन मांय याने तीन गुण सतो, रजो, तमो में से सतोगुण को धारण कर प्रेम से भक्ति भजन करना ही प्रेम बांण मन सांधना है।

आठूं दिशा फिरिया हम सारे, च्यारूं चक मिलाया।
पूर्व पच्छिम उत्तर दक्षिण, गुंड नाभ घर पाया ॥ ३३ ॥

राम नाम को सांस ऊसांस में रटकर शरीर में सब ही दिशाओ में फिर कर शब्द का अनुभव किया। याने संखनाल से बंकनाल में उलटना ही चहु दिश फिरना है।

बरसे धरण गिगन घर भीजे, नदियां चली अफूटी।
चढिया नीर किल्ला सब भरिया, नाभ आभ सब टूटी ॥ ३४ ॥

बाणी से भजन तो नीचे हो रहा है। उसका अनुभव ब्रह्मण्ड में सूरत के आधार से हो रहा है। यही बरसे धरण गिगन घर भीजना है। शब्द का पिछम में आना ही नदियो का अफूटी चलना है। बंकनाल में ऊपर शब्द का चढना ही किल्ला सब भरना व नाभ आभ सब टूटना है।

चवदे सात तीन मिल ऊलटिया, चढिया नीर आकाशा।
हरिजन जाय करे वहां खेती, निज कणबीज बुवासा ॥ ३५ ॥

पांच ज्ञान, पांच कर्म इन्द्रिया, चित, मन, बुद्धि, अहंकार, ये चोदह। मन, निजमन, सूरत, निरत, लिव, विरह, बैराग ये सात। सुध, बुध, समता ये तीन के साथ मिलकर बंकनाल में उलट कर शब्द ब्रह्मण्ड में चढ गया, तब हरिजन निज नाम का आनन्द लेने लगा।

चाले अरट पानडी बाजे, निरखुं दिष्ट पसारी।
निश दिन बहे थके नही कोई, पीवे सब बन क्यारी ॥ ३६ ॥

सांस उसांस में भजन हो रहा है उसमें सूरत लग रही है। यही अरट चलना व पानडी बाजना है। रात दिन अखण्ड भजन हो रहा है। एक क्षण भी नही रूकता है। सारे शरीर में उसका अनुभव हो रहा है। यही पीवे सब बन क्यारी है।

देखया एक तमाशा ऐसा, गिगन मंडल में हुवा।
हाली बलद बिना सुण नारी, सींचे नित पत कुवा ॥ ३७ ॥

म:फ: है कि गिगन में पहुंचने पर अेक अचम्बा देखा कि मन पवन सूरत के लगाये बिना ही हमेशा सत शब्द का अनुभव होता है।

झेले चडस अधर फिर ऊंची, बारो ढुलण न पावे।
छ: से शेष इकीसुं बारा, निश दिन भला समावे ॥ ३८ ॥

जैसी नली दार चडस के दो डोरी बंधी रहती है उनको ऊपर नीचे करने का ग्यान बैल खेचने

वाले को रहता है। इसी प्रकार सांस ऊसांस रूपी दोनो डोरी का ध्यान रखेगा तो अेक भी स्वांस भजन बिना खाली नही जायेगा।

कुवो गिगन धरण में मूंडो, पीच आकाशा पीवे।
पांच पचीस भरे पणियारी, कूप सींच सब जीवे ॥ ३९ ॥

चडस की नली का मुंह नीचे रहता है अेसे ही जब ब्रह्मंड में शब्द जाता है तो इमरत कुंड का मुंह ऊलट जाता है तब सत शब्द रूपी इमरत का रस पांच तत्व पच्चीस प्रकृति ही आनन्द लेती है।

गंगा बहे सुरसती बिचे, जमना आंण मिले है।
तपस्या करे जोगेश्वर पूरा, भंवर गुफा घर रहे है ॥ ४० ॥

सतगरु विधि से भजन करने पर इडा पिंगला एक होकर सुखमण में भजन होने लगता है। सूर वीरता से भजन करने वाले ही भंवर गुफा के घर पहुंचते है।

धरणी शीष गिगन का नाका, तहां मेहेल एक भारी ।
सातू पोल दोय दरवाजा, रमे पुरूष संग नारी ॥ ४१ ॥

शरीर के सिर पर पारब्रह्म के आगे के:पद आ:पद का महल भारी है, आत्मा उसमें मिलने के लिये दो दरवाजे बजर पोल व भंवर गुफा को लांघ कर, सातो सुरो के साथ शब्द का आनन्द ले रही है।

सातों पोल पोलिया बैठा, बंद किया सब लोई।
नट खट चोर तसकर दूजा, आंण न पावे कोई ॥ ४२ ॥

सातो पोल पर मन निजमन सूरत निरत लिव विरह बैराग सातो पहरेदार बैठे है, सबके प्रवेश पर रोक लगा दी है। जिससे बुरे विचार बुरी वृतियां बुरे लक्षण अन्दर प्रवेश नही कर सकते।

ऐसा जतन करे घर तिरिया, पीव रमण संग चाली।
बारी खोल धसी तब आगी, जगत लाज सब पाली ॥ ४३ ॥

आत्मा रूपी स्त्री सतशब्द रूपी पति में मिलने के लिये तीन लोक की मर्यादा रखती हुई केवल की बारी खोलकर परमात्मा स्वरूप बनने का जतन कर रही है।

तपसी करे तपस्या आगे, बोहोत तेज अंत भारी।
चरणा लागी करी परिक्रमा, बूजे पीव बिचारी ॥ ४४ ॥

तपसी याने आत्म चेतन तपस्या याने ध्यान करने लगी तो शब्द का तेज बोहोत भारी होने लगा तब आत्मा ने निर्बल होकर खूब भजन किया और शब्द के साथ ही रही।

नदिया बहे नीर जल धारा, जोगी करे सपाडा।
धूप ध्यान धूणी पर बैठा, बूजे ऊजल दिहाडा ॥ ४५ ॥

इडा पिंगला सुखमणा इन तीनो नाडियो में भजन हो रहा है। जोगी याने साधक साधन कर रहा है। साधक ध्यान रूपी धूणी पर बैठकर परमात्मा की प्राप्ति का साधन कर रहा है।

धूणी सात तीन से जोगी, तपस्या तत विचारे।
जेता आहार भोग बिन जीवे, काल घेर वहां मारे ॥ ४६ ॥

इडा, पिंगला, सुखमणा तीनो जोगी के ध्यान रूपी धूणी के साथ ब्रह्म का विचार याने ध्यान कर रही है। अब ये भी बिना भोग आहार के जी रही है इनको भोगों की इच्छा न होना ही काल को घेर कर मारना है।

इमरत पीवे अमीफल खावे, नेहचल डिगे न कोई।
आवागवण जन्म हर मरणा, करम रहया सब रोई ॥ ४७॥

भजन ध्यान करना ही इमरत पीना व अमीफल खाना है। अब निश्चल हो गई है। विषयो में नही लग रही है, यही नही डिगना है। आवागवण जन्म मरण में नही आना ही करमो का रोना है।,

नव से धेन नूजणो पड़ियो, दूवण एक विचारी।
मारे सेड़ धरण के मांही, भरे गिगन घर पारी ॥ ४८ ॥

नो सो नाडियो में शब्द का अनुभव होना ही नूजणा पडना है। सब सूरत से ही हो रहा है। सांस ऊसांस में भजन करना ही सेड़ मारना व शब्द का गिगन में अनुभव होना पारी भरना है।

जमिया दही बिलोवण बैठा, घिरत छाछ व्हे न्यारा।
हरिजन जाय करे परसादी, प्रीतम पुरसण हारा ॥ ४९ ॥

ओऊं सोऊं में भजन करना ही जमिया दही बिलोवण बैठा है। भजन करने से ब्रह्म व माया के पद अलग अलग दरसते है यही छाछ व घी का न्यारा होना है। सतगुरु विधि से भक्ति भजन करके ही ब्रह्म पद का अनुभव करते है यही प्रसादी करना है व परमात्मा पुरसने वाले है।

तिरपत जीम हुवा मन पूरण, देख सकल तमाशा।
धिन धिन संत भाग जन तेरा, गीगन मंडल घर बाशा ॥ ५० ॥

सतगरु विधि से ध्यान भजन करने पर मन को सन्तोष आ गया, यही मन का पूरण होना है। ध्यान के द्वारा जितने भी चैन हो रहे है यही मन का शकल तमाशा देखना है। साधन करने वाले संतो का भाग्य धिन है। जिन्हें गिगन में सतशब्द का अखण्ड अनुभव हो रहा है यही गिगन मण्डल घर बास करना है।

देवल मांय देवरा दरस्या, आत्म में परमात्मा।
निश दिन निरख हुवा मन राजी, छाड़ी लाज कुल जाता ॥ ५१ ॥

शरीर रूपी देवल में दशवें द्वार पर सतशब्द का दीदार हो रहा है, इस आत्मा को उस परमात्मा का सतशब्द के रूप में रोजाना दर्शन होना ही निशदिन निरख हुवा मन राजी है। और जो आत्मा कुल यानि तीन लोक में आना जाना था वो काम या वो साधन छोड़ दिया।

हंसा जाय मिल्या निज हंसे, निजमन मन कहाणा।
सुरती ऊलट भई पतिव्रता, पांच पकड घर आंणा ॥ ५२ ॥

त्रिकुटी तक ध्यान करने वाला हंस है। आगे ध्यान करने वाला परमहंस है। त्रिकुटी से आगे ध्यान करने पर मन भी निजमन हो जाता है। सूरत शब्द में लय हो जाती है, यही सूरत का पतिव्रता होना है। पांच विषयों को पकडा यानि बस में किया, तब उस पद का अनुभव हुआ।

पलटया ज्ञान भई विज्ञानी, ब्रह्म ज्ञान दरशाया।
सूरज जाय मिल्या घर चन्दा, पवन गीगन समाया ॥ ५३ ॥

ज्ञान से विज्ञान अवस्था में आया, जब के:पद की प्राप्ति ही विज्ञान होना है। सूरज याने पिंगला चंदा याने इडा में मिलकर सुखमणा में भजन होने लग गया। प्राण जाकर ब्रह्म में समा गये यही पवन गिगन समाना है।

छेकी धरण कंवल खट बिंध्या, शिरे श्याम जहां आया।

मिलिया प्राण परमगत मांही, दशमें जाय समाया ॥ ५४ ॥

सतगुरु विधि से भजन कर पूर्व के छः कमलो को छेककर गणेश व शेष का स्थान पार किया। बंकनाल से उलटकर शब्द का दशवे द्वार के:पद आ:पद में पहुंचना ही परम पद में मिलना है।

नवलख परस क्रोड तेतिसुं, परे परमपद पाया।
मिलियां प्राण गरक हुवा मांही, अणभै ज्ञान सुण आया ॥ ५५ ॥

नौ लाख तारे, तेंतीस करोड देवी देवता इनसे परे पदमपद पाया। सूरता शब्द में समा गयी। यह सब काम अणभै ज्ञान सुनने से हुआ।

त्रिगुटी मांय झिलमिल ज्योति, बरसे मुख पर नूरा।
सुखमण घाट अमीरस चुवे, पीवे हरिजन पूरा ॥ ५६ ॥

त्रिगुटी में शब्द व ध्वनि का अनुभव होना ही नूर बरसना व झिलमिल ज्योति है। सुखमणा में भजन होने से अमीरस चू रहा है, उसको विधि से भजन करने वाले हरिजन पी रहे है याने अनुभव कर आनन्द लेना ही पीना है।

पीवत छाक चढे अंत भारी, बैण शब्द मुख बोले।
धरहर ईन्द्र धडुके ऊन्डो, भरम ताख सब खोले ॥ ५७ ॥

आनन्द आना ही अमीरस की बडी भारी खुमारी चढना है व अपने मुंह से अणभै ज्ञान के वचन बोलता है। धरती पर जब बरसात होती है तब इन्द्र गरजता है वैसे शब्द की गरजना हो रही है व जितने भी भरम थे वो सभी ज्ञान द्वारा दूर हो गये।

सुखमण झरे पीवे जन पूरा, अमर हुवा जग मांही।
निरभै नांव निरन्तर पाया, चल्या जुग छिटकाही ॥ ५८ ॥

सुखमणा में भजन होने से ऊपर से अमीरस झरता है। उसको भक्ति कर, परे पहुंचे हुये पुरूष ही पीते है। वे जग में अमर हो जाते हैं, भजन करने वालों ने निरभै नांव की प्राप्ति कर ली है व आत्मा को परमपद की प्राप्ति कराने वाला नांव निरन्तर हो रहा है। जन्म मरण से रहित होना ही जगत को छोडना है।

त्रिगुटी चूर चल्या जन आगा, असंख सूर प्रकाशा।
सुन्न ही सुन्न सुन्न में साहिब, जहां हरिजन का बासा ।। ५९ ॥

हरिजन त्रिगुटी से आगे शब्द के साथ बढा तब पारब्रह्म में असंख सूर्य के प्रकाश जैसे शब्द का आनन्द आया ब्रह्मण्ड सुन्न पारब्रह्म सुन्न लांघकर आनन्द ब्रह्म सुन्न में समाया।

किया बास आस तज सारी, ब्रह्म अमर घर पाया।
काल करम एको नही लागे, जहां जन जाय समाया ॥ ६० ॥

माया ब्रह्म के पद से अलग होना ही सब आशा छोडना है। पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति करना ही ब्रह्म अमर घर पाना है। कर्मो से रहित पद की प्राप्ति होना ही हरिजन का वहां जाकर समाना है।

बारी एक अजब हम खोली, ऐसी कला ऊगाडया।
प्रांण पुरूष आगा तब धसिया, बोत तेज सुं बाडया ॥ ६१ ॥

पारब्रह्म सुन्न के आगे केवल की बारी है उसको सतस्वरूप की कला के प्राक्रम से खोली तब प्राण पुरूष के:पद पहुंचा, वहां सता समाधि का गुण आया।

आडी भीत चिन्त बोहो भारी, ताको बरण दिखावे।
सोनो सरस सोलवो दरशे, ताय देख सुख पावे ॥ ६२ ॥

भंवर गुफा के ऊपर केवल की बारी भारी दीवार है, इसको लांघणे की चिंता है लेकिन सत ग्यान के निरपख निरणे के प्राक्रम से के:पद में सता समाधि का आनन्द ले सका।

वाके ऊरे शकल रह चेतन, पांच पचीस पिछन्तर।
क्रोडा तीन अरध फिर मांही, सो ले सात सीतन्तर ॥ ६३ ॥

उस पद के पहले पांच विषय पच्चीस प्रकृतिया पीछे रह जाती है। साढे तीन करोड रोमावली के साथ श्वांस प्रश्वांस में राम रटा। तब मेरा चौरासी का फंदा कटा।

नो सो नेम निनाणु चेतन, सब बैराट पिछाणो।
पण रे क्रोड भेल तेतिसुं, ठाम ठाम सब जांणो ॥ ६४ ॥

नो सो नाडिया चेतन का पद सारे विराट रूपी शरीर में मैंने पहचाना। नाडिया रोमावली वगैरा सब चेतन का पद है उसकी जगह की जगह सबको पहचानो।

दोय सो डेढ सो सैंकडा घाटा, लोपचले जब सोई।
सातुं दीप नवें नव खण्ड, चेत घरो घर होई ॥ ६५ ॥

सैंकडो डेढ सो दो सो घाटे है उनको लोप कर आगे जाते है। तब सात दीप नवखण्ड में याने सारे शरीर में जो चेतन के पद के आधार पर चेतना हो जाती है।

लांगी भीत धस्या जन आगा, ठाम ठाम बंध हुवा।
ऐसा एक अचम्बा भारी, फिरे सकल जग मुवा ॥ ६६ ॥

आत्मचेतन सत शब्द के साथ तीनो बंध व चेतन का पद पारब्रह्म बारी को लांघ कर अगम देश में पहुंचा तो बडा आश्चर्य हुवा कि सारे शरीर में मन इन्द्रिया निर्बल पड गई।

पांचु पलट भया निज ज्ञानी, चारां भली समाई।
विष की शीर सकल ले पेली, ईमरत शीर चलाई ॥ ६७ ॥

मैंने ज्ञान से पांचो विषयो को जीता। उनमें चार ने भली संभाई अर्थात पांच विषय में जो चार नाक कान आंख मुंह यह चार भक्ति में लगे और जो इस शरीर में पहले विषय रसों की सीर चलती थी उसको मैने पेल दी और रटना करके अमृत की सीर चला दी।

चवदे नार अकेली बांध्या, तिरिया जोर करारी।
सबके गले जडया एक सांकल, निरभे भई विचारी ॥ ६८ ॥

पांच ज्ञान, पांच कर्म इन्द्रिया, चित, मन, बुद्धि, अहंकार, इन चोदहो को नार याने सुरता ने वश में कर लिया। सूरत याने आत्मचेतन की शक्ति बहुत है। सब को ग्यान से वश में करके निश्चित हो गई है।

भय सो रहयो त्रिगुटी हेटे, काम क्रोध अहंकारा।
सिलता समंद घाट सब ओघट, लांघ हुवा जन पारा ॥ ६९ ॥

अन्य साधन से जन्मने मरने का जीव को भय था। व काम क्रोध, अहंकार त्रिकुटी से नीचे रह गये। शरीर की सब नाडियो, सब स्थानों को पार किया, ईडा पिंगला सुखमणा व सबसे अलग होना ही भवसागर से पार होना है।

आशा थकी कल्पना ऊठी, भरम करम हद मांही।
बेहद जाय मिल्या जन पेला, ऊंच नीच को नांही ॥ ७० ॥

आशा को छोड कामना को छोडा। कल्पना भरम करम भी हद में त्रिकुटी के नीचे रह गये। जन भक्ति करने वाले ब्रह्मण्ड में याने पारब्रह्म के पद में पहुंचे वहां कोई ऊंच नीच नही है।

बेहद मांय ब्रह्म सो भ्यासे, दुतिया रहे न कोई।
नारी पुरूष थक्या अध बिचे, भंवर गुफा घर सोई ॥ ७१ ॥

सुरत शब्द भंवर गुफा के स्थान पर अेक होकर ब्रह्म समाधि व ईखर समाधि लगने पर सारी त्रिलोकी की आत्माये ब्रह्म भ्यासती है, द्वेत भाव नही रहता है।

रागां मांय रीज रहयो भंवरो, आगी सूरत न मेले।
हद बेहद की जेल मंडाणी, तां पर निश दिन खेले ॥ ७२ ॥

केवल भक्ति करने वाले आत्म चेतन सतशब्द को छोडकर अनन्त प्रकार के चैन चमत्कारो में मोहित होकर त्रिकुटी भंवर गुफा को ही के:पद मान कर वही सुख मान लेता है।

ऐसा एक अचम्बा भारी, निरख परख मैं भाखूं।
सुणज्यो सकल साध जन भेदी, गोप बात एक दाखूं ॥ ७३ ॥

आश्चर्य की बात देखकर कह रहा हूं जो साधना करने वाले भेदी जन सुणो, मैं एक गुप्त बात बतलाता हूं।

पूर्व दिसा धस्या था गोला, धरणी आंण समाया।
सूरत निरत का लग्या पलिता, गोले जोर सवाया ॥ ७४ ॥

पूर्व दिशा में शब्द की जागृति कंठ कंवल पर हुई और कंठ से धरणी याने गणेश के स्थान पर अनुभव सूरत निरत लगाकर भजन करने से शब्द जोर से चलने लगा।

चालिया गोला पिछम के नाके, तिनूं कोट ढहाया।
बावन किला सात नव खाई, फोड निसाणे आया ॥ ७५ ॥

शब्द बंकनाल में पिछम के रास्ते चला तो तीनू कोट यानि खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड को पार किया। बावन अक्षरो का ज्ञान, सात सुर, पांच प्राण, चित, मन, बुद्धि, अहंकार इन सब को पार कर के:पद की प्राप्ति होना ही फोड निसाणे आया है।

आगे गेल दोय ज्यां फूटी, सोच रहया मन मांही।
अब कहो कौन बतावे गेला, अमरलोक सत सांई ॥ ७६ ॥

मेरूडण्ड से आगे इडा पिंगला नाडियो के दो रास्ते दोनो तरफ चलते है। यहां पर विचार करते है कि किस रास्ते से चलना चाहिये। अमरलोक सतसाहिब की प्राप्ति का रास्ता बताने वाला कौन है।

सतगुरु शरण ज्ञान सब सोदया, राम नांव लिव लाया।
दोनुं गेल रही पसवाडे, बिचे राह दिखाया ॥ ७७ ॥

सतगुरु शरण के द्वारा केवल ग्यान की सोजना की और राम के नांव का लिव लगाकर भजन किया तो दोनों रास्तें आजू बाजू रह गये और बीच में सुखमणा का रास्ता खुल गया।

आगे जाय मिल्या घर एकी, ऊलटा सूत खंचाया।
पांच पचीस निनाणु नव से, घेर गिगन घर आया ॥ ७८ ॥

आगे चलकर सब रास्ते एक हो गये। त्रिकुटी में ईडा पिंगला सुखमणा में शामिल हो गई। मेरूडण्ड से सिर पर होकर शब्द का आना ही ऊलटा सूत खचाणा है। पांच तत्व पचीस प्रकृति नो सो निनाणवे नाडिया इन सबको पारकर पारब्रह्म से ऊपर पहुंचना ही गिगन घर आना है।

अधर हुवा आद घर मांही, न्यारा फटे न कोई।
सब ही बस्या एक घर मांही, राव रंक सब लोई ॥ ७९ ॥

आद घर याने के:पद ब्रह्म बैराट से सतशब्द आत्मा को लेने के लिये कंठ कंवल में प्रगट होकर पंच तत्व नो तत लिंग शरीर, त्रीताप से अलग करके आत्मा को अधर के:पद आ:पद में मिला देता है। यहां राजा रंक किसी का भेद भाव नही है।

बस्ता नगर किया सब ऊजड, रस्ता बंद कराई।
सब कूं घेर किल्ला पर चढिया, बस्या गिगन घर आई ॥ ८० ॥

केवल भक्ति करने वाली आत्मा सतशब्द के साथ ६ पूर्व ६ पश्चिम के कंवलो का छेदन करके गिगन मंडल में घर किया, तब शरीर रूपी नगर उजाड होकर जन्म मरण का रास्ता बंद हो गया।

बस्यो शहर शिखर पर भारी, चोर जार नही लागे।
सेजा थक्या भोमिया सारा, धणी निशो दिन जागे ॥ ८१ ॥

शिखर याने पारब्रह्म से उपर सतशब्द का अधर अनुभव होना ही शहर बसना है। वहां पर चोर जार याने बुरी वृतियां व बुरे विचार नही जा सकते। काम, क्रोध, मद, अहंकार ये सब भोमिया सहज में ही थक गये। आत्म चेतन से सतशब्द का रात दिन अनुभव होना ही धणी का जागना है।

चढया गस्त शब्द गेह हाथे, चोर जार सब मारया।
निरभे हुवा चढया जन ऊंचा, काम काज सब सारया ॥ ८२ ॥

सतगुरु विधि से भजन कर बुरी वृतियों व बुरे विचारो से अलग होकर शब्द के साथ जाना ही चोर जार मारना है। भजन करने वाले जन ऊपर चढने से निर्भय हो जाते है। के:पद की प्राप्ति करना ही काम काज सब सारना है।

लागा ध्यान खबर तब पाई, सुरत निरत रा मेला।
मन सो पवन शब्द मिल तिनुं, हुवा आद घर भेला ॥ ८३ ॥

जब त्रिगुटी में ध्यान समाधि लगती है तब सूरत निरत संग रहती है। मन सांस ऊसांस रटणा में, सूरत शब्द में लगकर के:पद आ:पद में मिल जाते है।

तिनूं ध्यान त्रिकुटी लागे, नियारी कला दिखावे।
ऐसी रीत विध हम देखी, एक नार जान कर आवे ॥ ८४ ॥

त्रिकुटी में ध्यान समाधि, ब्रह्मंड में ब्रह्म समाधि, पारब्रह्म में ईखर समाधि लगती है यहां तक त्रिगुटी है, लेकिन सतशब्द की कला का तेज सूरता ने समझ कर देखा है।

फेरा लहे जाय कर परणे, निश दिन करे खुवासी।
ऐसा अजब ख्याल हम देख्या, एक मछी मरे पियासी ॥ ८५ ॥

आत्मा प्रतिदिन सतशब्द के फेरे यानि उसके चक्कर लगाती है और रोजाना रटना करके उसकी सेवा करती है। हमने ऐसा अजब ख्याल देखा कि मच्छी यानि सूरता अपने पति से मिलने के लिये प्यासी है।

मछी दौड़ ताड़ पर चढगी, कऊवे धनक ऊडाया।
तलका नीर पीया चढ ऊंची, धीवर जाल बंधाया ॥ ८६ ॥

आत्मा रूपी मच्छी शरीर रूपी पेड़ पर चढ गयी, इसने अणभै ज्ञान रूपी धनुष से अहंकार रूपी कौवे को उड़ा दिया। तल का नीर यानि पेट का जल ऊपर चढ़ कर पीया, उसके लिये बुद्धि से (केवल ज्ञान से) ऐसा जाल बंधा दिया कि अब काल रूपी मछुआरा उस मच्छी रूपी आत्मा को नही पकड़ सकता।

सरवर मांय शहर सोई बसियो, शहर शिखर के मांही।
जामें भंवर पांच रस भोगी, निरख निशो दिन जाही ॥ ८७॥

संसार रूपी सरोवर में शरीर रूपी शहर बसा हुवा है व शरीर का पद ब्रह्मण्ड तक है। जीव रूपी भंवर का रात दिन पांच विषयो का भोग भोगना ही निरख निशो दिन जाना है।

पांचु कंवल कंवल पर भंवरा, भणक रहया दिन राती।
एको कंवल भंवर बिन सारा, सब मुढ़ के साथी ॥ ८८ ॥

जीव रूपी भंवर का पांच विषय में रात दिन लगना ही भणकना है। सतशब्द के ज्ञान के बिना सारी शुभ अशुभ करणियों का ज्ञान करना ही मूरखो का साथ करना है।

ऊभा खडा तमाशा देखे, शहर लूट सब जावे।
च्यारूं जोध नार बिन काचा, ससतर नाही समावे ॥ ८९ ॥

चित मन बुद्धि अहंकार ये चारो जोधा तमाशा देख रहे है। ये विषयो को शरीर से अलग नही कर सकते, यह शरीर लूटना है। चारो जोध सूरत बिना बलवान नही हो सकते है। विषयो को नही रोक सकते, यही ससतर नही समाना है।

नारी आण धाकल्या सब कूं, फिट तुम्हारा जिया।
सूत कसूत भेद सब बुज्यो, नार सकल कूं दिया ॥ ९० ॥

सूरता ने चित मन बुद्धि अहंकार को कहा कि तुम्हारा जीना धिक्कार है। तब इन्होंने सत व असत ज्ञान का भेद पूछा तो सूरता ने सबको ग्यान का भेद बताया।

तीनु जाग नगर कूं घेरयो, लागे बंध करारा।
राजा चढयो नगर को गढ पर, घुरया निसाणु सारा ॥ ९१ ॥

सतगुरु विधि से भजन करने पर शरीर में तीन जगह नाभी मेरू व त्रिकुटी में क्रमशः जालन्धरी ऊतानपाद व त्राटकी बंध करारे लगते है। सतशब्द का ऊपर चढना ही राजा का गढ पर चढना है। सारे शरीर में सता का अनुभव होना व के:पद की प्राप्ति होना ही घुरया निसाणु सारे है।

खट सो जाग ठेहरियो बेता, तीन जाग गरह भारी।
ऐसा बंध लग्यो उन बीचे, दुखी सकल नर नारी ॥ ९२ ॥

कंठ मध्य हृदय नाभी, ब्रह्मा व गणेश इन छः स्थानो पर सूरत लगाकर भजन करना ही ठहरना है। तीन जगह बंध का लगना व अनुभव होना ही तीन जाग गरह भारी है। उनके बीच में ऐसा बंध लगता है कि सारे शरीर में सतशब्द जो ऊमाऊ हो जाता है तब साधक को सूरत शब्द के मेल का ग्यान नही रहता है।

पेलो बंध लग्यो जालंधरी, नाव नाभ घर आया।

जाड़ी मिले आण सुंडी सूं, साहिब मांय लखाया ॥ ९३ ॥

जब शब्द नाभी में आता है तब जालन्धरी नाम का बंध लगता है। उसमें जाडी याने ठोडी सुंडी याने नाभी से आकर लग जाती है याने गरदन नाभी की तरफ झुक जाती है। शब्द ब्रह्म का अनुभव होना ही साहिब मांय लखाया है।

दूजा बंध पिछम के गेले, शीष पीठ पर फेरे।
ऐसा करे तकड बंद गाडा, शहर सकल ले घेरे ॥ ९४ ॥

दूसरा बंध पिछम के रास्ते लगता है वो सिर को पीठ की तरफ झुकाता है, ऐसा मजबूत बंध लगता है कि सारा शरीर अकड जाता है।

तांका नांव ऊतानपात है, लागे जोर करारा।
तीजा बंध त्रकुटी दिया, त्राटक बंध विचारा ॥ ९५ ॥

पीठ पर उतानपाद बंध जोर से लगता है। तीसरा त्रकुटी में लगता है, जिसे त्राटक बंध कहते है।

ऊलटया नैण तख्त पर बैठा, ऐसा ख्याल दिखलाया।
दोनो तरफ लग्या बोहो खंचा, बीचे तेज तपाया ॥ ९६ ॥

सूरत रूपी चक्षु से ब्रह्मण्ड का अनुभव करना ही तख्त पर बैठना है। ऐसा अनुभव होना ही ख्याल देखना है। इडा पिंगला में ध्यान होकर सुखमणा में ध्यान होना ही बीचे तेज तपाया है।

भीजे रोम पसीनो छूटे, लालचख व्हे गोसा।
ऐसा नैण तेज में भारी, अमल किया व्हे रोसा॥ १७ ॥

रोम रोम में अनुभव होना ही रोम भीजना व पसीना छूटना है। ध्यान करने से नेत्र लाल हो जाते है जैसे अमल खाने से हो जाते है। ऐसे ही ध्यान करने से नेत्रो में तेजी आ जाती है।

तासुं तेज मगन खुमारी, ऐसा वीर न कोई।
जाणेगा कोई हरिजन पूरा, मिल्या आद घर मांही॥ १८ ॥

ध्यान से तेज का अनुभव होता है उससे भी मगनता रूपी खुमारी रहती है, उसके बराबर दूसरा आनन्द नहीं है। उसको कोई पूरा हरिजन जो आद घर याने पारब्रह्म के ऊपर तक पहुंचा हुआ हो वही जान सकता है।

तीनूं बंद चोकिया चारी, कंवल छेद खट आया।
यां लग बात सेल हम लिवी, आगे दुरलभ दिखाया॥ १९ ॥

जालंधरी ऊतानपात त्राटकी, ये तीन बंध। कंठ हृदय नाभी व दशवां द्वारा ये चार चौकी। छः कंवलो को छेद कर आये, जहां तक तो बात सहल मालूम हुई, अब आगे मुश्किल दिख रही है।

यांही आय मगन मन हुवा, परम पद सो पाया।
सतगुरु मेहर करी शिष ऊपर, आगे राह दिखाया॥ १०० ॥

केवल भक्ति करने वाले शिष्यो पर अणभै ग्यान की मेहर होने से पारब्रह्म से आगे का रास्ता दिखाई देता है, तब आत्मा प्रसन्न हो जाती है कि परमपद मिल गया।

तेसी तलब लगी थी आदू, प्रेम पीड पत मांही।
ऐसा हुवा आंण या दुखिया, ऊलटी विरह जगाई॥ १०१ ॥

शुरू में भजन करने की तलब लगी थी, उसी प्रकार प्रेम याने पीड के साथ भजन किया। आगे

का सतगुरु पद प्राप्त करने के लिये शुरू में भजन की रटणा प्रेम पीड से चली, उससे भी ज्यादा भजन की पीडा होगी।

रटियो नांव नेम धर भारी, अन्तर पीड पुकारे।
ऐसे करक कलेजे खटके, कोई भाल संध पर मारे॥ १०२॥

पीड व नियम के साथ अन्तर में सांस उसांस में राम नाम की जबर रटणा करते हुये एक क्षण भी नाम को न भूलते हुये भजन किया। हृदय में ऐसा विशेष दुख का अनुभव हुवा, जैसे कोई शरीर की संधि पर भाला मार रहा है।

ऐसी पीड प्रेम सुं लागी, सतगुरु शब्द सुणाया।
अगम देश परस्यां बिन मन के, तजुं प्राण मन काया ॥ १०३॥

इस तरह पीडा का अनुभव करते हुये प्रेम से भजन करने लगे। सतगुरु के ज्ञान से ऐसा अनुभव हुआ कि अगम देश याने के: पद की प्राप्ति के बिना शरीर मन व प्राणो को छोड दूंगी।

निश दिन मंडयो मोरचे सुरो, सोहंग शब्द ऊचारे।
ममो थक्यो मेर के मांही, सेंग त्रृगुटी लारे ॥ १०४॥

रात दिन शूरवीरता धारण कर सांस उसांस में भजन करना ही सोहं शब्द का उच्चारण करना है। मकार माया का देश मेरू तक चला, आगे ब्रह्म का देश त्रिकुटी से चला, चित मन बुद्धि अहंकार त्रिकुटी याने केवल की बारी तक रह गये।

आधो शब्द चल्यो तां आगे, रटियां बिना लखाया।
रसणा थकी लिगन सो चाली, मन ले सुरत मिलाया॥ १०५॥

आधा शब्द याने ररंकार याने सतशब्द जब आगे चला तो वाणी के आधार से अलग त्रिकुटी में सुरत के आधार से अनुभव होना ही रटिया बिना लखाना है। रसणा नीचे रह जाती है शब्द में मिलने की सूरत की लगन लग जाती है तो सूरत शब्द में व मन सांस उसांस में लगा रहता है।

नाद बिंद नारी देह नीचे, आगे अगम अखाडा।
वहां लग प्रांण जाय जब पूगा, पांचु गौड ऊपाड़ा॥ १०६॥

नाद याने शब्द, बिन्द याने चेतन, नारी याने सूरता, आत्मा के निरंजण निराकार पद से के: पद का अनुभव होना ही पांचु गोड उपाडना याने पांच तत्वो के शरीर से अलग होना है।

जेता निमख पलक वहां रेणा, सुध बुध रहे न कोई।
कहियो काहा केण नहीं आवे, ब्रह्म भेव का भाई ॥ १०७॥

आ: पद की प्राप्ति होने पर आ: पद की शून्य समाधि का अनुभव होता है उस समय आनन्द के सिवाय शरीर की कोई सुध नहीं रहती है। ब्रह्म पद में याने आ:पद में आनन्द के सिवाय दूसरा अनुभव नहीं होने से कुछ कहने में नहीं आता।

बरणु बरण रूप नहीं कोई, दुख सुख आवे न जावा।
त्रृगुटी परे इसी विध दरशे, ज्ञान न गुष्ट न आवा॥ १०८॥

आ:पद का कैसे वर्णन करूं, न उस पद में रूप है, न सुख दुख है, उस पद से न आना है न जाना है। पारब्रह्म व केवल की बारी से आगे के:पद आ:पद में ऐसी विधि अनुभव होती है। न ज्ञान है न गुष्ट याने न चरचा है न गाना है।

वाणी वेद बात सब ऊली, कथे बके हद मांही।
जब जन जाय देश वो देख्या, बिना ध्यान कुछ नांही॥ १०९॥

बोलना व विचारो से ज्ञान करना ये सब हद में है। सब संत के:पद आ:पद में अनुभव करते है तो सता समाधि व शून्य समाधि के सिवाय और कुछ आ:पद में अनुभव नहीं होता।

आत्म मांय अनन्त है लीला, सतगुरु हमें दिखाई।
जन सुखराम निरख हुआ निरभै, प्राण परमगत पाई ॥ ११०॥

पांच तत्वो के साथ जो चेतन है वो आत्मा है, इस आत्मा में अनन्त लीला है। सतगुरु की शरण लेने पर ही उसका अनुभव होता है। म:फ: है कि उस पद का अनुभव कर निर्भयता आ गई। प्राणो को परमगति की प्राप्ति हो गई है।

आत्म सार ग्रन्थ है ऐसो, जे कोई आंण विचारे।
जन सुखराम मोख को गेलो, काल करम सब मारे॥ १११॥

आत्म सार ग्रन्थ ऐसा है जो कोई इस पर विचार करे तो म:फ: है कि वो काल व शुभ व अशुभ करणियों से अलग होकर मोक्ष के रास्ते की जानकारी हो जाती है।

ऊपजे ज्ञान करम सब छूटे, भरम बिदूसे सारा।
आत्म मांय परम पद पावे, जे कोई करे विचारा ॥ ११२॥

केवल ज्ञान की प्राप्ति कर करमों भरमो से अलग होकर आत्मा में ही परम पद की प्राप्ति कर लेता है जो कोई इस पर विचार करता है।

बांचे सुणे अरथ जो चिन्हें, चेत चित दे मांही।
जन सुखराम ब्रह्म के गेले, भूल पडे को नांही ॥ ११३॥

इस ग्रन्थ को बांचने, सुनने से अरथ को समझने से सावधान होकर चित लगाने से म:फ: है कि ब्रह्म की प्राप्ति के रास्ते में किसी तरह की भूल नही पडेगी।

सारी बात देख हम भाखी, जेती मोय लखाई।
जन सुखराम वार नही पारा, ब्रह्म भेद को भाई ॥ ११४॥

म:फ: है कि मैंने सारी बात देखकर कही है, जैसा मुझे अनुभव हुवा है, ब्रह्म के भेद का वार पार नही है याने उसका थाह नही है।

आत्मसार ग्रन्थ जो बांचे, अरथ करे जो न्यारा।
जन सुखराम गुरु सो मेरा, मैं हूं शिष्य तुम्हारा ॥ ११५॥

आत्मसार ग्रन्थ को बांचकर भिन्न भिन्न प्रकार से निरपक्ष निरणा करे व धारण करेगा तो गुरुपद की प्राप्ति होगी। म:फ: है कि उस गुरु पद का शिष्य हूं।

पांख पांख कलियां सब सारी, अरथ बिना नही अेको।
जन सुखराम ग्रन्थ ओ कियो, साध सिध सब देखो ॥ ११६॥

म:फ: है कि इस ग्रन्थ की जितनी साख व शब्द है, उन सबका अनुभव करके लिखा है कि उदाहरण व दाष्टांग के बिना अेक भी साख नही है, क्या साध सिद्ध सब ही समझो।

चिन्हे भेद अरथ जो भाखे, सो है गुरु हमारा।
जन सुखराम विप्र घर जामा, जिण ये ग्रन्थ ऊचारा ॥ ११७॥

अणभै ग्यान में जो राम रटणे का तरीका लिखा हुआ है, उसको धारण करे और निरपख अर्थ समझे और समझावे, उसको गुरुपद की प्राप्ति होती है, वो मेरा गुरु पद है। जिन सुखरामजी महाराज ने ब्राह्मण के घर जन्म लिया, उन्होंने यह ग्रन्थ बनाया है।

दोहा : आत्म में परमात्मा, दया करी भरपूर।
जन सुखिया निरभय भया, काल कंट सब दूर ॥ ११८ ॥

आत्मा पर परमात्मा ने भरपूर दया कर दी है। म:फ: है कि अब निरभय हो गई। काल व शुभ अशुभ करणियों कर्मो से अलग हो गई।

अेती आत्मसार की, साखा सब परवाण।
जन सुखिया जन बांच कर, लिज्यो तत्त पिछाण ॥ ११९ ॥

आत्मसार की सब साख अनुभव करके कही है। म:फ: है कि भक्ति करने वाले जन इसको बांच व धारण कर ब्रह्म की प्राप्ति करना ही तत पिछाणना है।

तत्त शब्द हरी नाम है, रटियां सब गम होय।
जन सुखिया नव खण्ड रे, तन में दिशे जोय ॥ १२० ॥

तत्त शब्द राम का नाम है। सतगुरु विधि से रटने पर ही सब ज्ञान होता है। म:फ: है कि नवखण्ड याने खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड का अनुभव होता है।

पड़दो फटक ऊडावियो, अरस परस दीदार।
सतगुरु बीरमदासजी, सांचा शिरजणहार ॥ १२१ ॥

सतगुरु बीरमदासजी की कृपा से आत्मचेतन को शब्द ब्रह्म का अनुभव होना ही अरस परस का दरशण होना है व परदे का ऊडाना है।

आत्म में परमात्मा दरस्या दीनदयाल।
जन सुखिया जब फूटगी, भरम करम की पाल ॥ १२२ ॥

म:फ: है कि केवल भक्ति करके आत्म चेतन के आधार से शब्द ब्रह्म का अनुभव हुआ तब अनन्त जन्मों का पाप करमों का भरम रूपी जाल टूट गया।

सांई शरणे साध के, साहेब है जन मांय।
जब देख्यो सुखरामजी, गिगन मंडल घर जाय ॥ १२३ ॥

म:फ: है कि सिरजण हार परमात्मा सब ही जनो में समाया हुआ है लेकिन संतो व संतो के अणभै ग्यान की शरण लेने पर गिगन मंडल में जाकर सतशब्द का अनुभव करते है।

गिगन धडूक्या ईन्दर ज्यूं, बाजा बजे अनन्त।
जन सुखिया नोपत घुरी, चल्या श्याम दिश सन्त ॥ १२४ ॥

गिगन में शब्द का अनुभव होना ही ईन्द्र धडूकना है। नाड नाड रग रग रोम रोम में शब्द का अनुभव होना ही अनन्त बाजा बजना है। सूरत के आधार से शब्द का अनुभव होना ही नोपत घुरना है। उस पद की प्राप्ति करना ही परमात्मा की तरफ जाना है।

साहिब निरख्या सूरत सुं, खुलिया नैण अनेक।
जन सुखिया चस्मो खुले, अरस परस यूं देख ॥ १२५ ॥

म:फ: है कि जैसे कांच में देखने से शरीर दिखता है वैसे ही शरीर में आत्मा को शब्द ब्रह्म

के दरशण होते है तो सब चक्षु खुल जाते है। जैसे चर्म चक्षु, ग्यान चक्षु, ब्रह्म चक्षु, दिव्य चक्षु।

सेवक स्वामी एक हुवा, नीर खीर मिल मांय।
अब सुखिया नही बिछड़े, ऊथल पुथल होय जाय ॥ १२६ ॥

म:फ: है कि जैसे पानी व दूध मिलकर एक हो जाते है ऐसे ही भक्ति करने वाले की आत्मा परमात्मा स्वरूप हो जाती है। कभी नही अलग होते, चाहे कितनी ही ऊथल पुथल हो जावे।

साहिब पाया सांच सूं, सतगुरु के परताप।
सुखिया अन्तर आत्मा, दरस्या आपो आप ॥ १२७ ॥

सतगुरु के सत ग्यान के प्रताप से ही सतशब्द की जाग्रति होकर ही परमात्मा की प्राप्ति हुई। म:फ: है कि अन्तर में शब्द ब्रह्म का अनुभव कर आ:पद में लय होना ही अपने आप में परमात्मा के दर्शन करना है।

दरशण किया है दीन का, आणंद अंग अपार।
सुखिया सेजा पाविया, छूटी अमरत धार ॥ १२८ ॥

शरीर में सतशब्द का अपार आनन्द का अनुभव होना ही परमात्मा के दर्शन करना है। म:फ: है कि सहज में ही अखण्ड आनन्द का अनुभव होना ही ईमरत धारा छूटना है।

परस्या पूर्ण पीव कूं, हिलमिल हुवाज एक।
सुखिया सब सुख ऊपना, समरथ साहिब देख ॥ १२९ ॥

पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति होना ही पूर्ण पीव परसना व हिलमिल एक होना है। उस पद की प्राप्ति होने से ही सभी सुखों की प्राप्ति होती है।

साहिब जी री आत्मा, आंण संभाली राम।
सुखिया साहिब समरथ है, ले धारया निज धाम ॥ १३० ॥

आत्मा परमात्मा के आधार पर है। आत्मा को परमात्मा पद की प्राप्ति होना ही आंण संभाली राम है। म:फ: है कि परमात्मा समरथ है। निज धाम की प्राप्ति होना ही ले धारया निज धाम है।

सुख सागर सांई मिल्या, पूरण परमानन्द।
सुखिया परचे पीव के, बोले बाणी छन्द ॥ १३१ ॥

पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति ही सुख के सागर पर परमात्मा का मिलना है। म:फ: है कि उस पद का अनुभव करके वाणी छंद बोले है।

निरभै नायक रामजी, मिलिया बालद लाद।
सुखिया गेले गिगन के, सांई सतगुरु साध ॥ १३२ ॥

निरभय पद की प्राप्ति का ज्ञान होना ही बालद लाद कर लाना है। उस ज्ञान के द्वारा गिगन में पहुंचकर के:पद आ:पद की प्राप्ति करना ही सांई सतगुरु साध का एक होना है।

सांई मिलिया शिखर में, जा सेंवग हर आप।
सुखिया नित प्रत प्रीत सुं, सेजा शिवरण जाप ॥ १३३ ॥

म:फ: है कि केवल भक्ति करके आत्मा सत शब्द रूपी सांई के साथ के:पद में प्रेम प्रीत के साथ प्रति दिन आनन्द लेने लगी और रटणा सहज में होने लगी।

ऐसे मिलिया राम सुं, तट तिरवेणी तीर।

जन सुखिया मन पवना मिलिया, निश दिन निरखे बीर ॥ १३४ ॥

म:फ: है कि राम नाम को सांस उसांस में मन लगाकर सूरवीरता के साथ रटा तब तिरवेणी की धार में नहाकर के:पद आ:पद में मिला।

घट भीतर माला फिरे, निश दिन धारो धार।
एक सूत सुखराम केहे, अटके नही लिगार ॥ १३५ ॥

म:फ: है कि केवल भक्ति करने से आत्मा को अेसा गुण मिलता है। घट के अन्दर सांस उसांस की माला धारो धार सहजता से ही फिरती है और सतशब्द पल मात्र के लिये भी नही रूकता है।

॥ इति श्री आत्मसार ग्रन्थ सम्पूर्ण ॥

卐 गुरु शिष्य का संवाद 卐

<u>गुरू</u> :- परब्रह्म परमात्मा <u>शिष्य</u> :- सुखरामजी महाराज

<u>शिष वायक</u> : <u>चौपाई</u> : प्रथम शिष्य सतगुरु कूं बूजे, मो पर कृपा कीजे।
भरम करम दुबध्या भै भांजो, शिष कूं शरणे लीजे ॥ १ ॥

शिष्य गुरुदेव से प्रार्थना करता है कि आप मेरे पर कृपा कीजिये। मेरे भरम करम द्वेतपना याने तेरा मेरा व भय डर का नाश कर शिष्य को आपकी शरण में लीजिये।

ऊपजे खपे जीव जग बंधिया, छूट न सके कोई।
माया ब्रह्म हुवे किम न्यारा, भेव बतावो मोई ॥ २ ॥

संसार में जन्म मरण है, सब जीव जगत में बंधे हुये है, कोई नही छूट सकता। माया व ब्रह्म कैसे अलग हो सकते है। जिसका मुझे भेद बताइये।

भगत जोग जग सब बखाणे, दश विज्ञान सरावे।
ब्रह्म जोग कैसे नर साजे, परा भक्त किम पावे ॥ ३ ॥

परमात्मा की भक्ति व योग की साधना की सब जगत महिमा करते है। दशवीं भक्ति विज्ञान की है। उसकी महिमा करते है। ब्रह्म प्राप्ति की साधना मनुष्य को कैसे करनी चाहिये व पराभक्ति की प्राप्ति कैसे होती है।

भिन्न भिन्न भेव सकल विध कहिये, किरपा कर समझावो।
न्यारा अरथ करण विध सारी, प्रगट मोय लखावो ॥ ४ ॥

सब भेद अलग अलग विधि से कृपा कर मुझको समझाइये। आप अलग अलग विधि से अरथ करके समझा सकते है।

गुप्ता अरथ कूप जल कहिये, पंछी पीव सके नही कोई।
तुम सतगुरु कहण विधि लायक, प्रगट कहिये मोही ॥ ५ ॥

जो अरथ छिपा हुवा है वो कुवे के पानी की तरह है, उसको पक्षी नही पी सकते। हे सतगुरु आप सब तरह से कहने में समर्थ है, जो प्रकट करके कहिये।

सब ही अरथ करो जल सरवर, भरभर पीये बिचारा।
उगे सूर गेल सब दरसे, ऊजड पंथ नियारा ॥ ६ ॥

सब अरथो को तालाब के जल की तरह कर दीजिये, सो बिना पात्र भी हाथ से भर भर कर पी लेवे। ऐसे ही मनुष्य विचारो के द्वारा सहज में ज्ञान धारण कर सकते है। जब सूर्य उदय होता है तो सब रास्ते दिखने लग जाते है।

सब विध रीत राह गुरु कहिये, झाटक मोय बतावो।
तोल मोल कीमत गुण किरिया, शब्द बिध ऊर लावो ॥ ७ ॥

कृपा कर मुझे सब तरह की भक्ति का भेद व गुण का निरणा बताइये। ताकि उस भक्ति को हृदय में धारण कर सकूं तथा उसकी पहुंच बतावे।

तीनो धर्म हद कूं बरणो, कसर न राखो कांई।
कुण कुण धर्म कौन फल लागे, सो मुझ देवो बताई ॥ ८ ॥

हद याने तीन लोक में रखने वाली भक्ति का पूर्ण वर्णन करो, किसी प्रकार की कसर मत रखो। व कौन सी भक्ति से क्या फल मिलता है वो मुझे बताओ।

कुण कुण धरम किसी बिध साजे, हाल चाल सब कहिये।
देह बिध रूप धरे जुग माई, कहो किसी विध रहिये ॥ ९ ॥

किस किस धर्म की साधना किस विधि से करनी चाहिये, उसके साधन को अलग अलग तरह से समझाकर कहिये। शरीर के द्वारा क्या विधि क्या आचरण धारण करना चाहिये व कैसे रहना चाहिये।

करपा करो गुरु शिष ऊपर, परसण होय बिस्तारो।
सब जग भेद सो दीजे, शिष कूं शरण ऊबारो ॥ १० ॥

हे गुरुदेव शिष पर प्रसन्न होकर कृपा कर विस्तार से सब ही भक्ति करने की विधि बताइये। अणभै वाणी बनाने वाले सतगुरु यह शिष्य आपकी शरण में है। इसका उद्धार करो।

प्रथम रीत कहो नवधा की, नख चख सहित बतावो।
आद अंत ने पथ कण किरिया, शब्द भेद दरशावो ॥ ११ ॥

पहले तो नवधा भक्ति को सब प्रकार से आद से अंत तक बताइये कि कोण से नाम की व किस विधि से धारण करे।

शिष पर दया मेहर गुरु कीनी, भगत भेद मुख भाखे।
सावधान सब ही होय सुणज्यो, कसर कोर नही राखे ॥ १२ ॥

शिष्य पर अणभै वाणी बनाने वाले गुरुदेव ने कृपा कर भगती का भेद साधन व विधि का वर्णन किया है शिष्य चेतन होकर सुणो किसी तरह की कमी नही रख रहे है।

गुरु वाच : सुण शिष भगत भेद सब न्यारी, नवधा नव प्रकारी।
गावे सुणे टहल लघुताई, मूरत पूज विचारी ॥ १३ ॥

हे शिष्य सुणो सब भगती का भेद सब अलग अलग है। नवधा भक्ति नो प्रकार की है। गाते है, सुनते है, सेवा करते व नम्रता रखते है और मूर्ति की पूजा करते है।

श्रवण सुण ज्ञान नर सिख्या, भिन्न भाव बोहो राखे।
छापा तिलक गले बोहो माला, नाम सुरगुण नित भाखे ॥ १४ ॥

कानो से ज्ञान सुनकर सीखते है। बहुत छुआछूत रखते है, छापा तिलक करते है, गले में माला

पहनते है और सुरगुण नाम का शिमरण करते है।

बरत बास ईग्यारस करणी, तीरथ धाम फिर जावे।
सेवा करे सपाडा जल ले, चौका नित दिरावे ॥ १५ ॥

व्रत वास ग्यारस करते, धामो व तीर्थो में जाते, सेवा करते, जल में स्नान करते व नित चौका देते है।

पानी पीये डोर सुं खांचर, उतमाई बोह किरिया।
बेरबेर पानी पग धोवे, भावे बाहर घर फिरिया ॥ १६ ॥

कुवे से पानी खेच कर पीते है, बहुत क्रिया पवित्रता से करते है। चाहे बाहर फिरो या घर में फिरो। बार बार पानी से पग धोते है।

शील सांच सन्तोष क्षमा कूं, कर फेरे नित माला।
दया दान देवल नित जाणो, जहां तहां फिरे ऊपाला ॥ १७ ॥

शील सांच सन्तोष व समता को धारण करते है। हाथ में माला लेकर फेरते है। हृदय में दया रखते है। दान देते है, हमेशा मंदिर जाते है। जहां कही भी जाते है तो नंगे पांव ही फिरते है।

ब्रह्मा विष्णु, रूद्र जो तीनो, दुबध्या दोय न जाणे।
निंदा तजे नाम नित लेवे, सबको सरस बखाणे ॥ १८ ॥

ब्रह्मा, विष्णु व महादेव तीनो में द्वेत भाव याने दो नही जानते। निंदा नही करते। परमात्मा का नाम हमेशा लेते है तथा सबका बराबर बखाण करते है।

सेवा करे चन्दन बोह चरचे, गावे सुणे सयाना।
नवधा भक्ति इसी विध कहिये, अे अंग सोच में आंणा ॥ १९ ॥

भगवान की सेवा करते है, बहुत चन्दन चढाते है, गुणानुवाद गाते है, सावधानी से सुनते है इसको नवधा भक्ति कहते है। ये नवधा भक्ति के अंग है इसको समझ लो।

सांचे मते होय जन साजे, कसर न राखे कांई।
तब फल जाय लगे नवधा को, विष्ण लोक के मांही ॥ २० ॥

जो जन सच्चे मन से यह साधना करते है किसी तरह की कसर नही रखते है। तब नवधा भक्ति करने वालों को विष्णु लोक की प्राप्ति हो जाती है।

तन मन धन शीश कूं सूंपे, काची कदे न लावे।
अे अंग मिलिया निशो दिन सूजे, विष्णु लोक नर जावे ॥ २१ ॥

शिष्य तन मन धन से भक्ति करे, इसमें कमजोरी कभी नही लावे। रात दिन इस तरह साधन करने पर विष्णु लोक को जाते है।

जिग जाप सो जोग जपीजे, चित चेतन सुध होई।
गत मुक्त विष्णु फल पावे, कपट न राखे कोई ॥ २२ ॥

जीग करे, जाप करे, चित लगाकर सुध भाव से भक्ति करे, तो स्वर्ग व बैकुण्ठ की प्राप्ति, बिना कपट भक्ति करने से होती है।

सुण शिष विष्णु भक्त विसतारा, अे अंग साजे साधु।
जैसी सजे मुक्त गत तैसी, ईधक न ओछी बांधु ॥ २३ ॥

हे शिष्य विष्णु भक्ति विस्तार से सुणो, जो साधु अंगो को धारण कर साधना करते है। जैसी साधना करते है वैसे ही स्वर्ग बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

च्यार मुक्त बैकुण्ठ बिराजे, न्यारी तुज दरशावुं।
नाम रीत न्यारी नर पावे, विष्णु भेद ऊर लावुं ॥ २४॥

बैकुण्ठ की चार मुक्ति है, वो मैं तुझे अलग अलग बताता हूं। जैसी जैसी नांव की साधना करता है उसी माफिक उसको मुक्ति मिलती है। यह विष्णु की भक्ति का भेद है।

सालोक जो रह समीपा, फिर सरूप बहुत बखाणी।
सायुज भक्त मुक्त तहां पावो, कहूं भेद तत छाणी ॥ २५॥

विष्णु लोक में पहुंचना ही सालोक मुक्ति की सभा में बिराजना, सारूप्य मुक्ति है विष्णु के पास बैठना ही सायुज्य मुक्ति है इसका यह भेद है।

पहली मुक्त लोक में आया, दूजी सभा बिराजे।
तिजी मुक्त पास ले बैठा, चौथी विष्णु कहिजे ॥ २६॥

पहली लोक में पहुंचना ही, दूसरी सभा में बिराजना, तीसरी विष्णु के पास बैठना, चौथी मुक्ति विष्णु रूप हो जाना है।

तन मन अरप भक्त कूं साजे, जग सुख बंचे न कोई।
मन की मूठ विष्णु पद मांही, सुख दुख लगे न दोई ॥ २७॥

तन मन लगाकर भक्ति करे, जगत के सुखो की इच्छा नही रखे, मन को विष्णु की आराधना में लगाये रखे व सुख दुख में समता रखे।

सेवा मांय विराजे सन्मुख, बात बिगत नही करणी।
काम काज सब ही बिध तज के, सूरत विष्णु में धरणी ॥ २८॥

विष्णु की मूर्ति के सामने बैठकर भक्ति करे, सब काम काज छोड सूरत विष्णु में लगावे बातचीत नही करे।

मूरत मांय मन ले घाले, दूजी सुध बिसरावे।
लाय लगे बैरी शिर आवे, ऊठ भाग नही जावे ॥ २९॥

मूरती में मन लगाकर ऐसी सेवा करे और दूसरी सब सुध भूल जावे। चाहे आग लग जावे, दुश्मन सिर पर लग जावे तो भी ऊठकर नही भागे।

चरणामृत लेह परसादी, राम कृष्ण की सेवा।
शालगराम खोल नित पीवे, विष्णु भक्त ये भेवा ॥ ३०॥

रामकृष्ण की सेवा करते है, चरणामृत प्रसादी लेते है, शालगराम को नित्य खोल कर पीते है। यह सब विष्णु की भक्ति का भेद है।

ऐसी रीत बिध सब साजे, विष्णु लोक में जावे।
सुखरत बंधे पले नर जेतो, तहां लग मांय रहावे ॥ ३१॥

ऐसी रीति व विधि से सब साधना करे तो विष्णु लोक याने बैकुण्ठ में जाते है। जितना सुखरत होता है उतने समय तक वहां रहते है।

जग में रहे बरत कूं साजे, शेष जुग करे सेवा।

ने: हचे आण पडे धरणी पर, तीन लोक सूं देवा ॥ ३२ ॥

संसार में जब तक शरीर रहे तब तक नियम से साधना करे, हजार युग तक सेवा याने भक्ति करे तो भी निश्चय ही पृथ्वी पर तीनो देवों के लोक से वापिस आ जाते है।

आवागवण मिटे नही कोई, जम जंजाल नही चूके।
सुख दुख दोय तिके रह संगी, सवार चोर ज्यूं ढूके ॥ ३३ ॥

जन्मना मरना नही मिटता, जम जंजाल याने चोरासी नही मिटती। सुख दुख दोनो साथ लगे रहते है। जैसे चोर चोरी करता है तो सवार उसे पकडते है। ऐसे ही पाप का फल दुख व पुण्य का फल सुख है।

ने: हचे मुक्त नही है कोई, चार दिना सुख कहिये।
जब चल काल विष्णु को पकड़े, कौन शरण तब रहिये ॥ ३४ ॥

निश्चय ही मोक्ष नही होती जैसी जैसी साधना होती है वैसा ही सुख भोगता है। विष्णु का समय पूरा होने पर उनको भी आना पडता है। तो फिर किसकी शरण में वहां रहते है।

विष्णु धरम शंकर सुख दोई, तीन लोक विस्तारा।
जैसी करे वैसी गत पावे, सुण शिष अेह विचारा ॥ ३५ ॥

विष्णु व शंकर की भक्ति से तीन लोक में सुख मिलता है, जैसा साधन करते है, वैसा ही फल मिलता है। हे शिष अेसा सुण कर विचार कर लो।

आवागवण बोहोर नही आवे, सुख दुख धरे न काया।
सो पद करम धरम सूं न्यारो, सतगुरु मोय लखाया ॥ ३६ ॥

आवागवण में नही आवे शरीर धारण कर सुख दुख नही भोगना पडे। वह पद करमो व धरमो से अलग है। ऐसा मुझे सतगुरु ने बताया है।

परमपद विध भेद विचारा, आगे शिष बतावुं।
अब सुण लोक वेद की बातां, भांत भांत सुं लावुं ॥ ३७ ॥

परमपद की प्राप्ति के भेद का विचार मैं तुझे आगे बताऊंगा, अब लोकिक व वेद की बाते भिन्न भिन्न प्रकार से समझाता हूं।

तपस्या करे जत कूं साजे, कर व्रत झांप मरे है।
जा मन जुक्त जीव तां राखे, तहां ही जन्म धरे है ॥ ३८ ॥

तपस्या करते, जतीपना धारण करते, काशी में करोत लेते है। जीवित अवस्था में जहां मन की धारणा होती है, वही जाकर जन्म लेते है।

राजा राव पातशाह जुग में, तपस्या कर फल पावे।
इनमें फेर करारी खांचे, देवलोक में जावे ॥ ३९ ॥

जगत में तपस्या करने से राजा राव व बादशाह हो जाता है। ज्यादा करने पर देवलोक की प्राप्ति होती है।

जिग सो करे अेक सौ जग में, बीच विधुंष न पावे।
ताके धरम जाय हुवे इन्द्र, सुर तेतीस सरावे ॥ ४० ॥

सो यज्ञ निर्विघ्न पूर्ण करे, उससे इन्द्र पद की प्राप्ति होती है। तेतीस क्रोड देवता उसकी महिमा

करते है।

अभैदान, कन्या, दे गाया, शील, झूंठ नही भाखे।
बोहो विध धर्म करे नर जग में, देवलोक में राखे ॥ ४१ ॥

अभयदान, कन्यादान, गोदान करे, शीलव्रत रखे, झूंठ नही बोले, इस तरह मनुष्य जगत में कई तरह के धर्म करे तो उसको देवलोक याने स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

सुखरत पले बंध्यो जहां लग, धिन धिन नर होई।
खुटे दाम पलक नही राखे, कोलु तजे हुवे छोई ॥ ४२ ॥

जितना पूण्य होता है उतना भोगकर वापिस आना पडता है। जैसे कोल्हूं में छिलके में रस रहता है। जब तक रहता है, रस निकलने पर छिलको को बाहर फैंक देते है।

सुर तेतीस देवता कहिये, सुखरत कर कर हुवा।
मुक्ति मोख परमपद कहिये, तांसु रह गया जुवा ॥ ४३ ॥

तेतीस करोड देवता मृत्युलोक में पूण्य कर्म करने से हुये है। जिसको मोक्ष व परमपद कहते है। उसकी प्राप्ति उनको नही होती है।

सुखरत कियो जग के मांही, देवलोक में जावे।
ऊलटा जाय हुवा वां दुखिया, नर देह अब कबू पावे ॥ ४४ ॥

जगत में मनुष्य योनी में पुण्य करके देवताओं के लोक में जाते है। वहां जाकर मनुष्य जन्म पाने के लिए तरसते है।

जब तो काल बुध थी थोडी, देवलोक ही बूज्या।
परमपद की खबर न पाई, अब परे तत सूज्या ॥ ४५ ॥

मनुष्य योनि में बुद्धि कम होने से देवलोक की प्राप्ति का साधन किया। परमपद की प्राप्ति का ज्ञान नही होने से उसकी प्राप्ति नही हुई। अब उन्हें परे ब्रह्म की प्राप्ति का विचार हुआ क्योकि संत सतशब्द के साथ देवताओ के लोको से परमपद की प्राप्ति के लिये जाते है। जब उन्हें उस पद का ज्ञान हुआ।

पसरी बुध सुध सब सारे, सब में रही समाई।
मुक्त प्राण नार नर हुवा, अब सो सरे न कांई ॥ ४६ ॥

उन्हें जब यह बुद्धि आई कि देव योनि भोग योनि है। मनुष्य योनि से स्त्री पुरूष परमपद की प्राप्ति करते है। अब अपने से कुछ नही हो सकता।

निरबल प्राण इन्द्रिया थाकी, सूज बूज बल होई।
काम धाम नर अकल बतावे, फल सो लगे न कोई ॥ ४७ ॥

जैसे मनुष्य की प्राण व इन्द्रिया कमजोर हो जाने पर सूझ बूझ सब में कमी हो जाती है। तब वो काम धाम अकल बताने पर उसकी इच्छा होने पर भी सफलता नही मिलती।

देवलोक सारी विध साजे, हद बेहद के मांही।
केवल ब्रह्म विष्णु लग पेला, वा गत समझत नांही ॥ ४८ ॥

देवलोक की प्राप्ति का साधन हद बेहद का है। केवल ब्रह्म का पद तीन लोक में ब्रह्म के सर्वव्यापक पद है। उससे भी आगे है उस गत को वे नही जानते।

तांके लिये बंछे नर देही, परा भक्त अब किजे।

आवागवण जन्म हर मरणा, करम काट सब दिजे ॥ ४९ ॥

इसलिये उस पद की प्राप्ति के लिये देवता भी मनुष्य जन्म की इच्छा करते है। मनुष्यो को ही उस पद की प्राप्ति होती है। मनुष्य जन्म की इच्छा पराभक्ति करने के लिये, जिससे जन्म मरण मिटकर करमों का नाश हो जाता है।

सुण शिष देवलोक की बाता, इण विध शकल बुहारा।
कहूं कहां लग समज जे थोडी, एक अरथ में सारा ॥ ५० ॥

हे शिष देवलोक की बाते है इस तरह का सब व्यौहार है, एक ही अरथ में सब बात को समज लो। ज्यादा क्या कहूं।

अब सुण सर्वभक्त मत दाखू, रीत विध गत न्यारी।
ब्रह्मा लोक सत धाम कहिजे, तिण यां मांड पसारी ॥ ५१ ॥

अब मैं तुम्हे सब भक्तियो की विधि रीति जो सब अलग अलग है बताता हूं। ब्रह्माजी के धाम को सतलोक कहते है। ब्रह्माजी से ही सब सृष्टि की उत्पति हुई है।

ब्रह्मा रटत केवल पद नेः चे, अन्तर ध्यान समाया।
आठ पोहर दिन रात रेण में, एक ब्रह्म लिव ल्याया ॥ ५२ ॥

ब्रह्माजी भी केवल ब्रह्म के नाम का सुमरण करते है व अन्तर में ध्यान करते है। आठ पोहर रात दिन ब्रह्म की भक्ति करते है।

सांख ज्ञान जग मांय ऊचारया, आप मिलण का भेवा।
जो नर कसे सजे सो नेः चे, ब्रह्म मिले हरदेवा ॥ ५३ ॥

ब्रह्मा के लोक की प्राप्ति के लिये सांख्य ज्ञान का उच्चारण किया, जो मनुष्य सांख्य योग का साधन करते है। उन्हें ब्रह्मा के लोक की प्राप्ति होती है।

सांख जोग ऐसी बिध साजे, तो शिष तोय बतावुं।
चेतन होय सुध मन राखे, ब्रह्मा भेव सब गावुं ॥ ५४ ॥

सांख्य योग की साधना कैसे होती है। हे शिष्य यह मैं तुझे बताता हूं चेतन होकर सुध मन से सुणो, ब्रह्मा की प्राप्ति का सब भेद बताता हूं।

आत्म ब्रह्म सकल में देखे, दिष्ट पडे सो देवा।
निंदा दोष बैर नही बंधे, सजे सकल विध सेवा ॥ ५५ ॥

आत्म ब्रह्म को सब में देखते, दृष्टि में जो आता है उन सबको ब्रह्म समझते है। किसी की निंदा नहीं करते, दोष नही देखते, बैर नही बांधते, सबको ब्रह्म रूप समझकर सेवा करते है।

सुखरत करे दोष के बांधे, पाप पुन्न जग मांही।
दोनो देख सम मन राखे, निंदे बंदे सो नांही ॥ ५६ ॥

कोई सुखरत करे, कोई बुरे कर्म करे, जगत में कोई पूण्य करे, कोई पाप करे, दोनो को देखकर न तो किसी की महिमा करते न निंदा करते है। यही सम मन रखना है।

करणी कर्म करे ना बरजे, सेजा सकल बुहारा।
सुख दुख दोय एक कर जाणे, आप सकल सुं न्यारा ॥ ५७ ॥

कोई करणी कर्म करो उसको नही रोकते, सहज में सब व्यौहार करते रहते है। सुख दुख दोनो

को समान समझते है। आपको सबसे अलग अनुभव करते है।

ऐसो अर्थ करे मन भीतर, ब्रह्म बिना नही कोई।
सब ही अर्थ आद ले देखे, हरि बिन और न होई ॥ ५८ ॥

अपने मन में ऐसा विचार करते है कि ब्रह्म के सिवाय अनादि से कोई नही है।

सातु धात तीन गुण प्रगत, पांच तत बिन नांही।
जग सो खेल आप ही हुआ, फेर बिराजे मांही ॥ ५९ ॥

सात धातु तीन गुण पांच तत्वो से बने है यह जगत का खेल आप से ही हुवा है आप ही विराज रहे है।

ऐसा ज्ञान विचार समाया, होणहार सो होई।
सुरग नरक भूलोक पाताला, अे हरि बिन और न कोई ॥ ६० ॥

इस तरह का ज्ञान करते है जो होणहार होता है वही होता है। स्वर्ग नरक भूलोक पाताल सब जगह ब्रह्म व्यापक है उसके सिवाय और कोई नही है।

चारूं खांण बांण सो सारा, नख चख सकल पसारा।
दुतिया भाव दोय नही जांणे, माया ब्रह्म नियारा ॥ ६१ ॥

चार खान चार बाणी सबके नख चख सहित शरीर माया ब्रह्म को अलग नही समझते। सबको ब्रह्म रूप समझते है।

जैसे समंद भरयो जल पाणी, लहर दिसन्तर जावे।
वोही एक नीर जल शीतल, कहवत दोय कहावे ॥ ६२ ॥

जैसे समुद्र पानी से भरा हुवा है पानी में लहरे उठती है। लहरे दूर दूर तक जाती है। लहरे व पानी एक ही है। कहने में दो है, ऐसे ही माया ब्रह्म एक है, कहने में दो है।

ऐसो ज्ञान सब ते कहिये, भजे तजे नही पेले।
आपी ब्रह्म करम कुण कहिये, यूं होय जन जग खेले ॥ ६३ ॥

सब ही ब्रह्म है तो किसका भजन करे, किसे छोडे, किससे अलग है। इस तरह का ज्ञान सबसे कहते है। सब ही ब्रह्म है कर्म किसे कहते है ऐसे विचार कर जगत में रहते है।

भय, दुख, सोच, जग नही भावे, हरसे नही कुमलावे।
तोटो नफो बराबर देखे, यूं सुख मांय समावे ॥ ६४ ॥

न डर है, न दुख है, न सोच है, जगत नही सुहाता, न खुशी होते न दुखी होते है। हानि लाभ को बराबर समझते है। इस तरह सुखी रहते है।

ओ निज ब्रह्म अटल अविनाशी, ना काहूं गया न आया।
जन्में मरे जका विध ऐसी, कपडा बोहर बणाया ॥ ६५ ॥

यह ब्रह्म सत है, जिसका नाश नही होता, न कही आता जाता है, जन्मने मरने को ऐसा समझते है जैसे पुराने कपडे को छोडकर नया कपडा धारण किया हो।

यूं मन ज्ञान विचारे सो ऊ, करे करावे नाही।
सब में ब्रह्म एक ले चिन्हे, ऊंच नीच के मांही ॥ ६६ ॥

ऐसा ज्ञान मन में विचारते है हम कुछ करते कराते नही है, सब ऊंच नीच को ब्रह्म ही समझते है।

शिष वाच : शिष बुजे गुरुदेव कहिजे, संख नाम किम दिया।
जे नर कस जीत मन बैठा, सेजा कुण फल लिया ॥ ६७ ॥

शिष्य गुरुदेव से प्रार्थना करता है कि हे गुरुदेव इस ज्ञान को सांख्य नाम कैसे दिया है। जिन मनुष्यो ने इस ज्ञान द्वारा मन को जीत लिया है उन्हें कौनसा फल मिलता है।

किरपा करो भेद सब दिजे, शिष का भरम गमावो।
संख साज जन कहा समावे, सो धर्म मोय बतावो ॥ ६८ ॥

कृपा कर सबभेद देकर शिष्य के भरमो को मिटा दो। मुझे आप यह बताओ कि सांख्य योग साधना करके मनुष्य को किस पद की प्राप्ति होती है।

गुरु वाच : सतगुरु कह सुणो सन्मुख, सांख नाम इम दिया।
सब ही ब्रह्म भरम नही कोई, अरथ देख घर लिया ॥ ६९ ॥

सतगुरु फ: है कि हे शिष्य इसे सांख्य योग इसलिये कहा है कि इसमें सबको ब्रह्म ही समझते है किसी तरह का भरम नही करते, यही अरथ देखा है कि ब्रह्म के सिवाय कोई नही है।

सो जन संख जोग इधकारी, सो परजा मन भावे।
सब ही टहल बंदगी कर है, चरणां सब चल आवे ॥ ७० ॥

जो जन सांख्य जोग की साधना करते है वो सब प्रजा को अच्छे लगते है, सब ही उनकी सेवा चाकरी करते है, सब चरणों में गिरते है।

प्रथम संख फूल फल लागे, अे सुख मांय समाया।
ब्रह्म हरष बोहो हुवा राजी, देव लोक में आया ॥ ७१ ॥

सबसे पहले सांख्य योग का यह फल लगता है कि ये सब सुख में समाये हुये रहते है। यही ब्रह्म का हर्ष होना है। ये ब्रह्मा के देवलोक में आ जाते है।

ब्रह्मा का सतलोक बखाणे, धिन धिन जन होई।
आवागवण जन्म हर मरणो, ओ सिर मिटे न कोई ॥ ७२ ॥

ब्रह्मा के सतलोक में उनको सब धिन धिन कहते है परन्तु उनका जन्मना मरना नही मिटता।

दोहा : शिष बूजे गुरुदेव कहयो, संख जोग मत छांण।
सुण चेला ने: चल नही, चाकर धणी बखाण ॥ ७३ ॥

शिष्य ने पूछा सत गुरुदेव ने फरमाया कि मैने तुझे सांख्य जोग का भेद बताया परन्तु हे शिष वहां ब्रह्मा व साधन करने वाले स्थिर नही रहते।

अनन्त क्रोड आगे गया, फेर अनन्ता ही होय।
सुण चेला ऊण ब्रह्म की, निमख न बरते कोय ॥ ७४ ॥

अनन्त क्रोड ब्रह्मा आगे हो गये और अनन्त फिर होयेंगे। हे शिष सुणो इन सबकी आयु पारब्रह्म के नाम का प्राक्रम के क्षण भर भी नही है।

क्या ब्रह्मा केता भया, सरब काल की चार ?
सुण चेला तिहूं लोक में, सब सिर जम की मार ॥ ७५ ॥

कितने ही ब्रह्मा होकर चले गये है। शिष्य तीनो लोको में जन्मना मरना नही मिटता, यही जम की मार है।

सतशब्द शरणो सही, नेः चल नेम निधान।
सुण चेला तत बायरा, सब मत ऊला जांण ॥ ७६ ॥

सतशब्द का साधन ही सत है स्थायी है। हे शिष्य सुणो सतशब्द के द्वारा ब्रह्म पद की प्राप्ति होती है। इसके सिवाय जितने भी पद है, वो ऊली तरफ के है।

शिष वाच : धिन समरथ गुरुदेवजी, धिन दरशण दीदार।
पतित ऊधारण बापजी, मो शीर टालो मार ॥ ७७ ॥

शिष्य प्रार्थना करता है कि हे गुरुदेव आपको धिन है आपके दर्शण धिन है, आप पतितो का उद्धार करने वाले है, आप मेरा उद्धार कर जन्म मरण से रहित कर दो।

नवधा भक्त संख निरणा किया, कसर न राखी कोय।
किरपा कर गुरुदेवजी, यूं जोग बतावो मोय ॥ ७८ ॥

आपने नवधा भक्ति व सांख्य जोग के साधन का भेद बताया किसी तरह की कमी नही रखी। अब आप कृपा करके योग के साधन को बताइये।

कल कीमत सब ही कहो, बरणो बिध बोहार।
क्या करणी, साजन किसा, को फल चाले लार ॥ ७९ ॥

योग के सब साधन का भेद बताइये क्या करणी करने व कैसा साधन करने से क्या फल मिलता है।

जोग रीत की विध कहो, साज रीत घर जाय।
क्या फल अन्तर आद ले, कहां जन रह समाय ॥ ८० ॥

योग साधन की विधि कहिये, साधन करने वाले को किस पद की प्राप्ति होती है। अन्तर में क्या फल होता है।

गुरुवाच : चौपाई : सतगुरु कह सुणो शिष भेवा, जोग सजण की भाखूं भेवा।
ओऊं शब्द ऊठतो लेवे, मन सो सूरत पवन में देवे ॥ ८१ ॥

सतगुरुदेव फः है कि हे शिष्य सुणो योग की साधना का भेद बताता हूं। ओऊं याने उठते हुये स्वांस में साधन करे मन व सूरत स्वांसा में लगावे।

सिध आसण साजे नर सोई, मूंदे सातुं पोल मिलावे दोई।
डावो पांव गुदा तल लेवे, दूजो पांव लिंग पर देवे ॥ ८२ ॥

सीध आसन (सिद्धासन) लगाकर साधना करे सात पोल दो द्वार याने नो दरवाजो को बंद कर बांया पांव गुदा के नीचे व दूसरा पांव लिंग पर रखते है।

श्रवण मांय अंगूठा दिजे, अंगुली पांच नेण धर लिजे।
मुख को रोक होट सुं लिया, मन सो घेर नाभ में दिया ॥ ८३ ॥

कानो में अंगुठा लगावे, पांचो अंगुलियो को आंखो पर देवे, मुंह को होठ से बंद कर लेवे। मन को घेर कर नाभी में लगाते है।

मूल चक्र क्रिया नर साजे, तब शिर शब्द अनाहद गाजे।
सांस ऊसांस पवन कूं खेचे, मन कू लाव सूरत से अैचे ॥ ८४ ॥

जो मनुष्य मूल चक्र याने गणेश स्थान से साधना करता है तब उसको अनहद शब्द का सिर

पर अनुभव होता है। सांस ऊंसास में मन व सूरत लगाकर स्वांसा को ऊपर खेंचते है।

चार मास ऐसा हट किया, जब जन कमल गुदा तज दिया।
खट कमला की सता उठाई, घेरो पडयो नाभ दल मांही ॥ ८५ ॥

चार महीने तक गणेश स्थान पर ऐसा साधन करने पर गुदा कमल से ऊपर आ जाते है। ब्रह्मा के स्थान को पारकर नाभी कमल पर आ जाते है।

पवन चक्र नाभ में खावे, अणमांऊ होय ऊंचा आवे।
अष्ट कमल दल खाली किया, दवादश पांख कमल मन दिया ॥ ८६ ॥

नाभी से स्वांसा चक्कर खाता रहता है ऊंमावु होकर ऊपर चढता है नाभी से हृदय में आ जाते है। यहां हृदय में बारा पांख का कमल मानते है।

हट सो करे पचे दिन राती, फेरे मन सूरत कूं जाती।
काम काज सब तजे बुहारा, निश दिन पचे पवन की लारा ॥ ८७ ॥

रात दिन स्वांसा को मन व सूरत लगाकर खेचते है ऐसा साधन करते है सब काम काज व व्यवहार छोडकर रात दिन स्वांसा को ऊपर चढाते रहते है।

षट सो मास बरस हट कीजे, तब सज ध्यान भृगुटी लीजे।
आ किरिया इस विध बखाणी, भृगुटी भेद तत विध जाणी ॥ ८८ ॥

इस प्रकार छः माह तक हट करने पर ध्यान भृगुटी में आता है। इस विधि से यह क्रिया बखाणी है और भृगुटी के भेद व तत्त की विधि जाणी है।

जब लग कसे सजे जन काया, तब लग आहार छुछम कर भाया।
सागट सभा सकल कूं त्यागे, निद्रा छुछम रात दिन जागे ॥ ८९ ॥

यह साधन करते है तब तक आहार थोडा करते है। मर्यादा को नही मानने वाले की संगत नही करते है। नींद थोडी लेते है, रात दिन जागते है।

चाले गेल कबू नही धावे, मुख सुं बैण छुछम सो लावे।
बायर दिशा इसी विध कहिये, आसण इडग इंकतर रहिये ॥ ९० ॥

चलते समय धीरे चलते है कभी जल्दी नही चलते है। मुंह से बहुत कम बोलते है, बाहर के साधन तो इस प्रकार करते है एकान्त में आसण लगाये रहते है।

देखा देख सजे नही कोई, उपजे दोष रोग तन होई ।
सांचा गुरु शिष होवे सूरा, साजे जोग चढे मुख नूरा ॥ ९१ ॥

योग का साधन देखा देखी से नही होता, यदि करता है तो शरीर में रोग हो जाते है। अनुभवी गुरु हो, शिष्य शूरवीर हो, जब योग का साधन पूरा हो सकता है।

शिष वाच : शिष बूजे सुणो गुरुदेवा, झूंठ सांच का कहिये भेवा।
कुण गुरु सांच झूंठ कुण कहिये, कोहो शिष सूर किसी विध रहिये ॥ ९२ ॥

शिष्य गुरुदेव से पूछता है कि गुरुदेव सांच झूंठ का भेद बताइये, सच्चे व झूंठे गुरु व शूरवीर शिष्य कौन है।

से सब मोकूं भेव बतावो, प्रसन्न होय ज्ञान निज लावो।
सतगुरु सुणो शिष का भेवा, सांचा गुरु ज्ञान रस लेवा ॥ ९३ ॥

आप प्रसन्न होकर इस ज्ञान का विचार पूर्ण बताइये। सतगुरु शिष्य को भेद बताते है सच्चे गुरु को पूर्ण ज्ञान का अनुभव होता है।

गुरु वाच : आप तिरे औरन कूं तारे, पिण्ड ब्रह्मण्ड का भेद विचारे।
सो सब ज्ञान पिण्ड में जोवे, शील सांच क्षमा घट होवे ॥ ९४॥

ऐसे गुरु आप भी उस पद की प्राप्ति किये हुये होते है, दूसरो को भी कराते है। पिण्ड व ब्रह्मण्ड का अनुभव करना ही भेद विचारना है यह सब ज्ञान शरीर में अनुभव करते हुये शील सांच क्षमा धारण करते है।

गुरुवाच : जहां सुं चाल जग में आया, जहां ते बिछडया जहां जाय समाया।
नैणा देख कहूं सो सांची, काना सुणी द्रिढावे काची ॥ ९५॥

आत्मा परब्रह्म से के:पद में मिलने के लिये मृत्युलोक में आयी और भक्ति करके वहां पर पहुंच गयी। मैं आंखो से देखी हुई कहता हूं, जो कानों से सुण कर कहते हैं वो बात कच्ची है।

काना सुणी सीख नर गावे, तब लग सत मन नही भावे।
सीख ज्ञान सतगुरु होय बैठा, सो शिष भरम कपट में पेठा ॥ ९६॥

कानो से सुनकर सीखकर जो कहते है वो सत नही है। वो मन में अच्छी नही लगती जो ज्ञान सीख सीखकर सतगुरु बन बैठे है उनके शिष्य भरम कपट में फंसे रहते है।

ने: चे जाय नरक के मांही, सीख ज्ञान सतगुरू कहाई।
निज तत शब्द भेद नही पावे, सिख साखा पर हुक्म चलावे ।। ९७।।

ज्ञान सीख सीखकर सतगुरू बन बैठे है वे निश्चय ही नरक में जाते है, उनको ब्रह्म के नाम का भेद नही है वो शिष्यो पर हुक्म चलाते है।

से गुरु झूंठ, भेद नही पाया, सुण सुण ज्ञान औरा कह भाया।
चौडे अरथ जग के मांही, बिन दीठा सब झूंठ कहाई ॥ ९८॥

जिन्हें भेद नही मिला वो ज्ञान सुन सुनकर दूसरो को कहते है। वे झूंठे है, यह अरथ जगत में चौडे है बिना देखकर कहने वाले गुरु झूंठे है।

देख कह सांचा जन होई, सुण शिष भेद बतावुं तोही।
सांचा गुरु सुध बुध सांई, शिष को कारज शिष के मांही ॥ ९९॥

देखकर कहने वाले सच्चे है। हे शिष्य इसका यही भेद है सच्चे गुरु वो ही है जिनमें परमात्मा की सुद्धि बुद्धि है। ग्यान को धारण करने से शिष्य का कार्य शिष्य में ही है।

कायर शिष पास जो बैठा, बहुत ज्ञान पण हुवे ने सेंठा।
गुरु समरथ शिष सूरा चाहिये, जब जग जीत अटल घर रहिये ॥ १००॥

जो शिष्य कायर होते है वो गुरू के पास बहुत ज्ञान होने पर भी धारण नही करते, गुरु तो अनुभवी होने चाहिये। शिष शूरवीर याने ज्ञान धारण करने वाले होने चाहिये। जब जगत से अलग होते है जब ब्रह्मंड में घर कर लेते हे।

शिष साजे गुरु भेव बतावे, दोनुं तडा बराबर कहावे।
जब ही जोग चढे निरवाना, भरकुटी लगे समाधि ध्याना ॥ १०१॥

गुरु तो भेद बताते है व शिष्य साधना करते है दोनो बराबर होने चाहिये। जब योग का साधन

पूर्ण रूप से होता है जब भरगूटी में समाधि व ध्यान लग जाता है।

दोहा : सो गुरु को नर भूल गया, तिनकूं वार न पार।
नरक कुंड सुखराम कह, जुग जुग झूलणहार ॥ १०२ ॥

सच्चे गुरू व उनके ग्यान को भूल गया है, उनके दुख का कोई वार पार नही है। म:फ: है कि जुगानजुगो तक नरक में रहना पडता है।

जुग जुग संगत साध की, प्राण सेवा गुरूदेव।
सो अविनाशी आस रे, सुखिया सब जुग सेव ।। १०३ ।।

संतो की संगत जुग जुग में श्रेष्ठ है, वे आत्मा को जीते जी प्राणो से स्वांसा से शरीर से अलग कर अविनाशी की प्राप्ति करा देते है। जो प्राण अविनाशी के आधार पर है। म:फ: है कि सारा संसार का पसारा अविनाशी आत्मा का ही है।

सो संग कदे न बिछडे, सदा रह इन पास।
ताकूं तज सुखराम के, करे आन की आस ॥ १०४ ॥

म:फ: है जो ग्यान सदा आत्मा के संग रहता है उसको छोड कर आन याने शरीर धारी की आस करते है कि वो ही साथ ले जायेंगे।

अे गुरु अेता गुण रह, सत कह मुख बैण।
आद अंत सुखराम कह, सतपुरूषां का सेण ॥ १०५ ॥

जो सच्चे गुरु होते है उनमें यह गुण रहते है, मुख से सत वचन बोलते है। म:फ: है कि जो आदि से अंत तक परमात्मा सतपुरूषों की सहायता करते है।

तिण नर ये गुरु ना लख्या, डूबा आन ऊपास।
मगन हुवा सुखराम के, मन ही मन की आस ॥ १०६ ॥

म:फ: है कि संतो के अंग लक्षण व ग्यान को नही पहचानते है वे नर शरीर धारी की बढाई व सेवा करके डूब जाते है और मन ही मन की आसा में मगन रहते है।

सांचा गुरु संग रह, मत तज दिजे पूठ।
इणे खून सुखराम के, जुग जुग ले जम लूट ॥ १०७ ॥

म:फ: है कि सत ग्यान व भक्ति के संग रह कर पीछे पूठ दे देता है तो अपार खून का दोषी होगा। इस दोष से जुगानजुगो तक जन्म मरण में आना पडेगा, यही जम का लूटना है।

शिष वाच : संख जोग नवधा कही, और अष्टंग को भेव।
पराभक्त मोसुं कहो, शिष बूजे गुरुदेव ॥ १०८ ॥

हे गुरुदेव आपने सांख्य जोग नवधा भक्ति व अष्टांग योग का भेद बताया। अब पराभक्ति का भेद बताइये। शिष्य गुरुदेव से यह प्रार्थना करता है।

गुरुवाच : मैं सब ही मत बरणिया, फेर यांका विश्राम।
अब पराभक्त तोसुं कहुं, ज्यूं पहुंते निज धाम ॥ १०९ ॥

सतगुरु फ: है कि मैने सब मतो का वर्णन और इनसे किण पदो की प्राप्ति होती है वो बतलाई है। अब तुझे पराभक्ति का साधन बतलाता हूं जिससे मोक्ष व परमपद की प्राप्ति होती है।

नवधा निरफल नाम बिन, अष्टंग बडी ऊपाध।

सांख जोग सारो नही, विद्या मांई वाद ॥ ११० ॥

नवधा भक्ति में परमात्मा का निज नांव नही होने से उस पद की प्राप्ति नही होती है। अष्टांग में बडी उपाधि है, सांख्य योग में सब ब्रह्म है। कोई इष्ट नही है। विद्या में वाद विवाद है।

पराभक्त सब सुं सिरे, संता करी कबूल।
हे शिष यां बिन दूसरी, सब माया की मूल ॥ १११ ॥

पराभक्ति सबसे श्रेष्ठ है संत यही करते है, इसके बिना दूसरे सब साधन माया के है।

पराभक्त घट प्रगटे, तो साहिब सदा हजूर। दिव्य नैण देखे सदा, तेज पुंज का नूर ॥ ११२ ॥

जब पराभक्ति घट में प्रगट होती है तो सतशब्द का सूरत याने आत्मचेतन से आठ पोहोर अनुभव होता रहता है। दिव्य नैत्रो से उसके दर्शन होते रहते हैं।

शब्द घोर तिहूं लोक में, आगे अगम ऊजाल।
जन सुखिया उण देश में, जूरा न झांपे काल ।। ११३ ।।

खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड में शब्द की ध्वनि का अनुभव होकर आगे पद याने पार ब्रह्मण्ड से ऊपर अधर होता रहता है। उस पद में न काल की पहुंच है न बुढापा आता है।

साखी : श्रवण शब्द पधारिया, तब ऐसी गम होय।
सुण शिष तूं सुखराम कह, भेद बतावुं तोय ॥ ११४ ॥

शब्द की ध्वनि कानो में आती है, जब ऐसा अनुभव होता है। म:फ: है कि हे शिष्य उसका भेद बताता हूं।

वा वेदा सुवावे नही, बैठ निरन्तर जाय।
सुण शिष तूं सुखराम कह, श्रवण शब्द कहाय ॥ ११५ ॥

जब कानो में शब्द का अनुभव होता है तो संसार का वातावरण अच्छा नही लगता। केवल एकान्त में बैठकर भजन करना ही अच्छा लगता है।

रसणा में रस ऊपजे, खट रस न्यारा साव।
सुण शिष तूं सुखराम कह, ये ब्रह्म मिलण का चाव ॥ ११६ ॥

रसना से भजन होता है कंठो मे ऐसा स्वाद आता है। जिसका वर्णन नही हो सकता है। म:फ: है कि हे शिष्य यह ब्रह्म मिलने के ही उपाय है।

खाटा मीठा चरपरा, अमरत उतरया जोर।
सुण शिष तूं सुखराम कह, लिव बंद लागी डोर ॥ ११७ ॥

खाटा मीठा चरपरा स्वाद आता है, ऐसा ही भजन करते समय कंठो में आनन्द आता है, यही ईमरत ऊतरता है। म:फ: है कि हे शिष्य सुणो लिव बंध भजन होने लग जाता है।

कंठ में गदगद ऊपजे, निरख रयो सब मन।
सुण शिष तूं सुखराम कह, धिन गुरु साधु जन ॥ ११८ ॥

कंठ में गदगदी होती है इसको मन देखता है। म:फ: है कि हे शिष्य सुणो वे साधन बताने वाले व करने वाले जन दोनो धिन धिन है।

हिरदा में फर फर हुवा, शब्द समागम मांय।
सुण शिष तूं सुखराम कह, हियो भर भर जाय ॥ ११९ ॥

हिरदे में शब्द का अनुभव होना ही फर फर होना है। हिरदे में ही बिरह व प्रेम ऊबकता है।

नाभ कमल हरि आविया, गरजी सब बन राय।
सुण शिष तूं सुखराम कह, वास चहूं दिश जाय ॥ १२० ॥

नाभी में शब्द का अनुभव होना ही हरि आना है। नाड नाड रग रग रोम रोम में अनुभव होना ही गरजी सब बनराय है। म:फ: है कि हे शिष्य सुणो सारे शरीर में शब्द का अनुभव होना ही बास चहूं दिश जाय है।

मोर पपैया बोलिया, भंवर करे गुंजार।
सुण शिष तूं सुखराम कह, ज्यूं जागो शहर संवार ॥ १२१ ॥

शरीर में सब जगह शब्द होना ही मोर पपैया बोलना है व भंवर गुंजार करना है। म:फ: है कि हे शिष्य सुणो जैसे सबेरे शहर में जागृति होती है वैसी ही ध्वनि अनुभव होती है।

ठंडी लहरां ऊ पाय कर, अब धसियां पाताल।
सुण शिष तूं सुखराम कह, शेष दरस दीदार ॥ १२२ ॥

नाभी से ब्रह्मा गणेश का स्थान पारकर शब्द शेष के स्थान पर पहुंचता है तो शरीर में ठंडी लहरे अनुभव होती है। यही शेष के दरशण है।

सूरत शब्द मिल उलटिया, खुलीया पछिम घाट।
सुण शिष तूं सुखराम कह, पाई आदु बाट ॥ १२३ ॥

सूरत और शब्द मिलकर पिछम में उलटते है। म:फ: है कि हे शिष्य सुणो, आत्मा को अनादि से परमात्मा की प्राप्ति का एक मात्र सच्चा यही रास्ता है।

वहां हम धोती पहरता, रही करारी जांण।
सुण शिष तूं सुखराम कह, शब्द लख्या परवाण ॥ १२४ ॥

पश्चिम में शब्द जहां धोती पहनते हैं, उस स्थान पर आ गया वहां पर करारी याने कठिनाई आ गयी। म:फ: है कि हे शिष्य सुणो जब रटना करी तब यह आगे बढ गया।

अब चढिया असमान कूं, जांकी सुणज्यो आंण।
सुण शिष तूं सुखराम कह, देहे ज्यूं चढ़ी कबाण ॥ १२५ ॥

शब्द मेरूडण्ड से ऊपर चढता है उसकी बात सुणो। म:फ: है कि शिष्य सुणो शरीर कबाण की तरह झुक जाता है।

मेर थान अस्थान था, जब ऐसी गम होय।
सुण शिष तूं सुखराम कह, धनुष चढायो जोय ॥ १२६ ॥

म:फ: है कि हे शिष्य सुणो मेरूडण्ड पर जब शब्द आता है तब ऐसा अनुभव होता है, किसी ने धनुष चढा दिया हो।

सुरग इकीसुं छेकिया, ज्यूं सीर सूं काठ।
सुण शिष तूं सुखराम कह, दुरलभ पिछम बाठ।। १२७।।

पीठ में मेरूडण्ड में इक्कीस गांठे छेद कर आना ही इक्कीस सुरग छेकना है। जैसे लकड़ी को सिंयार छेद देती है। म:फ: है कि हे शिष्य सुणो पिछम साधन मिलना बडा दुर्लभ है।

बसतु अमाऊ भर रही, बासण झोखो खाय।

सुण शिष तूं सुखराम कह, शब्द मेर घर मांय।। १२८।।

बरतन में ज्यादा चीज भरने पर जैसे चीज बाहर आने लगती है। ऐसे ही शब्द का मेरूडण्ड पर आने पर अनुभव होता है।

अब चढिया सुमेर पर, वचन न बोल्या जाय।
सुण शिष तूं सुखराम कह, मन डरपियो तन मांय।। १२९।।

मेरूडण्ड याने यमराज के स्थान का ध्यान होना ही सुमेरू पर चढ़ना है। मेरूडण्ड को पार करना बडा मुश्किल है। शरीर में मन भी डरने लगता है, यही वचन नहीं बोलना है।

साय करी जगदीश ने, सामा मेल्या सैण।
सुण शिष तूं सुखराम कह, बोल्या अमरत बैण।। १३०।।

इडा, पिंगला, सुखमणा का जागृत होना ही परमात्मा ने सहाय करके सामा सैण को मेल्या है। म:फ: है कि इनका जागृत होना ही अमरत बचन बोलना है।

सैण संग होय ले चल्या, ऊडिया सुन्न की बाट।
सुण शिष तूं सुखराम कह, खुलीया भिस्त कपाट।। १३१।।

इडा, पिंगला, सुखमणा के साथ त्रिकुटी में आना ही सुन्न की बाट ऊडना है। म:फ: है कि हे शिष्य सुणो, त्रिकुटी में बैकुण्ठ का स्थान है। यही भिस्त कपाट खुलना है।

दोनो तरफा दोय लगी, बिचे सुखमण सीर।
सुण शिष तूं सुखराम कह, मिले त्रिवेणी तीर।। १३२।।

दोनो तरफ से इडा, पिंगला चली बीच में सुखमणा चली। म:फ: है कि यह तीनो त्रिवेणी में शामिल हो गई है।

तीनूं मिल मन एक हुआ, चल्या पीव के पास।
सुण शिष तूं सुखराम कह, छूटा आन ऊपास।। १३३।।

इडा, पिंगला, सुखमणा तीनो का संगम होने से मन को प्रसन्नता हुई, यही एक होना है। परमात्मा की प्राप्ति के लिये चलना ही पीव के पास चलना है। म:फ: कि हे शिष्य सुणो, आन ऊपास याने शरीर बंधन से आत्मा मुक्त हो गयी।

पीव दरस्या परस्या सही, ज्यां में फेर न कोय।
सुण शिष तूं सुखराम कह, भेद बताऊं तोय।। १३४।।

म:फ: है कि हे शिष्य सुणो तुम्हे भेद बताता हूं। सतशब्द का अनुभव होना ही पीव परसना दरसना है, इसमें फेर सार नहीं है।

पोप वासना लीजिए, सांसो नहीं लिगार।
सुण शिष तूं सुखराम कह, अलख पुरूष दीदार।। १३५।।

जैसे फूल की सुगन्धी आती है पर वो नजर नहीं आती है। ऐसे ही शब्द का अनुभव होता है वो दिखाई नहीं देता है, इसमें कोई संशय नहीं है। म:फ: है कि हे शिष्य यही अलख पुरूष का दरशना है।

जल में मछी रम रही, गेल न दरशे कोय।
सुण शिष तूं सुखराम कह, हरिजन में हरि होय।। १३६।।

जल में मछी रम रही है पर उसका रास्ता नहीं दिखता है। म:फ: है कि हे शिष्य सुणो भक्ति करने वाले संतो में ही परमात्मा रहते है।

थाली में झणणांट रे, बाजा मांय छतीस।
सुण शिष तूं सुखराम कह, युं जन में जगदीस।। १३७।।

कांसी की थाली में झणकार है इसी तरह शरीर में शब्द का अनुभव होना ही बाजा मांय छतीस है व थाली में झंणणाट है व जन में जगदीश है।

तेल तिला में निसरे, ज्यां में फेर न सार।
सुण शिष तूं सुखराम कह, गुरु मिल्या दीदार।। १३८।।

तेल तिलो में निकलता है इसमें किसी तरह का फरक नहीं है। म:फ: है कि शिष्य सुणो ओधाधारी संतो का अणभै ग्यान मिलने पर ही सतशब्द की प्राप्ति होती है।

सवैया छन्द ईदव :- सांस ऊसांस कह हरिनाम, फिरे रसणा मुख में दिन राती।
धीरज, ध्यान, अडोल न डोले, आसण मार ऊकासो छाती।। १३९।।

सांस उसांस में राम राम रात दिन करे, धीरज से ध्यान उसी में लगावे। वृतियां इधर उधर न डोले। आसण लगाकर राम राम करने पर ऊंसास में भजन होने पर छाती ऊपर उठती है।

नाल समीसल राखत नाई, मोडत अंग न बंधत बाती। मन कूं थोब पवन सूं मेलो,
सुरत समोय निरत कर साती।। सुखराम कहे यूं ध्यान धरो,
ज्यूं दीप सुं जोत चले है बाती।। १४०, १४१।।

मेरूडण्ड को सीधा रखकर शरीर को नहीं मोडे। मन को रोक कर स्वांसा में लगावे, सूरत को लगाकर निरत का संग करे। जैसे दीपक से दीपक जुप जाता है। म:फ: है कि ऐसे ही घट में सतशब्द की जागृति हो जाती है। तब सुरत से ध्यान धरे।

कवित :- सतगुरु समरथ होय, ज्ञान की कसर न राखे।
आद अंत की बात, ताहि ले भिन्न भिन्न भाखे।। १४२।।

ओधाधारी केवली भगवंतो का ग्यान परमात्मा में मिलने की कोई कसर नहीं रखते। आदि से अंत तक ज्ञान अलग अलग खोलकर समझा देते है।

शिष बुजे सौ बार, झलक ऊनो नहीं होवे।
धीरज सुं दे ज्ञान, भरम शिषा का सब खोवे।। १४३।।

यदि शिष्य सौ बार भी पूछे तो भी जरा से भी गरम नहीं होते। धैर्य से ज्ञान देकर शिष के सब भरमों का नाश कर देते है।

ऊलज्या कूं सुलजाय दे, ये सतगुरु सेनाण।
दूजा तो सुखराम कह, कनफूं का गुरु जाण।। १४४।।

संसार में उलझे हुवे जीवों को सतशब्द का ज्ञान देकर मिटावे वो सतगुरू है। म:फ: है कि दूसरे गुरू तो जीते जी शरीर से अलग नही कर सकते। शरीर में रखकर ही ज्ञान देते है वो कनफूं का गुरू है।

करे झोड बोहो भांत, भेद बिन फूस पिछाटे।
जड़ी रोग गम नांय, फूस कचरो सब बांटे।। १४५।।

शुभ अशुभ करणियो के ज्ञान की बहुत तरह की बाते करते है। परन्तु सतशब्द की जागृति का

भेद नहीं जानते, यही फूस पिछाटना है। शरीर को रोग तो जन्म मरण का लग रहा है, उस रोग को तो नहीं जानते। जन्म मरण का रोग मिटाने की औषधि सतशब्द का ज्ञान है। वो ज्ञान न देकर दूसरे साधन बताना ही फूस कचरो बांटना है।

पूंगी राग बिराग, ढोल बिन सुध बजावे।
चहूं दिश चाले गेल, राग बिन नाटक गावे।। १४६।।

पूंगी बजाता है पर राग से नहीं बजाने पर बांबी से सांप नहीं निकलता। ढोल बिना ज्ञान के बजाता है जुंजावु नहीं बजाता है तो शूरवीर में सूरापा प्रगट नहीं होता। चारो तरफ फिरने से गन्तव्य स्थान पर नहीं पहुंचता। बिना राग गाने पर राग का गुण नही प्रगटता है।

सिकल विकल चरचा करे, देश अरथ नहीं मांय।
जांके संग सुखराम कह, जीव गता सूं जाय।। १४७।।

ज्ञान की चरचा करते हैं परन्तु किस देश में जाना है उसका अर्थ नहीं जानते। म:फ: है कि ऐसे गुरू का ज्ञान धारण करने से जीव की मोक्ष नहीं होती। यही जीव गता सूं जाय है।

।। इति श्री गुरु शिष का संवाद सम्पूर्ण।।

卐 ब्रह्म भक्ति का अंग 卐

श्लोक : जतोस मतो क्रिया विचारी, बहुधाम परसे जिग सुध धारी।
सेवास पूजा सुरगुणोस ध्यावे, बिना ब्रह्म भक्ति मोखो न जावे।। १।।

जिसकी जैसी मती होती है वो वैसी ही भक्ति धारण करता है। जगत अपनी सुधी से बहुत से धामों के दर्शन कर जो जचती है वो धारण करती है। कोई सेवा पूजा करना, सुरगुण का ध्यान भजन करना, यह सब करते है। लेकिन बिना ब्रह्म भक्ति के मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है।

निगमोस बाणी बहु बिध बोले, कह सुख ऐसी तिरलोक तोले।
अरथ ग्रन्थो वार न पारा, बिन ब्रह्म भक्ति मोखो न द्वारा।। २।।

वेदो व पुराणो की वाणी बहुत विधि से बोलते है। म:फ: है कि तीन लोको का तोल बता देते है। ग्रन्थो का ऐसा अरथ करते है जिसका कोई वार पार नहीं है, लेकिन ब्रह्म भक्ति बिना मोक्ष नहीं होती।

करव्रत काशी झापो न कमला, अगनीन ठाडो ऊलटन सवला।
नवलीस आंतो जल पांख धोई, बिन ब्रह्म भक्ति मोखो न होई।। ३।।

काशी में करव्रत ले लेते है कि मैं अपना शरीर यहां छोडूंगा, कोई यह प्रण ले लेता है कि मैं इस शरीर से झपकी (नींद) नहीं लूंगा। कोई अग्नि में खडा हो जावे, कोई उलटा लटक जावे, कोई नोली क्रिया करके आंतो को धो लेवे, लेकिन बिना ब्रह्म भक्ति के मोक्ष नहीं मिलता।

मतोस जतो भिन्न पंथ किया, पवनज खेंची, गिरवास लिया।
ऊपवासोज रोजा मून संभावे, बिन ब्रह्म भक्ति मोखो न जावे।। ४।।

मति से ज्ञान करना, जतिपना धारण करना, अलग अलग साधन करना, स्वांसो को खेंचना, पहाड की गुफा में निवास करना, उपवास रोजा रखना व मौन धारण करना, लेकिन बिना ब्रह्म भक्ति किये मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती।

अन्न तज रोह काया ज पाडे, शिव पास पूजा कमलोज चाडे।
बनवास में रहे धूणी चहूं फेरा, बिन ब्रह्म भक्ति मोखो ने डेरा।। ५ ।।

अन्न का प्रसाद करना छोड़ शरीर को कमजोर कर दे, शिवपूजा में अपने शरीर को भी चढ़ा देवे, वनवास में चारों तरफ धूणी रमा कर रहे, लेकिन ब्रह्म की भक्ति किये बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती।

फल फूल फराल पय घर त छोडे, बहु विध आसन काया जुं मोडे।
सिर केस अंगा फिर खाक लावे, बिन ब्रह्म भक्ति मोखो न पावे।। ६ ।।

गृहस्थ को छोडकर फल फूल दूध का फराल करे, कई तरह के आसन लगाकर शरीर को मोडता है, शरीर पर राख व सिर पर बहुत केस बढा लेवे। लेकिन ब्रह्म भक्ति बिना मोक्ष प्राप्त नहीं होती।

रिधोस सिधो बहु पास होई, देह दिस्ट पलटी सब शिष्ट जोई।
भूतोस पित्रोस देवोस लावे, बिन ब्रह्म भक्ति मोखो न जावे।। ७।।

रिद्धि सिद्धि बहुत पास में हो, शरीर की दृष्टि पलटकर सारा संसार देख सकता है। भूत पित्र व देवताओं को बुला लेता है। परन्तु ब्रह्म भक्ति बिना मोक्ष में नहीं जा सकता।

अेवास मेहरी सेजास त्यागे, बोहो खूब बैठक अे निश जागे।
कर ग्रास आहारी आशा न कोई, बिन ब्रह्म भक्ति मोखो न होई।। ८ ।।

स्त्रियों के साथ रहना व उनके साथ सेज के सुख को त्याग दे। बोहोत बैठक करे, रात दिन जागे, हाथ में ग्रास लेकर आहार करे और संसार में किसी तरह की आशा न रखे, इतना करने पर भी ब्रह्म भक्ति किये बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती।

लक्षोस गच्छो बहु स्वरूप धारी, गुफा बासम गैहे पांच मारी।
सुखोस दुखो सेहजास जाणी, बिन ब्रह्म भक्ति मोखो न प्राणी।। ९ ।।

अच्छे लक्षण व ज्ञान धारण करे, बहुत रूप बनाता हो, गुफा में निवास करे, पांचो कर्मेन्द्रियों को वश में कर ले। सुख व दुख समान समझे, तो भी प्राणी को ब्रह्म भक्ति किये बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है।

देह तेल सिची अग्निज बाले, सब तन कापी प्राण प्रजाले।
बोहो हट हुनर करियेस कोई, बिन ब्रह्म भक्ति मोखो न होई।। १० ।।

शरीर पर तेल डालकर अग्नि में जला डाले। सारा शरीर काटकर प्राणों को छोड़ देवे, बहुत हट व कई तरह के हुनर करे, तो भी ब्रह्म भक्ति किये बिना मोक्ष नहीं मिलती।

गज बाज फोजा बोह राज होई, दिन भांण दिवता आड न कोई।
अेवास गिगनो वां जाय लागा, बिन ब्रह्म भक्ति धिरकार जागा।। ११ ।।

बहुत बडा राज हो, खूब हाथी घोडे व फौज हो, जिनके राज्य में सूर्य अस्त न होता हो, कोई आडे न आता हो, रहने के महल गगन चुम्बी हो, परन्तु ब्रह्म भक्ति के बिना वो जगह धिरकार है।

मिण सहित माणक द्रबोस खांणी, तिहूं लोक धूजे पलटे न बांणी।
इसास देहे जतो जोस पाया, बिन ब्रह्म भक्ति धिरकार भाया ।। १२ ।।

माणक व मणियो सहित धन की बडी बडी खाने हो, तीन लोक जिससे धूजते हो, जिनकी वाणी को काई नहीं पलटता हो याने उनके कहने माफिक सारा कार्य होता हो। शरीर बडा शक्तिशाली तेजवान हो, पर बिना ब्रह्म भक्ति के सबको धिरकार है।

कलधेन चित्रो किम्यो स पारा, देवोस दाणु सब पेख हारा।
रण जीत सूरा मुडता न कोई, बिन ब्रह्म भक्ति धिरकार होई।। १३।।

कल्पवृक्ष, कामधेनु, चित्रामणी हो, किम्यो यानि पारस जिससे सोना बनता है। वह खूब हो, जिसका पार न हो, देवता व राक्षस सबको हराने वाला हो। रण में बिना जीत के पीछे नहीं मुडने वाला शूरवीर हो, लेकिन बिना ब्रह्म भक्ति सब धिक्कार है।

मायास काया अरबास संखो, बहो खवास पास ढूले शीष पंखो।
चित चेहेत चेरी चावेस होई, बिन ब्रह्म भक्ति धिरकार सोई।। १४।।

जिस शरीर धारी के पास माया याने अरबो खरबो व संखो की संपति हो। सेवा करने वाले बहुत से नोकर हो, सिर पर पंखे ढुल रहे हो। चित से चाहने वाली दासिया हो, यदि ब्रह्म भक्ति नही हो तो सबको धिरकार है।

रागेन पागे न्यावोन निरणा, है गज अंबा पर वेस फिरणा।
सुणियेस सीखे तत्काल लिया, बिन ब्रह्म भक्ति धिरकार जीया ।। १५।।

राग के गुण प्रगटाने वाला हो, पैरो के खोज की परीक्षा करने वाला हो, न्याव से निरणा करने वाला हो, हाथी व घोडो को फेरकर परीक्षा करने वाला हो, सुनते ही सीखने वाला हो, लेकिन बिना ब्रह्म भक्ति के जीणा धिक्कार है।

सिधोस पीरो औतार होई, जग थिर देही खिरता न कोई।
सब शिष्ट भांजे थापेस न्यारी, बिन ब्रह्म भक्ति धिरकार सारी ।। १६।।

सिद्ध हो, पीर हो, अवतार हो, शरीर से संसार में अमर रहने वाला हो, सारी सृष्टि को मिटाकर वापस बना देने वाला हो, ब्रह्म की भक्ति बिना सबको धिक्कार है।

आताल पाताल तिहूं लोक सूजे, शुभ जांण अशुभा बिध बेत बूजे।
दत्तोस करणी कूम्योस कांई, बिन ब्रह्म भक्ति धिरकार भाई ।। १७।।

सुरपुर नरपुर व नागपुर तीन लोको की सुजती है, शुभ अशुभ की विधि की जानकारी हो, नाना प्रकार से उधम कर कमाई करने वाला हो, ब्रह्म की भक्ति बिना सबको धिक्कार है।

आकार जप्या बोहो बिध सेवा, धन सुत राज तुष्टोस देवा।
सुरलोक बासा जुग चार दिया, फिर घेर गंधी जड जीव किया।। १८।।

अवतारो का जप करने से बहुत विधि सेवा करने से धन पुत्र राज की प्राप्ति व देवता संतुष्ट हो जाते है। चार जुग तक स्वर्ग में निवास हो जाता है। बाद में उसे जड योनि व कई प्रकार की जीव योनि भुगतनी पडती है। याने चौरासी भोगनी पडती है।

रोजास वस्तो वा सोजधामा, गेह पाण रूपम ऊतमोस जामा।
तप तेज इन्द्री गृह त्याग दिया, सुरलोक भूलोक अैवास दिया ।। १९।।

हमेशा अच्छी तरह अच्छे स्थान में रहने वाला हो। उत्तम कुल में अच्छे रूप वाला हो। तपस्या व तेज से इन्द्रियों को वश में करने वाला हो। भूलोक में गृहस्थ को छोडकर देवलोक की प्राप्ति करने वाला हो।

किरियास करणी देवोस भाखे, गुफास जांपे बैकुण्ठ राखे।
सब सोज करणी फल रूप पावे, बिन ब्रह्म भक्ति मोखो न जावे।। २०।।

क्रिया करणी करके देवताओं को प्रसन्न करके गुफा में बैठकर साधन करके बैकुण्ठ की प्राप्ति करने वाला हो। सब करणी सोज फलो की प्राप्ति करने वाला हो, परन्तु ब्रह्म भक्ति बिना मोक्ष की प्राप्ति नही होती।

धरबोस गेला गत गाय खेती, गोलीस तीरो, तिल तत्त मेथी।
तरूणीस पासा बोहा हीर होई, बिन भेद भक्ति मोखो न लोई।। २१।।

धन प्राप्त करने के अनेक साधन जानने वाला हो, गाय व खेती पालन की गति जानने वाला हो, गोली व तीर अच्छी तरह चलाने वाला हो, तिलों में कितना तेल है व कैसे निकाले, को जानने वाला हो, जवान स्त्रियें हो, बहुत हीरे हो, लेकिन ब्रह्म भक्ति बिना मोक्ष प्राप्त नहीं होता।

सर नीर बंधो तरफूल दिया, बोहो रूप गेह ली बिन ज्योत दिया।
मिस्टोन निवजे रेणो न चन्दा, बिन भेद भक्ति सुखो न संदा ।। २२।।

तालाब के पानी को बांधने वाला हो, बिना वृक्ष और फूल के कई वृक्ष और फल बनाने वाला हो, अनेक रूप धारण करने वाला हो, अनेक रास्ता बता देने वाला हो, बिना ज्योति प्रकाश करने वाला हो, बिना मीठे के मिठाई बना देने वाला हो, रात्रि में चन्द्रमा के बिना प्रकाश दिखाने वाला हो, लेकिन बिना ब्रह्म की भक्ति के अक्षय सुख नही मिलता है।

सुधो न बुधो शूचो न काया, बिन भेद वक्ता बोह ज्ञान लाया।
खर स्याल कऊवा स्वान पुकारे, बिन भेद बक ज्ञान यूं झक मारे ।। २३।।

जिसमें सुद्ध बुद्ध न हो, शरीर की भी सुध न हो, बिना भेद के बहोत ज्ञान की बाते बोलते हो, वे तो गदहा स्याल कउवा व कुत्ते भी पुकारते है। बिना भेद जाने ज्ञान का बखाण करना झक मारना है।

देवो न मीर, मीठो न कुंपो, नही प्राण पिण्डे, तिके रो न चुपे।
बासा न कण भव पो भूस कैह से , बिन ब्रह्म भक्ति ज्ञिनानो स ऐसे ।। २४।।

देव हो उसमें करामात न हो, कुवा हो उसमें मीठा पानी न हो, शरीर हो उसमें प्राण न हो तो वह चुप रहता है, बोलता नही है, जिसमें कण न हो, वह भुसा ही है। ऐसे ही ब्रह्म भक्ति के बिना सारे ज्ञान है।

हेरूज नगरो गेह मांड दिया, द्रवोज जागा अेनाण किया।
ईयूं भेव खास गुरू शिष खोले, तब जोश आत्म मुख राम बोले ।। २५।।

जिस तरह अच्छे नगर में घर बनाकर रहता हो, जिस जगह धन है उसका निसाण कर देते हैं। ठीक इसी तरह परमात्मा ने चौरासी लाख योनियों में सर्वश्रेष्ठ मनुष्य रूपी चौला भारत वर्ष में दे दिया। अब इसी चौले में द्रव्य की खान खुलने का चिन्ह बना दिया। अब इस द्रव्य को कैसे प्राप्त करे, इसके लिए परमात्मा ओधाधारी सदगुरु को नित्य अवतार के रूप में भेजते हैं। ऐसे गुरु के मिलने पर द्रव्य की खान खुल जाती है। उनके ज्ञान से एक श्वांस में सत्तर करोड़ नाम आते है। तब आत्मा जोश के साथ राम रटती है।

गाठाज समंदो गढ नींव काची, कहे राग भेदंग है चीज आच्छी।
यूं जाण जोगी तब ब्रह्म पावे, कह सुख मोखो सो हंस जावे ।। २६।।

समुन्द्र के किनारे कितना ही भव्य मकान बना लेवे लेकिन उसकी नींव कच्ची रहेगी यानि हद बेहद तक के कितने ही साधन कर लेना तेरी नींव कच्ची ही रहेगी यानि जन्म मरण नहीं मिटेगा।

छ राग का भेद जानने वाला हो वो सब अच्छा है। इसी तरह साधना करने वालों को ब्रह्म पद की जानकारी हो। म:फ: है कि उसको ही ब्रह्म पद की प्राप्ति होती है।

क्षमा ज्ञिनानो जरणास नितो, मुख सांच बोले सब लछ जीतो।
बैकुण्ठ बासी सुख चैन पावे, बिन तत्त चिन्या मोखो न जावे।। २७।।

क्षमा करे, ज्ञान करे, जरणा रखे, मुंह से सत्य बोले, सब लक्षणो को जीत बैकुण्ठ बास कर सुख व शांति प्राप्ति कर लेवे, परन्तु बिना नांव याने सतशब्द के बिना मोक्ष की प्राप्ति नही होती।

सब लछ जरणा कर सोजवारी, मथ ज्ञान कीमत राह भेद सारी।
कण नांव पावे, अे रात ध्यावे, कह सुख मोखो या विध पावे ।। २८।।

सब अच्छे लक्षणो को सोजकर धारण करे ज्ञान की कीमत समझ कर मनन करते हुये रास्ते के भेद की जानकारी करे, कण नांव याने सतशब्द की प्राप्ति कर रात दिन ध्यान करे। म:फ: है कि इस विधि से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

।। इति श्री ब्रह्म भक्ति का अंग सम्पूर्ण।।

卐 ब्रह्म ज्ञानी का अंग 卐

साखी :- शिवरण की बेला किसी, काहा भागण को बार।
जब चेते सुखराम कहे, तब ही लेह संभार ।। १।।

भजन स्मरण का कोई समय नही। आत्मा के निकलने का वार व समय नही है। म:फ: है कि जब इच्छा हो तो तब ही भजन करते रहना चाहिये।

करसी सोई भुगतसी, प्राणी पुन्न अर पाप।
सुणज्यो सब सुखराम कह, कहा बेटो कहा बाप ।। २।।

जो प्राणी पाप व पुण्य करेगा उसका फल उसको ही भोगना पडेगा। म:फ: है कि सब सुनो बाप की करणी बाप को व बेटे की करणी बेटा भुगतेगा।

जिनकी महिमा जुग में, तांरी ऊत ही होय। ईत ऊत में सुखराम कह, फेर फार नही कोय।। ३।।

जिनकी महिमा संसार में है। उनकी महिमा परलोक में भी है। म:फ: है कि यहां वहां में कोई फेर फार नही है।

एक कहूं तो झूंठ है, दो भी कहया न जाय। ज्ञानी सो सुखराम के, समझ सोच मन मांय ।। ४।।

ब्रह्म को एक कहता हूं तो झूंठ है दो भी नही कह सकता। म:फ: है कि ज्ञानी अपने मन में समझ लो।

निरबरत में ब्रह्म एक है, परबरत में सुण दोय।
सत जाण्यो सुखराम के, जिण घाटे ज्यो होय ।। ५।।

निवृति ब्रह्म का पद एक है। प्रवृति पसारे में दो है याने माया ब्रह्म के साथ आत्म ब्रह्म के पद में भी इच्छा माया के साथ है। म:फ: है कि साधना करने वाले को जिस पद का अनुभव होता है उसके लिये वो ही सत्त है।

अनेका में एक है, एक माहे अनेक। ब्रह्म चिन्या सुखराम के, ज्यां सब घट में देख ।। ६।।

अनेको में ब्रह्म एक ही है। उस एक में अनेक समा रहे है। म:फ: है कि जिन्होंने ब्रह्म का

अनुभव किया है उन्होंने अपने घट में ही प्राप्त किया है।

तीन लोक चवदे भवन, सप्त दीप नर लोय। सब ही सुणो सुखराम के, एक घट मध होय ।।७।।

तीन लोक चवदा भवन, सात द्वीपो में जितने मनुष्य व संसारी है। म:फ: है कि सब ही सुणो एक घट मध्य ही है याने सब ब्रह्म के आधार पर ही है।

बाहिर नर केवत करे, मरजादा सब खोय। ज्यां रे सुण सुखराम के, कुछ अवलाखा होय ।।८।।

बाहर सब ब्रह्म ज्ञान की बाते करते है। मर्यादा भंग करते है। म:फ: है कि उन्हें ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति तो नही हुई है, परन्तु वे शिष्य से धन लेने की इच्छा रखते है।

ब्रह्म ज्ञान जब ऊपना, तब सारा घट मांय।
न्यारो कुण सुखराम के, तिण संग जीमें ना जाय ।।९।।

ब्रह्म ज्ञान घट में ही पैदा होता है। ब्रह्म के पद का अनुभव भी घट में ही होता है। अब वो अलग किससे रहा, सब ही आत्मा ब्रह्म है।

चौपाई :- धर्म ज्ञान कन ब्रह्म ज्ञान है, सो तेरा कह मोही।
कह सुखराम समझ कर बोलो, मैं बूजत हूं तोई ।।१०।।

म:फ: है कि तुम्हारा धरम ज्ञान है या ब्रह्म ज्ञान है सो तुम कहो। इसका समझ कर जवाब दो। यह मैं तुमको पूछता हूं।

ब्रह्म ज्ञानी वाच :- ब्रह्म ज्ञान है सुणो हमारे, धरम ज्ञान नही राखूं।
हे सुखराम सुणो सब कोई, सत बैण अे भाखूं ।।११।।

ब्रह्म ज्ञानी कहता है कि सब कोई सुणो मैं सतवचन कहता हूं। मेरे ब्रह्म ज्ञान है, मैं धरम ज्ञान को नही रखता हूं।

मा. :- ब्रह्म ज्ञान के गुरु न चेला, पाप पुन्न कछु नांही।
कह सुखराम आप में सब है, आप सकल के मांही ।।१२।।

ब्रह्म ज्ञान के गुरु न चेला न पाप न पुन्न है। म:फ: है कि आप में सब समाया हुआ है व आप ही सब में है।

धरम ज्ञान मेरा सुण सत है, शुभ बात शुभ खांणा।
कह सुखराम नीच की संगत, ऊंच कदे नही जांणा।।१३।।

सुणो मेरा धरम ज्ञान सत है। अच्छी बात धारण करना अच्छा खाणा है। म:फ: है कि ग्यान के मत से चलने वाले ऊंचे है व मन के मत से चलने वाले नीचे है इसलिये नीचे की संगत में कभी नही जाना चाहिये।

सत ज्ञान के भरम न सांसो, सत बैण सब बोले।
कह सुखराम रात दिन बिचे, इसो सांच नित तोले ।।१४।।

सतज्ञान की प्राप्ति होने पर किसी तरह का भरम व संशय नही रहता। सत वचन ही बोलते है। म:फ: है कि रात दिन ऐसी ही धारणा रखते है।

सतज्ञान जहां ननो न लावे, देह बिके ज्यां ताई।
कह सुखराम जत तो वांको, बिंद रहे घट मांही।।१५।।

जहां सत ज्ञान है वहां शरीर बिक जाये तो भी ना नही करते, उनका सत बोलना सही है।

म:फ: है कि जतिपना उसी का है। जिसका बिन्द शरीर से बाहर नही निकलता है।

साखी :- जिण कण सुं तर ऊपनो, सो फल डाला मांय।
सुणज्यो सब सुखराम कह, जड़ खोज्या क्या खाय ।। १६ ।।

जिस कण से वृक्ष का उद्भव हुआ है। वो फल वृक्ष की डाल में लगा हुआ है। म:फ: है कि जड को खोजने में नही मिलता है।

अच्छा करम धरम पेड है, डाला बायक होय।
लिव छंवरा सुखराम के, तां मध वो फल होय।। १७।।

म:फ: है कि जगत में रहते हुये शुभ करम करेगा तो उसके धर्म रूपी पेड़ लग जायेगा। फिर मुखार बिन्द से सत्य वचन बोलता है तो पेड के ऊपर डाले पते शोभयमान हो जायेंगे, फिर मुखार बिन्द से राम राम रटता है तो उस पेड पर फूल रूपी छंवरे आ जायेंगे। फिर पेड पर जैसे फल लग जाते है ऐसे ही शरीर रूपी पेड पर सतशब्द रूपी फल लग जायेगा।

हर कण ब्रह्मा पेड है, डाला सब संसार। हरिजन सो सुखराम कह, छंवरा फूल विचार।। १८ ।।

हर याने ब्रह्म तो कण याने बीज है ब्रह्मा पेड है। सारा संसार डाल है। म:फ: है कि जो परमात्मा के जन सत शब्द की भक्ति करते है। वो छंवरा याने फूल की तरह है।

संगत बिना तिरियो नही, ना सुधरयो जग मांय। डूबे सोई सुखराम के, कुसंगत में जाय।। १९ ।।

सतसंग के बिना न तो किसी का उद्धार हो सकता है। म:फ: है कि बुरी संगत में जाने से डूबता है।

जे साहिब सुं झगडिया, आठ पोहर दिन रात। ज्यां पाई सुखराम कह, आद घर की बात ।। २० ।।

जिन्होंने आठ पोहोर दिन रात परमात्मा का भजन किया है। म:फ: है कि उन्हें ही परमात्मा पद की प्राप्ति हुई है।

बिन झगडिया सुलझे नही, सेन सेन सुं आय।
जे सुलजे सुखराम के, धोका रहे मन मांय ।। २१ ।।

म:फ: है कि बिना भजन किये कोई मन याने विचारो से ज्ञान करते है। वे पांच तत्वो से अलग नही होते। इसलिये ब्रह्म पद की प्राप्ति नही होती है, ये ही धोका है।

झगडे लागा राम सूं, तब बिसरया सब केण। में ते मन सुखराम के, बोल सके नही बैण ।। २२ ।।

जो राम का भजन करने में लग जाते है वे सब कहने की बाते मेरी तेरी करना मन से ऐसे वचनो विचारो से बोलना सब छोड देते है।

तीन लोक का भोमिया, साध शिष्ट में होय।
यांसुं सुण सुखराम के, अरथ छिपयो नही कोय ।। २३ ।।

तीन लोक के भोमिया यानि राजा ब्रह्मा विष्णु महादेव है। तथा सृष्टि में ओधाधारी संत भी है। म:फ: है कि तीन लोक की कोई भी बात इन देवताओं से छुपी हुई नही है तथा ऐसे ओधाधारी संत से कोई भी ज्ञान छिपा हुआ नही है। यानि नीमित के लिये नीमित व नित्य के लिये नित्य अवतार।

जां दिन लागे नांव सुं, सो बुध रेवे मन मांय।
तो प्रगटे सुखराम के, अठ सिद्ध नो निध आय ।। २४ ।।

जिस दिन भजन करने में लगे वैसी बुद्धि मन में बराबर बनी रहे तो म:फ: है कि आठ सिद्धि

व नो निधी प्रगट हो जाती है।

सांच बिना ऊधरे नही, पच पच मरे अनेक।
पण बिन सुण सुखराम के, कण नही आवे देख ।। २५।।

सतशब्द के बिना अनेक पच पच कर मरो किसी का उद्धार नही होता है। म:फ: है कि पण याने विश्वास आये बिना कण नही आता। सतशब्द के साधन के बिना कण याने ब्रह्म की प्राप्ति नही होती है।

कहे बोहतां सिखे घणा, साख शब्द कूं आंण।
ब्रह्म भ्यासे सुखराम के, सो जन बिरला जांण ।। २६।।

साख शब्द कूं कहने वाले बहुत है सीखने वाले भी बहुत है। म:फ: है कि जिन्हें ब्रह्म का आभास होता है, वे जन संसार में बिरले ही है।

साख शब्द कूं सीख के, ब्रह्म बतावे आय। जारै सुण सुखराम के, फेर जाल फिर जाय ।। २७।।

साख शब्द को सीख सीखकर जो ब्रह्म बताते है उन्हें ब्रह्म पद की प्राप्ति नही होती है, यही जाल का फिरना है।

साख शब्द बिन आगला, निरणा करे अनेक। ज्यां हर कूं सुखराम के, सेजा लिया देख ।। २८।।

बिना साख शब्द के आगे अनुभव करके कहते है निरणा करते है। उन्होने परमात्मा को सहज में देख लिया याने प्राप्त कर लिया है।

ज्ञान आगलो सांभल्यो, मगन हुआ मन मांय।
ज्यां सुणयो सुखराम के, हर पायो है नांय ।। २९।।

सिर्फ ज्ञान सुनकर मन मे खुसी होते है। सुणो म:फ: है कि उन्होने परमात्मा को नही पाया है।

ज्ञान सुणया चेते नहीं, सो बेहरा नर होय। आंधा सो सुखराम के, जन सुं निवे न कोय ।। ३०।।

ज्ञान सुनकर नही चेतते याने भजन करने में नही लगते है वे बेहरो के समान है। म:फ: है कि वे अंधे है जो जन परमात्मा के जनों को देखकर शिर नहीं निवाते है, याने ग्यान धारण नही करते।

त्रिगुटी लग तो हद है, आगे बेहद जांण। दोनो संध सुखराम के, नेणा मध बखाण ।। ३१।।

त्रिगुटी तक तो हद है इसके आगे बेहद है। बेहद और हद की दोनो की संधी नेणो के मध्य है।

हद में फिरे सो मानवी, बेहद हरिजन जाय। दोनुं सिर सुखराम के, सो तो ब्रह्म कहाय ।। ३२।।

त्रिकुटी के नीचे के साधन करने वाले मनुष्य है। भजन करके बेहद तक जाने वाले हरिजन है। इन दोनो के ऊपर के: पद आ: पद में पहुंचने वाले ब्रह्म ही है।

हद बेहद नर कहत है, मरम न जांणे कोय। हम जांणी सुखराम के, रहया संध पर सोय ।। ३३।।

मनुष्य हद बेहद की बातें करते है परन्तु मरम को नही जानते। म:फ: है कि मैंने जाणा है व उस पद की प्राप्ति की है। यही संध पर सोना है।

पायो पायो कहत है, कियो कछु नही जाय।
तब लग सुण सुखराम के, किस विध मानुं आय ।। ३४।।

मैंने पाया हमने पाया ऐसा कहते है उसका वर्णन नही कर सकते। म:फ: है कि वहां तक मैं उसको कैसे मानूं।

मैं हरिजन में गरक हूं, जुग जन मेरे मांय। अब न्यारो सुखराम के, केणे कूं कुछ नांय ।। ३५ ।।

मैं हरिजन मैं ब्रह्म में गरक हूं सारा संसार व जन ब्रह्म में ही है। म:फ: है कि अलग कहने के लिये कुछ भी नही है।

आठ सिधि नव निधि प्रगटी, सांसो रहयो मांय। तिण नर सुखराम के, हर पायो है नांय ।। ३६ ।।

जिस मनुष्य को आठ सिद्धि नव निधि की प्राप्ति होने पर भी दुख का अनुभव होता है। तो म:फ: है कि उसे परमात्मा की प्राप्ति नही हुई है।

सांसो दुविध्या ऊठगी, भय भरम दिया खोय। वे तो सुण सुखराम के, जन हर अेकी होय ।। ३७ ।।

जिनका संशय रूपी दुख दुविध्या याने द्वेतपना राग द्वेष नही रहा, भय भरम से अलग हो गया है। म:फ: है कि ऐसे भक्ति करने वाले जन व परमात्मा एक ही है।

माहे लागा ख्याल सुं, सो निरगुण पद जाण।
बाहिर सुण सुखराम के, सुरगुण नांव बखाण ।। ३८ ।।

अन्दर में सतशब्द का अनुभव हो रहा है यह तो निरगुण पद है। बाहर वाणी से भजन हो रहा है, वह सुरगुण नांव है।

भ्यास्या का अेनाण ये, भरम न ऊठे कोय। पाया तो सुखराम के, मेहे बूठा घर जोय ।। ३९ ।।

जिनको सत शब्द का अनुभव हुआ उनमें किसी तरह का भरम पैदा नही होता है। जिनको उस पद की प्राप्ति हुई है मानो उसके यहां तो वर्षा हुई है।

भ्यास्या बिन बाणी नही, बिन पाया नही नूर।
निपज्या बिन सुखराम के, नही है राम हजूर ।। ४० ।।

अनुभव हुये बिना कहा नही जाता, प्राप्त हुये बिना ध्यान नही होता। म:फ: है कि प्राप्ति हुये बिना उस पद का अनुभव नही होता।

पहलो परचो ज्ञान है, दुजो अणभै जाण। तिजो सुण सुखराम के, हंस चेहटे आंण ।। ४१ ।।

पहली परीक्षा ज्ञान होना है, दूसरी परीक्षा अणभै वाणी की जानकारी होती है। म:फ: है कि तीसरी वह है हंस आकर उस पद की प्राप्ति का उनसे ज्ञान प्राप्त करे, यही चेटना है।

कागद केरा फूल पर, भंवर न बेसे आय। पोप फूल सुखराम के, मांडया धकेल्या जाय ।। ४२ ।।

कागद का फूल कितना ही खूबसूरत हो, भंवरा उस पर आकर नही बैठता और वह असली सुगन्ध वाले फूल से धकेलने पर भी नही जाता।

ज्ञान बास, जन चनण है, भयंग जीव कहाय। चेटयां सुं सुखराम के, अंग ताप सब जाय ।। ४३ ।।

ज्ञान सुगन्ध, ओधाधारी जन चन्दन है, जीव सर्प है। अब जो जीव इन सुगन्ध व चन्दन से चेटना यानि इसके ज्ञान व भक्ति को धारण करेगा उनकी जनम मरण की ज्वाला खत्म हो जायेगी।

भोजन बहु प्रकार का, न्यारा कहवत घाट।
जीमे सब सुखराम कह, एक ही मुख की बाट ।। ४४ ।।

साधन कई प्रकार के है सब बाणी व स्वांसा के आधार से ही होते है। इनको ही एक मुख से जीमना कहा है।

चौपाई :- तुम भी सांचा हम भी सांचा, ज्यां मन ठेहरयो सोई।
कह सुखराम अनेका अेही, अे जन एक में होई ।। ४५ ।।

अनेक प्रकार के साधन है जिनका मन जिसमें लगता है उनके लिये वही सच्चा है। म:फ: है कि वे अनेको में वो एक ही है। जितने अनेक है वो एक में ही है।

रावल सांग बहुत ले आया, ख्याल सांग जो कीना।
कह सुखराम जहां जो रीजो, तहां दान ले दीना ।। ४६ ।।

सांग बनाने वाला रावल अनेक सांग बनाता है। जिसे जैसा सांग पसन्द आता है उसी पर रिज कर दान देता है ऐसे ही कई तरह के साधन है जिन्हें जिस साधन से आनन्द आता है तो वही धारण करता है। यही दान देना है।

साखी :- जन की जैसी भावना, तैसा ही हर होय।
बिना साहिब सुखराम के, दूजो सुणयो न कोय ।। ४७।।

जैसी जन की भावना होती है परमात्मा उसे उसी रूप में दरसते है। म:फ: है कि बिना सायब के कोई नही है।

जीण बायक जहां ओलख्यो, तिण घाटे ईतबार।
ज्यूं जैसा सुखराम के, प्रगटे शिरजण हार ।। ४८ ।।

जिस जिस साधन से जैसा अनुभव किया है। उनको उसी में भरोसा है। म:फ: है कि उनके लिये वो ही स्वरूप है।

धन जोबन को छाकियो, मुरडायो नर जाय।
पिस्तासी सुखराम के, ज्यां दिन पकडयो आय ।। ४९ ।।

धन व योवन के अंहभाव की मगरूरी में रहता है। म:फ: है कि जिस दिन अन्त समय में यमदूतो के फन्दे में आवेगा तब पिस्तावेगा।

बास बिना चेहटे नही, भंवर पोप कूं आय। आ पारख सुखराम कह, करलो संता मांय ।।५०।।

बिना सुगन्ध भंवरा फूल पर नही बैठता है। म:फ: है कि ऐसे ही ओधाधारी संत की परीक्षा तुमको करनी है कि उनसे यह सतशब्द आता है या नहीं।

गुण प्रकटिया बिन बाहिरो, जुग लूंबे नही कोय।
या पारख सुखराम के, जन की सांची होय ।।५१।।

जगत में जिसके पास कोई गुण होता है तभी जगत उसके लूम्बती है। म:फ: है कि संतो की यही सच्ची परीक्षा है कि उनसे सतशब्द प्रगट हो जावे।

गुण गुण मांही फेर है, बास बास में जांण। जगत जगत सुखराम के, भंवर भंवर में ठांण ।।५२।।

ज्ञान ज्ञान में फरक है इसी तरह सुगन्ध सुगन्ध में फरक है। म:फ: है कि जगत जगत में व भंवर भंवर में फरक है।

बास भंवर गती एक व्हे, जहां जो चेंटे आय। यू दुनियां सुखराम कह, जन सू लूंबे आय ।।५३।।

सुगन्ध व भंवरे की गति एक होती है , उसी सुगन्ध पर भंवरा बैठता है। इसी तरह दुनिया जो जन ओधा लेकर आते हैं जिनसे ही सतशब्द की जागृति होती हैं। दुनिया उनको ही नमन करती है।

बारे बाबो ऊजलो, देखत है सब कोय। भीतर तो सुखराम कह, बोल्या सुं गम होय ।।५४।।

उपदेश करने वाले बाहर से बहुत अच्छा दिखते है। भीतर की बात तो उनके विचारों से मालूम पड़ती है।

राति किया ही क्या हुवे, दिन ही जूझंया जांण।
यूं शिवरण सुखराम कह, समज्या सरस बखाण ।।५५।।

बिना भेद रात और दिन भजन करने से कुछ नहीं होगा यानि सतशब्द नहीं आयेगा। म:फ: है कि शिवरण को समझकर विधि से करना अच्छा है।

रात रात तो दौडयो, दिन ऊगे रहे बेस। सो मूरख सुखराम के, सब नर नारी कहेस ।।५६।।

बिना भेद से रात दिन भजन करते भेद मिलने पर नही करते, यही बैठना है। म:फ: है कि उसको तो सभी स्त्री पुरूष मूरख कहते है।

सुलटो तो सबके फिरे, उलटो चढे सो सांच। सब सुं सुण सुखराम के, आ इधकी है बात ।।५७।।

सुलटा फिरे याने वाणी के आधार से सांस सांस में भजन तो सब ही करते है। लेकिन सतगुरु से भेद याने सत ग्यान का विचार कर सांस ऊसांस में भजन कर बंकनाल में सतशब्द के साथ पार ब्रह्म से पार होकर के: पद आ: पद की प्राप्ति करना ही सबसे अधिक सत बात है।

करणहार तो राम है, परालब्ध के हाथ। मो सिर तो सुखराम कह, जस कुजस की बात ।।५८।।

करने वाले रामजी है प्रालब्ध में जैसा योग होता है। वैसा ही होता है। म:फ: है कि मेरे को तो जस कुजस मिलता है।

जब लग कहे भ्यासो नही, जे शिवरण की ढील।
भ्यास्यो जहां सुखराम के, सब बातां की हील ।।५९।।

जहां तक कहते है मुझे शब्द का अनुभव नही होता तो समझो कि शिवरण ठीक नही हो रहा है याने कम हो रहा है। म:फ: है कि जहां अनुभव हो रहा है वहां किसी तरह की हील याने कमी नही है।

हर भ्यास्या तहां जांणिये, आठ पोहोर लिव ध्यान।
नही तर तो सुखराम कह, कहणे को मुख ज्ञान ।।६०।।

सतशब्द का रात दिन अखण्ड अनुभव होना ही लिव बंध भजन है। म:फ: है कि नही तो खाली मुंह से कहने का ज्ञान है।

ओऊं दही बिलोवियो, अंछया घी छंट जाय। न्यारो कर सुखराम के, त्रगुटी में जन खाय ।।६१।।

पांच तत्वों के साथ जो आत्मचेतन है वो ओऊं है। आत्मचेतन स्वांसा के आधार पर है। सांस ऊसांस में भजन करना ही ओऊं दही बिलोना है। सुरत के आधार पर सतशब्द का अनुभव होना घी छंटना है। नाभी से बंकनाल में उलटकर त्रिकुटी में शब्द का ध्यान होना ही न्यारा करके खाना है।

अंछया घी तब पी गया, तब जन हुवा राम। इण आगे सुखराम के, केवल को सतधाम ।।६२।।

ब्रह्मण्ड तक आत्मचेतन का पद है, ब्रह्मण्ड से ऊपर जाना ही अंछया घी का पीना है। पारब्रह्म से ऊपर निरंजण निराकार पद में के: पद आ: पद का अनुभव होना ही केवल का सतधाम है।

नर नारी सब फिरत है, शहर शहर के मांय।
गढ ऊपर सुखराम कह, बिरलो किणी संग जाय ।।६३।।

हद याने त्रिकुटी के नीचे जितने भी करणियो के साधन है उनको करना ही नर नारी का शहर शहर में फिरना है। गढ ऊपर तो बिरले ही याने थोडे ही महापुरूषो के ज्ञान द्वारा सतशब्द के साथ जाकर के: पद आ: पद की प्राप्ति करते है।

ललोपतो कर राखियो, सो शिष सुधरे नांय।
सेवक सुंई सुखराम के, कुछ मुवाफक सो कुवाय ।।६४।।

शिष्य की इच्छानुसार ज्ञान देना ललो पतो कर रखना है तो फिर कभी शिष्य नहीं सुधरेगा। म:फ: है कि जगत में जो गुरू व चेले बने हुए हैं। ऐसे गुरू अपने खास चेले से अपनी इच्छा की बात कहलाता है।

ज्यांने परगट पूजिये, जिण घर जिम्या हांण।
सुणज्यो सब सुखराम के, आ तुम करो पिछाण ।।६५।।

जिन संतो को जनता पूज रही है और उनका ज्ञान धारण करने से यह ने: अक्षर नहीं आता है तो यही हानि है यानि जन्म मरण नही मिटता। म:फ: है कि ऐसे संतो की तुम्हें परीक्षा करनी है।

खांचो ताणो करत है, थाप उथापे जग मांय। जब लग सुण सुखराम के, हर पायो है नांय ।।६६।।

उपरोक्त संत जिन्हें जनता पूज रही है, अलग अलग ज्ञान बताते है, कहीं ज्ञान को थापते हैं तो कहीं उथापते हैं। म:फ: है कि जब तक तो उन्हें परमात्मा की प्राप्ति नहीं हुई है।

पाहण ऊपर भांण रे, तपिया गले न कोय। सुणज्यो सब सुखराम के, घडो तुरत जल होय ।।६७।।

सूर्य का प्रकाश पत्थर पर कितना ही पडे वो नही पिघलता और पानी का घडा तुरन्त ही जल्दी ही गल जाता है। म:फ: है कि ऐसे ही पत्थर के समान हृदय वाले मनुष्य कभी ज्ञान धारण नही करते और घडे के समान हृदय वाले तुरन्त धारण कर लेते है।

कईयक जीव सुण धात सो, कईयक पाहण सम होय।
कईयक जीव सुखराम के, लाख मेण सा जोय ।।६८।।

सुणो कईयक जीव तो धातु की तरह होते है कई पत्थर के समान होते है। म:फ: है कि कईयक जीव लाख व मेण की तरह होते है।

कईयक जीव घी खांड सा, कईयक नाज सम होय।
कईयक जीव सुखराम के, घड़े सरूपी जोय ।।६९।।

कितने ही जीव घी खांड की तरह होते है, कईयक नाज की तरह होते है। कईयक पाणी के ओले की तरह होते है।

घरत खांड भी परगले, लाख मेण भी जोय। पत्थर तो सुखराम के, परथ गले नही कोय ।।७०।।

घी खांड लाख व मेण जैसे हृदय वाले मनुष्य तो ज्ञान धारण कर लेते है, परन्तु पत्थर के समान हृदय वाले मनुष्य कभी भी ज्ञान धारण नही करते है।

धात गले सुण आग सो, पण सोगी बिन नांय। पाले कूं सुखराम के, गलता बार न काय ।।७१।।

धातु के समान हृदय वाले मनुष्य संकट पडने पर ज्ञान धारण करते है वो ही सोगी है। पाले के समान हृदय वाले मनुष्य को ज्ञान धारण करते देर नही लगती है।

सत संगत पल की भली, करसी बहु गुण जोय।
जुग जुग में सुखराम के, सहस गुणो फल होय ।।७२।।

सतशब्द की भक्ति तो एक पल की भी बहुत गुण करती है। जुग जुग में उस का फल हजार गुणा होता है।

नेणा बिन सुजे नही, बिन लाग्या नही चीत। भ्यास्या बिन सुखराम के, अज्ञानी की रीत ।।७३।।

बिना नेत्रो के नही दिखता, बिना लगे याद नही रहती, जिस साधन से सतशब्द के ज्ञान की प्राप्ति नही होती। म: ने उसे अज्ञानी की रीत मानी है।

सतगुरु की शंका नही, भय डर परथ न होय।
से शिष तो सुखराम के, परथ न निपजे कोय ।।७४।।

सतगुरु के ज्ञान के बताये माफिक धारण नही करना ही शंका व भय डर नही मानना है। म:फ: है कि ऐसे शिष को कभी उस पद की प्राप्ति नही होती है।

हर गुरु एक ही जांणिये, सदगुरु फेर विशेष।
ज्यो निपजे सुखराम के, जुग जुग में संत देख ।।७५।।

परमात्मा और ओधाधारी गुरु दोनों एक समान है। अब इनमें भी सद्गुरु की पदवी पर आते हैं वो विशेष है। जब जब भी ऐसे ओधाधारी सद्गुरु जगत में आते है तब उनके अणभै ज्ञान से जुग जुग में जीव मोक्ष में जाते है।

गज माने आंकस सही, यूं गुरु को डर होय। से शिष कूं सुखराम के, काल न झांपे कोय ।।७६।।

जिस तरह हाथी अंकुश का डर मानता है ऐसे ही शिष्य सतगुरु के ज्ञान को निज मन से धारण करे तो उसका जन्मना मरना मिटता है।

जब लग झूंठा बैण है, तब लग सिद्धि न होय। सिध साधक सुखराम कह, क्या नर नारी लोय ।।७७।।

जहां तक झूंठ बोलते है तब तक सिद्धि नही होती म:फ: है कि चाहे सिद्ध हो चाहे साधक चाहे स्त्री हो या पुरूष हो।

सिर जावे तो जाणे दो, झूंठ न बोलो कोय। साहिब तो सुखराम के, सांच बैण में होय ।।७८।।

म:फ: है कि सिर जावे तो जाणे दो, कोई भी झूंठ मत बोलो। परमात्मा की प्राप्ति तो सत्य वचनो से होती है।

काया कस करनी करे, मुख बायक है झूंठ। तब लग सुण सुखराम कह, पच खाली गये उठ ।।७९।।

शरीर से करणी करते है। मुंह से झूंठ बोलते है। म:फ: है कि वहां तक तो सुणो पच कर खाली उठकर जाते है।

झूंठ पाप को पेड है, सांच पुण्य की चूल। नांव निज सुखराम कह, असल मोख का मूल ।।८०।।

झूंठ बोलना पाप का पेड खडा करना है, सत्य पुण्य की जड है। म:फ: है कि निज नांव याने सतशब्द से ही मोक्ष होती है।

समज्या बिन शिवरण नही, कण बिन कैसा भोग ।
चढिया बिन सुखराम के, क्या त्यागी तन जोग ।।८१।।

जिस प्रकार सुमरण से सत शब्द की जागृति होती है वो ही समझकर शिवरण करना है जैसे कण बिना भूख नही जाती है। जब तक सतशब्द के साथ गढ पर नही चढता तब तक तन से त्याग करने से व योग के साधन करने से उस पद की प्राप्ति नही होती है।

सरग नरक हरि बिन नही, सुणो शकल जन आंण।
सतगुरु बिन सुखराम के, आ नही पडे पिछाण ।।८२।।

म:फ: है कि सब ही जन आकर सुणो, परमात्मा स्वर्ग में नरक में व सर्वत्र व्यापक है। सतगुरू की शरण लिये बिना परमात्मा की प्राप्ति नही होती।

बावन अंच्छर बाहिरो, त्रेपन गहयो न जाय।
सुण ज्ञानी सुखराम कह, समझ सोच मन मांय ।।८३।।

स्वांसा के आधार के जितने भी साधन है। ज्ञान ध्यान तप जप योग की साधना व करणिये सब बावन अक्षरो में है। बावन अक्षरो का ज्ञान करने वाले त्रेपन के ज्ञान को नही जानते है।

चौपाई :- बावन परे त्रेपना अंछर, सो सांसा दम होई।
के सुखराम अठा से आगे, फेर हरफ है दोई ।।८४।।

म:फ: है कि सांस के साथ रटणा बावन, ऊसांस के साथ रटना त्रेपन अंछर में है, इसके आगे दो हरफ चौपन सतशब्द, पचपन में बारह कंवलो का छेदन होता है।

साखी :- संगत बिना तो भाव नहीं, भाव बिना नहीं प्रीत।
प्रीत बिना सुखराम के, नहीं भजन की चीत ।।८५।।

सतसंग बिना भाव नहीं होता, भाव बिना प्रेम नहीं होता। म:फ: है कि बिना प्रेम के भजन याद नहीं आता याने चिंतन नहीं होता।

सांसा संग सुखराम के, राम नांव लिव होय। तो त्रेपन की क्या चली, ले पचपन कूं जोय ।।८६।।

म:फ: है कि सांस ऊसांस में भजन करने से लिव बंध भजन होता है तो त्रेपन याने स्वांसा से अलग होकर के: पद की प्राप्ति होना पचपन कूं जोना है।

त्रेपन त्रेपन क्या करे, चोपन कहिये मोय। पचपन बिन सुखराम के, भेद न लादे कोय।।८७।।

म:फ: है कि सांस ऊसांस की विधि आये बाद ऊसांस में नहीं ध्यान रखना है ध्यान सत शब्द में लगाना है। फिर बारह कंवलो की जानकारी करके के:पद आ:पद में मिलना ही पचपन के बिना अणभै वाणी का ग्यान समझ में नहीं आता है।

ररे ममे बिन मन सुं, ते नर रहे समाय। वे हद में सुखराम के, बेहद कदे न जाय।।८८।।

सतगुरु विधि से रकार मकार का भजन किये बिना मन से विचारो के द्वारा ग्यान व साधन करने वाले हद में ही रहते है। बेहद में नहीं जा सकते है।

एक प्रीत तो ज्ञान की, एक कोड की जांण। राम मिले सुखराम के, तका पीड की ठांण ।।८९।।

एक तो ज्ञान से साधन करते है एक लगन से भक्ति करते है। म:फ: है कि जैसे पीडा को नहीं भूलते याने रात दिन भूलकर भी भजन को नहीं छोडे।

ररे ममे बिन मन सुं, त्रेपन रहे समाय। से सपने सुखराम के, पिछम घाट न जाय ।।९०।।

म:फ: है कि संखनाल का साधन करने वाले, स्वांसा के आधार से मन विचारो से ज्ञान व साधन करने वाले, सतगुरु विधि से रकार मकार का भजन नहीं करने वाले, पीछे याने बंकनाल में नहीं चढ सकते याने सपने में भी नहीं जाते।

राम नाम सुखराम के, रटे प्रीत सुं आय।
तो मोख मुगत की क्या चली, परम मोख ज्हां जाय ।।९१।।

म:फ: है कि राम नाम का सतगुरु विधि से भजन करे तो बैकुण्ठ व ब्रह्म की प्राप्ति तो क्या चली परममोक्ष के:पद आ:पद की प्राप्ति हो जाती है।

पढिया बहोत सुखराम के, जब लग थिर नहीं कोय।
भरम गयो दुविध्या मिटी, अब भजो नचीता होय।।९२।।

म:फ: है कि बहुत पढने से किसी पद की प्राप्ति नहीं होती है। जब भरम चला जाता है तब दुविध्या याने राग द्वेष मिटने पर ही निश्चिंत होकर भजन कर सकता है।

अरथ किया बाणी कथी, जब लग जाणयो दोय।
भरम भागा सुखराम के, ज्यां त्यां अेकी होय ।। ९३ ।।

शास्त्रो व पुराणो का अरथ करने व बाणी से उपदेश तब तक द्वेत भाव नहीं मिटता है। भरम चला जावे तब जहां तहां एक ही ब्रह्म का अनुभव होता है।

अरथ थक्या बाणी थकी, थकी शकल रस रीत।
जब हंसो सुखराम के, गयो त्रकुटी जीत ।। ९४ ।।

सभी शास्त्रों के अर्थ भी अब नहीं करते और किसी प्रकार का मुंह से वर्णन नहीं करते, यही अर्थ थक्या वाणी थकी है और पांचो विषय रस भी थक गये यानि भोग नहीं मांगते। तब हंसा त्रिकुटी से आगे के:पद की ओर बढ़ता है यही त्रकुटी जीतना है।

चौपाई : ब्रह्म ज्ञान में हरक न सांसो, में ते कदे न आवे।
कह सुखराम नेक मन फिरिया, ब्रह्म ज्ञान नहीं कुवावे ।। ९५ ।।

ब्रह्म ज्ञान में हर्ष शोक थारी मारी कभी नहीं होती है। म:फ: है कि जरा सा भी मन फिर जाता है तो ब्रह्म ज्ञान नहीं कहा जाता।

ढेड होयके मिले है हर में, सो लगे ब्रह्म कूं प्यारा।
कहे सुखराम समझ दिल भीतर, कीजे अरथ विचारा ।। ९६ ।।

जो भी भजन कर परमात्मा से मिल जाते हैं वो परमात्मा के प्यारे बंदे हो जाते हैं। म:फ: है कि दिल के अंदर समझो, ज्ञान क्या कह रहा है।

तीन लोक में देख विचारी, साहेब बिना न कोई।
कह सुखराम कजी बिन जग में, निंदा करे न कोई।। ९७ ।।

तीन लोक में देखो व विचार करो ब्रह्म के बिना कोई नहीं है। सर्वत्र ब्रह्म व्यापक है। कजी याने बिना गलती संसार में कोई निंदा नहीं करता है।

कजी ब्रह्म की ब्रह्म बतावे, प्रगट जग के मांही।
के सुखराम जगत की जन कहे, जगत संत की कवाही।। ९७ ।।

जगत में कजी याने गलती ब्रह्म की ब्रह्म ही बताते हैं यह संसार में प्रगट है। म:फ: है कि संसार की गलती संत बताते हैं और संतों की गलती जगत बताता हैं।

जामें कजी नेक भर नांही, ताकूं निंदे न कोई।
के सुखराम घणी तो निंदा, घणी कसर में होई ।। ९९ ।।

जिनमें जरा सी भी गलती नहीं है। उनकी कोई निन्दा नहीं करता है। म:फ: है कि ज्यादा निन्दा तो ज्यादा गलतिये होने से होती है।

साखी :- प्रीत लगी पिव पाविया, जिण तिण घाटे जाय।
जहां जहां नर सुखराम के, मगन हुवा मन मांय ।। १०० ।।

प्रेम होने पर ही परमात्मा की प्राप्ति होती है। म:फ: है कि जिस पद की प्राप्ति होती है उस पद का अनुभव कर खुशी होते है यही खुशी हुवा मन मांय है।

पायां बिना गरजे नहीं, मगन हुवो नहीं जाय।
जो व्हे तो सुखराम के, थोड़ा दिन रहे मांय ।। १०१ ।।

कोई भी पद की प्राप्ति के बिना कहा नहीं जाता व खुशी भी नहीं होती। बिना प्राप्ति के खुशी होती भी है तो वो थोड़े दिन ही रहती है।

जब लग लिव लागी नहीं, तब लग कहणी झूंठ।
सुणजो सब सुखराम के, या पारख की मूंठ ।। १०२ ।।

जब तक अखण्ड लिव बंध भजन नहीं होता तब तक मुंह की सब बातें झूंठी है। म:फ: है कि यह भक्ति करने वाले की पारख है।

सोजी बिन संगत नहीं, बिन समज्या नहीं ज्ञान।
सतगुरु बिन सुखराम के, नहीं निरंजण ध्यान।। १०३ ।।

बिना जानकारी संगत नहीं होती है। बिना समझ के ज्ञान नहीं आता है। सतगुरु के ग्यान की शरण लिये बिना निरंजण निराकार का ध्यान नहीं होता है।

प्रेम प्रीत नेहचो भयो, खराखरी को आंण।
जिण जन के सुखराम कह, कसर कोर मत जांण ।। १०४ ।।

जिनके प्रेम प्रीति से निश्चितता आ जावे कि खराखरी यानि सही ज्ञान तो यही है। तो म:फ: है कि फिर उस भक्ति करने वाले जन के किसी प्रकार की कसर नहीं है।

प्रीत लगी अकबक भयो, ज्यां सुण कसर न काय।
जोग जिग सुखराम के, जप तप सब ही मांय ।। १०५ ।।

जिनको प्रीत लगी है उनको भक्ति के सिवाय कुछ सुधी नही रहती, उसके किसी तरह की कसर नही रहती है। जोग की साधना व जिग तप जप सब ही उसी में आ जाते है।

जप तप करणी जोग सो, भजन समो नही कोय।
प्रेम सम सुखराम के, नाम भजन नही होय ।। १०६ ।।

जप तप करणियें व जिग भजन करने के बराबर नही हो सकते। म:फ: है कि बिना प्रेम के अगर भक्ति करता है तो वो भक्ति नाम मात्र भी नहीं है।

प्रेम जहां हर आप है, नेम जहां गुण होय।
अकबक जहां सुखराम के, ब्रह्म कहावे जोय ।। १०७ ।।

वहां परमात्मा आप ही है जहां प्रेम है और जहां नेम है वहां गुण है। जहां हृदय में परमात्मा के प्रति अकबक प्रेम होता है वह तो ब्रह्म रूप ही है।

और अंग मन घेरिया, नेक बहुत रहे मांय।
बिरह प्रेम सुखराम के, हरि मेहर बिन नांय ।। १०८ ।।

ओर अंग मन से धारण करने से थोडे बहुत रहते है। म:फ: है कि विरह प्रेम परमात्मा की कृपा के बिना नही आते।

प्रीत लगी व्याकुल भयो, बिरह धाय रही रोय। से हंसा सुखराम के, तिरता वार न कोय ।। १०९ ।।

प्रेम से व्याकुल होकर विरह के साथ भजन करता है उस हंस को परमात्मा की प्राप्ति होने में देर नही लगती।

शब्द, पीड भारी घणी, मोपे सही न जाय। तन फाटे सुखराम के, मन धूजे उर मांय ।।११०।।

शब्द आ गया अब आत्मा को यह पीडा लग रही है कि वो के: पद कब मिले, अब उसे सहन नही हो रहा है। तन में इतनी विरह हो रही है, मन भी धूज रहा है कि अब मेरा राज खत्म हो रहा है।

दोय कहे जहां भरम है, एक कहे जहां भूल। दोनो सत सुखराम के, एक कहे बेसूल ।।१११।।

जहां कहते है कि माया व ब्रह्म दो है वहां कहने वाले भरम में है। जहां एक कहते हैं वहां भूल है क्यों कि माया व ब्रह्म दो है। म:फ: है कि दोनो सत है जो एक कहते है वे बेसमझ है। आत्मा के लिये शरीर जरूरी व शरीर के लिये आत्मा जरूरी है।

मन मानी जहां थिर भयो, तहां ही पदवी जांण।
सुर नर बिच सुखराम कह, मन सुख एक बखाण ।।११२।।

साधन करके जहां जिस पद को मन मान लिया उसके लिये वो ही पद माननीय है। म:फ: है कि मनुष्य व देवता के मन का सुख एकसा है।

सुरपुर नरपुर नागपुर, तन दुख मिटे न कोय।
मन सुख तो सुखराम कह, जहां समझो तांही होय ।।११३।।

देवलोक मनुष्य लोक व पाताल लोक में मनुष्य शरीर का दुख नही मिटता है। मन सुख तो जहां समझो वहां ही होता है।

भावो मानो ज्ञान सुं, भावे पदवी पाय। मन सुख तो सुखराम कह, दोनो सरस कहाय ।।११४।।

ज्ञान से व पदवी प्राप्त करके मन को जो सुख देता है वह दोनो सुख एक से ही है।

तन दुख जां दिन जावसी, तां दिन धरे न देह।
निरंजण लग सुखराम कह, भुगते सब नर अेह ।।११५।।

शरीर का दुख तो उस दिन मिटेगा जब शरीर धारण नही करेगा। होणकाल ब्रह्म की प्राप्ति होने पर भी वापस आकर शरीर धारण करना पड़ता है।

चौपाई :- ज्ञानी सुणो समझ ना होई, बहक ज्ञान सुं ही जावे।
के सुखराम रोग ही खाया, फेर खाय सुं ही आवे ।।११६।।

म.फ. है कि ज्ञानियो सुणो, समझ नही होने से ज्ञान से ही बहक जाते है म.फ. है कि जैसे कोई रोग हो जाता है और उसमें खाना नहीं खाना चाहिये लेकिन कोई खाता है तो रोग और बड जाता है। जैसे सन्नीपात के रोगी।

साखी :- माने शंक डर उपजे, तब लग जांणे दोय।
के निरभय सुखराम के, अन्तर में भय होय ।।११७।।

मन में शंका व डर रहता है तब तक दो जानता है, कहने को कहते है हम निरभय है परन्तु अन्तर में भय रहता है।

सुख दुख दोनो उपजे, शुभ अशुभ भी आय।
तब लग सुण सुखराम के, मन की संक न जाय ।।११८।।

सुख दुख का अनुभव करता है शुभ अशुभ का विचार करता है। म:फ: है कि वहां तक तो सुणो मन की शंका नही जाती है।

मान बडाई चाह है, तब लग संक न जाय। सुर नर सब सुखराम के, परदो करके खाय ।।११९।।

मान व बढाई की चाहना है तब तक शंका नही जाती है। देवता व मनुष्य अन्दर में मान बडाई चाहते है। यही परदा करके खाना है।

ब्रह्म ज्ञान नही उपजे, तब लग संक न जाय। भावे तो सुखराम के, बुद्ध बली नर कवाय ।।१२०।।

ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति नही होती तब तक मन की शंका नही जाती है। म:फ: है कि चाहे कैसा ही बुद्धिशाली मनुष्य क्यों न हो।

शंक भागी सांसो मिटयो, चाह गई सब ऊठ। तां नर कूं सुखराम के, तीन लोक में छूट ।।१२१।।

शंका मिट जाती है सोच चला जाता है। व कोई चाहना नही रहती है। तब उस नर को तीन लोक के कर्म व ऋणो से मुक्ति होना, यही छूट हैं।

सुख चावे दुख पर हरे, तब लग भरम गिनान।
कहे मुख सुं सुखराम के, उर भ्यास्यो नही आन ।।१२२।।

सब सुख चाहता है तथा सब दुख दूर हो जावे, तब तक तो तेरे भरम ज्ञान ही है। म:फ: है कि मुंह से खाली कहता ही है कि हमारे ब्रह्म ज्ञान ही है लेकिन हृदय में शब्द ब्रह्म (ने: अक्षर) की जागृति नही हुई है।

ब्रह्म संग दुबिध्या गई, चाह संग नही चिन्त।
झूंठ संग सुखराम के, गई विषय रस मिन्त ।।१२३।।

अब सतशब्द ने:अक्षर आने से जितनी भी दुविध्या थी वो चली गयी और चाहना भी नही रहने से चिन्ता मिट गयी। ब्रह्म ज्ञान आने से पहले यह झूंठा शरीर के साथ आत्मा विषय रस में लिप्त थी वो अब इनसे अलग हो गयी।

ज्ञान संग गुरु पाविया, लिव संग निरंजण राम।
सांचा संग सुखराम के, सरया सकल विध काम ।।१२४।।

ज्ञान के संग से सतग्यान की प्राप्ति हुई व लिव बंध भजन से निरंजण राम की प्राप्ति हुई। सतशब्द के संग के: पद आ: पद की प्राप्ति हो गई। यही सरिया सकल विध काम है।

ज्ञान जहां तो द्विज है, फेर जाप लग जांण। अेक नही सुखराम के, पचे तहां लग आंण ।।१२५।।

ज्ञान करता है जाप करता है तब तक द्वेत भाव है। म:फ: है कि एक ने:अक्षर नही है तो फिर पचते रहो।

सुख दुख अे ही भोग वे, सुरग नरक अे ही जाय।
ब्रह्म एक सुखराम के, यूं सुण दोय कहाय ।।१२६।।

सुख आ जावे दुख चला जावे तब तक तो तेरी पहुंच स्वर्ग व नरक तक ही है अर्थात स्वर्ग में चली गई तो सुख, नरक में चली गयी तो दुख। म:फ: हैं कि ब्रह्म यानि आत्मा तो एक ही है जो जैसा साधन करके माया का फल भोगते है। ऐसे ही ये दो कहलाते है।

<u>ब्रह्म ज्ञानी वाच</u> : <u>चौपाई</u> :- सुरग नरक कहे नर कहां है, सोज बतावो मोई।
हे सुखराम भूल है सारी, ब्रह्म बिना नही कोई ।।१२७।।

मनुष्य कहते है सरग नरक कहां है सोध कर बतावो, ये सब भूल है, ब्रह्म के सिवाय कुछ नही है।

कहोजी नरक देख कुण आया, सुरग ठाम किण आंणी।

हे सुखराम मोख कुण दीठी, सो मुझ कहो बखाणी ।। १२८ ।।

यह कहो कि नरक कौन देखकर आया है। स्वर्ग की जानकारी किसने की है। ब्रह्म ज्ञानी कहता है कि मोख किसने देखी है। उसका बखाण कर मुझको कहो।

मा. वाच :- यहां सुण नरक दुख सो कहिये, फेर गरभ गत जाणो।
कहे सुखराम सुरग यहां सुख है, पदवी मोख बखाणो ।। १२९ ।।

सुणो जो दुख है वो ही नरक है और बार-बार गर्भ में आना ही नरक है। और जहां सुख है वो स्वर्ग है। जगत पदवी ही मोख है।

तीन जुग में परघट जाता, भूप सुरग नित भाया।
के सुखराम स्वर्ग गत सेदेह, नासकेत ले आया ।। १३० ।।

सतयुग द्वापर त्रेता इन तीन जुगो में राजा देवताओ की सहायता करने के लिय स्वर्ग में जाते थे। म:फ: है कि स्वर्ग की गति को उद्धालकजी के लडके नचिकेता ने जाकर देखकर बताया है।

परम मोख गम खण्ड पिण्ड मांही, साध संत गम जांणे।
के सुखराम तीर्थंकर पुगा, फेर गरभ नही आंणे ।। १३१ ।।

संत साधना करके सतशब्द के साथ खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड को पार करके के:पद आ: पद की प्राप्ति करना ही परम मोक्ष को जानना है। म:फ: है कि तीर्थंकरो ने भी के:पद आ:पद की प्राप्ति की वो वापस गरभ में नही आये।

सुरग नरग परघट जग मांही, बिना ज्ञान नही जांणे।
कह सुखराम हांक दे अणभै, चौडे बरण बखाणे ।। १३२ ।।

सुरग नरक संसार में प्रगट है बिना ज्ञान के नही जानते है। म:फ: है कि मैं अनुभव करके अणभै वाणी के वचन प्रगट कर कह रहा हूं।

बुज्या गरज सरे नही भाया, सुणिया सांभल्या कांई।
के सुखराम कण कणी पकडया, सबे बस व्हे आई ।। १३३ ।।

सुनने सांभलने व पूछने से गरज नही सरती। म:फ: है कि कण यानि राम का नाम, कणी यानि ने: अक्षर का संग होने से इन्द्रियां व मन सब बस में हो जाते हैं।

कोट जतन लख जापता, पांच बस नही होय।
लिव लागा सुखराम के, सहजा सब बस होय ।। १३४ ।।

करोड जतन लाख जापता करने पर भी पांच विषय बस में नही होते है। लिव बंध भजन होने पर सहज में ही सब बस में हो जाते है।

आठ पोहोर चोसठ घडी, लिव जे जोल न खाय।
तो सहजा सुखराम के, पांच तीन बंध जाय ।। १३५ ।।

आठ पोहोर चौसठ घडी लिव बंध भजन होता है तो सहज में ही पांच विषय व तीन ताप बस में हो जाते है।

लिव बिन पकडे ज्ञान सूं, पांच तीन को कोय।
वा नर के सुखराम के, पलक पोहोर बस होय ।। १३६ ।।

लिव बंध भजन के बिना ज्ञान से पांच विषय व तीन ताप को पकडता है तो उस मनुष्य के

वश में तब तक ही रहते है जब तक की वो ज्ञान करता है।

लिव सुं आपे बंध गया, पांच तीन मिल एक।
वे जेर हुवा सुखराम के, आठ पोहोर मध देख ।। १३७।।

लिव बंध भजन होने पर ही पांच विषय व तीन ताप व मन किधर भी नही जाता। यही आठ पोहोर बस में रहना है।

।। इति श्री ब्रह्म ज्ञानी का अंग सम्पूर्ण।।

卐 अवधु रो संवाद 卐

चौपाई :- अवधु हम तोडी है तिरगुण माया, जब हम जग में जोगी कहाया।
जग कूं छाड अभै पद लिया, पांचु घेर ज्ञान हम दिया ।। १।।

म:फ: है कि हे अवधु मैंने त्रिगुण माया यानि तीनो गुणों से अलग होकर के:प:आ:प: की प्राति की, यही त्रिगुण माया को तोडना है। जब मैं जगत में जोगी कहलाया हूं। जगत को छोडकर अभय पद याने जहां किसी प्रकार का जन्म मरण का भय नही वो के:पद:आ:पद की प्राप्ति की है। पांच तत्वों के शरीर से पांचो ज्ञानेन्द्री को ज्ञान से जीत लिया, फिर ज्ञान हमने दिया है।

ज्ञान विचार जग सब देखिया, कुल बोहार निरख ले पेख्या।
तब हम छोड़ी कुल मरजादा, लिया जोग तज्या सब सुवादा ।। २।।

ज्ञान के विचार से सब अनुभव किया, माया ब्रह्म का ज्ञान वो कुल का व्यौहार है। इसको निरखा परखा जब मैंने माया ब्रह्म के ज्ञान को छोड के: पद की प्राप्ति का ज्ञान धारण किया यही जोग लेना है। इन्द्रियां के विषय भोगो से अलग होना ही स्वाद छोडना है।

कुल बोहार तज्या सब सारा, कामण कनक नही बोहारा।
मात पिता भ्राता अरू भाई, अे हम छोडया जग के मांही ।। ३।।

माया ब्रह्म के पद से अलग होना काम क्रोध मोह ममता चित मन बुद्ध अहंकार सबसे अलग होना ही तज्या सब सारा है। इन सबसे अलग होना ही मात पिता भाई कामणा कनक छोडना है।

जग कूं छोड निरन्तर होई, ऐसा ज्ञान विचारे कोई।
कह जोगी हम त्यागी माया, तब मैं पूरा जोगी कहाया ।। ४।।

इन सबसे अलग होना ही जगत को छोडना है। इस तरह कोई ज्ञान से विचार करे वो ही माया त्यागना है। जब पूरा जोगी कहलाने लगा।

माया त्याग रहूं बन जाई, तो त्यागी मैं जग के मांही।
बन में रह गांव नहीं जावुं, ऐसा निज मैं त्यागी कहावुं ।। ५।।

हे अवधु हम ने माया के पद को छोडकर के:पद की प्राप्ति की है यही माया छोड बन में रहना है। के: पद को बन माना है। जब मैं जगत में त्यागी कहला सकता हूं। के:पद में रहना ही बन में रहना है। खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड में नही आना ही गांव में नही जाना है। जब निज त्यागी कहलाता हूं।

बिरकत सांग बणाऊं सोही, माया हाथ गहूं नही कोई।
बन में रहूं फूल फल खावूं, माया निकट रती नही लावूं ।। ६।।

माया ब्रह्म के पद से अलग होना ही बिरकत सांग बनाना है। माया के फलो की इच्छा नही रखना ही माया हाथ गहूं नही है। के:पद में रहना व उसके आनन्द का अनुभव करना, फल फूल खाना है। माया के पद में रति भर भी पास नही रहता हूं।

मुख से माया नाम न बोलूं, सदा निरन्तर करणी तोलूं।
कंद मूल मैं खिण खिण खावूं, माया मन कबहूं नही लावूं ।।७।।

मैं तीन लोको की सुख की इच्छा नहीं रखता हूं और हमेशा मैं क्या कर रहा हूं उसका तोल करता हूँ। कंदमूल खाना यानि हमेशा ने:अक्षर का संग रखता हूं। और वापस शरीर रूपी माया में आने का मन में कभी नहीं लाता हूं।

दुख सुख सहूं सबे सिर सारा, माया नाम नही कंरू विचारा।
कपडा पास न राखूं कोई, माया त्याग रहूं यूं सोई ।।८।।

हे अवधु इस कारजिक काया से दुख या सुख भोगते हुये भी माया का विचार नही करता हूं। पंच शरीर रूपी कपडे आत्मा को रहने के लिये है जिसमे चार कपडे स्थूल जाचनिक, कारणिक ब्रह्म काया के साथ इच्छा शक्ति माया को छोडकर पांचवी दिव्य काया में आत्मा शब्द में मिल कर त्यागी हो जाती है।

माया नाम धरावे सोई, रती टांक नही राखुं कोई।
गीरवर वास किया मैं जाई, गुफा निरन्तर बैठा मांही ।।९।।

जितने भी शरीर रूपी माया के नांव है उनको मैं धारण नही करता पार ब्रह्म से ऊपर चढकर के:पद में रहना ही गिरवर वास करना व गुफा में बैठना है।

आडा बजड कपाट जडाया, शील अपर बल ले ठहराया।
इस विध बास किया मैं जाई, माया तब कहो कहा रहाई ।।१०।।

हे अवधु केवल भक्ति से सारी इन्द्रिया शीतल हो जाना ही पांचो विषय से धाप जाना ही आडा बजड कपाट जडना है। तब मेरा वास के:पद आ: पद में हुवा, फिर माया का संग नही रहा।

लागे ध्यान समाधि मोही, बाहिर जग की गम न होई।
त्यागी माया बन मध बासा, मेरे और नही कुछ आशा ।।११।।

मुझे इस तरह ध्यान व सता समाधि लगी रहती है। जगत का मुझे कोई भान नही रहता। इस तरह माया के पद को छोडकर के:पद में रहना ही बन मध बासा है। अब मुझे किसी तरह की आशा नही है।

ऐसा अवधु जोग कमावुं, माया छोड सुन्न में जावूं ।
सुन्न में बास कंरू मैं जाई, अनहद नाद बजावुं मांही ।।१२।।

इस तरह मेरा राज योग का साधन है। माया के पद को छोडकर निरंजण निराकार पद याने सुन्न में रहना है। निरंजण निराकार पद में सतशब्द की ध्वनि हो रही है, वो ही अनहद नाद बजता है।

अवधु हम हम जोगी नही जंवरे सारू, निरभै बास किया हम बारू।
जब लग माया जो संग राखे, तब लग जंवरो दावा भाखे ।
माया त्याग निरन्तर होई, जंवरे जोर न लागे कोई।। १३।।

हे अवधु हम ऐसे जोगी है जो काल के वश में नही है। उस के: पद में रहना ही निरभै बास

करना है। जब तक माया के पद में रहता है तब तक काल के बश में रहता है। माया के पद से अलग रहना ही माया त्याग निरन्तर होना है। जब काल का वश नहीं चलता।

अवधु तीन लोक माया विस्तारा, वहां लग जंवरे जाल पसारा।
जम सुं जीत सके नहीं कोई, बिन माया त्यागा बिन सोई ।। १४।।

हे अवधु तीन लोक तक माया का पसारा है, वहां तक सब काल के वश में हैं। माया के पद से अलग हुये बिना चौरासी का रोग नहीं कटता। यही जम से जीतना है।

अवधु माया त्यागे तब डर भागे, नेहचल हुवा सूरत सुन्न लागे।
माया संग ने:चल को नाही, चलते पवन नीर थीर नांही ।। १५।।

हे अवधु माया के पद से अलग होने पर ही जमराज का डर नहीं रहता। यही ने:चल होना है। सूरत सुन्न लागे यानि सूरत निरत निरंजन निराकार पद में लगी रहती है। माया के पद में कोई स्थिर नहीं रहता जैसे हवा चलने पर पानी स्थिर नहीं रहता।

माया घण दिष्ट कहाई, इण संग प्राण बचे नहीं भाई।
माया अंग पत्थर को होई, ओ शिर समंद तिरे नहीं कोई ।। १६।।

माया की अनन्त दृष्टि है इससे कोई बच नहीं सकता। माया का पद पत्थर की तरह भारी है, वे समुन्द्र से पार नहीं हो सकता है।

अवधु माया पत्थर यहां छिटकावे, काठ नाव भै पार लगावे।
माया मृग जल नीर कहाई धावत धावत रहया हराई ।। १७।।

अवधु माया के पद से अलग होना ही माया रूपी पत्थर को छोडना है। लकडी की नांव में बैठने पर ही समुन्द्र से पार हो सकते हैं। माया का पद मृग जल की तरह है। दौड़ते दौड़ते हार जाता है तो भी उसको जल नहीं मिलता है।

अवधु धावत धावत बोह दिन धाया, पच पच मुवा हाथ नहीं आया।
मृग जल को मृग थाह न पावे, माया माया कह यूं जावे ।। १८।।

हे अवधु दौडते दौडते बहुत दिन दौडे, बहुत पच पच मरो, कुछ हाथ नहीं आता है। मृग को मृगजल का थाह नहीं आता। माया के पद में कितना ही ऊंचा पद या सुख मिल जावे परन्तु आंख बंद होने पर किसी के काम नहीं आते।

अवधु गारे कीच धुपे नहीं कोई, माया संग को निरमल होई।
ऊलटा मेल जमे फिर मांई, गारे कीच धुपे कुछ नांही ।। १९।।

हे अवधु गारे से कीचड़ नहीं धुपता, माया के पद में कर्मो से अलग नहीं हो सकता। गारे से कीचड नही धुपता उलटा मेल जमता है।

अवधु निरमल जल से धोवे किचा, धुपता बार न लागे बिचा ।
धोवत धोवत निरमल होई, माया त्याग रहो यूं कोई ।। २०।।

हे अवधु निरमल जल से कीचड को धोने पर धुपते देर नहीं लगती। निर्मल जल से धोते धोते निर्मल हो जाता है। इस तरह माया के पद से अलग होने पर कर्म रूपी कीचड़ धुपता है।

अवधु माया के संग यो दुख पावे, उलटा काट लोह कूं खावे।
छीजत छीजत बोह छिजाया, माया संग नही निरमल कहाया ।। २१।।

हे अवधु माया के पद में करमों के भोग भोगने पडते हैं। जैसे लोहे के काट लग जाने से वो काट लोहे को खा जाता है। लोहा छिजते छिजते बहुत छीज जाता है। ऐसे ही माया के पद में कर्मो व आवागमन से रहित नहीं होता।

अवधु ले लोहा माटी मिल जावे, जे ओ काट घणा दिन खावे।
नीवी घुले बधे कुछ नांही, यूं माया संग प्राणी कुवाई ।। २२।।

हे अवधु जैसे लोहा काट लगने से मिट्टी में मिल जाता है। ऐसे ही माया के पद में जन्म मरण का दुख कभी नहीं मिटता। नीवी यानि धन रकम जो पास में होती है वो कम हो जाती है तो दुख होता है। ऐसे ही माया के पद में प्राणी को सुख नहीं है।

अवधु निरमल जल सो निरमल कहाई, माया कीच मिले तब मांई।
पंछी जीव पीवे नहीं कोई, उलटी जल की निन्दा होई ।। २३।।

हे अवधु जैसे निर्मल जल से निर्मल होता है वैसे ही सत की भक्ति से ही सत की प्राप्ति होती है। माया रूपी कीचड़ निरमल जल में मिलने से निरमल जल को खराब कर देता है। कीचड़ मिले जल को पक्षी नही पीते, उलटी जल की निन्दा होती है कि जल गन्दा है।

अवधु माया संग कबहु नहीं कीजे, सदा निरन्तर ऐसे रीजे।
माया संग चले नहीं कोई, रूई आग लपेटो होई ।। २४।।

हे अवधु माया का साथ कभी नहीं करना चाहिये, माया से हर समय अलग रहना चाहिये। माया किसी के साथ नहीं जाती है। जैसे रूई को अग्नि लगा देवे तो रूई का नाश हो जाता है। ऐसे ही आत्मा तो ब्रह्म ही थी, परन्तु माया का साथ करने से ब्रह्मपना मिटकर जीव भाव हो गयी।

अवधु माया सब ले जग भरमावे, उपजे खपे पार नहीं आवे।
माया के संग तिर है कोई, जग में लोय रहे नहीं सोई ।। २५।।

हे अवधु माया ने सब जगत को भरमा रखा है, उपजते हैं खपते हैं। इसका पार नहीं पाते तो भी माया के साथ ही रहते हैं। यदि माया के साथ रहने से उद्धार हो जाता तो जगत में एक भी नहीं रहता।

अवधु जल में पेश न कोरा कहावे, या विध मन मानण नहीं आवे।
माया संग्रह, बंध्यो सोई, मुख से कह मैं न्यारा होई ।। २६।।

हे अवधु कोई जल में बैठकर यह कह देवे कि मेरे जल नहीं लगा है तो यह बात मन के मानने में नहीं आती। माया का संग्रह यानि माया के साथ बंधा हुआ है और मुंह से कहता है कि मैं अलग हूं।

अवधु माया अंग अग्नि को कहावे, घी शरदे थीणो क्यों रहावे।
माया संग नेःचल नहीं कोई, मुख सुं बात बणावो सोई ।। २७।।

हे अवधु माया का अंग अग्नि का है, अग्नि के साथ घी जमा हुआ कैसे रह सकता है। माया के साथ कोई नेःचल नही है यानि आवागवण नही मिटता। मुंह से चाहे जितनी बात बणावो।

अवधु काजल का घर किन्हा, मांही डेरा निश दिन दीन्हा।
कब लग जतन करे नर कोई, दिन दिन वस्त्र काला होई ।। २८।।

हे अवधु काजल के घर में रात दिन रह रहा है। तो कितने ही यत्न से रहे तो भी उसके कपड़े

काले ही होते रहते हैं।

अवधु माया संग मन माने नांही, ज्यूं सूरज संग बादल कहाई।
दिन दिन तेज उजाला मिटावे, यूं माया संग प्राण कहावे ।। २९ ।।

हे अवधु माया के साथ रहने में मन नहीं मानता। जैसे सूर्य के बादल आडे आ जाते हैं तो सूर्य का तेज छिप जाता है। ऐसे ही माया के साथ (आत्मा) ब्रह्म अपने ब्रह्म स्वरूप को भूल रहा है।

अवधु वाच :- हो स्वामी जी काला बादल कहावे, तब ही मेहा बोह बरसावे।
धोला बादल डाफर होई, तिण में छांट पडे नहीं कोई ।। ३० ।।

अवधु कहता है कि हे स्वामीजी काले बादल उमड कर आते है तो बहुत बरसात बरसाते हैं। सफेद बादल से एक बूंद भी पानी नही पडता है।

सुखराम वाच :- हे अवधु तेली तिल कूं पिले भाई, पहरण कपडा दूर रहाई।
राखत राखत मेला होई, दिन दिन चिंगट लागे सोई ।। ३१ ।।

म:फ: है कि हे अवधु तेली तिल कूं पिलता है तब पहनने के कपड़े अलग रखता है। अलग रखते रखते भी कपड़े मैले हो जाते है, कपड़ों के भी दिन दिन चिंगट लगता रहता है।

अवधुवाच :- हो स्वामीजी चिंगट को कुछ बिगडे ना ही, कपडा वे का वे ही कुवाई।
फाट फूट राख मिल जावे, तब कहो चिंगट कहां रहावे ।। ३२ ।।

हो स्वामी जी चिंगट से कुछ नहीं बिगडता है कपडे तो वो के वो ही रहते हैं। कपडे फाट फूट कर राख हो जाते हैं, तब चिंगट कहां रहती है। ऐसे ही आत्मा शरीर को छोडने पर भी ब्रह्म ही रहेगी।

सुखराम वाच :- हे अवधु माया संग कबहुं नही लहिये, ज्ञान सुणे सुण ने:चल रहिये।
माया अंग किसबण को होई, इण संग दाद न पावे कोई ।। ३३ ।।

म:फ: है कि हे अवधु माया का साथ कभी नही करना चाहिये। ज्ञान सुन सुन कर नेचल रहना चाहिये। माया का अंग किसबण का होता है इसके साथ रहने से कोई भी सुखी नहीं हो सकता है।

अवधु वाच :- हो स्वामी जी किसबण के संग जे कोई जावे, मन की आशा जाय बुझावे।
वा उनको कुछ लेवे नाही, आवे जैसा पाछा जाई ।। ३४ ।।

हो स्वामी जी किसबण का कोई साथ करता है तो वह मन की आशाएं पूरी करता है। वो उनसे कुछ लेती नही है, जैसा आता है वैसा ही चला जाता है।

अवधु वाच :- हो स्वामी जी माया मन की बास गमावे, भीड़ पड्या में आड़ी आवे।
माया मांण लगावे सोई, जो नर पल्ले माया होई ।। ३५ ।।

हो स्वामी जी माया मन की सब आशायें पूरी करती है तथा मुसीबत में काम आती है। माया से ही संसार में सुख भोगते है अगर पल्ले में माया हो तो सुख के लिये लगा सकता है।

सुखराम वाच :- हे अवधु या माया देणी नहीं आवे, अपणी कर बोह गांठ घुलावे।
जो कुछ बिगडे इनके मांही, रोवत रोवत सब दिन जाई ।। ३६ ।।

हे अवधु जिसके पास माया होती है वो किसी को नहीं देता है, अपनी है कहकर गांठ को मजबूत लगा देता है। अगर माया का नुकसान हो जाता है तो रोते रोते सब दिन जाते है।

सुखराम वाच :- हे अवधु अपणो गुण मेले नही कोई, देवत दाणु सब ही होई।
युं माया है सब मोह पसारा, जाणेगा कोई जानन हारा ।। ३७।।

हे अवधु अपना अपना गुण कोई नही छोडता है चाहे देवता हो या राक्षस हो। माया को अपनी समझना ही मोह पसारा है। इस बात को जानने वाले ही जानते हैं।

अवधु वाच :- हो स्वामी जी जाणे सो कुछ डर है नांही, अपणी नार पुरूष घर मांही।
आ माया है हरि की दासी, हरिजन की नित करे खवासी ।। ३८।।

अवधु कहता है कि हो स्वामी जी जानने से कुछ डर नही है पुरूष अपनी स्त्री को अपनी समझता है। यह माया परमात्मा की दासी है हरिजनों की नित्य सेवा करती है।

अवधु वाच :- हरिजन कूं कुछ डर है नांही, जिनके सिर सिमरथ है सांई।
सांई की आ आद शरीरी, आ नेःचे है जन की चेरी ।। ३९।।

हरिजनों को माया से कुछ डर नहीं है जिनके ऊपर समरथ परमात्मा की कृपा है। परमात्मा की यह आद शरीरी यानि स्त्री है। यह निश्चय ही हरिजनों की दासी है।

सुखराम वाच :- हे अवधु ऐसा चरित बतावे आई, हरिजन कूं हरि दे बिसराई।
पहिला होयकर ऐसी आवे, बस हुवा पीछे छिटकावे ।। ४०।।

मःफः है कि हे अवधु माया ऐसा चरित्र बताती है कि हरिजन परमात्मा को भूल जाता है। माया पहले तो आकर उसका आदर करती है जब उसके वश में हो जाता है तो यह उसको छोड देती है।

सुखराम वाच :- पेहली आदर बोहो बिधकर है, हँस हँस कर पांवा तल धर है।
जब लग नही विपले होई, तब लग यारे करे है सोई ।। ४१।।

हे अवधु माया पहले तो बहोत तरह से आदर करती है, हँस हँस कर पांवो के नीचे हथेली धरती है। जब तक मनुष्य इसके वश में नहीं होता है तब तक तो वो दोस्ती करती है।

सुखराम वाच :- जब ही जन माया सुख चावे, निर आदर तब ही कर जावे ।। ४२।।

जब मनुष्य माया का सुख चाहने लग जाता है तो उसका आदर नही करती है।

अवधु वाच :- हो स्वामीजी आदर घटसी तब क्या बटसी, वे तो वे का वे रहसी सोई।
तज उलटी होय जावे माया, तब ही पूरण होई ।। ४३।।

अवधु कहता है कि हे स्वामीजी आदर घटने से उसका क्या बिगडता है। वो तो वैसा ही रहेगा माया छोडकर चली जावेगी तो भी वो तो पूरण रहेगा।

हो स्वामीजी माया तजियां लारे आवे, पिछा मेले नांही।
आप ही पर हरिया पच पच जावे, तब दावा नही मांही ।। ४४।।

हे स्वामीजी माया को छोडने से वो साथ आती है पीछे नही रहती है। बहुत कोशिश करने पर भी यह नही छूटती है तो उसको कैसे छोडा जाता, यही दावा नही मांही है।

हो स्वामीजी दिया लिया जे कोई जावे, तो निरभाग न रह कोई।
जहां तहां आण पहुंते माया, तब ही दुखिया होई ।। ४५।।

हो स्वामीजी लेने देने से माया चली जावे तो कोई अभागा नही रहता। जहां जावे वहां माया आ पहुचंती है। तब भी दुखी होना पडता है।

सुखराम वाच :- हे अवधु जहां नही शीत धाम नही छाया, जहां हम देव निरंजण पाया।
शीव शक्ति मन माया नांही, जहां हम मिले निरजंण सांई ।। ४६ ।।

म:फ: है कि हे अवधु जहां ठंड धूप व छाया नही है। वहां हमने निरंजण देव की प्राप्ति की है। जहां शिव शक्ति मन माया नही है। उस जगह हम निरंजण निराकार परमात्मा में मिले है।

अवधु वाच :- हो स्वामी जी जहां है शीत धाम है छाया, जहां है शीव शक्ति मन काया।
माया बिना किसी विध जावे, किसमें मिले क्या नाम धरावे ।। ४७।।

हो स्वामी जी जहां शीत धाम छाया है शीव शक्ति मन काया है माया के बिना वहां कैसे जा सकते है, किसमें मिलता है वह क्या क्या नाम रहता है।

सुखराम वाच :-अवधु मन निज मन होय जावे, तब ले माया सब छिटकावे।
हंसा पलट परम हंस होई, या विध नाय कहावे दोई ।। ४८ ।।

म:फ: है कि हे अवधु मन निजमन हो जाता है। जब माया से अलग हो जाता है, हंस पलट कर परमहंस हो जाता है। इस तरह दो नही कहलाते है।

अवधु वाच :- हो स्वामीजी धरणो माया करणो माया, उलट पलट सोई माया।
ये सब भेद तबे शिर स्वामी, माया मज बताया ।। ४९ ।।

हो स्वामीजी धरणा करणा उलट पलट सब माया के पद में है। यह सब भेद माया में ही है।

सुखराम वाच :-हे अवधु माया नाम मिटावे, तब जन चल चौथे पद जावे।
तीन लोक में तिरगुण माया, चौथे पद निरजंण पाया ।। ५० ।।

हे अवधु माया से अलग जब ही होता है जब जन चोथे पद की प्राप्ति करता है, तीन लोक याने शरीर में खण्ड पिण्ड पार ब्रह्म तक त्रिगुणी माया का पद है, चौथा पद निरंजण का है।

अवधु वाच :- हो स्वामीजी तिरगुण माया तिरगुण काया, इण मध बासा लिया।
इण बिन कहा करे को स्वामी, जीव बिना क्या जीया ।। ५१ ।।

अवधु कहता है कि हे स्वामीजी त्रिगुणी माया व काया में ही रहते है। इसके बिना क्या करते है। जीव के बिना कैसे जीते है।

सुखराम वाच :- हे अवधु जीव जहां लग जोखा भारी, माया संगम होई।
जम की त्रास रहे शीर ऊपर, बच न सके कोई ।। ५२ ।।

म:फ: है कि हे अवधु जहां तक जीव का पद है वहां तक भारी धोखा है। जब माया का साथ रहता है तब तक जम की त्रास याने जन्म मरण में आता जाता रहता है। उससे कोई बच नही सकता।

अवधु वाच :- हो स्वामीजी माया मर है माया गिर है, माया जन्म धरावे।
माया बिन कहा को कर है, सो मोय भेद बतावे ।। ५३ ।।

अवधु कहता है कि हे स्वामीजी माया मरती है, माया गिरती है, माया ही जन्म लेती है, माया के बिना क्या कर सकते है। इसका मुझे भेद बताइये।

बस्ती माया बन भी माया, माया गीरवर होई।
माया बिना कहा पग धरो हो, भेद बतावो मोही ।। ५४ ।।

बस्ती वन पहाड सब माया है, माया के बिना कहां पैर धरोगे, इसका मुझे भेद बतावो।

बोले माया चाले माया, ध्यान धरे सो माया।

करणी कर्म विचारे स्वामी, सब माया मज आया ।।५५।।

हे स्वामीजी बोलना चालना ध्यान धरना कर्म करणी सब माया में है।

सुखराम वाच :-हे अवधु जन्म धरे जहां लग धोका, सच्चा नांही कोई।
देता देता सब दे चुके, तब खत फाटे सोई ।।५६।।

म:फ: है कि हे अवधु जहां तक जन्म धारण करता है वहां तक धोका है। सत की प्राप्ति नही हुई है, छोडते छोडते सब से अलग हो जाता है, तब उस पद की प्राप्ति होती है।

हे अवधु त्यागत त्यागत सब ही त्यागे, जो त्यागण की धारे।
बिना दिया बिन क्यों कर चुके, किस विधि करज उतारे ।।५७।।

हे अवधु सब कर्मो का क्षय करना ही त्यागना है, ऐसे ही सतशब्द की भक्ति करके शुभ अशुभ करणी कर्म से अलग हो जावे, प्रालब्ध कर्म भोग कर खत्म कर देवे। बिना दिये करज कैसे उतर सकता है।

अवधु वाच :-हो स्वामीजी फिरता फिरता बोहो फिर थाको, मार मांस नही खावे।
यूं माया हाता कर ठेले, सेजा परचा कहावे ।।५८।।

अवधु कहता है कि हे स्वामीजी मांगने वाले को करजा नही देवे तो वो फिर फिर थक कर बैठ जाता है, वो उसका बिगाड नही कर सकता। ऐसे ही कर्म व परचे शरीर द्वारा होते रहते है, मिटते रहते है। पानी में जैसे बुदबुदे उठते रहते है, बैठते रहते है, पानी का कुछ नही बिगडता, उसी तरह इनका संबंध आत्मा से नही है, शरीर से है।

सुखराम वाच :-हे अवधु या बिद बात मन नही आवे, बिन दिया किम चुके।
त्यागयां बिना नही बल होवे, मेल धोवण कुं ढुके ।।५९।।

म:फ: है कि हे अवधु यह बात मन में नही भाती, बिना दिये करजा कैसे चुक सकता है। ऐसे ही कर्मो का फल भोगे बिना व सतशब्द की भक्ति करके पांच तत्वो के शरीर से अलग हुवे बिना कर्मो का संबंध शरीर से है। परन्तु जब तक आत्मा शरीर के साथ है तब तक सुख दुख का अनुभव इसको भी होता है। जैसे मेल धोये बिना साफ नही होता, ऐसे ही कर्मो का फल भोगे बिना व इनके अलग हुवे बिना करमो का क्षय नही होता है।

अवधु वाच :- हो स्वामीजी डर है सो तो छिपता फिर है, चवडे कबु न आवे।
जब तक दाव पडेगो स्वामी, दूणी शीर भुगतावे ।।६०।।

अवधु कहता है कि हो स्वामीजी कर्म बन्धन से डरना है वो ही छिपना है कर्म बन्धन से डरना ही चौडे नही आना है। कर्मो के भोग में उनको दूना दुख का अनुभव हो तो शरीर को हो या आत्मा को हो।

सुखराम वाच :-हे अवधु आगम दावा सब ही दे है, नवा फेर नही कर है।
सेज बिरत में सुख दुख सारा, भुगतकर दूरा धर है ।।६१।।

म:फ: है कि हे अवधु आगे करम तो भोगने से क्षय हो जाते है। नये कर्म नही बांधते, सहज वृति में भोगकर ही सब करमों से दूर हो जाते है।

अवधु वाच :- लुकिया छिपया बचे न कोई, चार दिना का सारा।
नेःचे आंण मिलेगा चोडे, तब नही छूटण हारा ।।६२।।

अवधु कहता है कि कर्मो से डरना ही लुकना छिपना है। शरीर से ही कर्म होते है व शरीर ही कर्मो का भोग भोगता है। जो शरीर के साथ आत्मा को कर्म बन्धन में साथ मानते है। उनको सुख दुख का अनुभव होता है यही चौडे आना व उससे नही छूटना है।

सुखराम वाच :- हे अवधु वे तिरगुण के निरगुण रहणा, तिरगुण में सब होई।
तिरगुण छोड चल्या पद चौथे, तहां नही कहणी कोई ।। ६३।।

म:फ: है कि यह त्रिगुण याने शरीर में सब होता है। त्रिगुण में है जब तक ही उसको कर्मो से सुख दुख का अनुभव होता है। तिरगुण में रहते हुये सतशब्द के साथ आत्मा जब निरगुण याने चौथे पद में पहुंच जाती है तब उसको परमात्मा पद की प्राप्ति हो जाती है।

अवधु वाच :- हो स्वामीजी जब लग काया तब लग कहणा, जब लग सुणना होई।
देह पडया सुं सुणे न सिखे, सो तुम सिरे संजोई ।। ६४।।

अवधु कहता है कि हे स्वामीजी जब तक शरीर है तब तक ही कहना सुनना है, शरीर छूट जाता है तब सुनना सीखना कुछ नही रहता है। आप शरीर छूटने से पहले ही बता रहे है।

सुखराम वाच :- हे अवधु देह छता नही आवे बासा, दिष्ट न देखे काई।
श्रवणा साध सुणे नही ऊंचो, कहो हंस कहां जाई ।। ६५।।

म:फ: है कि शरीर में रहते हुये उस चौथे पद की प्राप्ति नही हो सकती, न वो देखने में आता है और न कानो से सुनने में आता है, तो हंस उससे कैसे जा सकता है।

अवधु निरभै वासा काया मांही, जांको भेदज लिजे।
इनमें जाय मिले पद चौथे, जन्म जूण नही दिजे ।। ६६।।

हे अवधु शरीर में रहते हुये भी निरभय पद की प्राप्ति हो जाती है। उसका भेद लेवो। शरीर में रहते हुये चौथे पद की प्राप्ति हो जाती है। वो जनम मरण में नही आता है।

अवधु वाच :- हो स्वामीजी निरभे वासा काया मांही, बाहिर क्या छिटकावे।
बैरी गांव जहां नही जाणो, भै डर क्यों ऊपजावे।। ६७।।

अवधु कहता है कि हो स्वामीजी शरीर में ही निरभय निवास है तो इसको क्या छोडना है। आत्मा को करम बन्धन नही लगता है तो इसको डर किसका है।

सुखराम वाच :- हे अवधु डर चाल्या में बोहो गुण भारी, निरख निरख पग धरिजे।
कांटा ठोकर लागे नांही, खाड़ कुवे न पडिजे।। ६८।।

हे अवधु बुरे आचरण व सिकल विकल बोलने का ध्यान रखना और डरने में भारी गुण है और शरीर रहते हुये भक्ति ग्यान को समझ सोच कर धारण करेगा, तो जन्म मरण में नही आयेगा।

अवधु डर चाले सो हाथ न आवे, लुलिया काठ न तुटे।
झीणी खेह चढे शीर ऊपर, ढलढेकल सब फूटे।। ६९।।

म:फ: है कि हे अवधु जो कर्म करने से डरकर चलता है तो यमराज के हाथ मार नही खाता। जो लकडी लूल जाती है वो टूटती नही है। अर्थात जगत में नम्र बनकर रहना चाहिये। वैसे कुछ कर्म खेह की तरह है, बिना किये भी हो जाते हैं, परन्तु भक्ति करते रहने से सभी कर्मो का खात्मा हो जाता है।

अवधु वाच :-हो स्वामीजी फूट गया तब कहो क्या बिगडया, तब ही झीणा होई।

चार दिना की वरतमान है, नेचे मिल है सोई ।। ७० ।।

अवधु कहता है कि हो स्वामीजी जब तक शरीर है करमो का भोग तो शरीर भोगता है, यही चार दिन का वरतमान है। आत्मा दृष्टा है वो तो निश्चय ब्रह्म ही है।

हो स्वामीजी चार दिना का आवणा जावणा, बरतमान सो बरते।
नेचे ब्रह्म एक ही स्वामी, पछे काम क्यो सरतो ।। ७१ ।।

हे स्वामीजी शरीर तो आता जाता रहता है यही चार दिनो का आना जाना है। यही बरतमान बरतना है, आत्मा तो निश्चय ब्रह्म ही है। फिर इसका क्या काम सरना है।

सुखराम वाच :–हे अवधु पचिया बिना छेह जूं दूरो, बोहो दिन दुखिया होई।
दारू बिना दरदी बहो दुखिया, कब लग भुक्ते कोई ।। ७२ ।।

म:फ: है कि हे अवधु सतशब्द के साथ आत्मा चौथे पद की प्राप्ति नही करती है। तब तक अनेक शरीर धारण करने पडते है। शरीर को कर्म भोगी मानने वालो व आत्मा को अलग मानने वालों को कर्मो के भोगो का सुख दुख होता है तो आत्मा को भी अवश्य भान होता है यही बिना दवा के बहुत दुख पाना व कब लग भुगतना है।

जहां नही धूप धाम नही छाया, जहां हम देव निरंजण पाया।
शिव शक्ति मन माया नांही, जहां हम मिले निरंजण सांई ।। ७३ ।।

म:फ: है कि जिस पद में न धूप धाम न छाया है वहां मुझे निरंजण देव की प्राप्ति हुई है जहां शिव शक्ति मन त्रिगुण माया नही है। उस चौथे पद में निरंजण में मिले है।

चंदर सूर रेण नही तारा, जहां है आसण इडग हमारा।
ब्रह्मा नही गायत्री संगा, धर्मराय नही काल ज भंगा ।। ७४ ।।

म:फ: है कि उस पद में चन्द्र सूर्य रात व तारा नही है वहां हमारा अखण्ड आसन है। उस पद में ब्रह्मा गायत्री धर्मराज व काल कोई नही है।

लिछमी विष्णु नही अवतारा, पवन चले नही जल धारा।
गिरवर पर्वत अष्ट न धाता, कल ब्रछ नही रूख नही पाता ।। ७५ ।।

उस पद में लक्ष्मी विष्णु कोई अवतार नही है। न वहां हवा जल पहाड है, न आठ धातु है, न कल्पवृक्ष है, न रूप है, न पात है, आत्मचेतन को ब्रह्म मान रहे है। तो यहां तो ये सब साथ है।

चिंत्रामण पारस जहां नाही, कामधेनु नही दूजे मांही।
जहां नही हो रतना की माला, ना कोई पहरे पहरण वाला ।। ७६ ।।

जहां पारस चिंत्रामणी नही है जहां कामधेनु नही दुहाती है, जहां न रत्नो की माला है, न कोई पहनते है और न कोई पहनने वाला है।

जहां नही कुण्ड अमीरस धारा, कमल शेष दल नही विस्तारा।
दिष्ट न मुष्ट न आवे कोई, जहां हम मिले निरंजण सांई ।। ७७ ।।

जहां पर अमीरस का कुण्ड नही है। जहां पर हजार पांख के कमल का विस्तार नही है, जहां कोई दृष्टि व मुठी में कोई नही आता है। जहां हम निरंजण ब्रह्म से मिले है।

आठ पुरी परोजन नांही, शुभ नही अशुभ न व्यापे है मांई।
पांच पचीसुं जहां नही खेला, जहां शिरजण है आप अकेला ।। ७८ ।।

आठो पुरियां व परोजन नही है। वहां शुभ व अशुभ नही व्यापता है। जहां पांच तत्व पचीस प्रकृति का खेल नही है। वहां शिरजण हार परमात्मा आप एक ही है।

जहां नही पांच पचीसुं कोई, मात पिता एक नही होई।
चारू खांण बांण भी नांही, जहां मिले निरंजण सांई।।७९।।

जहां पांच तत्व पचीस प्रकृति कोई नही है। माता पिता एक भी नही है। चार वाणी व चार खाण भी नही है। वहां हम निरंजण निराकार में मिले है।

सातू समंद नदी नही नाला, जहां नही मेघ ना बरसण वाला।
जमी बीज कोई बावे नांही, जहां हम मिले निरंजण सांई।।८०।।

जहां सात समुद्र नदी नाला नही है, जहां बरसने वाले मेघ नही है। पृथ्वी में कोई बीज नही बोता, वहां हम निरंजण में मिले है।

जहां नही रिष सनकादिक कोई, नारद मुनि शंकर नही होई।
पार्वती नही परम सनेवा, जहां हम मिले निरंजण देवा।।८१।।

जहां रिषी सनकादिक, नारद मुनी, शंकर व परम स्नेही पार्वती नही है, जहां हम निरंजन देव में मिले है।

जहां नही एक सुं दोय कहावे, जहां नही सुणे सुनने को जावे।
ऊंच नीच का जहां नही बेरा, कर्म कीट नही जम का घेरा।।८२।।

जहां एक से दो नहीं है, जहां कोई सुनने सुनाने नही जाता, जहां कोई ऊंच नही है। जहां कर्मरूपी कीट व जमराज की पहुंच नही है।

चवदहे पूर्व वेद नही कोई, ज्ञानी पंडित एक न होई।
कथनी बकनी जहां नही सेवा, जहां निरंजण देवस देवा।।८३।।

जहां चोदह विद्या, वेद ज्ञानी व पंडित नही है। जहां कोई कहने व बोलने वाला नही है, वहां निरंजण देव ही है।

जहां नही कथा भागवत कोई, गीता पुराण एक न होई।
सिध साधक जहां गुरू नही चेला, जहां जन साध निरंजण भेला।।८४।।

उस पद में कथा, भागवत, गीता, पुराण, सिध, साधक, गुरुचेला नही है। वहां भक्ति करने वाले जन व निरंजण शामिल है।

ज्यूं जल में जल बूंद समाई, नदियां चली समंद में आई।
आडो पट न राख्यो कोई, यूं जन मिल्या ब्रह्म में सोई।।८५।।

जैसे पानी की एक बून्द व नदिया समुद्र में समाकर एक रूप हो जाती है, ऐसे ही जन ब्रह्म में मिल जाते है।

जन सुखराम धिन गुरु देवा, गुरु परताप मिले ओ भेवा।
धिन सुखराम पद तुम पाया, तीन लोक चौथे पद आया।।८६।।

म:फ: है कि सतगुरु आपको धिन है आपके प्रताप से यह भक्ति का भेद मिला। म: अपने को भी धिन कहते है, मुझे परमपद की प्राप्ति हुई है। तीन लोक को छोडकर चौथे पद में आया हूं।

मन की चोकी है जग मांही, निरभै प्राण आद घर जांई।

देह लग मन की झाई आवे, ब्रह्म साध घर एक कहावे।। ८७।।

जगत में सब मन के साथ में रहते है प्राण पारब्रह्म से आद घर याने के:पद आ:पद में जाते है, जब निर्भय होते है। जहां तक शरीर है, मन का साथ है। ब्रह्म की साधना करने वाले ब्रह्म में समा जाते है, यही एक होना है।

निरभै वास किया घर वांही, साध ब्रह्म के अन्तर नांही।
जग में निरभय भय नही कोई, जे जन मिल्या सुन्न में सोई।। ८८।।

वहां जाकर निरभय वास करते है। साध व ब्रह्म में कोई अन्तर नही रहता। जग में रहते हुये भी उन्हें किसी तरह का भय नही है, जो जन जाकर सुन्न में मिल गये है।

महा सुन्न में जाय मिलावे, ब्रह्म समायर एक कहावे।
जीव शीव को मेला होई, जहां एक नही दूजा कोई।। ८९।।

महासुन्न याने पूर्ण आनन्द में जाकर मिल जाते है। ब्रह्म में समाकर एक हो जाते है। जहां जीव शीव एक हो जाते है याने ब्रह्म हो जाता है वहां एक से दूसरा नही है।

छाया मज समाय समावे, जो देखे सो ब्रछ बतावे।
छाया जीव रहे नही कोई, उलट उदे शीर आवे सोई।। ९०।।

दिन में बारह बजे छाया वृक्ष में समा जाती है। जो देखता है वही वृक्ष बताता है। छाया रूपी जीव नही रहता है। तो उलट याने बंकनाल से पार ब्रह्म में ऊपर पहुंचते है।

ज्यूं ज्यूं सूरज ऊपर चढ है, त्यूं त्यूं छाया घटती पड है।
जब सूरज चल मज शिर आया, तब सब छाया नाम मिटाया।। ९१।।

सूर्य जैसे जैसे ऊपर चढता है वैसे वैसे ही छाया कम होती जाती है। जब सूर्य मध्य स्थान में आ जाता है। तब छाया का नाम मिट जाता है।

यूं ज्ञान ऊदे रसणा लिव लागे, बंकनाल की बारी जागे।
सूरत शब्द ऊंचा चल आया, छांय घटे ज्यूं जीव घटाया।। ९२।।

इस तरह सतगुरू का ज्ञान घट में उदय होकर रसणा से लिव बंध भजन होने लग जाता है और बंकनाल के रास्ते होकर सूरत व शब्द उपर चढ जाते है। जिस तरह छाया घटती है उसी तरह जीव का पद घटता जाता है।

कमल शेष दल ऊण सिर आया, जीव पणा सब खोज मिटाया।
सैजा बास जक्त के मांही, नेहचे घर हम किया वांही।। ९३।।

हजार पांख के कमल के ऊपर पहुंचने पर जीवपणा सब खत्म हो जाता है। शरीर के प्रालब्ध के भोग खत्म नही होते तब तक जगत में सहज निवास करते है। निश्चय ही हमने निज घर याने उस पद की प्राप्ति कर ली है।

जब सुखराम मन में आवे, तब निज घर जाय समावे।
संतो माया ब्रह्म तहां ऐ दोई, ने:हचे ब्रह्म एक ही होई।। ९४।।

मन में जब भी आवे निज घर में जाय समाते है। इस तरह माया ब्रह्म दो कहलाते है। निश्चय ब्रह्म तो एक ही है।

ज्यूं तरवर की छाया कहावे, बिरछ एक पण दोय दिखावे।

पंछी भूल गया सुख मांही, छांय तले बिरछ बन नांही।। ९५।।

वृक्ष व वृक्ष की छाया, है तो एक ही है परन्तु कहलाने में दो है, दिखने में दो है। जीव माया के साथ रहने से माया के सुख को ब्रह्म का सुख समझ रहा है। छाया है जहां तक वृक्ष नही है माया के साथ है, जब तक ब्रह्म नही है।

छाया छिन बरछ है आछो, माया झूंठ ब्रह्म है सांचो।
यूं अपणो सब सरूप भुलायो, ज्यूं चल स्वान महल में आयो।। ९६।।

छाया तो क्षणिक है, वृक्ष अच्छा है, माया झूंठ ब्रह्म सत्य है। ऐसे ही सब अपने स्वरूप को भूल गये है। जैसे कांच के महल में आकर कुत्ता खुद को भूल जाता है।

कांच महल में आप ही दिशे, आप ही भूसे आप ही रिसे।
ज्यूं ज्यूं तामस बोहो बिद ल्यावे, त्यूं उनमें बोहो रोस दिखावे।। ९७।।

कांच के महल में खुद ही खुद को देखता है। आप ही आप पर भूसता है और आप ही आप पर क्रोध करता है। ज्यों ज्यों ज्यादा ज्यादा रोस करता है। त्यों त्यों उसमें ज्यादा ज्यादा रोष दिखता है।

भूसता भूसता सब दिन होई, ना कोई लडया मुवो नही कोई।
समज्या श्वान पच तब हारयो, अपणो स्वरूप सूं मांय विचारयो।। ९८।।

भूसते भूसते सारा दिन बीत जाता है। न तो किसी से लडता है और न कोई मरता है। कुत्ता पच पच कर हार जाता है। तब समझ कर अपने सरूप पर विचार करता है।

जब लग सरूप न चिन्हे कोई, तब लग सुखिया हुवे नही लोई।। ९९।।

जब तक कोई अपने सरूप को नही पहचानता, तब तक कोई सुखी नही हो सकता है।

तुम हम ब्रह्म और नही कोई, धाम पहुंच्या हम जान्या।
जन सुखराम नदी जल एकी, नाम घाट ठेहरान्या।। १००।।

तुम और हम ब्रह्म ही और कोई नही है। जब के:पद आ पद में पहुंचे, जब यह जानने में आया। म:फ: है कि नदी में जल तो सब एक ही है। घाट का नाम ठहरने में लिया जाता रहा है।

तुम हम ब्रह्म और नही कोई, भरम सुं दोय दिखाया।
जन सुखराम मिटे सिध सिको, द्रव रोकडा होय आया।। १०१।।

तुम और हम ब्रह्म ही है भरम से दो दिख रहे है। म:फ: है कि जब रूपये का सिध सिका मिट जाता है तब द्रब रोकडा रह जाता है। ऐसे आत्मा के:पद आ: पद में समा जाती है, तो ब्रह्म रूप हो जाती है।

तुम हम ब्रह्म और न कोई, ज्ञान बमेक विचारो।
जन सुखराम तरां ज्यूं जल है, समंद भरयो सब सारो।। १०२।।

ज्ञान व विवेक से विचारो कि तुम हम ब्रह्म ही है और नही है। जैसे लहरे व जल एक ही है। समुद्र तो सब भरा हुआ है।

तुम हम ब्रह्म और न कोई, भरम लहर ज्यूं धुंवो।
जन सुखराम ज्ञान कर देख्या, कुण जन्मयो कुण मुवो।। १०३।।

तुम और हम ब्रह्म ही है और कोई नही है। यह भरम ही समुद्र की लहर व अग्नि में धुवें के जैसे है। म:फ: है कि ज्ञान से विचार कर देखा है कि कौन जन्मता है व कौन मरता है।

दोहा :- ब्रह्म आद मध अंत ही, घटे बधे कुछ नांय।
जन सुखराम घाट सो भांगे, मूल रती नही जाय।। १०४।।

आदि अंत मध्य में ब्रह्म तो एक सा है। म:फ: है कि इस शरीर के मिटने पर मूल (आत्मा) में रती भर भी कमी नही होती। वो ब्रह्म थी, ब्रह्म है, ब्रह्म रहेगी।

।। इति श्री अवधु रो संवाद सम्पूर्ण।।

卐 आवबल का अंग 卐

रेखता :- चार जुग जाय जब चोकडी अेक है, ईन्द्र की आव में कहत भाया।
पांच पचीस पचास में आठनी, निगम में अर्थ सो संत गाया।।
चार पर तीन अर तीन पर चार रे, ईन्द्र पडत दिन अेक जाई।
अे बडा दिन का मास कर बरस रे, दुज आव सो बरस ताई।
दुज की आव तां ईस का तीन दिन, सगत सिणगार में ईस जाई।।
सगत सिणगार बोहो सज केती गई, ब्रह्म को टुक नही ध्यान कवायो।
दास सुखराम कछु वार नही पार रे, सब ही संत मिल नाम गायो।।

चार जुगो की एक चौकडी सतजुग का वर्ष १७२८००० सतरा लाख अठाइस हजार, द्वापुर का वर्ष ८६४००० आठ लाख चौसठ हजार, त्रेता युग का वर्ष १२९६००० बारा लाख छनमें हजार व कलयुग का वर्ष ४३२००० चार लाख बतीस हजार, ऐसी ऐसी चौकडी ७२ गुजर जावे वा ईन्द्र की उमर का वर्ष ३११०४०००० इगतीस कोटी दस लाख चालीस हजार ऐसा एसो अठाईस ईन्द्र गुजर जावे जणा ब्रह्मा को एक दिन और एक रात पूर्ण होवे। ब्रह्मा का एक दिन का वर्ष ८७०९१२०००० आठ अरब सतर कोटी ईकाणु लाख बीस हजार गुजर जावे तब एक दिन एक रात का दिन ३० महिना का ब्रह्मा का एक महिना का वर्ष २६१२७३६००००० दो खरब अगसट अरब सताइस क्रोड छतीस लाख वर्ष अेक बरस का गुजर जावे तब १२ महीना ब्रह्मा की उमर का एक वर्ष का वर्ष ३१३५२८३२००००० ईगतीस खरब पैतीस अरब अठाईस करोड बतीस लाख बरस ब्रह्मा की उमर का १०० वर्ष तांई जीण रा एकन्दर वर्ष ३१३५२८३२०००००० ईगतीस नील पैतीस खरब अठाइस अरब बतीस क्रोड बरस ब्रह्मा की उमर का है। महादेव का एक महिना का बरस ३१३५२८३२०००००० इगतीस नील पेतीस खरब अठाईस अरब बतीस क्रोड बरस एक महिना का महादेव का एक बरस का बरस ३७६२३३९८४०००००० सेतीस पदम बासट नील तेतीस खरब अठाणमें अरब चालीस क्रोड वर्ष बारा महिना एक वर्ष का बरस इस तरह महादेव की उम्र १०० वर्ष की है। महादेव की सो बरस की उमर का बरस ३७६२३३९८४००००००००० सेतीश शंख बासठ पदम तेतीस नील अठानवे खरब चालीस अरब महादेव की सो बरस की उमर का बरस है। महादेव की उमर सो वर्ष की है तथा शक्ति का सिणगार ने लागे तिकी बगत टेम सेतीस संख बासठ पदम तेतीस नील अठाणवे खरब चालीस अरब वर्ष अेसी ऐसी सगत्या केइक चली जावे जरा ब्रह्म को ध्यान टुक याने जरा सो भी नही खुवे। सतगुरु सुखरामजी महाराज बोल्या कि सब संत जो राम नाम ने गावे उण राम में मिल्या उण राम को कुछ वार पार नही आवे।

।। इति श्री आवबल का अंग सम्पूर्ण।।

卐 षट दरशण का अंग 卐

जोगी सोई जोग गत जांणे, घट में आत्म देव पिछाणे।
सुखमण घाट पीवे भर प्याला, अे निश मगन रहे मतवाला।। १ ।।

जोग की गति जानता है वही जोगी है, इस शरीर में आत्मा में जो देवता याने परमात्मा है उसको पहचानो। पारब्रह्म से ऊपर के:पद में सुखमणा में सतशब्द का अखण्ड अनुभव होना ही सुखमण घाट पीवे भर प्याला, है रात दिन उसका आनन्द आना ही मतवाला रहना है।

कवित:- गेहे अेसोतत बात, जोग जोगी गत जाणे। घट में आत्मदेव प्रीत सूं मांय पिछाणे।
सुखमण बाट घाट ज्यां जावे, भर भर पीवे प्याला। अे निश ब्रह्म रंग सो राता,
मगन रहत मतवाला।। ऊनमुन मुद्रा पेर गिगन में नाद बजावे।
सो जोगी सुखराम सुन्न में ध्यान लगावे।। २ ।।

ऐसे जो ब्रह्म पद की प्राप्ति करता है वही जोगी जोग की गत जानता है, शरीर में आत्मा में जो परमात्मा है। प्रेम से भजन कर सतशब्द का अन्तर में अनुभव करे। सुखमणा में पारब्रह्म से भी ऊपर पहुंचकर सतशब्द का अनुभव करे व उसका आनन्द आना ही मगन मतवाला रहना है। म:फ: है कि वही जोगी है। निरंजन निराकार पद में सतशब्द का अनुभव होना ही सुन्न में ध्यान लगना है।

जति जुग विचार, पांच पेमाल करावे। बावन अंछर सोज, ररे सुं चित लगावे।।
प्रेम मांड पटसाल, वेद को भेद ऊचारे। चेला पांच पचीस, तीन पर छडी पसारे।।
पिंड ब्रह्मण्ड को सोज ले, आद पुरूष जहां जाय। जो जति सुखराम कह मन जीता तन मांय।। ३ ।।

जगत में जति वही है जो पांच विषयो को काबू में करता है, बावन अक्षरो का साधन स्वांसा के आधार पर होता है व लिखने में आता है। उसको छोडकर सांस ऊसांस में भजन कर ररंकार की जागृति कर सूरत से सतशब्द का अनुभव करे। पांच तत्व पचीस प्रकृतियो व तीन गुणो से अलग होकर पिण्ड खण्ड ब्रह्मड से व पार ब्रह्म से उपरे के:पद की प्राप्ति करना ही आद पुरूष जहां जाना है। म:फ: है कि जति वही जो मन के कहने में नही चले, ग्यान कहे वैसे चले।

सो सामी जुग जांण, तन में श्याम पिछाणे। आया जहां चल जाय, आद घर बोत बखाणे।।
धूणी ध्यान लगाय, भजन सो भीख ऊगावे। करे सपाडा नीर, आंण त्रिवेणी नहावे।
सो स्यामी सुखराम कह त्रुगुटी परे बताय।
शिव शक्ति संग छाडकर, मिले अगम घर जाय।। ४ ।।

जगत में स्यामी वही है जो शरीर में परमात्मा की प्राप्ति करता है, पारब्रह्म परमात्मा का पद असत माया के साथ उसमें से आत्मा आती है। सतशब्द के साथ ऊलट कर पांच तत्वो से अलग होकर के:पद आ:पद में लय होना ही आया जहां चल जाना है। संत सतसरूप आ:पद की ही महिमा करते है व उसकी प्राप्ति का ज्ञान देते है। हर समय उस पद का ध्यान करना ही धूणी लगाना है। निरन्तर भजन करना ही भीख उगाना है। अला पिंगला सुखमणा में सतशब्द का ध्यान होना ही त्रिवेणी में स्नान करना है। म:फ: है कि वह स्वामी है जो माया ब्रह्म के पद से अलग होकर के:पद आ:पद में मिलना ही त्रिकुटी परे अगम घर बताना है।

सो सन्यासी बखाण, कुबद पर सार बजावे। सरब करम कर नाश, जीत सुख मांय समावे।
नेहेचल रहे मन थिर, चित डोले नही कोई। मुख अमृत कह बैण, मुलक बिगसे मन सोई।।
अनहद में रता रहे, त्रिगुटी ध्यान चढ़ाय। सन्यासी सुखराम के, उलट आद घर जाय।। ५।।

सन्यासी वह है जो सब कुबुद्धि को त्यागकर सब करणी व कर्मो से अलग होकर के:पद आ:पद की प्राप्ति करना ही जीतकर सुख में समाना है। उसके अनुभव के आनन्द का आना ही निश्चल रहना, मन का थिर रहना है व चित का नही डोलना है। मुखारबिंद से अमृत के समान वचन बोलते है, जिससे अपने मन में व दूसरो के मन को खुशी होती है यही मुलक बिगसे मन सोई है। म:फ: है कि सन्यासी वही है जो सतशब्द के साथ बंकनाल में ऊलटकर के:पद आ:पद की प्राप्ति करता है।

सो द्रवेस बखाण, दिल दुबध्या सब मेटे। अे निश रटे रहीम,
दिल आदम सूं भेटे।। तार चले, फिर लोप, जाय परलोक समावे।
अल्ला आद अशमान ताहि में सूरत लगावे।। ऊलट पलट सुलटा चढे,
मन सुं सूरत मिलाय। जन सुखिया द्रवेस सो, ऊलट आद घर जाय।। ६।।

दरवेश वही है जो दिल से दुबध्या याने राग द्वेष नहीं करे। सतगुरु विधि से रात दिन राम राम का भजन करे, दिल से परमात्मा की प्राप्ति का ही ज्ञान करे, स्वांसा से अलग होकर के:पद आ:पद में समा जावे, बह्मण्ड से पारब्रह्म के: पद में सतशब्द का ध्यान होना ही अल्ला आद अशमान में सूरत लगाना है। संखनाल में सतशब्द के साथ उतर कर फिर उलटना है। बंकनाल से मेरूडण्ड पर होकर त्रृकुटी में आना ही पलटना है। त्रृकुटी से ऊपर मन व सूरत लगाकर ऊपर चढना ही सुलटना है। म:फ: है कि वही दरवेश है जो खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड व पारब्रह्म से पार होकर के:पद आ:पद में समाते है।

सो जिन्दा प्रवाण, जीव ओपत गत जांणे। कहां आयो कहां जाय,
जीव का मरम बखाणे।। दुख पावे संसार, समझ अपणे दिल लेवे।
तांते रहे ऊदास, चित साहेब में देवे।। तीन तीस कूं लोपियो,
दिया पिसण सब पाल। जिंदा सो सुखराम के, करे गिगन में ख्याल ।।७।।

म:फ: कि यह लक्षण जिनमें है वो सच्चे जिन्दा है। जीव की उत्पति कहां से होती है व कहां जाकर समाती है। जीव कहां से आया व कहां जावेगा। इसका भेद बतावे, यही मरम बखाणना है। संसार में दुख ही दुख है यह अपने दिल में समझ लेवे। इस वास्ते संसार में रहता हुआ मोह व आपा नहीं करें, यही ऊदास रहना है। चित लगाकर परमात्मा की भक्ति करे, तीन गुण पांच तत्व पचीस प्रकृति व सब विषयो से अलग होकर रहता है, जो के:पद आ:पद का अखण्ड ध्यान करता है।

जंगम बंदे जिंगसेर, समसेर जगावे। बीण बरस ले हाथ, नार सूरती घर जावे।।
मांगे शब्द रसाल, मोहो को चूर्ण कीजे। खावंद पीव मिलाय, संग मेर होय लीजे।।
तत्त नगरी के बीच में, फेरी नित दिरावे। सो जंगम सुखराम, सुन्न में जींग बजावे।। ८।।

म:फ: है कि जंगम वो ही है जो सूरवीर होकर जींग धुनी गरजे, उसका आनन्द लेवे, नाड नाड में शब्द की धुनी के साथ सुरता शेष लोक से आगे मोह का चूर्ण कर मेरूडंड से ऊपर पति के साथ

तत्व ग्यान को धारण करके परब्रह्म से आगे के:पद आ:पद में डंका बजावे।

शील सांच संतोष ज्ञान विज्ञान विचारे। पर निन्दा परतात, और पर द्रोह निवारे।।
रहे इकन्त न आस, पास काहूं नहीं जावे। मन से मन मिलाय, अगम की खबर ले आवे।।
अे निश रहे ऊदास, जक्त सुं प्रीत न कोई। सो ब्राह्मण सुखराम, ब्रह्म रंग रता जोई ।। ९।।

शील सांच संतोष धारण कर ज्ञान याने शरीर द्वारा केवल ग्यान का मनन करे और सांस ऊसांस में राम नाम की रटणा करे, फिर आत्म चेतन से सतशब्द का अनुभव करे, यही विज्ञान ज्ञान की समझ विचारना है। पराई निंदा नहीं करे व किसी से राग द्वेष नहीं करे। किसी की आशा नहीं करे। अेकान्त में रहे। आशा से किसी के पास नहीं जावे। मन लगाकर निजमन से भक्ति कर के:पद आ:पद की प्राप्ति कर लेवे। रात दिन भजन में लगा रहे जगत से मोह नहीं करे। म:फ: कि वही ब्राह्मण है। के:पद का अखण्ड अनुभव करना ही ब्रह्म के रंग में रत रहना है।

पिंडत पिंड प्रमोद, भूल ओठे नहीं जावे। घट की घट में चीज, ताय सुं चित लगावे।।
सो पिंडत प्रवाण, वेद को भेद विचारे। छः सौ शेष इक्कीस, तांय पर सूरत पसारे।।
द्वादस आवे जाय, सूरत ले संग रमिजे। सो पिंडत सुखराम, गिगन में वेद भणिजे।। १०।।

वही पंडित है जो शरीर में ही परमात्मा की प्राप्ति का ज्ञान करते है। भूलकर भी बाहर साधन में नहीं लगता है। शरीर में आत्मा में ही परमात्मा है उसकी प्राप्ति का ज्ञान करे। पंडित वही है जो शब्द ब्रह्म की प्राप्ति का साधन करे। इक्कीस इजार छ:सो स्वांसो में सूरत लगाकर भजन कर बारह कंवलो पर सूरत लगाकर सतशब्द का अनुभव करे। म:फ: है कि के:पद में सतशब्द का अखण्ड अनुभव होना ही गिगन में वेद का पढना है।

ब्राह्मण सोई जांण, बोल अणभै मुख बांणी। अंतर ब्रह्म पिछाण, जाण समता घट आंणी।
शील सांच संतोष, पांच पर सार बजावे। पच्चीसा कूं मेट, तीन में एक रहावे।।
चर अचर बिच ब्रह्म कूं, देखे दिष्ट पसार। ब्राह्मण सो सुखराम के, अन्तर हर दीदार।। ११।।

ब्राह्मण उसे ही जानिये जो केवली भगवंतो की अणभै वाणी का निरपख निरणा करे, समता धारण कर घट में ही ब्रह्म की प्राप्ति करते है, शील सांच संतोष धारण कर पांच विषयो को वश में करते है पच्चीस प्रकृति के गुणो को वश में करके तीन गुणो में से सतोगुण को धारण करता है। जड चेतन में ब्रह्म को सर्वत्र व्यापक देखता है। म:फ: है कि ब्राह्मण वही है जो के:पद आ:पद का अनुभव करता है यही अंतर हर दीदार है।

ब्रह्म अग्र के मांय, घेर पांचु विष जारे। जुग सुं रहे उदास, जगत की प्रीत निवारे।।
तन मन सूरत मिलाय, खंड सो पिंड में देखे। चार वेद को जोव, भेद अन्तर में पेखे।।
मिले ब्रह्म सुं जाय, ब्रह्म सुं करे बिलासा। सो ब्राह्मण सुखराम, द्वार दशवें घर बासा।। १२।।

ब्रह्म याने अग्नि के समान सतशब्द की भक्ति आत्मचेतन के आधार से करके पांचो विषयो को वश में कर ले। संसार से मोह नहीं करना ही प्रीत निवारे है। तन मन व सूरत लगाकर भजन करे व खण्ड में है उसका पिण्ड याने शरीर में देखे, चार वेद को जोवे व उनका भेद देखे। उस सतशब्द की जागृति कर अन्तर में उसका अनुभव करे, इसी तरह सतशब्द की साधना से के:पद में जाकर उसकी प्राप्ति करके उसका अनुभव करना ही ब्रह्म से बिलास करना है। म:फ: है कि वे सच्चे ब्राह्मण है जो दशवे द्वार में जाकर के:पद का अनुभव करते है।

गायत्री पढ ज्ञान, प्रीत प्रमोद बतावे। क्रिया काम समाय, ब्रह्म अन्तर लिव लावे।।
गीता ग्रन्थ ऊचार, मन कूं भेव बताया। पूजे आत्मराम, दिल में देव जगाया।।
ब्रह्म देख सब मांय, राग सो द्वेष निवारे। सो ब्राह्मण सुखराम, तप यो नांव ऊचारे।। १३।।

गायत्री का पढना यही है प्रेम से ज्ञान देवे, क्रिया व कामना को त्याग कर ब्रह्म का अन्तर में सतशब्द का अनुभव करे, मन लगाकर भजन करना ही गीता ग्रन्थ का उच्चारण करना है। प्राणी मात्र को सुख पहुंचाना ही आत्माराम को पूजना है। दिल से शब्द ब्रह्म की जागृति करना ही दिल में देव जगाना है। सब प्राणियों में देवता का निवास है ऐसा समझकर किसी से राग द्वेष नहीं करे। म:फ: है कि वे ही ब्रह्म की भक्ति करते है।

पिंडत अे अेनाण, खण्ड सो पिण्ड में जोवे। आसा तृष्णा मेट, लोभ तज न्यारा होवे।।
शील सांच अस्नान, जुगत की क्रिया सोई। जीमें सांस ऊसांस, आन मुख कहे न कोई।।
आठ पोहोर हर चरचा करे, तीन तीस परमोद। सो पिंडत सुखराम के, तत्त गहे पिंड सोद ।।१४।।

पंडित वही है जो खण्ड में है उसको पिण्ड में देखता है। आशा तृष्णा लोभ को छोडकर इनसे अलग रहे, शील सांच धारण करना ही स्नान करना है। जगत की क्रिया को छोड दे, रात दिन सांस उसांस में रामजी की भक्ति करना ही जीमना है। आन याने स्वयं व अन्य शरीर धारी का नाम नहीं रटवावे। आठ पोहोर परमात्मा के ज्ञान की चरचा करे, तीन गुण पचीस प्रकृति व पांच विषयो को प्रमोद करता रहे। म:फ: है कि वही पिंडत है जो पिण्ड सोधकर के:पद की प्राप्ति करे।

कुण्डलियां :- केई जन्म शुभ करम करे, प्रगटे भक्त आंकूर।
तां पिछे केई जन्म लग, भजन करे भरपुर, भजन करे भरपुर।। ज्ञान घट में जब होई,
केई जन्म गेह ज्ञान। तबै अणभै कह कोई।। सुखरामदास अणभै परे,
केई बरस लिव ध्यान। तां आगे पराभक्त है, कोई पावे संत सुजान ।। १५।।

कितने ही जन्म तक शुभ करम करे तब भक्ति करने की इच्छा जागृत होती है, उसके बाद ही कितने ही जन्म तक भरपूर भजन करता है। तब जाकर घट में ज्ञान प्रगटता है। कितने ही जन्म तक ज्ञान धारण करने पर ही अणभै के वचन कहने लगते है। म:फ: है कि अणभै के बाद कितने ही बरस तक लिव बंध ध्यान करने पर पराभक्त प्राप्त होती है याने पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति होती है, इसे कोई संत ही प्राप्त करते है।

कवित : भांग तमाखु छाड़, ज्ञान हिरदे ऊर लावे। कन्या को द्रव लैण,
ताय की सोगन खावे।। भगत रीत घट धार, भजन निर बंधन कीजे।
ब्रह्म रिष की चाल, सोज सारी विध लिजे ।। ब्राह्मण सबही सांभलो,
जनसुखदेव कहे आण। निष्ट करम सब छाड़ के, बोले इमरत बांण ।। १६।।

भांग तमाखु छोड़कर हिरदे में परमात्मा की प्राप्ति का ज्ञान धारण करे। कन्या के पैसे लेने की सौगंध खावे। बिना फल की इच्छा से भक्ति करना ही निरबंध भजन करना है। ब्रह्म की प्राप्ति करने वाले संतो ने जो साधन किया है वो ही साधन करे। म:फ: है कि सब ही ब्राह्मण सुनो निषिद्ध कर्मो को छोड़कर मीठे वचन बोलो।

साखी :- अहूं भाव लालच तजो, तजो निष्ट सब बांण।
सांच शब्द सुखराम कहे, समता कूं घट आंण।। १।।

अहंकार लालच के बुरे वचन को छोड़कर समता धारण करके सत्य बोलो।

दुबध्या कर हम देखियो, जब दुख हुवा लार। समता कर सुखराम कहे, देखत सुख अपार।। २ ।।

द्वेतभाव याने अन्दर बाहर अलग देखने से दुख होता है और समता अन्दर बाहर अेक समान विचार धारण करने से अपार सुख होता है।

कूड कपट मन काम में, जिण घट भजन न होय। जे करे है सुखराम के, लोग देखावो जोय ।। ३ ।।

जिनके मन में बुरे विचार कपट कामना भरी हुई है, उनसे भजन नहीं होता है। म:फ: है कि वो करते है तो लोग दिखाऊ करते है।

ज्ञान सीख अड़बी करे, सो मुरख भरपेट। वां नर कूं सुखराम के, सपने हूं मत भेंट ।। ४ ।।

ज्ञान सीखकर दूसरो से अडते है वो मूर्ख है। म:फ: है कि ऐसे मनुष्यो का सपनों में भी साथ मत करो।

ज्ञान सकल कूं दीजिये, अड़ नहीं किजे कोय। मन्तर तो सुखराम कहे, दिजे जागा जोय ।। ५ ।।

ज्ञान सबको देना चाहिये लेकिन वाद विवाद नहीं करना चाहिये। लेकिन मंतर तो याने भक्ति का साधन तो योग्य व्यक्ति को ही बताना चाहिये।

पन्नोति सो पच गई, ग्रेह गया सब हार। अशुभ सेंग सुखराम कहे, गया भरम की लार।। ६ ।।

म:फ: है कि भरमों का नाश होने से याने कई प्रकार के सुखो की आसाये मोह माया से अलग होकर केवल भक्ति करने से ही पन्नोती व अच्छे बुरे ग्रहों का डर नहीं रहता है, यही पन्नोति का पचना व ग्रेह का हारना है।

।। इति श्री षट दरशण का अंग सम्पूर्ण।।

卐 त्याग वेराग का अंग 卐

<u>रेखता</u> : कहत वेराग मुख राग छूटे नहीं, धेख सुं बाद कर पख खेंचे।
पांच पचीस सुं संग साथे फिरे, गांव में जाय घर पोड माचे।।
स्त्री पुरूष की मेर मरजाद नी, सब ही आंण कर बेस पासे।
ज्ञान विज्ञान मुख त्याग बणाय कह, मन सो धन में जाय पैसे।।
भूत अर प्रेत छल छिद्र अर सरप कूं, चाय बिन संग को नाय लेवे।
दास सुखराम बिन दूध कोई धेन कूं, चाटणो आंण कर कौन देवे।। १ ।।

कहते है कि हम बैरागी है। परन्तु मुंह से राग के सिवाय दूसरी बात नहीं निकलती। द्वेष से वाद विवाद कर अपने पक्ष को मजबूत करते है। पांच विषय पचीस प्रकृति के गुणों को नहीं छोड़कर साथ लिये फिरते है। गांव में जाकर घरों में घुस कर पलंग पर पोढते है। स्त्री हो या पुरूष हो इसकी कोई मर्यादा नहीं रखते हुये सबके पास बैठते है। ज्ञान विज्ञान व त्याग की बातें मुंह से बना बनाकर कहते है व मन से अपने स्वार्थ का विचार करते है, अपने स्वार्थ की भावना रखते हुये उपदेश करते है, भूत प्रेत छल छिद्र और सांप को बिना चाहना कोई साथ नहीं रखता है। म:फ: है कि दूध नहीं देने वाली गाय को दलिया बाटा कौन खिलाता है।

दिसतो अरथ संसार के मांय है, गत सुं ज्ञान सुण समझ आवे।

जिण बस्त सुं हांण बिगाड़ जे उपजे, ताय कूं पास कोई नाय लावे।।
हेत अर प्रीत बोहो भांत जीण जीव सुं, तुटगी प्रीत मुख नांय बोले।
विष की बेल कूं कोण कहो सींचसी, फूस कूं आण को कौन तोले।।
सरप के उपरे हाथ कुण फेरसी, भूत सूं गुंज कुण जाय किनी।
बाघ कू आंण कुण खाट सुं बांधसी, विष प्रसाद किण जाय लिवी।।
मही कूं चाड जब घरत सो निसरे, ताय जब घरत संग छाछ राखे।।
सांच जिण मुख में सांच ही सांच है, झूंठ लवलेस जहां नांय भाखे।
असल बैराग तिण पुरूष को ऊपजे, राग अर द्वेष नहीं रहत कोई।
एक सुं दूसरो पास नहीं राखसी, पहाड बास संग नाय लोई।
बरत के दिन प्रसाद की बात नी, भूल कोई अन्न कूं नाय पेखे।।
दास सुखराम बैराग तहां ऊपजे, नार को मुख सो नांय देखे।। २।।

संसार में दिखता हुआ अरथ है कि ध्यान से ज्ञान सुनने पर ही समझ आती है। जिस चीज से बुरा व नुकसान हो उसे कोई पास नही रखता है। जिस जीव से बहुत प्रेम व दोस्ती थी वो प्रेम टूट जाने पर मुंह से नही बोलते है। जहर पैदा करने वाली बेल को पानी कौन पिलावेगा। घास के तिनकों को आकर कौन तोलता है। प्यार करने के लिये सांप के उपर हाथ कौन फेरता है। भूत से कौन बातचीत करता है। सिंह को लाकर पलंग के कौन बांधता है। जहर का प्रसाद कौन करता है। छाछ को छोडकर जब घी अलग हो जाता है तब गरम करते समय उसमें छाछ क्यों रखेंगे। जिसके मुंह से रात दिन सत्यवचन ही निकलते है। लवलेस मात्र भी झूंठ नही बोलते है। जिनके सच्चा बैराग होता है, उस मनुष्य के राग द्वेष नही रहते। उनके ब्रह्म के स्वरूप का ध्यान के सिवाय कोई कामना नही रहती। पहाड बास संग नाय लोइ याने प्राणी मात्र का हित करने के लिये ऊंचें विचार रखता है, किसी के भी अहित का विचार नही रखते। जिस दिन उपवास करेगा उस दिन भोजन की बात नही करेगा, भूलकर भी अन्न को नही देखेगा। म:फ: है कि जहां बैराग पैदा होता है वह स्त्री का मुख नही देखता है, याने उसको साथ नही रखता है।

आप को झूपडो त्याग कर निसरयो, और के टापरे काय जावे।
सानियो होय घर मांय सुं निसरयो, और घर जाय कुछ समझ आवे।
काम हर काज घर आपका त्यागिया, और के काम सो जाय ध्यावे।।
हार पच बस्त कूं बेच दे बावला, होय आधी कोई फेर लावे।
राव हर रंक सब भूप प्रधान रे, चाय बिन पास को नांय राखे।।
अंध कूं आंण कोई रूप निरखाय के, रात अर दिन बीच नांय भाखे।
तूटगी बरत तो तब कोस कुवे पडयो, सांधियो बिन क्यूं संग होवे।
पांव बिन साथ रे ऊंट नही चाडसी, पीड बिन पीड को नांय रोवे।।
हेत और प्रीत में बेर तब ऊपनो, चाय बिन बोल कोई संग आवे।
दास सुखराम कोई त्याग कर निसरयो, अब क्या अन्न ज्यूं नांय पावे।। ३।।

म:त्यागी बेरागी के वास्ते फ: है कि अपना घर छोडकर निकल गया तो औरों के घर पर क्यों जाता है। घर से निकलते समय बिना समझ के निकल गया अब औरों के घर जाकर क्या समझ

लायेगा। आपके घर का काम धन्धा सब छोड दिया परन्तु दूसरो के काम करने के लिये दौडता है। हार पच करके अपनी चीज को मूरख बेच देता है। और फिर दूसरो के आधीन होकर फिर वही चीज लाता है। राजा हो, गरीब हो, बादशाह हो, प्रधान हो, चाहना के बिना कोई पास नही रखता है। अंधा आदमी रूप को रात दिन निरखकर भी नही कह सकता। रस्सा टूट जाता है तो चडस कुंए में पड जाता है। उसको वापिस सांधे बिना कैसे साथ हो सकता है। पांव भी नहीं है, साथ में भी कोई नहीं है तो ऊंट पर नहीं चढ सकता। आपस के हेत प्रीति में दुश्मनी होने पर पुनः बिना चाहना के कौन आपस में बोलता है। मःफः है कि कोई घर त्याग कर निकल गया तो क्या अन्न रूपी प्रसाद गृहण नहीं करेगा?

आप ही आपके मते संड़ सुं किया, काम बिन गांव कोई नाय जावे।
होत मेह बहुत जहां रेत कैसे उडे, निपनी साख क्यों काल आवे।।
पंछी जब ऊड कर गेहण कूं चालिया, कहो थिर बैठता कुण देख्यो।
दास सुखराम बैराग इण रीत है, सेंग संसार सब झूंठ पेख्यो ।। ४।।

आप ही आप की मरजी से गृहस्थ को छोडकर बैरागियों का साथ कर लिया। काम के बिना कोई गांव नही जाता है। जहां बहुत वर्षा होती है वहां रेत कैसे उड सकती है। साख अच्छी पैदा हो गई वहां काल क्यों आवेगा। पक्षी उडकर आसमान में जा रहा है तो स्थिर बैठे हुये किसने देखा है। मःफः है कि बैराग की ऐसी रीति है सारे संसार को झूंठ समझता है।

देख बैराग को लछ कूं बावला, सांभलो भेष संसार सारा।
शील कूं बरत तिण नार संभावियो, पुरूष सूं बोल नही चलत लारा।
स्वान के विष तब बैग सुं चालियो, और स्वान सुं रोल नांही।
चकवे चकवी रैण को त्याग है, फेर को रेण में मिले मांही।
अन्न प्रसाद ऊछांट से निसरे, प्रीत कर आंण को मेल भाणे।
स्त्री पुरूष के त्याग इन बात की, परणिया नाम नही मुख आणे।।
तिल कूं पील तेल मांय सुं काढियो, फेर को संग क्यूं रहत भेला।
प्राण कूं छाड जब जीव सो निसरे, करत को आण ऊण वक्त मेला।।
पान फल फूल तब बरछ सूं झड पडे, फेर कोई डाल सुं जाय लागे।
नार नर जीव सब सुख में पोडिया, नींद में सोय कोई पुरूष जागे।।
राव राजपूत रम खेत में झूंजसी, हेत वां जाय कोई प्रीत जोडे।
दास सुखराम बैराग जहां ऊपजे, जगत सुं बोल नही मुख मोडे ।।५।।

देखो बैराग के लक्षण कहता हूं सारा संसार व भेषधारी सब ही सुणो, शीलव्रत का प्रण जिस स्त्री ने धारण किया है वो पुरूष के साथ न चलती न बोलती है। कुते के सिर में पागलपन आने पर वह दौडता रहता है दूसरे कुतो का साथ नही रहता है। चकवे चकवी का रात्रि का मिलने का त्याग है तो वो किसी भी रात्रि में आपस में नही मिलते है। अन्न का प्रसाद किया हुआ उलटी द्वारा निकल जाय तो उसको प्रेम से लाकर कौन थाली में रखेगा। स्त्री व पुरूष दोनो के इस बात का त्याग रहता है कि शादी होने के बाद मुंह पर एक दूसरे का नाम नही लेते है। तिलो को पीलकर उसमें से तेल निकाल लिया फिर वो आपस में साथ कैसे रहेंगे। प्राण को छोडकर जब जीव निकल

जाता है तब उस वक्त आकर के कौन मिलाप करायेगा। पान फल फूल वृक्ष से झड़कर नीचे गिर जाते है फिर वो पीछे डाल के जाकर कैसे लग सकते है। स्त्री पुरूष सब जीव सुख में सो रहे है। जब नींद में सोय कोई पुरूष भजन करने वाला ही जागकर भक्ति करने में लगता है। राजा व राजपूत लडाई करते है उस वक्त कौन किससे जाकर प्रीति जोडता है। म:फ: है कि जिसको बैराग है वो संसार से मोह नही करता है।

कहत बैराग घर मांय घुसता फिरे, रांड रंडोल कूं ज्ञान देवे।
आग पर घी अर वाय संग फूस रे, बेरिया बास क्यों थिर रेवे।।
सोर संग जान गी नीर संग प्यास रे, रथ संग मन क्यों चलत प्यादा।
कपडा रीज बोह भांत है ऊजला, रंग संग मेल क्यों रहत सादा।।
बाघ के संग अबोट क्यों गाडरो, सरप को गरूड क्यों संग लावे।
दास सुखराम बैराग जहां ऊपजे, नार परमोद नही संग चाले।। ६ ।।

कहते है कि हम बैरागी है परन्तु घर घर में घुसते फिरते रहते है। बाइयो भाइयो को ज्ञान देते है। आग के पास घी, वायु के साथ फूस व बेरियो में वास करने वाला, थिर कैसे रह सकता है। बारूद के साथ में जान का डर रहता है, पानी के साथ होने पर प्यास, रथ साथ में होने पर मन से पैदल क्यों चलता है। कपडे सब तरह से सफेद है। रंग व मेल के साथ में साफ कैसे रह सकते है। सिंह के साथ गाडर क्यों सुरक्षित रह सकती है। सांप गरुड जी का साथ क्यों करेगा। म:फ: है कि जिन्हें बैराग पैदा होता है वो न तो स्त्रियों के साथ एकान्त में रहते है और न ही उन्हें एकान्त में ज्ञान देते है।

<u>कवित</u> :- नर नारी घर मांय ढीग आसण नही किजे। जोगी को पत जाय,
तन अग्नि बिन छीजे।। जहां नारी पग फेर, असल जोगी नही जावे।
कोई करे बेरिया बास, कदेकन गोतो खावे।। पानी पहिली पाल बांधे,
सोई नर जीते। जन सुखिया बैराग जे, जतन करता दिन बीते।। ७।।

माता बहिने व जोगी बैरागी पुरूष एक ही घर में पास पास आसन नही करना चाहिये। जोगी का भरोसा चला जाता है। शरीर बिना आग के छिजता रहता है। जिस जगह माता बहिने आती जाती है। असली जोगी याने साधु वहां नही जाते है। अपने दुशमनो के साथ निवास करने वाला कभी न कभी धोखा खा ही जावेगा। पानी आने से पहले पानी रोकने के लिये पाल बांधता है, वही मनुष्य समझदार है। म:फ: है कि बैरागी वही है जो बैराग को जापते से रखता हुआ जिन्दगी बिताता है।

जग त्यागी बोह जांण, जति जग छ: ही बताया। ओ तुम करो विचार, और कहो कहा रहाया।
पच पच मरे अनेक, त्याग सो सार न आवे। नव दरवाजा जांण, काम सो नित पत जावे।।
भावे खेली जाय, जमी पर ढुले है सोई। जन सुखिया बेकाम, ताय को क्या पुन्न होई।। ८।।

संसार में त्यागी तो बहुत हुये है परन्तु जति तो संसार में छ: ही कहलाये। जड भरत, नारद, लक्ष्मण, हनुमान, भीष्म व विश्वामित्र ये जति है, इसका तुम विचार करो। ये कहो और कहां रहे है। अनेक ही पच पच कर मर रहे है। परन्तु त्याग सफल नही होता है। नो दरवाजो से कामना हमेशा जाती रहती है। भावे खेली जाय, जमी पर ढुले है सोई। म:फ: है कि जो जल व्यर्थ में ही

निकल जाता है। वो किसी काम में नही आता तो उसका क्या पुन्य होता है।

कहो इण जग संसार, जक्त में मीठो कांई। तांको करो विचार, कान सुण समझो माई।
घी गुड खांड नीवात, और पकवान बणाया। अे जग मीठा जांण, अरथ बुजिया फरमाया।।
सांचो अरथ बणाय, सुणत सब कोई माने। मीठी जग में चाह, नाम सुखदेव बखाणे ।। ९।।

यह बात बताओ कि संसार में मीठा क्या है इसका विचार करो और कानो से सुनकर अन्दर समझो। घी गुड खांड से कई पकवान बनाये जाते है। अर्थ पूछने पर कहते है कि संसार में यह मीठा है। सच्चा अरथ बनाकर कहते है, सुनने पर सब ही मानते है। लेकिन म:फ: है कि संसार में सबसे मीठी चाहना है।

सुण सादूलो सिंह, जीव केता संग होई। सती जलन कूं जाय, गोत सूं हेत न कोई।।
रण जूंझे रजपूत, वहां को हेत जणावे। नारी ऊपर नार, आप कोई चायर लावे।
जहां ऊपजे बैराग, तहां की मूठ करारी। जन सुखिया तन मझ, जक्त की प्रीत विडारी ।। १०।।

जंगल में असली सोनहरी सिंह के साथ कितने जीव रहते है। सती पति के साथ जलने को जाती है तो अपने गोत्र से प्रेम नही रखती है। राजपूत लडाई में जूझते है वहां कोई किसी से हेत नही रखते है। पहले घर में स्त्री हो उसके ऊपर और कौन स्त्री चाह कर लाना चाहता है। बैराग पैदा होने वाला अपने विचारो में मजबूत रहता है। म:फ: है कि जो जक्त से व अपने शरीर में भी प्रीति नही जोडता है।

भरतरी के बैराग, और गौरख गत जांणी। चिरपट त्यागी न्याय, दत बोल्या सतबाणी।।
गोपीचन्द सत जांण, भरतरी सांच कमायो। शहर उजिणी त्याग, फेर बस्ती नही आयो।।
जांजुली लगी समाद, देह की गम न कोई। जन सुखिया बैराग, जांण ऐसी विध पाई।। ११।।

राजा भरतरी को बैराग हुआ, गोरखनाथ जी ने इस गती को जाना, चिरपट उन्होंने राज का त्याग कर दिया। दतात्रेयजी को सच्चा बैराग हुवा, गोपीचन्दजी ने भी बैराग को सच्चा जांणा। राजा भरतरी ने सच्चे बैराग की साधना की, जिन्होंने उज्जैन को छोडा तो फिर शहर में नही आये। जांजुली ऋषि को समाधि लगी तो शरीर की सुधी नही रही। म:फ: है कि सच्चे बैराग की ऐसी ही विधि है।

<u>रेखता</u> :- मद बैराग की चाल बोह कठिन है, धार कोई निसरे सूर पूरा।
शीष कूं काट शिर हाथ में मेल है, भरम और करम भय डार दूरा।।
आस घर पास काहू जात नही चालकर, जक्त परमोद नही देत कोई।
दुख हर सुख दोय सम कर जाणियो, जग की लाज सब ऐब खोई।
सानियो कहत संसार सुण लोय रे, गांव में टुकडा मांग लावे।।
आखी आध को लेतनी रोटियां, श्वान के कान भर टूक चावे।
नदी की तीर तालाब की पाल रे, टुकडा जल सूं भेय लेवे।।
स्वाद बेस्वाद की बात नही गांठसी, जक्त सुं बोल नही जाब देवे।
नाम मतवाल में रम राता रहे, हर्ष खुशियाल में दिन जावे।
दास सुखराम बैराग इण रीत है, जक्त के पास घर नांय जावे ।। १२।।

म:फ: है कि मद बेराग की चाल पर चलना बहुत कठिन है, कोई पूरा शूरवीर ही इसको

धारण कर निकलता है। माथा कूं काट कर शिर हाथ में लेता इतना कठिन है, भरम करम व भय को दूर रखता है। किसी के पास आशा धारण कर नही जाता, संसार को किसी तरह का ज्ञान नही देता है। सुख व दुख दोनो को बराबर जानता है। जगत की लज्जा रखता हुआ अपने अेबो को खत्म कर देता है। सब संसारी व संसार उसे पागल कहते है। गांव में से टुकडे मांग लाता है एक रोटी व आधी रोटी लेता यानि कुते के कान के बराबर रोटी का टुकडा लेकर नदी व तालाब की पाल पर जाकर उन टुकडो को जल में भिगोकर पा लेते है। स्वाद व बेस्वाद नही देखता है। जगत की बातों को सुनकर उसका जवाब नही देता है। रामजी के नाम की मस्ती में मस्त रहता है, हंसी खुशी में दिन बीतते है। म:फ: है कि बैराग की यह रीति है, संसार में कामना लेकर किसी के पास नही जाता है।

आठ बड पोहोर में ज्ञान ऐसो करे, ब्रह्म ही ब्रह्म एक माया।
पांच पचीस मिल तीन सुण सात रे, पिण्ड ब्रह्मण्ड में देख भाया।।
आत्मदेव सब माय कूं एक है, ब्रह्म कूं चीन तन मांय लिजे।
पंच भूत परमात्मा मिल जहां देखियो, आप सुं बणत सुख जाय दिजे।।
ज्ञान विचार बमेक बोहो भांत है, कहण में कसर ना राख कोई।
चालबो हालबो रहणबो कठिन है, धारबो क्रोड मझ देख भाई।।
दास सुखराम कह वो संत जन ब्रह्म है, मिलत ही भरम सब तिमिर जाई ।। १३।।

रात दिन ऐसा ज्ञान करता है सर्वत्र ब्रह्म ही ब्रह्म और एक माया है। पांच तत्व पचीस प्रकृति के पचीस गुण व तीन सतो, रजो, तमो, गुण सात इन्द्रियां सब पिण्ड में है, वैसे ही ब्रह्मण्ड में है। आत्म ब्रह्म तो सब में एक है, ब्रह्म को शरीर में ही पहचानो। जहां पांचो तत्वो का मेल दिखता है, बणे तो उस जीव को सुख पहुंचावो। ज्ञान विचार व विवेक बहुत तरह के है, कहने में किसी तरह की कसर नही रखता है, लेकिन हाल चाल व रहना बहुत कठिन है। उसके माफिक धारण करना तो क्रोडो में कोई बिरला ही देखा जाता है। जैसे कहते है उसी के अनुसार चलते है, उन संतो में किसी तरह की कसर नही है। ऐसे संतो का अवतार संसार में धन्य है। म:फ: है कि ऐसे ही संत जन ब्रह्म ही है, उनसे ज्ञान धारण करने से भरम व अज्ञान का नाश हो जाता है।

मान मरोड मन मांय छोडे नही, चुप बोहो भांत कर अंग सुवारे।
गहर गम्भीर गुमान मन गांठ में, बात में बात ले पेच डारे।।
आप सतोल व्हे और हलका गिणे, चाह संग बात कूं मोड लावे।
शिष के काज सो संत सूं लड पडे, द्रव की चाह ले पास जावे।।
टेहल कर बंदगी प्रेम परतित सो, भाव गुण सहित ले रिण भाखे।
द्रव बिन चडिया मन माने नही, शिष को पेख दे नांय राखे।।
बैण मुख मांय सूं निसरे पख ले, पूजिया मन सो जोर राजी।
दास सुखराम कह राम शरणे लियो, जात अर न्यात अे मान पाजी ।। १४।।

मान बडाई व ईर्ष्या को मन से नही छोडता है। बहुत भांति से चुपी साधकर अपने शरीर को संवारता है, बडा गहरा गम्भीर व घमण्डी मन में गांठ लगाये रहता है। बातो ही बातो में पेच डालता है। आप सबसे बडा बनता है, दूसरो को नीचा समझता है। मन की जैसी चाहना होती है। बात को

उसी तरफ मोडकर कहता है। शिष्य के काम के वास्ते दूसरे संतो से लडाई कर लेता है। द्रव की ईच्छा लेकर दूसरो के पास जाता है। सेवा बंदगी प्रेम व सचाई से करने वाले भाव व गुणो के साथ अहसान समझते है परन्तु बिना द्रव चढाये इनसे उनका मन नही मानता। शिष्य पर खुश नही रहते। मुंह से वचन ही पक्ष लिये हुये निकलते है, यदि कोई पूजा करते है तो मन में बहुत खुश होते है। म:फ: है कि रामजी का शरणा लिये है जात हर न्यात अे मानपाजी ये काम तो जात व न्यात में रहने वालो की तरह है। इनसे दूर रहना चाहिये।

देह बोहार संसार सा देखणा, मांय सब चूर ब्रह्मण्ड जावे।
साध की बात कहूं अगम अगाध है, जक्त सूं भेद नही अर्थ आवे।।
होत सब बात सो नाम के आसरे, आपकी बात नही थाप कांई।
समंद में आड यूं तिरत जल उपरे, पंख सो नीर नही भिदे मांही।।
तेल कडाव ऊकाल संसार में, सूर विधमान सब मांय देखे।
दास सुखराम इम साध संसार में, दुख हर सुख सब झूंठ पेखे ।। १५।।

शरीर के व्यवहार तो संसारियो के जैसे ही देखने में आते है। शरीर के भीतर सब कमलो को छेदन करते हुए ब्रह्मण्ड में चले जाते है। साधना करने वाले संतो की बात बडी अगम अगाध है। उसका भेद व अर्थ संसारियो को जानने में नही आता। सारी बातें नाम के आधार से ही होती है। अपनी तरफ से किसी बात की थापना नही करते है। पानी में आड जल के ऊपर तिरती है। परन्तु पानी उसके पंखो में नही भिदता याने पानी से पंख गीले नही होते है। संसार कडाई में उकलते हुये तेल की तरह है। सूर्य कडाई में विद्यमान है सब ही उसको अन्दर देखते है परन्तु उस उकलते हुये तेल का सूर्य पर कोई असर नही होता है। म:फ: है कि साधु भी संसार के सुखो व दुखो को झूंठ समझकर उनमें लिपायमान नही होते है।

<u>कुण्डलिया</u> : कीडा के शिर मिण नही, भावे इजगर होय। रतन न पावे खाबडा,
चोडा ऊंडा जोय।। चोडा ऊंडा जोय, रिडकल्या चनण न होई।
मोती भैषे शीष एक आधो नही कोई।। सुखराम कह गृह भेष में,
जहां तहां भक्त न होय। कीडा के शिर मिण नही, भावे इजगर होय ।। १६।।

कीडा कितना भी बडा हो, चाहे ईजगर जैसा भी हो, तो भी उसके शिर में मणी नही होती। रतन पानी के गहरे व चौडे खाबडे हो, उसमें नही मिलते। गांठ गंठीली लकडिया चन्दन के पास रहने पर भी चन्दन मय नही होती। भैसा चाहे जितना बडा क्यों न हो उसके शिर में एक आधा भी मोती नही मिलता। म:फ: है कि गृहस्थ व भेख में जहां तहां सतस्वरूप की भक्ति करने वाले संत नही होते है।

शाह न देखिया ढाणियां, भूप न गांवा मांय, हंस न देख्या खाबड़ा।
झाड़ा में सिंह नाय, झाड़ा में सिंह नाय, गरूड कोई जंगल जोवे ।।
अनल पंख आकाश, भांय पर कदे न होवे, सुखराम कह जहां तहां रे।
पहुंता संत न जाय, शाह न देखिया ढाणियां, भूप न गांवा मांय ।। १७।।

साहूकार ढाणी याने जहां दो चार मकान हो वहां नही देखे जाते। छोटे गांव में राजा नही रहते। छोटे मोटे पानी के खड्डो में राजहंस नही रहते। झाडियां कितनी घेर घूमेर हो उनमें सिंह नही रहते।

गरूडजी को कोई जंगल में देखते है। तो नही होते है। अनल पक्षी आकाश में रहता है। पृथ्वी पर कभी नही आता। म:फ: है कि ऐसे ही जहां तहां पहुंचे हुये संत नही होते है।

साखी : हरि दुरलभ नही जगत में, हरिजन दुर्लभ होय।
हरि हेरया सब ठौर मिले, हरिजन कही एक होय।
।। इति श्री त्याग वैराग का अंग सम्पूर्ण ।।

卐 सुरातन का अंग 卐

रेखता : आगली पाछली सर्व लेखे चढे, मुख का हरफ सो मांड लेवे।
हल हुसियार होय बेग नर ध्याय रे, अगम का सुख तोय राम देवे।।
राम रिजावियां सर्व नर रिजिया, भूप में फोज सब शहर आया।
जक्त जंजाल सुं लाग मत बिसरे, नाम सा हीर ते हर पाया।।
आन बौपार सो छोड दे टांगरो, शाह पद सेठ सो कह लोई।
दास सुखराम गरकाब होय नाम में, जन्म अर मरण जो मिटे दोई ।। १।।

पिछले जन्मों में जो भी कर्म किये है वो सब धर्मराज जी के खाते में लिखे हैं और वर्तमान में भी जो कर रहा है वो भी सब अंकित हो रहे है। इसलिये सावधान होकर जल्दी से परमात्मा का सिवरण कर ले। तो तुम्हें राम परमात्मा के.प. आ. पद का सुख देंगे। रामजी को प्रसन्न करने से सब प्रसन्न हो जाते है। जैसे राजा के प्रसन्न होने पर फौज व शहर वाले सब प्रसन्न हो जाते है। जग के प्रपंच में पडकर परमात्मा को मत भूल, परमात्मा का नाम रूपी हीरा सतगुरु विधि से भजन करने पर तुझे प्राप्त हुवा है यही हेर कर पाना है। आन की भक्ति करना पीठ पर उठाकर बेचते रहने की तरह है इसको छोडकर बडा व्यापार करने वाले सब सेठ साहुकार कहलाते है। म:फ: है कि इस तरह आन की भक्ति टांगरा फेरने की तरह है उसको छोडकर सतस्वरूप आ:पद की भक्ति करना ही नाम में गरकाब होना है। इससे ही जन्म मरण मिटता है।

जन्म हर मरण मिटावणो दुर्लभ है, बादशाह शीष कोऊ चाल आवे।
सात सर लंघ के पार पेलो लेहे, तीन नवखण्ड कूं जीत जावे।।
लाख नव लाख के बीच में भूप है, फोज कूं चूर निसाण पावे।
बाग बन मांय जहां जाय डेरा करे, पांच कूं घेर घर मांय बाडे।।
लाय की लपट जो झपट माने नही, ब्रह्म में चित चमकार जावे।
दास सुखराम या विध जन जितसी, जन्म संसार में नांय पावे ।। २।।

जन्म मरण को मिटाना बडा मुश्किल है, जैसे बादशाह के पास पहुंचना बडा मुश्किल है याने सत स्वरूप आ:पद बडा दुर्लभ है। सात इन्द्रियों को वश में करके सतशब्द के साथ भक्ति करना ही पार पेलो लेहे है। इस तरह भक्ति करने से खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड व नवखण्ड व लाखो नाडियो के बीच में शब्द का अनुभव करता हुवा, सब वृतियो को वश में करके, संसार में से विरक्त होकर बैराग याने राग द्वेष को छोडकर, पांच विषयो को काबु करके, काम क्रोध मद मोह अहंकार को वश में करके, ब्रह्म की भक्ति आत्मचेतन के आधार से सतशब्द की भक्ति चित लगाकर करना ही

चित चमकार जावे है। म:फ: है कि सतगुरु विधि से भजन कर के:पद आ:पद की प्राप्ति होने से ही संसार में जन्म नही लेना पडता है।

ब्रह्म की भक्त संत सूर जन साजसी, मुर मुरदाय ते नांय होवे।
कायरां कपटियां कोश हजार है, दुज घट नांय निताह जोवे।।
करत स्नान शिर पाव सब केशरिया, तुरंग पर जीण घर आस मेले।
आगली पाछली अेक व्यापे नही, सूर जन फोज में फाग खेले।।
मरण की आश नही जिवणो जुग में, श्याम के काज सो शीष देवे।
दास सुखराम सो संत जन सूरवा, ब्रह्म का सुख बेहद लेवे ।। ३।।

शूरवीर संत ही ब्रह्म की भक्ति करते है। बिना प्रेम भक्ति नही होती यही मूर मूरदार ते नही होना है। जिनकी भक्ति करने की इच्छा नही है व कपट रखने वालो से हजारो कोसो दूर है। ब्रह्म को बाहर ढूंढते है। घट में ब्रह्म का ध्यान नही करते। शूरवीर स्नान करके केशरिया पोशाक पहनकर घोडे पर जीण कस कर सब आशा त्यागकर आगे पीछे का विचार नही रखते हुये लडाई के मैदान में दुश्मनो से लडना ही फाग खेलना है। मरने का डर नही है न ही जीने की आश है। अपने मालिक के वास्ते शीष को दे देते है। म:फ: है कि इसी तरह जो शूरवीर संत होते है वो शूरवीरता से भक्ति भजन कर ब्रह्म का सुख बेहद लेवे याने पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति करते है।

तन अरू मन संत सूर जन सूंपसी, आस बेआस जुग नांय राखे।
होय नचीत निसंक निरपख रे, बैण बतलाय बतलाय भाखे।।
खडग जन बावता मुख जन भल हले, धिन ओतार जग आज मेरा।
जोवता दिन सो मान ओ आवियो, कर्म सुण काटस्युं शीष तेरा।।
श्याम कूं लूण सो आज उज्जाल सुं, जोवता बाट पुल नीट आई।
दास सुखराम गड़ीर दे फोज में, बावंता होय सो होय भाई।। ४।।

शूरवीर संत ही तनमन से भजन करते है। जगत में किसी तरह की आशा नही करते। सांस उसांस में भजन करते हुये एक भी श्वांस खाली नही जाने देते। बिना शंका के निश्चित निरपक्ष होकर ज्ञान करना ही बेण बतलाय बतलाय भाखना है। इस तरह शूरवीरता से भजन करने से मुख पर तेज प्रकट होता है। अपने जीवन को धन्य समझता है। जो मनुष्य जन्म की इच्छा अनेक जन्मो से करते थे। वो आज मिल गया, अब सब करमो का नाश करना ही कर्मो का शीष काटना है। परमात्मा का नमक आज उजागर करूंगा। मनुष्य शरीर बहुत बहुत इन्तजार के बाद अब मिला है। म:फ: है कि इस तरह रात दिन भजन करना ही फोज में गडीर देना है। जो उससे होना होता है वो ही हो जाता है।

जीत जुग मांय सो साबतो निसरे, मोज करतार सो तोय देवे।
भक्त जुं मुक्त का अटल अस्थान है आपका आप में मेल लेवे।।
सुरग पाताल भूलोक में संत कूं, नाम विस्तार हर जोश राखे।
दीप नवखण्ड नार नर मानवी, पछे जीव ले जस भाखे।।
आपका सुख ले सर्व आगे धरे, सूर पे श्याम जो हात जोडे।
दास सुखराम सुण सूर की बात रे, लाख दल फोज कूं एक मोडे ।।५।।

जगत के सब शुभ अशुभ करणी कर्मो से अलग होकर भजन करने से ही के:पद आ:पद की प्राप्ति होना ही करतार का मोज देना व अपने आप को अनुभव होना है। तीन लोको में व नवखण्ड में सब ही स्त्री पुरूष व मनुष्य ऐसे शूरवीरता से भजन करनेवाले संतो की महिमा करना ही जस गाना है। आपके सब सुखो को छोडकर जो शूरवीर संत भजन करते है उन पर परमात्मा की पूर्ण कृपा होना ही सूर पे श्याम हात जोडना है। म:फ: है कि लाखो फोजो को एक शूरवीर जीत लेता है। ऐसे ही शूरवीर संत लाखों करमों का नाश कर देते है।

सूर हर वीर के कौन आडो फिरे, ताके शिर आय को बैण बोले।
भाग शिर लाय में धाय को डाकसी, जलत जाफील सो कौन खोले।।
सत तिण नार में सांच प्रकाशियो, मद मेंमंत ज्युं कुंज होई।
ईन्द्र की फोज सो ब्रह्मा के बचन रे, उलट ना फेर सो देत कोई।।
चन्द्र रवि पवन के कौन आडो फिरे, गंग जुं जमन उलटाय घेरे।
दास सुखराम यूं संत जन, सूर के, बापड़ी जक्त सो कहा फेरे ।। ६ ।।

शूरवीर के कौन आडा फिर सकता है। उसके सामने आकर कौन बोल सकता है। धधकती अग्नि में कौन डाक सकता है। जलती अग्नि में जाकर कौन किवाड खोल सकता है। जिस स्त्री में सत प्रकट हो जाता है वो स्त्री मतवाले हाथी की तरह सती हो जाती है। इन्द्र की फोज व ब्रह्मा के वचन को कौन फेर सकता है। सूर्य, चन्द्रमा के, हवा के कौन आडा फिर सकता है। गंगा जमना के बहाव को कौन उलटा सकता है। म:फ: है कि सच्चे शूरवीर संत को जगत के मनुष्य भक्ति भजन करने से कौन रोक सकते है।

सूर मन मांय सो शंक नही उपजे, जाय दल मांय सो करे भेला।
शेल धमकार शिर केता सहे, लोथ जूं पोथ युं करे मेला।।
घाव में घाव तरवार की गोलियां, तन सो घोडल्यो होय जावे।
संत जन सूर की सुरत आगे रहे, पाछली मन में नांय आवे।।
जूंज दल जीत संत शूर भू गीरत रे, लेस लिगार मन नांय आवे।
दास सुखराम संत सूर के पड़त रे, परी अशमान बर लेर जावे ।। ७ ।।

शूरवीर के मन में शंका पैदा नही होती याने डर नही होता, लडाई के मैदान में जाकर लडाई करता है, कितने ही हथियारो के घाव सहते लडाई करते रहते है। घाव पर घाव तलवार के, गोलियां लगकर शरीर में खड्डे पड जावे, यही गोडल्या होना है, तो भी वो लडते रहते है। ऐसे ही सच्चे संतो की सुरत भक्ति में ही लगी रहती है, पीछे का कोई विचार नही करते, इस तरह शूरवीर लडाई लडकर वीरगति प्राप्त करते है। मन में किसी तरह की कायरता नही आती, ऐसे ही शूरवीरो को परी बर कर अशमान में ले जाती है और ऐसे ही सच्चे संतो को खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड व पारब्रह्म से ऊपर के:पद आ:पद की प्राप्ति होती है।

सूर कूं लाज लिगार नही आवसी, सनस संका नही मन मांही।
होय निसंक निराट चढ आवियां, फोज में रमें युं खडग छांही।।
सोज दल सूर बिरोलसी सेंगरे, सूर शिर सेवरो तबे आवे।
आपका और सो सर्व महिमा करे, धिन संत भूप ए दास कहावे ।।

और परमोद सो आंण माने नही, सूर का अंग सो अेक होई।।
दास सुखराम कह संत जन सूरवां, जाय निशाण पे भिडे जोई ।।८।।

शूरवीर को लडाई लडने में जरा भी लज्जा नही आती है और न ही जरा सा भी डर रहता है। निश्चित होकर चढाई करके फोज में तलवार चलाते है। सारी फौज को सोधकर खत्म कर देते है तभी उसको शूरवीर कहते है। आप व दुश्मन के पक्ष वाले सभी उसकी महिमा करते है। ऐसे ही शूरवीर संतो की सारा जग महिमा करता है। शूरवीरों का व संतो का अंग एक ही है। शूर लडाई के मैदान से अलग नही हटते। संत भी एक क्षण भक्ति से अलग नही होते। म:फ: है कि यही संतो का व शूरवीरों का निशाण पर भिडना है।

सोइ जन सूरवां डर माने नही, पुठ सो भूल कहूं नांय फेरे।
बहुत दल मांय सो खडग गाडी रहे, बाय बुहाय शिर बहुत जेरे।।
मन मेहमत गजराज कूं थोब है, जड़त जंजीर सो पांव मांही।
ईडग निशाण जन खेत में गाड के, लडन की बात सब और नांही।।
जूंजूता जोस मन चोल बोला रहे, हर्ष हुसियार हमगीर होई।
दास सुखराम सो संत जन सूरवां, मोरचो मांड नही मुचे कोई ।।९।।

जो किसी का डर नही रखते, भूलकर भी पीठ नही फेरते। बहुत फोजे होते हुये भी हाथ में मजबूती से तलवार पकडी रखते है। जोर से चलाकर बहुत सो को खत्म कर देते है। वो ही शूरवीर है। मन में लडाई लडने के सिवाय दूसरे विचार नही आना ही मन रूपी हाथी के पांव में जंजीर देना है। व खेत में इडग निसाण गाडना है। मन लडाई के समय जोश व उमंग में रहता है। हर्ष के साथ होशियारी से लडते है। म:फ: है कि सच्चे संत रात दिन अच्छे विचार व वृत्तियां धारण कर भक्ति करते है, यही मोरचा मांडकर नही हटना है।

शूर शमशेर कर हाथ भालो लियो, खडग कूं बैग मंगाय लेवे।
बाजिया ढोल सो ढील नही बात रे, हाथ को कोर सो छिटकाव देवे।।
होय असवार दल मांय भेला करे, राड को हुक्म सो मोय दीजे।
आपके तेज प्रताप सूं जूंजणो, दास की विनती मान लीजे।।
बैण महाराज को मुख सुणंत सो, शूर दल मांय सो करे भेला।
दास सुखराम सो संत जन सूरवां, रमे नादान ज्युं फाग खेलां ।।१०।।

शूरवीर हाथ में तलवार व भाला लिये हुये खडग को जल्दी मंगा लेते है, जुजांउ ढोल बजते ही बिल्कुल भी देर नही करते। भोजन करते हुये हो तो हाथ का कुआ भी छोड देते है, घोडे पर सवार होकर दल में जा मिलते है व लडाई करने का हुक्म चाहते है और कहते है कि आप के तेज व प्रताप से ही लडाई करूंगा। मेरी प्रार्थना मान लीजिये। मालिक के वचन सुनकर शूरवीर लडाई करता है। म:फ: है कि जिस तरह नादान फाग खेलते है वैसे ही शूरवीर लडाई के मैदान में लडते है तथा संत हर समय भजन में लगे रहते है।

नाम शमसेर कर धीर की ढाल रे, सूरत का बाण निज फेंक सूरा।
ज्ञान गजराज बैराग के उपरे, होय असवार कर सर्व दूरा।।
तत्त का तीर हर ध्यान कर धनख रे, पवन की पणच्छ चढाय दिजे।

मन की मूठकर चित का चाबका, निरत सुं निरख अघमार लिजे।।
शब्द की तोप कर भेद गोला भरे, ज्ञान के मोरचे मांड दिजे।
दास सुखराम गढ भरम कूं ढाय रे, ब्रह्म को देश सो जाय लिजे ।। ११ ।।

संतो के नाम की तलवार व धीरज की ढाल है। सुरत लगाकर भजन करना ही सुरत का बांण फेंकना है। ज्ञान बैराग रूपी हाथी पर चढकर व विकारों से दूर होकर ब्रह्म प्राप्ति का ज्ञान करना ही तीर चलाना व ध्यान करना ही धनुष रखना है। सांस उंसास में भजना करना ही बांण के पुणच्छ लगना है मन व चित लगाकर भजन करना ही मूठ व चाबुक लगाना है। निरत लगाकर भजन करने से ही पापों का क्षय होता है। सतगुरु के ज्ञान के माफिक भेद से भजन करना ही शब्द की तोप व भेद का गोला व ज्ञान का मोरचा मांडना है। म:फ: है कि भरमों का नाश कर के: पद आ: पद की प्राप्ति करना ही ब्रह्म के देश में जाना है।

।। इति श्री सूरातन का अंग सम्पूर्ण।।

卐 बाल लछ का अंग 卐

और बात सब जक्त में, देखकर करे ऊपाय।
बाल साद सुखराम केह, कौन सिखावे आय ।। १ ।।

जगत में सब बातें देखकर उसके उपाय किये जाते है। म:फ: है कि बालक को कौन आकर सिखाता है।

मां मुख हांचल देत है, फिर कर लेत संभाय।
खांचण कल सुखराम कह, किणी सिखाई आय ।। २ ।।

माता बालक के मुंह में आंचल देती है फिर हाथ के सहारे रखती है। म:फ: है कि मुंह से दूध खेंचने की कला किसने आकर सिखाई है।

लिंग मुख नाडो उतरे, गुदा टले मल आहार।
बाल समय सुखराम कह, ओ कुण दियो विचार ।। ३ ।।

लिंग के मुख से पेशाब उतरता है गुदा से मल छूटता है। म:फ: है कि बालक अवस्था में यह विचार किसने दिया है।

सुरत निरत मन सुध नहीं, तो नर कह न कोय।
बाल लछ सुखराम कह, किणे सिखायो मांय।। ४ ।।

यदि सुरत निरत मन सुद्ध नहीं है तो मनुष्य कुछ नहीं कह सकता है। म:फ: है कि बालक को यह लक्षण किसने सिखाया है।

काना सुणे न सांभले, दिष्ट न आवे लोय। मात गरभ सुखराम कह, छाड़ तुरत दे रोय ।। ५ ।।

न तो कानो से सुनता सांभलता है न संसार दृष्टि में आता है। म:फ: है कि माता के गरभ को छोड़ते ही तुरन्त रोने लग जाता है।

पीछे सब संगत भई, गुरु सतगुरु जग मांय।
बाल समय सुखराम कह, किणे सिखायो आय ।। ६ ।।

पीछे बडा होने पर जगत में गुरु सतगुरु का साथ हुआ। म:फ: है कि बालकपने में किसने आकर सिखाया है।

गर्भवास नव मास लग, किण राख्यो बिलमांय।
पीछे सुण सुखराम कह, किण कहयो तुं जाय ।।७।।

माता के गर्भ में जो नो महिने तक किसने बिलमाकर रखा था। म:फ: है कि फिर किसने कहा तूं गर्भ से निकल जा।

उण समय संग सो गुरु, फेर चले अन्त लार। दुजी सब सुखराम कह, संगत सरस विचार ।।८।।

उस समय उसके साथ जो गुरु थे, अंत तक साथ चलते है, वो ही सतगुरु है। म:फ: है कि दूसरे गुरु की तो संगत श्रेष्ठ है।

से गुरु सब ही चिनज्यो, गर्भवास में संग। नख चख कर सुखराम कह, प्राण चढाया रंग ।।९।।

उन गुरु को सब ही पहचानो जो गर्भवास में साथ थे। म:फ: है कि जिन्होंने नख चख से लेकर व प्राणों में रंग चढाया है व सारा शरीर बनाया है।

प्रांण पुरूष को राखियो, गर्भवास में मान।
सो सतगुरु सुखराम कह, सुध बिन दियो ज्ञान ।।१०।।

जिन्होंने गर्भवास में प्राण पुरूष को रखा था। म:फ: है कि वे ही सतगुरु है जिन्होंने, बिना सुधी थी तब ज्ञान दिया था।

शिष जेले गुरु कहत है, अेतो भया अनेक।
सतगुरु सो सुखराम कह, आद अन्त संग पेक ।।११।।

गुरुजी ज्ञान देवे शिष्य उस ज्ञान को ग्रहण करे ऐसे तो जगत में अनेक हो गये। म:फ: है कि जो आदि से अन्त तक साथ रहते है। वो ही सतगुरु है।

ना बिछडया नां बिछडे, सदा संग गुरुदेव।
ऊण गुरु की सुखराम कह, करो नित प्रति सेव।।१२।।

वे सतगुरु सदा साथ रहते है न तो वे कभी बिछडे है ना बिछडेंगे। म:फ: है कि उन सतगुरु की हमेशा भक्ति करो।

गर्भवास में राखियो, बालपणे सुण लोय।
सो गुरु कूं सुखराम कह, भूल्या भलो न होय।।१३।।

जिसने बालकपने में गर्भवास में रक्षा की थी। म:फ: है कि उन सतगुरु को भूलने से भला नहीं होता है।

जुग जुग में संग साथ रमे, सो गुरु मोय बताय।
सुण ज्ञानी सुखराम कह, और गुरु जग मांय ।।१४।।

उस गुरु को मुझे बताओ जो हरेक जुग में साथ रहता है। म:फ: है कि ज्ञानियों सुणो और गुरु तो जगत में ही है।

जीव पलट अब मन भयो, गुरु किया जग मांय।
बालदशा में ज्ञान दे, सो मुझ गुरु बताय ।।१५।।

जब जीव पलट कर मन होता है जब जगत में गुरु करता है तो बालक अवस्था में ज्ञान देता है उस गुरु को मुझे बतावो।

अरध उरध के बीच में, बसे सिखावण हार।
सो सतगुरु सुखराम कह, निरखो उनमुनी धार ।। १६ ।।

उठते बैठते हुये स्वांस के बीच में सिखाने वाला रहता है म:फ: है कि वे सतगुरु है उसको उनमुनी धार याने बिना प्राण बिना मन के आत्मचेतन के आधार से सतशब्द का अनुभव होता है, यही निरखना है।

।। इति श्री बाल लछ का अंग सम्पूर्ण।।

卐 ने: करमी का अंग 卐

बलवन्त गयो जो न्हास, तांही भागो मत जांणो। धनवन्त मांगण जाय,
ताय मत भिक्षक पिछाणो। जड़ी सजीवण पास, मरण को भै नहीं आवे।
पंछी ऊडे आकाश, पकड कहो कुण ले आवे।। सुखराम आड जल में तिरे,
युं नर परा भिदे न कोय। ज्ञान जोग जहां उदत है, करम ग्रेण नहीं होय।। १ ।।

बलवान मनुष्य भाग जाता है। तो उसको भागा हुवा मत समझो। धनवान मांगने जाते है तो उसको भिक्षुक मत समझो। जिनके पास संजीवणी जडी हो उसे मरने का डर नहीं, पक्षी आकाश में उडता है उसको पकडकर कौन ला सकता है। म:फ: है कि आड पक्षी जल में रात दिन तिरता है। तो भी उसके पर नहीं भीजते। ज्ञान जोग जहां उदय होता है। वो सब कर्मो से अलग हो जाता है व नये कर्म बंधन नहीं होता, खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड से ऊपर निराधार सतशब्द अखण्ड रात दिन अनुभव होता है। वो सब करणी यानि शुभ अशुभ कर्मों से अलग है, यही ज्ञान जोग है, जो करणी कर्मों से रहित है।

कुण्डलिया :- समदृष्टि जे संत जन, करत कुटुम्ब प्रतिपाल। बायर रूच भिजे नहीं,
धाय चुगावत बाल ।। धाय चुगावत बाल, पाहण चकमक जल मांही,
काष्ट आग प्रकाश, आड पर भीजत नांही।। सुखराम कनक विज्ञान के,
करम न जुंबे काल। समदृष्टि जे संत जन, करत कुटुम्ब प्रतिपाल ।। २ ।।

समदृष्टि संत सबको समान दृष्टि से देखते है। जो बालक को दूध पिलाकर उसका पालन पोषण करती हुई भी उसको अपना नहीं समझती, ऐसी धाय के समान है। यहीं बाहर रूच नहीं भीजना है। चकमक का सफेद पत्थर कितने ही समय तक पानी में पडा रहे और पानी से निकाल लोहे की रगड निकालते ही अग्नि पैदा हो जाती है। लकड़ी को लकड़ी से रगडने से आग प्रकट हो जाती है। आड पक्षी रात दिन पानी में रहने पर उसके पर नहीं भीजते। म:फ: है कि सोने के काट नहीं लगता, ऐसे ही विज्ञान याने सत स्वरूप आ: की भक्ति करने वालो के न तो कर्म लगते है। न काल आता है जन्म मरण से छुटकारा हो जाता है यही काल का नहीं जुमना है।

कवित :- प्रकट पुतली जांण, पिंजर बाजीगर बोले। भरमाये भगवन्त, भरम टाटी के ओले।।
रचना भ्रमत, रिषी मिश्र काजी कहो क्या करे। पीपल बांधी पछे, जंगली जन तो न्यारे।।
बीण बखाणे बाजती, बंदर ज्युं बांदी बसु। सुखराम रचना इसी, क्या जांणे बापड़ा पशु।। ३ ।।

प्रगट याने चोडे तो पुतली नाचती कुदती बोलती नजर आती है। परन्तु उसका सूत्र बाजीगर

के हाथ में है। जैसे वह उसको नचाता है वैसे पुतली नाचती है। इस तरह सृष्टि कर्ता परमात्मा ने भरमों की टाटी के पीछे भरमों में डाल रखा है। परमात्मा ने संसार की ऐसी रचना रची है। बिलकुल असत होते हुये सत मालूम पड रही है। यही उसकी रचना से भ्रम में पड रहे है। एक बाजीगर ने पीपल के पेड के रस्सी बांधकर तमाशा देखने वालों की नजर को बांध दिया, जिससे खेल देखने वाले को यह मालूम पड़ रहा है कि रस्सा बाजीगर की कमर में बंध रहा है। इतने में एक आदमी जंगल से घास का गठ्ठर लेकर आया जिसमें ऐसी जडी थी जिससे उसकी नजर नहीं बंधी। उसने देखने वालो से कहा तुम सब अंधे हो रहे हो। यह रस्सा पीपल के बंधा हुवा है। यह पीपल का पेड तुमसे खिंच सकता है। इस पर बाजीगर ने कहा मेरे पेट पर लात क्यों मारता है। अपने रस्ते लग। बाजीगर डमरू व बीणा बजाकर बंदर को वश में कर लेता है। अब बाजीगर उसे जैसे नचाता वैसे वह नाचता है। म:फ: है कि परमात्मा ने संसार की रचना ऐसी ही रची है, इसे संसारी मनुष्य कैसे जान सकते है।

पारब्रह्म बादशाह, संत शाहजादा सच्चा। परजा डंडे खुशहाल,
काल कैसे रखा बचा।। माया बडी भुजंग, विष मुख कीलत चेरा।
नाग निवण मुख नांव, काल के गारडु गुरु सनेरा।। जन जंबूरा ना बंधे,
कहो रचना किसकी रची। सुखराम दास गेवर गिडे, जल आधार जीवे मच्छी।। ४।।

पारब्रह्म का पद बादशाह की तरह है, और ओधाधारी संत बादशाह के सच्चा शहजादा है। प्रजा बार –बार जन्म मरण का दुख भोग रही है, उसे कैसे खुशहाल रखे, उसे काल से कैसे बचा कर रखे, इसका ज्ञान संत देते हैं। माया सर्प की तरह है। उसके मुख में विषय रूपी जहर हैं। संत विषयों से अलग हो जाते है। यही सर्प को किलना है। परमात्मा का नाम ही सांप का जहर उतारने वाली नाग निवण बूटी है। सतस्वरूप आ:पद का ज्ञान देने वाले गुरु ही सांप का जहर उतारने वाले गारडू है। परमात्मा की भक्ति करने वाले जन माया को असत समझते है। जैसे बादीगर का जबुंरा बादीगर की बादीगरी को जूंठी बतलाता है। वो उसकी बादीगीरी में नहीं बंधता। ऐसे ही संत माया के फंदे नहीं फंसते, संत यह जानते है कि रचा हुआ संसार झूंठा रचा हुआ है। इसलिए इसको सत नहीं मानते। म:फ: की हाथी बहुत बडा शरीर वाला भी पानी की धार में बह जाता है और मच्छी पानी की पडती हुई धार पर ऊपर चढ जाती है क्योंकि उसे पानी का ही आधार है। ऐसे संतो के परमात्मा का ही आधार है वो परमात्मा की भक्ति करके परमात्मा में जा मिलते है।

।। इति श्री ने: करमी का अंग सम्पूर्ण।।

卐 वाय निरणा का अंग 卐

कवित :- कोरम किरकल नाग, देवदत धनंजे होई। पान अपान हुलाश,
चुपक चेत्रक केहे सोई।। तेज खुलाशा जोश, भ्राण बैकण शीष हीरं,
शब्द संगम सुख प्राण, बिरग खास तरंग धीरं। धुरम धुन तत वाय,
फेर चौरासी जाण, सुखराम उलट ऊंची चढे, ज्यां तत मूल बखाण।।

अरथ भाषा में :- कोरम से आंख फरके, किरकल सुं छीक आवे, नाग सुं डकार आवे, देवदत

सुं उबाक आवे, धनंजय सुं मुवा पिछे सूजे, पान सुं बाव सुरे, अपान सुं मल झडे, हुलास सुं मन हुलसे, चुपक सुं दरवाजा जडीजे, तेज सुं दरवाजा खुले, खुलाश सुं दिल खुले, जोश सूं तामश आवे, भिरन सुं भरम उठे, बेकण सुं जीव बेके, सिस सुं समता आवे, हिरंग सुं हरषश उपजे, शब्द सूं बोले, सुषमणा सुं संगम होय, सुषम सुं सांच आवे, पियंग सुं उलाक आवे, विरंग सुं बिरह ऊपजे, खासंत सुं खैखार आवे, रग सुं बिरज उतरे, धिरग वाय सुं धात लागे, धूम से अनहद गाजे, धुन वाय से धूजे, तत वाय से तलब लागे, तत मूल वायु उलट ऊंची चढे ज्यां सुं पैदा हुई तिण में जाय मिले चौरासी वाय है, तिकण में अठाइस बडी, तिण में चौदे बडी, तिम में सात बडी, तिण में पांच बडी, तिण में अेक बडी, तत मूल बाय बडी ब्रह्म सुं ऊपनी, तत मूल खोज ब्रह्म चढे सो ब्रह्म कहाय।

।। इति श्री वाय निरणा का अंग सम्पूर्ण।।

卐 संचत का अंग 卐

रेखता : रमता राम सब मांय जुं अेक है, आत्मा बहुत विस्तार होई।
ऊंच अर नीच जो करम विस्तार है, प्राण के संग सुख दुख दोई।।
ब्रह्म की दिष्ट सो द्रव ज्युं जाणिये, भेद विध सीख सो राछ किया।
घाट जूं बाद ता मांय फल उपजे, करण करतूत सोइ फल लिया।।
बैर नहीं भाव सो ब्रह्म के हेत रे, तारबो मारबो नहीं कोई।
खेत करसाण के भाग सुं निपजे, ऊधम विस्तार बोहो भांत होई।।
नीर अर नाज ज्युं राम करतार है, वृछ की छांय सुख भेद देवे।
दास सुखराम कह धरम अर करम रे, नरग हर मोख नर ध्याय लेवे।। १।।

जो रामजी सब में रम रहे है वे तो सब में एक ही है, यह सब दिखने वाला पसारा आत्म चेतन का है। यह सब अलग-अलग है, जैसे मनुष्य कर्म करता है उसी तरह उसको अच्छे बुरे फल मिलते है। शरीर धारण करने पर सुख दुख दोनों साथ रहते है, यही प्राणों के संग सुख दुख होना है। ब्रह्म का पद तो द्रव याने सोने की तरह है, जैसे गहना बनाया जाता है वैसा ही बन जाता है। ऐसे ही जीव जैसे अच्छे बुरे कर्म करता है वैसी ही योनि मिलती है, यही फल मिलना है। ब्रह्म के पद में न तो किसी से बैर है, न भाव है, उस पद में तारना मारना नहीं है। खेती करने वाले किसान के भाग्य में होता है वैसी ही खेती पैदा होती है, परन्तु खेती में जितनी ज्यादा मेहनत करता, उसी माफिक खेती पैदा होती है। कम करता है तो कम होती है, ज्यादा करता है ज्यादा होती है। खेती करने वालो के नाज व पानी तो एक सा ही है, ऐसे ही जो जैसी भक्ति व साधना करता है, उसको वैसा ही फल मिलता है। जैसा वृक्ष होगा वैसी ही छाया होगी, अेरन्ड के अेरन्ड सरीखी व आम के आम के सरीखी छाया होती है। म:फ: है कि जो जैसा साधन करता है उसे उसी माफिक फलों की प्राप्ति होती है मोक्ष प्राप्ति का साधन करता है तो मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है, कर्मबन्धन करता है तो नरक मिलता है।

गेब की बात अचाण चूक है, व्हे आगलो अंश आंकूर होई।

गाडिया द्रव नर पावियो पार बिन, तुरत बोहो काज नर करे कोई।
आगली पाछली आंण के प्रगटे, जीव इण हाथ सुं तका किवी।
देव पद रीज औतार सब विष्णु रे, साज कोई धरम या रीज लिवी।।
रीत या विध अेनाण सो देखिये, आगली यहां अब वहां होई।
दास सुखराम कह नाम आराध में, ढील अर ढालमा करो कांई।। २।।

पूर्वजन्म में केवल की भक्ति व भजन किया हो, परन्तु उस जन्म में पूर्ण स्थिति नहीं हुई हो तो इस जन्म में भक्ति भजन करने पर जल्दी सफलता मिल जाती है व परमपद की प्राप्ति हो जाती है। जैसे किसी को गडा हुआ धन मिल जाता है तो संसार का जो भी काम करना चाहे उसी समय हो जाता है। पूर्व जन्म जैसी करणी व कर्म किया हुआ होता है। उस संस्कारों से इस जन्म में भी वही कर्म करता है। देवता अवतार विष्णु की जिस जिस की भक्ति करता है वैसा वैसा ही फल मिलता है। इस काम की भी यही रीति व विधि है, अगले जन्म के कर्मों का फल यहां भोगता है, यहां किये कर्मों का फल अगले जन्म में भोगना पडेगा। म:फ: है कि इसलिये निज नाम का भजन करने में ढील मत करो।

आगले पूर सुं बेग अब प्रगटे, अब की आगली जुग मांही।
होय हुशियार नर कसर मां राख्ज्यो, रती जो मूंग नहीं अेल जाही।।
खेत में जाय नर नेक सो काम करे, देनगी सेर कहूं पाव दिया।
झाड़ झड़काय सब खेत सुलजावयो, मुजरे दाम सो दाम लिया।।
चाकरी करत को बरष चढ जात है, एक सो मास की मास लेवे।
आवती साल सब भूप चूकावसी, सब को दाम सो दाम देवे।
खून बे चाकरी पाडसी बीच में, दिन को दिन नहीं पलक छाने।
दास सुखराम कह रटे निज नाम रे, राम महाराज सो सरब जाने ।। ३।।

अगले जन्म में किये हुये कर्मों का फल यहां मिल रहा है। इस जन्म में कर्मों का फल आने वाले जन्म में मिलेगा। प्राणियों से म:फ: है कि होशियारी के साथ अच्छे कर्म करने में कसर मत रखो किये हुये कर्मों का फल रती व मुंग बराबर भी निरर्थक नहीं जाता है। जैसे कोई मनुष्य खेत में काम करता है उतनी ही मजदूरी मिलती है। जो सारे खेत के कांटे कीले निकालकर साफ कर देता है। उसको उस माफिक दाम मिल जाता है। किसी को काम करते करते साल भर हो जाता है। कोई महिने के महिने ले लेते है। अगले जन्म में किये हुये कर्मों का फल भोगना ही दाम का दाम देना है। जैसे कोई काम में गैर हाजरी करता है तो उसका वेतन कट जाता है। म:फ: है कि जो निज नाम की भक्ति करते है उसको रामजी सब जानते है।

<u>साखी</u> :- सुखिया बाय असाढ की, चाम सोवनी जाय।
जहां बैठा हल छोड़ के, वे काती में पिस्ताय।। १।।

किसान के लिए असाढ का महिना सोवनी चाम है। जो उस समय में हल छोड़कर बैठते है उनको काती में पछताना पड़ता है क्योंकि साख पैदा नहीं होती। ऐसे ही जीव को मनुष्य शरीर मिलना असाढ महिना व सोवनी चाम है, इसमें भजन नहीं करने से चौरासी व नरको का दुख भोगता है यही काती में पछताना है।

काती में सुखराम कह, खुशी हुवे नर लोय। जेठ असाढा दौडिया, जांका अे फल होय ।। २।।

काती में फसल पकने पर मनुष्य व संसारी खुश होते है। म: फ: है कि जिन्होंने जेठ असाढ में आलस्य को छोड़कर मेहनत की थी उसका ही यह फल मिला है।

आगे कुछ कियो नहीं, अब कुछ कियो न जाय।
ओ तोटो सुखराम कह, आगो लग घर मांय।। ३।।

हे प्राणियों आगे भक्ति भजन नहीं किया न ही अब किया जा रहा है। म:फ: है कि यह नुकसान तुम्हारे घर में आगे से आगे चलता रहेगा।

करणी करसण जीमता, जे कसर रह जाय। तो भुंचे सुखराम कह, जहां तहां आगे आय ।।४।।

करणी करने में व खेती करने में व भोजन करने में कसर रह जाती है तो इसका दुख आगे उठाना पड़ता है।

सुखिया नर तन पाय के, भज्यो न शीरजणहार। पिस्तावेगो प्राणियां, अन्तकाल की बार ।।५।।

म:फ: है कि हे प्राणी तुझे अन्त समय में पछताना पडेगा। तुम्हे मनुष्य शरीर मिला फिर भी सृष्टि कर्ता रामजी का भजन नहीं किया है।

मरतलोक में मानवी, देवलोक में देव। सुखिया सब पिस्तावसी, भूला हर की सेव ।। ६।।

म:फ: है कि मृत्युलोक में मनुष्य व देवलोक में देवताओं को सब को पछताना पडेगा। जो परमात्मा की भक्ति भूल रहे है।

।। इति श्री संचत का अंग सम्पूर्ण।।

卐 मिश्रित विषय का अंग 卐

कवित : अणभै ऊर संग फोज, अर्थ आवध कूं भाया। चर्चा घूरे निशाण,
तोप दृष्टान्त कहाया।। ज्ञान भेद अमराव, राग सिंधु जस गावे।
मत फोजा में सूर, जोर समसेर बजावे।। अे फोजा जिण पास है,
जासुं जुटे न कोय। सब ज्ञानी सुखराम कह, कर धर सन्मुख होय ।। १।।

संतो के अणभै ज्ञान का साथ होना ही फोज का साथ होना है, और अरथ करना ही हथियार है, चर्चा करते है वो ही निशाण याने ध्वजा फरकना है, दृष्टान्त देना ही तोप का चलाना है, ज्ञान का भेद बताना ही अमराव है। परमात्मा के गुणानुवाद राग से गाना ही सिंधु राग सुनाना है। सतसरूप के ज्ञान में मति दृढ होना ही शूरवीरता है तथा दूसरों को भी सतसरूप आ:पद का ज्ञान देना ही जोर से शमशेर चलाना है। जिन संतों के पास ये फोजे है उनसे कोई लड नहीं सकता है। म: फ: है कि सब ज्ञानी हाथ जोड़कर सामने नतमस्तक होते है।

साखी : पद बोले बाणी कह, भजन करे भरपूर। सो पुरा सुखराम के, तां मुख बरसे नूर ।। २।।

जो हरजस बोलते है, वाणी द्वारा ज्ञान देते है और खूब भजन करते है। म: फ: है कि वे पूरे संत ही है। उनको सतशब्द की प्राप्ति का अखण्ड अनुभव होता है, यही मुख पर नूर बरसना है।

सो जन पहुंता शिखर में, साखज भरे अनेक। सो हरिजन सुखराम केह, ब्रह्म सरूपी देख ।। ३।।

जो संत शिखर याने के: पद आ: पद में पहुंचे हुये है उनकी सब साक्षी देते है। म:फ: है कि

वे संत तो ब्रह्म के रूप ही है।

जिंग शब्द है गीगन में, भंवर गुफा के मांय। सुर पारख सुखराम कह, सुर नर देवल जाय।।४।।

ब्रह्मण्ड से उपर उठता हुवा जिंग शब्द का भंवर गुफा में अनुभव होता है जींग शब्द की परीक्षा देवताओं को होती है। इसलिए देवता भी नर शरीर की इच्छा करते है।

ईन्द्र पिलावे नीर रे, देश गांव घर जोय। पूरा संत सुखराम केह, जांरा अे अंग होय।।५।।

ईन्द्र जैसे देश गांव घर सब जगह वर्षा कर पानी पिलाता है तो उस इन्द्र को क्या स्वार्थ है। म:फ: है कि जो पहुंचे हुये संत है तो निस्वार्थ देश गांव व घरो में जाकर उपदेश करते है।

पवन बाजे देश में, बिन तेडयो जग मांय। पूरा संत सुखरामजी, ज्ञान बतावे जाय।।६।।

हवा सब जगह सारे देश में बिना बुलाये सब जगह बराबर चलती है, ऐसे ही पहुंचे हुये संत भी सब जगह जाकर ज्ञान देते है।

सूरज के क्या चाय है, दोड्या फिरे हमेश। यूं पूरा संत सुखराम कह, मांड चेतावे देश ।।७।।

सूरज को क्या चाहना है जो हमेशा दौडता फिरता है म:फ: है कि ऐसे पहुंचे हुये संत भी सब जगह जाकर ज्ञान द्वारा मनुष्यो को चेताते रहते है।

देश गांव घर शहर में, करे ऊजालो आय। यूं पूरा संत सुखराम कह, ज्ञान बतावे जाय।।८।।

जिस तरह सूर्य देश गांव घर व शहर में अपना प्रकाश पहुंचाता है। म:फ: है कि ऐसे ही पहुंचे हुये संत भी सब जगह जाकर अपने ज्ञान का उपदेश करते है।

।। इति श्री मिश्रित विषय का अंग सम्पूर्ण।।

卐 पेटनाट का अंग 卐

<u>कुण्डलिया :-</u> त्रृगुटी चढिये साध कूं, नोत जिमावे कोय। वा सरभर तिहूं लोक में,
जिम्या पुन्न नहीं होय।। जिम्या पुन्न नहीं होय, बात मानो सब भाई,
पांडवा के घरबार जिग में कीमत आई।। धरम अनन्त सुखराम के,
यां सरभर नहीं होय। त्रृगुटी चढिये साध कूं, नोत जिमावे कोय।। १।।

सतशब्द ने: अंच्छर की साधना कर के: पद आ:पद की प्राप्ति करते है उन्हें त्रृगुटी चढीये साध कहा है। उनको निमन्त्रण देकर प्रसाद करा देते है तो उसके बराबर कोई पुन्न नहीं है। चाहे तीन लोक में किसी को भी जिमावो। म:फ: है कि मेरी सब बात मानो इस बात की परीक्षा पाण्डवों के यज्ञ में हुई, उस यज्ञ में हजारों लाखों ऋषि व राजाओं के भोजन कर चुकने पर भी संख नहीं बजा। जब बालमित जो जाती का सरगरा था वाणी से राम नाम का भजन करता था उसको जिमाने पर संख बजा। म:फ: है कि जगत में अनन्त प्रकार के धर्म है परन्तु त्रृगुटी चढिये हुये संत को जिमाने के बराबर कोई धर्म नहीं है।

जन की गत निज बात रे, देवहि लखे न कोय। काजी पिंडत सिध कूं,
याने गम नहीं होय।। याने गम नहीं होय, पीर तीरथंगर भाया।
सब ही सुण अवतार, गुरां बिन भेद न पाया।। सुखराम शेष शीव कहत है,
पद परख झीणी होय, जन की गत निज बात रे, देवहि लखे न कोय।। २।।

सतस्वरूप आ:पद की भक्ति कराने वाले जनों की गति को देवता भी नहीं जानते है। काजी पिंडत व सिद्ध को भी जानकारी नहीं है। मुसलमानों व जैनियो को भी जानकारी नहीं है। सब सुणो अवतारो को भी गुरु के बिना भेद नहीं मिला। म:फ: है कि शेषजी व शिवजी भी कहते है कि परमपद की परीक्षा बहुत झीणी है।

पेट नाट केहे मांडियो, तम कोहो तोई होय। और पाप कर भरत है, जन पुन्न नाखे जोय।।
जन पुन्न नाखे जोय, अकल दुनियां कुं देवे। करे मिनख सुं देव, शरण साहिब की लेवे।
पेट भरण के ही कारणे, देवे राम धन जोय। पेट नाट सुखराम कह, तम कोहो तोई होय ।। ३।।

पेट भरने का ज्ञान समझने वाले इसे पेट भरने का ज्ञान ही समझो। दूसरे सब पाप करके पेट भरते है परन्तु भगवान की भक्ति करने वाले पुण्य के जोर से पेट भरते है। संसार को ज्ञान देकर मनुष्य से देवता बनाते है। पार ब्रह्म परमात्मा के निज नाम की भक्ति कराते है। यही साहिब की शरण लेना है। पेट भरने के वास्ते ही राम नाम रूपी धन देते है।

ज्ञान कथूं हूं सो पेट नट, कन या अणभै होय। के मैं शिवरूं राम कूं,
भेद बताऊं सोय।। भेद बताऊं सोय, जीव उलज्या सुलजावुं।
देवुं तत पिछाण, अखंड हर सुं लिव लावुं।। भरम मिटाया गढ चढाया,
केह सुखदेवजी तोय। ज्ञान कथूं हूं सो पेट नट, कन या अणभै होय ।। ४।।

संसार को जो ज्ञान दे रहा हूं सो पेट भरने का ज्ञान है या अणभै है। मैं रामजी का शिवरण करता हूं उसका भेद संसार को बताता हूं। मैं पारब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति का ऐसा ज्ञान देता हूं। जिससे उनके बिना वाणी अखण्ड लिवबंध भजन होने लग जाता है। उनके सब भरम मिटकर के:पद की प्राप्ति हो जाती है। यही गढ पर चढ़ना है। म:फ: है कि मैं ऐसा ज्ञान बताता हूं।

पेट नाट किम जाणिये, बिना पेट किम होय। समझ अरथ ओ दीजिये, उलट जाब दे मोय।।
उलट जाब दे मोय, लोक तिनुं मैं देख्या।। बिना पेट किण जाग, समझ कुण नर पेख्या।।
भजन करूं सो पेट नट, कन या भक्ति जोय। पेट नाट सुखराम केह, बिना पेट किम होय।।५।।

पेट भरने का काम तो सब ही करते है, बिना पेट भरे तो क्या होता है, समझकर इसका जवाब दो। म:फ: है कि मैंने तीन लोको को ज्ञान से विचार कर देखा है कि बिना पेट भरे कोई भी नजर नहीं आता है। मैं जो भजन कर रहा हूं सो पेट भरने का काम है या परमात्मा की भक्ति है।

कवित : जन शिवरे निज नाम, ध्यान ब्रह्मण्ड में लागा। दुबध्या दुरमत डिंभ,
भरम भांडा सब भागा। आठ पोहोर लवलीण, हरख साहिब दिश होई।
ऐको ब्रह्म विचार, ज्ञान निरमल दे सोई।। इसे संत के मत कूं,
पेट नाट केहे कोय। सो नर तो सुखराम, नरक गिरामी होय ।। ६।।

जो जन निजनाम का शिवरण करते है जिनका ध्यान ब्रह्मण्ड में लग रहा है। उनकी दुब्ध्या दुरमती अभिमान व भरम सब मिट गये है। आठ पोहोर भजन में लीन रहते है। परमात्मा प्राप्ति की प्रसन्नता में ही रहते है। एक ब्रह्म का ही विचार करना व उसकी प्राप्ति का ज्ञान बताने वाले संत के ज्ञान को पेट भरने का ज्ञान कहने वाले निश्चय नरक में जाते है।

पारब्रह्म की शरण, समझ गेहे बैठा सोई। आन देव की बात, आस सपने नहीं होई।।
चरचा बात गिनान, पेच साहिब दिश ल्यावे। ज्युं त्युं कर समजाय, नाम इमरत रस पावे।।

इसे संत की चाल कूं, पेट नाट कह आंण। सो नर तो सुखराम कह, खरो बिगुच्यो जांण ।।७।।

जो मनुष्य पारब्रह्म परमात्मा के निज नाम की भक्ति समझ कर करते है। वह आन शरीर की उपासना सपनों में भी नहीं करते। चरचा व ज्ञान हर समय ऐसा देते है जिससे परमात्मा की प्राप्ति हो जाय। मनुष्यों को जैसे तैसे समझाकर नाम रूपी ईमरत पिलाते है। ऐसे संतो के ज्ञान को पेट भरने का ज्ञान कहते है। वे मनुष्य तो बिलकुल बेसमझ है।

पातशाह सूण भूप, तहां कोई छिदर गावे। तांके सिर सुण मार, पडत छेडो नहीं आवे।
घर सुण लुटयो जाय, आंण प्यादा जुं घेरे। काला मुख करवाय, शहर दोलुं सुण फेरे।।
युं जन की नर बात रे, निरसी केहे को जाय। ऊ दरगे सुखराम कह, मार बोहोत बिद खाय।।८।।

बादशाह व राजा की निंदा करता है तो उसके इतनी मार पडती है जिसका पार नहीं है। उसका घर लूट लेते है। सिपाही आकर उसको घेर लेते है, काला मुंह करके गांव में फिराते है। ऐसे ही पुंचे हुये संतो की जो झूंठी ही निंदा करता है उनको नरक का दुख भोगना पडेगा, यही मार बोहोत बिध खाना है।

।। इति श्री पेट नाट का अंग सम्पूर्ण।।

卐 वचन का अंग 卐

कवित : वचना नांही मोल, तोल सो माप न आवे। जो जांणे कोई बोल,
ब्रह्म के मांय मिलावे।। वायक विष ऊतार, वचन से सौदा कीजे।
बेटा बेटी ब्याव, परण घर भेला लीजे।। बचना ले अवतार,
बप धर राकस मारया। जन सुखिया मन सोच रे, वचन सुं संत उधारया ।। १।।

वचन अनमोल है उसका कोई मोल तोल नहीं है। यदि कोई सतगुरु के ज्ञान को पूर्ण जानता है तो उस ज्ञान को धारण करने वालों को ब्रह्म पद की प्राप्ति हो जाती है। वचनों से बोलकर याने झाडा देकर विष उतार देते है, कोई भी सौदा सूत वचनो से होता है, वचनो से लडका लडकी की ब्याव शादी होती है। वचनो में बंधकर ही अवतार आते है व राक्षसो को मारते है। म:फ: है कि हे मन तूं सोच वचन से ही संत जीव का उद्धार करते है।

वचना बंधे नाहर, वीर सो मूंठ चलावे। वचना के बश जरख, दौड मेहरी पे आवे।।
वचना तारा तोड़, आंण जमी पर मेले। नाटक चेटक सीख, नटघर बाजी खेले।।
वचना हारे जीत, वचन सुं मन ऊपाई।। वाक वायक सुखराम के, अटल ध्रु बैठा जाई ।। २।।

सिंह भी वचन से बंधन में आ जाता है, वचनो से ही मूठ चलाते है, वचन के वश में होकर जरख दौडकर स्त्री के पास आ जाता है। वचनों से आसमान के तारे तोड़कर जमीन पर ले आते है। नाटक चेटक सीखकर बाजीगर नट खेल करते है। वचन से हार जीत होती है। मन के विचार भी वचनो से प्रगट होते है, वचनो से बंधकर ही ध्रुवजी आकाश में अटल बैठे है।

हिये तराजू तोल, मोल कर बाहर लावे। गोतो कदे न खाय,
बैण पाछो नहीं आवे।। परदेशा पर भोम, ज्यां त्यां सब ही माने।
भरी सभा के बीच में, ताय की बात बखाणे।। मोल सतोलस नाह,

वचन की काह बडाई। जन सुखिया मन सोच के, वचन केये मुख लाई ।। ३।।

अपने वचनों को हृदय के तराजू में तोल कर फिर बोलना चाहिये। जो वचनों को तोल कर बोलते हैं वो कभी गोता नहीं खाते हैं। क्योंकि बोले हुये वचन वापस नहीं आते है। अच्छे वचन वालों की परदेश में परायी भूमि पर भी सब जगह बात मानते है और भरी सभा में भी ऐसे व्यक्ति के वचनों की बात दृष्टांत के रूप में बखाण करते हैं और जो वचनों को मोल तोल कर नहीं बोलते हैं उनके वचनों की कोई बढाई नहीं करते हैं। इसलिए म:फ: है कि मन में सोचकर फिर मुख से वचन निकालने चाहिये।

मंतर के वश देव, सेव सुं आंण मिले है। डाकण सरस सलेस, विष वासंग को जै है।।
नाहरी दे नित दूध, आण खुटे सुं बंधे। मंत्र के वश भूत, आंण धोरा नित संधे।।
पवन पाणी धरतरी, सब मंत्र वश होय। तो हरमंत्र सुखराम के, क्यूं राम मिले नहीं तोय।। ४।।

मंत्रों के वश में देवता है, सेवा करने से आकर मिलते है। मंत्रो से ही डाकण सरस सलेस व सांप का जहर उतरता है। सिंहनी मंत्रों के वश में होकर खूंटे से बंध जाती है व दूध देती है। भूत भी मंत्र के वश होकर काम करने लग जाते है। पवन पानी धरती सब मंत्रो के वश में है। म:फ: है कि परमात्मा का नाम ही मंत्र है तो उसका जप करने से रामजी क्यों नहीं मिलेंगे।

सौ मण अन्न की परख, बानगी मांह दिखावे। अकल बुध नर मांह, वचन अेकण में पावे।।
ससतर की सुण मूठ, बांण अेकी जो छूठा। सिध मंतर सुण जाण, जाप नेकी रिध खूंटा।।
यूं हरजन की पारखा, शब्द एक के मांय। अगम बात सुखराम के, आंण पटके ल्याय ।।५।।

सैकडो मण अन्न की परीक्षा नमूने से होती है। मनुष्य में कितनी अकल व बुद्धि है उसकी परीक्षा वचन बोलने में हो जाती है। तलवार की परीक्षा मूठ से होती है। बांण की परीक्षा एक ही बार छोडने से होती है। सिध की भी मंत्र की साधना से ही सिद्धि होती है। ऐसे ही संतों की परीक्षा एक वचन से हो जाती है। म:फ: है कि वे तीन लोको से परे अगम देश के: पद आ: पद की बात बताते है।

।। इति श्री वचन का अंग सम्पूर्ण।।

卐 विष अमृत का अंग 卐

<u>कुण्डलिया :</u> झूंठो अन्न कैसे हुवो, सो विध कहिये मोय। कहो कुण ओगुण मुख में,
सो गुण कहिये जोय। सो गुण कहिये जोय, काय आ अेब लगाई।
कोहो ज्ञान सुण व्यास, अरथ सागे मुज ल्याई।। सुखराम कहे ईमरत तको,
सो तो मुख में होय। झूंठो अन्न कैसे हुवो, सो विध कहिये मोय ।। १।।

झूंठा अन्न कैसे होता है वह विधि मुझ से कहो। मुंह में क्या अवगुण व गुण है सो देखकर कहो। यह अेब क्यों लगाई है, इसका सही अरथ बतावो और वो ज्ञान कहो। जो कथा व्यासजी से सुणा है। म:फ: है कि जो इमरत है वो तो मुंह में ही है।

मुंह से थुथको नाखिया, निजर को गुण जाय। सिद्ध सुण देवे आसका,
सोई फल उपजे मांय।। सोई फल उपजे मांय, सरब के गुण मुख मांई।
जमी सरप हरजोख के, किवी चिडी कहाई।। सुखराम कहे ज्ञानी सुणो,
करता सो मुख मांय। तुम झूंठो अन्न केहेत हो, सो किण गुण कोहो आय ।। २।।

मुंह से थुथकी डालने पर नजर लगी हो तो मिट जाती है। सिद्ध अपने मुंह से जो कहता है वही फल मिल जाता है। सब के गुण मुंह में ही है। जमीन पर सर्प रहता है और जोख पानी में रहती है। जोख के मुंह में ऐसा गुण है कि शरीर में जहां दर्द होता है, उस पर लगाने से दर्द को खींच लेती है, श्यामा चिडिया अपने मुंह से बोलकर सूण कसूण बता देती है। इसलिये म:फ: है कि हे ज्ञानियो सुणो, जो भी काम करते हैं वो सब मुंह से है यानि मुंह में इतने गुण है और आप अन्न को झूंठा कहते हो तो किस गुण से कह रहे हो।

झूंठ झूंठ तम केहेत हो, मुख में झूंठ न कोय। गुण ओगुण दोनो खरा,
तामें फेर न कोय।। तामें फेर न कोय, विष सोई है मुख मांई।
इमरत भरयो अपार, परख बिन जांणे नांही।। सुखराम केहे मुख सार है,
सब चीजा को जोय। झूंठ झूंठ तम कहत हो, मुख में झूंठ न होय।। ३।।

मुंह में झूंठ ही झूंठ कहते हो सो मुंह में कोई झूंठ नहीं है। मुंह में अवगुण व गुण दोनो है इसमें किसी तरह का फरक नहीं है। जिसको जहर कहते है वो भी मुंह में ही है। इमरत भी अपार मुंह में भरा हुआ है, उसको परख के बिना नहीं जानते। म:फ: है कि सब चीजो का सार मुंह में है।

ज्ञानी ध्यानी सब सुणो, मुख में ओ गुण होय। मारकंडे अमर भया,
परसादी बल जोय।। परसादी बल जोय, नवल कंचन अंग जोही।
दादू झेलर पीक, ब्रह्म पायो कहूं तोय।। सुखराम केहे विपर भया,
हर मुख सुं कहूं तोय। ज्ञानी ध्यानी सब सुणो, मुख में ओ गुण होय।। ४।।

ज्ञानी ध्यानी सब सुणो मुंह में यह गुण है। परसादी के बल से मारकंडेय मुनी अमर हो गये। नेवला का शरीर पाण्डवों के यज्ञ में सोने का हो गया। दादूजी महाराज ने अपने गुरु के मुंह से पीक झेल कर ब्रह्म की प्राप्ति की। म:फ: है कि ब्राह्मणों की उत्पति ब्रह्माजी के मुंह से हुई है।

झूंठ झूंठ भोला कहे, मुख में झूंठ न होय। किणी एक मुख में इमरत बसे,
किणी एक विष कहूं तोय।। किणी एक विष कहूं तोय, सरब तजिये नहीं भाई।
किणी एक मुख सुं जाण, मुगत फल लागे मांही।। सुखराम कहे विचार कर,
आड न डारो कोय। झूंठ झूंठ भोला कहे, मुख में झूंठ न होय।। ५।।

भोले मनुष्य ही मुंह में झूंठ कहते है, मुंह में झूंठ नहीं है। किसी के मुंह अमृत बसता है, किसी के मुंह जहर बसता है, सबको ही नहीं छोड़ देना चाहिये। किसी के मुंह से ज्ञान सुनकर मोक्ष की प्राप्ति का फल पा लेते है। म:फ: है कि विचार कर कहता हूं किसी के आड मत दो।

सब दिन मुख में जहर नी, सब दिन अमी न होय। किणी एक पुल अशमान सुं,
ईमरत आवे जोय।। ईमरत आवे जोय, प्रेम सुं उतरे है भाई।
ज्युं मंथन सुं काम, भग मुख पडिया जाई।। सुखराम दास या परख रे,
जांणे बिरला कोय। सब दिन मुख में जहर नी, सब दिन अमी न होय ।। ६।।

मुंह में हर समय जहर व अमृत नहीं रहता है। कोई कोई सी पुल में आसमान से इमरत उतरता है, वह अमृत प्रेम से उतरता है। जैसे बिंद मैथुन से भग के मुंह में जा पडता है। म:फ: है कि परीक्षा बिरले ही जानते है।

सरप रोष कर खात है, तो नर बचे न कोय। खिज्यां सूं विष ऊतरे,

ब्रह्मण्ड सूं कहूं तोय।। ब्रह्मण्ड सूं कहूं तोय, रीत इमरत इण आवे।
जिण विध रीजे संत, शिख सोई विध ल्यावे।। सुखरामदास लल फल किया,
शिख को काज न होय। सरप रोष कर खात है, तो नर बचे न कोय।। ७।।

सांप क्रोध करके मनुष्य को खाता है तो मनुष्य नहीं बचता है। क्रोध करने से जहर ब्रह्मण्ड से उतरता है। इमरत इस रीति से आता है जिस विधि से संत प्रसन्न होते है। शिष्य को वही कार्य करना चाहिये। उनकी बताई गई विधि से कार्य नहीं करना ही ललफल करना है। ललफल करने से परमपद नहीं मिलता है यही शिष्य का काज नहीं होना है।

।। इति श्री विष अमृत का अंग सम्पूर्ण।।

卐 मन की राड़ ग्रन्थ 卐

चौपाई : मन की राड़ सुणो सब सारा, बिता दुख कहुं सब म्हारा।
ऐसी मनवो मोसूं किनी, अंतर मार बहुत विध दिनी ।। १।।

सब ही मन की राड सुणो, आत्मा फ: है कि मैं सब मेरे साथ बीते हुये दुखो का वर्णन करती हूं। मन ने मेरे साथ ऐसा किया है। मन से विचारो द्वारा सुख दुख का अनुभव होना ही अन्तर मार बहुत बिध देना है।

ऐसा घेर लिया मुझ तांई, मार पडे शिर बोलुं नांही।
सब ही बुध सुध बिसरावे, नैणा देख पाप मन लावे ।। २।।

कई तरह के विचार आना ही घेरना है, विचारों से सुख दुख का अनुभव होना ही मार पडना है। उस पर वश नहीं होना ही बोलना है। सब सुध भूल जाता है। आंखों से दुखकर मन में बुरे विचार लाना ही पाप मन लाना है।

मन की घात बहुत करारी, झीणी लपट झपट वै लारी।
बहो बिध मनवो ठग ठग जावे, मेरे हाथ कबहुं नहीं आवे।। ३।।

मन में बुरे विचार आना ही करारी घात, है झीणी लपट याने बुरे से बुरा विचार आना ही कई प्रकार के लपट झपट है। मन कई तरह के संकल्प विकल्प करता है। यही ठगना है और हाथ नहीं आना है।

मैं तो पचु बोहोत विध सोई, मेरे हात न बात न कोई।
मोकूं लोप दिया छिन मांही, मेटी लाज पांचु रस खाही ।। ४।।

आत्मा कह रही है मैं मन को बहुत समझाने की कोशिश करती हूं, परन्तु मेरी यह बात नहीं मानता। लाज छोडकर पांचों इन्द्रियो के भोगो का विचार करना ही मेटी लाज पांच रस खाई है।

मोकूं गोता बोहो विध देवे, मनवो जाय विष घर लेवे।
बहो विध मोकूं घायल किया, केता सुणता विष रस पिया ।। ५।।

मन को बुरे विचारों में लगाना ही गोता देना है। मन जाकर विषयो के रस में लगता है। कई विधि के विचार करना ही घायल करना है। रोकते रोकते भी विषयो में जाता है।

कर आधीन चलावे सोई, बोहो विध रिण भखे वे मोई।
चाह काम मन लहर ऊपावे, गुमी मार प्राण शिर खावे ।। ६।।

मन अपने विचार माफिक करता है यही आधीन चलाता है। मन ऐसे सांसारिक विचार करता है कि ऐसा नहीं करेगा तो कैसे काम चलेगा। मन कई तरह की चाहना खडी करता है, ऐसे विचार देकर प्राण व बुद्धि को उसमें लगाता है।

ऐसा बोहो विध दुख दिराया, कब लग प्राण सहे मोही काया।
मनवो जिद करे बोहो भाई, मेरी बात न माने कांई ।।७।।

आत्मा कह रही है कि इस तरह के कई दुख मन दिरा रहा है। मेरा शरीर व प्राण इस दुख को कैसे सहन करे, मन बोहोत जिद कर रहा है, मेरी बात को नहीं मानता।

हटकूं हणू हिचकूं सोई, मन मरजाद न माने कोई।
कहिया बात ज्ञान सुण लेवे, अंतर दिष्ट विषे में देवे।।८।।

मन मरजादा को नहीं मानता। मैं इसको रोकता हूं, अटकता हूं, तो भी बरजने पर भी नहीं मानता है। कहने पर ज्ञान की बात सुण लेता है। अन्तर में विषयों में लगता रहता है।

झीणी मनवो बहुत ऊपावे, ज्ञान ध्यान है ठग जावे।
मनवे मोकूं व्याकुल किया, आठ पोहोर संकट बोहो दिया।।९।।

मन सब ज्ञान ध्यान को भी मानता है परन्तु मानकर सांसारिक कार्यों में लगता है। इस तरह रात दिन मन की इच्छा माफिक करना ही संकट देना व दुखी करना है।

वो बिध राड़ कर मन सुं होई, बिता बिना न माने कोई।
बांज नार कूं आंण सुणावे, ब्यायर सुख दुख क्या पावे ।।१०।।

मन को कई तरह से समझाना ही राड़ करना है। किसी तरह का दुख नहीं आता है तब तक कोई नहीं मानता। संतान पैदा करने वाली स्त्री का सुख दुख बांझ स्त्री कैसे जान सकती है।

मन की राड़ लखे नहीं कोई, जाणेगा जो पूरा सोई।
मन की खबर जगत कूं नाही, सब ही बंध्या मन घर मांही ।।११।।

मन की गति व विचारों को सतगुरू विधि से भजन करके केवल ग्यान के मार्ग पर चलेंगे वो ही जान सकते है। जगत को मन के संकल्प विकल्प से अलग होने की खबर नही है सब इसके साथ बंधे है।

मन के हाथ सबे बिकावे, हिलमिल विष खावे सुख पावे।
मैं मन सूं मत न्यारा चालूं, मन के मते ना लिया ।।१२।।

सब ही मन के विचारो में बंधे हुये है। मन के विचारो के साथ लगकर सब विषयो से ही सुख मानते है। म:फ: है कि मन के विचारो के साथ न होकर आत्मचेतन के आधार पर शब्द ब्रह्म का साधन करती है तब ग्यान के विचारो से चलती हूं। मन के कहने में नहीं रहती हूं।

जब मनवे शमशेर समाई, मोसु बोहो जुध किया।
बोह तरह का ज्ञान सुणाया, तो भी नेक न बिया ।।१३।।

म:फ: है कि आत्मा शब्द के साथ बलवान व चेतन होकर भिन्न भिन्न प्रकार से मन को ग्यान सुणाया तब भी डरा नहीं और उल्टा समसेर समाकर लडाई की।

आठ पोहोर बतीसुं घडिया, जुध करता दिन बीते।
मनवे बोहोत करारी मांडी, संइयेज हम सुं जीते ।।१४।।

आत्मा कह रही है पांचों विषय भोगो के लिये मन आठो पोहोर जुध करता व करारी ठाणता है कि सहज में आत्मा को ब्रह्म रस का आनन्द छूडा दूं।

मेरी बात मांड में भांकू, इस विध या ले किजे।
मनवो दुष्ट आंण जब घेरे, नवा सूत फिर दूजे ।। १५।।

आत्मा संसारियो को कहती है कि मन विषय रस खाने के लिये अपने विचारों के साथ लगाने की कोशिश करता है कि भजन ध्यान में लगोगे तो संसार का काम कैसे चलेगा, यही नवा सूत दूजना है।

मेरी बात चले नहीं कोई, मन देह जीता जावे।
हेला करूं बुबेडी मारूं, परत न पाछा आवे।। १६।।

आत्मा कह रही है, मन व शरीर मेरा कहना नही मानते। इसको बहुत तरह से समझाती हूं, तो भी यह नहीं समझता।

रिणी भाख बोहोत मैं भाखी, परत न माने कांई।
मांडा मुरड जां विषिया पीवे, पीवे बहुत अघाई।। १७।

आत्मा कह रही है हे मन तेरा मेरा संग पंच तत्व में आने से हुआ है, मैं ब्रह्म रस पीने की बात कहती हूं तूं मानता नहीं है और विषय रस से धापता नहीं है।

जेता करार करूं मैं सामी, ऐसा सूत चलावे।
देही जले आग बिन सारी, पांचु आंण जगावे ।। १८।।

यदि मैं इसको जोर देकर समझाती हूं तो भी पांचू विषयो के चिन्तन में लगा रहता है जैसे बिना अग्नि के शरीर जलता रहता है, यही सूत चलाना है।

हुये भै भीत बडे तप माई, एक न माने कांई।
ज्ञान ध्यान सब ही कूं लोपे, स्वारथ मंडे सगाई ।। १९।।

अच्छे अच्छे ज्ञान को सुनकर डरता है तो भी ज्ञान ध्यान सब ही को छोड़कर स्वारथ से ही प्रेम करता है।

कहा कहूं मन बोहोत हरामी, येता सूत हलावे।
मुंढे और पेट में दुजी, अंतर में सब खावे ।। २०।।

इसके लिए मैं क्या कहूं यह मन ऐसा दुष्ट है कि मुंह पर मीठा बोलता है और अन्दर खराब विचार करता है, यही अंतर में सब खाना है।

पालुं बोहोत ज्ञान दूं सोई, अेहे बाता दुख दिजे।
नरक कुंड में जुग जे झुले, मन देह समझर रिजे।। २१।।

इसको मैं ज्ञान देकर समझाता हूं। इन बातों में तुझे नरक का दुख भोगना पडेगा। आत्मा मन व देही को कह रही है कि तुम समझकर रहो।

मन देह कहे आगली किण ने, अब खंड सो मेरी।
आगे जाय देख कुण आयो, बात न मांनु तेरी ।। २२।।

मन व शरीर कहता है कि आगे की बात किसके काम आती है अभी मौजूद है वो मेरी ही है आगे जाकर कौन देखकर आया है, इसलिये मैं तेरी बात को नहीं मानता।

मेरी बात मान रे भोरा, सांच कहूं सुण लिजे।
ज्ञान विज्ञान शकल मैं दाखूं, कहयो हमारो किजे ।। २३।।

आत्मा कह रही है कि हे भोले व भले मन मेरी बात को मान ले। मैं सच कहती हूं सुण ले, ज्ञान विज्ञान सब वर्णन करती हूं इसलिये मेरा कहना मान।

अनन्त क्रोड सन्तन की साखा, नाशकेत ले आया।
दिसत अरथ जगत के माई, सुख दुख दोय कहाया।। २४।।

ऊदालकजी का लडका नचीकेता अनन्तो क्रोडो संतो को स्वर्ग में देखकर आया है। यह अरथ जगत में सामने दिखता है बुरे कर्म का फल दुख और अच्छे कर्म का फल सुख, यह दो कहलाते है।

कोडी हुवे कलंकी आंधो, अन्न तन मिले न कांई।
पूर्व जन्म कमाया मन वे, अब भुक्ते युं सोई ।। २५।।

बुरे कर्म करने वाले जगत में कोढी कलंकी व अंधे हो जाते है। खाने को अन्न भी नहीं मिलता है, पूर्व जन्म में जो कर्म किये थे अब उनका फल भोगना पड रहा है।

सांची बात कहूं मन सुण ये, कर्म कर रे वे सारा।
देवलोक में को कुण पूता, सुण रे मन हमारा ।। २६।।

सच्ची बात कहती हूं हे मन सुण ले, बुरे कर्म करने वाले सब में से कौन स्वर्ग लोक में पहुंचे है शुभ करम करने वाले स्वर्ग में जाते है।

विषिया छाड आव सत मांही, हर शरणागत रहिये।
मेरी बात मान षट मुरख, असत बात नहीं कहिये।। २७।।

हे मन विषयो को छोड़कर सत ग्यान में आजा और परमात्मा की शरण में रह। हे मूरख मेरी बात मानकर झूंठी बात नहीं कहना चाहिये।

सांची बिना सही नहीं माने, आ सब ले धिरकारे।
समझ षट मन मान हमारी, जीती सार मा हारे ।। २८।।

सच बोले बिना कोई सत नहीं मानता है। सब धिक्कारते है। हे मन मुरख मेरी बात को मान, मनुष्य जन्म ही जीत का पासा है। इसको व्यर्थ क्यों खोता है।

आद अंत में सुण रे सारी, करणी बिना न तिरिया।
विषिया भिरंग एक पल खाया, लख चौरासी फिरिया ।। २९।।

आद से लेकर अन्त तक की सब ही सुण ले, अच्छे कर्म किये बिना किसी का उद्धार नहीं हुआ है। जिसने विषय रस का अेक पल भी सेवन किया, उन्हें चौरासी लाख योनियो में भटकना पड़ा है।

मनवा समज ज्ञान सुण भाई, हिये जोर न किजे।
रावण बंध्यो गयो विष बदले, चोर भागसी दिजे ।। ३०।।

हे मन समझ जा और ज्ञान सुण ले, अपना जोर मत लगा। रावण जैसा शक्तिशाली भी विषयों के वास्ते ही मारा गया। चोरो को भागसी याने जेल भोगनी पडती है।

सुणले काना हुये सचेतन, ये बाता दुख पावे।
सरवर पाल फूटगी भोला, जल क्यूं मांय समावे।। ३१।।

इन बातों से दुख पावेगा, मेरी बात सावधान होकर कान से सुण ले। तालाब की पाल फूट जाती है, जब पानी कैसे ठहरेगा।

देवे लाय कुशल क्यूं बंछे, खाय विष क्यूं जीवे।
आक दूध थोहर रस भेला, पै बदले क्यूं पीवे।। ३२।।

घर में आग लगाकर खुश रहने की इच्छा कैसे कर सकता है। जहर खाकर जीवित कैसे रह सकता है। दूध के बदले आक व थोहर का दूध क्यों पीता है।

विषिया रस कबु नहीं आछा, सुण षट मन हमारी।
सब जग बंध्यो विष की बेली, मार पडे शिर भारी ।। ३३।।

हे मन मूरख मेरी बात सुन, विषय रस कभी भी अच्छा नहीं है। सारा जगत विषयो में लगा हुवा है, इससे नरक व चौरासी का दुख भोगना पड़ता है। यही मार पडे शिर भारी है।

जग कूं देख अरथ कर लिजे, क्या सुख पावे लोई।
विष की सीर पीव कर अमर, देख जगत सब कोई।। ३४।।

जगत को देखकर विचार कर संसारी क्या सुख पाते है, विषयो को भोगकर कौन अमर हुवा है।

विषिया पियो राज बिराणा, वो विध हरष मनावे।
इण में गत मुक्त जो होती, जग परले क्यों जावे ।। ३५।।

बहुत तरह की खुशिया मनाने वाले जो विषयो को भोगने में लगे थे उनके राज दूसरो के हाथ में चले गये। विषय भोगने वालो की मोक्ष होती तो जगत मरण क्यों आता है।

समझ समझ मन बात हमारी, दे विषिया छिटकाई।
समरथ श्याम मुगत का दाता, ईमरत पीवो अघाई ।। ३६।।

हे मन मेरी बात को समझ ले समझ ले। इन विषयो को छोड़कर ईश्वर का नाम जो मुक्ति देने वाला है। इस ईमरत को धाप कर पी ले याने ईश्वर की खूब भक्ति करले।

विष कूं छाड अमर हुवा जग में, सो मैं तोय बतावुं।
चित मन धार सूरत सो दिजे, हेला कर नित जावुं ।। ३७।।

जिसने विषयो को छोड़ा वे जगत में अमर हुवे है, सो मैं तुमको बताता हूं। चित मन सूरत लगाकर सुण, यह ज्ञान तुमको बार बार समझाता हूं।

परमारथ काज ऊचारूं, भूला गेल बताये।
तूं ही करे भूगतसी तूं ही, ताते समझकर रहिये ।। ३८।।

तेरा परमारथ याने भला करने के लिये कह रही हूं, भूले हुये को रास्ता बताया जा रहा है। तूं जो कर्म करेगा उसका फल तुझे ही भोगना पडेगा, इसलिये समझकर रह।

गोपीचंद भरतरी गोरख, काग भुसण्डी कहिया।
जाजुंल दत्त दिगम्बर विष तज, अवचल जग में रहिया ।। ३९।।

राजा भरतरी, गोपीचंदजी, गोरखनाथजी, कागभुसन्डी, जांजुल ऋषि व दतात्रेयजी विषय छोड़कर जगत में अमर रहे।

विषिया छाड सांचा सुं सिधा, अनन्त क्रोड रिषराई।

सत के पांण पाण्डावा जीता, केरू गया बिलाई ।। ४० ।।

अनन्त व क्रोड ऋषि विषय छोडकर सत पर रहे है। सत्य के बल पर ही पाण्डवो की विजय हुई और कौरवों का नाश हुवा है।

सत की बात सत कर माने, इण में झूंठ न कोई।
जन प्रहलाद नाम के शरणे, जीत गयो जुग लोई ।। ४१ ।।

सत की बात को सत कर माने इसमें झूंठ नहीं होता। प्रहलाद भक्त के नांव का आधार था, जगत में उसकी जीत हुई, राक्षसो की हार हुई।

एक दोय की कहा बतावुं, लेखे बिन अपारा।
विषिया छोड मिल्या सुख सागर, सुणरे मन हमारा ।। ४२ ।।

एक दो की क्या कहूं बिना गिनती अपार है, जिन्होंने विषयो को छोडा है उन्होंने सुखो की प्राप्ति की है, हे मेरे मन सुण ले।

शुकदेव कतर श्याम सुण लछमण, हणवंत गरूड कहाया।
गोरख छाड़ भया जग अमर, जंवरे हात न आया ।। ४३ ।।

सुखदेवजी, कार्तिक स्वामी, लक्षमणजी, हनुमानजी, गरूडजी, गोरखनाथजी विषयो को छोड़कर जगत में अमर हो गये, जमराज के हाथ नहीं आये।

बडा तीर्थंकर करणी सारा, जग तज न्यारा हुवा।
आगे किया दिया सब बदला, अब कर्मा सुं जुवा ।। ४४ ।।

सब तीर्थंकर करणी कर जगत से अलग होकर आगे किये हुये सब कर्मो का फल भोग कर, अब करमों से अलग हो गये।

भुगत्या सबे आगला सारा, अब विष पिये न कोई।
मिलिया जाय ब्रह्म के मांही, साख भरे सब लोई ।। ४५ ।।

आगे के सब कर्मों को भोगकर सब विषय त्याग कर ब्रह्म में मिले है, सब जगत साक्षी दे रहा है।

करणी करे नरक नहीं डूबा, जंवरे काल न खाया।
सुण मन साख आगली सारी, अनन्त रिष की भाया ।। ४६ ।।

निस्वार्थ भाव से करणी करके नरक में नहीं जाते, काल के वश नहीं होते। हे मन सब आगे की अनन्त ऋषि साक्षी दे रहे है।

गीता वेद पुराण पुकारे, भागवत शुकदेवा।
कपिल मुनी वाष्ट शिव शेषर, सुण मन सबका भेवा ।। ४७ ।।

गीता वेद पुराण व भागवत में शुकदेवजी कह रहे है। कपिल मुनि, वशिष्ट मुनि, शिवजी व शेषजी सबके यही विचार है। हे मन सबका भेव सुण।

सबकी साख ग्रंथ सुण लिजे, विषया सब बिसराया।
ज्ञान ध्यान सज जोग जुगत गत, नांव सबे मन भाया ।। ४८ ।।

ज्ञान ध्यान जोग साधना व नाम की ही सबने महिमा की है। सब ही ग्रंथ साक्षी दे रहे है। सब ग्रंथों ने विषयों को अच्छा नहीं कहा है।

जूगे जुग में संत पुकारे, भीड पडया रिष सारा।

करणी आंण सबे मुंह दाखे, सुण ये शिरजण हारा ।।४९।।

जुगानजुगों से संत कह रहे है, ऋषि भी कहते है, कष्ट मिटाने के लिये ऋषि भी करणियो की व भगवान की भक्ति करने की कहते है।

भीड पडे बोहो संकट शरीरा, विषिया याद न आवे।
करणी धर्म नांव जुग सारा, सब ही आंण बतावे ।।५०।।

शरीर में बहुत तरह के कष्ट मुसीबत आने पर विषया याद नहीं आते है। उस समय तो करणियां करना धर्म करना नांव शिवरण करना ही सारे जगत को यही करना अच्छा लगता है।

चौडे अरथ जगत के मांही, सुण मन समझ अज्ञाना।
तस्कर चोर चुगल जग कहिये, जहां सुख कहा कहाणा।।५१।।

हे मुरख मन सुणो व समझो, जगत में यह अरथ प्रगट है कि चोरी करने वाले चोरों को व निंदा करने वालों को जगत में सुख कहां मिलता है।

नटखट चोर बावरी जुग में, पासीगर सुण थोरी।
बेईमान केता जग मांही, को माया किण जोडी।।५२।।

जगत में कितने चोर बदमाश बावरी पासीगर व थोरी है व बेईमान है, सुणो किसके पास माया इकट्ठी हुई है।

साहूकार सांच जग बिणजे, अगल डगल नहीं कोई।
तांके धन लाख पर दियो, धजा फरूके सोई ।।५३।।

जगत में साहूकार सच्चाई से व्यौपार करते है, किसी तरह की बेईमानी नहीं करते। उनके लाखों करोडो की संपत्ति है, उनकी जगत में महिमा होती है, यही ध्वजा फहराना है।

देवे धन आपको पेली, गरज शकल की सारे।
ऊजियागर क्रोडी ऊण गेले, सनमुख धणी विचारे ।।५४।।

साहूकार पहले अपना धन देकर सबके काम आते है, ऐसे क्रोडो ही दूसरो को सुख पहुंचाने वालो की जगत में महिमा है।

अरब खरब धन अपारा, छेडो पार न आवे।
सत की बात देख जग मांही, चवडे शाह कहावे ।।५५।।

साहूकारो के पास अरबो खरबो की अपार संपत्ति है, जिसका कोई थाह नहीं है। जगत में देख लो सत पर चलने वालो को सब ही साहूकार कहते है।

राजा राव रंक सुलताना, बादशाह जग मांही।
सत की बात साह मुख दाखे, मन सब जांचण जाही।।५६।।

राजा राव गरीब बादशाह जगत में भी है, सत पर चलने से सब साहूकार की बात को सत मानते है, सब ही उनसे मदद चाहते है।

सतुकार बांटे जग भारी, अनन्त जीव सुख पावे।
सत की बात देख मन जग में, प्रगट नैण दिखावे ।।५७।।

जगत में अन्न वस्त्र विधा व औषधी व सब तरह से सेवा करना ही सतुकार बांटना है। जिससे अनन्त जीवों को सुख की प्राप्ति होती है। हे मन सब की सेवा करने की बात सामने दिख रही है।

प्रगट ज्ञान बतावुं तो ने, भरम न राखूं कोई।
सरग नरक भूलोक पताला, यूं कर पूंचे सोई ।।५८।।

मैं प्रगट में तुझ को ज्ञान बताती हूँ, किसी तरह का भरम नहीं रखती, इसी तरह जैसी करणी करता है उसी माफिक सरग नरक मृत्युलोक व पाताल की प्राप्ति होती है।

चोरी जारी विषया खाया, जग में कौण सरावे।
सदा वर्त केता इक दिया, साहा पद मन कूं पावे ।।५९।।

जो चोरी व जारी करते है व विषयो में लगे रहते है, ऐसा करने वालो के सदाव्रत किसके चल रहे। उनको साहूकार कौन कहता है।

पैगम्बर और पीर अवलिया, फिर अवतार कहाया।
विषिया छाड तज्यो जग सारो, तब मुगती घर पाया।।६०।।

पीर पेगम्बर व अवलिया और फिर अवतार कहलाने वालो ने विषयों को तो छोडा ही जगत के मोह को छोड़कर ही मुक्ति की प्राप्ति की है।

देवलोक में देवत सारा, यां सुं सब चल जावे।
करणी करे छोड सब विषिया, देवत जाय कहावे ।।६१।।

देवलोक में जाने वाले सब विषयो को त्यागकर शुभ करणियां कर देवलोक में जाकर देवता कहलाते है मृत्युलोक में शुभ करणियां करने से ही देव पद की प्राप्ति होती है।

सत की बात पकड जिण सादी, सब कूं दरशण दिया।
विषियां मांय जगत सब झूले, को किण शरणा लिया।।६२।।

सत पर चलने वाले को ही भगवान दर्शन देते है, सारा जगत विषयो में रत है, उनको दर्शन नहीं होते।

विषिया बुरा, भला मत जाणो, रे मन समजो मूवा।
गौतम घरे ईन्द्र चन्द्र आया, रूम रूम भग हुवा ।।६३।।

विषय बहुत बुरे है इनको अच्छा नहीं समजो। हे मेरे मरे हुये मन समजो, गौतम ऋषि के घर इन्द्र व चन्द्रमा आये तो इन्द्र के रूम रूम में भग हो गये व चन्द्रमा के कलंक लग गया।

देवलोक में अे सुख भारी, विषिया चरे अपारा।
ताते आंण पडे भू ऊपर, जन्म धरे लख सारा।।६४।।

देवलोक में भी इन विषयों के भोग है इसलिये देवो को भी पृथ्वी पर आकर चौरासी भोगनी पड़ती है।

परले आंण पडे जग मांही, फेर मार शिर खावे।
जंवरे हात बिकावे मन रे, बंधा जमपुर जावे ।।६५।।

जगत में आकर जन्म मरण में आना ही मार खाना है। मर कर नरको में जाना ही जम के हात बिकना है।

सुण मन समझ सांच गह लिजे, भांत भांत समजावूं।
गुरु प्रताप समझ मैं पाई, तुज हेला दे जावूं ।।६६।।

हे मन सुणो समझो व सत को धारण करो। मैं तुझे सब तरह से समझा रही हूं। सतगुरु की

शरण लेने से मुझे समझ आई है इसलिये तुझे कहती हूं।

खोटी नीत बाली घर जातो, करतो बडी अनिती।
ताकूं पटक मारियो छिन में, हिरणाकुश के घर बीती।। ६७।।

बाली खराब मंशा से घर जाकर बडा अन्याय करता था, उसको रामजी ने एक क्षण में मार गिराया, इसी तरह हरणाकुश का भी यही हाल हुवा।

भष्मी आण करी भो सेवा, मन घर बिसकी बाता।
भष्मी कडो लिया छल हाथे, सुण दुष्टि की बाता।। ६८।।

भस्मासुर ने विषयो का विचार रखकर शंकर की भक्ति की और उनसे भस्मी कडा पाकर उन्हें ही मारने का विचार किया तो भगवान ने मोहनी रूप धारण कर उसको ही मारा।

ऊही मुवो मारियो हर ने, भस्म कियो ऊण तांई।
बेइमान विषयो रस पिया, जीत नहीं जग मांही ।। ६९।।

वही मरा, ईश्वर ने उसे मारकर भस्म कर दिया। बेईमान जो विषयो में लगे रहते है उनकी जीत कभी नहीं होती।

राकस हुआ बुद्ध का हिणा, बो विषिया रस खाया।
नेकी छाड बदी वा किनी, किणी मोख फल पाया ।।७०।।

राक्षस जो कम बुद्धि वाले विषयों में ही रत रहे, भले काम छोड बुरे में लगे। बतावो किसने मोक्ष की प्राप्ति की।

सब ही मुवा गया यूं परले, बार न बूंब न कोई।
मनवा समज कहूं मैं तोसूं, विषया मोख न कोई।।७१।।

सब ही मरे, जन्म मरण में आये, जिन्हें कोई याद नही करता। हे मन समझ मैं तुझसे कहती हूं कि विषयों से मोक्ष नहीं मिलता।

छाड़ छाड़ मन सबे बिकारा, काहा रहो मुरजाई।
बिरियां थकी चेत मन मुरख, ओसर जाय बिलाई।।७२।।

हे मन सब विकारो को छोड़ दे क्या मुरजा रहा है। हे मुरख मन, मनुष्य जन्म है जहां तक ही अच्छे कार्य होते है। मनुष्य जन्म जाने के बाद पछताना पड़ेगा।

आज काल करता दिन बीते, कायर ओला खावे।
करणा व्हे बेग कर लिजे, गया दिन नहीं आवे।।७३।।

अच्छे काम करने में आजकल की कहता है, वह नहीं करता है, उसको ही कायर ओला खाना कहा है। जो शुभ कार्य करना है जल्दी कर ले, गया हुआ समय वापिस नहीं आता है।

सोदो सगपण करे बुहारा, ढील पडे नहीं आछो।
भिचकी आंण पडे को मांही, रिग पिच हुवे मन पाछो ।।७४।।

यदि कोई सौदा व संबंध व व्यौपार करना है तो उसमें देर दार नहीं करनी चाहिये। कोई आकर भिचकी लगा दे तो काम नहीं होता, बिगड़ जाता है।

लाला आंण मिले तिण बिरियां, हिये सोच विचारे।
ढील पडया शीर बह न काई, ज्यो फैके सो मारे ।।७५।।

जिसे अमूल्य चीज मिलती है वह न लेकर हृदय में सोच विचार करता रहता है। जो पहले वार करता है उसी की जीत होती है और ढील करता है उसकी हार होती है।

सजिये कटक राड़ नहीं हूणा, करसण अकल बिगाड़े।
चोर जार दुश्मन गेह लिजे, ढील पड़े नहीं बाड़े ।।७६।।

दोनो तरफ फौजे सजी हुई हो तो लडाई नहीं होती है, अकल नहीं होती है तो खेती करो या कोई भी काम करो बिगड जाता है। चोर जार दुश्मन को मारने में देर करता है तो वे उनको मार देते है।

मन दे समझ कहूं तुझ तांई, जग दिष्टांग बतावुं।
ढील पडया में हुवे अकाजा, ताते सुण कह जावुं ।।७७।।

हे मन देह तुझे मैं क्या कहूं तू समझ जा, तूझे जगत का दृष्टान्त देकर बताती हूं। अच्छे काम में देर करने से नुकसान होता है, इसलिये सुणो मैं तुझे कहती हूं।

मोसर जाय नीर ज्यूं सिलता, पाछे रह ने कोई।
लोहो को ताव बीज को जबको, जाता बार न होई ।।७८।।

मनुष्य जन्म की आयु नदी के पानी की तरह जा रही है। आयु बीतने पर रह नहीं सकता। लोहे के ताव को व बिजली के प्रकाश को जाते देर नहीं लगती।

केती बिरियो गयो तूं परले, जूण अनन्ता धारी।
विषिया खाय रंज्यो नहीं कोई, सुण मन सीख हमारी ।।७९।।

कितनी बार तूं जन्म मरण में आया, अनन्त योनियां धारण की तो भी तुझे विषयो से तृप्ति नहीं हुई है। हे मन अब हमारी शिक्षा मान जा।

केती बार हुवेसो सिकरो, जुबक रोज कहाणो।
विषिया बिना रहयो नहीं वांही, खायर नाय अघाणो ।।८०।।

कितनी बार सिकरा स्याल हुवा पर वहां भी विषयो के बिना नहीं रहा, विषय भोग की भी तृप्ति नहीं हुई।

कीट पतंग पशु पखेरू, लाख इकावन कहिये।
अेती देह सबे ते धारी, जहां जहां विषेरस पिया ।।८१।।

कीट पतंग पशु पक्षी की इकावन लाख योनियां है। ये सब शरीर धारण किये, जहां भी रहा विषयों को भोगता रहा।

मनवे देह धरी ते केती, लेखे बिना अपारा।
च्यार लाख तूं जात कहाणो, जन्मा वार न पारा ।।८२।।

हे मन तेने इतने शरीर धारण किये है जिनकी गिनती नहीं हो सकती। मनुष्य जन्म में चार लाख जाती के जीव बना, तेरे जन्मों का वार पार नहीं है।

राजा होय बहुत विष पीया, कवास पास संग राणी।
हाकम सेठ सबे हुये आया, मनछा नांय पुराणी ।।८३।।

राजा होकर बहुत विषयो को भोगा, पास में दास दासी व रानियां रखी। तूं हाकिम बना, सेठ बना, परन्तु हे मन तेरी इच्छा की पूर्ति नहीं हुई।

किसबण बहुत बेसिया दासी, राम जन्या संग गायो।
भडवो होय रहयो मन माही, बिसिया धाप न आयो ।।८४।।

पेशेवर औरत व वैश्या व दासी बना, वैश्याओ के साथ भडवा होकर भी रहा तो भी विषयों से नहीं धापा।

छाली बहोत सेंकडा मांही, तोय बोकडो किया।
सांपे मांय सांड की बिरियां, विषे जुगे जुग पियो ।।८५।।

सैंकडो बकरियों में बकरा बना, गायों के टोले में सांड बना, जुगानजुगो में विषय भोगता रहा।

पारेवो होय पलक न बिछडयो, गज संग बोहोत बताई।
विषिया खाय रंजयो नहीं कोई, पडयो खाड में जाई ।।८६।।

पक्षी होकर भी पलक भर विषयों से दूर नहीं हुआ, हाथी हुआ तो भी बहुत हथनियो के साथ रहा। विषयो को भोगकर भी तृप्ति नहीं हुई। नकली हथिनी को असली समझकर खड्डे में जा पडा।

चोरी जारी बोह बिध किवी, लेखे बिना अपारा।
धायो नहीं हुवो नहीं पूरण, विषिया छेह न पारा ।।८७।।

कई तरह की चोरी की, जारी की, जिसकी कोई गिनती नहीं है, तो भी तेरी त्रृपती व पूर्ति नहीं हुई। विषय भोगो का कोई छेह पार नहीं है।

लगती लाय डालिये लाकड, दूणी आंच लखावे।
पाणी बिना बुझी नहीं कोई, कोट जतन कर जावे।।८८।।

आग लग रही है तो उसमें लकडी डालने पर दूणी भभकती है। पानी के बिना नहीं बुझती, चाहे करोडो प्रयत्न करो।

ज्यूं ज्यूं फूस कचरो डारे, त्यों वो हुवे भै भीता।
मनवा समझ मान जड मेरी, लाय जलत जुग बीता ।।८९।।

ज्यों ज्यों आग में फूस कचरा डालते है त्यों त्यों बहुत भभकती है। हे मन मूरख मेरी बात को समझकर मान ले। विषय रूपी अग्नि को जलते जलते याने भोगते भोगते अनन्त युग बीत गये।

इण विध बुझे कदे नही भाई, असंख जुग होय जावे।
पाणी डालस फूस कर दूरो, वहां की वहां बुजावे।।९०।।

इस विधि से अग्नि कभी नही बुझेगी चाहे असंख्य जुग बीत जाये। अग्नि पर पानी डालकर फूस को दूर हटाकर वहां की वहां बुझाने से बुजती है।

विषिया पिय धापसी नांही, सुण तूं अेहे अनाणा।
ताते बेग ऊपाय करिजे, दूरा देश पयाणा ।।९१।।

हे मन विषयो को भोगने से तृप्ती नही होगी। हे अनाडी मन मेरी बात को सुन ले, बहुत दूर देश को जाना है इसलिये जल्दी ऊपाय कर लो।

जुग जुग में अे किया बिहारा, नाना विध ब्हो भांती।
केती भूक गई मन तेरी, मैं पूछू कर खांती ।।९२।।

जुगानजुग से कई प्रकार से विषयो को भोगता आया जिससे तुझे क्या मिला, मैं पूछती हूं।

लख चोरासी मांय भटकियो, पिया विष अपारा।

केती भूख गई है तेरी, सुण मन भाख विचारा ।। ९३ ।।

चौरासी लाख योनियों में फिरा, वहां सब जगह विषयो को भोगा, वहां तेरी कितनी तृप्ती हुई, बोलकर कहो।

तो ही लाज शरम नही तोकूं, फिटो पडे न कोई।
कूटत पीट बोहो जूग बीता, निसडो लाज न होई ।। ९४ ।।

हे मन तो ही तुझको लाज शरम नही है न तू फीटा पडता है। जन्म मरण की मार खाते खाते अनन्त जुग बीत गये तो भी तूं निशरमा है, तुझे लाज नही है।

पडे गुडे उठ संभाले, निसडो फिर वांही को जूंबे।
मुवो सबे कबेलो पच रे, उन ही कूं सत चुंबे ।। ९५ ।।

निशरमा होता है उसको समझाने पर भी उसी काम में लगता है। सारा कुटुम्ब विषय को भोगते भोगते पच मरे तो भी सब उसी में लगे रहते है।

अंधो पडे अंध की लारा, खाड खूह नही सूजे।
ज्यूं मन समझ जाय जुग परले, सतगुरु बिना न सूजे ।। ९६ ।।

यदि अंधे की लकडी अंधे को पकडा दी है तो उसको खड्डा खोचरा नही दिखता है। निश्चय ही पडेगा। हे मन समझ, युगो से जन्म मरण में आ रहा है, सतगुरु की शरण लिये बिना ज्ञान नही मिलता है।

ताते कहूं समझकर लिजे, मैं परमोध बताया।
येती बिरा हुई मो केता, कुछ तेरे मन भाया ।। ९७ ।।

इसलिये मैंने तेरे को जो ज्ञान बताया है उसको समझकर धारण करो। मुझे कहते हुये इतना समय हो गया है। हे मन तुझे अच्छा लगा है या नही।

जेसी हुवे तेसी तूं कहिये, झूंठ न चाले कोई।
खांडा धार गेल पर बैणो, चूका गेड न होई ।। ९८ ।।

जैसी है वैसी कहो, झूंठ बोलने से काम नही चलेगा। सतगुरु का ज्ञान खांडा की धार की तरह है। ज्ञान को धारण नही करने से चौरासी का रोग नही मिटता है।

येती बिरा सुणो मन सोही, मून पकड़ गह बैठा।
पाछो जवाब न देवे दुष्टी, विषे पकड़ हुवा सेंठा ।। ९९ ।।

इतनी देर सुनते सुनते हो गई है, हे मन तू मौन धारण करके बैठा है। हे दुष्ट पीछा जवाब नही देता है। विषयो में ही रत रहता है।

बोल बोल सामी कर बांता, क्या तेरे मनसोबा।
मोकूं बेर बोहोत सी होई, पड़े बहुत विध रोबा ।। १०० ।।

हे मन बोल बोल सामने बात कर। तेरे मन में क्या विचार है। मुझे कहते कहते बहुत समय हो गया है, नही समझेगा तो तुम्हें ही दुख भोगना पडेगा।

येती बेर ज्ञान मैं दिया, भांत भांत समझाया।
तेरे दिल धारणा जैसी, कहो कायनी भाया ।। १०१ ।।

इतने समय तक मैंने तुझको ज्ञान दिया, भांत भांत से समझाया, अब तेरे दिल में क्या विचार

है, जवाब दो।

बोल्या बिना खबर नही कांई, लागा बिना न जांणे।
चाख्या बिना साब खट पांचू, कोहो किसी बिध ठांणे ।। १०२।।

बोले बिना क्या मालूम पडती है और लागे बिना कोई नही जानता। बिना चाखे रसो का स्वाद कैसे बता सकता है।

बोल बक कर कहो सुणाई, पंचा मांय ऊचारो।
कुलडी मांय नही गुल गलना, चोर घरे नही मारो ।। १०३।।

बोलकर सुणाकर कहो, पंचो में जाहिर करो, बोले बिना क्या मालूम पडती है। यही कुलडी में गुल गलना है। विषय रूपी चोर जो शरीर में है उनसे अलग होना ही चोर को मारना है।

जैसी करे तिसी मन भाको, चौडे कहो बजाई।
मून पकड गह अब नही छुटो, बोल बोल मन भाई ।। १०४।।

हे मन जैसी तेरी भावना है वैसा बोलकर कह, मून पकडने से नही छूटेगा। हे मन भाई बोल।

तेरे मते जुगे जुग चाल्यो, मन भाया सो किया।
अब तो करत लागसी बिरिया, ज्ञान बिड़ला लिया ।। १०५।।

आत्मा कह रही है कि मैं अनन्त जुगो से तेरे साथ हूं। जो तेरी इच्छा थी उसी माफिख हे मन तुमने किया। अब मैंने सतगुरु से ज्ञान धारण कर लिया है, जिससे तेरे कहे माफिक नही चलूंगी, मैं तुझ से अलग हो गई हूं।

दोहा : अब मन के चरके लग्यो, उठ गही शमसेर।
ऐसो जग में कौन है, मोय पकड ले घेर ।। १०६।।

मन को बुरा लगा, वह आत्मा से कहने लगा। जगत में ऐसा कौन है जो मुझे वश में कर सकता है।

मैं सब कूं गेह राखिया, सूर नर सब अवतार ।
देह धार जो ऊपजे, चले हमारी लार ।। १०७।।

मन कहता है कि मैंने सब देवता व मनुष्य व सब अवतारो को बस में कर रखा है। जगत में जो शरीर धारण करेगा, उसको मेरे साथ चलना पडेगा।

ऐसो कहो कोण जग मांही, हम कूं पालनहारा।
चवदे लोक बांध मैं लिया, तीनूं देव विचारा ।। १०८।।

जगत में ऐसा कौन है, कहो जो हमको वश में कर सके। तीन लोक चवदा भवनों को ब्रह्मा, विष्णु, महेश को मैंने कब्जे में कर रखा है।

मोसुं जीत सके नहीं कोई, सिद्ध साधक सब देवा।
जां भेजुं तहां ही चल आवे, काडु जुग जुग केवा ।। १०९।।

सिध साधक व देवता मेरे से कोई नहीं जीत सकता। जहां मैं भेजता हूं वही जाना पडता है। जन्म मरण का दुख भोगना ही केवा काडना है।

पीर पेगम्बर तपसी मुनी, राकस सब वश कीना।
आठू पोहोर हुकम नहीं मेटे, तन मन धन हम कूं दीना ।। ११०।।

मैंने पीर पेगम्बर तपस्वी मुनियों को सबको वश में कर रखा है। रात दिन मेरे हुक्म में रहते

है मेरे विचारो माफिक चलते है, यही तन धन देना है।

लख चौरासी जीव जात सब, क्या नर नार कहाणा।
मेरे हुक्म बिना सब सोई, ऊठ पेंड नहीं जाणा।। १११।।

चौरासी लाख योनियो में जितनी भी जाति के जीव है तथा जितने स्त्री पुरूष कहलाने वाले है उनका मेरे विचारो माफिक चलना ही ऊठ कर पेंड नहीं जाना है।

लाख कोश परे पुरूष पठावुं, देश विदेशां फेरूं।
मेरे वश शकल जग नाचे, दावा सब ले घेरूं ।। ११२।।

मैं मनुष्य को एक क्षण में लाखों कोसो के आगे भेज देता हूं। देश विदेश में घूमाता हूं, सारा जगत मेरे वश होकर नाचता है, मेरा ज्ञान मानता है, यही सब दावा घेरना है।

मोसुं जोर किया नहीं जीते, आद अंत में कोई।
चार दिन कोऊ हट करेला, ने:चे:मो वश होई।। ११३।।

आदि से अंत तक संकल्प विकल्प के साथ रहना ही मन को नहीं जीतना है। यदि कोई साधन से मुझे कुछ दिन वश में कर ले, जब तक मेरे साथ है मेरे वश में रहना पडेगा।

मेरे फौज लाव लश्कर है, हाकम दल बिन लेखे।
ठाम ठाम पर मेरा थांणा, आण कहो कुण पेखे।। ११४।।

मेरे पास फौज है, अपार सेना है, जगह जगह मेरे थाणायत है, मेरी तरफ कौन देख सकता है।

मोसुं लडया भिडया नहीं जीते, फौज अपार बल भारी।
पांचु जोध अजीत अखे, पटक मांड सब मारी ।। ११५।।

मेरे अपारबल वाली फौजे है, मेरे से लड भिडकर कोई नहीं जीत सकता। मेरे पांच योद्धा ऐसे है उन्हें कोई नहीं जीत सकता। वे अक्षय है, उन्होंने सब बह्माण्ड को पटकर मार दिया है।

ऐसा जोध हमारा पायक, जहां भेजुं तहां जावे।
सब की आण लाज मैं मेटे, अपणा हुक्म हलावे।। ११६।।

ऐसे योद्धा मेरे सेवक है जहां भेजता हूं वही जाते है। दूसरे की सब आंण को लज्जा को व मैं पने को मेटकर अपना हुकम चलाते है।

और किसी की चले न कांई, ज्यां त्यां जोध हमारा।
सबकी सुध बुध सो चावे, परघट मांडे बुहारा ।। ११७।।

जहां तहां मेरे योद्धा है जो किसी की नहीं चलने देते। सबकी सुध बुध भूलाकर उनके विचारो के माफिक चलाना ही परघट में बुहार मांडना है।

मेरा जोध शकल मैं दाखुं, सुण तुं ज्ञान विचारा।
सनमुख होय कान धर भाई, इसा जोध है सारा ।। ११८।।

मेरे सब योद्धा का वर्णन करता हूं, ज्ञान से विचार कर सनमुख होकर कान लगाकर सुणो, मेरे ऐसे योद्धा है।

काम क्रोध मद मत्सर लोभ रे, डिंब पाखंड अंतराई।
धेक धाक अज्ञान मान मोह रे, बडे गुमर दल मांही ।। ११९।।

काम, क्रोध, मद, मत्सर, लोभ, डिंब, पाखंड, अन्तराय, धेक, धाक, अज्ञान, मान ऐसे दल

में बडे बडे योद्धा है।

दोहा :- आपो चितवन तामसी, में ते दोन्युं लार।
दगो गांठ संग लालची, दस डांव शिरदार ।। १२०।।

आपो याने अहंकार, चितवन करना, क्रोध करना, थारो मारो करना, दगा करना, लालच रखना, ईर्ष्या रखना, ये सब सरदार है।

बाद बिरोधी बांकडा, किबर क्रोधी जांण। मद विवादु संग रहे, मुडे न पाछा आंण ।। १२१।।

वाद विवाद करना, क्रोध करना, मद रखना याने अहंभाव रखना, विवाद करना ये सब साथ रहते है। इनके माफिक चलना ही पीछा नही मुडना है।

पांच बांण संग सबल है, तोख तुपक ले लार।
कुण जीते को आंण कर, मो संग यो बिस्तार ।। १२२।।

पांच बांण शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध है। ज्ञान अज्ञान का अहंभाव, ये तोप तुपक है। मेरे साथ ऐसा विस्तार है, मेरे को कौन जीत सकता है।

मेरे जोधा शेष है, तिण संग बोहो प्रवाण। आद अन्त घर बन में, जीत न जावे जाण ।। १२३।।

मेरे हजारो जोधा है, उनके साथ में बहुत है। आद से अन्त तक घर व बन में याने गृहस्थ अवस्था में रहो या त्याग अवस्था में रहो, कोई नही जीत सकता है।

चिंता त्रसना आशा ले, चडे हमारी लार। दल पेली भेला करे, देत बोहोत शीर मार ।। १२४।।

चिंता तृष्णा आशा यह हमारी साथ है, कोई भी प्राप्ति की आशा करे वो नही मिलने पर दुख होना ही सिर मार देना है।

निंधा नासत नाट रे, चाह चुगल संग होय।
ममता माया कामणी, निमख न बिसरे मोय ।। १२५।।

निंदा झूंठ व नकटाई चाहना चुगली साथ रहती है। ममता माया कामनी मेरे साथ रहती है। जरा सी भी अलग नही होती।

पांच पचीसुं जोध है, तीन बडे अमराव। अे आगल नर नार में, जीत न गयो न्याव ।। १२६।।

पांच विषय पचीस प्रकृति सत रज तम ये गुण बडे अमराव है। ये सब स्त्री पुरूषो में है इनसे कोई अलग नही हो सकता।

चौपाई:- मेरी फौज अपार, भाक मैं कब लग बरणू।
के परघट के गोप, नांव धरियो के धरणू ।। १२७।।

मन कहता है कि मेरे अपार फौजे है, उसका मैं कहां तक वर्णन करूं। कई तो चौडे है कई छिपे हुये है, उनके नांव धर दिये है कितने के ही नांव धरना है।

सुतो लेवुं मार, बोल चालतडा सोई। गुप्त सेलबे बाण, चेत सो सके न कोई ।। १२८।।

सोते हुये को व बोलते चालते को मार लेता हूं। मेरे से सेल बांण सब गुप्त विचार चलते है उसके माफिक चलना ही नही चेतना है।

काम क्रोध मद मत्सर, लोभ अहंकार सरिसा। तरक तमोगुण बाद, रीस अज्ञान खवीसा ।। १२९।।

काम, क्रोध, मद, मत्सर, लोभ, अहंकार, तर्क, तमोगुण, बाद, रीस व अज्ञानता ये सेवक है।

दोहा :- एक बांण सुं मार ली, शकल शिष्ट कूं आय।

अेसा पांचु बाण रे, मेरे संग रहाय ।। १३० ।।

एक बाण से मैंने सारी सृष्टि को मार ली, इस तरह के पांच बाण मेरे साथ रहते है।

तीन ताप नव मांय ली, चवदे छूटा बांण। जीत सके कुण जग में, करो बात मुझ आंण ।। १३१ ।।

अध्यात्मिक अधी देव व अधीभूत ये तीन ताप। काम क्रोध मद लोभ व पांच विषय ये नो तथा पांच ज्ञान इन्द्रिया पांच कर्म इन्द्रिया चित मन बुद्धि अहंकार ये चवदह बाण है। इनके छूटने पर मुझ से कहो कौन जीत सकता है, मेरे से आकर बात करो।

मन बोले मगरूर में, गिणतन राखे काय। केता जुग में पच गया, अेक ताप के मांय ।। १३२ ।।

मन बडे अभिमान से बोलता है और किसी को भी नही गिनता है। जगत में कितने ही पच पच कर मर गये परन्तु एक भी विषय से अलग नही हो सके। यही एक ताप के मांय पचना है।

एक हमारे दूत सो, पचे अनन्ता लोय। मो लग को कुण आवसी, एक न जीते कोय ।। १३३ ।।

मेरे एक ही दूत से अनन्त संसारी पचते है, मेरे पास कौन आयेगा। एक दूत को भी नही जीत सकता है।

लाटू बाटू बापडा, पच पच मरे अे नाहक। मेरे जोधे लोभ की, अे सहे नही धाक ।। १३४ ।।

बिचारे लाटू बाटू अनेक व्यर्थ में ही पच पच कर मर गये। मेरे एक योद्धा लोभ की धाक को यह नही सह सकते याने लोभ को कोई नही छोडता।

मान सींह सब घेरिया, सुर नर मुनि देव। तीन लोक चवदे भवन, करे हमारी सेव ।। १३५ ।।

मान बडाई को सुर नर मुनी देवता सब ही चाहते है यही मानसिंह का घेरना है। तीन लोक चवदा भवन में रहने वाले सब मन के विचारो के माफिख चलते है, यही सेवा करना है।

राणी मेरे बोहोत है, पटराणी घर आस। सुर नर मुनि जुग के, सब गल गाली पास ।। १३६ ।।

मेरे बहुत रानियां है, आशा पटरानी है, देवता मनुष्य मुनी सब आशा रखते है, यही गले में फांसी डालना है।

तू क्यों डूबे बापडा, हम सुं तेग समाय। बड़ा बड़ा रिष पाडया, शिव सिंगी रिषी जाय ।। १३७ ।।

बडे बडे ऋषि शिवजी व श्रृंगी ऋषि जैसे भी मन को वश में नही कर सके तो साधारण आदमी कैसे कर सकते है। इसको ही डूबना व तेग समाना कहा है।

चौपाई :- जन सुखराम मन उगताया, अब कहो काहा करिजे।
किस विध शरण पकड गेह रहिये, नाम किसी विध लिजे ।। १३८ ।।

मन का भक्ति में नही लगना ही ऊगताना है। कैसे परमात्मा की शरण ली जाय, कैसे भजन किया जाय।

क्यूं को क्यूं कहे मन मांई, सूतक सूत चलावे।
किण सूं जाय कहूं कहो कैसे, मो पत केण न आवे ।। १३९ ।।

मन में कई तरह के विचारो पर विचार करता है, ये करना है, वो करना है, ऐसे सूत बांधता है। मैं किसे जाकर कहूं, कहने में नही आता है।

कहिया सुणिया व्यथा सब जांणे, उपाय करेस कोई।
जन सुखराम बको घर बारे, साय गुरां संग होई ।। १४० ।।

कहने सुनने पर ही सब दुख जान सकते है व सहायता कर सकते है। म:फ: है कि गुरु

महाराज से प्रार्थना करने पर वो ही सहायता कर सकते है।

हरिजन कहे ज्ञान सब गावे, सतगुरु सम न कहिये।
दुख सुख जाय कहे जन आगे, फिर शरणागत रहिये ।। १४१ ।।

परमात्मा के जन व सभी ज्ञान यही कहते है कि जगत में सतगुरु के बराबर कोई नही है। सतगुरु को जन अपने सुख दुख की प्रार्थनाकर उनसे ज्ञान धारण करते है। यही शरणागत रहना है।

गुरु से करे पुकार, मार भवसागर तारे। मन केती को बात, छिनक में जुग ऊधारे ।। १४२ ।।

सतगुरु से प्रार्थना करे तो भवसागर से उद्धार कर देंगे, मन की बात ही क्या है, क्षण भर में जगत का उद्धार कर सकते है।

जन दिया उपदेश, भेव मेरे मन भायो। जन सुखिया जब दौड़, शरण सतगुरु के आयो ।। १४३ ।।

जन ज्ञान का उपदेश देते है वो ज्ञान मुझे अच्छा लगा है, अब सतगुरु से ज्ञान धारण किया है। म:फ: है कि यही सतगुरु की शरण में आना है।

सतगुरांजी सुं अरजी, सब सन्ता सुं बिणती।
सतगुरां सुं प्रणाम बिडद तुम्हारो जांण के, साय करो हर आंण ।। १४४ ।।

सतगुरुजी से प्रार्थना व सब संतो से विनती है व सतगुरु से प्रणाम है, हे परमात्मा आप अपने बिडद को जानकर मेरी आकर सहायता करो।

मैं खूनी सो रावला, कोल चूक करतार। रूम रूम विष ते भरे, चूके गुन्हा न पार ।। १४५ ।।

मैं आपका दोषी हूं। मैने आप से जो वादा किया था सो हे परमात्मा मैं उसको भूल गयी हूं। सारे शरीर में विषय विकार भरे हुये है मेरे दोषो का पार नही है।

मेरी करणी देखता, मुक्त भवां नही होय। नरक कुण्ड में झूलबो, तामें फेर न कोय ।। १४६ ।।

मेरे कर्म देखते हुये मेरी मुक्ति कभी नही होगी। मुझे निश्चय ही नरक में जाना पडेगा। इसमें कोई फर्क नही है।

मैं दुष्टि दावा भरे, किया आल जंजाल। पूरब प्रीत पिछाणिये, सांई करो संभाल ।। १४७ ।।

कई प्रकार के कर्मो में रत रहना ही आल जंजाल व दावा भरना है। मैं आपका ही अंश हूं आपका बिडद विचार कर मेरे पर कृपा करो।

तुम बिन दुखिया बोत सुं, अन्तर दरद अपार।
हाथ कमाया काम मैं, के किस विध करूं उचार ।। १४८ ।।

हे परमात्मा आपके बिना बहुत दुखी हूं, मेरे अन्तर में अपार दरद है। मेरे हाथो से मैंने कर्म किये है याने कर्म बन्धन किये, अब उनका किस तरह उच्चारण करूं।

मैं किया मन भावता, हर सामी दे पूठ। मूंढो किम दिखलाइये, मैं जुग दोनो झूंठ ।। १४९ ।।

आत्मा कह रही है कि मन के विचारो के माफिक कर्म करना व भक्ति नही करना ही परमात्मा को पूठ देना व मन भावता करना है।

मैं सोच्यो दिल मांय जूं, श्याम बिना नही जाग।
किया सो तो कर लिया, अब हर चरणा लाग ।। १५० ।।

परमात्मा के सिवाय और दूसरा कोई नही है। जिनकी शरण में मैं जांऊ यह दिल में सोचा है। मैंने कर्म किये थे वो कर लिये है, परमात्मा अब तो आपकी शरण में रखो।

मन का मता मिटाइये, चालो सतगुरु बांण। शब्द कहे तिण रीत में, भेल न दूजो आंण ।। १५१ ।।

मन के विचारो को छोडना ही मन का मता मिटाना है। सतगुरु के ज्ञान माफिक चलना ही सतगुरु बांण चालो है। उनके बताये अनुसार ज्ञान पर चलना ही भेल न दूजो आंण है।

अरज करे सुखराम, दुख दुश्मन का भाखे।
सुणज्यो सब नर नार, भरम पड़दो नही राखे ।। १५२ ।।

म:फ: है कि आत्मा अरज कर रही है कि दुश्मन क्या क्या दुख देता है। उसका वर्णन कर रही है। सब ही स्त्री पुरूष सुणो भरम व छिपाव नही रख रही है।

सतगुरु दाद पुकार सुणिजे, मनवे मुझको मारया।
निश दिन आंण मोरचे मंडियो, ना हिणे ना हारया ।। १५३ ।।

मन अपने विचारो के माफिक चलता है यही मन मेरे को मारना है। सतगुरु मेरी सच्ची प्रार्थना सुणो, रात दिन नेष्ट विचारों में लगना ही मोरचे मंडना व ना हिणे ना हारे है।

पांचु बाण सकल बल तीखा, सो मन हाथ संभावे।
निश दिन झूंझ करे मन भारी, निरख निरख ले बावे ।। १५४ ।।

काम, क्रोध, मद, लोभ, अहंकार को धारण करना ही तीखे बांण है। मन इसी से संकल्प विकल्प करता है, रात दिन ऐसे विचारो में लगना ही जूंझ कर मरना व निरख निरख बाना है।

कब लग बांण टाल मैं बच हूं, तीर छेह नही कोई।
चौडे बहे गुप्त अध भीतर, मार इसी मन होई ।। १५५ ।।

इसी प्रकार अनन्त विचार करता है मैं इन विचारो से कैसे बच सकती हूं। अन्दर में संकल्प विकल्प करना ही अन्दर के बांण है और बाहर विचार करना ही बाहर के बांण है। मन ऐसी मार देता है।

निश दिन जूंझ बूझ में राखूं, तरक फरक दिन जावे।
करता जतन इसी विध झूंके, लागा पीड़ लखावे ।। १५६ ।।

रात दिन मन बुरे विचारो में लगता है उसमे मैं न लगकर अच्छे विचारो में लगना ही जूंझ बूझ व तरक फरक में दिन जाते है। अच्छे विचार करते करते बुरे विचार आ जाना ही लागी पीड लखावे है।

ऐसा रोष करे मन फैके, वार दुसारूं फूटे। लागे बांण चेतावे मोही, सबे आंण तब लूटे ।। १५७ ।।

अच्छे विचार नही कर निरन्तर बुरे विचार करना ही वार दुसारूं फूटना है। आत्मा कहती है कि बुरे विचार आते ही ज्ञान होता है और नही चाहने पर भी बुरे विचारो में लगना ही लुटना है।

हिलमिल शकल भोमिया सारा, करत राड़ मन भारी।
सब ही भीर मीर सब आवे, करे दुष्ट सब जारी ।। १५८ ।।

आत्मा का शुभ संकल्प व विचारो से हटाने वाली जितनी भी वृतियां व विचार है वो सब मन के भोमिया है। अच्छे विचारो में नही लगने देना ही राड करना है व भीर आना है, दुष्टो का जारी करना है।

मन के संग रमे मिल सारा, चाय मांय सो खावे।
मन की डोर शकल गेह फांसी, ज्यां खिंचे त्यां आवे ।। १५९ ।।

मन के द्वारा जो बुरी वृतियों के विचार आते है उस माफिक चलना ही साथ रहना है व चाय

मांय सो खाना है। मन के विचारो माफिक चलना ही जहां खैंचे जहां जावे है, यही फांसी है।

मन के हाजर शकल हजूरी, पांच पचीस कहिजे।
तीनूं जोध शकल शिर नायक, कहे किसी विध रीजे ।। १६०।।

पांच विषय पच्चीस प्रकृति यह सब मन के सेवक है। हाजरी में खडे रहते है। तीन जोध याने सतोगुण रजोगुण तमोगुण सबके सिर पर सरदार है। यह तीन गुण हमेशा बराबर आते जाते रहते है। इनसे अलग कैसे हो सकता है।

अेके लडूं दूसरो ऊठे, तीजो आंण गासे। चौथो आंण मार दे भारी, और अनेकूं पासे ।। १६१।।

एक विचार को दबाने की कोशिश करता हूं तो दूसरा तीसरा व चौथा उठ जाता है और अनेक विचार आने लग जाते है।

ऐसी मार मरम तन मांही, कही सुणी नही जावे।
थर हर कंपे तन सब धूजे, चाह जहां ले आवे ।। १६२।।

बुरे विचारो में लगना ही मरम की मार लगना है। जो कहने सुनने में नही आती है, बुरे विचारो के साथ में लगने से शरीर कम्पायमान होता है तो भी मन जो चाहता है, वही होता है।

चोरी करे झूंठ मन बोले, तस्कर करे पयाणा।
तिरिया संग रमे महलन में, निश दिन अेह भयाणा ।। १६३।।

मन चोरी के विचार करता है। झूंठ बोलता है, चोरी करने चलता है, स्त्रियों के साथ महलो में रहता है और रात दिन इसी विचारो में लगा रहता है।

ओरां ठगे आप मन जीते, अे मन डाव विचारे।
बरजू बहुत रहे नही कोई, सुणो इऊं मन मारे ।। १६४।।

अच्छे विचारों में न लगने देकर बुरे विचारों में लगाना ही मन का जीतना है, मन बुरे विचार करता ही रहता है। रोकने पर भी नही रूकता, इस तरह मुझे मारता है।

लेखा करे कसर बो सूजे, ज्यां त्यां जाय लडावे।
तामस मांय तमोगुण छेडे, ईऊं मुज अेब पडावे ।। १६५।।

दूसरो की कसर देखना ही लेखा करना है। उन में कसर समझ कर क्रोध करके तमोगुण धारण करके लडाई करता है यही अेब पड़ाना है।

दावा करे बुराई बंधे, कड़वा बैण कहावे। बरज्यो रहे नही गुरुदाता, मैं बोलत सम पाड़े ।। १६६।।

दूसरो की बुराई करता है व क्रोध से बोलता है हे गुरुदेव मेरे रोकने से भी नही रूकता है।

बन सो जाय पहाड़ घर किजे, रहूं इकंतर जाई।
छाड़े नही संग मन मेरो, घेर लहे छिन मांही ॥ १६७॥

बन में जाकर पहाड में घर करता हूं या अेकान्त में रहता हूं तो भी मेरा मन साथ नही छोड़ता है। विचार करता रहता है और एक क्षण भर में मुझे घेर लेता है।

घर में आण बैठ रहूं खूणे, चौहटे कदे न जावे।
देही पड़ी रहो छो पाछे, यो मन जुग फिर आवे ॥ १६८॥

यदि घर एकान्त में बैठा रहूं बाजार व चौराहे पर भी कही नही जाता हूं तो भी शरीर तो वहीं का वहीं रहता है और यह मन सारे जगत में फिर कर आ जाता है।

सपने मांय दिसन्तर डोले, मार मोहो संग किया।
दुख सुख त्रास देत शिर भारी, जाय विषे रस पिया ॥ १६९ ॥

मन सपने में भी कहां का कहां फिरता रहता है, मोह का साथ करता है, कई तरह के सुख दुख का विचार करता है। यही त्रास देना है। विषय का विचार करना ही विषय रस पीना है।

मून पकड़ देखी हम सोई, मुख सुं कहूं न कांई।
तोई आंण मन मुझ मारे, दुख सुख सबे लखाई ॥ १७० ॥

मैंने मौन धारण करके भी देखा, मुंह से कुछ नही बोलने पर भी मन मुझको आ घेरता है याने अनेक विचार करता रहता है। उसका सुख दुख मालूम होता है।

अंतर मार इसी विध मारे, बाहर लखे न कोई।
झीणी मार रात दिन मारे, किस विध सहूं मैं सोई ॥ १७१ ॥

अन्तर में विचार करना ही मार देना है, कई प्रकार का विचार करना ही झीणी मार रात दिन मारना है। उसको मैं कैसे सहन करूं।

अब बैठा मून संभाया, नांव की लग्न लगाई। बिन करणी करतार, बात मानुं नही कांई ॥ १७२ ॥

अब मैं मौन धारण करके ध्यान करने बैठती हूं, मैंने नाम की लगन लगाई। अब पक्का विचार कर लिया है कि भक्ति के सिवाय दूसरा विचार नही करूंगी।

नेहचल राख शरीर, ध्यान करणें कूं बैठा। मन ले गयो परदेश, जाय विषिया घर पैठा ॥ १७३ ॥

शरीर को स्थिर रखकर ध्यान करने को बैठता हूं तो मन नही रूक कर दूसरी जगह विषयो के विचार करता रहता है।

किया सबे स्वाद भोग, पांचु रस खाया। नाना विध प्रकार, मन लो बोहोत बताया ॥ १७४ ॥

पांचो इन्द्रियो के विषय के भोगों का चिन्तन करना ही रस खाना है। कई प्रकार के विषयो के विचार रखना ही बोहोत बताना है।

जब पांचु भै भीत, होय घेरयो मुझ तांई। भली बुरी के बीच, जाय मेलेन मांई ॥ १७५ ॥

पांचु इन्द्रियो का मन के विचारो के माफिक भोगो में लगना ही भयभीत होना व घेरना है। जैसे भला बुरा विचार होता है, उसमें लगना ही जाकर माय मेलना है।

मेरे वश मन नांय, काहा अब किजे कांई। मैं चाऊं सो बात, हूण देतो है नांही ॥ १७६ ॥

इसका अब मैं क्या करूं, यह मन मेरे वश में नही होता है, मैं जो बात चाहती हूं मन नही होने देता है।

किण पे करूं पुकार, दुख मेरा अे गावुं। को ऐसा जग मांय, ताय मैं शरणे जावुं ॥ १७७ ॥

किसके पास जाकर प्रार्थना करूं, जिससे मेरा दुख उनको बताऊं। जगत में ऐसा कौन है जिसकी शरण में मैं जावूं।

कियो ज्ञान विचार, समझ देख्यो जुग जाई।
सतगुरु सम नही शरण, और अेसी जग मांही ॥ १७८ ॥

ज्ञान से विचार किया, जगत में जाकर समझ से देखा तो मालूम हुआ कि सतगुरु याने सतग्यान की शरण के बराबर जगत में दूसरा कोई नही है।

किजे जाय पुकार, चरण गेहे शरणे रिजे। मन घेरया मुझे जाय, खबर गुरां बेगी लिजे ॥ १७९ ॥

सतगुरु के बताये माफिक ज्ञान धारण करना ही पुकार कर चरण गेहे शरण में रहना है। मन ने मुझे अपने विचारो में लगा रखा है यही घेरना है। कृपा करके मेरी सुधी जल्दी लीजिये।

बोहो बिध मन सुं हट कर, निश दिन कहूं बजाय।
मेरी अेक न माने है, विष हलाहल खाय ॥ १८० ॥

मैंने मन को बहुत तरह से समझाया और रात दिन समझाती हूं तो भी मेरी एक भी नही मानता हुआ विषयो का ही चिन्तन करता रहता है।

तुम सुणज्यो हर सांईया, मन अपराधी लूण्ड। करे करावे आप ले, मो शिर देवे भूण्ड ॥ १८१ ॥

हे राम सतगुरुदेव आप मेरी प्रार्थना सुणो। यह मन बड़ा अपराधी बदमाश है। खुद तो करता कराता है और बुराई मेरी होती है।

मैं जब बेसुं ध्यान में, ओ घर रह न कोय। ताको अब मैं क्या करूं, भेद बतावो मोय ॥ १८२ ॥

जब मैं ध्यान में बैठती हूं तो यह मन शरीर रूपी घर में नही रहता है। इसका अब मैं क्या करूं, आप मुझे इसका ज्ञान बताइये।

तुम शरणागत केशवा, राखो राम विचार। मन माया जुग मोहनी, करती है मुज खवांर ॥ १८३ ॥

हे राम सतगुरुदेव मुझे कृपा करके आपकी शरण में रखिये, मन के विचारो व माया का मोह मुझे दुख दे रहा है।

शरणे शरम से कोय ने, पडती है नर जांण।
जनसुखिया ब्रहन कहे, हर मुझ ना छाडो आंण ॥ १८४ ॥

यदि कोई मनुष्य मनुष्य की शरण में जाता है तो उसका भी उसको विचार रहता है। म:फ: है कि बिरहनी आत्मा कह रही है हे रामजी मैं आपकी शरण में हूं आप मुझे मत त्यागो।

आप बिन कदे न छूट सूं, मेरा जोर संभाल।
अप मन माया मोह ले, मो गल गाले जाल ॥ १८५ ॥

मेरे बल से आपकी कृपा बिना छुटकारा नही होगा। मन के संकल्प व माया का मोह यह मेरे गले मे फांसी है।

हाथ जोड़ के त्यार हूं, अब मन करूं न और।
अप मन माया कामणी, मुझ डारत है किस ठौर ॥ १८६ ॥

साधना करने वाली आत्मा रामजी से हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रही है कि अब मन के विचारो के साथ नही जाऊंगी क्यों कि मन के संकल्प व माया का मोह व स्त्री का मोह न मालूम किस जगह ले जाकर डालेगा।

दाता ऊपर कीजिये, मो दुर्बल को आय। मन मनसा दिढ राख हो, ये हरजी तहां जाय ॥ १८७ ॥

हे राम सतगुरुदेव मुझ गरीब पर दया करो कि मेरे मन के विचार मजबूत रखो, जिससे परमात्मा की भक्ति करके आत्मा परम पद में मिल जाय।

तुम सब सारा बरणियां, काम क्रोध अहंकार।
अे मुझ को बोहो मार दे, छिन छिन पलक विचार ॥ १८८ ॥

आपने ही सब काम क्रोध अहंकार को बनाया, मुझे ये क्षण क्षण में बहुत सताते है।

तुम किया सो सांईयां, मुझ मारया किम जाय।

साय करो शरणे गहयो, अब हर शील पठाय ॥ १८९ ॥

हे परमात्मा जिसको आपने बनाया है उनको मैं कैसे मार सकती हूं। मैंने आपकी शरण ली है आप मेरी सहायता करो। हे प्रभु अब मुझे शीलव्रत धारण करने की शक्ति दो।

समता धीरज सो दीजिये, निवण खिवण दे राम।
दर्शण देई प्रसण हुवो, मो सब सारो काम ॥ १९० ॥

हे रामजी मुझे समता, धीरज, नम्रता, सहनशीलता दीजिये। आप मुझे इस घट में शब्द ब्रह्म के रूप में दर्शन देकर मेरे सब कार्य सुधारो।

जुग जुग सारे रामजी, सब संतन के काज। भीड़ पडे तारे सही, तम मोटे महाराज ॥ १९१ ॥

हे रामजी आपने सब संतो के जुग जुग में काम सुधारे है। कष्ट पडने पर सहायता की, आप मोटे याने बडे है।

तेरी भक्त संभाय के, डूबो सुणयो न कोय। मो पर कृपा न भई, क्या ओगुण मुझ होय ॥ १९२ ॥

हे रामजी आपकी भक्ति करने वाला चौरासी में नही जाता है। आपकी कृपा मेरे पर नही हुई तो इसमें मेरा ही कोई दोष है।

शरणे आया रामजी, क्या शिर देवे मार। तुम तारो जब ही तिरे, नही जूं जोर हमार ॥ १९३ ॥

हे रामजी आपकी शरण में जो आयी हूं परन्तु मन के विचार व माया मोह मुझे सता रहे है। आप तारोगे जब ही उद्धार होगा, मेरे जोर से नही होगा।

खोटा खरा न परख हो, क्या कसतावे मोय।
तुम ही घडनेहार था, मुझ क्या दोष न होय ॥ १९४ ॥

मैं खराब हूं या अच्छी इसकी परीक्षा मत करो, आप ही बनाने वाले थे इसमें मेरा क्या दोष है।

तुम किया तुमने घडयो, तुम ही तोलनहार। मो मन को क्या दोष है, सांई करो विचार ॥ १९५ ॥

हे प्रभु आपने ही बनाया, आपने ही किया, आप ही परीक्षा कर रहे हो। मेरे मन का क्या दोष है, हे रामजी आप ही विचार करो।

तम राखो ज्युं रामजी, रेणो या जग मांय।
निजमन निमख न बिसरे, धन मन ओ तन जाय ॥ १९६ ॥

हे रामजी इस जगत में जैसे आप रखेंगे वैसे ही रहना है। निजमन याने आत्मचेतन निमिष मात्र भी आपको नही भूले। यदि तन मन धन भी मेरा चला जाय।

मन सुं राड मन सुं करूं बिगाड़, हेत राखूं नही कोई।
जुग जुग ठगियो मोय, गांठ सारी सब खोई ॥ १९७ ॥

मन के विचारो के माफिक नही चलना ही मन से राड व बिगाड करना व हेत नही रखना है। जुगानजुगों में मन ने अपने विचारो में लगाया, यही ठगना है। स्वांसा को अपने विचारो में लगाना व भजन में नही लगने देना ही गांठ सारी खोना है।

कियो निपट कंगाल, हुवाल पाडया मन मोमे।
डाव बणयो अब आय, उलट पाडूं सब तोमें ॥ १९८ ॥

स्वांसा को भजन में नही लगने देना ही कंगाल करना व हुवाल पडना है। अब मेरा मौका

आया है मैंने सतगुरु की शरण ली है, जिससे तेरे से अलग हो गई हूं।

गल में जडूं जंजीर हाथ हथकड़ियां देवूं। जैर बंध सुं मार, कूट गेले अब लेवूं ॥ १९९ ॥

मन के विचारो में न लगना ही गले में जंजीर हाथ में हथकडी देना है। मन को अच्छे विचारो में लगाना ही जेर बंध से मारना व गेले लगाना है।

हम से करी निराट, बोहोत ते घात विचारी। पेली दे सुख दीन, नरक कूं किया तियारी ॥ २०० ॥

हे मन तुमने मुझे अपने विचारो में लगाकर बहुत कष्ट दिया है। पहले तो उनसे सुख का आभास हुआ फिर उससे ही नरको में पडना पडा।

कहयो न मानुं तोय, ऊलट शिर मार दिरावुं।
तो फिटे की लार, समझ नरकां क्यों जावुं ॥ २०१ ॥

अब मैं तेरा कहना न मानकर तुझे ही भक्ति में लगा दूंगी। यही सिर मार दिराना है। तुझ बुरे विचारो वालो के साथ लगकर मैं नरक में क्यों जावूं।

सुण मन ज्ञान पुकार कहे है, आद अंत की बात।
सूनी हाट चोर घर फोड़े, धणी जहां नही जात ॥ २०२ ॥

हे मन ज्ञान की बात सुण आदि से लेकर अन्त तक की यही बात है। जहां हाट व घर सूने होते है वहां चोर पहुंचते है। जहां मालिक बैठे हो तो वहां चोर चोरी नही कर सकते। वहां चोर नही जाते है।

चोर जार जो बलवन्ता, डाव घाव हुवे मांही।
सनमुख धणी शाह सुं मिलिया, गरज सरे नही कांही ॥ २०३ ॥

चोर व जार कितने ही बलवान हो व डाव घाव जानने वाले हो, यदि मालिक सामने बैठा हो तो वो चोरी नही कर सकता। यही गरज सरे नही कांही है।

जे तम जोध अपर बल भारी, फौज बोत तुम सागा।
जुगे जुग में चोर कहाणा, साह कहूं नही बागा ॥ २०४ ॥

जो तुम अपार बल शाली योद्धा हो और तुमारे पास बहुत फौजे है तो भी तुम जुगान जुगो से चोर कहला रहे हो। तुम्हें साहूकार कोई नही कहता है।

सूतो ठगे मुंसे तुम जावो, धणी नही जहां जोरा।
रांड रंडोली लाटु बाटु, हिण राज जहां चोरा ॥ २०५ ॥

सोते हुये को स्वप्न में बुरे विचारो में लगा देते हो उसका जोर नही चलता और जो मेरे साथ बुरे विचारो में लग जाता है वही रांड रंडोली लाटु बाटु हीण राज जहां चोरा है। जो तुम्हारे विचारो के माफिक नही चलते उस पर तुम्हारा जोर नही चलता। यही धणी नही जहां जोरा है।

चोर राड़ सन्मुख किण किवी, फौज बांध कब जीता।
छाने छुरके मार खात हो, जुगे जुग यो बीता ॥ २०६ ॥

चोरो ने सामने खड़े होकर कब लडाई की है और कब फौज इकट्ठी करके जीते है। चोरों को तो छाने छिपके मार खानी पडती है। यही जुगानजुग बीते है।

सुण मन ज्ञान तोय समजावे, राज ब्रह्म को भारी।
आंण मिलो बेगा दल मांही, नही तर होय खंवारी ॥ २०७ ॥

हे मन सुणो ज्ञान से तुम्हें समझाता हूं, ब्रह्म का राज बहुत भारी है, इसलिये ब्रह्म की फौज में आ मिलो, नही तो तुम्हारी खराबी होगी।

जागे धणी चोर रिसांया, गरज सरे नही कांई।
ताते आंण मिलो दल मांही, समझ समझ मन भाई ॥ २०८ ॥

आत्मा सतशब्द की भक्ति में लग रही है, यही जागना है। मन दूसरे विचारो में लगा रहा तो भी ध्यान नही हटता है। आत्मा कह रही है कि हे भाई मन समझकर भक्ति में लग जा, यही दल में मिलना है।

किशबण पुरूष शीष नही धारे, जाय मन मान्या सो खावे।
पुरूष शीष जुग नार सवागण, तहां कहो कुण जावे ॥ २०९ ॥

जो आत्मा सतशब्द की भक्ति करती है वो पतिव्रता है और जो आत्मा आन याने शरीर धारी की ऊपासना करती है वो किसबण की तरह है। जो आत्मा पारब्रह्म के निज नाम की भक्ति करती है वो सवागण है। वहां कौन जा सकता है याने काल की पहुंच नही है।

रोही खेत बाग बन बाड़ी, धणी छता नही तोड़े।
सुनो खाय जाय रूल यारू, कोहो आंण कुण मोड़े ॥ २१० ॥

कोई रास्ते का खेत बाग बाडी हो तो मालिक मौजूद रहते, उसे कोई नही तोड़ता है और यदि सुना हो तो कोई भी फिरता हुआ जानवर खा जाता है, उसे कहो कौन ताड़ता है।

गोफण पकड़ धणी जां बैठा, खाय सकयो कुण जाई।
हिलियो जाय पड़े जो मनवा, मार पड़े शिर भाई ॥ २११ ॥

मालिक गोफण लेकर जहां बैठा हुआ है वहां कोई नही खा सकता है यदि कोई हिला हुआ जानवर जाकर खाने लगता है तो हे भाई मन उसके सिर पर भारी मार पडती है।

मैं तुझ कहूं समझ कर रेणा, अगली बात मत जाणो।
धणी बिना किया ज्युं लिया, अब अेसी मत ठाणों ॥ २१२ ॥

हे मन मैं तुझे कहती हूं कि समझकर रह, आगे वाली बात मत जाण। जब तक ने:अंच्छर सतशब्द की जागृति नही हुई थी तब तक मैं तेरे विचारो के साथ रही, अब तूं ऐसे विचार मत कर।

बादशाह बिन राज सबन को, घर घर हुवे ठुकराई।
जग कूं लाट लूटसो लेवे, बार बूंब नही कोई ॥ २१३ ॥

बादशाह के बिना सब राजा हो जाते है, घर घर में ठाकर बन जाते है, जगत को लुट लाट लेते है जिसकी कोई सुनने वाला नही रहता है।

जब लग धणी समाल न किवी, तब लग राज जमाया।
अब शिर धणी बादशाह जागो, राव पांय सब आया ॥ २१४ ॥

जब तक सतशब्द की जागृति नही हुई थी तब तक तेरा जोर चला। अब सतशब्द की जागृति हो गई। अब सब वृतियां का जोर नही चलना ही राजाओं के पांव पडना है।

हुक्म चल्यो बादशाह, और की दस्तन कांई। जे शिर काढ़े कोय, जड़ा सुं देवे बगाई ॥ २१५ ॥

ग्यान के साथ सतशब्द का अखण्ड अनुभव होने लग जाता है तब कोई वृतियां उसको रोक नही सकती है, यदि कोई विचार उठ भी जाये तो उनकी नही चल सकती।

बड़ा बड़ा अमराव, भूप सूं भूप सवाया। बादशाह बिन समझ, जे जगत के मांय कहाया ॥ २१६ ॥

जब तक सतशब्द की जागृति नही हुई तब तक सब वृतियों का आत्मा पर जोर चला। अब सतशब्द रूपी बादशाह के जागृत होने पर जोर नही चलता।

युं तुम किया राज, नाम खाविन्द बिन सोई। ओ मन करो विचार, ज्ञान दिया मैं तोई ॥ २१७ ॥

हे मन जब तक निज नाम की जागृति नही हुई थी तब तक मैं तेरे विचारो के साथ रही। हे मन तूं ही विचार कर ले अब मैं तुझे ज्ञान दे रही हूं।

भिन्न भिन्न कहूं विचार, ज्ञान हेला दे जावुं। जे तम नही इतबार, ब्रह्म की फौज बतावूं ॥ २१८ ॥

मैं तुझे ज्ञान से अलग अलग समझाती हूं यदि तुम्हे विश्वास नही होता है तो ब्रह्म की फौज बताती हूं।

दोहा : हम विष टाले भो फिरिया, अेक न मानी आय।
हम मन सुं निरदोष हो, कई न माने काय ॥ २१९ ॥

मैंने मन को कई तरह से समझाया पर यह एक भी नही माना। अब मैं मन से अलग हो गई हूं क्यों कि इसने मेरा कहना नही माना है।

तेरा किया भुगतसी, सुण मन सह शरीर। हम निरदावे दोष बिन, चढी ब्रह्म की भीर ॥ २२० ॥

हे मन तूं बुरे विचार करेगा तो उसका प्रभाव शरीर पर पडेगा, अब मेरे पर तेरा अधिकार नही रहा क्यों कि मैं ब्रह्म की भक्ति में लग गई हूं।

चौपाई : पूरब जन्म विचार, ब्रह्म सो प्रीत पिछाणी।
मो अबला की भीर, जोध मेल्या हर जाणी॥ २२१ ॥

पारब्रह्म परमात्मा ने कृपा कर मुझ गरीब याने अबला की सहायता करने हेतु परमात्मा ने योद्धा भेजे है।

बड़े ज्ञान ऊमराव, आंण उभा दल मांही। शील सांच सन्तोष, भेद विचार कहाई ॥ २२२ ॥

के:पद की प्राप्ति का ज्ञान व शील सांच सन्तोष विचार रूपी फौजे भेजी है।

सुध बुध समता प्रेम, प्रीत विज्ञान पधारया।
खिवण निवण बो पीड़, संगत जरणा सब जारया ॥ २२३ ॥

सुध बुध समता प्रेम प्रीति ज्ञान विज्ञान नम्रता लघुता व विरह के साथ झरणा आदि सब आये है।

भाव चाव चित त्याग, बिरह बैराग सरिसा।
लगन डोर लिव आंण, ज्ञान उजियागर बीसा ॥ २२४ ॥

भाव चाव चिन्तन व त्याग विरह बैराग जैसे योद्धा है। लग्न से भजन कर लिव बंध भजन होना और के:पद का ज्ञान व पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति होना ये सब आये है।

ध्यान धरम ऊपकार, और की निजमन कहे।
निश दिन रटियो राम, अप मन माया मोहले उठ जगावे काम ॥ २२५ ॥

मैंने ध्यान धर्म व ऊपकार किया तथा जो मेरे निजमन ने कहा वो सब अच्छे कार्य किये तथा सतगुरु विधि से प्रतिदिन राम रटा। और जो अपमन होता है यह तो मुझे रातदिन माया मोह व कामनाये जागृत करता था, उनसे अलग हो गई हूं।

॥ इति श्री मन की राड ग्रन्थ सम्पूर्ण ॥

卐 सन्मुख बेमुख का अंग 卐

साखी : गुरुदेव कूं घर लाय के, मेहेमा करे अपार।
से सन्मुख सुखराम केहे, अेसे करो विचार ॥ १ ॥

जो शिष्य सतगुरु को घर लाकर याने निज नांव की घट में जागृति कर ज्ञान की अपार महिमा करते है वे सतगुरु के सन्मुख है, इस तरह से विचार करो।

बेमुख तो से शिष है, इग्या लेकर जाय। बोहोर गुरु न भेटिया, ध्यान मन धरयो न लाय ॥ २ ॥

जो शिष्य आज्ञा लेकर घर चला जाता है और वापिस आकर गुरु याने ज्ञान से मिलान नही करता व मन को सांस ऊसांस रटणा में एवं आत्मा से सतशब्द का ध्यान नही करता, उसे सतगुरु से बेमुख कहते है।

से बेमुख किम जाणिये, जामे कसर न कोय।
ज्ञान केहे सो सब करी, फिर तहां हाजिर होय ॥ ३ ॥

उसको बेमुख कैसे समझा जाता है जो सतगुरु की आज्ञा के माफिक ज्ञान के प्रमाण से चलता है और गुरु याने सतशब्द के दरशण को हाजिर रहता है।

बेमुख तो से शिष है, हुवा नचिता जाय। पंथ चलायो आपको, गुरु महिमा नही मांय ॥ ४ ॥

वे शिष्य बेमुख है जो घर जाकर निश्चिन्त हो जाते है। गुरु याने ज्ञान के बताये माफिक भजन नही करते, उनके कहे वचनो को नही मानता तथा अपना पंथ चलाता है याने मन के मते ज्ञान ध्यान करता है एवं उसमें गुरु याने ज्ञान की महिमा नही करता है।

से बेमुख किम जाणिये, जारे उर या चाय। निश बंदे मैमा करे, फिर दरशण कूं जाय ॥ ५ ॥

जिनके हृदय में ज्ञान गुरु दर्शन की भावना हो, प्रतिदिन परमात्मा की वन्दना करे, ज्ञान की महिमा करे और खुद भजन करे और ने:अक्षर के रोज दर्शन दीदार करे। उनको बेमुख कैसे समझा जाता है।

बेमुख तो से शिष है, मुख सूं कै बणाय। कहता सो करता नही, से झूंठा जग मांय ॥ ६ ॥

मुंह से बाते बनाता है, जो कहता है वो करता नही है। उस शिष्य को झूंठा समझना चाहिये। उस को बेमुख समझना चाहिये।

गुरु की सेवा बन्दगी, जका करी भरपूर। वे सन्मुख सुखराम के, कुण कर सके दूर ॥ ७ ॥

ज्ञान गुरु की सेवा करी याने धारण किया व महिमा भी भरपूर करी है। वे सन्मुख शिष्य है, ऐसे शिष्य को गुरु से कौन दूर कर सकता है।

तका बढाया हाड रे, सनमुख दिया शीष। ज्यारां पटा न ऊतरे, जे गुरु करे है रीस ॥ ८ ॥

शूरवीर सन्मुख लडकर शीष दे देता है, घायल होकर भी लडाई लडता है तो राजा उसे जागिरी दे देते है। अब राजा नाराज भी हो जावे तो भी उसकी जागिरी नही मिटती है, ऐसे ही जिस शिष्य के ऊपर गुरु नाराज हो जावे तो भी शिष्य में जो गुण पहले के उसे प्राप्त हो गये थे, वो मिटाये नही जाते है याने जिस स्थान पर सतशब्द है वहीं रहेगा।

कहो हुवो किणी बात को, चूक पडयो जे आय।
सुखराम बोहोता गुण आगला, को किम पेल्या जाय ॥ ९ ॥

शिष्य ने पहले गुरुज्ञान धारण किया, पीछे शिष्य से गलती हो गई तो भी उस शिष्य के पहले बहुत से गुणो को मिटाया नही जा सकता।

मुख सुं सूरो होय रहो, अरथ न आयो कोय। से नर पटा न पावसी, के सुखदेवजी तोय ॥ १० ॥

मुंह से शूरवीरता की बाते करता है परन्तु लडाई में काम नही आता है तो उसे पट्टा नही मिलता है। ऐसे ही जो मुंह से बाते करता है परन्तु गुरु की अणभै वाणी कहे उस आज्ञा में नही रहता है तो उसे मोक्ष की प्राप्ति नही होती है।

ज्यां रीत त्यागी धरम की, से किम बैठा आय।
कसर न राखी नेक भर, बेमुख कोहो किम जाय ॥ ११ ॥

जिसने तीन लोक की मर्यादा को नहीं माना परन्तु भक्ति करने में कसर नहीं रखता तो वह सम्मुख है या बेमुख है। वो आत्मा कहां जायेगी।

गुरु शिष को माने नही, शिष दरशण नित जाय।
टैल करे आधीन होय, तो नही ओगुण मांय ॥ १२ ॥

गुरु शिष्य को नही मानता है पर शिष्य ज्ञान गुरु को धारण करने के लिये ग्यान सुनने हमेशा जाता है व ज्ञान गुरु के आधीन होकर सेवा करता है तो उस शिष्य में कोई अवगुण नही है।

गुरु सरावे शिष कूं, शिष के भाव न कोय। से बेमुख सुखराम के, सुण गुरु दियो न रोय ॥ १३ ॥

गुरु तो शिष्य की सराहना करता है व शिष्य के मन में अणभै ज्ञान गुरु के वास्ते कोई भाव नहीं है। म:फ: है कि वो शिष्य गुरु से बेमुख है जो ज्ञान गुरु की बात सुनकर अफसोस नही करता है। यही सुण गुरु दियो न रोय है।

परदिक्षणा दिवी नही, सुरतज राखी नांह। से बेमुख सुखराम कह, मन जोड उर मांह ॥ १४ ॥

जिस शिष्य ने गुरु की प्रदिक्षणा नही करी याने ६ पूर्व के ६ पश्चिम के कंवलो की जानकारी व गुरु सतशब्द का सुरत से ध्यान नही किया व मन को भी गुरु के ज्ञान में नही लगाया। म:फ: है कि वो शिष्य अपने मन में घमण्ड रखता है, बड़ा बना रहता है, कारण उस शिष्य के मत में द्वेत भाव है। इसलिये वो गुरु से बेमुख है।

चरण खोल पिया नही, परसादी ली नांह। से बेमुख सुखराम के, अन्तर दुबध्या मांह ॥ १५ ॥

जिस शिष्य ने अणभै ग्रन्थ के चरण खोल कर नहीं पढा उनके वचनों में क्या लिखा है उन वचनों को जीवन में नही उतारता है और सतगुरु विधि से भजन नहीं करता है तो उसे ने: अक्षर रूपी भगवत की प्रसादी नही मिलेगी। क्यों कि उनके अंतर में दुबध्या है, तो वह बेमुख है।

बेमुख को सुण शब्द रे, आगे फले न कोय। आ पारख सुखराम के, शिष संग खाली होय ॥ १६ ॥

विधि बताने वाला स्वयं बेमुख है और दूसरों को विधि, सतगुरू बनकर देता है तो उस शिष्य के ने:अक्षर की जागृति नहीं होगी। म:फ: है कि उनकी परीक्षा यह है कि जो उनका संग करेगा उन सभी के सतशब्द का संग नही होगा।

॥ इति श्री सन्मुख बेमुख का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 ओगण ग्राही का अंग 卐

कवित्त : चलणी के मुख फूस, फूस कौलू मुख जांणो। चिंचड त्यागे दूध,
जाय कछमाय समाणो॥ गलनी कस कूं छांण, कुचो मुख राखे।
परणी को संग छाड, गुंज वेश्या संग भाखे॥ निरमल जल को जो तजे,
जाण नीर मेलो लहे। सुखरामदास अज्ञान नर, गुण छाड औगुण गहे ॥ १ ॥

चलणी के मुंह पर फूस याने छिलके रहते है। कोल्हू के मुख पर भी छिलके रहते है। चींचड गाय के स्तनो में लगा रहकर दूध को त्यागकर खून ही पीता है। गलनी कस कूं छोडकर मुंह पर कचरा रखती है। मनुष्य शादी शुदा स्त्री को छोडकर जो वेश्या से प्रेम करता है। जो मनुष्य निरमल जल को छोड़कर जानकर मेला जल पीता है। म:फ: है कि अज्ञानी मनुष्य गुण छोडकर औगुण ग्रहण करते है।

॥ इति श्री ओगण ग्राही का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 सूत का अंग 卐

कवित्त : सूता खंचे नींव, सूत पर महल चुणिजे। सूता पत्थर कोर, जाय देवल पर दीजे॥
सूता करे व्यौपार, सूत सूं राज कमावे। सूता परणे आय, मान शोभा बोहो पावे ॥
सूत बिना संसार में, बात न माने कोय। जनसुखिया हर भक्त रे, सूत बिना न होय ॥ १ ॥

सूत से नीव खोदने से सीधी रहती है सूत से ही महल बनाया जाता है। सूत से ही पत्थर घडकर मूर्ति मंदिर पर बैठाई जाती है। व्यौपार भी सूत याने खरेपने से चलता है। सूत से याने न्याय से राज चलता है। सूत से ब्याह करने से उसको मान शोभा मिलती है। संसार में सूत याने नियम के सिवाय कोई किसी की बात नही मानता है। म:फ: है कि भक्ति भी नियम से किये बिना नही होती है। सूत, ज्ञान, ध्यान विवेक बुद्धि यह कैसे आवेगी। यह हृदय की तराजु से तोलकर वचन बोलो। सतगुरु याने सतज्ञान अणभै वाणी के आधीन होकर रहना बोलना व वचन विचार करके बोलना ही भक्ति के सूत है, जो ऊपर मुजब बताये है उसी मुताबिक लिव लगती है।

सूता चाले नीर, सूत शीर कुवा बैहे। सूता रथ घड लेहे, देश परदेशा जेहे।।
सूता चाले जहाज, मांण भै पार लगावे। सूता मिलिये राम, सूत सूं सब कुछ पावे ॥
सूता बिन अड़ जाय, पार पुंचे नही कोई। जनसुखिया हर भगत रे, सूत बिन कैसे होई ॥ २ ॥

नियम से जहाज पानी पर चलता है। कुए से पानी भी सूत से निकाला जाता है। सूत से रथ घडा कर परदेशा जाता है। नियम से चलने वाला जहाज ही पार लगाता है। नियम से भक्ति करने पर ही रामजी मिलते है। सूत से ही सब कुछ प्राप्ति होती है, सूत के बिना सब अड जाते है याने पार नही होते है। म:फ: है कि परमात्मा की भक्ति बिना सूत याने नियम के बिना कैसे हो सकती है।

सूता होय संजोग, सूत परसादी पावे। सूता सेनाणी भाई, सूत पर नाल चलावे।
सूता बणिये पाट, सूत सूं कागज माने। सूता कर दे न्याव, भरम दुबध्या सब भाने॥
सूता बिन सब काम रे, आछो लगे न कोय। जन सुखिया हर भक्त रे, सूत बिना न होय ॥ ३ ॥

सूत से संयोग होता है। सूत से परसादी पाते है। सूत से ही सेनाणी याने निशान लगाकर नाल चढाते है। सूत से ही कपड़ा पाट बनाया जाता है। पत्र भी सूत से लिखा जाता है। सूत से ही न्याय होता है। सूत से ही भरम दुबध्या सब जाती है। सूत के बिना सब ही काम अच्छे नही लगते है। म:फ: है कि परमात्मा की भक्ति भी सूत याने नियम से किये बिना नही होती है और नियम से भजन किये बिना लिव नही लगती है।

सूत केहे सब कोय, भेद जूं कहां कहावे। किस विध दिजे जाय, सूत कैसी विध आवे।।
ज्ञान ध्यान बमेख, बुध समता सुध होई। हिये तराजु तोल, बैण मुख काढे सोई ॥
सतगुरु सो आधीन रे, बोले बैण विचार। भगत सूत सुखरामजी, लिव लागत इण लार ॥ ४॥

सब सूत सूत कहते है परन्तु कहने वाले उसका भेद नही जानते है। सूत किस विधि से आता है उसके किस मुजब नियम है। ज्ञान, ध्यान, विवेक, बुद्धि, समता, सुद्धि ये सब कैसे आवेगी। यह हृदय की तराजु से तोलकर वचन मुंह से निकालना चाहिये उसे ही सूत कहते है। सतगुरु याने अणभै वाणी में लिखे हुये शब्दो के आधीन होकर रहे व वचन विचार कर बोले। म:फ: है कि यह भक्ति करने के सूत है, अेसा करने से लिव लगती है।

॥ इति श्री सूत का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 सेन का अंग 卐

पद : संतो राम ऊथापे झूंठा, शिवरण बिना काये की सैनी, जहां सुं साहिब रूठा ॥ टेर॥

म: संतो से फरमाते है कि जो झूंठे है वो रामजी को ऊथापते है, बिना भजन के काय का प्रेम है, जिससे परमात्मा उनसे नाराज है। जो राम नाम के शिमरण को पलटा देते है व मानसिक सेवा करना बताते है वो झूंठे है। शिमरण न करने वालो से परमात्मा नाराज है।

कहे कहे खांड लेत है सब ही, मांग आग घर लावे।
कागज मांय लिखी सो चीजा, बांचया सुं सब पावे ॥ १॥

कोई मांग मांग कर खांड लेते है तब ही मिलती है जो कोई अग्नि दूसरो के घर से मांग कर लाते है। कागज में लिखी हुई सब चीजे मांगने से मिलती है।

मुख सुं पढिया आगियो लागे, लिख लिख शिला तिराई।
गज सुण टेर हाक जब दीनी, फंद काटियो आई ॥ २॥

मुख से अग्नि का मंत्र पढने से अग्नि लगती है, रामचन्द्रजी ने राम राम को पत्थर पर लिखा तब वो तिरे। हाथी ने मुख से आराधना करी जब दुख दूर हुआ।

सब ही मांड बावना मांही, क्या साहिब क्या माया।
धरिया नांव शकल सोई बंधन, केण सुणन को भाया ॥ ३॥

सब ही संसार बावन अक्षर में है, क्या तो साहिब क्या माया जिन्होंने नाम धराया है। जो कहने में सुनने में आते है वो सब बावन में ही है।

जे कोई नांव सुरत में राखे, तो बावन के मांही।
चित मन सुरत पवन व्हे भेला, जब लग वो पद नांही ॥ ४॥

जो कोई नांव सुरत में रखता है वो भी बावन में ही है। चित, मन, सुरत, श्वांसा से सब इकट्ठे

होते है तब तक वो पद नही है।

मन सुं नांव सुरत में राखे, सो मुख सुं क्यों नही कहिये।
परण्या बिना नार होय बैठी, पीव सुख किम लहिये ॥ ५ ॥

आप मन से नाम लेकर सुरत में रखते है तो मुख से क्यों नही लेते। जैसे विवाह न करके मन से ही किसी की स्त्री बन बैठी हो तो उसको पति का सुख कैसे मिल सकता है।

चित मन सुरत थके है पांचु, दशवें द्वार समावे।
जब यो शब्द बावना बारे, बिन मुख हरिजन गावे ॥ ६ ॥

जब सतशब्द दसवें द्वार में चला जाता है तब चित, मन, सूरत पांचो विषय रस पीछे रह जाते है। तब यह शब्द बावना बारे हो जाता है यानि तीन लोक से आगे हो जाता है। आत्मा ने:अक्षर की आवाज सुनती रहती है और उसी में मगन हो जाती है तब बिना रटना के आत्मा आनन्द लेती है।

बावन परे शब्द है सोई, सो सोहंग हम पायो।
कहे सुखराम राम मुख रटियो, जब वाको घर आयो ॥ ७ ॥

बावन अक्षरों से आगे जो शब्द है वह सोहंग याने उस्वांस के आने से सतशब्द मुझे मिला है। म:फ: है कि जब मुंह से राम रटा है जब ही उस पद की प्राप्ति हुई है।

<u>कवित्त</u> : तन बिन, मन दे आग, ताय सुं लाय न लागे। खीर खांड मन खाय,
जिम्या बिन भुख न भागे॥ म्हेरी मन संजोग, स्वाद नही पूतन जाया।
निश दिन मही बिलोय, मन सुं घी नही आया॥ बिन बाया सुखराम कहे,
कृषि निपजे न कोय। तो मुक्ति बिन भजन रे, जड़ सेन से होय ॥ ८ ॥

शरीर के बिना मन से अग्नि लगाने पर नही लगती। मन से खीर खाने से भुख नही जाती है। मन से स्त्री का साथ करने से स्वाद नही आता। उससे लडका पैदा नही होता है। मन से दही बिलोवे रात दिन तो भी घी नही आता। दही में रवाई डालकर गुमाने से ही घी आता है। बिना बोये हुये यदि खेती पैदा हो जाती है तो म:फ: है कि मुक्ति भी बिना भजन के इशारे से हो सकती है। मन के इशारे से कुछ नही होता, सब काम करने से होता है।

मन सुं मांगे राछ, बोल बिन किणी न दिया। बिन मांग्या ऊपगार,
मन में शरणा लिया। पग बिन मन सुं चाल, जान नगर ले कोई ।
तो बिन शिमरण सुं मोख, सेन सुं भेला होई॥ चार ज्ञान ऊर उपजे,
तब मन ईच्छया सांच। तां पहिले सुखराम कह, मोन गहया नही पांच ॥ ९ ॥

बिना बोले किसी से कोई चीज मन से मांगो तो नही मिलती, बोलने पर ही मिलती है, बिना मांगे कोई भी मदद नहीं करता है। मन से शरणा लिया हुआ कुछ काम नही आता। भजन करने से ही के:ज्ञान की प्राप्ति होती है। बिना पांव के चले हुये कोई मन से नगर में नही जा सकता है। चलकर जाने से ही नगर में जा सकते है। बिना भजन किये मन से कोई चीज प्राप्त नही होती है। मत, श्रुत, अवध व मनपरचे ज्ञान ये ज्ञान हृदय में उत्पन्न होगा तब मन परचे ज्ञान से ही मन की इच्छा पूरी होगी परन्तु इस मन परचे ज्ञान के उत्पन्न हुये बिना मून पकड कर बैठने से पांचवा ज्ञान याने के:ज्ञान की प्राप्ति नही होती है।

मन भूपत सुण होय, राज वांके ज्यो आवे। तो बिन शिवरण या मोख,
सेन सुं प्राणी जावे॥ धन माया मन जोड़, दाम बोहरे जुग कोई।
तो बिन रटियां राम, मोख सैनी सुं होई॥ मन सुं जल घी जांणिया,
जो अमरत हो जाय। तो दुनियां सुखराम कह, मरे न लुखो खाय ॥ १० ॥

मन से राजा बनकर राज मिल जावे तो बिना शिमरण किये मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है याने इशारे से प्राणी मोक्ष में जा सकते है। मन से धन व माया इकठी कर जगत में बोहरा बन सकता है। तो बिना रामजी रटे इशारे से मोक्ष हो सकती है। मन से जल को घी और अमृत जान लेने से यदि घी व अमृत हो जावे तो म:फ: है कि संसार का कोई भी मनुष्य लुखा नही खायेगा व नही मरेगा।

मोन पकड़ रहे बेस, राम मुख सुं नही ध्यावे। तो धरणे की रीत, रीज नही मोख न पावे।
पहुंथा की सुण साख, कोई शिमरण तज देहे। सो नर गया बिगुज, नाम बिन पार न लेहे ॥
पांखा तो आई नही, पग सुं चले नांय। सो बुडो सुखराम कहे, घेर गंडकड़ा खाय ॥ ११ ॥

मौन धारण कर बैठ जावे और मुंह से रामजी का भजन नही करे तो यह हमेशा की रीति है कि उसको न तो रीज मौज और न मोक्ष की प्राप्ति होती है। जिस संतो को शिमरण करने से के:पद आ:पद की प्राप्ति हुई उनकी साखे सुन सुनकर भजन करना छोड देते है, वो मनुष्य बहक गये है। नाम का शिमरण किये बिना कोई भी पार नही जा सकता है। पक्षी है उसके पंख नही आये है वो पैर से नही चलता है और सोचता है मैं तो पक्षी हूं तो म:फ: है कि उसे बिना चले ही कुते खा जायेंगे।

आप फिरे बाजार, भूप चढ गढ समावे। वां सर भर सुण चाल,
आप सेरा में लावे॥ बुग ही हुयो नांय, चाल हंसा की काड़े।
गयो काग की भूल, जीव सीखरा तब बाढे॥ मुख शिवरण मत छोड़ज्यो,
दशवे द्वार लग कोय। होठ कंठ सुखराम कह, गढ़ चढिया बंद होय ॥ १२ ॥

आप बाजार में फिर रहे हैं, राजा अपने गढ में विराज रहे है। मन से उनकी बराबरी नही हो सकती। अर्थात जो भक्ति करके गढ पर चढ गये तू बिना भक्ति किये मन से उनकी बराबरी नहीं कर सकता। अभी तेरे में गुण बगुले जितने भी नहीं और हंस की चाल चलना चाहता है तो तू कागले के गुण भी भूल जायेगा और काल रूपी सिखरा तेरे को पकड़ लेगा। इसलिये जब तक वो पद नहीं मिल जावे तब तक मुख से रटना मत छोडना। होठ कंठ तो गढ पर चढने पर ही बंद होवे।

<u>साखी</u> : जे चढ बैठा गिगन में, लागी ब्रह्म समाद।
या साखी सुखराम कह, सुण मत किज्यो वाद ॥ १३ ॥

जो भक्ति करके गढ में चढ गये और ब्रह्म समाधि लग गयी। तो यह साख सुणकर सिमरण बंद नही करना चाहिये। कि हम तो पहुंच गये।

जेसो तेरो देश है, तैसी धारो साख। ऊंची सुं सुखराम कहे, क्या लेसी सुण भाख ॥ १४ ॥

म:फ: है कि जिस तरह के श्रोता हो उन्हें जो वो समझ सके, उसी भाषा में समझा दो, ज्यादा ऊंची भाषा का प्रयोग करके उनको क्या समझा देगा। दोनों (वक्ता व श्रोता) का समय बर्बाद होगा।

साख ऊंचले देश की, सुण मत भूलो कोय।
शिवरण कर सुखराम कहे, सेजा वा विध होय ॥ १५ ॥

म: सबको फ: है कि जो ऊंचे देश में पहुंचे है वो संत सता समाधि सुन्न समाधि का आनन्द लेते है। उनकी साख सुनकर मन में गर्व मत करो, बराबर शिमरण करते रहो। भजन करते करते तुम्हारी भी सहज में ही वही स्थिति हो जावेगी। म:फ: है कि सब शिवरण करने से ही होगा।

॥ इति श्री सेन का अंग सम्पूर्ण ॥

卐 बेली ग्रन्थ अमृत सार 卐

दोहा : सब सन्तन सुं बिनती, लुललुल लागुं पांव। परा परमपद मोख है, दिजो भेद बताय ॥ १ ॥

बार बार प्रणाम करके सब सन्तो से प्रार्थना है कि पारब्रह्म परमात्मा के के:पद पूर्ण परमानन्द पद का भेद बतावो।

भरम करम का एक सही, मेटो सब जंजाल।
नेहचल निरभय ज्ञान दो, करम न झांपे काल ॥ २ ॥

अनादि से भरमो व कर्मो का जंजाल लगा हुआ है। उसको मिटावो। परमात्मा का पद जो स्थायी है व निरभय है वहां पर कर्म व काल की पहुंच नही है। उस पद की प्राप्ति का ज्ञान दो।

कृपा कर गुरुदेवजी, दिया भेव बताय। परमपद प्रकाशिया, ऊर अन्तर मध मांय ॥ ३ ॥

सतगुरु ने कृपा कर भेद बता दिया, हृदय में शब्द ब्रह्म याने सतशब्द ने:अंच्छर की जागृति होना ही ऊर अन्तर में परमपद का प्रकाश होना है।

नाम निरंजण राम रस, पी पी हुवा ऊसांस। सप्तदीप नवखण्ड में, किया गिगन में बास ॥ ४ ॥

निरंजण निराकर सतचेतन ब्रह्म जिसे संत राम नाम से पुकारते है। उस राम नाम को सतगुरु विधि से भजन से सतशब्द की जाग्रति होकर सप्तदीप नवखण्ड याने सारे शरीर में व रग रग रोम रोम में उसका अनुभव होकर दशवें द्वार से बाहर अधर अनुभव अखण्ड होना ही गिगन में बास करना है।

चहुं दिश चमके दामणी, बिज हलाहल होय। सूरज बहुत प्रकाशिया, जग सूज्या सब मोय ॥ ५ ॥

शब्द की जागृति होने पर विरह प्रेम के साथ भजन करना व सारे शरीर में शब्द का अनुभव होना ही दामणी चमकना व बीज हलाहल होना है। सारे शरीर में रग रग व रोम रोम में अनुभव होना ही बहुत सूरज का प्रकाश होना व जगत का सूजना है क्योंकि शरीर जगत में ही रहता है।

ऐसी सब बातां हुवे, सुणज्यो सब संसार। पारब्रह्म परमात्मा, सो जस बारम्बार ॥ ६ ॥

सब ही संसारी सुणो ऐसी बातें होती है, सांस उसांस में भजन करने से सूरत द्वारा सारे शरीर में सतशब्द का अनुभव होना ही बार बार पारब्रह्म परमात्मा को जस होना है।

दिन दिन निरमल अधिक है, दिन दिन निरमल होय।
परमपद परममोख में, बिरला समझे कोय ॥ ७ ॥

सतगुरु विधि से भजन करने से शरीर से सब अवगुण व बुरी वृतियो का दूर होना व सब सदगुणो को धारण करना ही दिन दिन निर्मल अधिक व दिन दिन निर्मल होना है। सतस्वरूप आ:पद के ज्ञान को जगत में बिरले ही समझते है।

सो सत साहिब सांईयां, लीला बहुत अनेक। घट घट भीतर राम ही, आद अन्त मध अेक ॥८॥

निरंजण निराकार सतसाहिब परमात्मा जिसकी अनेक लिलाये है व राम घट घट में सर्वव्यापक है। आदि से लेकर अन्त तक कभी अलग नही होता है।

परापरी परमात्मा, परमल बास सुबास। सुर नर मुनि देव सब, करे शकल जग आस ॥९॥

जैसे फूलो में सुगन्ध है वैसे ही पारब्रह्म परमात्मा का पद सर्वव्यापक है। सब देवता मनुष्य व सारा जगत उसकी आशा करते है।

ब्रह्मा बैठा ध्यान धर, अन्तर रहया समाय। तो गत पार न सांईया, यूं भजता दिन जाय ॥१०॥

ब्रह्माजी भी पारब्रह्म परमात्मा के नाम की भक्ति कर ज्ञान द्वारा रात दिन अन्तर में उसका ध्यान करते है तो भी उस परमात्मा का पार नही पाते।

शिव शंकर आशा करे, भजे नकेवल तोय। धिन समरथ सत सांईया, पार न पावे कोय ॥११॥

भगवान शंकर भी आपके नाम की रात दिन आशा करके भक्ति करते है। हे परमात्मा आप धिन है सतसमरथ सत सांई आपका पार कोई नही पा सकता है।

पारवती परले पडी, गीणत न आवे कोय। शिव नेः चल को जुग लूं, शरण तुम्हारी जोय ॥१२॥

पार्वती ने कितनी बार शरीर धारण किया व छोडा जिसकी गिनती नही है तथा शिवजी आपके नाम लेने व शरण रहने से कई जुगो से निश्चल है।

विष्णु सरिसा देव सो, फिर मोटा अवतार। सो सब सेवे ब्रह्म कूं, निरमल तत्त अपार ॥१३॥

विष्णु भगवान व बडे बडे अवतार भी पारब्रह्म परमात्मा के नाम की भक्ति करते है। आपका कोई पार नही है यही निर्मल तत्त अपार है।

शेष शिष्ट शिर पर धरी, मुख अन्तर तुझ नाम।
तां शिर बोझ न आव ही, धिन सब सारण काम ॥१४॥

शेषजी ने आपके नाम के बल पर सारी सृष्टि को धारण कर रखा है। उनके मुखारबिन्द व अन्तर में आपका नाम है इसी कारण पृथ्वी का भार उन्हें मालूम नही होता है। आप सबके काम को सारने वाले आपको धिन है।

मुख मुख जिभ्या दोय है, हो रहा लवलीन। शेष पिछाण्या पीव कूं, दिल अन्तर बिच चीन ॥१५॥

शेषजी के हजार मुंह है दो हजार जिभ्या है उससे भी वो रात दिन भजन में लवलीन रहते है। शेषजी ने ही आपके नाम की भक्ति को अन्तर में पहचाना है।

निश दिन रटे निकेवला, केवल ब्रह्म विचार। धिन धिन सो शरणागति, पारब्रह्म पद सार ॥१६॥

जो रात दिन आपके नाम का भजन करते है संसार में वे ही धिन है जिन्होंने आपकी शरण ली है। पारब्रह्म परमात्मा का पद है वो ही सर्वश्रेष्ठ है।

नेः चल निरमल मल नही, कर्म न कीट न कोय।
आद अन्त मध एक है, अधिक न ओछा होय ॥१७॥

वो पद निश्चल व सत है उस पद में किसी तरह का विकार नही है। वहां कर्म रूपी कीट भी नही है। आदि में, अन्त में, मध्य में, एक सा है। न तो कम होता है न अधिक होता है।

धिन तूं ही तूं सांईया, धिन तत्त तेरो नाम। तुम बिन सूनो को नही, जंगल रोही गांव ॥१८॥

हे परमात्मा आपको धिन है आपके बिना जंगल रास्ते गांव कोई सूना नही है। आपके निज

नाम को धिन है। आप सर्व व्यापक है।

जहां देखू जहां आप हो, ऊंच नीच के मांय। अेसा निपट नजीक हो, सब जग भूला जाय ॥ १९ ॥

जहां देखता हूं वहां ऊंच में नीच में सब जगह आप ही है। इस तरह आप सबके नजदीक होते हुये भी सारा जगत आपको भूल रहा है।

भरम्यो सब संसार है, चीन सके नही कोय। तुम अन्तर में रम रहया, बाहर ढूंढे लोय ॥ २० ॥

सारा संसार भरम में पड़ा हुआ है आपको कोई नही पहचान सकता है। आप सब के घट घट में रम रहे है। संसारी आपको बाहर ढूंढ रहे है।

जगत विचारी क्या करे, तुज गति लखी न जाय।
बाहर भीतर कहत है, एक निरंजण राय ॥ २१ ॥

हे परमात्मा आपकी गति जानने में नही आती है। जगत के मनुष्य विचारे क्या कर सकते है। कहने को तो यही कहते है परमात्मा बाहर भीतर सब जगह रम रहा है।

जल थल मांही आप हो, साक्षी भूत समान। ज्यूं रवि जल प्रकाश है, सब घट में हरि जान ॥ २२ ॥

आप जल थल में व सब प्राणियों में साक्षी भूत अर्थात आदि अनादि से हो जैसे सूर्य का प्रकाश जल में दिखता है। ऐसे ही सब घटो में परमात्मा है।

सूनी सहज न सांईया, तुम बिन शिरजण हार। जहां देखूं जहां आप हो, जोऊं ज्ञान विचार ॥ २३ ॥

ऐसी कोई जगह नही है जहां आप नही हो। ज्ञान से देखता हूं तो सब जगह आप ही आप हो।

जड चेतन परिमल परे, ज्ञान ध्यान गुण नेम। तुम काहा कीमत सबे, प्रीत न प्रसन्न प्रेम ॥ २४ ॥

जड में, चेतन में, ज्ञान में, ध्यान में, गुणो में, प्रेम में, प्रसन्नता में, सब जगह आपकी ही सत्ता है। जैसे पुष्प में सुगन्ध है।

सुध बुध शंक्या आप हो, जीव शीव करतार। नारायण निरलेप है, सांसो सोग विचार ॥ २५ ॥

सुधी में, बुधी में, शंका में, जीव में, शीव में, होणकाल ब्रह्म में, सब में वही है। वही परमात्मा सुख दुख में सब जगह आप ही निरलेप हो।

जत सत सांवल सांईया, तुम जाचक जगदीश।
दाता मान अपमान ले, तुम शेषा तुम बीस ॥ २६ ॥

जति में, सती में, जांचने वाले में, देने वाले में, मान में, अपमान में, शेषजी में, चार वेद छः शास्त्र दस अवतारो में सतसाहिब आप ही हो।

सांई धिन धरणी धरा, साहिब सांचा श्याम। ब्रह्मा विष्णु ऊपाविया, कृष्ण गोपिका राम ॥ २७ ॥

हे परमात्मा आपको धिन है सारी सृष्टि के आपका आधार है। आप ही सत्य स्वामी है। ब्रह्मा, विष्णु, कृष्ण, गोपिका व रामजी भी आप से ही प्रकट होते है और उनके आपका ही आधार है।

ओऊं सोऊं सब किया, शक्ति ऊपावण हार। धिन तोही धिन सांईया, निरालंब निराकार ॥ २८ ॥

आपने ही ओऊं याने आत्मचेतन सोऊं याने ब्रह्मचेतन शक्ति याने माया यह सब आप से ही प्रकट होते है। परमात्मा आपको धिन धिन है, आपके किसी का आधार नही है व आप निराकार है।

निरभय नर नार नही, अंजण मंजण कोय। सब बिणसे सब ऊपजे, तुम नेःचल हरि होय ॥ २९ ॥

कोई शरीरधारी स्त्री हो या पुरुष हो वो सत नही है। ऊपजते रहते है व मिटते रहते है। हे

परमात्मा आप ने: चल याने सत है।

जग सारो सब जायगो, धर ब्रह्मण्ड आकाश।
सत समरथ अेको धणी, जहां जग जीवां आश ॥ ३० ॥

सारा जगत व धरती ब्रह्मण्ड आकाश सब रहने वाले नही है। परमात्मा जो सत समरथ है सब जगत के जीव उसी की आशा करते है।

ने:चल निरभय रामजी, सब देवन का देव। दूजा सब ऊपजे खपे, अटल तुम्हारी सेव ॥ ३१ ॥

रामजी की भक्ति सत है, भय रहित है वो ही सब देवताओ के देवता है। दूसरे सब ऊपजते खपते है। आप व आपकी भक्ति सत है।

तुम तारण हारे जोग हो, तिण शिर और न कोय।
काल कर्म दाणु सही, सब अणघड वश होय ॥ ३२ ॥

आप ही सबका उद्धार करने वाले है आपके ऊपर और कोई नही है। काल कर्म राक्षस सब आपके वश में है।

घडिया घाट अघाट ने, नाना विध का रूप। बलिहारी ऊण देव की, किया सबे सरूप ॥ ३३ ॥

उस अनगड परमात्मा ने ही सब आकारियो को नाना तरह के रूप में बनाया है। उस परमात्मा को धिन है, जिसने सब स्वरूप बनाये है।

अणघड आद अमूरती, मूरत घडी अनेक। धिन बाबा करतार तूं, कुदरत की गत देख ॥ ३४ ॥

हे परमात्मा आप अनघड व अमूर्ति है आपने अनेक मूर्तिये घडी है। हे सृष्टि कर्ता आपको धिन है, आपकी कुदरत को कोई नही जानता है।

क्या जाणु कैसे कहूं, वार पार नही कोय। आप अमूरत बण रहया, रंग न रूप न होय ॥ ३५ ॥

आपको मैं कैसे जान सकता हूं व कैसे कह सकता हूं आपका कोई पार नही है। आपकी कोई मूर्ति नही है न आपका कोई रूप रंग है।

करे करावे कर दिया, दिवी कला बणाय।
धिन तुं ही धिन सांईया, सुख दुख गहया न जाय ॥ ३६ ॥

आप ही सब करने वाले हो आपने ही सब किया है आपने ही सब कला बनाई है। हे परमात्मा आपको धिन है आप सुख दुख से रहित हैं।

आत्म में परमात्मा, रमता है मुझ बीच। सुख दुख दोनो पर हरया, कोरा फरक न कीच ॥ ३७ ॥

आत्मा में परमात्मा मेरे में रम रहा है सुख दुख से मुझे रहित कर दिया है इसमें किसी तरह का फरक नही है।

कीमत सब करतार की, केशो करण कल्याण।
बाणी सुण हेत सहज सो, घट घट न्यारी जांण ॥ ३८ ॥

सब करामात उस परमात्मा की है वो ही सब का कल्याण करने वाले है। सब घट घट की बाणी सहज में अलग अलग सुनने में आती है।

तुम बिना ऐसी को करे, अणघड़ देवा राम। लख चौरासी जीव सो, धरिया ठामो ठाम ॥ ३९ ॥

हे परमात्मा आप अनगड देव हो, आपके बिना ऐसे कौन करने वाला है, चौरासी लाख योनियो के जीवो को आपने जगह जगह बनाया है।

ना सत आसत सब करी, करणी करपण सूर। कह दाता कह मंगता, सब में सबसे दूर ॥ ४० ॥

हे परमात्मा आपने ही सत असत को बनाया है व करणी कृपण याने सूम में, शूरवीर में व मांगने वाले में सब में आप होते हुये भी सबसे अलग है।

हाजिर सुं हाजिर खड़ा, जब देखे तब तैयार। गाफल गेला ज्ञान बिन, कुटिजे संसार ॥ ४१ ॥

शब्द ब्रह्म रूप से जब आप भक्ति करने वालो में प्रकट होते है तब जब चाहते है जब ही शब्द ब्रह्म का अनुभव होता रहता है। यही हाजिर से हाजिर खडा होना है। जो गाफिल है वो आपकी भक्ति को नही जानते, कर्म बन्धन में लगे रहते है व कर्मो का भोग भोगते रहते है। यही संसार में कुटिजना है।

शिषवाच : ऐसा अचरच अर्थ सो, बूजत हूं गुरुदेव।
जीव शीव अेको गहया, को पूजे को सेव ॥ ४२ ॥

हे गुरुदेव आपने ऐसी आश्चर्य की बात बताई कि जीव शीव तो एक ही है। तब कौन किसकी भक्ति व सेवा करेगा।

कुण दाणु कुण जम है, कुण दाता कुण सूर। को मेला को निरमला, क्या नेड़ा कौन दूर ॥ ४३ ॥

कौन तो राक्षस है, कौन जम है, कौन दाता है, कौन शूरवीर है, कौन मेला है, कौन निर्मल है, कौन नजदीक व कौन दूर है।

लख चौरासी जीव सो, सोऊं आत्मराम। ईन बिन दूजा को नही, तीन लोक विश्राम ॥ ४४ ॥

चौरासी लाख योनियो में जितने भी जीव है सब आत्मा राम आपका ही स्वरूप है। तीन लोको में इसके सिवाय कोई नही है।

जम दाणु क्या देवता, ब्रह्मा विष्णु महेश। ओऊं की ऊतपत सबे, सुरग रसातल शेष ॥ ४५ ॥

ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, जम, राक्षस व देवता स्वर्ग में पाताल में व शेषजी सब की आत्म ब्रह्म से उत्पति है।

आवत जावत राम हो, दया करे अनेक। जड़ चेतन ज्ञानी गुणी, सब मध ओऊं पेख ॥ ४६ ॥

जड चेतन ज्ञानी व गुणियो में सब ही में आत्मा है, यही आता जाता प्रतीत होता है। हर प्रकार से दया करता है।

क्या पूजूं किसकूं तजूं, जहां तहां में हरि होय। करमा करके भरमना, तासुं दिसे दोय ॥ ४७ ॥

किसकी पूजा करूं, किसको छोडूं, सब में ही परमात्मा है। कर्मो के कारण व भर्मो से एक होते हुये भी दो भासते है।

कर्म भर्म ये किण किया, कोण उपावन हार। तुम ओऊं सत थापियो, ओ मुझ देवो विचार ॥ ४८ ॥

कर्मो व भर्मो को बनाने वाला कौन है। आप आत्मचेतन को सत बताते है, इसका मुझे ज्ञान दो।

सुख दुख सूं न्यारा रहे, पाप पुन्न तज बाद। ओऊं सो सब लेत है, परमल बास सुबास ॥ ४९ ॥

आत्मचेतन सुख दुख पाप पुण्य वाद विवाद सबसे परे है, आत्मचेतन से ही सब इन्द्रिया अपना अपना कार्य करती है, यही परमल बास सुबास लेना है।

दुख सुख सामल राम हो, पाप पुन्न के मांय। ओऊं की उत्पत सबै, न्यारा शब्द बताय ॥ ५० ॥

दुख सुख, पाप पुण्य, आत्मचेतन सब में साथ है, इससे अलग नही है।

गुरुवाच : ता संग सुख दुख एक नही, मन पवना नहीं लार।
सूरत निरत पहुंचे नही, सो सतशब्द विचार ॥ ५१ ॥

म:फ: है कि सतशब्द का विचार करो जिसके साथ सुख दुख एक भी न हो। मन व श्वांसा से अलग है, सूरत निरत से भी अलग है। जिसे सतशब्द कहते है।

ओऊं के आगे खड़ा, एक निरंजण राय।
धिन सतसाहिब सांईया, वहां लग काल ना जाय ॥ ५२ ॥

पांच तत्वो के साथ जो चेतन है उसे ओऊं कहते है और इसके आधार निरंजण निराकार सतचेतन उसको पारब्रह्म कहते है। वो सतसाहिब है और वहां काल की पहुंच नही है।

ओऊं इन्छया आत्मा, परमात्म ररंकार। ताहि सुं निरलेप है, अंच्छया आद विचार ॥ ५३ ॥

पारब्रह्म परमात्मा की इच्छा ओऊं आत्मा है इसका आधार राम है व उसका नाम ररंकार है। पारब्रह्म का पद है, इन सबसे अलग है, इनका आधार भी है, उसका विचार करो।

तासुं समदर पाटियो, तिरया गिरवर पहाड़। सो सतरूपी शब्द है, ऋषि जन ताके बाड़ ॥ ५४ ॥

जिस पारब्रह्म परमात्मा के नाम से पत्थर व पहाड पानी पर तिर गये व समुद्र में पुल बन गया, वो ही सतस्वरूप का शब्द राम है। ऋषि सब इसी की भक्ति करते है।

धिन धिन शब्द सरूप धिन, दिष्ट मुष्ट नही मांय।
ईधक न ऊंड़ा ऊतावला, आवन बैठन जाय ॥ ५५ ॥

उस परमात्मा को धिन है वो दृष्टि में व मुट्ठी में नही आता है। वो न तो इधक ऊंड़ा है, न उतावला है, न आता है, न जाता है, न बैठता है।

हलका ना भारी गणा, चवड़ा चीत न औख।
बुढ्ढा नही बालक काहा, सुरग नरक नही मोख ॥ ५६ ॥

न हल्का है, न बहुत भारी है, न चवडा है, न चीत में आता है, न बुढ्ढा है, न बालक है, न स्वर्ग है, न नरक है, न मोख है।

प्रणयां पांत्या वहां नही, ब्याव न चाव न नार। जोग न भोग न भरमना, तारण तिरण न मार ॥ ५७ ॥

न परण्या है, न पांत्या है, ब्याव की व नार की उसको चाहना नही है और न जोग में, न भरम में, न भोग में है, न मारता है, न तारता है।

ऊंचा नही अशमान में, नीचा जमी न होय। गुप्ता नही प्रगट परे, सांच न झूंठ न कोय ॥ ५८ ॥

आसमान में ऊंचा नही है, न जमीन पर है, न गुप्त, न प्रगट है, न सांच, न झूंठ है।

पतला जाड़ा ना बणया, झीण सार न तार। अमर न प्रलय पडे, आगे मध न लार ॥ ५९ ॥

न पतला है, न जाडा है, न जीणा है, न सार है, न तार है, शब्द अमर है, परले में नही पड़ता, आगे मध्य न लार है।

जो चितवे तैसा बण्या, ऐसा ईचरज खेल। देवे लेवे कुछ नहीं, हेत न बेर न पेल ॥ ६० ॥

जो जैसी साधना करता है वैसा ही फल मिलता है। ऐसा आपका अनोपम कार्य है। न किसी से प्रेम न किसी से बैर न लेना न देना है।

परसण नही प्रकोप है, रैत न राव न रंक। आप अमूरत सांईयां, बरोध न बाद न संक ॥ ६१ ॥

आप रैयत राजा व रंक नही है, आपकी कोई मूर्ति नही है, न किसी से विरोध है, न वाद

विवाद है, न संका है, न आप किसी पर प्रसन्न है, न कोप करते है।

सब में शामिल साथ हो, सब सुं न्यारा राम। जैसी जीव की भावना, तेसा सारो काम ॥ ६२ ॥

आप सबके शामिल सबके साथ हो, आप सबसे अलग हो, जैसी जीव की भावना होती है उसका वैसा ही कार्य हो जाता है।

जोगी जंगम सेवड़ा, खट दरशण सब लोय। आशा जहां बासा करो, आप निराला होय ॥ ६३ ॥

जोगी जंगम, सेवड़ा, सन्यासी दुर्वेष व ब्राहमण इन छः दरशणी व सब संसारियो की जैसी आशा जिसकी होती है वह वहीं जाता है आप तो सबसे अलग है।

गुण कीमत थाह पार नी, लागे अरथ अनेक।
सुर नर मुनि पच रहया, कुदरत तुझ नही पेख ॥ ६४ ॥

आपके गुणो का पार नही है, अनेक अरथ लग सकते है, देवता मुनि मनुष्य बहुत प्रयत्न करने पर भी आपकी लीला को नही जानते है।

खड्ड जहां तूं थल कर, भरया जहां सुसजाय। मुवा को जिवाय दे, अमर जंवरो खाय ॥ ६५ ॥

जहां खड्डा होता है वहां आप जमीन कर देते है भरा हुवा सूख जाता है, मरा हुवा जीवित हो जाता है, अमर होने पर भी काल खा जाता है।

अेसी कुदरत सांईयां, ओथ पोथ जगदीश। राजा कहूं सो रंक रे, भिक्षुक बण्या बोहो ईस ॥ ६६ ॥

आपकी ऐसी कुदरत है कि आप आत्म रूप में सब में बिराजमान है। राजा हो, रंक हो, भिक्षुक हो व अन्य सभी में आप ही बनकर आत्म रूप से बैठे हो।

तुम तुंठा सब होय है, मोख मुक्त गत पार। ज्यूं चौपड का खेल में, पासो जीत न सार ॥ ६७ ॥

आपके प्रसन्न होने पर ही स्वर्ग बैकुण्ठ मोक्ष मिलता है जैसे चौपड के खेल में पासा जीतता है। सार याने कोटी नहीं।

जीव के बस कुछ नहीं, करो करावो आप। कर्म धर्म कल आप बस, छेडो पुन्न न पाप ॥ ६८ ॥

जीव के हाथ कुछ नही है, सब करने वाले आप ही है। कर्म धर्म कला सब आपके ही वश में है। पाप पुण्य का कोई थाह नही है।

जीवां कूं परदोष दो, आप निराला होय। तुम पर वारी किण किया, धर्म कर्म मिल दोय ॥ ६९ ॥

जीवों को ही सब दोष दिया जाता है आप तो अलग के अलग रहते हो, धर्म कर्म आपको नही लग सकते यही तुम पर वारी किण किया है।

आद ऊपाया आपने, सांसो सोग विचार। ता पिछे जग जीव सो, भुक्ते बारम्बार ॥ ७० ॥

आदि से आपने संशय सोग बनाये है। जगत के जीव ही सुख दुख बारम्बार भोगते रहते है।

गेला अलख बणाविया, गिणतन आवे कोय। तुम गालो जिण गेल कूं, बुहि जावे लोय ॥ ७१ ॥

संसार में अनेक साधन बनाये है जिनकी गिनती नही है। जिस साधन में संसारियो को आप लगाते है। वो ही साधन करते रहते है।

कई डुबण की गेल है, तिरणे की करतार। धिन धिन हो धरणीधरा, सब जग कियो विचार ॥ ७२ ॥

कई साधन डुबाने वाले है, कई तिराने के है। सृष्टि के आधार याने धारण करने वाले आपको धिन धिन हो। सब जगत ने यही विचार किया है।

देवत दाणो सब किया, धर ब्रह्मण्ड आकाश। एक शब्द सुं रच दिया, तीन लोक सब बास ॥ ७३ ॥

आपने ही देवता राक्षस पृथ्वी ब्रह्मण्ड आकाश बनाये है। एक शब्द से ही आपने तीन लोक चवदा भवन की रचना कर दी है।

कहां लग करूं बखाण मैं, वार न पार न छेह। मात न बाप न तात बिन, काया काम न देह ॥७४॥

आपकी महिमा मैं कहां तक करूं, आपका वार पार छेह नही है। आपके माता पिता भाई बहिन नही है, न काया है, न काम है, आप बिना शरीर के ही है।

ओपत नेपत बीज बिन, जाया जन्म न कोय। आपो आप अमूरती, और न दूजो होय ॥७५॥

आपकी न उत्पति है न पैदाइश है। बिना बीज के आपका जन्म हुआ है, न किसी ने आपको जन्म दिया है, आप अमूरती है, आपके सिवाय कोई दूसरा नही है।

तुम सुं सब ही निसरे, पाछा फेर समाय। तुम नेःचल निरभय सदा, आव न इश्क न जाय ॥७६॥

आप से ही सब पैदा हुये है, आप में ही सब समाते है, आप सत व स्थायी है, आप सदा निरभय है, हमेशा रहने वाले है, कहीं आते जाते नही है, आपके किसी से प्रेम नही है।

हाल न चाल न डोल है, ईत ऊत दिस न कोय।
बाहिर भीतर सुन्न है, ईत ऊत साहिब होय ॥७७॥

आप न हिलते न चलते न डगमगाते न इधर न उधर आते हो, अन्दर व बाहर सुन्न है, ऐसे ही परमात्मा अन्दर व बाहर सब जगह है।

सांचा समरथ सांईयां, नेःचल चले न खीण। तुम ढाड़ी सतगायबी, मैं तारा जग बीण ॥७८॥

हे परमात्मा आप सत समरथ सांई हो, आप स्थायी हो और कभी क्षीण नही होते हो, आप सच्चे गाने वाले है। मैं बीणा का तार हूं।

जैसे आप बजाव हो, तैसे बाजण हार। दोष न दिज्यो सांईया, निरधारया आधार ॥७९॥

जैसे आप बजावोगे मैं वैसे ही बजूंगा। हे परमात्मा आप मुझे दोष मत देना, आप ही निराधार के आधार है, मेरे आधार भी आप ही हो।

बली जावुं सतशब्द की, वार फेर दूं प्राण। जिण मोकूं पैदा कियो, तन मन दियो आंण ॥८०॥

राम नाम पर मेरे प्राण न्यौछावर करता हूं तथा प्राणो को उस पर वार देता हूं, जिस परमात्मा ने मुझे पैदा किया है व तन मन दिया है।

नख चख सर्व बनाविया, खण्ड ब्रह्मण्ड पिण्ड मांय।
धिन समरथ अेको धणी, तो गत लखी न जाय ॥८१॥

जिस परमात्मा ने खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड नख से चख तक सारा शरीर बनाया है। हे समरथ आप सारी सृष्टि के स्वामी है। आपकी गति समझने में नही आती है।

कीड़ी कुंजर आद दे, धरिया सब अेनाण। पांचु इन्द्री आत्मा, नवखण्ड पृथ्वी जांण ॥८२॥

कीड़ी के कीड़ी अनुसार, हाथी के हाथी के माफिक, सब जगह के जगह आकार बना दिये है। पांचो इन्द्रियां व आत्मा के कार्य अलग अलग है। वो ज्ञान से जाने जाते है। नवखण्ड व पृथ्वी भी अेनाण से जाने जाते है।

तीनो चवदा लोक सो, सब धर औ बैराट । बायर भीतर सूत ले, किया अेकण घाट ॥८३॥

तीन लोक चवदा भवन जो ब्रह्म बैराट में है, वो ही जीव बैराट में है, यही बाहर भीतर एक होना है।

अवगत अलख अपार तूं, नमो नमो निरलंब। तू ही तूं सत सांच है, परा परी परजंब ॥ ८४॥

आपको नमस्कार है नमस्कार है, आपकी गति लिखने में नही आती है, आप अपार है, सबके आपका आधार, आपके किसी का आधार नही है, आप ही पारब्रह्म सत है।

अैसा तत्त बणाविया, धरिया या घट मांय। गंगा जमना सरसरी, चन्द सूर बोहो लाय ॥ ८५॥

शरीर में ऐसे तत्व घट में धर दिया है, इस शरीर में ही गंगा, जमुना, सरस्वती, चन्द्रमा व सूर्य बहुत बना दिये है।

तारा मण्डल देवता, धर ब्रह्मण्ड आकाश। काया में सारा धरत, समरथ सांसो सांस ॥ ८६॥

इसी शरीर में तारा मंडल, देवता, पृथ्वी, ब्रह्मण्ड व आकाश इस शरीर में ही सांसो सांस धर दिये है। ऐसे आप समरथ है।

बादल बिजली दामणी, ईन्द्र ऐसा होय। घटघट सायब सब किया, बिरला चिन्हें कोय ॥ ८७॥

बादल बिजली चमक व इन्द्र सब शरीर में बना दिये है, उसको बिरले ही पहचानते है, इन सब का अनुभव ब्रह्मण्ड में होता है। शब्द का गरजना ही इन्द्र का गरजना है। विरह व प्रेम से भजन होना ही बिजली व दामणी का चमकना है।

ज्ञान ध्यान जत जोग ले, अमरत मिठी बांण।
काया मध सब धर दिया, नव तत चारूं खांण ॥ ८८॥

ज्ञान ध्यान जतिपणा व अष्टांग योग व अमृत जैसी मीठी वाणी सब शरीर में जगह की जगह धर दिये है। नव तत्त लिंग शरीर व चारो खाण इस शरीर में है।

प्रेम नेम प्रतीत सो, बिरह बात बैराग। बुद्ध सुद्ध सारी अकल ले, धरिया जागो जाग ॥ ८९॥

प्रेम नेम विश्वास बिरह बात बैराग व सुद्धि बुद्धि व सब अकल इस शरीर में जगह की जगह धर दिये है।

किरचा किरचा बणाय कर, जोड़या शकल शरीर।
ता मध क्या क्या ते किया, प्रेम नेम गुण पीर ॥ ९०॥

टुकड़ो टुकड़ो को जोड़कर इस शरीर को बना दिया है, इस शरीर में प्रेम नेम गुण पीड़ सब धर दिये है।

पापन पुन्नन कामना, दिया सबे बणाय। तामस तरकन रीस ले, भरदी सब घट मांय ॥ ९१॥

पाप पुण्य व इच्छाये सब बना दिये है क्रोध तरक व गुस्सा भी सब इस शरीर में भर दिये है।

अवगत आत्म आप, ले पलटया मूल निधान। अेके सूं बोहो ऊपजी, तरवर बीजन पान ॥ ९२॥

आप अवगत थे याने पांच तत्वो से अलग थे सो पांच तत्वो के साथ आत्मरूप में पलट गये है इस तरह आप एक से अनेक हो गये। जैसे वृक्ष बीज से होता है।

समरथ तेरी सांईया, क्या कह गाऊं तोय। मेरी जीभ्या एक है, तुम घण नामी होय ॥ ९३॥

हे परमात्मा मैं आपकी समरथाई कैसे गा सकता हूं। मेरे मुंह में जीभ्या एक है आपके आत्म रूप से अनेक नाम हो गये है।

कैसे सुमरूं सांईया, सेवा मुझ बताय। ते चाला बहो चालिया, तामें भरम नकाय ॥ ९४॥

हे सांई मैं आपकी सुमरण व सेवा कैसे करूं। यह मुझे बताओ कि आपने संसार में कई तरह के खेल कर दिये है, जिससे मैं भरम में पड गया हूं।

पेडन डाल फल पात ज्यूं, लीला करी अनेक।
अंश दाखल सब ठौर हो, नेःचल कहा जन पेख ॥ ९५ ॥

हे परमात्मा आपने पेड़ ड़ाल फल पात जैसी संसार में अनेक लीलाये करी है। आप सर्व व्यापक हैं, जो आपका सत रूप है उसको भक्ति करने वाले जन कहां पर देखे, वही सतनाम मुझे बगसिये।

पान पात फल ड़ाल कूं, असत न किवी जाय।
नेःचल निरभय न रहे, ओ सांसो मुझ मांय ॥ ९६ ॥

पान पात फल डाल में आप मौजूद है ऐसा नही है कि आप उसमें नही है। वो स्थायी नही रहते है यही मुझे सोच है।

नाम तुम्हारा सांईया, गिणत न आवे कोय। अखर आद सरूप वे, सो बगसो सच मोय ॥ ९७ ॥

हे सांई आपके अनन्त नाम है, जिनकी गिनती नही हो सकती परन्तु आपके उस स्वरूप का जिसका कभी नाश नही होता है, वही सत नाम मुझे बगसिये।

ताते तुम हमको मिलो, मैं तो में गरकाब। सो शिमरण दिजे सही, सुण सत मेरा जाब ॥ ९८ ॥

जिस नाम का शिमरण करने से आप मुझे मिल सकते है और आपमें मैं मिल सकता हूं वो सतनाम मुझे बगसिये। यही मेरा सही सच्चा जवाब सुनिये।

आकारी केता मिलो, रोम रोम तुम होय। पतिव्रता सत पीव बिन, दूजो कहे न कोय ॥ ९९ ॥

आकारी याने शरीर धारी कितने ही मिलो परन्तु आप सबके रोम रोम में हो, आत्मा सत है वो आपके सतशब्द की भक्ति करना चाहती है, असत की नही।

मेरी अंछया आप सुं, सत सरूपी श्याम। बीज सरूपी ब्रह्म है, पात सरूपी धाम ॥ १०० ॥

हे सतसरूपी श्याम मेरी इच्छा आपको प्राप्त करने की है, सब जगह बीज रूप ब्रह्म है, पात सरूपी धाम याने माया है।

आवागवण न ऊपजुं, जीवन खोज मिटाय।
ऐसी कर करतार तूं, काल न झांपे आय ॥ १०१ ॥

हे परमात्मा मैं आवागवण में नही आवुं, मुझे बार बार जन्म नहीं लेना पड़े। हे रामजी आप मेरे पर ऐसी कृपा करो जिससे मुझे काल का डर नही रहे।

मैं शरणागत सांईया, अवगत आतम राम।
आशा तरसणा मेट हो, प्रसन्न कर सब काम ॥ १०२ ॥

हे प्रभु मैं आपकी शरण में हूं आप अवगत हो। मेरी आशा तृष्णा को मिटा कर प्रसन्न होकर मुझे आपका शिमरण करने में लगा दो।

कृपा कर करता निधे, चरणा राखो मोय। निरमल किज्यो आत्मा, शिमराओ हरि तोय ॥ १०३ ॥

हे प्रभु कृपा करके आपके चरणो में रखिये। मेरी आत्मा को पवित्र करके आपके शिमरण में लगाइये।

अेसा बल बैराग दो, मोह न माया खण्ड। निरपख कर संसार सुं, तुझ सेती सब मंड ॥ १०४ ॥

मुझे ऐसा बल व बैराग दीजिये जिससे मुझे माया से मोह उत्पन्न न हो। संसार से मुझे अलग करके आप में मिला दीजिये।

पांचू पिसण पिछाड़ हो, परमेश्वर प्यारा। निश दिन तोही नही बिसरूं, कर जन का सारा ॥ १०५ ॥

हे परमात्मा मैं पांचो विषयो से अलग होकर निरन्तर आपका ही भजन करता रहूं। ऐसी कृपा करो, यही जन का सारा है।

काम क्रोध अहंकार कूं, पालो परमानन्द। साहिब शरणे राख हो, जन का काटो फंद ॥ १०६ ॥

हे परमानन्द स्वरूप परमात्मा मुझे आपकी शरण में लेकर काम क्रोध अहंकार से मुझे रहित कर दो, जन के आवागवण का दुख मिटा दो।

मैं ते दुबध्या मेट हो, नारायण निरलेप। तोसूं कदे न ओछटूं, अेसा चित में चेप ॥ १०७ ॥

हे प्रभु नारायण मेरी तेरी व राग द्वेष को मिटाकर मैं एक क्षण भी आपका चिन्तन न भूलूं, मुझ पर ऐसी कृपा करिये।

धेस धास दूरा करो, धरणी धर भरतार। अेसो सत पठावज्यो, चलूं तुम्हारी लार ॥ १०८ ॥

हे धरणी धर परमात्मा द्वेष करना धोखा देना ऐसी बुरी वृतियों से अलग करके ऐसा सत याने शब्द ब्रह्म को घट में जाग्रत करो जिससे मैं आपका भजन निरन्तर करता रहूं।

चाह बिसे रस मेट हो, हरजी हरो बिरोध। आन ऊपासी दूर कर, किज्यो अपनो साध ॥ १०९ ॥

हे प्रभु मेरे मन में जो चाहना है उनको मिटा दीजिये और पांचो विषयो के रसो की चाहना भी मिटा दीजिये। आपकी प्राप्ति में जो बाधायें आती है उनको दूर कर दीजिये। आन की ऊपासना मिटाकर आपकी भक्ति के साधन में लगा दीजिये।

चिन्ता चितवन आशका, मेटो अवगत नाथ। कृपा कर केशो धणी, राख तुम्हारे साथ ॥ ११० ॥

हे केशव कृपा करके मेरे मन की चिन्ता चितवन व आशा को मिटा दो। आप अवगत मेरे नाथ हो। मुझे आपकी शरण में रखो।

सिकल विकल मन मेट दो, नेःचल कर जगदीश। ऐसी दिरढता धार दे, पूरण बिस्वा बीस ॥ १११ ॥

हे जगदीश्वर मेरे मन के संकल्प विकल्प मिटाकर मन को नेःचल कर दृढता याने पूर्ण विश्वास धारण करा दीजिये।

पापन पुन्नन दूर कर, सोग भिन्न सांसो मेट।
बीज जलावो आत्मा, अवगत सुं कर भेट ॥ ११२ ॥

मुझे पाप पुण्यो से दूर कर मेरा सोग भिन्नता व सोच फिकर मिटा दीजिये। भोग भोगने की व शुभ करमों के फल की इच्छा जिसके कारण जन्म लेना पडता है। उन सबको मिटाकर व आपके परमपद की प्राप्ति कराकर अवगत से मिला दीजिये। यही बीज जलावो आत्मा है।

भरम करम भय भांज हो, भगवत जन्म सुधार।
तुम हम बिचे हो रहया, सो सब जोधा मार ॥ ११३ ॥

हे भगवत भरम करम डर मिटाकर मेरा जन्म सुधार दो। आपकी प्राप्ति में जो बाधक हो उन सबको मिटा दीजिये।

कसर कोर काची सबे, भांजो दीन दयाल। जन हरी अपणो जान के, कृपा कर प्रतिपाल ॥ ११४ ॥

हे हरि मुझ में जो कसर व कमी है उसको मिटा दो। हे दीनदयाल मुझे अपना समझ कर मेरी रक्षा कीजिये।

आलस अंग मिटावज्यो, परमात्म पर देव। अेसो श्याम निवाज हो, करूं अटल सत सेव ॥ ११५ ॥

हे परमात्मा मेरा आलस स्वभाव मिटाकर मेरे पर ऐसी कृपा कीजिये। जिससे मैं आपकी अखण्ड भक्ति करके के:पद आ:पद की प्राप्ति करूं।

निद्रा नासत झूंठ भय, जोबन जंवरो मार। साहिब ये झूंठा गणा, सब जग चाल्यो हार ॥ ११६ ॥

हे साहिब मेरी निद्रा असत्य, झूंठ जोबन ये सब झूंठे है इन्ही से जन्म मरण में आना पडता है सारा जगत इनसे हार चला है।

जन पर कृपा कीजिये, अे सब राखो दूर। आठ पोहोर अखूटले, राखो श्याम हजूर ॥ ११७ ॥

हे श्याम इस जन पर कृपा कर इनसे दूर रखो, जिससे रात दिन अखण्ड आपकी भक्ति करूं।

प्रेम पठावो प्रीत दो, प्रगल करो शरीर। विरह ऊपावो रामजी, ज्ञान घलावो तीर ॥ ११८ ॥

हे रामजी प्रेम व प्रीति भेजो, जिससे मेरा शरीर गद गद हो जाय। बिरह पैदा करके पूर्ण ज्ञान धारण करा करके मुझे किनारे लगा दीजिये व आपके पद की प्राप्ति करा दीजिये।

तुम प्रसन्न प्रचित मिलो, ऐसी कर सत श्याम।
जन कूं दोष न दीजिये, तुम सारो सब काम ॥ ११९ ॥

हे सत साहिब आप प्रसन्न होकर आपके पद की प्राप्ति की जानकारी करा दीजिये। जिससे मैं आप में मिल जावूं आप ही मेरे सब काम सुधारने वाले है। मुझे दोष मत दीजिये।

ओ जग आत्म पुतली, तुम बाजीगर राम।
ईचरज खेल पसारियो, कल कीमत सब धाम ॥ १२० ॥

हे रामजी जगत की सब आत्मायें बाजीगर की पुतली के समान है। जैसे आप नचाते हो वैसे ही नाचती है। आपने अद्‌भूत खेल बनाया है। जिसमें कलाये व कीमत धाम सब आपका ही पसारा है।

जैसे आप नचाव हो, जैसे नाचे जीव। बाजीगर बस पुतली, मैं तुम बस यूं पीव ॥ १२१ ॥

हे परमात्मा इस जीव को जैसे आप नचाते हो वैसे ही नाचता है। जैसे बाजीगर के वश में पुतली रहती है, ऐसे ही यह जीव आपके वश में है।

ज्यूं गुड़िया असमान में, पवन के वश होय। ज्यूं करमा वश आत्मा, दुख पावत है लोय ॥ १२२ ॥

पतंग आसमान में हवा के वश होता है वैसे ही हे प्रभु यह आत्मा कर्मो के वश होकर सब संसारी दुख भोगते है।

मोह डोरी आत्म गुडी, पवन करम करूर। सब बस है तुज सांईया, ज्यूं डोरी गहसूर ॥ १२३ ॥

हे सांई आपने आत्मा रूपी पतंग को मोह रूपी डोरी से बांधा है, कठोर कर्म रूपी हवा ही इस आत्मा रूपी पतंग को संसार में घूमाता है। सब आपके वश में है क्योंकि पतंग की डोर आपके ही हाथ में है।

छन्दभुजंगी : धिनो राम राया, बडा देव दूजा। करे सेव सारा, सब सन्त पूजा ॥ १२४ ॥

हे रामजी आपको धिन है, सब ही बडे बडे देवता आपकी भक्ति करते है, सब ही सन्त आपका शिमरण करते है।

सब शरण आया, किया भेद भारी। लखे जन पूरा, काया सोज सारी ॥ १२५ ॥

हे परमात्मा सब ही आपकी शरण में है। आपने बडा भारी भेद बना दिया है जिसने अपने सारे शरीर की सोधना की है वो ही पूरे जन आपको जान सकते है।

दाणू देव देवा, करे जुध भारी। तिहूं लोक धूजे, नमो गत थारी ॥ १२६ ॥

हे परमात्मा देवता व राक्षस आपस में भारी लडाई लडते है, आपकी गति को नमस्कार है। तीनो लोक आप से धूजते है।

छन्द मोतीदान : अेको हरि आप अजीत नाथ। किया जग जीव भरे बोहो बाथ ॥ १२७ ॥

हे हरि आप अकेले ही अजीत है कोई आपको नही जीत सकता। आप सब के नाथ हो, सारे जगत के जीव आपकी प्राप्ति के लिये अनेक साधन करते है।

बड़ा ऋषि सारा धरे ध्यान ज्ञानी। करे संत सेवा, बिधो बिध जाणी ॥ १२८ ॥

बडे बडे ऋषि व ज्ञानी आपका ध्यान करते है। सब संत जिस विधि से आपकी प्राप्ति हो उस विधि से भजन करते है।

अडे सब ज्ञान तुमारे काज। कहा तुम खेल कियो महाराज ॥ १२९ ॥

ज्ञानी ध्यानी ऋषि व संत सब अपने अपने ज्ञान की महिमा करते है। हे परमात्मा आपने यह क्या खेल रचा है।

करे है सो कौन करावे है काम। धरे कुण ध्यान तुम्हारो हो राम ॥ १३० ॥

हे राम करने वाला कौन है व काम कौन कराता है। आपका ध्यान कौन धरता है।

तूं ही तूं देव बणो तूं दुग। तूं ही तूं मास बणे तूं जुग ॥ १३१ ॥

आप ही देव बने, आप ही दृगपाल बने हो, महीना भी आप बने हो व जुग भी आप ही बने हो।

तूं ही धरलंब बणे आकाश। तुं ही जल नीर ऊपावण मास ॥ १३२ ॥

आप ही धरती याने सृष्टि का आधार व आकाश बने है। आप ही जल पैदा कराने वाले व आप ही मास बने है।

किया ते ठाम अनेका अनन्त। रहयो तूं ठोड़ लखे कोई संत ॥ १३३ ॥

आपके अनेक अनन्त रहने के स्थान बनाये है परन्तु आप किस जगह रहते है इसका अनुभव बिरले संत ही करते है।

बणे तूं भाव भलाई राम। करि ते देह बणाया धाम ॥ १३४ ॥

हे रामजी आप ही भाव बणे है आपने ही शरीर बनाये है व आपने ही धाम बनाये है।

ऊपाया जीव अनन्त अपार। दिया सुख दुख जिवा जग लार ॥ १३५ ॥

आपने अनन्त अपार जीव बनाये है सब जीवों के साथ जगत में सुख दुख लगा दिये है।

कियो ते धन्ध बणाया धाम। हुवो तूं जम, कहां तू राम ॥ १३६ ॥

आपने ही सब प्रकार के धंधे बनाये है धाम बनाये है कही तो आप जमराज बने है कही आप राम बने है।

किया ते केम किसी विध सूत। जणे किम नार अघाटे है पूत ॥ १३७ ॥

हे परमात्मा आपने यह सूत याने खेल कैसे बनाया है स्त्री बालक को विकट घाट में से कैसे जन्म देती है।

नव विध मास रखे गरभ बाल। किस विध राम किवी प्रतिपाल ॥ १३८ ॥

हे रामजी नो माह गर्भ में बालक को किस तरह रखकर आप उसका पोषण करते हो।

कहूं मैं तोय किती एक बार। किसी विध राखिया जीव अहार ॥ १३९ ॥

मैं आपको कितनी बार कहूं कि आपने गर्भ में बालक को आहार कैसे पहुंचाया है।

अन्नो अन्न पान, भखे जब नार। किसी विध नार कियो संभार ॥ १४० ॥

नारी अन्न जल खाती पीती है। आप बालक को आहार कैसे पहुंचाते है, आपने गर्भ में बालक की संभाल कैसे की है।

रखे गरभ जीव किसी विध राम। जलोअन्न अहार भखे ऊण धाम ॥ १४१ ॥

हे रामजी गर्भ में जीव को कैसे रखा है। जिस जगह अन्न जल व अहार कैसे वहां पहुंचता है।

बह जल घाट झरे मल सोय। किसी विध जोय रहे नित जोय ॥ १४२ ॥

हे रामजी जिस जगह से मूत्र बहता है व मल झरता है वहां गर्भ में नो महिने तक आपने बालक को कैसे रखा है।

किया ते केम किसी विध राम। जलो रज बून्द धरी में ठाम ॥ १४३ ॥

हे रामजी आपने इस जीव को कैसे बनाया है। जल, रज, बिन्द इन सबको उस जगह कैसे रोक रखा है।

घडया ते केम, किसी बिध जीव। कहूं मैं तोय, बतावो पीव ॥ १४४ ॥

हे परमात्मा मैं प्रार्थना करता हूं कि मुझे कृपा कर बताइये कि आपने रज वीर्य से जीव को कैसे बनाया है।

नही घण राछ संडासी नांय। किसी बिध जीव घडया हरि मांय ॥ १४५ ॥

हे परमात्मा आपने वहां घण संडासी नही होते हुये भी जीव को किस तरह से घडा है।

घड़े किम शीश बणावे नाक। किसी विध नैण किया ते पांव ॥ १४६ ॥

आपने कैसे सिर, नाक व आंख व पांव बनाये है।

बणाया हाथ घड़े किणी घाट। बणाया होट किवी मुख बाट ॥ १४७ ॥

हे रामजी आपने कैसे हाथ बनाये है, इन्हें किस प्रकार घड़े है, होठ कैसे बनाये है व मुंह में कैसा रास्ता बनाया है।

कहूं मैं राम सुणो करतार। किसी विध जीभ बणाई सार ॥ १४८ ॥

हे रामजी मैं कहता हूं कि हे करतार सुणो जीभ में जो सार भर दिया है वो आपने किस तरह बनाई है।

किया केम केश किस विध श्याम। बणाया खून नमो सत राम॥ १४९ ॥

आपने बाल कैसे बनाकर उन पर काला रंग कैसे चढाया व आपने रक्त लाल कैसे बनाया है।

चढाया रंग किया सब काम। धरया जिण जाग खुले तिण बाम ॥ १५० ॥

आपने सब शरीर पर रंग चढाकर सब काम किया है जिस जगह आपने रखे उसी जगह वो खुलते है।

नही को चोट न देवे घाव। किया हरि केम बड़ा मुज चाव ॥ १५१ ॥

आपने शरीर बनाने में न चोट दी न घाव पडा है यह सब आपने कैसे किया है इसका मुझे आश्चर्य है।

बणाया शीष धरया शीर कान। किसी बिध पास बणाया जान ॥ १५२ ॥

आपने सिर बनाया कान बनाये आपने दोनो तरफ कान पास पास कैसे बनाये है।

नमो तुज राम सनेपी नांय। इसी बिध बात कियो मोही आय ॥ १५३ ॥

हे रामजी आपको नमस्कार है इस प्रकार आपने सब चीजे कैसे बनाई है मुझे कहिये।

बणाया हो एक तुम्हे स्थूल। लगाया खंभ अभैसत मूल ॥ १५४ ॥

आपने स्थूल शरीर बनाकर दो खंभ याने पांव बनाये है। फिर उसमें अब आत्मा भेजी।

बणाया पांव किवी किण जोड़। लखावे अेक चौबीसुं ठोड़ ॥ १५५ ॥

आपने यह किस तरह जोडे है दिखने में एक दिखता है परन्तु उनमें चौबीस भाग है।

किया ते केम कहो करतार। बणाया देवल देव मुरार ॥ १५६ ॥

आपने यह कैसे बनाया है परमात्मा आपने शरीर बनाकर आत्मा रूपी देव को अन्दर कैसे बैठाया।

धरया ते देव किसी विध मांय। फिरूं सो धाम द्वादस जाय ॥ १५७ ॥

शरीर में आत्मा रूपी देव कैसे धर दिया है, श्वांसा चेतन के साथ बारह स्थानो का अनुभव करते है।

बणाया महल अनोप अजब। रमे तूं मांय निशो दिन रब ॥ १५८ ॥

हे प्रभु यह शरीर आपने अनुपम व आश्चर्य जनक बनाया है व रात दिन आप उसमें रमते है।

केता सो देव तुम्हारे पास। जोवे कहो कौन गह को बास ॥ १५९ ॥

इस शरीर में कितने देव धर दिये है इसमें देखने वाला सुगन्ध लेने वाला कौन है।

सुणे सो श्याम झरोका मांय। कहो ओ कौन अनो जल खाय ॥ १६० ॥

हे श्याम कान रूपी झरोखे से सुनने वाला कौन है व अन्न जल खाने पीने वाला कौन है।

झरोखा दोय सुणे को बात। दूजी हरि धाम न जाणे है जात ॥ १६१ ॥

दोनो कानो से ही सुना जाता है। दूसरी जगह से नहीं सुना जाता है।

बणाया देवल देव मुरार। झरोखा मांय अबे मिल चार ॥ १६२ ॥

शरीर रूपी देवल में एक झरोखे से सुनने देखने सुगन्ध लेने व चखने वाले सब अलग अलग ये चार बनाये है।

कहो कुण देव झरोखा मांय। किसी विध रूप गह हरि जाय ॥ १६३ ॥

हे परमात्मा इस शरीर के झरोखे में कौन सा देव है किस विधि से रूप से धारण किया है सो समझाइये एक बार किसी को देख लेते है पुनः दुबारा देखने पर उसको पहचान लेते है।

लेवे कुण बास सुवास शरीर। कहो कुण धाम बणाई है ईस ॥ १६४ ॥

शरीर में सुगन्ध व दुर्गन्ध लेने वाला कौन सा देव है, कौन सा धाम है, परमात्मा आपने उसके लिये बनाया है, यह मुझे समझाइये।

तुम्हें तो एक बणाया जीव। नखे चखे मांय रमे किम पीव ॥ १६५ ॥

आपने शरीर में जीव तो एक बनाया वह नख से चख तक सारे शरीर में कैसे रमता है।

गह सत बात सबे संग जाय। किया खटधाम झरोखा मांय ॥ १६६ ॥

यह सब बात ही सबके साथ धारण करता है आपने इस शरीर में छः झरोखे बना दिये है।

सुणे जीण धाम ने देखे रूप। गह जहां बास नही खट चूप ॥ १६७॥

जिस जगह से सुना जाता है वहां से देख नही सकता है। जहां से सांस लेता है वहां से बोल नही सकता है।

किया ते धाम नियारा सोय। यहां की बात वहां नही होय ॥ १६८॥

आपने देखने सूंघने चखने व सुनने के सब स्थान बनाये पर एक जगह की बात दूसरी जगह नही होती है।

है घट एक कहे दूजो मांय। अेकण धाम सबे नही खाय ॥ १६९॥

शरीर एक व आत्मा एक है तो दूसरा कौन है। जब दूसरा कोई नहीं है तो सब काम एक जगह से क्यों नही होता है।

न्यारा हो देव कहे अे कहां होय। कहूं मैं पीव बतावो मोय ॥ १७०॥

हे प्रभू इन इन्द्रियों के देव अलग अलग है या एक ही है। यह कृपा करके मुझे बताओ।

किया ते केम, किसी विध श्याम। गेहे सो बास बिधो विध राम ॥ १७१॥

हे श्याम यह आपने कैसे बनाया है। नाक सबकी अलग अलग गन्ध लेकर कैसे परीक्षा कर बता देता है।

किया सो घाट अनेक अपार। कहां तूं श्याम बिराजण हार ॥ १७२॥

आपने शरीर में अनेक अपार स्थान बनाये है, हे परमात्मा आप किस जगह बिराजते है।

किया ते सूत अनेक अजात। घडी घट मांय केती ते बात ॥ १७३॥

आपने अनेक तरह की बातें शरीर में बनाई है। आपने शरीर में कितनी बातें बनाई है।

बणाया देवल देव असंख। किया ते शहर भडाभड पेख ॥ १७४॥

आपने असंख्य शरीर बनाये है अनेक शहर बनाये और उसमें अनेक लडने वाले योद्धा रखे है।

बणाया सेंग अनोप अपार। बसे मझ गाडर गायर नाहर ॥ १७५॥

आपने सारा शरीर अनोपम अपार अदभूत बनाया है उसके अन्दर गाडर गाय व सिंह रहते है।

सबे सो शहर बना बिच होय। तुम्हें बिन शहर न देख्यो कोय ॥ १७६॥

यह सब शरीर बनों के बीच में है आपके बिना शरीर में किसी को नही देखा है।

बड़ा सो शाह ऋषि बन मांय। बसे सो शहर सुनी दिश नांय ॥ १७७॥

इस शरीर में बडे बडे साहूकार रहते है व ऋषि भी रहते है और कोई दिशा आपके बिना खाली नही है।

लगी मज हाट चौरासी विष। अबे फिर तीन बनाई है ईश ॥ १७८॥

इस शरीर में चौरासी विष की दुकाने बनाई व ईश्वर ने तीन और बनाई है। हद, बेहद तथा के:पद में जाने की।

किया ते शहर सज्या बोहो मांय। धरी ते चीज अनेकूं मांय ॥ १७९॥

आपने ऐसा शहर याने शरीर बनाया है उसको अनेक तरह से सजाया है व इसमें अनेक प्रकार की चीजें रख दी है।

बसाया शहर अनोप अगाध। किया मज चोर बसाया साध ॥ १८०॥

आपने यह शहर याने शरीर अनुपम व अथाह बनाया है। आपने इसमें चोर व साध भी बनाये है।

बणाया कोट किला करतार। किही बोहो बाड़ बना की सार ॥ १८१ ॥

शरीर में कोट किला बनाये व आपने बन की रक्षा करने के लिये बहुत बाड़े बनाई है।

बणाई तीन बडी मध पोल। पड़े नित शहर अचुकी रोल ॥ १८२ ॥

आपने इसमें तीन बडे दरवाजे आंख, कान, मुंह बनाये है। इस शरीर में ये निश्चित उत्पात खडे करते हैं।

चढे एक नार बडी भयभीत। लिया तिण दाणू सबे नर नार जीत ॥ १८३ ॥

उपरोक्त उत्पात से आत्मा रूपी नारी बडी भयभीत होती है क्योंकि उन तीनों ने सभी को अपने वश में कर रखा है।

घडी एक चार पकी मिल दोय। अेते में शहर हलावे है जोय ॥ १८४ ॥

आंख, कान, मुंह व मन ये चार तथा अहमता ममता साथ में मिलकर कोई गलत कार्य में लग जाते है। व पूरे शरीर में हलचल मचा देते है।

हूवे सब लीन अधीन अनाथ। बड़ा मझ भूप तिके पण साथ ॥ १८५ ॥

सब उसके आधीन होकर वश में हो जाते है। शरीर का राजा मन भी उसके साथ हो जाता है।

इसी दो नार बणाई श्याम। नितोनित शहर बिदूसे राम ॥ १८६ ॥

अहमता व ममता ऐसी दो स्त्रियां है। हे श्याम आपने बनाई वो सब शरीर का नाश करती रहती है।

नही बस तीन, जोरावर नार। किया सब पांच पचीसुं लार॥ १८७ ॥

आत्मा रूपी नारी बडी बलवान है। यह तीन, आंख कान मुंह के वश में नही होती है। पांच विषय पच्चीस प्रकृतियां उनको भी वश में कर लिया।

बचे नही एक बिना तुज राम। करे अे नित अनिता काम ॥ १८८ ॥

हे रामजी आपकी कृपा के बिना इनसे कोई नही बच सकता है। ये मनुष्य का हमेशा पतन करती रहती है।

सुणो जगदीश, संभालो मोय। लुटिजे शहर तुम्हारो जोय ॥ १८९ ॥

हे जगदीश मेरी प्रार्थना सुनकर रक्षा करो यह आपका शरीर रूपी शहर लुट रहा है।

धणी तुम आंण बंधावो धीर। ऊलटया दाणु बहावन बीर ॥ १९० ॥

हे परमात्मा आप मुझे धैर्य धारण करावो, ये बुरे विचार व वृतियां रूपी राक्षस मुझे भवसागर में बहा रहे है।

करो हरि सहाय, अजुणी हो नाथ। अबे विष प्राण पड़े है हाथ ॥ १९१ ॥

हे नाथ आप अजन्मा है, मेरी सहायता करो। अब मेरे प्राण विषयो के फंद में पड़ रहे है।

लुटे जो शहर बड़ो अच गत। अनंता मांय बणायो सत ॥ १९२ ॥

आपके शरीर रूपी शहर को लूट रहे हैं, चौरासी लाख योनियों में मनुष्य जीवन में ही सत आता है।

किया ते ठाट मंडाण अपार। समजे सेंग स्नेह संग नार ॥ १९३ ॥

शरीर में अनेक तरह के ठाट व रचना की है सब स्त्री पुरूष समझते हुए भी विषयों के साथ रहते है।

किया अेकसा बडा करसाण। ढुली एक बालद नगर मझ आंण ॥ १९४॥

आपने सबको एकसा बनाया आप बडे किसान है। इस शरीर में नाभी रूपी कुंड है उससे ही पूरे शरीर में रस पहुंच जाता है।

बिणजे सेठ करे व्यौपार। चले जग नायक, सौदो हार ॥ १९५॥

चेतन सेठ के पास स्वांसा रूपी पूंजी है। भजन करना ही व्यौपार करना है। मन के आधार से भजन नही करना ही सौदा हारना है।

संभाले गुणे गिणे सो दाम। अबे सो नायक चेतन राम ॥ १९६॥

चेतन राम ही बोरी संभालने वाला व रूपये गिनने वाला भी नायक चेतन ही है।

सरे अब बात न कांई श्याम। दिरावो माल मम माया सो राम ॥ १९७॥

हे श्याम मेरे से अब कोई बात नही बनती है। मेरी स्वांसा जो माया में लग रही है उसे भजन में लगा दो।

पुकारे तुज सुणो हरि राय। गमाया माल दिरावो आय ॥ १९८॥

हे हरि आप मेरी प्रार्थना सुणो, मेरी स्वांसा संसार के काम में जा रही है उसे भक्ति में लगाना ही माल दिराना है।

बणाया ठग बड़ा बेताल। बधीते मारे घरो घर माल ॥ १९९॥

हे प्रभु आपने इस शरीर में ठग बनाये, बडे बेताल बनाये। वो मेरी स्वांसा रूपी पूंजी को विषय रस में लगा रहे है और मेरे को कर्मो में लगाकर अवगति में भेज रहे है।

बिणजे शाह घरे घर राम। मुंह देसो एक बणायो धाम ॥ २००॥

जो साहूकार होते है वो स्वांसो को भजन में लगाकर यह धन बढाते है, आपने खाने का व भजन का एक ही धाम बनाया।

बिचे सो हाट अपार अनेक। बिणजे साह सुजाण पेक ॥ २०१॥

इस शरीर में आपने कई तरह की दुकानें लगाई है, जो सही व्यापारी होगा तो वह सही सौदा करके आत्मा को सतमार्ग पर लगायेगा।

बसावे चीज मोलावे जोय। घरो घर राम पहुंचावे लोय ॥ २०२॥

जैसी जैसी चीज खरीदता है वैसी ही उसकी कीमत है। ऐसे ही जैसा साधन करता है वैसा ही फल मिलता है।

नमो तूं राम धिनो करतार। बणाया जग भलो संसार ॥ २०३॥

हे राम आपको नमस्कार है, हे सृष्टिकर्ता आपको धिन है, आपने यह संसार अच्छा बनाया है।

रमे सो मांय किया बोहो रंग। धरयो सत प्रेम बणायो भग ॥ २०४॥

हे प्रभू आप सब में रमते है, आपने बहुत रंग बनाये हैं। आपने सब शरीरों में सत व प्रेम धर दिया है। तथा संसार रचना के लिये आपने भग भी बनाया है।

धरयो नर नार न्यारा नाम। कहो कोई शहर बणयो कोई ग्राम ॥ २०५॥

आपने स्त्री व पुरूषो के अलग अलग नाम रख दिये कोई शहर कोई गांव बना दिये है।

पिछाण्या तोय अबे जगदीश। तूं ही नरनार पशु तूं ही ईश ॥ २०६॥

हे परमात्मा अब मैंने आपको पहचाना है, आप ही स्त्री पुरूष व पशु है, आप ही सबके ईश्वर है।

किया सुख धाम बणाया राज। धरयो ते रूप सुखा के काज ॥ २०७॥

आपने अनेक सुखो के धाम बनाये राज बनाये, आपने ही पांचु इन्द्रियो के सुख लेने के लिये जीव होकर रूप धारण किया है, आप ही ब्रह्म है।

किया सो प्रेम बणया रस कूप। तुम्हें तज काज बणाई चूप॥ २०८॥

हे प्रभु आपने मुंह रूपी रस कुप बनाया ताकि प्रेम से आपका नाम रट सके। लेकिन मनुष्य आपके नाम को छोडकर चुप धारण कर बैठ जाता है।

किया सो कामस रीत सु नाथ, माया मुझ राम लथो बथ साथ ॥ २०९॥

जिसने भी इस शरीर से परमात्मा को भजने का कार्य किया तो उसके ऊपर परमात्मा की असीम कृपा होती है। संसार के सभी सुख उसे मिलते है।

धरया देह रूप बणाया घाट। किवी सुख शीर पिणे की बाट ॥ २१०॥

आपने शरीर का रूप धारण करके सब रास्ते बना दिये व सुख लेने के लिये इन्द्रिया बनाई है।

पिया सो आप नही कोई और। तुम्हें सब जाण बणाई है ठौर ॥ २११॥

अब रस पीने वाले आप ही है और दूसरा कोई नही है। आपने ही सब इन्द्रियो के रस पीने की जांण कर सब जगह बनाई है।

धरया गुण ताय तुम्हे जगन्नाथ। सबे सुख दुख तुम्हारे हाथ ॥ २१२॥

हे जगदीश्वर आपने सब इन्द्रियो के अलग अलग गुण बनाये है, सब सुख दुख तुम्हारे ही हाथ में है।

किया सब ठाम विचार विचार। चाहिजे तोय जिकी बिध लार ॥ २१३॥

आपने सब स्थान विचार विचार कर बनाये है, जो आपको चाहिये सो सब विधि से आपने बनाये है।

बिना ते काम किया नही कोय। बणाया घट अनेका लोय ॥ २१४॥

हे परमात्मा आपने इस शरीर में बिना काम की कोई चीज नहीं बनाई। आपने अनेको घट व लोग बनाये।

नमो करतार नमो जगदीश। सुधारण काम विश्वाबीस ॥ २१५॥

हे जगदीश्वर आपको नमस्कार है आप सबका विश्वाबीस काम सुधारने वाले है।

नमो निरलंब निराला निचेत। नमो सतश्याम सबे दुख जीत ॥ २१६॥

हे सतश्याम आपको नमस्कार है, आप सबसे अलग है, आप को नमस्कार है, आप सबके दुखो को हरने वाले है।

नमो निराकार आकार बिन अंग। नमो तत्त रूप नही तुज संग ॥ २१७॥

हे प्रभु आप निराकार है, आपका कोई आकार व शरीर नही है, आप ब्रह्म रूप है, आपके साथ कोई नही है।

नमो गुण ज्ञान, न पावे पार। बडा संत साध तुम्हारी लार ॥ २१८॥

हे परमात्मा आपके गुणो व ज्ञान का पार नही है आपको नमस्कार है, बडे बडे संत साधु आपको भजते है।

डरे सो राव बड़ा राजपूत। किया तके मांय श्याम सब सूत ॥ २१९॥

हे परमात्मा आपसे बडे बडे राजा व राजपूत डरते है। हे श्याम आपने सब काम सबके अन्दर बराबर बनाये है।

कहूं तूं नांय न देखे है कोय। किसी विध सेंग धुजावे है लोय ॥ २२० ॥

हे परमात्मा आप किसी को कुछ नही कहते हो, आपको कोई नही देख सकता, किस तरह आप सारे संसार को भयभीत करते है।

डरे सब देव जक्ष जग राह। नमो सत श्याम करी किम राह ॥ २२१ ॥

हे रामजी आपसे देवता राक्षस व सारा जगत डरता है। हे सतश्याम आपको नमस्कार है, आपने यह सब कैसे किया है।

एक सुं एक बडा भयभीत। मारे सब श्याम आवे तूं चीत ॥ २२२ ॥

हे श्याम एक से एक आपसे बहुत भयभीत याने डरते हैं। जब कष्ट पडता है तो आप याद आते हो।

अचम्बो मोय सुणो करतार। डरे सो कौन डरावण हार ॥ २२३ ॥

हे सृष्टिकर्ता प्रभु यह मुझे बडा आश्चर्य है, मेरी प्रार्थना सुणो, डरने वाला व डराने वाला कौन है।

न देख्यो तोय बिना ओ राम। लगाई बीच भुलाई श्याम ॥ २२४ ॥

हे रामजी आपके सिवाय डरने व डराने वाला दूसरा कोई नही है, आपने जीव में आपके बीच में भरम डाल रखा है।

आयो सुख लेण धरयो अवतार। गयो सुख भूल अनेक विचार ॥ २२५ ॥

इस जीव ने परमात्मा से मिलने के लिये शरीर धारण किया लेकिन यहां के लौकिक सुख में लिपाय मान होने से परमात्मा में मिलने का जो अखण्ड सुख लेने आयी उसे भूल गयी और अनेक विचारों में फंस गयी।

पिया रस प्रेम रहयो लपटाय। ताते अवगत न सूजे काय ॥ २२६ ॥

जीव संसार में प्रेम रस पीकर उसमें लीन होने से परमात्मा को भूल गया है। अब उसको नही सूजता है।

गयो सुख भूल कहो ओ जीव। तजे विष स्वाद तबे सत जीव ॥ २२७ ॥

यह संसार में किस काम के लिये आया था, जिस काम के लिये आया, वो नही हुवा वरन माया के सुख में परमात्मा को भूल गया है। जीव तो शीव था परन्तु विषयो के सुख में जीव हो गया। जीव तो ब्रह्म था, ब्रह्म में सुख दुख नही होने से पांच तत्वो का शरीर धारण किया और शरीर के साथ जीव बन गया है। शरीर द्वारा ही जीव करम करता है और शरीर से ही किये हुये कर्मो का फल भोगता है। शरीर के बिना कर्म होता नही है और शरीर के बिना कर्म भोगा भी नही जाता है।

उठे सब सेंग अनेक बोहार। तबे सत आप तूं ही तत सार ॥ २२८ ॥

सब सुख, भरम व व्यवहार ऊठ जावे, तब आत्मा को, परमात्मा सत है आत्मा सत है का भान होता है और सत को सत में मिलाने का ज्ञान धारण करती है।

भूलो तूं राम विषय पीव जोय। किवीकल हाथ मिटे नही कोय ॥ २२९ ॥

हे जीव तू ब्रह्म होकर विषयो के सुख में राम को भूल गया है, तूने हाथ से कर्म किये है, वह करम अब मिट नही सकते है।

ईसा सो कौन मिटावे है आय। किया हरि आप फेरया नही जाय ॥ २३० ॥

परमात्मा के सिवाय करमो को मिटाने वाला कोई नही है। तेने जो करम किये है वो परमात्मा के यहां लिखे है, किये हुये करमो का फल भोगना ही पड़ता है, बिना भोगे नही मिटते है।

तुम्हारा तुज संभालो सूत। तब हरि आप बणे अवधूत ॥ २३१ ॥

तुम्हारे किये हुये कर्म तुम ही संभालो जैसे कर्म किये वैसे ही फल मिलेंगे। कर्मो से अलग होने पर ही जीव से ब्रह्म होता है।

किया सो आप, अनेक विचार। नही जग और उपावण हार ॥ २३२ ॥

अपने किये हुये कर्मो का फल विचार कर देखो। कर्म पैदा करने वाला दूसरा कोई नही है। कर्म अपने किये से होते है। दूसरो का इसमें सम्बन्ध नही है। जैसा करता है वैसा ही फल मिलता है।

जहां लग जीव सुखावित होय। तहां लग धाम न पावे कोय॥ २३३ ॥

जहां तक जीव विषयो के सुख में रहता है, तब तक ब्रह्म धाम की प्राप्ति नही होती है।

तबे सुख स्वाद बणाया सोय। जबे हरि आप अमूरत होय ॥ २३४॥

हे हरी परमात्मा आप अमूरत होते हुये भी इतने सुख व स्वाद बनाये।

सुखां के लेण धरया आकार। बिना सुख दुख तुं ही करतार ॥ २३५ ॥

जीव तो ब्रह्म था, परमात्मा के केवल पद में मिलने के लिये ही शरीर धारण किया है। सुख दुख से अलग तो आप परमात्मा है।

मिटावो आप अनेक ऊपाय। तुम हरि और न मेटे आय ॥ २३६ ॥

हे परमात्मा आप मेरे कर्मो का खात्मा अनेक ऊपाय करके मिटा दो। आपके सिवाय कोई दूसरा मिटाने वाला नही है।

बडो सो खेल अचम्भो मोय। बिना तुम और कहो कुण होय ॥ २३७॥

आपने संसार रूपी खेल बनाया है उसका मुझे आश्चर्य है, आपके सिवाय दूसरा कौन करने वाला है।

तिरे सो कौन तिरावणहार। बिन हरि कौन ऊतारे पार ॥ २३८ ॥

तिरने वाला व तारने वाला कौन है परमात्मा के सिवाय इस भवसागर से पार उतारने वाला कौन है।

सुखा में जड हुवो प्रवाण। निरालो होय चिताऊ आण ॥ २३९ ॥

संसार में सुख भोगने में जीव जड व लिप्त हो गया है। हे जीव तू परमात्मा से अलग हो गया है। अब मैं तुझे चेताता हूं कि अब तू इन सुखो से अलग हो जा।

बतावे भेव सुणे संसार। मैं ही जड़ जीव आप चेतावणहार ॥ २४० ॥

ओधाधारी संतो के रूप में आप धरती पर सद्गुरु भेजते हैं वो आप में मिलने का भेद संसारियों को सुनाते है। और इस जड जीव को आपकी सता लेकर आने वाले संत चेताते है।

लिया सुख दुख अनेक अपार। अबे तूं चेता शिरजणहार ॥ २४१ ॥

जीव अनेक तरह के अपार सुख दुख भोगता है। हे परमात्मा अब आप मेरे को ज्ञान से चेताओ ताकि दुख सुख से अलग हो जाऊं।

तजो जग जीव विषय सब खोय। कहूं मैं आप निरालो होय ॥ २४२ ॥

हे जीव तू जगत के पांचो ईन्द्रियो के विषयो को छोड दे, तब जगत से तेरा जीवपना मिट जावेगा। मैं जगत से अलग होकर तुझे कह रहा हूं।

संभालो काय नही करतूत। तजो विष बाद, सो जम का पूत ॥ २४३ ॥

जीव को परमात्मा कह रहे है कि तू अपने कर्मो की तरफ क्यों नही देखता है। विषयो को नही छोडते, विषय कर्म ही जम के पूत है याने विषयो से जन्म मरण नही मिटता है।

जहां निज धाम तुम्हारी होय। चलो अब आप बतावुं तोय ॥ २४४ ॥

जहां परमात्मा का निजधाम है वहां चलो, जहां निज धाम तुम्हें बताता हूं।

तहां तुम रूप अरूप अलेख। जहां सुख दुख नहीं को पेख ॥ २४५ ॥

वहां ब्रह्म के रूप नही अरूप है, न लिखने में आता है, जहां सुख दुख देखने में नही आते है।

चलो अब धाम तजो आकार। बिना कुल ब्रह्म मिलो निराकार ॥ २४६ ॥

अब तुम आकार याने शरीर से अलग होकर ब्रह्म धाम को चलो और कुल से अलग होकर सतब्रह्म में समा जावो।

वां जाओ आप अमोल ही मांट। होता तुम नाथ अजुणी आट ॥ २४७ ॥

वहां जाकर आप अमूल्य कहलावोगे। और तुम परमात्मा स्वरूप बन जाओगे तथा जन्म मरण से रहित हो जावोगे।

तजो जग जीव तणो बौहार। मिलो घर आद तणो दरबार ॥ २४८ ॥

आप जगत से जीवपणा का व्यवहार छोडकर परब्रह्म को लांघ कर के:पद में जाकर मिलो।

कहां तुम भूल रहया घर धाम। दिया दिल झूंठ विकारा काम ॥ २४९ ॥

तुम अपने ब्रह्म धाम के ठिकाने को भूल रहे हो, तुम्हारा मन झूंठे विषय सुखो में व विकारो में लग रहा है।

तजो कुल जात सगाई नेम। छाड़ो सुख दुख तणो सब प्रेम ॥ २५० ॥

अब तुम कुल याने माया ब्रह्म मिलने का सब नियम छोड दो व सुख दुख को छोडो, उनसे प्रेम मत करो।

बिछोडो तत्त ऊपाया सोय। मिलो घर आद तुमारो जोय॥ २५१ ॥

जिस ब्रह्म से अलग हुये थे व जिस ब्रह्म धाम से आप पैदा हुये थे, उस धाम में मिलने के सब ऊपाय छोड़ दीजिये। आप आद घर को ढूंढकर आद घर में मिलो।

तजो गुण तीन मिटावो धात। करो तुम सोध तुम्हारो साथ ॥ २५२ ॥

तीन गुण सतो, रजो व तमो। सात धात से बने हुये शरीर को मिटा दो, जो हर समय साथ रहता है उसकी खोज करो।

पचीसुं मेट हुवो करतार। कहां तू जीवपणो रह धार ॥ २५३ ॥

पच्चीस प्रकृति के गुणो को मिटाकर आप ही करतार बन जाओ। तुमने क्यों जीवपणा धारण कर रखा है।

लिया सुख स्वाद सबे विष जोय। अबे तूं छाड गणा दिन होय॥ २५४॥

सब ही विषयो के सुख स्वाद ले चुके हो अब बहुत समय हो गया है अब इनको छोड़ दो।

गया जुग जोय असंखु बीच। रच्यो बोहो भांत माया जग कीच ॥ २५५॥

तुझे जगत में आये हुये असंख जुग बीत चुके है। माया रूपी जगत के कीचड़ में बहुत भांति भांति से रम रहा है और स्वयं को भूल गया है।

कियो एक खेल तमाशो सोय। अबे वश कहा उसी के होय ॥ २५६॥

तुमने पांच तत्वो के साथ शरीर धारण करके खेल बनाया है और उस खेल के वश में होय गये हो।

तुम्हे तत्त रूप अरूप हे नाथ। माया अंग आप बणायो हाथ ॥ २५७॥

हे नाथ आप ब्रह्म रूपी अरूपी हो। आपने ही यह माया का शरीर अपने हाथों से बनाया है। और आपका ही अंश आत्मा इसमें भेजी है।

अब बस काय हुवो करतार। गहयो संग हाथा बणायर लार ॥ २५८॥

आप करतार होते हुये भी उसके वश हो गये हो। आप अपने हाथ से बनाकर उसके साथ रहने लग गये हो।

तजो अब मोह ऊपावण हार। बणया तुम जीव, इन्ही की लार ॥ २५९॥

इस का मोह छोड कर मोह पैदा करने वालो को भी छोड दो। इनके साथ रहने से ही तुम जीव बन गये हो।

जोवे सन्त बाट तुम्हारी धाम। मिलयो सुख साज तुम्हारा काम ॥ २६०॥

उस धाम में सभी सन्त तुम्हारी इन्तजार कर रहे है। अब साधन करके उस अक्षय सुख में मिलने का काम करो।

है सत बात तुम्हारी ही श्याम। आया सो गेल बिचारो राम ॥ २६१॥

हे आत्मा तुम्हारी राह परमात्मा में मिलने की है और इसीलिये तू नर शरीर में आयी हो।

सुणे सो कौन कह समजाय। मेरे ऊर अेह तमाशा मांय ॥ २६२॥

सुनने वाला कौन है व समझा कर बताने वाला कौन है, मेरे हृदय में यह तमाशा है।

बिना हरि और दुजो नही कोय। इते ऊत एक बतावो मोय ॥ २६३॥

हे रामजी आपके सिवाय दूसरा कोई नही है यहां वहां पर एक ही है, ऐसा मुझे मालूम होता है।

मैं ही सत रूप अलेख कहाय। भजुं अब कौन मिलूं कहां जाय ॥ २६४॥

हे रामजी मैं ही सतरूप व अलेख कहलाता हूं अब मैं किसका भजन करूं और किसमें जाकर मिलूं।

बिना मुज और बतावो कोय। भजूं मैं तांय मिलूं दिल जोय ॥ २६५॥

आत्मा कहती है मेरे सिवाय दूसरा कौन है मुझे बतावो, यदि कोई है तो मैं उसका भजन करके उसे देखकर उसमें मिलूंगी।

माया सब रूप हमारो होय। बिना ब्रह्म, और न देख्यो कोय ॥ २६६॥

यह सब माया मेरा ही रूप है, ब्रह्म के सिवाय दूसरा कुछ भी देखने में नही आता है।

बतावो आंण कहो समझाय। माया बिन ब्रह्म कहो कुण थाय ॥ २६७॥

आप आकर मुझे बतावो व समझावो कि ब्रह्म के सिवाय माया किस तरह होती है वह बतावो।

भजुं दिन रेण अखण्ड अलोय। उभै बिन और बतावो मोय ॥ २६८॥

जिसका मैं रात दिन अखण्ड भजन करूंगा। माया व ब्रह्म के सिवाय कौन और दूसरा है मुझे बतावो।

माया बिन ब्रह्म न्यारा न अेह। कहां सो ईन्द्र कहां हर देह ॥ २६९॥

ब्रह्म के बिना माया अलग नही है। कहां तो ईन्द्र कहां ईश्वर कहां शरीर।

हुति जब मांय बणाया आंण। अबे हम ईन्द्र बैठाया जांण ॥ २७०॥

माया ब्रह्म में थी उस समय उसे ब्रह्म ने ही बनाया था, अब जानो मैंने इन्द्र को बैठाया है।

बिना हम और न देख्यो कोय। सबे अंग रूप हमारो होय ॥ २७१॥

मेरे सिवाय दूसरा कोई देखने में नही आता है और सब शरीर व सब रूप मेरा ही है।

हुता हम मांय सब जम काल। तबे हम आंण पसारया जाल ॥ २७२॥

यह सब यम व काल हमारे अन्दर ही थे तब हमने ही यह पसारा व जाल सब फैलाया है।

माया हम मांय इसी विध लार। ऊपना नीर जलो पिणयार ॥ २७३॥

यह माया हमारे साथ इस तरह है जिस तरह पानी में बुदबुदा बनता है।

घडया सब घाट आभूषण जोय। माया विध संग ऐसी विध होय ॥ २७४॥

सोने के गहने दिखने में अलग अलग होते है परन्तु दिखने पर भी मूल में सोना ही है, ऐसे ही माया इसी तरह ब्रह्म के साथ है।

घडे तब रूप दिखावे आय। भांजे तीण बैर में अे सब जाय ॥ २७५॥

जब घडकर गहने बनाये गये तब अनेक रूप हो गये, जब गहनो को तोडकर गलाया तो एक रूप हो गया।

माया हम एक सुणो सत भेव। अबे मुज अे और बतावो देव ॥ २७६॥

यह सच्चा भेद सुनो कि माया व ब्रह्म तो एक ही है परन्तु अब इसके सिवाय दूसरा कौन है वह बतावो।

सुणो सत बात बताऊं तोय। बिना तुम देव न दुजो कोय ॥ २७७॥

सुणो यह सच्ची बात मैं तुम्हे बताता हूं हे ब्रह्म आपके सिवाय कोई दूसरा नही है।

करूं मैं न्याव तुम्हारा जाण। शिरे तुम देव पड़िजे खांण ॥ २७८॥

अब मैं तुम्हारा न्याव करता हूं कि आप ही सबसे श्रेष्ठ हो, अब तुम जाकर खांण में पडे हो।

धरया तब रूप बंध्या परवाण। नितो नित खांण बंधन ही जांण ॥ २७९॥

जब तुमने रूप धारण किया तो कर्मानुसार यह शरीर धारण किया। जिस जिस योनि में कहीं पर भी जाओ, वो बंधन ही है।

लगे बोहो ताव अनेक अपार। बिके जग जीव घरो घर बार ॥ २८०॥

उस धातू को अनेक तरह के बहुत ताव दिये जाते है, वह धातू खान में से निकलने के बाद जगत में जीवो के वास्ते घर घर बिकती है। वैसे ही जीव ब्रह्म से निकलकर घरो घर फिरता है।

भले बोहो फेर अनेकूं होय। दुखी बोहो रूप घड़िजे जोय ॥ २८१ ॥

धातु की अनेक वस्तुये बनती है, एक से दूसरी बनाते समय हथौडे की मार सहनी होती है, उसी मुजब शरीर धारण करते समय जीव को गर्भ का दुख सहन करना पडता है। जब जीव दुखी हो जाता है।

पड़े बोहो मार अनेकूं ठोड़। तुम्हें यूं ब्रह्म पड़े बोहो जोड़ ॥ २८२ ॥

तुम तो ब्रह्म ही थे लेकिन ब्रह्म से अलग होने पर जीवो को अनेक तरह के कष्ट सहने पडते है। जैसे धातु को एक से दूसरा बनते समय अनेक जगह मार सहन करनी पडती है।

बिछुटी धात तजी तब खांण। माया सो मांय भिडयो तब आंण ॥ २८३ ॥

धातु खान में से अलग हुई वैसे ही जीव ब्रह्म से अलग होकर माया के फंदे में पड गया और शरीर धारण करके माया के सुख भोगने में लग गया।

तुम्हें यूं ब्रह्म कहावो राम। धरयो मन रूप तज्यो निज धाम ॥ २८४ ॥

हे जीव तुम ब्रह्म व राम कहलाते थे परन्तु निज धाम छोडकर मन से रूप धारण कर लिया।

रूप सो खांण कहां नर लोय। तहां सुख जांण रह ओ होय ॥ २८५ ॥

यह जीव अलग अलग रूप धारण करके ब्रह्म में से आया है कि मुझे पांच तत्वो का शरीर धारण करने से सुख मिलेगा, ऐसा समझ कर इसने माया का रूप धारण किया।

अबे धर रूप पडयो बस आय। जहां तहां रूप, संडासी खाय ॥ २८६ ॥

रूप धारण करने से माया के वश में पडा, जहां तहां कर्मो के आधीन होकर कर्म बन्धन में बंध गया।

सह दुख शीष पिलिजे आंण। पड़े दुख धात, बिछुटी खांण ॥ २८७ ॥

यहां कर्मोनुसार दुख सहन करता है, कर्मो के बस होकर दुख भोगता है, जिस तरह धातु के खान से अलग होने पर मार पडती है, वैसे ही जीव के ब्रह्म से अलग होने पर गर्भ भोगना पड़ता है।

पलटया नाम धरया नर नार। घड़ाया कांकण पायल पार ॥ २८८ ॥

ब्रह्म से बिछडने पर जीव के अनेक नाम स्त्री पुरूषो के नाम रूप में रखे जाते है जैसे धातु के अनेक नाम कांकण पायल गुंगरू आदि कई नाम रखे जाते है।

धरी बोहो जात छतीसुं आय। अभै अंग दोय जहां तहां कहाय ॥ २८९ ॥

ब्रह्म से अलग होने पर जीव के अनेक छतीस जाति के नाम रखे गये है जैसे धातु के जेवर के अनेक नाम रखे गये है वैसे ही मनुष्य की अनेक जाति व नाम रखे गये।

अेको मूल आदू अनादू होय। अबे भरम नाम कहायो दोय ॥ २९० ॥

आद अनाद से एक ही नाम था लेकिन भरम से अलग अलग नाम रखे गये।

अैसे तूं ब्रह्म विचार व्हे एक। नारी नर जीव सबे यूं एक ॥ २९१ ॥

तुम ब्रह्म ही थे, स्त्री पुरूष सब जीव अनादि से ब्रह्म थे, इस तरह सब ही एक ही है।

धरयो तब रूप बणायो तोल। है सत आज पड़यो अब मोल ॥ २९२ ॥

धातू के खान से अलग होने पर तोल व मोल होता है ऐसे ही जीव ब्रह्म से अलग होने पर अनेक रूप से धारण करता है। जीव ब्रह्म में था तब तक सत था। ब्रह्म से अलग होने पर सुख दुख

भोगने लगा।

जले मल मेल सुहावा काट। तबे फिर भांज घड़ावे घाट ॥ २९३ ॥

धातु को साफ करने के लिये सुहागा यानि सोगी डाली जाती है। फिर उसको वापस घडा जाता है।

तुम्हे सत ब्रह्म नही कोई और। कहाया जीव बणया बोह ठोर ॥ २९४ ॥

आप तो सत ब्रह्म ही थे दूसरे कोई नही थे, परन्तु जीव कहलाने पर अनेक शरीर धारण किये है।

जहां थी खांण अमोलक तूट। पछे बोहो जाग गया द्रब फूट ॥ २९५ ॥

जहां तक धातू खान में थी वहां तक अमूल्य थी, जब खान में से अलग होने पर बहुत जगह अनेक टुकडे होकर बहुत जगह हो गया है। ऐसे ही जीव ब्रह्म से अलग हो गया है।

तोलो सो पाव रती कुछ सेर। है सब ब्रह्म प्राक्रम फेर ॥ २९६ ॥

धातू के खान में रहने तक तोल व मोल नही था जब खान से निकल गया तब तोला, पाव, रती, सेर के रूप में वजन हो गया। ऐसे ही जीव ब्रह्म से अलग होने पर व कई जातियो में शरीर धारण करने पर उसके प्राक्रम में अन्तर पड गया है जैसे कीडी में कीडी जैसा, हाथी में हाथी जैसा प्राक्रम है। परन्तु ब्रह्म तो सब में एक ही है।

तुम्हे सत ब्रह्म जहां दूजो नही कोय। जेती अंश जोत उजालो होय ॥ २९७ ॥

ब्रह्म तो सत ही है ब्रह्म में दूसरा कोई नही है, जीव में कितना माया का अंश होता है उसी माफिक जीव में प्राक्रम होता है। जैसे बल्ब में जैसे बाट का तार होता है वैसी रोशनी होती है।

शशी गुण तेज प्रकाशे आंण। दियो जग हीर अनन्ता जांण ॥ २९८ ॥

चन्द्रमा की कला जितनी ज्यादा होती है उतना ही ज्यादा प्रकाश होता है जैसे पूर्णिमा के दिन चन्द्रमणी पर चन्द्रमा की रोशनी पडने पर नकली मणी भी असली हो जाती है। चन्द्रमा में कमी होने पर चन्द्रमणी नकली मणी को असली नही बना सकता है।

कहिजे तेज प्राक्रम सोय। ऊजालो फेर सुणो सब लोय ॥ २९९ ॥

जीव में जितना माया का तेज है उतना ही उसका प्राक्रम देखने में आता है। जिसका ज्यादा प्रकाश होगा, उसका ज्यादा प्रकाश देखने में आयेगा। यह सब सुण लो।

युं सब जीव बणया है आय। कहूं मैं आद र अन्त सुणाय ॥ ३०० ॥

सब जीव ब्रह्म से आकर कम ज्यादा बने है। आदि से अन्त तक की बात मैं तुमसे कहता हूं।

बिना जल जीव प्रकाशे नांय। यहां घट घाट अंग रमाय ॥ ३०१ ॥

जल की बून्द से ही घट की उत्पति होती है। और फिर आत्मा शरीर में समा जाती है यानि जीव ब्रह्म हो जाती है।

सुणो द्रव्य खांण कही समझाय। तुम्हें ब्रह्म जीव बण्यो यूं आय ॥ ३०२ ॥

सब सुणो धातु की खान का दृष्टान्त देकर समझाया है ऐसे ही ब्रह्म से आकर सब जीव बने है।

मिले धर मांय मिटावे चूप। तबे सब जाय सुखो दुख रूप ॥ ३०३ ॥

धातू घिसघिसकर जमीन में मिल जाती है तब उसका धातुपना नही रहता है। ऐसे ही आत्मा

ब्रह्म में लीन हो जाती है तब उसके सुख दुख नही रहते है।

सह बोहो ताव धवै दिन रैण। बणायो नांव भले कण कहण ॥ ३०४॥

धातू जब तक जमीन में नही मिलती है तब तक उसको ताव सहना पडेगा। वह धातू आग में ताव सहेगा और हथोड़े की मार पड़ेगी तथा ऐसे कोई नही कहेगा कि इसका कुछ मत बनाओ।

इसी विध आप मिटावो रूप। भले सुख दुख मिटावो चूप ॥ ३०५॥

धातू घिसकर अपना रूप मिटाती है ऐसे ही आप माया का संग छोड़कर अपना सुख दुख मिटावो। जब तुम्हें जीवपणा धारण नही करना पडेगा।

पड़े सो सेंग सहे सिर मार। बिना तुम कौन छुडावणहार ॥ ३०६॥

यह सब जीव ब्रह्म होकर आपस में अडते है व एक दूसरे की सिर पर मार सहन करते है। आपके बिना और कौन छुडाने वाले है।

शिरे तल अेरन ऊपर मेल। संडासी साय हुवो घण पहल ॥ ३०७॥

लोहे की खान से आये लोहे की अेरन संडासी बने है। खान से आया लोहा ही औजार बनकर लोहा ही लोहे को पीटता है। ऐसे ही जीव ब्रह्म से आकर आपस में लड़ते भिड़ते है।

कुटिजे आपस मांय विचार। यू जग जीव दुखी संसार ॥ ३०८॥

जैसे लोहा आपस में कुटता पिटता है वैसे ही जीव जगत में आकर आपस में लड़कर अपने कर्मानुसार दुखी होते है।

पड़े सो मार अनन्ता बेर। खरे को ताव न देवे फेर ॥ ३०९॥

जीव पर अनन्त प्रकार की मार पडती है यानि बार बार जन्म मरण में आती जाती है। लेकिन जो भक्ति करके उस पद में पहुंच जाते है। उनका जन्म मरण मिट जाता है। जैसे खरे सोने को ताव नहीं दिया जाता है।

बह अंग एक सबे बन मांय। लुले मुडे नांय खिरे तब जाय ॥ ३१०॥

सब बन में सब जाडो पर सब औजारो का एक ही तरह का प्रयोग होता है परन्तु उसमें फौलाद याने पके लोहे का औजार है वो लुलता मुडता नही है। उसमें से थोडा बहुत टुकडा टूट जाता है वो टुकडा मिट्टी में मिलने से उस पर मार नही पडती है।

इसो अंग एक संभावो जांण। भजो निज ब्रह्म मिलो सत खांण ॥ ३११॥

पके लोहे के मुताबिक अपना स्वभाव धारण करो याने निज ब्रह्म का भजनकर जहां से आये हो। वहां न जाकर सतलोक में जाकर मिलो जब तुम जन्म मरण से रहित होवोगे। जैसे धातु का भाग याने अंश जमीन में मिलने से उसको मार नही पडती है उसी तरह यह जीव ब्रह्म को ऊलांघ करके पारब्रह्म से मिले तो आवागमन में नही आता है।

यूं ही सब बण्यो हो घाट। मिले सब रेत परोटे जाट ॥ ३१२॥

सब घाट इसी तरह बनाये है, जिस घट का भाग मिट्टी में मिल जाता है, उसका घट तैयार नही होता है। उसको मार नही पडती है।

नही सो रूप सरावे है आंण। घसे घस सेंग मिले धर जांण ॥ ३१३॥

जो धातु घिस घिस कर धरती में मिल जाती है, फिर उस धातु जो घिस कर जमीन में मिल गयी है उसका कोई रूप नहीं होता। और नही कोई उसकी सराहना करते है।

जहां सुं होय मिल्यो तत मांय। अबे घण घाव न लागे आय ॥ ३१४॥

जहां से उत्पन्न हुआ, वहां जाकर मिला उसका आकार मिटने पर याने जमीन में मिलने पर उसको मार नही पड़ती है।

संडासी घण अेरण आग। हमे बस नांय मिले धुर जाग ॥ ३१५॥

धातु जमीन में मिल जाने पर संडासी घण अेरण और आग के वश नही होना पड़ता है। खान में जाने पर वापिस आना पडता है। धातु का थोडा सा भाग भी रह जाने पर अेरण आग व हथोड़े की मार सहनी पड़ती है। ऐसे ही जीव को थोड़ा सा कर्म रहने पर जन्म धारण करना पड़ता है।

सबे गह राछ अनेक संभाय। अबे बस नांय मिला धर मांय ॥ ३१६॥

जब धातु जमीन में मिल जाती है तो उसे कोई औजार नही पकड़ सकता। इसी तरह जीव पार ब्रह्म में मिल जाने पर जन्म धारण नही करता।

तहां लग होयर जो खंड लाय। जहां लग घाट दिरावे मार ॥ ३१७॥

जो आकार धारण किया है तब तक जरा सा टुकडा रहने पर भी मार सहनी पडती है इसी तरह जहां तक शरीर है, जीव ब्रह्म में नही मिलता है, जब तक आना जाना पडता है।

मिटावे सेंग धरयो आकार। तबे घण घाव न लागे है मार ॥ ३१८॥

जिस तरह धातु का आकार था वो घिस घिस कर जमीन में मिलने से सब आकार मिट गया तब उसे हथोड़े की मार नही सहनी पडती है। ऐसे ही जीव ब्रह्म में मिलने पर आवागवण रहित हो जाता है।

ईसी विध आप बिचारो आय। मिली ज्यों धात मिलो तुम जाय ॥ ३१९॥

आप मन में विचार करो कि जैसे धातु जमीन में जाकर मिल गयी, वैसे ही आप भी ब्रह्म में मिल जावो। जैसे सूर्य के मध्य भाग में आने पर खंभे की छाया मिट जाती है उसी मुजब ज्ञान रूपी सूर्य के प्रकट होने से जैसे खंभे की छाया मिटती है उसी तरह भजन में लिव लगने से सुरत व शब्द बंकनाल के रास्ते में ऊपर चढकर शब्द हजार पांख के कमल पर याने ब्रह्मण्ड परब्रह्म के आगे चला जाता है तब उसका जीवपणा मिट जाता है।

छोडावो दाग अन जल औ लाद। मिटावो सेंग किया सुख स्वाद ॥ ३२०॥

तुम अपने कर्म मिटा दो, तुम ने ही जीवपणा धारण कर सुख व स्वाद भोगा है, वो सब मिटा दो।

रहसो लार तिका विध कोय। तहां लग पार न पुंचे सोय ॥ ३२१॥

जब तक कर्मो का नाश नही होता है जरा सा भी कर्म रहने पर परम पद में नही पहुंचता।

भुगतो सेंग किया सो आय। अबे सो गल में बंध्यो सो जाय ॥ ३२२॥

जो जो कर्म तुमने किये है उनका फल तुम्हे भोगना पडेगा, जो जो कर्म किये है वो सब गले में बंधे हुये है।

मिले सो सेंग सुखो दुख आय। तजो सब शुभ अशुभ ऊपाय ॥ ३२३॥

जैसे जैसे कर्म किये है वैसा ही सुख दुख मिलता है, इसलिये अच्छे बुरे कर्मो को तुम छोड दो।

मिलो घर आद अनादू जाय। तबे तूं ब्रह्म न दूजो कहाय ॥ ३२४॥

तुम जाकर आद घर याने ब्रह्म के आगे अनादि घर याने पारब्रह्म के निरंजण निराकार पद में समा जावो, तब तुम ब्रह्म ही हो दूसरे नही कहलावोगे।

कहूं सत बात सुणाऊं तोय। मिलो घर आद सबे कल खोय॥ ३२५॥

मैं सच्ची बात कहता हूं तुम सुणो, सब कर्म मिटाकर आद घर याने पारब्रह्म के के:पद आ:पद में मिलो।

तुम हम ब्रह्म बिस्वाबीस। चलो घर आद कहावो ईश ॥ ३२६॥

आद घर में मिलने पर तुम हम और बीस बिस्वा ब्रह्म है आद घर में पहुंचने पर ईश्वर कहलायेंगे।

दोहा : शिष वायक : हम तुमसे ऐसे कहूं, सुणो हित चित लाय।
कहां घर आद अनाद है, सो घर कौन कहाय ॥ ३२७॥

शिष्य कहता है कि आपसे प्रार्थना करता हूं आप प्रेम से चित लगाकर सुनिये। वो आदि व अनादि घर कहां है। वह घर कौन कहाता है।

कहां सुं चल मैं आवियो, कह सुणावो मोय। मैं जाणु इण बात री, और न जागा होय ॥ ३२८॥

संसार में मैं कहां से चलकर आया हूं समझावो, मैं समझता हूं कि ब्रह्म के सिवाय दूसरी कोई जगह नही है।

वहां ही सो रम रहयो, ओ घर आदर अंत। मैं नही जांणु और कूं, कहां बिराजे संत ॥ ३२९॥

ब्रह्म से आकर मैं संसार में रम रहा हूं। उस घर को आदि से अंत तक मैं जानता हूं। सब संत कहां बिराजते है उसको मैं नही जानता हूं।

सिध साधक मुनि जना, सुर नर देव कहाय।
सो सब धर पर रम रहया, सतलोक कुण जाय ॥ ३३०॥

सिद्ध, साधक, मुनि, भक्ति करने वाले जन, देवता व मनुष्य ये सब धरती पर ही रम रहे है। सब तीन लोक में ही रम रहे है। तो सतलोक में कौन जाता है।

सतलोक जहां कुण बसे, कहां कहावो ऊण जाग।
को बाणी क्या रंग है, को बोली क्या राग ॥ ३३१॥

आप जो सतलोक बता रहे हो उसमें कौन रहते है, सतलोक क्या है, वहां क्या भाषा व रंग है, वो किससे प्रेम करता है।

कोह ऊ धाम विचार के, बरणो विध बमेक। सतलोक क्या सुख है, मिल क्या जाणे पेक ॥ ३३२॥

किस विध से सतलोक में जा सकते है। वो विधि बताइये, सतलोक की प्राप्ति का क्या ऊपाय है, वहां पहुंचने पर क्या जानने में आता है।

मिले किसी विध जाय, सो सब कहो ऊपाय। तीन लोक तासुं परे, तहां किस विध जाय ॥ ३३३॥

सतलोक की प्राप्ति किस विधि से होती है यह सब उपाय मुझे बताइये, वहां किस विधि से जा सकते है, वो तीनो लोको से आगे है।

सुरग मध्य पाताल ले, तीनों धाम कहाय।
तहां आगे की बात सुण, मिलकर कह न आय ॥ ३३४॥

स्वर्ग, मध्य, पाताल ये तीनो धाम है, इससे आगे की बात सुनकर याने सतलोक में जाकर वहां

की बात यहां आकर कोई नही कहता है।

तीन धाम विश्राम है, ते जाणे सब कोय।
कहे बिरिया ऊत जाय बो, बोह बिरिया तत्त होय ॥ ३३५ ॥

यह तीनो धाम जीवो के विश्राम के लिये है इन तीन लोको को सब जानते है। वहां पहुंचने में कितना समय लगता है और किस समय वो ब्रह्म होगा।

जाने कदे न देखिया, काना सुणया न भेव। कह संत चौथा देश में, हम मिले कैसे देव ॥ ३३६ ॥

जिसको मैं नही जानता, न कभी आंखो से देखा है, न कान से भेद सुना है, संतो का वो चौथा देश हमको कैसे प्राप्त हो सकता है।

गुरु वायक : छन्द मोतीदान : रटो राम नाम तुम्ही ब्रह्म होई।
बिना तुम देवा नही देख्यो कोई ॥ ३३७ ॥

गुरुदेव फ: है कि राम नाम का सतगुरु विधि से भजन करो, तुम्ही ब्रह्म हो जाओगे, फिर तुम्हारे सिवाय कोई देवता देखने में नही आवेगा।

जहां सतलोक तुम्हे तहां पूर। नही रंग रूप अरूप हजूर ॥ ३३८ ॥

जहां सतलोक है वहां तुम पूर्ण रूप से हो, वहां रंग रूप नही है, अरूपी है, परन्तु सदा हाजिर है।

यहां खिण खेव नही सत देव। अभे अंग दोय तिहूं लोक होय ॥ ३३९ ॥

यहां तीन लोको में कोई सत देव नही है। माया व ब्रह्म का तीन लोक तक साथ है तो आना जाना पडेगा।

बिना सत ज्ञान पड़यो भर्म बीच। मोहो मांय दुखी माया अंग कीच ॥ ३४० ॥

सतज्ञान की प्राप्ति के बिना जीव भरमों में पड़ा है। सब माया के कीचड़ में फंसकर उसके मोह में दुखी हो रहे है।

जहां सतलोक मिटयो अंगछार। आपो आप ब्रह्म रहया निराधार ॥ ३४१ ॥

जहां सतलोक है वहां सब स्वभाव का नाश हो जाता है। जहां स्वयं ब्रह्म निराधार है।

नही सुख चैन, नको दुख दाई। तुम्ही ब्रह्म बाप बिना कुल भाई ॥ ३४२ ॥

वहां कोई सुख चैन व दुख देने वाला कोई नही है। तुम स्वयं ब्रह्म हो, बिना बाप कुटुम्ब व भाई के स्वयं ब्रह्म हो।

जहां सत धाम न मोह ले कोय। सदा थिर थंभ अभंगस होय ॥ ३४३ ॥

सतधाम में किसी प्रकार का मोह नही है। वो हमेशा स्थिर है। उसका कभी नाश नही होता है।

अपार अगाध अजीत है नाथ। तहां सतलोक ना कोई मान न साथ ॥ ३४४ ॥

उस परमात्मा का कोई वार पार नही है, उसकी कोई थाह नही पा सकता और उसको कोई हरा नही सकता। उस सतलोक में कोई मान भी नही है, न किसी का साथ है।

अलाय अलोय अतुट असाल। जहां ब्रह्म धाम नही मज पाल ॥ ३४५ ॥

वो सतधाम अलाय अलोय अतूट असाल है ऐसा ब्रह्मधाम है जहां कोई मनाई करने वाला नही है।

हुवा न मुवा न किया नही कोय । ईसा अदभूत लखाया मोय ॥ ३४६ ॥

उस सतलोक में कोई मरा नही, जन्मा नही कोई किसने किया नही ऐसा आश्चर्यजनक देखने में आता है।

अमोल अलेख अचाय न चाय। बण्या विध मोख बिराजे है राय ॥ ३४७॥

वह सतलोक अमोल अलेख है, वहां कोई चाहना करने वाला नही है। ऐसा सतलोक है। वह मोक्ष धाम है, जैसा राजा तख्त पर बिराजते है, वैसे संत के:पद आ:पद में बिराजते है।

अरेह है अराह अरोश न रोश। नही कोई रीज न कोवे कोश ॥ ३४८ ॥

वहां पर सभी आनन्द में रहते है। वहां पर न किसी को किसी से खुशी है न नाराजगी है।

अथाह अचुक वार न पार। बिना थंब धाम बण्या निराधार ॥ ३४९ ॥

उस सतलोक का कोई थाह नही है, उसका पार नही है, वहां कोई चूक नही है। उस धाम के कोई थंबा नही है, बिना आधार का सतधाम बना है।

जहां सुख चैन अचैन न कोय। को तरूण जोबन बुढापो न होय ॥ ३५० ॥

सतलोक में सुख चेन है, वहां दुख लेश मात्र भी नही हैं, वहां कोई तरूण जोबन व बुढापा नही है।

अखी है अचाल अलोय अलग। जहां सतलोक नही लिंगभग ॥ ३५१ ॥

सतलोक अक्षय है चलाय मान नही है। अकेला अलग है। वहां पर स्त्री व पुरूष भी नही है सभी आत्मा एक स्वरूप यानि स्त्री पुरूष का भेदभाव नही है।

बिना जल देव दयाल देखाय। रमे सब जीव माय मज मांय ॥ ३५२ ॥

सतलोक में जल व देव नही होने पर भी वहां पर दयालु परमात्मा के दर्शन होते है। यहां सब जीव सतमाय खेलते है।

न जाणू हूं राम तुम्हारा पार। कहां ऊ देश नही नर नार ॥ ३५३ ॥

रामजी आप अपार हो आपका पार जानने में नही आता है, वो कौन सा देश है, जिस में स्त्री पुरूष नही है।

जमी पर होय आधार न बिन। कहां सतलोक कहे सब धिन्न ॥ ३५४॥

जमीन के सिवाय व आधार के बिना जो सतलोक है उसे सब धिन कहते है। सतलोक कहां है।

गिर मेर पहाड़ बडा भुजंग कहाय। तहां सतलोक कहे है के नांय ॥ ३५५ ॥

बडे बडे पर्वत पहाड बडे बडे भुजंग जहां सतलोक है वहां है या नही।

अभे आकाश तहां कहां होय। कहो मध बीच बतावो मोय ॥ ३५६ ॥

आकाश सतलोक में कहां है व सतलोक किस बीच में है।

कहूं बिध ठौर किती एक तोय। बूजूं सतलोक बतावो मोय ॥ ३५७ ॥

सतलोक की विधि व जगह मैं तुझे कहकर बताता हूं। मैं आपको पूछता हूं कि सतलोक बतावो।

दोहा : जन सुखदेव निज मन कह, सुण अप मन सत बात।
सतलोक सब मांय है, सोजो देह पिण्डगत ॥ ३५८ ॥

म:फ: है कि निज मन याने चेतन जो बात कहता है हे अपमन तुम सुणो, सतलोक सब में है यदि सतलोक देखना है तो शरीर व पिण्ड की खोज करो।

तीन लोक चवदा भवन, ऊंच नीच सब लार। सतलोक में रम रहया, जाणे नही विचार ॥ ३५९ ॥

तीन लोक चौदाह भवन में ऊंच व नीच के साथ सब सतलोक में रम रहे है। परन्तु इसका भेद व विचार नही जानते है।

सब मांही सतलोक है, बैठा सब ऊन मांय। माया मोह सुं लपटिया, ताते दरशण नांय ॥ ३६० ॥

सतलोक सबके अन्दर है और सब सतलोक में ही बैठे है, लेकिन जीव माया व मोह में पडा है इसलिये सतलोक के दरशण नही होते। जैसे मुंह पर कपडा ढक लिया जाय तो मनुष्य को नजदीक की चीज भी नजर नही आती है वैसे ही मोह माया का परदा होने से सतलोक नजर नही आता है।

जन सुखदेव तोसुं कहे, निज मन कूं समझाय। सतशब्द सत लोक में, उत्पति परलो नांय ॥ ३६१ ॥

म: अपने मन को समझाकर कहते है कि सतलोक व सतशब्द में उत्पति व प्रलय नही है।

वा परखो सतलोक है, सुणजो सब नर नार। पोल मुष्ट में न बंधे, ओई लोक कहाय ॥ ३६२ ॥

हे नर नारियो उस सतलोक को तुम परख लो। वो सतलोक दिष्ट मुष्ट में नहीं है। उसे सतलोक कहते है।

सुन्न साहिब यूं रम रहया, घृत दूध रस मांय।
महासुन्न पर सुन्न है, सो सत धाम कहाय ॥ ३६३ ॥

सुन्न साहिब याने राम सब में इस तरह रम रहा है जैसे दूध में घी रहता है। महासुन्न याने परब्रह्म से आगे जो सुन्न है उसको सतधाम कहते है।

शिष वाच : ओ सतलोक सरूप है, तो मुझ सोचन कोय।
हालुं डोलुं फिरूं घिरूं, रहूं इसी में सोय ॥ ३६४ ॥

शिष्य कहता है कि ऐसा सतलोक है तो मुझे कुछ सोच नही है। मैं चलता हिलता फिरता व सोता हूं तो वो ही सतलोक का स्वरूप है।

यामें बहु बाता कहूं, यांही लील विलास। तो मोकूं क्या सोच है, मो सत सांई पास ॥ ३६५ ॥

इसमें याने सतलोक में बहुत सी बाते कहता हूं उसमें मैं लीला बिलास करता हूं जब सत स्वामी मेरे पास है तो मेरे को किसी तरह का फिकर नही है।

सो सतशब्द सरूप है, सतधाम कूं लाय। तुम कहो तिण विध रीत सुं, हम बैठा उस मांय ॥ ३६६ ॥

वो सतधाम व सतस्वरूप है तो आप कहते हो उस विधि से मैं सतधाम में जाकर बैठा हूं।

आठ पोहर चौसठ घडी रहूं सत सुन्न मांय। तुम सत साहिब अेक है, भजुं कौन पे जाय ॥ ३६७ ॥

मैं आठ पोहोर चौसठ घडी, सत सुन्न में रहता हूं। आप कहते हो सतसाहिब सब जगह एक है तो किसका भजन करूं किसके पास जावूं।

गुरु वाच छन्द : सुणो मन देवा कहूं सुण भेवा। माया सुन्न कहाही बसे जग मांही ॥ ३६८ ॥

गुरु फ: है कि हे मन सुण मैं तुम्हें सुन्न का भेद कहता हूं माया की सुन्न में सारा जगत रहता है।

दोहा : तीन सुन्न फिर दोय, छोटी बीच अनेक।

तहां लग आत्मराम है, माया हिलमिल पेक ॥ ३६९ ॥

जहां बत्तीस सुन्न है और बीच में अनेक छोटी सुन्न है, जो माया से हिलमिल देखने में आता है वहां तक आत्माराम है।

माया सुन्न अेती कही, तहां लग सुरनर होय।
साता मध सब देवता, एक बीस मध सब लोय ॥ ३७० ॥

जहां तक देवता व मनुष्य है वहां तक माया की सुन्न बताई है। सात सुन्न में सब देवता है व मेरूडण्ड के एक बीस मध के सुन्न में एक बीस लोक है जैसे ईन्द्रलोक यमलोक इत्यादि है।

तामें फेर भिन्न कहत है, तीन सुन्न इधकार। तिण में मोटा देवता, सो है सब उण लार ॥ ३७१ ॥

उसमें तीन सुन्न अधिक है उसका अधिकार ज्यादा है उस तीन बडी सुन्न में तीन बडे देवता रहते है सो सब उनके साथ है।

आगे सुन्न अपार है, नव सुन्न मोटी जोय। महा सुन्न पर सुन्न जूं, आगे साहिब होय ॥ ३७२ ॥

उसके आगे अपार सुन्न है, उसके आगे नो सुन्न बहुत बडे बडे है, बडी सुन्न के आगे एक बडी सुन्न है, उसके आगे सत साहिब है। महा सुन्न पार ब्रह्म के आगे के:पद व उसके आगे आ:पद है।

माया सुन्न सब सोध के, मिलो परम सुन्न जाय।
तब तुम साहिब एक हो, सतलोक के मांय ॥ ३७३ ॥

माया की सब सुन्न सोधकर परमसुन्न में जाकर मिलो याने पारब्रह्म के निरंजन निराधार में जाकर मिलो, तब तुम व साहिब सतलोक में एक हो।

शिषवाच : ओ तुम भेद बतावियो, परम सुन्न को आय।
बिन पर पांखा बाहिरो, क्यों कर ऊड वहां जाय ॥ ३७४ ॥

शिष्य कहता है कि यह आपने परम सुन्न याने पारब्रह्म का भेद मुझे बताया है तो परा व पांखो के बिना ऊडकर मैं वहां कैसे जा सकता हूं।

पर पांखा मेरे नही, पांवा चल्यो न जाय। बीचे तुम सुन्न बोहो कही, क्युं कर मिलिये आय ॥ ३७५ ॥

पर व पांखे मेरे नही है, पांवो से चलकर वहां नही जाया जाता है और आपने बीच में बहुत सुन्ने बताई तो वहां कैसे जाकर मिला जाता है।

सुन्न सुन्न के बीच में, पडदा घाट करूर।
बिन आवध शस्त्र बिना, कहो किम करिये दूर ॥ ३७६ ॥

सुन्न सुन्न के बीच में बहुत पडदे कठिन घाटे है तो बिना शस्त्र हथियार के पडदे घाट कैसे दूर होंगे, यह मुझे बतावो।

प्रथम तो सब भूलगा, नवधा बेद विचार।
कित साहिब सत लोक है, कहो कुण जाणनहार ॥ ३७७ ॥

प्रथम तो नवधा भक्ति व वेदो के ज्ञान में सब भूल गये कि कहां सतलोक है और कहां साहिब है। साहिब व सतलोक को जानने वाला कौन है, यह बताओ।

गुरुवाच : छंद अर्धभुजंगी : कहूं सत भेवा, सुणो सब देवा।
गहयो ज्ञान भारी, लगे मजतारी ॥ ३७८ ॥

गुरु फ: है कि मैं सत भेद कहता हूं सब मनुष्यो सुणो और भारी ज्ञान धारण करो जिससे उसमें

ध्यान लग जाय।

हिरदे मुख हेला, करो कहण पहला। धरो ध्यान सो ही, भजो नित मोही ॥ ३७९ ॥

पहले हृदय व मुंह से भजन करो व ध्यान करो व ध्यान याने सुरत लगाकर मेरा भजन करो।

नाभी धाम लारा, पिया प्रेम प्यारा। ऊभे अंक दोई, गहयो मुख सोई ॥ ३८० ॥

दोनो अंक याने रकार मकार का मुंह से नाभी में सूरत लगाकर प्रेम से भजन करो।

दिवस रात सारी, लेवे जीभ प्यारी। तबे गेल सूजे, बडा संग बूजे ॥ ३८१ ॥

रात दिन हर समय जीभ से भजन करे। जो भेद जानते हो उनसे पूछे। तब यह रास्ता मालूम पडता है।

रटे नाम सोई, बिरह विध होई। छोडे मान माया, कसे काम काया ॥ ३८२ ॥

जो परमात्मा का नाम (राम) विरह के साथ भजेगा और मान सम्मान व माया को छोडे और इस शरीर से लगन से भजन करता रहे।

हरे हेत सारा, लगे नाम प्यारा। हिरदा नाभ अेकी, माया सुन्न पेंकी ॥ ३८३ ॥

सबसे प्रेम छुटकर केवल नाम ही प्यारा लगता है, हिरदे व नाभी में दोनो जगह एकसी माया सुन्न है।

पडयो ताव सोई, रोवे सब लोई। कहां खेल कहाणो, पांच घर जाणो ॥ ३८४ ॥

जब शब्द का ताव पडता है तो मन, कर्म, अहंकार, काम, क्रोध, लोभ, मोह सब रोने लग जाते है कि अब हमको इस पंचतत्व से जाना पडेगा।

नाभी नाश धारा, अेको सूत सारा। धिनो राम राई, दियो भेद आई ॥ ३८५ ॥

नाभी व नाक में स्वांस की एक धारा लगी है। हे रामजी आपको धिन है जो आपने ऐसा भेद बताया है।

गरजी गेण सारी, पियो प्रेम भारी। सुणो संत सोही, अबे पंख होई ॥ ३८६ ॥

सारा गिगन गरजने लगा, प्रेम से भजन होने लगा, यही पियो प्रेम भारी है। सब ही संत सुणो, अब भजन का ऊपर ब्रह्मण्ड में अनुभव होना ही पंख आना है।

मुखा बिच जेल्या, कंठ कंवल फूल्या। धूजे रोम सारा, नखो चख पियारा ॥ ३८७ ॥

मुंह से भजन करने पर पहले कंठ कंवल पर शब्द की जागृति हो गई जब सारा शरीर धूजने लगा व नख से चख तक शब्द प्यारा लगने लगा।

छन्दमोती दान : पिया रस प्रेम चढी मतवाल। हिरदे बिच एक रमे सतबाल ॥ ३८८ ॥

भजन करने से जब प्रेम रस पीया याने आनन्द आने लगा जब उसके आनन्द में मग्न हो गये जब हृदय में शब्द का अनुभव होने लगा।

करे केल किलोल हंसे मुरजाय। निशो दिन बाल रमे ऊर मांय ॥ ३८९ ॥

वह सतशब्द हृदय में ध्वनि करता है तब कभी हंसता है कभी निराश होता है। रात दिन हृदय में शब्द का अनुभव होता रहता है, यही रमना है।

उछाला खाय, हिरदा ऊर मांय। सबे जग ख्याल सुवावे नांय ॥ ३९० ॥

हृदय में शब्द का जोर होता है जब उसको जगत के सब शब्द अच्छे नही लगते है।

रमे इण रीत निशो दिन श्याम। पडे जब बाय हिरदे उर धाम ॥ ३९१ ॥

रात दिन शब्द का अनुभव होने से हृदय में हवा पानी जैसी ठंडक सी अनुभव होने लगी।

चमके जोर अपणे आप। धुजे सब रोम कांपे सब पाप ॥ ३९२ ॥

शब्द का जब जोर से अनुभव हुआ तब शरीर के रोम रोम धूजने लगे व अन्दर के पाप कांपने लगे।

उठे मज लहर, समंदा छोल। पडे घर गांव अचूकी रोल ॥ ३९३ ॥

शब्द समुद्र की लहर के मुताबिक हृदय में उछलने लगा जब शरीर में अखण्ड ध्वनि करने लगा।

ऊबके मांय कुवे जल नीर। झरे नित नैण लगा अंग तीर ॥ ३९४ ॥

जैसे कुऐ में से पानी उबकता है वैसे ही आंखो से पानी झरता है क्योंकि शरीर में ज्ञान का तीर लगने से बिरह आने लगती है और फिर आंखो में से पानी आने लगता है।

कांपे कर पेल, घिरे सब नाड। भले नख टूट चले बोहो जाड ॥ ३९५ ॥

पहले हाथ धुजते है फिर धीरे-धीरे सभी नाडियों में अनुभव होने लगता है। व नख टूट रहे है ऐसा अनुभव होता है।

चखे बोहो साव अमीरस मांय। खटो रस साव निशो दिन खाय ॥ ३९६ ॥

शरीर में बहुत स्वाद लेने लगा, अमीरस का स्वाद आने लगा व रात दिन खटरस का स्वाद आने लगा।

बंधे मन धीर ऊमंगे बैराग। घडी एक धीर तजुं पल जाग ॥ ३९७ ॥

मन को धीर बंधाता है व बैराग उत्पन्न होता है घडी में धैर्य धरता है व पल में छोड देता है।

ऊठे मल जोर हिरदे स्थान। चले दरगनीर नेणो मध जांण ॥ ३९८ ॥

हृदय स्थान में शब्द दम चढने के माफिख जोर से उठने लगता है तब आंखो में से पानी बहना शुरू होता है।

हिलोला खाय हंसे कब रोय। इसा बोहो चाव हिरदे हर होय ॥ ३९९ ॥

कभी झोके खाता, हंसता व कभी रोता है जब शब्द हृदय में आता है तब ऐसे कई चैन होते है।

गह सो मून कबु करे बकवाद। करे बोहो रंग तजे सो स्वाद ॥ ४०० ॥

कभी मौन पकडता है, कभी ज्यादा बोलता है, बहुत तरह के रंग करता है, सब स्वाद छोड देता है।

ऊमंग्यो ईन्द्र हिरदे ऊर मांय। लग्यो झड़ आय ऊघाडे नांय ॥ ४०१ ॥

जब शब्द हिरदे में आता है तो ऐसे लगता है कि इन्द्र उमंग कर आ रहा है और वर्षा की झड़ी लग गई है, ऐसे ही भजन की झड़ी लग जाती है, वो झड़ी खुलती नही है।

बरसे कण बून्द ररो ममंकार। धिनो सतश्याम ऊपावणहार ॥ ४०२ ॥

जिस तरह बरसात की बून्दे गिरती है उस तरह रकार मकार याने राम नाम की झड़ी लग जाती है। हे सतश्याम आपको धिन है जो आपने यह सब बनाये है।

कियो भव भेव किमे करतार। रटे मुख नाम चले उर धार ॥ ४०३ ॥

भवसागर से पार होने का भेद दे दिया, आपने मुझ पर कृपा कर दी। मुंह से आपका नाम रटते

ही हृदय में अमृत आने लग जाता है।

बंधी लिव डोर इसी उर मांय। अरट गलमाल धोरी जल जाय ॥ ४०४॥

सांस ऊसांस में भजन होकर लिव बंध भजन होना ही अरट गल माल धोरी जल जाय है।

खडया अब बैल चल्या धमकाय। ढूले पट नीर अमाऊ जाय ॥ ४०५॥

बैलो को धमका कर जल्दी से चलाने से पानी ज्यादा आने लगता है, ऐसे ही सांस ऊसांस में भजन करने से शब्द आगे बढता है, यही ऊमाऊ होना है।

नमो हरि श्याम जहां रू तोय। खण्डे पिण्ड रट विधो विध होय ॥ ४०६॥

हे परमात्मा आपको नमस्कार है। मेरे शरीर में आत्मा का ही प्रकाश है। आपने जो खंड में बनाया वो सब पिण्ड में बना दिया। आपको धन्य है।

चल्यो जल नीर भरे कुण्ड जाय। खाली किम होय तहां लग मांय ॥ ४०७॥

जल चलकर कुण्ड में भर जाता है, ऐसे ही शब्द भजन करने से नाभी में आ जाता है। यही कुण्ड भरना है।

छिल्यो अब कुण्ड भरयो भरपूर। कियो तन आय पड़दो दूर ॥ ४०८॥

भजन करने से शब्द नाभी में आता है व खूब भजन करने से नाभी से सब नाडियों में शब्द आ जाता है। और जब शब्द आ जाता है तो इस पर विश्वास आ जाने से भरमों का परदा हट जाता है।

अबे ऊर कुण्ड भरिजे आय। तहां नर नार पीवे जे आय ॥ ४०९॥

जब शब्द नाभी कुण्ड में आता है तब खूब भजन करने से कुण्ड भर जाता है। उसका अनुभव भजन करने वाले ही करते है। यही नर नार का पीना है।

बडो सो होय पिये को आंण। भरे ऊर कुण्ड मोडो सो जांण ॥ ४१०॥

जो बडा बना हुआ है भजन कम करता है वो उस आनन्द का अनुभव कैसे कर सकता है। उसके नाभी में शब्द देरी में पहुंचता है यही मोड़ो सो जांण है।

हुई जल पेल भरयो सबकाय। अमाऊ नाम हुवो ऊर मांय ॥ ४११॥

नाभी में खूब भरने से शब्द का नाड नाडियो में जाना ही अमाऊं होना है।

खुल्या पट सेंग पडदा दूर। चल्यो जल नीर हुवा कुण्ड पूर ॥ ४१२॥

नाभी से शब्द का नाड नाडियो में जाना ही पडदा दूर होना व कुण्ड का भरना है।

कोटा मझधार पडे भरपूर। सबे सुखी जीव हरसे नूर ॥ ४१३॥

जब पृथ्वी पर भारी बरसात होती है तो सभी जीव खुश होते है और चारो तरफ हरियाली होने से प्रकृति का नूर चमकने लगता है। ठीक यही स्थिति साधक की भरपूर भजन करने पर होती है।

पीवे जल जीव सबे वे जाय। घरो घर नीर भरया नर लाय ॥ ४१४॥

शब्द का सब स्थान पर अनुभव होना ही जीव का जल पीना व घरो घर नीर भरना है।

ऊंचे कुल, नीच नही ईधकार। चहूं दिश नीर भरे नर नार ॥ ४१५॥

मनुष्य जन्म मिल गया लेकिन जिसकी करणी नीच है, नशीली वस्तुओं का सेवन करता है। वो नीच है। वो उस पद का अधिकारी नही है। और जो अंगलक्षण सही रखकर भक्ति करता है तो शब्द का सारे शरीर में अनुभव होगा।

कियो हरि अेह अनोप विचार। नाभी घर बीण बजे बोहो तार ॥ ४१६ ॥

इस तरह परमात्मा ने ऐसा अनुपम विचार किया है, नाभी में सूरत लगाकर सांस उसांस में भजन करने से जो ध्वनि होती है। वो ही बीण बजना है।

भणके सेंग गुंजे गणनांय। नाभी हर एक तमाशो मांय ॥ ४१७ ॥

जैसे भंवरा भणकता व गुंजार करता है वैसे ही नाभी में शब्द का एक तमाशा है।

पहुंता जाय लिया जल भेव। तीजो स्थान माया मय देव ॥ ४१८ ॥

भजन कर उस स्थान पर पहुंचे है, उन्हें ही यह अनुभव होता है। नाभी का स्थान लक्ष्मी विष्णु का है।

देख्यो एक तमाशो राम। उदेसो बेल हुई मध धाम ॥ ४१९ ॥

नाभी से शब्द का आगे बढना ही एक तमाशा मध्य धाम में दिख रहा है फिर कोई बेल ऊदे हुई है।

छुटा सो नाल चौबीसूं जोर। सबे संग होयन ही पल मोर ॥ ४२० ॥

चौबीस नालों में शब्द अनुभव होना ही सब का साथ होना व पल मोरन ही है।

चहूं दिश नाल चल्या ललकार। नमो सतश्याम ऊपावण हार ॥ ४२१ ॥

नाल चारो तरफ जा रही है। हे परमात्मा आपको नमस्कार है, जो आपने ऐसी रचना की है।

चले दस नाल पंयालू ध्याय। तिका बिच एक रहयो मध छाय ॥ ४२२ ॥

इन नालो में से दस नाल पाताल में जाती है, एक नाल मध्य में छाई हुई रहती है।

तिका में फेर इसी विध जोय। चले दस नाल दुथा बड होय ॥ ४२३ ॥

फिर इसमें ऐसी विध है कि दस नाल ऊपर की तरफ जाती है।

ईति का ऊत ऊते इत जाय। गुथाणा नाल बोह बिध मांय ॥ ४२४ ॥

अनेक नाले इधर की उधर व उधर की इधर जाती है, यही नालो का अन्दर गुथाणा है।

नाला बीच नाल अनेका होय। कहां लग बोह गिणु में जोय ॥ ४२५ ॥

नालो में अनेक नाले है उनको मैं कहां तक गिनकर बताऊं।

सुणो दस नाल आकाश जाय। थक्या अध बीच रहया बन छाय ॥ ४२६ ॥

सुणो दस नाल आकाश में जाती है, वो अध बीच बन में थक जाती है और बन में छाई हुई रहती है।

सुणो दस नाल पियांलु अेह। तिका पर श्याम बणाई देह ॥ ४२७ ॥

सुणो दस नाल पंयाल में जाती है, उस पर परमात्मा ने यह शरीर बनाया है।

जहां गीरमेर कहिजे दोय। चले दस नाल चहूं दिश होय ॥ ४२८ ॥

जहां गिरमेर याने मेरूं का स्थान है, उसके चारो ओर दस नाल चलती है।

चले फिर तीन आकाशुं जाय। जहां गिरमेर रहे ऊल जाय ॥ ४२९ ॥

तीन नाल मेरूडण्ड से आकाश में जाती है, यह मेरू पर ऊलझी हुई सी रहती है। अला, पिंगला, सुखमणा ये तीन है।

ईती का ऊत ईति ऊत होय। फिरया दस नाल ईसी विध जोय ॥ ४३० ॥

इधर की उधर व उधर की इधर दस नाले इस विधि से फिरी है।

जहां गीर शीश बणायो राम। उलटया नाल चढे ऊण धाम ॥ ४३१ ॥

जहां मेरू पर मस्तक बनाया है, वहां पर नाल उलट कर मस्तक पर चढना ही चढे ऊण धाम है।

दिया सो पांच इते लटकाय। तिका दिश ऊतर देव कहाय ॥ ४३२ ॥

पांच नाल जिधर लटकी है, उसको उत्तर दिशा कहते है।

ईते कुं पांच ऊतारया राम। जिका दिश दक्षिण थाप्यो है धाम ॥ ४३३ ॥

पांच नाल जिस तरफ उतरी है, उसको दक्षिण दिशा कहते है।

दशुं ये नाल ईसी विध होय। तिके कर धाम बणाया सोय ॥ ४३४ ॥

एक हाथ उत्तर, एक हाथ दक्षिण में है, उसके दस नाल दस अगुंलिया है। इस तरह दस नाल है।

तिहूं गुण नाल लग्या फल जाण। तिके फल एक अनोपम आण ॥ ४३५ ॥

ईडा, पिंगला, सुखमणा इन तीनो नालो में यह फल लगा है कि सुखमणा में भजन होने लगा। यही एक अनोपम फल लगा है।

इते ऊत नाल फिरे चहूं फेर। छायो आशमान लियो सब घेर ॥ ४३६ ॥

यह नाले इधर उधर चारो तरफ मिलती है, इन्होंने मस्तक को सब तरफ छा लिया है।

कहूं में कहा नाम निहार। नाला बिच रस अनोप विचार ॥ ४३७ ॥

नाडो में नाम का अनुभव होना ही नाम निहारना है और नालो के बीच में ररंकार का अनुभव होना व उसका आनन्द आना ही अनोप विचार है।

फेले सब नाल चौबीसुं जांण। लगे फल फूल अनोप बखाण ॥ ४३८ ॥

चोइस नाले सब तरफ फैली हुई है, उसके अनोप फल फूल लगे है।

द्वादस फूल खूल्या सत रूप। लगे फूल सात बडे रस चूप ॥ ४३९ ॥

दो पांव, दो हाथ, दो नाक, दो आंख, दो कान, एक जिव्हा, एक ऊपस्थ ये बारा फूल है। चलना, काम करना, देखना, सुनना, सूंघना, बोलना व रस का आस्वादन ये सात फल है।

अखी ये फूल रह सत जाण। लगे फल नित अनेकूं आंण ॥ ४४० ॥

यह फूल शरीर के रहने के साथ ही रहते है। इनसे कई कार्य होते है यही फल लगना है।

कहूं में जात फलां को लोय। शुभ अशुभ कहिजे दोय ॥ ४४१ ॥

शुभ अशुभ ये दो जाति के फल कहे जाते है।

फूल्या सो फूल कलिया जोय। चारा के बीस सरीसी होय ॥ ४४२ ॥

दो हाथ दो पैरो इन चारो के बीस अंगुलिया एक सरीखी है। यही फूल्या सो फूल कलियां जोय है।

बतीसुं और कलिये है पाय। तिका मध फूल लगी उन मांय ॥ ४४३ ॥

बतीस दांत बतीस कलियां है और इनके बीच फूल एक जिव्हा है।

अबे सो और खुल्या सत जोर। तिकारे पांख कली नही होय ॥ ४४४ ॥

अब सत फूल खिले है, एक सूरत एक सतशब्द इनके पांख कली नही है।

हजारा पांख खुली परवाण। तिके सत फूल बराबर जांण ॥ ४४५ ॥

ब्रह्मण्ड में जो हजार पांख का कंवल है, वह सत शब्द फूल के बराबर है।

ईती ऊत फूल, बण्या जूं होय। तिकारे पांख, कली नही होय ॥ ४४६ ॥

ईधर उधर जो दो स्तन है वे फूल है। जिनके पांख नही है।

द्वादस फूल तीका में चार। नही सत पांख कली ऊर लार ॥ ४४७ ॥

दो हाथ, दो आंख, दो कान, दो नाक, दो पांव, एक मुंह, एक ऊपस्थ ये बारह फूल है इनमें से सात दो नाक, दो कान, दो आंख, एक उपस्थ के कली नही है। दो हाथ, दो पांव, एक मुंह इन पांचो के कली है।

बेली सो एक अनोपम जोय। फूलां का साव, न्यारा होय ॥ ४४८ ॥

शरीर रूपी बेल तो एक अनोपम है और इसमें अलग अलग फूलों का अलग अलग कार्य है जैसे – आंख का देखना, कान का सुनना, नाक का सूंघना, मुंख का खाना व बोलना आदि।

द्वादस फूल तेहरो खट जांण। दोयां दोय एक ऊणयारो ठाण ॥ ४४९ ॥

बारा फूल जिसमें छः रस है उसमें दोया याने आंख, नाक, पांव, हाथ सब की बनावट एक सी है।

दोहा : चरण दोय के बीच में, लगे एक फल जांण।
दश कंवला बीच पांच है, लिज्यो सत पिछाण ॥ ४५० ॥

दो पांवो में एक ऊपस्थ यह एक फल है। दो हाथ, दो पांव, दो आंख, दो कान, दो नाक, इन दसो में से हाथ, पांव, नाक, कान, आंख ये पांच इनसे एक एक काम होता है, इनको सब ही पिछाणो, यही एक फल लगना है।

एक फूल फल एक ही, दूजे लागा दोय। फूल फूल सब कहत है, से सब परघट होय ॥ ४५१ ॥

ऊपस्थ व मुंह के फूल फल दो है बाकी हाथ पांव कान नाक आंख इनके फूल फल एक ही है। बोलना व स्वाद लेना यह मुंह के दो फल फूल है। पेशाब करना व स्पर्श करना ऊपस्थ के दो फल फूल है।

दोयां माथे एक है, तहां फल गिणया न जाय।
एक फूल फल न लगे, खुल्या गोड जड मांय ॥ ४५२ ॥

एक तो एक फल वाला दूसरे दो फल वाले इनके ऊपर ब्रह्मण्ड है जहां हजार पांख व अनन्त पांख उसके फल फूल नही लगता है।

सोडस प्रगट फूल है, देखत है सब लोय। द्वादस पाना भीतरे, जाणत है सन्त कोय ॥ ४५३ ॥

सोलह फूल जैसे दो आंख, दो कान, दो नाक, एक मुंह, दो हाथ, दो पैर, दो स्तन, एक नाभि, एक उपस्थ, एक गुदा द्वार इनको सब जानते है। लेकिन शरीर के अंदर के केवल संत जानते है।

सोलहे में फिर एक है, तिनकी आ बिद होय।
फल लागो अेको सही, कोहिक निरफल जोय ॥ ४५४ ॥

सोलह में एक फूल मुंह है जिनकी यह विधि है कि जो इससे भजन करता है तो उसे मोक्ष का फल प्राप्त होता है। कोई इसी मुंह से कर्म बंधन करके नरक में जाते है।

कवित्त : द्वादस फूल बखाणिये, तांके खट फल होय।
दोयां के फल चार है, एक फला बिन लोय ॥ ४५५ ॥

बारह फूलो के छः फल है, दो के चार फल है दो ऊपस्थ के, दो जिव्हा के है, केवल के फल नही लगता है।

बेली इधक सरूप, फूल फूल्या बोह भाई। सोलहे प्रगट जांण, द्वादस रहया लुकाई ॥ ४५६ ॥

इस बेल का इधक सरूप है इसमें बहुत से फूल फूले है सोला फूल प्रगट है। बारह कंवल छिपे हुये है।

इनका भेद विचार, सरब न्यारा कर भाखूं। फल पांखा गुण सोज, आण चौडे ले दाखूं ॥ ४५७ ॥

इन सबका अलग अलग भेद व विचार कहता हूं इनके फल पांखा गुण सोध करके चौडे बताता हूं।

फूला को गुण कहत हूं, सुणो संत सब लोय।
सुखराम सबे फल चाखिया, बेली ये फल होय ॥ ४५८ ॥

मःफः है कि फूलो का सब गुण कहता हूं संत व सब संसारी सुणो, मैंने सब फलो का अनुभव किया है, इस बेल के ये फल है।

पहिलो शुभ फल होय, आंण बरणू मैं सोई। पीछे अशुभ विचार, आंण कह सुं मैं दोई ॥ ४५९ ॥

पहले शुभ फल का वर्णन करके पीछे अशुभ विचार कहूंगा।

भेद सुणज्यो भेदिया, बेल फल सब न्यारा। एक मोख ले जाय, दूसरे नरक द्वारा ॥ ४६० ॥

मःफः है कि इस भेद को जानने वाले भेदी सुणो, बेल के फल अलग अलग है। एक शुभ फल से मोक्ष की प्राप्ति होती है व अशुभ से नरक में जाते है।

शुभ फल कोई जन खात है, अशुभ सेंग संसार।
सुखरामदास दोनो परे, सो फल खावण हार ॥ ४६१ ॥

परमात्मा की भक्ति भजन करने वाले जन ही शुभ फल खाते है। अशुभ फल को सारा संसार खाता है। मःफः है कि इन दोनो फलो से परे मोक्ष प्राप्ति के फल को भक्ति भजन करने वाले संत ही खाते है।

दोय फूल फल एक है, राम चरचा सुण लिजे।
ऊभे साध दिश ध्याय, जोड़ सुं दरशण किजे ॥ ४६२ ॥

कान रूपी फूल तो दो है जिसके एक फल है, उनसे रामजी की प्राप्ति का ज्ञान सुणो। जो ज्ञान के साथ जोडे को काम में लेगा जैसे रकार मकार श्वांस प्रश्वांस, कागलिया जीव्हा तब उसकी साधना होगी।

धरम करे स्तूत, फूल दोयां फल कहिये।
एक फूल फल दोय, भजन भोजन मुख लहिये ॥ ४६३ ॥

हाथ से धर्म करे, स्तुति याने प्रार्थना करे ये दो फूल है, फल एक है। और एक फूल के दो फल है। मुंह से भोजन करते है व भजन भी करते है।

ये फल ज्ञानी खाय है, निगम वेद जग मांय।
सुखराम अमर फल अगम से, सो जन खावे जाय ॥ ४६४ ॥

वेदो का ज्ञान जानते है वो ज्ञानी यह फल खाते है। मःफः है कि संत जन अमर फल याने केःपद आःपद की प्राप्ति करते है यही फल खाना है।

एक फूल फल दोय, तोय गुण भेद बतावूं। अमर जग पैदास, बरण हेलो दे गावूं ॥ ४६५ ॥

फूल एक व फल दो है जिसके गुण व भेद बताता हूं। एक फल से अमर हो जाता है। दूसरे फल से जगत में जन्मता मरता रहता है।

दोय फूल फल एक है, जांणत है सब कोय।
सुखराम क्षीर फल निपजे, किणी एक बेली जोय ॥ ४६६ ॥

दो फूल के एक फल है जिसे सब जानते है, शुभ अशुभ दो फूल है, जिनका एक फल तीन लोक में रहना है। म:फ: है कि क्षीर फल याने मोक्ष की प्राप्ति तो बिरले ही जन करते है।

दोहा : द्वादस बेली फूल है, फल को वार न पार।
जात तीन सुखराम कह, लीज्यो तत विचार ॥ ४६७ ॥

इस बेल के बारह फूल फलो का वार पार ही नही है। जात तीन शुभ अशुभ अमर पद इनका विचार कर लेना।

बीस नाल के चार ही, लग्या फूल परवाण।
सुखराम बेल बिध बरण के, कहत सरब फल आंण ॥ ४६८ ॥

बीस नाल याने बीस अंगुलिये ये दो हाथ, दो पैर, चार ही फल है। म:फ: है कि बेल की विधि का वर्णन करके सब फलो को कहता हूं।

तीन नाल अशमान में, तांका फूल विचार।
जन सुखिया जो सुण तिरे, सब फूलां मज सार ॥ ४६९ ॥

ईडा पिंगला सुखमणा ये तीन नाल ब्रह्मण्ड में है, उसके फूल का विचार यह है। म:फ: है कि उसको सुनकर मोक्ष मिलता है, यही सब फूलो में सार है।

पांच फूल ज्यों नाला बिचे, ईग्यारहज हाजिर।
जन सुखिया धिन बेलडी, जांणे हरिजन बीर ॥ ४७० ॥

आंख, कान, नाक, हाथ, पांव नालो के बीच में दस ईन्द्रिया व एक मन ये ग्यारह हाजिर है। म:फ: है कि यह बेल धिन है, उसे हरिजन ही जानते है।

शुभ फल हरिजन खात है, अशुभ मुढ सब लोय।
जन सुखिया इन बेल के, अे फल लागे जोय ॥ ४७१ ॥

शुभ फल हरिजन खाते है। अशुभ फल को मुरख व संसारी खाते है। म:फ: है कि इस बेल के यह फल लगते है।

बाहिरला फल फूल था, सो सब दिया जताय।
अब अंतर गत माहिला, निज मन मोहि बताय ॥ ४७२ ॥

बाहर के फल फूल थे सो सब बता दिये है, अब हे निज मन मुझे अन्दर के फल बतावो।

छन्द भुजंगी : अमी मेघ बूंठा, कमल एक फूठा। कली बहुत देखी, अस्ट कमल पेखी ॥ ४७३ ॥

सांस ऊसांस में भजन करना ही अमृत का मेह बरसना है सतशब्द की जागृति होना ही कमल एक फूटना है, कलियां तो बहुत है, आठ कमल देखे है।

किया बास वांही, जहां बात ऊठे। पिया प्रेम प्याला, कमल और फूटे ॥ ४७४ ॥

हृदय के स्थान पर शब्द आ गया, जहां पे हृदय है वहां से बात उठती है। प्रेम से भजन करने

पर शब्द आगे के कमलो पर बढता है, यही और कमल फूटना है।

सुणो पंख न्यारी, लगे और दोला। ऊ भेदस सारी, जहां देव भोला ॥ ४७५ ॥

म.फ. है सुणो पांख न्यारी है, यहां पर और छोटी बडी पांखे और जुड जाती है। इस स्थान से शब्द आगे बढता है। यह स्थान शिव पार्वती का है।

जहां देव शिंभु, सब ही ईश जाया। ऊभे फूल मांही, एक फल दिया ॥ ४७६ ॥

जहां महादेव है उन्हें ईश भी कहते है, इन दो फूलो में सब ही है। इनका एक ही फल है। सांस ऊसांस में भजन करने से एक फल मोक्ष की प्राप्ति होती है।

मधो फूल आया, जहां देव भारी। सुणो संत सारा, माया संग नारी ॥ ४७७ ॥

मधो फूल याने नाभी कमल पर विष्णु लक्ष्मी का स्थान है, सब ही संत सुणो माया साथ में है।

जहां बेल ऊगी, कमल एक फूल्या। कली आठ भारी, नितो संत झूल्या ॥ ४७८ ॥

जहां बेल ऊगी है, वहां एक कमल फूला है। उसके आठ कली भारी है, हमेशा संत वहां ही ध्यान करते है।

बडा एक चैन, सुणो भेव भारी। सिंचे फूल तांतो, पिवे बेल सारी ॥ ४७९ ॥

एक बडा चेन है, इस भारी भेद को सुणो। इस फूल के तांते सीचने में सब बेल पीती है, नाभी से ही शब्द का अनुभव सारे शरीर में होता है।

हमें संत मांही, सबे बेल जोई। निरख्या नाल सारा, शिरे तीन होई ॥ ४८० ॥

संतो ने अन्दर सब बेले देखी है व नाले निरखी है, इसमें ईडा पिंगला सुखमणा सब में श्रेष्ठ है।

छायो बेल तांतो, लियो गोड जाई। निरखे फूल सारा, तिके बेल मांई ॥ ४८१ ॥

बेल का तांता इस तरह छाया हुआ है सतशब्द की प्राप्ति हुई है, यही लियो गोढ जाई है। इससे ही बेल में जितने फूल है, उनका अनुभव होता है।

कली दोय सांमी, लगी चार पासा। जहां जगत स्वामी, सबे अेध आशा ॥ ४८२ ॥

छः पांख के कमल पर ब्रह्मा का स्थान है, जहां से जगत की उत्पति होती है।

खुले पोल आगे, दिस्ट चेन आयो। कली जुग सेती, बसे गवर जायो ॥ ४८३ ॥

इससे आगे गणेश जी का स्थान है, यह गुदा घाट है, यहां चार पांख का कमल है।

गहयो बेल तांतो, लिवी सुध जोई। गये पाल फौड़ी, जहां फूल दोई ॥ ४८४ ॥

बेल का तांता आगे बढा याने शब्द गणेश स्थान से आगे बढा, जहां दो फूल है।

कली पांच जाणे, जहां शेष बैठो। दसूं दरग पाल, कियो कुंभ सेंठो ॥ ४८५ ॥

पांच कली का कमल जहां शेषजी का स्थान है, दसो दिगपाल का व सारी पृथ्वी का आधार है।

धिनो राम राया, नमो श्याम सांई। ईसा भेव किया, खण्डे पिण्ड मांई ॥ ४८६ ॥

हे रामजी आपको धिन है, आपको नमस्कार है, शरीर में खण्ड पिण्ड का सब भेद कर दिया है।

करपा करण देवा, मुझे भेव दिया। गुरु शरण खण्डे, पिण्डे सोज लिया ॥ ४८७ ॥

कृपा करके मुझे यह भेद दिया, जिससे मैंने सतगुरु की शरण लेने से खण्ड पिण्ड की सोजना कर ली है।

इसे शेष हेठे, अेता फेर होई। कोरू मंड रूपंग, जलो शक्ति दोई ॥ ४८८ ॥

शेषजी के नीचे कोरम व कोरम के नीचे जल है।

टिके टेक सारा, सबे शक्ति सेवे। नमो ब्रह्म राया, नही टेक देवे ॥ ४८९ ॥

सब के शक्ति का आधार है, हे ब्रह्म आपको नमस्कार है, आपके कोई आधार नही है।

सबे शरण तेरी, तिहूं लोक सारा। रमे संत पंयाला, खुले पीठ द्वारा ॥ ४९० ॥

सब याने तीन लोक आपकी शरण में है, आपकी भक्ति करने वाले संत जो गणेश व शेष के स्थान पर पहुंचते है तो वहां से पीठ का याने बंकनाल का रास्ता खुलता है।

खूल्यो फूल भारी, लेहे भेद बिरला। कली एक बीसूं, घडयो घाट गिरला ॥ ४९१ ॥

एक फूल भारी खुला है, जिसका भेद बिरले ही लेते है। मेरूडण्ड की इक्कीस गांठे जिन्हें इक्कीस स्वर्ग भी कहते है, ऐसा घाट बनाया है।

तहां संत आया, सूरत ऊलट फेरी। थके नाल पयांलु, अस्ट धात घेरी ॥ ४९२ ॥

शेषजी व गणेशजी के स्थान से ही सूरत को ऊलटी बंकनाल में फेरी है, यहां पाताल में सब नाले थक जाती है, इस स्थान से ऊपर चढना ही आठ धात को घेरना है।

लिया नाल सोझा, तिके जाय पुगा। तहां एक बीसूं, पडे सरब लुगा ॥ ४९३ ॥

जो भजन कर नालो की सोजना करते है वो ही पहुंचते है, वहां इक्कीस सुरगो से आगे बढ जाते है, यही लुगा पडना है।

चढे नाल सांई, बिचे गल झूंठी। भजन पूर कियो, तबे गांठ फूठी ॥ ४९४ ॥

इस तरह नाल में चढने से जोर से भजन करने पर गांठो को पार कर आगे बढते है, यही गांठ फूटना है।

दिवस रात अेती, पिछम देश वासा। भवण लोक जांणे, खसे संत खासा ॥ ४९५ ॥

रात दिन भजन करने वाले ही पिछम देश में जाते है, वो ही सब भवनो व लोको को जानते है। शूरवीर संत खूब भजन करते है, इसे ही खसना कहा है।

तहां फूल देख्या, बसे संत मांही। कली तिथ दूणी, ऊभे फेर कहाही ॥ ४९६ ॥

जो संत वहां पहुंचे है और उन्होंने वहां जो फूल देखा है, वहां पर बतीस कली का कमल है।

जहां ताव भारी, पडे जोर गाढो। कहूं भेव जोती, नही अण ठाडो ॥ ४९७ ॥

जहां खूब भजन करने पर ही पहुंच सकते है, यही ताव भारी पडना व जोर गाढा पडना है, यही भेद है।

फटे पीठ सारी, न मो बस किया। लगे बंध गाढा, सबे संग लिया ॥ ४९८ ॥

यहां पर ऊतानपात बंध लगता है जिससे पीठ फटने लगती है, सब को साथ में लेकर वश में कर लेते है।

जहां एक धारा, सबे दिष्ट भूले। इसा चैन देख्या, लगे बंध खुले ॥ ४९९ ॥

जहां एक धार भजन होता है सब दिष्ट भूल जाते है, ऐसे चैन नजर आते है, लगे हुये बंध खुलते है।

चले प्राण ऊंचे, कमल चैन आया। कली पीर जति, भले एक भाया ॥५००॥

प्राण ऊंचे चलते है, कमल का चैन मालूम होता है, यहां छः कली का कमल है।

जहां देव ऐसो, कहूं तेज भारी। सबे मुख आगे, खडी मांड सारी ॥५०१॥

वही ऐसा धर्म राय देव है, जिसका तेज बहुत भारी है, सारी सृष्टि उसके वश में है।

जहां संत सुरो, शिरे पांव दिया। चढे भेद गोले, गीगन जाय लिया ॥५०२॥

जहां शूरवीर संत यमराज के स्थान से आगे शब्द के साथ ब्रह्मण्ड में जाते है।

कहूं फेर भेवो, सुणो बात म्हारी। गीगन फूल बासा, पडे बंध भारी ॥५०३॥

फिर मैं भेद कहता हूं मेरी बात सुनो, गिगन में जहां फूल है वहां पहुंचने पर भारी बंध लगते है।

जहां नाल तीनो, चले धार न्यारी। पडे ताव भारी, सहे प्राण प्यारी ॥५०४॥

मेरूडण्ड से ईडा, पिंगला, सुखमणा तीन नाल चलती है यहां जो भी ताव पडते है, प्राणो को सहन करने पडते है।

रटे राम केती, सुणो संत सूरा। भजन डोर लागी, चढे मुख नूरा ॥५०५॥

शूरवीर संत खूब भजन करते है, उससे ही मुख पर नूर चढता है।

मिले नाल तिनुं, जहां फूल फूले। झरे बेल तांतो, मझे संत झूले ॥५०६॥

इडा पिंगला सुखमणा जहां मिलती है फूल वहां फूलता है। वहां पर शब्द का अनुभव होना ही बेल तांतो का झरना व संतो का झूलना है।

तपे तेज भारी, जहां देव बैठा। पिया प्रेम पियाला, हुवा संत सेंठा ॥५०७॥

जब शब्द त्रिकुटी में आता है, यहां गौलोक धाम है, सब देवताओं का तेज रहता है, जो प्रेम से नाम रटेगा वो आगे केवल पद के लिये अग्रसर होगा।

जहां ज्वाला भारी, दिपे लोय मांई। ब्रह्म तेज ऐसो, सबे संत छाई ॥५०८॥

वहां शब्द की ध्वनि ही भारी ज्वाला है, दिव्य ज्योति का शब्द स्वरूप ही ब्रह्म तेज है। सब ही संत उसका अनुभव करते है।

अजु भेव भाखुं, सुणो संत सारा। मिल्या नाल तिनो, जहां एक धारा ॥५०९॥

इडा पिंगला सुखमणा एक साथ मिल जाती है यही एक धारा है, सब सन्ता सुणो फिर भेद बताता हूं।

खुले बेल फूली, कमल पांख अेती। फिरे रेण माशा, पांखा रंग जेती ॥५१०॥

वहां पहुंचना ही बेल का फूलना है, वहां दो पांख का कमल है।

जहां घाट भारी, शिरे धाम कहावे। सुणो संत सूरा, नितो नित न्हावे ॥५११॥

जहां भारी घाट है, उसे श्रेष्ठ धाम कहते है, उस पद का शूरवीर संत हमेशा ही अनुभव करते है। यही नित नहाना है।

छन्द मोतीदान : चढे सो रूप अनोपम देह। ऊलटे फूल बरसे मेह ॥५१२॥

यहीं पर अमीरस झरना ही बरसे मेह है। उसका आनन्द का अनुभव होना ही देह पर रूप चढना है।

चवे से महल छलके जोर। घुरे घण ईन्द्र लहूके मोर ॥५१३॥

शब्द की ध्वनि का अनुभव होना ही घूरे घण ईन्द्र व मोर लहूकना है।

सुणो अे चैन, पछाडी होय। जहां तिहूं नाल बिछूटे जोय ॥५१४॥

सुणो ये चैन पिछाडी होते है, जहां अला, पिंगला, सुखमणा बिछुटती है।

बिचे मध नाल जहां खुले सिर मोर। एक फूल अनुपम और ॥५१५॥

नाल के बीच में एक अनुपम फूल और खिलता है।

कहूं मैं चैन सुणो सब कोय। गया ऊण धाम कली नही होय ॥५१६॥

उसके चैन बताता हूं सब सुणो, उसमें कोई कली नही है।

बेली फल फूल सबे मुरजाय। जहां सत प्राण ऊभे फल खाय ॥५१७॥

बेल के फल फूल सब मुरझा जाते है। जहां सत प्राण दो फल खाते है।

स्थाई अब बेली हले नही कोय। चले सत प्रांण ऊभे फल खाय ॥५१८॥

यहां सतशब्द का अखण्ड अनुभव ही हले नही कोय है। यहां से प्राण आगे चले, जहां दो फलो की प्राप्ति होती है।

जहां होय बेल पिया रस नीर। तिका मध फूल रहयो सून तीर ॥५१९॥

भजन करते हुये वहां जाना ही रस नीर पीना है। उसके मध्य में जो फल है वही सुन्न तीर है।

अबे जल नीर ढूले जहां आकाश। गुण तीन बैकुंठा वास ॥५२०॥

शब्द का आगे अनुभव होना ही आकाश में ढुलना है। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव का पद व बैकुण्ठ का स्थान यहां से है।

बिराजे नाथ लिछमी सहित। तिके कर जोड़ जना सुं कहत ॥५२१॥

वहां लक्ष्मी सहित विष्णु विराजते है, वो हाथ जोड़ आगे जाने वाले सन्तो से कहते है।

रहो इण देश हमारे पास। करे सब लोक तुम्हारी आस ॥५२२॥

आप हमारे पास इसी देश में रहिये, सब लोक आपकी आशा करते है।

घणा सुख चेन अबीर गुलाल। लक्ष्मीनाथ करावे ख्याल ॥५२३॥

इस स्थान पर बहुत सुख है, सुख का अनुभव होना ही लक्ष्मीनाथ का ख्याल कराना है।

कह कर जोड़ लागे लुल पांव। सबे सुख शहर बतावे आय ॥५२४॥

सब प्रकार का सुख बताना ही हाथ जोड़कर कहना व लुलकर पांव लगना है।

अमीरस प्रेम पियाला पूर। लक्ष्मी आंण खडी रह दूर ॥५२५॥

शब्द का यहां अनुभव होना व आनन्द आना ही अमीरस प्रेम पियाला पीना है। यहां पर माया के चेन प्रगट होते है, यही लक्ष्मी आंण खडी रह दूर है।

बतावे चैन अनेकूं आय। देवे रस प्रेम पियाला मांय ॥५२६॥

यहां माया के अनेक चेन होते है व कई तरह के सुख बताये जाते है।

चढे मतवाल बडी मेहमत। इसी विध देव थकावे संत ॥५२७॥

यहां ध्यान भी लगता है, इसी विधि से देवता संतो को आगे बढने से रोकते है, याने रटणा बंद हो जाती है।

न मांनु चैन कहां सुख बास। नही थिर लोक तुम्हारी आस ॥५२८॥

संत कई प्रकार के चैनो पर ध्यान नही देते है व भजन कर आगे बढते है, यह लोक थिर नही है।

दिया सब पेल न देवे चैन। धरी मन मूठ अरूपी सेन ॥५२९॥

संत यहां के चैनो की तरफ ध्यान न देकर शब्द के साथ आगे बढते है।

तब बल देव संभायो नाथ। माया संग काम पठायो साथ ॥५३०॥

माया अपना बल बताती है, संतो के कई प्रकार की कामनाये प्रगट कर देती है।

इसा मोहजाल लगाया मोय। न मांनु बात लखी मैं तोय ॥५३१॥

इस तरह मोह का जाल लगा देती है, संत माया की कामना के वश में नही होते है।

माया सो जोर बड़ी अदभूत। करे बोह ख्याल अनेक असूत ।।५३२।।

माया बडी जोरावर है बहुत अदभूत है। कई तरह के झूंठे प्रपंच खडे कर देती है।

हुवे संत सूर विचारो जोय। तिरबेणी ध्यान न माने कोय ॥५३३॥

म:फ: है कि शूरवीर हो वही संता विचारो और देखो त्रिवेणी के सुखो में व चेनो में ध्यान मत दो।

जहां जम झाल पहुंते आय। तहां लग बात न मांनु काय ॥५३४।।

जहां तक यमराज की पहुंच है, वहां तक कोई बात मत मानो।

मंडे संत सूर रटे निज नांव। माड़े मुरडाय, चढे ऊण धाम ॥५३५॥

शूरवीर संत ही निज नाम का भजन करते हुये शब्द के साथ मुरडाय कर आगे बढते है।

लगे सो ध्यान जोरावर आंण। पडे बोहो ताव, नेणा मध जांण ॥५३६॥

यहां बोहोत ध्यान जोरदार लगता है, आंखो पर बहुत जोर पडता है।

तोही संत डोर न मेलो कोय। रटे मुख नाम, ऊतावल जोय ॥५३७॥

तो भी संतो भजन को मत भूलो और खूब जोर से भजन करो।

सबे विध सूत चल्या असमान। गहया सब पांच पचिसूं आंण।।५३८॥

संत सब तरह से पांच ईन्द्रिया पच्चीस प्रकृति को बश में करके भजन करते हुये आगे बढते है।

लगे सो ध्यान करारो मोय। तबे मुख जीभ न चाले कोय ॥५३९॥

ध्यान जोर से लगने पर वाणी से भजन बंद हो जाता है। यही मुख में जीभ नही चलना है।

हुवे गरकाब घडी पल मांय। चवे तबे नाल फूला में आय ॥५४०॥

भजन करने वाले ध्यान में गरकाब हो जाते है, ध्यान घडी व पल में लग जाता है, शब्द का अनुभव होना ही चवे तब नाल फूला में आय है।

इसो हरि भेव बतायो राम। सबे सुख प्रेम धरयो ऊण धाम ॥५४१॥

रामजी ने ऐसा भेव बताया है कि सब सुख प्रेम से भजन करने वाले को अनुभव होते है।

पिया रस फूल टपकिया हीर। बंधी बिचे धार जिसो पिये नीर ॥५४२॥

सुखमणा में भजन होने से आनन्द आ रहा है वो ही पिया रस फूल है, अखण्ड भजन होना ही टपकिया हीर जैसे पानी पीते समय धार बंधना है।

ईते ऊत चन्द बह नित भांण। बिचे संत डोर तहां सुख जांण ॥५४३॥

इधर उधर चन्द्र सूर्य बीच में सुखमणा चलती है।

थके दश नाल ग्यारे हैलोय। बह संत तीन बराबर जोय ॥५४४॥

दसों इन्द्रिया व ग्यारवा मन थक जाते है, उसके इडा पिंगला सुखमणा तीन बराबर बहती

रहती है।

रह सब फूल पछाणी देव। थकी सब बेल नही मुख देव ॥ ५४५ ॥

आत्म देव ने सभी फूलों की पहचान करके सतशब्द के साथ गिगन में चढ जाती है। सब बेल थक जाती है और बिना वाणी के भजन होने लग जाता है।

लगी अब डोर सुलटी होय। तणे तज पोप कली बिन दोय ॥ ५४६ ॥

त्रकुटी से ऊपर चढना ही डोर सुलटी होना है, दो पांख के कमल से साधक आगे बढ जाता है, यही छोडना है।

बिछुटे नाल तजे शशि भांण। लग्यो सत खम्भ अनोप बखाण ॥ ५४७ ॥

सूर्य, चन्द्र याने इडा, पिंगला सुखमणा से अलग होकर सुखमणा में भजन होना ही सत खंभ अनुपम लगना है।

कहूं सो भेव अनुपम जोय। संता घर एक ठिकाणो होय ॥ ५४८ ॥

एक अनुपम भेद कहता हूं उसे देखो, सब संतो का पद एक ही है।

वहां सब संत बिराजे जाय। मिले सब पांच पचिसुं मांय ॥ ५४९ ॥

सब संत पांच तत्व पचीस प्रकृति से अलग होकर वहां पहुंचते है, यही पांच पचीस का मिलना है।

रह जन होय निसंख निराट। पिये सुख सीर अमी ऊण घाट ॥ ५५० ॥

वहां पहुंचकर जन निर्भय हो जाते है और आनन्द का अनुभव करते है। यही अमीरस पीना है।

थके बिन थाह अचूक निराट। घडिजे बिणसे सब ऊण घाट ॥ ५५१ ॥

वहां पहुंचकर उस पद का अनुभव सुनना ही थके बिन थाह अचूक है। उत्पति व लय भी उस पद से होते है।

बिना छेह पार अपार अगाध। कह घर और अणभै साध ॥ ५५२ ॥

उस पद का छेह नही है, वह अपार अगाध है, उस पद का संत अनुभव कर अणभै वाणी बनाने वाले कहते है।

दिया मैं पांच पचीसुं लार। कियो एक फेर अनोपम विचार ॥ ५५३ ॥

पांच तत्व व पचीस प्रकृतियां से जीते जी अलग होना ही अनुपम विचार है।

खुली सत सहज सरूपी बाट। थकया सब आन सुखो दुख घाट ॥ ५५४ ॥

दरशया फूल अनोपम मोय। कली सत पांख हजारूं होय ॥ ५५५ ॥

सहज में ही सतस्वरूप की प्राप्ति का रास्ता खुल गया है, माया के पद के सुख दुख से अलग होना ही सुख दुख का घाट थकना है। एक अनुपम फूल का अनुभव हुआ, जिसके हजार पांख है।

वहां एक और अनोप विचार। पडे कुण्ड मांय अमीरस धार ॥ ५५६ ॥

बसे वे देव निरंजण सोय। नही सत रूप दरस्यो मोय ॥ ५५७ ॥

सुखमणा में भजन होने से शब्द झरता हुआ अनुभव होता है। अमीरस का आनन्द आता है यही एक अनुपम विचार है। यह पद निरंजण देव का है। अभी तक सतसरूप का पद नही दरशा है।

पड़े प्रतीत वहां लग ताय। बिना जीव माया, नही कोई चाय ॥ ५५८ ॥

सुणो सब कोय कहूं मैं भेव। माया मन अंस, निरंजण देव ॥ ५५९ ॥

परब्रह्म तक पहुंचने पर आवागवण मिटने का भरोसा नही होता, जीव को इसके सिवाय कोई चाहना नही है। सुणो मैं तुम्हे बताता हूं यह निरंजण का पद माया के साथ है।

वहां लग जाय मां फूलिज्यो कोय। जहां लग डोर माया वश होय ॥५६०॥
चढावे ध्यान लेहे सुख जाय। तहां लग काल पहुंचे आय ॥५६१॥

वहां जाकर मत समझ लेना कि परमपद की प्राप्ति हो गई, उस पद में माया के साथ है कितने ही ध्यान करो व सुख का अनुभव करो, जहां तक काल की पहुंच है, वहां तक जाने पर भी आवगवन नही मिटता है।

ईसी विध मांय दरसे जोय। जहां लग ढीलमा किज्यो कोय ॥५६२॥
डरे मन मांय चमके देह। जहां लग काल न दिखे है छेह ॥५६३॥

ऐसी विधि होती है जहां तक भजन करने में व परमपद की प्राप्ति करने में ढील मत करो, जहां तक मन में चमक ताव डरता है तब तक वो काल से अलग नही हुआ है, यही छैह नही दिखना है।

लांग्या सब सूत निरंजण राम। तबे हरि आप अरूपी धाम ॥५६४॥
जहां सुख, दुख नही को चेन। सुणे नही बात कही नही सैन ॥५६५॥

यहां निरंजण के धाम से आगे बढने पर ही अरूपी धाम है, जिसे के:पद आ:पद कहते है कि उसकी प्राप्ति होती है। उस पद में सुख, दुख नही है कोई चैन नही है वहां न सुनने वाला है न कहने वाला है।

ईसो अद्‌भूत तमाशो जांण। लगा ऐसे ध्यान थकी सब बांण ॥५६६॥
कहूं एक भेव अनोप संभाल। माया अंश बिलम चोइसुं नाल ॥५६७॥

वहां ऐसा ध्यान लगता है कि बिना बाणी भजन होता है, ऐसा वहां अदभूत तमाशा है, यही बांण थकना है। एक अनुपम भेद संभालकर कहता हूं कि चोबीस नाल माया के पद में है।

थके दश अंग पंयालु मांय। तबे स्यारंग पलटयो आय ॥५६८॥
जमी पे रंग रह सत जांण। बखाणे पीठ प्रीतम ठांण ॥५६९॥

दश नाल पाताल में थक जाती है तब काले रंग याने करणी कर्मो से अलग होना ही पलटना है। जमीन याने पिण्ड में रहते है। जब तक यह रंग सत जाणो, पीठ की तरफ पलटता है तब वहां का बखाण करता है।

लंग्या सब देव ईकीसुं लोक। थक्या दश अंश पायो हंसपोक ॥५७०॥
रहयो रंग अेह सफेद कहाय। गरजे गेहण तपयो बोह आय ॥५७१॥

इक्कीस सुरग ही देवताओ के लोक है, उनको लांघने पर दस नाल थक जाते है। यही हंस को पोख मिलना है। एक रंग सफेद ज्ञान परमात्मा की प्राप्ति का रह जाता है, शब्द की गरजना होती है, यही गरजे गेहण तपयो बोह आय है।

थके अंश तीन सुणो ऊण घाट। बह चंद सूर निशो दिन बाट ॥५७२॥
रहया रंग लाल हरे वहां थक। तब सत प्रांण पडी वहां जक ॥५७३॥

तीन अंश वहां थक जाते है, चन्द्र सूर्य रात दिन बहते रहते है, हरा रंग थक जाता है, लाल रंग रह जाता है। प्राणो को शान्ति आना ही जक पड़ना है।

रहयो रंग एक माया की लार। मनो बुध चित भले अहंकार ॥५७४॥
गले नव लिंग कहूं सो धाम। सुनी अरूप नही देह काम ॥५७५॥

एक रंग माया के साथ रह जाता है, मन बुद्धि चित अहंकार यहां माया के पद में रह जाते है। नव तत लिंग शरीर गलता है, उस को बताता हूं वो अरूप है, वहां शरीर का काम नही है।

कहुं ऊण देश बिराजे जाय। थखे गुण रूप माया अंश मांय ॥५७६॥
वहां अंश आप निकेवल होय। जीता सब अंश माया गुण जोय ॥५७७॥

उस देश में संत पहुंचते है तब माया के पद से अलग हो जाते है। यही माया का गुण रूप थकना है। वहां पहुंचकर माया के पद से अलग होना ही निकेवल होना है। यही माया के अंश व गुणो को जीतना है।

इसी विध सेंग उठाया बोहार। तबे हंस जीत हुवा भव पार ॥५७८॥
मिटाया अंश अनेकू नाम। वहां सत धाम अरूपी श्याम ॥५७९॥

माया के पद से अलग होना ही सब व्यौहार उठाना है तब हंस माया के पद को जीतकर भवसागर से पार होता है। अनेक नाम व अंश माया के पद में है। इससे अलग होना ही मिटाना है। वहां अरूपी परमात्मा का सतधाम है।

कहूं फिर भेव न भूलो कोय। इसी बिध सेंग समाधी होय ॥५८०॥

तुमको भेद बताता हूं उसे मत भूलो। उस पद में पहुंचने पर सबको समाधि होती है।

सुणो नही रूपन देखे कोय। थक्या चित पांच लिया संग लोय ॥५८१॥
कहूं ऊण देश बिराजे जाय। तबे इस विध बणे सब आय ॥५८२॥

न कोई सुनने वाला है, न कोई रूप देखता है, पांच प्राणों से अलग होने पर उस के:पद आ:पद की प्राप्ति होती है, उस के:पद की प्राप्ति होने पर ही यह सब विधि बनती है।

सुणो ऊण देश पहुंतां रीत। सुखो दुख एक न आवे चीत ॥५८३॥
कहूं मैं कहा बतावुं लाय। वहां की बात कही नही जाय ॥५८४॥

उस पद की प्राप्ति होने पर सुख दुख याद नही आता है। उसकी कहां तक महिमा करूं, वहां की बात कहने में नही आती है।

माने को नांय कहयां क्या होय। रहया सुखराम इसी विध जोय ॥५८५॥

कहने से क्या होता है कोई मानता भी नही है। म:फ: है कि वहां पहुंचने पर सब विधि मालूम होती है।

कह को संत, मिले तो आंण। इसो सुध देश हमारो जांण ॥५८६॥

वहां पर कोई पहुंचा हुवा संत ही मिले तो कह सकते है कि वो ऐसा हमारा सुध सत देश है।

नही जहां पाप तणो प्रवेश। कियाणो नांय हमारे देश ॥५८७॥

उस पद में पाप का प्रवेश व तेरी मेरी नही है।

नही पुनः पाप पसारा मांय। कहुं कुछ नांय अनो जल खाय ॥५८८॥

वहां पर कोई पाप पुन्न का पसारा नही है और न कोई वहां अन्न जल खाता है।

इसा अद्‌भूत लखाया मोय। मैं ही मैं राम दुजो नही कोय ॥५८९॥

वो पद ऐसा अद्‌भूत अनुभव होता है कि मैं ही राम हूं दूसरा कोई नही है।

अबे सुखराम, पलटिया जीव। मिल्या सत राम, सनेपी शीव ॥५९०॥

म:फ: है कि अब जीव पना मिट गया है और सत राम में मिल गये है।

साखी : सुखराम दास बेली कही, नाल नाल सब सोज।
गुरु शरणे प्रताप सूं पायो अणभै खोज ॥५९१॥

म:फ: है कि मैंने यह बेली ग्रन्थ सब नाल नाल का अनुभव करके कहा है कि सतगुरु की शरण के प्रताप से अनुभव कर अणभै ग्रंथ बनाया।

अरथ सहित सब बात है, सुणज्यो सब जन आंण।
सुखराम दास बेली कही, तीन लोक सब जांण ॥५९२॥

बेली ग्रन्थ में सब बात अरथ सहित है सब जन आकर सुणो। म:फ: है कि मैंने तीन लोक याने खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड का अनुभव करके कहा है।

तीन लोक में अेकली, रही बहुत बिध छाय।
सुखराम दास इण बेल ने, बिरला सोजे आय ॥५९३॥

तीन लोक याने खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड में बहुत विधि से छा रही है। म:फ: है कि इस बेल की खोज कोई बिरले ही करते है।

अरथ करे सब बेल को, पांख कली सब जोय। सो गुरु मेरे शीश है, दूजा सब शिष होय ॥५९४॥

इस बेली ग्रन्थ का अरथ अनुभव करके कहा जाता है वो अणभै ग्यान गुरु मेरे शीष पर है। दूसरे सब शिष्य है।

अरथ करण में फेर बोह, सुणया कहे अनेक।
सुखरामदास सो सतगुरु, कह बेल घर पेक ॥५९५॥

अरथ करने में बहुत फरक है सुण कर अनेक कह देते है। म:फ: है कि जो बेल का अनुभव करके कहते है वो ही सतगुरु है याने सतज्ञान है।

वां चरणा की रज हूं, ज्यां पायो यो भेव। सुखराम दास इण बेल कूं, बंछे सुर नर देव ॥५९६॥

आत्मा कह रही है कि उन चरण कमलो की मैं रज हूं जिन्होंने इस भेद को पाया है। म:फ: है कि देवता भी इस बेल की प्राप्ति के लिये मनुष्य शरीर की इच्छा करते है।

बेली अरथ विचार के, होय रहया लवलीन।
सुखराम दास सांची कही, सबे बेल फल चीन ॥५९७॥

बेली ग्रंथ के अर्थ का विचार करके जो भक्ति में लग गये तो म.फ. है मैं सच कह रहा हूं इस बेल से ने:अक्षर रूपी फल को प्राप्त करो।

विस्वाबीस इक्कीस ले, फेर हजारां जांण।
अमर लोक हम पहुंच कर, बेली कहयो बखाण ॥५९८॥

बीस बिस्वा नही इक्कीस नही हजारो बिस्वा अमरलोक याने सत स्वरूप आ: पद में पहुंचकर ही मैंने बेली कही है।

आद अनादू बेल है, मज अमरत रस होय। बिन भेदी संसार सो, विष फल खावे लोय ॥५९९॥

यह बेल आद अनादु है इसके अनुभव का आनन्द लेना ही बीच में अमरत रस पीना है। बिना सतगुरु के ज्ञान धारण किये बिना संसार विषय भोगो में लगा रहता है, यही विष खाना है।

हंसा काजे जग में, धरी देह में आंण। सुखराम विप्र घर जनमिया, त्याग्या वेद कुराण ॥ ६०० ॥

हंसो का उद्धार करने के लिये ही जगत में मैने शरीर धारण किया है। म:फ: है कि मैंने ब्राह्मण के घर में जनम लिया है और करणी कर्मो के ज्ञान को छोडकर सतशब्द की प्राप्ति का ज्ञान धारण किया है यही वेद कुराण छोडना है।

हंसा कूं परमोद के, निज कण देवूं बताय। मोख पंथ सुखराम के, खोलुं या घट मांय ॥ ६०१ ॥

हंसो को ज्ञान देकर परम पद की प्राप्ति करा देता हूं। म:फ: है कि मोक्ष की प्राप्ति का रास्ता शरीर में ही बता देता हूं।

ग्रन्थ कहयो सुखराम कह, अमरत सार अनोख।
चित दे बांचे सांभले, ताय मिले फल मोख ॥ ६०२ ॥

म:फ: है कि मैंने अमरत सार अनोखा ग्रन्थ कहा है। इसको चित लगाकर बांचे, सुणे और धारण करे। उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

अमरत सार ऊचारियो, कोटक विघ्न बिलाय। जो धर के बांचे सुणे, मिले ब्रह्म में जाय ॥ ६०३ ॥

अमरत सार ग्रन्थ मैंने कहा है, जो ध्यान लगाकर बांचते है, सुनते है व धारण करते है, उनके करोडो विघ्न टल जाते है और वह ब्रह्म रूप हो जाते है।

सतगुरु बीरमदासजी, शिमरथ शिरजणहार।
सुखराम दास अणभै कही, बोल्या ब्रह्म विचार ॥ ६०४ ॥

मेरे सतगुरु समरथ परमात्मा के स्वरूप बीरमदासजी है। म:फ: है कि उनकी कृपा से ही मैंने अणभै ब्रह्म की प्राप्ति का विचार कहा है याने अणभै वाणी कथी है।

समत अठारा सो तिसे सुणो, इकतीसो प्रवाण।
ग्रन्थ कहयो सुखराम के, श्रावण मास बखाण ॥ ६०५ ॥

सम्वत् १८३०-१८३१ श्रावण महिने में इस ग्रन्थ की रचना की है।

॥ इति श्री बेली ग्रन्थ अमरत सार सम्पूर्ण ॥

卐 न्यात का संवाद 卐

संत सुखरामदासजी म: ने न्याती रा ब्राहमण कहयो कि तुम शुद्र को आज्ञा देते हो सो यांरो जवाब देणो पडसी तब संत सुखरामजी बोलिया :

अरेल : पांच तत का जीव सरब ही होय रे, अे चार बरण नर नार मांड सब लोय रे।
सुण यामें कहो कुण नीच मान मैं लेव सूं, हर हां ताकूं केहे सुखराम अज्ञा नही देव सूं ॥ १ ॥

सब ही जीव पांच तत्वो से होते है, चार बरण के सब ही स्त्री पुरूष व सृष्टि के सब संसारी सब ही पांच तत्वो से होते है। सुणो और कहो कि इनमें से कौन नीच है, मैं मान लूंगा। म:फ: है कि उनको आज्ञा नही दूंगा।

तुम मुझ को कहो विचार नीच अे होय रे, सो ताकूं संगत मांय रखूं नही कोय रे।
अर नही तर झूंठो बाद करो सो बावला, हर हां अन्तकाल के मांय गुन्हो व्हे रावला ॥ २ ॥

म:फ: है कि बतावो यह नीच है तो मैं उनको अपनी संगत में नही रखूंगा, नही तो तुम वाद विवाद करते हो जिससे अन्तकाल में परमात्मा के दोषी समझे जाओगे।

मही नीच कन अप तेज कन बाय रे, कन ब्रह्मण्ड कहिये नीच बतावो आय रे।
सुण सब शास्त्र जोय खोजना कीजिये, हर हां यांको केहे सुखराम जाब मुझ दीजिये॥ ३ ॥

पृथ्वी नीच है, पानी नीच है या तेज नीच है, या वायु नीच है, ब्रह्मण्ड याने आकाश नीच है, यह बताओ और सब शास्त्रो को देखकर खोजना करो। म:फ: है कि इसका मुझे जवाब दो।

अे पांचु तो ऊंच नीच भी नांय है, ओ ऊदबुद बणियो खेल कहयो नही जाय है।
पिण करणी कहिये नीच नीच सो धाम रे, हर हां यां सो आद अन्त सुखराम बणायो राम रे ॥ ४॥

पांचो तत्व तो ऊंच नीच नही है, यह संसार की रचना ऊदबुद है, कहने में नही आती है जो करणी है वो नीच है, जहां बुरे काम व हिंसा होती है वो जगह नीच है। म:फ: है कि यह आदी से अन्त तक तो रामजी ने बनाया है।

करणी नांव समान नही है काय रे, भगत सरोभर धाम नही जग मांय रे।
अब काढो यामें बांक मधम कोई कीजिये,
हर हां या सुणज्यो केहे सुखराम जाब मोय दीजिये॥ ५ ॥

नाम की भक्ति के बराबर कोई करणी नही है, जिस जगह परमात्मा की भक्ति होती है उसके बराबर जगत में कोई नही है, अब इनमें कोई खराबी हो तो निकालो। म:फ: है कि इसका मुझे जवाब दो।

न्यातवालो व्यासोवाच : यामें ओ सुण चूक पेल सो करम कमाया,
ढेडा के घर जन्म दाव माटी मद खाया। अब ही परणे ढेड के अन्न वारे ही खाय,
हर हां यां इण कारण सुखराम अे नीच कवाया जाय ॥ ६ ॥

न्यात के व्यास ने कहा है कि इनमें यह गलती है कि पहले जन्म में इन्होंने खराब कर्म किये थे, जिससे इनका नीच घरो में जन्म हुआ है और वहां पर भी इन्होने माटी शराब खाया पीया है। अब नीचो के यहां ही शादी करते है, उनका ही अन्न खाते है, इस कारण से यह नीच कहलाते है।

यामें ओगुण यह ढेड घर आविया, मद माटी अर गाय बहोत वां खाविया।
अर अब ही परणे जोय नीच के जाय रे, हर हां अे लछण सुखराम नीच के मांय रे ॥ ७॥

इनमें यह अवगुण है कि नीच घर में जन्मे है, वहां पर शराब मिट्टी व गायो का मांस खाया है। अब ही नीचो के यहां शादी करते है, यह लक्षण नीचों के है।

सुखराम वाच : ब्राह्मण करम कमाय नीच जो थाय है, तो ढेड भजन प्रताप ऊंच होय जाय रे।
अर यूं रिख के घर जीम उत्तम नही कोय रे, हर हां तो ऐसे ही सुखराम नीच नही होय रे ॥ ८॥

म:फ: है कि ब्राह्मण नीच करम करने से नीच हो जाता है व नीच भजन के प्रताप से ऊंच हो जाता है, ऐसे ही ऋषि के घर में भोजन प्रसाद करने से उत्तम नही होता है, ऐसे ही किसी के कहने व करने से ऊंच नीच नही होते है।

ब्राह्मण देह कन जीव जाब यो दीजिये, रे पीछे सोच विचार वाद सो कीजिये।
सुण थारे उत्तम कोण देह घर मांय रे, हर हां यूं बूजे सुखराम बतावो आय रे ॥ ९॥

ब्राह्मण शरीर है या जीव, इसका जवाब दो और पीछे सोच विचार कर वाद विवाद करो। बतावो तुम्हारे शरीर में उत्तम कौन है। म:फ: है कि यह बात बताओ।

ब्राह्मण देह नही जीव नही घर कोय रे, आ वचना की मरजाद ब्राह्मण होय रे।

या तीन बांधी मेर आद ठेराविया, हर हां यूं ब्राह्मण सुखराम जुगे जुग गाविया ॥ १० ॥

ब्राह्मण न तो कोई शरीर है, न जीव है, न घर ब्राह्मण है, ब्रह्मा विष्णु महादेव ने मर्यादा बनाई है, इनके वचनो के आधार से ही जुगान जुगो से ब्राह्मण कहलाते आये है।

अे तो जात पांत भक्त भी नांय है, अे करणी करतूत अशुभ नही कवाय है।
यांको करो विचार तत्त सो छाणिये, हर हां ओ ऊंच नीच सुखराम कोण कूं जाणिये ॥ ११ ॥

न तो कोई जाति है, न पांति है, न भक्ति है, ये करणी करतूत बुरे नही कहलाते है, इसे विचार कर समझ कर बात करो। म:फ: है कि ऊंच नीच किसको समझे।

ऊंच नीच को केण और कुछ नांय रे, सुण सुख दुख करणी लार भुगते जाय रे।
सब जाति व्यौहार बरण सब पेक है, हर हां सब केवत सुखराम मूल घर एक है ॥ १२ ॥

ऊंच नीच केण है और कुछ नही है, जैसी करणी करते है वैसा ही सुख दुख भोगते है, सब जाति व बरण अपनी अपनी जगह है। म:फ: है कि सब केवत है, मूल में सब एक ही है।

आ ऊंच नीच की केण झूंठ नही कोय रे, सो या आपस के बीच बंधी है जोय रे।
तीन लोक लग शुभ अशुभ सत जांणिये, हर हां चौथे में सुखराम एक कर ठाणिये ॥ १३ ॥

यह आपस में कहते आये है कि यह ऊंच नीच केण झूंठ नही है। तीन लोको में तो अच्छा बुरा करता है वैसा ही फल भोगता है परन्तु चौथे पद में तो सब ब्रह्म रूप हो जाते है।

॥ इति श्री न्यात का संवाद सम्पूर्ण ॥

卐 आंधा के ज्ञान की कुण्डलिया 卐

आंधो आंधो मत कहो, आंधो ओ नही होय। आंधो से नर जक्त में, राम न सूजे कोय॥
राम न सूजे कोय, संत नगर में आया। भेद न बूजे जाय, अंध वे कहिये भाया ॥
सुखरामदास आंधा तिके, संत न चिने कोय। आंधो आंधो मत कहो, ओ नही आंधो होय ॥ १ ॥

म:फ: है कि इन्हें अंधा मत कहो, अन्धे ये नही है, अन्धे तो वे है जो रामजी की भक्ति करने वाले संत नगर में आये है, उनसे भेद नही पूछते है। म:फ: है कि अन्धे वे है जो संतो को पहचान कर उनका ज्ञान धारण नही करते है।

भाट जाट हर बाणियां, तीनां एक स्वभाव। प्रथम पुन्न बंछे नही, करे तो करमा चाव॥
करे तो करमा चाव, देह का किरतब देखे। आठुं पोर गुलाम, ताही बामण कर लेखे॥
सुखरामदास अे पुन्न तो, हर बेमुख का डाव। जाट भाट और बाणियां, तीनां एक स्वभाव ॥ २ ॥

जाट भाट और बाणियां तीनो का एक स्वभाव होता है, पहले तो पुन्न करना ही नही चाहते है व करते भी है तो फल की इच्छा से करते है। आठ पोहोर काम में आने वाले को ही ब्राह्मण समझकर दान देते है। म:फ: है कि ऐसा पुन्न तो जो परमात्मा से बेमुख है उनके काम है।

<u>कवित्त</u> : अला रीत सुख अेह, काम ईन्द्री घट जागे। अेइ पिंगला मांय,
नार अंग सु अंग लागे॥ सुणो सुखमण रीत, लिंग भग संगम हुवा।
लोथ पोथ नर नार, नेक भर रहया न जुवा॥ सुखराम उलट जन पोचसी,
सेजस ले सुख जाय। सीख ज्ञान केता फिरे, से रूलिया जग मांय ॥ १ ॥

इडा नाडी में ऐसा सुख आता है कि घट में काम की जाग्रति होती है, पिंगला में ऐसा सुख

आता है जैसा स्त्री के शरीर से शरीर मिलता है, सुखमणा में लिंग भग के संगम में जैसा सुख आता है वैसा ही अनुभव होता है, जैसे स्त्री पुरूष आपस में लोथ पोथ होकर जरा से भी अलग नही रहते है ऐसे ही जो साधक बंकनाल में उलटकर इडा, पिंगला, सुखमणा में भजन कर ब्रह्मण्ड में पहुंचते है और उन्हें आनन्द आता है उसका वे ही अनुभव करते है, दूसरे जो ज्ञान को सीख सीख कर कहते है वे तो रूलते फिरने वाले जैसे है।

मत से हीण खर स्याल, सूर कवो बुध ज्ञानी। कोलु चलणी चीच,
और बागल मत जांणी॥ इजगर समान भूत, रीछ पितर मत होई।
बन्दर मत गत जांण, मूठ छूटे नही कोई॥ धिग मत या संसार की,
विष जुग तज्यो न जाय। शिवरण कर सुखराम के, तज कूकस विष खाय ॥ २॥

जो ज्ञानी बुद्धिहीन है वे गदहे स्याल सूरडा व कवे की तरह है। कोल्हू व चलनी सार को छोडकर छिलको को रखती है, चीचडा गाय के थन में रहते हुये भी खून ही पीता है। दूध नही पीता है। बागल की गति को देखो जिस मुंह से आहार करती है उसी से निहार करती है। इजगर पडा रहता है। कुछ भी नही करता है, भूत रीछ पीतर ये सब दूसरो को दुख देने वाले है। बन्दर मुटठी में कोई चीज पकड तो लेता है परन्तु वापिस नही छोडता है। ऐसे ही संसारियो की बुद्धि है जो विषयो को नही छोडते है, उन्हें धिक्कार है धिक्कार है। म:फ: है कि भजन करने का काम करो। भजन को छोडकर विषयो में लगना ही कुकस खाना है।

मत से सूप सुण बाल, खीर कण लियो बिचारी। भंवर पेप पर बेस,
पूस तज बास अहारी॥ पंखी परमल जांण, आक में आमिल पावे।
खीर नीर कर साव, हंस मोती चुग खावे॥ शीप स्वाति कूं ले रहे,
खार समुद्र के मांय। धिग मानव सुखराम कह, भगत न परखी जाय ॥ ३॥

म:फ: है कि भक्ति करने वाले जनो की बुद्धि सूप याने छाजले की तरह होनी चाहिये। जो सार को पकडकर असार को छोडता है। बालक माता के स्तन से दूध पीता है। भंवरा फूस को छोडकर सुगन्ध पुष्प से ही लेता है। मधु मक्खी आक पर बैठकर रस ढूंढती है। पानी व दूध शामिल कर हंस के सामने रखने पर वह दूध ही पीता है और पानी को छोड देता है। हंस या तो दूध पीता है या मोती चुगता है। शीप खारे समुद्र में रहते हुये भी स्वाति की बून्द ही लेती है। उन मनुष्यो को धिक्कार है जो भक्ति की परीक्षा नही कर सकते है कि भक्ति आन की है या ब्रह्म की है।

॥ इति श्री आंधा के ज्ञान की कुण्डलिया सम्पूर्ण॥

卐 मूल प्राण उत्पति का अंग 卐

एक समय धर्मरायजी, बैठा पलक लगाय। मंछा देबी गेब सुं, कर में पीव ऊपाय॥
धर्मराय मन सोचियो, अब प्रसण है पीव। प्रसादी मोकूं दई, शिष जुगे जुग जीव ॥
प्रसादी पाया पछे, के जुग बीता जांण। जन सुखिया तब धरम कूं, गेब बाज हुई आंण ॥ १॥

एक समय धर्मरायजी ध्यान लगाकर बैठे हुये थे। परमात्मा ने मंछादेवी को गेबऊ धर्मरायजी के हाथ में प्रगट करी। तब धर्मरायजी ने मन में सोचा कि परमात्मा मेरे पर प्रसन्न है और युगो –

युगो तक जीवित रहने की प्रसादी दे रहे है। प्रसादी मिलने के बाद कई युग बीत गये तब धर्मरायजी को आकाशवाणी सुनाई दी।

एक समय धर्मराय, पलक सु पलक लगाई। मनछा देवी पीव, गेब सुं पास पठाई॥
धर्मराय मन हरक, पीव किरपा शिर किवी। जुगे जुग की आस, मोय प्रसादी दिवी॥
बोत जुग परले गया, बोत जुग जा होय। जन सुखिया तब धरम कूं, साहेब पूछयो जोय ॥ २॥

एक समय धर्मरायजी ध्यान लगाकर बैठे थे, परमात्मा ने इच्छा शक्ति को गेबऊ भेजा, धर्मराजी को मन में प्रसन्नता हुई कि परमात्मा ने मेरे ऊपर कृपा की है। युगों युगों से मैं आशा लगाये बैठा था वह प्रसादी मुझे दी है। इसके बाद कई युग आगे बीत गये और अब भी बहुत युग बीत रहे है तब धर्मराय को परमात्मा ने पूछा।

अलख निरंजण देव, गेब मुख बोले बांणी। मनछा देवी सूंप, धरम सुं कह बखाणी॥
हम सूंपी तम चीज, नाय तुम काय बणाया। धर्म कह कर जोड, पीव प्रसाद जुं पाया॥
ज्यां डाकी विकराल, ब्रह्म ले आवाज सुणाई। जन सुखिया तब धर्म कह, किम भुगतुं जाई ॥ ३॥

अलख निरंजण निराकार ब्रह्म आकाशवाणी द्वारा धर्मराय से बोले कि हमने इच्छा शक्ति को तुमको सौंपी थी, उस इच्छा शक्ति से तुमने कुछ नही बनाया, धर्मराय ने हाथ जोडकर कहा कि मुझे तो परमात्मा की तरफ से प्रसाद मिला है। तब फिर निरंजण निराकार ब्रह्म आकाशवाणी द्वारा तेज बोले कि इच्छा शक्ति को साथ लेकर उत्पति करो। म:फ: है कि तब धर्मराज ने कहा कि मैं इसका उपयोग कैसे करूं।

धर्मराय कर जोड, पीव सुं अरज सुणावे। हर बोल्या सो बैण, पीव खाली नही जावे॥
किस विध भुगतुं जाय, सोच मन मांय उपायो। हर किरपा कर भेव, धर्म कूं आण सुणायो॥
तिरगुण कर पैदास, जीव बोहो भांत उपावो। जन सुखिया घड मांड, उलट भांडा तुम खावो ॥ ४॥

धर्मराय ने निरंजण निराकार ब्रह्म से हाथ जोड कर प्रार्थना कि आपकी आज्ञा मुझे स्वीकार है परन्तु मैं इच्छा शक्ति का उपयोग कैसे करूं, यह मेरी समझ में नही आ रहा है। निरंजण निराकार ब्रह्म ने कृपा कर धर्मराज को यह भेद आकाशवाणी द्वारा सुणाया कि तीन गुण याने ब्रह्मा, विष्णु, महादेव को पैदा कर कई प्रकार के जीवों की उत्पति करो। म:फ: है कि संसार की रचना कर तुम उसका लय करो।

भुगतो जाय सराप, बैण सांचो कर ल्यावो। होय ऊजियागर भुगत, फेर पाछा तुम आवो॥
धर्म कह मुख बैण, मोय बल नांय गुसांई। तिरगुण किम प्रकाश, करम गत कहिये सांई।।
साहेब गेब आवाज, धरम कूं भेव सुणायो। जन सुखिया ईतबार, धर्म कूं तोय न आयो ॥ ५॥

या तो उपरोक्त प्रकार से उत्पति एवं लय करो अन्यथा श्राप भोगो। मेरे वचनो को सच्चा करो और मेरे कहे माफिक कार्य कर के वापिस आवो। धर्मराय ने मुंह से बोलकर प्रार्थना की हे नाथ मेरे में यह शक्ति नही है। ब्रह्मा विष्णु महेश इन तीन गुणो को कैसे पैदा करूं, यह समझाइये। तब परमात्मा ने धर्मरायजी को आकाशवाणी द्वारा त्रिगुणो को उपजाने का भेद सुनाया। म:फ: है कि इस पर भी धर्मरायजी को विश्वास नही हुआ।

शैष पांख को कंवल, तोय में एक बताई। धर्मराय हुवा लीन, और सब कह पलाई।
निरबल बल तज जाय, तोड पासे जब लिवी। साहेब अंतर आय, धरम पर किरपा किवी॥

ओऊं शब्द विचार, धरम बोल्या इम बाणी। जन सुखिया तब सगत, गरभ में कह बखाणी ॥ ६ ॥

म:फ: है कि हजार पांख के कंवल में एक शब्द बताया। धर्मराय उसमें लीन हो गये और सब कह बताया। जब अपने बल को छोडकर निर्बल हो गये तब धर्मराय के अन्तर में शब्द ब्रह्म की जागृति की कृपा करी। आत्म चेतन द्वारा शब्द का विचार कर धर्मरायजी बोले तब शक्ति ने छिपे तौर पर यह कहा।

ओऊं शब्द प्रकाश, सगत कूं पास बुलाई। तुम हम अेकई होय, मांड की करां ऊपाई।
इत ऊत शब्द प्रकाश, बिच एक पुरूष उपाया। तां लेणे के काज, ऊठ दोनुं तछधाया॥
बोल्या शिशु ले तांण, हात शमसेर संभाई। जन सुखिया कह बैण, तुम संग चलूं न भाई ॥ ७ ॥

आत्म चेतन के आधार से शब्द का प्रकाश हुआ जब शक्ति को पास बुलाया और कहा तुम हम दोनो साथ होकर संसार रचना का उपाय करें। इधर उधर शब्द का प्रकाश हुआ तब बीच में एक पुरूष पैदा किया, उसको लेने के लिये दोनो उठकर दौडे तब पैदा होने वाले बालक ने हाथ में तलवार लेकर जोर से कहा कि मैं तुम्हारे साथ नही चलूंगा। ऐसा महाराज फरमाते है।

गाड करे बोहो भांत, संक माने नही कांई। तब सोचो मन मांय, बुध या अकल उठाई॥
कर बिच सायब ध्यान, नार को अंग बणायो। बदले दिवी जाय, आय तब ठौड रहायो॥
करी लाज बोहो भांत, आंण गुंगट सो ताणे। जन सुखिया वा नार, इण्ड को मरम बखाणे ॥ ८ ॥

बहुत उपाय करने पर भी उस बालक ने शंका नही मानी। तन मन में सोचकर बुद्धि एवं अकल से विचार किया तथा परमात्मा का ध्यान कर हाथ के बीच में स्त्री का शरीर बनाया। जब स्त्री को उसे ले जाकर दी तब वह एक जगह ठहरा। उस स्त्री ने बहुत भांति से लज्जा करी व घूंघट निकाल लिया और उस स्त्री ने इण्ड के मर्म का बखाण किया।

करम छाह वो ऊपाय, बेण सो केहे सुणावे। सुध बुध करे बखाण, पिव शरण गत जावे।।
चारू फेर मिलाय, रीज पुरी ले जाइये। सुध बुध कह विचार, सब श्रेष्ठ तुम रहिये॥
चला मन ध्याय, जिणस सूं आण बताई। जन सुखिया तब मन, गुंसाई ये बोत सराई ॥ ९ ॥

करमो के नाश होने का उपाय बचनो द्वारा कह कर सुणाया। सुध बुध से बखाण कर परमात्मा की शरण में गये। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव व शक्ति को पुन: मिलाकर खुशी से पुरी में ले जावो। सुध बुध से विचार कर कहा कि तुम सब अच्छे रहो। अपने मन से ध्यान कर चला और चीज को आकर बताई। म:फ: है कि मन से परमात्मा ने बहुत अच्छा बताया।

अन्ड कियो प्रकाश, चहूं दिश दिशा बधाई। चोडो क्रोड पचास, कोस जोजन ठेराई॥
ता मध बिस्त्र प्रकाश, नाभ में कंवल चलायो। ब्रह्मा उतपत जांण, पोप डंडी हुय आयो॥
धायो बोहो प्रकार, गेल की छेह न आवे। ब्रह्मा तब सुखराम, उलट पाछो फिर आवे ॥ १० ॥

अण्ड ने चारो दिशा में अपना प्रकाश फैलाया वह प्रकाश पचास क्रोड जोजन तक फैला हुआ था। उस प्रकाश में विष्णु प्रकट हुये व विष्णु की नाभी से कंवल चला, ब्रह्मा की उत्पति कमल की डंडी में हुई, ब्रह्माजी कमल की डंडी में ऊपर चले परन्तु डंडी का थाह नही आया। म:फ: है कि ब्रह्माजी तब पीछे फिर गये।

पाछो दौडयो बहुत, छेह कहूं पार न आवे। ब्रह्मा कंपे शरीर, मन धीरप नही खावे।
गेब बाज तां होय, भेद तां मांय सुणाया। ध्यान बिध सिखाय, पिव देखण में आया॥

जब मन आई धीर, शिष्ट सब मांय दिखावे। ब्रह्मा तब सुखराम, समझ ऊंचा चल आवे ॥ ११ ॥

ब्रह्माजी पीछे भी बहुत चले परन्तु कोई पार नही आया तब ब्रह्माजी का शरीर कांपने लगा व मन में धैर्य नही आया। तब आकाशवाणी द्वारा भेद बताया व ध्यान करने की विधि सिखाई तब ध्यान में परमात्मा के दर्शन हुए, तब ब्रह्माजी के मन को धैर्य हुआ तो कंवल की डंडी में सारा संसार दिखने लगा। म:फ: है कि ब्रह्माजी तब ऊंचे चले आये।

ब्रह्मा सोच विचार, शिष्ट मनसोबा किया। तब भृगुटी प्रकाश,
शिव ले दरशण दिया॥ सगत किया प्रकाश, विष्णु कूं ऊवाज सुणाई।
परणो मोकूं आय, पास मैं रहूं लुगाई॥ विष्णु सूरतकर जोड,
सगत कूं बैण सुणायो। जननी कह सुखराम, विष्णु शरणागत आयो ॥ १२ ॥

ब्रह्माजी ने सोच विचार कर सृष्टि रचने का मन में विचार किया, तब भृगुटी के प्रकाश में शिवजी प्रकट हुये, अब शक्ति ने प्रकाश किया तो विष्णु को यह आवाज सुनाई दी कि आकर मेरे से ब्याह करो। मैं तुम्हारी स्त्री बनकर रहूंगी, तब विष्णु ने हाथ जोडकर शक्ति से कहा कि आप मेरी माता है और मैं आपकी शरण में हूं। म:फ: है कि यह बात कही।

कियो भस्म तिण बार, जाय ब्रह्मा कूं लिया। परणो मुझको आप, राज सब तुमको दिया॥
ब्रह्मा सोच मन मांय, बैण सो कह सुणाई। तुम माता मैं पूत, परणु किस विध आई॥
जब नटियो तिण बार, बिस्न ब्रह्मा कूं मेटया। शिव पे आई धाय परण, संग रहस भेला ॥ १३ ॥

तब शक्ति ने विष्णु को मिटा दिया और ब्रह्मा के पास जाकर बोली कि मेरे से ब्याह करो, यह सब राज तुमको देती हूं। ब्रह्माजी ने सोच विचार कर शक्ति से कहा कि आप मेरी माता हो, आपका पुत्र हूं मैं विवाह कैसे कर सकता हूं। जब ब्रह्माजी ने ब्याह करने से ना कर दी तब ब्रह्मा को भी विष्णु की तरह मिटा दिया व शिवजी के पास आकर बोली कि मेरे साथ ब्याह करो, आप और हम दोनो साथ रहेंगे।

शिव सोच्यो मन मांय, विस्न ब्रह्मा सा लिया। मैं नटियो तिण बार, मोय कुंई चुरण किया॥
तामें क्या सुख होय, धुंधसुं अकल ऊठाई। परणुंगो मैं आय, वचन वाचा दो आई॥
मेरा वचन निभाय, बैण खाली नही जावे। जन सुखिया कर जतन, सब परणे कूं आवे ॥ १४ ॥

शिवजी ने मन में सोचा कि शक्ति ने ब्रह्मा विष्णु को मिटा दिया मैं इनकार करूंगा तो मुझे भी मिटा देगी, इसमें क्या सुख मिलेगा। अपनी बुद्धि से यह अकल खडी की, मैं तुम्हारे से ब्याह जरूर करूंगा। तुम मुझे वचन दो कि मैं तुम्हारे वचनो को निभाउंगी व तुम्हारी आज्ञा खाली नही जायेगी। म:फ: है कि शिवजी ने कहा ऐसा प्रयत्न कर सब ही ब्याह कर लेवे, शक्ति से कहा।

केहे मुख वचन विचार, बैण तेरा सब मानुं। शिव कुं सगत सराय, मरद तोही कूं जानू॥
शिव कह वचन ऊचार, बप दुजो तुम धारो। ब्रह्मा विस्न ऊपाय, शिष्ट को करो पसारो॥
दोन्यु कर पैदास, रूप दुजो धरआई। जन सुखिया शिव उठ, पल्लो गेह बांह संभाई ॥ १५ ॥

शक्ति ने शिवजी से कहा कि मैं तुम्हारे सब वचनो को मानूंगी और तुम्हें सबसे बलवान समझूंगी। शिवजी ने शक्ति से कहा तुम दूसरा शरीर धारण करो और ब्रह्मा विष्णु को प्रकट कर सृष्टि पैदा हो वैसा ऊपाय करो, तब शक्ति ने ब्रह्मा विष्णु को प्रकट कर दूसरा शरीर धारण कर लिया। म:फ: है कि तब शिवजी ने उठकर शक्ति की बांह पकड ली।

खेंच चल्या शीव धाय, सगत लारे शिव आवे। आप अटल ऊण जाग, विस्न कूं पास बुलावे॥
ब्रह्मा के संग होय, बिस्न के संग पठाई। आप रहे में जुद, कला सूं नार होई आई॥
दियो बताय शिष्ट, ऐसी बिध करिये। अप तत सुखराम, ताय सूं धरणी धरिये ॥ १६॥

शिवजी शक्ति की बांह खींचकर चलने लगे और शक्ति पीछे पीछे आने लगी, शिवजी ने उस स्थान पर ठहर कर विष्णु को पास बुलाया, ब्रह्मा विष्णु के साथ शक्ति को भेजा, आप शिवजी भी वही रहे। शक्ति अपनी कला से स्त्री बन गई तब कहा कि सृष्टि की रचना इस विधि से करो, जल तत के ऊपर पृथ्वी को ठहरावो।

गुंज कियो तब आय, तत्त को भेव बतायो। शिष्टकरण सब जीव, पीव से धरम ले आयो॥
हम तुम सब इण मांय, पांच आपन मज होई। जीव करण विस्तार, सगत सुं संग सजोई॥
लख चौरासी जात है, जीव अनन्तां होय। जन सुखिया इण पांच को, बप बणायो जोय ॥ १७॥

तब सबने मिलकर सलाह करी। तत्त का याने ब्रह्म का भेद बताया। सृष्टि में सब जीवों को पैदा करने का उपाय पारब्रह्म ने धर्मराय को बता दिया। हम तुम सब इसी में है। पांच तत्व अपने में है। जीवो का फैलाव याने विस्तार करने के लिये शक्ति को साथ लेकर यह संसार की रचना का काम किया। चौरासी लाख योनियो में असख्य जीव है। म:फ: है कि देखो पांच तत्वो से यह शरीर बनाया है।

बाय लाय गेह हाथ, जीव जब जामण दिया। लख चौरासी बप, बाय के शरणे किया॥
पांच तत प्रकाश, मांड तब जीव ऊपावे। बाय तेज अप धरण, गिगन से पवन ले आवे॥
ब्रह्मा कूं सब सूंप, घडण हुवाला सब दिया। जन सुखिया शिव सगत, बिस्न प्रवाण किया ॥ १८॥

वायु तत्व से व तेज तत्व से जीवो को बनाया। चौरासी लाख योनियो के शरीरो को वायु तत्व के शरण में किया। पांच तत्वो का प्रकाश देकर संसार के सब जीवो को पैदा किया। वायु, तेज पानी, पृथ्वी व गगन से हवा को लेकर व इन सबको ब्रह्मा को सौंप कर ब्रह्मा को पैदा करने का काम सौंपा। म:फ: है कि शक्ति ब्रह्मा विष्णु ने इस बात को स्वीकार किया।

जब ब्रह्मा निरधार, और टेको नी कोई। सगत श्याम मिल जांण, ब्रह्मजल सगत समोई।।
मंड है जल पर जांण, ताय शिर कोरूम बैठा। धरण शेष शिर होय, शेष कोरूम पर बैठा॥
ऐसा जतन बणाय, ताय पर शिष्ट पसारा। धरमराय सुखराम, समझ कर वचन विचारा ॥ १९॥

जब ब्रह्माजी को किसी का आधार व सहारा नही था। शक्ति और श्याम ने इसको जाणा। ब्रह्म जल में शक्ति समा गई। सारी पृथ्वी जल पर है। जल पर कच्छपजी बैठे है। पृथ्वी शेषनाग के शरीर पर है और शेषजी कच्छपजी पर बैठे है। ऐसा जतन बनाकर उस पर सृष्टि का पसारा किया है। सतगुरु सुखरामजी म:फ: है कि तब धर्मरायजी समझकर वचन बोले।

तीन लोक चवदे भवन, किया देव सब ठाम। धरम ब्रह्म को बैण ले, सुध बुध सारया काम॥
त्रिगुण घड प्रकट करी, आप शकल शीर ताज। ब्रह्मा शंकर बिस्न कूं, दिया मंड का राज॥
तीन औधा पेरिया, फिर सगती प्रवाण। त्रिगुण में सुखराम कह, तीन देव की आंण ॥ २०॥

तीन लोक चवदह भवन बनाये व सब देवताओ को जगह की जगह बनाये। धरमराय ने ब्रह्म की आज्ञा के मुजब सुध बुध से सब काम किये। त्रिगुण याने सतोगुण रजोगुण तमोगुण को घड कर प्रकट किया। ब्रह्मा विष्णु महादेव को ब्रह्मण्ड का राज दिया और आप धर्मराय सब के ऊपर

रहे। तीनो को शक्ति के बराबर ओधे दिये। तीन गुण सतो, रजो, तमो गुण में तीनों देवताओं की आंण है।

इतनी ऊतपत जांण, ब्रह्मा सुं धरम बखाणी। ब्रह्मा कूं अब सूंप, धरम बोले सत बाणी।
दिया सब ले साज, जीव शरणागत किया। ऊंच नीच का न्याव, धरम अपने वश लिया॥
तीन देव कूं सूपिया, लख चौरासी जीव। जन सुखिया रिछया करो, ऊलट मिलावो पीव ॥ २१ ॥

धरमराय ने ब्रह्माजी से जगत की उत्पति का बखाण किया। ब्रह्मा को सब सौंप कर धर्मराय सत्य वचन बोले। सब तरह के साधन देकर जीवों को ब्रह्मा की शरण में कर दिये व अच्छे बुरे कर्मो का फल भुगताने का काम धरमराय ने अपने पास रखा। तीन देव याने ब्रह्मा, विष्णु, महादेव को चौरासी लाख योनियों के जीवो को सौंपकर कहा कि इनकी रक्षा करो व इन्हें परमात्मा की प्राप्ति करा दो।

ब्रह्मा वेद ऊचार, जीव कूं गेल बताई। बिसन पोख प्रवाण,
भीड पर सहाय कराई॥ शिव लिया पण आय, जोग का भेव बताया।
खण्ड ब्रह्मण्ड का सूत, पिण्ड के मांय दिखाया॥ सगत कहयो तिण बार,
जीव सब शिव मिलेगा। जन सुखिया इण पास, कयो जीव ज्युं एक न रेगा ॥ २२ ॥

ब्रह्माजी ने चार वेदो का उच्चारण कर जीवों को परमात्मा की प्राप्ति का रास्ता बताया। विष्णु जीवों की पालना करने लगे। कष्ट आने पर सहायता करने लगे। शिवजी ने जीवो को अष्टांग योग का साधन बताया जो खण्ड ब्रह्मण्ड में है वो ही पिण्ड में है ऐसी विधि बताई, शक्ति ने कहा सब जीव ब्रह्म में मिलेंगे।

सगत लिया पण आय, रूप ऐसी विध किया। ब्रह्म गेल चुकलाय,
जीव अपने वश लिया॥ माया बोहो प्रकार, पांच ले बांण बणांवे।
जे कोई मुरडर जाय, बाण सुं मार गिरावे॥ पास्यां बोहो विध गुथियां,
जीव गेहेण के काज। तीन लोक सुखराम कह, जहां तहां माया राज ॥ २३ ॥

शक्ति ने अपना स्वरूप इस तरह का बनाया कि सब जीवो को अपने वश में कर लिया। जीव ब्रह्म प्राप्ति का रास्ता भूल गये। शक्ति ने कई तरह की माया रच डाली शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध ये पांच बाण शक्ति ने बनाये है, जो जीव ब्रह्म प्राप्ति के रास्ते जाते है तो शक्ति बांण से मार गिराती है। जीवो को अपने वश में करने के लिये कई तरह की फासियां गूंथ डाली। म:फ: है कि तीन लोक में जहा तहां माया का राज है।

जीव दिया ऊलजाय, पीव लग जाण न पावे। सगत आप वश कीन, निशो दिन नाच नचावे।
तीन देव सो मांय, अलख बिन बचे न कोई। देह धर ऊपजे जीव, शकल माया वश होई॥
सुरपुर नरपुर नागपुर, माया किया बणाव। जन सुखिया निरखे सबे, हरक हरक ले आव ॥ २४ ॥

सब जीवों को माया शक्ति ने ऐसे संसार में ऊलजाये है कि कोई भी परमात्मा की प्राप्ति नही कर सकते। सब जीवो को शक्ति ने अपने वश में कर लिये है, रात दिन अपनी इच्छानुसार नाच नचाती है। तीनो देव ब्रह्मा, विष्णु, महादेव ये भी माया शक्ति के वश में है, निरंजन निराकार सतचेतन ब्रह्म के सिवाय माया से कोई नही बचा, जो भी जीव शरीर धारता है वो सब माया के वश में हो जाता है। देवताओ के लोक में, मनुष्य लोक में व पाताल में सब जगह माया का पसारा

है। म:फ: है कि सब खुशी से माया के वश हो जाते है।

निराकार निरबाण, दूसरे बिभे चलायो। थी जो आशा धार,
शिष्ट करणे कूं आयो॥ ओऊं शब्द ऊचार, सगत सोआद बणाई।
इण मिल इण्ड ऊपजाय, देव तीनो घड मांई॥ जलबन कर पैदाश,
पुरूष सो पांच ऊपायो। जन सुखिया ओ मूल, बिस्न ब्रह्मा बिन गायो ॥ २५॥

तब निरंजण निराकार परमात्मा ने उनकी जो इच्छा थी कि सृष्टि की पुन: रचना हो। इसलिये ओऊं शब्द का उच्चारण कर परमात्मा ने शक्ति को बणाया। निराकार ने इण्ड पैदा किया व इस इण्ड से ब्रह्मा विष्णु व महादेव को पैदा किया। जल वनस्पति व पंच तत्व से पुरूष पैदा किये। म.फ. है कि यह मूल उत्पति ग्रंथ ब्रह्मा व विष्णु के बिना कहा है।

मूल प्राण प्रतीत, अलख है आद गुसांई। गुरु बिन लखे न कोय, श्याम रमत सब मांही॥
सतगुरु बिन आधार, निरख नेणा नही सूजे। भरम रया सब जीव, पीव गेलो नही बुजे॥
सतगुरु धर अवतार, जीव कूं आण जगावे। ऊपराड़े की गेल, ताय हुय हंस ले आवे ॥ २६॥

मूल में जो पांच तत्व में जो प्राण प्रतीत हो रहे है वो उस अलख अविनाशी का ही अंश है। वही श्याम सब घट में रम रहा है। लेकिन उसको ओधाधारी गुरुदेव के बिना लख नही सकते। इन नैत्रो से उसको लख नही सकते। सभी जीव माया व ब्रह्म में उलझे हुये है। परमात्मा में मिलने का रास्ता नही सूझता। उसके लिये परमात्मा ऐसे ओधाधारी सदगुरु को भेजते है तो जीवों को ज्ञान के द्वारा जगाते है। खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड का छेदन करा कर के हंसो को परमात्मा में मिला देते है।

मूल प्राण अेतो कयो, सुणो शकल चित लाय। भिन्न भिन्न अरथ विचार कर,
सांच गहो जन आय॥ जांथे ऊतपत ऊपनी, सो करतार बखाण।
ऊली देखा भूल में, जहां तहां खेंचा तांण॥ पूरण पुरा गुरु मिले,
मूल कहे सब आय। जन सुखिया तब जीवां का, भरम करम सब जाय ॥ २७॥

म:फ: है कि मैंने मूल प्राण उत्पति ग्रन्थ कहा है, उसको सब चित लगाकर सुणो, इस ग्रन्थ में भिन्न भिन्न अरथ का विचार करो। भक्ति करने वाले जन सत्य को धारण करो। जिसने इस जगत को रचा है वो सृष्टि करता है। ऊली देखा भूल में याने ब्रह्मा, विष्णु, महादेव व अवतारो की भक्ति में लगकर ब्रह्म प्राप्ति के ज्ञान को भूल रहे है। इसमें जहां तहां वाद विवाद है। परमपद की प्राप्ति किये हुये पूर्ण सतगुरु के मिलने पर ही मूल प्राण उत्पति का सब बखाण करते है। म:फ: है कि जब ही जीव के सब भरमों करमो का नाश होता है।

ब्रह्मा को ऊतपत ऊरे, इतनी परे बखाण। अे बंधण पेली बांध, जब प्रगट प्रवाण॥
ब्रह्मा सुं कासब भयो, चवदे नार बिणाय। चार खांण प्रकट करी, शकल जीव जुग माय॥
राज ब्रह्म को कर है। करत जुग मध सुखराम, नाम बरण नही धर है ॥ २८॥

जिस रीत से ब्रह्माजी का शरीर बना इसी रीत से पंच तत्व व तीन गुण से सारी सृष्टि बनी। ब्रह्माजी से कश्यप जी हुये, जिनके चौदह स्त्रियां हुई। उन्होंने चार खान में जगत के जीवों को बांधा। मूल में यह सभी उसी परमात्मा के हुक्म का पालन कर रहे हैं। उस परमात्मा का कोई नाम, वर्ण, व रूप नही है।

इति श्री मूल प्रांण उत्पति का अंग सम्पूर्ण॥

卐 कुण्डलिया छुटकर 卐

पांच नांव करतार का, पांच जगत का होय। पांच नांव गुरु पद का,
समझे बिरला कोय॥ समझे बिरला कोय, मोख ही बिरला पावे।
सतनाव बिन नांव, सरब ऊपज खप जावे॥ सुखराम कहे नर समझ रे,
ज्ञान दिष्ट कर जोय। पांच नांव करतार का, पांच जगत का होय ॥ १ ॥

परमात्मा के पांच नाम आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी है। और इन पांच परमात्मा के नाम से ही जगत में पंच तत्व का शरीर बना और उपरोक्त पंच तत्व के शरीर से ही गुरुपद की प्राप्ति कर सकते है। इसको बिरला ही समझते है। और मोक्ष भी बिरला ही जाते हैं। सतनांव के बिना बाकी सब नाम से जन्म मरण नही मिटता। म:फ: है कि हे मनुष्यों समझकर ज्ञान की दृष्टि से देखो ये उपरोक्त पांच नांव करतार के हैं व पांच जगत के है।

कहो राम को नांव, बिस्न को मोहो बतावो। परमेश्वर को नांव, कहो साहेब को भाई॥
कहो साहेब को भाई, शिवजी को कहो नांव। सोझ ब्रह्मा को ल्यावो, निराकार को नांव॥
कहो सगती को ल्याई, सुखराम कहे सतस्वरूप को।
सोजर नांव बताय, कै अणभै कथनी छाड नर, मेरो शिष होय आय ॥ २ ॥

महाराज प्रश्न करते है कि राम का नाम बताओ, मुझे विष्णु का नाम बताओ, परमेश्वर का नाम बताओ और हे भाई साहिब का नाम बताओ, शिवजी का नाम बताओ, ब्रह्मा का नाम ढूंढकर लावो। निराकार का नाम बतावो। ढूंढकर शक्ति का नाम लाओ। महाराज फरमाते है कि सतस्वरूप का नाम ढूंढकर लाओ नही तो अणभै कथनी छोडकर मेरे शिष्य बन जाओ।

दोय ज्ञान दोय मत है, च्यार पंथ तेतीक। दोय धारणा है सत, से पकडो मन जीत॥
से पकडो मन जीत, तीन बैराग कहावे। इणी सुधमन राख, प्रेम सूं साहेब गावे॥
से हंसा सुखराम कह, भोजल जासी जीत। दोय ज्ञान दोय मत है, च्यार पंथ तेतीक ॥ ३ ॥

एक ज्ञान ब्रह्म प्राप्ति का व एक माया प्राप्ति का, ये दो ज्ञान है। एक ऋषि मत व एक संत मत ये दो मत है और चार पंथ है, एक तीन लोक में रहने की व एक मोक्ष प्राप्ति की ये धारणा सत है। मन को वश में करके इन्हें धारण करो। तीन बैराग तीबर, मद व ज्ञान ये तीन है। इस तरह मन लगाकर प्रेम से भजन करने से म:फ: है कि वो इस भवसागर से पार हो जाते है।

कवित्त : जो मल चकवे होय, जोर इधको तां मांही। रहन विभासुं जांण, सेठ घर माया कवाही॥
सिद्ध पीर अवतारस, वचन जीते सो जाणे। सरब जीत जुग मांय, ताय कूं राम पिछाणे॥
यूं चकवे सुखराम केह, संत जके वे होय। अज्ञाद शब्द मुख ऊचरे, ज्ञान जीत कहूं तोय ॥ ४ ॥

म.फ. है कि यह ने:अक्षर चकवा रूपी पहलवान है और इसका जोर इधका है, यह आत्मा को उस के: पद में ले जाता है, वहां की उस लोक की बातें सुनाता है। रैन यानि रात्रि में चकवा चकवी का संग नही करता। दिन में संग करता यानि नर शरीर है दिन। इसी में यह ने:अक्षर रूपी चकवा आता है और आत्मा रूपी चकवी को वापस जहां से आता है वही ले जाता है यह जोर इधका है। जैसे जगत में रहन सहन व वैभव से जाना जाता है कि इसके घर में माया है। वो सेठ कहलाता है, सिद्ध पीर अवतारों के पास वचन सिद्ध का ज्ञान होता है। इन सब की जानकारी रामजी

को होती है। म.फ. है कि जिनके ने:अक्षर रूपी चकवे का संग है वो संत है। अज्ञाद शब्द यानि वो चकवारूपी ने:अक्षर उस देश की बातें चकवी यानि आत्मा को बताता है। यह सब काम अणभै ज्ञान से जीता जाता है।

सो सुण चकवे शब्द, शब्द सब ही कूं जीते। जीमो बरण अठार,
रिध सो खांत न चितै॥ ज्ञान गम अग्याद, सोई सब सूं सुण न्यारी।
सो सुण चकवे ज्ञान, सरब की बुध पच हारी॥ सुखराम कहे सब सांभलो,
सो पद केवल होय। ज्यां माया की जड़ नही, सो चकवे कहूं तोय ॥ ५ ॥

म.फ. है कि ने:अक्षर रूपी चकवा जो शब्द कहता है और आत्मा रूपी चकवी सुनती है और उस शब्द के कारण शरीर में पांच विषय पच्चीस प्रकृतियां को जीतकर आत्मा उस शब्द का संग करती है और शब्द के कारण शरीर में रोम रोम में प्रफुलता आ जाती है, जैसे बारिश में धरती पर अठारह वनस्पति खिल जाती है। फिर वो भक्ति करने वाला जन, मन में किसी प्रकार की रिद्धि सिद्धि का चितवन नही करता है। केवल ज्ञान अगाध है, वो सब से न्यारा है। वो चकवे का ज्ञान संसारियो की बुद्धि के परे है। म:फ: है कि हे नर नारियों सुणो, सो केवल पद है। उसमें माया नही है। वो ने:अक्षर रूपी चकवा कहता है।

बूजत हूं एक ज्ञान विचारा, ज्ञानी हुवे सोई कान धरिजे।
जीव सो वश किणे गेह राख्या, ताहि को जाब सबाब करिजे॥
नीचे कूं ऊंच मिले किम मोजा, ऊंचो किम घेर रसातल दीजे।
सोच विचार कह सुखदेवजी, जीव को खोज विचार ज्यूं कीजे ॥ ६ ॥

म:फ: है कि हे ज्ञानियो मैं एक ज्ञान का विचार पूछता हूं। ज्ञानी होवे तो कान लगाकर सुणो, जीव को किसने वश में करके रखा है, न्याय करके जवाब दो, नीची योनि से ऊंच योनि कैसे मिलती है व ऊंच को नीची योनि कैसे मिलती है। इस तरह सोच विचार कर जीवों की खबर बताओ।

कहोजी जीव कीणे वश डोले, खाय पिये सोई कोण के सारा।
करणी काम सबे सुख सम्पत, किम मिले सब अरथ विचारा॥
जीव के वश है कन नांही, करणी काम सबे जुग लारा।
यूं सोच विचार कहे सुखदेवजी, से अर्थ करे सोई गुरु हमारा ॥ ७ ॥

म:फ: है कि हे ज्ञानियो जीव किसके वश में होकर डोल रहे है याने कई जूण धारण करते है और उन सब जीवो को खाना पीना किसके सहारे मिलता है, करणी काम सुख सम्पति कैसे मिलती है, विचार कर अर्थ बताओ कि करणी काम सुख सम्पति जीव के वश है या नही, सो सोच विचार कर यह अर्थ बताओ, ज्ञान से अर्थ बताने पर मेरे गुरु पद देश के वासी कहलावोगे।

उत्तर : म:फ: है कि हे ज्ञानियो करणी कर्म उपासना के वश में जीव डोलता है याने कई योनियो में भटकता है। शुभ अशुभ करणियो के सहारे जीव को खाना पीना मिलता है, और नर देही में आकर शुभ करणी करने से सुख सम्पति मिलती है। नर देही के बिना जितनी भी योनिया है वे सब भोग योनिया है। इसलिये करणी काम सुख सम्पति उन जीवो के वश में नही है, अगर नर देही में आकर केवल्य ब्रह्म की भक्ति कर लेता है तो करणी काम सुख सम्पति का संग छोडकर

के:पद आ:पद के देश का वासी बन जाता है और जन्म मरण मिट जाता है।

॥ इति श्री कुण्डलिया छुटकर का संवाद सम्पूर्ण ॥

卐 अनन्त श्री सुख सम्राट सतगुरु सुखरामजी महाराज की जीवणी 卐

दोहा : गुजर गोड पंचारिया, संत सुखदेवजी नाम। भरत खण्ड मारू धरा, बास बिराही गाम॥
जन्म बरस तियासे लागता, चेत मास गुरुवार। समत अठारे सो तियोतरे, पहुंता मोख दुवार ॥

जन्म १७८३ मोक्ष १८७३ गुजर गोड पंचारिया बिराही वाला गोपालजी, गोपालजी का बेटा रघुनाथजी, रघुनाथ का खेताजी, खिवाजी, दुधाजी, दुधाजी का आइदानजी, सांवताजी, आइदानजी की जोडायत थिरपाल उपाध्याय, कनीरामजी कुडी वाला की बेटी बगतुबाई जिनके सुखरामजी महाराज व भाई तुलछाजी, सतगुरु सुखरामजी की जोडायत पेली सांख्या की पलुं ज्यां का किशनाजी व दुजी रतनाजी की पन्ना ज्यां का सुजाजी बगतरामजी, मानजी, तिजी परणी जो धर्मराज महाराज की भेजोडी मरतलोक में आई। महाराज का सत संगत में जो भी आवता जिणां ने मनाई करती, गाल्यां काढती और कोई रोटियां करता के पानी नाख कर ईस्तु बुजा देती और गाल्यां काढकर बोलती कि थे अठे क्यों आया हो, म्हाने कमाय खावण देवोला के नांही।

अथ सुखरामजी महाराज का जन्म का वर्णन : सतगुरु सुखरामजी महाराज की देही को जन्म सवंत १७८३ चेत शुक्ल ९ नोमी गुरुवार पुष्य नक्षत्र दिनांक ४.४.१७२६ का १-२-६-१-२-२६ ने हुवो।

रेखता : संत सुखरामजी घर द्विज के जन्मया, वेद गत छाड निज नाम ध्याया।
भगत के काज भगवान मुझ भेजिया, हंस चेतावणे काज आया॥
ब्रह्म दरबार सुं मोहर परवानगी, अणभै बांच सुणाय देवुं।
जुग में जीव कोई आण कर भेंटसी, काल का मुख सुं काढ लेवुं॥
ताहि में फेर तिल मातर मत जाणज्यो, राम गुरुदेवजी शीष म्हारे।
दास सुखराम हर हुक्म सूं आवियां, शरण का जीव कूं राम तारे॥

कुण्डलिया : बरस तियासे लागते, चेत मास गुरुवार॥
तीथ नमी ९ पख चानणो, सुख जन्मया संसार।
सुख जन्मया संसार, संवत सतरासो मांही। जम घर ऊपज्यो सोग, नरां घर बटी बधाई॥
समत अठारा सो तियोतरे, पोहता मोख दुवार।

सतगुरु सुखरामजी महाराज रो जीव गरभ में नही आयो जिणारो वर्णन सतगुरु सुखरामजी की विगत करण वाला, महाराज गर्भ में नही आया करके तथा तीन बार वर्णन कर दियो, महाराज रो जीव गर्भवास में नही आयो, गर्भ वास में जीव दूसरो हुतो, वो जीव जन्मया पछे ऊणां देही की हांसली सारी टलती ऊतरती तब एक बुढी मालणी हासली मसल ठिकाणै बैठाय देती। एक दिन हासली टल गई, उतर गई, जद उण दिन वा बुढी मालणी गांव में ही नही मिली, जिणसु महाराज

रा माता जी बगतु बाई वां बुढिया हांसली ठिकाणे बिठाय देती, जिणी मुजब महाराज री देही को गलो पकड कर हलायो, जिण सु गला की नसा टूट गई, वो जीव निकल गयो, देही वा मरतक हो गई, मरतक देही ने थोडी बार लेय कर बैठा रहा, पिछे उण देही में महाराज को जीव प्रवेश कर गयो और शरीर में चेतना आय गई। पिछे गला के सोनो शंख शहद में घस घस कर लगाया। जिण सुं सांवल तो होय गयो पिण नसा तुटोडी रही, गला के बारे जिवणी बाजुं गाठा बंध गई, तिकी गांठा में दोय मोटी और एक गांठ छोटी ही, गांठा थेट ताई रही तकी बारे दिसती ही, आ बात माताजी के मुंडे सुणी और गांठा हाथ लगाय कर देखी।

अथ चार गुरु के पद : प्रभुजी मैं किसका शरणा धारूं, भोलप मांय किया गुरुचारी॥
कौन तज किस बिन सारूं॥ टेर॥
किरपा करी हमारे मांही, नांव केवल हरि आया।
तां पिछे गुरु भोलप मांही, लालदास कूं गाया ॥ १ ॥
बांणी कहूं रीत बोहो भारी, शब्द पिछम दिश ध्यावे।
तब मैं छाड लाल कूं दिया, बुज्या अरथ न आवे ॥ २ ॥
राम दास के दरशण आया, पूजा टेल चढाई।
तब जन राम बुजणे लागा, को गुरु तेरा भाई ॥ ३ ॥
तब मैं कहयो गुरु है बीरम, निज पद मोहि बताया।
मेरे रित बणी है ऐसी, मैं परखावण आया ॥ ४ ॥
जब जन रामदासजी बोल्या, रीत पकी है थारी।
यांको भेव अग्या सुण लिया, बहोत बणेगी भारी ॥ ५ ॥
बीरमदास यांही का चेरा, ईसा भेद मुज दिया।
जब मैं जाय सुणी भाई ऐसी, रामदास गुरु किया ॥ ६ ॥
बुज्या बात बीरमजी खिज्या, जवाब मुझको दियो।
मुजको करे ढेड को चेलो, दगो रामदास कियो॥ ७ ॥
चारी गुरु इसी विध किया, सुणो संत सब कोई।
अडवी पडी न्याव सब किजे, सतगुरु कहो कुण होई ॥ ८ ॥
मेरे बस कछू अब नांही, बात गई है फैली।
हर जन साध संत सुण साहेब, राम करे सो व्हेली ॥ ९ ॥
मैं मत हीण बुध सुण ओछी, अकल नही तन मांही।
कहे सुखराम रखे ज्यां रहूंला, सुणो हो आद गुसाई ॥ १० ॥

महाराज सुखरामजी ने बालपणा में समत १७९१ की साल में केवली भगवंत आप ही हरि रूप धारण कर आये, सतगुरु को गुण उंणारो लाग गयो, जठा पिछे भोलप में गुरु लालदासजी दादूपंथी मेलाणा वाला ने गुरु बनाया, कारण सगला घर का गुरु लालदासजी होता, जिणांसु महाराज केवली सतगुरां का प्रताप से बाणी करणे लाग गया। अणभै होय गई, शब्द पिछम दिशा ने बंकनाल के रास्ते दोडने लाग गयो, जरां लालदासजी ने पुछणे सारू गया, पूछा जिसका अर्थ लालदासजी को आया नही, जरां लालदासजी ने छोड दिया। एक दिन महाराज आपके नानेरां कुडी

पधारया, उठे भजन करता हुतां महाराज के गिलमी को ध्यान हुतो। एक दिन बीरमदासजी करणी सूं छिप्ये जावता हा, महाराज सुखरामजी ने भजन करता देखकर ऊंट पर बैठा ही कयो कि मरदडा खेत तो गणो चोखो सुधारयो, पण बीज की गम कोनी, ऊंट पर बैठा ही हाक मार कर इतनी बात बोल्या। जरां महाराज सुखराम जी सुनकर दौड कर ऊंट के आडा फिर गया, पूछो बीज को भेद बतावो। जरां बीरमदासजी बोल्या अबार तो मैं छिप्ये जावूं हूं, कहकर छिप्ये रवाना हो गये, जावती बगत कयो मैं पाछा आवती बगत फेरू मिलसा, जिणा दिन सुं महाराज उणा ठिकाणे रोजीना बैठकर ध्यान करता, उडिकता, बीरमदासजी पधारिया जरा गुरु धारण करया।

<u>रेखता</u> : मरूधर देश में गांव कुडी बसे, संत सुखरामजी जहां भगत किवी।
समत अठारा सो बरस चौबीस में, मास असाढ हरी शरण लिवी॥
वार गुरुवार सुण पख सो सुध थी, तीथ सो तीज तां दिन होई।
लिख के नांव हिरदे ऊर धारियो, सुणो प्रणाम सब संत लोई॥

संवत १८२४ का असाढ सुद ३ गुरुवार महाराज के ध्यान लाग गयो, जद परखाणे सारू खेडापे रामदास जी कने आया, जरां रामदासजी कयो रीत पकी है थारी। पण याहं को भेव अग्या सुण लिया बोहोत बणेगी, थाके गुरु कुण है, जरां सुखरामजी महाराज कयो म्हारे गुरु बीरमदासजी है, जरां रामदासजी कयो बीरमदासजी अठा का ही चेला है, इण तरह झूंठ बोलिया, जरां सुखरामजी महाराज रामदासजी ने गुरु करया, इण तरह चार गुरु हुवा, महाराज ने आकाशवाणी में भगवत कहयो, काट मती काट संत भगत भजन कर आव मुज पास ही। समत १८०८ की साल महाराज मारवाड सुं गेंवु ल्यावण तांई गुजरात गया, साथे और भी कुछ गांव की गाडिया थी, आती बगत नरबदा के किनारे पगोत्या की बाबडी में गया, लोटो भर कर पीछा आया। बाहार आये तो गेबीदासजी गेबाऊ मिल्या, जिणां सु महाराज गेबीदासजी मः सुखरामजी महाराज ने जलपावण को बोल्या, महाराज मांय ने सु मोटो लोटो भर कर लाया तिको पाय दीनो, दूजी बारको लोटो भी पायदीनो और तीजो बार को लोटो भर कर लाया, वो भी पी गया, चौथी बार महाराज जल को लोटो लाया जब बारे गेबीदासजी मिल्या नही, जद महाराज उठे ही बैठ गया, साथ वाला महाराज ने चालणे को बोल्या तो महाराज कहयो हमां तो चाला नही, अठे ही रेवस्यां, जरां साथ बाला बोल्या आपकी गेवुं की गाडी व बैल कुण ले जावसी, जरां महाराज बोल्या गेवुं की गाडी लुटाय देवो और बेलां की नाथा खोलकर छोड देवो, हम तो चाला नही, पण साथ वाला महाराज ने समझायकर विराही ले आया, या बात समत १८०८ मगसर बदी ७ गुरुवार की है, महाराज को प्राक्रम महाराज आप खुद बतायो, लोग बोले है कि आप की बढाई आप करणो नही, पण महाराज आपको प्राक्रम आप नहीं बतावता तो आपां ने मालूम किस तरह पडती, महाराज आप बतायो तो भी लोग समज्या नही, महाराज नही बतावता तो आपां ने मालूम कांई पडती कि महाराज ऐसा जबरा हा।

<u>बिठलराव के संवाद की साखी</u> : मैं आयो इण कारण भाई, सो प्रगट सुण जग के मांही।
नेःअँच्छर खांडो सुण होई, यो नांव ब्रह्म को कहे न कोई ॥ १ ॥
सो नेःअंच्छर दे मुझ तांई, सतगुरु भेज्यो या जुग मांही।
आत्म हंस जाय के लावो, पार ब्रह्म के लोक पठावो ॥ २ ॥

भाषा: मैं जगत में इस कारण से आयो हूं सो परघट सुण लो, ने:अँच्छर खांडो सुण होई जैसे राजा को खांडो परणबा ने जावे। जब ले जावे तो कठे ही तो राजा आप परणीज ने जावे है और कठेई राजा आपको खांडो साथ भेज देवे, ऊण खांडा सु फेरा खायकर आयोडी राणी और परणीयोज्डी राणी बराबर होवे है, कमी ज्यादा होवे नही, जीण मुजब ने:अँच्छर कयो तो जिणां रो अँच्छर नही, नांव रूप नही, ऐसो नांव रूप सु न्यारो ब्रह्म नांव कोई केवे नही, ऐसो हमने ने:अँच्छर खांडो देकर सतगुरु की पदवी जैसे बाईसराय की पदवी देकर बिलायत सुं अठे राज करणे ताई गवर्नर बाईसराय भेजे है। जिण मुजब जगत में सतगुरु की पदवी देकर जगत में हमां ने भेज्यो है और जीव तारणे को ओहदो दियो है कि आत्म हंस जाय के ल्यावो, पारब्रह्म के लोक पठावो। जीवां ने तारणे को ओहदो दियो, ओहदो देयकर जीव तारण ने भेज्यो है।

अनन्त क्रोड आगे जन आया, आत्म हंस ब्यावणे भाया।
सोई रीत हमारी होई, ब्रह्मा रीत और कहूं तोई॥

आगे भी अनन्त ही संत आत्म हंसो को इस ज्ञान को धारण कराने के लिये आये हैं। वो ही ज्ञान मैं देने के लिये आया हूं। इस तरह ब्रह्माजी का ज्ञान सृष्टि की उत्पति का है। और मेरा ज्ञान सृष्टि से अलग करने का है।

कुण्डलिया : अणभै हेला देत हूं, सुण लिज्यो निज दास। ब्रह्म लोक की चाह व्हे,
सो आज्यो मम पास॥ सो आज्यो मम पास, ब्रह्म के मांय मिलावुं।
जतन करूं बोहो भांत, संग कर ले मैं जावुं। सुखराम हंसा के कारणे,
देह धारी जुग बास। अणभै हेला देत हूं, सुण लिज्यो निज दास॥

महाराज बोले है कि मैं जीवा के वास्ते मिनखा देही धारण करी हूं और जगत में बास करयो हूं, कोई के ब्रह्म लोक की चायना हुवे वे जीव म्हारे कने आवो तो ब्रह्म सुं एक मेक कर दूं और साथे रहसू। आ मैं अणभै की बात बोलुं हूं।

सुखराम जीव सुलझाय के जम सु लेवू छुडाय,
मैं सतगुरु हूं आद का, आत्म का गुरु कवाय।
मेरी महिमा अगम है, क्या जाणे जग माय,
क्या जाणे जग माय, काग बुद्ध ज्ञानी सारा।

म:फ: है कि जीव बार-बार जन्म मरण से दुखी हो रहे है मैं उनको यह केवल्य ज्ञान समझाकर इनका यह दुख मिटा दूं क्योंकि आदि अनादि से मैं ही सतगुरु हूं, आत्मा का गुरु कहलाता हूं। मेरे इस ज्ञान की महिमा यह जगत वाले जानते नहीं है। सब ज्ञानी अपनी अपनी पक्ष की बातें करते हैं इनकी बुद्धि कागले जैसी है।

साखी : यूं हंस मोसु मिलत ही, गीगन चढे कहूं तोय।

महाराज बोले है कि यूं म्हारा सुं जीव मिलसी तिकां मिल्या बरोबर गिगन में ब्रह्मण्ड में चढ जावे आ मैं तने केहू हूं करके महाराज बोल्या है।

साखी : सुखराम हंस मोकुं मिल्या, तांकू लांगू पार।

महाराज बोले कि जिका जीव म्हारा सूं मिल गया है तिका जीवां ने पार लगाय देवूं।

साखी : मैं आयो संसार धार, कारण इण सोई। सतलोक नरनार, लेर जावुं सब कोई॥

सुखराम कहे सतस्वरूप की, आ आज्ञा मुज होय।
हंस हंस सब भेज दो, जुग में रखो न कोय॥

महाराज बोले है कि मैं संसार में आ मन में धार कर इण कारण आया हूं कि नर नार जो म्हारा सु मिलसी तिकां ने सतलोक सारा ही न लेय कर जाणे रे वास्ते आयो हूं, सतगुरु जी महाराज बोले है कि महाने सतस्वरूप की आज्ञा है कि संसार में जीव है तिकां सब जीवां ने भेज दो और जग में कोई ने राखो मतिना, पण महाराज सूं जीव मिले और मेरी शरण में आवे जरां भेजूं।

काल के संवाद की साखी : हम कूं सायब यूं कहयो, मरतलोक में जाय।
काल मार सुखराम के, लिज्यो हंस छुडाय॥

ऊण दिन सायेब यूं कहयो कि मरतलोक में जाय कर काल ने मार हटा कर काल कने सूं संसार का सारा जीवां ने छुडाय लीजो।

साहेब के सुखराम कूं, काल मरे किण रीत। मैं तुम में गुण मेल सुं, तुम हंस लासो जीत॥

सतगुरु सुखरामजी महाराज ने साहिब कयो कि काल काई रीत सुं मरे तिको काल ने हटाणे को गुण मैं तुम्हारे में मेल देसूं, तब तुम काल कने सुं जीत कर छुडाय लासो।

मोख पंथ बहतो कियो, मैं सतजुग में आंण।
अनन्त जीव सुखराम के, लिया मोख दिश तांण॥
रात दिन पंथ बह रयो, निमक ढील नही खाय।
सुखराम जम के शीष पर, लात देय हंस जाय॥
अेता हंस हम तारिया, त्रेता जुग देहे धार।
सुखराम क्रोड निनावणे, हंस किया सो पार॥
क्रोड जीव मोसुं मिल्या, द्वापर में जो आय।
सुखराम मोख कूं भेजिया, चौडे तबल बजाय॥
मोख पंथ जमराय के, शीर ऊपर होय जाय।
रात दिन सुखराम के, हंस रहया शीर गाज।

हरजस की साखी : साधो भाई आनन्द पर गुरु होई। मात पिता दोनुं कूं तारूं, जे गम पुछे मोई।

महाराज कहवे है कि मां बाप दोनू ने ही तार देवु जो म्हाने भेद बुजे तो अठे प्रश्न हुवे है कि माता पिता कौन है जीणां को उतर पूरण ब्रह्म पिता है मेरा। अंछया मात कहावे कि अब दोना कूं मोक्ष पहुंचावे जे मुझ शरणे आवे। पूरण ब्रह्म है सो तो म्हारो बाप है और अंछया तिकी म्हारी माता है। अब देखो महाराज को प्राक्रम पूरण ब्रह्म अंछया शक्ति भी म्हारे शरणे आय जावे तो उसको भी मोख पूगाय देवूं।

तीन लोक में जे नर नारी, सब मेरो कुल होई।
मां बाप सेत सब नर नारी, जे गुरु धर्म पकड़े कोई॥

पूरण ब्रह्म और अंच्छा मात ही और तीन लोक के शरीर में जो नर नारी जीव है सो सब म्हारो ही कुल है। तिका सारा ही मां बाप सुधा सब नर नारी ने जो म्हारो गुरुधरम राके और शरणे आवे तिकां ने मोख भेज देवूं।

बांदा ओ जुग मोय न जाणे इण हरजस की साखा और अर्थ :

मैं सतगुरु रो खासा चाकर, सनद दई गुरु मोई रे।
अनन्त हंस मैं ले उधरूंला, सुण लिज्यो सब कोई रे ॥

मैं सतगुरु सतग्यान रो खासा चाकर हूं, जिण सुं म्हाने गुरुपणा की सनद दिवी है। जिण मुजब वकील ने वकीली को, पटेल ने पटेली को, पटवारी ने पटवारी पणा को सनद सरकार में सुं देवे है। जिण मुजब गुरू पणा की सनद म्हाने दिवी है। सो मैं अनन्त हंसा ने लेकर उधरूंला, कारण जीव उधारणे को ओहदो म्हाने ही है, सो सेंग जणा सुण लिज्यो।

चार जुगां में केवल भक्ति, मैं हंस आंण जगाया रे।
सब हंस लेर मिलूंगा गुरु सुं, आनन्द पद में भाया रे॥

चार जुगा में मैं जीवां ने केवल भक्ति बताय कर जीव जगाया तिका सारा हंस लेकर आ:पद में गुरां सुं मिलसूं।

केइक भेज दिया मैं आगे, जुगजुग हंसा भाई रे।
बोहोत हंसा की आज्ञा मोने, ताते रहूं जग मांही रे॥

म: सता रूप से बोल रहे है कि मैंने जुग जुग में कई हंसो को मोक्ष में भेज दिया। मेरे को बहुत हंसो को मोक्ष में भेजने की आज्ञा है इसलिये मैं जगत में देही धार कर आता रहता हूं।

साखी : केइक जीव आगला मिल्या, सुण मो पासे आवे रे। दर्शण करत नांव प्रकाशे,
रग रग तन सुख पावे रे॥ नवा हंस परमोदूं जुग में, जिण कूं बोहो दिन लागे रे।
उनका भरम शकल सो भाग्या, नांव घट में जागे रे॥

भाषा : केइक जीव म्हारा सुं आगला भव में मिल्योडा अब म्हारा कने आवे ज्यांके महारा दर्शण करयां बरोबर याने कि अणभै ज्ञान सुनाते ही नांव को प्रकाश होय जावे, वां जीवां की नाड नाड नस नस सुख पाणे लग जावे और नवा जीव म्हारा कने आवे उणां ने उपदेश देता देता शब्द को परकाश होवे वा जीवा ने ज्यादा दिन लागे और आगला पेली भव में मिल्योडा जीवां ने देर लागे नही। नवां जीवां का सब भरम भाग्या सुं ऊणा घट में भी नांव जागे, भरम भाग्या बिना नांव जागे नही।

साखी : केवल भक्त कोई नही जाणे, भरमा भरमी गावे रे।
पार ब्रह्म लग निर्गुण पूंगा, फिर फिर पाछा आवे रे॥

भाषा: आ मैं बतावुं तिकी केवल की भक्ति तो कोई जाणे नही, भरमी जीव भरम तीरथ, व्रत तपस्या, बैराग, गीता, भागवत, गुण गावे भक्ति करे और कोई निर्गुण की भक्ति करे तिका पार ब्रह्म लग पुग जावे, तिका पारब्रह्म लग पुगोडा जीव फिर पाछा आय जावे, पारब्रह्म सु आने की रीत है, पेली यो जीव पारब्रह्म सु आयो है ऊण मुजब फेर आय जासी।

साखी : सुरगुण निरगुण करकर भक्ति, सब ऋष पच पच मुवा रे
आवागवण मिटी नही कोई, पद सुं रह गया जुवा रे॥

जगत में कई ऋषि मुनी सुरगुण निरगुण की भक्ति करकर के मर गये लेकिन उनका जन्म मरण नहीं मिटा और वो उस पद केवल पद से अलग रह गये उन्हें वो पद नहीं मिला। क्योंकि उन्हें इस ज्ञान की गम नही थी।

साखी : मोकूं दया तुमारी आवे, सुण लिज्यो नर नारी।

सतस्वरूप की भक्ति बिना रे, फंद पडे सिर भारी ॥

म्हने थांकी दया आवे नर नारी सब ही सुण लो, पारब्रह्म की भक्ति बिना बडो भारी फंद चौरासी को नरक को जन्मनो मरणो गर्भवास करमा का भोग थांके मांथे पडेला।

साखी : करणी बिना गिगन दूं चाड़ि, अेक पोहर पल मांही रे।
मुद्रा कुंची कोई नही आसण, तोही जग जाणे नांही रे।

महाराज जीवा ने कह रहया है कि थांकी करणी बिना प्राण वायु और शब्द गिगन में चढाय देवुं तिको भी एक पोहर में नही पलक में चढाय देवुं, जिण में कोई खेचरी भुचरी मुद्रा को काम नही और कोई आसण साजने को काम नाही और जोगाभ्यास की कुंची को काम नांही, बिना साजण ब्रह्म में चढाय देवुं तो ही जगत म्हाने जाणे नही।

साखी : पच पच मरे जोगेश्वर सारा, तोई गढ चढयो न जावे रे।
मो संग अनन्त सहज में चढ गया, तोई इतबार न आवे रे॥

आगे भी कवि, हरि प्रबुध, पिपलायान अत्रि ऋषि बगेरे जोगेश्वर पच पच मर गया पण किण सु गढ पर चढीज्यो नही और म्हारे संग अनन्त जीव सहज में चढ गया तो भी लोगा ने इतबार आवे नही।

साखी : पच पच चढे गिगन में ऊंचा, सेज समाध न पावे।
मो संग चढे जिकारे भाई, आठ पोहोर घरणावे॥

खेचरी, भुचरी, मुद्रा सुं, कोई जोगाभ्यास सुं पच पच कर गिगन में भरगुटी तांई ऊंचा चढ भी गया तो ऊणा सहज समाध पाई नही और म्हारा संगत सुं चढ गया जिकां जीवां के आठ पोहोर शब्द ब्रह्मण्ड के ऊपर में गरणाया करे है।

साखी : सता समाध रात दिन लागी, मो संग चढिया ज्यारे रे।
पवन खेंच पच पच चढिया, ऊतरत नही कुछ बारा रे॥

म्हारा संगत सु चढ गया ऊणा रे रात दिन सता समाध लाग जावे, स्वांसा ने खांच खांच पच पच कर चढ गया तो ऊणां ने ऊतरता ने कुछ बार भी नही लागे।

साखी : ज्ञानी तिके मांड में सारा, कोई नही जीतण पावे रे।
एक साख में सबको पकडूं, तोई इतबार न आवे रे॥

संसार में सारा ज्ञानी ब्रह्म ज्ञानी और वेदान्ती कोई भी म्हारा सु जीत सके नही, कारण एक साख में सबने पकड लेवुं तो भी इतबार नही आवे।

साखी : मैं तो भक्त करूं ऊण पद की, ताकूं ईस न पायो रे।
समझ बिना कोई नही माने, सुणियां ईचरज आवे रे॥

मैं तो ऊण पद की भक्ति करूं हूं जिकाने ईस महादेवजी को भी लादो नही और थाने ई बात की कोई ने समझ नही, जिणां सु थे मानो नही और थाने बात सुनकर इचरज आवे, कारण वे आ बात आगे देखी सुणी नही और जाणे नही।

साखी : मोख मोख कहता सब कोई, सो ओ मारग होई रे।
सो प्रकट किया हम जुग में, निरख परख ल्यो सोई रे॥

थे मोख मोख सारा ही जणा बोलो हो जिको मैं ओ कहूं तिको मारग है, मोख मोख कहो हो

तिको मारग मैं जगत में प्रकट करयो, जिकाने देख लो और सारा ही परख लो।

साखी : अंध मुंध में महमा कर गया, सतस्वरूप की सारा रे।
गेल भेद पाया बिन बकिया, कोई नही ऊतरया पारा रे॥

मैं कहूं तिकी सतस्वरूप की महिमा तो आगे भी दूजा संत पेली हुयोडा कर गया, पण महिमा करी अंध मुंध में आप वे रास्तो और भेद सतस्वरूप को पायो नही, तो रास्तो और भेद पाया बिना पार किस तरह उतर सके।

साखी : बांदा यूं जग मोयन जाणे, अगम देश का मैं उपदेशी। ये माया रस मांणे ॥ टेर॥

महाराज बोले हरजी भाटी ने कहयो है जगत यूं म्हाने नही जाणे क्योंकि मैं अगम देश को उपदेश करूं हूं और जीव जगत का माया का भोग भोग्या चावे और म्हारे अगम देश का उपदेश में माया का चेन और माया का सुख नही है।

साखी : बांदा केवल भेद नियारोजी, सतस्वरूप आनन्द पद कहिये।
सो उपदेश हमारो जी ॥ टेर॥

महाराज हरजी भाटी न बोल्या मैं कहूं तिको केवल को भेद सबसुं नियारो है, मारो उपदेश सतस्वरूप आ:पद को है, तिको ओ म्हारो उपदेश है।

साखी : ब्रह्मा विष्णु महेश न पायो, ना अवतारा सोही।
सुर तेतीस शक्त ईन्द्रादीक, नेकन जाण्यो कोई।

आ मैं कह हूं जिको सतस्वरूप को ज्ञान ब्रह्मा, विष्णु महादेव ने और अवतारा ने भी लादो नही, तेतीस देव बसु रूद मरूत और शक्त ईन्द्रा दीक तो नेक जरा सो कोई भी नही जाण्यो।

साखी : ज्ञानी ध्यानी संत साध रे, ना जोगेश्वर पावे।
दुनिया शकल कौण गिणती में, शेष ब्रह्म लग ध्यावे॥

बिना इस केवल ज्ञान के भेद के जगत में ज्ञानी ध्यानी संत साध और जोगेश्वर को भी वो पद नहीं मिला तो फिर इन जनता की क्या कहें, शेष भगवान भी उसी ब्रह्म को भज रहे है, लेकिन बेकरी वाणी के कारण वो उस पद से दूर रह गये।

साखी : बंध मुक्त दोनो के आगे, मुगत रूप सुण होई।
ईहां लग शकल खबर ले आया, आगे न जाण्यो कोई॥

सारा ही बंध की और मुक्त तांई की बात जाणी और मुक्त रूप हो गया, अठा तांई की खबर लेकर आया पण इनके आगे की मैं कहूं हूं तिकी बात आ कोई बी जाणी नहीं अगाध बोध की।

साखी : आपो खोज समझ सो किजे, मैं उण में हूं भाया।
आगे हंस तार जन लेग्या, अब मैं तारण आया।।

ज्ञान रूप से म:फ: है कि समझ करके आपा खोजो, आगे जन जीवो ने तार कर ले गया जिण मुजब मैं भी जीवां ने तारणे ने आयो हूं। मैं तारणे वाला जना में हूं।

साखी : दरशण भेष शकल नरनारी, सब मो पासे आवो।
राव रंक सकल कूंई तारूं, या सत शरण संभावो।।

कोई भी जोगी जंगम सेवडा सन्यासी फकीर ब्राह्मण और भेषधारी जगत का मिनख हो, वो चाहे नर नारी हो, वो चाहे रंक कोई भी म्हारे कन आवो, आ मैं कहूं तिकी सत की शरण संभावो,

मैं सबने कहूं, तारण करवो चावो तिका म्हारे कने आवो।

साखी : चुको मती सत कर मानो, जे आनन्द पद चावो।
डाकर पडो जगत कूं छोडर, तो घट परचो पावो।

थाने आनन्द पद की चायना हुवे तो मैं कहूं तिकी बात ने चूको मतिना, जगत का दूजा फेल फितूरां ने छोडकर डाक याने कूदकर शरण लेय लेवो जद थाने घट परचो मिलेला।

साखी : जो विज्ञान कहूं मैं तुमको, तांकी समझ न मांही।

जो विज्ञान कह रयो हूं ऊण विज्ञान की समझ कोई में भी नहीं है, आ बात मारे कने ही है, दूजा में इण बात की समझ कोई में भी नहीं है।

साखी : अे तो सर्व हमेशा भाई, कुल ऊजियागर होई।
हम कुल छाड हुवा सतरूपी, रिध सिध रखूं न कोई।।

जगत में ब्रह्मा विष्णु महेश्वर शक्ति अवतार हुये वो कुल उजियागर यानि जगत में उनका नाम हुआ। मैं यानि म:फ: है कि मैंने माया के शरीर को छोड़कर सतरूप यानि उस पद में पहुंच गया और मैं रिद्धि सिद्धि भी नहीं रखता हूं।

साखी : गुरु तो पदवी हमारी कहिये, वे कुल राजा होई।
बिना भेद मोहि कोई ना जांणे, ज्ञानी पिंडत लोई।।

गुरु की पदवी और जीवों को तारने का ओदा महाराज का है। ब्रह्मा विष्णु महादेव तीन लोक के राजा मुजब है। लेकिन यह ज्ञानी पंडित और जनता को यह भेद मालूम नहीं है इसलिये यह मुझे नहीं जानते हैं।

साखी : मैं गुरुदेव शिष्ट सब ही का, जांण मां जांणो कोई।
मोसुं मिल्या अगम घर मेलुं, आंणद पद में सोई।।

मैं सृष्टि को गुरुदेव तारणे वाला हूं तुम जांणो चाहे मत जांणो। जो मारा सुं जीव मिलसी जिकां जीवां ने आनन्द पद में भेज देवुं।

साखी : मेरा अंग आद से ओई, जिऊं जग ज्ञान कहावे।
सत्तलोक कूं हंस पठावुं, जिऊं दुख ज्ञान न भावे।।

मेरा ओधा आदि अनादि से है जैसे जगत में ज्ञान कहलाता है। मेरे इस ज्ञान की शरण में आने वाले को मैं सतलोक का वासी बना देता हूं। लेकिन जैसे जगत में किसी को दुख नही भाता है ऐसे ही मेरा यह केवल्य ज्ञान लोगों को भाता नहीं है।

साखी : मेरो किसब कला सो आई, रीज मोज धन माया।
सतलोक में हंस पठावूं, ओ बिडद ले मैं आया।।

सतलोक में हंस भेज देणोओ तो हमारो बिडद है और जीवां रे सतलोक भेजने को मारो किसब है और या ही जीवां ने सतलोक भेजने की मारे कने जीवां के वास्ते धन माया है।

साखी : ज्ञानी बुद्ध मांही घट में लावो। सतस्वरूप ज्यां मैं सतगुरु हूं, तुम ओ भेद न पावो।।

ज्ञानी कहे तो वेदान्ती और ब्रह्म ज्ञानी ने महाराज केवे है थे ही घट में बुद्धि लाय कर देखो सत स्वरूप मिलाने को मैं सतगुरु हूं पण थे यो भेद जांणो नहीं।

साखी : गुरु तो पदवी हमारी आदू, सुण ज्ञानी कहूं तोई।

भोला जीव भेष सूं डरपे, यूं नहीं माने मोई।।

गुरु पदवी तो आदू पेली प्रथम की म्हारी है ज्ञानी थाने केवुं सो सुणो पण भोला जीव शरीर रूपी भेष सुं डरता माने नहीं।

साखी : बह्म लग इनकी बुद्ध नांही, जे मोकूं क्या जांणे।
पूरण ब्रह्म आप ही तिल भर, मोकूं नांही पिछाणे।।

जगत में ज्ञानी ध्यानी पंडितों की बुद्धि पर ब्रह्म तक की भी नहीं है तो उनके आगे केवल पद की क्या होगी, यह मेरे ज्ञान को नहीं जानते है। पूरण ब्रह्म का अवतार लेकर राम कृष्ण आते हैं वे भी इस ज्ञान को तिल भर भी नहीं जानते।

अथ तुलछाजी की बिगत : महाराज का बडा भाई तुलछाजी ने पण्डित हरिकिशनजी जो महाराज का मामा का बेटा हा, जो बडा पंडित हा, वे जन्म पत्री देखकर तुलछाजी ने कयो, कोई न मोत को कहणो तो नहीं, पण कहया बिना ठीक नहीं, कारण कहया सुं आदमी आपणी होशियारी में आय जावे, कांई करणो सो कर लेवे जिणा सुं तुमाने कहूं हूं, तुमारी मिती बार ने रात का सवा पोहर रात गया काल है, या बात सुनकर तुलछाजी घबराकर आपका गुरुलालदासजी कने मेलाणा जायकर या बात कही के म्हारे फलाणे मिति फलाणे दिन रात का काल आवसी, करके हरिकिशन जी कहयो है आ बात चुकेला नहीं, जिणा रो ऊपाय करो।

साखी : तुलसीदास जाय कर कही लाल कूं बात।
सुण हकीकत लालदास दिया कान पर हाथ।।

जद लालदासजी कान पर हाथ रखकर कहयो काल तो कोई सूं टले नहीं म्हारा सूं टले नहीं, जद तुलछाजी सतगुरु सुखरामजी म: कने आय ने रोयने आ बात कही के अब मैं कांई करूं, तब सतगुरु सुखरामजी महाराज बोल्या कांई हुवो, जरां तुलछाजी कयो मारो काल आय गयो, अबे कोई तीरथ जाइजे नहीं, आप कहो तो पोकरजी जावुं, आप कहो ज्यां करूं, तब सुखरामजी महाराज बोल्या।

साखी : हरिकिशन ऊपाध्याय तुजको कही काल की बात।
म्हारे कने रामचोकी तूं आजे ऊण ही रात।।

काल की रात म्हारे कने रामचोकी आय जाजे, जद हरिकिशनजी कयो तके दिन तुलछाजी रामचोकी सतगुरु सुखरामजी कने आय गया, जद सुखरामजी महाराज कार कढाय कर कार में तुलछाजी ने बैठाय कर बोल दिया।

साखी : म्हारी कढाई कार में निसंक बैठ जा मांय।
कोई आवे कुछ हुवे तोइ कार लोपणी नांय।।

कोई आवे तो सांस ऊसांस राम रटणा की कार बारे निकल जो मति ना बोलकर आप ध्यान में बैठ गया, अठी ने लारे ऐसी बात हुई काल आयो पिण कार में बैठोडा तुलछाजी पर कुछ जोर चाल्यो नहीं, जद तुलछाजी ने कार के बारे काढवा सारूं काल, सांप को रूप धार कर कांलिदी सांप बणकर तुलछाजी कानी आयो, पण तुलछाजी कार के बारे निकल्या नहीं, जिणां सुं उणारो जोर लागो नही, फण पटक्यो, फूंफाडो करयो पण तुलछाजी कार के बारे निकल्या नही, जद पिछो जायकर गोयरा को रूप धारण कर आयो और कार के बारे निकालने सारूं फूंकारो मारने लागो,

तो भी तुलछाजी कार के बारे निकल्या नहीं, कार के बारे निकलता तो ऊणा को जोर लाग जातो, तिजि बार नोहतो पिताम्बरयो सिंघ बनकर आयो पण कार के मायणे तो ऊणा को जोर लाग्यो नही, कार के बार बहोत सा डराया पण तुलछाजी कार के बारे निकल्या नहीं, जद काल गांव का ठाकुर तेजसिंगजी को रूप धर कर आयो और हाका मारने लागो, जद तुलछाजी बोल्या मैं कार के बारे आवुं नहीं, ठाकरा का रूप में आयोडो काल बहुत तकरार करी और बोल्यो गांव में आसी जद खबर लेसुं, म्हारो कयो नहीं माने जीरो मजो थन चखावुंला, नहीं तो आजा, पण तुलछाजी कार के बारे निकल्या नहीं, जद काल तुलछाजी का गुरु लालदासजी को रूप धरकर प्रसादी लेकर आयो और बोल्यो थारो आज अन्तकाल है सो थने प्रसादी देने सारूं आयो हूं, गुरां की प्रसादी जीव ने अंत में मिल जावे तो ऊणा जीव को भलो होय जावे, सो प्रसादी लेवो, पण तुलछाजी कार के बारे निकल्या नहीं, जद लालदासजी का रूप में आयोडो काल बोल्यो गुरां को प्रसाद लेणो चाय जे, नहीं तो थारो भलो हुवे नहीं, पण तुलछाजी कारके बारे निकल्या नहीं, जद काल विष्णु को रूप धरकर माथे मुकुट चार भुजा धारण कर शंख चक्र गदा पदम हाथ में धारण करके पितांबर बैजयन्ती माला पेर करके आयो और बोल्यो तुलसीदासजी तुम हमारे बैकुण्ठ चालो, हम खुद तुमाने लेवण आया हां, पण तुलछाजी कार के बारे निकल्या नही, जद विष्णु का रूप में आयोडो काल बोल्यो तुमा हमारे साथ चालो नहीं, आखिर तुमा ने काल याने जमराजआयने ले जासी जदा तो जावोलां, फेर कांई केवोला, इतनो कहकर क्रोड भुजा धर कर देखालो दियो, फेर उठा को उठे ही बिलाय गयो, लारा सुं काल को रूप धर भैंसा पर बैठकर हाथ में फांसी आवद लेय कर आयो और तुलछाजी ने बहोत डरायो, जद तुलछाजी कयो तुं कतरो करो कार के बारे निकलूं नहीं, और कार के बारे निकल्या बिना थारो जोर चालेगा नहीं, अठीने सतगुरु सुखरामजी महाराज समाधि के मांय ने ब्रह्म देश में जायकर पारब्रह्म कने सुं तुलछाजी ने आज नहीं लावे हुक्म लगवाय लियो, काल पर और पारब्रह्म के और महाराज के नीचे लिखा मुजब बात हुई तिकी महाराज आप खुद ही बोल्या।

साखी : हम सुं साहेब यूं कहयो, मरत लोक में जाय।
काल मार सुखराम कह, लिज्यो हंस छुडाय।। १।।
जब हम हर सूं आ कही, काल कहो कुण होय।
कहां उत्पत सुखराम कह, कर कृपा कहो मोय।। २।।

म:फ: है कि परमात्मा ने मुझ से यह कहा कि मृत्युलोक में जाकर काल को मार कर हंसो को काल के फंदे से छुडा लेना। जब मैंने परमात्मा से यह कहा कि काल कोण है कृपा कर मुझे यह बताओ कि काल की उत्पत्ति कहां से हुई है।

करता पुरूष बनावियो, हम अंच्छा कर जोय। सुखदेव सुक्रत काल रे, दोनो प्रगट होय ।। ३।।

ब्रह्म की इच्छा से दो पद बनाये, एक सतलोक तथा दूसरा होण काल का। यह दोनो प्रगट हैं।

जब हम हर सुं या कहीं, किस विध मारयो जाय।
काल तुमारो पोतरो, तब हम सब ऊण मांय।। ४।।

जब मैंने परमात्मा से प्रार्थना की के काल किस तरह मारा जायेगा, काल आपका पोता है तब हम सब काल में ही है।

साहेब के हम सुं भया, प्रगट पुरूष पचास। ज्यां में अमर एक है, सो जद तद मम पास ।।५।।

परमात्मा ने हमसे कहा कि जगत में पचासों तरह के ज्ञान प्रचलित हैं, और उनमें से एक ज्ञान से सतलोक की प्राप्ति हो जाती है। सो मेरे पास है।

सगत ए कइक तिस है, फेर बीस दस होय। ज्यां में अमर एक है, कह सुखदेवजी जोय ।।६।।

इच्छाएं कई तरह की होती है इच्छाओं की प्यास एक मिटती है फिर बीस दस और खडी हो जाती है। म:फ: है कि जो इच्छा अमर लोक में ले जावे उसको तूं जो ले यानि इसकी इच्छा कर।

साहेब कहे सुखराम कूं, मो बिन सब मर जाय।
दोय पुरूष नर नार ये, जद तद मांय समांय ।।७।।

परमात्मा ने महाराज से कहा कि मेरे सिवाय सब आने जाने वाले है। दोय पुरूष नर नार याने सुरत व शब्द मेरे में समाते है।

तुम जावो ऊण लोक में, डर मत राखो कोय। काल करम साहेब कहे, सेजा सब बस होय ।।८।।

परमात्मा ने कहा तुम मृत्युलोक में जावो, किसी तरह का डर मत रखो, काल व करम सब सहज में ही बस में हो जायेंगे।

अणभै फोजा संग लेहो, दस जोधा लो साथ।
फिर जावो उण लोक में, सुण सुखदेव जन बात ।।९।।

अणभै रूपी फोजे साथ में लेकर दस जोधा (मन, निजमन, बैराग, सूरत, निरत, लिव, बिरह, सुध, बुध, समता) साथ लेकर सुणो तुम उस लोक में जावो।

जन सुखदेव तब बोलिया, सुण हर बैण हमार। काल उलट मोकूं गहे, तो किम लासुं मार ।।१०।।

म: ने साहेब से प्रार्थना कि काल मुझको वश में कर ले तो मैं दूसरे को कैसे ला सकता हूं।

हंस गया सो बस गया, ऐसो हो बल मांय। मैं किण बल सुखराम के, हंस छुडावुं जाय ।।११।।

जो हंस वहां गये है सो सब वहां पर बस गये है। म:फ: है कि मैं किस बल से उनको छुडाकर ला सकता हूं।

साहेब कहे सुखराम कूं, काल मरे जीण रीत।
मैं तुम में गुण मेलस्युं, तुम हंस लास्यो जीत ।।१२।।

परमात्मा ने म: से कहा जिससे काल वश में हो जावे वो गुण मैं तुम्हारे में रख दूंगा जिससे काल को जीतकर हंसो को ले आवोगे।

दोय बस्त ऐसी धंरू, सुण हर के जन तुझ मांय। काल करम ये उलट के, पांव पडेंगे आय।।१३।।

परमात्मा ने कहा, हे हरि के जन तुम्हारे में दो गुण ऐसे रख दूंगा। वो दो गुण सूरत शब्द का ज्ञान है। जिससे काल व करम दोनों बस में हो जावेंगे, यही पांव पड़ना है।

साहेब मोकूं भेजियो, कल बल दे सब ज्ञान। माय बिचे लड़ पड़ी, मत धर मेरा ध्यान ।।१४।।

साहिब ने सब कला बल व ज्ञान देकर मुझे भेजा, माया कहती है मेरा स्वांस का ध्यान छोड ऊसांस का ध्यान मत करो।

मैं आया अे लोक में, जम की पड़ रही शूल।
हंस ऊलट और काग हुवा, गया पुरूष सो भूल ।।१५।।

मैं मृत्युलोक में आया क्योंकि हंसवृति आत्मायें बार-बार जन्म मरण में आ रही थी। हसंवृति

आत्मा अपना ब्रह्म सरूप भूल कर करमों की डोरी से बंध गयी और अपना ब्रह्म पणा भूल गयी।

जम हम सुं रोलो कियो, लड़ियो बोहो बिध आय।
सुखराम शब्द का जोर सुं, पकड़ लियो छिन मांय।। १६ ।।

जमराज ने वाद विवाद किया व बहुत विधि से लडा। म:फ: है कि सत शब्द के ज्ञान के आधार से उसको वश में कर लिया।

काल जाल सो मांडियो, पासा पसाया जोड़। सुखराम लोक तीनुं बंध्या, कोयन सके तोड़।। १७।।

काल ने करणी व कर्म रूपी जाल फैला रखा है। म:फ: है कि तीनो लोक करणी व करमों का फल भोगते है।

सुखराम काल बोहो हिकमती, छल बल मांय अनेक।
सोखी होयकर बस करे, दोखी होय कर देख ।। १८।।

म:फ: है कि काल में बहुत गुण है, ताकत है व अनेक छल बल है। वो पहले सुख देकर वश में करता है फिर सुख में कर्म करने के कारण उन कर्मो को भोगने में दुखी होना पडेगा।

काल ज्ञान कूं कथ रहयो, काल धन में लीन।
सुखराम काल में छल गणा, कोय न सके चीन ।। १९।।

ज्ञान करना भी काल के पद में है, धन भी काल के पद में है। म:फ: है कि काल में बहुत छल है उसको कोई नहीं जान सकता।

काल ऊलट महिमा करे, काल सिद्ध होय जाय।
सुखराम काल होय गरीब रे, घर में बैसे आय ।। २०।।

मुंह से महिमा करना व सिद्धाई बताना ये सब काल के पद में है। म:फ: है कि काल गरीब होकर घर में आ बैठता है।

काल अंग गुरु धरे, काल शिष्य होय जाय। सुखराम काल परचा देहे, द्रव दिखावे लाय ।। २१।।

जो गुरु करणी कर्म का ज्ञान देते है जो शिष्य उस ज्ञान को धारण करते है व परचा बताते है धन दिखाते है यह सब काल के पद में है।

काल क्रोड भुजा धर लहे, काल तन देवे मेट। काल बाज सुखराम के, धरे अगम की भेंट।। २२।।

काल क्रोड भुजा धारण कर लेता है, काल अपना रूप बदल कर आ जाता है। म:फ: है कि काल ऐसा बाज है कि उससे किसी भी रूप में भेंटा हो जाता है, जिसका किसी को पता नहीं रहता।

काल मन की सब कहे, काल अन्न नहीं खाय।
सुखराम त्रास दिखलाय के, जीव पकड़ ले आय।। २३।।

काल सबके मन की कह देता है, काल रोग लगाकर अन्न छुडा देता है। म:फ: है कि काल डर बताकर जीवों को पकड लेता है।

एक पुरूष के भेद कूं , काल न जाणे कोय। और शकल सुखराम के, सब बिध हाजीर होय ।। २४।।

सतशब्द की विधि के सिवाय सब ज्ञान काल के पद में है।

ईखर शब्द पर ब्रह्म को, भेद दियो मैं आण।
सुखराम काल जब सरड के, रहयो करारी तांण ।। २५।।

अक्षर ब्रह्म यानि परब्रह्म परमात्मा का नाम राम है उसको विधि से रटने का मैंने भेद बता

दिया। म:फ: है कि जब काल गुस्सा करके अपनी ताकत का बखाण करने लगा।

एक फेर सतशब्द की, नेक सुणाई रेश। सुखराम काल सुण सरवणा, रहयो मून गेह बेस ।। २६ ।।

सतशब्द के ज्ञान की जरा सी बात बताई तो म:फ: है कि काल कानो से सुण कर मून पकड़ कर बैठ गया।

जब हम फेर संभाल के, कहयो नांव को नांव।
काल बक्यो सुखराम कह, कियो जेर सब गांव।। २७।।

म:फ: है कि जब हमने नांव के नांव याने सतशब्द ने: अंच्छर का ज्ञान दिया तो काल सब तरह से इसके बाबत शरीर में विचार करने लगा।

जब हम हरफ सुणाविया, दरगा का सुण ल्याय। काल धूज सुखराम के, रोवण बैठो जाय ।। २८ ।।

जब हमने के: पद की प्राप्ति का ज्ञान सुनाया तो म:फ: है कि काल धूजने लगा व रोने लगा।

काल कहे करतार हूं, मो बिन अवर न कोय।
किऊं झूंठी तम कह रहया, कहां सत साहिब होय ।। २९ ।।

काल कहता है मैं ही करता हूं, मेरे सिवाय दूसरा कोई नहीं है, क्यों तुम झूंठ बोल रहे हो, मेरे सिवाय सत साहिब कहां है।

नबी अल्ला सतराम रे, साहेब पुरूष कहाय। अे सब मेरा नाम है, क्यों तूं भूलो जाय ।। ३० ।।

वाणी के आधार से ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, शक्ति, अल्ला, सतराम या जो भी अवतारों के नाम है वहां तक काल कह रहा है मेरी पहुंच है। इस बात को तुम क्यों भूल रहे हो।

रसणा बोले बैण रे, श्रवण सुणले कोय। काल कहे वे मन चिंतवे, जब लग मेरा होय।। ३१ ।।

जबान से वचन बोलना, कानो से सुनना, मन से चिंतन करना, काल कहता है ये सब मेरे नाम है।

तीन लोक में को हो नहीं, के मो सिर करतार।
काल कहे मैं जाण करूं, सोई सोई होणे हार ।। ३२ ।।

तीन लोक में मेरे सिवाय कोई करतार नहीं है, मैं चावुं वो ही करता हूं, वही होता है।

मैं मारूं मैं तार दूं, मैं सुख देवूं अनेक। काल कहे मोही बाहिरो, करता कोई न देख ।। ३३ ।।

काल कहता है कि मैं मारता हूं, मैं ही तारता हूं, मैं अनेक सुख देता हूं, मेरे सिवाय कोई करता नहीं है।

सुरग नरक मैं भेज दूं, मैं दूं मुगत पठाय। हारे को जीताय दूं, अे गुण है मुज मांय ।। ३४ ।।

काल कहता है मैं स्वर्ग में नरक में भेज देता हूं, बैकुण्ठ में भेज देता हूं, हारे हुये को जीता देता हूं, सब प्राक्रम मेरे में है।

जीवतडा मैं मार दूं, मुवा देवुं जिवाय। मो बिन अवर न कोय है, मत बद मोसुं आय ।। ३५ ।।

काल कह रहा है कि जिन्दा को मार देता हूं, मरे हुये को जिला देता हूं, मेरे सिवाय दूसरा कोई नहीं है, मेरे से वाद विवाद मत करो।

गेब सेज में प्रकट हूं, सब का सारूं काज। काल कहे तिहूं लोक में, सब शिर मेरा राज।। ३६ ।।

काल कह रहा है कि मैं गेबऊ सहज में प्रगट हो जाता हूं। और सब के काम भी सार देता हूं। काल कह रहा है कि तीन लोक में सब जगह मेरा राज है।

काल कहे होणहार हूं, तीन लोक के मांय। अब करता कहो कोण है, कितहूं आवे जाय।। ३७।।

काल कह रहा है तीन लोक में जो हो रहा है वह सब मेरे से हो रहा है। अब बताओ मेरे सिवाय कौन करतार है, किधर से आता जाता है।

जन सुखदेव तब बोलिया, होणहार सो झूंठ। साहिब हुवा न होवसी, ईडग अडोलग मूठ ।। ३८।।

म:फ: है होने वाला वह मिटता है वह असत है, साहिब न तो हुवा है, न होता है, वह सत है, इडग है, अडोल है।

तुम निरणे मुंडे कियो, होणहार मैं होय। कह सुखदेव करतार तो, हुया किया नहीं कोय ।। ३९।।

तुमने अपने मुंह से निरणा कर दिया मैं होणहार हूं। म:फ: है कि साहिब तो कभी होता मिटता नहीं है वह सत है।

होणहार कूं हर किया, हर ने किणी न कीन। सो समरथ सुखराम के, काल समज तूं चीन ।। ४०।।

होणहार को परमात्मा ने किया है, परमात्मा को किसी ने नहीं किया है। म:फ: है कि वह समरथ है, काल तूं इसको समझ।

चिदानन्द चेतन परे, अखे धाम सुण होय। सो साहिब सुखराम के, घटे बधे नहीं कोय ।। ४१।।

चिदानन्द ब्रह्म उत्पति के लिये है, उससे आगे परब्रह्म का के. पद है, वो धाम अक्षय है। म:फ: है कि वह परमात्मा है वो घटता बढ़ता नहीं है।

जमराय कूं हम कही, मत तूं उनो होय। हंस शकल है ब्रह्म का, ते जुग किया न कोय।। ४२।।

म:फ: है कि मैंने जमराज याने काल से कहा तूं गरम मत हो, हंस याने चेतन सब ब्रह्म के अंश है। तुमने नहीं बनाये है।

ने: चे तो शिर कोपसी, सांई शिरजण हार। के सुखदेव जम सोच के, बेगी थका संभाल ।। ४३।।

म:फ: है कि निश्चय ही तुझ पर परमात्मा कोप करेंगे। हे जमराज तूं सोच करके जल्दी से इस पर विचार कर ले।

काल वाच : शिरजणहारो कोण है, मोकूं गम नहीं कोय।
धर ब्रह्मण्ड आकाश तो, ये मैं रचिया जोय ।। ४४।।

काल कहता है पारब्रह्म परमात्मा कौन है, यह मैं नहीं जानता। पृथ्वी ब्रह्मण्ड आकाश तो मेरे रचे हुये है।

ब्रह्मा विष्णु महेश तो, नर नारी आकार। अे सब हातां मैं किया, मैं तारूं दूं मार ।। ४५।।

काल कह रहा है ब्रह्मा, विष्णु, महादेव सब स्त्री पुरूषो के आकार मेरे बनाये हुये है मैं ही तारता व मारता हूं।

मैं राजा मैं ही बादशाह, मैं सुर राक्षस होय। देह धारी जमराज के, मो बिन अवर न कोय।। ४६।।

मैं ही राजा व बादशाह हूं, मैं ही देवता व राक्षस हूं, जितने भी शरीर धारी है मेरे सिवाय कोई दूसरा नहीं है।

मैं सिद्ध साधक पीर हूं, मैं धरिया अवतार। के जंवरो मोय बायरो, क्या कहिये करतार।। ४७।।

काल कहता है मैं ही सिद्ध हूं, मैं ही साधक हूं। मैं ही अवतार धारण करता हूं, मेरे सिवाय करतार किसको कहते है।

तीन अंग मैं धार लूं, बातां करूं अनेक। जम कहे मोहे बायरो, करता कोई न देख ।। ४८।।

तीन अंग ब्रह्मा, विष्णु, महेश मेरा रूप है अनेक प्रकार के ज्ञान देता हूं। जम कहता है मेरे सिवाय कोई करता नहीं है।

राजी होय पैदा करूं, सुख दुख समता धार। तामस कर जमराय के, सबको देवुं मार ।।४९।।

सुख दुख समता धारण करके राजी होकर पैदा करता हूं। जमराज कहते है क्रोध करके सबको मार देता हूं।

पांच तत गुण तीन है, प्रगट कहिये सोय। ओ सब मेरा रूप है, शुभ अशुभ अंग दोय।।५०।।

पांच तत्व व तीन गुण जो प्रकट है वो सब मेरा रूप है, शुभ अशुभ अंग भी मेरा ही रूप है।

कुण साहिब सब मो बिना, अब तुम करो विचार। खण्ड पिण्ड मेरा रूप है, मेरा उली धार ।।५१।।

मेरे सिवाय और कौन साहिब है उसका तुम विचार करो। खण्ड पिण्ड ये सब मेरा ही रूप है।

चित मन बुद्धि जहां लग फिरे, जहां लग मेरा राज।
जंवरो कहे सुखराम कूं, घट घट मेरी आवाज ।।५२।।

चित मन बुद्धि जहां तक पहुंचती है वहां तक मेरा पद है। काल म: से कहता है कि घट घट में जो आवाज है वो मेरी है।

अनहद बाजा घुर रहया, नांद रहयो घरणाय।
कह जंवरो ररंकार धुन, जहां लग ओऊं जाय ।।५३।।

अनहद हो रहा है, शब्द गरणा रहा है, ररंकार धुन जहां तक आत्म बह्म का पद है वहां तक मेरा पद है।

आगे अब करतार कुण, कह जंवरो कहो मोय। ओऊं अजपो रामधुन, अे सब मेरी होय ।।५४।।

जमराज कहते है अब आगे कौन करतार है, ओऊं सोऊं का जपा अजपा व रामधुन ये सब मेरे पद में है।

मैं बोलुं मैं सुण रहयो, मै कथुं करूं ज्ञान। मैं उथापुं जमराय के, मैं सब थापुं आंण ।।५५।।

मैं बोलता हूं, मैं सुण रहा हूं, मैं ही ज्ञान कहता हूं। जमराज कहता है मैं ही थापता हूं, मैं ही ऊथापता हूं।

ब्रह्मा विष्णु महेश, सगत निरंजण राय। कहे जम तीन लोक सो, मेरी मुट्ठी मांय ।।५६।।

जमराज कहते है कि ब्रह्मा विष्णु महादेव शक्ति निरंजण राय व तीन लोक तक मेरे ही पद है।

चौरासी लख जीव का, देवल देवुं नित ढाय।
फिर चौरासी नित करूं, ओ प्राक्रम मुझ मांय ।।५७।।

चौरासी लाख योनियो के जीवो को जीवन देता हूं व मिटा देता हूं, मेरे में ऐसा प्राक्रम है।

मोकूं सबकी गम है, सब की सुणी फिराद। चवदा तिनुं लोक में, मो बिन कोई बाद ।।५८।।

मुझे सब का ज्ञान है। मैं सबकी फिराद सुनता हूं। तीन लोक चवदा भवनो में मेरे सिवाय कोई नही है।

<u>सुखोवाच</u> : जन सुखदेव तब बोलिया, सुण जम बैण हमार।
तोसुं इधका ब्रह्म है, जहां कोई जीत न हार ।।५९।।

म:फ: है कि मेरे वचनो को सुणो, तुम्हारे से ऊपर पारब्रह्म का पद है, उसको कोई नही जीत

सकता।

तीन लोक की तुम कही, सो घडयोडा होय। मैं अणघड़ सुखराम के, देश बतावुं तोय ।।६०।।

म:फ: है कि तुम तीन लोक की कह रहे हो सो सब बनाये हुये है। मैं अणघड परमात्मा का देश बताता हूं।

वां कोई जीत न हार है, दुबध्या दूज न कोय।
मेहमा सुण ऊण लोक की, बरण बतावुं जोय ।।६१।।

वहां कोई जीत नही है। न ही हार है वहां कोई द्वेत भाव नही है। मैं तुमको उस लोक की महिमा का वर्णन करके कहता हूं।

ज्यां में वार न पार है, ना कहूं आवे जाय। अखण्ड जोत सुखराम के, घट घट लोका मांय ।।६२।।

उस पद का कोई वार पार नही है न आता न जाता है। म:फ: है कि सब लोको में सब घटों में वह व्यापक है।

जांको वार न पार है, मध न कहिये कोय। सो साहेब सुखराम के, जम हंसा पर होय ।।६३।।

उसका कोई वार पार नही है न बीच है। म:फ: है कि वो परमात्मा जमराज व हंसो के ऊपर है।

तेरे सुण आधार है सो पुरूष कौन कहाय।
कह सुखदेव जमराय कूं, समझ सोच मन मांय ।।६४।।

जिसका तुम्हारे आधार है वह परमात्मा कौन है। म:फ: है कि हे जमराज अपने मन में सोचो समझो।

सुखराम अधर सतलोक है, अधर जमी वहां जांण।
वां दीठा या अेथली, कर नर हाथ पिछाण ।।६५।।

म:फ: है कि वह सतलोक अधर है, वहां की जमीन भी अधर है, उसका अनुभव जैसे अंधेरे में एक दूसरे की हथेली को हाथ में लेकर पहचान लेते हैं। ऐसा अनुभव होता है।

गीगन गरजे गेबका, जैसी गोरम गाज। संत दुवाई उण देश में, संताई को राज ।।६६।।

गीगन में शब्द की गेबाऊ ध्वनि होती है जैसे गोरम गरजता है। उस देश को संत ही प्राप्त करते है, जो संत सत स्वरूप आ:पद की भक्ति करते है।

ब्रह्म मांय सुख दुख नही, अर माया दुख को रूप।
अमर सुख माया अखण्ड, सुखिया वो देश अनूप ।।६७।।

परब्रह्म के पद में सुख दुख नही है माया के पद में दुख है, म:फ: है कि चौथे पद का सुख अमर है, वो देश अनुपम है जिसकी महिमा नही हो सकती।

चन्दन मीण चहूं दिश जडया, शकल भवन ऊजियाल।
जन सुखिया ऊण देश में, काना सुण्यो नही काल ।।६८।।

जिस भवन में चन्दन मणी जडे हुये हो तो उसका सब भवन में प्रकाश रहता है, ऐसे ही वो स्वयं प्रकाश देश है। वहां काल की पहुंच नही है।

अधर दीप वो जिगमिगे, ज्यां में अमर निवास।
निरभै संत विराजिया, ज्यां रा नही विनाश ।।६९।।

वो देश अधर है तथा प्रकाशवान है। उस देश में पहुंचने पर वापस जन्म मरण में नही आता है जो वहां पर पहुंच गये वो वहां निर्भय निवास कर रहे है। उनका कभी विनाश नही होगा।

जामण मरणा जहां नही, ज्यां नही सांसा सोग।
मोह माया व्यापे नही, वां संत जना के लोक ।।७०।।

उस पद में जन्म मरण संशय सोग मोह माया नही है। वही संत जनो का लोक है।

वा जागा ऐसी कही, निरभै भय नही कोय। कहया सुणया माने नही, देख्या ही सब होय ।।७१।।

वो निरभय पद है, वहां किसी तरह का भय नही है। म:फ: है कि कहने सुनने में कोई नही मानता। उस पद का अनुभव होने पर ही मानते है।

काल दौड़ चरणा पडयो, सुण्यो ब्रह्म को भेव। अमर लोक संता तणो, मैं देखुं गुरु देव ।।७२।।

जब काल ने ब्रह्म का भेद सुणा तो चरणो में गिरकर प्रार्थना करने लगा। म:फ: है कि काल कहता है मैं संतो का अमर लोक देखना चाहता हूं।

तीन लोक हद चूरकर, बेहद मांय समाय। बिन आज्ञा सुखराम के, बेहद लंघी न जाय ।।७३।।

तीन लोको को पारकर ब्रह्म के पद में पहुंचता है परन्तु बिना सतगुरु की आज्ञा याने सतशब्द के बिना बेहद याने पारब्रह्म से आगे नही जा सकता।

काल ऊलट पाछो पडयो, आघो सकयो न जाय।
सुखराम चले सत्त लोक कूं, लिया सखी बधाय ।।७४।।

काल का पद बेहद याने पारब्रह्म तक है आगे नही जा सकता। म:फ: है कि संत ही सतशब्द के साथ आगे जाते है यही सखी का बधाना है।

तुम कहो सो सब सांच है, मोकुं सूजे नांय। काल कहे सुखराम कूं, हम कूं ल्यो तुम मांय ।।७५।।

काल कहता है जो आप कह रहे है वो सब सत्य है, मेरे को आगे का ज्ञान नही है, मेरे को भी उस पद की प्राप्ति करावो।

मैं शरणे सो बार सूं, कहो सो लेसूं धार। काल कहे सुखराम कूं, सतगुरू मोय ऊधार ।।७६।।

काल प्रार्थना करता है मैं आपकी शरण में हूं, आप कहो सो धारण करूंगा। हे सतगुरु मेरा उद्धार करो।

भेद बतावो नांव को, मैं दासन को दास। काल कहे ऊर लाग रही, अखण्ड धाम की आस ।।७७।।

मुझे निज नांव का भेद बतावो, मैं आपका दास हूं, मेरे को उस अखण्ड पद की आशा लग रही है।

तुम मोकू संग ले चलो, तीन लोक के पार। जां दिन मेरे ऊर लगी, जीवण धरक हमार ।।७८।।

काल महाराज से कह रहा है कि तुम मुझे भी भेद बताकर उस के: पद में ले चलो। मेरे को भी उस लोक में जाने की लग रही है। अगर मैं नही गया तो मेरे जीवन को धिक्कार है।

जन सुखदेव कहे काल कूं, दुष्ट अंग दे छोड।
निरमल होय कर आवज्यो, दे कुबध्या सब छोड ।।७९।।

म:काल से फ: है कि सब खराब अंगो को व कुबुद्धि को छोडकर निरमल होकर मेरे पास आवो।

वाचा दे निरपख हो, निराधार होय आव। जब तारूं सुखराम के, धर ऊर निरभै भाव ।।८०।।

वचन देकर निरपक्ष होकर किसी का आधार न रखते हुये आवो। म:फ: है कि जब ही निरभै भाव धारण करने पर तार सकता हूं।

आपो तज दे आपदा, हूं पद देर बुहाय। जब तारूं सुखराम कह, ऐसो होयर आय ।।८१।।

मैं और मेरी को छोड दे, म:फ: है कि अहंभाव को छोडने पर ही उस पद की प्राप्ति हो सकती है।

खा साहिब की सूंस रे, देर पटोले गांठ। तो तारूं सुखराम कह, सब तज हरसुं सांठ ।।८२।।

सच्चे मन से साहिब की सोगन खावो। म:फ: है कि सबको छोडकर सतशब्द का साथ होने पर ही उस पद की प्राप्ति हो सकती है।

सुखराम काल को हंस किया, दे दे अपणा रंग।
आठ पोहर लवलीन होय, निमक न छाडे संग ।।८३।।

महाराज ने अपना ज्ञान सुना सुना कर काल को हंस वृति बना दिया। अब आठो पोहर भक्ति में लवलीन हो गया, एक मिनट भी भक्ति को नही छोडता।

काल करम सब छोडियो, एक रहयो ऊर धार।
सुखराम क्रोड निनाणवे, हंस किया सो पार ।।८४।।

काल ने सब करणियों को छोडकर केवल एक परमात्मा के नाम की भक्ति में लग गया। म:फ: है कि इसी प्रकार इसी विधि से आज तक निनाणवे करोड हंसों को उस पद में भेज दिया।

अेता हम सब संग लिया, हंस त्रेता जुग के मांय।
सुखराम काल कूं ही तारयो, पडणे दियो नांय ।।८५।।

त्रेता जुग में इतने हंसो को उस लोक में भेज दिया और उस समय काल को भी तार दिया। हंस वृति आत्माओं की चोरासी को मिटा दिया।

हंसा पहुंता सतलोक में, हम भी चले वहां जाय।
सुखराम ज्ञान कूं धर चल्या, तीन लोक के मांय ।।८६।।

हंसो का सतस्वरूप के साथ सत्तलोक में जाना ही म: का पहुंचना है। म:फ: है कि सतस्वरूप आ:पद का ज्ञान तीन लोक में रहना ही ज्ञान को धर जाना है।

निरभै हैला मैं दिया, मरत लोक के मांय। सुखराम कहे हंस जागिया, सुणर हमारी बांण।।८७।।

मृत्युलोक में सतस्वरूप आ:पद के ज्ञान को धारण करना ही मेरे वचनो को सुनकर जागना है।

रात दिन पंथ बहरयो, निमक ढील नही खाय।
सुखराम जम के शीष पर, लात देर हंस जाय ।।८८।।

सतशब्द के साथ मेरूडण्ड से पार होकर जाना ही जम के शीर पर होकर जाना है। उस पद की प्राप्ति होना ही रात दिन रास्ता बहना व निमख ढील नही खाना है।

मोख पंथ जमराय के, शीर ऊपर होय जाय। रात दिन सुखराम के, हंस रहया शीर गाय ।।८९।।

मोख का रास्ता मेरूडण्ड के ऊपर होकर जाता है, शरीर में मेरूडण्ड पर जमराज का स्थान है। यही जमराज की शीर पर होकर जाना है। जमराज के स्थान को पारकर ब्रह्मण्ड से बाहर सतशब्द का रात दिन अनुभव करना ही हंस रहया शीर गाज है।

मुगत गत अगत को, पंथ दियो हंस भाज। सुखराम निरभै हुवा, कोय न सके गाज ।।९०।।

जिन करणियो से बैकुण्ठ स्वर्ग नरक की प्राप्ति होती है उन सब साधनो को हंसो ने छोड दिया। म:फ: है कि परमपद की प्राप्ति कर हंस निरभय हो गये, अब उनको जन्म मरण का दुख नही भोगना पड रहा है। यही कोय न सके गाज है।

सुण सुण मेरा ज्ञान रे, लिज्यो शब्द विचार। आजो सब सतलोक में, मत पड रिज्यो हार ।।९१।।

म:फ: है कि मेरे ज्ञान को सुनना, मेरे शब्दों का विचार करना और केवल्य भक्ति धारण करके उस सतलोक में आ जाना। तीन लोक में बार बार जन्म मरण में मत रहना।

सतशब्द बिन भेद रे, आरे किज्यो नांय। सुखराम हंस परचाय के, चले अगम के गांव ।।९२।।

सतशब्द के ज्ञान के सिवाय दूसरा ज्ञान मत धारण करना, इस तरह हंसो को ज्ञान देकर म: का सतगुरु पद याने के:पद आ:पद की प्राप्ति करना ही अगम घर जाना है।

अब लारे ये लोक में, ज्ञान सुणे जो जीव।
पण निरबल सुं सुखराम कह, दरश सके नही पीव ।।९३।।

अब पीछे से इस लोक में जो जीव ज्ञान सुनते है। म:फ: है कि जो शूरवीरता धारण कर भजन नही करते है, उसको उस पद की प्राप्ति नही हो सकती, यही निरबल कूं सुखराम कह दरस सके नही पीव है।

अठे सुखरामजी महाराज को ध्यान खुल्या बरोबर तुलछाजी सारी हकीकत कही, दूसरे दिन होय गयो, तुलछाजी को जांणकर मेलाणा सुं लालदासजी मिलणे आया। आगे तुलछाजी जीवता लादा, तुलछाजी लालदासजी ने बुज्यो तुमा रात का हमा ने प्रसादी देवण ताई आया हां काई, जद लालदासजी कयो मैं तो रात का अठे आयो नही, रात भर मेलाणा ही हो, हरिकिशनजी रात का तुमारो काल है करके बोल्या जिणा सुं मैं आयो हूं। पिछे गांव में ठाकर तेजसिंहजी ने जाकर पूछियो, रात का आप राम चोकी आया हां काई, जरा कंवर तेजसिंहजी कयो आज की रात का कठे गया नहीं, अठे ही हां। जद सतगुरू सुखराम जी महाराज बोल्या तुम्हारो आज को तो काल टाल दिनो पण आखर तो जांणो पडसी, सिद्ध अवतार जन पीर पेकम्बर थिर संसार नही रहयो कोई, कोई भी थिर रेवे नहीं, जद तुलछाजी बोल्या आप मोख जावोला जदी हमाने भुल ज्यो मति ना, म्हाने साथ लेयने जांणो को वचन देवो, जद महाराज कहयो दोय जुग मैं रहबसुं फेर जगत के मांय, तेरे दिन थोडा रहया साथ चले सो नांय, अब थारी उमर का दिन थोडा रहया जिणा सुं अबार साथे चालणो होवे नही, जदे तुलछाजी बोल्या आप मोख जास्यो जद मैं जठ होवुं उठा सुं सोधकर म्हाने आपके साथ ले जाइजो, उठे तुलछाजी को अंत हो गयो और तुलछाजी को जीव रिछोला में जाय कर जन्म लियो, रिछोला में नांव गिरधर राख्यो, सतगुरु सुखरामजी महाराज तुलछाजी ने काल कने सुं छुडाय लियो, उण काल ने भी चेलो कर मोख भेज दियो। तिको काल दुजो हो, लारा सुं अबार काल का ओदा पर आयो तिको काल दूजो है। उणा ने महाराज को प्राक्रम मालूम हुयो, वो भी काल महाराज सुं मिलणे आयो, महाराज सुं संवाद करयो, काल को महाराज को संवाद हमारे सारो हाथ आयो नही, अधुरो हाथ आयो तिको भी आगे पिछो और अस्त व्यस्त है।

<u>साखी</u> : मोख पंथ बहतो हुवो, अटक सके नही कोय।
जब हम गया उण लोक में, सखी पुरूष है दोय ।।१।।

इस प्रकार मोक्ष का रास्ता चालू हुआ, जो भी भक्ति धारण करते वो उस पद में पहुंच जाते। म:फ: है कि इस प्रकार यह पंथ चालू करके हम उस लोक में चले गये, उस लोक में सखी यानि आत्मा और ने: अक्षर रूपी पुरूष दोनुं है।

वहां हम जायर फिर सुणी, काल लिया हंस घेर। राज जमायो आपको, कियो सरब कूं जेर ।। २।।

म:फ: है कि उस लोक में जाने के बाद हमने फिर सुना कि जगत में लोग भक्ति को भूलकर फिर करमों में लग गये और इस कारण काल उनको वापस चौरासी का दुख देने लगा और अपना राज वापस जमा लिया, और सब को कष्ट देने लगा।

अखण्ड लोक में धुन हुई, हुवो आ कहा विचार।
मोख पंथ क्यों थक रहयो, रहया हंस क्यों हार ।। ३।।

अब उस सतलोक में हंस वृति आत्मा की मृत्यलोक से पुकार पहुंची। तब वहां पर उस पुकार को सुनकर परमात्मा ने कहा, ये क्या हुआ। मोक्ष में हंसवृति आत्मायें क्यों नही आ रही है, वो क्यों चौरासी का कष्ट भोग रहे हैं।

जब हम धरयो ध्यान रे, देख्यो अरथ विचार। हंस दुखी सुखराम कह, रहयो धरम सुं हार ।।४।।

म: सता रूप से बोल रहे हैं कि जब हमने ध्यान किया, इसका विचार किया कि हंस दुखी क्यों हैं और वो धर्मराज जी से क्यों हार रहे है।

हंस त्रास साहेब सुनी, जब या भई आवाज।
सतलोक सुखराम कह, रही अखण्ड धुन गाज ।।५।।

हंसो का दुखी होकर प्रार्थना करने की आवाज को उस परमात्मा ने सुना, पूरे सतलोक में यह अखण्ड ध्वनि होने लगी।

सगत कहे तुम संभालो, आ धुन कहो किम होय।
अखण्ड लोक में घुर रही, निमख न खण्डे कोय ।।६।।

सगत यानि सतस्वरूप भगवान ने कहा कि सुनो, यह धुन पूरे सतलोक में कैसे हो रही है, जो एक मिनट के लिये भी खण्डित नही हो रही है।

(अब यहां पर म: व सतस्वरूप भगवान की वार्ता होती है। सतस्वरूप भगवान म: को हंसों की पुकार को सुनकर म: को मृत्युलोक में जाने को कहते हैं। तब महाराज कहते है)

सगत सांभलो बैण हो, चलो हमारी लार। के सखी संग दो आपकी, जीऊं हंस लावुं तार ।।७।।

ओ परमात्मा आप मेरे वचन सुणो और आप मेरे साथ चलो। या फिर आपकी सखी यानि भक्ति देवो, जिससे हंसो को तार कर लाऊं।

सखी कहे मैं नही चलुं, तुम जावो रिष राय। भीड पड़े तो याद कर, लिज्यो मोय बुलाय ।।८।।

सखी यानि भक्ति यानि ने: अक्षर कह रहा है कि मैं तुम्हारे साथ नही चलता, हे ऋषि जी आप जाओ और सब को भक्ति में लगावो, जो भक्ति धारण करेगा, मैं उसके कष्ट मिटाने के लिये प्रगट हो जाऊंगा।

के सुखदेव मैं चालिया, जब सगत कही आ आय।
बेग हंस ले आवज्यो, रहज्यो मत वहां जाय ।।९।।

अब म: कह रहे हैं कि मैं वहां से चलने लगा तब सगत यानि सतस्वरूप भगवान ने कहा कि

आप हंसो को जल्दी से लेकर आना, ऐसा ना हो कि तुम स्वयं धर्मराय के माया के फंदे में मत पड जाना।

पाछा फिर हर भेजिया, सखी संग दे मोय।
निरमल भक्त चलावजो, ज्यूं महिमा जुग होय ।।१०।।

परब्रह्म परमात्मा ने महाराज को वापस सत्ता व भक्ति संग देकर मृत्युलोक में भेजा और कहा कि जगत में मर्यादा का पालन करते हुए यह भक्ति चलाना, जिससे केवल ज्ञान की जगत में महिमा होवे।

तुम निरभै मत धार के, हेलो दो जुग मांय। सेजा सब साहब कहे, पड़सी पांवा आय ।।११।।

सतस्वरूप भगवान ने म: से कहा कि तुम निरभय होकर इस ज्ञान का प्रचार करना। तो सहज में ही इस ज्ञान के आटोमेटिक पांव पडेंगे।

जब हम कूं आग्या भई, मरतलोक में जाय। मोख पंथ बहतो करो, हंसा लेवो छुड़ाय ।।१२।।

अब म: को परमात्मा से मृत्युलोक में जाने की आज्ञा मिल गयी, म: को कहा कि तुम जाकर मोक्ष के पंथ को चालू करो और हंसो को काल से छुडावो।

पाप पुण्य का न्याय कूं, शिरज्यो है जमराज।
संत शिरज्या सुखराम के, जीव ऊधारण काज ।।१३।।

म:फ: है कि पाप पुण्य के न्याव का ओधा धर्मराज को दिया व जीवो का उद्धार करने का ओधा संत को दिया है।

जम जालम की त्रास सुं, हंसा करी पुकार। सुखिया साहिब आविया, ले जन को अवतार ।।१४।।

हंस वृति आत्माओं की पुकार को सुनकर, उनकी जन्म मरण की त्रास को मिटाने के लिये गुरु साक्षात परब्रह्म के रूप में इस धराधाम पर अवतार लेकर आते हैं।

जब पाछा आविया, मरतलोक के मांय। काल फेर, हंस घेर, धंधे दिया लगाय ।।१५।।

मृत्युलोक में ऐसे ओधाधारी सद्गुरु आते हैं, और काल के फंदे में पड रही आत्माओं को अपना ज्ञान बताकर, भजन की विधि बताकर सतलोक में मिलने के लिये इस धंधे में लगा देते है।

सुखराम संत जन कहत है, अजब अनोपम बात।
भजन किया सो ऊबरिया, कहूं काल सकल कूं खात ।।१६।।

म:फ: है कि सत स्वरूप आ:पद का ज्ञान धारण करने की कहते है यही अजब अनुपम बात है। जो सतगरु विधि से भजन कर शब्द ब्रह्म की जागृति करते है, उनका जन्म मरण मिटता है, यही भजन कर ऊबरना है।

संत सुखदेव जी कहत है, सुणो जोग सिद्ध साध। अणभै मांही कहत है, काल जुग संवाद ।।१७।।

महाराज योग की साधना करने वालों से व सिद्धो व साधना करने वालो से अणभै वाणी में काल के संवाद तथा चारों जुग सतयुग द्वापर त्रेता कलयुग से संवाद का वर्णन करते हैं।

पंडित ज्ञानी सब सुणो, जैन धर्म प्रवाण। सुखराम संत जन कहत है, सब मत में मत छांण ।।१८।।

पंडित ज्ञानी सब सुणो, जैन धर्म में चोबीस तीर्थंकरो ने भी यही भक्ति की और उस लोक में पहुंचे, जिनका प्रमाण मौजूद है, आद भज्यो जन रिशब देव अंत भज्यो महावीर, केवल भज केवल हुवा। म:फ: है कि सभी संत जन कहते हैं कि सब मतो का सार याने परमपद की प्राप्ति का

ज्ञान सभी शास्त्रों का सार है।

भक्ति पंथ सब सांभलो, और सुणो एकतार। होठ कंठ रसणा बिचे, राम कहया वे पार ।।१९।।

सभी भक्ति करने वालो से महाराज कह रहे हैं कि मेरी बात को ध्यान से सुणो, जो सतगुरु विधि से सांस उसांस में राम राम करके सतशब्द की जागृति करेगा, तब ही जन्म मरण मिटेगा, वह आत्मा इस भव सागर से पार हो जायेगी।

ररो ममो दोय अखर है, सब वेदों में सार। ब्रह्म बीज ओ एक ही, संत सुखदेव विचार ।।२०।।

सब ज्ञानो का सब वेदो का सार रकार मकार दो अक्षर है। म:फ: है कि रकार मकार का विधि से भजन करने पर ही ब्रह्म की प्राप्ति होती है।

जब हम चढ असमान में, किवी ब्रह्म धुन गाज।
सुखराम हंस फिर जागिया, काल गयो सुण भाग ।।२१।।

सतस्वरूप आ:पद की भक्ति करके दशवें द्वार से बाहर होना व शब्द की ध्वनि का अनुभव होना ही ब्रह्म धुन की गरजना करना है। म:फ: है कि हंसो को सतस्वरूप आ:पद का ज्ञान धारण करना जन्म मरण से रहित होना ही काल गयो सुण भाग है।

त्रेता सो जुग बितियो, द्वापुर आयो चाल। अब इण ओ सुखराम के, ज्ञान दियो सो पाल ।।२२।।

त्रेता जुग बीता द्वापुर आया म:फ: है कि सतस्वरूप आ:पद का ज्ञान कम हो गया, करणियां कर्म जप तप का ज्ञान ज्यादा हो गया।

फेर काल सो कल करी, तप में बैठो आय। मंत्र कर सुखराम के, कोटि लिया बणाय ।।२३।।

फिर काल ने यह करामात की, प्राणी तपस्या करने में ज्यादा लग गये, करोडो मंत्र बना दिये। म:फ: है कि मंत्रो की साधना करने में लग गये।

तरक तत त्यागी, छल कर बैठो आय। हंसा कूं सूखराम कह, लिया गोदिया मांय ।।२४।।

तरक त्याग करने में प्राणी लग गये, सतस्वरूप आ:पद की भक्ति छोडकर दूसरे साधन में लगना ही काल की गोद में बैठना याने जन्म मरण में आना है।

काल टाल सुण दोय रे, मांड रच्यो जुग मांय। कूट कूट सुखराम के, जीव पडे सो जाय ।।२५।।

काल ने इस ब्रह्म शब्द राम जिससे तीन लोक रचा, उस शब्द को जो आत्मा रटती है उसको जन्म मरण से बरी कर दिया। बाकी सब काल के फंदे में आ गये।

हंस ज्ञान छाड़े नही, ओ नित घेरे आंण। सुखराम रजो गुण शब्द रे, बोल रहयो मुख आंण ।।२६।।

जो हंस सतशब्द का ज्ञान नही करते परन्तु जगत में जगह जगह करणी कर्म व जप तप के ज्ञान की महिमा सुनते है, सब प्राणी उसी को धारण करने में लग गये। म:फ: है कि तीन लोको के सुखो की प्राप्ति बताना ही रजोगुण शब्द बोलना है।

ता मध जंवरो प्रगटियो, हंस लिया सब घेर।
सुखराम भरम देखाय के, कियो सरब कूं जेर ।।२७।।

जिस साधन से जन्म मरण नही मिटता व फलों की प्राप्ति होती है, हंस उसको अच्छा समझकर उस ज्ञान को धारण कर लेते है, यही काल का प्रगट होना है। म:फ: है कि सबको भरम में डालकर जिससे फलों की प्राप्ति होती है। यही सबको भरम में डालना व जेर करना है।

के सुखदेव मैं आविया, देह धर जुग के मांय।

मरतलोक में धुन करी, सुणी शकल जग आय ।। २८ ।।

जब संत सत स्वरूप का ज्ञान देने के लिये जगत में शरीर धारण करके आते है व मृत्युलोक में ज्ञान बताते है, तब सारा जगत सुनता है।

जुग जम दोनूं मिल्या, गुष्ट करी सब आय। कहो कुण ओ प्रगटियो, लिया जीव बुलाय ।। २९ ।।

काल व जुग ने आपस में सलाह करी कि यह कौन प्रगट हुवा है। जो सब जीवो को सतस्वरूप आ:पद के ज्ञान में लगा रहा है।

जुग कहे मैं जाणु नही, तुम गल लेवो सोय। बातां तो भारी करे, क्या जाणु कुण होय ।। ३० ।।

जुग कहता है कि मैं तो नही जानता हूं तुम्ही जाकर उसका पता लगावो, अपना ज्ञान सबसे श्रेष्ट है बता रहे है, मैं नही जानता वह कौन है।

जब दोनुं चल आविया, लड़िया पेले पार। सुखराम झगड़ फिटा पड़या, तब बैठा पच हार ।। ३१ ।।

जब जुग व काल ने आकर संतो के ज्ञान को सुना। म:फ: है कि तब उन्होने संतो के ज्ञान को श्रेष्ठ माना, यही फीटा पडना व पच हार कर बैठना है।

फेर भरम पैदा किया, धरम करम अे दोय।
सुखराम नांव बिन कह रहया, रात दिवस कल अेह ।। ३२ ।।

म:फ: है कि ऐसे भरम पैदा किये जिससे सब प्राणियो को धर्म कर्म में फलों की प्राप्ति व कई तरह कि सुखो की प्राप्ति बताकर जीवों को उसमें लगा दिया। म:फ: है कि बिना सत नांव निज नांव के सब जीव फलो की प्राप्ति के ज्ञान में लग गये।

हंस न माने एक ही, कोट जगत के आय। सुखराम शब्द मेरा सुण्यां, कोयन आवे दाय ।। ३३ ।।

जो हंस सतस्वरूप आ:पद की भक्ति करने वाले है वे तो जगत में क्रोडो तरह के ज्ञान है उनको नही मानते है। म:फ: है कि मेरा सतशब्द का ज्ञान सुनने के बाद दूसरा कोई ज्ञान उनको पसन्द नही आता है।

लाख बात जग की सुणो, मेरो एक विचार। सुखराम लाख ही रद हुवे, लेत शब्द मेरो धार ।। ३४ ।।

जगत के लाखो ज्ञान सुणो व मेरा सतशब्द का एक ज्ञान धारण कर लेने पर जगत के लाखो ज्ञान उसके सामने फीके पड जाते है।

मोख पंथ बहतो हुवो, जम पच बैठा हार। सुखराम हंस अब चालिया, लाखो सही अपार ।। ३५ ।।

सतशब्द के ज्ञान के सामने दूसरे ज्ञान अच्छे नही लगते यही जम पच बैठा हार है। म:फ: है कि सतशब्द ज्ञान के आधार से लाखो हंसो को परमपद की प्राप्ति होना ही लाखो का व अपार का जाना है।

क्रोड जीव मोसुं मिल्या, द्वापर में जे आय। सुखराम मोख कूं भेजिया, चोड़े तबल बजाय ।। ३६ ।।

म:फ: है कि द्वापर में क्रोड हंसो ने सतशब्द का ज्ञान धारण कर के मोक्ष की प्राप्ति की। यही जीवो का मिलना व चौडे तबल बजाना है।

हरि अग्या ऐसी दई, राम रसायण पाय।
सुखराम संत जन कह रहया, आगे सतजुग मांय ।। ३७ ।।

म:फ: है कि आगे सतयुग में भी संत यही कह रहे थे कि राम रसायण याने निज नाम की भक्ति कराके सब जीवो को मोक्ष में भेज दो, संतो को परमात्मा की तरफ से आग्या है। सतयुग में व सब

युगो मे यही आदेश है कि सतशब्द की भक्ति कराकर मोक्ष में भेजते रहो।

सतजुग में मैं आवियो, देह धर जुग के मांय।
हंसा कूं सुखराम कह, जम सुं लिया छुडाय ।। ३८।।

सतयुग में मैं शरीर धारण करके आया व हंसो को सतशब्द की भक्ति बताकर जन्म मरण से रहित कर दिया।

सुखराम आया अब जुग में, कहणे लागा ज्ञान।
काल सुणर पावां पडयो, लिवी सरब विध मान ।। ३९।।

म: फ: है कि इस युग में मैं फिर आया और सतपद का ज्ञान हंसो को बताने लगा तो हंस आवागवण से रहित होकर मोक्ष में जाने लगे। यही काल का पांव पडना व सब विधि मानना है।

।। इति श्री तुलसाजी की विगत।।

सतगुरु सुखरामजी महाराज को मोक्ष जाणो को वर्णन :

तुलछीरामजी बास बरेली का जिला में रिछोला गांव में गिरधर का नांव सु कुरमी गंगवारी जाति में जन्मिया, जिसकी सतगुरु सुखरामजी महाराज ने ध्यान में मालूम हुई। जद सम्वत १८६१ की साल में मारवाड सुं महाराज रवाना हुवा, जरा मालवे होय कर आया, रास्तें में सिवणी पधारया, तब उठा का राजा चन्दूलाल से संवाद पिछे हुओ, महाराज को उपदेश सुनकर राजा चेलो हो गयो, पहले चन्दूलाल को संवाद पिछे ब्रह्मचारी और बिठलराव को संवाद जलोदा में हुवो। समत १८७० में महाराज रछोले पुगा, रछोले पुगकर महाराज गिरधरजी ने पूछयो कि क्यों भाई गिरधर हमां ने तुमां ओलख्या के नही, जद गिरधरजी बोल्या नही मैं नही ओलख्या, जद गिरधरजी ने दिव्य दृष्टि दिवी और पूछयो कि ओलख्या, जद गिरधर महाराज के पगा में पडकर बोल्या हां महाराज ओलख्या, जद महाराज बोल्या अबे तुम हमारे देश चलेगा, गिरधरजी बोल्या हां महाराज चलूंगा। जद गिरधरजी का बाप बगैरा बोल्या महाराज इस कूं नही ले जाणा, हमारे एक ही बेटा है। आपके सोबत दूसरा आदमी भेज देंगे, जद महाराज बोल्या अे तो हमारे संग चलेगा, दूसरा आदमी हमारे देश में पूग नही सकता। हमारे देश में तो गिरधर ही पूगेगा, बोलकर गिरधरजी और महाराज हस्यां।

रेखता : समत अठारासो बरस तियोतरे, संदेशो प्रेशतो आंण दियो।
हुकम दरगा को हक्क परवानगी, संत सुखरामजी बांच लियो।
शुद्ध बैसाख दिन पख उतरयो, जुग में खट मास होई।
सिद्ध अवतार पीर जन पेकम्बरां थिर संसार नही रहयो कोई।। काती सुध तीथ १३, ऊगते सूर जब सिद्धकर किनी, बारस की रात घडी दोय को दुगडियो, देह मरत लोक में मेल दीनी। गोर घमघोर आवाज हुई शब्द की, रूम ही रूम ररंकार बोल्या, नव द्वार होय राह नही मोख की, दशवे द्वार कूं आण खोल्या। ब्रह्म सूं चाल भू लोक में आविया, हंस चेताय सब काज किया, दास सुखराम परमधाम कूं पहुंचिया, शिष गिरधर कूं संग लिया।।

भाषा: समत १८७३ का बैसाख सुदी में महाराज ने प्रेशतो सन्देशो कयो के महाराज आपने सब संत याद करे है, जद प्रेसता ने महाराज बोल्या हमा मास छ: फेरूं जग में रहस्या, जद प्रेसतो पाछो गयो, और काती सुद्धी में महाराज को जाने को विचार हुवो, जद अन्त समय की तैयारी करने

लागा। उठी ने बैकुण्ठी गडने वालो सुतार गावडा में मिल्यो नही, जद बरेली सुं सुतार बुलाय कर काती सुद्ध १२ ने दिन का बैकुण्ठी महाराज आपके सामने गडाय कर तैयार कराई व कपडा बगेरा सिवाय कर बैकुण्ठी तैयार हुवा, पिछे महाराज बैकुण्ठी में बैठकर देखली के बराबर है, महाराज उठा का जमीदार कमलाजी गोविन्दजी वगैर और गांव लोधीपुरा का मुकादम भगत रामजी सियाजी तथा अहीर वाला नमदिया का सारा अहीर महाराज को भाव राखे हां तिका अहमदाबाद का सगला सेवक इख्यारामजी, मुरली प्रसादजी और गुलगांव में मोतीराम मुकादम और बस्ती भाविक और खिदरपुर का रामप्रसाद मुकादम गोमदराम कालु सेवा रूपा गिरधारी काशीराम हरिराम केसु दलीचन्द कायथ पंडितजी सगहला न बुलाय कर कयो, आज सु सतरा दिन सुं म्हारो चेलो रणछोड अठे मारवाड सुं आवे लो और वे अठे बलणो चावे लो, ऊणा ने बलणे देय जो मती ना और हम और गिरधर मोख जास्यां जद हमारा ब्रह्मण्ड फूट कर आवाज होवेली, व आवाज सुण गोरों युरोपियान देखणे सारूं आवे लो, उंणाने हमारे पीठ पीछे भीत फोडकर दरशण करवाय दिजो। फेर अन्त समय का विधि का मंगल ९ नो बणाय, दो घडी के तडके सतगुरु सुखरामजी महाराज को दशवों द्वार खुलकर मोक्ष पधारया, सोबत गिरधरजी ने भी ले गया, महाराज सुखरामजी के तथा गिरधरजी के ब्रह्मण्ड खुलणे से आवाज हुई, आवाज सुनकर गोरी साहब बोल्या ये आवाज काय की हुई है। खबर लावो, जद घोडा सवार रिछोले आय कर पूछियो, जद लोका कहयो मारवाड का संत मोक्ष गया है। आ बात संवारा जाय कर गोरी साहब ने कही, जद वो दरशण करबाने आयो, जद महाराज को साहब ने हुक्म कहकर पीठ पीछे भीत फोडकर दरशण कराय दिया। पीछे महाराज को चलावो मंगल ९ कया, जिणा मुजब सारी विधि सुं तपना दिनी, सतगुरु सुखरामजी महाराज मोक्ष सिधाया सम्वत १८७३ काती सुद १२ गुरुवार अस्वनी नक्षत्र अंग्रेजी तारीख ३१-१०-१८१६ का दोय घडी के तडके चन्दन को गाडो महाराज की देह छुटी, उणा दिन काती सुद १३ ने गांव के बारे ऊगाणा बाजु गेबाऊ चन्दन को गाडो आकर छूट गयो, उणा चन्दन का लकडा में महाराज ने चिता दाग दियो। काती सुदी १३ शुक्रवार ने जठा पीछे दिन १७ सतरवे दिन सारा लोक रणछोडजी ने उडीकता बैठा और रणछोडजी रछोले पुगा, जद लोका महाराज मोक्ष में गया जका सब समाचार रणछोडजी ने बोल दिया, तुमारो नांव रणछोडजी है, तुम्हारे जलणे की महाराज तुमने मनाई कर गया है। जद रणछोडजी जल्या नही, रणछोडजी रछोला सुं बगत रामजी तथा इणा रामजी तथा इणां रा भाई ने साथ लेय ने मारवाड ने रवाना होय बिराही आया, गाडी रास्तां सु आय गया।

।। इति श्री सतगुरु सुखरामजी महाराज की जीवनी सम्पूर्ण।।

卐 दादू पंथी का संवाद 卐

साखी : चिरंजीव जजमान, ठाकुर काहा सांग ओ धारियो।
कहे सुखराम बरण न दरशण, पेर जन्म क्यूं हारयो।। भला घरा काहा तुम छोरू,
काहा करम अे किया। केहे सुखराम भंवाया कैसा, सांग धार क्यूं लिया।।

दादूजी के पंथ वाले चेले से महाराज की बातचीत हुई, उस दादू पंथी ने महाराज से कहा,

देवजी पगा लागू। तब महाराज ने कहा चिरंजीव रहो, ओ जजमान आपने यह क्या स्वांग धारण कर रखा है। क्योंकि आप न तो वर्ण में रहे और नहीं खट दर्शणियों में रहे। अब आप यह भेष बदलकर मनुष्य जन्म को क्यों गंवा रहे हो। आप भले घर के लडके होकर यह क्या कर्म कर रहे हो। आपने यह भरडा भोपा जैसा स्वांग क्यों धारण किया है आपको किसने भरमाया है।

卐 कूंडा पंथी का संवाद 卐

कवित : कुल कारण मरजाद, जोय पशुवन के नांही। एकण कुंडे बीच सरब,
खाणा संग खाही।। भोग विलास न भरम, बेन मांई नही जांणे।
ज्यां पुल ब्रते रीत, तांय सुं ही संगम ठांणे।। लक्ष चौरासी जीव के,
भिन्न भाव नही मांय। सुण पंथी सुखराम कह, मोख कुण सा जाय ।।

पशुओ के कुल व मर्यादा नही होती, क्योंकि वे एक ही कुंडे में सब साथ खाते है। इतना ही नही वे भोग विलास करने में माता बहन को भी नही जानते है और जो मिल जाती है उसी से संगम करते है क्योंकि लख चौरासी जीवों के भिन्न भाव नही होता अत: एक भी कूंडा पंथी मोक्ष में नही जाते है।

卐 सुदर का अंग 卐

साखी : धरम पुन्न और नांव में, सीर शकल को होय।
गुरुधरम तो सुखराम कह, दुज बिन फले न कोय ॥ १ ॥

म:फ: है कि धर्म पुण्य व बावन अक्षरो के नाम में ही सब ही स्त्री पुरूषो का सीर है परन्तु तीन लोक के करणी कर्म उपासना के ज्ञान के ब्राह्मण ही गुरु है।

ब्राह्मण बिन गुरु करत है, से हर अग्या मेट। वे सब ही सुखराम के, जाय नरक में पेठ ॥ २ ॥

म:फ: है कि जो कर्ता ईश्वर की मर्यादा को खण्ड करके ब्राह्मण के अलावा दूसरो को गुरु मानते है, उनको नरक में जाना पडता है। जैसे शादी विवाह में ब्राह्मण का कर्तव्य होम यज्ञ पूजा पाठ कराने का है। वैसे ही अन्त समय का कर्मकाण्ड भी ब्राह्मण ही करता है। अगर ब्राह्मण के अलावा दूसरी जाति का भेष पहना हुआ कितना ही शास्त्रो का ज्ञाता व विद्धान हो तो भी कार्य सिद्ध नही माना जाता है। यही हर आज्ञा की मर्यादा को मेटना है।

च्यार बरण पैदा किया, ता दिन बांधी मेर। दुज बिन सुण सुखराम के, हर गुरु कियो न फेर॥ ३ ॥

म:फ: है कि ब्रह्माजी ने चार ही वर्ण बनाये है उसी दिन से हर की मर्यादा बंधी हुई है, इसलिये ब्राह्मण के अलावा तीन लोक में दूसरे गुरु नही हो सकते।

करणी जीवां हाथ दी, फल करणी के मांय। इण कारण सुखराम के, सुख दुख भुगते आय ॥ ४ ॥

म:फ: है कि हर ने शुभ अशुभ व भक्ति करने के लिये नर देही दी है। परन्तु जैसी जैसी करणी करते है उसी मुताबिक फल भुगतने पडते है।

ज्ञान सकल कूं दीजिये, अड़ नही कीजे कोय। मन्तर तो सुखराम कह, दीजे जागा जोय ॥ ५ ॥

म:फ: है कि ज्ञान तो सकल नर नारियो को देना है किसी से अडना नही, परन्तु मेरा जो खास भेद सांसो ऊसांस में राम रटने का है लेकिन जगह देख याने भांग तंबाकु अमल तिजारो सुरे का

सेवन नही करते है, उनको मेरा भेद बताना चाहिये।

राम नाम तो नीर ज्यूं, आत्म सुण बन होय।
गुण न्यारो सुखराम कहे, फल लागे जब जोय ॥ ६ ॥

म:फ: है कि आत्मा तो वन के समान है और राम का नाम जल के समान है। जब सांस ऊसांस में राम के नाम को रटेंगे तब आत्मा रूपी बन में निज नाम रूपी फल की प्राप्ति होगी।

आत्म जांणन पुजिये, सबही को पुन्न होय।
गुरु धारण सुखराम के, दुज बिन फले न कोय ॥ ७ ॥

म:फ: है कि प्राणी मात्र को आत्म रूप समझकर उनकी सेवा करेगा तो उसका भी पुण्य मिलेगा। लेकिन ब्राह्मण गुरु के बिना कोई शुभ कार्य कराता है तो उसका फल नहीं मिलेगा।

जन होय पूजे भांड को, दे डाकोते गाय। वे सब ही सुखराम के, शिष गुरु नरकां जाय ॥ ८ ॥

म:फ: है कि भगत होकर के भांड याने पाखण्डी को पूजते है और डाकोत को गाय का दान करते है वे सुदर होने के कारण दान देने वाले व लेने वाले दोनो को ही नरक में जाना पडता है।

रास मण्डल कूं निंदे वे, जमो करावे आंण। वे शिष गुरु सुखराम के, सब करमां की खांण ॥ ९ ॥

पारब्रह्म वासी कृष्ण भगवान के रास मण्डल की तो निंदा करते है और पीरो का जामो कराते है तो करने वाले व कराने वाले दोनो को ही निंदा का करम भोगना पडेगा।

गोलो शसत्र बांध के, घोडो चढले कोय। दर्शन बिन सुखराम के, यूं सांगी जन होय ॥ १० ॥

म:फ: है कि दरोगे शस्त्र धारण करके घोडे पर चढने से ही राजपूत नही हो सकते, इसी तरह खट दरशणियो के बिना कोई भेष धारण करता है तो सांगी कहलाता है।

छः दरशण बिन बाहेरो, ब्राह्मण पेरे भेक। वो ऐसो सुखराम के, छत्री गोलो देख ॥ ११ ॥

म:फ: है कि छः दरशणियो के बिना कोई ब्राह्मण का भेष पहन लेता है। तो भी ब्रह्म भक्ति के बिना ऐसे है जैसे राजपूत तो बन जाता है परन्तु वह दरोगा ही है।

ब्राह्मण का धन कौन है, का छत्री धन होय।
महाजन को सुखराम के, सुदर को कहो मोय ॥ १२ ॥

म:फ: है कि ब्राह्मण का धन क्या है, क्षत्री का धन क्या है, महाजन का धन क्या है और शुद्र का धन कौन सा है।

सुदर का धन चोपगो, महाजन को धन दाम।
शस्त्रर धन राजपूत को, यूं ब्राह्मण को धन राम ॥ १३ ॥

शुद्र का धन चार पैर के जानवर गाय भैंस बकरी आदि, महाजन का धन दाम सम्पति, राजपूत का धन शस्त्र है और ब्राह्मणो का धन राम है, याने ब्रह्म की उपासना करना है।

महाजन को धन द्रव्य है, छत्री को धन गांव। ब्राह्मण को सुखराम के, करणी हर को नांव ॥ १४ ॥

म:फ: है कि महाजन का धन लक्ष्मी है और क्षत्री का धन गांव के गांव होते है, ब्राह्मण का धन करणी याने हर की भक्ति करे।

ब्राह्मण को किम ऊधरो, सुदर गत किम होय।
महाजन को सुखराम कहे, छत्री को कहो मोय ॥ १५ ॥

म:फ: है कि ब्राह्मण का उद्धार कैसे होता है और शुद्र की गति कैसे होती है व महाजन व

क्षत्री का कल्याण कैसे होता है।

सुदर पुन्न सुं उधरे, छत्री सत समाय। महाजन सच सुखराम के, ब्राह्मण हर कूं गाय ॥ १६ ॥

म:फ: है कि शुद्र की गति पूण्य से होती है, क्षत्री की सत याने न्याय करे, महाजन वचन सत्य बोले और ब्राह्मण का उद्धार हर याने ब्रह्म की भक्ति करने से।

सुदर की जय काय में, महाजन की कहो मोय।
सतगुरु कूं शिष बूजियो, ब्राह्मण की किम होय ॥ १७ ॥

म:फ: है कि सतगुरु को शिष्य पूछता है कि सुदर की महाजन की व ब्राह्मण की जय जय कार कैसे होती है।

सुदर की जय किरख में, महाजन जय व्यौपार।
यूं ब्राह्मण जय सुखराम के, करणी मांय विचार ॥ १८ ॥

म:फ: है कि सुदर की जय तीनो वर्णो की सेवा करने से, महाजन की जय व्यापार में व ब्राह्मण की जय ब्रह्म की भक्ति करने से होती है।

च्यार बरण नर नार रे, धन किये हर होय। बेद में सुखराम कहे, कुल कारण नही कोय ॥ १९ ॥

म:फ: है कि चारो वर्णो के नर नारियो में ऊपर बताये अनुसार कार्य करने से हर याने जयजय कार होती है, ज्ञान धारण में कुल का कोई कारण नही है।

दुज मरजादा झूंठ थी, तो हर क्यों राखी पाल।
हिरणाकुश सुखराम के, किम मारयो विध टाल ॥ २० ॥

म:फ: है कि ब्रह्माजी ने जो ब्राह्मणो की मर्यादा बनाई है यदि वो झूंठ थी तो विष्णु के अवतार ने ब्रह्माजी के दिये हुये वरदानो को टाल कर हिरणाकुश को कैसे मारा।

दुज मराजादा झूंठ थी, तो हनुमंत राखी काय।
सुणज्यो सब सुखराम के, लंका गढ के मांय ॥ २१ ॥

म:फ: है कि ब्रह्माजी की मर्यादा झूंठ होती है तो लंका में मेघनाथ ने हनुमान जी को ब्रह्मास्त्र से बांधा तो कैसे बंध गये।

काचे तंतण बंधियो, हनुमंत को दुज जाय। वो तागो सुखराम के, वे क्यों तोडयो नांय ॥ २२ ॥

म:फ: है कि हनुमान जी कच्चे धागे से बंध गये, उनमें तो इतनी शक्ति थी कि वे उसे तोड सकते थे परन्तु ब्रह्माजी की मर्यादा रखी इसलिये नही तोडी।

ब्रह्म समान देवत नही, दुज सो गुरु ना कोय।
तीन लोक सुखराम के, असंख जुग लग जोय ॥ २३ ॥

परब्रह्म परमात्मा के समान कोई देवता नही, ब्रह्मा जी के समान कोई गुरु नही, (जगत गुरु ब्रह्मा सही तिण में फेर ना सार) इस तीन लोक में असंख्य जुग बीत जावे। तो भी उपरोक्त देवता व ब्रह्माजी ही गुरु रहेंगे।

कहो राखस जन भजसी, क्युं करमी नर होय।
वे कलजुग सुखराम के, सुदर का शिष्य होय ॥ २४ ॥

म:फ: है कि जो राक्षस वृति जीवों की परमात्मा समझकर भक्ति करते है तो वे करमी नर कहलायेंगे, वे कलियुग में सुदरो के शिष्य होंगे।

केइक जीव कजलाई इस्तु, केइक सिलगण लागी।
के सुखराम केइक ऐसा, फूंक देतसम जागी ॥ २५ ॥

म:फ: है कि कई जीव कजलाई हुई आग के समान, कई जीव पूर्ण अग्नि के समान, कई फूंक देने से अग्नि चेतन होने के समान होते है।

नीच जात तूं मत बद मोसूं, समझ सोच मन मांही।
ब्रह्म भक्त आद है हरकी, तेरी सुणी न कांई ॥ २६ ॥

म:फ: है कि हे सुदर मेरे से वाद विवाद बिना जानकारी के मत कर, मन में सोच विचार कर कि ब्रह्म की भक्ति आदि अनादि से अटल है और तेरी याने कुंडा पंथी की भक्ति मन की चलाई हुई है।

दुज सुण असल वैष्णव कहिये, तामे फेर न सारा।
तीन लोक सकल सो पूजे, देख सुदर आधारा ॥ २७ ॥

म:फ: है कि ब्राह्मण का असली धर्म वैष्णव याने सनातन धर्म है, इसमें तनिक भी फेर सार नही है, तीन लोक ही सनातन धर्म को मानते है। इसलिये हे सुदर सबके उसी का आधार है।

अर्ध वैष्णव सुण है छत्री, सुदर जात कूं पाली।
महाजन पाव वैष्णव जाणो, गीता कहे है काली ॥ २८ ॥

म.फ. है कि क्षत्री आधे वैष्णव कहलाते है। सुदर वैष्णव नहीं कहलाते है। महाजन चौथाई वैष्णव होते है। इसकी गीता व शक्ति भी साक्षी दे रहे हैं।

तीन बरण अमराव कहिजे, दरशण देश दिवाणी।
चोथो बरण रेत है सारो, भगता ठम कवाणी ॥ २९ ॥

म:फ: है कि तीन वर्ण अमराव वकील हाकम दीवान की तरह है। चौथा वरण शुद्र रेत याने प्रजा के समान है और भक्ति करने वाले चारो ही वरण से ठम याने जोरावर कहलाते है।

चौथे बरण भगत जे कर है, तो सहाय करे हर सोई।
ज्यूं सुण भूप न्याव के ऊपर, भीड रेत की होई ॥ ३० ॥

म:फ: है कि चौथा वर्ण शुद्र अगर भक्ति करते है तो हर सहायता करते है। इसी प्रकार प्रजा में जब भीड पडती है तो राजा न्याय के साथ जनता की रक्षा करते है।

ने:छे पटा रेत नही पावे, ऊधम करो जुग सोई।
यूं सुण सुदर संत नही यारे, सहाय किये ही काहा होई ॥ ३१ ॥

म:फ: है कि सुदर नीच कर्म करके उस पद की प्राप्ति नही कर सकते, जगत में कितना ही उधम करे सहायता हो सकती परन्तु संत नही कहलायेंगे।

चाकर एक रीज जे पाई, कोई पूरब जन्म के सन्धे।
तो सुण काहा भयो जुग मांही, मेर पटायत बंधे ॥ ३२ ॥

म:फ: है कि सुदर के पूर्व जन्म के पूण्य उदय होने से रीज मोज मिल सकती है तो उसने युग में क्या पा लिया, रामजी का पट्टा तो मिल नही सकता है।

जग में राज करे अमरावई, डूम कदे नही होई।
जे कोई भूप मेहर कर देवे, तो रहे पलक दिन दोई ॥ ३३ ॥

म:फ: है कि संसार में राजा के राज्य में अमरावई करते है और वहां पर डूम याने ढोली नाच गा करके खुश कर देते है तो राजा की मेहर यदि थोडे दिन के लिये मिल जाये तो क्या होगा। करणी कर्म उपासना करने से कुछ दिनो के लिये फलो की प्राप्ति हो जाती है परन्तु अमर पट्टा नही मिल सकता।

युं सुण भक्त सुदर को कहिये, छाप पडे जुग मांही।
हर कूं गाय आप गत जाओ, मिल दरशण के मांही ॥ ३४॥

म:फ: है कि इसी तरह कूंडापंथी की भक्ति करने से छाप पड जाती है कि ये भक्त है परन्तु खट दरशनियो के बिना उनकी गति नही हो सकती।

दरशण बिना भेष सब पाखण्ड, गुरु बेमुख है सारा।
यां सुं मिल्या मोख नही पावे, सुणलो ज्ञान विचारा ॥ ३५॥

म:फ: है कि खट दरशनियो के बिना जितने भी भेष पहन कर फिरते है वे गुरु से बेमुख है व पांखडी है। मैं ज्ञान से विचार करके कह रहा हूं ऐसे गुरुओं का संग करने से मोक्ष पद की प्राप्ति नही हो सकती।

जे सुण मोख होवे पाखण्ड सूं, तो गुरु को बटे न कांई।
आप आपे मुंढे सारा, मिले मोख गत मांही ॥ ३६॥

म:फ: है कि यदि पाखंडियो की शरण धारण करने से मोक्ष पद की प्राप्ति हो जाती है तो केवली भगवंतो के अणभै ज्ञान को धारण करने की क्या आवश्यकता पडती। सब मूंडत होकर व भेष धारण कर सारा संसार मोक्ष में चला जाता।

कलजुग बुद्ध भिष्ट सो किनी, तांते या नहीं सूजे।
ब्रह्म ज्ञान की छांया ले ले, धरम उथाप्या झूंजे ॥ ३७॥

म:फ: है ब्रह्म ज्ञान की छांया ले ले याने अणभै ज्ञान की साखे बोलते है और आत्म धर्म के भेद की उथापना करते है अपने आपको पूजाते है। इसलिये कलयुग ने उनकी बुद्धि भ्रष्ट कर दी, तभी तो उन्हें असली केवल्य ज्ञान का भेद नही दिखाई देता।

ब्रह्मज्ञान को देश ना पावे, बेमुख हुवा आंधा रे।
के सुण राम शकल के मांही, काहा दरशणी सारे रे ॥ ३८॥

म:फ: है कि ज्ञानी कहते है कि ब्रह्म सब में समाया हुआ है चाहे दरशणी हो यहां तक की प्राणी मात्र में भी, परन्तु ब्रह्म भक्ति का भेद नही होने से उस पद की प्राप्ति नही कर सकते। इसलिये ज्ञानी होकर भी गुरु से बेमुख व अंधे है।

गुरु मरजाद भांग के आगे, तिरियो सुण्यो न कोई।
गीता वेद भागवत गावे, सुणो संत सब लोई ॥ ३९॥

म:फ: है कि गीता वेद भागवत व संत भी साक्षी दे रहे है कि गुरु ब्रह्माजी की मर्यादा भंग करके चाहे गृहस्थी हो या भेषधारी, किसी का भी उद्धार नही हुआ और न होगा।

राम धरम करणी सो सांची, धिन जे भक्त कमावे।
दरशण बिना इष्ट गुरु नांही, दरगे दाद न पावे॥ ४०॥

म.फ. है कि जो खट दर्शनियो को गुरु नही मानता और जो सुदर गुरु बनकर बैठा है उसको

मानता है तो ऐसे शिष्यों को रामजी की दरगा में स्थान नहीं मिलेगा।

जे हर मेर आप सो बांधी, आद अंत ठहराया।
सो गुरु असल ज्ञान में जोवो, और रेत जुग भाया ॥ ४१ ॥

म.फ. है कि गुरु का ओहदा ब्रह्माजी ने इन छ खट दर्शनियो को दिया, यह मर्यादा आदि अनादि से बंधी हुई है। इसलिये आप ज्ञान से जोवो, वह ही गुरु है, बाकी सब प्रजा मुजब है।

जल बिन पलक प्राण नही जीवे, तड़ फड़ अब मर जावो।
धरणी बिना सरे नही पल ही, पवन बिना दुख पावो ॥ ४२ ॥

म:फ: है कि ब्रह्मा विष्णु महादेव व शक्ति चारो को जगत में मर्यादा बांधने व सृष्टि रचाने का हुक्म पारब्रह्म परमात्मा ने दिया है। जब जल वायु पृथ्वी अग्नि अन्न सूर्य चन्द्रमा व आकाश की स्थापना की, उसी दिन से प्राणी एक क्षण भी इन देवताओ के बिना जीवित नही रह सकता। इनको छोडने से तडफ तडफ कर मरना पडता है।

दरशण बिना हुसो युं दुखिया, अंतकाल पिसतावो।
केवल ऊरे काम है यां सूं, देह छाड कहां जावो ॥ ४३ ॥

म:फ: है कि खटदरशणियो के बिना शुद्रो की याने कूंडा पंथियो की भक्ति धारण कर लेते है तो उनको अंत समय पछताना पडेगा। इसी तरह कोई केवल की भक्ति को भी धारण कर लेते है तो सभी देवता जल, वायु, पृथ्वी, अग्नि, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा, अन्न इनकी निंदा करने से अन्त समय पछताना पडेगा, क्योंकि आयुष्मान कर्म खत्म होने तक इनका सहारा लेना पडता है।

तीन लोक का ये सुण करता, ब्रह्मा विष्णु महेशा।
जब लग देह धरोगे प्राणी, जाय कौन के देशा ॥ ४४ ॥

म:फ: है कि तीन लोक के ब्रह्मा विष्णु महादेव शक्ति ईश्वर करतार है। जब तक देही धरोगे तब तक इनके सहारे रहना पडेगा। यदि इनकी निंदा करोगे तो त्रिलोकी में रहोगे कहां?

जन्मे मरे जहां लग जुग में, दरशण बिन गुरु नांही।
ब्रह्मा विष्णु महेश की बांधी, या मरजाद कहाही ॥ ४५ ॥

म:फ: है कि तीन लोक में ही जन्मना व मरना बना रहेगा तब तक खट दरशनी बिना गुरु नही है। ये ब्रह्मा, विष्णु, महादेव की बांधी हुई मर्यादा है।

दरशण मांय जुगे जुग हुआ, साध सिध रिष भारी।
गिणता छेह पार नही आवे, कब लग कहूं उचारी ॥ ४६ ॥

म:फ: है कि हे सुदर खट दरशनियो में युग युग में साध सिद्ध ऋषि भारी हुये है जिनकी कोई गिनती नही है। इनका मैं कहां तक वर्णन करुं।

ऐसा हुआ दरशणा मांही, मांड भांज फिर थापी।
मिलिया जाय ब्रह्म के भेला, हुआ आप से आपी ॥ ४७ ॥

म:फ: है कि हे शुद्र खट दरशणियों में भी ऐसे भक्त हुये है जिन्होंने पृथ्वी को भांजकर फिर थापी और ऐसे भी भक्त हुये है जो स्वयं भी ब्रह्म में मिले और आपो आप ब्रह्म हुये।

अरेल :- ढेड अग्या दे जीव जुग के तारिया, असंख जुगा के बीच किणे गुरु धारिया।
तूं आद अंत को सोज ज्ञान मत दीजिये। हर हां हूंतां आया सोई, सोज गुरु कीजिये ॥ ४८ ॥

शुद्र यानि कुंडा पंथी ने आज्ञा देकर किसी भी जुग में कितनों को तारा है। और असंख्य जुगों में ऐसा कोई गुरु हुवा हो तो मुझे ज्ञान से विचार करके बताओ। इसलिये जिन्हें गुरु का ओहदा है उसकी सोजी करके गुरु कीजिये।

जुग जुग भागी भूक तांही सूं भागसी, ए नित उठ जागे जीव सोही सूं जागसी,
जुग जुग तिरिया जीव जिका गुरु लार रे। हर हां वे ही संग सुखराम अबे ही तार रे ॥ ४९ ॥

म:फ: है कि हे शुद्र आदि अनादि से ब्रह्म की भक्ति से भूख भागती आई है, उसी से आत्मा को ब्रह्म में मिलने की भूख भागेगी, जिस ज्ञान से हंस वृति के जीव जगे है उसी से आगे भी जगेंगे। जिस केवल्य ज्ञान से जीव तिरते आये है उसी ज्ञान से तीरेंगे।

नीच गुरां को शिष कहो कुण ऊधरयो, सो मुज कहो सुणाय किसे जग सुधरयो।
नही तर छोडो इष्ट ढेड की तम रे, हर हां नही तो काढे खाल गुन्हां इण जम रे ॥ ५० ॥

म.फ. है कि शुद्र यानि कुंडा पंथी को गुरु बनाकर कोई शिष्य उधरया हो तो मुझे बतावो। और उनसे कोई सुधरा हो तो बतावो। नही तो ढेड गुरु को छोडकर केवल्य ज्ञान धारण कर लो। नहीं तो ऐसे कुंडा पंथी को गुरु करने के कारण जमराज जी तेरी खाल उधेड देंगे। यानि चौरासी में चला जायेगा।

दरशण को धोकर पांय ढेड कोई ऊधरे, ज्यूं पारस संग लोहो लागता सुधरे।
ऊण सोना संग लोहो कनक नही थाय रे। हर हां यूं नीच गुरु के संग मोख नही जाय रे ॥ ५१ ॥

म:फ: है कि खट दरशणियों के पैर धोकर याने उनका ज्ञान धारण करने से कोई शुद्र का उद्धार हो सकता है लेकिन कोई शुद्र कूडापंथी यदि स्वयं का ज्ञान धारण कराके उस पद की प्राप्ति कराना चाहे तो नही करा सकता, जैसे पारस के संग लोहा सोना हो सकता है परन्तु सोने के साथ लोहा सोना नही हो सकता, इसी तरह शुद्र की भक्ति धारण करने से मोक्ष नही जा सकता।

जब लग माया ब्रह्म दोय नर जाण है, अे सुख दुख कलपे जीव लोभ की बाण है।
वे जाहां लग कुल मरजाद भांगसी कोय रे। हर हां सो नर केह सुखराम सुं पशु जख होय रे ॥ ५२ ॥

म:फ: है कि तीन लोक में प्राणी मात्र में ब्रह्म एक है परन्तु साकार शरीर निराकार आत्मा ब्रह्म दो मानते है लेकिन शरीर माया है आत्मा ब्रह्म है, सब में आत्मा ब्रह्म है एक ही है। यदि दो बताते है तो लोभ के वचन है। ऐसे लोभ के वचनो से मर्यादा भांगते है तो वे पशु व राक्षस होंगे।

राखे गुरु मरजाद इष्ट की पाल रे, कड़वा मीठा बैण लखे उर गाल रे।
वो जब लग वर्णा विचार एक ही करत है। हर हां वे नर तो सुखराम नरक में पडत है। ॥ ५३ ॥

म.फ. है कि यदि कोई शुद्र गुरु की मर्यादा को तो रखता है और परमात्मा की मर्यादा को नही मानता है, अपने गुरु के झूंठे सच्चे वचनों को मान लेता है तथा चारों वर्णो को समान समझता है तो वह व्यक्ति नरक में जायेगा।

बांधे धाम दुकान टेल नर लेत है, ज्यूं आप आस जस काज द्रव नर देत है।
रे तब लग निंदे नीच धरम कुल ऊंच कूं, हर हां वां नर कूं सुखराम सूंपे जम भूंच कूं ॥ ५४ ॥

म.फ. है कि शुद्र गुरु यदि धाम रूपी दुकाने खोलकर टहल रूपी धन लेते है और देने वाले भी कई तरह की अपनी आशाओं की पूर्ति के लिये व यश के लिये धन देते है। और वो शुद्र गुरु ऊंचे धर्म वालों की निन्दा करता है और ऐसे गुरु की तू टहल बंदगी करता है तो गुरु शिष्य दोनों

को धर्मराजजी के हाथों मार सहन करनी पडेगी।

बैण भांणजी मांय दोय कर जाण है, अे शिष साखा की जोड़ पेख सुखमान है,
रे जब लग नीची जात नीच कुल होय रे। हर हां कोई साख सुदर की देख ऊंच नही कोय रे ॥ ५५ ॥

म:फ: है कि चारो वर्णो में चाहे किसी भी जाति का हो, बहन को टाल कर भाणजी से विवाह कर लेता और उसी में सुख मानता है तब तक वह शुद्र नीच है वह ऊंच नही हो सकता, इसकी सभी शास्त्र साक्षी दे रहे है।

जब लग डर पे मन शरम घट मांय है, ओ बैण कहे शुभ जोय निरखे राजा अेहे है,
रे जब लग ब्रह्म ज्ञान कथ पिस्तावसी। हर हां वे नर खूनी होय नरक सो जावसी ॥ ५६ ॥

म.फ. है कि ज्ञानी ज्ञान कथते समय संसार की लज्जा शर्म व डर रखते है और वचन बोलते समय उसके मन में यह है कि सामने बैठे हुए राजा है, वो कैसे प्रसन्न रहे वैसे वचन बोलता है तो ब्रह्म ज्ञान कथते हुए भी पछताना पडेगा। और वो परमात्मा के घर का खूनी होगा, उसे नरक में जाना पडेगा।

घडी एक ब्रह्मज्ञान पलक शुभ ढूंढवा, सो नर इत ऊत बिचल सबे धे बुडवा।
जासी शीष गुरु सेंग रसातल जीव रे। हर हां काची मत सुखराम न माने पीव रे ॥ ५७ ॥

म:फ: है कि ज्ञानियो और संसारियो की बुद्धि ऐसी है कि एक घडी में ब्रह्म ज्ञान को सच्चा मान लेते है व पलक भर में जीव भाव से सुख लेने के लिये शुभ करमो को ढूंढता रहता है। इस प्रकार इत ऊत का विचार होने से चाहे प्रवचन देने वाले गुरु हो, चाहे श्रोता, शिष्य हो। ऐसी कच्ची मति धारण करने से परमात्मा नही मानते है। उनको रसातल में जाना पडता है।

रे ऊपजे ब्रह्मज्ञान पीर को शिष है, ऐसो हुवो तां एक नीर काहा विष है।
रे जहां तहां पांचु एक आपको आप ही। हर हां ऊंच नीच गुरु शिष कोई नही जात ही ॥ ५८ ॥

म.फ. है कि जिसको ब्रह्म ज्ञान ऊपज गया फिर जाकर पीर का शिष्य बनता है, ऐसा करने से ब्रह्म का नाम रटते हुए भी ब्रह्म रूपी नीर की जगह विष आ जायेगा। यद्यपि पंच तत्व में आत्म ब्रह्म एक ही है। परन्तु ऊंचा होते हुए भी नीच गुरु का शिष्य बनने के कारण उस पद में नही जायेगा।

केवल लग है जात नाम सो ही बाजसी, अे आठ करम देहसा परथ नही भांजसी।
तो ताते समझ विचार राम गुण गाइये, हर हां सुदर को सुण ज्ञान भिष्ट नही थाइये ॥ ५९ ॥

म.फ. है कि शुद्र अगर केवल्य भक्ति भी धारण कर लेगा तो केवल में पहुंचने से पहले तक तो जिस जात में पैदा हुआ, वो ही नाम बाजेगा। नीच जाति में पैदा होने के कारण उसकी देही शुद्र की है, अे आठ कर्म जब तक देही है बिल्कुल भी खत्म नहीं होंगे। इसलिये परमात्मा की भक्ति करते समय सुदर को गुरु करके भिष्ट मत होवो।

ऊंच होण के काज नीच ही कसत है, अे करणी करे ऊपाय हिये या बसत है।
रे थे ऊंचा होय नीच संग क्यूं जात हो, हर हां रोडी पर परसाद बैठ क्यूं खात हो ॥ ६० ॥

जो नीच योनि में है वे उच्च बनने का उपाय करता है और तुम ऊंचे होकर भी नीच के संग हो जाते हो। जैसे घर पर भोजन नही करके रोडी पर बैठकर खाते है।

ब्रह्म ज्ञान है असल साजे नही बावला, अे लाख बरस मत राख खूनी हुवे रावला।

एक वचन के मांय कमाई जाय रे, हर हां पीछे सब सुखराम करम भुगताय रे ॥ ६१ ॥

म:फ: है कि हे शुद्र तुं मूर्ख है और ब्रह्म ज्ञान सत्य है अर्थात असल है यदि तूं लाख वर्षो तक भी मन के मते का और कूंडे पंथी का ज्ञान धारण करेगा तो परमात्मा के घर का खूनी होगा। क्योंकि एक ही श्वांस में बिना ब्रह्म भक्ति के तीन लोक का मोल जायेगा। इसलिये मन के मते का ज्ञान धारण करने से कर्मो को भोगना पडेगा।

ब्रह्म ज्ञान मत धार काहा कोई ब्रह्म होवसी, रे सूते कूं हलराय काहा कोऊ इधक सोवसी।
इण में ओ गुण होय ईतो फल जागसी, हर हां इण देहरा सुखराम करम नही लागसी ॥ ६२ ॥

कोई मन से ब्रह्म ज्ञान धारण करले और कहे कि मेरे तो ब्रह्म ज्ञान है तो उसे वो पद नही मिलेगा, जैसे कोई सो रहा है और उसे जाकर हिला देवे तो क्या वो ज्यादा सो सकता है। हां राम राम करने से इतना फल तो मिलेगा कि उसके नये कर्म नहीं लगेंगे।

जब लग जन्मे जीव गरभ में जाय रे, अे तब लग ब्रह्म ग्यान राख दुख पाय रे।
ओ जे आरे कर लेहे अनन्त हुवे आवसी, हर हां नटिये सुं सुखराम काहा नर खावसी ॥ ६३ ॥

म:फ: है कि यदि ब्रह्म ज्ञान धारण कर लेगा तो भी उसका जन्म मरण तो छूटेगा नही, निश्चय ही गर्भ में आना पडेगा। चाहे अनन्त ब्रह्म में ही मिलने के कार्य क्यों न करे, चाहे वो मना भी करे, तो भी आना पडेगा, क्योंकि ब्रह्म में सुख दुख तो है नही। सुख दुख भोगना ही खाना है।

ब्रह्मा बांधी जात बरण कुल आय रे, अब तेरी क्या सुण पोच उथाप्यो जाय रे।
ओ राम नाम घड पेल ऊणई भाखिया, हर हां जात पांत गुण नेम बिधो बिध राखिया ॥ ६४ ॥

म:फ: है कि हे शुद्र ब्रह्माजी की बांधी हुई जाति वर्ण व कुल की मर्यादा है यदि तू उसका बखाण करता है तो तेरी क्या पहुंच है सो तूं बडे घमण्ड के साथ ऊथापता है। राम का नाम तो आदि से अनादि से है। ब्रह्माजी ने भी इस राम के नाम को रटा, फिर वेदो को उच्चारण कर जाति पांति नेम गुण स्थान का ध्यान रखा।

इमरत निंब खाये सांप मुख दीजिये। रे हीरे सूं सिणगार सोने को काहा कीजिये।
रे अेमख जल में डार बास नही खोय है, हर हां नीच जात इण देह उतम नही होय है। ॥ ६५ ॥

म:फ: है कि हे शुद्र अमृत को यदि सर्प के मुख डाल दे तो नीम के समान खारा जहर हो जाता है और हीरे को सोने में जडने से हीरे का मोल घट जाता है। मांस को जल में डालने से मांस की गन्ध नही जा सकती। इसी प्रकार ब्रह्माजी की मर्यादा के अनुसार नीची जाति में जन्म से ऊंच जाति का नही कहला सकता।

मद में मिश्री डार लेहेरे नही जाय रे। यूं खर कूं रातब बंध तुरंग नही थाय रे।
रे जिण संचे को राछ जाग ऊण छाजसी, हर हां नीच ऊंच सुखराम देहे लग बाज सी ॥ ६६ ॥

म:फ: है कि शराब में मिश्री डालने से शराब का गुण नही जायेगा, गधे का श्रृंगार करने से घोडा नही कहलायेगा। किसी संचे में ढले हुये बरतन है जब तक नाम बरतन का ही रहेगा, उसी तरह जिस जाति में जन्म हुआ वह आयु समाप्त होने तक, चाहे भक्ति कोई सी भी करो, जाति तो वही कहलायेगी।

ब्रह्म ज्ञान मत लेहे ऊथापे आय रे, सुण सो झूंठा जग मांय विषे मध खाय रे।
जे आप हुवे कुल हीन और कुंई करत है, हर हां सो दुष्टी सुखराम नरक में पडत है ॥ ६७ ॥

म:फ: है कि शुद्र कूंडा पंथी में मति ऐसी होती है और पास में ब्रह्म ज्ञान भी है परन्तु सत्य ब्रह्म ज्ञान के भेद को उथापते है। सो संसार में झूंठे है अर्थात वे विषय रस खा रहे है। आप तो ब्रह्माजी की मर्यादा तोडते है और दूसरो को भी तुडाते है तो वह परमात्मा के घर का खूनी है। ऐसे नर सीधे नरक में जाते है।

चनण आक बिलुंज शकल में आग रे, यूं हर व्यापक होय ब्रह्म सब जाग रे।
पण बल जल कोयला होय तहां लग से रहे, हर हां यूं ऊंच नीच सुखराम नीपनेइ फैर है। ॥६८॥

म:फ: है कि चन्दन आक और सब लकडियों में अग्नि रहती है, इसी तरह हर याने ब्रह्म परमात्मा सब जगह है। जब तक जलकर भस्म नही होगा तब तक चन्दन आक का अलग अलग गुण रहेगा। इसी तरह ऊंची नीची जाति में जन्म लेने पर शरीर रहेगा तब तक वही जाति कहलायेगी।

एक चनण को बाग आग सूं जलत है, रे दूजे आक बिलुंज थोर ही बलत है।
रे ना वैसो वा तेज बास भी नांयरे, हर हां यूं ऊंच नीच सुखराम नीपनेई कहा रे ॥६९॥

म:फ: है कि एक चन्दन का बाग अग्नि से जलता है और एक आक और बिलुंज थोर ये भी अग्नि से जलते है, परन्तु खुशबु दोनो की अलग अलग होगी। इसी प्रकार ब्राह्मण याने ब्रह्म की भक्ति करते है वे और एक शुद्र याने कूंडा पंथी मन से ही ब्रह्म की भक्ति मानते है पर जैसे चन्दन व आक की लकडी जलाने से गुण अलग अलग प्रकट होता है। इसी प्रकार उच्च याने ब्रह्म की भक्ति करने वाले और नीच याने शुद्र कुंडा पंथी का धर्म धारण करने वाले बराबर नही हो सकते।

पिये सब बनराय नीर सो एक ही, कहे राम सब जात धाम हर पेख ही।
पिण सब ही एक नही होय भेला नही रेत है। हर हां यूं ऊंच नीच सुखराम निपज्या ही फेर है ॥७०॥

म:फ: है कि जिस तरह पूरी वनराय को एक ही नीर से पिलाते है उसी प्रकार ब्रह्म सब में एक ही है परन्तु एक तो राम राम को रटकर सतियां जलती है, एक राम को रटकर स्वर्ग व बैकुण्ठ को जाते है व एक राम को सांस ऊसांस रटकर परम मोक्ष की प्राप्ति करते है। इन सब का गुण अलग है। इसी प्रकार ऊंच नीच जाति में अन्तर है।

कियो नीच को संग ईख इण जाय रे, अर लियो भयंग कुल ऊंच हेर जुग मांय रे।
ये मिलत ही सुख होय दुख सब टलत है, हर हां यूं नीच संगी सुखराम आग में बलत है ॥७१॥

म:फ: है कि ईख को बांस के संग से जलना पडता है व सर्प चन्दन के वृक्ष को ढूंढकर उस पर लिपट कर अपनी ज्वाला शान्त करता है। इसी प्रकार कूंडा पंथी की संगत धारण करने से व ईख को बांस का संग करने से जलना पडा, उसी प्रकार शुद्र की संगत से चौरासी रूपी अग्नि में जलना पडेगा।

<u>कुण्डलिया</u> :- ब्रह्मज्ञान बिन ऊपने, ऊंच नीच संग जाय।
सो नर सब पिस्तावसी, अंतकाल के मांय ॥
अन्तकाल के मांय मार पडसी सिर भारी, या तीनां की मरजाद, भांग के करे खुंवारी।
पाप धरम की वासना रहती है उर मांय। जब लग झूंठो कथत है, ब्रह्म ज्ञान कूं आय ॥७२॥

म:फ: है कि ब्रह्मज्ञान के अलावा जो कूंडा पंथी के धर्म को धारण करके उसी को ब्रह्म ज्ञान मानते है। उनको अंत समय पछताना पडेगा व यमदूतों की मार खानी पडेगी, क्यों कि ब्रह्मा, विष्णु,

महादेव की मर्यादा को भंग करते है यानी छतीस ही जात एक ही कुंडे में खाते है जबकि ब्रह्माजी ने अलग अलग जाती बनाई है। पाप धर्म की वासना भी मन में रहती है जब तक झूंठ ही कहते है हम ब्रह्म ज्ञान को अपनाते है।

कवित : ब्रह्म ज्ञान सब सांच, विष इमरत सम जांणे। बेटी माता बैन, नार सागे कर माने।
लेवे सबे स्वाद, फेर धणीयापे नांही। शुभ अशुभ की चाय, आस मासो कुछ नांही॥
जीवन मरण ऐको गिणे, जस कुजस नही कोय।
ब्रह्म ज्ञान सुखराम के, वांके ऊर घट होय ॥ ७३ ॥

म:फ: है कि ब्रह्म ज्ञान व ब्रह्म ज्ञानी तो वही असल है जो विष अमृत को समान समझते है। माता बहन बेटी नार सबको आत्म ब्रह्म से एक मानते है। लेवे सब स्वाद यानी मां को मां के रूप में, बेटी को बेटी के रूप में, इसी प्रकार नार को नारी के रूप में मानते है। फिर भी आत्म ब्रह्म का रूप समझ कर उन पर अपनापन नही करते है व शुभ अशुभ की भी चाय रती भर नही रखते। जीवन मरण को भी एक समान समझते है। ऐसा विचार धारण करने वाले सच्चे ब्रह्म ज्ञानी है।

करे जात में ब्याव, बेन बेटी परणावे। डसे सरप तन आय, सोच चित मांही लावे॥
तब लग झूंठो कथत है, मुख सुं ब्रह्म ज्ञान। आप जात मे फंस रहयो, दे ओरां कूं ज्ञान ॥ ७४ ॥

म:फ: है कि बहन बेटी का विवाह जाति में करते है। यदि शरीर में सर्प डस जाता है। तो मन में चिंता करते है। तब तक ब्रह्म ज्ञानी नही है। दूसरो को कहता है कि मैं ब्रह्म ज्ञानी हूं और स्वयं कूंडा पंथी के ज्ञान में फस रहा है।

अरेल :- रे राम नाम तत सार भजन कर लीजिये, रे ऊंच, नीच को संग काहे कूं कीजिये।
सुण पीजे निर्मल नीर घाट पे जाय रे, हर हां बिना घाट सुखराम धका क्यों खाय रे ॥ ७५ ॥

म:फ: है कि राम नाम ही तत्व सार है याने ब्रह्म की भक्ति है। उसको धारण करो, हे नर नारियो उच्च ब्रह्म की भक्ति को छोडकर नीच याने शुद्र की भक्ति क्यों धारण करते हो। निरमल नीर याने ब्रह्म भक्ति साफ जल की तरह है। जिसके पास ब्रह्म भक्ति का भेद है उसके पास जाकर धारण करो। व्यर्थ में ही दूसरे स्थान पर जाकर धक्के क्यों खाते हो।

नीच कथे ब्रह्म ज्ञान तिकण को झूंठ है, रे ऊंच कहे कोई आय ताही कूं छूट है।
ओ स्वार्थ के लेण रोवणा रोवसी, हर हां ईण देह छता सुखराम एक नही होवसी ॥ ७६ ॥

म:फ: है कि जो कूंडा पंथी ब्रह्म ज्ञान को कहता है सो सब झूंठ है। यदि ऊंच ब्रह्म ज्ञान कहता है। और ब्रह्म ज्ञान की ही बातें करता है तो वह असल है। इसलिये हे नर नारी शुद्र तो स्वार्थ के लिये रोवने रोता है। जब तक शुद्र का शरीर रहेगा तब तक एक को भी ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति नही करा सकता।

खेत खड़े सब जात खेत खड् बाजसी, पण जात एक किम होय छाप किम भागसी।
ऐ पांच तत की चीज सरब जुग मांय है, हर हां शुभ अशुभ सुखराम संग नही थाय है ॥ ७७ ॥

म:फ: है कि जिस तरह चारो ही वर्ण वाले खेती बोते है तो सभी किसान कहलाते है परन्तु जाति अलग अलग है। इसी तरह पांच तत्व का शरीर सबका बना हुआ है, परन्तु शुभ अशुभ साधन अलग अलग है। इसी तरह ब्रह्म ज्ञान व कूंडा पंथी का ज्ञान भी अलग अलग है।

दरशण निंदे नीच ऊथापे धरम रे, अे बांधे आप दूकान कमावे करम रे।

आद अंत का होय आज का नाय है। हर हां वो दुष्टी नर सुखराम ऊथाप्या जाय है। ॥ ७८ ॥

म:फ: है कि खट दरशणियो की निंदा करते है और उनके धर्म की ऊथापना करते है। अपनी दुकाने बांधकर नीच कर्म कमाते है। खट दरशनियो का ज्ञान आदि अनादि से है, ऐसे ज्ञान को ऊथापने वाले नर दुष्टि है।

जब लग शिष्य, गुरु होय, बंदगी कीजिये, सुण पाप धरम की मेर काल सुं बीजिये।
तब लग शुभ मरजाद सत सब बात है, हर हां ओ ब्रह्म ज्ञान मत धार नरक में जात है ॥ ७९ ॥

म.फ. है कि जब तक मैं गुरु तू शिष्य मानता है और कहता है कि यह पाप है यह पुण्य है, काल से डरो भाई। यह सब बातें शुभ है, मर्यादा की है और सच्ची है। और इसी को ब्रह्म ज्ञान मानता है तो उसे गर्भ रूपी नरक में जाना पडेगा।

राम कहे सब जीव कोण के मांय नही, अे रूखराय बन झाड किसके छांह नही।
यूं मिटे नही लछ जात फल ही आवियां, हर हां नीच ऊंच नही होय राम कूं ही गाईयां ॥ ८० ॥

म:फ: है कि हे नर नारी ब्रह्म परमात्मा किसके अन्दर नही है। जैसे वन में सभी वृक्षों की छाया रहती है लेकिन वृक्षों की जाति अलग अलग होती है, फल भी अलग अलग आते है। इसी तरह कूंडा पंथी की भक्ति धारण कर राम की भक्ति मानते है तो यह राम की भक्ति नही है, ऐसे राम को गाने से क्या लाभ है।

अशुभ चीज किण बात सराई आय रे। तो काहा आ उत्तम वा होय कोण नर खाय रे॥
यूं नीच जात को अंग चतुर सी लखियो।
हर हां तोई कहा भयो सुखराम उत्तम नही भाकियो ॥ ८१ ॥

म.फ. है कि कोई मनुष्य अशुभ वस्तु की सराहना करता है तो उसके सराहने से क्या वो वस्तु उत्तम हो जायेगी और उसे कोई खा जायेगा। इसी तरह कोई नीच जात का है और ज्ञान चतुराई से सीख गया तो ज्ञान सीखने से वो उच्च नही हो जायेगा।

करो बंदगी पांच, राम सारा ही गावो। रे दरशण बिन गुरु सोज ज्ञान में मोही बतावो॥
जे अब आगे होय नीच सतगुरु जग मांही।
हर हां तांका शिष सुखराम जीव नरक में जाई ॥ ८२ ॥

म.फ. है कि पंच तत्व के शरीर में सभी नर नारिया हैं, उनको राम रूप समझो और परमात्मा के नाम का सिमरण करो। छ खट दरशणियों को छोडकर कोई गुरु है तो ज्ञान से सोझी कर मेरे को बताओ। इसलिये अगर कोई नीच जाति का सदगुरु बनकर बैठा है तो जो उसके शिष्य बनेंगे वे सब नरक में जायेंगे।

पारस दरशणी संत कनक है दूज रे। अे चार बरण सब आप जुगे जुग पूज रे॥
सुण रूपो है रजपूत तांबो है बांणियो। हर हां ओ लोहो जस्त सुखराम सुदर सो जाणियो ॥ ८३ ॥

म.फ. है कि खट दरशणी पारस के समान है, ब्राह्मण सोने के समान है, चारो वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र इन खट दरशणियों को ही गुरु रूप में पूजते आये हैं। जगत में चांदी राजपूत के समान है, तांबा बणिये की तरह है, लोहा व जस्ता शुद्र की तरह है।

ताम्बो करडोइ जाय किनक सो थाय रे। ओ रूपो तो तत्तकाल तुरत होय जाय रे॥
पिण करडो लोहो कसार नेक ही जोत है। हर हां सो कंचन सुखराम परत नही होत है ॥ ८४ ॥

म:फ: है कि सब धातुओ का गुण अलग अलग है। जैसी जैसी धातु कठोर व नरम ताप के हिसाब से गलती है पर सब धातु को कंचन के समान नही समझना है।

नख चख चोटी बीच जीव तो एक ही। कठे कियारे धाम भक्त सिरपे कही॥
रे मुख सुं कर दे एक सब घात रे। हर हां न्यारा है सुखराम झूंठ है बात रे ॥ ८५॥

म.फ. है कि नख चख से चोटी तक जीव आत्मा एक ही है। अब इस शरीर से जैसी भक्ति करेगा वैसा धाम मिल जायेगा। जैसे एक ने केवल्य भक्ति धारण की तो वो के.पद में पहुंच गया किसी ने दूसरा साधन अपनाया वो उस भक्ति के प्रताप से स्वर्ग बैकुण्ठ पहुंच गया। कोई इसी मुख से ऐसे वचन बोलकर घात कर रहा है और सिर पर गुनाह का भार बांध रहा है। इसलिये ब्रह्म तो न्यारा है बाकी सब बात झूंठ है। यानि आत्मा सत है। शरीर असत है।

पग को पग संग ठीक हाथ को हाथ है, ओ गुदा लिंग को संग मुख पर नाक है।
रे प्राण शकल में एक दोय नही ठाणिये, हर हां संग तो सुखराम बिधो बिध जाणिये ॥ ८६॥

म: फ: है कि पैर पैर के साथ है, हाथ हाथ के साथ है, गुदा के संग लिंग है। मुख पर नाक है। इसी प्रकार प्राण और आत्मा एक है, दो नही है। प्रकृति की बनी हुई चीजो में जिसके संग है वे सब सही है।

नीच जात को संग परथ नही कीजिये, रे जे वो करता होय तोई नही धीजिये।
कही किशन सुण देव ग्रन्थ में बात रे। हर हां नीच संग सुखराम मोख नही जात रे ॥ ८७॥

म:फ: है कि हे नर नारियो शुद्र याने नीची जाती वालो का संग नही करना चाहिये, चाहे करता ही क्यों न हो। तब भी उनका संग नही करना, यह बात कृष्ण ने भी गीता में कही है। शुद्रो का ज्ञान धारण करने से मोक्ष की प्राप्ति नही होगी।

मिरच संग कपूर, शूर सिर लोहरी, ओ ऋतुवंती की छांह सांप शिर दोवरी।
रे लागे हाथ बिठान वु सब के आय रे, हर हां वा मेहरी सुखराम मोख नही जाय रे ॥ ८८॥

मिर्ची के संग कपूर का गुण नही रहेगा। सिर में दर्द है वो लौरी सुनाने से ठीक नही होगा। ऋतवंती स्त्री की छाया व उसके हाथ से कई चीजे खराब हो जाती है। गर्भवती स्त्री से सर्प अंधा हो जाता है। इसी प्रकार शुद्रो का संग करने से मोक्ष की प्राप्ति नही हो सकती है।

रिष चमारी देख सराई छोतरा, सो इण खून दे लंघ ढेड घर ओतरा।
चुणिया माली फूल अशुद्ध सो होय रे। हर हां इण कारण सुखराम बुद्धि दी खोय रे ॥ ८९॥

म:फ: है कि एक ऋषि ने चमार जाति की स्त्री को देखकर उसकी सराहना की, इस कारण उसको ऐसी छोत लगी कि दूसरे जन्म में ढेड़ नीची जाति में जन्म धारण करना पडा। माली ने स्त्री का संग कर और बिना स्नान किये फूल चुने तो इस कारण उसकी बुद्धि क्षीण हो गई।

कांधो घी में डार हींग कूं लाय के, रे किस्तुरी कूं फूलेल पखाले आय के।
सुण तो ही वास न जाय रहत गुण मांय ही,
हर हां इऊं नीच जात की छोत परत नही जाय ही ॥ ९०॥

म.फ. है कि प्याज को घी व हींग के साथ पकाये, और कस्तुरी को इत्र से पखाले तो भी दोनों की बास व खुशबु नहीं जाती है, उनके गुण उसमें ही रहते हैं। इसलिये नीची जाति में जन्म लेने के कारण उसकी जाति की छोत नहीं जाती।

नीच किसे गुण होय भेद ओ दीजिये, रे पीछे सोच विचार संग सो कीजिये।
रे जे करमा सुं होवे नीच की जात रे। हर हां तो वांके संग जोय मोख नही जाय रे ॥ ९१ ॥

म:फ: है किस गुण से नीच बनते है। मुझे भेद बताओ, ये सोच विचार कर संग करना चाहिये। यदि कर्मो से नीच से नीच जाति का कहलाते हो तो इस पर विचार करो और समझो, उनके संग से मोक्ष की प्राप्ति नही होती।

गुरु उत्तम कूंई जोय मिधम जे जाणिये, रे बाहर माहेली संक देहे की आणिये।
सो वो नर नरकां जायं कदे ना सुधरे, हर हां ये प्रगट जाणो ढेड तको क्यूं ऊधरे ॥ ९२ ॥

म:फ: है कि शुद्रो का ज्ञान उत्तम जानो, चाहे नीचा जानो, शरीर के अन्दर व बाहर का गुण अवगुण देखो तो भी शुद्र का शिष्य कभी शुद्ध नही हो सकता। मैं प्रगट में बात कर रहा हूं। ढेड याने कूंडा पंथी का उद्धार नही हो सकता है।

चरणामृत ले नांय परसादी आय रे, अे गुरु के घर को नीर पीवे नही जाय रे।
सुण केतां के गुरु ऊंच हमारा जाणिये, हर हां आ झूंठी सुखराम बात क्यूं मानिये ॥ ९३ ॥

म:फ: है कि शुद्र गुरु के घर जाकर शिष्य न चरणामृत लेते है न प्रसादी न जल पीते है। इतना गुरु का मान रखकर अपने गुरु को ऊंचा मानते है। तो भी शुद्र गुरु तो नीच ही रहेगा, उसकी बात मत मानो।

अे गुरु कूं करतार राम सो कहत है, अर प्रसादी के बेर देत ना लेत है।
रे आ अन्तर में बास नीच की होय रे। हर हां ता कारण सुखराम लेहे नही कोय रे ॥ ९४ ॥

म:फ: है कि हे शिष्य अपने शुद्र गुरु को करतार व राम की बराबर मानते भी है और उनके घर का प्रसाद न लेते है। ऐसा अन्तर में विचार रहता है कि वो नीच जाती का है।

जे नही जाणे ढेड नीच दिल मांय रे, तो लो प्रसादी आय पिवो जल जाय रे।
अर नही तर केणी झूंठ बोहोत दुख पावसी, हर हां इण खून सुखराम नरक में जावसी ॥ ९५ ॥

म:फ: है कि हे शिष्य अपने गुरु को ऊंचा भी मानते है, उनके घर का अन्न जल नही लेते है। अगर ऊंचा मानो तो अन्न जल लेवो, नहीं तो झूंठ है। इस खून से दुख पाना पडेगा और नरको में जाना पडेगा।

ऊंच नीच के संग छोत जे नांय है, तो मिद्यम चीज अे छोड उत्तम क्यों खाय है।
रे अे पांचा की होय और की नांय रे, हर हां यूं झूंठा अे होय सबे नही खाय रे ॥ ९६ ॥

म:फ: है कि शिष्य अगर ऊंच नीच जाति का है व मर्यादा नही है। मिधम छोडकर उत्तम क्यों खाते हो। उत्तम और मध्यम पांच तत्व में ही है परन्तु शुभ भी हर एक कोई नही खाता तो अशुभ ही हर कोई नही खाता है। जो अशुभ खाता है, वो शुद्र है।

जे ऊंच नीच सब एक छोत जे मांय नी, तो ढेड घरे अवतार जनमियो काय नी।
रे यांको करो विचार पछे संग कीजिये, हर हां बुजे इम सुखराम अरथ यो दीजिये ॥ ९७ ॥

म:फ: है कि अगर ऊंच नीच में अछूताई नही होती यानि जाति की मर्यादा नही होती तो शुद्र के घर पर अवतारो ने जन्म क्यों नही लिया। इसलिये यह समझ कर इनका निर्णा करो।

नीचे घर अवतार जनमिये नांय रे, आ असंख जुगा के बीच भूल बणी मांय रे।
सुण ओ ओगुण क्या होय अरथ सो दीजिये, हर हां पीछे कुल सुखराम एक सो कीजिये ॥ ९८ ॥

म:फ: है कि आज तक शुद्रो के घर असंख्य युगो से अवतारो ने जन्म नही लिया, क्या ये परमात्मा की भूल थी, यदि अवतारो के जन्म लेने से किसी तरह का अवगुण था तो निर्णय बताओ, फिर छतीस ही जात को एक समझो।

तुम जेतो यक ज्ञान हुतो कन नांय रे। अे बडा बडा अवतार बस्या जुग मांय रे।
सुण वे जाणे कन नांय ब्रह्म ओ एक ही, हर हां नीचो गुरु वा कोय कियो नही देख ही ॥ ९९ ॥

म:फ: है कि इस संसार में बडे बडे अवतार आये, क्या उनके पास शुद्र गुरुओ जितना भी ज्ञान नही था, उन्होंने तो छतीस ही जात को एक नही समझा और ऊंच कुल के उतम गुरुओ से ही ज्ञान धारण किया।

एक ब्रह्म इण रीत केत है जोय रे, ये सात धात जुग मांय रेत की होय रे।
पिण गुण न्यारो सुण मोल जग में केत है, हर हां ईऊ ऊंच नीच सुखराम देह लग रहत है। ॥ १०० ॥

म:फ: है कि शुद्र सब ही जात को एक ही ब्रह्म समझता है व सात धातु सबके अन्दर है पर गुण व मोल न्यारा है। इसी तरह देही है जब तक ऊंची नीची कहलाती है।

मिले ऊलट कर जाय जमी में धात रे, सुण तब सब अेकी होय नही देह गात रे।
अे पहली कह सो झूंठ एक नही होवसी, हर हां फिटा नर सुखराम लखण में खोवसी ॥ १०१ ॥

म:फ: है कि जब सात धातु घिस घिस कर जमीन में मिल जाती है उसका तोल मोल समाप्त हो जाता है। इस तरह जिस जाति में जन्म होता है तो वही जाति कहलायेगी। जब आत्मा उलट ब्रह्म में समा जायेगी तब ब्रह्म पणा होगा। यदि मिले पहले ही ब्रह्मपणा धार ले तो झूंठ है।

जब लग दिशे देह जगत के मांय रे, ओ तब लग कांच कथीर और नही काय रे।
सुण भावे गहणो होय ऊजालो काय है, हर हां देहलग तो सुखराम नीच गुण मांय है ॥ १०२ ॥

म:फ: है कि काच कथीर आदि जो धातुए है उनके यदि जेवर बनवालो तब भी धातु का गुण है। इसी तरह जब तक जगत में शरीर है तब तक शरीर नीचा ही कहलायेगा।

कुण्डलिया :- अरथ आद सु बण रहया, अब कर किया न होय।
न्यारा करके संत जन कहता है जुग कोय॥ कहता है जुग कोय, शुभ अशुभ सब जोई।
कहे ज्ञान में नीच, ताय कूं दोष न कोई ॥ सुण लीज्यो संसार जन बुरो न मानो कोय।
अरथ आद सुखराम कहे, अब कर किया न होय ॥ १०३ ॥

म:फ: है कि यह निर्णय आदि अनादि से है यह मैंने नही किया है, सभी संत जन न्यारा करके समझाते है और संसार भी कहता है। शुभ और अशुभ अलग अलग है, ज्ञान से नीच कहते है तो दोष नही।

सुदर सुदर गुरु करे, ज्यांरो भलो न होय। कहो केता हंस उधरया, बरण बताओ मोय ॥ १०४ ॥

म:फ: है कि शुद्र होकर शुद्र को कोई गुरु करते है तो उसका भला नही हो सकता। आज तक शुद्र गुरु याने कूंडा पंथियो का ज्ञान धारण करने से कितने हंसो का उद्धार हुआ सो मेरे को बताओ।

गंगा बहती अटकसी, दरशण घट सी मान। सुदर गुरु सुखराम के, अे कलजुग अेनाण ॥ १०५ ॥

म:फ: कि कलयुग में गंगा बहती अटक जायेगी और दर्शनियो का मान घट जायेगा। जब शुद्र गुरु होने लग गये तो समझो कलयुग आ गया है।

बुद्ध हीणा बेकार अे, कलयुग पेठो माय। तां कारण सुखराम के, गुरु शिष सुदर थाय ॥ १०६ ॥

म:फ: है कि यह कलयुग की निशानी है, जो शुद्रो के ज्ञान को धारण करेगा उसकी बुद्धि क्षीण हो जायेगी।

बेद भागवत पुराण रे, गीता हम ली जोय।
पण सुदर गुरु सुखराम के, सुणियो नही कोय ॥ १०७॥

म:फ: है कि गीता वेद भागवत पुराण सब ग्रन्थो को देखा है, उनमें भी शुद्र गुरु नही सुना है।

सुदर सुदर गुरु करे, ओ तो अनरथ होय। सुदर गुरु को शिष रे, एक न निपज्यो कोय ॥ १०८॥

म:फ: है कि शुद्र होकर शुद्रो को गुरु करने से यह अनर्थ होता है कि उनका ज्ञान धारण करके भी आज तक एक भी ब्रह्म पद की प्राप्ति नही कर सके।

तीन लाख एक पीर ने, जीव प्रमोधा आय। तिका सब सुखराम के, गया नरक के मांय ॥ १०९॥

म:फ: है कि एक पीर ने तीन लाख जीवो को ऐसे ही गुरु बनकर ज्ञान दिया, वे सब जीव नरक में चले गये।

शिष साखा करतूत को, सुण कारण नही कोय।
किणीयक पल सुखराम कह, धन चोरां के ही होय ॥ ११०॥

म:फ: है कि यदि शुद्र गुरुओ के अधिक शिष्य हो भी जाय तो और करामात करतूत भी दिखाते है तो उससे कौन सी बडी बात हो गई, कभी कभी चोरो के भी अरबो खरबो का धन हो सकता है।

तीन ऋतु सुखराम के, न्यारी बरते आय। तो बरणा मरजाद रे, आ क्यूं झूंठी थाय ॥ १११॥

म:फ: है कि जैसे तीनो ऋतुओ का गुण अलग अलग होता है। इसी तरह वर्ण जाति की मर्यादा भी न्यारी है। यह झूंठी कैसे हो सकती है।

वेद भेद सुं ऊपनो, भेद वेद में होय। अे दोनुं सुखराम के, प्रांण देहे ज्यूं जोय ॥ ११२॥

समस्त शास्त्र राम के नाम से बने, इन्ही शास्त्रों में परमात्मा को प्राप्त करने का भेद है। इसलिये शास्त्र व परमात्मा दोनों ऐसे हैं जैसे देह और आत्मा है।

ब्राह्मण कूं पूजे नही, आव भाव नही कोय। से सब ही सुखराम के, गुरु बेमुख नर होय ॥ ११३॥

म.फ. है कि कोई भी लोग ब्राह्मण को नहीं मानता है। उसके प्रति आदर भाव भी नहीं रखता है। तो ऐसे व्यक्ति परमात्मा से बेमुख है।

आद आज पेला ब्राह्मण है गुरुदेव। फेर आद सुखराम के, पारब्रह्म की सेव ॥ ११४॥

म.फ. है कि आदि से लेकर आज तक ब्राह्मण को गुरु का ओहदा है। जैसे आदि अनादि से पारब्रह्म की भक्ति प्रचलित है।

ब्राह्मण बिन गुरु अेम है, ज्यूं हरजी बिना देह।
अर सुदर गुरु सुखराम के, सुण मोगां की सेव ॥ ११५॥

म.फ. है कि ब्राह्मण बिना गुरु ऐसे हैं जैसे आत्मा के बिना देह। और जो शुद्रों को गुरु मानते है तो वो मोगा यानि राक्षसों की सेवा है।

ब्राह्मण बिन गुरु अेम है, ज्यूं चन्दन बिन ढाक।
सुदर तो सुखराम के, सेमल अेरण्ड आक ॥ ११६॥

म.फ. है कि ब्राह्मण के बिना गुरु ऐसे है जैसे चन्दन के बिना ढाक है। और सुदर गुरु ऐसे है।

जैसे सेमल, अेरण्ड व आकड़े की तरह है।

सुदर भेष धर हर रटे, तो भी गुरु नही काय।
सुखराम लोहा जे कनक व्हे, तो ही पारस कहिये नांय ॥ ११७॥

म:फ: है कि शुद्र भेष धारण करके परमात्मा को रटते है तो भी गुरु नही हो सकते। जैसे पारस लोहे को सोना कर सकता है परन्तु सोना लोहे को सोना नही बना सकता।

सुदर करणी बोहो करे, तो ही गुरु नही होय।
सुखराम जाट तरवारियो, तो ही राजा कहे न कोय ॥ ११८॥

म:फ: है कि शुद्र चाहे कितनी ही करणियां क्यों न करे, तब भी गुरु नही हो सकते। जैसे जाट तलवार को धारण कर ले फिर भी राजा नही हो सकता।

राजा मानी खुवास को, तो काहा राणी होय।
ईऊं सुदर सुण सुखराम के, गुरु नही कहिये कोय ॥ ११९॥

म:फ: है कि यदि राजा दासी को मन से रानी मान ले तो भी रानी नही हो सकती, इसी तरह शुद्र गुरु नही हो सकते।

भक्त किया सुं सुदर रे, भक्त बाजसी लोय।
पिण गुरु पदवी सुखराम के, ब्राह्मण बिन नही कोय ॥ १२०॥

म:फ: है कि भक्ति करने से शुद्र भी भक्त कहला सकता है, परन्तु गुरुपदवी तो ब्राह्मण को ही है।

चाकर सब ही बाजसी, सुण किया चाकरी जोय।
पिण ठाकुर तो सुखराम के, बिन छत्री नही होय ॥ १२१॥

म:फ: है कि चाकरी करने से चाकर कहलाते है, परन्तु ठाकुर तो क्षत्री ही कहलायेंगे।

ब्राह्मण बिन सन्यासी नही, ना ब्राह्मण बिन जोग।
बिन छत्री सुखराम केहे, नही राज करम को भोग ॥ १२२॥

म.फ. है कि ब्रह्म की उपासना के बिना सन्यासी नहीं कहला सकते, न जोगी कहलायेंगे और क्षत्री के बिना राजा नही कहला सकता।

ब्राह्मण बिन गुरु धरम रे, फले न फूले कोय।
हर वायक सुखराम के, भागवत में जोय ॥ १२३॥

म:फ: है कि तीन लोक में ब्राह्मण के अलावा करणी कर्म उपासना का ज्ञान शुद्र गुरुओ से फली भूत नही हो सकते, इसके लिये भागवत भी साक्षी है।

ब्राह्मण होय सन्यास ले, धरे ब्रह्म को ध्यान।
वा सरभर सुखराम केहे, नही तीन लोक में ज्ञान ॥ १२४॥

म:फ: है कि ब्राह्मण होकर सन्यास धारण कर लेते है और ब्रह्म का ध्यान करते है, उनके बराबर तीन लोक में ज्ञान नही है।

ब्राह्मण होय लवलीन हुए, पूरण पद सूं कोय।
वा सरभर सुखराम केहे, ब्रह्मा शिव नही होय ॥ १२५॥

म:फ: है कि ब्राह्मण होकर पूर्ण परमानन्द की भक्ति कर उसमें लीन हो जाते है तो उनकी

बराबरी ब्रह्माजी व शिवजी का पद भी नहीं कर सकते।

छः दरशण वैराग रे, अे ब्रह्मा अंश जोय। या कारण सुखराम केहे, सदगुरु पदवी होय ॥ १२६ ॥

म:फ: है कि खट दरशणी ब्रह्माजी के अंश है। इस कारण इनको तीन लोक में सतगुरु की पदवी है।

सुदर गुरु शिर धार के, पूज्या ओ पुन्न होय। ज्यूं बिरखा सुखराम के, तरूवर से जोय ॥ १२७ ॥

सुदर गुरु करने से यह पुण्य तो होगा जैसे कोई भी पेड हो उससे बरसात तो होगी। यानि उसके द्वारा ज्ञान तो मिलेगा। लेकिन पद की प्राप्ति नही होगी।

ना दरशण ना बरण रे, ताकूं गुरु कह कोय। वामें सुण सुखराम के, कलजुग पेठो जोय ॥ १२८ ॥

म:फ: है कि खटदरशणी भी नही है। चारो वर्ण भी नही है। उनको गुरु कहते है तो उनमें कलजुग आकर बैठ गया है।

दरशण बिना अे भक्त रे, सुदर सुं ही निकाम।
ना गृह पुन्न सुखराम के, ना लिव शिवरे राम ॥ १२९ ॥

म:फ: है कि खट दरशणी बिना कूंडापंथी याने शुद्र से भी निकाम है क्यों कि न तो उनको दान पुन्न का भाव रहता है और न मुख से राम राम करते है।

आज पेल सुखराम के, सुदर सूं भक्त न कोय। कहो केता हंस तारिया, बरण बतावो सोय ॥ १३० ॥

म:फ: है कि आद अनादि से जिन्होंने शुद्र याने कूंडा पंथियो का ज्ञान धारण किया, उनके ज्ञान से कितने हंसो का उद्धार हुआ, सो वर्णन कर बताओ।

सुदर ग्रह में निपना, कोई भेष धार के नांय। आज पेल सुखराम के, देखो अरथा मांय ॥ १३१ ॥

म.फ. है कि भेष पहनने से कोई सुदर नहीं हुआ, वो तो सुदर के घर पैदा होने के कारण सुदर हुआ। इसकी साक्षी ग्रन्थ भी दे रहे है।

अफरी पडया बात रे, ज्यां किण किवी जोय।
वास ही नही सुखराम के, सुरपुर नरपुर कोय ॥ १३२ ॥

कष्ट पडने पर किसी ने शुद्र गुरु किया है तो ऐसे शिष्य को देवलाक व मृत्युलोक में स्थान नही मिलेगा, अवगति में चला जायेगा।

हरखर धारे चीज सो, वा प्रगटे सत होय। दूजी सुण सुखराम के, ओगुणा गारी जोय ॥ १३३ ॥

म:फ: है कि खट दरशणियो को गुरु धारण करके खुशी से भक्ति करते है तो भक्ति प्रगट हो जाती है पर खट दरशणियो के बिना गुण प्रकट नही होता। यही ओगुण गारी है।

प्रथम तो निपजे नही,सुदर भेष बणाय। जे निपजे सुखराम के, फोरोसो जुग जाय ॥ १३४ ॥

म:फ: है कि प्रथम तो शुद्र चाहे भेष धारण कर ले तो भी संत नही हो सकते। यदि हो भी जाये तो बहुत कम गुण प्रकट होगा।

ज्यूं कसबो करसाण रे, यूं सुदर को भेष। तां कारण सुखराम के, फाट न निपजे देख ॥ १३५ ॥

म:फ: है कि छोटे गांव में कम ही किसान होते है। वहां फसल भी भरपूर नही हो सकती। इसी प्रकार शुद्रो में भेष धारण कर लेने पर भी जोरदार संत नही हुये।

जे समुद्र खारो भयो, तो भी हीरा मांय।
सुखिया मीठी शहद है, कोऊ विकली छाने खाय ॥ १३६ ॥

म.फ. है कि समुद्र खारा होता है तो भी उसमें हीरे मोती है। इसी प्रकार कोई शुद्र हो तो उससे ज्ञान लेने में कोई नुकसान नही है। जैसे शहद मीठी है तो कोई पागल ही छुप के खाता है। याने ज्ञान किसी के भी पास हो तो लेने में कोई हर्ज नही है।

नार पदमणी आंण,को नारी करे न कोय। मिण कूं सुण सुखराम के, जोगी धारे कोय ॥ १३७॥

म:फ: है कि पतिव्रता स्त्री पदमनी के समान है। दूसरे कामी पुरूष उस स्त्री को प्राप्त नही कर सकते। जैसे निज नाम रूपी मणी को राज योग की भक्ति करने वाले संत ही धारण कर सकते है।

कागद होवे टाटको, ऊसो जलम मिटाय। नीच परी सुखराम कहे, नीचा सुर बरजाय ॥ १३८॥

म:फ: है कि टाट का कागज बनने पर टाट का नाम मिट जाता है। जैसे नीच परी हल्के देवता का वरण कर लेती है।

सीसो सूत सूं गालियां, चांदी कदे न होय। ईऊ सुदर सुखराम के, प्रांण दे ऊंच न कोय ॥ १३९॥

म.फ. है कि सीसे को यदि तरीके से गाल भी दे तो भी चांदी नहीं हो सकती, ठीक इसी तरह शुद्र प्राण भी दे दे तो भी उच्च नही हो सकता।

सुदर गृह में पाके सही , तो शिष क्यों निपज्या नांय।
सुणजो सब सुखराम कह, ज्ञान पुकारया जाय ॥ १४०॥

सुदर के संग से कल्याण होता तो उनके भी शिष्यों का कल्याण हो जाता। म:फ: है कि सभी ज्ञान पुकार पुकार कर कह रहे है।

सुखराम कहे ओ अरथ रे, प्रगट है जुग मांय।
नीच करम संग सो करे, सो ढेडा घर जाय ॥ १४१॥

म:फ: है कि यह अर्थ संसार में प्रगट है कि नीच कर्म करने से आगे भी कूंडा पंथी का संग मिलेगा।

तत भेद खट जीवां शीर, धर दियो ज्ञान विचार।
सेवा पूजा बन्दगी, भिन्न भिन्न सबे ऊचार ॥ १४२॥

म:फ: है कि यह ज्ञान से विचार कर कहा गया है, तत यानि ने:अक्षर की जागृति के लिये ब्रह्मा जी के द्वारा खट दरशणियों को नियुक्त किया गया है। जगत में सेवा पूजा बन्दगी करने की तो सभी कहते है।

कुण्डलिया :- ढेड किसे कहो शिष कियो, असंख जुगा के मांय, चार बरण नरनार में, को तारयो किण आय, को तारयो किण आय, सोध वो मोय बतावो, के पाखण्ड कर दूर, काय निरणो कर लावो॥ सुखराम हुवा सो ही होवसी, अण हुआ नही होय।
ढेड किसे कहो शिष कियो, आद अंत मध जोय ॥ १४३॥

म.फ. है कि असंख्य युगो में सुदर ने किसी को शिष्य बनाकर तारा हो तो बताओ। चारो वर्णो में आज तक किसी को भी नही तारा। इसलिये हे सुदर गुरु अपने पाखण्ड को दूर कर सही निर्णय पर आ जाओ। इसलिये म.फ. है कि जो गुरु होने की रीत है वही होगी, तुम बनने से गुरु नही होवोगे। आदि से लेकर आज तक ढेड ने किसी शिष्य को तारा हो तो बताओ।

असंख जुग आगे गया, फेर असंख अब जाय। ढेड मोख नही पोचियो,
आज लग जुग मांय। आज लग जुग मांय, ज्ञान सोझर गम कीजे।

किसे ढेड को पंथ, पटक चौडे सुण दीजे ।। सुखराम कहे ओ न्याव है,
करज्यो चित लगाय। असंख जुग आगे गया, फेर असंख अब जाय ॥ १४४॥

म:फ: है कि असंख्य युग व्यतीत हो गये और हो जायेंगे। तो भी ढेड याने कूंडा पंथी मोक्ष की प्राप्ति नही कर सकते। ज्ञान से ढूंढकर इसकी पहचान करो कि कूंडा पंथी का ज्ञान क्या है, कैसा है और इस ज्ञान से उच्च पदों की प्राप्ति क्यों नही होती। इसका चित लगाकर न्याय करो।

सुखराम कहे इण रीत सूं, भले न बाजे कोय।
रोय रोय पचि पचि मरो, इम सुदर संत न होय ॥ १४५॥

म:फ: है कि कूंडा पंथी की रीति धारण करने से आत्मा का भला नही हो सकता। चाहे रो रो कर पच कर मर भी जाये तो भी सुदर संत याने सत पद की प्राप्ति नही कर सकते।

कवित :- गधो तुरंग नही होय, त्याग रोडी को किया। हंस न होवे काग,
चोंच भिष्टा नही दिया॥ स्याल न होवे सींघ, बसेरू चाम न खाया।
नीम न मीठा होय, सींच गुड खांडन पाया, सुखराम कहे इम सुदर संत नही होय ॥ १४६॥

म:फ: है कि गधा रोडी का त्याग कर देने से घोडा नही हो सकता। कौआ मल में चोंच नहीं डालने से हंस नहीं हो सकता। सियाल बासी मांस का त्याग कर देने से सिंह नहीं हो सकता। नीम को गुड खाण्ड से सींचने पर भी मीठा नहीं होता। ठीक इसी तरह कूंडा पंथी गुरु नहीं हो सकता।

घाटम मेणो होय, नामदेव छीपो भाई। रांको बण्यो कुमार, भीलण उत्तम आई।
नानक खत्री होय, जन्म दादू वा पायो। मुसलमान घर जन्म, संत कबीर कहायो।
सुखराम कहे अे उत्तम सो, बालमीत बिन जोय ॥ १४७॥

म:फ: है कि घाटम दास जी जाति के मीणा थे, नामदेव जी छीपा थे, रांकाजी कुम्हार थे, भीलणी अगले जन्म में ऋषियों की पुत्री थी। नानक साहब खत्री थे, इनका अगला जन्म दादूजी के रूप में भरत खंड में हुआ। कबीर साहब का जन्म मुसलमान के घर हुआ। और ये सब संत उत्तम कहलाये। बालमीत जी के केवल भक्ति होते हुए भी आगे पंथ नहीं चला।

माखीमाल बणाय, नेक उत्तम नही होई। सांप शीश मीण जाण, जात गुण मिटे न कोई।
चंदन हींग लपेट, वास वांकी नही जावे। स्वान पालखी बैठ, उत्तम होय नेक न आवे ॥ १४८॥

म:फ: है कि मधुमक्खी शहद का निर्माण करते हुए भी उत्तम नहीं कहलाती है। सांप के सिर पर मणी होती है तो भी उसकी जात यानि विष का गुण नहीं जाता। चन्दन पर हींग का लेप करने से चन्दन की खुशबु नहीं जाती। कुत्ते को पालकी में बैठाने से उत्तम नहीं हो सकता। इसी तरह क्रोड जतन करने पर भी कूंडा पंथी उत्तम नहीं हो सकता।

जतन क्रोड कितनो करे, सुदर संत न होय। नही हुवे मातंग, वंश सब खाय॥
हीरा समंदा निपजे, नाल खाल में नांय। ढेड आज लग ऊंच हुआ, कह बताओ मोय॥
रेगर हो रिवदास, फिर इण भगत कमाई। काहा कियो जुग मांय, पंथ न चाल्यो कोय,
छोत कुल की नहीं छुटी, ना कोई ऊपज्यो ज्ञान। गही मरकट की मुठी ॥ १४९॥

म:फ: है कि क्रोड जतन करने पर भी सुदर संत याने गुरु नहीं हो सकता। कूंडा पंथी मातंग ऋषि की संतान है और सबसे भोग व्यवहार के कारण संत नहीं हो सकते। हीरे की उत्पत्ति समुद्र से होती है, नालों खड्डो में नहीं होती है। इसी तरह ढेड आज तक ऊंच नहीं हो सकते, यदि हुआ

हो तो मुझे बताओ। रेदास जी रेगर थे और भक्त भी थे तो भी उनके नाम से पंथ नहीं चला। कुल की छोत नही मिटी, उनको केवल्य ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई। बन्दर लोभ वश चने की कुलडी में हाथ डाल देता है, फिर मुठ्ठी बंद कर लेता है तो फिर निकाल नहीं सकता। इसी तरह नीचे कुल में जन्म लेने से संत नहीं हो सकता।

सुखराम नीच कुल संत, मातंग ऋषि की औलाद, भगत सुंई न तिरे। आद अंत की आड, कौण विध किम करे। जिण रचयो बैराट, वस्तु गुण धर दिया॥
अब नहीं फिरे सो हार, हुंसी ज्यो कर दिया। कह सुखदेव कोई यूं करे,
माया के बल आय। गधो तुरंग नहीं होत, सो रातब अनन्त ऊपाय ॥ १५०॥

म:फ: है मातंग ऋषि की औलाद भक्ति करे तो भी नहीं तिर सकते। क्यों कि यह आदि अनादि से मर्यादा बनी हुई है। जब से सृष्टि की रचना हुई है व बेराट रचा, उस दिन से मर्यादा का गुण धर दिया। अब यह अंक कोई मिटाना चाहे तो किसी के धन व बल से भी नहीं मिट सकते। जैसे गधा कितने ही उपाय करे, वो घोडा नहीं हो सकता।

व्यास कन्या उपदेश, सरगरे पदवी पाई, रामानन्द प्रताप, माहार मालूम हुवो भाई।
जे कोई तिरिया नीच, उत्तम ऋषि सबने मिल्या। ऊंच बडन प्रताप, नीच कोई
गत में मिल्या, सुखराम नीच कुण ऊंच कूं, को तारयो किण आय।
नीच नीच सुंई ना तिरियो, असंख जुगां के मांय ॥ १५१॥

व्यास याने ब्राह्मण की कन्या से उपदेश प्राप्त करके बालमीत जी ने भक्त की पदवी पाई। कबीर साहब को भी रामानन्द जी के द्वारा भक्ति का भेद मिला अर्थात किसी भी सुदर को उत्तम ऋषि की शरण मिली तब उनके प्रताप से नीच को भी गति मिली। म:फ: है कि आज तक ऐसा नहीं सुना कि नीच ने उच्च को भक्ति का भेद बताकर तिरा सके हो। यहां तक नीच नीच को भी नहीं तार सके। यह आद अनादि से रीति चली आई है।

चार बरण नर नार, सरब ब्रह्मा सुं हुआ, फेर अठारह भार, जीव जंत कोई न जुवा।
एक नियारो होय, रिष मातंग कहूं तोई, जिणकी या औलाद, ज्ञान कर देखो सोई।
कह सुखराम सुण साटियो, सांसी परमगत ये ना हुआ, ना अब होणेहार ॥ १५२॥

चारो ही वर्ण व नर नारियों की उत्पति ब्रह्माजी से है और अठारह भार वनस्पति व जीव जन्तुओं की उत्पति ब्रह्माजी से हुई है। परन्तु मातंग ऋषि व उनकी संतान सुदर याने कूंडा पंथी की उत्पति ब्रह्माजी से नहीं हुई। ज्ञान करके देख लो। और ये जातियां भी जैसे सांसी, साटिया, चमार, भंगी, सरगरे, मेघवाल आदि। मातंग ऋषि की संतान की भी परमगति नहीं हो सकती क्यों कि इन्होंने कूंडा पंथीयों का ज्ञान धारण कर रखा है।

कपिल मुनि, गौतम, दत्त, ब्राह्मण कुल होई, शुक्राचार्य, ध्रुव व्यास सुखदेव कहूं तोई ॥ १५३॥

म:फ: कि कपिल मुनि, गौत्तम ऋषि, दत्तात्रेयजी आदि ब्राह्मण कुल में हुये और शुक्राचार्यजी, ध्रुवजी, व्यासजी व उनके पुत्र सुखदेवजी ब्राह्मण थे।

बाल्मिक ऋषि शंक्राचार्य, भाई ये आया ज्यां जैन धर्म हटाय, पंथ जुग मांय चलाया।
सुखदेव कहे ये ब्रह्म हुआ, प्रगट जुग के मांय। पण ढेड पंथ में गत हुवो,
केह तू सोज बताय। वशिष्ट मुनि जै देव, सोम तुलसी अनुसोया।

जिण घर ब्रह्मा विष्णु महेश, आंण झूले में सोया ॥ १५४॥

वाल्मिकी ऋषि शंक्राचार्य जी आये और जैन धर्म हटाकर सनातन धर्म पर अडवी पडने पर इन्होंने लबेद को संभाल कर ऐसा न्याय किया व सनातन धर्म को सबसे ऊंचा बताया और इनको ब्रह्म की प्राप्ति हुई। म:फ: है कि मुझे सोच कर बताओ कि आज तक ढेड पंथ याने कूंडा पंथ में किसी की गति हुई हो तो मुझे ढूंढ कर बताओ। म:फ: है कि वशिष्ट मुनि, जयदेवजी, सोमऋषि व तुलसीदासजी ब्राह्मण कुल में संत कहलाये। इसी कुल में माता अनसुया के घर ब्रह्मा विष्णु महेश आकर पालने में सोये।

रिखब देव परमहंस, रूपो बर्ण ओ कियो। परसराम औतार, आंण ब्राह्मण घर लियो।
अे इण कुल में जन्म हुवा, परगट कह सब मोय। सुखराम कहे कुल ढेड में,
किसा संत हुवा जोय। किशनदास पय हारी हुआ, नंद राधवा जोय।
परसराम खोजी सुणो, रामानन्द कहूं तोय। रामानन्द कहूं तोय, संत ए कलजुग मांही।
ब्राह्मण घर अवतार, तांही में नासत नांही। सुखराम जुग शायद भरे,
चार वरण में जोय। पण ढेड पंथ में ऊधरयो, तिको बताओ मोय ॥ १५५॥
कवित्त :- बल, पाण्डव, अमरीष, साल, रूखमागदभाई, हरचंद कर्ण अनेक।
राज जन गिणया न जाई॥ जुग जुग संत अपार, च्यार बरण में होई।
हिन्दू तूरक वंश मांय, गिणत आवे नही कोई॥ सुखराम पंथ सब संत का, प्रगट है जग मांय।
पण ढेड संत को पंथ रे, किसो बतायो आय॥ च्यार बरण के मांय, ढेड को बरण न होय।
ना दरशण बैराग, तुरक में ही ढेड न कोई॥ ना पंथा में पंथ, ढेड को पंथ न होई।
ना केवल को ज्ञान, ढेड न ऊपज्यो आई॥ सुखराम कहे सब सांभलो,
बुरो न मानो कोय। जे पछ खांचो ढेड को, तो सोध बताओ मोय ॥ १५६॥

ऋषभ देव परमहंस कहलाये और ब्रह्म व निजनाम की भक्ति करी, परसराम का अवतार ब्राह्मण के घर हुआ अर्थात इनका जन्म उच्च कुल में हुआ पर कूंडा पंथी ढेडो में आज तक कौन से संतो का जन्म हुआ, वह मुझे बताओ। म:फ: है कि कलियुग में ब्राह्मणो के घर बहुत संतो का अवतार हुआ जैसे किसनदासजी दूध का आहार लेते थे, राघवानन्दजी, परसरामजी, खोजी, रामानन्दजी इत्यादि यह सत्य है कि इसमें कोई झूंठ नही है। इसकी साक्षी युग है। चारो वर्ण भी साख भरते है। चार ही वर्ण में संत हुये है। पर कूंडा पंथी का ज्ञान प्राप्त कर आज तक कोई संत नही हुये। म:फ: है कि चार ही वर्णो में और चारो ही युगों में अपार संत हुये है जिनकी कोई गिनती नही है। बली, पांडव, अमरीष, साल, रूखमागद, हरिचन्द, करण आदि। इनके अलावा हिन्दू मुसलमानो में भी कई संत हुये जिनकी गिनती नही है। इन सभी संतो का पंथ संसार में प्रगट है। परन्तु ढेड याने कूंडापंथी का कोई पंथ में संत हुआ हो तो बताओ और चारो वर्णो से ढेड याने कूंडा पंथी अलग है। न दर्शनियो में, न बैराग में, न मुसलमानो में और ना कोई ऊंच पंथो में इनकी गिनती नही है। आज तक कूंडा पंथियो को केवल्य प्राप्त नही हुआ। इसलिये म:फ: है कि यदि मेरी बात का बुरा नही मानो तो समझो यदि तुम ढेडो का पक्ष लेते हो तो आज तक कोई संत हुआ हो तो बताओ।

सुणो गोकल्या पंथ, संत ब्राह्मण घर होई, च्यार सम्प्रदाय जांण, मठ च्यारूं कहूं तोई।

दस नाम सन्यास, तिको ब्राह्मण को कियो ॥ १५७॥

म:फ: है कि गोकल्या पंथ हुआ उस संत का ब्राह्मण के घर जन्म हुआ, चार सम्प्रदाय और चार मठ व दस नाम सन्यास इनकी उत्पति ब्राह्मणो से हुई।

जैन धरम उपदेश ब्रह्म ऋषि आणर दियो। कह सुखदेव ये पंथ रे ब्रह्मा के घर मांय।
ढेड़ घरे किण जन्म के, नीच संत को पंथ ॥ १५८॥

म:फ: है कि जैन धर्म वालों को सनकादिक ब्रह्म ऋषि ने आकर उपदेश दिया। ये जितने भी कुंडा पंथी के अलावा पंथ बने, सब की उत्त्पति ब्राह्मणों के घर से हुई। इन ढेड़ के घर में जन्म लेकर किसी ने भी अपना पंथ चलाया हो तो बताओ। चाहे वह संत भी बन गया तो भी पंथ नहीं चला।

अब शुद्ध बतावे आय, दादू सुण बाजीन्द।
संत कबीर कहावे, ओ पंथ जोडे होय, तुरक हिन्दू सो कहावे ॥ १५९॥

म:फ: है कि दादूजी महाराज, बाजीन्दजी, कबीर साहब, संत कहलाये, हिन्दू मूसलमान दोनो को ही ब्रह्म भक्ति का भेद बताया।

भंगी जात चमार सरगरो अवरण मांही। ब्रह्मा की पैदास, किसब कर नीच कहाही।
कह सुखदेव छः जात ये, बिन ब्रह्मा सुण होय। तिण कारण नही ऊधरे, लारे बंश न कोय ॥ १६०॥

म:फ: है कि चमार सरगरा भंगी ये वर्णो से अलग है, इनकी उत्पति ब्रह्माजी से है। नीचा धन्धा करने से व मर्यादा खंड करने से ये नीच कहलाये, छ जाति ब्रह्माजी की मर्यादा खंड करने से अलग कहलायी। इस कारण उद्धार नही होता और झूंठा पंथ भी नही चलता।

चाम्ब रंगी तिण काज, जात चमार कहाया। भील भाल सर संध, ताहि गुण भिली भाया।
मेहतर तबे कहाय, आय मेला ऊठायो। सर पख्या तिण काज, सरगरो जुग ने गायो ॥ १६१॥

म:फ: है कि चमडे को रंगने व काम करने से चमार कहलाये, भील भाला से जीवों का संहार करने से भील कहलाये, मैला उठाने व ढोने से मेहतर कहलाये। जाति बरण की मर्यादा खोकर एक ही कूंडे में खाते है व नीच कर्म करते है। इस कारण संसार में सरगरा कहलाये।

कोली जात जिहान के, कपडे बण आयो।
सुखराम जात सब किसब की, है सब ब्रह्मा मांय ॥ १६२॥

म:फ: है कि कोली कपडा बुनता है, जो जैसा काम करते है, वही जाति हो जाती है। सभी ब्रह्मा के अन्दर है।

सात जात के वंश नही, से बरणा में नाय। सेहेश अठयासी रीष, अंश ब्रह्मा को होई ॥ १६३॥

म:फ: है कि सात जात चारो वर्णो में नही है। अठ्ठयासी हजार ऋषि ब्रहाजी के अंश है।

बरण अठारह मांय, मांड की उत्पति होई। एक अंश सूं महध, जका सुं पैदा होई ॥ १६४॥

म:फ: है कि अठारह वर्ण से सारी मांड की उत्पति हुई है। नीच कर्म सू मातंग ऋषि हुये और ऐसा अंश होने की वजह से शुद्ध गुणो से अलग हो गये।

सांसी जुग में साटियो, मातंग की औलाद। सरब पाखण्ड में होई, यारे किसब न आद॥
मातंग ताको नांव, सरब से इण गुण जुवो। ताकी आ ओलाद मेघवाल जग मांय ॥ १६५॥

म:फ: है कि इनकी संतान संसार में मेघवाल सांसी साटिया कहलाये, मातंग की संतान याने

कूंडा पंथी को धारण किया। इनके आदि का किसब नही है।

बिन बेगार न कोई इण जाया, सुत सात सरब न निरसी किवी।
मुडदे लागा जाय, सरब न लघु मत दिवी ॥ १६६ ॥

म:फ: है कि ब्रह्माजी की मर्यादा का खण्ड कर इन्होने पुत्रो की उत्पति की, इस खराब चाल से वह मुर्दे याने गाय बैल भैंस वगैरह को चीर कर घर ले जाते है। इससे इनकी बुद्धि ओछी हो जाती है।

सुखराम कहे अे जगत में, मातंग को कुल होय।
अे मुगत न पावे बापड़ा, मोख कहां ते होय ॥ १६७ ॥

म:फ: है कि ये जगत में मातंग ऋषि के कुल के जो है इन विचारो के कारण इनकी मुक्ति नही होती, तो भला मोक्ष की प्राप्ति कैसे हो सकती है।

व्यास कन्या प्रताप, सरगरे पदवी पायी। रामानन्द प्रताप, माहार प्रगट हुवो भाई ॥ १६८ ॥

म:फ: है कि व्यास कन्या के प्रताप से बालमीत सरगरे को भी भक्त की पदवी प्राप्त हुई। कबीर दासजी मुसलमान को रामानन्दजी के प्रताप से संत की पदवी प्राप्त हुई और संसार में प्रगट हुवे।

भील भीलणी जोय, ब्रह्म ऋषि सब ने मिलिया।
ऊंच बरण प्रताप, नीच कई गत में मिलिया ॥ १६९ ॥

म:फ: है कि भील याने वाल्मिक भीलणी याने शिवरी इनको भी ब्रह्म ऋषियो द्वारा पदवी प्राप्त हुई, ऊंच वर्ण के प्रताप से नीच याने शुद्रो की भी गति हुई।

कह सुखराम नीच, किणी ऊंच कूं, को तारयो किण आय॥
असंख जुगां के बीच रे, सुधरयो मोही बताय॥ नव जोगेश्वर जोय च्यार सनकादिक भईया,
अष्टाबकर संगरिष सुण आया जनक विदेह कूं ज्ञान, आंण दियो या भाई ॥ १७० ॥

म:फ: है कि कूंडा पंथियो से आज तक किसी का उद्धार नही हुआ, असंख्य युगो में किसी का उद्धार हुओ तो बताओ, नव जोगेश्वर, ब्रह्माजी के पुत्र चारो सनकादिक ऋषि व अष्टावक्रजी ऋषि आये और उन्होंने राजा जनक को ज्ञान दिया।

जुड़े अनन्त ऋषि आय, छेह बिन गिणियां न जाई। सुखराम कहे अे ब्रह्म भगत।
निरपख हुआ जाय, ढेड़ वंश में भगतरे, किसो हुवो जग मांय ॥ १७१ ॥

अनन्त ऋषि आये जिनकी कोई गिनती नही है। ये सब ब्रह्म की भक्ति करने वाले निरपक्ष हुये परन्तु शुद्र याने कूंडा पंथी में आज तक संसार में कोई भक्त हुआ है तो बताओ।

॥ इति श्री सुदर का अंग सम्पूर्ण॥

卐 भक्तमाल 卐

<u>दोहा</u> :- सुखराम दास की बिणती, सुणो राम गुरुदेव।
मैं शरणागत आवियो, दो अणभै तत्त भेव ॥ १ ॥

म:फ: है कि पारब्रह्म परमात्मा व राम गुरुदेवजी महाराज मैं आपकी शरण में आया हूं, मुझे अणभै ज्ञान व ब्रह्म का भेद देवो।

जन सुखदेव की बिणती, सुणज्यो हर गुरुराय। भक्त माल को भेद जूं, दिज्यो सरब बताय ॥ २ ॥

म:फ: है कि हे राम गुरुदेवजी मैं आप से विनती करता हूं कि मुझे भक्तमाल का सब भेद बताओ।

च्यार जुगा में संत हुवा, सो सब कहिये आंण। हिरदे हर गुरु बेस कर, बोलो निरमल बांण ॥ ३ ॥

म:फ: है कि हे परमात्मा चारो युगो में जितने भी संत हुये है उन सबका वर्णन करने की कृपा करे और हे राम गुरुदेवजी मेरे हृदय में बैठकर निर्मल वाणी द्वारा उच्चारण करवाना।

मैं बुधहीणा बापड़ा, पशु पंखी जड़ जीव। भक्त माल बिन थाह है, किस विध बरणु शीव ॥ ४ ॥

म:फ: है कि हे परमात्मा मैं बुद्धिहीन जड जीव पशु के समान हूं। और भक्तो की महिमा अनन्त है तो भला मैं उनका वर्णन कैसे कर सकता हूं।

अनन्त जुगा आगे हुवा, संता वार न पार। मेरी क्या जड़ जीव की, सब जन बरणु लार ॥ ५ ॥

म:फ: है कि आगे के युगो में भी अनन्त संत हुये है जिनकी कोई गिनती नही है, मेरी बुद्धि छोटी है, मैं ऐसे भक्तो का वर्णन कैसे करूं।

संता के परताप सुं, गुरु शरणागत जाय। भक्तमाल सुखराम कहे, मैं जुग बरणु आय ॥ ६ ॥

म:फ: है कि सर्वप्रथम संतो के प्रताप से ही मैं गुरु शरणागत जाकर ब्रह्म भक्ति का भेद धारण किया, फिर संतो के प्रताप से ही भक्तो का वर्णन कर रहा हूं।

साहिब कृपा कीजियो, गुरु गोविन्द हर आंण।
जिण बिध जैसा संत हुवा, त्यूं त्यूं कहो बखाण ॥ ७ ॥

म:फ: है कि पारब्रह्म परमात्मा व राम गुरुदवजी मेरे पर कृपा करो, जिस विध जैसे जैसे संत हुये, अनका अलग अलग वर्णन कहो।

सुणज्यो मैं निर्दोष हूं, घाट बाद जस होय। तुम हर बोलणहार हो, क्या जाणेगा कोय ॥ ८ ॥

म:फ: है कि हे परमात्मा मैं निर्दोष हूं, ज्यादा कम वर्णन होवे तो मेरा दोष नही है। हे रामजी आप ही अन्दर बोलने वाले हो, आप ही जानने वाले हो, दूसरे नही जान सकते है।

रेखता :- संत सुखरामजी अब सो बोलिया, करत प्रणाम लुल पांय लागा।
किनक डंडोत पचास गुरुदेव कूं, और संत सब कई जाग जागा ॥ ९ ॥

झुक झुक कर पांव लगता हूं व ज्ञान गुरुदेव को पच्चासों कनक डंडोत करता हूं।

संत को साध अवतार जुग सिध हो, अब सो वन्दना मान लिज्यो।
भक्त को जस मैं दिल भर केत हूं, सर्व सो जन मांय आय रिज्यो ॥ १० ॥

म:फ: है कि हे संतो सिद्धो साधो अवतारो सभी मेरी वन्दना मान लीजो। सब भक्तो की भक्तावली दिल से कह रहा हूं, सब ही हरिजनो का ज्ञान मेरे अन्दर आकर के विराजमान हो जाना।

आद अनाद असंख जुग बीच में, साध संसार में जोय होई।
दास सुखराम कह सरब चल आवज्यो, दोष मति दीजियो मोय कोई ॥ ११ ॥

म:फ: है कि आदि अनादि से असंख्य युगो में जो संसार में साध याने संत हुये। उन सबका ज्ञान चलकर आना, भक्तो का वर्णन कराना, मेरे को दोष मत देना।

मुज प्रणाम डंडोत सब मानज्यो, संत सुखदेव गोविन्द सांई।
बंश की लाज हर आपको बिडद है, मद की चाल मत देख मांही ॥ १२ ॥

म:फ: है कि पारब्रह्म परमात्मा व संतजन मेरा प्रणाम व डंडोत मान लीजो, मेरा जन्म ब्राह्मण

वंश में हुआ, ब्राह्मणो का कार्य ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति करना व कराना है। इसकी लज्जा आप रखना, ये आपका ही बिडद है। मैं मदभागी हूं। मेरी चाल की तरफ मत देखना।

आद अनाद को मूल ले बोलज्यो, अरज गुरुदेव सो मान लिज्यो।
दास सुखराम केह भक्त को जस है, भेद विचार सरब दिज्यो॥ १३॥

म:फ: है कि आदि अनादि से मूल का जो ज्ञान है उसी का वर्णन कराना है। हे राम गुरुदेवजी महाराज ये अर्ज मेरी मान लेना, क्योंकि भक्तमाल में भक्तों का ही वर्णन है इसलिए इसका भेद व ऐसा विचार प्रदान करना।

ज्ञान किरपाल गुरुदेव दयाल हो, मोख परम मोख का आप दाता।
दस प्रकार की भक्त संसार में, जाय जन कीन सोई कहो गाथा॥ १४॥

म:फ: है ज्ञान गुरुदेव आप कृपाल हो दयाल हो और मोक्ष परमोक्ष के दाता भी आप ही हो। संसार में दस प्रकार की भक्ति है। जिन जिन भक्तों ने जिस भक्ति को धारण किया, उसका वर्णन करावो।

दोहा : सुखराम कहे सब सांभलो, चित मन सूरत लगाय।
भक्त माल जस सुणत रे, अघ अंश सब जाय॥ १५॥

म:फ: है कि सब नर नारी चित मन सूरत लगाकर सुणो, भक्त माल का यश सुनने से फिर भक्ति धारण करने से सब ही पापो का अंश नष्ट हो जाता है।

भरम करम अज्ञानता, होय तिमिर को नाश। भक्त अंश घट ऊपजे, मिले आद घर बास॥ १६॥

म:फ: है कि भक्तो का यश सुनने से व भक्ति धारण करने से भरम करम अज्ञानता रूपी अंधेरे का नाश हो जाता है। भक्ति का अंश घट में उत्पन्न हो करके आद घर की प्राप्ति हो जाती है।

रेखता : बोलिया संत सुखरामजी आद ले, ब्रह्म की ओड सुं संत बरणे।
धिन करतार सो केवली ब्रह्म है, देह धर शकल सो रेहत शरणे॥ १७॥

म:फ: है कि मैं आदि अनादि से ब्रह्म की औट में संतो का वर्णन कर रहा हूं। केवल ब्रह्म करतार आपको धिन हो, जितने भी देह धारी प्राणी आपकी ही शरण में है।

पांच अर तीन तत आद गुण ऊपना, मांड विस्तार हरि खूब मांडी।
रूप अनरूप आकार बिन देव तूं, छिनक के मांह पल जाह छाडी॥ १८॥

म:फ: है कि पांच तत्व व तीन गुण आदि अनादि से आपने बनाये। हे परमात्मा आप ऐसे देव हो जो न आपका रूप है और न आकार है तो भी एक क्षण में सारी सृष्टि को पैदा भी कर देते है और मिटा भी देते हैं।

मुख भर तोह क्या बिडद दे गाइये, धिन तूं ही राम राया।
दास सुखराम कहे तीन तिरलोक में, तोहि शिर और नहीं देव कवाया॥ १९॥

म:फ: है कि हे मेरे परमात्मा मुंह से आपके बिडद की महिमा कैसे करूं, आपको धिन हो धिन हो, क्योंकि तीन लोक में आपके सिर ऊपर दूसरा कोई देव नहीं है।

धरण ब्रह्मण्ड आकाश में ध्यान है, शकल नख चख में श्याम होई।
केवली ब्रह्म आरब करतार तूं, हंस परम हंस में अलख होई॥ २०॥

म:फ: है कि हे परमात्मा आप धरती आकाश व ब्रह्मण्ड जहां तक ध्यान जाता है तथा आप

नख से चख तक हे रामजी वहां तक आप ही आप हो। केवली ब्रह्म परमात्मा आप दिष्ट मुष्ट में नहीं आते हो। हंसवृत्ति आत्मा व परमहंस वृति आत्मा में अलख रूप से विराजमान हो।

राम रहीम रमत ही तूं धिन है, आपको पार कोई नांह लेवे ॥ २१ ॥

म:फ: है कि हे परमात्मा आप राम व रहीम बनकर सब में रम रहे हो। आपको धन्य है। आपका कोई पार नहीं पा सकता।

तारणो होय जहां अंग में प्रगटे, मारणो होय जहां मांय ऊठे।
दास सुखराम कह धिन करतार तूं, राम बेमुख कहूं नाह छूटे ॥ २२ ॥

जिस भक्त को तारना हो उस अंग में आप प्रगट हो जाते हो और मारना हो तो उस अंग में उसी रूप में प्रगट हो जाते हो। म:फ: है कि हे परमात्मा आपको धन्य है आप से बेमुख होकर कोई भी छूट नही सकते।

ब्रह्म सूं सुन्न सुण सुन्न को मुन्न है, मुन्न सूं बाय प्रकाश होई।
तेज में आन सो निरंजन ऊपनो, पृथ्वी मूल वां होय लोई ॥ २३ ॥

म:फ: है कि पारब्रह्म सुन्न से मुन्न याने ब्रह्मण्ड, ब्रह्मण्ड से स्वांसा की उत्पति हुई, तेज तत्व से निरंजन की उत्पति व पृथ्वी तत्व की उत्पति हुई।

प्रगति मुन्न में बिरज तत जाणिये, सगत ओऊंकार याहां जन्म जाणो।
माहा सुन्न आद नारायण लिछमी, तीन सो देव को स्वरूप ठाणो ॥ २४ ॥

म:फ: है कि भृकुटी में बिंद का स्थान है माया ब्रह्म के संग से जन्म होता है। त्रिकुटी याने बैकुण्ठ में लक्ष्मीनारायण का स्थान है। जो तीनो ही देवो का स्वरूप है।

अंस स्वरूप ऊजास सो ऊपनो, जो तुमने आण प्रकाश किया ॥ २५ ॥

हे परमात्मा आपका अंश आत्मा का ही सब पसारा है। लेकिन अलग अलग घट का अलग प्रकाश कर दिया। जैसे कीडी में कीडी जितना हाथी में हाथी जितना प्रकाश कर दिया।

विष्णु ब्रह्मा ज्यूं शिव सो प्रकटया, तीन तिरलोक रचाय दिया।
देव मानव पशु पंखी वनस्पति, चार सो खाण में सरब किया ॥ २६ ॥

हे परमात्मा आपने सृष्टि रचना के लिये ब्रह्मा विष्णु शिव को प्रगट किया, आपने ही देवता मनुष्य पशु पक्षी वनस्पति एवं चारों खान में चौरासी लाख योनिया उत्पन्न कर दी।

तीन गुण मांड सो जीव ले बैराचिया, देव सब लोक को बंध बांध्यो।
ईण्ड कटाक्ष चहूं दिश सो फेलियो, क्रोड पचास लग मेर सांध्यो ॥ २७ ॥

तीन गुणों से सब जीवों की रचना हुई व जगह की जगह सब देवताओं के लोक बना दिये। म:फ: है कि जिस इण्ड कटाक्ष से ब्रह्मा विष्णु शिव की उत्पति हुई उसी इण्ड कटाक्ष का प्रकाश चारो तरफ फैला एवं पचास क्रोड लग तक के एरिये में पृथ्वी को स्थापित किया।

लिक्ष्मी गवरज्या सेज सावित्री, सगत प्रणाम संजोग किया।
दास सुखराम कहे ऋष वहां ऊपना, ऊलट ब्रह्मा कूं ज्ञान दिया ॥ २८ ॥

म:फ: है कि सृष्टि रचना के लिये शक्ति ने शिव की इच्छा से तीन रूप लक्ष्मी, पार्वती, सावत्री बनाया और तीनों देवों के तीन जोडे बन गये। उसी समय हंस अवतार बनकर परमात्मा पधारे और ब्रह्माजी को सब तरह का ज्ञान दिया।

चार सो वेद ब्रह्माजी बोलिया, मेर मरजाद सब बांध दिवी।
शुभ अशुभ उपाय संसार में, जुग की जुग जिण मांह किवी ॥ २९ ॥

ब्रह्माजी ने चारों वेद बनाये एवं तीन लोक की सारी मर्यादा बांध दी एवं जगत के अन्दर सभी तरह के शुभ अशुभ का निरणा वेदों में कर दिया एवं चारो जुगो सतयुग, त्रेता, द्वापुर एवं कलयुग के नियम भी लिख दिये।

बावना मांही सब नांव अे आविया, दस सो मात में भ्यास सारी।
राग छतीस में कंठ की मोड है, तत को भेव सुण भेद लारी ॥ ३० ॥

जगत में जितने भी रूप है एवं जितने भी शास्त्र हैं वो सब बावन अक्षरो एवं दस मात्रा में आते हैं। म:फ: है कि जैसे छतीस ही राग कंठो द्वारा बोली जाती है उसी प्रकार तत्व याने ब्रह्म का भेद भी कागलिया की राग से सांस उसांस में राम नाम को रटने से जाना जाता है।

जुग का जुग अवतार सो बरणिया, देत ज्यूं दाणवां भाष दिया।
दास सुखराम केह धिन ब्रह्मा तूं, धरम अर करम का धाम किया ॥ ३१ ॥

म:फ: है कि जिस जिस जुग में जैसे जैसे राक्षस पैदा हुये, उनको मारने के लिये वैसे ही अवतार वरणिया याने प्रगटे, जैसे नृसिंह अवतार। म:फ: है कि ओ ब्रह्मा जी आपको धन्य है कि आपने शुभ अशुभ कर्मो के अनुसार आत्मा की पहुंच बना दी जैसे स्वर्ग, बैकुण्ठ, नरक आदि।

साठ सो पुत्र नारद के ऊपना, ऋष का नांव अे रख सारा।
बीस सो विष्ण भगवान को सूपियां, बीस ही ईश के चरण प्यारा ॥ ३२ ॥

म:फ: है कि नारदजी के 60 साठ पुत्रो की उत्पति हुई, उनके नांव रखे। उन 60 में से 20 पुत्र विष्णु को, 20 महादेवजी को सौंप दिये।

दुज की शरण सो बीस रेविया, ऋष यो देवता बेच लिया।
ओसरा ओसरी सरब सो प्रगटे, ताहि का बिसियां नाव दिया ॥ ३३ ॥

म:फ: है कि द्विज याने ब्रह्माजी की शरण में भी 20 नारद पुत्र रहे, इसी तरह तीनो देवो ने नारद पुत्र ऋषियो में बांट दिया, जिस अवसर में विष्णु की याने बीसी में नारदजी के बीस पुत्रो की ही बीसी चलती है उसमें प्रतिपालन होता है। 20 पुत्रो को ब्रह्माजी ने रखे। उस बीसी में उत्पति होती है व 20 पुत्रो को शिवजी को सौंपे। उस बीसी में संघार होता है।

देव तिण देवका ऋष यां प्रगटे, जक्त में भक्त सो होय जोरे।
दास सुखराम कहे ज्ञान कर देखियो, अमल की बात कूं कौन मोरे ॥ ३४ ॥

म:फ: है कि जिन जिन देवों के यहां जिसकी बीसी प्रगट होती है जैसे विष्णु के पास नारद पुत्रो की बीसी में शक्तिशाली भक्त प्रगट होते है ज्ञान से विचार कर देख लो ऐसी गहन बात को कौन मोड सकते है।

विषन की बिसियां विष्ण जन ऊपजे, दुज की बिसियां विप्र जोरे।
शिव की जाण सन्यास में पोख है, ब्रह्म की भक्ति को नांही मोरे ॥ ३५ ॥

म:फ: है कि विष्णु की बीसी में विष्णु के भक्त उत्पन्न होते है, ब्रह्मा जी की बीसी में ब्राह्मणों का जोर रहता है और शिवजी की बीसी में सन्यासियो का जोर रहता है। तीनो का जोर होते हुये भी केवल भक्ति का उल्लघंन नही कर सकते।

फेर सुण देवता गुंज ओ बांधियो, भक्त बणाय सो जीव लेणा।
जाब ते काज जुग द्रसणी मेलिया, यूं ऊतक जाब सो इत केणा ॥ ३६ ॥

म:फ: है कि ब्रह्मा विष्णु महादेव ने फिर ज्ञान गुष्ट करी कि ऐसी ब्रह्म भक्ति जगत में जीवों को सुक्ष्म रूप से व तीन लोक को विस्तार रूप से समझाने के लिये खटदर्शनियो को उत्पन्न किया।

ब्रह्म की भक्त या तीन मत बाहिरी, ताही पच सुण है देव धारे।
दास सुखराम के शरण बिन जीव रे, तांही कूं सोजकर काल मारे ॥ ३७॥

म:फ: है कि जो ब्रह्म भक्ति है वो तीन लोक की भक्तियों से अलग है। उसी तीन लोक की भक्ति में सब पच रहे है। और जो नर नारी देववृति आत्मा होती है वो ब्रह्म भक्ति करते हैं। और जो ब्रह्म भक्ति नहीं करते हैं, उनके ऊपर काल की पहुंच हैं।

करत पैदास दुज जीव अस्थुल सो, विष्णु भगवान पर पोख देवे।
भरम का जाल सो सगत के हाथ है, मार संहार जूं शंभु लेवे ॥ ३८ ॥

म:फ: है कि ब्रह्माजी ने स्थूल शरीर में जीवों की रचना करी व विष्णु भगवान प्रतिपालन करते है। शिवजी का काम संहार करने का है और माया रूपी शक्ति का काम भर्म में डालने का है।

राकसी अंस संसार में ऊपजे, भक्त में आंण जब भीड पोरे।
आप करतार अवतार तब धारके, दुष्ट कूं घेर सिर घाव मारे ॥ ३९ ॥

म:फ: है कि जब जब भक्तों में भीड पडती है तब तब अवतार धारण करके भक्तो का अंश रखने के लिये पारब्रह्म परमात्मा दूषित शक्तियों का संहार करते है।

राकसी होय जड़ जीव इन बात सूं, संत सराय दे आड़ कोई।
दास सुखराम कह विष्णु की पोल ज्यां, दाणवां सरब ऊण जाग होई ॥ ४० ॥

म:फ: है कि यदि कोई नर नारी संतो की सराहना करते है तो उस बीच यदि कोई आड दे देते है याने रोक देते है तो ऐसे व्यक्ति जो रोकने वाले है वे राक्षसी वृति हो जाते है। जहां विष्णु की पोल है, वहां दानवो की पोल है।

क्रोड तेतीस सुण देवता जात है, ताय मध ईन्द्र इधकार होई।
शेष अठयासी सूत ब्रह्मा के ऊपना, ताही सुं मांड विस्तार लोई ॥ ४१ ॥

म:फ: है कि देवताओं की जाति तेतीस क्रोड है जिसमें सबसे बडा ईन्द्र देव है। ब्रह्माजी के अठयासी हजार ऋषि उत्पन्न हुये, उसी से सृष्टि का विस्तार हुआ।

सिनकादिक सुण विष्णु का चार रे, शिव का तीन गण मान लिजे।
शरणा ब्रह्म ये शकल में रम रहया, भज करतार कूं काज किजे ॥ ४२ ॥

म:फ: है कि विष्णु भगवान के चार, सनकादिक ऋषि व शिवजी के तीन गण, इन सब के पारब्रह्म परमात्मा का ही शरणा है। रमतीत राम सकल घट में व्यापक है और केवल्यराम का सांस ऊसांस में स्मरण करके कारज कीजे।

सरब सो देव आधीन ऊण देव के, भीड चाल अवतार आवे।
दास सुखराम शारदा नारदा, रिष जोगेश्वर सरब गावे ॥ ४३ ॥

म:फ है कि तीन लोक में सभी देवता उस पारब्रह्म परमात्मा की शरण में है। इन देवो में भीड पडने पर वहां से अवतार आते है। इसकी साक्षी शारदा नारदा ऋषि और योगेश्वर सभी उस पारब्रह्म

परमात्मा को गाते है।

श्लोकः- कलजुग मधे रिष सुखराम, बोलेस बाणी चढ सत धाम।
भक्त सी माला पोऊंस ऐसे, जुग जुग संत हुवा सिध तेसे ॥ ४४ ॥

म:फ: है कि मैंने कलियुग में केवल्य ब्रह्म की भक्ति करके सतधाम याने के: पद आ: पद की प्राप्ति कर अणभै बाणी बोली व युग युग में जितने भी संत सिद्ध भक्त हुये, उन सब का वर्णन कर कह रहा हूं।

जुगचार आद त्रित जुग मध्ये, राजा स ब्रह्मा तप ध्यान संध्ये।
एकीज सम्य पुस्तंग रागो, हरे वेद चारूं संखासुर भागो ॥ ४५ ॥

म:फ: है कि आदि अनादि से चार युग है। तीन युगो के बीच में राजा संखासुर ने ब्रह्माजी का तप व ध्यान किया। जिस के बल से ब्रह्माजी के चारो वेदों को चुराकर संखासुर समुद्र में घुस गया।

तब राम सामौ धर मच्छ रूप, धसे समंद मांही, जोये सब नीर पायो दुष्ट नांही ।। ४६ ।।

म: फ: है कि जब संखासुर चारों वेदों को चुराकर समुद्र में घुस गया तब मच्छ रूप अवतार धारण कर पूरे समुद्र में खोजा, परन्तु राक्षस नहीं मिला।

तबे कच्छ रूप धरयो राम सोही, गिलीगार सोही लियोजख जोही।
करपाण स्याया संखो मरोडे, लिया वेद चारी दांताने तोडे ॥ ४७ ॥

म:फ: है कि मच्छ रूप धारण करने पर भी राक्षस नही मिला तब कच्छ रूप धारण कर समुद्र में जितनी भी गार (मिट्टी) थी, उस सब को सोखायमान किया तब संखासूर को पकड कर मारा। फिर चारो वेदों को लाये।

दिया दुज सेती सुणो वेद चारी, गये मच्छ कच्छ सबे काज सारी।
अबे अवतार सुणो एक दाणु, वराह नरसिंघ जुगो बखाणु ॥ ४८ ॥

म:फ: है कि तब चारो वेद समुद्र से लाकर ब्रह्माजी को वापिस सौंपे। इसी तरह मच्छ कच्छ अवतारों ने ये कारज किया, उसके बाद एक शूरवीर दानव हुआ, उस समय बराह व नरसिंह अवतार हुये, उस युग का वर्णन कर रहा हूं।

हिर्णाख दाणु दुजो बर जांणी, फटे उर जोसा तबे बुजे आंणी।
मुज आप ऐसो बतावोस आई, लड़े बांह जोड़ी कंरू जुध जाई ॥ ४९ ॥

म:फ: है कि हिर्णाक राक्षस बडा बलशाली हुआ। उसने देवो की भक्ति करके वरदान प्राप्त कर लिया, फिर तीनों ही देवताओं से कहने लगा मुझे कोई ऐसा शूरवीर बताओं, जो मेरे से लड सके, क्योंकि लडने के लिये मेरी भुजाये फट रही है।

तबे दुज बोले नही कोय ऐसो, करे हात जोडा लडे तोह जैसो।
हिर्णाख कहे जुग रहूं कौन घाटे, मेरी ऊरबहिया नितो बोहोत फाटे ॥ ५० ॥

म:फ: है कि ब्रह्माजी बोले कि तुम्हारे से बाहो में बाहे डाल कर लडने वाला कोई नही है। तब हिर्णाक ने कहा, युग में कैसे रहूं मेरी तो युद्ध करने के लिये भुजाये फट रही है।

तबे दुज धुजे कहा अब कीजे, दाणु बोहोत जोरे किम बस लीजे।
विष्णु शिव पासे गये दुज धाई, ऊपनो दाणु करो जुध आई ॥ ५१ ॥

म:फ: है कि ब्रह्माजी को डर उत्पन्न हुआ और मन में विचार करने लगे। अब दानव को कैसे

वश में किया जाये, यह विचार कर विष्णु व शिव के पास गये और कहा ऐसा जबर बलशाली दानव उत्पन्न हो गया है। जाकर उससे युद्ध करो।

तबे शिव बोले नहीं पांण मोई, कहो विष्णु सेती करे जुध जोई।
तिहूं देव एकेकरी गुष्ट आई, दाणु बोहोत जोरे संभे नही भाई ॥५२॥

म:फ: है कि शिवजी ने कहा कि उस राक्षस से लडने की मेरे में शक्ति नही है, तुम जाकर विष्णु को कहो वे लडाई करेंगे, इसी तरह तीनो देवो ने गुष्ट करी और कहा ये राक्षस बहुत जबरदस्त है, इसको नही जीत सकते।

तबे दुज बोले सुणो हिर्णाक, तोसे जुध करणे वीरो ब्रह्म बांका।
कहे हिर्णाक बतावोस मोई, किस देश जागा रह ब्रह्म सोई ॥५३॥

म:फ: है कि जब ब्रह्माजी ने जाकर हिर्णाक को कहा तुमसे लडाई करने वाला तो एक ब्रह्म परमात्मा शूरवीर है। तब हिर्णाक ने कहा वो शूरवीर किस देश में किस जगह है मुझे बताओ।

कहे दुज भेवा नही ठोड़ ठामा, मुज तुज मांही रमे श्याम रामा।
किस बेत पाऊं लडे केम सोई, केहे हिरणाक बताओस मोही ॥५४॥

म:फ: है कि ब्रह्माजी ने ब्रह्म शूरवीर का भेद बताया है कि उस ब्रह्म शूरवीर का कोई निश्चित स्थान नही है। वो तुझ में, मुझ में व सब में व सब स्थान में रम रहा है तब राक्षस ने कहा।

कहे दुज भेवा सुणो जख आंणी, आराध्य आवे विरोध्या जाणी।
हिरणाक तब मन या ऊर धारी, कर धर ऊंधी मारूं रेत सारी ॥५५॥

म:फ: है कि जब ब्रह्माजी ने भेद बताया है राक्षस सुनो, वे ब्रह्म शूरवीर आराधना करने से व विरोध करने से आते है। तब हिरणाक ने मन में ये धारी, समस्त पृथ्वी को ही क्यों नही उल्टी पटक दूं ताकि ब्रह्म के जितने भी जीव है, वे सब समाप्त हो जावेंगे।

आकाश मारे धरण हलाई, तबे अंगकाया पसिनोस आई।
फेरेस हात भृकुटीज शीषा, तब जंवार जैसा कर बीच दिसा ॥५६॥

म:फ: है कि जब राक्षस ने धरती व आकाश को हिलाया तब हिरणाक के शरीर में पसीना आ गया, पसीना पोछने के लिये भृकूटी पर जैसे ही हाथ फेरा तो हथेली में ज्वार के दाने जितना छाला दिखाई दिया।

कर बीच निरखे क्या येह होई, अठा पहल अेवो देख्यो न कोई।
वधे इण्ड ऐसे घडे मूण कवावे, अब जख हात संभे नही आवे ॥५७॥

म:फ: है कि जब राक्षस ने विचार कर हथेली को निरखा तो सोचा यह क्या हो गया। पहले तो यह छाला नही था, इस तरह ज्वार के दाने के समान छाले ने इण्डे का रूप धारण कर लिया और इण्डे से घडे का व घडे से मूण जितना हो गया। अब तो राक्षस की हथेली में भी नही संभल रहा था।

तब रावदाणु कर हाथ डारयो, ईण्ड मांही भगवान अवतार धारयो।
मुख मांही तिरलोक सब जुगालिया, बराह हिर्णाक इम जुध किया ॥५८॥

म:फ: है कि तब राक्षस ने अपने हाथ को झटका झटकने से इण्डे में से बराहा अवतार ने जन्म धारण किया और पुरी त्रिलोकी को अपने मुंह में दिखा कर हिरणाक से युद्ध किया।

जुटे रोष बरसकर कियो जुध भारी, मारे हिर्णाक किया टूक फाडी।
पृथ्वी प्रतिपाल इस्याराम राया, जीवां काज दौडे रूप आया ॥ ५९ ॥

म:फ: है कि इसी तरह बराह अवतार ने हिर्णाक के ऊपर रोष के साथ युद्ध करके हिर्णाक को मारा और पृथ्वी व तीन लोको के जीवों की प्रतिपालना करी, ऐसे ब्रह्म परमात्मा है। राक्षसो का संहार व जीवो का उद्धार करने के लिये ही अवतार रूप धारण कर आते है।

सुणो संत सारा सबे मांड आणी, हरे ब्रह्म सांचा जपो सेंग प्राणी।
सबे मांय देवा भरपूर होई, केह सुखरामा रटो सर्व जोई ॥ ६० ॥

म:फ: है कि सृष्टि के सभी नर नारी व संतजन सुनो, केवल ब्रह्म परमात्मा ही सच्चे है इसलिये सकल प्राणियो को उसका सिमरण करना चाहिये। वो सब देवो के देव है और सब जगह भरपूर है।

परब्रह्म कह सो करतार सांई, तिरलोक ज्यांहा त्यांहा भरपूर मांई।
सांस ऊसांसे हर जाप किजे, कह सुखराम यूं मोख लिजे ॥ ६१ ॥

म:फ: है कि ब्रह्म परमात्मा ही करतार है सारी त्रिलोकी में वही भरपूर है। अत: श्वांस प्रश्वांस में राम का जाप करो, जिससे मोक्ष पद की प्राप्ति होगी।

हिर्णाकुश जाय सो बोह जोस किया, दुज पास जाय के बरदान लिया।
सेवा पूजा बोहो बिध किनी, तब दुज ऊठके आशीष दिनी ॥ ६२ ॥

म:फ: है कि हिरणाकुश राक्षस बहुत प्राक्रमी था, उसने विधि विधान से ब्रह्माजी की भक्ति कर वरदान प्राप्त किया, सेवा भी बहुत की, फलस्वरूप ब्रह्माजी प्रसन्न होकर राक्षस को आशीर्वाद दिया।

लोह काटकंकर बारे ना मांही, दिनो दिन राती तुज मौत नांही।
बर लेह दाणु अब गांव आयो, नवखण्ड मधे अब जुध लायो ॥ ६३ ॥

म:फ: है कि ब्रह्माजी ने राक्षस को ऐसा आशीर्वाद दिया कि लोहे के अस्त्र शस्त्र व घर बाहर रात हो या दिन तेरी मृत्यु नही होगी। वरदान प्राप्त कर अपने गांव आकर नो ही खण्ड में अपने नाम की धूम मचा दी।

चढा जोश जोई सब मांड घेरी, लिया भूप जीती जुगे आंण फेरी।
मोरो नांव गावो सब पुरूष नारी, देवूं रीज मोजा तुमे रेत म्हारी ॥ ६४ ॥

म:फ: है कि ब्रह्माजी के वरदान से राक्षस को बडा घमण्ड आ गया, जिससे कई खण्ड के राजाओं को जीतकर अपने अधिकार में कर लिया और पूरे संसार में अपने नाम की आण द्वाही फेरी कि हे नर नारियो मेरे ही नाम को रटो, जिससे मैं तुम्हे सब सुख दूंगा, क्यों कि तुम मेरी प्रजा हो।

कह राम कोई ताहे घेर मारूं, भरूं खाल भूसा नखा चीप सारूं।
जित्यो जुग सारो अबे देव जाही, करो जुध मोई मिलो काय आई ॥ ६५ ॥

म:फ: है कि हिरणाकुश ने कहा यदि कोई राम का नाम रटेगा तो मैं उसे मारकर उसकी खाल में भुसा भर दूंगा। नखो में कीले ठुकवा दूंगा। इस तरह सारे जग को अपने काबू में कर लिया और सभी देवताओं को भी ऐलान कर दिया, सभी आकर मुझसे युद्ध करो।

कयो इन्द्र सुणो इसी विध लोई, हर हिरणाकुश की पटरानी जोई।
कहे देवसारा सुणो ईन्द्र राई, रखो जोय आणी कयादुजो लाई ॥ ६६ ॥

म:फ: है कि जब इन्द्र ने देवताओ से कहा कि हिरणाकुश की पटरानी परमात्मा की भक्त है, तब देवताओ ने कहा कि फिर तो उस कयादू रानी को इन्द्रलोक में लाकर रखो।

तबे इन्द्र बोले सुणो सरब देवा, आ तो विष्णु भक्ता नही काम ऐवा।
रखो देव जतना देहो ज्ञान जाई, कटे दिन यांका पावे सुख माई ॥ ६७॥

म:फ: कि तब इन्द्र ने सब देवो से कहा कि कयादू तो भगवान विष्णु की भक्त है इसलिये मैं हर कर नही लाऊंगा, तब सभी देवो ने कहा इस समय कयादू गर्भवती भी है, उसको ऐसा ज्ञान दो जिससे इसका समय अच्छी तरह व्यतीत हो और गर्भ में बालक भी ज्ञान से सुख पावे।

तबे रिष नारद नित चाल आवे, बोहो ज्ञान भेवा भेद बतावे।
तब देवकन्या गरभआस होती, सुण ज्ञान धारयो गरभआप जोती ॥ ६८ ॥

म:फ: है कि तब सब देवो ने मिलकर ज्ञान व भक्ति का भेद बताने के लिये नारदजी को भेजा। तब देव कन्या कयादू के गर्भ में बालक की आशा थी उसने भी नारदजी के ज्ञान को सुनकर धारण किया।

ईन्द्र देवकन्या घर ऊलट मेली, प्रहलाद जन्में नायत झेली।
जुग दोय चौबीस ईन्द्रदेव राखी, घर भेज दिजे कर देव साखी ॥ ६९ ॥

म:फ: है कि जब समय आने पर इन्द्र ने कयादू को उनके घर भेज दिया, जहां भक्त प्रहलाद का जन्म हुआ। इसी तरह कयादू को दो जुग याने चौबीस वर्ष देवलोक में रखा, फिर देवताओं की साक्षी करके वापिस भेज दिया।

या गरभ बालक येते नांही होई, है जन पूरण सुण देव सोही।
जन्म गत कारण सुर मेलजाई, प्रहलाद जन्मे असुर घर आई ॥ ७० ॥

म:फ: है कि तब इन्द्र ने सभी देवों को बुलाकर सभा की कि ये साधारण बालक नही है, बालक पूर्ण भक्त जन होगा। तब प्रहलाद का जन्म असुर के घर हुआ।

तब जख के घर होत बधाई, धिन दिन धिन भाग अब मुझ भाई।
प्रहलाद जन्मत सब हरषाणा, नरनारी बस्ती ऊच्छरंग कवाणा ॥ ७१ ॥

म:फ: है कि जब राक्षस के घर प्रहलाद का जन्म हुआ तब घर घर में बधाइयां बंटने लगी। हिरणाकुश कहने लगा आज मेरे भाग्य व आज के दिन को धिन हो, जो मेरे घर प्रहलाद का जन्म हुआ, बस्ती व नर नारियों ने भी खुशिया मनाई।

अब बरस सात हुवा दोय जाणी, कह रिष कूं नित प्रहलाद आणी।
देवो ज्ञान मोही अदभूत देवा, कहो जीव करता सब शीश भेवा ॥ ७२ ॥

म:फ: है कि प्रहलाद जब सात वर्ष के हुये तब उनके हृदय में स्वयं को परमात्मा के विषय में जानकारी की इच्छा हुई तब ऋषियो को नित कहने लगे, हे ऋषियो मेरे को ऐसा अदभूत ज्ञान बताओ कि सब जीवो के ऊपर परमात्मा कौन है।

तब रिष बोले त्रिलोक मांही, तुज बाप पिता सम कोय नांही।
पढ़ यह ज्ञान सुण सुत लाई, जुध जीत बाता जुग मांही ॥ ७३ ॥

म:फ: है कि तब ऋषि बोले, हे प्रहलाद इस पूरी त्रिलोकी में तेरे पिता के समान कोई नही है। तुम राजपुत्र हो, तुम्हें तो राज क्रिया की शिक्षा प्राप्त कर युद्ध में विजय प्राप्त कैसे की जाये, यह सीखना है।

तुम राज हंसा ओ ज्ञान चाहिये, जे शस्त्र ऊठे सब जीत लहिये।
हिरनाक खूशो तबे सुण पायो, प्रहलाद कूं तत्काल बुलायो ॥ ७४ ॥

म:फ: है कि तब ऋषियो ने प्रहलाद से कहा कि तुम राज पुत्र हो इसलिये तुम्हें तो ऐसा ज्ञान सीखना चाहिये कि पूरी त्रिलोकी भी यदि लडाई के लिये उतर आये तो भी तुम्हारी जीत होवे। जब हिरणाकुश ने ऐसी बात सुनी तो प्रहलाद को तुरन्त अपने पास बुलाया।

पढ सुत विद्या आ सुण भाई, सब वांकी मत तबे जम जाई।
प्रहलाद भणबा अब तैयार किया, बोहो संग साथी अब लार लिया ॥ ७५ ॥

म:फ: है कि हिरणाकुश ने प्रहलाद से कहा कि हे पुत्र ऐसी दृढ मति धारण करके विद्या धारण कर। इसी तरह प्रहलाद को शिक्षा प्राप्त करने के लिये तैयार किया और उनके संग में और भी बहुत से बालको को भी शिक्षा प्राप्त करने के लिये तैयार कर दिया।

भणतास गुणता बहु दिन होई, आवे न जावे न विध्या कोई
श्रीयांस कुमारी मध में रह मांही, तां होय प्रहलाद पढबास जाई ॥ ७६ ॥

म:फ: है कि जिस प्रकार हिरणाकुश ने प्रहलाद को विद्या पढने के लिये तैयार किया था, वह विद्या प्रहलाद को बहुत दिन पढने से भी प्राप्त नही हुई। जिस रास्ते से प्रहलाद पाठशाला जाते थे, उस मार्ग में श्रीयादे नाम की कुम्हारिन का घर था।

वां ब्रह्म भक्तास रहे गोप सोई, हरजाप हिरदे नितनेम होई।
ऊण एक समे घड न्याव मांई, तां मांय बिल्ली बच्चास ब्याई ॥ ७७ ॥

म:फ: है कि श्रीयादे ब्रह्म की भक्ति नित नियम से जपा करती थी पर हिरणाकुश से छिपकर करती थी। राम के नाम को प्रेम व प्रीती से जपती थी। एक दिन उस कुम्हारी ने मिटटी के बर्तन बनाये और उन्हें पकाने के लिये न्यावडा बनाया, उन मिट्टी के बर्तन में बिल्ली के बच्चे हुये थे।

या मन मधे आवास लेसुं, तां दिन बच्चा छिछकार देसुं।
दिन पांच पंदरा बदीत होई, आवास चुणता याद न कोई ॥ ७८ ॥

म:फ: है कि श्रीयादे ने सोचा कि जिस दिन न्यावडा चुनेंगे, उसी दिन बच्चो को दूर भगा देंगे। इस तरह 10,15 दिन व्यतीत हो गये। न्यावडा चुन दिया गया, बच्चो को निकालने की याद नही रही।

चुण आग पुंती गहे आग दिनी, तब सुध सोची चित्त जीव लीन्ही।
कर करूणा तब यो बैण भाखे, सुण करता हर ये जीव राखे ॥ ७९ ॥

म:फ: है कि श्रीयादे ने न्याव चुण कर आग लगा दी। तब स्मरण हुआ कि इस न्यावडे में तो उन जीवो को चुन दिया है। बडी व्याकुल हुई और करूणाकर परमात्मा से ऐसे वचन बोले कि हे रामजी महाराज उन जीवो की आप ही रक्षा करना, मेरे से बडी भारी गलती हो गई है।

देहे परदक्षिणा डंडोत किया, सतराम कहे जीव शीर सूंप दिया।
श्रीयांस मुख कहे राम भाई, तिण बार प्रहलाद ऊभोस आई ॥ ८० ॥

म:फ: है कि श्री यादे ने उन जीवो को बचाने के लिये परमात्मा से प्रार्थना करती हुई न्यावडे के डंडोत कर परिक्रमा देकर उन जीवो को सत्य परमात्मा को सौंप दिया कि इनकी रक्षा आप करना, उस समय प्रहलाद रास्ते से जा रहे थे, जिस समय श्रीयादे ने राम कहा। प्रहलाद राम का नाम सुन कर खडे हो गये।

कर डकर धाकल केहे बेण सोई, ते नाम लियास सुण कोण होई।
तब संत श्रीयांस आ मन धारी, अब आज छिपया कुण गत म्हारी ॥ ८१ ॥

म:फ: है कि प्रहलाद ने आवेश में आकर श्रीयादे को जोर से शब्द बोले कि जो अभी आपने नाम लिया वो कौन है किसका है। यह सुनकर श्रीयादे के मन में विचार आया कि आज झूंठ बोलने से मेरी क्या दशा होगी।

इण न्याव मांही चुण जीव दिया, पैदा करंदा सो नाम लिया।
प्रहलाद केहे सुण ऊ कौन होई, देहे भेद मोने के मारूंगोई ॥ ८२ ॥

म:फ: है कि श्रीयादे ने प्रहलाद से कहा इस न्यावडे में बिल्ली के बच्चो को चुन दिया और अग्नि भी लगा दी। उन जीवो की रक्षा के लिये उस पैदा करने वाले परमात्मा का नाम लिया है। तब प्रहलाद ने कहा वह कौन है, उसका भेद बताओ, नही तो तुम्हें मारूंगा।

सुण राम रमता करतार कुवावे, जन भीड़ घाल्या ततकाल आवे।
प्रहलाद बोले यो न्याव सोई, मो बिन आया काढे न कोई ॥ ८३ ॥

म:फ: है कि श्रीयादे ने कहा हे प्रहलाद सुन रमतीत राम सबके करतार है, हरिजनो में भीड़ पडने पर तत्काल दौडे आते है। तब प्रहलाद ने कहा हे श्रीयादे यह न्यावडा मेरे आये बिना मत खोलना।

दिन रेण एकी सुण दोय भाया, आवास हेरत अध बीच आया।
तब संत श्रीयांस मन संक खाया ॥ ८४ ॥

म:फ: है कि इस तरह एक दो दिन से न्यावडे को खोला और उसमें जीवो को ढूंढते ढूंढते बीच में आये, तब श्रीयादे के मन में शंका उत्पन्न हुई कि इन जीवों को रामजी बचायेंगे या नही।

हे राम हे राम या सुण लिजे, ए जीव राख्या बिन जीव दीजे।
हेरत हेरत चो फेर डोरा, तब पांच बासण अध बीच कोरा ॥ ८५ ॥

म:फ: है कि श्रीयादे ने परमात्मा से करूणा भरी प्रार्थना की। हे रामजी इन जीवो की रक्षा करना यदि इनको जीवित नही रखा तो मेरे प्राण भी आप ले लेना। इसी तरह ढूंढते ढूंढते चारो ओर घूमी और देखा कि उस न्यावडे के मध्य में पांच बर्तन कच्चे ही रह गये।

प्रहलाद आगे तबे आण मेले, देखस मिनियां मत मांहे खेले।
तब संत प्रहलाद या ऊर धारी, सत राम रामा अवर विकारी ॥ ८६ ॥

म:फ: है कि तब श्रीयादे ने पांचो बर्तनो को प्रहलाद के सामने रखे तो देखा कि बिल्ली के बच्चे जीवित थे और खेल रहे है। जब प्रहलाद ने अपने हृदय से ऐसी मति धारी कि एक परमात्मा ही सत्य है, बाकी सब विकारो से भरे हुये है।

ऊर दिल मांह अेहे आकीन आई, ज्यां शीश ओ राम को मारे भाई।
जिण जीव राख्या इण आग सोई, सो सत खावंद मैं पेक होई ॥ ८७ ॥

म:फ: है कि प्रहलाद को अब पूर्ण विश्वास हो गया कि जिसके सिर पर राम है, उसको कोई नही मार सकता। वो ही राम सच्चा है। जिसने इन जीवो को आग में भी जीवित रखा, मेरा भी असली पिता वो ही है, मैं उन्ही का पुत्र हूं।

हरनाम धर प्रहलाद चाल्या, चटसाल आंणी सब वेद पाल्या।
कोहो राम सारा निरधार सोई, सब वेद पंडित झूंठास होई ॥ ८८ ॥

म:फ: है कि इसी तरह प्रहलाद श्रीयादे के घर से इस नाम को धारण कर पाठशाला आये और सभी बालको को राम का नाम का पाठ पढाया। स्कूल के अध्ययन को झूंठा मानकर सभी बालको से कहा उस निरधार राम का नाम धारण करो। पोथी पंडित सब झूंठे है।

चटसाल मांही आ धुन होई, बोहो अली गुंजे ज्यूं बाग सोई।
गणणाट भणणाट के अेम फूटे, नरनार सुण कान सुख शीर छूटे ॥ ८९ ॥

म:फ: है कि इस तरह पाठशाला में राम के नाम की धुन होने लगी कि मानो बाग में भंवरा गूंज रहा हो। भरणाट भरणाट की आवाज चारो और फूट रही है जिससे सब नर नारियो के कानो में सुख की सीर छूट रही है।

कहे राम सारा व्हे धुन भारी, गुंजेस चट्साल सारी।
नर नार लोई सब चाल आवे, काहा वेदधुन ईचरच कुवावे ॥ ९० ॥

म:फ: है कि प्रहलाद व लडको ने राम नाम की धुन लगा दी, जिससे पाठशाला गुंजायमान होने लगी। इस गुंजार को सब नर नारियो ने सुना, तब सभी वहां चलकर आये और कहने लगे कि यह कैसे वेदो की धुन है। हमे बडा आश्चर्य हो रहा है।

रिष ऊण बेग नही जाग मांही, केहे नार पुरूषा दुजते रम आई।
तब सेंग सारा के हात जोडया, मारेस गुरुदेव मरजाद तोडया ॥ ९१ ॥

म:फ: है कि जिस समय धुन हो रही थी उस समय ऋषि गुरुजी पाठशाला में नही थे, तब सब नर नारियो व बालको ने सोचा और विचारा कि शाला की मर्यादा तोडने से ऋषि (गुरूजी) अपने को मारेंगे।

तम कंवर प्रहलाद हम रेत होई, हम मार देवे तब नांही कोई।
तब ऊठ बोले प्रहलाद बाणी, मुज मार तुमको मारेस आंणी ॥ ९२ ॥

म:फ: है कि उस समय नर नारी व बालक बोले है, हे प्रहलाद तुम तो राजा के कंवर हो और हम प्रजा है। हमें जब मार पडेगी तब क्या होगा। तब प्रहलाद खडे होकर बोले, पहले मुझे मारेंगे फिर तुम्हें, इसलिये तुम्हें डरने की कोई बात नहीं है।

ओ नाम जाको सो धर्म भारी, नही मार सके त्रिलोक सारी।
को राम सारा डर मत राखो, तज वेद पाटी हल बेग भाखो ॥ ९३ ॥

म:फ: है कि तब प्रहलाद ने कहा जिस परमात्मा का यह नाम है, बडा भारी धर्म है। उसको त्रिलोकी में कोई नही मार सकता। इसलिये उस राम नाम का जाप करो, डरो मत।

अब सुण लडका सब केण लागा, सब मधिमासु एक भागा।
दौडयोस चेटी रिष पास आयो, चटसाल को ऊण सब भेद गायो ॥ ९४ ॥

म:फ: है कि तब सभी लडके मिलकर राम नाम का जाप करने लगे। लेकिन उन लडको में

से एक लडका उठकर भागा और ऋषि के पास गया और जो पाठशाला में हो रहा था उसका पूर्ण विवरण गुरुजी को सुना दिया।

तज वेद पाटी कहे राम सोई, प्रहलाद लायो ओ पाठ कोई।
तब रिष जीमत ततकाल भागो, पोसाल मांही रामधुन लागो ॥ ९५ ॥

म:फ: है कि इसी तरह लडके ने ऋषि से कहा प्रहलाद कहीं से राम के नाम का पाठ सीखकर आये और वही पाठ हमें पढा रहे है। पढने की पुस्तको को अलग रखा दिया। उस समय ऋषि भोजन कर रहे थे। बीच में ही उठकर जल्दी से आये और देखा कि पाठशाला में तो रामधुन हो रही है।

तब अेह धाकल रिष हाक किवी, या सीख तुमने कहो कोण दिवी।
कर रीस भारी कहे बैण साटा, तज अेह लवल्या गेहो हात पाटा ॥ ९६ ॥

म:फ: है कि तब ऋषि ने वहां आकर क्रोध से भरकर डांट लगाई कि हे लडको ये राम नाम की पढाई किसने बताई, क्रोध में भरकर वचन बोले कि राम नाम की लिव को छोडो और हाथ में पाटी सम्भालो।

प्रहलाद बोले सुण रिषराई, पाटी जे झेला लिखा राम मांही।
झगडत झगडत बोहो दिन होई, प्रहलाद रिष की माने न कोई ॥ ९७ ॥

म:फ: है कि तब प्रहलाद ने ऋषि से कहा कि हे गुरुदेव पाटी तो हम झेल लेंगे परन्तु उसमें भी राम नाम ही लिखेंगे। इस तरह झगडते झगडते बहुत दिन हो गये, परन्तु ऋषि की बात प्रहलाद ने नही मानी।

तब रिष के मन बोहो जोस आया, बिकराल बिडरूप धर देह काया।
देखत सब कूं मूर्छास होई, प्रहलाद बिन जी मृतज प्राण सोई ॥ ९८ ॥

म:फ: है कि प्रहलाद के ऐसे वचन सुनकर ऋषि को बहुत क्रोध आया और विकराल विडरूप बना कर प्रहलाद को डराया। ऐसा रूप देखकर सब मूर्छित हो गये, प्रहलाद के अलावा सब मरे हुये के समान हो गये।

प्रहलाद ऊपर टटकारा आया, तज अेह लवल्या के मारूंगो भाया।
रिष दांत जोड़ा बोहो बिध बाई, प्रहलाद मुस्कयो चसक्योन भाई ॥ ९९ ॥

म:फ: है कि प्रहलाद के अलावा सबको तो मूर्छा आ गई, उसके बाद क्रोध से भरकर ऋषि ने प्रहलाद को डांटा और कहा कि इस राम के नाम की लवल्या को छोडो, नही तो मैं तुम्हें मारूंगा। इस तरह दांत पीसते हुये बडे क्रोधित हुये परन्तु प्रहलाद पर इसका कुछ भी असर नही हुआ।

रिषराय ऊलटा घर जाय बैठा, कोहो काहा किजे प्रहलाद सेंटा।
पोसाल मांही हुई धुन भारी, फिर रिष उठे कोपंग विचारी ॥ १०० ॥

म:फ: है कि प्रहलाद ने फिर भी ऋषि की बात नही मानी, तब ऋषि अपने घर जाकर बैठ गये और मन में विचार करने लगे कि अब इसको कैसे समझाये। दूसरे दिन फिर पाठशाला में राम नाम की भारी धुन होने लगी, ऋषि ने भारी कोप किया और विचारा।

विकराल बिंकटक अदभूत होई, रिषराय पोसाल मावे न कोई।
देखत नर नार अड बढ पडिया, घर जात पेली सुण ताव चढ़िया ॥ १०१ ॥

म:फ: है कि जब ऋषि ने ऐसा विकराल विडरूप बनाया तो पूरी पाठशाला में देखने वाले नर नारियों में भगदड मच गई, पूरी पाठशाला में वह रूप नही मावे, सब भय भीत हो गये और घर जाने से पहले ही बुखार चढ गया।

प्रहलाद ऊपर रिष आंण गुंजे, ज्यूं ईन्द्र गाज्यां त्यों आंण जुंझे।
जन संतसुरो कंपे न कोई, के रिष ईम तम भोलास होई ॥ १०२ ॥

म:फ: है कि ऋषि ने आकर प्रहलाद पर बडा भारी कोप किया और गरजने लगे जैसे ईन्द्र गरजता हो। परन्तु संत प्रहलाद तो शूरवीर थे, वे भला ऋषि से कब डरने वाले थे, बल्कि ऋषि से कह रहे है कि गुरु देव आप बहुत भोले हो।

मो शीश खावन्द है सत रामा, को मार सकेस कुण रिष कामा।
प्रहलाद को मत दृढतास भारी, रिषराय चाले पचि ऊलट हारी ॥ १०३ ॥

म:फ: है कि प्रहलाद ऋषि से कह रहे है कि हे गुरुदेव मेरे सिर पर सत्त पिता है याने राम है। मेरे को भला कौन मार सकता है। प्रहलाद की ऐसी दृढ़ता देखकर ऋषि वापिस पचहार कर चले गये।

रिष सात बेल्या यूं कोप किया, प्रहलाद को मन नेक न बिया।
पच झूंज रिष राय अब हार बैठा, मन सोच प्रहलाद सेंठा ॥ १०४ ॥

म:फ: है कि ऋषि ने आकर प्रहलाद को डराने के लिये ऐसे कई तरह के रूप धारण किये और कई तरीके से प्रहलाद को डराने का प्रयत्न किया। परन्तु प्रहलाद तनिक मात्र भी विचलित नही हुये। इस तरह पचहार कर ऋषि बैठ गये और मन में सोचने लगे कि प्रहलाद इस राम के नाम से बहुत मजबूत है।

अब रिष यो जाब कहे सुण आई, प्रहलाद भणि के कहूं राज जाई।
प्रहलाद बोले ततकाल जावो, तुम सूं हूवे सो कर बेग लावो ॥ १०५ ॥

म:फ: है कि ऋषि ने प्रहलाद से कहा कि तेरी शिकायत राज में जाकर करूंगा। जब प्रहलाद ने कहा हे ऋषि राय तुम जल्दी से जल्दी जाओ और तुमसे जो होवे सोई करो, देर मत करो।

तम झूंठ झूंठा है बाप मेरा, है राम सांचा मैं पेक चेरा।
प्रहलाद बोले कहूं रिष तोई, बिन राम तेरी कुण गत होई ॥ १०६ ॥

म:फ: है कि तब प्रहलाद ने कहा हे ऋषि वर तुम भी झूंठे हो और मेरे पिता भी झूंठे है, केवल मेरे राम ही सच्चे है मैं उनका विशेष शिष्य हूं। हे ऋषि राम के बिना तुम्हारी क्या गति होगी।

तब रिष के मन तन आग लागी, मुज आड मरजाद सब आज भांगी।
कर रिष तामस अब पंथ धाया, हिर्णाकुश के दरबार आया ॥ १०७ ॥

म:फ: है कि तब प्रहलाद ने ऋषि को ऐसे वचन बोले, तब ऋषि के तन बदन में क्रोध रूपी अग्नि लग गई और मन में सोचने लगा कि आज इस प्रहलाद ने मेरी सब मरयादा तोड दी, इस तरह क्रोधित होकर ऋषि हिरणाकुश के दरबार में गया।

तब उठ राजा सनमुख होई, धिन दिन धिन भाग कहो टेल मोई।
आप पधारे कहो कुण काजा, आधीन अे बैण के सत राजा ॥ १०८ ॥

म:फ: है कि जब ऋषि को दरबार में आते देखा जब हिरणाकुश आदर सहित कहने लगे,

आज मेरे भाग्य धन्य है, जो आप यहां पधारे हो, पर आप किस प्रयोजन से पधारे हो, आपके वचन तो बडी अधीरता के लग रहे है।

तब रिष बोले सुण बेण राई, प्रहलाद मरजाद न माने कोई।
तुमरी हमरी सब तोर डारी, कहे नाम शत्रु पोसाल सारी ॥ १०९ ॥

म:फ: है कि तब ऋषि ने उत्तर दिया, हे राजा प्रहलाद ने सब मर्यादा का खण्डन किया है। तुम्हारी व मेरी दोनो की आड को खत्म कर दी है। पूरी पाठशाला में शत्रु याने राम की धुन्नी कर रहा है।

सुण तब हिरणाकुश कोपस किया, रिष लार जोधा बलवान दिया।
तब रिष कहे सुणज्यो सब कोई, हे राजा इनके वश न होई ॥ ११० ॥

म:फ: है कि तब हिरणाकुश क्रोधित होकर ऋषि के साथ बलवान योद्धाओं को साथ में किया, तब ऋषि ने कहा कि राजन इन योद्धाओं के वश की बात नही है।

बोहो बिध हुन्नर मैं सुण किया, हुवो गज रीछ धर रूप लिया।
विकराल बिन डोल अदभूत होई, प्रहलाद कांप्यो न संकयो न कोई ॥ १११ ॥

म:फ: है कि ऋषि ने कहा हे राजन हमने विभिन्न प्रकार के रूप धारण किये जैसे हाथी रीछ शेर आदि के विडरूप बनाये, परन्तु प्रहलाद को किसी भी प्रकार का भय नही हुआ।

अे बेण रिष का सुण तब लिया, तब भूप मन माय चित नेक बिया।
जब भूप बोले सुण रिष राई, प्रहलाद सांजे दूं समझाई ॥ ११२ ॥

म:फ: है कि ऋषि के वचनो को सुनकर राजा ने मन में विचार कर कहा। हे ऋषिवर शाम को प्रहलाद जब घर आयेगा तो समझा दूंगा।

तुम दुख मानो मत कोय सोई, को राम को जपे जुग जीवत मोई।
रिषराय ऊलटे अब घर आया, प्रहलाद ऊपर हुवो कोप भाया ॥ ११३ ॥

म:फ: है कि राजा ने ऋषि से कहा तुम अपने मन में तनिक भी दुख मत करो, मेरे जीते जी कोई राम का नाम नही ले सकता। तब ऋषि उठकर अपने घर की राह ली, तब दरबार में राजा प्रहलाद पर बडे भारी क्रोधित हुये।

सबे राज लोके आ बात होई, प्रहलाद हर नांव केहे राम सोई।
सब सोच करके आ बात बूजी, प्रहलाद को कोहो कहा अेह सूजी ॥ ११४ ॥

म:फ: है कि इस तरह राजदरबार में सब जगह बात फैल गई कि प्रहलाद राम के नाम का उच्चारण कर रहा है। सभी चिंता मग्न हो गये कि प्रहलाद को यह क्या सूजी, जो राम का नाम ले रहा है।

हिरणाकुश को सांसो अन्न नही खावे, कद सांझ होवे प्रहलाद आवे।
तब मांय कह कोऊ तत्काल जावो, प्रहलाद कूं कोहो घर नही आवो ॥ ११५ ॥

म:फ: है कि हिरणाकुश को बडी भारी चिंता हुई, राजा के अन्न पानी भी छूट गये और अन्दर में विचार करने लगे कि कब शाम हो और प्रहलाद आवे, इस तरह राजा के प्रहलाद पर क्रोधित होने की खबर माता को लगी तो माता ने प्रहलाद को शाम घर नही आने के लिये किसी के साथ मना करा दिया।

तुम शीश पिता बोहो कोप किया, अन्न पान का खण सुण राय लिया।
प्रहलाद केहे घर जावो ऊलट सोई, के राय सेती हलबेग होई ॥ ११६ ॥

कबीरजी ने कहा है कि जांको राखे सांइया मार सके न कोय। बाल न बांका कर सके, जे जुग बेरी होय। म:फ: है कि माता ने कहलाया है कि हे प्रहलाद पिता ने तेरे ऊपर बहुत कोप किया है और अन्न जल भी छोड दिया है। जब प्रहलाद ने कहलाने वाले के मुंह से वचन सुने तो प्रहलाद ने कहा, उलट कर वापिस जल्दी जाओ और कहो प्रहलाद तो तत्काल आयेगा।

मैं ऊंठाही ततकाल आवुं, के मांय सेती छिप कहां जावुं।
आ ऊलट पाछी ओ बैन भाखे, के मांय सेती मत भै राखे ॥ ११७॥

म:फ: है कि प्रहलाद कह रहा है कि मैं ततकाल आऊंगा, माता से कह देना कि मैं छिपकर कहां रहूंगा, इस तरह वापिस कहलाकर कहा, हे माता आप तनिक भी मत डरो, मेरे ऊपर तो रक्षा करने वाला सतराम है।

मैं शरण जांकी सो श्याम अेवा, त्रिलोक करता सब सेंग देवा।
कह मांय कूं जाय मत सोच राखो, प्रहलाद लेवे सुण नाम वांको ॥ ११८॥

म:फ: है कि प्रहलाद ने कहा हे माता मैं जिस रामजी की शरण में हूं वो राम तो ऐसे है जो पूरी त्रिलोकी व देवों के भी करतार है। इस तरह माता को कह देना कि तुम सोच मत करो, प्रहलाद तो उस करतार का नाम ले रहा है।

तब ऊठ बांदी मां पास आई, तम बात प्रहलाद मन नही भाई।
केहे बेण अेवा नेह तोड़ सारा, प्रहलाद कूं कुछ भयो है विचारा ॥ ११९॥

म:फ: है कि जब वह दासी वापिस माता के पास आई और कहने लगी कि हे माता जो बात आपने कही वो प्रहलाद के मन नही भाई, उसने तो वो सब मोह तोडकर कहा है। इसलिये हे माता मुझे तो ऐसा लगता है कि प्रहलाद को कुछ हो गया है।

मैं दिस्ट देखी हैरान होई, प्रहलाद बोले सुण और कोई।
हे रानी हे रानी सुण जाब अेवा, काहा भूप राजा अदभूत भेवा ॥ १२०॥

म:फ: है कि दासी कह रही है कि मैंने जब प्रहलाद की दृष्टि देखी तो हैरान रह गई। वह जो बोल रहा है तो ऐसा लगता है मानो कोई और बोल रहा है। हे रानीजी राजा से भी विशेष भेव प्रहलाद को मिला है।

बोलत ऐसी तप तेज मांई, हे राणी तां शीश ज्यूं कोऊ भय नांही।
कहे राम कहे राम ईण बिध सोई, हे रानी मैं देख हैरान होई ॥ १२१॥

म:फ: है कि दासी कह रही है कि रानी प्रहलाद ऐसे तप तेज से बोल रहा है कि मानो प्रहलाद के सिर पर किसी का भय नही है और इस विधि से राम राम कह रहा है कि मैं उसे देखकर हैरान हो गई अर्थात आश्चर्य चकित हो गई।

सुण राणी अे बेण बोहो सोच कियो, प्रहलाद कूं भेव किण ज्ञान दियो।
तब सोच राणी या सुध किवी, मन मांही जांण्यो श्रीयांस दिवी ॥ १२२॥

म:फ: है जब दासी द्वारा रानी ने ये वचन सुने तो रानी ने मन में विचार किया कि इस ज्ञान का भेद प्रहलाद को किसने दिया, फिर सुद्धि बुद्धि से ध्यान किया और मन में ही जान लिया कि

ये ब्रह्म भक्ति का भेद तो श्रीयादे के द्वारा ही प्राप्त हुवा होगा।

अब सांज होई प्रहलाद ध्याया, श्रीयांस दे के घर पास आया।
मैं शिष, तुम गुरु दे सीख मोई, है राम, के मां, कुण जाग होई ॥ १२३ ॥

म:फ: है कि जब संध्या का समय हुआ तो प्रहलाद घर जाने लगा, तब रास्ते में श्रीयादे के घर भी रूका और श्रीयादे से कहने लगा मैं आपका शिष्य हूं और आप गुरुदेव हो, मेरे को ऐसा ज्ञान दो। हे माता कि वो राम किस जगह पर है।

श्रीया देवी वाच :- दिष्टो न मुष्टो घर ठाम नांही, जिंय पोप बासे सब घट मांही।
धर प्याल आकाश भरपूर वारे, बिन छेह बिन थाह है राम सारे ॥ १२४ ॥

म:फ: है कि प्रहलाद ने जब राम के विषय में श्रीयादे से पूछा तब श्रीयादे ने कहा वो राम ना दृष्टि में आता, ना पकड में, न उसका घर है, ना स्थान। जिस तरह फूल में सुगन्ध होती है उसी तरह सब घटो में रम रहा है। धरती पंयाल आकाश सब जगह भरपूर है। उस राम का छेह व पार नही है।

जर खांण ईण्ड खांण ऊदबुद होई, नर खांण प्रगट है राम सोई।
सुणो भेव वांको कहुं तुज तांई, प्रहलाद वां सम अवरन कोई ॥ १२५ ॥

म:फ: है कि इस तरह श्रीयादे प्रहलादजी को ज्ञान दे रही है कि वो राम जर खान, इण्ड खान, ऊदबुद खान में भी है, परन्तु नर खान के बिना विशेष रूप से प्रगट नही हो सकता। इसलिये राम का भेद सुनो, हे प्रहलाद उस परमात्मा के समान कोई नही है।

कहूं भेद जूनो डर मत राखे, श्रीयादे निरभै होय बैण भाखे।
आगे हिरणाक सुण भूप बागो, सो धरण ऊंधीस करणे लागो ॥ १२६ ॥

म:फ: है कि श्रीयादे ने कहा हे प्रहलाद मैं तेरे को आद अनादि से ब्रह्म का नाम है जो मैं तुझे राम का नाम बता रही हूं। हे प्रहलाद तुम हृदय में डरो मत। श्रीयादे निर्भय होकर कह रही है कि आगे भी हिरणाक नाम का राजा हुआ था, जो पृथ्वी को भी उलटने लगा।

तब हर बराह सुण रूप धारयो, वा अंग प्रगटे ऊण सायत मारयो।
फिर सुण संखासूर वेद हरिया, ता बेर मच्छ कच्छ अवतार धरिया ॥ १२७ ॥

म:फ: है कि हे प्रहलाद जब वराह अवतार का रूप धारण करके हिर्णाक को मारा और फिर संखासूर भी हुआ जिसने वेदो को चुराकर समुद्र में घुस गया, तब मच्छ कच्छ का अवतार धारण किया।

सुण श्याम घाटी तब मरोड डारयो, ओ नांव प्रहलाद काहुं नही हारियो।
है बोत गाथा सुण राम भारी, प्रहलाद मान सत बात मारी ॥ १२८ ॥

म:फ: है कि श्रीयादे ने कहा हे प्रहलाद संखासूर की गर्दन पकड कर मरोड दी। इसलिये इस नाम की कहीं हार नही हुई, इस राम नाम की गाथा बहुत भारी है। मैं कहां तक कहूं, तू मेरी बात को सत्य मान ले।

प्रदक्षिणा दे डंडोत किया, अब पांव प्रहलाद घर दिश दिया।
अब राज लोके मां पास आया, तिण बैर हिरणाकुश सुणज पाया ॥ १२९ ॥

म:फ: है कि श्रीयादे द्वारा प्रहलाद को ऐसा ज्ञान प्राप्त हुआ कि प्रहलाद ने श्रीयादे को प्रणाम

कर परिक्रमा देकर पांव लगकर घर की तरफ जाने लगा, घर पर माता के पास आया, तब हिरणाकुश को पता चला कि प्रहलाद आ गया।

सुण राज राणी सब दौडे आई, दे सीख प्रहलाद कूं अे बैण भाई।
हे कंवर हे कंवर तज अेह बाणी ॥ १३० ॥

म:फ: है कि प्रहलाद को घर आये देखकर सभी राज राणी दौडकर आये और समझाने लगे, हे कंवर तूं राम नाम की बाणी बोलना छोड दे।

ले मांड सारी सो नाम लिजे, हे पुत्र प्रहलाद यो छोड दीजे।
तम बाप पिता को नाम होई, हे पुत्र प्रहलाद ले सब कोई ॥ १३१ ॥

म:फ: है कि इस तरह सबने प्रहलाद से कहा, हे पुत्र सारी प्रजा जो नाम ले रही है वो ही नाम तूं ही ले, क्यों कि यह नाम तेरे पिता का है और सारी प्रजा ही तेरे पिता का नाम ले रही है, तूं इस राम के नाम को छोड दे।

तुम राय के पुत्र हो ईधकारी, सो आज बिगडे सुण बात थारी।
हे पुत्र हे पुत्र तज राम दिजे, सुण तो ही पिता को नाम लिजे ॥ १३२ ॥

म:फ: है कि इस तरह सब प्रहलाद को समझा रहे है कि तुम राजा के अधिकारी पुत्र हो यदि राजा की बिगड रही है तो वो तुम्हारी भी बिगड रही है। हे पुत्र राम नाम को छोडकर तेरे पिता का नाम ले।

कह राव राणी सुन जगत सारो, सो नाम प्रहलाद क्यों नही धारो।
तुम कूं हम बिन क्यूं कर समझ आई, ओ नांव हम कब सुणियो न भाई ॥ १३३ ॥

म:फ: है कि सभी घर वालो ने प्रहलाद को विभिन्न प्रकार से समझाया कि जो नाम सारा जगत ले रहा है उसी को धारण करो, हमें भी इस ज्ञान की समझ नहीं है तो तेरे पास कहां से आया जो तूं ले रहा है। यह तो हमने कभी सुना ही नहीं।

<u>प्रहलाद वाच :</u> ओ नांव बोले तुम कहा जाणो, ओ नांव करतार मो मन मानो।
आकाश पाताल हर नांव टेके, माह न बारे भरपूर देखे ॥ १३४ ॥

म:फ: है कि तब प्रहलाद ने कहा तुम सब इस नाम के विषय में क्या जानो, यह नाम करतार का है और मेरे मन भा गया है। इस नाम के सहारे आकाश पाताल टिके हुये है। अन्दर बाहर सब जगह भरपूर है अर्थात इस नाम से ही सारी सृष्टि परिपूर्ण है।

तुम निपट भोली घर जाय बेसो, हो जात बेगम क्या सीख देसो।
तब रोस करके सब ऊलट चाली, केहे मांय सेती दूदो तम पाली ॥ १३५ ॥

म:फ: है कि प्रहलाद ने कहा तुम बेगम जात कितनी भोली हो, तुम मुझे क्या शिक्षा दे रही हो, तुम इस नाम का महत्व क्या समझो। ऐसे वचन सुनकर सब रानियां उठकर चली और माता कयादू के पास जाकर कहने लगी कि हे रानी जी आप ही प्रहलाद को समझाओ।

<u>माता ऊवाच :</u> हे पुत्र प्रहलाद सुण बात म्हारी, आ परम भक्ति निभे नही थारी।
सुण आज तोय बाप जोरेस होई, नहीं कर सके या भक्त कोई ॥ १३६ ॥

म:फ: है कि हे प्रहलाद तूं मेरी बात मान ले, यह परमात्मा की भक्ति तेरे से निभ नही सकती। क्यों कि आज के समय तेरे पिता का राज व शक्ति है, इसलिये रामजी की भक्ति कोई नही कर

सकता।

लो गोप हिरदे हर नांव धारी, हे पुत्र प्रहलाद सुण सीख म्हारी।
जे लाडू पायो तो गोप खईये, हे पुत्र प्रगट काहे कूं कहिये ॥ १३७॥

म:फ: है कि तब माता कहने लगी हे पुत्र इस नाम को हृदय में गुप्त धारण करो, यदि तुमे राम का नाम रूपी लड्डू मिल गया है तो छिपकर इसको खा ले,यह मेरी सीख मान कर प्रकट मत कर।

मन मांहे समझे सो पूत सेणा, करे जोड़ बारे सो नीच कहाणा।
बुद्ध हीण की सुण यह बात होई, के बक बारे दे भरम खोई ॥ १३८ ॥

म:फ: है कि माता पुत्र को समझा रही है कि हे पुत्र समझवान पुत्र तो इशारे से ही समझ जाता है। वाद विवाद नही करता, यदि करता है तो वो नीच है, बुद्धिहीन है, जो बाहर जाकर बकवाद करता है वो अपने मर्म को खो देता है।

बकवाद बेधो सुण काय किजे, सो हे पुत्र अंवरा किम दुख दिजे।
ओई नाम मेरे हिरदेस होई, सुण पुत्र मो जाल जाणे न कोई ॥ १३९ ॥

म:फ: है कि माता समझा रही है कि हे पुत्र व्यर्थ की बकवाद छोड। व्यर्थ में ही दूसरो को क्यों दुख दे रहा है। जिस नाम को तू ले रहा है वो नाम तो मैंने भी हृदय में धारण कर रखा है, परन्तु इस बात की संसार को जानकारी नही है।

प्रहलाद वाच :- हो मांय ओ बैण मो मन भायो, तम पास कयांसु किण रीत आयो।
कोहो रीत गुरुदेव सुण कौन होई, हो मांय धिन भाग कोहो भेव मोही ॥ १४० ॥

म:फ: है कि जब प्रहलाद ने माता से ये वचन सुने तो कहने लगा, हे माता आपके ये वचन मुझे बहुत अच्छे लगे। क्योंकि आपके पास भी करतार का नाम है, आपके पास किस रीति से आया, वह रीति मुझे बताओ और गुरुदेव कौन है, इसलिये हे माता आप धन्य हो और उस भेद को भी धन्य है और मेरे भाग्य भी धन्य है, जो आपके मुंह से सुन रहा हूं।

माता ऊवाच :- हे सूत सब तोई कहूं बोहोत गाथा, काहा लग कहिये सुण सेंग बाता।
इन्द्र देव मोकूं हर लेर गया था, तूं गर्भ था सुत सुण यह गाथा ॥ १४१ ॥

म:फ: है कि तब माता ने कहा हे पुत्र यह बात सत्य है। इसकी गाथा बहुत लम्बी है, कहां तक वर्णन करूं। इन्द्र देव ने मेरा हरण किया, तब तूं मेरे गर्भ में था, उस समय की बात है।

नारद मुनि वां ज्ञान दियो, सो सुण हिरदे मैं धार लियो।
नारद मुनि गुरुदेव कुवाया, ओ नांव मो पास ईण रीत आया ॥ १४२ ॥

म:फ: है कि माता ने प्रहलाद से कहा हे पुत्र इन्द्रलोक में नारदमुनि ने मेरे को ज्ञान दिया, वही ज्ञान मैंने हृदय में धारण कर लिया, अत: नारद मुनि मेरे गुरु है, इस रीति से यह राम का नाम मेरे पास आया।

प्रहलाद वाच :-धिन मांय धिन भाग धिन आप होई, हो मांय ओ नांव करतार सोई।
ओ नांव ज्यां पास सो काय बिये, हो मांय धिरकार पत छोड जिये ॥ १४३ ॥

म:फ: है कि जब प्रहलाद ने माता से कहा हे माता आपको व आपके भाग्य को धन्य हो, ये नाम परमात्मा का है। जिसके पास यह नाम है वो भला किससे डरेगा। जो डर से राम नाम रूपी रास्ते को छोडकर जीता है, उसको धिक्कार है।

कहा अब तुमको कहियेस आई, हो मांय धिरकार पत छाड कवाही।
सुण जात नारी भावेस होई, पत छाड खांवद केह नाही लोई ॥ १४४॥

म:फ: है कि तब प्रहलाद ने माता से कहा आपको धिक्कार है, जो आप इस राम नाम रूपी रास्ते को छोडकर चल रही हो। जो स्त्री अपने पति का संग छोडकर रहती है, वह पतिव्रता नही कहला सकती।

सुण गोप बिणजे सो चोर होई, हो मांय साहा जुग लुकियो न कोई।
जो माय बरज्या रे बेस कोई, तो सुण कारज पके न कोई ॥ १४५॥

म:फ: है कि प्रहलाद ने तब माता से कहा हे माता जो राम के नाम को छिपकर बिणज करता है वह चोर है। हे माता साहूकार युग में लुक छिपकर नही रह सकते। यदि मना करने पर राम को छिपकर लेते है और हर समय भयभीत रहते है तो उनका कोई कार्य सिद्ध नही होगा।

माता ऊवाच :- हे पुत्र प्रहलाद सोई बाव बाजे, तिण बेर तेसी सुण शरण छाजे।
ज्यां बैर जांकी सो ओट गहिये, सुण रेण मधे रवि काय कहिये ॥ १४६॥

म:फ: है कि माता कयादु कहने लगी हे पुत्र प्रहलाद जैसी हवा चलती है उसी रूख से चलना चाहिये। जैसा वारा याने जैसा जिसका समय चलता है उसी के अनुसार चलना चाहिये। जैसे रात्रि के बीच में सूर्य का क्या काम है।

प्रहलाद ऊवाच :- हो मांय दिन सूर शरणो केहो रात चंदो, धरणीस केता दिन रात बंधो।
सिंह घास खाता सुण्यो न कोई, दस पांच लंघन भावेस होई ॥ १४७॥

म:फ: है कि प्रहलादजी माता से कह रहे है कि तूं कहती है कि हे माता आपके कहेनुसार कि दिन में सूर्य की शरण व रात्रि में चन्द्रमा की शरण और धरती दिन रात के बीच में बंधी हुई मगर सिंह को घास खाते कभी नही सुना, चाहे दस पांच दिन भूखा ही क्यों न रहे।

खज छाड दुजो खायो न जावे, पत छाड़ बोले वां झूंठ कवावे।
कुल सेंग लाजे सुण गोत सारो, हर बिन हो मांय यूं जन्म हारो ॥ १४८॥

म:फ: है कि प्रहलाद ने माता से कहा है कि हे माता शूरवीर समय की ओट नही लेता वह तो वीरता से चलता है। जैसे सिंह खज याने मांस के अलावा कुछ नही खाता, इसी तरह हे माता जो अपने मार्ग से भटक जाता है वह झूंठा है। शूरवीर स्वयं ही अपना रास्ता बनाता है। इस तरह परमात्मा की भक्ति नही करने से कुल याने माया ब्रह्म लज्जित होता है। इस तरह नर देही हार जाता है।

गेह राव शरणो सुण ओरे कोई, हो मांय तांकू पटा न होई।
जो जीव जावे तो जाण दिजे, हो मांय दूजो शरणो न लिजे ॥ १४९॥

म:फ: है कि प्रहलाद अपनी माता से कह रहा है कि जो परमात्मा की शरण छोड देता है। उसको पट्टा नही मिल सकता। यदि परमात्मा के नाम के लिये कोई भी प्राण भी हरण करे तो करने दो। उसे तो राम के नाम का पूर्ण विश्वास है। हे माता आपके पास राम की शरण होते हुये भी आप अपने पति हिरणाकुश से भयभीत हो रही हो। इसलिये आपको राम का पट्टा नही मिलेगा।

धिरण धिरग तांही हर जाण छाडे, हो मांय खूनी कह मुख काढे।
सुण काम भेला दोऊ एक जाणे, हो मांय ताकूं कोहो कोण माने ॥ १५० ॥

म:फ: है कि तब प्रहलाद ने माता कयादू से कहा कि जो रामजी की भक्ति व जाप छोड देते है उनको धिक्कार है, वह परमात्मा का खूनी है। हे माता काम तो दो याने ब्रह्म की भक्ति भी करती हो और समय की ओट भी लेती हो, फिर इन दो को एक कैसे समझ रही हो। इस भाव को कौन समझेगा।

मैं राम छाडू तो राम दुहाई, गुरुदेव लाजे हर बिडद मांही।
तम मोय अे जाब कबहुं नांही केणा, हो मांय हरकूं ऊं जाब देणा ॥ १५१ ॥

म:फ: है कि प्रहलाद माता से कह रहे है कि यदि मैं परमात्मा की भक्ति छोड दूं तो मेरे को राम दुवाई है। भक्ति को छोडने से गुरुदेव व परमात्मा का बिडद लाजता है। इसलिये हे माता ऐसे वचन मुझे कभी नही कहना, क्योंकि परमात्मा को जवाब देना है।

॥ इति श्री भक्त माल सम्पूर्ण ॥

****

卐 हरजस पद 卐

प्रारम्भ

****

卐 श्री श्री अनन्त श्री सुख सम्राट सतगुरु सुखरामजी महाराज के हरजस 卐

卐 कर्म डोर 卐

मारी करम डोर काठी बंधी, जनम जनम की फांस।
मारा सतगुरु राम छुडावसी, मारे मन में मोटी आस ।। टेर ।।
जलम जलम को जुरणो, निस दिन झूरता जाय।
कांई जाणू इन जीव की, कब हरी मिलसी आय ।। १ ।।
जे अब सायब मिले, तो सब दुख कहस्यूं रोय।
तुम हो त्रिभुवन नाथ जी, मारा जीव को सगोहन कोय ।। २ ।।
गुरां परणाई अमर ने, गुणवंता गम्भीर।
परणी सो पावन भई, वे सुख सागर की तीर।। ३ ।।
रामनाम कामण किया, हित प्रीत चित लाय।
दूजी दिस्ट देखूं नहीं, माने लिज्यो चरण लगाय ।। ४ ।।
परथ न छाडूं पीव कूं, जब लग पिंजर श्वांस।
मुवा ही मन रेवसी, चित हरि चरणा पास ।। ५ ।।
हरि सेजा ही सुख घणो, जाणत है जन कोय।
अनन्ताई सुख उपजे, कहण न आवे मोय।। ६ ।।
थे थारो पिव बस कियो, भावे जाण अजाण।
मो घट तो आवटणो घणो, किण सूं करूं पिछाण।। ७ ।।
वह बलवन्ता बोहत है, आनन्द लोक आधार।
पार ऊतारे पलक में, आशा अगम अपार ।। ८ ।।
निरणो कीनो नाम को, ब्रह्मा विष्णु महेश।
सिंवर सिंवर मुनी जन थक्या, पार न पायो शेष ।। ९ ।।
हम धस्या दरियाव में, म्हारा सतगुरु सिमरथ साथ।
सोध लिया सुखरामजी, म्हारे हीरा लाग्या हाथ ।। १० ।।

म: फ: है कि आत्मा परमात्मा से अरज करती है कि कई जन्मों से क्रियमान, संचित, प्रालब्ध के करमो की डोर मेरे ऊपर जबरदस्त है। ये गले में फांसी है, हे परमात्मा संतो के केवल्य ज्ञान के द्वारा सांस उसांस में रामजी का भजन करने से ही छूटेगी। ये पक्का विश्वास है। जन्म जन्म में आपके लिये झूर रही थी कि हंस जीव को हरि कब मिलेंगे, अगर रामजी इसी नर शरीर में मिल गये तो सब दुख कहस्यूं रोय याने आत्मा के ऊपर जितने आवरण याने करम बन्धन है सो सब खत्म हो जायेंगे। हे त्रिभुवन परमात्मा इस जीव का कोई भी सगा नहीं है, अणभै ज्ञान गुरुदेव के द्वारा ही आत्मा को ने: अंच्छर सतशब्द की कंठ कंवल में जानकारी हुई तब अमर सतशब्द रूपी परमात्मा से आत्मा परण कर सुन्न सागर की तीर याने के: पद आ: पद में मिली। सतशब्द रूपी पति गुणवंता व गम्भीर है, प्रेम प्रीत

पीड के साथ राम नाम कामण किया याने राम नाम निज नाम की सुरगुण निरगुण दोनों भक्ति साथ करी। सूरत रूपी नैत्रों से शब्द ब्रह्म के ही दर्शन करूं। माया के दर्शणों की इच्छा नहीं है आप मेरे को चरणों में लगावो याने खूब भक्ति करावो, जब लग घट में श्वांसा चल रहे, तब तक भक्ति नहीं छोडूंगी। आपकी भक्ति के प्राक्रम से मन तो मरा हुआ ही रहेगा सब ही हरिजन भक्ति करने वाले जानते है कि रामजी की भक्ति में आनन्द अपार है। कहणे से विश्वास नहीं आता है। भक्ति धारण करने से ही अपार आनन्द सुख आता है। जिस आत्मा ने जाण या अजाण में पीव रूपी परमात्मा को वश में किया याने भक्ति करके मिल गई। मेरे घट में तो यह आंटे चल रहे है कि कौन सी भक्ति धारण करूं। म: फ: है कि सतशब्द रूपी परमात्मा बहुत ताकतवर है। वही आत्मा को आनन्द लोक ले जाने वाला है। जो विश्वास और प्रेम से भक्ति करते है उनको पलक में ही भवसागर से पार उतार देते है। इस बात का निरणा ब्रह्मा विष्णु महादेव ने किया है। इस विधि के अलावा कितने ही ऋषि मुनि व शेष जी राम राम करते हुये भी उस देश में नहीं पहुंचे। परब्रह्म परमात्मा की कृपा से सब शास्त्रों का अध्ययन करके अणभै वाणी में सतगुरु विधि व ने: अंच्छर जागृति का भेद भर दिया। यही हीरा हाथ लगना है।

卐 हरजस पद राग गोडी (१) 卐

मन रे ओ तन ऐसा लोई, जो कोई समझ शिवरे है साहिब। आपी करता होई ॥ टेर॥
या तन सूं उज्जवल घर जावे, इण सूं राजा होई।
यासूं रूप करूप बंधाना, सुखदुख पावे लोई ॥ १ ॥
इण सूं दीन दुनि शिर होई, यासूं सुरगां जावे।
इण सूं पीर पेगम्बर कहाणा, फिर अवतार कहावे॥ २ ॥
मिनखा देह अमोलक हीरो, ऐसो अवरन कोई।
इन सूं शेष महेश्वर देवा, यां सूं भवगत होई ॥ ३ ॥
इणमें उलट आद घर पोहंचे, यामे केवल होई।
इण सूं देव सकल तन सारा, इण सम अबरन कोई ॥ ४ ॥
ओ सुण जनम इस्यो है भाई, तिण में फेर न सारा।
कह सुखराम समझ मन मेरा, शिवरो शिरजण हारा ॥ ५ ॥

हे मन यह मनुष्य शरीर ऐसा है इसमें यह गुण है कि जो सतगुरु से भेद लेकर भक्ति करे तो आत्मा को परमात्मा पद की प्राप्ति हो जाती है। मनुष्य शरीर में जैसी कमाई करता है वैसा ही फल मिलता है। इसी से आगे उच्चकुल में जन्मता है, राजा होता है, इसी से रूपवान या कुरूप बनता है। संसार में सुखदुख भोगता है, इससे बादशाह पद की तथा स्वर्ग के उच्च पदो की प्राप्ति होती है। मनुष्य शरीर से ही पीर पैगम्बर व अवतार होते है, जिस प्रकार हीरे की कीमत अमूल्य होती है ऐसे ही मनुष्य शरीर के बराबर कोई शरीर नही है, इस शरीर से साधन कर शेष महादेव व परमात्मा पद की प्राप्ति हो सकती है। इसमें ही सतगुरू से भेद लेकर बंकनाल में उलट कर केवल पद की व पारब्रह्म की प्राप्ति होती है। सभी देवताओं के पद भी इससे ही प्राप्त कर सकते है। इसके बराबर और कोई शरीर नही है। यह मनुष्य शरीर ऐसा गुण वाला प्राक्रमी है इस बात में कोई झूंठ सांच नही है याने यह सत है। महाराज फरमाते है कि हे मेरे मन तू समझकर याने सतगुरू से भेद लेकर याने सतकेवल ग्यान की विधि धारण करके शिरजण हार परमात्मा का भजन कर।

卐 हरजस पद राग गोडी (२) 卐

माधोजी भक्त कोण विध धारूं। ओ जुग सेंग फिरे मन आडो, किण किण कूं मैं मारूं ॥ टेर॥
काम क्रोध लोभ मन लालच, पल पल आण सतावे।
जे मैं भजन भगवत को थापूं, तो दूणा होय होय आवे ॥ १ ॥
घर घर गांव हताया मांही, निंदा करे सब लोई।
आ सुण ताप करारी कहिये, धारी धरे न कोई ॥ २ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर देवा, अे सब पाले आई।
केवल भक्त बोहत है दोरी, सो कुण निभे मन भाई ।। ३ ।।
बेरी घणा सैण नहीं कोई, बरजत है कुल सारो।
कह सुखराम गुरां बिन जग में, सब सुं दुश्मन चारो ।। ४ ।।

परमात्मा से आत्मा प्रार्थना कर रही है कि हे प्रभु मैं भक्ति कैसे धारण करूं। यह सारा संसार व मन आडे आ रहे है, किस किस को बस में करूं। काम, क्रोध, लोभ व मन में कई तरह के लालच पल पल में आकर मुझे सताते है। यदि मैं भगवान का भजन करने बैठता हूं तो यह दुगुने होकर आते है। घर घर में गांव की हतायो पर सब निंदा करते है सो यह दुख करारा है, जो सहन नहीं होता। इस शरीर में तीनों देवो के रजोगुण, सतोगुण, तमोगुण हमको सताते है। यही पाले आना है। आत्मा को भक्ति करने से आड देने वाले बेरी मन, इन्द्रियां व शरीर है और आत्मा का सेण सतगुरु याने सत केवल ग्यान है, ये आने पर मन, इन्द्रियां, शरीर रूपी रूप से प्रेम नहीं रहता है। म: फ: है कि सतगुरु के सिवाय केवल की भक्ति को रोकने वाले यह संसार व कुल है, सतगुरु सेण है, भक्ति करने को रोकने वाले दुश्मन है।

卐 हरजस पद राग गोडी (३) 卐

भगत तुमारी बखाणी माधोजी। भगत तुमारी बखाणी, तासूं कट जाय जूण पुराणी ।। टेर।।
आन धरम पूजा विध सारी, तीन लोक की जोई।
मंत्रा दिक फल की सब बांता, परम मुगत नहीं होई।। १ ।।
ब्रह्मा, विष्णु, महेसर देवा, सुरगुण भक्त कहावे।
इनकी दोड़ मुगत लग सोई, सतलोक नहीं पावे।। २ ।।
कूंडा पंथ सरब भी सुणिया, षट दरशण धर्म सारा।
सब ही सेंग ऊपाया जुग में, माया मिलण पसारा।। ३ ।।
तेरी भगत बिना सब भगती, भांत भांत मैं जोई।
आवगमण मिटे नहीं कबहूं, सब माया की होई ।। ४ ।।
वेद कुराण पुराणस गीता, साख भरे सब वाणी।
कह सुखराम भगत सत केवल, दूजी छाछर पाणी ।। ५ ।।

हे परमात्मा आपकी भक्ति का कहां तक बखाण करूं, आपकी भक्ति करने से जन्म मरण से छुटकारा हो जाता है। आन धरम यानि शरीर धारी की सेवा पूजा का फल तीन लोको में ही मिलता है। मंत्रो का जप करने से फलो की प्राप्ति होती है। परम मोक्ष नहीं मिलता। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव

की सुरगुण भक्ति कहाती है, इसे करने पर बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है। सतलोक की प्राप्ति नही होती। कूंडा पंथी व खट दरशनियों इन सबके धर्मो को सुना, इनसे माया के फलो की प्राप्ति होती है। आत्मा पारब्रह्म परमात्मा से प्रार्थना करती है कि आपके निज नांव की भक्ति के बिना दूसरी सब भगतियो को देखा, उनसे जन्म मरण नहीं मिटता, माया के फलों की प्राप्ति होती है। वेद कुराण व गीता सब संतो की वाणियां साक्षी दे रही है। म:फ: है कि केवल की भक्ति से सतलोक के: पद आ: पद की प्राप्ति होती है व दूसरी भक्तियों से माया के फलों की प्राप्ति होती है, इसलिये इसे छाछ पानी कहा है।

卐 हरजस पद राग गोडी (४) 卐

संता ऐसा महल बणाया। वा सिमरथ कूं निमख न भूलो, अे निश शिवरो भाया ।। टेर।।
दो बड खंभ लगाया भारी, दो ही अधर बणाया।
तां पर कलश चढायो इण्डो, सरब धात सूं छाया।। १।।
राख्या ताक सपत इण्डे पे, दोय मेहल पे बारी।
बारे गोख बहोतर कुटियां, जोर बणी से नारी ।। २।।
ऐसा महल रेहेण कूं दिया, फेर रिजक पूंचावे।
कह सुखराम ईस्या हर दाता, ताकूं क्यूं नहीं गावे।। ३।।

संतो से म: फ: है कि परमात्मा ने ऐसा शरीर बनाया, उसको रात दिन याद करो, एक क्षण भी मत भूलो। दो पैर बडे खंभे, दो हाथ यह अधर बनाये है। सात धात के शरीर पर शिर रूपी कलश चढाया है। इस कलश पर सात ईन्द्रिया, दो नेत्र, दो कान, दो नाक के सुर, एक मुंह है। दो महल खण्ड व ब्रह्मण्ड पर दशवे द्वार की बारी । इसमे बारह कंवल व रस पहुंचाने के लिये बहोतर नाडिया है। ऐसा शरीर रहने को दिया, फिर समय पर भोजन पहुंचाता है। म:फ: है कि ईश्वर ऐसा दयालु है जिनका तू शिवरण क्यों नही करता है।

卐 हरजस पद राग गोडी (५) 卐

प्रभुजी मेरे मन कूं हिम्मत दीजे। जुग मरजाद तोड सब सामी, शरण आपकी लीजे ।। टेर।।
भजन करूं भगती में पेसुं, होय मतवालो डोलूं।
जे हर आप करोला किरपा, तो अणभै बायक बोलूं ।। १।।
ओ व्हे जाय कबुयक काचो, जब मुझ सजे न कांई।
करम कीट अर भरम अंधेरो, मोहि पलोटे आई ।। २।।
दुख सुख मांय रखो मन एकी, दूजो होण न पावे ।
ज्यूं यो भगत करेगा तेरी, आठ पोहोर गुण गावे ।। ३।।
कह सुखराम अरज हर सुणयो, भगत बिडद है तेरा।
मैं जूं शरण बोहोत सुख पाऊं, प्रभु बलवन्त कर मन मेरा ।। ४।।

इस मन का मोह संसार के कार्यो में है इससे हटाकर हे परमात्मा आपकी भक्ति में लगावो और यह मन आपसे प्रेम करे यही आपकी शरण में आना है। सतग्यान का भेद लेकर रात दिन भक्ति करने में लगना ही मतवाला डोलना है। आप कृपा करो तो के:पद आनन्द पद की प्राप्ति करके

अणभै वाणी बना कर संसार को बता सकूं। मन भक्ति में नही लगता तो भक्ति नही हो सकती, करम व भरम रूपी अन्धकार मुझे घेर लेते है। सुख में व दुख में भी भक्ति में लगा रहना ही एक मन होना है। मन रात दिन चोबीस घंटा भक्ति में ही लगा रह, यही आपका गुण गाना है। म:फ: है कि आत्मा परमात्मा से प्रार्थना करती है कि आप मेरी प्रार्थना सुणो। भक्तो की रक्षा करना आपका बिडद है। आप मेरे मन को ऐसी शक्ति दो कि यह निरन्तर आपकी भक्ति में लगा रहे, निरन्तर लगने से ही सुखो की प्राप्ति होती है।

卐 हरजस पद राग गोडी (६) 卐

केवल ध्यान धरे रे कोई जन, केवल ध्यान धरे रे ।। टेर।।
एक मुक्त की कहां चली रे, सब सिध काज सरे रे ।। १ ।।
सुरग पाताल भूलोकज जीतो, जन्मे ने फेर मरे रे ।। २ ।।
जीवत मुगत में जाय विराजे, निरभै होय विचरे रे ।। ३ ।।
जे जन केवल ध्यान धरे रे, ब्रह्मादिक सनकादिक शिवजी, महिमा ईधक करे रे ।। ४ ।।
कह सुखराम नाम गुण ऐसो, आप सरीसो करे रे, जे जन केवल ध्यान धरे रे ।। ५ ।।

म:फ: है कि जन याने भक्त केवल का ध्यान करता है उसको एक बैकुण्ठ की क्या मोक्ष परम मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। यही सब सिध कारज करना है। शरीर में खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड को पार करना ही तीन लोक को जीतना है व पुन: जन्म मरण में नही आता है। जीते जी के: पद आ: पद का अनुभव होना ही जीवन मुक्त होना है। केवल की भक्ति व ध्यान करते है उनकी ब्रह्माजी शिवजी, सनकादिक ऋषि सब महिमा करते है। म:फ: है कि केवल नांव का गुण ऐसा है। परमात्मा पद की प्राप्ति करना ही आप सरिसा करना है।

卐 हरजस पद राग कल्याण (१) 卐

साधो भाई करडू परत न सीजे। बालो आग पांच दस दिन रे, सपने इ सल नही भिजे ।। टेर।।
बरसे मेह जमी गल जावे, पत्थर नरम न होई।
यूं करमी के ज्ञान न लागे, सबद भिदे नही कोई ।। १ ।।
नागर बेल बांझ सो नारी, फूला कदे न आवे।
यूं मूरख न कहो बहो तेरो, भक्ति नांय संभावे ।। २ ।।
तस्कर चोर लबाड़ पुरूष के, सांच बात विष लागे।
कह सुखराम यूं करमी नर रे, सत शब्द सुण भागे ।। ३ ।।

साधको को समझा रहे है कि करडू नामक धान को पांच दस दिन आंच लगाकर पानी में सिजावो तो भी एक परत भर सल नही भिजता है। रति भर भी नरम नही पडता है। बरसात होने पर जमीन गल जाती है, परन्तु पत्थरों पर कितनी ही वर्षा हो पत्थर नरम नही होते। ऐसे ही जो करमी मनुष्य है उन्हें कितना ही ज्ञान दो, वो ज्ञान धारण नही करते। नागर बेल को फल नही लगते बांझ स्त्री के संतान नही होती, ऐसे ही मूर्ख मनुष्य को कितना ही समझावो, वो भक्ति धारण नही करता है। तस्कर चोर व लबाली पुरूष को सांच बात अच्छी नही लगती। म:फ: है कि कर्मो में रत रहने वाले व्यक्ति, केवल ज्ञान को सुणकर मुरझाते है। यही सुण भागना है।

卐 हरजस पद राग कल्याण (२) 卐

साधो भाई समझ सोच रहो गाढा। भेदी बिना बात मती मानो, सब ही फिरत है आडा ।। टेर।।
आपो खोज आप नही चिन्या, तब लग माया पूजे।
बंकनाल होय ऊलट न चढिया, जब लग नांव न सूजे ।। १।।
भरमावण कूं से कुल जग है, समझावे जन बिरला।
सुक्ष्म वेद के भेद बिना रे, सब माया का किरला ।। २।।
बावन हरफ वेद का कहिये, ओऊं अजपो ऊला।
अवगत अलख निरंजण गावे, भेद बिना सब भूला ।। ३।।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, शक्ति, ये है, चारूं ने धारा।
अड़वा फाड़ निसरे बारे, सो जन उतरे है पारा ।। ४।।
भणिया खरा गुणया नही कोई, जब लग काम न आवे।
कह सुखराम भेद बिन भजिया, परम मोख नही पावे।। ५।।

साधना करने वाले भाईयो से फरमा रहे है कि समझो व सोच कर मजबूत रहो, जो भजन का भेद व परमात्मा की प्राप्ति का भेद जानने वाले है उनके सिवाय दूसरो की बात मत मानो। ये सब के:पद आ:पद की प्राप्ति नही करने देते। आत्मा ब्रह्म है, उसको जीव समझ कर जो माया का स्वरूप जो ऊपजता खपता है उसको ब्रहम समझकर फल की इच्छा से भक्ति करते है, बंकनाल के रास्ते से उलटकर ऊपर नही चढते तब तक सत नांव की प्राप्ति नही होती, समझाने वाले कोई बिरला हरिजन है। पारब्रह्म परमात्मा के व उसके निज नांव के बिना जितने भी दूसरे साधन है वो सब माया के फलों की प्राप्ति कराने वाले है। बहकाने के लिये सारा कुल व संसार है। स्वांसा के आधार पर जितने भी साधन है जो लिखने में आते व वाणी पर आते है वो सब बावन अक्षरो का ज्ञान है। ओऊं का अजपा भी स्वांसा के आधार पर रहता है। इन सबको वेदों का ज्ञान कहा है। अवगत, अलख, निरंजन अर्थात मुखार बिन्द से राम राम रट रहे हैं तो भी उनके सत नही आता। अत: वे भूले हुये हैं। जगत में ब्रह्मा, विष्णु, महादेव व शक्ति की भक्ति भी लोग कर रहे हैं। और इन्हीं चारो देवताओ का दिया हुआ यह मानव शरीर है। अर्थात हमने इनको धारण कर रखा है। अब हमारे इस शरीर में जितने भी विकार, कामनायें, तृष्णा, लोभ, लालच, ढिंग, पाखण्ड रूपी अडवे है। इनको जो दूर करेगा वो जन पार उतरेगा। शास्त्रों का पठन करते है लेकिन उनका मर्म नहीं जानते है तब तक पढना काम नहीं आता है। म:फ: है कि संतो की विधि से भजन किये बिना परम मोक्ष नहीं होता।

卐 हरजस पद राग कल्याण (३) 卐

मन रे सिमर सिमर हल सांई। राम भजन बिन सांसा जावे सो सब रेत मिलाई ।। टेर।।
राम भजन की ढील करे रे, करमा की ताकीदी।
सतसंगत तज जाय हतायां, फिट लाणत तोय गीदी ।। १।।
जुग सुं हेत साध सूं फिको, हर तज आन मनावे।
सत बात की अवज्ञा करके, विषे बात मन भावे ।। २।।

सोय रहे के जोड़ चलावे, काय मून गहे मन मांही।
कह सुखराम धरग मन तोने, राम रटे क्यों नांही ।। ३।।

हे मन रामजी का भजन कर फिर खुश हो। रामजी के भजन के बिना जो श्वांस जाते हैं उनको रेत में मिलना कहा है। हे मन राम भजन करने में ढील करता व कर्म बन्धन के साधन ताकिदी से करता है। सतसंग को छोडकर हथांया पर जाकर व्यर्थ की बात करता है। इसलिये तेरे मनुष्य पणे को धिक्कार है। संसार से संसारी वृतियों से हेत एवं संत वृति से दूर रहता है। परमात्मा की भक्ति छोडकर जो चर्म चक्षुओ से दिखता है उस आन के रूप की भक्ति करता है, जो ऊपजते खपते है। जो सत बात है उसको न मान विषयो की झूंठी बात है, मन को अच्छी लगती है। या तो सो जाता है, या तो पराई निंदा करता है, या मौन धारण कर लेता है। म:फ: है कि हे मन तुझे धिक्कार है, रामजी का भजन क्यों नहीं करता है।

卐 हरजस पद राग कल्याण (४) 卐

साधो भाई तन धर त्यागी नांही। जे त्यागी तो सतशब्द है, और सबे गृहे मांही ।। टेर।।
तन सो धन मन सो माया, फिर सक्त सुं चाले।
मनसोबा मन निश दिन बांधे, एक गेह दूजी पाले ।। १।।
खुध्या आंण शकल कूं घेरे, तिरषा निन्द्रा आवे।
तामस कले ज्ञान सो राजस, सुपने में जीव जावे।। २।।
सब आकार नेण सो देखे, कान नाद जहां जावे ।
बास घ्रांण गहे सब सारी, सूरत सृष्टि फिर आवे ।। ३।।
मुख में जीभ रात दिन बोले, नाभ कंवल को वासी।
कह सुखराम लोक तीनूं लग, सबके गल जम फांसी ।। ४।।

साधना करने वालो को फ: है कि शरीर धारी कोई त्यागी नही है। अगर त्यागी है तो एक सतशब्द है, जो शरीर से बाहर है, बाकी सब गृहस्थी है याने शरीर के अन्दर है। तन से धन , मन सो माया फिर इच्छा शक्ति से चलता है। मन अनेक तरह के संकल्प विकल्प करता, यही मन शोभा बांधना है। एक बात को धारता व दूसरी बात को छोडता है। शरीर धारी को भूख प्यास लगती, निद्रा आती है, तामसी, राजसी वृति के ज्ञान व सपने में जीव सुख दुख भोगता है। शरीर धारी नेत्रो से सब आकार देखता व कानो से शब्द सुनता, नाक से गन्ध लेता है और सूरत से सारी सृष्टि का चक्कर लगा लेता है। मुख में जीभ रात दिन बोलती, नाभ कंवल याने स्वांसा के आधार से जब तक तीन लोक में है, तब तक जमराज के बन्धन याने जन्मने मरने में आना पडता है।

卐 हरजस पद राग कल्याण (५) 卐

साधो हमने सतगुरू मोरथ दिया।
अष्ट सिद्ध नव निद्ध मुक्त मिली रे, सब सिद्ध कारज किया ।। टेर।।
दिशा शूल सांसो सब टाल्यो, जिकर जोगणी लारा।
सनमुख चंद सुधा रस पियो, इस विध कारज सारा ।। १।।

कंटक जोग जुध सब ही टाल्यो, लिव धम पुला बोहो सधाई।
अडद ऊडद को दियो दुगडियो, पिछम गेल हम पाई ।। २।।
सिद्ध जोग भेद पकडायो, सांसा काल हम पाल्या।
दिन काल कलेश सब मेटर, पिछम दिशा ने चाल्या ।। ३।।
ईमरत जोग द्वादस आगल, ज्यां हम सूरत लगाई।
कह सुखराम ऊलट चढ गढ में, पीव परसीया मांई ।। ४।।

साधको को कह रहे है कि मोरथ में जाने वाले को आठ सिद्धी व नो निधि की प्राप्ति होती है। उसी प्रकार सतगुरू से भेद लेकर भजन करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। यही सब सिद्ध कारज किया है। सब सोच फिकर छोडना ही दिशासूल को टालना है। जिकर याने व्यर्थ के राग द्वेष छोडना ही जोगणी को लारा रखना है। सतगुरू विधि से भजन कर आनन्द लेना ही सन्मुख चन्द सुधारस पीना है। इस विधि से जन्मना मरना का रोग मिटना ही कारज सरना है। व्यर्थ की लडाई झगडो को छोडना ही कंटक जोग टालना है। लिव बंध भजन होना ही पुला साधना है। उठते बैठते स्वांस में भजना करना ही अडद उडद का दुगडिया है। बंकनाल के रास्ते से शब्द उलटना ही पिछम गेल हम पाई है। सतगुरू सुखराम जी महाराज की अणभै वाणी ने भजन का भेद बताया, यही सिद्ध जोग है। एक भी श्वांस भजन बिना खाली नही जाना ही सांस काल पालना है। थारी मारी से क्लेश होता उसे छोडना ही दिनकाल क्लेश मेटना है। शब्द का बंकनाल में उलटना ही पिछम दिशा में चलना है। त्रिकुटी तखत पर शब्द का अनुभव करना ही इमरत जोग द्वादस आगल है। म:फ: है कि बंकनाल में उलटकर के: पद आ: पद की प्राप्ति करना ही गढ पर चढकर पीव को परसना है।

卐 हरजस पद राग कल्याण (६) 卐

साधो भाई त्याग दिया हम सोई। मात पिता अरू नार सुत बन्धु, एक न राख्यो वो कोई ।। टेर।।
ममता माय बाप डिग पचरे, नार कल्पना त्यागी।
सुत सो सोच अहूं बल बंधु, छाड़ सूरत हर लागी ।। १।।
विभो बंछना सारी छाडी, कुल व्यौहार जकारा।
पईसा टका तज्या मैं तेरे, सत मता वो हमारा ।। २।।
सेज सोड आन सब छाडया, कपट बेल रथ सारा।
माया मंतर जंतर सो त्यागर, राख्यो है नांव बिचारा ।। ३।।
अणभी हुवा भरम सब जांणर, मूल शब्द लियो चिनी।
कह सुखराम भजन है सांचो, और भरमना होय कीनी ।। ४।।

साधना करने वालो से फ: है कि सबको त्याग दिया है। माता पिता स्त्री भाई बन्धुओ को त्याग दिया, एक को भी नही रखा है। ममता माता, डिग पिच पिता, कल्पना स्त्री, सोच पुत्र व अंहकार भाई बन्धुओं को छोडकर सूरत परमात्मा में लगा दी है। धन सम्पति की इच्छाओ को छोडना ही विभो बंछना सारी छाडी है। माया ब्रह्म के पद से अलग होने का ज्ञान करना ही कुल बोवार जकारा है। थारी मारी छोडना ही पैसा टका तजना है। सतशब्द का ज्ञान करना ही सत का मता है। आन

की उपासना छोडना ही सेज छोडना है। कपट छोडना ही बैल रथ छोडना है। जंतर मंतर से माया की प्राप्ति होती है। उन्हें छोड एक सतशब्द का ज्ञान करने का ही विचार रखा है। सब भरमो को त्याग परम पद की प्राप्ति हुई। फिर अणभै ग्यान का परवाना सिरजणहार ने दिया तब तीन लोक के सुखो को भरम जाना। म:फ: है कि भेद से भजन करना ही सच्चा है, बाकी सब भरमना है।

卐 हरजस पद राग कल्याण (७) 卐

साधो भाई मैं तो शीष ऊकरडी किया,
भावे नंदो बंदो कोई जुग में, सब तज निज पद लिया ।। टेर।।
भूंडो भलो केहे सो कहलो, मैं दोनुं विध छाडी।
शुभ सो अशुभ शकल तजि रीता, सूरत साहिब दिस गाडी ।। १।।
लाज शरम जुग मरजादा, अे मो मन नही भावे।
साहिब साध ज्ञान की लज्या, ऊलट बोहत घट आवे ।। २।।
तीन लोक की नंदत बंदत, एक न मानु कांई।
कह सुखराम सतगुरू म्हाने, ऐसी चीज बताई ।। ३।।

साधना करने वालो से म:फ: है कि मैंने मेरे शिर को रोडी बना दिया है। जगत में चाहे निंदा करो या स्तुति करो, इन सबको त्याग कर परम पद की प्राप्ति की है। कोई बुरा कहो या अच्छा, मैंने दोनों विधियों को छोड दिया है। शुभ अशुभ करम की करणियों को छोडकर परमात्मा का ही ध्यान किया। जगत की मर्यादा व व्यर्थ की लज्जा शरम मेरे मन को अच्छी नही लगती। परमात्मा प्राप्ति की, संतो की संगत की व ज्ञान धारण कर बुरे कर्म करने की लज्जा मेरे घट में बोहत आती है। तीन लोक की निंदा स्तुति का मुझे कोई दुख नही है। म:फ: है कि सतगुरू की कृपा से हमको ऐसा ज्ञान प्राप्त हुवा है।

卐 हरजस पद राग कल्याण (८) 卐

साधो भाई तीरथ तो सब किया, एक धाम ऐसो हम परस्यो, जल बिन जल वहां पिया ।। टेर।।
काशी कमल सबे हम देख्या, लोवा गर लछ सारा।
बद्री जाय बक्या हम अणभै, पंच तीरथ लिव धारा ।। १।।
अडद ऊडद द्वारका देखी, प्रयाग पिछम राह पाई।
जगन्नाथ सो हमने देख्यो, ऊलट गिगन में जाई ।। २।।
पोकर धाम अजपो परस्यो, ऊलट चढया गिरनारी।
तन केदार जोत हम परसी, अनहद बाजे बोह भारी ।। ३।।
गंगा जमुना और सरस्वती, त्रिगुटी जायर न्हाया।
कह सुखराम पृथ्वी प्रदिक्षणा, तन मेरो मन फिर आया ।। ४।।

साधको से फ: है कि मैंने सब तीरथों को किया है। तीरथों में जाकर स्नान करके जल पीकर शांति का अनुभव करते है। मैंने एक ऐसा धाम देखा जहां बिना जल पीये ही अखण्ड शांति प्राप्त की। यही जल बिन जल पीना है। काया रूपी काशी में द्वादश कमलों का अनुभव करना ही काशी कंवल को देखना है। अच्छे लक्षण धारण करना ही लोवागर की यात्रा है। अणभै ज्ञान प्राप्त करना

बद्रीनाथ की व लिव बंध भजन होना पंच तीरथ की यात्रा करना है। बंकनाल से ऊपर गिगन में शब्द ब्रह्म का अनुभव करना ही जगन्नाथ के दर्शन करना है। अजपा याने गुरु पद में बिना किये भजन होने लग गया, यही पुष्कर यात्रा करना है। बंकनाल से मेरूडण्ड पर आना ही गिरनार की यात्रा है। शरीर में सतशब्द की दिव्य ज्योति का प्रकाश होना ही केदारनाथ की जोत परसना है। त्रिकुटी में बिना किये शब्द की आवाज होना ही अनहद का बोह बाजना है। त्रिकुटी में अला पिंगला सुखमणा में ध्यान होना ही गंगा जमुना सरस्वती में नहाना है। निज मन याने आत्मचेतन से सब स्थानो का शरीर में अनुभव होना ही तन मेरो मन फिर आया है।

卐 हरजस पद राग कल्याण (९) 卐

साधो भाई तत्त कल लेहो बिचारी। मत ज्ञान सू जे नर ऊधरे, तो ऊधरे मांडज सारी ॥ टेर॥
मत तो सरब भरम का धोरा, तामें बीज न होई।
ज्यूं धूमर की घटा दिखावे, तामें छांट न कोई॥ १ ॥
जैसे नीर मृग जल दीसे, यूं तत्त बिना सब करणी।
धरम पाप की बांध गांठडिया, चौरासी लख फिरणी॥ २ ॥
मन बिन जीव जीव बिन काया, यूं तत्त बिना मत सारा।
कह सुखराम शकल पिछतासी, अंतकाल की बारा॥ ३ ॥

साधना करने वालो से म:फ: है कि ब्रह्म पद की प्राप्ति का ज्ञान का विचार करो, मत ज्ञान से उद्धार होता तो सारी सृष्टि का उद्धार हो जाता। मन का ज्ञान पानी के धोरे के समान है जैसे धोरे में बीज नहीं ऊगता, धूमर की घटा यानि धुएं की घटा दिखती लेकिन उसमें पानी की बूंद नही होती, गर्मी के समय मृग बालू रेत को पानी समझता पर पानी नहीं है। ऐसे ही ब्रह्म पद के ज्ञान बिना सब शुभ अशुभ करणियां मृग जल की तरह है। धरम और पाप की गांठ बांध कर चौरासी लाख योनियों में फिरना पडता है। बिना मन के जीव, जीव के बिना शरीर है। इसी प्रकार ब्रह्म पद की प्राप्ति के बिना सब करणियां है। म:फ: कि ब्रह्म पद की प्राप्ति के बिना अंतकाल में सबको पछताना पड़ेगा।

卐 हरजस पद राग कल्याण (१०)卐

साधो भाई राम भजन बिन झूंठा। करणी शकल नांव बिन ऐसी, ज्यूं कालर मेहे बूंठा॥ टेर॥
व्हे तो एक अनेका जागा, गुरु गम बिन नहीं पावे।
आपो भूल भरम से बंधिया, भटकत जन्म गमावे॥ १ ॥
किस्तूरी मिरग बन ढूंढे, पाटू कहे कित तागो।
लेहेरी पूछे नीर कहां है, बरछ कहे फल कहां लागो॥ २ ॥
जे कोई नांव नांव ही कहिये, लिव लागा सुं पावे।
तन के बाहर करता ढूंढे, सो सब भूला जावे॥ ३ ॥
काहा किणे मते मस्त मन कियो, काहा किण तन सुकायो।
कह सुखराम नाम बिन रटियां, किणी कछू नही पायो॥ ४ ॥

साधना करने वाले भाईयो से म:फ: है कि राम भजन किये बिना सब करणी कर्म इस तरह है जैसे उसर जमीन में चाहे जितनी बरसात बरसो, एक दाना भी नहीं उगता है। परमात्मा एक है वह सर्वत्र सर्व व्यापक है। गुरु ग्रंथ से ज्ञान मिले बिना उसकी प्राप्ति नहीं होती है। आत्मा ब्रह्म है लेकिन वो ब्रह्म पद के ज्ञान को भूलकर शुभ अशुभ करणियों के ज्ञान में लगना ही भरम में बंधना है। इसलिये चौरासी में भटकना पडता है। किस्तुरी मृग की नाभी में है, उसकी सुगन्ध से वह मस्त हो रहा है। उसको वह वन में ढूंढता है। पाट याने कपडा तागा से बना है, वो पूछता तागा कहां है। लहर पानी में ही होती है वो पूछती है पानी कहां है। फल वृक्ष में लगा हुवा है वो पूछता फल कहां है। जिसे नांव कहते है उस नांव की प्राप्ति लिव लगने से होती है। परमात्मा आत्मा में ही है। हम उसको बाहर ढूंढ रहे है। यही हमारी भूल है। कोई अपनी मरजी से मन में मस्त होकर बैठे है। कोई तपस्या कर शरीर सुखा रहे है। म:फ: है सतगुरु विधि से भजन किये बिना किसी ने कुछ नहीं पाया है।

卐 हरजस पद राग कल्याण (११) 卐

केवल राम रटो मन मेरा। ज्यूं तेरा पाप करम कट जावे, मिटे जन्म जुग फेरा॥ टेर॥
मन परतीत सांच बिन आया, कारज सरे नहीं कोई।
कोटि ऊपाय अनेक मनोरथ, कर देखो नर लोई॥ १॥
तीरथ कोटि धाम बिन लेखे, जिग निन्याणवे किया।
शिवरण सांच नांव बिन लहेसे, सुख रती नहीं लिया॥ २॥
जत, सत, त्याग, तप अर क्रिया, व्रत वास कर रोजा।
सांसा भजन सांच बिन आया, तन मन किणीयन खोजा॥ ३॥
बाणी वेद चार कंठ किया, अरथ करे बोहो भारी।
एकण नाम बिना पच थाका, गया जन्म सो हारी॥ ४॥
तीरथ धाम ज्ञान सब सारा, नांव सांच कूं किया।
कह सुखराम भटक पच समझो, भावे घर मांही जीया॥ ५ ॥

संतो की अणभै वाणी से भेद लेकर बाणी के आधार से सांस ऊसांस में भजन करके पारब्रहम परमात्मा के निज नाम जिसे शब्द ने:अँच्छर कहते है उसकी जागृति करके आत्मचेतन द्वारा अनुभव करके आत्मा के निरंजण निराकार पद में अखण्ड अनुभव कर परमपद की प्राप्त करना ही केवल राम को रटना है। जब पाप और करम का नाश होकर जन्म मरण का चक्कर व आना जाना मिट जाएगा। मन को विश्वास आए बिना सतशब्द के अनुभव बिना कोई भी कार्य सिद्ध नहीं होता है। करोडो उपायों अनेक विचार कर देख लो। करोडो तीरथो, बिना गिनती की धामों की यात्रा करो, निनाणवे यज्ञ करो लेकिन सुमरण में विश्वास किए बिना व नांव लिए बिना रती भर भी सुख नहीं मिलता। जतीपना रखे, सत बोले, तप करे, शुभ क्रिया करणियां करे, व्रत करे, रोजा रखे, लेकिन जब तक सांस ऊसांस में भजन कर सतशब्द की प्राप्ति नहीं की तब तक मन को किसी ने नही खोजा। चार वेदो व संतो की अणभै वाणी कंठस्थ कर ले और उनका भारी अरथ करे, पर जब तक निज नांव की प्राप्ति नहीं की, तो उसने मनुष्य जन्म पाकर इस जन्म को व्यर्थ गमा दिया। नांव

की प्राप्ति के लिये तीरथ व धाम व सब ज्ञान करते है लेकिन नांव की प्राप्ति नहीं होती। म:फ: है यह बात जगत में फिर कर समझो या घर में रहकर समझो।

卐 हरजस पद राग कल्याण (१२) 卐

साधो भाई भेद बिना जग डोले। सतगुरु बिना भेद नही सूजे, तातेई मिथ्या बोले॥ टेर॥
तीरथ जाय समझ ज्याहां लावे, सो घर में नर धारे।
रमता राम ज्यांहा त्यांहा पूरण, समज्या ज्यांहा हर तारे॥ १॥
अे घर छाड बना कूं जावे, बडे गुफा में कोई।
वा सुण मत घर ही में लावे, तो तिरता बार न होई॥ २॥
व्याकरण साझ भागवत बांचे, अरथ करे जे भारी।
वाको मूल पढे जो घट में, देहत काल कूं मारी॥ ३॥
कह सुखराम समझ को कारण, जाग ठाम को नांही।
ज्यां सुण नाम सांच घट आयो, तिरता बार न कांही॥ ४॥

साधको को फ: है कि भेद से भक्ति किये बिना जगत में यूं ही फिर रहे है। सतगुरू की शरण लिए बिना भजन का भेद व परमात्मा की प्राप्ति का भेद नहीं मिला, यही मिथ्या बोलना है। तीरथों में जाकर अच्छी बाते धारण करने का विचार व भजन करने के लिये जाते है वो घर में बैठकर ही धारण कर लेवे तो रमता राम जो सर्व व्यापक है, पूरण है, उसको समझकर भक्ति करे तो प्राप्ति हो जाती है। कोई घर को छोडकर बन में चले जाते है, गुफा में बैठकर आसन लगाते है, यदि वही मती या ज्ञान घर में रहते धारण कर लेवे तो उद्धार होते देर नहीं लगती। व्याकरण की साधना कर अध्ययन कर भागवत बांचते है और उसका अनेक तरह से दृष्टान्त देकर अरथ करते है लेकिन यदि उसका मूल याने नांव निज नांव को धारण करे तो काल को मार सकता याने जन्म मरण से रहित हो सकता है। म:फ: है स्थान जगह विशेष का कोई कारण नहीं, समझ का कारण है। जिस समय नांव सतशब्द की प्राप्ति हुई तो उद्धार होते देर नहीं लगती है।

卐 हरजस पद राग कल्याण (१३) 卐

जिन मुख राम कहोरी रसना, लारे कछु न रहो रे॥ टेर॥
वेद भागवत साख भरत है, सुखदेव काम दहो रे॥ १॥
सारद नारद शंकर शक्ति, नित ऊठसे सहो रे॥ २॥
काग भुसन्डी गोरख अर ज्ञानी, नेहचल होय रहो रे॥ ३॥
कह सुखराम सुणो सब ज्ञानी, ऊ निरभै लोक गहो रे॥ ४॥

जिस मुख व रसना द्वारा हर समय सांस उसांस में राम राम किया जाता है तो पीछे और कोई साधन की जरूरत नहीं है। बेद भागवत भी नांव की महिमा करते है। सुखदेवजी का कार्य भी इस नाम से हुवा। शारदा नारद शंकरजी शक्ति भी नित उठकर नाम की भक्ति करते है। काग भुसन्डी गोरख नाथजी नाम के आधार से अमर है। म: सभी ज्ञानियों को फ: है कि निरभै लोक याने पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति करो।

卐 हरजस पद राग कल्याण (१४) 卐

प्राणी मेरा राम नांव लिव लाय। ओ ईमरत पिवोजी अघाय॥ टेर॥
ओ रंग झूंठ पतंग रंग जुग को, देखत ही ऊड जाय॥ १॥
मत भूले संसार सुख में, ए सब विष रस खाय॥ २॥
अबके अवसर अवस आयो, सब तन करम मिटाय॥ ३॥
जे तूं चूको ओसर अबकी, जुग जुग गोता खाय॥ ४॥
जा हरि गायो तन मन अरपी, निरभे बैठा जाय॥ ५॥
गोविन्द की सुण भक्ति बिना रे, जुग सब प्रलय जाय॥ ६॥
मनखा तन सुण या बिध नीको, हरजी का जस गाय॥ ७॥
कह सुखराम संत जन सारा, हर बिन जंवरो खाय॥ ८॥

मनुष्यो को फ: है कि राम नाम का लिव बंध भजन करके इस ईमरत को धाप कर पीवो। पतंग का रंग देखते ही उड जाता है ऐसे ही संसार भी असत है। सब विषयो भोगो में रत है तूं इनमें मत भूल। अनन्त जन्मो से तू करम भोग भोगने में लगा, अब के मनुष्य जन्म मिला है। भजन करके सारे करमों का नाश कर दे। मनुष्य जन्म में परमात्मा की प्राप्ति नहीं की और इस जन्म को व्यर्थ ही खो दिया तो जुग जुग में चौरासी भुगतनी पडेगी। मनुष्य जन्म पाकर परमात्मा की भक्ति कर के:पद आ:पद की प्राप्ति की, वे जन्म मरण से रहित हो गये। परमात्मा की भक्ति के बिना सारा जगत जन्म मरण में आता रहता। मनुष्य जन्म में ही परमात्मा की भक्ति हो सकती है। इसलिये श्रेष्ठ बताया है। म:फ: है कि सब संत यही बात कह रहे है कि परमात्मा की भक्ति बिना काल खाता रहता है, जन्मता मरता है।

卐 हरजस पद राग केदारा (१) 卐

वारी वारी आया है हंसा काज, संत बडा महाराज॥ टेर॥
जे जे नर जुग राम पुकारे, सो मेरा सिरताज।
बडा बडा जन संत समाधि, ताकूं मेरी लाज॥ १॥
तन मन धन सब अरपण दिजे, भजन कीजे बाज॥
सतगुरु बेचे मैं बिक जाऊं, परत न आऊं भांज॥ २॥
संत हमारा मात पिता है, कहे ज्ञान सब गाज।
कह सुखराम चरणा को चेरो, प्रभुजी तारे म्हाने आज॥ ३॥

उन महापुरूषो को धन्य धन्य है जो हंसो का उद्धार करने के लिए जगत में पधारे है और अणभै ग्रन्थ बनाये। परमात्मा की भक्ति करने वाले मनुष्य सब मनुष्यों में शिरोमणी है। भजन करके केवली भगवंत समाधि अवस्था में पहुंचे, वे ही संत महापुरूष जीवों का उद्धार कर सकते है। तन मन धन अरपण करना याने तन से सांस ऊसांस में रटणा करो, मन से अपनत्व हटाकर सत केवल ज्ञान के अलावा सामने वालो को खुश रखने के वचन नही बोलूं। सब ज्ञान यह कह रहे है कि केवली भगवंत हंस के माता पिता है। म:फ: है कि मैं सत ग्यान के चरणो का सेवक हूं, इस जन्म में ही उनकी कृपा से परमात्मा उद्धार कर देंगे।

卐 हरजस पद राग केदारा (२) 卐

नहीं रे अेसो लगन दुजो कोय। लख चौरासी और सावा, ज्यां में ब्यावन होय॥ टेर॥
पारब्रहम सो भेजिया हो, भेद निरालो संभाय।
धियो परणो ब्रहम सुन्न में, बगत टलियो जाय॥ १॥
सतगुरू हेलो पाडियो हो, सुण लिज्यो नर नार।
अबके मोसर चूक गया रे, कदे न परणे हार॥ २॥
जुग जुग रेसी कंवार डोरे, पडसी अगत के मांय।
ममता तृष्णा अंत सतासी, त्रिपत होसो नांय॥ ३॥
कह सुखदेव कोई ब्यावज मांडो, चावे सो लो मुज पास।
ब्रह्म लोक में फेरा पाडू, बोहोर न रहे जुग आस॥ ४॥

मनुष्य योनी के सिवाय अन्य किसी योनी से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। चौरासी लाख योनियां है जिनमें मनुष्य योनी मिलने पर ही मोक्ष होती है, यही लगन है। पारब्रह्म से सारी सृष्टि की उत्पति है, लेकिन मोक्ष प्राप्ति का अधिकार मनुष्यो को है। संतो के सत ग्यान से भेद लेकर ब्रह्म सुन्न में सूरत का शब्द में लय होना ही धिया याने आत्मा का परणना है। सतगुरु उपदेश कर रहे है कि मनुष्य जन्म में परमात्मा की प्राप्ति नही हुई तो जुग जुग में चौरासी भोगनी पडेगी। आत्मा को परमात्मा पद की प्राप्ति नही होना ही जुग जुग में कुंवारा रहना है व नरक का दुख भोगना है। ज्ञान न होने से अंत में ममता तृष्णा बोहत सताती रहेगी और सन्तोष धारण नहीं होगा। म:फ: है कि कोई परमात्मा की प्राप्ति करना चाहते है तो मेरे ज्ञान को धारण करो तो ब्रह्म लोक की प्राप्ति करा दूं। जिससे आवागमन मिट जायेगा। यही जगत में आने की आशा नहीं रहना है।

卐 हरजस पद राग केदारा (३) 卐

नही रे ऐसो मोसर दूजो कोय। इण सावे कोई हंस परणो, से सब मिलजो मोय॥ टेर॥
निर्मल सावो छांट के ओ, सतगुरु दीनो लाय।
त्रिकुटी तोरण बांध के हो, परण्या ब्रहम सुन्न जाय॥ १॥
अर्ध उर्ध बिच ब्याव रचयो है, चडी है नांव बरात।
पिछम गेल होय धुन्न शब्द की, चालत है दिन रात॥ २॥
गिगन सेहर जहां जाय पहुंता, घुरया है नाम निशाण।
अला पिंगला सुखमण नारी, लाई है सेज पर तांण॥ ३॥
चंवरी मांडी ब्रहम सुन्न में, त्रिगुटी सामेलो होय।
बाजा बाजे हीरा बरसे, जोत झिलामिल होय॥ ४॥
सामेलो ले चालिया हो, परण्या ब्रहम सुन्न जाय।
जन सुखदेवजी मेलां पोडियां, आणंद सेज बिछाय॥ ५॥

मनुष्य जन्म प्राप्त कर मोक्ष की प्राप्ति करना चाहे वो सब मेरा सत ज्ञान धारण करो। परमात्मा ने मनुष्य जन्म दिया, यही निर्मल सावा छांट के दिया है। सतगुरु विधि से साधन करके त्रिकुटी में पहुंचना ही तोरण बांधना है। बह्मण्ड से ऊपर निरंजन निराकार पद पारब्रह्म पिता के देश में फेरे

खाकर आत्मा के:पद आ:पद सुन्न में समा जाती है। सांस उसांस में भजन करना ब्याह रचाना है। भजन करने से शब्द आगे चलता है। तब रोम रोम रटणा नांव की बारात चढना है। बंकनाल में शब्द की ध्वनी का रात दिन अनुभव होना ही रात दिन चलना है। गिगन में पहोंचकर अला पिंगला सुखमणा में भजन होना ही सेज पर तांणना है। ब्रह्मण्ड से ऊपर पारब्रह्म सुन्न में पहोंचकर चंवरी मांडना है। त्रिगुटी में पहोंचने पर कई तरह की ध्वनियां खुल जाती है, यही बाजा बजना, हीरा बरसना व सामेला होना है। त्रिगुटी से ऊपर जाकर पारब्रह्म सुन्न में पहोंचकर सुरत का शब्द में लय होना ही परणना है। म:फ: है कि पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति का आनन्द आना ही सेज बिछाना व मेहला पोढना है।

卐 हरजस पद राग केदारा (४) 卐

प्राणियां रे समझर सिमरो राम। देख विचार समझकर दिल में, हरि बिन झूंठा काम॥ टेर॥
सुत वित सेंग धरिया रहे लारे, ऊठ अकेलो जाय।
किया करम चलेगा साथे, धका बोहोत विध खाय॥ १॥
कमर बांध्या बैठो है पंथ में, चालो चालो होय।
काल सिराणे अेम खडो है, ज्यूं संग छाया जोय॥ २॥
तेरा तो डेरा जंगल मांही, तामें फेर न कोय।
बिस्वाबीस ईक्कीस चालणा, रेणा निमख न होय॥ ३॥
और न तोकूं कछुह न दिशे, ओ जुग जातो जोय।
कह सुखदेव कर हात रीता, ऊठ चले सब लोय॥ ४॥

मनुष्य मात्र को कहते है कि सतगुरु से भेद लेकर भजन करना ही राम का सिमरना है। देखो विचारो समझो परमात्मा की प्राप्ति के बिना जगत का कार्य सब असत है। पुत्र धन व सब चीजे यही रह जाती है और जीव अकेला जाता है तथा शुभ अशुभ कर्म साथ जाते है और तीन लोक में इनका भोग भोगना ही धक्का बोहत विध खाना है। जीव चलने की तैयारी में रास्ते में बैठा है, सब जा रहे है, यही चालो चालो है। काल सिर पर इस तरह खडा जैसे शरीर के साथ छाया रहती है। तेरे को निश्चय श्मशान में जाना है, इसमें कोई झूंठ सांच नहीं है। एक विश्वा नहीं है इक्कीस विश्वा जाना है। एक क्षण भी नहीं रह सकेगा। सारा संसार जा रहा है यह तेरे को नहीं दिख रहा है। म:फ: है कि सबको खाली हाथ करके जाना पडेगा।

卐 हरजस पद राग केदारा (५) 卐

सुणज्यो बाबा कलजुग बरतयो आय। अेताई थाणा पाड़ दिया हो, जीत लिया जुग मांय॥ टेर॥
ब्राह्मण को सुण पिवे तमाखूं, स्यामी अेमख खाय।
तुलछी ऊगे नीच के हो, गऊ भिष्ट कूं जाय॥ १॥
बेटी साटे बापज परणे, झूंठ सांच कर जाय।
पईस्या कन्या का सरब गिणावे, सूकज भाडा खाय॥ २॥
निरपत सो सुध न्याय न भाषे, प्रजा डंडे बिन खून।
प्रथम तो सुण धरम न कर है, जो बावे तो भून॥ ३॥

नीच घरां को दान झेले, निची संगत जाय।
आशीरवाद सो पहली देवे, विप्र सो जुग मांय॥ ४॥
गुरडा बेद सो बांचण लागा, शुद्र सो गुरु होय।
कह सुखदेव कलजुग की, कहां लग कहूं मैं जोय॥ ५॥

महाराज सबको फः है कि कलजुग आ गया है। इसने बडे बडे थाणायतो को पाड दिया है याने गुरु सतगुरु भक्त ग्यानी बन कर देवो व संतो के अणभै ग्यान को तुछ समझते है और अंग लक्षणो का ध्यान नही करते, उनकी कलयुग बुद्धि भिष्ट करके उनके सिर पर सवार हो जाता है। ब्राह्मण के घर जन्म लेकर तमाखु पीता है। स्वामी याने भेखधारी मिट्टी खाते है, नीच तुलसी लगाते, गाय भिष्टा खाने लगती, झूंठ सांच करके बेटी के बदले बाप परण लेता है। कन्या का पैसा लेना ही बेचना है। रिश्वत खाते और भडवाई करते है। राजा न्याय नहीं करता, प्रजा को बिना कसूर के डंड देते है। प्रथम धरम याने दान देते ही नहीं और दान देते है तो अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए देते है। यही अन्न भून कर बाना है। ब्राह्मण होकर शुद्रो का दान ले लेते है और नीचो की संगत में रहते है। उनको बिना हाथ जोडे ही आशीर्वाद दे देते है। गुरडा व डाकोत वेदो को बांचने लग गए तथा शूद्रो को गुरु बनाने लग गए। मःफः है कि इस कलजुग की बाते कहां तक कहूं।

卐 हरजस पद राग केदारा (६) 卐

जुग मांही सोई फकीर बखाण। और सबी अे ठग रे ठगारा, रहया है जगत सुखमांण॥ टेर॥
असल जोगी टुकडा मांगे, और शकल को त्याग।
दुनिया सेती नहीं परोजन, रहया है राम सुं लाग॥ १॥
उलटी जगत की करूणा आवे, दया घणी घट मांय।
बणे तो किसी पर मेहेर किजे, दुख बटावण जाय॥ २॥
फेर फकीर ज्यां फिकर न ब्यापै, मस्त रहे दिन रात।
कह सुखराम उलट गढ चडिया, करे धणी सुं बात॥

जगत में सच्चे संत वही है और सब ही संसार का सुख चाहने वाले ठगने वाले है। सच्चे साधु उदर पूर्ति के लिए रोटी का टुकडा लेता है और सबको त्याग देता है। वो संसार से मोह नही करते, निरन्तर भजन में लगे रहते है। जगत में दुखी है उनकी उन्हें दया आती है। हो सकता है तो सब पर दया करते है और उनका दुख दूर करते है। सच्चे संत को चिंता फिकर नहीं रहती, निरन्तर भजन में लगे रहते है। मःफः है कि सत ग्यान को धारण कर बंकनाल में उलटकर पारब्रह्म से ऊपर जाकर परमपद की प्राप्ति करना ही धणी से बात करना है।

卐 हरजस पद राग केदारा (७) 卐

ऐसो कोई ताप बुजावे आय। अधपे मेरी पीड मेटे, सो गुरू मैं शिष्य थाय॥ टेर॥
आग बिना सुण प्रांण दाजे, सी बिन देह थरराय।
विष बिन लहेर भांग बिन पिया, प्राण गिगन दिश जाय॥ १॥
बिन शमशेर तीर बिन बरछी, मन बिन्धाणो आय।
डर बिन डरू बिरह बिना बिरह, बोहोत ऊपज्यो मांय॥ २॥

मैं बिन पाणी बुवा जाऊं, जे कोई काडे आय।
कह सूखदेव गुरु सो मेरा, चरणा रहूं लपटाय॥ ३॥

ऐसा कोई आकर मेरा दुख मिटावे मुझे परमात्मा मिलने की उत्कंठा है, उसे मिटावे, वो मेरे गुरु है मैं उनका शिष्य हूं। बिना ही अग्नि याने विरह से शरीर जल रहा है, बिना ही ठंड शरीर कांप रहा है, बिना विष व भांग पिये ही लहरे आ रही है, प्राण गिगन की तरफ जा रहे है। परमपद की प्राप्ति की प्रबल इच्छा मन में होना ही बिना तीर तलवार व बरछी के मन बींधना है। बिना ही बिरह के बिना ही डर के मैं बहुत डर रहा हूं कि मैं वापिस चौरासी में न आ जाऊं। बिना ही पानी के भवसागर में आना जाना ही बह रहा हूं। इससे मुझे कोई निकाले वो मेरे गुरु है, मैं उनकी शरण हूं।

卐 हरजस पद राग केदारा (८) 卐

धोबिया रे दरगा जाणो मोय। साहिब जी रा दरसण करणो, रहणो सनमुख होय॥ टेर॥
पांचू बस्तर धोय बेगा, ढील न किजे जाय।
पटक पिछाटर ऐसा धोई, मेल रहे नही मांय॥ १॥
धोबी धोबण धोवण चाल्या, पूरब दिशा री बाट।
अरध उरध का मार पछाटा, नाभ कमल के घाट॥ २॥
रंगरेजा तुं आव बेगो, पांचा के रंग दिराय।
ऐसो रंग घरक दे भाई, ब्होर न ऊतर जाय॥ ३॥
सूरत धोबण मनवो धोबी, चित रंगरेजो मांय।
कह सुखदेवजी यां तीनूं मिलकर, कसर न राखी काय॥ ४॥

मन को सम्बोधन कर कह रहे है कि मुझे के:पद आ:पद की प्राप्ति करनी है तथा सतशब्द का अनुभव होना ही साहिब के दर्शन करना है व सनमुख रहना है। पांच तत्वो के शरीर से भक्ति कर जीते जी पांच तत्वों के शरीर से अलग होना ही पांच बस्तर धोना है। जन्म मरण में वापिस नही आना ही मेल नही रहना है। पूर्व दिशा में धोबी मन, धोबण सूरत लगाकर सांस उसांस में भजन करना ही पिछाटा मारना है। रंगरेजा चित से पांच याने तन मन वचन सूरत निरत को भक्ति में लगाना ही इनके रंग दिराना है। इन पांच अंगो से निरन्तर भक्ति होती रहती है। यही रंग नही उतरना है। सूरत धोबण मन धोबी चित रंगरेजा है। मन सूरत व चित इन तीनो को लगाकर भक्ति करने से कोई कसर नही रहती।

卐 हरजस पद राग केदारा (९) 卐

जुग में सोई जन ऊतरे पार। और शकल सब भांड बिगोवा, कियो भेष कूं खुवार॥ टेर॥,
भगत सोई तन मन अरपे, जोगी निरदावे होय।
और भेष सब पेट भरणिया हो, जगत बिगाडी जोय॥ १॥
अडद ऊडद की डोर संभावे, चले पिछम की बाट।
बंकनाल होय गढ पर चढिया, न्हावे त्रगुटी घाट॥ २॥
सो जन गढ चढ ध्यानज धारे, ऊपजे ब्रहम गिनान।

कह सुखदेव सो जोगी बेरागी, और करम की खान॥ ३॥

संसार में वो ही जन पार उतरेंगे जो भेद से भक्ति करने वाले है तथा बिना भेद से भक्ति करने वाले भांड जैसे है। मनुष्य जन्म पाकर भक्ति करके भी आवागवण से रहित नहीं हुये, यही मनुष्य भेख को खराब करना है। तन मन लगाकर भक्ति करे, वह भगत है। जोगी वही जो अहं भाव से रहित हो। मनुष्य शरीर पाकर केवल पेट भरने के लिए गलत ज्ञान प्रस्तुत करके जगत को बिगाड़ने का काम करता है। उठते बैठते श्वांस में भजन करना ही अडद उडद की डोर संभालना है व बंकनाल में ऊलटना ही पिछम के रास्ते चलना है। बंकनाल को पार करके दो पांख के कंवल से अनन्त पांख के कंवल तक शब्द का सूरत से ध्यान करना ही त्रिकुटी में न्हाना है। व के:पद की प्राप्ति करना गढ पर चढना है। के:पद आ:पद की प्राप्ति करना ही ब्रह्म ज्ञान उपजना है, वे ही जोगी बैरागी है। दूसरे साधन से कर्म कटते नहीं है वापस जन्म मरण में आना पडेगा। यही कर्म की खान है।

卐 हरजस पद राग केदारा (१०) 卐

प्राणियां रे नांव गहो तत्त सार। निरगुण बिना सब नांव सारा, सबे काल की चार।
सुरगुण नांव अनेक जुग में, बिन लेखे बिन पार॥ टेर॥
कनफूंका गुरु आन तज रे, तजिये सो संसार।
वाय शब्द बकवाद तजिये, सतगुरु ज्ञान विचार॥ १॥
वेद कुराण पुराण तजिये, तजिये काम विकार।
मैं ते दुबध्या दुरमत तज रे, फोडो भरम की पार॥ २॥
लोई लाज मरजाद तज रे, तजिये गरब गिंवार।
रीसबाद अहंकार अहूं तज, तजत न लावे बार॥ ३॥
धेक निंदिया झूंठ पर हर, त्यागो तिवर बोहार।
सतशब्द ले सांच बिणज्यो, उतरणो भव पार॥ ४॥
झूंठ तज के सांच गहे रे, नाम रटो निरधार।
जन सुखराम श्याम सूं मेला, काया मझ विचार॥ ५॥

प्राणी मात्र को फ: रहे है कि बह्म के निज नांव को धारण करो, वाणी से व बिना वाणी से जो भजन होता है उसे निरगुण नाम कहते है। बह्म के नाम बिना जो मानसिक जाप किये जाते है उनसे जन्म मरण नहीं मिटता। शरीर के द्वारा बाणी से मन से चित से स्वांसा के आधार से आन की भक्ति कराते है। उनको कनफूका गुरु कहते है। अहमता ममता त्यागना ही संसार छोड़ना है। मुंह से फालतू की बातों को त्यागकर सतगुरु के ज्ञान का विचार कर। भेद से भक्ति करके के:पद आ:पद की प्राप्ति करना ही सतगुरु का ज्ञान का विचारना है। वेद कुराण पुराण से सतशब्द नहीं आता है। एवं कामना और मन की खराब वृतियों इन सबको छोडो। मेरी तेरी द्वेत भाव खराब मति इन सबको छोडकर भरमों का नाश करो। संसार की लज्जा मर्यादा के लिये भजन मत छोडो व अभिमान छोडो, क्रोध वाद विवाद अहंकार मैं पणा को छोडो, इनको छोडते देर मत करो। द्वेष भाव निन्दा करना झूंठ को छोडकर जितने भी अज्ञान के व्योहार है। उनको छोडो। सतगुरु विधि से भजन

कर सतशब्द की भक्ति करके भवसागर से पार हो जावो। झूंठ याने माया की भक्ति छोड सत याने परमात्मा की भक्ति करो। निराधार नाम जो बिना बांणी के सतशब्द का अनुभव होता है। म:फ: है शरीर में ही परमात्मा की प्राप्ति होना ही मेला होना है।

卐 हरजस पद राग केदारा (११) 卐

सतगुरु तारेगा मुझ आंण, बिस्वाबीस इककीस ऊपर और हजारा जांण॥ टेर॥
गोत हमारे राम स्नेही, संगत सेण बखाण।
गेलो निज पंथ ज्ञान ऊजागर, पवन गज ले ढाण॥ १॥
प्रेम हमारे परम स्नेही, ओऊं भाव पिछाण।
सूरत हमारी आद सरीरी, भेद गहे तत्त छांण॥ २॥
ज्ञान विज्ञान विचार, मत मेहमत तत्त छांण।
जन सुखराम भाग सुं पावे, या विध सतगुरु जांण॥३॥

केवली भगवंतो के सत ग्यान को धारण करेंगे तो सतगुरु याने सत शब्द आकर तुझे तारेंगे। एक विश्वा नहीं इक्कीस विश्वा और हजार विश्वा निश्चय तारेंगे। हम राम रटते है इसलिये हमारी जाति रामस्नेही है तथा सत्य केवल ज्ञान की संगत ही संगत सेण बखाण है। आत्मा को परमात्मा पद की प्राप्ति करा देवे वही रास्ता है, वही ज्ञान का प्राक्रम है। जिस प्रकार हाथी की सवारी होती है उसी प्रकार स्वांसा के ऊपर शब्द का अधर होना ही पवन गज ले ढाण है। परमात्मा से प्रेम करने वाले परम स्नेही है, उनको आत्म भाव से पिछाणो। सूरत के द्वारा निरंजन निराकार ब्रह्म का अनुभव होता, यह आत्मा का आद शरीर है। शरीर के साथ चेतन में ज्ञान का विचार कर और निरंजन निराकार बह्म का अनुभव होता है, यह आत्मा का आद शरीर है। शरीर के साथ चेतन में ज्ञान का विचार कर और निरंजन निराकार पद में के: पद का अनुभव कर आ: में लय होना ही मत मेहमत तत्त सार है। म:फ: है कि यह सतगुरू की विधि भाग्योदय होने पर ही मिलती है।

卐 हरजस पद राग केदारा (१२) 卐

संतो भाई नाम गहो तत्त सार। आन ऊपासी आत्म द्रोही, ताको संग निवार॥ टेर॥
राम स्नेही नित पत मिलजो, सागट दूर निकार।
प्रभू नांव बिना बोहता संग दूजा, तामें बोहत विकार॥ १॥
नाम स्नेही दुरबल भूखा, मिलज्यो बांह पसार।
सागट पांडे राव लोई, सब जन माथे मार॥ २॥
कोढी कुष्टी हरीजन मिलज्यो, ता घट ब्रह्म विचार।
जन सुखराम भेद बिन भगती, सबे काल की चार॥ ३॥

संतो से फ: है कि ब्रह्म के निज नांव जिसे सतशब्द कहते है, उसकी भक्ति करो। जिनके चर्मचक्षुओ से दर्शन होते है उन आन की भक्ति करने से चौरासी नही मिटती। इसलिये आत्म द्रोही कहा है, उनका संग मत करो। राम से प्रेम करने वाले हमेशा मिलो। सागट यानि जिनके घट में बूरी वृतिया है उनसे दूर रहना। परमात्मा के निज नाम के बिना अनन्त नाम से परमात्मा की प्राप्ति

नही होती। निज नाम से प्रेम करने वाले दुरबल हो या भूखे उनसे प्रेम करो। परमात्मा की भक्ति नहीं करने वाले राजा हो, चाहे पंडित, उनसे प्रेम मत करो। ब्रह्म की भक्ति करने वाले कोढी व कुष्टी हो, हमेशा ही मिलो। म:फ: है कि बिना भेद भक्ति करने से जन्म मरण नहीं मिटता।

卐 हरजस पद राग केदारा (१३) 卐

प्राणियां रे सतगुरु तारण हार। विश्वाबीस ईककीस ऊपर, तामे फेर न सार॥ टेर॥
वेद कुराण पुराण जोया, सुण सुण कियो विचार।
पारब्रह्म को भेद नांही, तिरगुण को जस लार॥ १॥
जोगी देख्या जंगम देख्या, खट दरशण बोहार।
तीन लोक में सब पच हारे, अन्त काल की चार॥ २॥
राजा भी देख्या पातशाह, देख्यो जुग संसार।
भवसागर में डूब रहे है, तांको काहा विचार॥ ३॥
तत्त नांव बिन कोई न तिरियो, न कोई तिरणेहार।
सुरगुण आन ऊपास सारे, देह धरसी विस्तार॥ ४॥
सब संतन की शायद बोले, गीता किसन विचार।
जन सुखराम कह जन देखी, नांव बिना है विकार॥ ५॥

मनुष्य मात्र को फ: है कि बीस विश्वा नही इक्कीस विश्वा इसमें झूंठ सांच नहीं है कि सतगुरु ही उद्धार करने वाले है। वेद कुराण सबको देखा व सुण सुण कर विचार किया। इसमें पारबह्म परमात्मा का जो निज नांव सतशब्द है, ने:अँच्छर है, उसका भेद नहीं है तथा त्रिगुणी माया के पद का ही बखाण किया है। जोगी जंगम व खट दरशनी इन सबके ज्ञान को देखा, वे तीन लोक तक का ही ज्ञान देते। इसलिये जन्म मरण से रहित नही कर सकते। राजा बादशाह व संसार देख सब जन्म मरण में आ रहे है। उसका क्या विचार करना है। ब्रह्म के निज नांव सत नांव के बिना किसी का उद्धार नही होता, न होने वाला है। सुरगुण व आन की भक्ति करने वाले को बार बार शरीर धारण करना पडेगा। इस बात की सब ही संत साक्षी दे रहे है। गीता में कृष्ण भी यही बता रहे है। म:फ: है कि मैं भी अनुभव कर कह रहा हूं कि निज नांव के बिना सब विकार याने असत है।

卐 हरजस पद राग केदारा (१४) 卐

प्राणियां रे नांव गहो मुख मांय। सांच कण बिन फूस केता, तासूं भूक न जाय॥ टेर॥
शील समता सांच बोलो, नांव गहो मुख मांय।
भवसागर के तिरण की हो, दुजी नही उपाय॥ १॥
छोड माया मोह ममता, दुरमत दूर गमाय।
होय नेहचे नांव बैठो, खेवट सुं मिल आय॥ २॥
क्रोध कुलश मल रीस तजिये, प्रगल प्रेम बंधाय।
दास सुखदेव सांच बोले, सुख में रहो समाय॥ ३॥

मनुष्य मात्र को फ: है कि भेद से भजन करो जिससे निज नांव की प्राप्ति हो सके। सतनाम की

भक्ति अन्न व आन की भक्ति फूस की तरह है। सत की भक्ति से जन्म मरण मिटता है। आन की भक्ति से नहीं मिटता। शील सांच समता धारण करते हुये परमात्मा के निज नांव की भक्ति करो। भवसागर से पार होने के लिये इसके सिवाय दूसरा कोई ऊपाय नहीं है। माया का मोह ममता और कुबुद्धि इन सबको त्यागो, केवली भगवंतो के अणभै ग्यान का भेद लेकर भजनकर भवसागर से पार हो जावो, यही खेवट से मिलकर नांव में बैठना है। क्रोध कुलक्षण और शरीर के विकारो इन सबको छोड परमात्मा से विशेष प्रेम करना ही प्रगल प्रेम बंधाना है। म:फ: है कि मैं सांच बात कह रहा हूं। इस प्रकार आ:पद में जाकर लय हो जावो।

卐 हरजस पद राग केदारा (१५) 卐

मन रे आछी करी ते बीर। भव सागर में डूबता कुं, किया पेली तीर॥ टेर॥
जुग की लारा डूब मरता, सेहता दुख शरीर।
बेहे मरता बेकाम ऐसे, भव जल मृग नीर॥ १॥
चौरासी लख जूण धरता, पीता विष की सीर।
धरमराय शीष बो, जड़ता काल जंजीर॥ २॥
फूस कचरो फटक दियो, सोज लियो कण हीर।
ताय सोनो तार कियो, काडयो खोट गंभीर॥ ३॥
नांव निज तत्त नांव जुग में, खेवट सतगुरु कीर।
दास सुखदेव मांय बैठा, भली बंधाई धीर॥ ४॥

आत्मा मन से कह रही है कि हे भाई तुमने मेरे साथ अच्छा किया, अनेक जन्मो से मैं जन्म मरण में आ रही थी जिसको परमपद की प्राप्ति करा दी। जैसे जगत जन्म मरण में आ रहा है वैसे ही मेरे को भी जन्म मरण में आना पडता व कई शरीर धारण करने पडते है। गर्मी के समय में मृग को बालू रेत में जल दिखता है परन्तु जल नहीं है। ऐसे ही संसार के सुख सच्चे प्रतीत होते है पर वो सच्चे नहीं है। चौरासी लाख योनियो में विषयो में रत रहना ही विष की सीर पीना है। बार बार जन्म मरण में आना ही धर्मराय की काल की जंजीर जडना है। आन की उपासना छोडना व सत नांव की भक्ति करना ही फूस कचरा फटकना व कण हीर लेना है। सोने को तपाकर उसका खोट निकालते है, ऐसे आत्मा अनादि से माया के साथ है। उससे अलग होकर परमपद की प्राप्ति होना ही खोट निकालना है। पारबह्म का निज नांव नौका की तरह है उसकी प्राप्ति कराने वाले सतगुरु याने केवली भगवंत खेवट है। परमपद की प्राप्ति करने वाले उसमें बैठने वाले है, परमपद की प्राप्ति होना ही धीर बंधना है।

卐 हरजस पद राग केदारा (१६) 卐

मन रे तूं खेती करोनी आय। अबके मोसर चुकिया रे, जनम जनम दुख पाय॥ टेर॥
मानव देही असाढ जाणो, ज्ञान मेह बरसाय।
ओ दिन मोसर आज आयो, सो वन बाया जाय॥ १॥
हम हलगीर हालकर हलमो, चेतन चऊव लाय।

अप मन मोरख प्रेम पाछडियो, हर हल बाणी पजाय॥ २॥
ओऊं सोऊं का रे करो बलदिया, सुरत रास संभाय।
जुग जुवाडे जोत दोनुं, अे निश यूं हल बाय॥ ३॥
नाई निरत प्रीत डोरी, दिल दरवास्या लगाय।
बुध बमेक विचार बांधो, इऊ हल समंद बाय॥ ४॥
नांव निजकण बो लीजे, अंछया झोली बंधाय।
हाली निज मन हात जिभया, बीज धसे ऊर मांय॥ ५॥
बीज बोजत सब घम राखे, हल समंद चित मांय।
नाई बिरीयां बेग सम्भाले, खाली चाम न जाय॥ ६॥
बीज बोजत ढीलमां किजो, बाह अमोलक जाय।
असाढ खाली खेत खडिया, क्या लुणसी जाय॥ ७॥
सेज सारा सरब बणावे, जोतो हल लिव लाय।
दास सुखदेव ढीलमां किजो, मोसर वाया जाय॥ ८॥

हे मन तू भजन रूपी खेती कर, मनुष्य जन्म में परमात्मा की प्राप्ति नहीं हुई तो जुग जुग में जन्म मरण में आना पडेगा। मनुष्य शरीर को असाढ समझकर ज्ञान से भजन करना ही मेह बरसाना है। मनुष्य जन्म ही जीव की सोवनी चाम है। भजन करने वाले हलगीर है, जल्दी करना ही हाल कर हलमो है। सावधानी से भजन करना ही चेतन चऊव लाय है। अप मन मोरख है, प्रेम से भजन करना ही पाछडियो है। परमात्मा का भजन करना ही हर हल बाणी पजाय है। उठते बैठते श्वांस में सूरत लगाकर भजन करना ही दोनों बैलो को हल में जोतना है व रस्सी पकडना है। नाई याने निरत लगाकर डोरी याने प्रीति प्रेम से दिल याने दरवास्या लगाकर बुद्धि से विचार कर भजन करना ही हल चलाना है। अंछया याने आत्म चेतन के आधार से निज नांव की भक्ति करना ही बीज बाना व झोली बंधाना है। निज नांव कण है। आत्म चेतन झोली है। निज मन से भक्ति करना हाली है, जिभ्या से नाम उच्चारण करे, यह हाली का हाथ है। इस तरह अन्तर में शब्द की जागृति होना, बीज धसे ऊर मांय है। भजन करते समय सब तरह का ज्ञान रखना ही बीज बाते समय गम रखना है। चित लगाकर भजन करना ही हल समंद चित मांय है। भजन करते समय एक श्वांस भी बिना नांव के नहीं जाता, यही नाई बिरिया बेग सम्भाले खाली चाम न जाय है। हर समय भजन करने में लगना ही बीज बाने में ढील नहीं करना है। बिना भजन करे मनुष्य जन्म जा रहा है। यही अमोलक बाह जाना है। असाढ याने मनुष्य जन्म में भजन नहीं किया तो क्या प्राप्ति होगी। हर समय लिव बंध भजन होना ही सेज सारा सरब बणाना है। म:फ: है कि भजन करने में देर नही करना चाहिये। यह मनुष्य जन्म का समय जा रहा है।

卐 हरजस पद राग केदारा (१७) 卐

सतगुरु औषध पाई लाय। चौरासी का रोग भागा, मिल्या ब्रह्म सुं जाय॥ टेर॥
अनन्त बाजा बाजण लागा, अनंत ऊगा सूर।
अनन्त ईन्दर बरसण लागा, नदियां चाली पूर॥ १॥

द्वादस कंवला दरसे मोने, चहूं दिश चमके बीज।
रूम रूम में दीपक जुडियां, ऐसी कुदरत चीज ॥ २ ॥
पीवत पीवत मनवो मेरो, भयो है दिवानो होय।
तीन लोक मुख आगे दिशे, ज्यूं अंजली जल जोय॥ ३ ॥
आ औषध तो आपीज करता, जाणे है पीवण हार।
कह सुखदेव कोई और न जाणे, कोहो मुख सुं संसार॥ ४ ॥

सतगुरु याने अणभै वाणी बनाने वाले संतो ने भेद ज्ञान रूपी औषधि पिलाई है, जिससे चौरासी याने जन्मने मरने का रोग मिट गया और ब्रह्म में जाकर मिल गये याने ब्रह्म रुप हो गये। रग रग रोम रोम नाड नाड में खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड में सब जगह शब्द की ध्वनि होना ही अनन्त बाजा बजना है। उसका अनुभव होना ही अनन्त सूरज उगना है। अला पिंगला सुखमणा में भजन का आनन्द आना ही अनन्त ईन्दर का बरसना है। बारह कंवलो पर शब्द का अनुभव होना ही बारह कंवल दरसना है। विरह के साथ सता का अनुभव होना ही बिजली चमकना है। रोम रोम में शब्द का अनुभव होना ही दीपक जुडना है। ऐसा यह सतशब्द ने:अँच्छर का ज्ञान है। आनन्द लेते लेते उसमें लय होना ही दीवाना कहा है। अंजली का पानी जैसे थिर नहीं रहता, ऐसे ही तीन लोक का सुख थिर नहीं है, यह मेरे को दरसता है। यह साधन अपने आपको करना पडता है तथा इस आनन्द को वही जानता है जो करता है। म:फ है कि परमात्मा के नांव की महिमा सब संसारी करते लेकिन उस नाम का आनन्द तो अनुभव करने वाले ही जानते। बाणी से महिमा करने वाले नहीं जानते।

卐 हरजस पद राग केदारा (१८) 卐

संतो सुणो भेष भूलो जाय। कलजुग आंणर बैठो है घर में, खट दरशन के आय॥ टेर॥
सांग बणायर स्वामी हुवा, भेद न जाणयो कोय।
दुनियां सूं लड लड पेट भरियो, जाय जलम यूं खोय॥ १ ॥
आटो मांगे पईसा जोडे, दे दुनियां में ब्याज।
घर घर को सुण न्यावज चावत, ओ किम होवे काज॥ २ ॥
अमल तमाखु, भांग तिजारो, ऊंडी लाय सताव।
के मेरी सुण पेट मारूं, के पाडू तेरी आब॥ ३ ॥
खटदरशण सब करणी छोडी, राख्यो तन अहंकार।
कह सुखदेव अरूं बेर भगत सुं, किम ऊतरेला पार॥ ४ ॥

संतो से कह रहे है कि भेख धारी भूल रहे है कि छ: दरशनियो जोगी जंगम सेवडा सन्यासी दर्वेश ब्राह्मण इन पर भी कलजुग का प्रभाव हो गया है। केवल सांग धारण कर स्वामी हो गये लेकिन परमात्मा का भेद नहीं जाना। जनम भर पेट भरने के उपाय में लगे रहे, यही लड लड कर जन्म खोना है। आटा मांगते है, पैसा इकट्ठा कर ब्याज पर देते है। गृहस्थियो के घरो में आपस में वाद विवाद हो जाने पर उसको निपटाने में लगते है तो फिर आत्मा का कार्य कैसे हो, अमल तमाखु भांग तिजारा की मांग करते, नहीं देने पर हठ करते है और इज्जत खराब करने की धमकी देते है। छ: दरशनी सब ही परमात्मा की भक्ति का प्रेम नहीं रखकर केवल शरीर का बडप्पन

अहंकार रखते है यही करणी छोडना है। म:फ: है कि भक्ति करने वालो से प्रेम नहीं रखते तो वह कैसे पार उतर सकते है याने जन्मना मरना कैसे मिट सकता है।

卐 हरजस पद राग केदारा (१९) 卐

ऐसा याकूं निरमल किजे जोय। काड कूड उडाय सारो, करडा पणो दे खोय॥ टेर॥
नाभ अेरण करम कोयला, लोह मन पांचू डार।
सांस उसांस की धवण धंवरे, ज्ञान हथोडा मार॥ १॥
सूरत संडासी में पकड पांचू, नाम घण शिर बाय।
एरण मुख में चोट पडण दे, राछ बणे ज्यूं मांय॥ २॥
पांचा को एक कर सरियो, बीच ना राखे सांध।
जन सुखदेव कहे चौसठ जोगण, बिन बंधने लो बांध॥ ३॥

आत्मा को इस तरह निर्मल करो, इसमें जो बुरे व्यसन व बुरे कर्म है उनको त्याग कर करडा याने अहंकार को भी त्यागो। पांचु विषयो को छोडकर नाभी में स्वांस ऊस्वांस में मन लगाकर ज्ञान से भजन करना ही कर्म रुपी कोयला को जलाना है। पांच विकारो को वश में करके सूरत लगाकर नाम लेना ही घण बाना है। मुंह से भजन करना ही अेरण पर चोट पडना है व शब्द की जागृति होना राछ बनना है। सुद्ध बुद्ध समता लिव सूरत लगाकर भजन करना ही पांचो का एक सरिया करना व सांध नहीं रखना है। म:फ: है कि चौसठ लक्षण व आठ अंग धारण कर भजन करना ही जोगण बांधना है।

卐 हरजस पद राग परज (१) 卐

अेजी तुम सुणता हो गुरु ज्ञानी, गिगन में भंवर गुंजाणा बे॥ टेर॥
चार पांख को कंवल कंठा में, राम रटण धुन लागी।
ज्यां में जीव जुगत कर बैठो, सरब सुवाद रस पागी॥ १॥
अस्टा पांख कंवल दल हिरदे, जहां शीव आसण होई।
मन सो बुद्ध सुध सो सूरता, इन्ही का घर अैही॥ २॥
पांख बतीस नाभ दल कंवला, लक्ष्मी विष्णु विराजे।
पवना सेवक करत बंदगी, मन तेजी होय गाजे॥ ३॥
ज्यां तल कंवल और है दूजा, खट दल पांख लगाणी।
ज्यां में ब्रह्मा मांड घडत है, ऊभय नाड संग आणी॥ ४॥
चौसठ पांख चार ता ऊपर, गणपत करे निवासा।
खूलिया घाट पिछम का मारग, किया मेर घर बासा॥ ५॥
दोय पांख को कंवल त्रिकुटी, निरखत है जन पूरा।
ईडा पिंगला सुखमण जागी, बरसत मुख पर नूरा॥ ६॥
पांख हजार कंवल जहां फूला, कली कली रस छूटा।
जन सुखराम मिल्या सुन्न सागर, हीर अमोलक बूंठा॥ ७॥

गुरु पद का ज्ञान धारण कर भजन करने वालो से म:फ: है कि सुणो, गिगन याने पारब्रह्म से ऊपर शब्द ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे भंवर गुंजार करते है। कंठ कवल पर चार पांख का कंवल है। कंठ स्थान पर सूरत रखकर भजन करना ही राम रटन धुन लगना है। जीव का निवास स्थान कंठ है। कंठ में जीव खाने पीने के सब स्वाद का अनुभव करता है। हृदय में आठ पांख का कंवल है, यहां शिवजी का स्थान है। मन बुध सुध सूरत का स्थान भी यही है। बतीस पांख का कंवल नाभी में है। लक्ष्मी विष्णु का स्थान भी यही है। सांस उसांस नाभी से उठता है, इसलिये सेवक कहा है। उसके आधार से भजन होना ही बदंगी करना है। मन को आनन्द आना ही तेजी से गरजना है। नाभी के नीचे दो कंवल है। एक ब्रह्मा का स्थान जहां छ: पांख का कंवल है। वहां से सृष्टि की उत्पति होती है। यहां दो नाडिया साथ है, एक वीर्य की व एक मूत्र की है। चोसट पांख के उपर चार पांख का कंवल है। जहां गणेश स्थान गुदा घाट पर है। यहां से ही पिछम का रास्ता खुलता है और यहां से चलकर मेरूडण्ड पर जाकर ठहरते है। त्रकुटी में दो पांख का कमल है, जिसका अनुभव वहां पहुंचे हुये जन ही करते है। अला पिंगला सुखमणा मेरूडण्ड से जागृत हो यहां ही आ मिलती है। यहां आनन्द आना ही नूर बरसना है। जहां हजार पांख का कंवल है, वहां कली कली से इमरत झरता हुवा अनुभव होता है, यही रस झरना है। म:फ: है कि सुन्न सागर याने पारब्रह्म से परे निरंजन पद में के:पद का अनुभव कर आ: पद में लय होना ही हीर अमोलक बूंठना है।

卐 हरजस पद राग परज (२) 卐

ऐजी तुम सुणता हो गुरु ग्यानी, गिगन में सेहेर बसाया बे॥ टेर॥
कुओ बेह पाताल अगम कूं, बेल शिखर दिश जावे।
बाडी ऊपर बाग लगाया, पिछ पिया घर जावे॥ १॥
आज खेल एक अजब तमाशा, अजब ख्याल दिखलाया।
हल बिन बैल बीज बिन हाली, हासल खूब चलाया॥ २॥
माली मगन भया मन मेरा, फूला सूं फल आया।
जन सुखराम पाक हुवा निरभै, अमर अलख घर पाया॥ ३॥

गुरु पद का ज्ञान धारण कर भजन करने वालो से म:फ: है कि पारब्रह्म से ऊपर गिगन में सतशब्द का अनुभव होना ही गिगन मे सेहेर बसाना है। सतगुरु विधि से भजन करने पर सत शब्द कंठ कंवल पर प्रकट होकर बीच के कंवलो को पार करता हुआ शेष के स्थान में अनुभव होना ही बेल पाताला जाना है। शेष के स्थान से बंकनाल के रास्ते ऊपर चढना ही बेल का शिखर दिश जाना है। मेरूडण्ड से आगे पारब्रह्म से ऊपर गिगन में पहुंचना ही अगम में जाना है। शरीर रूपी बाडी के ऊपर पार ब्रह्म के ऊपर गिगन में शब्द का अनुभव होना ही बाग लगाना है। शरीर में सब जगह अनुभव होना ही पीछ का पीना है। बिना हल बीज हाली के शब्द का अनुभव होना व आनन्द आना ही हासल खूब चलाया है। यही आज खेल एक अजब तमाशा है। मन रूप माली को बहोत प्रसन्नता हुई। परमपद की प्राप्ति होकर आनन्द आना ही फूला सूं फल आना है। म:फ: है कि पूर्ण परमानन्द में लय होना ही पाक होकर अमर अलख घर पाना है।

卐 हरजस पद राग परज (३) 卐

ऐजी तुम सुणता हो गुरु ज्ञानी, गिगन में अनहद बाजे भारी ॥ टेर ॥
हम गुरु ज्ञान धारियो ऊर में, सतगुरु किरपा किनी।
कागद बिन अंछर बिन अंछर, बस्त अमोलक चिनी ॥ १ ॥
मन कूं घेर मता में लाया, सुरत शब्द घर पाया।
मन ओर पवन मिल्या नाभी में, उलट शिखर दिश आया ॥ २ ॥
जन सुखराम अमर घर बोले, सुण लिजो जन लोई।
अमर लोक की चाह होवे सो, राम रटो सब कोई ॥ ३ ॥

गुरु पद का ज्ञान लेकर भजन करने वालो से म:फ: है कि गिगन में याने पारब्रह्म में बिना ही किये हुये शब्द की ध्वनि हो रही है, यही अनहद भारी बाजना है। हमने जो गुरु पद का ज्ञान धारण किया जब सतशब्द की जागृति हुयी, यही सतगुरु की कृपा है। अँच्छर नहीं है और कागज पर लिखने में नहीं आता, उस ने:अँच्छर का अनुभव होना ही अमोलक वस्तु का चिनना है। मन लगाकर भजन करने पर ही सूरत से शब्द का अनुभव हुआ। मन और श्वांसा दोनो नाभी में मिलने पर शब्द पिछम दिशा में उलटकर पारब्रह्म से ऊपर अनुभव हुवा, यही शिखर में आना है। सब भक्ति करने वालो से म:फ: है कि जिनको के:पद आ:पद की प्राप्ति करनी है वो सतगुरु विधि से राम राम करो। के:पद की प्राप्ति कर अनुभव कर बोलना ही अमर घर बोलना है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (१) 卐

बंदा जाग जाग नर जाग रे। सोयर काय बिगुचे मूरख, उठ भजन सुं लाग रे ॥ टेर ॥
तो शिर गजब काल की आई, सब कुल देखत लूटे।
तीन लोक ओ राम बिना रे, काहूं जाय न छूटे ॥ १ ॥
तेरी जोय फजिती व्हेला, अंतकाल के मांही।
पडसी मार घणी गुरजां की, कोय छुडावे नांही ॥ २ ॥
नरक कुंड दोजख दुख भारी, परलो कयो न जावे।
गरभवास में ऊंदो टेरे, झीणा दुख बोह पावे ॥ ३ ॥
चेते क्यूंनी अचेत अंधा, क्यूं जित्योडो हारे।
कह सुखराम बाज तीतर ज्यूं, जम तोय पटक पिछाड़े ॥ ४ ॥

भक्ति करने वालो से फ: है कि भजन करने के सिवाय अन्य वृतियो में लगना ही सोना है और सोकर समय को वृथा क्यों खोता है, उठकर भजन करो। काल निरन्तर तेरे सिर पर चक्कर खा रहा है और सारे कुल के देखते देखते तुझे ले जायेगा, यही लूटना है। तीन लोक में कही भी रहो, रामजी की भक्ति बिना काल के चक्कर से बच नहीं सकते। अंत समय में तेरी बडी खराबी होगी। जमराज के दूत ले जावेंगे और गुरजो की मार खानी पडेगी। वहां कोई छुडाने वाला नहीं है। नरक कुंडो के दुख बडे भारी है। जन्मने मरने याने प्रलय का दुख कहने में नहीं आता। गर्भवास में उलटा लटकना पडेगा और गर्भवास में बहोत दुख भोगने पडेंगे। तू भजन क्यों नहीं करता। मनुष्य जन्म मिला, यही जीत का पासा है, उसको क्यों हारता है। म:फ: है कि जिस तरह बाज तीतर को मार देता है, उसी

प्रकार काल याने जमराज तुझे मार देगा।

卐 हरजस पद राग सोरठ (२) 卐

बंदा शरण सबल की गेह रे। निरबल शरण सकल जम तोडे, एक पारब्रह्म की रेह रे॥ टेर॥
अेसो जबर काल कसाई, तीन लोक चुण खावे।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, शक्ति, सब शिर ताल बजावे॥ १॥
ओऊं शब्द अजपो कहिये, फेर त्रिगुटी को ध्यानी।
सुर नर जोगी शकल जम खाया, खाया पीर मत ज्ञानी॥ २॥
जो जन सुणो काल सूं जीतो, ऊलट चडो आकासा।
कह सुखराम चाड मन पवना, करे आद घर बासा॥ ३॥

नर नारियों से फ: है कि पारब्रह्म परमात्मा ही सबल है, उसकी शरण लो। माया का ऊपजने खपने वाला सरूप है, वो निर्बल की शरण है। उनकी शरण लेने वालो को काल मार देता है। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव की आयु अवधि है इनको भी काल नहीं छोडता, श्वांस के आधार पर ओऊं सोऊं का जपा अजपा करने वाले त्रिकुटी में ध्यान करने वालो को, देवताओ व मनुष्यो को, योग की साधना करने वाले योगी को, पीरो को तथा मन से ज्ञान करने वाले ज्ञानियों को सबको काल खा जाता है। जिन भक्ति करने वाले जनो को काल से जीतना हो वे सतगुरु विधि से भजन करके बंकनाल में उलटकर ब्रह्मण्ड में पहुंचो। म:फ: है कि मन और श्वांसा से अलग होकर के:पद आ:पद की प्राप्ति करना ही आद घर बासा है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (३) 卐

दुनिया भरम मांय भूलांणी। पूजे नकल असल की निंधा, बोले मैं ते बांणी॥ टेर॥
सरप मांड पूजणे जावे, असल नाग कूं मारे।
सांचा साहिब घट में बैठा, ध्यान पत्थर को धारे॥ १॥
पीतल को नरसिंघ बणायो, सब पूजण को आवे।
असल नाहर कूं देर नगारा, सब मारण कूं जावे॥ २॥
माटी की गिणगोर बणावे, पूजे लोग लुगाई।
घट घट ईसर गवर बिराजे, तांकी खबर न कांई॥ ३॥
भग लिंग नकल जाय सींचे, असल जिणा की निंधा।
कह सुखराम जगत यो पिंडत, झूंठ भरम सूं बिंधा॥ ४॥

सारा संसार भरम में भूल रहा है कि शरीर रूपी नकल की पूजा करते है और परमात्मा का नांव व ग्यान असल की निंदा करते है व तेरी मेरी करते है। सांप मांडकर पूजा करते है और असली सांप को मारने दौडते है। परमात्मा सत है जो घट में है, लेकिन ध्यान पत्थर का करते है। पीतल का नरसिंघ बनाकर उसकी पूजा करते है। असली सिंह आने पर नगारा लगाकर मारने जाते है। गणगोर मिट्टी की बनाकर लोग लुगाई पूजा करते है, परन्तु घट में शिव पार्वती विराजमान है उसकी खबर नहीं है। भग लिंग नकल बनाकर पूजा करते है और असल की निंदा करते है। म:फ: है कि संसार व पंडित झूंठ व भरम में लगे हुये है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (४) 卐

संतो ओ जुग बडो अज्ञानी। असत बस्त कूं सत बतावे, सत असत कर मानी॥ टेर॥
स्पर्श चीज धरम की पेडी, ताकूं करम ठहरावे।
अमल तमाखू मूल पाप को, वो सबके मन भावे॥ १॥
साध जका कूं कह भक्तिया, करमी कूं कहे मोटा।
आनदेव कूं लुल लुल पूजे, महाप्रसाद कूं खोटा॥ २॥
कन्या असल धरम को कुपो, सो जलमिया होय कारो।
पुत्र जलमिया थाल बजावे, सो करमा को भारो॥ ३॥
खट करम ऊठ करे नित कोई, जाकूं जोर सरावे।
कह सुखराम तत्त का भेदी, तांकी निंदा गावे॥ ४॥

संतो से फ: है कि संसार बडा अज्ञानी है, माया असत है, उसको सत बताते है। परमात्मा का नांव सत है, उसको नहीं भजते। यही असत बताना है। शास्त्रानुसार सृष्टि उत्पति धर्म है लेकिन उसको करम बताते है। अमल तमाखू जो पाप का मूल है, उसका सेवन सब करते है। वो सबको अच्छा लगता है। सतशब्द की भक्ति करने वाले साध को साधारण भगत समझते है और जो कर्मकाण्ड करते है, उनको बडा मानते है। आनदेव जो माया का स्वरूप है, उसकी झुक झुक कर पूजा करते है। परमात्मा का निज नांव जो महाप्रसाद है, उसे धारण नही करते। कन्या के निमित जो खर्च किया जाता है, उसे पूण्य मानते है। पर उसके जन्म होने पर बडा दुख मानते है। पुत्र के होने पर खुशी मनाते है, जिसके लिये कर्म बन्धन कर धन इकट्ठा करना पडता है। यही करमो का भारा है। खट करम हमेशा करते है, उनकी सराहना करते है। म:फ: है कि जो ब्रह्म प्राप्ति का भेद जानने वाले है, उसकी निंदा करते है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (५) 卐

जुग में एक भरम है भारी। ज्यांसुं शिष्ट सकल पैदा व्हे, ब्रह्मा विष्णु शिव धारी॥ टेर॥
करम गिणे शकल सो बरते, छाने प्रगट सोई।
साहिब निमत उजागर होवे, दे नहीं सके कोई॥ १॥
हीरा पन्ना मुंगियां देवे, अन्न जल रस सब सारा।
स्पर्श कूं कहो कान न मांडे, ऐसा नेष्ट विचारा॥ २॥
कह सुखराम जिका हर चिन्यो, ज्यांरी दुबध्या भागी।
और शकल तो सुर नर मुनी, लाय शकल घर लागी॥ ३॥

संसार में एक बडा भारी भरम है, जिस विधि से सृष्टि की उत्पति होती है वही विधि ब्रह्मा विष्णु महादेव ने भी धारण कर रखी है। संसार उत्पति के कार्य को कर्म गिनते है लेकिन उसे सब गुप्त या प्रगट रूप से काम में लेते है। परमात्मा की प्राप्ति के लिये भी इसको त्याग नहीं सकते। हीरा पन्ना मूंगा अन्न और जल यह देने के लिये तैयार हो जाते है। लेकिन स्पर्श ईन्द्री का सुख जो नेष्ट विचार है, उसको नहीं त्याग सकते है। म:फ: है कि जिन्होंने परमात्मा को प्राप्त किया, उनका द्वेत भाव मिटा है। बाकी देवता मनुष्य या मुनि हो, उनका नहीं मिटा, यही लाय शकल घर लगना है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (६) 卐

पांडे समज्या यूं तत्त धारे। पाहण सेवे, जड है माया, ताकूं दूर बिडारे॥ टेर॥
एक नार की नकल बणाई, एक असल सो आवे।
अण समझ के दोनो सरभर, समज्या सागे चावे॥ १॥
कुवे की एक नकल बणाई, एक असल सो किया।
पिणीयारयां की भीड कीसे पर, प्यासे कहां चित दिया॥ २॥
गाबा गाल बणायो ओदर, एक मास नव जावे।
कह सुखराम ख्याल है वांको, दुजी पुत्र खिलावे॥ ३॥

पंडित से म:फ: है कि परमात्मा के निज नांव को समझकर धारण करो। पत्थर जड है उस की पूजा करते समय वह माया है, जो समझे हुवे है वो नहीं करते। एक स्त्री की नकल बनाते है, एक असल स्त्री होती है। अज्ञानी के लिये दोनो बराबर है पर समझदार असली को चाहता है। एक कुवे की नकल बनाते है और एक असली कुवा है। पर प्यासा व पिणीयारयों की भीड असली कुवे पर जावेगी, नकली कुवे पर नहीं। एक पेट पर कपडा बांधकर पेट को बढा लेती है एक के नो महिने में जन्मता है। म:फ: है कि कपडो से पेट बढाने वाले के संतान नहीं होती और दूसरी नो महिने बाद पुत्र खिलाती है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (७) 卐

बांभीडा खीज काय दुख पायो। है तो एक फेर करणी को, ताते बटो लगायो॥ टेर॥
बस्तर शकल पेड में सुती, मोल पोत रंग लारे।
खेत एक मोल सो न्यारी, देही जात गुण सारे॥ १॥
जडी शकल नीर सुं ऊपजी, एक मास एक दाडे।
एकण सब ही रोग गमाया, एक उलट फिर पाडे॥ २॥
बोलण हार जीभ है एकी, आहिज जीते आ हारे।
कह सुखराम बंधावे रसना, आहि विष ऊतारे॥ ३॥
लोहो सो एक जात में बटो, करडो कंवलो जोवे।
पारस लागा एक सोलवों, दूजो छाछियो होवे॥ ४॥
कदली पडयो कपूर कहाणो, अही मुख विष होई।
सीप पडे सो मोती होवे, जात धाम गुण जोई॥ ५॥
कबु एक कसर पडया सूं, भोपत मेले नीरसी जागा।
यूं सुखराम पाछली कसर, नीच जात नर बागा॥ ६॥

बांभी से कह रहे है कि तू छीज कर क्यों दुख पाता है, आत्मा तो प्राणी मात्र में एक है। लेकिन करमो के फरक से नीच योनी में जन्म लेना पडा। कपडा रूई के सूत से बना है पर जैसे रंग व पोत होता, वैसी ही कीमत होती है। सब शरीरो में आत्मा एक है पर जैसी जाती व गुण होता है वैसी ही कीमत होती है। सब शरीरो में आत्मा एक है पर जैसी जाती व गुण होता है उसी जाति का शरीर कहलाता है। सब जडिया पानी से एक दिन व एक महिना में ही पैदा होती है लेकिन एक जडी

से रोग जाता है व एक जडी से रोग पैदा होता है। बोलने वाली जीभ सबके एक है, इसी से जीत व इसी से हार होती। यही बन्धन में डालती, यही छुडाती है, यही विष उतारना है। लोहा तो सब एक है, लेकिन जाति से दो तरह है, एक नरम एक सख्त होता है। पारस लगने पर नरम लोहा अच्छा सोना। दूसरा हल्का होता है। स्वाति नक्षत्र की पानी की बूंदे एक सरीसी बरसती है। लेकिन केले में पडने पर कपूर, सांप में पडने पर जहर तथा सीप के मुंह में पडने पर मोती होता है। मनुष्य जीवन धारण करने पर जो तीन लोक की मर्यादा का उल्लंघन करता है तो उसे अगले जन्म में ब्रह्मा विष्णु महादेव नीची जाति में भेज देंगे। ऐसे ही पिछले कर्मों के फल से नीच योनि में जन्म लेता हैं।

卐 हरजस पद राग सोरठ (८) 卐

मन रे करड़ी बिना सब काची, ललफल मांय नहीं फलदायक, काहा बुरी काहा आछी॥ टेर॥

भजन करे तो करे करारो, दास भाव सुध होई।
ज्ञान गहे तो फटक पिछाटी, निरभे मत ले जोई॥ १॥
त्याग करे तो तज घर आदु, ज्यां सुं हंसो आयो।
पांचू भूत तीन गुण माया, मेहतत जिकण बणायो॥ २॥
तपस्या करे तो ताव ओ देणो, मन को कयो न कीजे।
सतगुरु ज्ञान कह ज्यूं करणो, परा भक्ति चित दीजे॥ ३॥
तिरथ करे तो कर अडसठ रे, एको भूल न जावे।
तन मन खोज ऊलट गढ चढणो, ब्रह्म अगन में नहावे॥ ४॥
सेवा करे तो कर नर ऐसी, उलट तोय समावे।
दशवें द्वार बिराजे सायब, रूम रूम जस गावे॥ ५॥
ममता मार जिकण ए जाया, शुभ अशुभ न दोई।
धीया परण मांड घर अेसो, अमर पूत ज्यां होई॥ ६॥
सूरे सपुछी जिण घर बांधो, अमरलोक में दूजे।
तीन लोक में फिरे भटकती, ज्यां ने मूरख बूजे॥ ७॥
मन कूं थोब निज मन करणा, रस विज्ञान पिलावे।
कह सुखराम धार शिर सतगुरु, अमरलोक यूं जावे॥ ८॥

मन को फः है कि निज मन से काम करना करडा पणा है। बिना मन से काम करना ही कच्चा पणा है, बिना मन से अच्छा बुरा कोई भी कार्य करो, उससे कोई कार्य सिद्ध नहीं होता है। दास भाव धारण करके सतगुरु विधि से भजन करना ही करारा भजन करना है। सुधी के साथ मत ज्ञान, सूरत ज्ञान, अवध ज्ञान, मन परचा ज्ञान, इन चारो को अनुभव कर केवल ज्ञान का अनुभव करना ही फटक पिछाड कर निरभै मत जोना है। सतशब्द के साथ आत्म चेतन से होणकाल पारब्रह्म का पद को पार कर के:पद आ:पद की प्राप्ति करना ही आद घर त्यागना है। पांच तत्व, तीन गुण, माया इन सबकी होणकाल पारब्रह्म से उत्पति है। मन के विचार के माफिक नहीं कर सतगुरु के ज्ञान माफिक परा भक्ति प्राप्त करना ही तपस्या करना है। तीरथ करो तो अडसठ ही करो, जो घट में ही

है। तन मन से भक्ति करके उलट कर के:पद आ:पद की प्राप्ति करना ही ब्रह्म अग्नि में नहाना है। सेवा करे याने भक्ति करे तो इस तरह की करे कि बंकनाल के रास्ते होकर दशवे द्वार में सतशब्द का अनुभव होना ही सायब का बिराजना है। भजन करने से रोम रोम में शब्द का अनुभव होना ही जस गाना है। ममता को समाप्त कर शुभ अशुभ दोनो वृतियो को भी छोडकर ऐसी भक्ति करो जिससे आत्मा को अमरपद की प्राप्ति हो जाये। सब अंगो से ऐसी भक्ति करो जिससे अमर लोक के आनन्द की प्राप्ति हो जावे, यही सूरे सपूछी का अमरलोक में दुजे है। जिस भक्ति से तीन लोक में आना जाना नहीं मिटता, उसे ही धारण करते है, वे बेसमझ है, उसे ही भटकना कहा है। मन को विचारो से हटाकर निज मन से भक्ति कर के:पद में जो बिना किये अखण्ड भजन होता है, उसका आत्म चेतन द्वारा अखण्ड होना ही रस विज्ञान पिलाना है, म:फ: है कि ऐसे सतगुरु का ज्ञान धारण करके अमर लोक की प्राप्ति करो।

卐 हरजस पद राग सोरठ (९) 卐

पांडे से सब मधम कहावे। तांबा भखे पीवे ले नासा, सो सट परले जावे॥ टेर॥
कंदमूल ऋषिया खिण खाया, औरत भी संग कीवी।
चोरी फेर करी ऋष संता, तांबा किणीहन पीवी॥ १॥
रामकृष्ण जुग राज सो किया, घर घरणी सुण राखी।
बांध क्रोध जीव खल मारया, तांबा किणीहन चाखी॥ २॥
माटी भखी झूंठ सो बोल्या, दया हीण भी कवाया।
कह सुखराम इसा कर्म किया, पण तांबा पीवी न भाया॥ ३॥

पंडितो से फ: है कि जो तमाखु खाते पीते व सूंघते है सो सब मद्यम कहलाते है और चौरासी में आते जाते है। ऋषियो ने कंदमूल खोदकर खाया, स्त्रीया भी साथ रखी, ऋषियो ने चोरी भी की, परन्तु तमाखु को काम में नहीं लिया। राम कृष्ण ने जगत में राज किया। घर में रानियां रखी, क्रोध करके दुष्टो का संहार किया, परन्तु तमाखु का किसी ने सेवन नहीं किया। माटी भखी, झूंठ भी बोले, जगत में दया हीन भी कहलाये। म:फ: है कि ऐसे कर्म भी किये, परन्तु तमाखु को नहीं पिया।

卐 हरजस पद राग सोरठ (१०) 卐

पांडे समझ वाद सो कीजे। बिन समज्या सो थापे उथापे, ज्यां में क्या ले दीजे॥ टेर॥
चारूं वेद दही सम है, घिरत संत सो बाणी।
तत्त नाव सो हंस तिरत है, सो मैं कहूं बखाणी॥ १॥
वेद पुराण समंद है भाई, ज्यां में हीरो डारयो।
मरजीवा बिन परथ न लादे, पच पच जनम गमायो॥ २॥
मैं ओ रतन धरयो है बारे, सुण लीज्यो नर नारी।
कह सुखराम चाह कारज की, मानों बात हमारी॥ ३॥

पंडितो से फ: है कि समझकर वाद विवाद करो, बिना समझ के वाद विवाद करता है उसमें कुछ सार नहीं है। चार वेदों का ज्ञान दही के समान है, संतो की बाणी घीरत के समान है, पारब्रह्म

परमात्मा के निज नांव से हंसो का उद्धार होता है। सो मैं तुमको सच कहता हूं। वेदो व पुराणो के ज्ञान में नाम की महिमा है। समुद्र में हीरा है याने केवल ग्यान है परन्तु मरजीवा के बिना पींदे से हीरे नहीं ला सकते, पच पच करके जन्म चले जावे, सतगुरु सुखरामजी मरजीवा बनकर समुद्र से रत्न निकाला है। सो नर नारी सुणो, मेरा अणभै ग्यान है सो हीरे है, ये बाहर जगत में चौडे है, जिस हंस वृति आत्मा को परमात्मा से मिलना है तो हीरे रूपी केवल ग्यान धारण करके सांस उसांस में राम नाम को रटो।

卐 हरजस पद राग सोरठ (११) 卐

पंडित यामें कुण है न्यायी। डूबे कोण ऊधरे यामें, सूरग नरक कुण जाई॥ टेर॥
मुसलमान गाय कूं मारे, हिन्दू सो कर जोड़े।
तुरक सूर की पूजा ठाणे, हिन्दू झटके तोड़े॥ १॥
तुरक ब्याव चौमासे मांडे, हिन्दू तपत सियाले।
मुसल्ला दोष न माने एकी, हिन्दू दस सुण पाले॥ २॥
पंथ मारग में नार अपल है, और शकल सिर काटे।
मुसलमान सब भेला जीमे, हिन्दू बरते घाटे॥ ३॥
दूध टाल शकल के परणे, तुरक कबीले मांही।
कह सुखराम हिन्दू कुल टाले, साख अडे ज्यां हां तांई॥ ४॥

पंडितो से फ: है कि इन दोनो में सच्चे रास्ते पर कौन है। कौन इसमें डूबता है व किसका उद्धार होता है। कौन स्वर्ग में कौन नरक में जाता है। मुसलमान गाय को मारते है, हिन्दू हाथ जोडते है। सूर की आन मुसलमान मानते है। चौमासे में मुसलमान ब्याव करते है और हिन्दू गर्मी व सर्दी में ब्याव करते है। मुसलमान एक भी धर्म को नहीं मानते, हिन्दू धर्म के दस लक्षण धारण करते है। कूंडा पंथ मार्ग वाले भोग विलास से ही परमात्मा की प्राप्ति मानते है और सभी शास्त्रों की मर्यादा को नहीं मानते। मुसलमान सब शामिल खाते है, हिन्दू अपनी अपनी जाति के साथ जीमते है। मुसलमान माता का दूध टालकर सबके साथ शादी कर लेते है। महाराज फ: है कि हिन्दू अपने कुल की साख टालकर शादी करते है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (१२) 卐

पंडित अरथ अरथ को किजे। आल जंजाल छोड सब सारा, नांव नांव को लिजे॥ टेर॥
दोय पुरूष दोय नार कहावे। दोय खोज धर माथे।
जे कोई आंण बतावे तीजो, चलुं उन्ही के साथे॥ १॥
पांच पुरूष किसा बिना पाणी, खट छाया बिन होई।
दोय दूध सूं दूध बतावे, सो पंडित सुण होई॥ २॥
लेणे को हर नाम भला है, देणे कूं अन्न सारा।
कह सुखराम बतावे तीजो, जां सूं ऊतरे पारा॥ ३॥

पंडितो से महाराज फरमाते है कि अर्थ का अर्थ करो यानि जो यह नर शरीर मिला है इसकी क्या उपयोगिता है, इससे क्या किया जा सकता है। यह जो अर्थ मिला है उसको काम में ले लो।

जितनी भी जगत की बाते है उनको छोडकर जिस नांव से सतशब्द प्रगट होता है वो नाम रट ले। दो पुरूष यानि एक नर व दूसरा ब्रह्म परमात्मा। दो नारी यानि एक स्त्री व दूसरी माया। इनका वर्णन शास्त्रो में मिलता है। अब कोई आकर तीसरा पुरूष बतावे तो मैं उनके साथ चलूं। यानि तीसरा पुरूष है सतशब्द। पांच पुरूष बिना पाणी के पांच तत्व है तथा छठा सतशब्द है जिसके किसी की छांया नहीं। दो दूध में एक माता का व दूसरा जानवरो का दूध। यह तो सब जानते हैं। तीसरा दूध यानि कूदरत कला ने:अक्षर जिसको इसका ज्ञान है वो ही पंडित है। अब जगत में परमात्मा का नाम रटना ही अच्छा है और दान के लिये अन्नदान श्रेष्ठ है। म:फ: है कि जो तीसरा ज्ञान बतावे अर्थात सतशब्द की जागृति करावे जिससे आत्मा का जन्म मरण मिट जावे यही तीसरा ज्ञान है। इसे ही गीता में क्षरबह्म, अक्षरबह्म व ने:अक्षर ब्रह्म का ज्ञान बताया है। दो ज्ञान तो सब जानते है तीसरा संत जानते है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (१३) 卐

पांडे मैं च्यार बरण सुं न्यारा। मोकूं लखे कोई बिरले जुग में, बोहत बसे संसारा॥ टेर॥
बामण वैश्य नहीं मैं क्षत्री, ना मैं शुद्र कहाया।
तीन लोक तेरह कुल बारे, सो अवस मैं भाया॥ १॥
छ: दरशण छतीसुं पाखण्ड, अे सब हद के मांही।
भेष बणाय फिरे बैरागी, मैं इन्ही में नांही॥ २॥
हिन्दू तुरक पखा मिल दोई, या मज बास न मेरा।
जन सुखराम मोख में जाणो, गिगन मंडल शिर डेरा॥ ३॥

ब्रह्मज्ञानी व पंडितो से म:फ: है कि मैं चार वर्णो से अलग हूं। संसार में बहुत बसते है परन्तु मेरे ज्ञान को कोई बिरला ही समझ सकता है। मैं न तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य न शुद्र हूं। तीन लोको से अलग हूं, तेरा कुल याने कश्यपजी के तेरह रानियों से ही सब कुल की उत्पति हुई, इसलिये तेरा कुलो से बाहर नहीं हूं। छ: दरशणी व छत्तीस ये सब पाखण्ड है, यह सब हद में ही है। जो बैरागी भेष बनाकर फिरते है, मैं उनमें भी नही हूं। मैं न हिन्दू हूं, न मुसलमान, इनमें मेरा बास नही है। म:फ: है कि यदि मोक्ष में जाना चाहते हो तो गिगन मंडल में पहुंचकर आ:पद की प्राप्ति करो।

卐 हरजस पद राग सोरठ (१४) 卐

पांडे अंतकाल कहां जावो। परणयो पीव छोड तुम दीनो, आन भर आंण बतावो॥ टेर॥
सुरगुण कथो बहुत बिध मीठो, सत सरूप बणावो।
व्हो आचार आंख में अंजन, दुनियां ठग ठग खावो॥ १॥
जिसने या देही ज्यान रची है, नख चख सरब बणाया।
तांको नांव छिपावो पांडे, आन भर आण बताया॥ २॥
तुम तो बुवा जात हो पांडे, दुनियां शकल बुवाई।
कह सुखराम पीव को छोडकर, पतिव्रता कौन कवाई॥ ३॥

पंडितो से फ: है कि अन्तकाल में कहां जावोगे, जो पारब्रह्म परमात्मा की भक्ति तो तुमने छोड दी। सत की भक्ति को छोड़कर आन की भक्ति में लग गये हो। आन रुपी शरीर की रात दिन महिमा

करते हो व उसे ही सतस्वरुप बताते हो। बहुत तरह के आचार विचार धारण करके संसार को ठग ठग खाते हो। जिस परमात्मा ने इस जगत की रचना की है व नख से चख तक सारा शरीर बनाया है, उस परमात्मा का नांव छिपाते हो तथा आकारियों की जो उपजते खपते है उनको ही ब्रह्म बताते हो। हे पंडितो तुम तो डूब रहे हो व सारे जगत को क्यों डूबा रहे हो। म:फ: है कि जिसने अपने पति को छोड दिया हो वो पतिव्रता कैसे कहला सकती है। आत्मा सत है, वह सत की भक्ति को छोडकर असत की भक्ति करती है तो वह पतिव्रता कैसे हो सकती है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (१५) 卐

पांडे नेहचल ज्ञान विचारो। तांसु शिष्ट शकल होई आई, आप शकल सुं न्यारो॥ टेर॥
सतो रजो गुण तामस तीनूं, है हद का बोहारा।
केती वार उपज खप जावे, जन्मा को वार न पारा॥ १॥
केती वार किया फिर करसी, तीन लोक जुग सारा।
वो सतशब्द खोज तुम लिज्यो, उलट काल कूं मारा॥ २॥
जां लग उपजे खपे मरे रे, सो सायब की माया।
कह सुखराम ब्रह्म के बारे, होय काल खिण खाया॥ ३॥

पंडितो से फ: है कि पारब्रह्म पद का ज्ञान करो, उससे ही सारी सृष्टि की रचना हुई है। वह सबसे अलग है। सतोगुण विष्णु, रजोगुण ब्रह्मा, तमो गुण शिवजी की भक्ति हद याने तीन लोक में ही रखने वाली है। ये कितनी ही बार उपज गये और कितनी ही बार खप गये, इनके जन्मों की कोई गिनती नहीं है। पारब्रह्म के पद से कितनी ही बार सृष्टि व तीन लोक की रचना हो चुकी और कितनी ही बार होती रहेगी। पारब्रह्म परमात्मा के निज नांव सतशब्द की खोजना कर जन्म मरण से रहित हो जावो। जहां तक ऊपजती खपती है वहां तक परमात्मा की माया है। म:फ: है कि ब्रह्म के पद के सिवाय दूसरा ज्ञान करने वालो का जन्म मरण नहीं मिटता। यही होय काल खिण खाया है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (१६) 卐

जोगिया सतशब्द लो भेवा, भजो देव शिर देवा॥ टेर॥
सुखदेव सा केता जुग मांही, जनमत छाड सब दिया।
जे आ मुगत त्याग में होती, जनक गुरु किऊं किया॥ १॥
पांडव पांच छठा नारायण, सरस साध जन कवाया।
जे या मुगत सत में होती, बालमित किऊं लाया॥ २॥
बन के ऋषि शकल मिल सारा, ऊधालख घर आया।
जे या मुगत तप से होती, नासकेत किऊं आया॥ ३॥
हस्तामल जन्म नहीं बोल्या, बरस द्वादस तांई।
जे या मुगत मून में होती, दत पास किऊं जांई॥ ४॥
वेद कुराण पुराण अठारे, सिद्ध साधक की बांणी।
जन सुखराम भेद बिन लाधयां, सबे छाछ अर पांणी॥ ५॥

योग की साधना करने वालो से कह रहे है कि सतशब्द की प्राप्ति करो और पारब्रह्म परमात्मा जो देवताओ के देवता है उनकी भक्ति करो। वेद व्यासजी के पुत्र सुखदेवजी ने जन्मते ही सब का त्याग कर दिया अगर त्याग करने से मुक्ति होती तो राजा जनक को गुरु क्यों बनाया। पांच पांडव व छठा नारायण याने कृष्ण ये सब अच्छे संत कहलाये, अगर ये सत बोलने से मुक्ति मिलती है तो बालमीत को पान्चजन्य शंख के नहीं बजने पर क्यों बुलाया। वन में रहने वाले सब ऋषि उधालकजी के आश्रम पर आये, अपनी तपस्या के बल से नचिकेता को स्वर्ग में भेज दिया, यदि तपस्या के बल से मुक्ति होती तो नचिकेता वापस क्यों आता। बारह बरस तक हस्तामल मुनि मौन रहे, अगर मौन धारण करने से मुक्ति हो जाती तो ज्ञान की प्राप्ति के लिये दतात्रेयजी के पास क्यों जाते। म:फ: है कि सतशब्द के भेद की प्राप्ति के बिना वेद कुराण पुराण और सिद्ध साधको की बांणी छाछ और पानी की तरह है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (१७) 卐

जोगिया गिगन मंडल घर किया। दिन दिन रूप चढे देही पर, महा अमीरस पिया॥ टेर॥
गुरु प्रताप साध संग भेटिया, प्रेम प्रीत तत चीना।
निश दिन राम नांव लिव लागी, बंकनाल रस पीना॥ १॥
गरजी गिगन धरण धूजाणी, जल बिन पवन रस पिया।
नदियां चली पिछम के गेले, सूरत शब्द संग किया॥ २॥
धरमराय शिर पांव दिराया, सूरत शब्द मिल किना।
तीनूं चले मेर सूं आगे, त्रिवेणी सुख लीना॥ ३॥
चंद सूर उलट पलटाया, सुखमण का संग लिया।
आद पुरूष अलख अविनाशी, सो मिल हरिजन जीया॥ ४॥
निश दिन ध्यान लग्या सुन्न मांही, मन निज मन होय चीना।
जन सुखराम मिल्या सुन्न सागर, पीव परस अंग भीना॥ ५॥

सतशब्द की भक्ति करने वाली आत्मा ही जोगिया कहलाती है। सतशब्द की साधना करके पारब्रह्म से ऊपर पहुंचना ही गिगन मंडल घर करना है, उस पद में शब्द का अखण्ड ध्यान होना व अखण्ड आनन्द आना ही देही पर रूप चढना व महा अमीरस पीना है। सतग्यान के प्रताप से व संतो की संगत से प्रेम प्रीत से भजन कर ब्रह्म पद की प्राप्ति की। रात दिन राम नाम का लिव लगाकर भजन करने से बंकनाल में शब्द का अनुभव होना बंकनाल में रस पीना है, स्वांस उस्वांस में भजन करना ही जल बिन पवन रस पीना है। शेष के स्थान में अनुभव होना ही धरणी धूजाणी है। गिगन में शब्द की ध्वनि का अनुभव होना ही गिगन गरजना है। बंकनाल में शब्द का उलटना ही नदियां का पिछम के गेले चलना है। सूरत के द्वारा शब्द का अनुभव होना ही सूरत शब्द संग करना है। सूरत ने शब्द का संग कर के मन रूपी धर्मराय को काबू में कर लिया, यही धरमराय सिर पांव दिराना है। अब मेरुडण्ड से सूरत शब्द और मन तीनूं आगे बढते है और त्रिकुटी पर त्रिवेणी का सुख लीना। चन्द्र सूर भी उलट कर पलट गये और उन्होंने सुखमणा का संग कर लिया। आद पुरूष यानि परब्रह्म अलख अविनाशी से मिल कर हरिजन प्रसन्न है। रात दिन सुन्न याने

निरंजन निराकार पद में सतशब्द के ध्यान का अनुभव होना ही मन का निजमन कर चीनना है। म:फ: है कि सूरत का शब्द में अेक होना ही पीव परस अंग भीना है तथा आ:पद में लय होना ही सुन्न सागर में मिलना है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (१८) 卐

जोगिया गिगन मंडल घर खेले। कामर क्रोध और मन की ममता, गुरु के शब्दा पेले॥ टेर॥
हाथ न पांव परां नहीं पांखा, नेण बेण नहीं बांणी।
अगम अनोप अज्ञाद अगम में, बिरले जन गत जांणी॥ १॥
अला न आभो पवन न पांणी, रूप रंग नहीं काया।
अधर अकेला आप निरंजन, सूरत शब्द संग किया॥ २॥
मात पिता बेहेन नहीं भैया, जात पांत नहीं जाया।
अरध उरध बिच धरी उनमनी, गेबी गेब दिखाया॥ ३॥
तांकी निजर हीर सो आया, कवडी दाय न आवे।
जन सुखराम मिल्या अनघड सुं, सुरगुण सब छिटकावे॥ ४॥

सतशब्द की साधना करने वाली आत्मा जोगिया कहलाती है, वे ही गिगन मण्डल में शब्द की ध्वनि का अनुभव करती है। काम क्रोध और मन की ममता को सतगुरु के ज्ञान से पेले याने हटा दिया। आत्मा को सतशब्द के संग कर दिया। सतशब्द के हाथ पांव परां पाखा नहीं है। उसके न नेत्र न बाणी है वह अगम में है, अनुपम है और अज्ञाद याने ज्ञान से उसकी जानकारी नहीं होती है। विज्ञान द्वारा बिरले ही संत ही उसकी गति जानते है। उस पद में अला याने तेज आभो याने आकाश पवन याने हवा जल ये सब नहीं है। रुप रंग व शरीर नहीं है, सूरत शब्द के मिलने पर ही उसका पारब्रह्म से ऊपर अधर अनुभव होता है। उसके माता पिता बहन भाई नहीं है, न ही जाति पांति है, न जन्मा है, उठते बैठते श्वांस में भजन करने से गेबाऊ प्रकट होता है, यही गेबी गेब दिखाया है। सतशब्द की साधना का केवल ग्यान हीरे के समान है, जिसको सतशब्द रुपी हीरा मिल गया अब अन्य साधन पसंद नहीं आते है। इस तरह आत्मा अनघड परमात्मा से मिल गयी। अब जन्मना मरना मिट गया, यही सुरगुण सब छिटकाना है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (१९) 卐

बंदा गाय गाय हर गाय रे। आन उपास शकल है झूंठी, सो सब ही छिटकाय रे॥ टेर॥
सो शिवरयां सो अमर हुवा रे, काल जम डर माने।
सुर नर मुनि शंकर बंदे तो, बिशन भली विध जांणे॥ १॥
काटे करम आगला सारा, फेर करम नहीं लागे।
भव सब तोड मिले सायब में, सांसो सब ही भागे॥ २॥
बार बार मोसर नहीं आवे, ओ मिनखा तन भाई।
कह सुखराम भजो सायब कूं, जिण या मांड ऊपाई॥ ३॥

बंदा याने मनुष्यो से कह रहे है कि तू पारब्रह्म परमात्मा के निज नांव की भक्ति कर। आन की उपासना से जन्म मरण नहीं मिटता, इसलिये उसको छोड दो। परमात्मा के निज नांव की भक्ति

जिसने की वे अमर हो गये। काल व जम का उन पर प्रभाव नहीं होना ही काल जम का डर मानना है। सतशब्द की भक्ति व केवल ग्यान की देवता मुनी मनुष्य व शंकर सब वन्दना करते है। उनको विष्णु भी भली भांति जानते है। सतशब्द की भक्ति करने से सब करमो का नाश हो जाता है और निष्काम भाव से कर्म करते है इसलिये उन्हे कर्म बन्धन नहीं होता। भवसागर को पार करके परमात्मा में मिल जाते है, इसलिये सब दुख मिट जाते है। मनुष्य शरीर बार बार नहीं मिलता। म:फ: है कि जिसने संसार की रचना की है, उस परमात्मा का भजन करो।

卐 हरजस पद राग सोरठ (२०) 卐

बंदा अन्तकाल पिस्तासी, भजन बिना तेरी चुप चतुराई, सबे धुल में जासी॥ टेर॥
जंवरो जोर जोरावर शिर पे, जीव कूं बांध गुडावे।
कर मुख आगे लेर चले जो, तब आडो कुण आवे॥ १॥
रे नर चेत अचेत अज्ञानी, याहां कोई नहीं तेरा।
निशवासर शिर करम खिवे रे, जम तक तक दे फेरा॥ २॥
तीन लोक में जीव रल बले, भंवता बोह जुग बीता।
कह सुखराम सुणो नर नारी, भक्त करे सो जीता॥ ३॥

मनुष्यो से फ: है कि अन्त समय में पछताना पडेगा, भजन किये बिना तेरी सब हुशयारी व्यर्थ चली जायेगी, जमराज बडा बलवान है, जीव को बांध कर गुडाता है। यमराज मुंह के आगे लेकर चलता है, उसको कौन रोक सकता है। हे अज्ञानी मनुष्य तू चेत, यहां तेरा कोई नहीं है। तू रात दिन करम बन्धन में लगा रहता है, इसलिये जमराज तुझे ले जाने की ताक में लगा रहता है। जब तक जीव तीन लोक में रहता है तब तक जन्म मरण का दुख भोगता रहता है। म:फ: है कि सब ही स्त्री पुरूष सुणो, भक्ति करने वाले ही जन्म मरण से रहित हो जाते है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (२१) 卐

बंदा कहा कियो नर होई। शिरजण हार श्याम तूं बिसरयो, चाल्यो जन्म बिगोई॥ टेर॥
नर नारी यो जगत रिजायो, कर कर सेणप सिपती।
आनदेव कूं निव निव पूजे, राम न सिमरयो विपती॥ १॥
जाग्यो रात करम के कारण, जूंझयो माया काजे।
स्वारथ कूं नर बुरी पलोटे, परमारथ सूं लाजे॥ २॥
किया अंध फंद बोहो तेरा, सिख्यो चुप चतुराई।
एक न सिख्यो राम रहीम को, जिण या मांड ऊपाई॥ ३॥
हरजन ज्ञान कोरडा मारे, तब उत्तर बोहो ल्यावे।
कह सुखराम भूत ज्यों मनवो, डाला पान बतावे॥ ४॥

मनुष्यो से फ: है कि तुने मनुष्य होकर क्या किया, सृष्टि कर्ता परमात्मा की भक्ति को भूलकर मनुष्य जन्म को व्यर्थ में ही गमा कर चला। समझदारी करके उनका हितू बनकर स्त्री पुरूषो व संसार को राजी किया। नेत्रो से दिखते, इन्द्रियो से अनुभव होते है, उन आन की भक्ति करता है और हे दुखियारा तुने रामजी की भक्ति नहीं की। करम करने के लिये व माया जोडने के लिये रात रात

भर जागता है। कितने ही अच्छे बुरे कर्म किये, कितनी ही होशियारी की, पर सृष्टि की रचना करने वाले परमात्मा की भक्ति नहीं की। परमात्मा के हरिजन सत ज्ञान रूपी कोरडा मारते है तब अनेक तरह की बाते बनाते है। म:फ: है कि मन रूपी भूत भी अनेक तरह के बहाना करता है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (२२) 卐

मन रे गाफल चेत सवेरो। ज्यांहा चाले लो त्याहां करम न लागे, काल न घाले घेरो॥ टेर॥
जे लागी तो चेत सभाग्या, सोयर क्यूं नर हारे।
अमर पुरूष मुगत को दाता, वाकूं काय बिसारे॥ १॥
जे सूता सो खरा बिगुता, जम के हाथ बिकाया।
चवदे तीनूं लोक बिचाले, काल बिण सब खाया॥ २॥
क्यूं चित्त सोय रहयो ईण जुग में, ज्यांहा दो जख नित दीजे।
कह सुखराम समझ मन मेरा, भलो आपको कीजे॥ ३॥

मन से कह रहे है कि तू गाफिल क्यों हो रहा है, तेरे मनुष्य जन्म रूपी दिन उदय हुवा है, चेत जा और जिस जगह चल जहां कर्म नहीं लगते व काल भी नहीं पहुंचता। अच्छे भाग्य से तेरे को ज्ञान लग गया है तो अज्ञानता में मनुष्य जन्म व्यर्थ क्यों गंवा रहा है। अमर पुरूष पारब्रहम परमात्मा जो मोक्ष देने वाले है, उनको तू क्यों भूल रहा है। जो अज्ञान अवस्था में है उनकी बडी खराबी होगी, उन्हें जन्म मरण में आना पडेगा। यही जम के हाथ बिकना है। तीन लोक चवदह भवन तक तो काल सोद सोद कर खा जावेगा। हे चित इस जगत में तू अज्ञान अवस्था क्यों धारण कर रखी है। जिससे नरको का दुख भोगना पडेगा। म:फ: है कि हे मन समझ कर अपना भला कर।

卐 हरजस पद राग सोरठ (२३) 卐

बंदा नांव सताबी लीजे। जो कुछ हूंस हुवे दिल भीतर, तो परमारथ कीजे।। टेर।।
तो शिर काल भंवे निश वासर, नित फेरा दे जावे।
कबुयक आंण अचानक जंवरो, काट काटजो खावे।। १।।
ओसर जाय नीर ज्यूं सिलता, पाछे धूल रहे रे।
राम भजन बिन सब पिस्तासी, साध सकल सो कहे रे।। २।।
हंस बटाऊ ओ जुग मेलो, सोदो समझ बसाई।
कह सुखराम बूजकर बिणजे, मूल हार मत जाई।। ३।।

मनुष्य मात्र से फ: है कि नांव जल्दी से लो, अगर दिल में कुछ इच्छा होवे तो परमारथ के कार्य करो। काल रात दिन तेरे सिर पर चक्कर लगा रहा है और ले जाने की फिराक में है। अचानक कभी भी आकर तुमको खा जावेगा। समय नदी के पानी के समान जा रहा है, पानी के बहने पर नदी में धूल रह जाती है, ऐसे ही जीवित शरीर में से चेतन पानी चला जाता है तब मृतक शरीर रूपी मिट्टी रहती है। सभी संत यह बात कह रहे है कि परमात्मा के भजन बिना सबको पछताना पडेगा। हंस परदेशी है और संसार मेला है, इसमें समझकर सतगुरू विधि से भजन करना ही सोदो समझ बसाना है। म:फ: है कि ऐसा ज्ञान धारण करो, जिससे कम से कम मनुष्य जन्म तो पुन:

प्राप्त हो जावे, यही मूल नहीं हारना है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (२४) 卐

बंदा ओर शकल सब शोभा। सींव मांय होय नदी जात है, को किसका जल जोबा।। टेर।।
धरम पुन्न जाको सुण सत है, तन में मन कर देवे।
चित मन सूरत प्राण पे थोबे, नांव सत सो लेवे।। १।।
जोगी सोई प्राण मन जीते, ऊलट गिगन चढ जावे।
जती सांचा सोई जन कहिये, काम ऊतर नहीं पावे।। २।।
अणभै सत जहां भव नांही, और शकल है कहणी।
कह सुखराम शिष है सांचा, गुरू शब्द पर रहणी।। ३।।

मनुष्य से कह रहे है कि दूसरी करणियां कर्म शोभा है, नदी नजदीक में बह रही है उसके जल को किसने देखा। धरम और पुन्न करना उनका ही सच्चा है जो तन मन से करते है। चित मन सूरत प्राण केवल ज्ञान पर लगाकर सत नाम का भजन करते है। जोगी उसे ही कहते है जो प्राण और मन से अलग होकर बंकनाल के रास्ते उलटकर गिगन में पहुंच जाता है। जती सच्चा वही है जिसके काम की वासना नहीं रहती। अणभै ज्ञान से जिस आत्मा के सत आ गया। वे भवसागर में नहीं आते है और सब बाते कहने की है। म:फ: है कि सच्चे शिष वही है जो केवली भगवंतो की अणभै वाणी के उपदेश माफिक चलते है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (२५) 卐

पांडे ओ तो ब्रह्म कहावे, ऊंच नीच किसब है जुग में, करणी सा फल खावे।। टेर।।
सब ही कह सुख दुख मांही, ब्रह्म आज नहीं राजी।
नाम जात अर बरण विचारया, हिन्दू कह न काजी।। १।।
ब्राह्मण होय करे जो नीची, तो चन्डाल कहाई।
सुदर सुख सुण ऊंची खांच्या, तो उत्तम व्हे हो भाई।। २।।
घट में वर्ण चार सो कहिये, सो मैं सोध बताऊं।
मैं तो संग शकल को छाडयो, राम संगत में जाऊं।। ३।।
तामस नीच रीस सो भंगण, झूंठ साटियो तन में।
सिकल विकल सो सांसी सांसण, थोरी डस रहे मन में।। ४।।
लोभ गुलाम चाय सो वेश्या, कले कुंजडो जांणो।
क्रिया हीन सो श्वान काग है, मैं ते दैत बखाणो।। ५।।
भांग तमाखु अमल अरोगे, सुरे पान सूं राता।
सो राकस कह सुखदेवजी, निष्ट बेण मुख बाता।। ६।।

पंडितो से फ: है कि आत्मा तो ब्रह्म है, जगत में अच्छे बुरे कर्म है जो जैसी करणी करता है वैसा ही फल मिलता है। जब सुख दुख आता है तब सब यही कहते है कि आज मेरा जीव याने ब्रह्म राजी नहीं है। ब्रह्म का नाम जाती व वर्ण नही है, न हिन्दू मूसलमान है। ब्राह्मण शरीर होकर नीच कर्म करता है, वो चन्डाल के समान है। शुद्र होकर अच्छे कर्म करता है, वह उत्तम है। इस

शरीर के चार वर्ण है, इन सबका साथ छोडकर रामजी की प्राप्ति करना ही राम संगत में जाना है। तामसी है, वो नीच है, सिकल विकल है, वो सांसी सांसण है। मन में डस रखना है, सो थोरी है। लोभ गुलाम है, चाहना वेश्या है, कलह है सो कुंजडी है, क्रिया हीन सो कुत्ता कौवा है, थारी मारी द्वेत याने राक्षस है, भांग तमाखु अमल का सेवन करते है, शराब पीने में रत रहते है, म:फ: है कि वे राक्षस है, जिनके मुंह से खराब वचन निकलते है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (२६) 卐

पांडे ब्राह्मण कुण बिध बागा। च्यार वर्ण नख चख एकी, एक कंठ एक रागा।। टेर।।
सामी कहो कोण विध कवाया, किम जंगम किम जोगी।
कैसे दरशण वरण बिचारो, किम त्यागी किम भोगी।। १।।
राजा राव बादशाह जुग रे, पूजापत किम बाज्या।
ऊंच नीच अर नारी पुरूषा, काल कोण बिध खाया।। २।।
अे सब अरथ विचार कर चरचा, कुल मारग में आवे।
कह सुखराम नहीं तो तम ही, सब ही सुदर कहावे।। ३।।

पंडितो से फ: है कि तुम ब्राह्मण कैसे कहलाये, चार ही वर्णो के नख चख एक है। सब कंठ से बोलते है। स्वामी जंगम व जोगी कैसे कहलाये, दरशणी व वरण कैसे हुये, त्यागी व भोगी कैसे कहलाये, संसार में राजा राव पातशाह की पूजा प्रतिष्ठा कैसे होने लगी, ऊंच नीच स्त्री पुरूष इन सबको काल कैसे खा जाता है। ग्यान विचार चरचा से अपने कुल की मर्यादा में ही रहना चाहिये। म:फ: है कि अपने अपने कुल की मर्यादा में नहीं रहते है तो सब ही शुद्र है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (२७) 卐

गलतान मता कब आवेगा, जब प्राणी भो सुख पावेगा।
सब संत मता कब आवेगा, जब प्राणी भो सुख पावेगा।। टेर।।
टूटा लावा सुख दुख महिमा, निंदा सुं मुर जावेगा।
बस्ती ऊजड ऊजड बस्ती, गोत सुं जगत दिखावेगा।। १।।
जीवत मुवा मुवा जीव, भरम की भस्म चढावेगा।
चांरू खांण बांण सब मांई, एक ही ब्रह्म दिखावेगा।। २।।
तीनूं चूर चढया गढ ऊपर, सुन्न में सेहेर बसावेगा।
जन सुखराम संत मतवाला, जोत सुं जोत मिलावेगा।। ३।।

ऐसी बुद्धि कब होगी, जब परमात्मा के भजन में गरक हो जावेंगे। संतो के सब लक्षण धारण करने पर ही प्राणी को बहुत सुख मिलेगा। संतो को सुख दुख हानि लाभ निंदा व स्तूति का दुख नहीं होता। लेकिन संत होकर संत वृति नहीं धारण करने पर जो निंदा होती है, उससे दुखी होते है। संसार वृति में मन लगा हुवा है, उसको वहां से हटाकर परमात्मा के ध्यान भजन में लगाना ही बस्ती उजड व उजड बस्ती करना है। सबको आत्मस्वरूप समझना ही गोत सु जगत दिखाना है। मन से ममता हटाकर ध्यान में लय हो जाना ही जीवित मुवा है एवं ध्यान करते हुये सहज वृति

में शरीर का कार्य करना ही मरे हुवे का जीना है। किसी प्रकार का भरम नहीं रहना ही भरमो की भस्म चढाना है। चार खांण व बांण में सबको ब्रहम रूप से देखता है। म:फ: है वो ही आत्मा संत मतवाली है, जो पिंड खण्ड पारब्रह्म को सतशब्द के साथ चूर कर गढ याने के:पद आ:पद में रहने का शहर बसा लेवे।

卐 हरजस पद राग सोरठ (२८) 卐

अवधु ऐसा तत्त विचारिया, काम काज सब सारया।। टेर।।
गीगन मंडल में बालक खेले, रूप बरण सुं न्यारा।
चवदे भवन लोक मिल तीनूं, बालक खेल पसारया।। १।।
खट रस साव पांच रंग किया, सात धात गुण पारा।
सबके मांह शकल संग खेले, हिलमिल सबसे न्यारा।। २।।
खट दल छेद मेर कूं बींध्या, सुरग ईकीसूं न्यारा।
त्रिवेणी संत जाय विराज्या, काल घेर वां मारा।। ३।।
नेणा बिना निरखिया जाई, बिन रसणा बतलाया।। ४।।
सातुं पोल दोय दरवाजा, जहां तीन पुरूष का सारा।
अनहद घूरे अखण्ड धुन मांही, माया रूप पसारा।। ५।।
सोही सुमरे गेल है भाई, तां होय गेल पसारा।
पुगेगा कोई संत सूरवां, तन मन शीश अवांरा।। ६।।
मन पवना काया बस कीना, निरभै नाम ऊचारया।
जन सुखराम चढता जन ऊंचा, पांच पचे पच हारया।। ७।।

अवधु याने मन से आत्मा कह रही है, ऐसा ब्रह्म पद का विचार किया जिससे सारे काम काज सुधर गये, गिगन मण्डल में सतशब्द का अनुभव होना ही बालक का खेलना है। उसके न कोई रूप है, न वर्ण है, तीन लोक चवदा भवन की उत्पति ब्रह्म से हुई है। यही बालक का खेल पसारना है। छ: रस, पांच रंग, सात धातु व तीन गुण इन सबके साथ होता हुवा भी इन सबसे अलग है। पूर्व के छ: कंवल और बंकनाल के इक्कीस सुरगो को छेदन करता हुवा मेरूडण्ड पर पहुंचना ही मेरू को बांधना है। त्रिवेणी में अला पिंगला सुखमणा में ध्यान होने से ही जन्म मरण से रहित होता है। यही काल को घेर मारना है। चर्मचक्षुओ से न दिखकर दिव्य चक्षुओ से देखने में आता है। यही नेणा निरखना है। बिना बाणी के अखण्ड भजन होता है। यही बिन रसणा बतलाना है। जब तक आत्मा नो दरवाजो से जाती है, तब तक तीन लोक में रहती है। तीन लोक पर ब्रह्मा, विष्णु, महादेव का अधिकार है, यही तीन पुरूष का सारा है। त्रिकुटी में बिना किये जो अखण्ड अनहद शब्द होता है, दोनो कानो से सुना जाता है, वो माया के पद में है। मेरू के रास्ते कोई शूरवीर संत ही भजन कर पहुंचते है। मन स्वांसा व शरीर से अलग होकर अधर शब्द का अनुभव होना ही निर्भय नाम उचारना है। म:फ: है कि इस तरह ऊंचे चढते है। तब पांच विषयो से अलग हो जाना ही पांच पचे पच हारया है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (२९) 卐

अवधु उदबुद रीत कहाणी, कोई जानेगा जन मांही।। टेर।।
आसण हमारा गिगन मण्डल में, रहूं जगत के मांही।
मोही को मेरा जन जाणे, दूजा कूं गम नांही।। १।।
रात दिवस रेण नहीं तारा, शशी अर सूरज नांही।
जहां हम जाय बास घर किया, अनहद घुरिया मांही।। २।।
देवल मांय देवरा दरस्या, देव विराजे है मांही।
हात न पांव नेण नहीं जिभ्या, मोहो लिया मुजताई।। ३।।
आठुं पोहर बतीसुं घडिया, हिलमिल बिछडित नांही।
एक निमख जो न्यारा हुवे तो, तडफड जीव कढाई।। ४।।
शिव सो जाय मिल्या शक्ति सूं, शिव मिल शक्त कहाही।
भंवर गुफा में मिल भेला हुवा, खेलत हिलमिल मांही।। ५।।
ताके परे अगम घर जावे, जन मिलियां है मांही।
जन सुखराम जन्म नहीं मरणा, उदबुद रीत कहाही।। ६।।

हे अवधु याने मन यह उदबुद रीत है, कोई परमात्मा के जन अन्दर ही जानेंगे। मेरा आसन गिगन मण्डल में है, शरीर से जगत में रहता हूं। जो मेरे बताये साधन से शब्द की जागृति करके गिगन में पहुंचेगे, वो ही जान सकते है। जहां रात दिन सूर्य चन्द्रमा तारे नहीं है। जहां मेरा बास है। और जहां अन्दर अनहद याने शब्द की ध्वनि घूर रही है। शरीर रूपी देवल में दशवा द्वार देवरा है। व शब्द रूपी देवता बिराज रहे है, उसके हाथ पांव नेत्र जिभ्या नहीं होते हुये भी मुझे मोह रखा है। आठ पोहोर बतीस घडिया सतशब्द का अखण्ड ध्यान होना ही हिलमिल रहना है और एक क्षण भी ध्यान से अलग नहीं होना ही हिलमिल बिछुडत नांही है। एक क्षण भी ध्यान हट जाता है तो जीव को बडा दुख होता है। आत्मा जब तक असत माया के शरीर के साथ रहती है तब तक जीव कहलाती है, जब साधन करके शरीर से अलग हो जाती है तब वह शीव ब्रह्म हो जाती है, लेकिन असत माया के साथ होने से इसका आना जाना नहीं मिटता, जब वह सत माया जिसे सतशब्द भी कहते है, उसको प्राप्त करना ही शिव शक्ति का मिलना है और भंवर गुफा में अखण्ड ध्यान होना ही हिलमिल खेलना है। उसके आगे अगम घर के:पद का अनुभव कर आ:पद में लय होना ही जन मिलियां मांही है। म:फ: है। कि इस साधन से जन्म मरण से रहित होना ही उदबुद रीति है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (३०) 卐

अवधु बिन कल बालक पाया, ता संग करम मिटाया।। टेर।।
माता पिता बेन नही भईया, जात पांत नहीं जाया।।
सुन्न शिखर में बालक खेले, रूप रंग नहीं काया।। १।।
हंसता नहीं कह कुछ नांही, ना मुज कूं बोलाया।
तां संग मगन भया मन मेरा, जग तज शरणे आया।। २।।

बालक बहोत अनोप अजब है, बिन नेणा दिखलाया।
ताकूं शेष महेसर ध्यावे, सो गुरु मोय लखाया।। ३।।
बालक मिल्या मेहर शिर कीनी, मोकूं कंठ लगाया।
जन सुखराम कट्या भो बंदण, जांका जहां चल आया।। ४।।

मन से कह रहे है कि बिना शुभ अशुभ करणी के भक्ति द्वारा सतशब्द का प्रकट होना ही बालक पाना है। उसके साथ से करणी कर्मो से अलग होना ही ता संग करम मिटाया है। सतशब्द के माता पिता बहन भाई व जाति पांति नहीं है। न वो जन्मता है, सुन्न शिखर याने पारब्रह्म से उपर निरंजण निराकार सतशब्द का अनुभव होना ही बालक का खेलना है। उसके रूप रंग शरीर नहीं है, न तो हंसता है, न कुछ कहता है, न मेरे को बुलाता है, उसके साथ मेरा मन मगन हो गया है। संसार की वृतियों से अलग होकर सतशब्द का ध्यान होना ही जग तज शरणे आया है। सतशब्द बहुत अनुपम है, अजब है, बिना चर्म चक्षुओ के अनुभव होना ही बिन नेणा दिखलाया है। शेषजी महादेवजी भी उसका भजन करते है, सो ग्यान गुरू महाराज ने उसकी प्राप्ति करा दी। सतशब्द का प्रकट होना, बालक का मिलना व मेहर सिर करना है। अखण्ड अनुभव होना ही कंठ लगाना है। म:फ: है कि जन्म मरण से रहित होकर परमात्मा की प्राप्ति करना ही जहां का तहां चल आया है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (३१) 卐

अवधु सो बालक जन पावे, सतगुरु भेद बतावे।। टेर।।
बालक चेन चरित की महिमा, मोपे कही न जावे।
निकुल कुल सब बरण चलाया, खाण बाण केह लावे।। १।।
ब्रह्मा विष्णु महेसर किया, ओऊं अमर ऊपावे।
आद निरंजन सगत सहेती, सुर नर मुनी गावे।। २।।
बालक रमे सकल तन मांही, खाली दिशा न कवावे।
ऐसा रहे अपर छंद छाने, कबहु दिष्ट न आवे।। ३।।
बालक एक अनन्त है लीला, सब कूं हिले लगावे।
जन सुखराम आप मिलणे की, सो गत बिरला पावे।। ४।।

हे मन ब्रह्मपद की प्राप्ति केवली भगवंतो के सत ग्यान की विधि का भेद बताने पर ही हो सकी है, वो सतशब्द सब में भी है और सबसे न्यारा भी है। उसके चैन चरित की महिमा मेरे से कहने में नहीं आती। उसके कुल नहीं है फिर भी चार खांण व बांण सबकी उत्पति वहां से होती है। ब्रह्मा, विष्णु, महेशर की उत्पति वहां से है। ओऊं याने आत्मचेतन जो हमेशा अमर है उसकी उत्पति वहां से है। आद निरंजन याने होणकाल ब्रह्म व शक्ति सहित देवता मनुष्य मुनि सब उसकी महिमा करते है। वह ब्रह्म सब जगह व्यापक है, उसके बिना खाली जगह कोई नहीं है। वह इस तरह साथ में रहता हुवा भी कभी भी देखने में नहीं आता, यही छाने रहना है। ब्रह्म तो एक है लेकिन उसकी लीलाये अनन्त है। शरीर द्वारा उत्पति, रक्षा, केवल भक्ति व सब करणी कर्म होते है वो उसके आधार से होते है। यही सब कूं हिले लगाना है। म:फ: है कि उस ब्रह्म पद की प्राप्ति का साधन बिरले ही करते है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (३२) 卐

रे अवधु सो बालक हम पाया। घडिया घाट दिष्ट में आवे, सो सब आप बणाया।। टेर।।
ब्रह्मा बिसन महेसर देवा, शेष महेश ऊपाया।
आद भवानी निरंजण कहिये, सो सब शरणे आया।। १।।
अंछया आद गिगन अर प्राणी, दाणु देव बणाया।
बोहो ओतार केता धर मांही, सब संग रमणे आया।। २।।
चवदे क्रोड जम जमराणा, धरम राय कूं ऊपजाया।
होणकाल सब ही शिर किया, जम काल कूंही खाया।। ३।।
सबका शिरजण सब सूं न्यारा, जन्म कूख नहीं जाया।
जन सुखराम घडे सोई भांजे, ताके काम न काया।। ४।।

मन से कह रहे है कि मैंने उस ब्रह्म की प्राप्ति की है, जिसके जो सृष्टि सारी देखने में आ रही है वो उसी से बनी है। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, शेष की उत्पति वहां से है। आद भवानी निरंजण याने ब्रह्म और माया सबके उन्ही का आधार है। अंछया शक्ति है, आसमान है, प्राणी है, राक्षस व देवता सबके वही आधार है। कितने ही अवतार आये सबके उसका आधार है। पारब्रह्म परमात्मा के पद जहां से सृष्टि की उत्पत्ति होती है वो सबके ऊपर है, उसकी भक्ति करने से ही जन्म मरण से रहित होता है। सारी सृष्टि का करता होता हुवा भी सबसे अलग है। उसका जन्म नहीं होता। म:फ: है कि जिस पद से सृष्टि की रचना होती है उसी में लय होती है, वो पद करता पद से अलग है, यही काम न काया है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (३३) 卐

अवधु ईमरत पी सब मुवा, जब हंस अमर सो हुवा।। टेर।।
तरवर एक बणयो है भारी, पांच डाल सब जुवा।
तामे पंछी आंण कर बैठा, पांच पचीसूं सुवा।। १।।
डाला पांच बीस है डाली, गोड पेड सब जुवा।
नव से साख निनाणु चाली, ऐसा तरवर हुवा।। २।।
आला तीन चार फिर मांही, पांच पलट संग हुवा।
हंसा ऊड चल्या सुन मांही, पांच पलट संग हुवा।। ३।।
सींच्या नीर ब्रह्म जल केता, तासूं अे गुण हुवा।
जन सुखराम बिरछ सुं मिलणा, हंसा सब तज जुवा।। ४।।

मन से कह रहे है कि सांस उसांस में भजन कर सतशब्द की प्राप्ति हो, यही ईमरत पीना है। पांच प्राण चित मन बुद्धि अहंकार तीन गुण पांच तत्व स्वांसा इन सबसे अलग होना ही इनको मारना है। के:पद आ:पद की प्राप्ति होना ही हंस का अमर होना है। शरीर रूपी वृक्ष में पांच डाल याने दो पैर और दो हाथ और एक शिर है, उसमें चेतन रूपी पक्षी बैठा है तथा पांच तत्व व पचीस प्रकृतियां से बना है, शरीर में पांच डाल व बीस डालिया याने हाथ व पैर की बीस अंगुलिया है तथा गोड याने ब्रह्म और पेड याने शरीर ये दानो अलग अलग है। नो सो निनानवे नाडिया सारे शरीर

में फैल रही है। यही शाखा है, यही शरीर रुपी वृक्ष है, दो नाक, दो नेत्र, दो कान व एक मुंह ये आला तीन चार याने सात है। पांच अंगो से तन मन वचन सूरत निरत लागकर भजना ही पांच पलट संग करना है। इस तरह हंस भजन कर सुन्न याने निरंजण निराकार पद में पांच प्राणो व पांच तत्वो से अलग होना ही पांच पलट संग हुवा है। ब्रह्म की भक्ति करना ही ब्रह्म जल नीर सींचना है। उसी से यह गुण हुये। म:फ: है कि सबसे अलग होकर ब्रह्म पद की प्राप्ति होना ही वृक्ष याने शरीर से परमात्मा मिलना तथा हंसा सबसे अलग हो गया है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (३४) 卐

अवधु सो कन्या हम पाई, तांकी अनन्त बडाई।। टेर।।
कन्या एक बनोले बैठी, तांके पांच पचीस है भाई।
मैया बाप कडुंबो पाले, माडया लगन लिखाई।। १।।
राव रंक सो भूप पातशाह, बस्ती पाले आई।
सब ही पूछ पच पच हारया, लडकी न माने कांई।। २।।
कन्या जोर समजणी कहिये, सुर नर मुनी मन भाई।
अपणो पीव आप ही हेरयो, सामी परणे जाई।। ३।।
परणी जाय सेज सुख सोई, पीव परस कर आई।
जन सुखराम सेहेर सब गोती, पांव पडे सब भाई।। ४।।

मन से कह रहे है कि सूरत का जागृत होना ही कन्या का पाना है और सूरत की बहुत महिमा है। शब्द में सूरत लगाकर भजन करना ही बनोले बैठना है। उसके पांच तत्व पचीस प्रकृतियां भाई है। ममता रूपी माता, डिगपिच रूपी बाप और कडुंबो याने सब वृतियां रोकती है लेकिन सूरत रात दिन शब्द का ही ध्यान करती, यही माडया लगन लिखाई है, शरीर की सब वृतियां सूरत को परमपद की प्राप्ति करने से रोकती है, यही बादशाह राव रंक राजा और बस्ती का रोकना है। सब रोक रोक कर हार गये लेकिन सूरत नहीं मानती याने शब्द का ध्यान नहीं छोडती। सूरत बडी बलवान व समझदार है। यह देवता मनुष्य मुनि सबको अच्छी लगती है। यह अपने पीव याने शब्द को खुद ने ही ढूंढा है। सूरत द्वारा शब्द का ध्यान होना ही परणना है। सूरत का शब्द में लय होना ही पीव का परसना है और उसका आनन्द आना ही सेज सुख का सोना है। म:फ: है कि सारे शरीर में सब अंगो से भक्ति होना ही पांव पडना है।

卐 हरजस पद राग सोरठ (३५) 卐

पिंडत भूल दोन्यूं घर मांई। हिन्दू तूरक जाय दोऊ ऊजडे, सतशब्द गम नांही।। टेर।।
हिन्दू बरत तीरथां भटक्या, मुसलमान कर रोजा।
यां थापी वहां सरब ऊथापी, तन मन किणीयन खोजा।। १।।
भेष बणाय हुवा खट दरशण, पढ़ पढ़ पिंडत काजी।
सोनत कर कर हुवा तुरकिया, राम किसे सूं राजी।। २।।
हिन्दू पूरब दिशा कू बंदे, तूरक पिछम कूं भाई।
वे जाले वे गढ़े जमी में, सत राह किण पाई।। ३।।

हिन्दू खरच बारवो थापे, तूरक चालीसो खावे।
कह सुखराम सुणो सब ज्ञानी, अरथ किसे को आवे।। ४।।

पंडितो से फ: है कि हिन्दू व मूसलमान दोनो में भूल है व हिन्दू व मुसलमान दोनो करणी कर्म में लग रहे है, यही ऊजडना है और सतशब्द का ज्ञान नहीं है। हिन्दू तीरथ व्रत करते है और मुसलमान रोजा रखते है। जो हिन्दू करते वो मुसलमान नहीं करते, यह थापना व ऊथापना है। लेकिन दोनो ने तन मन को नहीं खोजा है। भेख लेकर खट दरशणी बनते, पढ़ पढ़ कर पिंडत व काजी बनते और सुन्नत कर मुसलमान बनते है, लेकिन रामजी किससे राजी है, हिन्दू पूर्व दिशा की तरफ वन्दना करते है और मुसलमान पिछम की तरफ ईबादत करते है। हिन्दू जलाते है और मुसलमान गाडते है। लेकिन सच्चा रास्ता किसने पाया है। हिन्दूओं में बारहवां करते है और मुसलमान चालीसा करते है। म: ज्ञानियो से फ: है कि परमात्मा की प्राप्ति का भेद किसको मिला।

卐 हरजस पद राग मारूं (कालिंगडा-१) 卐

प्राणियां काय तुं सुतो रे, थारो करो नी घर को सूल।। टेर।।
आज घडी पल पोर में रे, ओ जुग जासी छाड।
सेण हेतु तेरा सगला रे, करसी काडो काड़।। १।।
आठ पोहर चौसठ घडी रे, काल भवे शिर तोय।
रे मुरख प्राणी मेरी सुण रे, तोकूं सोच न कोय।। २।।
हात मसल यूं ही जावसी रे, लार चले कुछ नांय।
कह सुखदेवजी सांभलो रे, जन्म गमावे काय।। ३।।

प्राणियो याने मनुष्यो से कह रहे है कि तू अज्ञान अवस्था में क्यों सो रहा है, तुझे आद घर में जाना है। इसका विचार कर, यही घर का सूल करना है। आज में, घडी में, पल में, पोर में, इस संसार को छोडकर जाना पडेगा। तेरे हितेषी कुटुम्बी कहेंगे कि घर से जल्दी ले चलो। आठ पोहर चौसठ घडी काल तेरे शिर पर चक्कर खा रहा है। हे मूर्ख मेरी बात सुन कर फिर भी तुझको सोच नहीं है। खाली हाथ ऐसे ही चला जायेगा, कोई तेरे साथ नहीं चलेगा। म:फ: है कि सब सुणो मनुष्य जन्म को व्यर्थ क्यों गमा रहे हो।

卐 हरजस पद राग मारूं (कालिंगडा-२) 卐

भजो तो राम भजीजो रे, हरि बिन आन तजिजो रे।। टेर।।,
केवल भजियां मोख हुवे रे, करम कीट सब जाय।
आवागवण न ओतरे रे, तुम मिलो परम पद मांय।। १।।
कलजुग सत नाम है रे, आन धरम सब झूंठ।
तप त्रेता सुं थाकियां रे, गया बरछ फल ऊठ।। २।।
केवल हर आराधियां रे, जीव सीव होय जाय।
पूरण पद परमात्मा सो, आपो आप कहाय।। ३।।
आन धरम सब बंद है रे, छूट सके नहीं कोय।
जन्म धरे जुग केतला रे, पसवा पंखी होय।। ४।।

सांची कह सुखरामजी रे, सुणियो ज्ञानी आय।
केवल हर बिन भरम है रे, लख चौरासी जाय।।५।।

भजना है तो रामजी का भजन करो, राम के सिवाय चर्म चक्षुओ से दिख रहा है तथा उपजता खपता है, वह सब आन याने माया है। उसकी भक्ति को छोडो, के:पद की प्राप्ति होने पर मोक्ष होता है और सब करमो का नाश हो जाता है। जन्म मरण से रहित होकर परमपद में मिलो। कलयुग में पारब्रह्म परमात्मा के नाम की भक्ति सत है, आन की उपासना झूंठी है। त्रेतायुग में तपस्या करते थे और वृक्ष के फल खाते थे। अब वृक्ष के फल नहीं मिल सकते। केवल रामजी की भक्ति करने से जीव ब्रह्म हो जाता है। और पूरण पद परमात्मा की प्राप्ति कर परमात्मा हो जाता है। आन धरम से जन्म मरण नहीं छूटता, यही बंद है। जुग जुग में कितने ही जन्म धारण कर पशु पक्षियो की योनियों में जाना पडता है। म:फ: है कि ज्ञानियो सुणो मैं तुम्हे सच कहता हूं, केवल राम की भक्ति बिना सब भरम है। लख चौरासी से छुटकारा नहीं होगा।

卐 हरजस पद राग मारूं (कालिंगडा-३) 卐

भजो तो राम भजीजो रे, हरि बिन दूर तजीजो रे।। टेर।।
मून गहो तो आन सूं रे, हर सूं बोल अघाय।
मारी जे तो मन कूं प्राणी, जीव की करले सहाय।।१।।
दिजे तो अन्नदान कूं रे, लिजे सो हरि नाम।
तजिये सो परतात कूं रे, करिये सो परकाम।।२।।
पत राखो तो नाम सूं रे, दूजा सेहज सुभाव।
आग्या गुरु की मानियो रे, और तजो विष खाय।।३।।
त्यागी जे तो भरम कूं रे, मैं ते दुबध्या चाय।
जै तज सब सुख प्राणियां रे, ज्यां संग नरकां जाय।।४।।
भेद लेह तो तत्त का रे, आत्म खोज विचार।
कह सांची सुखदेवजी रे, और बंध्या शिर भार।।५।।

भक्ति करनी है तो रामजी की करो, रामजी की भक्ति बिना दूसरी भक्ति है इन सबको छोडो, मौन ही धारण करनी है तो एक दूसरे से फालतू बात मत करो और बोलना ही चाहता है तो परमात्मा के नाम को रट लो। हर समय मन को भक्ति में लगाना ही मन को मारना है। इस प्रकार जीव की सहायता करले, दान करना तो अन्न का दान है। परमात्मा का नांव लेना ही हरि का नाम है, छोडना है तो प्राणी मात्र को कष्ट देना छोडो, करना है तो प्राणी मात्र का उपकार करो, ईष्ट रखना है तो नांव का रखो और दूसरे कार्य सहज वृति में करो। प्राणी मात्र को सुख पहुंचाना व भक्ति करना ही गुरू आज्ञा मानना है। बुरे विचार, कर्म, व्यसनो और इन्द्रियो के भोग छोडना ही विष का खाना छोडना है। त्यागना है तो भरम तेरी मेरी व चाहना को छोडो। हे मनुष्य उन सबको छोड दे जिसके साथ नरक में जाना पडे। भेद लेना तो ब्रह्म के निज नांव याने सतशब्द ने:अँच्छर का ले, आत्मा से परमात्मा पद की प्राप्ति करना ही आत्म खोज विचार है। म:फ: है कि मैं सत कहता हूं कि दूसरे सब साधन जन्म मरण से रहित नहीं करने वाले है। यही बंध्या शिर भार है।

卐 हरजस पद राग मारूं (कालिंगडा-४) 卐

भजो तो राम भजीजो रे, हरि बिन दूर तजीजो रे।। टेर।।
सतजुग में सत राखता रे, अबै निभे नही कोय।
जे कोई नर हटकर करे रे, चार दिना लग होय।। १ ।।
तप त्रेता में तापता रे, शकल बरछ फल खाय।
कलजुग में अब ना निभे रे, दुनिया सुं जुध थाय।। २ ।।
द्वापुर में सत न्हावणो रे, क्रिया सब सुध होय।
कलजुग में अब ना सजे रे, माखी लपेटे लोय।। ३ ।।
कलजुग जांजली मान है रे, दिया धरम सब छेद।
नाम निकेवल ब्रह्म को रे, सदा उतम पद भेद।। ४ ।।
सांची कह सुखदेवजी रे, कलजुग सिमरण सार।
और धरम सो ना सजे रे, ना फल लागण हार।। ५ ।।

भक्ति करनी है तो रामजी की करो, रामजी की भक्ति बिना दूसरी भक्ति को छोडो, सतयुग में सत्य बोलते थे, अब नहीं निभ सकता। अगर कोई मनुष्य हठ करके करे तो कुछ समय तक कर सकता है। त्रेता युग में वृक्ष के फल खाते और तपस्या करते, पर अब नहीं निभता। वृक्ष के फल खाने पर लडाई हो जाती है। द्वापर में नहाना धोना, आचार विचार, सब शुद्धता रखते थे, लेकिन कलयुग में नहीं निभ सकती। क्योंकि मक्खी बैठ जाती है। कलयुग जांजली याने आंधी के जैसे है, कलयुग में दूसरे साधन नहीं सध सकते है। यही छेदना है। ब्रह्म का निज नांव सदा ही उत्तम पद की प्राप्ति कराने वाला है। म:फ: है कि कलयुग में रामजी का शिमरण ही सार है और दूसरे धरमो की साधना नहीं सधती है, तो उसका फल भी नहीं मिलता।

卐 हरजस पद राग मारूं (कालिंगडा-५) 卐

भजो तो राम भजीजो रे, हरि बिन दूर तजीजो रे।। टेर।।
षट क्रिया आचार ले रे, नाम समान नहीं कोय।
कलजुग में फल ना लगे रे, नाम बिना धरम सोय।।१ ।।
जत सत त्याग मुनि सरा रे, तपस्या जोग कहाय।
नाम समानो को नहीं रे, सब धरम से जग मांय।। २ ।।
काशी करव्रत झांप ले रे, अन्न तज जे पय खाय।
नाम समाना को नहीं रे, अभै दान जग मांय।। ३ ।।
सब धरम को फल लागतो रे, तीन जुगा के मांय।
कलजुग में सुखराम कहे रे, हरि बिन निरफल थाय।। ४ ।।

भक्ति करनी है तो रामजी की करो, रामजी की भक्ति बिना दूसरी भक्ति को छोडो। छ: खट दरशणियों की क्रिया व साधन को कोई करता है तो भी उस परमात्मा के नाम के समान कोई नहीं है। कलयुग में नाम की भक्ति के सिवाय दूसरे साधन नहीं सधते है इसलिये उनका फल नहीं मिलता। जतिपना रखो, सत बोलो, त्याग करो, मोन धारण करो, तपस्या करो, जोग की साधना

करो ये सब धर्म नाम के बराबर नहीं हो सकते। काशी में करवत लो, अन्न को छोड कर दूध का आहार करो। नाम के बराबर जगत में अभयदान भी नहीं है। सब साधन तीन जुगो में होते थे, उनका फल भी मिलता था। म:फ: है कि कलयुग में रामजी के नांव के बराबर दूसरे साधन सजते नहीं है, यही निरफल है।

卐 हरजस पद राग मारू (कालिंगडा-६) 卐

भजो तो राम भजीजो रे, हरि बिन दूर तजीजो रे।। टेर।।
जे बोले तो राम कहे रे, नितर चुपक समाय।
राम भजन बिन प्राणियां रे, बंध्यो जमपुर जाय।। १।।
संगत करे तो साध की रे, नहीं तर रहिये एक।
सागट सुं मुख बोलता रे, क्रोध बंधे अरू धेक।। २।।
शिमरण करे तो श्याम को रे, केवल ब्रह्म विचार।
कह सुखदेव नहीं तो यूं ही भला रे, सब विध माथे मार।। ३।।

भक्ति करनी है तो रामजी की करो, रामजी की भक्ति बिना दूसरी भक्ति है, उन सबको छोडो। अगर भक्ति करनी है तो रामजी की करो, नहीं तो मौन रहो। रामजी की भक्ति बिना यमराज के दूतो के साथ बंधा हुवा जाना पडेगा। संगत करनी है तो साध याने जो सतशब्द कि भक्ति करो, दूसरो का संग मत करो। जिन्हें परमात्मा कि भक्ति अच्छी नहीं लगती है वे सागट है, उनसे बातचीत करने से क्रोध व द्वेष उत्पन्न होता है। भजन करना है तो रामजी का करो, केवल ब्रह्म याने पारब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति का साधन करो। म:फ: है कि सब विधि को छोडकर रामजी का भजन करो।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (१) 卐

संतो चौथे पद नहीं जावे। राम उणी का राजा महाराजा, वे ई अमराव कहावे।। टेर।।
सुण प्रहलाद सुरग लग पूगा, ईन्द्र पदवी पाई।
ध्रुव आकाश अटल घर किया, सब जग देखे आई।। १।।
पांडु पांच सूरग में माले, हरचन्द करण सहेती।
बल राजा पंयाल सिधायो, इण ऊण बीच आ छेती।। २।।
अत्री मैत्री वेद व्यासजी, मुनी जन शेष अठयासी होई।
अे धरम राय के मुजरे बैठा, नासकेत आयो जोई।। ३।।
नो नाथ चौरासी सिद्धा, सूर तेतीस कहिजे।
तीन लोक नारद की रमणी, दक्ष सराप सहिजे।। ४।।
गोरख नाथ धरण पर खेले, शिव ने ब्याव रचाया।
हेमाचल घर गोरां परण्या, बार अठोतर ब्याया।। ५।।
चौथे पद तो वे जन पूंथा, ज्यां आ परीक्षा होई।
तीन लोक में कोई यन लखिया, ज्ञान दृष्ट कर जोई।। ६।।
सुण औतार अलख सो बाजे, बार बार यां आवे।
कह सुखराम तीरथंगर पूगा, कोई सपनेई आण बतावे।। ७।।

संतो से फ: है कि चौथे पद की प्राप्ति नहीं होती, पारब्रह्म का पद राजा महाराजा की तरह है और पारब्रह्म की आज्ञा से ही तीन लोक में नित्य औतार व निमित औतार अमराव कहलाते है। प्रहलाद जी ने बांणी के आधार के नांव की भक्ति करी, जिससे उन्हें सुरग में ईन्द्र पद की प्राप्ति हुई। ध्रुवजी ने भी बाणी के आधार के नांव की भक्ति करी, उनका तारा आज भी दिखता है। पांच पाण्डव हरिशचन्द्र और कर्ण को स्वर्ग की प्राप्ति हुई। राजा बली ने निनाणवे यज्ञ किये तो भी उनको पाताल में भेज दिया, उनके और इनके बीच में इतनी दूरी हो गई। अत्री मैत्री वेदव्यासजी और अठयासी हजार ऋषि मुनि ये सब धरम पुरी याने पार्लियामेन्ट कमेटी में सब ही तीन लोक के जीवो के शुभ अशुभ व भक्ति का न्याय करते है। उदालकजी का बेटा नचिकेता इनको देखकर आया। नो नाथ, चौरासी सिद्ध, तेतीस क्रोड देवता और नारदजी सब तीन लोक में ही है। राजा दक्ष के श्राप से तो नारद जी तीन लोक में ही रमते रहते है। गोरखनाथजी धरती पर अमर है। शिवजी इसी लोक में है और एक सौ आठ बार हेमाचल के यहां गोरां से विवाह किया। चौथे पद तो वे जन ही पहुंचते है जिनकी यही परीक्षा है, तीन लोक के साधन से चौथा पद नहीं दरसता। जिनकी सतगुरु विधि के साधन करने से दिव्य दृष्टि खुली है। उन्हें चौथा पद दरसता है। अवतार अलख बाजते हुये भी बार बार आते जाते है और तीर्थंकरो को चौथे पद की प्राप्ति हुई, वे सपने में भी कभी नहीं आते है।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (२) 卐

संतो भाई बिणस्या सोच न कीजे। करता करे सो सब ही आछी, आनन्द मगन में रीजे।। टेर।।

मात पिता सुर नार कुलंतर, सब करतार बणाया।
सायब दम आव लिख दीनी, हुक्म बंध्या सब आया।। १।।
सांई रखे जहां हंस रहवे, जहां भेजे तहां जावे।
तारे राम जन्म दे करता, हर मारण कूं ही आवे।। २।।
तीन लोक बाजी हर मांडी, जन्म मरण है गेलो।
यामे दुखी हुवो मत कोई, ज्ञान विचार सहेलो।। ३।।
देख विचार ज्ञान कर सारो, दिव्य दृष्ट से जोवो।
कह सुखराम आप वश नांही, ताकूं भूल न रोवो।। ४।।

संतो से फ: है कि तू फालतू का सोच मत कर। परमात्मा जो करता है वो सब अच्छा ही करता है। ऐसा विचार कर आनन्द में खुश रहो। माता पिता स्त्री पुत्र व कुटुम्ब सब परमात्मा ने बनाये है, उसने ही सबकी आयु व स्वांस लिख दी है। उसी के हुक्म में बंधे हुये संसार में आये है, वो जहां रखता है, वहीं रहना पडता है, वो जहां भेजता है, वहीं जाना पडता है। रामजी सता रूप से तार देते है, करता पद से जन्म देते है व काल रूप से मारते है। तीन लोक परमात्मा की बाजीगरी है, उसमें जन्म मरण रस्ता है। इसमें कोई दुखी मत होवो, ज्ञान से विचार करके सहन करो। देखकर विचार कर ज्ञान करके देख लो और दिव्य दृष्टि याने ज्ञान दृष्टि से देख लो। म:फ: है कि जो अपने बस में नहीं है। उसको भूल कर भी मत रोवो।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (३) 卐

सुणो सब या बाता किम पावे। समरथ श्याम मुक्त को दाता, प्रीत बिना क्यूं आवे।। टेर।।
पईसे ब्याज टके लग काटे, ब्याव बिरद के तांई।,
सायब काज ऊधारो मिलता, ओ मन लेह न जाई।। १।।
ब्याव खरच न्यात के लेणे, शीष अडाणो मारे।
करता निमत कदे ओ मन में, घर में थका न धारे।। २।।
सांई निमत पइसो सिर पे, करज करे नहीं कोई।
करमा काज जगत सुं लेणो, मिलता मुडे न लोई।। ३।।
देखा तन्नु बिछडया जुग में, सब रोवे दुख छीजे।
शिरजणहार मिलन के काजा, सपने ही आंख न भीजे।। ४।।
खेती किसब करे तन खोई, दाम लगावे आंणी।
कह सुखराम भक्त की वेला, सब सेल बिध जांणी।। ५।।

सब सुणो इन बातो से परमात्मा कैसे प्राप्त होता है, परमात्मा जो मुक्ति देने वाले है बिना प्रीति के कैसे प्राप्त हो सकते है। ब्याव आरा और नुगता करने के लिए पैसा रूपया ब्याज देकर भी लाते है। परमात्मा की प्राप्ति के लिये उधारा भी मिलता है। तो यह मन नहीं लेने का विचार करता है। ब्याव खरच हेतु न्यात के लिये सिर भी गिरवी रख देते है लेकिन परमात्मा के वास्ते घर में होते हुये भी मन इच्छा नहीं करता। परमात्मा के वास्ते करजा नहीं करता है। कर्म बन्धन करने के लिये जब कर्ज मिलता रहता है तब तक नहीं रूकता है। अपना कोई बिछुड जावे तो सब रोते और दुखी होते है। रामजी से मिलने के लिये सपने में भी विरह नहीं करते, याने आंसू नहीं आता। खेती व धंधे में तन से मेहनत करते है और रूपये भी लगाते है। म:फ: है कि भक्ति के काम को ऐसे ही समझते है, हो तो ठीक, नहीं हो तो ठीक, यही सेल विध जाणी है।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (४) 卐

मन रे मत फूले मूढ गिंवारा। तो शिर काल खाय मुरडाटी, दुश्मन अखत अपारा।। टेर।।
चार दिना की जोर जवानी, अंत बुढापो आसी।
डिगमिग नाड नेण नहीं सूजे, लोग करेगा हांसी।। १।।
यांहा अब ही अवरां के सारे, छिन पल में कुमलावे।
इण बल को तूं धणी रे बावला, गर्व अहूं क्या लावे।। २।।
पांचु पिसण पचिसुं बेरी, तन एक बसे मांही।
तब लग बोलर काय बिगुचे, नाव पडी धेह मांही।। ३।।
गढ पर ऊलट चडयो नहीं ऊंचो, सायब नाय रिजाया।
कह सुखराम अलप सुख जुग का, यामें क्या सुख पाया।। ४।।

मन से फ: है कि हे मूर्ख व गंवार तू फूल मत, तेरे सिर पर काल मुरडाटी चक्कर खा रहा है और कहने में नहीं आते ऐसे अपार दुश्मन है। यह जोर जवानी थोडे समय की है, अंत में बुढापा आयेगा। उस समय गरदन हिलने लगेगी, आंखो से नहीं दिखेगा, लोग हांसी करेगा। यहां अब ही

दूसरो के सहारे हो गया। क्षण पल में कुमला जायेगा। इतना सा बल तो तेरे में है। गर्व अहंकार क्या करता है, पांच विषय पचीस प्रकृतियो के दुश्मन एक शरीर में बसते है तब तक बोलकर क्यों बकवाद करता है। नाव तेरी धै याने भवसागर में पडी हुयी है। के:पद की प्राप्ति नहीं होना ही सायब को नहीं रिजाना है। आ:पद की प्राप्ति नहीं होना ही गढ पर नहीं चढना है। म:फ: है कि संसार का सुख थोडा सा है, उसको प्राप्त कर क्या सुख पायेगा।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (५) 卐

शिमरथ मैं तेरा शरणा लिया। ज्ञान सुणयो है गुरांजी का मुख सूं, तब मेरा मन बीया।। टेर।।
किरपा कर हरि मेरे आवो, सुण हो आद गुसांई।
खबर करो हर मोय अपती की, दरशण दो ऊर मांही।। १।।
घणी अरज हरि कहां लग कर सूं, नेक बोहोत कर मांणो।
चित कर आव छेक जम लेखो, मोकूं चाकर जांणो।। २।।
जैसो बिडद तुमारो कहिये, नांव बखाणज होई।
मेरा लछ कूलछ नहीं देखो, राम बिडद दिश जोई।। ३।।
टाबर सदा को टाबर कहिये, बाप बिरच नहीं जावे।
कह सुखराम सुणो मेरा ठाकुर, यह तेरा बिडद कहावे।। ४।।

हे परमात्मा मैंने आपका शरणा लिया है। जब सत ज्ञान सुणा तब मेरा मन डरा। कृपा कर के आप मेरे हृदय में आवो। हे आद गुसांई याने परमात्मा मेरी प्रार्थना सुणो। मुझ दुखी की आप खबर करो और हृदय में सतशब्द के दरशण दो। आपकी प्रार्थना कहां तक करूं। थोडी को ही आप ज्यादा समझो। आप मेरी प्रार्थना पर आपका चित लगाना और मेरे जमराज जी के यहां आंक लिखे हुये है उनको छेक देना। मेरे को अपना दास समझो। हे परमात्मा आपका जैसा बिडद है और आपके नांव का बखाण होता है। आप मेरे लक्षण और कुलक्षणों को मत देखो, हे रामजी आप अपने बिडद को देखो। बालक कोई गलती कर लेता है लेकिन बाप उस पर कृपा ही करता है उसको दूसरा नहीं समझता, यही बिरच नहीं जाना है। म:फ: है कि हे परमात्मा यह आपका ही बिडद है।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (६) 卐

नर कहा तेरी गत तूं ही ज जांणे। गुरु गम जीव अकल नर मांही, बुद्ध प्रवाण बखाणे।। टेर।।
व्यास पुराण अठारे किया, तिण ही पार न पायो।
ब्रह्मा वेद उचारया चारी, वांही अगम बतायो।। १।।
पीर पेकम्बर और अवलिया, रिष मुनेश्वर कहावे।
तीन लोक माया बस कीनी, तोही तेरा पार न पावे।। २।।
सब औतार तीर्थंकर कहिये, फेर देव अे तीन्ही।
तीन लोक भांजे फिर थापे, तेरी कला न चिन्ही।। ३।।
खसिया बहुत पार के तांई, तुज छेह किणीयन पायो।
समझ समझ नर ने: छे रेह, राम किणीहन बतायो।। ४।।

तेरा वार पार गण नामी, एक नाम में आवे।
कह सुखराम संत जन सारा, राम राम कह गावे।। ५ ।।

हे परमात्मा आपकी गति को आप ही जानते है। जीव को जिस माफिक ज्ञान मिलता है उसी माफिक मनुष्य अपनी बुद्धि के अनुसार बोलता है। वेदव्यासजी ने अठारा पुराणो की रचना की उन्होंने भी ब्रह्म का पार नहीं पाया। ब्रह्माजी ने चार वेदो का उच्चारण किया, उन्होंने भी ब्रह्म को अगम बताया है। पीर पेगम्बर अवलिया ऋषि मुनी कहाते है। जिन्होंने तीन लोको की माया को वश किया परन्तु आपका पार नहीं पा सके। सब ही अवतार तीर्थंकर व ब्रह्मा, विष्णु, महादेव तीनों देव जो तीन लोक की रचना करते है, बिगाडते है, वो भी आपकी कला नहीं पहचान सके। आपकी जानकारी के लिये बहुत कोशिश की लेकिन आपका पार नहीं पा सके। समझ-समझ कर ने: छे: रहो। रामजी को किसी ने नहीं बताया। आपके अनन्त नाम है। आपका वार पार एक नाम में आता है। म:फ: है सब संत राम राम कहकर गुणानुवाद गाते है।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (७) 卐

सुणो शिष ऐसा कलजुग आसी। पखे पखे सब ज्ञान कथेला, आपो बोहोत सरासी।। टेर।।
परमारथ कूं नेक न जांणे, स्वारथ कूं उठ धावे।
शुभ शुभ करम शकल सो त्यागे, अशुभ सबे चुण खावे।। १ ।।
सरब जात के खाता फिरसी, ज्ञान शकल कूं देला।
ऊंच नीच को पख नहीं करणा, पूज्या इधक कहेला।। २ ।।
मांहो मांह निंधा बोह चुगली, एक धर्म बिच व्हेगा।
माठा कर्म निष्ट कर आसी, तांकी पूजा लेगा।। ३ ।।
भांग तमाकु अमल तिजारो, सुरे पियेगो भाई।
तज घर बार लोह सस्तर सूं, मार मरेगो जाई।। ४ ।।
शिष सो मेर मरजाद न राखे, गुरु करसी सुण आसा।
मूंढे भजन अंतर में माया, दिल गुंथेला पासा।। ५ ।।
क्रोड निनाणु कलजुग मांही, नरक मांह सब जावे।
कह सुखराम भणो सो गीता, वेद भागवत गावे।। ६ ।।

हे शिष सुणो ऐसा कलयुग आयेगा, सब अपने पक्ष का ज्ञान कहेंगे और अपने आपकी बहुत महिमा करेंगे। जरा भी परमारथ नहीं करेंगे। स्वारथ के लिये दौडते फिरेंगे, अच्छे अच्छे कर्म सब छोडेंगे। सब जाति में खाते फिरेंगे, सबको ज्ञान देते फिरेंगे, ऊंच नीच का कोई कारण नहीं है। उनकी पूजा करने वालो को ही अच्छा कहेंगे। एक सम्प्रदाय में ही आपस में एक दूसरे की निंदा व चुगली करेंगे। कुकर्म कर आने वालो की भेट पूजा लेंगे। भांग तमाखु अमल तिजारा और शराब का सेवन करेंगे। घर को छोडकर लोह सस्तर से मरने मारने को तैयार रहेंगे। शिष्य गुरु की मर्यादा नहीं रखेंगे। गुरू शिष्य की आशा रखेंगे। मुंह से भजन की बात कहेंगे। अन्तर में माया की प्राप्ति कैसे हो, ऐसे विचार करेंगे। कलयुग में निनाणवे क्रोड जीव नरक में जायेंगे। म:फ: है कि वेद गीता भागवत भी यही कहते है।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (८) 卐

निरंजण तेरी गत तूं ही ज जाणे। ज्ञानी सबे अडे जग मांही, पखे पखे नर तांणे।। टेर।।
मुसलमान दूध कूं टाले, हिन्दू सुण पख साती।
कूंडापंथी सर्व संग जीमे, चार बरण संग जाती।। १।।
पीरा सूंस सूर की लिवी, हिन्दू सूरे ओतार बखाणी।
जख सुण खाय जीव, सब ऊपर दया तीर्थंकरा ठाणी।। २।।
बल को कहूं पाताल पठायो, अजामेल कूं तारयो।
गोतम रिषी शिष्ट फिर आयो, ईन्द्र अेरावत हारयो।। ३।।
पत्थर किया पात सूं हल्का, पात पहाड सूं भारी।
तीन लोक मुख में दिखलाया, जा अंत ऐसी खुंवारी।। ४।।
नेमनाथ ने केवल उपज्यो, तीन लोक कूं जीता।
अंतकाल सारी सुध भूला, ऐसे जुग बदीता।। ५।।
वाही माय बेन सो वाही, वाज घरो घर घरणी।
यांही संग कर्म सो बांधे, आइज लेर उधरणी।। ६।।
कहां कहूं मुज कही न जावे, ऊथल पुथल तेरी माया।
कह सुखराम अरथ कर देख्या, तुज हर पार न पाया।। ७।।

हे परमात्मा आपकी गति आप ही जानते हो, ज्ञानी आपस में मन से वाद विवाद करते है और अपने अपने पक्ष की बात कहते है। मुसलमान माता का दूध टालकर सबसे विवाह कर लेते है। लेकिन हिन्दू सात कुल को टाल कर करते है। कूंडा पंथी सबके साथ जीमते है। चार वर्ण व कोई जाति हो। मुसलमान सुअर की सोगन मानते है। हिन्दू गाय व अवतारो की सोगन मानते है। राक्षस जीवों को खाते है तथा तीर्थंकरो ने सब जीवो पर दया करी। राजा बलि जिसने निनाणवे यज्ञ किये, उसे पाताल में भेजा। अजामेल महा पापी था उसका उद्धार कर दिया। गौतम ऋषि के पैर में अेक ऐसा चिन्ह था, जहां अकाल पडता था, वहां जाने से वर्षा हो जाती थी, तो वे सारी सृष्टि फिर कर आ गये। ईन्द्र के ऐरावत हाथी के होने पर भी हार गये। रामचन्द्रजी के समय पहाडो को पते की तरह कर दिया, जो समुद्र पर तिरने लगे, और नामदेवजी के समय में तुलसी पत्र को पहाड़ से भारी बना दिया। कृष्ण ने तीन लोक को मुख में दिखाया लेकिन अंत में भील के निमित से शरीर छोडा। नेमनाथजी ने तीन लोको को जीता, लेकिन अंत समय में जुग बीत गया जब तक शरीर की सुधी नहीं रही। नेमनाथजी को अगले जन्मों में वो ही माता पिता व स्त्री मिलते रहे। माया के साथ ही शुभ अशुभ करम बन्धन होता है और इस माया के शरीर से ही सतशब्द की भक्ति कर मोक्ष की प्राप्ति होती है। क्या कहूं आपकी माया मेरे से कहने में नहीं आती है। म:फ: है कि अनुभव करके देखा है, आपका कोई पार नहीं पा सकता।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (९) 卐

राम तेरी दाय पडे ज्यूं किजे। भावे मोख मुगत में भेजो, भावे दो जख दिजे।। टेर।।
मोकूं तो हरि भक्तज करणी, भजन अखन्डत तेरो।

मोर खशियां सूं बिडद बदे तो, कांई बिगडसी मेरो।। १।।
जब लग मुख में जिभ्या चाले, तब लग हर हर केसूं।
भावे तार मार भावे खीजो, शरण आपकी रेह सूं।। २।।
भावे आप ओदसा भेजो, भावे मुज बिट मावो।
सतगुरु शरण नांव नहीं छाडूं, ऊथल पुथल होय जावो।। ३।।
सुख दुख ताव बोहत दो सांई, भावे देह धर कूटो।
कह सुखराम भक्त नहीं छोडूं, जे तीन लोक रहे रूठो।। ४।।

रामजी आपकी इच्छा हो सो करो, चाहे मोख में भेजो, मुगती में भेजो व नरक में भेजो। मुझे तो आपकी अखण्ड भक्ति करनी है। और अखण्ड भजन आपका करना है। मेरे कष्टो से यदि आपका बिडद बढता है तो मेरा क्या बिगडता है। जब तक मुंह में जिभ्या चलती रहेगी तब तक आपका ही नाम लेता रहूंगा। चाहे मुझे तारो, मारो व मेरे पर क्रोध करो। मैं आपकी शरण में ही रहूंगा। चाहे आप मेरी दशा खराब करो, चाहे आप भटकावो लेकिन मैं सतग्यान की शरण और आपका नाम नहीं छोडूंगा। चाहे कुछ भी हो जाये, मुझे कितना ही सुख दुख दो या कितना ही तपावो, चाहे आप देही धारण करके मार देवो। म:फ: है कि मैं आपकी भक्ति तीन लोक के नाराज होने पर भी नहीं छोडूंगा। ऐसी आपके ज्ञान में दृढता है।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (१०) 卐

संतो भाई ऐसा नाम कहावे। जे कोई समज सुलज ऊर धारे, सब सुख हाजर आवे।। टेर।।
और शकल विध करणी साध्या, एक एक फल लागे।
निज तत नांव अरध ऊर धारया, अनंत असंख फल जागे।। १।।
जो जन ब्रह्म भेद ऊर लेवे, सहज राम मुख बोले।
ता जन लार नवो निध मुगती, सिद्ध शकल संग डोले।। २।।
जो ईतबार नहीं कोई मानो, भागवत सुण जाई।
वास्टमुनि रिष विश्वामित्र, अड जीत्यो कुण भाई।। ३।।
सुर नर शेष शकल जस बोले, करम भस्म सब होई।
कह सुखराम भक्त करता की, जो जन धारे कोई।। ४।।

संतो से फ: है कि परमात्मा का नांव ऐसा है, इसको समझकर सतगुरु विधि से अन्तर में धारण करे तो सब सुखो की प्राप्ति हो जाती है, यही हाजिर होना है। सब करणियों की साधना करने से एक एक फल लगता है, निज तत नांव याने आधे नांव की याने सतशब्द को धारण करने से अनन्त असंख फलो की प्राप्ति होती है। जो जन ब्रह्म की प्राप्ति का भेद हृदय में धारण करते है, उस जन के पीछे अष्ट सिद्धी नव निद्धी व मुक्ति सब उसके पीछे फिरती है, यदि तुम को मेरी बात का विश्वास नहीं है तो भागवत की कथा जाकर सुणो, वशिष्ट मुनी व विश्वामित्र के दोनो के अडी पडने पर किसकी विजय हुई, देवता व मनुष्य शेषजी सब ही उनके गुणों का वर्णन करते है। म:फ: है कि जो जन सृष्टिकर्ता की भक्ति धारण करते है, उनके सब कर्म भस्म हो जाते है।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (११) 卐

संतो वाद करे सो झूंठा। वां घट करम धस्या है भारी, शिमरथ साहिब रूठा।। टेर।।
राम नाम सुमरण को पाले, सैन बतावे कोई।
गुंगो गाई रीज जो लेवे, तो मुक्त सैन सुं होई।। १।।
बोल्या बिना न्याय जो चुके, बिन तिरियां नहीं लांगे।
तो आ मुक्त सैन सूं होई, जे पाहण पाहण बिन भांगे।। २।।
झाडो दिया बिना विष पाले, बिन जुंझिया होई सूरा।
तो या मुक्त सैन सूं हुवेली, बिन मुख बागे तूरा।। ३।।
हीरा पडया जमी के मांई, बिन खिणियां कोई काढे।
तो या मुक्त सैन सूं होई, लोह बिना बन बाढे।। ४।।
जब लग आग लगी है नांही, तब लग फूंका दीजे।
कह सुखराम लग्या फिर पीछे, होय नचिता रीजे।। ५।।

संतो से फ: है कि जो वाद विवाद करते है वो झूंठे है। उनके घट में भारी करम धसे हुये है। समरथ साहिब उनसे रूठे हुये है। राम के नांव का सिमरण करते है, उसको सैन बताते है। यदि गूंगा मनुष्य गाकर किसी से इनाम प्राप्त कर लेवे तो मुक्ति सैन से हो सकती है। बिना मुंह से बोले न्याय होता हो, बिना तैरने के जलाशय लांगा जाता हो और पत्थर के बिना पत्थर टूटता हो। तो यह मुक्ति सैन से हो सकती है। बिना झाडा दिये जहर उतरता हो, बिना लडाई लडे शूरवीर होता हो, मुंह के लगाये बिना ही बाजा बज सकता हो तो यह मुक्ति सैन से हो सकती है। हीरा जमीन के अन्दर है अगर बिना खोदे निकलता हो, बन को बिना लोहे के काट देता हो तो यह मुक्ति सैन से हो सकती है। जब तक आग नहीं लगे तब तक बराबर फूंके लगानी पडती है अर्थात जब तक आत्मा उस पद में नहीं पहुंच जावे जब तक सतगुरु विधि से भजन करते रहो। म:फ: है कि जब वो देश मिल जावे फिर नचीता होकर वहां पर रहो।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (१२) 卐

बिन धवण लोहा जे गाले, बिन पोयां व्हे रोटी।
तो आ मुक्त सैन सुं होवे, बिन बाढा व्हे छोटी।। १।।
कुवो खिणयां बिन जल काढे, बिन झाडा फल तोडे।
तो आ मुक्त सैन सुं होवे, फोज लडियां बिन मोडे।। २।।
काडे कील बीच में बेहता, तो धोरे बेल न आवे।
कह सुखराम काज नहीं सरसी, ऊलट रसातल जावे।। ३।।

बिना धवण के लोहा गल जाता है और बिना पोये रोटी हो जाती है और बन को काटे बिना छोटा हो जाता है तो यह मुक्ति सैन से हो सकती है। कुवे को खोदे बिना जल निकल जाता हो बिना वृक्ष के ही फल तोड सकते हो और बिना लडे कोई फौज मोड सकते हो तो यह मुक्ति सैन से हो सकती है। बेहते चडस के बीच में से खील निकाल दे तो बैल धोरे में नहीं आता। म:फ: है कि संज सूत चडस सब कुवे में पड जाते है। यही रसातल जाना है, पानी नहीं आना ही काज

नहीं सरना है।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (१३) 卐

साधो म्हारे आंणद भयो घर मांही। निपजी साख नाम अन्न आयो, सांसो रहयो न कांई।। टेर।।
ओ मन ईन्द्र ऊमंग कर आयो, ज्ञान बादला दरस्या।
बिरह तन बीज चमकने लागी, भजन मेघ सो बरस्या।। १।।
सातुं ही अन्न निपज्या भारी, साख हेल दे आई।
अब कोई आनर जांचे मोकूं, तो गाडा भर देवूं भाई।। २।।
मेरा तो टोटा सब ही भागा, और सभी का भागे।
जे कोई आन संभावे शिमरण, तीन लोक शिर गाजे।। ३।।
खुल्या भंडार द्रव्य बहू निसरिया, टोटो पडिये न पावे।
कह सुखराम लगी अब ताली, रोम रोम हर गावे।। ४।।

साधना करने वालो से फ: है कि मेरे शरीर रूपी घर में आनन्द हो गया है। साख निपज गई, सत नाम जागृत हो गया है, यही अन्न का आना है। अब किसी तरह का सोच नहीं रहा। यह मन ईन्द्र की तरह उमंग कर आया और ज्ञान बादल दरसे, विरह रूपी बिजली चमकने लगी व भजन रूपी बरसात होने लगी, सात अंग याने तन, मन ,वचन, सुरत, निरत, लिव, बैराग से भक्ति होना ही सातू अन्न निपजना है। सारा शरीर उसका अखंड अनुभव करे, यही साके हेल दे आना है। अब मेरे से कोई ज्ञान प्राप्त करना चाहे तो विधि से भजन करना सीखना ही गाडा भरना है। परमात्मा की प्राप्ति हो गई, यही टोटा भागना है। और जो यह साधन करेगा उसे भी परमात्मा की प्राप्ति हो जायेगी, यही सब का भागना है। सतगुरु विधि से सुमरण करने पर खण्ड पिण्ड पारब्रह्म से ऊपर अखण्ड अनुभव सतशब्द का होना ही तीन लोक सिर गाजना है। जब द्रव्य की खान की खाने खुल जाती है तो किसी तरह की कमी नहीं रहती है। म:फ: है कि इस तरह भजन होने लगा कि रोम रोम सतशब्द का अनुभव होने लग गया।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (१४) 卐

साधो भाई धिन जिण चोला किया। ताग ताग सब ही हम सोध्या, मरम ईसी का लिया।। टेर।।
बस्तर सात एकठा किया, नो जागा सो कापी।
तागो एक भरयो सब मांही, ऐसी गुदडी आपी।। १।।
एक साठ तीन सो टुकडा, जोड जोड के कीवी।
नो सो तार बहोतर फूलडी, भांत भांत कर दीवी।। २।।
इण कथा को भेद न पायो, सो नर मूढ गिंवारा।
कह सुखराम घणी मैं क्या कहूं, बेहगो काली धारा।। ३।।

साधना करने वाले भाइयो से म:फ: है कि यह शरीर रूपी चोला बनाया है। उस परमात्मा को धिन है इसका एक एक ताग हमने सोधा है। और इसके भेद को जाना है। इस शरीर की रचना सात धात इकट्ठी करके की है। इसमें नौ दरवाजे है, सात इन्द्रिया, मल व मूत्र यह नौ दरवाजे है।

सारे शरीर में चेतन एक है, ऐसा यह शरीर है। तीन सौ साठ टुकडो को जोडकर एक शरीर की रचना करी है। शरीर में नौ सौ नाडिया है, जिसमें बहोतर मुख्य है। इस प्रकार शरीर बना है। जिन्होंने इस शरीर रुपी कथा का भेद नहीं पाया वो मूर्ख याने गिंवार है। म:फ: है कि ज्यादा क्या कहूं वह तो कालीधार बह गया याने जन्म मरण में आता रहेगा।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (१५) 卐

साधो मत मेरा जन्म गमावो। जो कोई सेण हमारो जग में, दोय चोट सिर बावो।। टेर।।
लाग्यो बाण शब्द को भारी, निकस्यो पार दुपारा।
सातूं फोड पांच कूं बिंध्या, अब नहीं जीवण हारा।। १।।
बावन हार कसर नहीं राखी, लागी मरम की भारी।
सुणता बाज भरम गया नासी, राम राम की धारी।। २।।
पांच दिना पीछे ही मरणो, सो अब ही हम मुवा।
कह सुखराम पचीसूं नौ को, कर दो जग में धुंवा।। ३।।

साधना करने वालो से कह रहे है कि इस जन्म को व्यर्थ मत गमावो, यदि कोई हित करने वाला है तो दोय चोट याने आत्मा जन्म मरण में आती है उसे ज्ञान से अलग करके जन्म मरण से रहित होने का ज्ञान देवे, यही चोट बाना है। सांस ऊसांस में भजन करना ही दो चोट बाना है। सतगुरु याने केवली भगवंतो का उपदेश धारण करके उनके बताये माफिक साधन करने से दशवें द्वार से पार होना ही निकस्यो पार दुपारा है। सात धातू व पांच तत्वो के शरीर से अलग होना ही सात फोड पांच कू बिंधना है। आत्मा का पुन: जन्मने मरने में नहीं आना ही अब नहीं जीवणहारा है। सतगुरू का उपदेश देना ही बावणहार कसर नहीं रखना है। निज मन से धारण करना ही लागी मरम की भारी है। उनका उपदेश सुनते ही भरमो का नाश हो गया और राम राम का भेद से भजन करने लग गया। म:फ: है कि पांच दिन पीछे तो सबको मरना ही है। उस मरने के ही पहले पचीस प्रकृति व नव तत लिंग शरीर से अलग होना ही धुंवा करना है याने जीते जी मरना है, यही जीवन मुक्त अवस्था है।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (१६) 卐

केवल ध्यान धरे रे। जे जन केवल ध्यान धरे रे, जीवत पांच मरे रे।। टेर।।
जन्म जूण सब जाय चौरासी, सब सीध काज सरे रे।
अठ सीध नव नीध मुक्ति कहिये, निश दिन लारे फिरे रे।। १।।
गंगा जमुना सबै सरस्वती, चरणा की आश करे रे।
सुरपुर नरपुर नाग निसाणा, महिमा शकल करे रे।। २।।
कह सुखराम धरम नहीं होवे, करम न दोष चढे रे।। ३।।

जो जन रामजी का भजन ध्यान करके जीते जी पांच विषयो से अलग हो जाना ही जीवत पांच मरे रे है। जन्म मरण से रहित चौरासी में आना जाना मिट जाता है। यह सब सिद्ध कार्य होना है। आठ सिद्धी नो निद्धी व मुगती उनके पीछे पीछे फिरती है। गंगा जमुना सरस्वती भी ऐसे केवली

संतो के चरणो की आशा करती है। उनके चरणो के प्रवेश होने से ही वे पवित्र होती है। तीन लोक में याने सुर लोक, नाग लोक, नर लोक में सब उनकी महिमा करते है। म:फ: है कि ऐसे संत धरम करम से अलग हो जाते है।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (१७) 卐

सुणो सरब जुग मैं हेला दिया। अणघड देव अलख अविनाशी, तिण दोय दांडा किया।। टेर।।
वेद कुराण पुराण पुकारे, भागवत सो गावे।
अशुभ रीत सो नरक पडण की, शुभ मुगत पद पावे।। १।।
करणी करो करम सो छाडो, सुणो नार नर लोई।
तीन लोक साहिब की माया, मैं मैं कहो मत कोई।। २।।
भरम अज्ञान तिमिर दुख मेटो, ज्ञान रतन ऊर लावो।
जन्म मरण दोय है पेंडा, समझ सुलज गुण गावो।। ३।।
ईण सुण राह शकल कूं जांणो, जाब साहिब कूं देणा।
कह सुखराम सोग कर सांसो, गुन्हो शीष क्यूं लेणा।। ४।।

सब सुणो जगत को उपदेश करता हूं कि परमात्मा अणघड अलख अविनाशी देव है, उन्होंने पाप पुण्य ये दो रास्ते बनाये है। वेद, कुराण, पुराण व भागवत सब यही कहते है कि अशुभ करम से नरक व शुभ करम से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। निष्काम भाव से करणी करो व सकाम भाव से करम मत करो। सब ही स्त्री पुरूष सुणो तीन लोक में सब माया परमात्मा की है। इसको मैं याने मेरी है मेरी है करके अपनी मत समझो, भरम अज्ञान रूपी अन्धकार से दूर होकर ज्ञान रूपी प्रकाश हृदय में धारण करो। जन्म मरण दो रास्ते है। समझकर सतगुरु के ज्ञान व विधि से भक्ति करना ही समझ सुलज हर गावो है। इस रास्ते सबको जाना है और परमात्मा को जवाब देना है। म:फ: है कि सोच फिकर करके सिर पर क्यों भार लेते हो।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (१८) 卐

प्रभुजी मैं कहा करूं इस मन को। सतलोक की बात न माने, सुख चावे इस तन को।। टेर।।
सूत बित नार त्याग घर अपणे, दूर दिसांतर जावे।
ज्यां त्यां जाय धरे शिर सेवग, दूणो हेत लगावे।। १।।
ज्ञान ग्रन्थ मैं बोहोत सुणाऊं, प्रसंग दिष्टंग सोई।
ऊण बेला में मन जे कर ले, वे तो पलटे पल में आई।। २।।
जे मन घेर संत पे जाऊं, ज्ञानज बोहोत सुणावे।
गुण सुण लाख शेष दस छाडे, ओगुण एक संभावे।। ३।।
मन कूं घोटर घर में राखूं, राम राम मुख गावे।
छिन पल मांही किदर होय भागे, जाय बिसे रस खावे।। ४।।
कह सुखराम सुणो हर दाता, ओ मन मो बस नांही।
मैं तो शरण तुमारी आयो, प्रभु साय करो हो गुसांई।। ५।।

निजमन परमात्मा से प्रार्थना कर रहा है कि इस मन का क्या करूं, सतलोक की प्राप्ति नहीं चाहता है, इस शरीर के सुख चाहता है। लडका, धन और स्त्री व घर छोडकर दूसरे से मोह करने लग जाता है, जहां तहां जाकर दूसरो से मोह करके दूना प्रेम करता है। प्रसंग दिष्टांग के साथ कई तरह के ज्ञान सुणाता हूं उस समय तो स्वीकार करके वापिस एक क्षण में बदल जाता है। मन को समझाकर संतो के पास जाता हूं वो कई प्रकार से ज्ञान देते है। लाखो हजारो गुणो को छोडकर एक अवगुण धारण कर लेता है। मन को समझाकर भजन में लगाता हूं। तो एक क्षण भर में ही निकल कर विषयो का चिन्तन करने लग जाता है। म:फ: है कि आत्मा कह रही है कि यह मन मेरे बस में नहीं है। मैं आपकी शरण में हूं, आप सहायता करने वाले है।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (१९) 卐

प्रभुजी मैं हार चल्यो इस मन से। दे दे ज्ञान पचे पच हारे, मोह न छाडे धन सुं।। टेर।।
कह कह जीभ हमारी घस गई, एक न माने कांई।
जग की बात सुणन प्रमाणे, यो तन धन अरपे जाई।। १।।
हटक हटक मेरा दिल थाका, पाल पाल चित सोई।
बरज्यो रेह नहीं मन दुष्टी, विषय पिये संग लोई।। २।।
ब्याव बिरद करे जब सूरा, तन धन बल संभावे।
हर की भक्त भजन की बेला, सो निकट न नेडा आवे।। ३।।
निज मन पुकार करे गुसांई, सुण हर साहिब मेरा।
ओ मन शिकल विकल होय बोले, तब बिडद लजावे तेरा।। ४।।
दया करो हर आद गुसांई, जन कूं शरणे लिजे।
कह सुखराम श्याम इस मन कूं, जन के बस हर किजे।। ५।।

परमात्मा से प्रार्थना कर रहे है कि मैं इस मन से हार गया हूं, इसको कई तरह के ज्ञान दे दे कर पचहारा, यह धन से मोह नहीं छोडता। इसे समझा समझा कर मेरी जीभ घिस गई है, एक भी नहीं मानता। संसार की बात सुनते ही धारण करता है और तन धन अरपण कर देता है। इसको रोक रोक कर मेरा दिल थक गया। समझा समझा कर चित थक गया। रोकने पर भी यह दुष्ट नहीं रूकता है एवं विषयो का हर समय चिन्तन करता रहता है। ब्याव शादी घर में कार्य होने पर तन धन लगाकर शूरवीरता से कार्य करता है। परमात्मा कि भक्ति के लिए जरा सा भी समय नहीं लगाता है। तब आपका बिडद लज्जाता है। निजमन परमात्मा से प्रार्थना करता है कि हे परमात्मा मेरी प्रार्थना सुणो, यह मन भजन करने में नही लगता है। हे परमात्मा कृपा करो, दास को शरण में लो। म:फ: है कि हे परमात्मा आप इस मन को मेरे बस में करिये।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (२०) 卐

संता भजलो केवल राम। ररो ममो सत बीज शब्द है, ले पहुंचे निज धाम।। टेर।।
जम की झाट बुरी है भाया, सुणज्यो सब नर नारी।
राम भजन बिना परथ न बचो, मार पडेगी भारी।। १।।

लेसो स्वाद जमा के वो घर में, ये बातां वां पासो।
श्याम बिना जिण त्यां विध कीनी, तीन लोक में खासो।। २।।
खबरा पडसी वां दिन भाया, सोचो रे जन लोई।
व्हाल पडेगा अंतकाल में, सुण लिजो सब कोई।। ३।।
चेतन व्हे कह सुखदेवजी, क्यूं ओ जन्म गमावो।
ओ सुण जन्म अमोलक हीरो, नेडो निकट न पावो।। ४।।

संतो से फ: है कि केवल राम का भजन करो। रकार व मकार सतशब्द की जागृति का सच्चा बीज है। उसी से निज धाम के:पद आ:पद की प्राप्ति होती है। सब स्त्री पुरूष सुनो, जमराज की मार बडी बुरी है। राम भजन बिना कभी नहीं बच सकते, भारी मार पडेगी। किये हुये करमो का फल यमराज के यहां भोगना पडेगा, यही स्वाद लेना है। परमात्मा की प्राप्ति के बिना किये करमो का फल तीन लोक में भोगना पडेगा, उस समय मालूम पडेगी। सब स्त्री पुरूष सोचो अन्त समय में बडी बुरी हालत होगी, सब सुण लो। म:फ: है कि अब भी समय है कि चेत जावो मनुष्य जन्म अमूल्य हीरे की जैसे है, जल्दी प्राप्त नहीं होने वाला है। व्यर्थ क्यों गमा रहे हो।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (२१) 卐

संतो मैं तो करम अभागी। पूरब करम ईस्या मुज मांही, दुबध्या अजहूं न भागी।। टेर।।
सतगुरु मेरे किरपा किनी, घर बैठा पद दिया।
मेरा लछ ईस्या ऊर मांही, दरशण जाय नहीं किया।। १।।
ज्यां पद पूरण मोकूं दिया, भरम भांज समझाया।
वाकूं छोड दिया, गुरु ओरी, ऐसा करम कमाया।। २।।
वां मोसुं ऐसा गुण किया, जम दावा सब मेटया।
धिरग धिरग जो जुग जनम हमारो, सनमुख जाय न भेटया।। ३।।
धिन सतगुरु धिन समरथ स्वामी, मेरी कसर न जोई।
मैं तो बेल बोहत बिद हुवा, गुरु बिरच्या नहीं कोई।। ४।।
कह सुखराम मुवा मैं डोलूं, जन्म अकाजा भाई।
जब लग मेरे गुरु की सेवा, मो सुं बणेहन कांई।। ५।।

संतो से फ: है कि मैं तो करम अभागी हूं। मेरे पहले के करम ऐसे है। कि मेरी शंका अभी तक नहीं गई है। सतगुरु देव याने केवली भगवंतो ने कृपा करके मेरे को इस शरीर से पूर्ण पद की प्राप्ति कराने का ग्यान दिया। लेकिन मेरे तो लक्षण ही ऐसे है। कि मैंने उनके जाकर कभी दर्शन भी नहीं किये। याने ग्यान धारण नहीं किया। उन्होंने मेरे सब भरमो को मिटाकर समझाया और पूर्ण पद की प्राप्ति का ग्यान समझाया, ऐसे गुरु को छोड कर दूसरे गुरु किये। मैंने तो ऐसे करम किये है, उन्होंने तो मेरा जन्मना मरना मिटाने की विधि समझाई। ऐसा गुण किया, पर मेरे जन्म को धिक्कार है कि उनके सन्मुख जाकर कभी दर्शन याने भजन करके सतशब्द का अनुभव भी नहीं किया। सतगुरु याने सतज्ञान को धिन है। परमात्मा को धिन है जो मेरे अवगुण नहीं देखे, मैंने कितनी ही बार मनुष्य शरीर रूपी बेल प्राप्त की। लेकिन मैं ऐसे ओधाधारी गुरुदेव के सन्मुख नहीं

हुआ। इसलिये मनुष्य जन्म मिलने के बाद भी मरे हुये के समान डोलता रहा और मेरा जन्म ऐसे ही जा रहा है। जब तक मैं भक्ति करके गुरुपद में नहीं पहुंच जाऊं। तब तक मेरे से गुरु सेवा नहीं हुई।

卐 हरजस पद राग बिहंगडो (२२) 卐

संता राम उथापे झूंठा। शिवरण बिना काय की सैनी, जां सूं साहिब रूठा।। टेर।।
कहे कहे खांड लेत है सब ही, मांग आग घर लावे।
कागज मांय लिखी सो चीजां, बांच्या सूं सब पावे।। १।।
मुख सुं पढियां आगियो लागे, लिख लिख शिला तिराई।
गज सुण टेर हांक जब दीनी, फंद काटियो आई।। २।।
सब ही मांड बावना मांही, क्या साहिब क्या माया।
धरिया नांव सकल सोई बंधन, केण सुणन को भाया।। ३।।
जे कोई नांव सूरत में राखे, तो बावन के मांही।
चित मन सूरत पवन व्हे भेला, जब लग वो पद नांही।। ४।।
मन सूं नांव सूरत में राखे, सो मुख सुं क्यों नही कहिये।
परण्या बिना नार होय बैठी, पीव सुख किम लहिये।। ५।।
चित मन सूरत थके है पांचू, दशवे द्वार समावे।
जब यो शब्द बावना बारे, बिन मुख हरिजन गावे।। ६।।
बावन परे शब्द है सोई, सो सोहंग हम पायो।
कह सुखराम राम मुख रटियो, जब वांको घर आयो।। ७।।

महाराज संतो से फरमाते है कि जो रामनाम के सिवरण को मना करता है वह झूंठा है। मुखार बिन्द से राम राम रटता नहीं है और सेन यानि मौन रखकर कहता है कि हमारे अंदर हो रहा है तो उससे परमात्मा रूठे हुये है, उनको परमात्मा नहीं मिलेंगे। जैसे कोई मांग मांग कर खांड लेते है। तब ही मिलती है, जैसे अग्नि दूसरे के घर से मांगकर लेते है। तभी मिलती है। कागज में लिखी हुई सब चीजे बांचने से मिलती है। मुख से अग्नि का मंत्र पढने से अग्नि लगती है। रामचन्द्रजी ने पत्थरो पर राम राम लिखकर उन्हें तैराया तब वो तिरने लग गये। हाथी ने मुंह से आराधना की जब उसका दुख दूर हुआ। सभी संसार बावन अक्षरो में है, क्या तो साहिब क्या माया। जिन्होंने नाम धराया है, जो कहने सुनने में आता है, वह सब बावन में है। जो कोई नांव सूरत में रखता है। वो भी बावन में है। चित मन सूरत श्वांसा ये इकट्ठे होते है, तब तक वो पद नहीं है। आप मन से नांव लेकर सूरत में रखते है, वो मुख से क्यों नहीं लेते। बिना विवाह किये ही मन से किसी की स्त्री बन बैठे तो उसे पति का सुख कैसे मिल सकता है। चित मन सुरत व पांचो विषय थक कर दशवे द्वार में समा जाते है। तब सत शब्द बावन अक्षर से आगे सता समाधि में होता है तब सहज में ही देही मंडल में रटणा, विदेही मंडल में सतशब्द गेबऊ होता है। बावन अक्षरो से आगे जो शब्द है वह सोहंग याने उस्वांस शब्द मुझे मिला है। म:फ: है कि जब मुंह से राम नाम रटा है जब ही उस पद की प्राप्ति हुई है।

卐 हरजस पद राग बिहंग (१) 卐

संतो ईण मन कूं क्या कीजे। अमरत नाम छाड दे दुष्टी, विषय करम सुं रीजे।। टेर।।
है सो करम करे नहीं कोई, नहीं है तांसू झूंबै
धिरग धिरग मन बुध बिहूणा, आन झूंठ सूं लूंबे।। १।।
अलबी जीभ झके दिन राती, नेण पाप दिश जोवे।।
मात पिता सुत नार कुलंतर, धन काजे नित रोवे।। २।।
लालच लोभ करम के काजा, नित मन पंथ ध्यावे।
हरकी भक्त जन की मन में, सपने हूं नहीं लावे।। ३।।
जां सूं जाय नरक में पडियो, सो विध हरषर धारे।
तां पद सूं गत मोख मिलीजे, वाकूं नांय सम्भारे।। ४।।
हाहाकार चल्यो ईण मन सूं, मेरे हाथ न आवे।
कह सुखराम मोख पद छाडर, नरक कुंड दिश ध्यावे।। ५।।

संतो से फ: है कि इस मन का क्या करूं, परमात्मा का नाम अमृत के समान उसे छोडकर विषयो व करमो में लगा रहता है। भजन करना चाहिये वो नहीं करता है, नहीं करने के काम को करता है। हे मन मुरख तुझे धिक्कार है धिक्कार है। जो माया असत है, उसकी भक्ति करता है। जीभ से रात दिन फालतू की बाते करता है, आंखो से कुदृष्टि से देखता है, माता पिता सन्तान धन कुटुम्ब व स्त्री के लिये रात दिन रोता रहता है। लालच लोभ व करम बंधन में हमेशा लगा रहता है। परमात्मा की भक्ति व संतो की संगत करने का विचार तो सपने में भी नहीं करता। जिस काम को करने से नरको में जाना पडता है, उसको खुशी खुशी धारण करता है। रामजी की भक्ति करने से मुक्ति व मोक्ष मिलता है उसको नहीं करता। मैं सब तरह से इस मन से हार गया हूं। अब यह मन मेरे बस में नहीं होता है। म:फ: है कि मोक्ष की प्राप्ति का रास्ता छोडकर यह मन नरको में जाने का कार्य करता है।

卐 हरजस पद राग बिहंग (२) 卐

प्रभुजी मेरी बांह संभावो। मैं खूनी अपती तोही तेरा, किरपा कर घर आवो।। टेर।।
डरप्यो जीव करम सुण मेरो, ढयाढी करे मन मांही।
रूण के जीव मोख कूं साहिब, सुण हो आद गुंसाई।। १।।
तलब लगी मेरे उर मांही, थ्यावस साहिब दीजे।
दिल भर मो दिश जोय गुसांई, जन को कारज कीजे।। २।।
धीरज मेरे मन को नांही, निमष निमष विरेह आवे।
पल पल व्याकुल हुवे ओ प्राणी, जीव दसूं दिश जावे।। ३।।
बल साहिब सतगुरु हरि दीजे, भांजो भरम अंधेरा।
मेरा करम काट कर कान्हे, मेट चौरासी फेरा।। ४।।
जीव विचारो क्या कर सके, रेहत रेण सो कोई।
कह सुखराम आपकी कृपा, भक्त करूंगा सोई।। ५।।

आत्मा परमात्मा से प्रार्थना कर रही है कि आप मेरे को शरण में लेने की कृपा करो, मैं दोषी और दुखी हूं तो ही आपकी ही हूं, मुझे अन्तर में दर्शन दो, मेरे करमो को सुनकर जीव डर रहा है और मन ही मन में दुखी हो रहा है। हे परमात्मा जीव तो मोक्ष चाहता है। मेरे हृदय में यही इच्छा लग रही है। हे परमात्मा आप कृपा करो, आप मेरे पर पूर्ण कृपा करो, दर्शन दो, मेरे मन को धैर्य नहीं है। क्षण क्षण में विरह आ रही है, पल पल में प्राण दुखी हो रहे है, अर जीव दसो दिशा में जा रहा है। हे परमात्मा व सतगुरु मुझे शक्ति दो और मेरे भरमो का नाश करो, मेरे करमो का क्षय करके जन्म मरण से रहित कर दो, जीव की क्या शक्ति है जो यह कुछ कर सकता है। कोई कसर रह जावे तो। म:फ: है कि आप परमात्मा की कृपा से ही भक्ति करने में लगेगा।

卐 हरजस पद राग मंगल (१) 卐

नांव नकेवल कोय, संभावे आय के। तां पर या शमसेर गहे है जाय के।। १।।
ब्रह्मा विष्णु महेश, शक्त बोलावसी। धरमराय की फोज, उमंग शिर आवसी।। २।।
अठ सीध नव नीध जोय, जांण में घेरसी। अे सब गुंथे डाव आप दिश फेरसी।। ३।।
या पांचु की मेहेर, कहर सम जाणिये। सतगुरु के बिन ज्ञान छाड सब ठानिये।। ४।।
सुख दुख दोनो जीत, रटे निज नांव कूं। सो पूंचे सुखराम ब्रह्म के गांव कूं।। ५।।

मंगल किसका है? आत्मा का। आत्मा का मंगल कब होगा? जब जन्म मरण से बरी होगी यही मंगल है।

इसके लिये- ब्रह्म का नाम राम संतो की विधि से रटता है तो उसके ऊपर कई बाधायें आती है। इस शरीर के अन्दर ब्रह्मा जी का रजो गुण, विष्णु का सतोगुण, महेश का तमोगुण, शक्ति की इच्छा शक्ति तथा मन रूपी धर्मराय की फौज- काम क्रोध लोभ मोह अंहकार ये सब खडे हो जाते है। विधाता ने राम राम रटने वालों के लिये तीन लोक में कई सुविधाये कर रखी है। अष्ठ सिद्ध व नव निद्ध आकर के खडी होती है। और संतो से कहती है हम आपके लिये हाजिर है। कई सुखो के चेन दिखाकर के साधक को अपनी ओर मोडती है। इसलिये उपरोक्त पांचू की मेहर, कृपा को मंगल करने में बाधा समझो। इसलिये अब तुझे मंगल ही करना है। तो अणभै ज्ञान के हिसाब से ही चलना है। संसार में रहते हुये सुख व दुख को बराबर समझते हुये राम नाम की रटना करते रहो। इस तरह से भक्ति करने वाली आत्मा केवल पद में पहुंचती है। यही आत्मा का मंगल है।

卐 हरजस पद राग मंगल (२) 卐

जुग बडाई छाड नांव निज गावसी। जाके आदिस पेल सुणो सब आवसी।। १।।
अणभै होय उचार अज्ञया बोहो लेत है। यां राखे ये घेर चलण नहीं देत है।। २।।
शिष्य चेला सब छाड नांव सुं लागसी। ज्यां देवत चल आय सिद्ध बोहो जागसी।। ३।।
सिद्ध सुं रिजे नांय देवा कूं फेरसी। तां दिन ब्रह्मा महेश विष्णु सो घेरसी।। ४।।
या तीना की रीजमान छिट काइये। तां दिन कह सुखराम ब्रह्म लग जाइये।। ५।।

जगत की बडाई छोडकर निज नांव की भक्ति करने वालो के उपरोक्त बातें बरतेगी। जो अणभै ज्ञान के अनुसार भक्ति की विधि धारण करते है तो उनके ऊपर तीनो गुण, धर्मराय की फोज, रिद्धि सिद्धि रोकती है। भक्ति करने वाला न किसी का शिष्य व चेला बनता है नहीं बनाता है। राम नाम

की रटना करता है। तो देवता ऐसे भक्ति वाले के हाजर रहते है एवं सिद्धाई जागृत हो जाती है। तो उस सिद्धाई से फूले नहीं। एवं देवताओ से किसी प्रकार की चाहना नहीं करे, यही देवा कूं फेरसी है। तब भक्ति करने वाली आत्मा त्रिकुटी यानि गौलोक धाम तीनो देवो के स्थान पर आती है। तब तीनो देवता उनका सम्मान करते है कि आप यहां पर रूको, हमारा आथित्य स्वीकार करो, लेकिन पहुंचे हुये संत इनकी रिजमान को नहीं मानते, क्यों कि उनको केवल पद में जाना है। यहीं ब्रह्म लग जाना एवं आत्मा का मंगल है।

卐 हरजस पद राग मंगल (३) 卐

धिन धिन सो हंस जीव, मानव तन पाय के। साहेब कूं दिन रात, गयो नर गाय के।। १।।
किया किया सब शुभ काम, अशुभ सब पालिया। शिवरयो शिरजण हार कारज कर चालिया।। २।।
होय उजागर जीव चलया है धाम ने। धिन धिन वे नर नार गायो ज्यां राम ने।। ३।।
जब लग जुग में बास सांई नहीं बिसरे। धिन वांको सुण भाग बैकुण्ठी निसरे।। ४।।
गरूढ बुजियो आय बिशन युं भाक्यिो। अंत समे उच्छाव आनन्द सत राखियो।। ५।।
दिन द्वादस जोय हरिजस गावसी। कह सुखदेव वो जीव सुणियां सुख पावसी।। ६।।

ऐसे हंस व जीव धिन है, जो मनुष्य शरीर पाकर परमात्मा का रात दिन भजन करके जाते है। सब अच्छे अच्छे करम किये, बुरे कर्म छोडे है और परमात्मा का भजन कर अपना जगत में नाम करके धाम को जाते है। उन स्त्री पुरूषो को धिन है धिन है। जिन्होंने परमात्मा की भक्ति की है। संसार में रहते है तब एक क्षण भी परमात्मा को नहीं भूलते है। उनके भाग्य भी धिन है जिनके शरीर छोडने के बाद बैकुण्ठी निकलती है। विष्णु भगवान को गरूड जी ने पूछा तब उन्होंने कहा कि अंत समय में भगवान का भजन करना चाहिये और दुख नहीं मानना अच्छा है। उनके बारह दिनों में परमात्मा की भक्ति भजन करना चाहिये। म:फ: है कि इन बातो को सुनकर जीव बहुत सुख पाता है।

卐 हरजस पद राग मंगल (४) 卐

धर मानव अवतार न गायो राम कूं। गया वे जमारो हार चल्या जम धाम कूं।। १।।
अन्त समय के लेण भजन नर करत है। सुख संपत सब छाड ध्यान हर धरत है।। २।।
सुणज्यो सब नर नार समो अन्त आवसी। शिवरण बिन जमदूत पकड ले जावसी।। ३।।
छाड जगत की रीत को भगत संभाइये। जम जालम फिर जाय परमपद पाइये।। ४।।
चले कोई जन धाम इसी विध कीजिये। कर बैकुंठी उच्छाव बोलावो दीजिये।। ५।।
कोट कोट फल होय बैकुण्ठी काडिया। हंस दुवा दे जाय अशुभ राह छाडिया।। ६।।
जे कोई रोवे नांय आंसू नहीं निसरे। कह सुखदेव वो जीव बिसे दुख बिसरे।। ७।।

मनुष्य जन्म पाकर जिन्होंने रामजी की भक्ति नहीं की, वे मनुष्य जन्म व्यर्थ खोकर नरको में गये। अन्त समय में वृति भगवत में बनी रहने के लिये भजन करते है। सुख सम्पति का मोह छोडकर परमात्मा का ध्यान करते है, सब स्त्री पुरूष सुणो, अन्त समय में बिना भजन किये जम के दूत पकड ले जायेंगे। संसार की रीति को छोड कर भक्ति धारण करो, जिससे जन्म मरण मिट

कर परम पद की प्राप्ति हो जाये। कोई जन धाम को चले तो ऐसी विधि करो, बैकुण्ठी का उछब करके ले जावो। बैकुण्ठी निकालने पर क्रोडो फलो की प्राप्ति होगी। अशुभ रास्ता छोडने से हंस आशीष दे जाता है। जे कोई रोता नहीं और आंसू नहीं निकालता है। तो म:फ: है कि वो जीव विषयो का दुख भूल जाता है।

卐 हरजस पद राग मंगल (५) 卐

सुणज्यो सब नर नार भजन सो कीजिये। हंस चल्यो घर आद बोलावो दीजिये।। १।।
कर बैकुण्ठी खूब माहे पदराइये। परदिखणा प्रणाम हरि जस गाइये।। २।।
अगर चन्दन कूं ल्याय तिलक सो कीजिये। केशर आंण गुलाल छांटणा दीजिये।। ३।।
फरयां चिरांका जोय बाजा सो बजावणा। कर नाटक बोहो भांत मंजल लग जांवणा।। ४।।
यां बांता करतार बोहोत सुख पावसी। हंसा के गुण होय तुमें जस आवसी।। ५।।
धिन नर नारी गांव रोज ज्यां बिसरे। धिन नर जांके हो लार बैकुण्ठी निसरे।। ६।।
जुग में बाता दोय अशुभ शुभ जाणिये। कह सुखदेव आ चाल असल सत ठाणिये।। ७।।

सब ही स्त्री पुरूष सुणो, भजन करो। हंस शरीर छोड परम पद में जाता है उसको खुशी के साथ ले जावो। बैकुण्ठी बनाकर उसमें विराजमान करो, उनकी प्रदक्षिणा व प्रणाम करके परमात्मा के गुणानुवाद गावो, चन्दन का तिलक करके गुलाल के छांटणा लगाावो, फरयां लगावो, चिरांका जोवो, बाजा बजावो, इस प्रकार ठाट बाठ से शमशान भूमि तक ले जावो। इन बातो से परमात्मा बहुत प्रसन्न होवेंगे, हंस का भला होगा व तुम्हारा यश होगा। उन स्त्री पुरूष गांव वालो को धिन है जो रोते नहीं है। वे मनुष्य भी धिन है जिनके पीछे बैकुण्ठी निकलती है। जगत में शुभ अशुभ ये दो बाते है। म:फ: है कि यह रीति सही व अच्छी है, इसको सत समझो।

卐 हरजस पद राग मंगल (६) 卐

सुच धरणी अप सुच, तेज ही सुच है। ज्यां भेटियां मल मेल, सबे ही मुच है।। १।।
सुच पवन आकाश, सुच करतार है। हर हर कर दो दाग, दोष सब टार है।। २।।
धरणी सुं अस्तुत, बिनती कीजिये। रथी चुणां शीर तोय, दोष मति दीजिये।। ३।।
देव द्रुग छल छिद्र, दूर सब जावज्यो। कह सुखदेव तुम राम, कृपा कर आवज्यो।। ४।।

धरती पानी तेज सब पवित्र है। इनमें मिलने पर सब मल मेल मिट जाता है। हवा आकाश व परमात्मा पवित्र है। परमात्मा का नांव ले लेकर दाग करने से सब दोष मिट जाते है। अरथी चुण कर पृथ्वी माता से प्रार्थना करो कि हमें इसका दोष मत दीजिये। देव राक्षस छल छिद्र सब दूर हो जावो। म:फ: है कि राम आप मेहर करके पधारिये।

卐 हरजस पद राग मंगल (७) 卐

धिन धिन सो हंस भाग, बिसे सब पालिया। मरतलोक में आय, कारज कर चालिया।। १।।
देवलोक के मांय, आनंद सो होत है। आज विशन को लोक, बाट सो जोत है।। २।।
धिन धिन हो पुल आज, हंस सो आवसी। मरतलोक हर गाय, बोहोत सुख पावसी।। ३।।
यूं हर जोवे बाट, ज्ञान सुण जोइये। जे चावो सुख चेन, मती कोई रोइये।। ४।।

रोयां जम का दूत, दोडयां आवसी। धरमराय के द्वार, घेर ले जावसी।। ५ ।।
मानो वचन हमार, सही कर लीजियो। छाड जगत की रीत, भगत राह कीजियो।। ६ ।।
जुग चालां सुं जोय, हंसो दुख पावसी। कह सुखदेव सब साध, गुन्हो शिर आवसी।। ७।।

उन हंसो को धिन धिन है जो विषयो को छोडकर मृत्युलोक में आकर रामजी की भक्ति कर गये है। देवताओ के लोक में देव खुशी होते है। विष्णु के लोक में भी उनकी राह देखते है। आज के पुल को धिन है जो मोक्ष में जाने वाले हंस आवेंगे। मरतलोक में रामजी की भक्ति करके बहुत सुखो की प्राप्ति करके आयेंगे। इस प्रकार परमात्मा भी उनकी राह देखते है। ज्ञान से इस बात को देख लो। अगर सुख शान्ति चाहते हो तो कोई मत रोवो। रोने पर यमराज के दूत दौडकर आकर के यमराज के यहां ले जायेंगे। हमारे वचनो को मानो व सत समझो कि संसार की वृतियों से अलग होकर प्रेम से भक्ति धारण करो। संसार की वृतियों में चलने से हंसा को बड़ा दुख होगा। म:फ: है कि साध होकर भी संसार की वृतियों में चलने पर उनकी निंदा होगी, यही गुन्हे शिर आवसी है।

卐 हरजस पद राग मंगल (८) 卐

आन धरम दिन चार, उपज खपजाय है। ब्रह्म भगत अर भेद, अटल जुग मांय है।। १ ।।
अंत समय लग जोय, भगती में आवसी। जांको यो गुण होय, नरक नहीं जावसी।। २ ।।
अंत समय में भूप, महा हर गावियो। गयो नरक विष छूट, परमपद पावियो।। ३ ।।
सात दिवस रट राम, परिक्षित हालियो। रिख को मेटयो श्राप, मुगत में मालियो।। ४ ।।
दलिपत मोहरत दोय, रटयो है राम ने। गयो है जलम वो जीत, सिधायो धाम ने।। ५ ।।
अजामेल अंतकाल के जमदूता मारियो। कह सुखदेव हरि नांव, लेत सम तारियो।। ६ ।।

माया का धरम थोडे समय का है, उपजता खपता है। ब्रह्म प्राप्ति का साधन हमेशा निश्चल रहता है। अंत समय में भी यदि ब्रह्म की भक्ति करने में लगेंगे तो उसका यह फल होगा कि नरक में नहीं जायेंगे। राजा खटवांग ने अंत समय में भक्ति धारण की, जिससे नरको के दुख से छुटकर परमपद की प्राप्ति की। राजा परिक्षित ने सात दिन रामजी की भक्ति की, जिससे ऋषि का श्राप मिटकर मुगती को प्राप्त हुआ। दो घडी रामजी का भजन कर मनुष्य जन्म को जीत कर राजा दिलिप ने धाम की प्राप्ति की। अजामेल को अंत समय में यमराज के दूत लेने आये पर उसने पुत्र राम नारायण को पुकारा, जिससे ही उसका उद्धार हो गया।

卐 हरजस पद राग मंगल (९) 卐

जाग जाग धर जाग, के शेष जगाइयो। पुतर जग में खेल, रम घर आइयो।। १ ।।
लिज्यो सार संभाल, गरभ मती दीजियो। तम प्रगट पांचु देव, सबे सुण लिजियो।। २ ।।
ब्रह्मण्ड पवन तेज, अप धर मानियो। ओगुण इसका छाड, आपणो जांणियो।। ३ ।।
समरथ सामी राम, सुणो सत सांईयां। चेतन हंस संभाल, लेवो हर माईयां।। ४ ।।
सब जीवां की राम, रच्छा तुम कीजियो। अग्र दाग को दोष, हमे मत दीजियो।। ५ ।।
पांच तत के मांय, आप ही आप हो। कह सुखदेव तुम राम, तुमे ही जाप हो।। ६ ।।

पृथ्वी माता व शेषजी से शमशान भूमि में प्रार्थना करनी चाहिये कि आपका पुत्र जगत में रमकर आपकी गोद में आया है। इसको गर्भ में मत भेजिये। यही सार संभाल करना है। आप जगत में प्रगट पांचो देवता सब ही सुन लीजिये। आकाश वायु तेज जल पृथ्वी आपसे प्रार्थना है कि इसके अवगुणो की तरफ न देखकर आप अपना ही समझिये। समरथ स्वामी रामजी आपसे प्रार्थना है कि इस चेतन हंस को आपकी शरण में लो। सब जीवों की आप ही रक्षा करने वाले हो। दाह संस्कार कर रहे है। उसका दोष हमें मत दीजिये। पांच तत्वो में सब जगह आप ही हो। म:फ: है कि रामजी भी आप हो, जप में भी आप हो।

卐 हरजस पद राग मंगल (१०) 卐

हंसा छाडोनी जग को नेह, जगत सुं तोडिये। सतगुरु सुं कर हेत, सायब दिश जोड़िये।। १ ।।
विष प्याला सब छाड, अमी रस पीजिये। तन मन दिल को सांच, सायब कूं दीजिये।। २ ।।
मान हमारी बात, कहूं समजाय बो। ओ मोसर दिन आज, बोहर नहीं पायबो।। ३ ।।
अबके चुकयो डाव, घणो पिस्तावसी। लख चौरासी के मांय, मार बोह खावसी।। ४ ।।
समझ समझ मन मांय, भजन सुं लागिये। काल भंवे शिर तोय, नींद सुं जागिये।। ५ ।।
चेते क्युंनी गिंवार, ज्ञान सुण जोईये। कह सुखदेवजी तोय, जन्म क्यूं खोइये।। ६ ।।

हंसो को फ: है कि जगत का प्रेम छोडकर संसार से मोह छोडो। सतगुरु से प्रेम कर परमात्मा की भक्ति करो। विषयो से अलग होकर परमात्मा की भक्ति व भजन करना ही अमीरस पीना है। सच्चे मन से भक्ति करना ही तन मन दिल साहिब को देना है। मैं समझाकर कहता हूं कि मेरी बात मानो, मनुष्य जन्म का अवसर बार बार नहीं मिलेगा। इस जन्म में परमात्मा की प्राप्ति नहीं हुई तो पीछे पछताना पडेगा। चौरासी लाख योनियों में जन्मने मरने का दुख भोगना ही मार खाना है। मन में समझकर रामजी का भजन करो। काल रात दिन सिर पर चक्कर खा रहा है। भरम अज्ञान व माया से मोह छोडना, नींद से जागना है। म:फ: है कि हे मूरख ज्ञान सुणकर क्यों नहीं चेतता। मनुष्य जन्म व्यर्थ क्यों गमाता है।

卐 हरजस पद राग मंगल (११) 卐

रे मन हर सुं डरप, नीच नहीं फूलिये। जिण कियो जुग तोय, ताय मत भूलिये।। १ ।।
तारयां तिरणो होय, मारयां मर जाइये। वा शिमरथ को छोड, और नहीं गाइये।। २ ।।
पल में करदे राव, निमक में रंक रे। वा शमरथ की बात, मान तूं संक रे।। ३ ।।
मैं कहूं तोय समझाय, मद नहीं राखिये। कह सुखदेवजी तोय, गरीबी दाखिये।। ४ ।।

हे मूरख मन परमात्मा से डर, तूं क्यों फूल रहा है, जिसने तेरे को व संसार को रचाया उसको क्यों भूल रहा है, परमात्मा के उद्धार करने से उद्धार हो जाता है और मारने से मरना पडता है। उस सिमरथ रामजी को छोड दूसरो की भक्ति नहीं करनी चाहिये, वह परमात्मा क्षण में राजा, क्षण में रंक बना देता है। उस परमात्मा का तूं डर मान। मैं तुझको समझाकर कहता हूं कि घमंड मत रख। म:फ: है कि तू गरीबी भाव धारण कर।

卐 हरजस पद राग मंगल (१२) 卐

देव पदी जीव जाय, मिनख तन पावसी। वे जप तप जिग साझ, देव पद चावसी।। १।।
मिनख जन्म कूं छाड, मिनख ही होवसी। सो सब शिवरण साझ, धरम पथ जोवसी।। २।।
चौरासी फिर जीव, हुवे सो मानवी। वे सुण ज्ञान विचार, कछु नहीं जानवी।। ३।।
नरक कुंड को भोग, मिनख तन धरत है। सो नर मुढ गिंवार, भक्त सुं अडत है।। ४।।
नर नारी को जोय, इण सुण कारणे। कह सुखदेव इण बात, न्यारी सब धारणे।। ५।।

देवता पद की प्राप्ति कर मनुष्य जन्म पाता है वे जीव जप तप यज्ञ करके देवता पद ही चाहते है,मनुष्य जन्म छोडकर वापिस मनुष्य होता है। वह सांस उसांस सुमरण भजन कर आत्म धर्म का कार्य करेगा। जो जीव चौरासी योनियां भोगकर मनुष्य बनेगा वो ज्ञान विचार कुछ नहीं जानेंगे। नरक कुंडो को भुगत कर मनुष्य जन्म धारण करते है, वो जीव भक्तो से वाद विवाद करते है। वे मुरख व गिंवार है। म:फ: है कि सब भक्तगण स्त्री पुरूषो को देखो इस कारण सब के विचार एक नहीं मिलते है।

卐 हरजस पद राग मंगल (१३) 卐

जीव बसे किस ठौड, निकस कहां जायगो। ओ तन छाडया हंस, कहो काहा खायगो।। १।।
यांको अरथ विचार, भगत सो कीजिये। शीव बसे किण जाग, भेद ओ दीजिये।। २।।
शब्द कोहो किण रूप, अरथ ओ कीजिये। नितर करूं गुरु और, समझ गम लीजिये।। ३।।
शिवरण को घर कोण, किसी राह ध्याइये। कह सुखराम हरि नाम, निरख किम पाइये।। ४।।

卐 हरजस पद राग मंगल (१४) में १३ का अरथ 卐

जीव को कंठ स्थान है, निकस वासना जहां जावेगा। ओ तन छोड़ जीव, कीयो फल खावसी।।
शीव बसे सो जाग दशवों द्वार छे। शबद सो रूप, पोप वास जैसो है।।
शिवरण को घर प्रेम, पवन की राहा ध्याइये।
भजन कर नांव उलटे सुरत मन आ फेहेर पावसी। अरथ सम्पूर्ण संत सुखरामजी कहया।

卐 हरजस पद राग मंगल (१५) 卐

सब सुं निरसा होय, राम गुण गाइये। ज्युं तेरा रीजे श्याम, परमपद पाइये।। १।।
अहूं पद में दुख होय, नरक में दीजिये। बिन शिवरण करतार, परथ नहीं रिजीये।। २।।
परमेश्वर कूं जांण, संता कूं मानिये। हरि गुरु बिच अंतराय, कबू नहीं आनिये।। ३।।
जीव दया दिल राख, धरम सो कीजिये। मत कर डावा डोल, राम रस पीजिये।। ४।।
कसर कोर सब काड, भक्त सो कीजिये। तन मन धन सुखराम, गुरां कूं दीजिये।। ५।।

सबसे छोटा बनकर परमात्मा का भजन करो, जिससे परमात्मा प्रसन्न होकर परमपद की प्राप्ति करा देंगे, अहंकार से दुख होगा और नरको का दुख भोगना पडेगा। परमात्मा की भक्ति बिना परमात्मा कभी राजी नहीं होवेंगे, संतो की बताई विधि के माफिक भजन करना ही परमात्मा को जानना व संतो को मानना है। परमात्मा व सतगुरु याने केवली भगवंतो में भेद नहीं समझना चाहिये, सब त्रिलोकी के जीवों पर दया कर सुख पहुंचावो याने गृहस्थ में रहकर देव ऋण दान,

पितृ ऋण परिवार के प्रति कर्त्तव्य कर्म, ऋषि ऋण सांस ऊसांस में ब्रह्म के नाम की भक्ति कर, रामरस पीता रह। मन को डावा डोल मत कर और तन से रटणा कर मन का अपनत्व छोड स्वांसा रूपी धन भक्ति में लगा, ये ही ग्यान गुरुदेव को देना है।

卐 हरजस पद राग मंगल (१६) 卐

जे तलफो कोई जीव, मुगत कूं तलफिये। झूंठी माया ही काज, मती कोई कलपिये।। १ ।।
जे बिरह किजे जोय, सांई कूं मोइये। झूंठ कुटुम्ब कुल काज, मती कोई रोइये।। २ ।।
दाव घाव सुण सोच, चिंता जो कीजिये। कर सायब सुं लेण मुगत गम लीजिये।। ३ ।।
जे कोई कमतर की चाय, भजन सो कीजिये। कह सुखदेव जुग काज, सेल में लीजिये।। ४ ।।

जीवों को तडफ है तो मुक्ति के लिये तडपना चाहिये। माया असत है उसकी प्राप्ति के लिये मत कलपो। विरह करना है तो परमात्मा के लिये करो, कुटुम्ब व कुल झूंठा है। उसके लिये मत रोवो। दाव घाव सोच और चिंता करनी है तो परमात्मा के परम पद की प्राप्ति के लिये करो। अगर आत्मा के कार्य की ईच्छा है तो भजन करो और संसार का कार्य सहज में करो।

卐 हरजस पद राग मंगल (१७) 卐

कलजुग पूरण जोय, सुणो जब आवसी। भांभी हनण कूं दुज, ब्याव परण घर लावसी।। १ ।।
तीरथ सेवा धाम, सबे मिट जावसी। जात वरण कुल नांय, बिसे मध खावसी।। २ ।।
बेटी मते वर सोज के, लग्न लिखावसी। नरप भिक्षा लाट, खजाने लावसी।। ३ ।।
पतिव्रता की जोड, डोरी जुग गावसी। मंतर मूंठा सीख, पंडित नर कवावसी।। ४ ।।
तां दिन कलयुग, पूर कला सो धारसी। तां दिन साहा डंड, सांच खोडे में मारसी।। ५ ।।
घोडी गधी को दूध, सांडया को होवसी। सूरी कुती जग दूय के, जगत बिलोवसी।। ६ ।।
सामा मिल्यां राम, कोई नहीं भाखसी। एक निमख ईतबार, कोई नहीं राखसी।। ७ ।।
वेद पुराण विचार, भक्त सो थाकसी। हर बिन कथनी जोड, जक्त में भाखसी।। ८ ।।
भक्ति करता जोय, हेरो दे पकडसी। औरत सुण भरतार, गवाडा झगडसी।। ९ ।।
पांच बरस की के बाल, गंगा छुप जावसी। जब कलयुग सुण, हलाहल आवसी।। १० ।।
मानुष गज सम व्हेत, पाखण्ड बोह चालसी। शुभ बातां सब सेंग, असल सो पालसी।। ११ ।।
एक एक ऋषि कूं घेर, बहुत बिद मारसी। कह सुखदेव अवतार, तके दिन धारसी।। १२ ।।

कलयुग पुरण आ जायेगा जब ब्राह्मण भांभी की लडकी को परण कर घर लावेगा। तीरथ, परमात्मा की सेवा और धाम नहीं रहेंगे, जाति वरण कुल कुछ नहीं रहेंगे। सब विषयो में लगेंगे। लडकी अपने वर को खुद ढूंढकर शादी कर लेगी। राजा भिखारियो से कर लेकर खजाने में जमा करेगा। पतिव्रता की महिमा गायेंगे, मेले मंतर और मुंठे सीख सीखकर पंडित कहलावेंगे। उन्हीं दिनो कलयुग पुरण कला धारण करेगा। सब साहूकार को बिनाही दोष दंड देंगे, यही सांच खोडे में मारना है। घोडी गधी व ऊंटणी का दूध काम में लेंगे, सुरडी व कुती का दूध बिलोवेंगे। सामने मिलने पर कोई राम राम नहीं करेगा। एक क्षण भी कोई किसी पर भरोसा नहीं करेंगे। वेद पुराण का विचार करना, व भक्ति कोई नहीं करेंगे। रामजी के बिना खराब कविता जोड जोडकर कहेंगे।

परमात्मा की भक्ति करने वाले को ढूंढकर पकडेंगे और स्त्री पुरूष आपस में झगडेंगे। पांच वर्ष की उम्र में ही सन्तान होने लग जायेगी और गंगा लुप्त हो जावेगी। जब कलयुग हलाहल आयेगा। मनुष्य का कद बहुत छोटा हो जायेगा। अनेक तरह के पाखण्ड चलेंगे। अच्छी बात करेंगे तो सब उनको मना करेंगे। एक एक ऋषि को घेरकर बहुत मारेंगे। म:फ: है कि उस दिन अवतार प्रकट होगा।

卐 हरजस पद राग मंगल (१८) 卐

मन राजा के नार, दोय घर जाणिये। पुतर अठारे आठ, कन्या दस ठाणिये।। १।।
अेकण को सुण पीयर, जुग के मांय है। दूजी को सुण सांच, मुगत के मांय है।। २।।
जां सुं राखो हेत, पीयरां ले जावसी। जांका पुतरी पूत, मनो से लावसी।। ३।।
अेकण का नित पूत, फजीती करत है। दूजी का राख्या पास, बोहोत सुख पावसी।
दिन दिन सुख अपार, मोख ले जावसी।। ४।।
जिण संग मिलीये मोख, मानेती कीजिये। कह सुखदेव नरका जाय, तिका तज दीजिये।।५।।

卐 हरजस पद राग मंगल (१९) में १८ का अरथ 卐

राजा सो मन, राण्यां सुमता कुमता दोय। कुमत रा पुत्र प्रथम तो लोभ, डाव, सांसा, मत्सर, दगो, धेख, दावो, क्रोध, अंहकार, अविश्वास, मद, मान, पाखण्ड अे तेरा बेटा। बेटी तरसना, निंदा, घात, ममता दुरमति ये पांचु बेटी। सुमत रा पुतर प्रथम तो ज्ञान, विचार, विवेक, शील, सांच, संतोष, सत, तप, जप, त्याग, बैराग, भाव, भजन, विश्वास अे तेरा बेटा। बेटी धीरज, जरणा, सायत, दया, भगती, अे पांचु बेटी, जिण राजा के कुमता ने सुहाग दियो सो नरका में जावसी, तिण राजा ने सुमता ने सुहाग दियो सो मोख मुगत रो इधकारी होवसी। संत सुखरामजी कहे मैं का कहूं, वेद भागवत कहती है।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (१) 卐

साहेब जी सूं डरिये मन रे, साहेबजी सूं डरिये रे।
पल में राव करे भिकीयारी, जीवत छिन में मरिये रे।। टेर।।
मन मगरूर फूल मत भाई, अर तामस चित नहीं धरणा रे।
तूं जड जीव नीर को बुद बुद, पग पग परले पडणा रे।। १।।
धेकर धाक छाड या ममता, मैं मैं जोर न करिये रे।
करणहार समरथ है न्यारो, तोसूं कछु हन सरिये रे।। २।।
आसा राख कहो क्या लेसी, च्यार दिना के तांई रे।
ज्यां के लिये अडे नर अंधा, छोड चले छिन मांही रे।। ३।।
मत उतपात उठावो बोली, निरख परख पग धरणा रे।
कह सुखराम झूंठ सब हलमा, ने:हचे तोकूं मरणा रे।। ४।।

हे मन परमात्मा से डर, परमात्मा क्षण में राजा कर देते है, क्षण में भिखारी कर देते है। जीवित को क्षण में मार देते है। मन अभिमान में फूल मत और तूं चित में क्रोध धारण मत कर। हे मूरख

जीव पानी के बुदबुदे के समान तूं है। बार बार जन्म मरण में आना ही पग पग परले पडना है। द्वेष अहंकार ममता को छोड एवं अपने शरीर का घमण्ड मत रख, करने वाला समरथ परमात्मा सबसे अलग है, तूं कुछ नहीं कर सकता। जगत की जो आशा रखता है, इसको रखकर क्या करेगा। यह थोडे दिन की है। जिन्हें तूं अपना समझता है, उनको पलभर में छोडकर जाना पडेगा। इसलिये मुंह से वचन तोल कर बोलो। यही मत उतपात उठावो बोली है। तूं सोच समझकर देख। म:फ: है कि यह पसारा झूंठा है, आखिर इसे छोडकर जाना पडेगा।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (२) 卐

सुणज्यो अरज हमारी प्रभुजी, सुणज्यो अरज हमारी।
जे तन खून गुन्हा सब बगसो, राखो शरण तुम्हारी।। टेर।।
तुम प्रति पाल उधारण स्वामी, मैं हूं करम विलासी।
अब तो शरण तुम्हारी आयो, काटो जम की फांसी।। १।।
मैं तुज बिडद ईसो हर सुणियो, अजामेल सा त्यारा।
गिनका तिरी बिकारां मांही, गज का फंद निवारा।। २।।
मैं तुच्छ जीव बुद बुदयो स्वामी, क्या करणी ओ करसी।
जे हर आप करोला किरपा, तब अवस ये तिरसी।। ३।।
तुम तारो जब सिमरथ स्वामी, कहो कुण पालन हारा।
चवदा भवन लोक मिल तीन्हूं, सब ले आप पसारा।। ४।।
ज्ञान ध्यान करणी और क्रिया, मोसे सजे न कांई।
कह सुखराम मिल्या धर मांही, किया करम नहीं जाई।। ५।।

हे परमात्मा हमारी प्रार्थना सुणो, इस शरीर के जितने भी दोष और कर्म है। उनको माफ करके आपकी शरण में रखो, आप जीवों की रक्षा व उद्धार करने वाले है। मैं रात दिन करमों में लगा रहता हूं, अब मैं आपकी शरण में आया हूं। मेरा जन्मना मरना मिटावो। मैंने आपकी महिमा ऐसी सुनी है कि आपने अजामेल जैसे पापी का उद्धार कर दिया व विकारो से भरी हुई वैश्या का भी उद्धार किया, हाथी के कष्ट का निवारण किया। मैं तो पानी के बुदबुदे के समान तुच्छ जीव हूं। मैं क्या करणी कर सकता हूं। आपकी कृपा होगी तो इसका अवश्य उद्धार हो जायेगा। आप जब उद्धार करना चाहते है तो कौन रोकने वाला है। तीन लोक चवदा भवन सब आपके ही बनाये हुये है। ज्ञान ध्यान करणी और क्रिया की साधना मेरे से नहीं बनती। म:फ: है कि शरीर के मिट्टी में मिल जाने पर भी किये करमो से छुटकारा नहीं मिलता है।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (३) 卐

मो बल करम न जावे प्रभुजी, मो बल करम न जावे।
आगे किया तिके किण पारा, अब ही बोह होय आवे।। टेर।।
रग रग रूम रूम का खूनी, पग पग दावा मेरे।
बदला दिया कदेह नहीं छुटुं, जहां तहां मुझको घेरे।। १।।

करणी कियां करम शिर बंधे, धरम पुन्न होय दावो।
तपस्या कियां तिरथां भटक्या, व्हो बिध जीव सतावे।। २।।
जे मैं जतन करूं बोहो गाढो, आंख खोल नहीं जोऊं।
तीन ताछ का करम हमारा, संचत कुण विध खोऊं।। ३।।
जो जो उठ उपाय करिजे, जीव मरे सब मांही।
जे मुक्त हुवे बदला दियां, तो सपने कदे न जाई।। ४।।
कह सुखराम शरण हर तेरी, अैसी मोय बताई।
भजन करयां सुं करम कटेला, कटे पलक के मांही।। ५।।

हे परमात्मा मेरे बल से करमो का नाश नहीं हो सकता। आगे किये करमो का पार नहीं है, अब भी बहुत हो रहे है, मैं रग रग रोम रोम का दोषी हूं, पग पग पर मेरे कर्म बंधते है, इनका बदला चुकाऊं तो इनसे कभी भी छुट नहीं सकता, ये जहां तहां मुझे भोगने पडेंगे। करणी करने से कर्म बंधते है व धरम पुन्न का भी फल भोगना पडता है। तपस्या करने में व तीर्थो में जाने से आने जाने में अनेक जीव सताये जाते है, यदि मै आंख खोलकर भी नहीं देखूं व बहुत यत्न भी करता हूं तो भी तीन तरह के करमो से बंधा हुवा हूं, तो संचित का नाश कैसे हो सकेगा। जो जो भी उठ कर उपाय करता हूं उन सबमें जीव हिंसा होती है। उनका बदला चुकाऊं तो सपने में भी छुटकारा नहीं हो सकता। म:फ: है कि आत्मा कह रही है कि हे परमात्मा मैं आपकी शरण में हूं और मुझे ऐसा बताया है कि भजन करने से करमो का नाश होगा व पलक में ही क्षय हो जायेगा।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (४) 卐

वो सुण भेद न्यारो सब सूं, वो सुण भेद न्यारो।
कुदरत कला प्रेम सूं जागे, सो साहिब को प्यारो।। टेर।।
जोगी पीर मोख नहीं पूंथा, ना यां नांव न पाया।,
कष्ट करे कर करता हुवा, जुग ही मांय पूजाया।। १।।
ऋषि पैगम्बर दोनूं पूगा, भिस्त मुक्त में जाई।
ने:अँच्छर को भेद न पायो, रहया जप तप मांई।। २।।
संत अवलिया मोख पहुंता, ज्यां ने:अँच्छर पायो।
आंणद लोक में जाय समाणा, पाछो कोय न आयो।। ३।।
नवध्या भक्त करे जन हुवा, ओऊं सोऊं मांही।
वा ने:अँच्छर नांव न पायो, गया बिसन घर तांई।। ४।।
सुणज्यो मोख तिरथंगर पूंगा, ज्यां संग अनन्त अपारा।
बालमित बास्ट मुनि रामा, पायो नांव विचारा।। ५।।
कलजुग मांय कबीर नामदेव, दादू दरिया सोई।
वां प्रताप बोहोत ने पायो, कहां लग कहूं मैं तोई।। ६।।
यामें फेर फरक है भाई, सुण लिज्यो सब कोई।
राम कया सूं नांव न जाग्यो, जहां नहीं पायो कोई।। ७।।

कह सुखराम मेहेर सतगुरु की, ने:अँच्छर हम पाया।
जो चावे सो लो सब कोई, तन मन सूंपर भाया।। ८।।

वो भेद सबसे अलग है, सतगुरु विधि से भजन करने पर कुदरत कला जागृत हो जाती है, वो ही साहिब का प्यारा है। जोग की साधना करने वाले पीर मोक्ष में नहीं गये, न ही उन्हें नांव की प्राप्ति हुई, शरीर में कष्ट उठाकर करते हुये संसार में पूजे गये। ऋषि व पैगम्बर दोनो भीस्त याने स्वर्ग में पहुंचे, उन्हें ने:अँच्छर का भेद नहीं मिला, जप तप में लगे रहे। संत व अवलिया मोख में गये, उनको ने:अँच्छर की प्राप्ति हुई, वो आनन्द लोक में जा समाये, वहां से कोई वापिस नहीं आया। नवधा भक्ति व ओऊं सोऊं का जप करने वालो को बैकुण्ठ की प्राप्ति हुई। ने:अँच्छर निज नाम उन्हें प्राप्त नहीं हुवा। तीर्थंकर मोख में गये, उनके साथ अनन्त अपार जन साथ में गये। बालमित, वशिष्ट मुनि व रामचन्द्र जी को राम जी के नाम का भेद मिला। कलयुग में कबीरजी, नामदेवजी, दादूजी, दरियावजी ने:अँच्छरी संत हुये, उनके ज्ञान के प्रताप से अनेक जीवो को मोक्ष की प्राप्ति हुई। मैं कहां तक वर्णन करूं। अब वर्तमान में यदि इन्हें गुरू मान करके कितना ही राम राम रटें, यह सतशब्द प्रगट नहीं होगा। म:फ: है कि अब सिरजणहार परमात्मा की कृपा मुझ पर हुई है, अर्थात गुरूपद में भेजने का ओधा मुझे मिला है। अब जिन्हें यह सतशब्द प्रगट करा के मोक्ष में जाने की इच्छा हो तो अपना तन मन गुरू ग्रंथ को सौंप कर प्राप्त कर सकते है।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (५) 卐

नांव कला विध न्यारी संतो, नांव कला विध न्यारी।
जो जाणयो सो पार पहुंता, और वार का वारी।। टेर।।
माला फेर साध पच मुवा, पिंडा कर कर सेवा।
अरथ करे कर ज्ञानी थाका, नेक न पायो भेवा।। १।।
राग छतीस राग बन्द गावे, गुण प्रगटावे लाई।
पच पच मुवा रात दिन सारा, कुदरत कला न पाई।। २।।
जोगी आंत धोय पच मुवा, गिगन चढावे वाई।
जप तप मांय पच्या सन्यासी, या विध नेक न पाई।। ३।।
बेद लबेद भेद पच थाका, ने:अंच्छर नहीं पायो।
हद कूं छाड गया बेहद में, तोही रीतो फिर आयो।। ४।।
आतो कोय न पावे कबहूं, नांव प्राक्रम भाई।
ओऊं सोहं जाप अजपो, अे सब पवना माई।। ५।।
कह सुखराम मेहर सतगुरु की, प्रेम उमंग घट आवे।
ईण विध नांव ने:अंच्छर जागे, ऊलट आद घर जावे।। ६।।

म:फ: है कि नांव कला याने सतशब्द की प्राप्ति की विधि न्यारी है, जिसने जानी है वही मोक्ष में पहुंचा है। नहीं जानने वाला तीन लोक में रहता है। माला फेर फेर कर कई साधना करने वाले पच पच कर मर गये, तो भी सतशब्द की जागृति नहीं हुई। ज्ञान करके ज्ञानी थक गये, सतशब्द का जरा सा भी भेद नहीं मिला। छतीस राग को राग बन्द गाकर उसका गुण प्रकटा देते है। इसी

तरह पच पच कर मरने पर भी सतशब्द की प्राप्ति नहीं कर सकते। जोगी जोग विधि से आंतो को धोकर के पच पच कर थक गये और वायु याने स्वांसा को गिगन में चढा लेते है, सन्यासी जप तप में पच गये परन्तु सतशब्द की प्राप्ति की विधि जरा सी भी नही मिली। वेदों का ज्ञान, वाणी के आधार का सिमरण व योग के साधन करके थक गये लेकिन ने: अंच्छर की प्राप्ति नही हुई। दूसरे साधनों से हद छोडकर बेहद में गये। तो भी रीते फिर के आ गये। सतशब्द की प्राप्ति नहीं हुई। दूसरे साधनो से सतशब्द की जागृति नहीं होती क्योंकि निज नांव का प्राक्रम तो न्यारा ही है। ओऊं सोऊं का जाप अजपा ये सब स्वांसा के आधार पर रहते हुये स्वांसा से अलग नहीं हो सकते। सतगुरु याने केवली भगवंतो के सतग्यान की मेहर होती है, तब ही सतशब्द की प्राप्ति का साधन मिलता है। उस साधन को घट में प्रेम व उमंग के साथ धारण करते है, तब ने:अँच्छर प्राप्त होता है। उसके साथ उलट कर आ: पद की प्राप्ति होती है।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (६) 卐

प्रीत न छिपे छिपाई सन्तो, प्रीत न छिपे छिपाई।
मूंगी बस्तू कूं सुंगी जांणे, हाण नफो नहीं भाई।। टेर।।
तन मन धन सब अरपज देवे, रेण न राखे कोई।
वो अस्तूत बीनती करिये, दास लक्षण ये भाई।। १।।
संसारी सगपण कूं चाले, प्रीति सो लगे लगाई।
गीरी खोपरा औरज मेवा, रूपयां खोल भराई।। २।।
चित चिंतामण पारस लादे, घर में मेले लाई।
पारख बिना मोल नहीं पायो, ज्यों आयो ज्यों जाई।। ३।।
राम राम मुख बोलण लागो, संता सूं परीत न कांई।
जब लग रूलयो पच पच थाको, मांय उदे नहीं होई।। ४।।
हाड बडा बिन रसी नहीं आवे, घर में शूर न होई।
कह सुखराम चाकरी बिना, पटा न बक्षे कोई।। ५।।

संतो से फ: है कि प्रीति किसी से छिपाये हुये भी नहीं छिपती। ज्यादा कीमत की वस्तु को कम कीमत की समझे, उससे नुकसान ही है लाभ नहीं है। तन मन धन का मोह छोडना ही अरपण करना है। कोई अन्तर नहीं रखता है। बहुत अस्तूत विनती करता है, यह दास भाव के लक्षण है। संसारी सम्बन्ध करने जाते है तो प्रीति लगाने से लगती है। प्रीति लगाने के लिये गीरी खोपरा सूखा मेवा व रूपयो की खोल भरते है। मन में चितवन करे और उसकी प्राप्ति हो जावे उस चिंतामण को अनजान में घर में लाकर रख देवे और उसके गुणो की परीक्षा नहीं है तो कोई लाभ नहीं उठा सकता। यही ज्यों आयो ज्यों जाई है। मुंह से राम राम करता है लेकिन केवली भगवंतो के अणभै ग्यान में जो राम रटणे की विधि है उनके अनुसार नहीं करने से चाहे खूब पचता रहे तो भी घट में निज नांव की प्राप्ति नहीं होती। हाड कटे बिना रसी नहीं आती है, घर में बैठे रहने से कोई शूरवीर नहीं होता है। म:फ: है कि बिना चाकरी के पटा नही मिलता, इसी प्रकार सताधारी महापुरूषो के अणभै ज्ञान से प्रीति किये बिना परम मोक्ष में जाने का पटा नहीं मिलता।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (७) 卐

मेरे मन की दुबध्या मेटो प्रभुजी। तुम हम मिलो अवस कर स्वामी, एक अंग कर सेठो।। टेर।।

लोचो खाय डिगे पल मांही, सिकल विकल होय जावे।
कबुयक राव रंक व्हे दाता, यूं बोहोता दुख पावे।। १।।
घडी एक कहे भगत म्हें कर सूं, पल खिण में छिटकावे।
ना वो जाय गृहे में रत रे, ना सो भगत संभावे।। २।।
पल में कहे जगत है झूंठी, भगत सांच है भाई।
खिण में आंण मिले संसारी, विषय जुग रहे समाई।। ३।।
दुबध्या मांहे बहुत दुख पावे, ना उलो ना पेलो।
ज्यों सुण पान बघुले मुख में, भटकर अधरती गेलो।। ४।।
डिग पिच करे हुवे मन पाछो, भगत न मेली जावे।
यूं मन रात दिवस घट घोटे, ओ प्रांणी ब्हो दुख पावे।। ५।।
अरज करे सुखराम गुंसाई, सुण साहिब हर रामा।
मैं तो शरण तुमारी आयो, मोही दिखावो धामा।। ६।।

हे परमात्मा मेरे मन की दुबध्या मिटावो, जिससे आप और हम एक अंग होकर अवश्य मिले याने आत्मा को परमात्मा पद की प्राप्ति हो जावे। यह मन कायरता आने से एक पल भर में डिग जाता है। सिकल विकल हो जाता है। मन में कभी रंक भाव कभी राजा व कभी दानी भाव आ जाता है। ऐसे विचार करके बहुत दुखी होता है। एक समय में भगती करने का निश्चय करता है। क्षण भर बाद ही उसे छोड देता है। न तो गृहस्थी का कार्य पूर्ण रूप से करता है। न ही भक्ति धारण पूर्ण रूप से करता है। पल भर में यह निश्चय करता है कि संसार झूंठा है और भक्ति भजन सच्चा है लेकिन क्षण भर में संसारियो के साथ आकर विषयो में लग जाता है। दुबध्या मन में रहने से न तो संसार का कार्य सिद्ध होता, न ही भजन भगती का कार्य करता है, न उलो न पेलो है। जैसे आंधी के बबूलिये के साथ पान उडता है, वो न तो उपर जाता है, न नीचे गिरता है। बीच में ही चक्कर खाता है। यह मन संकल्प विकल्प करता रहता है, मन भगती को छोडता भी नहीं और करता भी नहीं है। मन रात दिन ऐसे विचारो में लगा रहता है जिससे प्राणी को बहुत दुख होता है। म:फ: है कि हे परमात्मा व रामजी मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि मैं आपकी शरण में आया हूं, आप कृपा करके मुझे आपके निज धाम याने परमपद की प्राप्ति करावो।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (८) 卐

वा विध सब सुं न्यारी वो। वा कुदरत कला न्यारी वो, वा ने:अँच्छर विध न्यारी वो।
जो पावे सो मोख पहुंचे, और शकल की खवारी वो।। टेर।।

झूंठ झूंठ आधीन पणो रे, झूंठ गरीबी होई।
झूंठ झूंठ सो शील जत रे, यामें मोख न कोई।। १।।
जरणा समज शरम सो झूंठी, झूंठी सब चतुराई।
अंग नांव सबी सुण झूंठा, तामे मोख न कोई।। २।।

भेक विध कूंची सब झूंठी, झूंठा बन का जांणा।
झूंठ ब्रह्म एक कर जाणयो, झूंठा सब मिल खांणा।। ३।।
मून चुपक किरिया सब झूंठी, झूंठ दया दुख भाई।
केणी सुणणी सब ही झूंठी, यामें मोख न कांई।। ४।।
कथणी झूंठ अरथ सो झूंठा, मुख सुं कह सो बाई।
मस्ती लाय भरम तज बैठा, से झूंठा जग मांई।। ५।।
शुभ अंग झूंठ अशुभ ही झूंठा, जासूं मुक्ति न पावे।
पूंथा गुरु प्रेम सो सांचो, घट में नांव जगावे।। ६।।
कह सुखराम बस्त वा पायां, पीछे कारण नांही।
भावे जी ताकोई अंग वो जन में, सब आछा जुग मांई।। ७।।

कुदरत कला याने वो ने:अँच्छर की विधि सबसे अलग है, जिन्हें इसकी प्राप्ति हुई है उन्हें ही मोक्ष की प्राप्ति हुई है। जिन्हें यह प्राप्त नहीं हुई वे जन्म मरण से रहित नहीं हो सकते। यही और शकल की खवारी है। आधीन पणा झूंठा है, गरीबी भाव झूंठा है। शील पणा व जती पणा सब झूंठा है। केवल इन्हें धारण करने से मोक्ष नहीं होता है। इसलिये झूंठा कहा है, जरणा समझ व सब चतुराई झूंठी है, जितने अंग व आधार के सब नाम झूंठे है, केवल इनको धारण करने से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है। भेख धारण करो, अष्टांग योग की साधना करो, वन में जावो, सब झूंठा है। सब में ब्रह्म एक समझकर सबके साथ मिलकर खाता है यह सब झूंठ है। मौन धारण कर चुप रहना, सब प्रकार के करणियो के साधन झूंठे है। दया करना सब झूंठा है, कहणा व सुनना सब झूंठा है। सिर्फ इन सब बातो के धारण करने से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है। कथणी करना व अरथ करना सब झूंठा है। मुख से कहे वचन सब झूंठे है, कोई अपनी मस्ती में मस्त होकर भरमो को छोडकर बैठे है ये सबसे झूंठे है, इनसे मोक्ष नहीं होता है। शुभ लक्षण व अशुभ लक्षण सब झूंठे है, क्योंकि इनसे मोक्ष नहीं होता है। जिन्होंने गुरु पद की प्राप्ति कर ली है, उनके अणभै ग्यान से प्रेम करना ही सच्चा है, जो घट में नांव याने सतशब्द की प्राप्ति करा देते है। म:फ: है कि वो वस्तु याने सतशब्द की प्राप्ति होने पर सतशब्द के साथ ऊपर माफिक सभी अंग धारण करो, सब ही अच्छे है।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (९) 卐

संता कयां पत नहीं आवे। किरपा करे दया गुरुदेवजी, जब शिष का भरम जावे।। टेर।।
स्वांसा बिना पवन बिन पीवन, जहां निजमन मन न कोई।
सूरत निरत नहीं चित चेतन, वस्त अमोलक होई।। १।।
पांखा परां बिन पंछी देख्या, नेण बेण कछु नांही।
आठुं पोर बतीसुं घडिया, ऊडे गिगन गढ मांई।। २।।
सोवुं तो सोवण नहीं देवे, जग सुं हेत न बांधे।
पांच पचीस किया मुख आगे, चौक गिगन दिश सांधे।। ३।।
कह सुखराम शब्द की महिमा, कहता बणे न कांई।
साजन ध्यान बिना सुण शिवरण, लियां अमर घर जाही।। ४।।

संतो से म:फ: है कि कहने से किसी को ग्यान का विश्वास नहीं होता, जब सत ग्यान की कृपा दया याने सत शब्द की जाग्रति हो जाती है तब भरम जाता है, स्वांसा से प्राणों से मन निज मन सूरत निरत चित शरीर के साथ चेतन इन सबसे अलग आत्मा के निंरजण निराकार पद से सतशब्द ने: अँच्छर का अनुभव होता है, यही अमोलक वस्तु है। पक्षी के तो परां भी है, पांखा भी है व नैत्र वाणी भी है लेकिन शब्द के न पांखा, न परा है, न नैत्र, न वाणी है तो भी आठ पोहोर बतीसुं घडियां पारब्रह्म के ऊपर अधर अनुभव होता है, यही गिगन गढ में उडना है। माया से मोह व भरमो को त्यागकर संसार से प्रेम नहीं करना ही नहीं सोने देना व जगत से हेत नहीं बांधना है। पांच तत्वो व पच्चीस प्रकृतियों के शरीर से अलग होकर गिगन में सतशब्द का अखण्ड अनुभव होना ही चौक गिगन दिश सांधना है। शब्द की महिमा कहने में नहीं आती, साधन से ध्यान से सुमरण से अलग के: पद में सतशब्द का अखण्ड अनुभव कर आ: पद में लय होना ही अमर घर की प्राप्ति करना है।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (१०) 卐

संता देख्या ईचरज भारी। अमर लोक में संत विराजे, वहां सूरत लिव म्हारी।। टेर।।

फाडर पीठ चढया आकाशा, है कुदरत लिव धारा।
अष्टांग योग सांख्य नहीं पवना, अैसा खेल हमारा।। १।।
उलटर गंग चढी गिर नारयां, छूटी सेंसर धारा।
करणी शकल ज्ञान कर देख्या, सतशब्द तो न्यारा।। २।।
बादल बीज बिना ईन्द्र गाजे, तीन लोक के मांही।
खट सुण राग छतीसुं न्यारी, अखण्ड खण्डे कछु नांही।। ३।।
सता समाध लगी घट मेरे, त्रगुटी संगम होई।
ईडा पिंगला सुखमणा नारी, रमे संग मिल दोई।। ४।।
कह सुखराम शब्द जोरावर, पायां सूं पत आवे।
बिन पायां नर कहो बोह तेरा, दिल का भरम न जावे।। ५।।

संतो से फ: है कि मैंने भारी इचरज देखा है, के: पद में सतशब्द का अखण्ड अनुभव हो रहा है, सतशब्द के साथ बंकनाल से आकाश फिर पार ब्रह्म में पहुंचा हूं, इसमें न तो अष्टांग योग, न सांख्य योग, न पवन योग है, यह मेरा ज्ञान है। शब्द उलटकर गिरनार याने मेरू को पार करके त्रिकुटी में दो पांख के कंवल को पार कर हजार पांख के कंवल पर शब्द झरता हुवा अनुभव होता है, यही सेंसर धारा छूटना है। सब तरह की करणी व ज्ञान करके देखा है, सतशब्द तो सबसे अलग है। खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड में शब्द का अनुभव होना ही बिना बिजली व बादल के तीन लोक में ईन्द्र गरजना है, शब्द की कई ध्वनियां अखण्ड अनुभव होती है, यही छ: राग छतीस रागनियां का अखण्ड नहीं खण्डना है। पारब्रह्म के ऊपर सतशब्द का रात दिन अनुभव होना ही सता समाधि लगना है। अला पिंगला सुखमणा में ध्यान होना ही त्रिकुटी संगम होना है। अला पिंगला एक हो सुखमणा में ध्यान ही रमे संग मिल दोई है। म:फ: है कि शब्द बडा बलवान है, उसकी प्राप्ति होने पर विश्वास होता है। बिना सतशब्द की प्राप्ति हुये मुंह से शब्द की कितनी ही महिमा करो, दिल का भरम नहीं जाता है।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (११) 卐

मन रे मैं तो कछु नहीं जाणूं। सतगुरु ज्ञान बतायो भारी, जब ऊलटी कर ताणूं।। टेर।।
मुख सूं बोल कहे कछु नांही, संत सराया जावे।
गीता वेद भागवत सायद, साध सिद्ध सब गावे।। १।।
ऊलटा होय चढो कहो काही, मन पवना सुं न्यारा।
नाड नाड में हुवो ऊमावो, फाटे शरीर हमारा।। २।।
गोटो अडे मसलियो चाले, और ऊपाय न कोई।
मन कूं थाम सूरत चेटांओ, जब कुछ सरके मांही।। ३।।
आपी धगग चढे जब ऊंचो, ब्रह्मण्ड जाय भरिजे।
त्रकुटी नेण फाट हुवे टुकडा, कहो कहा अब किजे।। ४।।
ऐसो ज्ञान प्रकाश्यो आई, दिव्य नैण जब खुल्या।
परमधाम तो न्यारी दरसे, अे आरम्भ है उल्ला।। ५।।
दिव्य नैण माया का खुल्या, ब्रह्म अखण्डित सूजे।
कह सुखराम ब्रह्म का खुल्या, परमधाम जब सूजे।। ६।।

आत्मा मन से कहती है कि अनन्त जन्म तक मैं तुम्हारे साथ रही याने संकल्प के साथ रही तब तक मैंने तुमसे कुछ नहीं कहा, लेकिन अब सतगुरु सत ग्यान की शरण लेने से सतगुरु पद का अणभै ज्ञान प्राप्त होने से तेरे विचारो के माफिक नहीं चलूंगी। यही ऊलटी तांणना है। सतगुरु पद में जो सतशब्द ने: अँच्छर अनुभव होता है वह शब्द न लिखने में आता, न वांणी के आधार पर प्रगट होता, न विचारो के आधार, न मन के आधार से प्रगट होता है। इसलिये मुख से उस पद की शोभा का वर्णन कैसे कह सकती हूं। उस पद की सब सन्त महिमा करते है। परमात्मा के पद व नाम की गीता वेद भागवत साध सिद्ध महिमा करते है। बंकनाल से उलटकर मन व स्वांसा से अलग नाड नाड रग रग में सारे शरीर में शब्द का अनुभव होना ही शरीर फाटना है। शरीर में बादी का गोटा अडने पर हाथ से मसलने पर आगे सरकता है। इसके लिये और कोई उपाय नहीं है। ऐसे ही शब्द में मन सूरत लगाकर भजन करने से शब्द आगे बढता है, शब्द अपने आप ऊपर चढता है, ब्रह्मण्ड में उसका अनुभव होने लगता है। त्रिकुटी में शब्द के पहोचने पर ऐसा मालूम होता है कि नैत्र व कनपटिये फाटकर टुकडे हो जायेंगे। कहो क्या करना चाहिये। इस ज्ञान का प्रकाश हुआ जब सूरत रूपी नेत्र खुले, चौथा पद सतस्वरूप का पांचवा आनंद ब्रह्म का पद तो न्यारा दर्शाता है। निरंजन निराकार चेतन में और यह पद ऊली तरफ शरीर के साथ चेतन पद में दर्शते है। आत्मा के शरीर के साथ चेतन के जब ज्ञान रूपी नैत्र खुल जाते है, जब ब्रह्म सर्वत्र व्यापक ऐसा भ्यासता है जब आत्मा याने चेतन शक्ति सतशब्द के साथ निरंजण निराकार पद में पहुंचती है। जब ब्रह्म के दिव्य नैत्र खुले समझे जाते है। जब इसे के: पद आ: पद का अनुभव होता है।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (१२) 卐

ओ कोई अरथ बतावो साधो, ओ कोई अरथ बतावो।
जिण विध सुं ने:अँच्छर प्रगटे, सो कीमत गह लावो।। टेर।।

ध्यान शकल साजन कर देख्या, नांव न पायो कोई।
अनहद जोत ऊजाला देख्या, हीरा की बिरखा होई।। १।।
सब धर्म छोड राम हम रटियो, नांव कला नहीं जागी
सतगुरु जाय किया हम ऐसा, सूरत गिगन जांरी लागी।। २।।
बांणी अणभै कथ हम देखी, सिख साखा कर लिया।
वां निज नांव कला नहीं जागी, धरम बोहत हम किया।। ३।।
तन मन धन गुरुदेवजी कूं दिया, कुल तज शरणे आयो।
ज्ञान अरथ भेद सब सुज्या, नेःअँच्छर हम पायो।। ४।।
कह सुखराम नांव ज्यां प्रगटे, जिण जन कूं जस होई।
आप जुगे जुग चढिया गढ पर, वे हंस तारे सोई।। ५।।

साधो यह कोई अरथ बतावे जिस साधन से नेः अँच्छर प्राप्त हो सके, वो ही साधन धारण करो। ध्यान व सब साधन करके देखे, लेकिन नेः अँच्छर की प्राप्ति नहीं हुई। अनहद जोत ऊजाला देखा और हीरा की बरसात भी होने लगी। सब धर्म याने साधन को छोडकर नांव याने राम राम रटा तो भी नेः अँच्छर की जागृति नहीं हुई। सतगुरु भी ऐसे किये जिनके सूरत द्वारा गिगन में ध्यान होता था। हमने अणभै वाणी कहकर भी देख ली और शिष्य व साखा भी बोहोत बना लिये तो भी निज नाम की जागृति नहीं हुई और धरम बहुत कर लिये। सतगुरु विधि का साधन तन मन से किया। धन सम्पति कुटुम्ब परिवार का मोह छोडना ही तन मन धन गुरुदेवजी को देना है। माया ब्रह्म के ग्यान से अलग होकर सतगुरु पद का ग्यान धारण किया, ये ही कुल तज शरणे आना है। तब अणभै ग्यान, निरपख निरणा, सतगुरु विधि सूजी जब नेः अँच्छर आया। मःफः है कि उन्ही हंसो को धिन है जिनके निज नांव प्रगटता है। अणभै वाणी बनाने वाले केवली भगवंत जुगान जुग गढ पर चौथे पद में अखण्ड सता समाधि व सुन्न समाधि में रहते है, वे ही हंसो को तार सकते है।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (१३) 卐

क्या मैं करूं ऊपाई सन्तो, क्या मैं करूं ऊपाई।
बंकनाल होय उलटर चढिया, तोही मुज धीर न आई।। टेर।।
तीस हजार कथी हम वांणी, ध्यान त्रृगुटी लागो।
अजहूं मन में लहरां उठे, भरम शकल नहीं भागो।। १।।
ऊजड पेंडा मिटया न मेरा, दाय कछु नहीं आवे।
चेला ज्ञान गीरेह अर त्यागी, एको मन नहीं भावे।। २।।
सांख जोग और नोद्या भक्ति, एको मन नहीं धिजे।
शेष भुजा धर सायब आवे, तोई मेरा मन नहीं रिजे।। ३।।
जंतर मंतर वेद पुराणा, पढ पढ सब तचकाया।
ओऊं जाप अजपो कहिये, ये मुज दाय न आया।। ४।।
कह सुखराम एक मोय सुजे, कोई देश मुल्क मारो आगो।
इण कारण या विरह उदासी, ध्यानज म्हाने लागो।। ५।।

संतो से फ: है कि मैं क्या ऊपाय करूं, बंकनाल के रास्ते से उलटकर मैं चढा तो भी मुझे धैर्य नहीं हुवा, ध्यान जब त्रृकुटी में था तब तीस हजार वाणी कही, तब भी मन में अनेक तरह की लहरे उठ रही है। सब भरमो का नाश नहीं हुवा। उजड में चलना अभी तक मेरा नहीं मिटा है और मुझे पसन्द भी कुछ नहीं आ रहा है। चेला करना, ज्ञान देना, गृहस्थी व त्यागी एक भी मन में नही भाता। संख जोग नवधा भक्ति एक भी मन में नहीं आती है। परमात्मा भी हजार हाथ धारण करके दर्शन भी देवे तो भी मेरा मन राजी नहीं होता है। जंतर मंतर वेद पुराणों को पढ पढ कर छोड दिया। ओऊं का जपा व अजपा ये भी मुझे पसंद नहीं है। म:फ: है कि मुझे यह मालुम हो रही है कि मेरा देश व मूल्क आगे है, इस कारण विरह व उदासी आ रही है कि त्रिकुटी से पार ब्रह्म तक ध्यान लग गया, रटणा सांस उसांस में नहीं चलती है।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (१४) 卐

धिन धिन सो नर नारी जुग में, धिन धिन सो नर नारी।
सायब काज जुरे निस बासर, कुब्द प्रीत से टारी।। टेर।।
राम भजन को लग्यो ऊमावो, ओ मन चढयो आडे।
राम राम केता दिन बीतां, मुख में जीभ न बाडे।। १।।
सतगुरांजी का दरशण जाता, पांव गुगरा बांध्या।
दरशण कियां आंणद बहो उपज्या, जांणे द्रव मोय लादा।। २।।
मिल्यां साध हंसे रग रग रे, खिण फूले खिण रोवे।
आशा सकल तजी कुटलाई, बाट राम जी की जोवे।। ३।।
तन खीणा मन रेवे ऊणमणा, बोले शब्द सुं प्यारा।
कह सुखराम तके नर जुग में, ऊतर गया भव पारा।। ४।।

उन स्त्री पुरूषो को धिन है जो कुबुद्धि छोडकर रात दिन परमात्मा की भक्ति में लगे रहते है। परमात्मा का भजन करने की उमंग लगी और मन उसे एक क्षण भी नहीं भूलता, यही ओ मन चढयो आडे है। रात दिन परमात्मा का भजन करने में बीतता है और एक क्षण भी सुमरण नहीं छोडता, यही मुख में जीभ न बाडे है। सतगुरु याने सतग्यान सुनना व भजन करके सत शब्द के दर्शन करने की बडी भारी उमंग रहती है, यही पांव गुगरा बांध्या है और उनके दरशण करने से बडा भारी आनन्द आता है, ऐसा लगता है कि उसे कोई बडा भारी खजाना मिल गया हो। सतसंगी व संत मिलते है तो रग रग में खुशी होती है और उस खुशी में कभी फूलता है, कभी विरह से रोने लग जाता है, सब आशा व कुटलाये छोडकर रामजी की प्राप्ति की ही इच्छा रखता है। शरीर में विरह आना ही तन खीण है। मन में संसार से उदास रहना ही उनमना रहना है। सबसे मधुर वचन बोलते है। जो सबको अच्छे लगते है, यही बोले वचन सुं प्यारा है। म:फ: है कि वो ही जन संसार रूपी समुद्र से पार हो गये याने जन्म मरण से रहित हो गये।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (१५) 卐

संतो भाई सुणज्यो भेद विचारा, करूं न्याव सब सारा।। टेर।।
हर्ष उछाव बेद धुन होई, अरथ ऊचार सुणावे।

अन्तकाल में आ विध होई, ब्रह्मा का गण आवे।। १।।
हरिजस ताल मरदंग बाजे, बटे प्रसाद सवाया।
अन्त समय जो आ विध होवे, लिछमी वर गण धाया।। २।।
हरस कोड सोग नहीं रंग रागा, शिव शिव वचन सुणावे।
हंस चले जां आ विध होई, शंकर का गण आवे।। ३।।
रोवा पिटो सोगर सांसो, सोच करे नर नारी।
हंस बिछुटत आ विध होवे, तो जम राय सुवारी।। ४।।
जे कोई हंस मोख कूं चाले, जां अेसी विध भाया।
देव डूंडि अनहद बाजा, घुरे निसाण सवाया।। ५।।
जैसी राग भाख जो नाखे, सोई चाल वहां आवे।
कह सुखराम देव सब दाणु, विध सुणो उठ खावे।। ६।।

संतो से फः है कि भेद का विचार सुणो, सब का अलग अलग निरणा करता हूं। वेद ध्वनि होती है, खुशी उच्छाव होता है, वेदो का अरथ उच्चारण करते है। अन्त समय में ऐसी विधि हो तो ब्रह्माजी के गण आते है। परमात्मा के गुणानुवाद गाते, ताल बजाते मृदंग बजाते है और प्रसाद बंटता हो अन्त समय में यह विधि हो तो लिछमी वर यानि विष्णु के प्रेषता आते है। न तो हर्ष होता, न सोग होता है न कोई रंग राग होते है। केवल वाणी से शिव शिव कहते हो, ऐसे समय में हंस के शरीर छोडने पर शिव के गण लेने आते है। रोना पीटना व सोच फिकर होता हो, सब स्त्री पुरूष दुख करते हो, ऐसे समय में शरीर छोडने वाले हंस को यमराज के यहां जाना पडता है। जो हंस मोख को जाता है, वहां ऐसी विधि होती है, अंत समय में देवलोक में देवता के देव डूंडि बाजे व निसाण घुरते है याने देव लोक खुशी मनाते है कि मृत्यु लोक से हंस वृति आत्मा केवल भक्ति करके मोक्ष में पहुंचती है। फिर अंत में आशा रहती है वहां वासा होता है, जैसी विधि मति होती है, वैसे देवता या दाणु लेने को आते है।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (१६) 卐

पांडे समझ शिंवर हलसांई। बिना भजन जुग परले जावे, पडे कूप भो मांई।
निराकार निरधार शब्द कूं, खोजो आ तन मांई।। टेर।।
जे आ मुक्त वेद में होती, सुखदेव कहो क्यूं त्याग्या।
तांके घरे पुराण अठारे, फेर पढण की जाग्या।। १।।
शंक्राचारज आगली कहता, पाछे सबे बताया।
जे आ मुक्त वेद में होती, दत्त पास क्यों आया।। २।।
राज पाट सुख संपत मांही, जे ओ मोख फल पावे।
शहर उजिणी त्याग भरतरी, बन रोही क्यूं जावे।। ३।।
करामात करतूत सिधाई, जे यामें हर सूजे।
राम सरीका को बलवंता, वशिष्ट को क्या बूझे।। ४।।
जांजुल ऋषि बहुत तप किया, पवन गिगन चढाया।

जो या मुगत जोग में होती, तुल पे क्यों चल आया।।५।।
खट क्रिया आचार विचारा, जे यामें हर पावे।
व्यास सरिखा को कुण हुवा, नारद पे क्यों जावे।।६।।
सांग जत कसणी बहु कसियां, जे यामें पद सुजे।
लछमण सा जग को कुण त्यागी, सीता को क्या बुजे।।७।।
जति त्याग क्रिया अर जोगी, वेद राज सुख सारा।
कह सुखराम सुणो सब कोई, सतशब्द है न्यारा।।८।।

पंडितो से फः है कि समझ कर शिवरण करो फिर खुश होवो। बिना भजन किये संसार नरक में जाता व भवसागर के कुवे में पडता है, जो शब्द निराकार व निराधार है उसको इस शरीर में खोजो याने उसकी प्राप्ति करो। वेदव्यासजी के लडके सुखदेवजी थे, व्यासजी के यहां अठारा पुराण, छः शास्त्र, चारो वेद थे, यदि वेद के ज्ञान से मुक्ति होती तो सुखदेवजी इनको छोडकर क्यों जाते व राजा जनक से गुरु पद का ग्यान क्यों धारण किया। शंकराचार्यजी त्रिकाल दर्शी थे, यदि वेदो के ज्ञान से मुक्ति होती तो दतात्रेयजी के पास क्या सीखने को आते, राजपाट के सुख व सम्पति से मोक्ष की प्राप्ति होती तो राजा भरतरी शहर उज्जैन को छोडकर वन में क्यों जाते। करामात दिखाने व सिद्धाई बताने से परमात्मा की प्राप्ति का ज्ञान होता तो रामजी के समान कौन बलवान था, वो वशिष्ट जी को क्या ज्ञान पूछते। जांजूल ऋषि ने बहुत तप किया, स्वांसा को ब्रह्मण्ड में चढाकर, वर्षों तक समाधि लगा ली, यदि योग साधन से मुक्ति होती तो तुलाधार के पास जाकर उनसे ज्ञान क्यों धारण करते। षट कर्म और आचार विचार से परमात्मा की प्राप्ति होती तो व्यासजी जैसा षटकर्म आचार विचार करने वाला और कौन हुवा है, उन्होंने नारदजी से क्या ज्ञान पूछा है। सत बोलने से व जतिधर्म धारण करने से, शरीर को कष्ट देने से परमात्मा मिलते तो संसार में लक्ष्मण जैसे त्यागी और कौन हुवे है, वो सीता को क्या ज्ञान पूछने गये। जति त्याग क्रिया जोग राज व वेदो का ज्ञान इनसे सुखो की प्राप्ति होती है, सतशब्द इनसे अलग है।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (१७) 卐

संतो भेद बेद सुं न्यारा। गुरु प्रताप साध की संगत, लखे सो हरिजन प्यारा।। टेर।।
तीनो चूर पांच को पकडो, तीन दोय बिन नहीं सारे।
धरणी ताक करे निसाणो, चोट चोट पे मारे।।१।।
नव दरवाजा जगत सब जावे, ताका ऊ वार न पारा।
दशवों जाय ऊगाडे कोई, सो है गुरु हमारा।।२।।
खट रस कंवल पूरब दिश बिंधे, छही पिछम दिश खोले।
बंकनाल होय उलट समावे, तो अणभै बायक बोले।।३।।
ऊलटा होय चढे गढ ऊपर, चंद सूर गम पावे।
दोनो एक बिवाण बिठाया, सुखमण के घर आवे।।४।।
चंद सूर बहत अटकाणा, ओऊं में सोऊं समाया।
जन सुखराम उलट चढ आगे, देव परस बिन काया।।५।।

संतो से फ: है कि भजन का भेद व परमात्मा प्राप्ति का भेद वेदो से अलग है, परमात्मा की प्राप्ति का भेद सतगुरु याने केवली भगवंतो के अणभै ग्यान के प्रताप व संतो की संगति से ही कोई भक्ति करने वाला जन ही अनुभव कर सकता है। खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड को पार करना ही तीन को चूरना है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश के शरीर के सारे नहीं रहना है, पांच विषयो से अलग होना ही पांच को पकडना है। माया ब्रह्म के पद से अलग होना ही दो के सारे नहीं है, नाभी में सांस ऊसांस में शब्द में सूरत लगाकर भजन करना ही चोट पर चोट मारना है। नो दरवाजो से सारा जगत जाता है उसका कोई वार पार नहीं है, लेकिन जो दशवों द्वार उघाड के जाते है वो गुरू पद के: पद आ: पद की प्राप्ति करते है। छ: पूर्व के छ: पिछम के कंवलों को छेदन कर बंकनाल से होकर जाते है वो अणभै वचन बोलते है। इस तरह भजन करके गढ याने दशवे द्वार पर चढने पर ईडा पिंगला सुखमणा में भजन होने लगता है तो देही से रटणा चलती रहती है व सूरत निरत सुद्धि बुद्धि के लगाये बिना ही सत शब्द की भंवर गुंजार आती है। वो सता समाधि है फिर गढ याने सुन्न समाधि आनन्द ब्रह्म में कभी कभी घडी आधी घडी मिनट दो मिनट तक इडा पिंगला चलना बन्द होती है तो ओऊं सोऊं उसांस अेक होकर शरीर की सुद्धि नहीं रहती है। म:फ: है कि बंकनाल से उलटकर के: पद में पहुंचना ही आगे चढना है। के: पद में सतशब्द का निराधार अनुभव होना ही बिना काया के देव परसना है।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (१८) 卐

पांडे चार वरण घट मांही, किण सुं भिन्न चलाई।
जिण संग काज अकाज होवे, सो कोई जांणे नाही।। टेर।।
नीच बरण सो यो तज पांडे, तां संग नरकां जावे।
चार बरण की लोग लुगाई, सो सब कारज आवे।। १।।
नीच बरण में सोग सांसो, काम कबेलो चाहे।
वैश्य बरण बमेक बाता, करणी करण ऊपाये।। २।।
विपर बरण बैराग बस रे, पांच परखे मांह।
चोथो बरण व संतोष छत्री, कूड भाषे नांह।। ३।।
लख चौरासी जात सारी, आशा त्रिसना मांही।
सरब धात सो ही मत तेरे, खायात खाण कही।। ४।।
रे तूं भिन्न भ्रांत जो राखे, अे सब दूर निवार।
कह सुखराम भजन बिन पांडे, चारूं बरण चमार।। ५।।

पंडित चार वर्ण शरीर में है तुम किससे भिन्नता करते हो, जिसके साथ नुकसान होता है उसको कोई नहीं जानता। नीच वर्ण वे है जिनके साथ नरको में जाना पडता है, उनको छोडो। चार वर्ण के स्त्री पुरूष सब काम में लेते है। नीच बरण में सोच फिकर है, कामना है, कुटुम्ब का मोह है, वैश्य वरण में विवेक की बाते व करणी करने के उपाय है। ब्राह्मण वर्ण में बैराग है व पांच ईन्द्रियो रूप रस गन्ध शब्द स्पर्श इनको बुरे कर्मो से हटाकर शुभ करमो में लगाना ही पांचु परखे मांय है। चौथा वर्ण क्षत्रिय है, उनके क्षमा है और झूंठ नहीं बोलते है, आशा तृष्णा है, यही शरीर में चौरासी

लाख जाती है, सब प्राणियो के शरीर सात धात के है, अगर भेदभाव रखता है तो इन सबको छोड। म: पंडितो से फ: है कि परमात्मा की भक्ति बिना चारो वर्ण चमार है।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (१९) 卐

संतो भाई अे क्यों मोख न जावे, नांव बिना गत पावे।। टेर।।
निसडो निमणो इण सम कुण है, गांव बाग के जोडे।
थावर जीव हाले नहीं डोले, ईजगर मुख ना मोडे।। १।।
मिनखा देह बिन सरब त्यागी, माया गह न कोई।
ओदर के ऊनमान लेहणा, और पडी रो छोई।। २।।
सिंगल दीप जती बोहो तेरा, घर घर में नर झूले।
नारी संग जे जनम तो बीते, सपने काछ न खुले।। ३।।
अन्न जल औषध घीरत गोऊं, विष अमीरस पिया।
कह सुखराम भूख तिस जावे, कोई अमर नहीं हुवा।। ४।।

संतो ये मोक्ष में क्यों नहीं जाते व नांव के बिना गति नहीं होती है। नम्र रहने से मुक्ति होती हो तो निसरडे के बराबर कौन नम्र है, जो बहोत कहने सुनने पर भी कुछ नहीं बोलता है। गांव व जंगल में सब ही रहते है जो स्थावर जीव होते है जो हलते चलते नहीं है, ईजगर का मुंह नहीं मुडता, मनुष्य शरीर के सिवाय दूसरे सब शरीर त्यागी है, जो माया नहीं रखते है, पेट में जितनी आवश्यकता होती है उतना ही लेते है। बाकी यूं ही रहती है। सिंगल द्वीप में मनुष्य बहोत जती है। घर घर में पुरूष रहते है उनकी जिन्दगी स्त्री के साथ बीत जाती है, फिर भी सपने में काछ नहीं खोलते है, अन्न जल औषधि घी गेहूं और कडवा मीठा पीते है उनसे भूख प्यास जाती है लेकिन कोई अमर नहीं होता है।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (२०) 卐

संतो सत शब्द सो न्यारा, को जाणे हरिजन प्यारा।। टेर।।
शील झूंठ संतोष सारा, झूंठ सत जत दोई।
भेद बिना सब ज्ञान झूंठो, माया को अंग होई।। १।।
वाणी खाणी सरब झूंठी, झूंठा वेद कुराणा।
क्रिया करणी जप तप सारे, तपसी तत न जांणा।। २।।
ओऊं सोऊं त्याग तपस्या, तामस सत रज सोई।
कह सुखराम सरब अंग माया, काल शकल शिर होई।। ३।।

संतो से फ: है कि सतशब्द सबसे अलग है। कोई सतगुरु विधि से भक्ति करने वाले ही जानते है, सतशब्द के भेद के बिना शीलव्रत धारण करना, संतोष रखना, सत बोलना, जतीपणा करना, दूसरे सब ज्ञान करने से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है, इसलिये झूंठे है और ये माया के पद में है। सतशब्द के भेद के बिना चारो बांणी चारो खांणी चारो वेद व कुराण सब क्रियाये व करणिये जप तप करने से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है, इसलिये झूंठा कहा है। तपस्या करने वाले भी तत याने

सतशब्द का भेद नहीं जानते। ओऊं सोऊं का जपा अजपा त्याग तपस्या सतोगुण रजोगुण तमोगुण ये सब साधन माया के पद में है, इनसे जन्मना मरना नहीं मिटता है, यही काल शिर शकल होई है।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (२१) 卐

संतो खेती जतन अे भेवा, राम नांव मुख लेवा।। टेर।।
शील सांच सन्तोष जरणा, खिम्या किजे बाडी।
पांच पचीस तीन में दोई, अे सभै यां सू ताडी।। १।।
भाव भोजन प्रीत परमल, विरेह बाणी कडायो।
भजन हल कूं जोत सबेरो, राम नांव कण बायो।। २।।
करम कांस भरम की भुरटी, में ते नरड कटाया।
जन सुखराम करी निंदाणी, सरब घास खिण खाया।। ३।।

संतो से फ: है कि खेती याने भक्ति करने का यह भेद है कि मुंह से सतगुरु विधि से राम नाम लेवो। शीलव्रत रखना, सांच बोलना, संतोष रखना, धैर्यता रखना और क्षमा रखना ही भक्ति रूपी खेती के बाड लगाना है। शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, ईन्द्रियो व पचीस प्रकृतियां व सतोगुण रजोगुण तमोगुण इन तीन में से रजो व तमोगुण को छोडकर भक्ति करना ही अे सभै यां सू ताडी है। भाव व प्रीति से भक्ति करना ही भोजन व परमल है। विरह के साथ भक्ति करना ही हलवाणी लगाना है। प्रात: समय में भजन करना ही हल को जोतना है। राम नाम लेना ही कण बाना है। करम रूपी कांस है और भरम रूपी भुरटी है। में ते रूपी नरडा ये खेत में सब खराब चारे है। इनको छोडना ही चारा काटना है। म:फ: है कि इस तरह भक्ति रूपी खेती में सब विकारो को छोडना ही निंदाणी करके घास को खोदकर फैंकना है।

卐 हरजस पद राग भेरुं प्रभाती (२२) 卐

सतगुरु चरण बन्दो मेरे प्राणी, सतगुरु चरण बंदो रे।
वे तोकूं सत ज्ञान बतावे, कछु न राखे छन्दो रे।। टेर।।
चलता देवल पूज प्राणी, मांय बसे रायजादो रे।
पाहन देवल झूंठ बिन चेतन, जांकू पूजे आंधो रे।। १।।
बोलतणो सो निरगुण कहिये, सुरगुण काया खन्दो रे।
सुरगुण निरगुण अे सत प्रांणी, और शकल भरम बंधो रे।। २।।
सुरगुण सेवा गुरु की महिमा, ब्रह्म शब्द मन सांधो रे।
कह सुखराम भगत या सांची, काया खोज्यां हरि लाधो रे।। ३।।

म:फ: है कि प्राणी केवली भगवंतो की अणभै वाणी के पद चिन्हो पर चलोगे तो सत केवल ग्यान की प्राप्ति करायेंगे और किसी प्रकार की कमी नहीं रहेगी। मनुष्य शरीर रूपी देवल में स्वांसा चल रही है तब तक सांस उसांस में रटणा कर ले, जब शरीर में आत्म चेतन निकल जायेगा तो देवल झूंठा व पत्थर के समान है उस रूप को अंधे ही पूजते है। शरीर सुरगुण है बोलने वाला चेतन

उसमें निरगुण है, ये सुरगुण निरगुण सच्चे है और बाकि सब भरम है। गुरु ग्यान की महिमा करना ही सुरगुण सेवा है। मन लगाकर ब्रह्म का नाम राम को रटणा व उसमे मन लगाना ही मन का सांधना है। म:फ: है कि यह भक्ति सच्ची है, शरीर में साधना करके परमात्मा की प्राप्ति करो।

卐 हरजस पद राग भेरूं प्रभाती (२३) 卐

राम मिल्या बिन हरिजन दुखिया, युं ही अवसर बीता, मन दुखिया बिन प्रीत साधो।। टेर।।
जल बिन सब ही बागज दुखिया, पंच दुखिया मन फिता।
नर बिन नारी बोहोत बिडारी, रिष दुखिया बिन गीता।। १।।
आफू बिना जो अमली दुखिया, दाता दुखी धन रीता।
रेण बिना ज्यूं घुघु दुखिया, भूप दुखी बिन जीता।। २।।
मीठा जल बिन सायर दुखिया, चंद दुखी बिन हीरा।
जन सुखराम रात दिन दुखिया, लगी शब्द की पीरा।। ३।।

रामजी की प्राप्ति के बिना रामजी की भक्ति करने वाले दुखी है। यह मनुष्य जन्म यों ही जा रहा है। बिना रामजी की प्राप्ति के मन भी दुखी हो रहा है। बिना पानी के बाग दुखी है, पंच तत्व शरीर में तकलीफ होने पर मन फीका हो जाता है। पुरूष के बिना स्त्री दुखी रहती है, गीता के बिना ऋषि दुखी रहते है, अमल के बिना अमली दुखी रहते है। धन के बिना दाता दुखी रहते है। रात्रि के बिना घुघु पक्षी दुखी रहता है, जीत के बिना राजा दुखी रहता है, मीठे पानी के बिना समुद्र दुखी रहता है, चन्द्रमणी हीरा बिना चन्द्रमा दुखी रहता है। म:फ: है कि संत शब्द के अखण्ड अनुभव के बिना रात दिन दुखी रहते है।

卐 हरजस पद राग बिलावल (१) 卐

एक घडी आधी घडी, हर को ध्यान धरे रे। वां सरभर जग्य जोग जप, कोऊ नांही करे रे।। टेर।।
अडसठ तीरथ न्हाईये, नित न्यात जिमावे। तोई छिन भर ध्यान के, कोई जोडे नहीं आवे।। १।।
लाख बरस लग तप सुं, पचि इन्द्रया मारे। तासुं इधको नाम है, जो जन हिरदे धारे।। २।।
क्रोड जतन करणी करे, बिंद राखे मांही। कह सुखदेव तोई नाम की, चितवन सम नांही।। ३।।

एक घडी आधी घडी परमात्मा का ध्यान धरते है उसकी बराबरी यज्ञ, जोग, जप, कोई नहीं करते है। अडसठ तीरथो में नहावो, नित्य ही न्यात को जिमावो, तो भी क्षण भर ध्यान के बराबर नहीं है। लाख बरस तपस्या कर इन्द्रियो को बस में करे, उससे भी अधिक परमात्मा का नांव है, जिसे जन धारण करते है। क्रोड जतन करके करणियां करते है, ब्रह्मचर्य का पालन करते है तो भी परमात्मा के नांव के चितवन के बराबर नहीं है।

卐 हरजस पद राग बिलावल (२) 卐

जोगिया ने ढुंढत जुग भया, जोगी किणी हन पाया। ज्यां देखु ज्यां राजवी, सबके संग माया।। टेर।।
करता कुं जोगी कहत है, करता जोगी नांही। मैं देख्या गुरु ज्ञान में, सब माया मांही।। १।।
पारब्रह्म कूं जोगी कहत है, अविनासी न्यारा। मैं देख्या गुरु ज्ञान में, माया मूल विचारा।। २।।
ज्यूं जल से सब ऊपजे, विष ईमरत दोई। यूं माया परब्रह्म सुं, प्रगट कहूं तोही।। ३।।

जग में जोगी कोई नहीं, सारा घर बारी। तीबर मद बैराग है, माया ईधकारी।। ४।।
केवल ज्ञान बैराग है, माया सुं बारे। सो जोगी सुखराम कहे, ऐसी मत धारे।। ५।।

योगी आः पद को कहते है और उसको प्राप्त करने के साधन करते करते जुग बीत गये लेकिन उस पद की प्राप्ति किसी को नहीं हुई, ब्रह्म को जोगी कहते है, लेकिन ब्रह्म जोगी नहीं है, मैंने गुरु के ज्ञान से देखा है कि वो पद माया के साथ है, पारब्रह्म के होणकाल के पद को योगी कहते है व अविनाशी भी कहते है। मैंने गुरु ज्ञान से देखा है कि सब सृष्टि की उत्पति उसी पद से है। यही माया का मूल है। जैसे जल से ही विष व अमृत होता है ऐसे ही माया पारब्रह्म से प्रगट हुई, जग में जोगी कोई नहीं है। माया के पद में रहना सब घर बारी है। तीबर बैराग व मद बैराग शरीर के साथ चेतन पद में होते है सो यह भी माया ही है। ज्ञान बैराग केः पद की प्राप्ति कराता है, वह माया के पद से अलग है। ज्ञान बैराग को धारण करके केः पद आः पद की प्राप्ति होती है, वही योगी है।

卐 हरजस पद राग बिलावल (३) 卐

जुग में जोगी कोई नही, सब दोजख धारी। केतो जत तप कर रहया, कोई ईन्द्रया मारी।। टेर।।
करणी करम उपासना, सब के मन भावे। निराकार करतार सूं, मिलबो सब चावे।। १।।
सांस उसांस रट रहया, अजपे मन लागो, निश दिन पचता निसरे, सांसो नहीं भागो।। २।।
संखनाल होय उतरे, बंकनाल चढावे। ध्यान धरे जाय सुन्न में, करता कूं गावे।। ३।।
तीन लोक करतार कूं, सब ही जसदेवे। जोगी की कल ना लखे, करमी कूं सेवे। ।। ४।।
नेः करमी ब्रह्म ज्ञान है, करमी मत सारा। जोगी तो सुखराम कहे, दोन्या सुंई न्यारा।। ५।।

जुग में जोगी कोई नहीं है, सब जन्म मरण में आने वाले है। कोई जप करते, कोई तप करते, कोई इन्द्रियो को वश में करते है। करणिये कर्म उपासना सबके मन को अच्छे लगते है यह करके निराकार परमात्मा के पद में मिलना चाहते है, सांस उसांस में भजन करते है, मन से ज्ञान करते है। रात दिन पच रहे है। तोभी संशय नहीं मिटा है। संखनाल से उलटकर बंकनाल में चढकर सुन्न में ब्रह्मण्ड से ऊपर पारब्रह्म के पद में पंहोचकर ध्यान करते है, वो करता पद की भक्ति है। तीन लोको की रचना करने वाले पारब्रह्म के पद की महिमा सब करते है। जोगी की कल याने आनन्द ब्रह्म के पद का अनुभव नहीं करते है। तब तक करता पद की भक्ति है और करता पद में सब शुभ अशुभ करणिये है यही करमी कूं सेवे है, केः पद में शुभ अशुभ करणिया नहीं है उसको ने करमी ब्रह्म का पद कहते है। होणकाल ब्रह्म में सब शुभ अशुभ करणियां है इसलिये इनसे कर्मों का खात्मा नहीं होता है। मःफः है कि जोगी याने आनन्द ब्रह्म का पद तो इन दोनो से ही अलग है।

卐 हरजस पद राग बिलावल (४) 卐

मैं तुज बुजु रे प्राणियां, सनमुख कद वेहलो। जिण तोकूं पैदा कियो, तन मन कब देलो।। टेर।।
काला सुं धोला हुवा, शिर डिगमिग धूजे। नेणा सूजे धुंधलो, तोई भक्त न बूजे।। १।।
श्रवण शब्द न सांबले, ईन्द्रया सब थाकी। तो ही हिडक्यो धन को, शिंवरे नहीं डाकी।। २।।
मुख लाला नाशा जरे, पग सो पडे नहीं ठावा। तो भी हर शिंवरे नहीं, हांके नित दावा।। ३।।
जात न्यात घर गांवरा, कोई बात न माने। कह सुखदेव तोई जखरे, करमा दिश तांणे।। ४।।

मैं तुमको पूछता हूं कि परमात्मा की प्राप्ति कब करोगे। जिसने तुमको पैदा किया उसकी तन मन से भक्ति कब करोगे। बाल काले से सफेद हो गये, शिर भी डिगमिग धूजने लग गया, आंखो से कम दिखने लग गया फिर भी भक्ति नहीं करता है। कानो से कम सुनने लग गया, सब ईन्द्रियो ने जवाब दे दिया तो भी धन इकट्ठा करने में ही लगा रहता है। परमात्मा का भजन नहीं करता। मुंह से लारे पडती है, नाक जरता है, पैर भी सीधे नहीं पडते है तो भी परमात्मा का सुमरण नहीं करता और हमेशा यही कहता है कि यह सब मेरा है। जाति में, न्यात में, घर में, गांव में कोई कहना नहीं मानता। म:फ: है कि तो भी नीच तूं रात दिन करम बन्धन में लगा रहता है।

卐 हरजस पद राग बिलावल (५) 卐

उठ परोडे मांगणे, तेरा जन जावे। सुण सांई सांची कहूं, तुझ लाज न आवे।। टेर।।
तम मिलियां को गुण कहा, भिक्षक जन बाजे। मेरो तो कुछ सोच नहीं, तेरा बिड़द लाजे।। १।।
दुनियां सब सारी कहे, मांगण क्यूं जावे। जे इनकूं साहेब मिल्या, बैठा क्यूं नहीं खावे।। २।।
हरजन होय मांगत फिरे, दुनियां में केताई। क्या शोभा हर आप कूं, सुण लिज्यो सांई।। ३।।
चित मन मेरा जीव ओ, ब्रह्मण्ड चढ जावे। अब मोमे क्या चूक है, अजूं भीख मंगावे।। ४।।
थे चाडया म्हें चड गया, ब्रह्मण्ड के मांही। अब हर कहो क्या चूक है, तम रीज्या नांही।। ५।।
म्हें तो दुख सुख आदरया, हर राम दुवाई। बिडद काज सुखराम कह, करूणा हर गाई।। ६।।

हे परमात्मा तुम्हारे भक्त आत्मा के लिये भक्ति ग्यान करते हुये भी अन्न जल की काया के लिये हमेशा मांगने जाता है। भक्त कहता है कि आप अपने बिडद की लाज रखो, आपकी प्राप्ति का गुण क्या है जो आपके भक्त भिक्षुक कहलाते है, मुझे तो कोई चिन्ता नहीं है पर आपका बिडद लाजता है। सारा जग कहता है ये मांगने क्यों जाते है। यदि इन्हें परमात्मा की प्राप्ति हो गई है तो बैठे क्यों नहीं खाते, मांगने क्यों जाते है। हे परमात्मा आप सुणो, आपके भक्त कहलाकर संसार में मांगते फिरते है। इसमें आपकी क्या शोभा है। यह जीव चित मन से ब्रह्मण्ड में आपका ध्यान करता है। अब मेरे में क्या दोष है फिर भी भिक्षा रूपी उद्योग करवाते हो। आपने चढाया मैं ब्रह्मण्ड में चढ गया फिर भी मेरे में क्या भूल है कि आप प्रसन्न नहीं हुये। रामजी की सोगन खाकर कहता हूं मैंने सब सुख दुख को सह लिया है लेकिन आपके बिडद के लिये प्रार्थना की है।

卐 हरजस पद राग बिलावल (६) 卐

भक्त करावो दास कूं, तो बिरेह दो चेरी। तलफ बिना प्रभु ना सजे, भगती ज्यूं तेरी।। टेर।।
बिरेह बिना तेरी भक्त सुं, प्राणी दुख पावे। ज्यूं निरबल डांडी चले, मुख नाज न भावे।। १।।
मैं मांगु बेराग कूं, किरपा करो सांई। बिना तरले ईण जीव सुं, शिवरण हुवे नांई।। २।।
सुरातणो अंग भेजिये, मतवालो कीजे। कह सुखदेव अंग बायरी, भक्ति नहीं दीजे।। ३।।

दास से भक्ति करावो तो बिरह के साथ करावो, बिना तडफ आपकी भक्ति नहीं हो सकती। बिना बिरह आपकी भक्ति का आनन्द नहीं आना ही दुख पाना है। जैसे कमजोर आदमी चल नहीं सकता न अन्न खाने की रूचि रहती है। मैं आपसे बैराग्य मांगता हूं। हे परमात्मा आप कृपा करो। बिना तरले याने तडफ के इस जीव से सुमरण नहीं होता है। एक क्षण भी भजन ध्यान नहीं भूलना

ही सुरातणा अंग भेजना है। भजन ध्यान के आनन्द में हर समय मगन रहना ही मतवाला करना है। म:फ: है कि इन अंगो के बिना भक्ति करने से आनन्द नहीं आता है।

卐 हरजस पद राग बिलावल (७) 卐

करणी कर रेणी रहे, सोही जन सांचा। वे ने: चे फल पावसी, मनसा सुण वाचा।। टेर।।
केता ज्यूं चलता नहीं, सो पाखण्ड ले धारा। ज्यां सूं साहिब दूर है, लक्ष करोड हजारा।। १।।
ज्यूं केता त्यूं ही चले, जांका काहा कहिये। वे जन साहेब एक है, शरणो गेह रहिये।। २।।
रच मच लागा नांव सुं, भूला जुग माया। सो जन सांचा संत है, उलट गिगन सिधाया।। ३।।
लाख बात की एक है, जे कारज चहिये। कह सुखदेव तज झूंठ रे, शिवरण सच गहिये।। ४।।

म:फ: है कि जो तीन लोक की मर्यादा मुजब रेहणी सेहणी रखता है, वही भक्त सच्चा जन है, उसको मन माफिक फल प्राप्त होगा। कहते है उस माफिक नहीं चलते है, यही पाखण्ड धारण करना है, उनसे परमात्मा लाखों करोडो हजारो कोस दूर है। जो कहने के माफिक चलते है उनका क्या कहना है, वे तथा परमात्मा एक है। उनकी शरण में रहो। परमात्मा का नांव एक क्षण भी नहीं भूलते है, यही रच मच लागा नांव सुं है। संसार व माया से मोह नहीं करना ही भूला जग माया है। वो ही जन सच्चे संत है जो बंकनाल से ऊलटकर ब्रह्मण्ड से ऊपर सतशब्द का अखण्ड ध्यान कर आनन्द में लय हो जाते है। लाख बात की एक है अगर मनुष्य जन्म का कार्य करना है तो झूंठ को छोड कर सतगुरु विधि से परमात्मा के नाम की भक्ति करो।

卐 हरजस पद राग बिलावल (८) 卐

विषे मनोरथ थक गया, सुकरत व्हेला। पोत करे कर निसरे, धरम कीजे तो भला।। टेर।।
शील सांच की ऊपजे, त्यागन सो करिये। सुख दुख में मन यूं कहे, धीरज सो धरिये।। १।।
परमारथ के कारणे, मांगण मैं जाऊं। चोरी करके आंण के, संता कूं पूवाऊं।। २।।
हर प्यारा मोकूं लगे, हल शिवरण कीजे। तन मन धन सब अरप के, चित चरणा में दीजे।। ३।।
बिरह बिकल मन तडफडे, जो तीन ही राखूं। आठ पोहोर चौसठ घडी, शिवरूं मैं वाकूं।। ४।।
यूं ऊदे भाग मेरा भया, भरमना सब भागी। जन सुखदेव निज नांव सूं, ताली अब लागी।। ५।।

म:फ: है कि परमात्मा में मिलने के लिये सब विषय रस थक गये एवं शुभ कर्म की तरफ दिल लग गया। अशुभ कर्मों से दूर रहते हुये धर्म मार्ग पर चलता हूं एवं शरीर पर शील व्रत, सांच की त्याग की वृति रहती है। सुख दुख में मन धैर्य रखता है एवं जगत हित के लिये मांगने भी जाता हूं। कभी ऐसा मौका आने पर संतो के लिये चोरी करके भी प्रसाद पहुंचा देता हूं। परमात्मा प्यारे लगते है अत: जल्दी शिवरण करो। अपना तन मन धन परमात्मा के चरणों में अर्पण करके अपना चित परमात्मा में लगा दो। अब मेरा मन भी यह कह रहा है कि मैं त्रिगुणी माया में वापस नहीं आवुं। इसलिये हर समय परमात्मा के नाम का शिवरण करता हूं। इस राम रटने से मेरे भाग्य उदय हो गये तथा सब भरमों का नाश हो गया इसलिये आत्मा और सतशब्द एक मेक हो गये।

卐 हरजस पद राग बिलावल (९) 卐

ऊठ परोडे प्रेम सूं, पूरण पद गावे। धिन वांकी मात पिता, हर सुं लिव लावे।। टेर।।

ध्यान धरे करतार को, अवगत सुं राता। धिन धिन सो नर नार है, साहेब संग माता।। १।।
पिया प्याला प्रेम का, ओरां कूं पावे। सो साधु संसार में, करता सम कुवावे।। २।।
आठ पोहोर चौसठ घडी, हर नांय बिसारे। सो साधु सुखराम कह, बोहता हंस तारे।। ३।।

हमेशा उठ कर प्रेम से परमात्मा के परम पद की प्राप्ति की भक्ति करते है, उनके माता पिता को धन्य है जो एक क्षण भी परमात्मा को नहीं भूलते। सूरत से शब्द का अनुभव करना ही करतार का ध्यान धरना है। के: पद की प्राप्ति करना ही अवगत सुं राता है तथा उन स्त्री पुरूषो को धन्य है जो सतगुरु विधि से भक्ति कर आ: पद में लय होते है, यही साहेब संग माता है। प्रेम से आ: पद की प्राप्ति करना ही प्रेम का पियाला पीना है और दूसरो को भी उस पद की प्राप्ति कराना ही औरा कूं पाना है। वे ही संसार में सच्चे साधु है जो परमात्मा के बराबर है। आठ पोहर चोसठ घडी में एक क्षण भी परमात्मा को नहीं भूलते है, वे संत ही बहोत हंसो का उद्धार करते है, जन्म मरण से रहित करना ही तारना है।

卐 हरजस पद राग बिलावल (१०) 卐

मैं मल सूं करतार का, बाथक जन आवे। पाडूंगा बोहो भांत ले, पिछे पस्तावे।। टेर।।
दिस्ट हमारो देख के, पीछे कर जोडो। आन भरोसो जांण के, हम सुं मत तोडो।। १।।
पांचू जोधा पाड के, मन सांवत ढाया। तुम केती एक बात हो, ज्ञानी सुण भाया।। २।।
मोमे पोरष राम का, सुण लिज्यो लोई। जिण सब कूं पैदा करया, तांका बल होई।। ३।।
सुणज्यो सब सुखराम कह , ओ मल मस्ताया। त्रिगुटी सेहेर मंझार में, घूमत है भाया।। ४।।

मैं परमात्मा का पहलवान हूं मुझसे कोई जन ज्ञान चर्चा करे, यही बाथक जन आवे है। मैं उसे ज्ञान से बहुत तरह से समझाऊंगा, यही बोह भांत ले पाडना है। मेरे ज्ञान को समझकर मानना ही पीछे पस्ताना है। हमारे ज्ञान को समझना ही दिस्ट हमारी देखना है व ज्ञान धारण करके ही पीछे कर जोडो है। सतपद की भक्ति को छोडकर आन की भक्ति करना ही हम सूं मत तोडो। पांचो जोधा याने काम क्रोध मध लोभ अहंकार व सांवत शूरवीर मन को भी ग्यान से पछाडा है, ग्यानी तेरे से ग्यान चरचा करना तो बोहोत सरल है। हे संसार के स्त्री पुरूषो सुणो, सारी सृष्टि को पैदा करने वाले परमात्मा का बल मेरे में है। म:फ: है कि सब ही सुणो परमात्मा की भक्ति करना ही पुरूषार्थ है, हे ग्यानी अभी तूं त्रिकुटी शहर के बीच में ही घूम रहा है।

卐 हरजस पद राग बिलावल(११) 卐

अेसा भेव बतावज्यो, समरथ गुरु मेरा। राम मिलो इण देह में, काटुं विष जेरा।। टेर।।
कुदरत तेरी सांईयां, मुज लखी न जावे। मो मन अेसी ऊपजे, कैसे हर पावे।। १।।
देह अस्तुल ना रूप के, घर गांव न काया। किस विध मेला कीजिए, तिरभवन पत राया।। २।।
पूरब प्रीत पिछाण के, मेरे घर आवो। मैं दुखिया तुम बाहिरा, मुज दरश दिखावो।। ३।।
मैं निर्बल बल हीण हूं, मुज सजे न कांई। शरणागत सुखराम है, हर मिलो मन मांई।। ४।।

हे परमात्मा और सतगुरु याने केवली भगवंतो मुझे ऐसा भेद बतावो जिससे इस शरीर में ही परमात्मा की प्राप्ति हो जावे और जन्म मरण से रहित हो जाऊं, यही काटु विष जेरा है। परमात्मा

आपकी कला मेरे समझने में नहीं आती। मेरे मन में यह भाव होता है कि परमात्मा की प्राप्ति कैसे करूं। तीन लोक के स्वामी आपकी स्थूल देही नहीं है। न आपका कोई रूप रंग है न घर गांव है, आपकी प्राप्ति कैसे होगी। आदू प्रीत पिछाणकर मेरे अन्तर में प्रगट होवो। आपकी प्राप्ति के बिना मैं दूखी हूं। मुझे दर्शन दो, मैं कमजोर बलहीन हूं। मेरे से आपकी भक्ति नहीं होती है, मैं आपकी शरण में हूं। आपका ग्यान हर समय मन से होता रहे, यही मन मांई मिलना है।

卐 हरजस पद राग बिलावल(१२) 卐

हंस चल्या घर आपणे, मत रोवो भाई। ज्यां वां सूं यां भेजिया, त्यां लिया बुलाई।। टेर।।
खेल मंडयो बाजार में, सब जोवण जावे। देख तमासो फिर चले, नट क्यूं पिस्तावे।। १।।
राछ माल थाथी धरे, बस्ते नर माया। आंण संभाले ले चले, क्यूं बेदल भाया।। २।।
सांपे नाम सांड का होवे, सांपे गायां संग चरे सब ग्वाल चरावे।
धणी बिछोडे आंण के, क्यों ग्वाल ढिरावे।। ३।।
मेला में सुखराम कह, सब ही चल आवे। लेबा देबा कोगती, फिर पीछा जावे।। ४।।

हंस शरीर छोडता है यही घर जाना है, उसके लिये मत रोवो। जिस परमात्मा ने भेजा, उसी ने ही बुला लिया। बाजार में खेल होता है, उसे देखने सब जाते है, तमाशा देखकर वापिस घर जाते है तो नट कहां पछताता है। कोई चीज गिरवी रखकर वापस छुडाता है तो गिरवी रखने वाला कहां दुख पाता है। जिसकी होती है वह ले जाता है। गायो के झूंड में सब गाये चरती है, ग्वाला चराता है जब उन्हें उनका मालिक उनको ले जाता है तब ग्वाला कहां दुख पाता है। म:फ: है कि मेला भरने पर सब इकट्ठे होते है, कोई लेने वाले, कोई देने वाले आते है, और कोई देखने आते है, सब अपना काम करके वापिस अपने घर जाते है, तब किसे दुख होता है।

卐 हरजस पद राग बिलावल(१३) 卐

ओ तेरे क्या न्याव है, सुण लिज्यो सांई। नुगरा नर राजस करे, जन भीखण जाई।। टेर।।
जन दुखिया तो ही भला, मेरी भक्त कमावे। अमरापुर ले जावसुं, जुग जुग सुख पावे।। १।।
जन कुं माया राज दूं, तो सब ही मुज माने। नरक कुंड खाली रेह, जुग में कुण जामें।। २।।
देऊं तो लेवे नहीं, मेरा जन माया। ज्यां सुख जाण्या पीव का, ज्यां ने और न भाया।। ३।।
माया भक्ति अेगटी, भेली नहीं रेहे। इण कारण सुखराम कह, जन कूं दुख देहे।। ४।।

परमात्मा आपके यहां यह क्या न्याव है जो भक्ति नहीं करते है वे माया के सुख भोगते है, जन याने भक्ति करने वाले मांगने जाते है। भक्ति करने वालो के दुख ही अच्छा है, क्योंकि दुख में ही परमात्मा की भक्ति करने से ही अमरलोक की प्राप्ति होती है। जिससे जुगान जुग सुख पाता है। जन को माया राज करामात करतूत सिद्धाई की प्राप्ति करा दूं तो सब मुझे मानने लग जाते है, जिससे नरकों में कौन जावे व जगत में कौन जन्मे, मेरे जन को माया देता हूं तो भी वे लेते नहीं है। जिसने परमात्मा की भक्ति का आनन्द प्राप्त किया है। उस को कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। माया और भक्ति साथ साथ नहीं रहती है। इसलिये जनों को माया की प्राप्ति नहीं होती, यही दुख देना है।

卐 हरजस पद राग बिलावल(१४) 卐

आशा तज निरआस होई, भक्ति नर कीजे। तीन लोक सुख छोड के, चरणा चित दीजे।। टेर।।
सपना ज्यूं सुख जग का, मत भूलो कोई। माया ठगनी लार है, मत डूबो लोई।। १।।
बश माया के जोर है, नाना विध घाता। शिवरण बिना संसार में, माया की बाता।। २।।
ब्रह्म ज्ञान मत धार के, साहिब कूं गावे। ज्यूं सुखदेव जम सब थके, अमरापुर पावे।। ३।।

किसी तरह की इच्छाये नहीं रखकर भक्ति करना ही आशा तज निरआश होना है, तीन लोको के सुख की इच्छा को छोडकर परमात्मा की भक्ति में चित लगावो। तीन लोक का सुख सपने के सुख के बराबर है इसमें कोई मत भूलो। माया रूपी ठगणी साथ है, इसका मोह करके मत डूबो, सब माया के वश में है वो अनेक तरह से फंसाती है, यही घात है। एक भजन के बिना जगत में सब माया का पसारा है, सतगुरु विधि से सतशब्द की भक्ति करना ही ब्रह्म ज्ञान मत धारना है, सतशब्द का ध्यान करना ही साहिब कूं गाना है। सतशब्द की भक्ति से जन्म मरण से रहित होना ही जम का थकना है और आः पद की प्राप्ति करना ही अमरापुर पाना है।

卐 हरजस पद राग बिलावल(१५) 卐

प्रेम पियाला पीजिये, दुजा रस छाडो। तामस तिमर मिटाय के, चरणा चित गाढो।। टेर।।
पांच पचीसूं बस करे, बारी नव लांगो। शरम सनक शंक्या तजो, मन को सल भांगो।। १।।
आसण नेः चल धारिये, दिल सांवत रहिये। अेक नकेवल राम कूं, अे निश मुख कहिये।। २।।
जन सुखदेव गुरु देव कूं,पूरण पत राखो। ब्रह्मण्ड घर जाय के, ईमरत रस चाखो।। ३।।

प्रेम से भक्ति कर आनन्द लेना ही प्रेम का पियाला पीना है, माया के भोगो के सुख को छोडना ही दूजा रस छोडो है। क्रोध व अज्ञान को मेटकर अखण्ड भक्ति करना ही चरणो में चित्त गाढना है। पांच विषय पचीस प्रकृतियो के शरीर से अलग होकर नो दरवाजो को छोडकर दशवे द्वार में पहुंच कर आगे केवल की बारी लांगना है। शरम व शंका को छोडकर मन लगाकर भक्ति करना ही मन का सल भागना है और दिल को सांवत सूर वीर करके आसण याने आत्म चेतन से बारह कंवल का छेदन कर केः पद में शब्द का आनन्द लेना है। मःफः है कि सतगुरु के ग्यान माफिक विश्वास रखकर साधन करोगे तो केः पद आः पद में पहुंचकर आनन्द रूपी अमृत पीता रहेगा।

卐 हरजस पद राग बिलावल(१६) 卐

ऐसा जुग में को नहीं, ममता को धपावे। सुर नर मुनि देवता, उणारथ सब गावे।। टेर।।
पच पच मर गया मानवी, सुर देवत सारा। राम रहीम ही पच मरा, इण ममता रे लारा।। १।।
आद भवानी भरम रे, दुख पावे रे भाई। निराकार निरबाण ने, आ ममता ले आई।। २।।
साधु पंडित सिद्ध कूं, ममता दूं लागी। पर आत्म वश करे, दूणी होय जागी।। ३।।
निरगुण सरगुण ज्ञान है, चडिया दोऊ आपे। केवल बिन सुखराम कह, ममता नहीं धापे।। ४।।

संसार में ऐसा कोई नहीं है जो कामना नहीं रखते है। यही ममता को नहीं धपाना है। देवता मनुष्य मुनी सब ही कामना करते है, यही उणारथ गाना है। सब मनुष्य व देवता राम रहीम भी ममता नही छोड सके, यही पच मरना है। ब्रह्म जो निराकार और निरबाण है, आत्म चेतन वह भी

कामना याने इच्छा से आकार के साथ आ गया। आद भवानी याने ईच्छा शक्ति सुख भोगने के लिये आत्मा को शरीर में लाई परन्तु सुख के पीछे दुख का तांता लग गया। साधु पंडित व सिद्ध सबके ममता की ज्वाला लग रही है, यह चेले बनाकर उनको अपने वश में करके उनसे मोह करते है। यही दूणी होकर जागना है। निरगुण में मैं ब्रह्म हूं व सुरगुण में मैं भक्ति करता हूं। यही दोनो में आपा है। म:फ: है कि जब तक के: पद की प्राप्ति नहीं होगी तब तक ममता से अलग नहीं हो सकते।

卐 हरजस पद राग बिलावल(१७) 卐

वा कल तो पावे नहीं, ज्यां सुं ममता धापे। जब लग कुल का करम है, चडया रे आपे।। टेर।।
जोगी लागा जोग सूं, भोगी भोगां के तांई। साधू लागा ध्यान सूं, ऋषि ममता मांही।। १।।
ज्ञानी लागा ज्ञान सुं, श्रोता सुणबा के तांई। आचारी खट करम की, शमसेर संभाही।। २।।
रेत राज मरजाद कूं, खस्ता दिन जावे। ईश्वर ब्रह्म सुं आद ले, अेकण मोल बिकावे।। ३।।
सागे सतगुरु पाविया, भरमना सब खोवे। जब ममता सुखराम कह, तिरपत होय सब सोवे।। ४।।

ममता से अलग होने का केवल ज्ञान तो धारण करता नहीं है। जब तक तीन लोक का साधन करता है तब तक जन्म मरण नहीं मिटता। जोगी अष्टांग योग की भक्ति करते है। भोगी भोग से ही परमात्मा की प्राप्ति करना चाहते है। कई साधु ध्यान करने में लगे हुये है। ऋषि शिष्यों की ममता में बंध रहे है। ज्ञानी ज्ञान कथकर श्रोताओं को सुणा रहे है। आचारी यानि आचार विचार से शुद्ध रहते हुये परमात्मा की प्राप्ति मानते है। प्रजा राज काज के नियमों व उनकी मर्यादा पालन में खस्ती जा रही है। कोई स्वर्ग, बैकुण्ठ, परब्रह्म तक तथा जगत में देही अमर भी कर लेते है लेकिन महाप्रलय में सब आत्मा एक जगह आ जाती है। यही एकण मोल बिकावे है। जब ओधाधारी सतगुरु मिलते है तब उनके ज्ञान द्वारा सब भरमों का नाश होता है। जब आत्मा की ममता धापती है। के: पद में पहुंचना ही तिरपत होना है।

卐 हरजस पद राग बिलावल(१८) 卐

जुग शोभा चाहूं नहीं, सुख संपत कोई। करामात करतूत की, इच्छया नहीं मोई।। टेर।।
है कोई ऐसा शूरवां, मन कूं समझावे। हद बेहद कूं छाड के, मोरी दिश आवे।। १।।
जंतर मंतर टोटका, और कला सारी। हमा नगर के मांय, इच्छया माने नहीं मारी।। २।।
देव कला दाणू कला, भगवत कल न्यारी। दुरबल कूं माने नहीं, ऐसी कुदरत न्यारी।। ३।।
माता पिता दोनुं तजे, गुरु की मां मुंढे। धिन हंसा सुखराम कह, सतगुरु मत ही ढूंढे।। ४।।

म:फ: है कि जगत की शोभा व सुख संपति की चाहना नहीं है। करामात व करतूत मेरे को अच्छे नहीं लगते है। मन को वश में करने वाले ऐसा कोई शूरवीर है जो हद बेहद को छोडकर के: पद आ: पद का ज्ञान धारण करे, यही मेरी दिश आना है। जंतर मंतर टोटका जितनी भी कलाये है वे मुझे अच्छी नहीं लगती है। देवता, राक्षस, भगवत याने ब्रह्म की कला सब अलग अलग है। इनसे परम पद की प्राप्ति नहीं हो सकती। कितना ही मन से गरीब एवं निर्मल बन जावे, यह सत की कल आने वाली नहीं है। यह कला इन सबसे अलग है। माता माया, पिता ब्रह्म, दोनो का देश छोडकर सतगुरु पद का ग्यान व भक्ति धारण करे, ये ही गुरु की मां मुंढे, उण हंसो को धिन है जो आत्मा के लिये दृढ मति करके अणभै ग्यान व भक्ति को ही ढूंढे।

卐 हरजस पद राग जेत श्री (१) 卐

जामो है भारी है भारी, कोई धोवे संत हजारी, जामो है भारी है भारी।। टेर।।
ज्यां धोयां ज्यां अमर हुवा रे, आवागमण निवारी।
सुर तेतीस शकल सोई बंछे, मिलणो दुरलभ विचारी।। १।।
जामा मांय अनंत गुण होई, जे कोई लेहेत विचारी।
गेली जगत धोय नहीं जाणे, उलटो कियो खुवारी।। २।।
कर सुं धुपे न लाता खुंधो, पायण शिला पिछाडी।
जिण धोया जिण अधरज धोया, प्रेम नांव जल डारी।। ३।।
जल सुं धुपे न साबुन दिया, कीमत कठिन करारी।
मुन्या तपस्या सिद्धा पीरा, धोयो नहीं लिगारी।। ४।।
धोबी कोट निनाणु कसिया, बाल जाल गया फाडी।
अनन्त कोट संता सो धोयो, कसर न भागी सारी।। ५।।
पांचो ज्ञान तिरथंगर पाया, कर गया फगल विचारी।
जन सुखराम धोवणे लागा, करडो मतो उर धारी।। ६।।

आत्मा ने मनुष्य शरीर रूपी जामा पहन रखा है, यह जामा भारी है। इस जामे को हजारो संत धो रहे है। जिनका धुपा है वे जन्म मरण से रहित होकर अमर हो गये है। तेतीस क्रोड देवता मनुष्य शरीर पाने की इच्छा करते है, परन्तु मिलना मुश्किल है। इस जामे में अनन्त गुण है यदि इसका विचार करे तो जाना जाता है। संसार पागल है वह इस जामें को धो नहीं जानता, उलटा खराब कर दिया। यह जामा न हाथ से, न पैर से गुन्दने से, न पत्थर पर पिछाटने पर धुपता है। अर्थात दान से, तीर्थ यात्रा से, शरीर को कसने से, नहीं धुपता है। जिन्होंने धोया है उन्होंने इसको प्रेम से भजन करके सतशब्द का अधर अनुभव होना ही अधर धोना है। न जल से, न साबुन से धुपता है अर्थात बेकरी वाणी से राम रटना, आठ अंग चौसठ लक्षण शुद्ध रखने से भी नहीं धुपता। इसकी कीमत बडी कठिन व करारी है। मुनि तपस्वी सिद्ध व पीर अपने अपने साधन करके जरा सा भी नहीं धो सके। इस जगत में अपने अपने मतानुसार निनानवे प्रतिशत लोगो ने इस जामे को धोने की कोशिश की, लेकिन उलटा खराब कर दिया। उनका जन्मना मरना नहीं मिटा, यही बाल जाल गया फाडी है। अनन्त क्रोड संतो ने पारब्रह्म पद तक की प्राप्ति की लेकिन के: पद आ:पद की प्राप्ति नहीं कर सके। यही कसर न भागी सारी है। तीर्थंकरो को पांचो ज्ञान की प्राप्ति हुई और वे जन्म मरण से रहित हो गये, यही कर गया फगल विचारी है। म:फ: है कि दृढ निश्चय करके के: पद आ: पद के ज्ञान को धारण करना ही धोवणे लागना है।

卐 हरजस पद राग जेत श्री (२) 卐

हाथी है झूंठो है झूंठो, कोई फेरे संत अफूटो, हाथी है झूंठो है झूंठो।। टेर।।
मोरो बंदे न आंकस माने, शांकल गिणे न खूंटो।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर खसिया, नेकन फिरयो अपूटो।। १।।
खट सो जती दत्त की मईयां, उण सूंई कियो चपेटो।

रिषियां मुनिया घेर घेर राख्यो, तोही रह गयो छूटो।। २।।
त्यागी तपी सूरवां ऊपर, कोप करे कर टूटो।
जुग तो शकल देखतां भागो, अड बड बासन फूटो।। ३।।
ऊलटा होय गिगन में चढिया, ज्यां काटो कर पीटो।
जन सुखराम समाधी पूंता, ज्यां हां पल भर खूटो।। ४।।

म:फ: है कि यह मन रूपी हाथी झूंठा है। इसको तो संतो के ब्रह्म ज्ञान द्वारा ही फेरा जा सकता है। अन्य साधन से यह झूंठा मन नहीं फिरता है। शास्त्रों के ज्ञान से, तीन लोक की मर्यादा से एवं नरक में जाने से भी यह मन नहीं डरता। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव की सेवा पूजा करने से भी नहीं फिरता है। छ जती हुये, दत्तात्रेयजी की मैय्या अनसुया, उनके भी चपेटा लग गया। इस मन को ऋषि मुनि तपस्या करके बस में करना चाहा तो भी नहीं हुआ। कई त्यागी, तपस्वी, शूरवीर हुये, यह भी मन को बस में नहीं कर सके, तो जगत की तो क्या कहूं, यह तो आपस में ही विचारों से लड भीड रहे है। जिन्होंने संतो का सतज्ञान धारण करके गिगन में चढ गये फिर उनके मन को काटो चाहे पीटो अर्थात मन निजमन हो जाता है। म:फ: है कि फिर वह भक्ति करने वाला समाधि देश में पहुंचता है। जिसके मन के विचार स्वत: ही समाप्त हो जाते है।

卐 हरजस पद राग हिंडोल (१) 卐

मैं बहुत दुखी जग मांय, समरथ शरणे लिजे हो।। टेर।।
जुग जुग रूं मैं तुमरी लारा, दास न दूरा कीजे हो।। १।।
जुगन जुगन में फिरयो चौरासी, जनम जनम दुख पाया हो।। २।।
सुरपुर नरपुर प्यालज देख्या, मासो सुख काहूं नांही हो।। ३।।
मात पिता कुल भाई र बन्धु, स्वारथ का सब कोई हो।। ४।।
ज्ञान बिण मैं सब जुग जोयो, गुरां बिन काहू सुख नांही हो।। ५।।
कह सुखराम सुणो गुरु सांई, तुम बिन जी सुना ही हो।। ६।।

मैं संसार में बहुत दुखी हूं, हे समरथ परमात्मा आप कृपा करो। मैं जुगानजुगो में आपकी भक्ति करूं। आपकी भक्ति से एक क्षण भी मुझे अलग मत करो, यही दास न दूरा किजे हो। जुग जुग में चौरासी भोगी है और अनेक जन्म धारण करके जुग जुग में दुख पाया है। देवताओं के लोक, मध्य लोक व पाताल लोक में फिरा, सब जगह तीनो लोको में फिरा, कहां पर भी रती भर सुख नहीं है। माता पिता भाई बन्धु कुटुम्ब व संसार सब स्वारथी है, ज्ञान करके सब जगह देखा। गुरु पद के केवल ज्ञान बिना कही भी सुख नहीं है, गुरुदेव से प्रार्थना करते है कि आपके व परमात्मा के बिना मैं किस तरह जी सकता हूं।

卐 हरजस पद राग हिंडोल (२) 卐

मोख भजन बिना नांही रे, सब बिध हद के मांही रे।। टेर।।
न्हाया धोया मोख मिलीजे, तो मिंडक मिच्छया जाई रे।। १।।
सरबग होया परम पद पावे, सांसी साटे सब संग खाई रे।। २।।

सब संग भोग किया घर पावे, तो पशु पंखी सब जाई रे।। ३।।
लछन मत सूं मोख पहुंते, तो मानव बिन सब जाही रे।। ४।।
राम रटण लिव कांई निंधे, सुर नर पशुवा मांही रे।। ५।।
राम नाम सुं गिनका तिरगी, विषे वास तन मांही रे।। ६।।
राम बिना कोई मोख न जावे, तो लछ कहा धराई रे।। ७।।
कह सुखराम सुणो सब जीवां, राम नांव सत भाई रे।। ८।।

मोक्ष की प्राप्ति भजन के बिना नहीं है और दूसरे साधन तीन लोक याने हद में रखने वाले है। नहाने धोने से मोक्ष की प्राप्ति होती तो मेंढक व मछलियों की मोक्ष हो जाती। सबके साथ खाने से मोक्ष होती तो सांसी व साटीयों को मोक्ष मिल जाता, सबके साथ भोग करने से मोक्ष की प्राप्ति होती तो पशु पक्षी मोक्ष में चले जाते। लक्षण मत धारण करने से मोक्ष की प्राप्ति होती तो मनुष्य के बिना सब मोक्ष में चले जाते, कारण सब में एक एक लक्षण अच्छे होते है। राम रटने की निंदा क्या करता है, इसको देवता मनुष्य व पशु सब रटते है। राम नाम के प्रताप से विषय वासना वाली गिनका का भी उद्धार हो गया। रामजी की भक्ति के बिना दूसरे लक्षण धारण करने से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है। म:फ: है कि सब ही जीव सुणो, राम का नाम ही सत है।

卐 हरजस पद राग हिंडोल (३) 卐

जन सा ठग न कोई हो साधो, जन सा ठग न कोई हो साधो।
जन सा ठग न कोई हो, बडा पासीगर साधो, जन सा ठग न कोई हो साधो।। टेर।।
तीन लोक बेराठज ठगियो, ममता मंछया सोही हो।। १।।
मन सरिसा भूपत ठगियो, चढ गया गढ पर दोई हो।। २।।
पांचा कूं ठग राह लगाया, पचिसूं सब लोई हो।। ३।।
अला पिंगला सुखमणा ठग के, दिया आद घर पोई हो।। ४।।
ओऊं सोहं शक्त ठग के, लिया परम पद जोही हो।। ५।।
तीन लोक दस चार भवन ले, जस रेग्या छोही हो।। ६।।
ब्रह्मा बिसन महेसर ठगता, हर मिल्या हम सोई हो।। ७।।
कह सुखराम इसा जन ठग है, सुण लिज्यो सब लोई हो।। ८।।

साधको से फ: है कि जन बडे ठग है व बडे पासीगर है। तीन लोक बेराट याने खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड से ममता व कामना के साथ से मन रूपी राजा से अलग होकर सूरत शब्द के साथ के: पद में पहुंच गई, यही दोनों का गढ पर चढना है। पांच विषय पचीस प्रकृतियो को भक्ति में लगाना ही सबको राह लगाना है। अला पिंगला से सुखमणा में भक्ति कर के: पद आ: पद की प्राप्ति करना ही आद घर में पोना है। ओऊं सोहं याने स्वांसा से व शक्ति याने इच्छाशक्ति से अलग होकर परमपद की प्राप्ति करना ही परमपद का जोना है। तीन लोक चवदा भवन में उनकी महिमा होना ही जस रहना है। ब्रह्मा विष्णु महादेव के पद से अलग होकर परमात्मा में मिलना ही हर मिल्या हम सोई हो। म:फ: है कि परमात्मा के जन याने केवली संत इस प्रकार के ठग है। इसको सब ही सुण लो।

卐 हरजस पद राग हिंडोल (४) 卐

नर तांका कोण हवाला हो। आठ पोहोर निंदा की लारा, नर तांका कोण हवाला हो।। टेर।।
क्षण भर निंदा नारद किनी, संकट जुण में डारा हो।। १।।
एक घडी मांई की निंदा, ऊभे काठ में जाला हो।। २।।
गण गंध्रप सो निंदा किवी, बिवाण उथल भू डाला हो।। ३।।
निंदा सूं नर नरक पड़त है, साख भरत किशन गुवाला हो।। ४।।
कह सुखराम भागवत गावे, निंदक का मुख काला हो।। ५।।

म:फ: है कि जो हर समय देवताओ मनुष्यो व प्राणी मात्र की निंदा करने में लगे रहते है उनकी क्या हालत होगी। एक क्षण भर नारदजी ने निंदा की, जिससे स्त्री योनी धारण कर कष्ट उठाना पडा। एक घडी की निंदा करने से भीष्म पितामह के भाई को अपनी माता की निंदा करने पर खडे सुखे वृक्ष में जलना पडा। गण गंन्द्रप ने निंदा की जिससे बिवाण से उलटकर पृथ्वी पर आ गिरे। निंदा करने से मनुष्य नरक में जाते है। इसकी साक्षी कृष्ण व सब ही शास्त्र दे रहे है। भागवत भी यही कहती है कि जो निंदा करते है, उनका जमराज के दूत मुंह काला करके नरक में डालते है।

卐 हरजस पद राग हिंडोल (५) 卐

राम कहत सम तिरिया हो, वे अंत काहा नहीं फिरिया हो।। टेर।।
अजामेल सो कब कुल राख्या, कद तन साजी किरिया हो।। १।।
वैश्या शील किसे दिन पाल्या, बिवाण ताकिदी उतरिया हो।। २।।
चंचल चोर गवु ऋषि मारया, द्रव पराया हरिया हो।। ३।।
चोरां को शिर काटत बोल्या, हर हर नांव उचारे हो।। ४।।
घाटम कूं तब बार पहुंती, घोडे का रंग फिरिया हो।। ५।।
लोधे धरम दया कद पाली, पकड प्रभु बस करिया हो।। ६।।
झूंठा फल शिबरी का पाया, कब चोका चित धरियो हो।। ७।।
जलती अग्न में मिनिया राख्या, राम पुकारी श्रीया हो।। ८।।
किता सेना सजन कसाई, पतित अनेक तिरिया हो।। ९।।
कह सुखराम नाम है ऐसा, करणी बिना उधरिया हो।। १०।।

राम राम कह कहकर जिनका उद्धार हुवा है उनको चौरासी में नहीं जाना पडा। अजामेल ने कब अपने कुल याने ब्राह्मण कर्म किये व कब शरीर से शुभ करणिये की। वेश्या ने शील वृत पालन कब किया। जिसके लिये बिवाण आया। चंचल चोर ने ऋषि व गायो की हत्या की और दूसरो का धन लूटा। चोरो के शिर काटने पर उनके मुख से राम राम के नाम का उच्चारण हुआ। घाटम मीणा को राजा के सिपाही पकडने गये तब चोरी के घोडे का रंग बदल गया। लोधे भील ने कब धरम व दया का पालन किया, उसने रामजी को पकडकर वश में कर लिया। शिबरी के झूंठे फलो को खाया उसने कब चौका लगाया, श्रीयादे कुम्हारी के राम राम कहने पर न्यावडे में जलती अग्नि में भी बिल्ली के बच्चो को बचा लिया। किताजी, सेनाजी, सजन कसाई ऐसे अनेक अधमो का उद्धार हो गया। म:फ: है कि नाम का प्रताप ऐसा है, बिना करणी किये ही उद्धार हो गया।

卐 हरजस पद राग हिंडोल (६) 卐

कपटी राम न पावे हो। अन्तकाल पिस्तावे साधो, कपटी राम न पावे हो।। टेर।।
मुख पर मीठा बहु लघुताई, सेणो समझणो बोले हो।। १।।
दाव घाव सुं ओ उर भरियो, सायब कहो काहा आवे हो।। २।।
काम क्रोध कुटलायां केती, सोचत ही दिन जावे हो।। ३।।
उजल कपडा बोह विध राखे, ज्ञान अरथ सुण लावे हो।। ४।।
अन्तर मेलो नहीं भरोसो, फिर फिर आन मनावे हो।। ५।।
फल कारण ले सेवे प्रभु कुं, परम मोख कूं चावे हो।। ६।।
कह सुखराम राम बिन आसा, सो सब कपट कहावे हो।। ७।।

साधको से फ: है कि कपट रखने वालो को रामजी की प्राप्ति नहीं होती, उन्हें अन्तकाल में पिछताना पडेगा। सामने मीठे वचन बोलकर नम्रता दिखाता है, सयाणा व समझकर बोलता है। जिनके हृदय में दाव घाव भरे है, उनको परमात्मा की प्राप्ति कैसे हो सकती है। काम में क्रोध में कितने ही प्रकार के कुटिल विचारो में ही समय जाता है। साफ सुथरा कपडा पहनता है, ज्ञान की बाते कर समझाता है। अन्तर में परमात्मा में विश्वास नहीं है व आन रूपी शरीर को ही परमात्मा मानता है, यही अन्तर में मेला है। फलों की इच्छा से भक्ति करता है और परम मोक्ष की इच्छा रखता है। म:फ: है कि रामजी की प्राप्ति बिना सब आशा कपट है।

卐 हरजस पद राग हिंडोल (७) 卐

और शकल विध सेली, भगती का काम करारा हो।। टेर।।
जे सुण सायब बाहय संभावे, तो कोई उतरे पारा हो।। १।।
घणा देणा वे तो सुण सेली, सेली जुग को बुहारा हो।। २।।
मर मिटणो वे तो सुण सेली, सेली चोरी धाडा हो।। ३।।
घर छिटकाय चले सो सेली, सेली मुंड मुंडारा हो।। ४।।
इमरत छाडज देणो सेली, सेली विसे विकारा हो।। ५।।
जप तप तीरथ संयम सेली, सेली सांग शिर धारा हो।। ६।।
सेली डाक अगन में पडनो, सेली डंड शिर भारा हो।। ७।।
कह सुखराम या भक्त दोहली, दोरो मन मतवारा हो।। ८।।

सब विधि सरल है भक्ति का काम कठिन है। अगर रामजी की कृपा हो तो ही पूर्ण रूप से भक्ति निभ सकती है। किसी का ज्यादा ऋण देना हो तो वह भी चूक सकता है। संसार का व्यवहार निभाना सरल है। मरना मिटना सरल है। चोरी धाडा करना सरल है। घर को छोड जाना सरल है। मुंड मुंडा लेना सरल है। ईमरत का छोडना सरल है। विषय विकारों को छोडना सरल है। जप तप करना, तीर्थ करना, संयम से रहना सरल है। सांग धरना भी सरल है। अग्नि में कूदना भी सरल है। डंड भरना भी सरल है। परन्तु म:फ: है कि मन को वश में करके भक्ति में लगना ही मुश्किल है।

卐 हरजस पद राग हिंडोल (८) 卐

भगत करे जन सूरा हो। नहीं कायर को काम साधो, भगत करे जन सूरा हो।। टेर।।
तन धन की सो आश न राखे, मस्त हुवे मगरूरा हो।। १।।
कपट कलेजो काट बगावे, सांसो शीश तन दूरा हो।। २।।
मात पिता की बात न माने, नार स्नेही कूरा हो।। ३।।
बाजा सुण सुण बोहो छोह आवे, बरसे मुख पर नूरा हो।। ४।।
कह सुखराम संत जन सोही, बेण कह मुख पूरा हो।। ५।।

शूरवीर ही भक्ति कर सकते है और कायर नहीं कर सकते है। शरीर व धन का मोह छोडना ही तन धन की आशा न राखे है तथा भक्ति के आनन्द में रहना ही मस्त हुवे मगरूरा है। कपट को छोडना ही कलेजो काट बगाना है, सोच नहीं करना ही सांसो शिश तन दूरा है। माया ब्रह्म तक की पहुंच के साधन को छोडना ही माता पिता की बात नहीं मानना है। ममता मोह को त्यागना ही नार सनेही कुरा याने खराब है, शब्द की धुनी अनुभव कर आनन्द आ रहा है, यही बाजा सुण सुण बोह छोह आवे है तथा उस आनन्द में मस्त होना ही मुख पर नूर बरसना है। म:फ: है कि वे ही जन संत है, जो अणभै ग्यान के वचनो का निरपक्ष निरणा करे।

卐 हरजस पद राग हिंडोल (९) 卐

जन सा सूर न कोई हो। तीन लोक फिर जोई साधु, जन सा सूर न कोई हो।। टेर।।
राजा राव घडी पल जुंझे, पीछे जुग सा होई हो।। १।।
ब्राह्मण भाट करे सो तागा, च्यार दिनां होई हो।। २।।
आठ पोहर बिन खांडे जुंझे, निमक न भूले सोई हो।। ३।।
और सूर सब काया मारे, आत्म जन छिन खोई हो।। ४।।
कह सुखराम सूरा नर मांही, यां सम सूर न होई हो।। ५।।

तीन लोको के ज्ञान से अनुभव किया है कि जन याने केवली संतो के बराबर कोई शूरवीर नहीं है। राजा राव घडी पल ही लडते है। बाद में जगत के बराबर हो जाते है। ब्राह्मण व भाट चार दिनो तक जिद करते है, बाकी उठकर चले जाते है। उन्हें चार दिन तक का ही दुख होता है। संत चोइसो घंटो हर समय भक्ति करते है, एक क्षण भी परमात्मा याने ने: अँच्छर रूपी खांडे को नहीं भूलते है। यही आठ पोहर बिना खांडे जूझना है। शूरवीर शरीर को मारते है लेकिन संत आत्मा का आत्मपणा मिटाकर परमात्मा पद की प्राप्ति करा देते है, यही आत्मा का मारना है। शूरवीरता में संतो के बराबर कोई शूरवीर नहीं है।

卐 हरजस पद राग हिंडोल (१०) 卐

हरिजन हरि गुण गावे हो। नांव निशाण रूपावे साधो, हरिजन हरि गुण गावे हो।। टेर।।
बोह दुख ताव पडे शिर आई, सुख संपत जे जावे हो।। १।।
जे ओ जगत रूठ रह सारो, घर कुल गांव छुडावे हो।। २।।
देश निकालो जे दे राजा, तो राम नांव लिव लावे हो।। ३।।

जा पुल आंण चंपे नर कोई, वो तन छोहो चढावे हो।। ४।।
कह सुखराम सांच जन सोई, राम नांव लिव लावे हो।। ५।।

परमात्मा के गुणानुवाद गाते है, नाम की प्रेम से भक्ति करते है व नाम की ही महिमा व उपदेश करते है, यही संत नांव निशाण रूपाना है। शरीर को कितना ही कष्ट आ जावे, सुख संपती चली जावे, सारा संसार नाराज हो जावे, घर गांव व कुल को भी छुड़ा देवे। राजा भी देश निकाला दे देवे, फिर भी राम नांव की अखण्ड लिव लगाये रखते है। जिस समय उन्हें बहुत दुख देते है। उस समय भी शूरवीरता से भक्ति करते है। म:फ: है कि सच्चे जन वही है जो राम नाम की अखण्ड लिव लगाये रहते है।

卐 हरजस पद राग हिंडोल (११) 卐

भगत भेद नहीं जाणे अे तो, भगत भेद नहीं जाणे हो।
भगत भेद नहीं जाणे हो, अे मुरख निंदा ठाणे हो।। टेर।।
ओ जुग अचेतन मुरख होई, साहिब नांही पिछाण्या हो।। १।।
ज्ञान शब्द को अरथ न जांणे, हिये उपायर आंणे हो।। २।।
आप आपकी बुद्धि प्रवाणे, कीमत कसरा ठाणे हो।। ३।।
कह सुखराम नरकां का ग्रामी, जुग रस बिसियां मांणे हो।। ४।।

भगती के भेद को नहीं जानते है, इसलिये मूरख उसकी निंदा करते है। यह संसार अज्ञानी है और परमात्मा की प्राप्ति का ज्ञान नहीं जानता है, यही साहिब नहीं पिछाण्या है। ज्ञान व शब्द के अरथ को नहीं जानता है, मन में जो आता है वही कहते रहते है, यही हिये उपाय आणे है। दूसरो में कमी नहीं होने पर अपनी बुद्धि से आप दूसरो की कमी देखता है, यही कीमत कसरा ठाणे है। म:फ: है कि इस तरह की हीन बुद्धि से अर्थ करने वाले नरक में जायेंगे और जुगो जुगो तक विषय रस का सेवन करेंगे।

卐 हरजस पद राग धनाश्री (१) 卐

प्राणी क्यूं हर बिसरीयो रे, तूं देखनी ज्ञान विचार।
किणीयक सुकरत पावियो रे, ओ मानव तन अवतार।। टेर।।
जिण तोकूं पैदा कियो रे, नख चख शकल बनाय।
गरभवास में रक्षा किवी रे, रिजक पुंचायो है लाय।। १।।
शकल पसारो कांखो रे, काचो जुग बुहार।
तूं माया में रच रयो रे, क्या चलसी तोय लार।। २।।
आज काल दिन सात में रे, उठ चलेगो जोय।
चवदा तीनूं लोक में रे, तने राख सके नहीं कोय।। ३।।
मिनखा देह की खाखा रे, जहां तहां खपटे खाय।
कह सुखदेवजी पिस्तावसी रे, तूं समझ सुलझ हर गाय।। ७।।

हे मनुष्य परमात्मा को क्यों भूल रहा है, तूं ज्ञान से विचार कर समझ, कोई बडे भारी पुण्य से यह मनुष्य जन्म मिलता है, जिस परमात्मा ने तुझे पैदा किया है और नख चख सब बनाये है

और गर्भ में भी रक्षा करी और तुझे वहां भी खाने को दिया, यही रिजक पुंचायो लाय है। यह सारा कुटुम्ब कबीला और संसार का व्यवहार सब झूंठे है। तूं माया की प्राप्ति में ही रात दिन लग रहा है, तेरे साथ में क्या चलेगा। आज में कल में या सात दिनों में ही तुझे जाना पडेगा। इसको समझ ले, तीन लोक चवदा भवन में तुम्हें कोई नहीं रख सकता। मनुष्य जन्म की कमाई ही तेरे को सब जगह मिलेगी। म:फ: है कि तुझे बाद में पछताना पडेगा, इसलिये तूं समझकर सतगुरु विधि से भजन कर। यही समझ सुलझ हर गाना है।

卐 हरजस पद राग धनाश्री (२) 卐

ज्ञान सुणे सुण चेतज्यो रे, सिवरों नी दीन दयाल।
तीन लोक इत उत में रे, हरजी करे प्रतिपाल।। टेर।।
आज काल दिन पांच में रे, सबका चलणा होय।
भोदूं रोवे और कूं रे, अपणा सोच न कोय।। १।।
स्वारथ काजे सोच करे रे, मत शिर बांधो भार।
इण गेले सब जावसी रे, पाप पुण्य की लार।। २।।
कहा कहूं इस जीव ने रे, माने नहीं लिगार।
सोग रोग सुख दुख में रे, गयो जमारो हार।। ३।।
ज्ञान ध्यान हर भक्त की रे, केह जुग कूं जन आंण।
तोही मनवो ना गहे रे, आ सुकरत इमरत बांण।। ४।।
धाम चल्या क्या रोइये रे, जो घर अपणे कूं जाय।
कह सुखदेव जिण भेजिया रे, जां ही लियो है बुलाय।। ५।।

ज्ञान सुनकर परमात्मा का सिमरण करो, तीन लोक में सब जगह परमात्मा रक्षा करते है, आज में कल में पांच दिन में याने सातो दिन में सबको जाना है। मूरख दूसरो का सोच करता है। अपना सोच नहीं करता। अपने स्वारथ के लिये सोच करके कर्म बन्धन मत करो, इस रास्ते पाप पुण्य को साथ लेकर सबको जाना पडेगा। इस जीव को कैसे समझावूं, यह बिल्कूल नहीं मानता है। सोग करने में, रोग के दुख में, सब सुख दुख में ही मनुष्य जन्म व्यर्थ खो रहा है। जन याने संत ज्ञान की, ध्यान की, परमात्मा की, भक्ति का उपदेश करते है फिर भी यह मन राम राम करने के इन अमृतमय वचनों को धारण नहीं करता है। शरीर को छोडकर जो जीव जाता है उसके लिये क्यों पश्चाताप करते है जो अपने घर को जाता है। जिस परमात्मा ने भेजा था उसने ही बुला लिया है।

卐 हरजस पद राग धनाश्री (३) 卐

सुणज्यो नर सब आय के रे, दिया मैं हेला। जन्म अमलोक जाय है रे, तूं राम कब केला।। टेर।।
धिरग धिरग तांको जन्म है रे, जा घट भक्त न होय।
बिना शिवरण नर नार है रे, जाय जन्म कूं खोय।। १।।
गुरु सेवा बिन बंदगी रे, ओ नर जन्म अकाज।

क्या ज्ञानी क्या मूरखा रे, धरग शिवरण बिना राज।। २।।
सुख संपत धरकार है रे, जे वे जन पूजे जा नांय।
तो यूं ही नर खोय गयो रे, ज्यूं जल कूवा मांय।। ३।।
आत्म में परमात्मा रे, ताकूं खोजे नांय।
सो सो देह धरकार है रे, बंध्या जमपुर जाय।। ४।।
पूरण पद के भेद बिना रे, जे रता जुग के मांय।
सो सो सब धरकार है रे, मूल ठगाण आय।। ५।।
भक्त बिना सब जगत है रे, क्या सिद्ध पीर कुवाय।
धिरग धिरग सो सुखराम कह रे, हर बिन रता आय।। ६।।

सब ही मनुष्य सुणो मैं यह उपदेश करता हूं कि यह अमूल्य मनुष्य जन्म जा रहा है, तुम राम राम कब कहोगे। उस मनुष्य जन्म को धिक्कार है जिस शरीर से परमात्मा की भक्ति नहीं हुई, बिना भजन के सब स्त्री पुरूष मनुष्य जन्म को व्यर्थ खो रहे है। गुरू पद की भक्ति व सतगुरू का ज्ञान धारण नहीं किया तो मनुष्य जन्म को व्यर्थ खो रहे है। ज्ञानी हो या मूरख, भजन किये बिना सबको धिक्कार है। उस सुख संपति को धिक्कार है जो मनुष्य मात्र को राम रूप समझकर सुख नहीं पहुंचाते, यही पूजा करना है। मनुष्य जन्म व्यर्थ ही चला गया जैसे कुवे का जल होता है। किसी के काम नहीं आता है। आत्मा में ही परमात्मा है। उसकी प्राप्ति नहीं करते, उस शरीर को धिक्कार है। वे नरक में जाते है। परमपद की प्राप्ति के भेद के बिना संसार के कार्य में ही लगे रहते है। उन सबको धिक्कार है। वे व्यर्थ मनुष्य जन्म खो रहे है, यही मूल ठिगाना है। बिना भक्ति किये संसार में सिद्ध हो पीर हो सबको धिक्कार है। म:फ: है कि जो परमात्मा की भक्ति में नहीं लगते उन सबको धिक्कार है।

卐 हरजस पद राग धनाश्री (४) 卐

बेमुख सोई जाणिये रे, हर हुक्म मेटे कोय। भक्ति विसारी राम की रे, माया सूं मन गोय।। टेर।।
जायो जब नर हरकियो रे, किया मंगल जोग।
मुवा सूं रूना धाहा दे रे, कर बैठा नर सोग।। १।।
ब्याव भयो जब फूलियो रे, घर घर बनडा गवाय।
नार चली हर हुक्म सूं रे, रोवे अन्न न खाय।। २।।
माया आई तां दिन रे, आंणद अंग अपार।
पाछी साहेब मांगिया रे, रोवे घर घर बार।। ३।।
राज दियो हर गेब सूं रे, बोहो सुख मान्या आण।
एक दिना हर हार करी रे, तब छाडे तन प्रांण।। ४।।
कह सुखदेव सब सांभलो रे, नर नारी सब लोय।
सुख सोच सूं हरेक दुखी रे, हंसा मुक्त न होय।। ५।।

परमात्मा की भक्ति व भजन नहीं करते वे ही बेमुख है। परमात्मा को छोड कर माया में मन लगाया है। जन्म होता है तब मनुष्य बहोत खुश होता है, और मरने पर रोता है। बहुत दुखी होकर बैठा बैठा सोच करता है। ब्याव होने पर खुशी मनाता है। घर घर में गीत गाते है। पर परमात्मा के

हुक्म से शरीर छोडकर स्त्री चली जाती है तब उसके दुख में रोते है व अन्न नहीं खाते है। माया की प्राप्ति होने पर बहुत राजी होता है और वापिस चली जाने पर रोता व दुखी होता है। परमात्मा की कृपा से राज मिल जाता है तब बहुत सुख मानता है। एक दिन हार हो जाती है याने राज चला जाता है तब प्राण छोडने को तैयार हो जाता है। म:फ: है कि सब स्त्री पुरूष संसारी सुणो, सुख प्राप्ति के लिये सब प्राणी दुखी है। इस कारण भक्ति व ज्ञान भूल जाता है। इसलिये उसकी मुक्ति नहीं होती।

卐 हरजस पद राग धनाश्री (५) 卐

हरि को भेद नियारो रे, लखसी बिरला कोय।
और न दुजो जाणसी रे, कोई जाणे हरिजन होय।। टेर।।
ज्ञान कथे बांणी पढे रे, बांचे बेद कुराण।
वा सुण शोभा जगत की रे, पेट भरण गत जांण।। १।।
भेष बणावे फूटरा रे, नाना विध का होय।
घर तज हींडे जुग में रे, अे भी साध न होय।। २।।
सुरगुण सेवा बंदगी रे, रहयो ओऊं सूं लाग।
जब लग माया मांय है रे, गयो भरम नहीं भाग।। ३।।
कह सुखदेवजी सांभलो रे, उलट चढो आकाश।
तां दिन वो घर पायबो रे, राम मिलण की आस।। ४।।

परमात्मा की प्राप्ति का भेद अलग है। उसको बिरला ही जानते और दूसरे कोई नहीं जानते है। परमात्मा के निज नांव की भक्ति करने वाले संत ही जानते है। ज्ञान कहते है, बांणी पढते है, वेद कुराण बांचते है। उसकी शोभा संसार में ही होती है और यह पेट भरने का काम है। कई प्रकार के सुन्दर सांग बणाता है। गृहस्थी पणा छोडकर संसार में फिरते है वे भी साध नहीं है। बाणी के आधार से भक्ति करते है। वह सुरगुण सेवा बंदगी है, ओऊं का जपा अजपा स्वांस के आधार से करते है, यही ओऊं से लगना है। इन साधन में है तब तक माया की भक्ति है, उनके भरम नहीं मिटे है। म:फ: है कि सब ही सुणो, सतगुरु विधि से भजन कर सतशब्द की जागृति कर उसके साथ उलट कर ब्रह्मण्ड व पारब्रह्म से ऊपर सतशब्द का अनुभव करो, उस दिन के: पद आ: पद की प्राप्ति होगी व राम मिलणे की आशा भी पूरी हो जायेगी।

卐 हरजस पद राग धनाश्री (६) 卐

केईक पाप मन मानिया रे, केईक किया से होय।
केईक लागे उड रज ज्यूं रे, समझ रहो दिल जोय।। टेर।।
केईक मरजादा मानिया रे, केईक देही धर अजांण।
केईक लागे उड गेब सुं रे, फिरे है अगावु आंण।। १।।
केईक मुक्त तो ज्ञान की रे, केईक भजन कर होय।
एक मुक्त तो मन गेबकी रे, जाणे है बिरला कोय।। २।।

एक मुक्त तो मन की रे, एक देही की होय।
एक मुक्त हुवे जीव की रे, जन्म न धारे कोय।। ३।।
प्रव्रत मेरा मानिया रे, निरवरत आपे जाग।
कह सुखदेव सब छोड के रे, रहो नांव सूं लाग।। ४।।

कितने ही पाप मन के मानने से लगते है। कितने ही पाप करने से लगते है, कितने ही पाप बिना किये ही दूसरो पर झूंठा दोष लगाने पर लगते है। जैसे धूल लगती है वैसे पाप लग जाते है। इस बात को दिल में समझ लो। कितने ही पाप मन की मर्यादा मानने से लगते है। कितने ही देही धारण करने से लगते है, कितने ही पाप अनजान में लगते है। यही आगे भुगतने पडते है। यही गेबाऊ लगना है। कोई तो ज्ञान से मुक्ति मानते है और कोई वाणी का भजन कर मुक्ति मानते है। एक मुक्ति मन से सतगुरु का ज्ञान धारण करने पर सतशब्द प्रकट होता है, उस सतशब्द के साथ होती है। कही मन गेब की मुक्ति है। एक मुक्ति मन की होती है, एक मुक्ति शरीर को सुख मिलता है, यही देही की मुक्ति है। एक मुक्ति जीव की होती है जिसे आत्मा को परमात्मा पद की प्राप्ति हो जाती है। पुनः जन्म नहीं लेता। जो मेरे इन अणभै वचन का पालन करेगा उसका निव्रत होने का मार्ग प्रशस्त हो जायेगा। मःफः है कि इसलिये जगत के विचारो को छोडकर परमात्मा का नाम रटो।

卐 हरजस पद राग धनाश्री (७) 卐

ज्ञानी सब ही सांभलो रे। दिया मैं हेला आय, यांकी कल कीमत नहीं रे काय।। टेर।।
सूरा के शिर गुरु नहीं रे, नहीं सतियां के होय।
यांका तो सतगुरु सत ही है रे, दुजो गुरु नहीं कोय।। १।।
और शकल जहान में है रे, कयां करे सब काम।
यूं करणी कर राम ने, परसे नहीं निज धाम।। २।।
सूर फिरे बाजार में रे, सतियां घरां में होय।
मोसर विध बिन बाहेरो रे, याने सत नहीं प्रगटे कोय।। ३।।
सतगुरु राजा सूरवा रे, लेण मुलक चढ जाय।
सतगुरु जब प्रगटे रे, सूरा सिखा में आय।। ४।।
सूरातन जब प्रगटे रे, सिंधु दिरावे कोय।
यूं जन गढ चढ बोलसी रे, नांव उदे घट होय।। ५।।
पीव आज जब बिछुडे रे, जब सत आवे जांण।
आडा दिन जुग बोहो पडे रे, ज्यां मुख शरम न कांण।। ६।।
कह सुखदेव जब भूप ही रे, मुलक न लेवे कोय।
तो काहे कूं जूंजसी रे, मुवा बिन सतीयन होय।। ७।।

सब ही ज्ञानी सुणो मैं उपदेश करता हूं कि इनको कला की जानकारी नहीं हो सकती। शूरवीरो व सतियों के गुरु नहीं होते, उनके सत प्रगट होता है वही सतगुरु है और दूसरे कोई नहीं है। संसार में सब काम कहने से कर लेते है। ऐसे ही करणी करने से रामजी की व परमपद की प्राप्ति नहीं होती, शूरवीर बाजार में फिरते व सतियां घरो में बैठी रहती है, लेकिन समय आने पर ही दोनो में

सत प्रगट होता है। सतगुरु मौजूद हो तो शूरवीर याने सतगुरू के बताये माफिक भजन करने वाले शिष्यों में नाम की जागृति हो जाती है और राजा शूरवीर होता है तो दूसरे मुलक को लेने के लिये चढाई करता है। जब सिंधु राग गाते है तब ही शूरवीर में सुरापा प्रगट होता है, इसी प्रकार जिनसे सतशब्द की जागृति होती है वे ही के: पद याने गढ चढकर अणभै वचन बोलते है। पति के शरीर छोडने के समाचार मिलते ही सती में सत प्रगट हो जाता है। समय पर सत नहीं प्रगटता है तो बाद में प्रगट नहीं होता है, यही आडा दिन पडना है। म:फ: है कि राजा मुलक लेने की ही इच्छा नहीं रखता है तब वह लडाई क्यों करेगा। इसी प्रकार पति नहीं मरेगा तो सती क्यों होगी।

卐 हरजस पद राग धनाश्री (८) 卐

तिरखा कूं हर जल कियो रे, खुधा कूं अन्न देव। सी कूं अंबर आसरो रे, तिरणे कूं गुरु देव।। टेर।।
सस्तर किया मारणे रे, रिक्षा कूं बगतर ढाल।
ढोल बणयो धातु को रे, मंडणे कुं सुण खाल।। १।।
रोग बणायर सोचियो रे, औषध किवी लार।
भूलण भरम अज्ञान पे रे, ज्ञान कियो तत सार।। २।।
चोर बणाया बाहारू रे, सरण बणाई जोय।
वां शरणे वो आवियो रे, मार सके नहीं कोय।। ३।।
किया खाया बिन बायरो रे, काज सरे नहीं कोय।
ज्यूं सुखदेव हर न रटयां रे, परथ न मुक्ति होय।। ४।।

परमात्मा ने प्यास के लिये पानी बनाया, भूख के लिये अन्न बनाया, ठंड के लिये कपडा बनाया और उद्धार करने के लिये ज्ञान गुरुदेव है। मारने के लिये शस्त्र बनाये, और रक्षा करने के लिये बगतर ढाल है, ढोल धातू का बनाया है और उस पर मंडने के लिये खाल बनाई है, रोग बनाकर उनकी दवाई भी बनाई, भूल भरम और अज्ञान पर सत पद का ज्ञान बना दिया। चोर भी बनाये और उनकी खोज करने वाले खोजी याने बाहारू भी बनाये और शरण भी बनाई उनकी शरण में जाने पर रक्षा करते है। खाया व काम किये बिना शरीर का कार्य नहीं चलता है। ऐसे ही परमात्मा के भजन के बिना कभी भी मुक्ति नहीं होती।

卐 हरजस पद राग धनाश्री (९) 卐

राम कथे ओऊं मथे रे, जब पावे निज भेव। देवल मांही देवरो रे, वाहां निरंजण देव।। टेर।।
मन मारो माया छोडो रे, ममता राखो घेर।
कुबद जलावो कामना रे, सूरत सार दिस फेर।। १।।
में ते तज मद न्हाकिया रे, आपो दे सब राल।
चाय चिन्ता सब छोड के रे, ओ मन हर दिस बाल।। २।।
धेक निवारो डिंब कूं रे, पाखण्ड दिजे छाड।
भरम मिटावो भय तजो रे, डिग पिच काची काड।। ३।।
मान बडाई पर हरो रे, सोय रहो मत कोय।
निश दिन गोविन्द गाय रे, प्रांणी ज्यूं तू निरमल होय।। ४।।

अशुद्ध अशुभ सब छोडिये रे, शुभ दिस रहो लाग।
जन सुखदेव तज झूंठ को रे, सांचा सांई दिस जाग।।५।।

स्वांस उस्वांस में राम राम रटना ही राम कथे ओऊं मथे है, जब के: पद का ज्ञान मिलता है यही निज भेव पाना है, जब शरीर रूपी देवल में देवरा याने दशवें द्वार में निरंजन देव परमात्मा है, मन को वश में करके माया का मोह ममता को छोडो, कुबुद्धि व कामना से अलग होकर स्वांस उस्वांस में भजन कर शब्द में सूरत लगावो। तेरी मेरी को, अपना पना व चाहना और चिंता को छोडकर परमात्मा की भक्ति में लगो। द्वेष डिंब और पाखण्ड को छोडो, भरम मिटाकर भय को छोडकर भक्ति करने में डिग पिच करने को छोडो। मान बडाई का भी त्याग करो, इसमें ही मत रहो। रात दिन परमात्मा की भक्ति करने पर ही जन्म मरण से मुक्त होगा, यही निर्मल होना है। सब बुरे बुरे कर्मो को छोडकर अच्छे अच्छे कर्मो में लगे रहो। म:फ: है कि असत याने माया की भक्ति को छोडकर सत याने के: पद आ: पद की भक्ति में लगो, यही सांचा सांई दिस जाना है।

卐 हरजस पद राग धनाश्री (१०) 卐

मनवा लाणत तोय रे, कहां लग कहूं समझाय।
बिन समजयां नहीं दोष रे, तूं समजर भूलो जाय।। टेर।।
आठ पोहोर चरचा सुणे रे, तूं भजन करे नी आय।
और शकल विध पर हरी रे, आ मैं ते रीस न जाय।।१।।
औरां कू परमोद दे रे, सब झूंठो संसार।
ते सांचो कर मानियो रे, पखा पखी सिर धार।।२।।
ब्रह्म भ्यास्यो जन ओलख्या रे, आतम लीनो चीन।
जाणन में कम कुछ नहीं रे, ओ चित नहीं वो लवलीन।।३।।
ज्ञान ध्यान जाणे सब रे, तूं समझे सार असार।
सुखदेव तोई न तजे रे, ओ मन विषे विकार।।४।।

मन तुझे धिक्कार है, कहां तक कहूं, बिना समझे को कोई दोष नहीं है, लेकिन तूं समझकर भी भूल रहा है। आठो पोहोर सतसंग भी करता है तो भी भजन नहीं करता, भजन करने की बात तो छोड दी, पर मेरी तेरी क्रोध नहीं छोडा। दूसरो को ऊपदेश करता है संसार झूंठा है और तूं सच्चा समझकर अपने स्वार्थ के कार्यो में ही रात दिन लगा रहता है। ब्रह्म पद की प्राप्ति करने वाले संतो को जानता है। जिन्होंने आत्मा में ही परमात्मा को पाया है इस बात को तूं जानता है कि उनका ज्ञान कम नहीं है, फिर भी तूं उनका ज्ञान धारण नहीं करता, ज्ञान की ध्यान की सब बात जानता है, सत असत को समझता है, फिर भी हे मन तूं इन विषय विकारो को नही छोडता है।

卐 हरजस पद राग धनाश्री (११) 卐

जगत अचाई मीत करे, फेर फार नहीं कोय। राम जग के मांय है रे, जगत राम में होय।। टेर।।
माया हर तो एक है रे, न्यारा सुणयो नहीं कोय।
रूंख बीज के मांय है रे, बीज रूंख में होय।।१।।
जीमण अन्न तो एक है रे, नार पुरूष नहीं दोय।

जो जन जब ही समजिया रे, ज्याहां त्याहां हर ही होय।। २।।
कुवो धरणी मांय है रे, धरण कुवा में होय।
ज्यूं घडो जल एक है रे, केवत कहिये दोय।। ३।।
दोय कहूं तो एक है रे, एक कहूं तो दोय।
दोय केहूं ज्यां बोहोत है रे, गिणतन आवे कोय।। ४।।
पाप केहूं ज्यां पुन्न है रे, पुन्न केहूं ज्यां पाप।
बाप केहूं ज्यां पूत है रे, पूत केहूं ज्यां बाप।। ५।।
जोग केहूं ज्यां भोग है रे, भोग केहूं ज्यां ही जोग।
दुख केहूं ज्यां सुख है रे, निरमल केहूं ज्यां रोग।। ६।।
मौत केहूं ज्याहां जन्म है रे, जन्म जहां मर जाय।
अमी केहूं ज्यां विष है रे, विष ज्यांहां ईमरत थाय।। ७।।
ब्रह्म ज्ञानी नर एक है रे, बरते है प्रगटे दोय।
तीनूं चवदा लोक में रे, जोडे बिना नहीं कोय।। ८।।
दिसे सोई ब्रह्म रूप है रे, बोले सोई हर आप।
कह सुखदेव भरम छोड दे रे, सांच नकेवल जाप।। ९।।

संसार का प्रेम अचाई याने झूंठा है इसमें कोई फरक नहीं है। रामजी संसार में है व संसार रामजी में है। माया व ब्रह्म तो एक ही है, अलग अलग नहीं है। जैसे बीज में वृक्ष है और वृक्ष में बीज है, बना हुवा भोजन व अन्न एक है। स्त्री और पुरूष में चेतन एक ही है। शरीर अलग अलग है। इसलिये चेतन दो नहीं है। जिसको जिस समय ब्रह्म का ज्ञान हुवा उसको हर जगह एक ब्रह्म भ्यास्ता है। यही ज्याहां त्याहां हर ही होय है। कुवे में धरती है धरती में कुवा है, घडा और पानी एक है। कहने में दो है, क्योंकि घडा ही पानी का स्वरूप है। माया ब्रह्म दो कहूं तो वह एक याने ब्रह्म का स्वरूप है, ब्रह्म को एक कहता हूं तो माया और ब्रह्म दो है। दो कहता हूं तो उसके अनन्त स्वरूप है। जिनकी गिनती नहीं है। पाप है जहां पुण्य है, पुण्य है जहां पाप है। बाप के साथ बेटा है बेटे के साथ बाप है। जोग के साथ भोग है, भोग के साथ जोग है। दुख के साथ सुख है। निर्मल के साथ रोग है, मृत्यु के साथ जन्म है और जन्म के साथ मृत्यु है। अमृत के साथ विष है और विष के साथ अमृत है। ब्रह्म ज्ञानी मनुष्य को सर्वत्र ब्रह्म भासता है लेकिन देखने में दो आते है। माया व ब्रह्म अलग अलग अनुभव होते है। यही दोय प्रगटे बरतना है। तीन लोक चवदा भवन में बिना जोडे के कोई नहीं है। दिखते है सो सब माया व ब्रह्म का स्वरूप है। चेतन बोलता है वही ब्रह्म है। म:फ: है कि सब भरमो को छोडकर एक सत निकेवल परमात्मा का भजन है।

卐 हरजस पद राग धनाश्री (१२) 卐

जां दिन ते कृपा होई रे, नितर भूला जाय।
अंतर में आंख्या खुली रे, सतगुरु मिलिया आय।। टेर।।
शब्द सुणया तन थर हरया रे, रया राम लिव लाय।
ईमरत घूंटा रस पिया रे, ज्यूं मिश्री मुख मांय।। १।।

भूख प्यास तन में नहीं रे, यूं दरसे तन मांय।
सांसा दिसे आवता रे, कडवो मीठो खाय।। २।।
ज्यूं तन कांपे ठंड सुं रे, प्रगट छानो नाय।
जन सुखदेव कहे सांबलो रे, शब्द लग्यो ऊर मांय।। ३।।

जब तक सतगुरु सत अणभै ग्यान की कृपा नहीं हुई तब तक मैं भूल रहा था, अब उनकी कृपा से अन्तर में सूरत दृष्टि व दिव्य दृष्टि खुली और सतगुरु पद याने के: पद आ: पद की प्राप्ति हुई, शरीर में शब्द की जागृति होकर उसका अनुभव करना ही सतगुरु का शब्द सुनना है। शब्द का अनुभव होने पर शरीर थर्राता है। और रामजी की लिव लगती है। कंठो से साव अड अड कर निकलता है यही अमृत घूंटा रस पीना और मिश्री मुख मांय है। भजन के आनन्द में शरीर में भूख प्यास का भान नहीं रहता है। यही तन में नहीं दरशना है। सांस ऊसांस में भजन करने पर मन लगना व नहीं लगना ही कडवा मीठा खाना है। ठंड लगने पर शरीर कांपने लगता है। ऐसे ही शब्द की जागृति होने पर शरीर थर्राता है। म:फ: है कि अन्तर में शब्द की जागृति हो गई है।

卐 हरजस पद राग धनाश्री (१३) 卐

दोय बिध संत पिछाणो रे, मिथ्या कुछ न कम जाणो रे।
इसी ऊर अन्तर ल्यावो रे, पांचा मांही साहिब पावो रे।। टेर।।
गेबी प्रगट पांच है रे, अे बी अेभी जांण।
गेबी अे भी बीच में रे, निज सत पकडो आंण।। १।।
ब्रह्म ब्रह्म सूं सुख लहो रे, तत तत सूं जोय।
पांचू हर के मांय है रे, पांचा में हर होय।। २।।
पांचा सुं सुख ऊपजे रे, पांचा सुई दुख होय।
छटा ज्यां सुखराम कह रे, सुख दुख एक न होय।। ३।।

संतो से फ: है कि परमात्मा को दो तरह से अनुभव करो, इस बात को असत मत समझो, ऐसे हृदय में भाव धारण करो कि पांच तत्वो के शरीर में ही परमात्मा की प्राप्ति होती है। गेबी प्रकट पांच याने पांच तत्व है तथा अेबी याने चेतन को भी जाणो, पांच तत्व व चेतन के बीच में जो शब्द ब्रह्म का अनुभव होता है उसको पिछाणो। पांच तत्वो से अलग होकर निरंजन निराकार पद में सतशब्द का अनुभव करना ही ब्रह्म से ब्रह्म का सुख लेना है पांच तत्वो के शरीर से पांच तत्वो की सृष्टि का सुख लेना ही तत सुं तत का सुख लेना है। पांच तत्वो के ब्रह्म में ही पांच तत्व है। पांच तत्वो के शरीर में ही सुख दुख का अनुभव होता है। म:फ: है कि छटा याने पांच तत्वो से अलग ब्रह्म के पद में सुख, दुख नहीं है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (१) 卐

ऐसा है कोई ऐसा है, ओ भरम दुबध्या मेटे रे।
जैसे राम तिसी विध सागे, तन मत खोजर भेंटे रे लो।। टेर।।
कोई कहे शिर धणी न कोई, करमा वश जग डोले रे।
कोई कहे हर या मांही करता, निश दिन बोले रे लो।। १।।

कोई कहे तीर्थंकर सांचा, कोई कहे पीरा जाता रे।
कोई कहे रामकृष्ण को करता, इस विध झगडा माता रे लो।। २।।
केई कहे ररो ममो सांचा, केईक ओऊं सोऊं रे।
केईक नांव अरध कहे न्यांरो, इस विध झगडा होई रे लो।। ३।।
केईक अवगत निरंजन गावे, केईक कहे सब अेकी रे।
केईक कहे भरम सब सारो, कौन देखकर पेखी रे लो।। ४।।
रमता राम भजन लिव सांची, और केवतां सारी रे।
कह सुखराम जक्त कुल बंधियो रे, अेसे धरम बिचारी रे लो।। ५।।

कोई ऐसा जन है जो अपनी भरम दुबध्या मेटकर तन मन से खोजकर के रामजी की प्राप्ति करता है। कोई कहते है कि सृष्टि का धणी कोई नहीं है, सब करमो के वश में डोल रहे है, आत्म ज्ञानी कहते है कि इस शरीर में ही परमात्मा है, वही रात दिन बोल रहा है, जैन मत वाले तीर्थंकरों को सच्चा बताते है, मुसलमान पीरों को श्रेष्ठ बताते है, कोई रामकृष्ण को करता याने परमात्मा बताते है, ऐसे अलग अलग मत है। वाणी के आधार से राम राम करने वाले राम राम को श्रेष्ठ बताते है। वेदान्ती ओऊं सोऊं को श्रेष्ठ बताते है, कितने ही संत आधे नांव याने ररंकार की महिमा करते है, इस प्रकार से अलग अलग विचार है। निर्गुन निराकार को मानने वाले वाणी के आधार से अवगत निरंजन पद की महिमा करते है, कई कहते है सब एक है। नास्तिक व कुंडा पंथी मतवाले कहते है कि यह भरम है कौन देखकर आया है, रमता राम जो सबमें रम रहा है। वो परमात्मा सत है और लिव बंध भजन सच्चा है और सारी केबत झूंठी है। म:फ: है कि सारा जगत कुल याने माया ब्रह्म के ज्ञान में लग रहा है। यही ज्ञान धारण करते है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (२) 卐

मत भूलो मत भूलो लो, सब घट एक विचारी रे।
चारूं बरण नख चख अेकी, धरम काय व्हे न्यारो रे लो।। टेर।।
ज्यां सूं पांच सबे तन होई, सो धरम सबको भाया रे।
रमता राम बिना कहे न्यारो, सो मत भरमना मांय रे लो।। १।।
त्रीसा भूक लगे वा अेकी, हिन्दू तुरक कूं प्यारो रे।
जामण मरण रोग गत नाके, काय धरम न्यारो रे लो।। २।।
पांच भोग शकल का अेकी, न्यारा सुणा न कोई रे।
देखो भूल मुक्त कहे न्यारी, सुणो शकल सब लोई रे लो।। ३।।
शिव धरम जैन तुरक कहे न्यारो, और अनेका होई रे।
कह सुखराम सबे नर भूला, श्वांस भजन बिन सोई रे लो।। ४।।

सबके घट में एक परमात्मा व्यापक है उसको मत भूलो। चार वरणो में ब्राह्मण क्षत्रिय शुद्र वैश्य सबके शरीर एक से है। तो उनका धरम अलग कैसे हुवा। परमात्मा से पांच तत्व उत्पन्न होकर उससे सबके शरीर बने, उस परमात्मा की प्राप्ति करना ही सबका धर्म है। रमता राम सर्वत्र सर्वव्यापक है। उसकी प्राप्ति के अलावा कोई ज्ञान बताता है वह भरम में बैठा है। हिन्दू व

मूसलमान को सबको एक सरीसी भूख प्यास लगती है, जन्मना मरना बीमारी आना सबके एक सरीसा है तो सबका धरम अलग कैसे हुवा। पांचो ईन्द्रियो के भोग हिन्दू मूसलमान सब एक तरह से भोगते है। याने देखना, सुनना, सूंघना, खाना व स्पर्श ईन्द्री का सुख लेना, सबके एक तरह से है, अलग अलग नहीं है। लेकिन सबकी भूल देखो। अपनी मुक्ति अलग अलग बताते है। शिव धरम, जैन धर्म व मुसलमान सब अपने धर्म अलग बताते है। ऐसे अनेक सम्प्रदाय है। म:फ: है कि सब ही मनुष्य भूल रहे है जो एक स्वांस भी भजन के बिना खोते है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (३) 卐

हर खांवद है लो हर खांवद है लो, आत्म को परमात्म रे।
तासुं शिष्ट शकल विस्तारा, सो हर सदा सनातन रे लो।। टेर।।
भूलो जैन भरम के मांही, से साहिब नहीं बूजे रे।
प्रगट पिंड बण्यो पांचा को, से न्यारा नहीं सुजे रे लो।। १।।
पाणी पवन धरण आकाशा, तेज सेत सब बारे रे।
छे सुण काया जीव जत यांरा, अेइ शीष नहीं धारी रे लो।। २।।
पुतलियां घड पैदाज किनी, कल सब रीत बनाई रे।
घडने हारा कल जब फेरी, तब नाचत है भाई रे लो।। ३।।
बासण बोहत अनेका किया, नाना विध का सारा रे।
घडणे हारा परोटे भांजे, तिन में फेर न फारा रे लो।। ४।।
मानव राछ घडावे घड दे, सो खांविद सुण होई रे।
कह सुखराम यूं आत्म ऊपर, परमात्म को जोई रे लो।। ५।।

आत्मा का पति ने अंच्छर परमात्मा है। पार ब्रह्म परमात्मा से ही सारी सृष्टि की रचना हुई है वो परमात्मा सदा ही सत्य है याने सनातन है। जैन मत वाले भरम में भूल रहे है जो उस परमात्मा को नहीं जानते। पानी, वायु, धरती, आकाश, तेज इन पांच तत्वो से परमात्मा का पद अलग है। और पांच तत्वो व छठे चेतन से सबके शरीर भी बने है लेकिन फिर भी ये परमात्मा का ज्ञान धारण नहीं करते। पांच तत्वो के शरीर में अलग अलग इन्द्रियो के सब स्थान बनाना ही सब कल रीत बनाना है। परमात्मा ने चेतन रूपी कला लगा दी उससे यह सब कार्य होते है। यही नाचना है। परमात्मा ने चौरासी लाख योनियों के घट बनाये। वही बनाकर उसको वापिस भांजता है। इसमें कोई फरक नहीं है। मानव शरीर रूपी राछ बना देवे। वह परमात्मा सब का पिता है। म:फ: है कि इस तरह आत्मा के ऊपर पार ब्रह्म परमात्मा का पद है। उस पिता का नाम जो अक्षर ब्रह्म राम है उसको सांस उसांस में रटणा करके ने: अंच्छर निज नाम रूपी पति का अनुभव करना है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (४) 卐

ज्ञानी ज्ञान विचारूं देखो, करता जहां दुख होई लो।। टेर।।
उठत माया बेसत माया, माया अंछया होई लो।
माया मुख सुं हरफ रटे सो, सत शब्द नहीं कोई लो।। १।।

कही अे लखे लखावे माया, माया तन मन काया लो।
कला प्रगटे चेहेन माया, थिर अस्थिर है सो माया लो।। २।।
माया है रे या तो माया, सुण ज्ञानी कहूं तोई लो।
कला आंण कर कारज सारे, सो थिर कहो किम होई लो।। ३।।
कह सुखराम सदा थिर साहिब, करे करावे नांही लो।
समज्या बिना कहे माया कूं, साहिब जग के मांही लो।। ४।।

ज्ञानियो से म:फ: है कि ज्ञान से विचार कर देखो, करता का पद है वहां तक भी जन्म मरण का दुख है। स्वांस उठता है, बैठता है, और इच्छा है और मुंह से शब्द रटा जाता है, वह सब माया के पद में है, सतशब्द नहीं है। कहने में आती लखने व लखाने में आती है। तन मन और काया सब माया है। कोई भी कला प्रगटती है, कोई चेन होते है, ये सब माया है। आत्मा सत है, माया असत है, आत्मा सत होते हुये भी माया के साथ है इसलिये माया के पद में है। कला आकर जो कार्य साधती है वो थिर कैसे हो सकती है। सब ही ज्ञानी सुणो वो पद माया में है। म:फ: है कि परमात्मा सदा ही सत है, वो सबका आधार है। करता कराता कुछ नहीं है। बिना समझ के आकारी तो उपजते खपते रहे आयु अवधि वाले है, वो सब माया ही है इसको ही परमात्मा बताते है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (५) 卐

समझ समज प्राणियां जो मोख चहिये, ऐसी भक्त गेह रहिये बे।
सतगुरु धार शीष पर, राम राम मुख लहिये बे।। टेर।।
जेसो प्रेम जगत सूं तेरो, अेसो साहिब सूं लागे बे।
तो सुण तिरता बार न लागे, नांव तुरत घट जागे बे।। १।।
जन कूं काडर कन्या देवे, भेला जीमें आई बे।
अेसा हेत गुरां सूं लागे, तिरता बार न कोई बे।। २।।
जुग केवत को बोह डर राखे, अेसो जना सूं धूजे बे।
तो घट ज्ञान प्रकाशे आंणर, तीन लोक परे सूजे बे।। ३।।
जुग सूं अन्तर नहीं कुछ तेरे, सब प्रगट वे जाणे बे।
ऐसो उजागर गुरु दिश हुवो, साहिब तब ही पिछाण्या बे।। ४।।
जुग के मांही जुगे जुग परले, सबे गरभ में आया बे।
जन सुं हेत कियो नर जुग में, से सब मोख सिधाया बे।। ५।।
कह सुखराम समझ मन मांही, यारे संग न होई बे।
भक्त जक्त का दोय मारग, भेला चले नहीं कोई बे।। ६।।

प्राणी मात्र से फ: है कि अगर तुमको मोक्ष चाहिये तो समझ समझ कर ऐसी भक्ति धारण करो। सतगुरु केवली भगवंतो की अणभै वाणी से भेद लेकर सतगुरु विधि से राम राम का भजन करो। जिस तरह संसार में प्रेम करता है उसी प्रकार परमात्मा की प्राप्ति के लिये प्रेम से भक्ति में लग जावो तो घट में निज नांव की जागृति होकर उद्धार होने में देर नहीं लगती। जिनको कन्या देते है उनके साथ शामिल जीमते है और प्रेम करते है, ऐसा प्रेम ग्यान गुरु देव से करे तो उद्धार होते

देर नहीं लगती है। जिस तरह संसार के केवत का डर है ऐसा परमात्मा के याने केवली भगवंत के ग्यान से डरते रहो तो उद्धार होते देर नही लगती। जिस तरह संसार की केवत का डर रखा है ऐसा डर परमात्मा के जनो से रखे तो घट में ज्ञान का ऐसा प्रकाश होता है कि तीन लोक से परे चौथे पद का के: पद का अनुभव हो जावे। जगत के कार्य में घुल मिलकर रहता, जरा सा भी अन्तराय नहीं रखता है। सब इस बात को जानते है। ऐसे ही ग्यान गुरु देव से प्रेम करे तो परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है। जिसने संसार से प्रेम किया वे जुग जुग में जन्मने मरने में आये और बार बार गरभ में आता है तथा जिसने परमात्मा के जनो याने केवली भगवंतो से प्रेम किया, उनको मोक्ष की प्राप्ति हुई है। म:फ: है कि मन तूं समझ कर संसार का साथ मत कर, भक्ति व संसार का रास्ता दोनो ही अलग अलग है, साथ नहीं चल सकते।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (६) 卐

देखो रे देखो साधो मत जक्त की, हर कूं जाणे भोला बे।
ललफल करके रिजायर लेवे, अेसा है ज्ञानी गेला बे।। टेर।।
जुग मरजाद न चुके तिल भर, तन मन जाता कोई बे।
भगत मांय कसर दस गाडा, रज भर बोज न होई बे।। १।।
कुल को नांव कडायो चावे, ज्यूं त्यूं कर नर सोई बे।
भगत पदी कूं जुग जुग गावे, तांकी चाय न कोई बे।। २।।
च्यार पांच घर केहे जो भुंडो, और शकल जुग पूजे बे।
दस आत्म की केवत तांई, परम पद नहीं सूजे बे।। ३।।
कह सुखराम धरग ऊण नर कूं, सतगुरु को डर नांही बे।
जिण प्रताप मिले आनंद सुं, सतस्वरूप के मांही बे।। ४।।

साधको से फ: है कि संसार की बुद्धि देखो, परमात्मा को भोला समझते है, ललफल करके परमात्मा को राजी करना चाहते है इस तरह के ज्ञानी गेले है। तन मन को कितना ही कष्ट हो जावे लेकिन संसार की मर्यादा एक भी नहीं छोडता है, भक्ति करने में कोई कष्ट नहीं होता फिर भी जरा सी भी नहीं करना चाहता। चाहे जैसे करके कुल में यश कराना चाहता है और भगतो की जुग जुग में महिमा होती है लेकिन उसकी इच्छा नहीं करता, भक्ति करने के लिये चार पांच कुटुम्बी घरवाले उनको बुरा कहते है और सब संसार वाले उसकी महिमा करते है। पांच दस व्यक्तियो के कहने के डर से उस परमपद की प्राप्ति नहीं करना चाहता। म:फ: है कि सतगुरु याने केवली भगवंतो के अणभै ग्यान के प्रताप से सतस्वरूप आ: पद की प्राप्ति होती है उसको नहीं करते है, इसलिये ऐसे मनुष्यो को धिक्कार है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (७) 卐

आज तो तेरा कछु नहीं जावे, तूं मगन मतवाला कवावे रे लो।। टेर।।
खेती बिणज तूं त्यागर बैठो, रामत जीव खेलावे रे।
जां दिन काल पडेगा शिरपे, वां दिन खबरां पावे रे लो।। १।।

राम रतन धन त्याग्या जावे, कोडी हर्षर ल्यावे रे।
अंत पडे कोई लाय लायणा, तां दिन निरधन कवावे रे लो।। २।।
चोखा त्यागे खोटा लेवे, चोरा के संग जावे रे।
जां दिन डाव पडेगा जम सूं, तां दिन खबरयां पावे रे लो।। ३।।
सरवर का जल त्याग्या जावे, मृग नीर कूं ध्यावे रे।
जां दिन तन में प्यास लगेगी, वां दिन खबरां पावे रे लो।। ४।।
ईमरत छाडे विष बिसावे, भोजन त्याग नर जावे रे।
तां दिन भूक लगे नर तोकूं , वां दिन खबरां पावे रे लो।। ५।।
चूना बंद घर त्यागर देवे, झूंपे मांय बिराजे रे।
तां दिन लाय लगे ऊपराडे, तां दिन करडी बाजे रे लो।। ६।।
नगर का पंथ छाडज दिया, गोऊ नाला उठ धाया रे।
ऐसो जाय बिलावे बन में, वहां बहुत दुख पावे रे लो।। ७।।
भक्त बिना सुण सब दुख पासी, अे दिष्टांग बताया रे।
कह सुखराम सुणो सब कोई, राम मा भूलो भाया रे लो।। ८।।

आज तो तूं कोई विचार नहीं करता मगन मतवाला हो रहा है। खेती व व्यापार छोड खेलने कूदने में दिन बीता रहा है, जब काल पडेगा उस दिन भूखो मरना पडेगा। राम रतन धन याने रामजी की भक्ति नहीं करता, कर्म बन्धन करने में ही लगा रहता है। यही कोडी हर्षर लाना है। जैसे ब्याव शादी में मोसर में धन के अभाव में दुख पाता है व निर्धन कहलाता है। ऐसे ही कर्मबन्धन करने से नरको व चौरासी का दुख भोगता है, यही निरधन कहलाना है। शुभ करमों को छोडकर अशुभ करमों में लगना ही चोरो के साथ जाना है। अशुभ करमों को भोगने के लिये नरको में दुख पाना ही जम का डाव पडना है। यह उस दिन तेरे को खबर पडेगी, तालाब के पानी को छोडकर मृगतृष्णा के पानी को जहां पानी नहीं होते हुये भी पानी दिखता है उसके लिये दौडता है, लेकिन जब शरीर को प्यास लगेगी तब मालूम पडेगी। ईमरत को छोडकर जहर लाता है और भोजन को छोडकर जाता है, जिस दिन भूख लगेगी उस दिन दुख पाना पडेगा। चूने से बने पक्के मकान को छोडकर फूस की झोपडी में रहने लगता है, जब लाय लगेगी उस दिन तुझको भारी दुख उठाना पडेगा। गांव का रास्ता छोडकर जंगल के रास्ते चलता है, इस तरह वन में जाकर भटक जाता है, तब बहोत दुख पाना पडता है। भक्ति के बिना सबको ऊपर के उदाहरणों के माफिक दुख पाना पडेगा। म:फ: है कि सब सुणो रामजी की भक्ति को मत भूलो।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (८) 卐

सरब दुखि लो सरब दुखि लो, तन धर सुखीयन कोई रे।
सुर सब देव मिनख सो पंछी, सब में दुबध्या होई रे लो।। टेर।।
देवलोक में ओ दुख व्यापे, अेक अेक शिर होई रे।
निश दिन नाटक करे शिर ऊपर, देव देव शिर जाई रे लो।। १।।
मरत लोक में यो दुख भारी, मरता बार न लागे रे।

ईन्द्री सुख व्हे नांही पूरण, चाय बहुत घट जागे रे लो।। २।।
शेष लोक में यो दुख व्यापे, भक्त बिना नर काया रे।
वांको बोज पडे शिर वांके, नाग दुखी यों भाया रे लो।। ३।।
धरणी जम पवन जल दुखिया, काल मरण भो मांही रे।
श्रोता वक्ता पिंडत ज्ञानी, करणी को दुख यहां है रे लो।। ४।।
शिव धरम दुखिया कुराणस दुखिया, जैन धरम दुख भारी रे।
आठूं पोहोर पचे दुख मांही, पांच आत्मा मारी रे लो।। ५।।
शिवरण सांच भजन सूं लागा, मन के बेग सब खोया रे।
कह सुखराम रचक सुख वां है, ब्रह्म ज्ञान घट आया रे लो।। ६।।

म:फ: है कि शरीर धारी कोई सुखी नहीं है सब दुखी है, देवता मनुष्य पशु पक्षी सब में द्वेत भाव है, देवताओ के लोक में एक के ऊपर एक देवता है, इसलिये नाटक याने एक के ऊपर एक होने पर दुख मानता है यह देवलोक में दुख है। मृत्यु लोक में मरते देर नहीं लगती व इन्द्रियो के भोग भोगने की कामना पूरी नहीं होती, निरन्तर बढती रहती है यही दुख है। भक्ति नहीं करने वाले मनुष्यो का भार पृथ्वी पर है इसलिये उसके भार से नाग देव दुखी है, यह दुख शेष लोक में है। धरती जम वायु जल सबको काल याने मरने का डर है। श्रोता वक्ता पिंडत व ज्ञानियों को करणी का कष्ट होता है। शिवधर्मी कुराण धर्मी दुखी है और जैन धर्मियो को भारी दुख है कारण कि पांच तत्वो के साथ आत्मचेतन को रात दिन कष्ट देते रहते है यही पांच आत्मा मारना है। सतगुरु विधि से भजन करने से मन की विषय रस की वासना ढीली पड जाती है तब आत्मा को परमात्मा का भरपूर सुख आता है याने ब्रह्मग्यान की समझ घट में आने से सत शब्द का अनुभव होता रहता है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (९) 卐

समज समज हंसा सन्मुख रेणा, ज्ञान सुणो सत तोलो बे।
जे कुछ और बणे नहीं तुम सूं, तो वचन तो सुल्यां बोलो बे।। टेर।।
जुग की भीड वचन थे बोलो, सतगुरु पक्ष नहीं लावो बे।
ज्यांरी जो भक्त पडेली पाछी, धका गेबका खावो बे।। १।।
न्याव कुन्याव देखो मत कोई, ना कोई दिष्टंग लावो बे।
सतपुरूषा री तो मेहमाई किजे, करणी रो तोल न पावो बे।। २।।
सतपुरूषा री मेहेर गेब की, केर गेब होय जावे बे।
करम हुणारत दोनो धूजे, काल निकट नहीं आवे बे।। ३।।
सतपुरूषा री तो आश अनादूं, ब्रह्मा विष्णु शिव चावे बे।
जो अवतार देही धर आया, वे ही शीश निवावे बे।। ४।।
तीन लोक की कल सब जांणे, ब्रह्मा विष्णु लग सोई बे।
कह सुखराम परम पद प्रगटे, सब सुं न्यारा होई बे।। ५।।

हंसो से फ: है कि समझ समझ कर परमात्मा की प्राप्ति का ज्ञान धारण करो, यही सन्मुख रहना है। ज्ञान सुनकर सत स्वरूप की भक्ति करना ही सत तोलना है। अगर और कुछ नहीं बनता

तो कम से कम वचन तो मीठे बोलो। संसार के पक्ष वचन रात दिन बोलते है और सतगुरु के ज्ञान का पक्ष नहीं करते है तो ब्रह्म भक्ति करते हुये भी रटणा बंद होकर सतशब्द का आनन्द नहीं आना ही पाछी पडना है। संसार शुभ अशुभ करणियों व करमों से मोक्ष मानता है लेकिन केवली भगवंत कहते है कि करणी करमों से मोक्ष नहीं होती है। इसके लिये कोई दिष्टांग मत देवो, केवली संतो की व उनके ज्ञान की महिमा करनी चाहिये। उन्होंने जो कई वर्षो तक भक्ति की उनकी बराबरी मत करो। सतपुरूषो की मेहर से सतशब्द गेबाऊ प्रगट होता है जिससे उनके सब दुख नष्ट हो जाते है। करम और होणहार दोनो डरते है और जन्म मरण से छुटकारा हो जाता है। सतगुरु व उनका ज्ञान अनादि से है। ब्रह्मा विष्णु महादेव भी उसको चाहते है। जो अवतार शरीर धारण करके आये वो भी केवली भगवंतो व उनके अणभै ग्यान को शिर नवाते है। म:फ: है कि तीन लोक में, ब्रह्मा, विष्णु, शिव का ग्यान तो सब ही जगत जानते है। जब परम पद का केवल ग्यान प्रकट होता है तो तीन लोक को छोड चौथे पद में आत्मा को ले जाता है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (१०) 卐

जग कछु लेत देत कुछ नांही, एक केवत के काजा बे।
सतगुरु वचन ऊथापे मूरख, जुग कुल की गहे लाजा बे।। टेर।।
कुल मरजाद लाज इण हंस कूं, जुग जुग नरक पठावे बे।
सो मरजाद एक नहीं लोपे, गुरु धरम बणे तो ऊठावे बे।। १ ।।
तज सब जहान भजन कर सूरा, सत साहेब रिजावो बे।
जुग जुग जगत करे संत सोभा, आनन्द पद पावो बे।। २ ।।
धरग धरग रे तांकू कह सुखदेवजी, कुल सूं डरे नर नारी बे।
भगत पदारथ गुरु धरम लोपे, सो दौजख ईधकारी बे।। ३ ।।

संसार न लेता है और न देता है केवल संसार की केवत के वास्ते सतगुरु का अणभै ज्ञान धारण नहीं करता है, और संतो के अणभै ग्यान के वचनो को उथापता रहता है। कुल की मरजादा से हंस को जुग जुग में नरको में जाना पडता है फिर भी उसकी मर्यादा को भंग नहीं करता है और गुरु पद का ज्ञान मिलने पर भी धारण नहीं करता, यही गुरुधर्म उठाना है। संसार का मोह छोडकर शूरवीरता से भजन करके सतस्वरूप आ: पद की प्राप्ति करो, यही सत साहिब को रिजाना है। जुगान जुग में संसार व संत भी उस पद की महिमा करते है। उस आ: पद की प्राप्ति करो। म:फ: है कि उन मनुष्यो को नरको का दुख भोगना पडता है जो कुटुम्ब के डर से भक्ति नहीं करके गुरु धरम लोपते है, उनको धिक्कार है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (११) 卐

जंतर मंतर अेक न जाणूं, झाडा ने झपाडा को मेरे बे।
ना मैं बेदज दर्द नहीं जाणूं, साहिब शरणे मैं तेरे बे।। टेर।।
अरज सुणो अर सनमुख, दुख ताव सब खोवो बे।
बिडद तुमारो प्रभु म्हें ऐसो सुणियो, नारी को नर होवे बे।। १ ।।

गज का प्रभु फंद तुम काटिया, छिन में बाहिर लिया बे।
सुणज्यो साहिब समरथ मेरा, बिडद प्रगट ओ किया बे।। २।।
दुखिया का प्रभु सब दुख काटो, इमरत बाणी ले भाको बे।
के तो दास के पास न मेलो, के बिडद तुमारो राखो बे।। ३।।
दास तो प्रभु तुझ पुकारे, आन और नहीं माने बे।
जिण जिण बिध प्रभु आद गुंसाई, हरजन कछु नहीं जाणे बे।। ४।।
जुग जुग जन की थे सहायज कीनी, भीड पडी त्यां आया बे।
शिवरया जुग जुग आप पधारे, बिडद वाकां तुझ गाया बे।। ५।।
कह सुखराम सुण हर मेरी, मो सामो दिल दिजे बे।
कामी क्रोधी तोई हूं तेरा, सहाय बिडद सुण किज्यो बे।। ६।।

मैं न जंतर मंतर झपाडा जानता हूं, न मैं वैद्य हूं, न दर्द भी जानता हूं, हे परमात्मा आपकी शरण में हूं। आप मेरी प्रार्थना सुनकर कृपा करके मेरे कष्ट व सब तकलीफों को मिटावो। आपका बिडद मैंने ऐसा सुना है कि स्त्री का भी पुरूष हो जाता है। हाथी का कष्ट आपने मिटाकर क्षण में सरोवर से बाहर निकाल लिया है। हे परमात्मा इस तरह आपने आपका बिडद प्रकट किया है। दुखी का प्रभु दुख काटो और कृपा कर आपकी शरण में राखो। इस दास को या तो दुख मत दो और दुख दिया है तो आपका बिडद राखो याने दुख मिटावो। हे परमात्मा दास तो आपकी ही भक्ति करता है और आन याने शरीर की भक्ति नहीं करता। आप कृपा करके जैसे तैसे प्रार्थना सुणो, मैं तो कुछ नहीं जानता हूं। जुगान जुग में भक्तो की आपने सहायता की। जब भी भक्तो में कष्ट हुवा, आप पधारे। जुगान जुग में आपका भजन किया और आपने उनकी रक्षा की, वो ही आपके बिडद की महिमा कर रहे है। म:फ: है कि आप मेरे पर कृपा करके मेरी प्रार्थना सुणो, मैं कामी क्रोधी जैसा हूं आपका हूं। आपके बिडद को देखकर मेरी सहायता करो।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (१२) 卐

उण समरथ की मैं बलिहारी, जिण या मांड पसारी रे लो।। टेर।।
केवल बिना सब माया होई, ब्रह्मा बिसन सब कवावे रे।
सब औतार सगत सो शिवजी, परमपद कूं गावे रे लो।। १।।
कोटा ब्रह्मा कोटा शिवजी, कोटा विष्णु ध्यावे रे।
रूम रूम में कोटा ब्रह्मण्ड, तांका वार पार नहीं आवे रे लो।। २।।
छिन में मांड पलक में कीनी, बोहो बिध रूप पसारा रे।
जा दिन सोखत करसी बाबो, रहे नहीं कछु लारा रे लो।। ३।।
कह सुखराम सुणो संत सारा, ने: चल अवगत देवा रे।
और शकल साहिब की माया, केवल तत्त की सेवा रे लो।। ४।।

उस समरथ परमात्मा की बलिहारी जाता हूं जिसने संसार की रचना की है। के: पद के बिना सब माया है, ब्रह्मा विष्णु महादेव शक्ति सब अवतार उस परम पद की महिमा करते है। उस परमात्मा की करोडो ब्रह्मा, करोडो शिवजी, करोडो विष्णु भक्ति करते है, उनके रोम रोम में करोडो

ब्रह्माण्ड है। उसका कोई वार पार नहीं आता है। क्षण भर में सृष्टि की रचना करता है। अनेक तरह व अनेक प्रकार के रूप बना देता है। जिस दिन मिटाना चाहेगा उस दिन कुछ नहीं रहेगा। म:फ: है कि सब संता सुणो, परमात्मा सत है और सब साहिब की माया है। के: पद की प्राप्ति का ज्ञान ही केवल तत्त की सेवा है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (१३) 卐

या जग में तो रे बंदा वे बडभागी, सतगुरु जका ही पिछाण्या बे।
केश बराबर अन्तर नांही, ज्यां निजमन कर जाण्या बे।। टेर।।
मेहेरी सेहेत तन मन धन कूं, ले गुरु चरणा आया बे।
वचन कहे सो सब सत माने, ज्यां गुरु धर्म पिछाण्या बे।। १।।
गंगा जमुना उलटी बेहे चाले, भांण पिछम कूं ऊगो बे।
तो पण मन चिले नहीं मासो, तब घट परचो पुगे बे।। २।।
अक बक प्रेम नेम सब छूटा, जग मरजाद न कांई बे।
गुरु कहे तो बेच्यो बिकणे लागे, तब शिष सांचे भाई बे।। ३।।
सतस्वरूप आनन्द पद कहिये, सोने ही माने कोई बे।
अेसो नेह गुरां सुं घुलियो, निमख न न्यारो होई बे।। ४।।
आया ऊठ खडो हुवे आगे, ऊठया के संग ऊठे बे।
छाडर नेम प्रेम ऊर उपजे, जब सब गांठया फूटे बे।। ५।।
जब गुरु देव सूज्या है साहेब, तब ऐसो अंग आवे बे।
सुण सुण ज्ञान नेम अे पकडे, से सब ढरडा कवावे बे।। ६।।
कह सुखराम नेम तो सारा, जग मरजादा होई बे।
यां सुं तो सत साहिब नहीं रीजे, बोहत जन्म लग कोई बे।। ७।।

संसार में वही भाग्यशाली है जिन्होंने सतगुरु याने केवली भगवंतो के अणभै ग्यान की शरण में जाकर सतगुरु पद का ज्ञान धारण किया है यही पिछाणना है। सतगुरु का ज्ञान निज मन से उनके बताये माफिक धारण करना ही केश बराबर अंतर नहीं रखना है। आत्मा रूपी स्त्री के साथ तन, मन, धन से ज्ञान गुरुदेव की शरण ली है और उनके बताये माफिक ज्ञान धारण करने वालो ने ही गुरु धर्म को जाना है। गंगा जमुना ऊलटकर बहने लगे, सूर्य पिछम दिशा में उगने लगे तो भी संतो के प्रेम व उनके अणभै ज्ञान से जरा सा भी विचलित नहीं होता, तब घट में ज्ञान का प्रकाश होता है। केवली संतो के अणभै ग्यान से अक बक प्रेम होकर सब नियम व संसार की मर्यादा का डर नहीं रहता है। जो गुरु याने ग्यान कहता है तो निज मन से पूर्ण रूप से धारण करते है, यही बेचया बिकना है, तब वह शिष्य सच्चा है। सत सरूप आ: पद को ही मानता है। जो अणभै ग्यान कहता है वो ही सांस ऊसांस की विधि का ज्ञान धारण करता है। एक क्षण भी उससे अलग नहीं होता है, कंठ में सत शब्द के आने पर सुरता उठकर चेतन हो जाती है। सतशब्द के आगे बढने पर सूरता भी साथ साथ रहती है। सब नियमों को छोडकर सतशब्द से प्रेम करती है तब सब भरम रूपी गांठे फूटती है। ज्ञान गुरु को देखा तब परमात्मा में मिलने की समझ आई, ज्ञान सुण सुण कर बिना प्रेम

के नियम पकडते है वे सब ढरडे है। म:फ: है कि शरीर के नियम तो सब संसार की मर्यादा है इनसे सत साहिब की प्राप्ति नहीं होती, चाहे कितने ही जन्म बीत जावे।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (१४) 卐

तीन रीत परमोद हमारी, सुण लिज्यो नर नारी बे।
चित आवे सोई राह संभावो, सब पर मेहर हमारी बे।। टेर।।
केई सेवग केई शिष कहिजे, केई चेला सुण चेली बे।
या तीनां की रेण नियारी, मैं सब ही का बेली बे।। १।।
चेला ही चेली हो सत मेरा, तन मन टेल चढावे बे।
प्राण उमंग धस्यो भो मांही, निमख न न्यारा होवे बे।। २।।
शिष्य हमारा रे घर सब अपणे, यहां वहां आवे जावे बे।
सीख हमारी सब ऊर लिखसी, न्यारो कछु नहीं भावे बे।। ३।।
सेवग सोई सेवा कर है, समीयो ओसर आया बे।
तन मन धन लग वे नहीं चुके, से सेवग सत भाई बे।। ४।।
कह सुखराम सुणो सिख सारा, यामें इधको सोई बे।
पतिवरता को अंग ता मांही, वचन न लोपे कोई बे।। ५।।

तीन तरह से उपदेश देता हूं सब ही स्त्री पुरूष सुणो, जिसकी जैसे इच्छा हो वैसा ही रास्ता पकडो, हमारी कृपा सब पर है। कोई सेवग है, कोई शिष्य है, कोई चेला चेली है। इन तीनो की रहणी अलग अलग है। मैं इन सबका रक्षक हूं, चेला चेली वही सत है जो तन मन से भक्ति करते है। प्राणों के साथ उमंग से ध्यान करता है और ध्यान से एक क्षण भी अलग नहीं होता है। यही प्राण उमंग धस्यो भो मांही है। शिष्य वही है जो अपने घर में रहते हुए आते जाते है। ग्यान ग्रन्थ गुरुदेवजी जो उपदेश देते वही धारण करते है, उससे अलग कोई अच्छी बात नहीं लगती, सेवग वही है जो समय आने पर सेवा करते है। तन मन धन लगाकर सेवा करनी पडी तो भी नहीं चूकते, वही सेवग सच्चे है। म:फ: है कि सब ही शिष्य सुणो इसमें अधिक वो है जिसमें पतिव्रता का अंग हो याने स्त्री अपने पति का वचन नहीं लोपती है, ऐसे ही शिष्य ग्यान ग्रंथ गुरुदेव के वचन माफिक पूर्ण रूप से ज्ञान धारण करते है। यही वचन नहीं लोपना है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (१५) 卐

सतगुरु सा कोई सेण न देख्या, ना कोई इण सम दाता बे।
तीन लोक फिर सब हम देख्या, गुरु बिन दोजख जाता बे।। टेर।।
जम सरीसा बैरी पाल्या, दान भक्त पद दिया बे।
विष की गागर फोडज डारी, कूंपा अमीरस पाया बे।। १।।
गूंगे को मुझ मुख बोलायो, नेण अनन्त खुल आया बे।
पंगे कूं गुरु पांवज दिया, हरक कर बोहोत बणाया बे।। २।।
मेटी रेण तिमर सब भांज्या, उदे सूर घट किया बे।
कह सुखराम बीरम का चेरा, सब अंग सुध कर लिया बे।। ३।।

म:फ: है कि बीरमदास जी सतगुरु के बराबर कोई हित करने वाला और नहीं है। न उनके बराबर कोई दाता है। क्योंकि वे जो दान देते है याने सतगुरू महाराज गुरू पद का ज्ञान देते उसका सुख थिर याने सत है, और जो दूसरे दान देते है वह सुख थिर नहीं रहता। ज्ञान से तीन लोको को देखा कि बिना गुरुपद की भक्ति के नरको का दुख नहीं मिटता। सतगुरु ने भक्ति योग का साधन दान देकर जन्म मरण से रहित कर दिया, यही जमबेरी को पाल्या है। शरीर रूपी गागर से विषयो के भोग भोगे जा रहे थे। उनसे छुडा कर भक्ति में लगाकर उसका आनन्द आना की कुंपा अमीरस पीना है। परमात्मा की भक्ति करना ही गूंगे का मुख बोलना है। शब्द का सब जगह सारे शरीर में अनुभव होना ही अनन्त नेत्र खुलना है। आत्म चेतन सतशब्द के साथ के: पद की प्राप्ति करता है। यही पंगे कूं पांव देना है, उनकी कृपा से ही यह सब होता है, यह हरक कर बोहोत बणाना है। अज्ञान रूपी तिमिर याने अंधेरा मिटा दिया और सत आनन्द की प्राप्ति का ज्ञान रूपी सूरज शरीर में प्रकट कर दिया, शरीर के पांचो अंगो से भक्ति होने लगी, यही सुध करना है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (१६) 卐

या पारख बिन भरम न तुटो, दुजी करे सो झूंठी रे लो।। टेर।।
मन जीते का अंग बताऊं, सुणो जगत संत सारा रे।।
आठ पोहोर मुख राम रटत है, वा जन मन कूं मारया रे लो।। १।।
खावत पीवत बोलत चालत, धंधे मांय पुकारे रे लो।
फोगट बात मठी कूं त्यागे, सो जन मन कूं मारे रे लो।। २।।
देहे बोहार गिरे में बैठा, प्रेम करक लिव भारी रे।
दोनुं होट चले बहु रसना, वां जन ममता मारी रे लो।। ३।।
जोत्यो बैल जुवाड लागो, सुध गेल संभावो रे।
मूरख कहे चरे क्यों चारो, जो ये नगरा जावे रे लो।। ४।।
जीता बिना भजे नहीं कोई, पल पल बिसर जावे रे।
कह सुखराम इण मन की पारख, रटणा से गम पावे रे लो।। ५।।

इस परीक्षा के बिना भरम नहीं मिटता है। दूसरी परीक्षा झूंठी है, जिसने मन को जीता है उसके ये लक्षण है। जो आठ पोहर हर समय राम राम रटते है उनका ही मन वश में हुवा है। खाते पीते बोलते चलते काम करते हुये हर समय परमात्मा का नांव लेते रहते है। फालतू बातें झूंठी नहीं करते है। उन्होंने मन को वश में किया है। शरीर से गृहस्थ में रहते हुये भी प्रेम से लिव लगाये रहते है। रात दिन दोनो होठो से रसना चलती रहती है। उनकी ही ममता मिटी है। जुते हुये बैल सही रास्ते चल रहे है। बीच में चारा आ जावे तो चर जाते है। ऐसे ही कोई सतगुरु विधि से भजन भी करते है और गृहस्थ कार्य भी सहज में करते है। लेकिन मूरख कहते है कि ये बैल नगर में जा रहे है तो चारा क्यों चरते है। भक्ति करने वालो के लिये कहते है कि ये परमात्मा प्राप्ति हेतु भक्ति करते है तो घर का काम क्यों करते है। जिन्होंने मन को नहीं जीता है उनसे हर समय भजन नहीं होता है। क्षण क्षण में परमात्मा का नाम भूल जाते है। म:फ: है कि मन वश में होने की परीक्षा रटने से मालूम पडती है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (१७) 卐

अेसे कहे जुग दाय न आवे, केई सावचोक बतावे रे लो।। टेर।।
मन जीते तो ऐसा व्हे है, हाले न डोले न चाले रे।
भोग विलास करे नहीं कबहूं, सांचन झूंटन पाले रे लो।। १।।
माया के कहे चाय न उनके, न शिष साखा जोडे रे।
अणभै कहे तांही ज्ञान बतावे, कांहू सूं हेत न जोडे रे लो।। २।।
सेहेर नगर ना बस्ती रेहे, ना कोई झूंपा बांधे रे।
सुण नहीं सीख केहे नहीं काहू, सूरत नांव दिसन साधे रे लो।। ३।।
कह सुखराम कोई नहीं जीता, प्रालब्ध दुख देवे रे।
बिना भजन सब परले जासी, जीतर यूं क्या लेवे रे लो।। ४।।

म:फ: है कि ज्ञानी मन वाले ऐसा कहते है कि अब मुझे संसार अच्छा नहीं लगता, और कई तरह की होशियारी पेश करते है। लेकिन जिसने मन को जीत लिया वह माया व मान सम्मान से विचलित नहीं होते है। विषय वासनाओं से दूर रहते है। मुंह से सच को सच व झूंठ को झूंठ कहते है और किसी प्रकार माया प्राप्ति की चाह नहीं रखते है, नहीं शिष्यों की जमात रखते है नहीं मठ, आश्रम आदि बनाते है और अणभै ग्रंथो के भगवत वचनों का ही उच्चारण करते है। नहीं किसी से विशेष प्रेम रखते है। न कोई विशेष शहर, नगर, बस्ती में कोई झूपडी बनाते है। सुणी हुई व सीखी हुई बात नहीं कहकर सिर्फ ज्ञान कहता है वो ही बात कहते है एवं अपनी सूरता परमात्मा में लगाये रखते है। म:फ: है कि इस तरह कोई भी मन को वश में नहीं कर सकता क्योंकि उसके प्रालब्ध कर्म बाकी है। इसलिये एक भजन नहीं करने वाले सब जन्म मरण में आयेंगे। बाकी कितने ही सावचोक यानी होशियारी बताओ उससे कुछ होने वाला नहीं है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (१८) 卐

वे जन जीता ताकूं भारी, ओर हट दिन च्यारी रे लो।। टेर।।
काया जीत चडया जन ऊंचा, त्रृगुटी आसण किया रे।
ध्यान समाधि लगी ज्यां जन के, वां मन जीतर लिया रे लो।। १।।
जंत्र मंत्र एक न सीखे, साजे नांय सरोधा रे।
केवल राम रटे ऐ राती, सो जीता मन जोधा रे लो।। २।।
सुख दुख दोनो झूंठा जाणे, आनदेव नहीं माने रे।
सांचा श्याम ब्रह्म है केवल, दूजा हट बखाणे रे लो।। ३।।
सूरत निरत मन ऊंचा चाड्या, आद जाग घर आया रे।
वां मन जाय बंधाणो सेजा, डोल न सक्के भाया रे लो।। ४।।
देहे बोहार सो देख ना भूलो, हरजी आप बणाया रे।
कह सुखराम मन बिध जीतण, सुणो इसी बिध भाया रे लो।। ५।।

उन्होंने ही मन को जीता है और हठ तो चार दिन के है। सतगुरु विधि से भजन कर सारे शरीर खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड को सोधकर ब्रह्मण्ड में ध्यान किया है जिनके ध्यान समाधि लगी है। उन्होंने

मन को जीता है। न जंत्र मंत्र सीखते है न कोई सरोधा साधते है। हर समय रामजी का भजन करते है। उन्होंने मन को वश में किया है। सुख दुख दोनो को झूंठा समझते है। शरीर रूपी आन की भक्ति नहीं करते है। परमात्मा सत है उसकी भक्ति करते है। दूसरे हठ के साधन है। सूरत निरत से मन लगाकर भजन कर आद घर याने के: पद आ: पद की प्राप्ति की है। उन्होंने मन को सहज में ही वश में किया है। मन हर समय भक्ति के सिवाय दूसरे विचार नहीं करता यही डोल न सक्के है। शरीर के व्यवहार को देखकर मत भूलो ये परमात्मा के बनाये हुये है। सबको करना पडता है। म:फ: है कि मन जीतने की यही एक सतगुरु विधि है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (१९) 卐

जब जम आंण नगर कूं घेरे, बंध करे बोह भांती रे।
नव दरवाजा आणर रूंधे, झांक रहे सब साथी रे लो।। टेर।।
सुण मन समझर चेत सबेरो, हर बिना नहीं कोई तेरो रे।
सरब कबीलो पासे बैठो, तूं मत जाणे मेरो रे लो।। १।।
काहु को बल जोर न लागे, बंध्यो जमपुर जावे रे।
प्रांण बांध जंवरो ले जावे, काया कूं कुटुम्ब जलावे रे लो।। २।।
या काया मांय बोह दुख पाडे, अरथ ना लागण देवे रे।
वहां सुण जम की मार सहेला, लेखा तिल तिल लेवो रे लो।। ३।।
कह सुखराम समझ रे प्राणी, वां दिन को भै राखो रे।
जम अपरबल काल शीश पर, तां सूं डर हर भाखो रे।। ४।।

म:फ: है कि जब काल आकर शरीर को घेरता है तो शरीर से होने वाली सब क्रियाये बन्द हो जाती है, यही बन्ध करे बोह भांती है। नो दरवाजो को बन्द कर देता है जितने भी उनके साथी है सब देखते है, किसी का जोर नहीं चलता। मन तूं समझ ले, मनुष्य जग रूपी सवेरा हुआ है एक परमात्मा के बिना कोई तेरा नहीं है। सारा कुटुम्ब कबीला तेरे पास बैठा हुआ है तूं इनको अपना मत समझ। किसी का कोई जोर नहीं चलता, बंधा हुआ जमपुर जाना पडेगा। प्राणो को काल ले जायेगा। शरीर को कुटुम्बी जला देंगे, अंत समय में काया को कष्ट होता है, बोहोत दुख पाता है, उस समय किसी का जोर नहीं लगता। वहां पर कर्म बंधन से जम की मार पडेगी, क्षण क्षण का लेखा लेंगे। सब मनुष्य समझो और उस दिन का डर रखो, जिस दिन काल आयेगा, जो बडा बलवान है, उससे डर कर परमात्मा का भजन करो और अंग लक्षणो से डरते रहो।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (२०) 卐

हेला दे दे संत पुकारे, काल अचानक मारे रे लो।। टेर।।
आज निरोगा तन तेरा बणिया, नेण गुदी पर आया रे।
काम पडेगा रे तां दिन जम सूं, जहां दिन खबरा पाया रे लो।। १।।
आज गिणत में कछु न आने, मन मतवालो होवे रे।
ज्ञान ध्यान की रती नहीं माने, प्राण करेगा जम जुवा रे लो।। २।।

रे मन चेत अचेतन आंधा, तो शिर जम का झोंका रे।
ओ रंग रूप पंतग सो भाई, बोहो सहेलो शिर दुखो रे लो।। ३।।
काची देह तेरी जैसी बुदबुदो, छिन पल में फिस जावे रे।
रे जड मूरख क्यूं नर फूले, छिन पल लाता खावे रे लो।। ४।।
चिते क्युंई होवे क्युंई, तोई मुरख नहीं जांणे रे।
अहुं पद लियां रे निश दिन डोले, बाद विवाद ही ठांणे रे लो।। ५।।
राम धणी कूं कदेहन शिवरे, आन कूं दौड मनावे रे।
जां पल काम पडेगा जम सुं, तब केहो कोण छुडावे रे लो।। ६।।
बांधेगा जम लायर थांबे, नरक कुंड में डारे रे।
जम अजरायल बोहतज बांका, नांय किसी के सारे रे लो।। ७।।
जम सरीसा बेरी सिर पर, गाफल काय नचीता रे।
कह सुखराम भज्यां बिन सांई, जुग जुग वेला फजिता रे लो।। ८।।

संत उपदेश करते है कि काल अचानक मार लेगा। आज तो तेरा शरीर स्वस्थ है इसलिये किसी को कुछ नहीं समझता, जिस दिन जमराज के पल्ले पडेगा उस दिन खबर पड जायेगी। आज तो किसी को कुछ नहीं गिनता, मन से ही मस्त हो रहा है। ज्ञान ध्यान की कोई बात नहीं मानता, लेकिन जमराज प्राणो को शरीर से अलग कर देंगे। हे मन तूं अचेत व अंधा क्यों हो रहा है। समय रहते चेत कर भजन में लग जा, तेरे शिर पर जमराज का भय है। यह रंग रूप पतंग के रंग की तरह है। ठहरने वाला नहीं है। इससे शिर पर बहुत दुख सहन करना पडेगा। तेरा शरीर पानी के बुदबुदे की तरह है। क्षण भर में मिट जायेगा। हे मुरख मनुष्य तुं क्यों फूल रहा है। क्षण क्षण में कष्ट उठाना पडेगा। विचार क्या करता है और होता क्या है, तो भी मूरख नहीं समझता। अपने अहंकार के साथ में रात दिन साथ रहता है और वाद विवाद ही करता रहता है, रामजी सबके स्वामी है। उनका भजन नहीं करके शरीर रूपी आन की भक्ति करता है, जब जमराज के फन्दे में पडेगा, जब कौन छुडावेगा। जमराज लाकर थंबे के बांध देगा व नरको में डालेगा। जमराज को कोई नहीं जीत सकता, बडा बलवान है। वह किसी के वश में नहीं है। जमराज सरीखा दुशमन शिर पर है फिर भी तूं सावधान निश्चिन्त क्यों हो रहा है। म:फ: है कि परमात्मा के भजन बिना जुगानजुग में चौरासी में भटकना पडेगा यही फजीती होना है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (२१) 卐

ऐसा समरथ साहिब मेरा, तांका गिगन मंडल मांही डेरा रे लो।। टेर।।
राव कूं रंक करे पल मांही, रंक कूं राज दीरावे रे।
उजड नगरी कूं तुरत बसावे, खाडा जहां पहाड बणावे रे लो।। १।।
दूरा दीसे वो नेडा कर दे, नेडा कूं दूर पठावे रे।
जीवत दिसे सो तुरत बिणासे, मुवा कूं आण जीवावे रे लो।। २।।
सुख विलास छुडावे पल में, दुख कुं सुख मांही लावे रे।
रोग छतीसुं ही पल मांही खोवे, साजे के रोग लगावे रे लो।। ३।।

डील डिगंबर भेष बणायो, कोप्यां रशातल मेले रे।
गिरस्त रूप बणया संसारी, तां घट नित हर खेले रे लो।। ४।।
कह सुखराम भरया सब सोखे, रीता फेर भराई रे।
राम करेगा सोई हुवेगा, तुम सारे है कांई रे लो।। ५।।

परमात्मा ऐसे समरथ है जिनका गिगन मण्डल में स्थान है। राजा को गरीब बना देते है और गरीब को राजा बना देते है। उजड नगरी को तुरन्त बसा देते है। जहां खड्डे हो वहां पहाड बना देते है। दूर वालो को पास कर देते है, पास वालों को दूर भेज देते है। जीवित दिखता है उसका नाश कर देते है, मरे हुये को जीवित कर देते है। क्षण में सुख विलास छुडा देते है, दुखी को सुखी कर देते है। छतीस रोग हो तो पल में मिटा देते है, स्वस्थ के रोग लगा देते है। शरीर पर डील डिगम्बर भेष धारण कर लेते है। इन पर परमात्मा कोप करते है तो रसातल में भेज देते है। संसारी व गृहस्थी के घट में परमात्मा की प्राप्ति होना ही खेलना है। म:फ: है कि भरे हुये को सोख लेते है और रीते को भर देते है। रामजी करेंगे वही हुवेगा, तुम्हारे बस की बात नही है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (२२) 卐

अेका अेकी रे तूं चल जासी, अे कोई लार न आसी रे लो।। टेर।।
रे मन मूरख चेत सवेरो, गाफल काय ठगावे रे।
हेत करे बोले मीठी बांणी, अे कोई लार न आवे रे लो।। १।।
अेसी काया तेरी बणी है, आ कोडी के काम न आवे रे।
कीड़ी मकौडी मरघट जाले, उलटो दुख दे जावे रे लो।। २।।
बिना नांव सब झूंठ सगाई, जे नाना विध की कवावे रे।
सब ही रहया बांगज देता, जम उचक ले जावे रे लो।। ३।।
याहा मोह जिण सूं ते नर बांध्यो, हेत करे कर माने रे।
भीड पडेगी जाहां दिन तोकूं, सब रेगा सुण काना रे लो।। ४।।
रे मन झूंठा अे झूंठा सारा, ओ जुग जम की फांसी रे।
यासुं मोहो करे हर भूले, वहां तुज कोण छुडासी रे लो।। ५।।
यांहा का सुख दुख सब ही सोरा, वाहां का दुरलभ भाया रे।
नरक कुंड मांय ठेलज देसी, प्राण सहे बंधे काया रे लो।। ६।।
संत पुकारी हेला देवे, सुण लीज्यो नर नारी रे।
राम रतन धन त्यागज बैठो, अे गेली है मत तुमारी रे लो।। ७।।
जुग सूं हेत कियो ते भारी, राम नांव नहीं गावे रे।
कह सुखराम कह सब हरजन, ओ बंध्यो जमपुर जावे रे लो।। ८।।

एका एक याने तुझे अकेला ही जाना पडेगा, यह कुटुम्ब कबीला कोई तेरे साथ नहीं जायेगा। अरे मन मूरख मनुष्य जन्म रूपी दिन उगा है ऐसे गाफल होकर क्यों ठिगता है। तेरे से हेत करते है मीठे बोलते है यह कोई साथ नहीं आवेंगे। तेरा शरीर ऐसा बना है इसकी कोडी भी नहीं बटती है। मरघट में उलटा कीडे मकोडे को जलाता है और दुख देता है। परमात्मा के नांव बिना सबसे

अनेक प्रकार का प्रेम है। वो झूंठा है। सब रोते रह जाते है। जम उठाकर ले जाता है। जिससे तेने यहां मोह कर रखा है और उनसे प्रेम करता है लेकिन जिस दिन तेरे में दुख आयेगा, तब सब अलग हो जायेंगे। रे मन तू भी झूंठा है और सब ही झूंठे है। यह जगत यही जम की फांसी है। तुं इनसे यहां प्रेम करता है वहां तुमको कौन छुडायेगा। यहां के सुख दुख सरल है। वहां के बडे मुश्किल है। नरको में डालकर काया को बांधेगे व प्राणो को दुख भोगना पडेगा। संत सुखरामजी ऊपदेश करते है कि सब स्त्री पुरूष सुणो, रामजी की भक्ति रूपी रतन धन को छोडकर बैठे हो, यही तुम्हारी बुद्धि खराब है। जगत से बहुत प्रेम करते है और राम नाम का भजन नहीं करते है। इसलिये सब संत कहते है उनको नरको में ही जाना पडेगा।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (२३) 卐

मात पिता सुत बन्धु तेरा, सुसरो सासु नारी बे।
अंतकाल में अेको नहीं संगी, सब स्वारथ की यारी बे।। टेर।।
सुण मन समझर राम पुकारो, सतगुरु शरणो धारी बे।
अन्न धन धीणो संपत सारी, अेक भक्त बिना भिकीयारी बे।। १।।
खवास पास संग चाकर चेरी, हेत करे घर जावे बे।
काम पडेगो जब धरम राय से, आडो अेक नहीं आवे बे।। २।।
ना कोई तेरा तूं ना काहू को, झूंठे चित नहीं दिजे बे।
कह सुखराम समझ रे प्रांणी, हर भज बिलम न किजे बे।। ३।।

माता पिता लडका भाई ससुरा सासु व स्त्री अंतकाल में कोई साथ नहीं चलेगा। सब स्वारथ का प्रेम करते है, मन तूं समझकर रामजी की भक्ति कर और सतगुरु का ज्ञान धारण कर। अन्न धन धीणो सुख संपति सब होते हुए भी भक्ति नहीं करता तो भिखारी है। खवासवान, पासवान, नौकर, चाकर ये सब प्रेम करते है। लेकिन जब जमराज से काम पडेगा तब एक भी काम नहीं आवेंगे। तेरा कोई भी नहीं है, न तूं किसी का है, इन झूंठो से मोह मतकर। म:फ: है कि मनुष्य समझ, रामजी की भक्ति करने में देरी मत कर।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (२४) 卐

सुण लिज्यो लो सुण लिज्यो लो, समझर धारा विचारी रे लो।
भगत बिना रे मुगती नांही, जाय जन्म सो हारी रे लो।। टेर।।
भजन बिना जुग जन्म धरक है, क्या पुरूष क्या नारी रे।
धनवंत राय निरधन रे, छुछम बुध कहां भारी रे लो।। १।।
श्रोता वक्ता मूरख ज्ञानी, हरजी ने निश दिन गावो रे।
निज कण नांव अरध बिन जाण्या, सब कूं जंवरो खावे रे लो।। २।।
हुन्नर कोट कला बोहो सीख्यो, नाना विध का सारा रे।
अेक नांव लिया बिन घर ओ, बेग्यो काली धारा रे लो।। ३।।
चेत चेत मन चेत सवेरो, समझ सोच मन भाई रे।
कह सुखराम मोख को मोसर, अबके चुक न जाई रे लो।। ४।।

सब संसारी सुणो, समझकर विचार करो, परमात्मा की भक्ति के बिना मुक्ति नहीं होती। मनुष्य जन्म व्यर्थ ही जाता है। भजन के बिना उसका जन्म धिक्कार है, चाहे स्त्री हो या पुरूष, धनवान हो चाहे गरीब, कम बुद्धि वाले हो या भारी बुद्धि वाले हो। सुनने वाले, बोलने वाले मूरख व ज्ञानी सब परमात्मा की रात दिन भक्ति करो। निजकण नांव याने आधे नांव के बिना सब को काल खा जायेगा। अनेक प्रकार की हुन्नर व कलायें सीखता है लेकिन एक निज नांव को धारण किये बिना मनुष्य जीवन व्यर्थ ही खोता है। यही काली धार बहना है, मन तूं जल्दी चेत जा समझ ले और सोच ले, मोख की प्राप्ति के लिये मनुष्य जन्म मिला है इसे व्यर्थ मत खोवो।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (२५) 卐

सुर जाणे लो सुर जाणे लो, जन कूं बहुत बखाणे रे।
जहां जहां हर जन पांव धरत है, तहां तहां रिछया ठाणे रे लो।। टेर।।
ज्यूं सुण कंवर फिरे मन जो खा, शहर नगर में आवे रे।
हाकम राव पटायत सारा, सबे जापतो चावे रे लो।। १।।
अणभै शीष बंध्यो परवानो, सो जन अेधी होई रे।
वाकूं भूपत निवे जुग जुग में, जन सुं देवदत्त सोई रे लो।। २।।
ज्याहां ऊर घर में हरकी भक्ति, ज्यां सूर पूजन न मांगे रे।
जे जन कूं राकस नहीं सतावे, तांकी आंण न भांगे रे लो।। ३।।
ज्ञान बिना नर नार कहावे, वांने खबर न कांई रे।
कह सुखराम संता की मेहेमा, देवलोक में होई रे लो।। ४।।

देवता ही जानते है और संतो की बहोत महिमा करते है, जहां जहां परमात्मा के जन पधारते है, वहां वहां उनकी रक्षा करते है। जिस प्रकार बादशाह का कंवर मन की इच्छा से शहर व नगर में आता है तो हाकम राजा पटायत सब ही उनकी रक्षा करते है। जिन्हें अणभै रूपी परवाना परमात्मा की तरफ से मिला है, वे परमात्मा के ओधा धारी है। जैसे बादशाह के ओधाधारी को राजा निवन करते है, ऐसे ही केवली संतो को देवता निवन करते है। जिनके घर में परमात्मा की भक्ति होती है उनसे देवता पूजा नहीं चाहते याने सब ही देवता की सेवा सज जाती है और राक्षस भी उन्हें नहीं सताते है। उनके नाम की सोगन्ध को मानते है याने भंग नहीं करते है। ज्ञान के बिना जो स्त्री पुरूष है उनको इस बात की मालूम नहीं है, केवली संतो की महिमा तो देवलोक में ही होती है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (२६) 卐

भरम ज्ञानी लो भरम ज्ञानी लो, ब्रह्म ज्ञानी नहीं कोई रे।
तीनूं लोक भवन सो चवदे, निरख परख हर जोई रे लो।। टेर।।
सुरगुण न्यारी निरगुण न्यारी, जब लग हिरदे जांणे रे।
शुभ कूं गहे अशुभ कूं त्यागे, त्यां नर दूतियान आणे रे लो।। १।।
स्वामी सेवग गुरु ज्यां चेला, जांत पांत कुल होई रे लो।
सिखे ज्ञान सिखावे जाई, जब लग पाक न कोई रे लो।। २।।

त्याग न ग्रेह दोय कर जांणे, माया ब्रह्म कहे न्यारा रे।
जोगी जंगम सुण पंथ कारण, तब लग अेक न धारा रे लो।। ३।।
पुन्न पाप जहां दोय कर जांणे, अंतर में भय आवे रे।
सिंह अर श्वान सुसे कूं देख्या, ज्याहां मन दुबध्या ल्यावे रे लो।। ४।।
ब्रह्म ज्ञान मुख नितपत भाखे, चाल धरम की होई रे।
कह सुखराम त्यांहा लग झूंठा, राम न माने कोई रे लो।। ५।।

सब भरम ज्ञानी है, ब्रह्म ज्ञानी कोई नहीं है, तीन लोक चवदा भवन में निरख परख कर देख लो, सुरगुण व निरगुण को अन्तर में अलग अलग समझता है। शुभ धारण करके अशुभ को छोडता है तब तक द्वेत भाव में ही है। स्वामी सेवग गुरु चेला जाती पाती कुल में समझा है ज्ञान सिखता है व सिखाता है, तब तक ब्रह्म ज्ञान पक्का नहीं है। त्याग अवस्था व गृहअवस्था को अलग अलग जानता है, माया व ब्रह्म को अलग अलग कहता है, जोगी जंगम सब के साधनो को अलग अलग समझता है, तब तक एक ब्रह्म नहीं समझा। पुन व पाप को अलग अलग समझता है और अन्तर दुख में भय आता है। सिंह कुता और खरगोश को अलग अलग समझता है यही मन में दुबध्या लाना है। मुंह से ब्रह्म ज्ञान की बात करता है लेकिन चाल व रहणी धर्मराज जी के दरबार में जाने की है। म:फ: है कि तब तक वो झूंठा है। परमात्मा के पद से वो वंचित रहेगा।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (२७) 卐

अटक रहयो रे साधो अटक रहयो रे, कोई मुज मेर लंगावो रे।
जिण अस्थान तिरथंगर पूगा, वोई आसण मुज भावे रे।। टेर।।
निश दिन जोर भजन हम कियो, बरस अठारा तांई बे।
पाहण पत्थर पर आसण मेरा, रेण नींद नहीं लीवी बे।। १।।
त्रकुटी मेर में खिचे उलजाणो, बोहत आयंटा खावे बे।
निश दिन ताव पडे सिर ऊपर, चित मन लातर जावे बे।। २।।
त्रकुटी छोड चले नहीं आगो, बोत ही पच पच मुवा बे।
सोलह करम देही हंसा का, बाल जाल किया धुंवा बे।। ३।।
जग का स्वाद बाद सब छोडया, आशा न राखी कोई बे।
सतगुरु सांच धरयो शीर ऊपर, काय चुक रई मोई बे।। ४।।
कह सुखराम कयां बिना सतगुरु, कसर न सूजे कांई बे।
सतगुरु सतसरूप पद दया करो, गुन्हा बगस जो मोई बे।। ५।।

साधको से फ: है कि मेरूडण्ड पर शब्द अटक रहा है, कोई मेरूडण्ड से पार करावे, जिस पद को तीर्थंकरो ने पाया वहीं मैं पाना चाहता हूं। अठारा वर्ष तक रात दिन पत्थर पर आसन लगाकर भजन किया और रात में नींद भी नहीं ली। शब्द त्रिकुटी व मेरू के स्थान के बीच अटक रहा है, यहां से आगे नहीं बढता है यही आयंटा खाना है। रात दिन भजन करने पर चित मन थक जाते है तो भी शब्द आगे नहीं बढता, शब्द त्रिकुटी याने भंवर गुफा, केवल की बारी तक है, उस को छोडकर आगे नहीं बढता, बोहत पच पच कर थक गया, शरीर के सोलह करमो से अलग होना

ही बाल जाल धुंवा करना है। संसार के सब भोग छोडकर कोई इच्छा नहीं रखी और सतगुरु याने केवली भगवंतो ने ज्ञान बताया उस माफिक साधन को किया, फिर भी मेरे से कौनसी गलती रह गई है। मःफः है कि आपके कहे बिना हे ग्यान गुरुदेव मेरी गलती मुझे नहीं मालूम पडेगी। सतगुरु सतस्वरूप आप मेरे पर कृपा करो, मेरी गलती को माफ करो।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (२८) 卐

जम जालम है जम जालम है, सावधान होय लडना रे लो।
अबके मोसर आण बण्यो है, सुध बुध कारज करणा रे लो।। टेर।।
शील सांच को बगतर पेरो, लिव शमसेर समावो रे।
जरणां की ढाल जुगत सुं बांधो, इस विध लडवा जावे रे लो।। १।।
नेम कटारो कस कर बांधो, विरह तोप कुं छोडो रे।
चढ बैराग तुरंग के ऊपर, काल फोज कुं मोडो रे लो।। २।।
शीवरण सेल भजन कर भालो, मत की गेहो कबाणी रे।
सुरत निरत को बांण करिजे, कोट किल्ला कर बाणी रे लो।। ३।।
चित की धुरियां बांण कर मन का, सांस सोकरडा किजे रे।
गज या ज्ञान त्याग कर तोपा, भरम ढाय सब दिजे रे लो।। ४।।
शस्तर सबे बांध युं लिजे, राड निशो दिन कीजे रे।
कह सुखराम जीत गढ चढिया, बोहर न जलम धरीजे रे लो।। ५।।

जम याने काल बडा जबरदस्त है, सतगुरु से सतशब्द की भक्ति का भेद व ग्यान धारण करके भक्ति करना ही सावधान होकर लडना है। मनुष्य जन्म मिला है इसमें जन्म मरण का रोग अनादि से लग रहा है उसको मिटावो। यही सुध बुध कारज करना है। शीलव्रत धारण करो, सत बोलो, लिव बंध भजन करना ही तलवार पकडना है। सहनशीलता धारण करो, जुगत याने सत पद का ज्ञान ध्यान करके भक्ति करना ही लडने जाना है। नियम से हर समय विरह के साथ भक्ति करो, बेराग रूपी घोडा याने बैराग्य धारण करके भक्ति करके काल से अलग हो जावो, यही काल फोज मोडना है। सतगुरु बतावे उस माफिक शिमरण करते रहो यही सेल चलाना है। सतशब्द का अखण्ड ध्यान होना ही भाला चलाना है। मन से सतपद के ज्ञान के सिवाय दूसरा ज्ञान धारण नहीं करना ही मत की कबाणी धारण करना है। सुरत के द्वारा सतशब्द याने नेः अँच्छर का ध्यान कर सुरत को शब्द में लय कर सुन्न में याने चौथे पद में अखण्ड ध्यान करना ही सुरत निरत का बांण करना है। शरीर में क्रोडो सुन्न है इन सबको पारकर सतसरूप आनन्द पद की प्राप्ति ही क्रोडो कलाओ को जीतना है। चित से ग्यान का चिन्तन करते रहना और मन से सत पद के ज्ञान का विचार करना ही चित की धुरिया और मन का बांण करना है। स्वांस उस्वांस में भजन करके जब ध्यान अवस्था में आनन्द आता है जब स्वांस उस्वांस का ध्यान नहीं रहना ही सांस सोकरडा करना है। सतगुरु से ज्ञान प्राप्त कर ज्ञान रूपी हाथी पर बैठकर त्याग करना ही तोप छोडना है जिससे भरमो को मिटाना ही ढाना है। ऊपर माफिक सब अंग धारण करके सतगुरु बताये उस माफिक रात दिन भक्ति योग की साधना करके शरीर चेतन से न्यारा होकर पारब्रह्म के ऊपर आत्मा के

निरंजण निराकार पद में अखण्ड ध्यान होना ही याने सता समाधि होकर आः पद में लय हो जाना और वापिस जन्म धारण नही करना ही जीत कर गढ पर चढना है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (२९) 卐

आनन्द लोक तो रे बंदा वे हंस जासी, सतगुरांजी रा जस गाबे बे।
मिल्या हरख बिछडया उदासी, हियो छिल छिल आवे बे।। टेर।।
सतस्वरूप मिलणे कूं सत है, ओ प्रेम नेम बिना भारी बे।
लागी रे चोट शब्द की तन में, बिसर गई सुध सारी बे।। १।।
लाख बात की एक बात है, प्रगट कहूं बजाई बे।
सतगुरांजी सुं मन धुजण लागो, जब बणसी घट मांही बे।। २।।
ज्यां गुरां संग नांव घट जागे, वे सतगुरां शिर धारो बे।
ज्ञान ध्यान दूजा गुरु झूंठा, से सब दूर बिडारो बे।। ३।।
कह सुखराम सोई जन सांचा, सांचा सतगुरु जोवे बे।
करणी बिना नांव घट जागे, अखण्ड उजाला होवे बे।। ४।।

आनन्द लोक तो वे ही हंस जायेंगे जो सतगुरु जी के गुणानवाद गायेंगे। ऐसे संतो के मिलने पर खुशी होती है एवं बिछडने पर उदासी होती है यही हिये का छिल छिल आना है। सतस्वरूप के देश में मिलने के लिये यही बात सत्य है, इसमें ज्ञान गुरु के प्रति प्रेम व नेम होना चाहिये। अब उनके अणभै वचनों को सुणकर पुरानी बातें भुल गयी। लाख बात की एक बात है जो चौडे कह रहा हूं कि सत्य केवल ज्ञान के वचनों से मन डरने लगता है तब यह घट में सत प्रगट होता है। जिस ओधाधारी गुरुदेव के संग नेः अँच्छर रूपी सत आवे उनको ही गुरु मानो। दूसरे जितने भी गुरु ज्ञान ध्यान बताते है, उनसे दूर रहो। मःफः है कि वही शिष्य सच्चा है जो ओधाधारी सतगुरु का ज्ञान धारण करता है। ऐसे गुरु के द्वारा बिना किसी कसौटी के शिष्य में सतशब्द रूपी अखण्ड उजाला हो जाता है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (३०) 卐

हरिजन सूरा हरिजन सूरा, भीड पडया लिव दूणी बे।। टेर।।
शांकल तोख जडे गल मांही, फेर भागसी मारे बे।
दुष्टी ताव बोहोत विध देवे, हर हर ईधक पुकारे बे।। १।।
देश मुल्क घर बार छुडावे, सुत वित कोसर लेवे बे।
बोहो विध ताव पडे शिर ऊपर, सुरत नांव पर देवे बे।। २।।
दुजी भीड पडे शिर केती, दिन में सोह सोह आई बे।
जब लग सांस खुलासा घट में, राम राम कह भाई बे।। ३।।
दुख सुख सबे नांव पर वारे, निछरावल कर देवे बे।
ओ तन सांस जीव मन चेतन, जां लग सिमरथ सेवे बे।। ४।।
शशि अर सूर पिच्छम दिस ऊगे, गंग उलटी बह जावे बे।
कह सुखराम तोई जन सूरा, राम राम लिव लावे बे।। ५।।

हरिजन शूरवीर है, कैसा भी कष्ट आवे ज्यादा से ज्यादा भजन करते है, शांकल से बांधकर गले में तोख जडकर भागसी में डालते है। इस तरह दुष्टी बहुत कष्ट देते है तो भी ज्यादा से ज्यादा भजन करते है। देश मुल्क घर बार सब छुडा देते है, धन व लडका कोस लेते है। इस प्रकार बोहोत दुख देते है। तो भी सुरत नांव में ही लगाये रखते है। दूसरी तकलीफें दिन में सो सो भी आ जावे परन्तु जब तक शरीर में स्वांस चले तब तक राम नाम भजन नहीं छोडते। कितना भी सुख दुख आवे उसकी परवाह नहीं करते, यही निछरावल करना है। जब तक शरीर में श्वांस है चेतनता है तब तक एक क्षण भी परमात्मा की भक्ति को नहीं छोडते। सूर्य चन्द्रमा पिछम दिशा में ऊगने लग जाये, गंगा उलटी बहने लग जाये तो भी जो शूरवीर जन राम रटणा व निज नाम की लिव लगाये रहते है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (३१) 卐

एक मना सिध एक मना सिध, दुबध्या पार पुंचे बे।। टेर।।
सतशब्द तत जाणर लिजे, सब धरम इनमें आवे बे।
हर गुरु एक मेट यूं दुबध्या, यूं साहिब सब पावे बे।। १।।
दुरयोधन को नरका डारयो, अेसा करम कमाया बे।
एक मने सुण बाहिर काढियो, साहिब दरशण पाया बे।। २।।
कह सुखराम भरातहल किज्यो, अेक मना वे भाई बे।
कुड कपट छाड सब दुबध्या, रहो राम लिव लाई बे।। ३।।

म:फ: एक मन से कार्य होता है उसमें सफलता मिलती है और दुबध्या से अलग हो जाता है। सतशब्द का ज्ञान धारण करने से सब धरम इसमें आ जाते है, परमात्मा व ग्यान गुरुदेव में कोई अन्तर नहीं समझता तब परमात्मा की प्राप्ति होती है। दुर्योधन ने बुरे कर्म किये जिससे उसे नरको का दुख भोगना पडा। लेकिन उसका भाई युधिष्ठर एक मन था इसलिये उसने उसे स्वर्ग की प्राप्ति करा दी, यही साहिब का दरशन पाना है। म:फ: है कि जिसके पास जिस वस्तु की कमी है उसकी पूर्ति करना ही भरा तहल करना है। ऐसा करने वाला एक मन वाला है। सब बुरे विचार कपट व दुबध्या को छोडकर एक रामजी की लिव लगावो।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (३२) 卐

झालर बिन एक झालर बागी, राग अनन्तर लागी बे।। टेर।।
आ किरपा मेरे सतगुरु कीनी, भांत भांत मत दीनी बे।
आत्म में परमात्म पाया, रूम रूम कंप किनी बे।। १।।
सुरत निरत चित मन कूं देख्या, प्राण पुरूष गह लिया बे।
धर का नीर चढे आकाशा, प्राण पिछम दिश किया बे।। २।।
बंकनाल में महारस पिया, हंस आद घर आया बे।
अला पिंगला सुखमण नारी, तां घर आसण पाया बे।। ३।।
कह सुखराम बीरम का चेरा, आगे अलख लखाया बे।
सुन्न सागर में हीरा बरसे, तहां आणंद सुख पाया बे।। ४।।

सारे शरीर में सतशब्द का अनुभव होना झालर के बिना झालर बाजना है, कई तरह की ध्वनि का होना ही राग अनंतर लागी है। यह कृपा मेरे सत ग्यान गुरु देव ने की है, और मुझे तरह तरह से समझाया है। आत्मा में परमात्मा पद की प्राप्ति करा दी तथा रूम रूम में शब्द का अनुभव होना ही रूम रूम कंप कीना है। सूरत से ध्यान होना ही निरत से ध्यान अखण्ड रहना, चित से चिन्तन करना, मन से मनन करना, प्राणो के साथ इनका देखना ही प्राण का गह लेना है। प्राणो के साथ शब्द का पूर्व स्थानो को तय करके पिछम दिशा में उलटकर ऊपर चढना ही आकाश में चढना है। व प्राण पिछम दिश करना है। बंकनाल में शब्द का आनन्द अनुभव करके त्रिकुटी में आना ही आद घर जाना है। मेरूडण्ड से अला पिंगला सुखमणा त्रिकुटी में आकर मिलती है। शब्द का त्रिकुटी में ध्यान होना ही आसण पाना है। म:फ: है कि के: पद आ: पद त्रिकुटी याने पार ब्रह्म के आगे है ऐसा अनुभव हो रहा है। के: पद में शब्द का अखण्ड अनुभव होना ही हीरा बरसना तथा आ: पद में लय होना ही आनन्द सुख पाया है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (३३) 卐

गिगन मंडल में बालक पाया, तांके रूप बरण नहीं काया बे।। टेर।।
सो बालक मेरे गुरुजी बताया, दिव्य दृष्ट तल आया बे।
किस विध कीमत तांकी किजे, भेद किसी बिध पाया बे।। १।।
ठोड न ठाम नहीं कोई थांणा, खाली दिशा नहीं कोई बे।
हाथ न पांव परां नहीं पांखा, नेण बेण नहीं होई बे।। २।।
तीन लोक सो अधर कहिये, पांव शीष बिन छेहा बे।
कह सुखराम बीरम का चेरा, ऊ बालक हम नेहा बे।। ३।।

म:फ: है कि पारब्रह्म के ऊपर सतशब्द का अनुभव होना ही बालक का पाना है। उसके रूप वर्ण व काया नहीं है। उस बालक की प्राप्ति का भेद मेरे सतगुरु बीरमदासजी ने बताया और दिव्य दृष्टि से उसका अनुभव हुवा। मैं उसकी प्राप्ति का वर्णन कैसे कर सकता हूं। मुझसे उसका वर्णन नहीं होता। न तो ठोड न ठाम है न कोई स्थान है। उसके बिना कोई जगह खाली भी नहीं है। उसके हाथ पांव परां व पांखा नैत्र व बांणी कुछ भी नहीं है। तीन लोक याने खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड व पारब्रह्म से ऊपर अधर है। न पांव है न शिर है और नहीं उसका वार पार है। उस बालक रूपी सतशब्द से हमारा नेह हुआ है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (३४) 卐

फिट मन फिट लाणत तोने, उबरती फिट मोने रे लो।। टेर।।
भगत मुगत सा गेला छाडे, जम की राह बुवावे रे।
हर की कथा सुणे नहीं काना, आन बिना नहीं सरे रे लो।। १।।
जिण तेरा अे देवल किया, नख चख सबे बणावे रे।
केवल राम रिजक का दाता, ताकूं कदे नहीं गावे रे लो।। २।।
पकडे है झूंठ सांच कूं छाडे, विष ले इमरत मेले रे।
हर चर्चा साधु जन लोपे, जायर होली खेले रे लो।। ३।।

कह सुखराम धरग तोय प्राणी, आत्म देव न जाणे रे।
ज्यां संग होय पडेगा नरकां, वाकूं बहोत बखाणे रे लो।। ४।।

आत्मा मन से कह रही है कि तुझे धिक्कार है, साथ ही मुझे भी धिक्कार है, भक्ति व मुक्ति का साधन छोड कर नरको में जाने का काम करता है। रामजी की प्राप्ति का ज्ञान नहीं सुनता है और शरीर रूपी आन की भक्ति व सेवा करे बिना नहीं रहता, जिसने तेरा यह नख से चख तक शरीर बनाया है, और रिजक भी देता है उसकी कभी भी भक्ति नहीं करता। असत को धारण कर सत को छोडता है। विष लेकर इमरत को छोडता है। परमात्मा की प्राप्ति का ज्ञान व संतो की संगत छोडकर कर्मो का बन्धन करता है यही होली खेलना है। म:फ: है कि हे मनुष्य तुझे धिक्कार है धिक्कार है जो तूं आत्म देव के लिये आत्मज्ञान नहीं धारता है। जिसके साथ तुझे नरको में जाना पडेगा उसकी बहुत महिमा करता है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (३५) 卐

रे मन समज केवल ध्याय रे, ज्युं परमपद पावे रे लो।। टेर।।
अणगढ देव अमुरत रामा, मुरत सबकी कीनी रे।
याकूं भजे तजे नर वाकूं, आ भिष्ट बुध किण दिनी रे लो।। १।।
काया माया सब ठाठ दिशे, सब उनके आधारा रे।
ब्रह्मा विशन महेशर शक्ति, वो इनको करतारा रे लो।। २।।
धरण पंयाल आकाशज दिसे, ओदर में सब होई रे।
ऐसा निरंजन समरथ साहेब, जन का शब्दा जोई रे लो।। ३।।
ऊ नर राम शकल के मांही, प्रेम बिना नहीं पावे रे।
कह सुखराम बिरह दू लागे, जब हरजी घर आवे रे लो।। ४।।

म:फ: है कि मन तूं समझकर केवल की भक्ति कर जिससे परमपद की प्राप्ति हो जावे। अणघड देव व बिना आकार के रामजी है उनसे ही सब आकार बने है। उस परमात्मा को छोडकर आकारी की भक्ति करते है ऐसी खराब बुद्धि तुझको किसने दी। काया माया का विस्तार है। सो सब उसके आधार पर है। ब्रह्मा विष्णु महादेव का करता भी वही है। धरती पाताल आकाश सब उसके आधार पर है याने ओदर में है। ऐसा निरंजन समरथ परमात्मा को केवली संतो से ज्ञान लेकर प्राप्त करो। वे रामजी सब में व्यापक है, बिना प्रेम उनकी प्राप्ति नहीं होती है। जब विरह होती है जब विरह रूपी अग्नि लगे, तब परमात्मा की प्राप्ति होती है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (३६) 卐

ब्याव हुवे लो मेरा ब्याव हुवे लो, अब घर करसुं जुवा रे।। टेर।।
सतगुरु मिल्या अग्या लिवी, तां दिन भई सगाई रे लो।
राम नाम मुख केणे लागी, जब हर परण्या रे लो।। १।।
अब हरजी मेरे घर आया, बपजी मोही पठावे रे।
विरह प्रेम हिया भर ऊबके, संया मिल मिल जावे रे लो।। २।।

पीव हमारी सेजां रमिया, देह धक धूण लोथाणी रे।
कपडा घडी भाग मसलाणा, जब दुनियां मुज जांणी रे लो।। ३।।
गरभ बंधियो ओदर बधियो, अब मुज नाज न भावे रे।
बांज लुगाया हंस हंस जावे, ब्यायर विध बतावे रे लो।। ४।।
गिगन मंडल में जापो हुवो, अनहद थाल बजाणा रे लो।
कह सुखराम बधाई अणभै, त्रृगुटी ध्यान लगाणा रे लो।। ५।।

मेरा ब्याव हो गया है अब मैं अलग घर करूंगी। सतगुरु याने केवली भगवंतो के अणभै ग्यान को धारण करके भजन की आज्ञा ली याने विधि से राम राम करने से सतशब्द की जागृति होना ही हरजी से सगाई होना है। शरीर में सतशब्द का जागृत होना ही रामजी का आना है। सूरत शब्द का ध्यान कर शब्द के साथ आगे बढना ही बपजी का पठाना है। भक्ति करने में विरह प्रेम और हृदय में उमंगता आती है। यही संया का मिलमिल जाना है। सुरत का शब्द में लय होना ही ब्याव होना ही सेजा रमना है। उसके आनन्द में शरीर की सुधी नहीं रहती यही देह धक धूण लोथाणी है, उस आनन्द का अनुभव कहना ही कपडा घडी भांग मसलाणा है। जब संसार उस ज्ञान को जानता है यही दुनिया का जानना है। सतपद का ज्ञान धारण करना ही गरभ बंधना है व के: पद आ: पद की प्राप्ति करना ही ओदर का बढना है। संसार में मोह नहीं रहना ही नाज नहीं भाना है, सतगुरु विधि से भजन नहीं करने वाले उस ज्ञान की निंदा करते है, यही बांज लुगायों का हंसना है। भेद से भजन की विधि बताना ही ब्याव होने की विध बताना है। पारब्रह्म से ऊपर शब्द का अखण्ड अनुभव होना ही जापा होना है। सारे शरीर में कुदरत ही शब्द का अनुभव होना ही अनहद थाल बाजना है। म:फ: है कि अणभै ग्यान का निरपख निरणा करके बोलना ही बधाई बांटना है। त्रृगुटी के ऊपर सुखमणा में ध्यान होना ही त्रिगुटी ध्यान लगाणा है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (३७) 卐

अे मुरख भेव न दुनियां जांणे, अे फिर फिर निंदा ठाणे रे लो।। टेर।।
ब्याव विरध सब गीत सुण के, हरष हरष सब आवे रे।
जाके काज किया नर अेता, ताकी ठोड चलावे रे लो।। १।।
लडका लडकी परणर आया, सब ही आंण सराया रे।
जब वांके गरभ ओदर बंधियो, सागट निंदा लावे रे लो।। २।।
यूं ज्ञानी पिंडत जुग सारा, चरचा ज्ञान बखाणे रे।
निरगुण शब्द चेन घर मांही, ताकी निंदा ठाणे रे लो।। ३।।
जा विध कूं मुख राम रटिजे, निश दिन हरि गुण गावो रे।
वां विध हुवा दुनि सब डेके, निंदा बोहो विध लावे रे लो।। ४।।
ऊपर लो बोहार ज झूंठो, ताकूं सरब बखाणे रे।
कह सुखराम पिंडत सब लोई, निरगुण भेद न जाणे रे लो।। ५।।

यह संसार मुरख है भेद नहीं जानता और फिर फिर कर निंदा करते है। ब्याव बिरद के गीत सुनकर सब खुशी होते है, लेकिन जिस कार्य के लिये ब्याव करते है, उसकी निंदा करते है। लडका

लडकी परण कर आने पर सराहना करते है लेकिन जब गर्भ रहता तो नीच उसकी निंदा करते है। ऐसे ही ज्ञानी पंडित संसारी परमात्मा के नाम व उसकी प्राप्ति की बहुत महिमा करते है, लेकिन जब सतशब्द की जागृति हो जाती है और उसके चैन होते है तो उन्हें देख कर वे उसकी निंदा करते है। रामजी की प्राप्ति हेतु मुंह से राम राम रटते व हर समय परमात्मा की भक्ति करते है। परमात्मा की प्राप्ति होने पर सब संसार बहक कर उसकी निन्दा करता है। ऊपर के व्यवहार याने बाहर की करणियों से परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती है इसलिये झूंठा है, सब उसकी ही महिमा करते है। पंडितो व संसारियो से म:फ: है कि सतस्वरूप के: पद आ: पद का भेद तुम नहीं जानते हो।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (३८) 卐

पिंडत आंधो रे भेद न बुजे, ज्ञानी कूं नहीं सूजे रे लो।। टेर।।
राम नाम कहे बोहत ही अच्छा, चरचा जोर सरावे रे।
हर शिवरण प्रतापज जागे, चैन देख दुख पावे रे लो।। १।।
हीरो पारस कहे नर अच्छा, गुण की खबर न कोई रे।
अणभेदी कूं आंण बताया, परत न माने भाई रे लो।। २।।
भोग विलास कहे सब सांचो, कर सेण बोहत बखाणे रे।
वांका चैन रीत विध देखर, मूरख निंदा ठाणे रे लो।। ३।।
जे वा वस्तु गोद में आछी, सो बाला क्यों भुंडा रे लो।
कह सुखराम भेद बिन मूरख, निंदा करे कर डूबा रे लो।। ४।।

पंडित संतो से परमात्मा की प्राप्ति का भेद नहीं लेते, यही अंधापन है। ज्ञानी मत ज्ञान से परम पद की प्राप्ति नहीं कर सकते, यही ज्ञानी को नहीं सूजना है। राम नाम की बहुत महिमा करते है। चरचा में भी उसकी बहुत सराहना करते है। सतगुरु विधि से सुमरण करने पर निज नाम की जागृति होने पर उसके चेन देखकर दुखी होते है। हीरा पारस को मनुष्य अच्छा बताते है। लेकिन उसमें क्या गुण है यह नहीं जानते। बिना जानकार को हीरा पारस बताने पर वह मानने के लिये भी तैयार नहीं होता। भोग विलास को सब सच्चा बताते है और सब महिमा करते है। उसके चेन व गर्भ को देखकर मूरख उसकी निंदा करते है। जो वस्तु मूल में अच्छी है तो उसको धारण करने वाले खराब कैसे हुये। म:फ: है कि परमात्मा की प्राप्ति के भेद बिना मूरख उसकी निंदा कर डूब रहे है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (३९) 卐

ताकूं भूलो तुं आन ध्यावे, आ मुगत किसी विध पावे रे लो।। टेर।।
गरभ बास में रिछया किनी, नखचख तोही बणाया रे।
देवल मांड कियो हर अेसो, मांही रमण हर आया रे लो।। १।।
देवल की तजबीजज देखो, कैसो घाट हर ल्याया रे लो।
तीन लोक फिर सब हम देख्यो, अेसो काहूं न बणाया रे लो।। २।।
मांही जरोखा रे कैसा राख्या, न्यारा न्यारा गुण राखे रे लो।
देखो सुण लो बासा लेवो, अेक बाणी बोहो भाखे रे लो।। ३।।
खाडा खोचरा रे कांटा सुं टाले, जतन करे दिन राती रे।

तीन लोक में ज्यां त्यां फिरसी, साहिब रहे तेरे साथी रे लो।। ४।।
अे गुण तोसूं साहिब किया, फिर कियांई जावे रे।
तूं जड भूल रहया है साहिब, तोही रिजक दिरावे रे लो।। ५।।
कह सुखराम लाणती रे जीवां, पीव छाडर आनज वारो रे।
मिनखा जन्म अमोलख हीरो, कोडी साटे मत हारे रे लो।। ६।।

परमात्मा को भूलकर शरीर रूपी आन की भक्ति में लग रहा है तो मोक्ष की प्राप्ति कैसे होगी। गर्भवास में रक्षा करके नख चख व सारा शरीर बनाया है। शरीर रूपी देवल में आत्म चेतन रूप में आना ही मांही रमण आना है। शरीर की रचना को देखो कैसा सुन्दर बनाया है। तीन लोक में सब जगह फिर कर देखो ऐसा कोई नहीं बना सकता। ईन्द्रियो के अलग अलग स्थान बनाना ही झरोखा रखना है। उनसे अलग कार्य करना ही न्यारा न्यारा गुण रखना है। आंखो से देखना, कान से सुनना, नाक से सूंघना, मुंह से बोलना ये अलग अलग गुण है। तीन लोक में परमात्मा साथ रहते है, तथा खड्डा खोचरा कांटो से बचाकर शरीर की रात दिन रक्षा करते है। परमात्मा ने तेरे साथ ऐसा उपकार किया और करते ही रहते है। शरीर की आवश्यकता की पूर्ति सब करते है तो भी मूरख तूं उनको भूल रहा है। म:फ: है कि सब जीवों को धिक्कार है जो रामजी की भक्ति छोड कर आन धारी की महिमा करते है। मनुष्य जन्म अमूल्य हीरे के समान है। इसको व्यर्थ में मत खोवो यही कोडी साटे मत हारो।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (४०) 卐

सुण लिज्यो लो, सुण लिज्यो लो, ब्रह्म ज्ञान गम न्यारी रे।
एक दिशा नर थाप उथापे, जब लग भरम निहारी रे लो।। टेर।।
मरजादा कुल एक न माने, सब की झूंटण खावे रे।
ओ भी ज्ञानस मत की बेडी, ब्रह्म ज्ञान नहीं कुवावे रे लो।। १।।
सरग नरक कूं ऐकी बतावे, जीव ब्रह्म कहे सोई रे।
ओ भी फेर भरम मत थांबो, ब्रह्म ज्ञान नहीं कोई रे लो।। २।।
घरगृह छोड बना कूं जावे, घेर गरीबी आंणी रे।
ओ भी ज्ञान मता को भारो, ब्रह्म ज्ञान मत जांणी रे लो।। ३।।
ब्रह्म ज्ञान ज्यां हां ब्रह्म पिछाण्यो, उथापे थापे न कोई रे।
कह सुखराम उलट इण तन में, आप देखिया मांई रे लो।। ४।।

सब ही सुणो ब्रह्म प्राप्ति का ज्ञान सबसे अलग है। आकार को ब्रह्म बताते व आकार को ही माया बताते है। यही थापना ऊथापना है तब तक उनका भरम नहीं मिटता। कुल की मर्यादा तोडकर ब्रह्म की छांया लेकर सबकी झूटण खाता है। यह भी मत ज्ञान की बेडी है, ब्रह्म ज्ञान नही है। स्वर्ग नरक में ही ब्रह्म बताते, यही एक बताते है। जीव को ब्रह्म बताते है, यह ज्ञान भी भरम की मत है। ब्रह्म ज्ञान नहीं है। घर गृहस्थ को छोडकर वन में चला जाता है। गरीब बन जाता है। यह भी मन का ज्ञान है ब्रह्म ज्ञान नहीं है। ब्रह्म ज्ञान वही सच्चा है जिसने ब्रह्म का अनुभव किया है, न तो यह कहते है कि आकार ब्रह्म है, न ही यह कहते है आकार में चेतन ब्रह्म नहीं है, यही थाप ऊथापे

न कांई है। म:फ: है कि बंकनाल से उलटकर शरीर में ब्रह्म पद की प्राप्ति करते है। यह आप देखिया मांई है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (४१) 卐

धिन सोई है धिन सोई है, ज्यां सत संगत पाई रे।
नर नारी को कारण नांही, ज्यां हां ऊर अेसी आई रे लो।। टेर।।
गरेह में रहे सांच नर बोले, भजन रात दिन होई रे।
आत्म चीन संता कूं माने, तां सम और न कोई रे लो।। १।।
तन सो जगत मन सो बैरागी, करे शकल रहे न्यारो रे।
अंतर मांही अखण्ड लिव लागी, सोई हरि को प्यारो रे लो।। २।।
गरेह क्या त्याग क्या घर बन है, फेर फार नहीं कोई रे।
कह सुखराम सांची लिव लागी, तांही मुगत नर होई रे लो।। ३।।

वही धिन है जिन्होंने सत संगत की है, स्त्री व पुरूष का कोई कारण नहीं है। अन्तर में जिनके ऐसे विचार हो गये, गृहस्थ में रहते हुये सांच वचन बोलते है। रात दिन भजन करते है, संतो से ज्ञान धारण कर आत्मा से परमात्मा पद प्राप्ति करना ही आत्म चीन संता को मानना है व उनके बराबर कोई नहीं है। शरीर से संसार का कार्य करता है, मन से संसार का मोह नहीं करता, यही मन का बैरागी होना है। शरीर से सब काम सहज में करते हुये के: पद में ध्यान होना ही करे शकल रहे न्यारो है। शरीर में अखण्ड सत शब्द के ध्यान का अनुभव होना ही लिव लगाना है, वही परमात्मा की प्राप्ति करते है, यही हरि का प्यारा होना है। गृहस्थ, त्याग अवस्था, घर बन का कोई कारण नहीं है। जिनके लिव बंध भजन होता है उनको ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (४२) 卐

अवगत न्यारो है अवगत न्यारो है, वा गत बिरला जाणे रे।
माया रूप शब्द या घट में, ताकूं बोहत बखाणे रे लो।। टेर।।
नाभ कंवल में साहिब बैठा, करता निश दिन बोले रे।
रमता राम रमे घट भीतर, जडे ऊघाडे खोले रे लो।। १।।
काना सुणे नेण सुं देखे, घ्राण बासना लेवे रे।
रसणा शीश बिराजे सांई, परख साव सब देवे रे लो।। २।।
ब्रह्मण्ड मांय नाद सो गाजे, दशवो द्वार घर मांही रे।
कह सुखराम आद हर केवल, तठा परे सुण कवाही रे लो। ३।।

अवगत पद याने आ: पद अलग है, बिरले ही उसकी प्राप्ति करते है, शरीर में स्वांस के आधार पर जितने भी शब्द है सब माया के है। सब उन शब्दो की ही महिमा करते है। चेतनता के आधार पर स्वांस है। स्वांस नाभी से उठता है इसलिये चेतनता के आधार से बोलना ही नाभ कंवल में साहिब का बैठना व करता का बोलना है। रमता राम याने स्वांस चलता है तब ही शरीर के सब कार्य होते है, यहीं जडे उघाडे खोले है। कानो से सुनता है, नेत्रो से देखता है, नाक से बास लेता है। रसणा से सांस ऊसांस राम राम रटकर शब्द की जागृति होना ही सांई का बिराजना है। रसना

से ही सब स्वाद की परीक्षा होती है। दशवें द्वार व ब्रह्मण्ड में शब्द की गरजना होती है। म:फ: है कि केवल का पद इससे आगे है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (४३) 卐

बन पावो रे बन पावो रे, ज्यूं तुम निज फल खावो रे।
चेतन होय के चित कर खावे, अखि अमर होय जावे रे लो।। टेर।।
सूरत निरत की लाव बणावो, चित को चडस करीजे रे लो।
मन का बलद हुक्म कर हाली, सोऊं नीर भरीजे रे लो।। १।।
पत पेजाली प्रेम घुरलिया, खांभी निज मन होई रे।
झेले चडस समजणी सुन्दर, बैल सांस लिव जोई रे लो।। २।।
ओऊं पाणतियो ओ तन बन है, सोज सोज सब पावे रे।
उलटा नीर बिरछ शिर चाडो, ज्यूं तुम निज कण खावे रे लो।। ३।।
कह सुखराम सांचकर हांसल, खेती अगम निपावो रे।
अब के साख पकीजे तेरी, तोटो कदे नहीं आवे रे लो।। ४।।

शरीर से सतगुरु का ज्ञान धारण करना ही बन का पाना है और परम पद की प्राप्ति होना ही निज फल का खाना है। चित से याद कर हर समय भजन करना ही चेतन होय के चितकर खाना है। अक्षय अमर पद की प्राप्ति होना ही अखि अमर होय जावे रे है। सूरत निरत लगाकर भजन करना ही लाव बनाना है। चित से चिन्तन करना ही चडस चलाना है। मन को भजन में लगाना ही मन का बलद हुक्म कर हाली है। उस्वांस में भजन करना ही नीर भरना है, विश्वास रखकर प्रेम से भजन करना ही पंजाली व घुरलिया है। आत्मचेतन खांभी है, सूरत भजन का आनन्द ले रही है। यही झेले चडस समजणी सुन्दर है। सांस उसांस में लिव बंध भजन का होना ही बेल सांस लिव जोई है। ओऊं याने सांस में भजन करना ही पाणतियो है। शरीर ही बन है, शब्द का शरीर में सब जगह अनुभव होना ही सोज सोज कर पाना है। शब्द का बंकनाल से उलटकर ब्रह्मण्ड व पार ब्रह्म से ऊपर अनुभव होना ही उलटा नीर बिरछ शिर चाडो है। जिससे परम पद की प्राप्ति होना ही निज फल खाना है। सतशब्द के द्वारा आ: पद की प्राप्ति होना ही हासल व अगम में खेती उपजाना है। आ: पद में लय होने पर जन्म मरण में नहीं आना ही साख पक कर तोटा नहीं आना है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (४४) 卐

अरट ऐसो बेलो ऐसो, मांय नहीं पडे पंजाली रे।
निश दिन रेण पलक नहीं छूटे, पावे है जाब संभाली रे लो।। टेर।।
राम की लाठुस लिव को घेरा, बिध बांगडा किया रे।
मन की माल सूरत की घडियां, जुगत जूण कर दिया रे लो।। १।।
प्रीत पानडी प्रेम पारछो, जीव रोडियो फेरयो रे।
ओऊं सोऊं का बलदिया, हाली निज मन घेर रे लो।। २।।
बंकनाल की बेल चलाई, नीर गिगन घर आवे रे।

काया खेत कमायो आछो, नांव बीज कण बायो रे लो।। ३।।
ज्ञान खोडा रोपत पाणतियो, सूरत खामणा काढे रे।
काया खेत पाय विपोता, नीर आकाशा चाढे रे लो।। ४।।
दोली बाड खिम्या की किवी, जरणा जतन करायो रे।
कह सुखराम अब खेतज पाको, हेल देर अन्न आयो रे।। ५।।

सांस उसांस में भजन होना ही अरट बेल चलना है, निरन्तर जल का चलना ही पंजाली नहीं है। रात दिन एक क्षण भी भजन नहीं छूटता है। जब संभालते है तब भी भजन चलता रहता है। ज्ञान की लाठ व लिव बंध भजन होना ही घेरा है, सतगुरु विधि से भजन करना ही विध बांगडा करना है। मन व सूरत लगाकर भजन करना ही माल व घडिया है, संसार का मोह छोडना ही जुगत का जूण करना है। प्रीति प्रेम से भजन करना ही पानडी व पारछो है, जीभ से भजन करना ही रोडियो फेरना है। सांस ऊसांस में भजन करना ही ओऊं सोऊं का बलदिया करना है। आत्मचेतन ही हाली है। शब्द बंकनाल में उलटकर गिगन में पहुंचता है यही बैल चलाना व गिगन घर आना है। शरीर में अच्छे अच्छे लक्षण धारण करना ही काया खेत का अच्छा कमाना है। सांस ऊसांस में भजन कर सतशब्द की जागृति होना ही नांव बीज कण बाना है। ज्ञान धारण करना ही खोडा है। विश्वास रखना ही पाणतियो है, सूरत से ध्यान करना ही खामणा काढना है। शरीर में सब जगह शब्द का अनुभव होना ही काया खेत पाय विपोता है। ब्रह्मण्ड व पार ब्रह्म से ऊपर शब्द का अनुभव होना ही नीर आकाशा चाढे है। क्षमा की डोली व बाड बनाई। जरणा धारण करना ही जतन करना है। म:फ: है कि रग रग रोम रोम नाड में खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड पार ब्रह्म व के: पद में शब्द का सब जगह अखण्ड अनुभव होना ही खेत पाक कर हेल देकर अन्न आना है।

卐 हरजस पद राग जोग धनाश्री (४५) 卐

माया है रे या तो माया निरबख, तामे फेर न फारा रे लो।। टेर।।
थिर अस्थिर सो सब ही माया, सुण ज्ञानी कहूं तोई लो।
कला आण कर कारज सारे, सो थिर कहो किम होई लो।। १।।
बडो गेल सूं इचरज होवे, भारी सूं बोहो भारी लो।
माया है रे ऊ साहिब नांही, प्रगटयो आंण विचारी लो।। २।।
उलटे चढे सो चेतन माया, ब्रह्म के जोडे माया लो।
सतलोक ही माया पुंचे, बिन माया कुण आया लो।। ३।।
कह सुखराम ब्रह्म हुवो माया, माया ब्रह्म हुवे सोई लो।
सतशब्द में जाय मिले है, जब नहीं पलटे कोई लो।। ४।।

माया है या तो निरबख याने सिर्फ माया है। इसमें किसी तरह का फरक नहीं है। जो थिर है याने सत है वह भी माया है, जो अस्थिर है याने असत है वह भी माया है। हे ज्ञानियों मैं कहता हूं जो सुनो, जो कला प्रगट होकर किसी का कार्य करती है वो थिर कैसे रह सकती है। बडी ईचरच पैदा करने वाली बात जो बहुत भारी से भारी हो वह माया है, वो ब्रह्म नहीं है। विचारो वह प्रगट है। बंकनाल से उलटकर चेतन शरीर रूपी माया से ही ऊपर चढती है। ब्रह्म के साथ माया है।

आत्म चेतन सतशब्द के साथ सतलोक याने के: पद आ: पद में पहुंचता है, यही सतलोक ही माया का पहुंचना है। बिना माया के कौन आया है। माया के साथ ब्रह्म व ब्रह्म ही माया के साथ है। जब सतशब्द में जाकर मिलता है फिर नहीं पलटता है याने जन्म मरण नहीं होता है।

卐 हरजस पद राग जेजेवन्ती (१) 卐

गुरु जी कारज किस विध किजे। जहां जावुं जहां सजेहन कांई, नाम किसी विध लिजे।। टेर।।
गृह जे बांध ऊधम मैं ठाणु, तो चिन्ता बोहो उठे।
त्यागी होय मांगणे जावूं, तो मन्छा मारी लूटे।। १।।
बन में जाय बैठरूं स्वामी, तो मुझे खुध्या सतावे।
कंद मूल जो खिण खिण खावूं, तो मन धीर न आवे।। २।।
मन कूं घेर ताव दूं भारी, तो तन सहे न कोई।
ललफल की हर माने नांही, और न सूजे है मोई।। ३।।
पांचा मांय जाय जो बेसुं, तो मन जोड चलावे।
कह सुखराम अकेला बैठा, निंदरा आलस आवे।। ४।।

गुरुजी से प्रार्थना करते है कि मैं कारज याने भक्ति कैसे करूं, जहां जहां पर जाता हूं मुझ से भक्ति नहीं होती, कैसे लेवुं। गृहस्थ में रहकर धंधा करूं तो बहोत चिन्ता होती है, त्यागी होकर मांगने जाता हूं और कामना की पूर्ति नहीं होती, यही मंछा का लुटना है। बन में जाकर बैठ जाता हूं तो मुझे भुख सताती है। कंद मूल फल लाकर खाता हूं तो भी मन को धैर्य नहीं आता है। मन को वश में करके भजन करता हूं तो शरीर सहन नहीं करता। ललफल के साथ भजन करूं तो परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती और मुझे कुछ भी समझ में नहीं आता। पांच आदमियों के बीच में बैठता हूं तो मन वाद विवाद करता है तथा म:फ: है कि अकेला बैठने पर निद्रा व आलस आता है।

卐 हरजस पद राग आसा (१) 卐

बांदा से नर मोक्ष न जावे। सतस्वरूप आनन्द पद कहिये, ओ कोई भेद न पावे।। टेर।।
सुरगुण भक्त शकल जग जांणे, निरगुण कोईएक ज्ञानी।
यह दोनुं नुगरा इण जग में, पद की भक्त न जांणी।। १।।
निरगुण हंस को पिता कहिजे, सुरगुण सो माता होई।
सतगुरु बिना मोक्ष किम पहुंचे, कहता है सब कोई।। २।।
बेद भेद सबने जस गायो, मात पिता को भाई।
सतगुरु गम ना जाणी याने, सब नुगरा जग मांही।। ३।।
बेद भेद का हुवे ऊपासी, जब जग केहे कुछ नांही।
सतगुरु भेद आनन्द पद ईचरज, गलो करे जुग मांही।। ४।।
ज्यो संसार छाड नर कोई, संत शरण कोई जावे।
जब सब गांव आंण कर बरजे, ओ कांई करम संभावो।। ५।।

पांच नांव सुण चेलो होवे, जे कुल नहीं छोडे कोई।
तब लग जहान कोई नहीं बरजे, इयों बेद उपासक होई।। ६ ।।
स्वामी हुवा जगत सब कांपे, मात पिता कुल रोवे।
इयों ज्ञान में इचरज सांसो, नांव उदे ज्हां होवे।। ७।।
सुरगुण निरगुण दोनुं भक्ति, नहीं जहांन से जुओ।
नाम कला ऊपदेश संभावो, तब बैरागी हुवो।। ८ ।।
सुण उपदेश हमारो सन्तो, माया ब्रह्म सब रोवे।
कह सुखराम बाप ब्रह्म, ओ नहीं बैरागी होवे।। ९ ।।

वे मनुष्य मोक्ष की प्राप्ति नहीं करेंगे जिन्हें सतस्वरूप आः पद की प्राप्ति का भेद नहीं मिला है। सुरगुण भक्ति को सारा संसार करता है। निरगुण याने ब्रह्म की भक्ति कोई ज्ञानी करते है। जब तक केः पद आः पद की भक्ति नहीं करते, तब तक दोनो नुगरे है। निरगुण याने ब्रह्म हंस का पिता सुरगुण याने माया हंस की माता है, लेकिन सतगुरु के बिना मोक्ष की प्राप्ति कैसे हो सकती है। सब ही यही कहते है। वेद व अष्टांग योग में माया ब्रह्म की महिमा करी है। केः पद आः पद का ज्ञान वेद व योग के ज्ञान में नहीं है इसलिये सब नुगरा है। वेदो व योग का साधन करता है तब तक संसार कुछ नहीं कहता है लेकिन सतगुरु से भेद लेकर आः पद की भक्ति करता है तो सब निंदा करते है। जैसे बैराग्य उत्पन्न होने पर घर को छोडकर संतो की शरण में जाता है, तब सब गांव वाले आकर रोकते है यह क्या काम कर रहा है। पांच नांव सुनकर चेला हो जाता है और कुल को नहीं छोडता तो उसे कोई नहीं रोकता, क्योंकि वेदो के ज्ञान में ही है। वैराग्य धारण करके स्वामी बन जाते तो सारा संसार डरता है, माता पिता कुटुम्बी सब रोते है, ऐसी ही निज नांव की जागृति होने पर माया ब्रह्म के पद से अलग हो जाता है यही इचरच सांसा है। सुरगुण निरगुण भक्ति माता पिता की है। संसार के कुल से अलग होने की आवश्यकता नहीं है। सतशब्द का ज्ञान सतगुरु याने केवली भगवंतो की अणभै वाणी से धारण कर माया व ब्रह्म के पद से अलग होना ही नांव कला उपदेश संभाकर बैरागी होना है। सतगुरू के ज्ञान से माया व ब्रह्म के पद से अलग होकर केः पद आः पद की प्राप्ति करना ही माया ब्रह्म का रोना है। मःफः है कि ब्रह्म हंस का पिता है, पिता देश पारब्रह्म से परमपद की प्राप्ति नहीं होती, यही पारब्रह्म का बैरागी नहीं होना है।

卐 हरजस पद राग आसा (२) 卐

बांदा केवल को घर न्यारो। करामात क्रिया सब झूंठी, सांचो नांव विचारो।। टेर।।
करामात सुं सब कोई रीजे, ज्ञानी दरशण सारा।
ओ सुण अरथ न सूजे किस कूं, माया चरित्र विचारा।। १ ।।
माया जहां राम सुण नांही, राम जहां नहीं माया।
ओ सुण भेद न जांणे कोई, परचा कहां सूं आया।। २ ।।
देखो भूल ज्ञानी दरशण में, परचा शकल सरावे।
जिण जन कूं माया बिच मारयो, तांकी शोभा गावे।। ३ ।।
ब्रह्म लोक जाता कूं बिचे, माया है बटफाडी।

सतगुरु शरण तत्त ज्हां भ्यासे, जिण जन पटक पिछाडी।। ४।।
माया थुल ना अटके कोई, आ तो उलटी तारे।
करामात परचा जो देवे, वहां गल फांसी डाले।। ५।।
तत्त ज्ञान बिन यूं हुवे जुग में, जिण आ शोभा गाई।
जक्त मुक्त सब ही इण मांही, जहां परचा हुवो भाई।। ६।।
खोटा खरा शकल जग जाणे, तत्त पंथ पायो नांही।
तत्त तो झीण झीण सुंई झीणो, माया बडी कहाई।। ७।।
कह सुखराम तत्त जहां पायो, वे परचा नहीं माने।
उलटर नांव चढे गढ ऊपर, तत्त समाध बखाणे।। ८।।

के: पद करामात क्रियाये से अलग है। सत तो एक निज नांव है याने ने: अँच्छर है। करामातों से ज्ञानी व दरशणी सब राजी होते है। यही नहीं समझते है कि यह सब माया के चैन है। माया है जहां राम नहीं है। जहां रामजी है वहां माया नहीं है। लेकिन यह बात जानते नहीं है कि ये परचे कहां से आते है। सब ज्ञानी दरशणियो की भूल देखो परचों की महिमा करते है, जिस जन को माया ने बीच में ही रोक लिया है। उसकी शोभा करते है। ब्रह्म लोक की प्राप्ति में जाने के लिये माया रोकने वाली डाकू है, याने दो फाटा करने वाली है। सतगुरु का अणभै ज्ञान धारण कर के: पद आ: पद की प्राप्ति की है वही माया से अलग हुये है। यही पटक पछाडना है। स्थूल शरीर से ही आ: पद की प्राप्ति हो सकती है। स्थूल शरीर माया का ही है। माया के शरीर से ही के: पद की प्राप्ति होती है यही उलटी तारना है। करामात परचा देने वालो को के: पद आ: पद की प्राप्ति नहीं होती, यही माया की गले में फांसी डालना है। ब्रह्म ज्ञान के बिना जो होते है। वे जुक्ति मुक्ति परचों की शोभा करते है जो कि माया के पद में है। परचा देने वालो को संसार बडा समझता है लेकिन उन्हें ब्रह्म पद की प्राप्ति का रास्ता नहीं मिला है। तत याने ब्रह्म का पद सूक्ष्म से सूक्ष्म है, माया बडी से बडी है जो दिखने में आती है। म:फ: है कि जिनको ब्रह्म पद की प्राप्ति हुई वे परचो को प्रधानता नहीं देते है। बंकनाल से उलटकर जो निज नांव गढ पर चढता है, तथा ब्रह्म के पद में जो सता समाधि लगती है, उसकी महिमा करते है।

卐 हरजस पद राग आसा (३) 卐

बांदा जुगत मुगत परचा सो माया। तत ज्ञान सोजी बिन पूरी, कोई नहीं जाण न पाया।। टेर।।
कत्रश्याम प्रहलाद श्री यादु, सोई बीच लुटाणा।
और संत की कोण चलाई, जहां निज नांव न जांणया।। १।।
जोगी तपी ऋषि सन्यासी, अे माया का चेला।
पूजा पाठ ध्यान शक्ति को, तत्त तज फिरे अकेला।। २।।
अष्ट सिद्ध नो निद्ध अे तत्त आडी, ज्ञान ध्यान सब लोई।
सतगुरु शरण भेद यो पावे, और न जांणे कोई।। ३।।
माया बडी अपर बल साधु, सब घट राख्या छाई।
तत्त भेद यो प्रगटे न्यारो, भ्यास न सके मांही।। ४।।

कह सुखराम ब्रह्म अर माया, दोय कहे सब कोई।
जो साहेब परचा या देवे, माया गुण को मांई।। ५ ।।

जुक्ति मुक्ति परचा सब माया के पद में है, तत याने ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति के बिना परम पद की प्राप्ति कोई नहीं कर सकता। कार्तिक स्वामी, प्रहलादजी, श्रीयादे ब्रह्म के नाम की भक्ति करके परम पद की प्राप्ति नहीं कर सके, यही बीच में लुटाणा है। दूसरे संत तो परमपद की प्राप्ति कैसे कर सकते है, जो निज नांव सतशब्द की भक्ति नहीं करते, योग का साधन, तप करने वाले ऋषि व सन्यासी सब माया की भक्ति करते है। पूजा पाठ ध्यान सब माया का करते है। ब्रह्म के ज्ञान को छोडकर माया की भक्ति करना अकेला फिरना है। आठ सिद्धि नो निद्धि ज्ञान ध्यान से ब्रह्म पद की प्राप्ति नहीं होती, यही आडी होना है। सतगुरु याने संतो के अणभै ग्यान की शरण से ही ब्रह्म पद की प्राप्ति का भेद मिलता है। दूसरा कोई नहीं जानता है, माया बडी बली है। उसने जो बैरंग पर्चे को मान्यता देते है उनको वश में कर रखा है। तत याने निज नांव माया के पद से अलग है। माया का सुख चाहने वाले उसे नहीं पा सकते। सब यही कहते है कि माया व ब्रह्म के पद दो है अगर ब्रह्म के पद में परचे होते है तो माया का गुण क्या है। परचे माया के पद में है।

卐 हरजस पद राग आसा (४) 卐

बांदा नेः अँच्छर सुण न्यारा। सतगुरु मेहर नांव घट जागे, तब कोई लखे विचारा।। टेर।।
श्रवण सुने नेण सुं देखे, मुख सूं केहे कुछ कोई।
अनंत बास तन मांही मेहेके, सो पण नांव न होई।। १ ।।
ओऊं सोहं शब्द अजपो, मन कर सिंवरे कोई।
राम राम सिंवरे है कोई, अेई नांव न होई।। २ ।।
देहे धारी सो सब ही माया, आनंद ब्रह्म नहीं कोई।
क्या अवतार देव अर दाणु, सब ही माया होई।। ३ ।।
नेण नासका श्रवण बुंदे, मुख के चुपक लगावे।
बाजा सुणे ऊजाला देखे, यूं निज नांव न पावे।। ४ ।।
त्राटक ध्यान खेचरी मुद्रा, रेचक पूरक साजे।
नेः अंच्छर यूं भेद न पावे, पवन गिगन चढ गाजे।। ५ ।।
नेती करे धोतिया कोई, आंता काढ पखाले।
नेः अंच्छर वो कोई न पावे, भावे तप कर जाले।। ६ ।।
बांधे मूल नव दरवाजा, पवन देत चडाई।
करामात देही पण राखे, नांव न पावे भाई।। ७ ।।
ये सब ध्यान सिधायत होई, तामें भूल मत भाई।
आंणद लोक नेः अंच्छर पूंते, और न पूंचे कोई।। ८ ।।
कह सुखराम सुणो नर नारी, ज्ञानी दरशण सारा।
सतगुरु शरण प्रेम सुं जागे, वो निज नांव विचारा।। ९ ।।

नेः अंच्छर याने सतशब्द सबसे अलग है। सतगुरु की मेहर याने संतो के अणभै ग्यान की मेहर

हंसो पर होती है तब सत शब्द की जागृति होती है। जब उसका अनुभव होता है, कानो से सुनता है, नेत्रो से देखता है, मुंह से कुछ भी कहता है, शरीर में अनेक प्रकार की सुगंधियां आने लग जाती है वो भी सतशब्द नहीं है। ओऊं सोऊं का जपा अजपा करते है, मन से सुमरण करते है, वाणी के द्वारा बिना भेद से राम राम रटते है, यह भी सतशब्द नहीं है। शरीर धारी सब ही माया है। आनन्द ब्रह्म कोई नहीं है, चाहे अवतार हो, देवता हो, राक्षस हो, सब माया है। नेत्रों व नासका को बंद करते है, मुंह से मौन धारण करते है, शरीर में बाजा सुनते है, प्रकाश देखते है। इस प्रकार से निज नांव की प्राप्ति नहीं होती है। त्राटक ध्यान करते है, खेचरी मुद्रा, रेचक, पुरक साजते है। इस तरह से साधन करके श्वांसा गिगन याने ब्रह्मण्ड से चढकर गरजता है लेकिन निज नांव की प्राप्ति नहीं होती। नेती करते है, धोतियां करते, आंतो को पखालते है, लेकिन नेः अंच्छर की प्राप्ति नहीं होती। चाहे शरीर को तपस्या करके जला डालो। नो दरवाजो को बन्द करके स्वांसा को ब्रह्मण्ड में चढा देते है, करामात मिल जाती है, शरीर को रख लेते है लेकिन निज नांव की प्राप्ति नहीं होती। यह सब ध्यान सिद्धियो की प्राप्ति कराते है। इनमें मत लागो। आनन्द लोक में नेः अंच्छर ही पहुंचता है और नहीं पहुंचता है। मःफः है कि सब स्त्री पुरूष ज्ञानी व दरशणी सुनो, सतगुरु का अणभै ज्ञान धारण कर प्रेम से भक्ति करने पर ही निज नांव की जागृति होती है।

卐 हरजस पद राग आसा (५) 卐

बांदा तत्त राज ओ होई। माया चैन एक नहीं माने, ना आवे वो कोई॥ टेर॥
आनन्द लोक में माया नांही, तो तत्त में किम मावे।
काया मांय स्वभाव जना को, सो कह बचना में आवे॥ १॥
आणंद ब्रह्म को नांव हंस रे, तत्त स्वभाव कहावे।
वहां माया जो जाय न सके, तो यांही निकट न आवे॥ २॥
ज्यां की सभा मांय कोई जावे, सगो सगे के कोई।
जात जात की चाल एक रे, यूं तत रीत कहूं तोई॥ ३॥
तत्त नांव की सता बताऊं, अे सुण परचा होई।
भरम करम जग का सब बन्धन, यां सु डरे न कोई॥ ४॥
उलटर नांव चढे गढ ऊपर, सेहज समाधी लागे।
सांसो नहीं मोख दिश कोई, नेक भरम नहीं जागे॥ ५॥
लाखां ज्ञान आगला तोलर, आगी समझ बतावे।
अेकी अरथ ईसो ले डारे, किस कूंई अरथ न आवे॥ ६॥
दाणु देव गोडियो बेदर, परचा अेई दे भाई।
आणंद ब्रह्म को ज्ञान पूछियां, याने खबर न कांई॥ ७॥
बेद भेद दोनुं जग मांही, ज्ञानी अरथ बतावे।
छुछम बेद नांव नेः अंच्छर, देव ज्ञानी नहीं पावे॥ ८॥
कह सुखराम झूंठ सो परचा, मत रिजो नर कोई।
उलटर नांव चढे सो सांचो, तत्त सत सुण होई॥ ९॥

ब्रहम के निज नांव की प्राप्ति का यह प्राक्रम है। न माया का चैन चाहते है, न माया के चैन होते है। आनन्द लोक में माया नहीं पहुंचती तो तत याने निज नांव में कैसे आ सकती है। जैसा शरीर का स्वभाव होता है वैसा ही वचनो से कहने में आता है। आनन्द ब्रह्म का स्वभाव तो तत याने सतशब्द है, आनन्द ब्रह्म की भक्ति करने वालो को हंस कहते है। वो आनन्द ब्रह्म का नांव है। इसलिये आनन्द लोक में माया नहीं पहुंच सकती तो हंस व सतशब्द के पास कैसे आ सकती है। जिसकी सभा होती है उसमें वही जाता है जैसे सगा सगे के पास जाता है। जाति जाति की एक रीति, इसी प्रकार तत याने सतशब्द की रीति है। जो सत की भक्ति करेगा वे सत में ही जायेगा। तत याने सतशब्द का प्राक्रम बताता हूं और उसके ये लक्षण है। भरम करम संसार के बंधन से नहीं डरता है। सतगुरु विधि से भजन कर बंकनाल में उलटकर गढ याने ब्रह्मण्ड व पार ब्रह्म से ऊपर सता समाधि लगती है, उनको मोक्ष की प्राप्ति में कोई संशय व भरम नहीं होता है। दूसरे ज्ञान करने वाले अपने ज्ञान की लाखो बाते बताते है। कई तरह से समझाते है लेकिन सतगुरु विधि से भजन करने वाले एक बात ही ऐसी कहते है कि उसका किसी को भी जवाब नहीं आता। राक्षस, देवता, गोडिया याने भाव आने वाले तथा बेदर याने बाजीगर, ये भी परचा देते है। आनन्द ब्रह्म का ज्ञान पूछने पर ये नहीं बता सकते, क्योंकि यह नहीं जानते है। वेदो का ज्ञान व योग के ज्ञान का ज्ञानी अरथ बता देते है लेकिन छुछम वेद याने ब्रह्म का निज नांव याने सतशब्द का भेद देवता व ज्ञानी नहीं प्राप्त कर सकते। म:फ: है कि परचे झूंठे है इसमें राजी मत होवो। उलटकर जो नांव चढता है तो तत याने ब्रह्म का निज नांव सत है।

卐 हरजस पद राग आसा (६) 卐

बांदा मोख जिके जन जासी। ज्यारे नांव उदे हुवो घट में, बोहोर न भव जल आसी॥ टेर॥

कुदरत कला नांव की जागे, ने: अंच्छर तन मांही।
केवल बीज असल ओ सन्तो, और उपावन कांई॥ १॥
जाग्यो नांव तन थर हरियो, जद तद केवल पासी।
लाखां गुना खून पड जावे, तको मिनखा देह आसी॥ २॥
जप तप नेम भक्ति नौधा सूं, ओऊं सोऊं मांही।
माया लिया बीज सो जागे, केवल को ओ नांही॥ ३॥
पीठ फाड ऊंचो चढ जावे, सो ने: अंच्छर होई।
पूर्व घाट चढे सो ओऊं, सोऊं कार कहूं तोई॥ ४॥
मन सूं कदे पदी सो बंछे, गत मुक्त की कांई।
तो सुण मोख कबहूं नहीं पावे, फरक बीज के मांही॥ ५॥
केवल बीज एक माया को, दोय बीज जग मांही।
जिण जिण हाथ आवियो जैसो, लोक तिके हंस जाही॥ ६॥
मन जाण्या को कारण नांही, ना अंछा सूं खावे।
शिवरण भोग रीत गत जांणे, नार पुरूष बण आवे॥ ७॥
मैथुन एक यूं भजन एक ही, यूं कुदरत कला सारी।

ज्यूं लडकी सुण लडका होवे, यूं नाद बिंद विध न्यारी॥ ८॥
छूटे धात मैथुन में पाछे, सो नग सुण बण आवे।
यूं शिवरण में विध है न्यारी, सतगुरु भेद बतावे॥ ९॥
पडवा आद तिथ सुं गिणीयां, एक पुरूष एक नारी।
जिण संग भोग करत गरभ थांबे, सो नग बणे विचारी॥ १०॥
सांस ऊसांस तिथ अे जाणो, एक बीज एक पडवा।
या बीच नाद निरालो होवे, ज्यूं लडको व्हे पडवा॥ ११॥
सांस सांस शिवरण नर कर है, तामें या विध जागे।
नाद बिंद भेला चढ जावे, ध्यान गिगन में लागे॥ १२॥
सुणो ऊसांस संग लिव लागे, रटण अंत उकाऊ।
तो सुण नाद निरालो जागे, चढे पीठ दिश भाऊ॥ १३॥
कह सुखराम सुणो सब ज्ञानी, आ विध सुण लो आई।
इण कल बिना नाद सुण न्यारो, चढे कबहूं नहीं भाई॥ १४॥

वेही हंस मोख में जायेंगे जिनके घट में निज नांव की जागृति हुई है। वे ही जन्म मरण में नही आयेंगे। शरीर में ने: अंच्छर की जागृति होती है, यही नांव की कुदरत कला जागना है। यह केवल पद की प्राप्ति का बीज है और उसकी प्राप्ति के लिये दूसरा साधन नहीं है। नांव की जागृति होने के ये लक्षण है। शरीर थरथराता है और उसको के: की प्राप्ति होगी। अणभोले में लाखो दोष भी हो जावे तो भी मनुष्य जन्म ही मिलेगा। जप से, तप से, नियम धारण करने से, नवधा भक्ति करने से, ओऊं सोऊं का जपा अजपा करने से, माया के बीज की जागृति होती है, यह केवल बीज नहीं है। पीठ के रास्ते बंकनाल में ऊंचा चढता है वह ने:अंच्छर है। पूरब की तरफ चढता है वह ओऊं सोऊं याने अंच्छर ब्रह्म है। मन से चाहता है कि मेरी गति मुक्ति हो जाये तो भी कभी मोक्ष नहीं होती, कारण साधन माया का है, यही बीज में फरक होना है। एक केवल का, एक माया का ये दो बीज संसार में है। जो जो हंस जैसा जैसा साधन करता है वैसे वैसे ही लोक की प्राप्ति होती है, न मन जानने से होती है, न इच्छा से होती है। शिवरण की विधि है वही भोग की विधि है, इस विधि को जानता है जिससे स्त्री-पुरूष बनते है। मैथुन की विधि एक है, उस एक विधि से लडका व लडकी होता है। इसी प्रकार भजन करने की विधि एक है लेकिन एक विधि में शब्द चेतन से अलग हो जाता है और एक विधि में शब्द चेतन के साथ रहता है। मैथुन से धात छूटने पर या तो लडका होता है या लडकी होती है। इसी प्रकार भजन की विधि अलग है। इसका भेद सतगुरु से मिलता है। पडवा याने एकम व दूज की तिथि एक पुरूष की व एक स्त्री की है, जिस तिथि में गर्भ ठहरता है, याने स्त्री की तिथि सांस में ठहरने पर लडकी होती है और पुरूष की तिथि याने पुरूष के उसांस में बिंद छिटकने पर स्त्री के गर्भ ठहरने पर लडका होता है। इसी प्रकार भजन में सांस उसांस दो तिथियां है याने सांस तो दूज है और उस्वांस पडवा याने एकम है। शब्द चेतन माया से अलग होता है यही एकम तिथि में लडका का होना है। सांस सांस में भजन करने से यह विधि होती है, शब्द चेतन माया शामिल रहते है और गिगन में ध्यान लगता है। जब सांस उसांस में खूब भजन करते है तो शब्द बंकनाल में उलटकर चेतन माया से अलग हो जाता है, यही नाद निराला जागना है।

म:फ: है कि सब ही ज्ञानी इस विधि को सुण लो, सांस ऊसांस में भजन के बिना सतशब्द अलग नहीं चढता है।

卐 हरजस पद राग आसा (७) 卐

बांदा ओई कोई भेद बतावे। अंच्छर बिना बिन्द बिना उलटर, गिगन कौन विध जावे॥ टेर॥

एक नाद बिन्द सो भेला कहिये, एक नाद सो जुवा।
एक ने: अंच्छर न्यारो प्रगटे, एक अंच्छर संग हुवा॥ १॥
एक तत ज्ञान कह हम चिन्यो, एक समझ सूं न्यारो।
एक ध्यान उतर चढ जावे, एक अखण्ड विचारो॥ २॥
मुद्रा एक समझ संग लागे, एक कला बिन भाई।
एक अखण्ड लिव सो लागी, एक खीरे खिर जाई॥ ३॥
एक सता समाध सूरत संग, एक सूरत से ही न्यारी।
एक निद्रा मांय मिट गई नासत, एक अखण्डत प्यारी॥ ४॥
एक समाध पवन संग लागे, एक नकेवल भाई।
एक पोहर सवा लग वारे, एक जुगा लग भाई॥ ५॥
कह सुखराम सुणो सब ज्ञानी, याहां रा सुख बतावे।
सुणर कह सो झूंठा जग में, पहुंच खबर कोई लावे॥ ६॥

ऐसा कोई भेद बतावे, बिना ने: अंच्छर के चेतन बंकनाल में उलटकर गिगन याने ब्रह्मण्ड से ऊपर कौन विधि से जाता है। एक में तो शब्द व चेतन माया साथ रहते है और एक शब्द चेतन माया से अलग हो जाता है। एक शरीर व स्वांसा से अलग ने: अंच्छर प्रगटता है, एक शरीर में चेतन माया के आधार पर अंच्छर रहता है, एक तत याने ब्रह्म को ज्ञान द्वारा अनुभव किया, एक समझ से न्यारा के: पद में सतशब्द का अनुभव हुआ, एक ध्यान उतरता व चढता रहता है और एक हर समय अखण्ड रहता है। एक ध्यान समझ के साथ लगता है। एक समझ से न्यारा लगता है। एक अखण्ड लिव लगी रहती है। एक लगती रहती है और टूटती रहती है। एक समाध ब्रह्मण्ड में सूरत के साथ लगती है। एक ब्रह्मण्ड व पार ब्रह्म से ऊपर के: पद में सूरत से अलग सत्ता समाधि लगती है। एक निद्रा में मिट जाती है और एक अखण्डित रहती है, एक समाधि स्वांसा के साथ लगती है और एक स्वांसा से अलग निकेवल लगती है। एक सवा पहर याने चार घंटे तक समाधि रहती है। एक समाधि जुगो तक लगती है। म:फ: है कि सब ज्ञानी सुणो इनका सुख अलग अलग बताओ, सुनकर कहने की बात झूंठी है और पहुंचकर अनुभव कर कहते है वो सच्चे है।

卐 हरजस पद राग आसा (८) 卐

बांदा से जन पूरा जोगी। पहुंचकर कह सो सांचा जन है, सुणर कह झूंठा रोगी॥ टेर॥

एक घाट पूरब को कहिये, एक पिछम को होई।
पूरब चढे सो कुण शब्द रे, कहो पिछम को मोई॥ १॥
पूरब घाट चढे सो अंच्छर, कहो कहां सूं आवे।
पिछम घाट चढे जो ऊंचो, कहो कहां सूं लावे॥ २॥

पूरब दिशा चढे सो ऊंचो, किसो नांव कहो भाई।
पिछम दिशा पहाड चढ जावे, किसी रीत कर मांई॥ ३॥
कह सुखराम सुणो सब ज्ञानी, अे न्यारा कर लावे।
केवल बीज, एक माया को, सब न्यारो कर पावे॥ ४॥

वे जन ही पूरे जोगी है जो पहुंचकर अनुभव कर कहते है वो सच्चे है, सुन कर कहने वाले झूंठे है। एक साधन पूरब का व एक पिछम का है, पूरब की तरफ चढता है वो कौनसा शब्द है तथा पिछम की तरफ चढता है वो कौन सा शब्द है। पूरब के साधन को जो अंच्छर चढता है वो कहां से आता है। पिछम के रास्ते जो ऊंचा चढता है वो ने: अंच्छर कहां से आता है। पूरब के रास्ते में ऊंचा चढता है वो कौनसा नांव है। पिछम के रास्ते मेरूडण्ड को पार करता है वो कौनसी रीति है। म:फ: है कि सब ज्ञानी सुणो, इन सबका वर्णन करने पर ही केवल बीज व माया के बीज की अलग अलग मालूम पडती है।

卐 हरजस पद राग आसा (९) 卐

बांदा ओ अरथ यां को होई। नाम न्यारो भेद न्यारो, सतगुरु न्यारा जोई॥ टेर॥
पूरब घाट चढे सो अंच्छर, बिन्द मांय सूं आवे।
सोऊं ओऊं जाप अजपो, सुण नाद लग ओ जावे॥ १॥
पिछम घाट होय नाम चढे रे, नाद मांय सूं आवे।
नाद अनाद लांग सत्त आगे, आनन्द लोक में जावे॥ २॥
पूरब दिसा चढे सो भाई, देही हले न कोई।
पवन संग भरगुटी जावे, अंश बिन्द को जोई॥ ३॥
पिछम घाट नांव सो चाले, सो देह जाड पिछाडे।
बिन्द नाद को करे बिछेडो, माया अंश सब तोडे॥ ४॥
पडत बिछेवो कलपे धुजे, माया का गुण भाई।
अनंत जुग हंस मो संग रमियो, आज छोड अब जाई॥ ५॥
पूरब दिशा चढे जब माया, कहो काय कूं रोवे।
नाद बिन्द सो रहे समेला, बिछडण कदे न होवे॥ ६॥
देह बैराट मांय को मांही, जाप जपसी भाई।
जागे नाम नाद सो घट में, ब्रह्म कहे सो मांई॥ ७॥
ब्रह्म बैराट मांय से आवे, नाद तत घट मांही।
ऊ सुण आण बिछोडे बिंद कूं, और ऊपायस नांही॥ ८॥
मुख रटणा बिना नाम बारलो, इण घट आवे नांही।
आत्म ब्रह्म नाम सो जागे, मुद्रा साजन मांही॥ ९॥
कह सुखराम सुणो सब ज्ञानी, ओ ने: अंच्छर कह कोई।
सो बायर सूं घट में आवे, और घट में होई॥ १०॥

बांदा हे मन इसका यह अरथ है नाम अलग है भेद अलग है और सतगुरु अलग है। पूरब के

रास्ते जो अंच्छर चढता है। वह बिंद याने चेतन में से आता है। ओऊं सोऊं का जाप अजपा करके नाद याने ब्रह्मण्ड तक जाता है। पिछम दिशा में जो नाम चढता है व नाद याने सांस उसांस में भजन करने पर प्रगट होता है यही नाद में से आना है। पिछम दिशा का नाम नाद याने स्वांसा से, अनाद याने ब्रह्मण्ड पारब्रह्म तक सूरत के आधार के ध्यान से, सत याने के: पद के ध्यान से आगे आ: लोक में जाता है। पूरब के रास्ते में नाम चढता है तो शरीर नहीं धूजता है। स्वांसा के साथ भृगुटी होकर जाता है और चेतन के साथ रहता है। पिछम के रास्ते जो नाम चढता है वो शरीर को धूजाता है यही जाड पिछाडना है। पिछम का नांव चेतन से अलग होकर शरीर व स्वांसा से अलग हो जाता है, यही माया अंश तोडना है। हंस माया से अलग होता है तो माया कलपती धूजती है, यह सब माया के गुण है। अनन्त जुगो से हंस माया के साथ है और आज माया से अलग हो रहा है। पूरब दिशा में शब्द चढता है तो माया किस लिये रोवे क्योंकि चेतन, माया व शब्द शामिल रहते है। वह चेतन माया से अलग नहीं होता है। शरीर के अन्दर सतगुरु विधि से भजन करना ही देह बैराट मांय के मांही जपना है। सतगुरु विधि से भजन करने पर सतशब्द की जागृति होती है और ब्रह्म का पद शरीर में ही है। ब्रह्म बैराट में से आकर सतशब्द शरीर में प्रगट होता है। वही बिन्द याने चेतन माया से अलग करता है, इसके सिवाय कोई ऊपाय नहीं है। मुंह से रटे बिना बह्म बैराट में से आकर सतशब्द प्रगट नहीं होता, आत्म चेतन के आधार से नाम प्रगट होता है। यही आत्म ब्रह्म नाम का जागना है। मुद्रा साजन सब शरीर में ही है। म:फ: है कि सब ज्ञानी सुणो, इसको ने: अंच्छर कहते है जो बाहर याने ब्रह्म बैराट से शरीर में आता है। दूसरे सब शब्द शरीर में ही है।

卐 हरजस पद राग आसा (१०) 卐

बांदा आनन्द ब्रह्म यां सुंई आगे, वांसु अजे एक नहीं आयो, ना अब आयर जागे॥ टेर॥

हुणकाल सो ईश्वर कहिये, वां की अंच्छया शक्ति।
ब्रह्म ब्रह्म कर सबने गायो, आ हुणकाल की भक्ति॥ १॥
हुणकाल सूं सब कुछ हुवा, फेर हुणो सोई होवे।
प्रगट अरथ जगत के मांही, ज्ञानी कोय न जोवे॥ २॥
हुणकाल को मन यो चेतन, अंच्छया शक्ति होई।
या दोन्या मिल कियो पसारो, तीन लोक नव सोई॥ ३॥
सब अवतार सुणो सब कोई, हुणकाल सुं आवे।
आणंद लोक में उत्पत नांही, गांठ पटोले कवावे॥ ४॥
होणकाल ने सब ही किया, फेर करे सो होई।
आनन्द ब्रह्म करे ना किया, निरभे पद वो जोई॥ ५॥
सब ही ज्ञानी कहे सुण ऐसी, आनन्द लोक जे जावे।
से हंसा सब बोहोर जक्त में, सपने गरभ न आवे॥ ६॥
जे पेली सूं कोई हंसो आयो, तो अब क्यों नहीं आसी।
देख्या ज्ञान शकल ही सोध्या, ऊलटी सब कूं भ्यासी॥ ७॥
आनन्द ब्रह्म नांव इण कारण, वांसु कोई न आया।

होणकाल सो जब कहाणा, सब हुणे गुण भाया॥ ८॥
ब्रह्म कहे सो जगत बरोबर, होणकाल गुरु कहावे।
आनन्द ब्रह्म सतगुरु सम होई, ज्यां गयो बोहोर नहीं आवे॥ ९॥
होणकाल सो चेतन कहिये, नख चख व्यापक होई।
ब्रह्म कहो सो मेल त्रृगुटी, काम नाद कहूं तोई॥ १०॥
दशवें द्वार आगे सब सुणज्यो, आनन्द ब्रह्म सो होई।
होणकाल सो बरजपोल शिर, ब्रह्म त्रृगुटी जोई॥ ११॥
दशवें द्वार आगे सुण जायर, पूंथ जणावे भाई।
तो आ मांड सुणो सब ज्ञानी, आनन्द लोक सूं आई॥ १२॥
दशवें द्वार सूं ज्यूं सब पैदा, होणकाल सूं जोई।
आनन्द ब्रह्म द्वार दश आगे, वाहां उत्पत नहीं कोई॥ १३॥
जगत मांय से जे जन होवे, तो पाछो जगत न होई।
ना जन मांय सूं जगत निकसी, यूं आनन्द ब्रह्म कहूं तोई॥ १४॥
सब अवतार जगत के मांही, होणकाल से आया।
वां सूं जगत हुई सब पैदा, आदु वां से भाया॥ १५॥
राम किसन सो राजा हुवा, तीन लोक का भाई।
करता एक जगत अर यांरो, होणकाल सब मांई॥ १६॥
जग करतार कहे इण गुण सूं, दाणु पटक्या सोई।
ब्रह्मा विसनु महेश्वर खसिया, यां सूं मुवा न कोई॥ १७॥
ज्यूं राजा सूं कहे सब दुनिया, तुम ईश्वर अवतारा।
इण पडछे रघुनाथ किसन कूं, जग कहे करतारा॥ १८॥
करता को बिडद छाजे इन कूं, करता ढिंग सूं आया।
पिण सतगुरु किण किया व्हे जग में, तो मुज को कहे भाया॥ १९॥
आनन्द ब्रह्म सतगुरु सम होई, होणकाल जग जोई।
यूं राम किसन सूं हरजन ईधका, मुढ न जाणे कोई॥ २०॥
राम किसन की भक्ति जग में, होणकाल लग जावे।
जो कोई पचे बोहोत विध भाई, तो ऊपज्यो जहां समावे॥ २१॥
नवधा भक्त जक्त में सारी, सो आत्म की होई।
जप तप भेद जोग सब साजन, होणकाल लग जोई॥ २२॥
नाभ कंवल में नाद बिछूटे, पिछम देश से पावे।
फाडर पीठ चढे नेः अंच्छर, आनन्द लोक वे जावे॥ २३॥
पूरब घाट चढे जीण जन के, बिंद न बिछडे कोई।
शक्त ब्रह्म दोनुं तहां भेला, जहां लग पहुंचे सोई॥ २४॥
आगे जाय सके नहीं कोई, दशवों द्वार न फूटे।
फिर नर आंण ओतरे जुग में, जम जुग जुग में लूटे॥ २५॥

नहीं काम माया को सन्तो, ना आ जाय न सक्के।
आनन्द लोक में ब्रह्म पहुंचे, शक्ति धकी न धक्के॥ २६ ॥
जैसे एक जगत के मांही, तोय दिष्टांग बताऊं।
देवत एक धार नर देही, नर के संग कर लाऊं॥ २७॥
देवत एक मिनख देह धर के, नर के संग होय आवे।
आगे भीत खडी गज गीरी,पार कहो कुण पावे॥ २८ ॥
ज्ञानी भेख सुणो सब भेदी, पूरब चढया वो काचा।
ज्यां सूं जीव आवियो जुग में, वां जाय आवे पाछा॥ २९ ॥
पूरब घाट चढे सो अंच्छर, जको नाद को होई।
पिछम दिशा चढे नेः अंच्छर, सत स्वरूप को जोई॥ ३० ॥
पिछम दिशा चढे सो नेः अंच्छर, अटकन कहूं न पावे।
दशवों द्वार फोड सो निकसे, पाछो कबू न आवे॥ ३१ ॥
कह सुखराम सुणो सब ज्ञानी, पिछम कोई नहीं पावे।
नेः अंच्छर बिन ध्यान तत लग, दूणा डापा खावे॥ ३२ ॥

आः ब्रह्म यां सुंही याने पारब्रह्म से आगे है। आः ब्रह्म से आज तक एक भी नहीं आया और न ही अब आयेगा। होणकाल सो ईश्वर याने करता का पद है। अंछया उसकी शक्ति है। होणकाल की भक्ति को ही ब्रह्म याने केः की भक्ति बताते है लेकिन वह होणकाल की भक्ति है। होणकाल से ही सब सृष्टि की उत्पति हुई है उसी से होगी। यह अरथ संसार में प्रकट है इसको ज्ञानी कोई नहीं समझते। होणकाल का मन चेतन है। ईछया उसकी शक्ति है। चेतन व ईछया के आधार से ही तीन लोक नवखण्ड सब का विस्तार हुआ है। सब अवतार होणकाल से ही आते है। आः लोक में उत्पति नहीं है। जैसे साठे की पेडी में रस याने आनन्द है और उत्पति भी नहीं है। गांठ में उत्पति है रस थोडा है यही गांठ पटोले कवावे है। होणकाल में ही सबकी उत्पति है और आगे भी उसी से होगी। लेकिन आनन्द ब्रह्म से उत्पति नहीं है वह निरभै पद है। सब ज्ञानी भी यह बात कहते है। जिनको आः लोक की प्राप्ति हो गई वे हंस सपने में भी गरभ में नहीं आते। ज्ञानियो ने होणकाल पारब्रह्म को ही आः ब्रह्म मान रखा है। हंस होणकाल से ही आता है तो अब क्यों नहीं आवेगा। सब ज्ञान भी करते है लेकिन पारब्रह्म का जो होणकाल पद है उसको ही आः ब्रह्म का पद मानते है। यही उलटी भ्यासना है। आः ब्रह्म नांव इसलिये है कि वहां से कोई नहीं आता। होणकाल इसलिये कहाता है कि सबकी उत्पति वहां से है। यही गुण है। ब्रह्म का पद संसार के बराबर है। पारब्रह्म का होणकाल पद गुरु के जैसे है। आः ब्रह्म का पद सतगुरु के जैसे है। आः ब्रह्म की प्राप्ति होने पर वापिस नहीं आता। होणकाल का पद शरीर में चेतन है जो नख चख में व्यापक है। ब्रह्म का पद त्रिगुटी में है, दसवे द्वार के आगे आनन्द ब्रह्म याने केः पद है। होणकाल बजरपोल के ऊपर है। ब्रह्म का पद त्रिकुटी से है। दशवें द्वार के आगे आनन्द ब्रह्म में जाकर कोई पहुंच जणाता है तो सब ज्ञानी सुनो, यह सृष्टि आः लोक से उत्पन्न हुई है। दशवे द्वार से सबकी उत्पति है जहां होणकाल का पद है। आः ब्रह्म का पद दशवे द्वार के आगे है वहां से कोई उत्पति नहीं है। बैराग धारण कर जगत को छोडकर अलग हो जाता है वो वापिस जगत में नहीं आता है। जिस प्रकार

जन से जगत पैदा नहीं होती है। ऐसे ही आः ब्रह्म से उत्पति नहीं है। संसार में सब अवतार होणकाल पारब्रह्म से आये है, सारी सृष्टि की उत्पति अनादि वहीं से है। राम कृष्ण तीन लोक में राजा हुये है, इनको करता कहते है लेकिन यह सब होणकाल में ही है। संसार इनको करतार इसलिये कहता है कि इन्होंने बडे बडे राक्षसो को मारा, जिन्हें ब्रह्मा विष्णु महेश भी मार नहीं सके। जिस प्रकार राजा को संसार कहता है कि आप ईश्वर के अवतार हो, ऐसे ही राम कृष्ण को संसार परमात्मा कहता है, ऐसे ही इनको करता का बिडद छा जाता है क्योंकि ये करता पद से ही आये है, परन्तु इनको किसी ने सतगुरु किया हो तो मेरे को कहो। आः ब्रह्म सतगुरु के जैसे है और हुणकाल ब्रह्म जगत के जैसे ही है, इसी प्रकार राम किशन से केवली भगवंत अधिक है। लेकिन मूरख नहीं जानते। राम किशन की भक्ति करने से होणकाल याने ब्रह्म की प्राप्ति होती है। ज्यादा से ज्यादा भक्ति करे तो पारब्रह्म का होणकाल याने ब्रह्म की प्राप्ति होती है। ज्यादा से ज्यादा भक्ति करे तो पारब्रह्म का होणकाल पद की जहां से सृष्टि की उत्पति होती है वहां जाता है। नवधा भक्ति संसार में आत्मा को सुखो की प्राप्ति कराने वाली है। जप करो, तपस्या करो, सब योग के साधन करो, इनसे होणकाल ब्रह्म पद की प्राप्ति होती है। नाभी कंवल से शब्द अलग होकर पिछम दिशा में उलटता है। वह पीठ के रास्ते बंकनाल में होकर आः ब्रह्म की प्राप्ति करता है। पूरब के रास्ते से जन चढते है। उनका शब्द चेतन से अलग नहीं होता है तथा माया व ब्रह्म का पद साथ है वहां की प्राप्ति करते है। माया ब्रह्म के पद से आगे नहीं जा सकते, और दशवा द्वार उनसे नहीं खुलता, तथा वापिस आकर जन्म लेता है और जुगान जुग तक जन्मता मरता है यही जम जुग जुग लूटना है। आः लोक में माया नहीं पहुंचती है। न वो जा सकती है। आः लोक में शब्द ब्रह्म पहुंचता है, माया धकेलने से भी नहीं जा सकती। इसका संसार में एक दृष्टान्त देकर समझाता हूं कि एक देवता मनुष्य शरीर धारण करके मनुष्य के साथ आता है, आगे दिवार खडी हुई तो उसके पार कौन जा सकता है। याने देवता ही उसके पार जा सकते है। मनुष्य नहीं जा सकते। ज्ञानी भेख धारी व योग की साधना करने वाले सब सुणो, पूरब की साधना करने वाले केः पद आःपद की प्राप्ति नहीं कर सकते। होणकाल ब्रह्म से जीव आता है उसी में जाकर वापिस आ जाते है। पूरब के रास्ते जो अक्षर चढता है जो नाद याने ब्रह्म पद तक जाता है। पिछम के रास्ते जो नेः अँच्छर चढता है वह सतस्वरूप पद की प्राप्ति करता है। पिछम के रास्ते जो शब्द चढता है उसको कोई नहीं रोक सकता। दशवां द्वार खोलकर जाता है वो वापिस नहीं आता है। मःफः है कि सब सुणो, ज्ञानियों को पिछम का रास्ता नहीं मिलता, नेः अँच्छर के बिना तत याने ब्रह्म का ध्यान भी करते है तो भी वापिस आ जाते है। यही दूणा डापा खाना है।

卐 हरजस पद राग आसा (११) 卐

बांदा सत शब्द है न्यारा। वहां से शब्द कोई नहीं निकस्या, ना अब निकसण हारा॥ टेर।

अनाद शब्द सूं नाद हुवा रे, नाद जिंग कूं जायो।
जिंग मांय सूं जोत ऊपनी, तामे बिंद समायो॥ १॥
नाद बिन्द दोन्यूं सो भेला, जोत मांय सूं आया।
या दोन्या में हंस प्रगटयो, त्रगुटी आंण समाया॥ २॥

हंस मांय सुं जीव ऊपजे, सोई बिन्द संग होई।
यामें पांच तत्व सो ऊपज्या, यूं या मांड बणी सब लोई॥ ३॥
सतशब्द की कला कुवावे, ज्युं बरछ की सुण छाया।
यूं कुदरत कला शकल सूं न्यारी, नहीं हुणकाल में भाया॥ ४॥
कुदरत कला जका सुण आदू, मोख जांणे के तांई।
जो जन मांय प्रगटे आई, सो पाप पुन्न बस नांही॥ ५॥
वे हंस जाय मिलेगा केवल, बिचे थूमे न कोई।
कुदरत कला बिना सब करणी, जामें मोख न होई॥ ६॥
कह सुखराम मेहर सतगुरु की, वा कुदरत कला कुवावे।
और गुरां की दया मन सुं, मुख कयां सूं पावे॥ ७॥

सतशब्द तो अलग है, उसमें न तो कोई शब्द निकलता है, न ही अब निकलने वाला है। अनाद शब्द याने पारब्रह्म से नाद याने शब्द याने जिंग ध्वनि हुई, जिंग शब्द से जोती याने चेतन हुवा, इस चेतन में बिन्द है। शब्द और बिन्द दोनो जोती में से आया, शब्द और बिंद इन दोनो से हंस प्रगट हुवा, जो त्रिकुटी में आकर समाया है। हंस में से जीव उपजता है वो बिंद के साथ है। इनमें से पांच तत्व की उत्पति हुई है। इस प्रकार सृष्टि की रचना हुई है। सतशब्द की कला वृक्ष की छाया की तरह है। इस तरह कुदरत कला याने सतशब्द सबसे अलग है। होणकाल पद में नहीं है। अनादि से कुदरत कला मोख की प्राप्ति कराने के लिये है। जिस जन के अन्तर में प्रगट होती है वो पाप पुन्न से याने करणियो से अलग हो जाता है। वे ही हंस के: पद की प्राप्ति करेंगे। बीच में कोई नहीं रोक सकता। कुदरत कला याने सतशब्द के बिना सब करणियो के साधन से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है। म:फ: है कि सतगुरु की मेहर याने सतशब्द प्रगट होता है, उसको ही कुदरत कला कहते है। दूसरे गुरु करणी करने वालों की मेहर मन व मुख से कहने से प्राप्त होती है।

卐 हरजस पद राग आसा (१२) 卐

बांदा यो भेद यां नहीं पायो। ब्रह्मा बिसन महेशर शक्ति, नहीं अवतारा रे आयो॥ टेर॥
सतगुरु बिना कला ज्यां जागी, से नर ऐसा भाई।
अनन्त जीव ले ऊधरे जुग में, आड पटक नहीं कोई॥ १॥
आनन्द ब्रह्म की छांया कहिजे, ज्यां आ सता कहावे।
है अनाद आद सुंई आगे, ऊलट कोई जन पावे॥ २॥
सुण चोईस तिरथंगर आया, ज्यां रे गुरु कुण होई।
ज्यां संग अनन्त मिल्या केवल में, कसर रही नहीं कोई॥ ३॥
हुणकाल लग सबे ऊपाया, गुरु शिष चलिया आवे।
करणी करे जिस्या फल जुग में, हंस ईधक किम पावे॥ ४॥
सब ही ज्ञान विद्या सब सांची, होणकाल लग भाई।
मोख मिले ज्यां सता प्रगटी, और उपाय न कांई॥ ५॥
और बस्त का बीज जगत में, कै कर उपाय जगावे।

मिण के बीज नहीं पारस के, नां किया बण आवे॥ ६ ॥
मेहमा करी बतायो सब ने, शिंभु वचन में भाई।
आ ज्यां सता प्रगटी जहां जहां, करणी रहे न कांई॥ ७॥
आ पारख कर देखो जग में, जिण या कुदरत पाई।
आप रया जहां लग हंस तिरिया, पाछे एक न भाई॥ ८ ॥
ओर ज्ञान मेहर लारे सुणियो, बीज शकल में रेहे।
करणी करर फेर जगावे, सिध कला कोई लेहे॥ ९ ॥
ईण तो सता मांय गुण ओई, ज्युं पारस में होई।
मिलीया लोह कनक सब होई, होवे आगे व्हे न कोई॥ १० ॥
राज जोग कहिये ओ जुग में, ओर केण सब होई।
नाडा उलट चढे गढ ऊपर, अटक्यो रे नहीं कोई॥ ११ ॥
तत चीन कर थिर नर हुवा, राज योग यो नांई।
आ तो नकल असल आ कहिये, उलट अगम घर जाई॥ १२ ॥
कह सुखराम सुणो सब ज्ञानी, ईण विध समझो आई।
जप तप ज्ञान बताई कुच्यां, ज्यां आ सता न पाई॥ १३ ॥

यो भेद याने सतशब्द का भेद ब्रह्मा, विष्णु, महादेव शक्ति और अवतारो को भी नहीं मिला। बिना सतगुरु याने सत ग्यान के सुणे बिना जिन के सतशब्द की जागृति हुई वे केवली भगवंत सम्राट की पदवी जैसे है, उनके द्वारा अनन्त हंसो का उद्धार करने वाले केवली भगवंत है, धाम पधारे बादभी उनके अणभै ग्यान से होता है। कोई नहीं रोक सकता। जहां सता की जागृति होती है वो आनन्द ब्रह्म की छाया है। आ: ब्रह्म का पद अनादि से है। होणकाल ब्रह्म से भी आगे है। बंकनाल में उलटकर कोई जन उसको प्राप्त कर सकते है। चौबीस तीरथंगरो के कोई गुरु नहीं थे। उनके ज्ञान द्वारा अनन्तो हंसो को के: पद की प्राप्ति हुई, कोई तरह की कसर नहीं रही। होणकाल ब्रह्म का पद करणी के साधन से प्राप्त हो सकता है। गुरु करणियां का ज्ञान बताकर उसकी प्राप्ति करा देते है। जैसी जैसी करणी करते है उसको उस फल की प्राप्ति होती है। उससे अधिक फल नहीं मिलता। सब ज्ञान विद्या सच्ची है। होणकाल की प्राप्ति के लिये। परन्तु मोख तो जहां सता प्रगट होती है उनको ही मिलती है और कोई उपाय नहीं है। अन्य वस्तु के बीज संसार में मेहनत करके पैदा कर सकते है लेकिन चिन्तामणी और पारस का बीज नहीं है और न करने से बनते है। महादेवजी ने इस सता की सबको महिमा बताई, जहां पर सता याने सतशब्द प्रगट होता है वो इसके साथ शुभ अशुभ करणियो से अलग हो जाता है। यह परीक्षा करके देखो जिसको इस कुदरत कला की प्राप्ति हुई आप रहे जब तक हंसो का उद्धार हुवा, पीछे एक भी नहीं हुआ। कुदरत कला के बिना तो दूसरे ज्ञान तो उनके जाने के बाद भी रहता है। करणियों के साधन करके सिद्ध कला की प्राप्ति करते है। इस सता में तो यही गुण है जैसा पारस में गुण है, पारस होने पर ही लोहा सोना हो सकता है, नहीं होने पर नहीं हो सकता। संसार में सतशब्द का ज्ञान राज योग है बाकी तो सब कहणी है। नाडा याने शंखनाल पार करके बंकनाल में ऊलटकर ऊपर चढ जाता है। इसको कोई नहीं रोक सकता। तत याने ब्रह्म को ज्ञान द्वारा अनुभव करके थिर हो जाते है। वो राज योग नहीं है। ज्ञान से ब्रह्म होना

नकल है। सतशब्द के साथ उलटकर अगम घर के: पद आ: पद की प्राप्ति करना ही असल है। म:फ: है कि सब ज्ञानी सुणो इस विधि से समझो, जप तप ज्ञान व योग की कूच्यां याने साधन बताते है। उनको सता याने सतशब्द का ज्ञान प्राप्त नहीं हुवा।

卐 हरजस पद राग आसा (१३) 卐

बांदा आनन्द लोक से जावे। तत स्वरूप ब्रह्म यो कहिये, ईण आगे गम पावे॥ टेर॥
जहां लग एक ब्रह्म कर गावे, तहां लग भेद न पायो।
ओ तो होणकाल ब्रह्म कहिये, बिन भेद पद ठहरायो॥ १॥
ईतनी गम नहीं ज्ञान्यां कूं, ऊ ओ अेकज होई।
तो मेहनत कर कहो क्या करिये, अवर न दूजो कोई॥ २॥
जो जो चीज शकल घर मांही, ऊवेईज हाट में होई।
तो क्यों पचे रात दिन मूरख, मिलणे कूं क्या रोई॥ ३॥
भूला कहे ब्रह्म ऊ होई, सुध बिहूणा सारा।
तिरया कदे नार कूं चावे, ओ नहीं करे विचारा॥ ४॥
ज्यां सुं जीव हुवो सुण पैदा, ऊं ओ एक न होई।
कह सुखराम आनन्द पद न्यारो, ऊपर सो कहूं तोई॥ ५॥

आ: लोक वही जायेंगे जो तत स्वरूप याने होणकाल ब्रह्म का पद है इसके आगे का ज्ञान प्राप्त करेंगे। जहां तक ब्रह्म का एक पद बताते है वहां तक के: पद का भेद नहीं मिला, यह तो होणकाल ब्रह्म का पद है। बिना भेद के ही इसको आ: पद बताते है। ज्ञानियों को इतनी भी समझ नहीं है कि आत्मा ब्रह्म है और ब्रह्म पद की प्राप्ति करना चाहती है। तो मेहनत करके क्या करना है जो दूसरा पद नहीं है। जो चीज घर में है वही दुकानो में मिलती है तो उसको प्राप्त करने के लिये मूरख क्यों रात दिन मेहनत करता है। जो भूले हुये है और जानकारी नहीं है वे होणकाल ब्रह्म को ही आ: ब्रह्म कहते है। स्त्री कब स्त्री को चाहती है। आत्मा ब्रह्म है और ब्रह्म पद की प्राप्ति करना चाहती है यही स्त्री का स्त्री को चाहना है, इसका विचार नहीं करते। ज्यां से जीव पैदा हुवा है वो और आ: पद एक नहीं है। म:फ: है कि होणकाल ब्रह्म से आ: पद ऊपर और अलग है।

卐 हरजस पद राग आसा (१४) 卐

बांदा सतगुरु मेहर नियारी। जे नर चालर बरछ तल आवे, सुख पावे संसारी॥ टेर॥
मुख की मेहर सिध की होई, कह ज्ञानी की भाई।
वो मुख सूं फल दे माया को, वो ज्ञान सिखावे जाई॥ १॥
दिल की मेहर देवता करे है, जे माया फल धारे।
मन हाता की मेहर जगत में, देह कूं पार उतारे॥ २॥
कर, मन, मुख की मेहर जगत में, सबे संगति की होई।
सतगुरु मेहर सता सरूपी, कहेण करण नहीं कोई॥ ३॥
ज्यूं हुमाव पंछी के हेटे, नर छांया में आवे।

उण देह भूप बणे इण जग में, यूं सतगुरु शरण कहावे॥ ४॥
छांया सुणिया देखिया भाया, भूप हुवे नहीं कोई।
छांया मांय गरक हुवे आई, जब गुण प्रगटे सोई॥ ५॥
सतगुरु शरणे तके नर आया, ज्यूं तरवर तल आवे।
छांया कने जाय कर उभा, वे नहीं शरण कहावे॥ ६॥
ज्यूं नर धाम शकल कूं छाडे, जब बरछ हेटे जावे।
धाम संग लिया जाय न सक्के, जे नर छांया चावे॥ ७॥
सरब धरम आगला छोडे, ज्ञान ध्यान सब भाया।
निजमन, असत जाण कर तजिया, जब शरणे नर आया॥ ८॥
जाणर तजो अजाण सुं भाई, ओ कुछ कारण नांही।
एक अंग व्हे सब आयर, से सब शरणे मांही॥ ९॥
छांया सुख मांय कोई समझे, पछे शरण कोई जावे।
तोई धाम संग नहीं चाले, यूं सतगुरु शरण कहावे॥ १०॥
छांया सुख मांय नहीं समझे, ना कुछ धाम पिछाणे।
सहज आंण बरछ तल ऊभो, यूं सतगुरु ही सत जांणे॥ ११॥
और चीज सब ही ईण जग में, शुभ जेती जग के मांही।
ईमरत मांय कछु नहीं मावे, यूं सतगुरु शरण कहाई॥ १२॥
ईमरत मांय एक गुण भारी, दूजी कछु न आवे।
और चीज सब ही इण जग में, शुभ अशुभ कर लावे॥ १३॥
अग्नि संग चीज नहीं राखे, कम जाफा कोई मांही।
यूं सतगुरु वचन मांय नहीं मावे, ज्ञान आगलो कांही॥ १४॥
होणकाल ब्रह्म लग भाई, तके गुरु ज्ञान बतावे।
वामें ज्ञान शकल संग मावे, वे होणकाल बस जावे॥ १५॥
आ कुदरत कला मेहर सतगुरु की, सतसरूप पर जाही।
यां में ज्ञान धरम नहीं मावे, आ होणकाल बस नांही॥ १६॥
होणकाल सब आत्म सारी, ज्यूं होणो सो होई।
या कुदरत कला हंस कूं न्यारो, करले चावे सोई॥ १७॥
भेद वेद कोई नहीं जांणे, नहीं जाणे कोई ज्ञानी।
नव जोगेश्वर जनक वैदेही, वहां आ कला पिछाणी॥ १८॥
कह सुखराम सता सतगुरु की, अनन्त हंसा कूं तारे।
शरण आयोडो कोइयन डूबे, सब कूंई पार उतारे॥ १९॥

सतगुरु की मेहर अलग है जिस प्रकार वृक्ष के नीचे जाने पर ही संसार को छांया का सुख प्राप्त होता है। मुंह से मेहर सिद्धो की प्राप्ति होती है या ज्ञानियों की होती है। सिद्ध मुंह से कहकर माया के फलो की प्राप्ति कराता है, ज्ञानी ज्ञान सिखाता है। दिल की मेहर देवता करते है वे भी माया के फल प्राप्त कराते है। मन और हाथ की मेहर संसार में शरीर को सुख प्राप्त कराती है। हाथ, मन,

मुख की मेहर संसार में जैसी संगति होती है वैसी ही होती है। सतगुरु की मेहर याने केवली भगवंतो के अणभै ग्यान की सतगुरु विधि से जो सता जागृत होती है। वो कहने में और शुभ अशुभ करणियों में भी नहीं है। जिस प्रकार हुमाव पक्षी की छांया में मनुष्य आता है। वह उसी शरीर से राजा बनता है। इसी प्रकार सतगुरु की शरण कहलाती है। छांया को देखने व छांया की बात सुनने से राजा नहीं होता है। छांया में गरक होने पर ही राजा होता है यही गुण प्रगटना है। सतगुरु की शरण में वही मनुष्य आये है जैसे वृक्ष की छांया में आते है। छांया के पास जाकर खडे रहने से शरण नहीं कहलाती है। जिस प्रकार मनुष्य धाम याने धूप को छोडकर वृक्ष के नीचे आता है। धूप को साथ में लेकर छांया के नीचे जाना चाहे तो नहीं जा सकता। ऐसे ही सब साधन ज्ञान ध्यान जो आगे करते थे उसको निज मन से असत जानकर छोडते है तब ही सतगुरु की शरण में आना है। जानकर छोडो या अनजान में छोडो, इसका कोई कारण नहीं है। सतपद की भक्ति को सच्ची समझ कर कि इसी से मोक्ष होगी, इसको धारण करना ही एक अंग होना है। वही सब शरण में है। जिस प्रकार छांया के सुख को समझकर छांया में आता है तो भी धूप साथ नहीं चल सकती, ऐसे ही सतगुरु की शरण है। न छांया के सुख को और न धूप को समझता है। सहज में ही वृक्ष के नीचे आकर खडा होता है तो छांया का सुख मिल जाता है। ऐसे ही सतगुरु की शरण सत जाणो और सब चीजे संसार में शुभ है। ईमरत में कोई दूसरी चीज नहीं मिल सकती है ऐसे ही सतगुरु की शरण है। ईमरत में एक अमर करने का भारी गुण है और दूसरा कोई गुण नहीं है। जबकि दूसरी चीजों में शुभ अशुभ दोनो गुण है। जैसे अग्नि में अच्छी बुरी चीज डालो सब अपना रूप बना लेती है। इसी तरह सतगुरु के अणभै वचनो में अगला ज्ञान नहीं ठहर सकता। दूसरे गुरु होणकाल ब्रह्म पद का ज्ञान बताते है। उस ज्ञान के साथ दूसरे ज्ञान भी हो सकते है। वो होणकाल ब्रह्म तक पहुंचाते है। यह कुदरत कला याने सतशब्द सतगुरु मेहर याने केवली संतो के अणभै ग्यान की ही है। यह सतस्वरूप पद की प्राप्ति कराती है। इसमें दूसरे ज्ञान धरम साथ नहीं हो सकते। यह होणकाल ब्रह्म पद से अलग है। होणकाल की आत्मा है। जो होना होता है वो ही होता है लेकिन कुदरत कला याने सतशब्द हंस को सबसे अलग कर ले जाता है। योग का साधन करने वाले, वेदों का ज्ञान करने वाले तथा मन से ज्ञान करने वाले ज्ञानी इस कुदरत कला का भेद नहीं जानते। नव जोगेश्वर राजा जनक ने कुदरत कला याने सतशब्द ने: अंच्छर की प्राप्ति की थी। म:फ: है कि सता सतगुरु याने सतशब्द ने: अंच्छर जाग्रत होने का अणभै ज्ञान धारण करने वाले अनन्त हंसो का उद्धार हुवा है। इस साधन को करने वाले चौरासी में नहीं जाते। सबको परमपद की प्राप्ति हो जाती है।

卐 हरजस पद राग आसा (१५) 卐

बांदा गुरु तजियां दोष नांई। आगे चीज फेर वो पावे, तो पाप काय को होई॥ टेर॥
सतगुरु छाड जाय नर कोई, तीन लोक फिर आवे।
ऐसो सन्त कोई नहीं मिलियो, आ कुदरत कला जगावे॥ १॥
अनन्त उपाय करे नर आगे, नांव न जागो कोई।
अेसा गुरु फेर नहीं पायो, जहां संग किरपा होई॥ २॥
करसो एक राज सुं रूठो, और मुलक में जावे।

आगे खेत मिलया घर आछा, तो काहि को दुख पावे॥ ३ ॥
बोपारी सोदो कर फेरे, अडवी पडिया कोई।
आगे चीज बहुत जो मिलगी, भूक काहे की होई॥ ४॥
यूं गुरु सीख शिष कूं देवे, विध बतावे सोई।
वा विध जाग जाग सब जांणे, तो कसर काय की होई॥ ५॥
मन्तर जाप कुंचिया मुद्रा, ज्ञानी सब ही जांणे।
कुदरत कला नाम की जागे, आ कोई नांय पिछाणे॥ ६॥
कुदरत कला सता सतगुरु की, ध्यान भजन में नांही।
ईन सतगुरु को तजे शिष रे, तो फिर पावे आ ना कांही॥ ७॥
ब्रह्मा विष्णु महेसर पासे, नांव कला नहीं होई।
और शिष्ट की कोण चलाई, शक्त न जाणे कोई॥ ८॥
जो ईतबार न माने कोई, वचन हमारा भाई।
तो कोई संत केवली हुवा, विस्न बंदे क्यूं आई॥ ९॥
जे अवतार आविया जग में, जना कूं बहोत सराया।
जो गुण किस्यो कहो सब ज्ञानी, वे तो धणी शिष्ट का भाया॥ १०॥
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर शक्ति, फिर औतार से जागे।
यांरी भगत करे जिण जनके, अे चरणा नहीं लागे॥ ११॥
तीन रीति का जन है जग में, न्यारा करर पिछाणे।
तो इण ज्ञान भेद में समझे, नहीं तो कोय न जाणे॥ १२॥
केइक संत सगत लग होई, दूजो होण ब्रह्म लग पावे।
तीजा संत सता सरूपी, आंणद लोक जहां जावे॥ १३॥
बल पाण्डव हर चन्द अे भाई, जग में संत कहाणा।
यांरी सहाय करी ओतारां, सतगुरु कर नहीं जाण्या॥ १४॥
मेमा करी ज्ञान में सबकी, सहाय शकल की कीवी।
चरणा जाय पडया नहीं यांरे, ना दिक्षा सो लिवी॥ १५॥
सतस्वरूप उपासी जन हुवा, निज नांव जिण पायो।
जहां औतार आंणकर निविया, शरणो आप समायो॥ १६॥
बडी पहुंच जगत में कहिये, यूं सुण बडा न होई।
बडी पहुंच कहे सो ज्ञानी, ईस्ट बीज में जोई॥ १७॥
नेमनाथ के चरणा लागा, कृष्ण आंण कर भाई।
और संत का चरण गया व्हे, तो कहो शिष्ट के मांई॥ १८॥
जैसे बीज शकल को न्यारो, यूं भक्तया को जोई।
बडा हुवां यूं बीज न पलटे, मोख न पावे कोई॥ १९॥
बच्चो सिंह को सिंह कहावे, गडरो बैल न होई।
यूं केवल बीज थेट सुं न्यारो, भेद न जांणे है कोई॥ २०॥

कह सुखराम सुणो सब कोई, सतगुरु कोण कुवावे।
कुदरत कला सता सुं जागे, मोख तके जन जावे॥ २१ ॥

गुरु छोडने में क्या दोष है, दूसरे गुरु से इससे ज्यादा ज्ञान मिल जाता है तो क्या दोष लगता है। सतगुरु केवली भगवंतो के अणभै ज्ञान को छोडकर मनुष्य तीन लोक में फिर आवे तो भी ऐसे सन्त कोई नहीं मिलते है जो सतशब्द ने: अँच्छर की जागृति करा देवे। साधको ने आगे भी अनन्त साधन किये लेकिन सतशब्द की जागृति नहीं हुई। ऐसे गुरु की प्राप्ति नहीं है जिनके ज्ञान से सतशब्द ने: अँच्छर की जागृति हो जावे। जैसे कोई किसान राजा से रूठ दूसरो के राज में चला जाता है वहां यदि यहां से उसे अच्छे मकान खेत मिल जाते है तो उसको किस बात का दुख होता है। व्यापारी किसी सौदे को अडवी पडने पर छोड देता है यदि उसे आगे अच्छा सौदा मिल गया तो उसके क्या कमी रहती है। ऐसे ही गुरु शिष्य को ज्ञान व साधन की विधि बताते है, उस विधि व ज्ञान को जगह जगह सब जानते है। मन्तर, जप, कुचियां मुद्रा ज्ञान से साधन करने वाले सब जानते है। कुदरत कला ने: अँच्छर की जागृति कैसे होती है इस बात को कोई नहीं जानता। कुदरत कला सतशब्द की जागृति सतगुरु विधि से भजन किये बिना नहीं होती है। ऐसे ही सतशब्द जागृत होने की सतगुरु विधि को छोडने पर वापिस उसकी प्राप्ति कहीं नहीं हो सकती। ब्रह्मा विष्णु महादेव ने: अँच्छर की जागृति के ज्ञान को नहीं जानते, जगत की तो बात ही क्या है। शक्ति भी इस ज्ञान को नहीं जानती। यदि मेरी बात का विश्वास नहीं हो तो जो संत केवली हुये है उनकी विष्णु भगवान वन्दना क्यों करते है। संसार में जो अवतार आये उन्होंने भी केवल की भक्ति करने वाले जनों की महिमा की है। ज्ञानी बताओ उन जनों में क्या गुण था, अवतार तो सृष्टि के मालिक थे। ब्रह्मा विष्णु महादेव शक्ति और अवतार जगत में आते है इनकी भक्ति करने वालो के चरणो में ये नहीं पडते। संसार में तीन तरह की भक्ति करने वाले जन है। इनको अलग अलग पहचानने वाले ही के: ज्ञान के भेद को समझते है दूसरे नहीं समझ सकते, कितने ही संत सगत याने तीन लोक तक की माया का ज्ञान देने वाले है। दूसरे संत होणकाल ब्रह्म तक ज्ञान देने वाले है। तीसरे संत सता याने सतशब्द का ज्ञान करके आ: लोक की प्राप्ति कर लेते है। राजा बली, पांच पाण्डव, हरिशचन्द्र ये भी संसार में संत कहलाये। इनकी अवतारो ने सहायता की परन्तु इनको गुरु धारण नहीं किया। ज्ञान में इनकी महिमा करी व सहायता भी की लेकिन इनके चरणो में नहीं पडे, न ही इन से ज्ञान का उपदेश लिया। जो सतस्वरूप आ: पद की भक्ति करने वाले जनों ने निज नांव की प्राप्ति करी, उनके चरणो में औतारो ने नमन किया और उनसे ज्ञान धारण किया। जिनको संसार बडा मानता है उससे वे बडे नहीं होते है। हे ज्ञानियों जिनका इष्ट बडा है वो बडे है। नेमनाथ केवली संत हुये उनके चरणो में अवतार कृष्णचन्द्रजी ने नमन किया और अन्य किसी संत के चरणो में नमन किया हो तो बताओ। जैसे वस्तुओ के बीज अलग अलग है ऐसे ही सब भक्तियों के साधन अलग अलग है। जगत में बडा मानने से इष्ट नहीं बदलता और मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। सिंह का बच्चा छोटा होने पर भी सिंह कहलाता है और गडरा बडा होने पर भी बैल नहीं कहला सकता, इसी प्रकार के: की भक्ति हमेशा अलग है। इसका भेद कोई नहीं जानता। म:फ: है कि सब कोई सुनो सतगुरु वही कहलाते है जिनके अणभै ग्यान के द्वारा कुदरत कला याने सतशब्द की जागृति होकर मोक्ष की प्राप्ति होती है।

卐 हरजस पद राग आसा (१६) 卐

बांदा ओ सुण भेद नियारो। ज्ञानी ध्यानी देव न पावे, सत सरूप पियारो॥ टेर॥
चार खान जगत में कहिये, चार ज्ञान में होई।
निज नाम की कला प्रगटे, सो ऊदबुद कहूं तोई॥ १॥
बेद खान आंकुर कहावे, भेद इन्ड कहूं खांणी।
जर सो खाण जप तप तपस्या, अे सुण च्यार बखाणी॥ २॥
तीन खांण का बीज जगत में, देखे परखे लोई।
उदभुद मांही प्रगटे कांई, सो बीज लखे है न कोई॥ ३॥
कह सुखराम सुणो सब कोई, ओ अरथा में नांही।
जिऊं बैराग उपजे जुग में, ईऊं प्रगटे है जन मांही॥ ४॥

हे बांदा सुणो यह भेद अलग है, ज्ञान करने वाले ध्यान करने वाले व देवताओ को भी सत सरूप के पद की प्राप्ति नहीं होती। आंकूर ईन्ड जर उदबुद ये चार खान संसार में है। ऐसे ही ये चार प्रकार के ज्ञान है। जिस ज्ञान से निज नाम ने: अँच्छर की जागृति होती है वो उदबुद खान के जैसे है। वेदों का ज्ञान आंकूर खान व अष्टांग योग का साधन वो ईन्डज खान के जैसे है। जप तप तपस्या करना जर खान के जैसे है। इस प्रकार ये चार खान व चार ज्ञान है। संसार में तीन खाण ईन्डज आंकूर जर के बीज देखने परखने में आते है लेकिन उदबुद में जो प्रगट होते है उसके बीज को कोई नहीं देख सकता है। जैसे वर्षा ऋतु में असंख्य जीव पैदा होते है व मिट जाते है, उनकी उत्पति का पता नहीं चलता है। म:फ: है कि जिस प्रकार उदबुद खान के जीवो की उत्पति का पता नहीं चलता है ऐसे ही सतशब्द का ज्ञान अरथो में याने बैरंग पर्चो में नहीं आता। जिस प्रकार संसार में किसी को बैराग उत्पन्न होता है ऐसे ही सतशब्द की भक्ति करने वाले जनों में सतशब्द प्रकट होता है। उसको कोई नहीं जानता।

卐 हरजस पद राग आसा (१७) 卐

बांदा मत कर झोड अनाडी। बार बार तूं वचन ऊथापे, जम तोडे थारी जाडी॥ टेर॥
सतगुरु बिना मोख नहीं पावो, सौ गुरु करो नित धाड़ी।
ज्ञान बिना सब गांगी रोलो, कहा सगत शिव बाडी॥ १॥
ब्रह्मा व्यास संत सब बोल्या, कह गया झाड़ पिछाडी।
सांस ऊसांस राम जप लिज्यो, काय रहो जीभ मुख बाडी॥ २॥
झूंठी गला रात दिन हांको, जामें गरह गमावो।
राम राम निश बासर जप रे, ज्यों बहुता सुख पावो॥ ३॥
चेतन अजब बणायो देवल, वांकी कला हा पिछाणो।
जिण आधार रात दिन बोलो, सो देवत सत जांणो॥ ४॥
धुर पंथ चलो अगम दिश भाई, हद उजड मत जावो।
आंबा काट दूर कर मुरख, घर बावल क्यों बावो॥ ५॥
ने: अँच्छर ऊनांव जगावो, सो साहिब को होई।

और नांव सब ही माया का, ज्यां सुं मोख न होई ॥ ६ ॥
सब को हेत झूंठ है भाई, संग न चाले कोई ।
उलटो नांव भुलावे तोने, करम बंधे शिर तोई ॥ ७ ॥
सतगुरु हेत जगत में सांचो, गोत हेत सब झूंठो ।
सतगुरु भेद मोख को देवे, कुल पाडे तोय पूठो ॥ ८ ॥
साध संत की सेवा किजे, जै जन पुंथा होई ।
ओर भेख सब जगत बराबर, ज्यां सुं पचो न कोई ॥ ९ ॥
धिरग धिरग सब नर नार कूं, कहां कहूं तुज तांई ।
जो रस भोग पांच पुंचावे, सो शिवरों क्यों नांही ॥ १० ॥
कह सुखराम सुणो सब कोई, ओ मोसर नहीं पावो ।
आनन्द लोक चलो नर नारी, सो मेरे संग आवो ॥ ११ ॥

सतगुरु देव मन से फः है कि तुझे बार बार सत सरूप आः पद का ज्ञान दिया जाता है उसको तूं नहीं मानता है, जिससे बार बार जन्म मरण में आना पडता है, यही मन का जोड करना व जम द्वारा जाडी तोडना है। सतगुरु का ज्ञान धारण किये बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती, चाहे सौ गुरु हमेशा धारण करो, सतसरूप के ज्ञान बिना सब व्यर्थ है। चाहे सगती का या शिवजी का ज्ञान हो। ब्रह्माजी, वेदव्यासजी व सभी संत यही बात कह गये है। सांस उसांस में रामजी का भजन करो, व्यर्थ की बात मत करो। झूंठी बाते करने में ही अपने अमूल्य श्वांस गमा रहे हो। सतगुरु विधि से रात दिन राम राम रटो जिससे बहुत सुखो की प्राप्ति हो। उस परमात्मा की कला को पिछाणो जिसने पानी की एक बूंद से अजब चेतन शरीर बना दिया, उसी चेतन के आधार से रात दिन बोलते हो, उस देवता को सच्चा समझो। अनादि से सतस्वरूप का अणभै ज्ञान अगम याने केः पद आः पद की प्राप्ति कराने वाला है। दूसरे साधन हद याने तीन लोको में ही रखने वाले है। वो उजाड में जाने की तरह है। सतस्वरूप आः पद के ज्ञान को छोडकर तीन लोको में रखने वाले है उन ज्ञानो को धारण करना ही आम को काट कर घर में बबुल बाना है। सतशब्द नेः अँच्छर जो आत्म चेतन के आधार से अनुभव होता है वो परमात्मा का नांव है। उसकी जागृति करो। दूसरे सब नांव जो सब वाणी के आधार पर है वो सब माया के है। उनसे मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। माया के नांव का प्रेम झूंठा है जो साथ में चलने वाला नहीं है। उलटा सतशब्द को भुला देते है। और उनके प्रेम से करम बन्धन होते है। सतशब्द का अणभै ज्ञान देने वाले सतगुरु याने केवली भगवंतो के ग्यान से प्रेम करो वो सच्चा है तथा कुटुम्ब से प्रेम करना झूंठा है, क्योंकि सतगुरु याने अणभै ग्यान मोक्ष की प्राप्ति का भेद देते है और कुटुम्ब का मोह मोक्ष की प्राप्ति नहीं होने देता। जिन संतो ने साधन करके केः पद आः पद की प्राप्ति कर ली है उनकी संगत याने निरपक्ष निरणे को सुणो तथा जिन्होंने केवल भेख धारण कर रखा वो तो जगत के बराबर है। उनकी संगत यानि पक्ष के निरणे से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। सभी स्त्री पुरूषो को धिक्कार है धिक्कार है। मैं तुमको कहां तक कहूं जो परमात्मा पांच तत्वों के शरीर का पालन पोषण करता है उसका भजन क्यों नहीं करते। मःफः है कि सब कोई सुणो, यह मनुष्य जन्म बार बार नहीं मिलता, जिसको आः पद की प्राप्ति करना हो तो वो सतस्वरूप आः पद का अणभै ज्ञान धारण करो। यही मेरे साथ आना है।

卐 हरजस पद राग आसा (१८) 卐

बांदा आयो मोसर मति हारो। जां संग हंस अगम घर पहुंचे, वे सतगुरु शिर धारो॥ टेर॥
जग को हेत सकल दुख दायक, जां संग सुख मती जाणो।
सुख दायक सत संगत जग में, सतगुरु शरण पिछाणो॥ १॥
मात पिता सुत गोत कडूंबो, जूण जूण संग होई।
मिनखा देह गुरु बोह पासो, सतगुरु मिले न कोई॥ २॥
चार दिना की जोर जवानी, आ देखन मत भूलो।
आ देसी दगो इणी काया में, जुग जुग दुख संग झूलो॥ ३॥
तीन लोक लग माया कीची, और सगत लग भाई।
जां लग ज्ञान तिके सब काचा, मती मानो जग मांई॥ ४॥
कह सुखराम मान नर मेरी, ने: अँच्छर गम लिजे।
फाडर पीठ चढे गढ ऊपर, बोहोर न जूण धरिजे॥ ५॥

मन से फ: है कि मनुष्य जन्म मिला है इस अवसर को व्यर्थ मत गमावो। जिस सतगुरु के अणभै ज्ञान द्वारा के: पद आ: पद की प्राप्ति होती है उन सतगुरु का अणभै ज्ञान धारण करो। संसार का मोह दु:ख देने वाला है उसके साथ सुख मत समझो। सतपद का ज्ञान सुख देने वाला है उसको सतगुरु याने संतो के निरपक्ष निरणे की संगत से प्राप्त करो। माता पिता गोती कुटुम्बी तो जिस जिस योनी में जावेंगे वहां सभी जगह मिलते रहेंगे। मनुष्य जन्म शरीर इन्द्रिया स्वांसा मन बुद्धि चित अहंकार व बाणी के आधार से साधन बताने वाले गुरु तो बहोत मिलेंगे लेकिन परमात्मा के निज नांव याने सतशब्द का निरपक्ष अणभै ज्ञान देने वाले संत नहीं मिलेंगे। यह जवानी चार दिनों की रहने वाली है उसको देखकर परमात्मा को मत भूलो। देखते देखते इस शरीर से जवानी चली जायेगी और बुढापा आ जायेगा। भक्ति नहीं करने पर नरको में व चौरासी का दुख भोगना पडेगा। तीन लोक व शक्ति लोक तक का ज्ञान सेल भेल है। वहां तक के ज्ञान है वो माया के है। उसको तुम मत मानो। म:फ: है कि मेरी मान कर ने: अँच्छर का अणभै ज्ञान धारण करो, जिससे पीठ के रास्ते बंकनाल से होकर खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड व पारब्रह्म से ऊपर के: पद आ: पद की प्राप्ति करो व जन्म मरण से रहित हो जावो।

卐 हरजस पद राग आसा (१९) 卐

बांदा पांच भगत जुग जाणे। छठी भगत संत सम कहिये, इऊं ओ भेद पिछाणे॥ टेर॥
शिव की भगत सो वेश्य जाणो, विशन भगत सो करसा।
सगत भगत सो वैश्या जाणो, जुग में जाचक ब्रह्मा दरसया॥ १॥
आनदेव की भक्ति जुग मैं, सो किसबी सम जाणो।
मंत्र शुभ अशुभ सब अेसे, ठग बेदर चोर बखाणो॥ २॥
पारब्रह्म की भगती कहिये, सो राजा सम होई।
निरभे पद तिकण की भगती, सत कहूं मैं तोई॥ ३॥
कह सुखराम भगत खट हद में, सुरगुण निरगुण दोई।

इण आगे सुण भगत सातवीं, सांची कहूं आ होई ॥ ४ ॥

मन से फ: है कि सारा जगत पांच प्रकार की भक्ति का ज्ञान जानता है। छठी भगती संत जानते है, इस तरह से इस ज्ञान को पहचानो। शिव की भक्ति करने वाले वैश्य के जैसे है। मामूली साधन करके बोहत याचना करते है, विष्णु की भक्ति किसान की तरह है, मुट्ठी भर अन्न खेत में डालकर गाडी भर ले आता है। शक्ति की भक्ति वैश्या की तरह है, जितना साधन करते है उतना ही फल मिलता है। ब्रह्मा की भक्ति जाचक की जैसे है, मांगने वाले को साधारण चीज मिलती है। पर्याप्त धन नहीं मिलता है। आन की भक्ति किसबी की तरह है जितना साधन करे उतना ही फल मिलता है। मंत्र की साधना करके दूसरो से मांगना ही ठगना है। जिस प्रकार बाजीगर अपना स्वार्थ सिद्ध कर लेता है, ऐसे ही शुभ करम है जिससे फलों की प्राप्ति होती है। अशुभ करम चोरो की तरह है उनसे अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिये दूसरो को दुख देना है। पारब्रह्म की भक्ति राजा की तरह है, जैसे राजा किसी पर प्रसन्न हो जाता है तो रीज मोज दे देता है। ऐसे ही पारब्रह्म की भक्ति से रिद्धियो सिद्धियो की प्राप्ति हो जाती है। जो सतस्वरूप की भक्ति है वो सत है, उससे पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति हो जाती है। म:फ: है कि इस प्रकार छ: भक्ति तो सुरगुण निरगुण तीन लोक में ही फलो की प्राप्ति कराने वाली है। इसके आगे जो सातवीं भक्ति है वो सत है उससे परमपद की प्राप्ति होती है।

卐 हरजस पद राग आसा (२०) 卐

बांदा सब ही भगत नियारी। हंस कूं लेर लोक सो जासी, आप आप के सारी ॥ टेर ॥

हट जोग सो शिव की भक्ति, से कैलाशज जावे।
सांख जोग ब्रह्मा को कहिये, जिग जप बेद पठावे ॥ १ ॥
बिसन भगत जगत में कहिये, सोहं शिवरण सोई।
हंस बैकुण्ठ जाय सुणियां, संग अवर न पहुंचे कोई ॥ २ ॥
सुतिया धरम सगत की भगती, तिका जोत लग जावे।
देव भगत सो मंतर कहिये, परसण हुय यां आवे ॥ ३ ॥
पारब्रह्म की भक्ति जग में, सो तत निरभै गावे।
होणकाल लग जाय समावे, फिर पाछा हंस आवे ॥ ४ ॥
सतस्वरूप की भगती जग में, राज जोग सुण होई।
उलटर नांव चढे गढ उपर, अगम आगे कहूं सोई ॥ ५ ॥
सेवा धरम उपवास सब साज्यां, अे आत्म की भगती।
जुग के मांही शकल फल पावे, आश न कांई मुगती ॥ ६ ॥
कह सुखराम शकल अे भगती, हद बेहद के मांही।
आनन्द लोक में अे नहीं पहुंचे, सता सतगुरु की जाही ॥ ७ ॥

मन से फ: है कि सब भगती ये अलग अलग है। जो हंस जिसकी भक्ति करेगा उसे उसी लोक की प्राप्ति होगी। हठ योग की साधना शिव की भक्ति है उससे कैलाश की प्राप्ति होती है। सांख्य योग की भक्ति ब्रह्माजी की है। यज्ञ करना, जप करना, वेदो का पाठ करना है। विष्णु की भक्ति सोहं

जप करना है उनसे बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है। उससे आगे नहीं जाता। शक्ति की भक्ति करने वाले जोती के लोक तक जाते है। देवताओ की भक्ति करने वाले मंत्रो का साधन करते है। देवता प्रसन्न होकर उनको इच्छा माफिक फलो की प्राप्ति करा देते है। पारब्रह्म की भक्ति करने वाले ब्रह्म की ही भक्ति करते है। वो होणकाल याने पारब्रह्म का सृष्टि कर्ता का पद है। उसमें जाकर समाते है और वहां से वापिस आ जाते है। सतस्वरूप की भक्ति है वो राज योग है, क्योंकि सहज में शरीर का सब जगह काम होता रहता है तथा सतशब्द की भक्ति भी होती रहती है, दोनो साथ होते रहते है। सतशब्द बंकनाल से उलटकर ब्रह्मण्ड व पार ब्रह्म से ऊपर अधर होता रहता है। के: पद आ: पद की प्राप्ति हो जाती है। यही अगम आगे कहूं सो ही है। सेवा करना, धरम करना, व्रत करना, उपवास करना यह आत्मा की भक्ति है। इनसे जगत में ही इसका फल मिलता है। इससे मुक्ति नहीं होती है। म:फ: है कि यह सब भक्ति हद याने तीन लोक, बेहद याने ब्रह्म तक की प्राप्ति कराने वाली है। आ: पद की प्राप्ति इनसे नहीं होती है। आ: लोक में तो सदगुरु केवली भगवंतो की सता याने सतशब्द ने: अँच्छर ही जाता है।

卐 हरजस पद राग आसा (२१) 卐

बांदा राज योग बिध न्यारी। बेद लबेद भेद नहीं पायो, ना दरशण संसारी॥ टेर॥
तज तज राज गया बन बिचे, वांही भेद नहीं पायो।
परमहंस वैदेही धारा, ज्यां सुण लेस न आयो॥ १॥
त्याग किया वे निरभै कैसे, नांव भेद कहां पाया।
माहा भरम डर उपज्यो घट में, तब बन कूं नर ढाया॥ २॥
दुख सुख शकल अन्तर में परखे, मुख सूं कह न कांई।
वह कहवो निरभै किस विध हुवा, डर डर मून संभाई॥ ३॥
अंग तो शकल आत्मा धरिया, क्या गरेही क्या त्यागी।
आ पचकर करमा सुं डरियो, निरभै बुध कहां जागी॥ ४॥
जागे नांव प्रेम सुं भाई, नख चख कुदरत सोजे।
उलटर पीठ फाड़ चढ जावे, मन कर कछु नहीं सोजे॥ ५॥
राज योग की आ विध भाई, बिन साजन चढ जावे।
ताली लगे न तुटे कोई, आ सेज समाध कहावे॥ ६॥
कह सुखराम भोग सो भोगे, सेज होण सो होई।
त्रगुटी मांय शब्द सुख भारी, आठ पोहोर कहूं तोई॥ ७॥

मन से फ: है कि राज जोग की विधि इन सबसे अलग है। वेदो का ज्ञान करने वाले, वाणी से एक सांस में सुमरण करने वाले, अष्टांग योग की साधना करने वाले, दरशणी व संसारियो को राज योग की विधि नही मिलती। जो राज को छोडकर बन में चले गये उनको भी राज जोग का भेद नहीं मिला। शरीर से परमहंस वृति धारण करने वालों को, शरीर से अलग अपने आप को ब्रह्म समझने वालों को भी राज जोग का जरा सा भी भेद नहीं मिला। केवल गृहस्थ को त्यागने से वो निरभै कैसे हुये। क्योंकि नांव याने सतशब्द का भेद नहीं मिला। गृहस्थ से उद्धार न होना मानकर

त्याग से उद्धार होना मानकर वन में जाना ही भरमो से डरना है। बन में जाने पर दुख सुख का अन्तर में अनुभव होता है। फिर भी मुंह से नहीं कहते है क्योंकि अपने आप को त्यागी मानते है। बताओ डर करके मून धारण करके रखी है वो निरभै कैसे हो सकते है। गृहस्थ व त्याग का अंग तो आत्मा ने धारण कर रखा है। ऐसा समझकर करमो से डर रहे है उनको निरभै बुद्धि की प्राप्ति कहां हुई है। निज नांव की जागृति प्रेम से भजन करने पर ही होती है। जिन हंसो को निज नांव की जागृति होने पर रग रग रोम रोम में अपने आप अनुभव होने लग जाता है। यही नख चख कुदरत सोजना है। बंकनाल के रास्ते से उलटकर के: पद आ: पद की प्राप्ति करना ही गढ पर चढना है। मन के द्वारा यह साधन नहीं होता है। राज जोग की यह विधि है कि बिना दूसरे साधन के ही गढ पर चढ जाता है। ऐसी ही सहज समाधि लग जाती है जो कभी नहीं टूटती है याने मुंह से ओटोमेटिक रटणा चलती रहती है और गिगन मंडल में सतशब्द की धुनी गरजती रहती है। म:फ: है कि संसारी कार्य सहज में होते रहते, यही भोग भोगना है। त्रृगुटी याने सुखमणा में आठ पोहोर याने चौबीसो घंटो शब्द का अनुभव होकर आनन्द आता रहता है व इन्द्रिया शीतल रहती है। विषय भोग नहीं सताते है, अंग लक्षण क्षीण हो जाते है।

卐 हरजस पद राग आसा (२२) 卐

बांदा वे जन पूरा जोगी। ऊलटर नांव चढे गढ ऊपर, सुखमण रस भोगी॥ टेर॥
निरभै तके संक नहीं कोई, आत्म ले सुख सारा।
संग्रह त्याग अेक नहीं कोई, पाप न पुन्न विचारा॥ १॥
आत्म हटके आत्म भटके, तां लग निरभै नांही।
निरभै जके नांव में राता, भव डर कछु न कांही॥ २॥
किरिया करम ध्यान मंत्रादिक, और भोग केहूं सारा।
आंको भरम कछु डर नांही, ज्यां सुण नांव विचारा॥ ३॥
जे डरपे ज्यां त्यागन नांही, तत भेद न पायो।
राम राम ईऊं कहो बहु तेरो, कमल उमंग नहीं आयो॥ ४॥
कह सुखराम सुणो सब कोई, निरभै जा मत जाणो।
तन मन की हट कछु न कांई, गढ चढ अलख पिछाणो॥ ५॥

मन से म: फ: है कि वे जन पूरे जोगी है। बंकनाल से उलटकर गढ पर याने के: पद आ: पद की प्राप्ति करते है और रात दिन सुखमणा में अखण्ड सतशब्द का अनुभव होता रहता है उनको जन्मने मरने का शक याने भय नहीं रहा, निरभै हो गये है और सहज में शरीर का सब काम करते रहते है, यही आत्म का सब सुख लेना है। वो गृहस्थ अवस्था में रहो चाहे त्याग अवस्था में, उनके वास्ते दोनो एक है। स्वांसा के आधार से कोई भी साधन करो उसमें पाप पुन्न दोनो होते है। ऊसांस के आधार से जो साधन होता है उसमें पाप पुन्न दोनो नहीं है। कोई भी साधन करता है उसको आत्मा में विश्वास नहीं होता है, यही आत्मा हटकना भटकना है, तब तक वो निरभै नहीं है। जो चोबीस घंटा निज नांव की भक्ति में रहते है वो निरभै है उनको जन्मने मरने का डर नहीं है। जिसके निज नांव की भक्ति है कोई भी क्रिया करम ध्यान मंत्रादिक की साधना नहीं करते तो भी सब ही

प्रकार की साधना केवल भक्ति करने से सज जाती है। वो शरीर का भोग भाडा रूप से भोगते है। उसका भी उनको कोई डर भरम नहीं है। जो इनसे डरता है व इनका त्याग नहीं करता है उसको सतशब्द का भेद प्राप्त नहीं हुवा है। बाणी के आधार से बिना भेद ही राम राम करो उसके सतशब्द की जागृति नहीं होती है, यही कमल उमंग नहीं आयो है। म:फ: है कि सब कोई सुणो, जहां सतशब्द जागृत नहीं हुवा है उसको निरभै मत समझो तथा शरीर व मन के साधन से कुछ नहीं होता है। सतशब्द के द्वारा ही गढ पर याने के: पद आ: पद की प्राप्ति करना ही अलख पिछाणना है।

卐 हरजस पद राग आसा (२३) 卐

बांदा समज छांण मत लीजे। अगम देश जाता कूं मारे, सो जम दूर करिजे॥ टेर॥

हद में काल क्रोध है भाई, ओ जुग को काम बिगाडे।
बेहद कूं नर करे चलन कूं, गुरु मूरख गेहे पाले ॥ १ ॥
हद बेहद अर अगम कहावे, तीन देश अे होई।
आ तीनां का काल जुवा है, परखे बिरला कोई॥ २ ॥
अगम देश को काल हद में, जुग काई काम सुधारे।
हद को काल अगम पहुंचावे, जे जन हिरदे धारे॥ ३ ॥
बेहद को सुण काल बुरो रे, हद काई काम बिगाडे।
हद बेहद दोनां कुं भुगते, अगम जाता कूं ई पाडे॥ ४ ॥
हद को काल क्रोध तामस रे, अगम देश संख लोई।
बेहद को गुरु मुढ काल रे, अे तिनो कह तोई॥ ५ ॥
हद को काल जितीयां भाई, बेहद कदे न पावे।
हद बेहद दोनो को जित्या, अगम देश नहीं जावे॥ ६ ॥
कह सुखराम काल ऊ जीतो, अगम देश को भाई।
हद बेहद का काल तिका सुं, क्यों पचरया जग मांही॥ ७ ॥

मन से फ: है कि समझ कर ज्ञान धारण करो। के: पद आ: पद की प्राप्ति आत्मा को करने में बाधक बनता है। उस जम याने कई प्रकार के शुभ अशुभ करणी कर्म ऊपासना के साधन को मत करो। हद का काल क्रोध है, यह संसार का काम बिगाडता है। बेहद का काल मुरख गुरु है, जो बेहद का साधन नहीं बताता और हद का ही बताता है। हद याने तीन लोक, बेहद याने ब्रह्म, अगम याने के: पद आ: पद ये तीन देश है और तीनों देशो के काल अलग अलग है। बिरला ही इस भेद को जानते है। अगम देश का काल सांख्य योग है, इसको धारण करने से फलो की प्राप्ति होती है, यही जगत का काम सुधारना है, हद का काल क्रोध है। याने शूरवीरता से भेद से भक्ति करता है सो के: पद आ: पद की प्राप्ति करा देता है। बेहद का जो काल मुरख गुरु है वो हद का ज्ञान देता है, उससे उसका जन्मना मरना मिटता नहीं है। यही हद का काम बिगाडना है। बेहद व अगम देश का उपदेश वो नहीं देता है। यही अगम जाता कूं पाडना है। हद का काल क्रोध व तामसी वृति है, अगम देश का काल सांख्य योग है, बेहद का काल मुरख गुरु है, ऐसे तीन है। केवल क्रोध जीतने पर भी बेहद की प्राप्ति नहीं होती, क्रोध भी नहीं करे व मुरख गुरु का कहना नहीं माने, तो भी के:

पद आः पद की प्राप्ति नहीं होती। मःफः है कि उस काल को जीतो याने सांख्य योग का साधन छोडो, मुरख गुरु और क्रोध से क्यों पचते हो जो अगम पद की प्राप्ति का बाधक है।

卐 हरजस पद राग आसा (२४) 卐

बांदा सत सुक्रत यो जाणो। छुछम बेद तासुं सब हुवा, सो भज नाम पिछाणो॥ टेर॥
लेत देत सांचा नर बोले, पण नहीं छाडे कोई।
ओ तो सत हद को कहिये, नहीं अगम को होई॥ १॥
पूरब दिशा चढावे पवन, सो विध सत सुण होई।
बेहद को यो सांच जगत में, नहीं अगम को होई॥ २॥
अगम देश को सतगुरु सत रे, अक बक प्रेम कहावे।
उलटर नांव चढे गढ ऊपर, ऊं सुक्रतने आवे॥ ३॥
कह सुखराम अगम कूं जाणो, तो ऊला सुं मत पचियो।
जां प्रताप नांव घट जागे, ज्यां गुरु संग रच मचियो॥ ४॥

मन से फः है कि सत का ज्ञान उसको समझो, पारब्रह्म से सबकी उत्पति है उसका सत नाम सतशब्द नेः अँच्छर है। उसकी साधना करके उसको पिछाणो। लेने देने में सच बोलने के प्रण को नहीं छोडना है। यह हद का सत है। इससे संसार में उसकी महिमा होती है। उससे केः पद आः पद की प्राप्ति नहीं होती। संखनाल के रास्ते श्वांस को ऊपर चढाने की विधि सत है। उससे ब्रह्म पद की प्राप्ति होती है। केः पद आः पद की प्राप्ति नहीं होती है। सतलोक की प्राप्ति कराने वाले सतगुरु याने केवली भगवंतो का अणभै ग्यान ही है। उनके बताये साधन से अटूट प्रेम करे तो बंकनाल के रास्ते उलटकर केः पद आः पद की प्राप्ति हो जाती है। यही सुक्रत का आना है। मःफः है कि केः पद आः पद की प्राप्ति करना है तो जिसके केः पद आः पद की प्राप्ति का साधन ग्यान विधि नहीं है तो उनसे मत पचो। सतगुरु की मेहर से निज नांव सतशब्द की जागृति हो जाती है, उनका ही अणभै ज्ञान धारण करो।

卐 हरजस पद राग आसा (२५) 卐

बांदा अगम देश पेडयां दश आगे।
आनन्द लोक का है गुरु न्यारा, वां संग कुदरत जागे॥ टेर॥
पेडी सात परा लग आगे, सुतिया धरम बतायो।
अे पेडी कोई मोय बतावे, जिण बेहद घर पायो॥ १॥
कहता फेर भेद नहीं जाणे, से नर ऐसा होई।
लादे गूण बैल के ऊपर, वे सुख नहीं जाणे कोई॥ २॥
पेडी सात जकांरी रीता, न्यारी करर बताओ।
कोण धरम कोण पेडी को, न्यारी करर लाओ॥ ३॥
कह सुखराम धरम पेडीयां को, नाम नेः अँच्छर पावे।
तो पहुंते पेडया दश ऊपर, खाली धरम न जावे॥ ४॥

मन से फः है कि अगम देश दस पेडयो के आगे है। आः लोक की प्राप्ति का अणभै ज्ञान देने वाले गुरु याने केवली संत अलग है। उनके साथ से सतशब्द की जागृति होती है। सुतिया याने माया के पद में भी सात पेडी बतायी है। इन पेडियो की मेरे को जानकारी बतावे, उन्होंने बेहद याने ब्रह्म की प्राप्ति की है। कहता है लेकिन उसका भेद नहीं जानते। वे मनुष्य ऐसे है जैसे बैल के ऊपर गुण याने वजन लादते है तो उसे उसका बोझ ही लगता है। उस वस्तु की जानकारी उस को नहीं होती है। सात पेडियो की विधि क्या है और उनको अलग अलग बताओ की कौन सी पेडी से कौनसा फल मिलता है। इन सबको अलग अलग समझाओ। मःफः है कि नेः अँच्छर निज नांव की प्राप्ति हो जाती है तो दश पेडियो को पार कर लेता है और दूसरे साधन है वो नहीं जाते है।

卐 हरजस पद राग आसा (२६) 卐

बांदा नेः अँच्छर बिन अे नहीं लांगो। सुतिया धरम शकल विध सत है, भरम जगत का भांगो॥ टेर॥

भोजन किया देवता रीजे, आ सुण पहिली पेडी।
चावो चनण फूल घश केशर, करो दूसरी नेडी॥ १॥
वस्त्र प्रणाम द्रव्य चढाया, ब्रह्मा रिजे भाई।
गऊ लोक में खबर पहुंचे, च्यार पेडिया तांई॥ २॥
ज्ञान गरीबी वचन निरमला, कर जोडे नर कोई।
लिछमी बिसनु खुशी व्हे दोनो, खट पेडी ये जोई॥ ३॥
म्हेरी होय कर बदन दिखावे, तो ईश्वर सुख पावे।
अे सुण सात कही तुज पेडी, यूं कर अे जन गावे॥ ४॥
कन्या आंण चढावे जन कूं, सुतिया धरम ओ होई।
करता काम ब्रह्म सो कहिये, यूं रिजे ईम जोई॥ ५॥
सुतिया धरम करे हरिहर अरपण, ताको धर्म बतावे।
तब बैराट दूसरो जीते, अैसो भेद सम्भावे॥ ६॥
मुख सो नाश चख श्रवण रे, सत पेडी अे जांणो।
यांरे परे त्रिकुटी कहिये, ऊलटर जाय पिछाणो॥ ७॥
ज्योति स्वरूप सात पेडी शिर, यूं ऊ ब्रह्म सुख पावे।
पेडी सात घट के मांही, पहली यहां चढ जावे॥ ८॥
तब बैराट दूसरो जीते, अैसो भेद संभावे।
पवन छोड पीठ दिश उलटे, आनन्द लोक वे जावे॥ ९॥
पूरब दिशा चढे जन ऊंचा, वे यो भेद न पावे।
हद बेहद में रहे भटकता, सतलोक नहीं जावे॥ १०॥
कह सुखराम सुणो नर नारी, तन मन धन सब दीजे।
ऊलटर नांव चढे गढ ऊपर, जिण गुरु संग अे कीजे॥ ११॥

मन से फः है कि नेः अँच्छर सतशब्द की भक्ति के बिना दस पेडियो को पार नहीं कर सकते है। सुतिया धरम याने शक्ति का धरम भी अपनी जगह सच्चा है, यह बात समझो। यही जगत का

भरम भांगना है। भोजन करने से आत्मा तृप्त होती है यही देवता का रीजना है। इसको माया के धरम में पहली पेडी कहते है। केशर घिसकर चन्दन लगाना, फूल चढाना यह दूसरी पेडी है। वस्त्र धारण कराने से, प्रणाम करने, द्रव्य चढाने से ब्रह्माजी राजी होते है। इस साधन से गऊ लोक की प्राप्ति हो सकती है यह चार पेडी है। ज्ञान करने से, नम्रता धारण करने से, निरमल वचन बोलने से, हाथ जोडने से, लक्ष्मी विष्णु प्रसन्न होते है। यह छः पेडिया का चढना है। स्त्री का साथ करने से चेतन को सुख का अनुभव होता है यही मेहरी होकर बदन दिखाना व ईश्वर का सुख पाना है। शक्ति के धर्म वाले इस प्रकार सात पेडिया बताते है। कन्या को धरम परणा देना यह भी शक्ति के धरम में है, ऐसे काम करने से चेतन को प्रसन्नता होती है। शक्ति धरम मानने वाले जो भी क्रिया शुभ करम करते है उसकी फलों की इच्छा नहीं रखते हुये परमात्मा के अरपण समझकर करते है। इस साधन में दूसरा बैराट जीतना समझते है। दो नाक, दो कान, दो आंख व मुंह ये सात पेडी है, इनके आगे त्रिकुटी है। वहां बंकनाल के रास्ते से उलटकर पहुंचा जाता है। ज्योति स्वरूप याने ब्रह्म का पद सात पेडी के ऊपर है। यही ब्रह्म का सुख प्राप्त होना है। सात पेडी शरीर में है। पहले इसको पार करे तब वो बेहद में आता है, यही दूसरो बैराट है। इस तरह भेद को समझे, श्वांस से अलग होकर बंकनाल में उलटने पर आः पद की प्राप्ति होती है। पूरब दिशा की तरफ श्वांसा खेंच खेंच कर शंखनाल से ऊपर चढते है वो इस भेद को नहीं जानते है। इस साधन से हद याने तीन लोक बेहद याने ब्रह्म पद की प्राप्ति करते है। यही हद बेहद में भटकना है। केः पद आः पद की प्राप्ति नहीं होती, यह सतलोक नहीं जाना है। मःफः है कि सब स्त्री पुरूष सुणो, तन मन धन के अहंभाव को छोडकर उन सतगुरु याने केवली भगवंतो के अणभै ज्ञान को धारण करो, जिससे बंकनाल के रास्ते उलटकर केः पद आः पद की प्राप्ति हो जाती है।

卐 हरजस पद राग आसा (२७) 卐

बांदा नेः अँच्छर तत सांचो। प्रेम बिना भक्ति नव जुग में, यांरो हेत सुण काचो॥ टेर॥

बेद व्यास बिन व्यास हुवा रे, आज लग जुग मांही।
वेद पुराण बांच कर तिरिया, तके कहो क्यूं नांही॥ १॥
वेद पुराण सुण कुण तिरिया, बिना परिक्षीत भाई।
सो तुम सोज बताओ हमको, आज लग जुग मांही॥ २॥
तन मन अरप बन्दगी करके, जन तिरिया जुग मांही।
द्वापुर ऊरे अनन्त की सायद, नर सब केता जाही॥ ३॥
व्यास तिरिया सो कहिये मोही, प्रगट शायद लावो।
वेद व्यास कूं सब जग जांणे, अेसो आण बतावो॥ ४॥
पुराण छोडकर जप तप किया, कह किण भक्त समाई।
ज्यां पुराण को काहा सुण बटियो, कहन सुणन को भाई॥ ५॥
बेद पुराण सुणिया नहीं पढिया, गीता कोई पत नांही।
नांव रटे रट अनन्त ऊधरिया, सो प्रगट जुग मांही॥ ६॥
जप तप करे भक्त किण तिरिया, से नहीं पुंथा कोई।

तुम बांचर पुराण मोख को चावो, ओ बडो अचंबो मोही॥ ७॥
कह सुखराम सुणो सब ज्ञानी, पाछा सुं बुध लावो।
कुण कुण ज्ञान तिरिया जन कैसे, सोइ सोइ विध समावो॥ ८॥

मन से फ: है कि निज नांव ने: अँच्छर जो ब्रह्म का निजी नांव है वो सच्चा है। बिना प्रेम के नवधा भक्ति का जो प्रेम है वो कच्चा है। वेद व्यासजी के लडके सुखदेवजी के अलावा अनेक व्यास संसार में हुये है उनमें से किसी का वेद पुराण पढकर मोक्ष हुवा हो तो बताओ। राजा परिक्षीत के अलावा वेद पुराण सुणकर अब तक किसकी मुक्ति हुई है सो सोझकर बताओ। जिन्होंने तन मन लगाकर साधन किये उन्हें ही उस पद की प्राप्ति हुई, चार जुगो में अनन्त की साक्षी है और सब यही कहते है। केवल वेद पुराणो को बांचकर किसी को मोक्ष की प्राप्ति हुई हो तो परगट उदाहरण दो। जैसे वेद व्यासजी के लडके को सब कहते है वो मोक्ष में गये है और सारा संसार जानता है, ऐसा उदाहरण दो। पुराणो को छोडकर किसी ने जप किया तप किया और भक्ति की है उनको पुराणो से क्या मतलब है, केवल कहने सुनने की बात है। वेदो को पुराणों को न तो सुना है, न ही पढा है, न ही गीता पढी है, केवल नांव की भक्ति करने वाले अनन्तो का उद्धार हुवा है। इसकी प्रगट साक्षी देते है। जप करके तप करके बिना भेद के भक्ति करने वाले मोक्ष में नहीं पहुंचे और तुम पुराण बांचकर मोक्ष की प्राप्ति करना चाहते हो, यह मुझे बडा आश्चर्य है। म:फ: है कि सब ज्ञानी सुणो अपनी बुद्धि लगाकर सोचो, किस किस ज्ञान को धारण करने से किस किस पद की प्राप्ति हुई वो ही विधि धारण करो।

卐 हरजस पद राग आसा (२८) 卐

बांदा पुराण सुण कुण तिरिया हो। मोख जाय सो तो बिध न्यारी, पढिया सुं काज न सरिया हो॥ टेर॥
बल पान्डव हरिचन्द रूखमांगद, फिर अमरीष कहावे।
ऐसा अनन्त सत सुं तिरिया, सब जग सायद गावे॥ १॥
दरवासा त्रणवृत ऊधालक, विश्वामित्र भाई।
द्रोणाचार्य कृपाचारज, जप तप कर गत पाई॥ २॥
कपिल मुनि गोतम बाणारस, अनंत रिष कहूं तोई।
अे सोऊं जाप जपे गढ चढिया, साख भरे सब कोई॥ ३॥
गोपीचन्द भरतरी गोरख, जलन्धर सुण आंणो।
अे जोगारंभ साज हुवा बन्दा, और कछु नहीं जांणो॥ ४॥
सनकादिक नारद हस्तामल, अस्टाबकर सोई।
वास्टमुनि दतात्रेय याने, तत चिनियो जोई॥ ५॥
नव जोगेश्वर जनक वेदैही, सुखदेव कूं संग किया।
कुदरत कला नांव की जागी, ऊलट आद घर लिया॥ ६॥
बालमिक भिलणी गुजर, ध्रुव प्रहलाद बखाणो।
सिरियादे सरगरो सांचो, राम राम या जाणो॥ ७॥
कलियुग सन्त कबीर नामदेव रांको, नानक पीपो भाई।

सन्तदास दादू दरिया सा, नेः अँच्छर कल पाई ॥ ८ ॥
नेक नेक बानगी भाखी, धरम धरम की न्यारी।
जो विस्तार कहूं तो बोता, कहां लग करूं उचारी ॥ ९ ॥
कह सुखराम सुणो सब कोई, हम नेः अँच्छर पाया।
नव जोगेश्वर जनक वेदैही, यामें ऊलट समाया ॥ १० ॥

मन से फः है कि पुराण सुण किसको मोक्ष की प्राप्ति हुई, मोक्ष की प्राप्ति का साधन अलग है। पुराण पढने से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है। राजा बली, पांच पाण्डव, हरिशचन्द्र, रूखमांगद, राजा अमरीष ये सांच बोलकर स्वर्ग की प्राप्ति करी। सब संसार साक्षी देता है। दुर्वासा, त्रणवृत, उधालक, विश्वामित्र, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य इन्होंने तप कर स्वर्ग की प्राप्ति की, कपिल मुनि, गोतम जी, जालन्धरजी ये अष्टांग योग की साधना करके शरीर से अमर हो गये और दूसरी साधना नहीं की, सनकादिक, नारद, हस्तामलजी, अष्टावक्रजी व वशिष्ट मुनि, दतात्रेयजी इन्होंने तत याने पारब्रह्म की प्राप्ति की, नव जोगेश्वर राजा जनक वेदैही और वेदव्यासजी के लडके सुखदेवजी इन्होंने कुदरत कला याने सतशब्द नेः अँच्छर की जागृति करके बंकनाल से उलटकर आद घर याने केः पद आः पद की प्राप्ति की। वालमिक ऋषि, शबरी, भिलणी, गुजरी, ध्रुवजी, प्रहलादजी, श्रीयादे, बालमित सरगरा इन्होंने वाणी के आधार से राम राम की भक्ति की। कलियुग में सन्त कबीरजी, नामदेवजी, रांकाजी, नानकजी, पीपाजी, संतदासजी, दादूजी दरियावजी इन्होंने सतशब्द नेः अँच्छर की प्राप्ति की है। सब धरमों का थोडा थोडा वर्णन किया है, अगर विस्तार से वर्णन करूं, तो कहां तक करूं। मःफः है कि सब ही सुणो हमने भी सतशब्द नेः अँच्छर की प्राप्ति की है। नव जोगेश्वर राजा जनक वेदैही ने बंकनाल के रास्ते उलटकर केः पद की प्राप्ति की है, वो हमने की है।

卐 हरजस पद राग आसा (२९) 卐

पांडे सुण ले बेद हमारो, जाकूं शेष महेशर बंछे, लगे शकल घट पियारो ॥ टेर॥
भणणो भाव साध सुं राखुं, खिमया कका पढ लिया।
सीधो सांच चित चरणायक, अरथ नांव दिल दिया ॥ १ ॥
प्रेम पुराण विरह व्याकरण, साजन मत संभाया।
चारों वेद अगम की अणभै, जीव चेतावण आया ॥ २ ॥
कागद कलम एक नहीं चहिये, पाठो न पाटी स्याही।
जन सुखराम दील दी भीतर, सतलोक गम पाई ॥ ३ ॥

पंडितो से फः है कि हमारा ज्ञान सुण लो, जिस ज्ञान की शेषजी महादेवजी भी इच्छा करते है और सबको अच्छा लगता है। सतशब्द की भक्ति करके केवली भगवंतो के अणभै ग्यान से भाव रखना ही पढना है। क्षमा धारण करना ही कका पढना है। सांच धारण करना ही सीधा पढना है। अणभै ग्यान का चिन्तन करना ही चरणो में पड़ना है। निज नांव में दिल लगाना ही अरथ का समझना है। प्रेम व विरह से भक्ति करना ही पुराण व व्याकरण पढना है। इस तरह का साधन करना ही मत संभाना है। अगम पद की केवली भगवंतो की अणभै वाणी बोलना ही, चारो वेदो

का बखाण करना है। इस तरह जीव को चेताने के लिये संत आये है। इस साधन में कागद कलम पाठो पाटी स्याही नहीं चाहिये। म:फ: है कि दिल के भीतर ही सतलोक का ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

卐 हरजस पद राग आसा (३०) 卐

संतो केवल मत तो न्यारी। बेद भेद का मत सब उला, पारब्रह्म लग सारी॥ टेर॥
सुरगुण भक्त करे नर कोई, जांरे विश्वास कुवावे।
काया मांय कछु नहीं व्यापे, बाहिर परचो पावे॥ १॥
जिऊं मां बाप पूत को कारज, ब्याव बिरद कर देवे।
यूं सुरगुण में बाहिर परचा, आनन्द पद नहीं लेवे॥ २॥
जिऊं संसार मांय सुण पदवी, खांण पीण की होई।
भोग बिना प्राक्रम नर में, यूं निरगुण गुण जोई॥ ३॥
रिध प्रताप मांय की भक्ति, सिद्ध गुण पिता कहावे।
सतस्वरूप आनन्द पद घट में, सतगुरु शरणे पावे॥ ४॥
माता के सुण रह घर मांही, सब सुख आनन्द होई।
निरभै ज्ञान भेद नहीं पावे, बिन संता कहूं तोई॥ ५॥
ज्यूं कुल मांय द्रव बहो तेरो, ईऊं निरगुण लग करणी।
कुल कूं छाड संत जब हुवा, वह विध दूरी धरणी॥ ६॥
ज्युं कुल छोड हुवो बैरागी, अब जगत फंद रयो न कोई।
एक ही ध्यान साहिब सुं मिलणा, हार जीत नहीं होई॥ ७॥
यूं सुरगुण निरगुण भक्ति मांही, परचा जन के होवे।
सतगुरु रूप आनन्द पद गहिया, परचा दिशा न जोवे॥ ८॥
कह सुखराम समझ बिन ज्ञानी, माया फंद सरावे।
आनन्द पद भेद नियारो, बिन सतगुरु नहीं पावे॥ ९॥

संतो से फ: है कि केवल का ज्ञान सबसे अलग है। वेदों का व योग ज्ञान उली तरफ का है याने पारब्रह्म तक का है। विश्वास के साथ सुरगुण भक्ति करते है। उनके शरीर में शब्द के चैन नहीं होते है। बाहर परचे होते रहते है। जिस प्रकार माता पिता लडके का शादी ब्याव कर देते है उसी प्रकार सुरगुण भक्ति में बाहर परचे होते रहते है। आ: पद की प्राप्ति नहीं होती। जिस प्रकार संसार में खाने पीने की पदवी है लेकिन आप तो खाने पीने का सुख भोगता नहीं है। लेकिन दूसरो को सिद्धयो के द्वारा देता है। यही निरगुण का गुण है। रिद्धियां माया की भक्ति में है। सिद्धियां ब्रह्म की भक्ति में है। सतगुरु से भेद लेकर भक्ति करने पर सतस्वरूप आ: पद की प्राप्ति होती है लेकिन निरभै ज्ञान संतो के याने सतशब्द के भेद के बिना नहीं मिलता है। जिस प्रकार घर में बोहत धन हो लेकिन संत बनना हो तो उन सब को छोडना पडता है। ऐसे ही निरगुण की करणी में रिद्धियां सिद्धियां रूपी धन है लेकिन जब सतगुरु पद की भक्ति करनी हो तो निरगुण की करणी व ऋद्धि सिद्धि व वहां तक के साधन को भी त्यागना पडता है। कुल को छोडकर बैरागी होने पर कुटुम्ब की तरफ से कोई काम

नहीं करना पडता है। उसको तो एक ही ध्यान रहता है कि कब परमात्मा पद की प्राप्ति करूं। कुटुम्ब की तरफ का कोई सुख दुख नहीं रहता है। यही हार जीत नहीं होई है। सुरगुण निरगुण की भक्ति करने वालों के परचे होते है। इसी तरह सतस्वरूप आः पद की भक्ति करने वाले परचे नहीं चाहते। मः फः है कि बिना समझ के ज्ञानी माया की करणियों व माया के परचे की ही सराहना करते है, लेकिन सतस्वरूप आः पद का भेद अलग है। सतगुरु याने संतो के अणभै ग्यान की विधी सांस ऊसांस में राम रटणे के बिना प्राप्त नहीं होता।

卐 हरजस पद राग आसा (३१) 卐

प्रभुजी मैं किसका शरणा धारूं। भोलप मांही किया गुरु चारी, को तज किस बिन सारूं॥ टेर॥

कृपा कर हमारे मांही, नाम केवल हरी आया।
ता पीछे गुरु भोलप मांही, लालदास कूं गाया॥ १॥
बाणी कहूं रीत बोहो भारी, शब्द पिछम दिस धावे।
तब मैं छाड लाल कूं दिया, बुज्या अरथ न आवे॥ २॥
रामदास के दरशण आया, पूजा टेल चढाई।
तब जन राम बुजणे लागा, को गुरु तेरा भाई॥ ३॥
तब मैं कहयो गुरु है बीरम, निज पद मोहि बताया।
मेरे रीत बणी है ऐसी, मैं परखावण आया॥ ४॥
जब जन रामदासजी बोल्या, रीत पकी है थारी।
यां को भेद आज्ञा सुण लिया, बोहोत बणेगी भारी॥ ५॥
बीरमदासजी यांही का चेरा, इशा भेव मुज दिया।
जब मैं जाय सुणयो भाई अेसी, रामदास गुरु किया॥ ६॥
बुज्या बात बीरमजी खीज्या, जाब मुझको दिया।
मुझ कूं करे ढेढ को चेलो, दगो रामदास किया॥ ७॥
चारी गुरू इसी विध किया, सुणो संत सब कोई।
अडबी पडी न्याव सब किजे, सतगुरु कहो कुण होई॥ ८॥
मेरे बस कछु अब नांही, बात गई है फेली।
हर जन साध संत सुण साहेब, राम करे सो व्हेली॥ ९॥
मैं मत हीण बुध सुण ओछी, अकल नहीं तन मांही।
कह सुखराम रखे जा रूलां, सुण हो आद गुंसाई॥ १०॥

परमात्मा से प्रार्थना कर रहे है कि मैं किसको गुरु मानूं, भोलेपन में मैंने चार गुरु किये है, किसे छोडू और किसे मानूं, परमात्मा की कृपा से केवल नाम याने परमात्मा का निज नांव नेः अँच्छर कुदरती से ही जन्मते ही जागृत हो गया यही नांव केवल हरि आया है। उसके बाद कुटुम्ब के गुरु लालदासजी थे उनको धारण किया और परखाने को गये। केवल नाम के प्रताप से बांणी कहने लगे और शब्द पिछम दिशा में अनुभव होने लगा, तब मैंने लालदासजी से उसका भेद पूछा तो वो नहीं बता सके, इसलिये मैंने उनको छोड दिया। रामदासजी के दरशन करने गये उनके भेट पूजा चढाई

तब रामदासजी ने पूछा तुम्हारा गुरु कौन है। तब मैंने कहा बीरमदासजी मेरे गुरु है याने बीरमदासजी से १८०१ में भक्ति का गुण लगा व १८२४ में बीरमदासजी ने सुरत शब्द का ग्यान कराया, फिर निज पद के: पद आ: पद में मिलने का भेद बताया है। मेरा साधन ऐसा है सो मैं आपको परीक्षा कराने के लिये आया हूं। रामदासजी ने कहा तुम्हारा साधन सही है, यहां से आज्ञा लेने पर और अच्छी बनेगी। रामदासजी ने कहा बीरमदासजी यहीं के शिष्य है। मैंने जब ऐसी बात सुनी तब रामदासजी को गुरु माना। याने शब्द सुरत का ग्यान पूछा। यह बात मैंने बीरमदासजी महाराज को कही, तब उन्होंने गुस्से में आकर नाराज होकर मुझे कहा कि मेरे को ढेड का शिष्य कहता है। यह सब रामदासजी ने झूंठ कहा है। इस तरह चार गुरु किये है। सब ही संत सुणो इसका न्याव आप करो कि किसे सतगुरु मानूं। मेरे बस में अब कुछ नहीं है। बात सब जगह प्रकट हो गई है। हरिजन संत साध आप सब सुणो, जो रामजी करेंगे वो ही होगा। मैं मतिहीन मेरी बुद्धि छोटी है मेरे शरीर में अक्ल नहीं है। म:फ: है कि हे रामजी सुणो, जिस तरह आप रखोगे वैसे ही मैं रहूंगा।

卐 हरजस पद राग आसा (३२) 卐

संतो वो सुण कारण नांही। भावे त्याग आज कर निकसो, भावे रहो घर मांही॥ टेर॥
माहा बैराग ऊपनो हो छिन में, जंगल की राह धावे।
तां दिन त्याग करे नर अेसो, देह तज्या हंस जावे॥ १॥
मन सुलजाय कियो जब न्यारो, अडबी रह न कांई।
ऐसो ज्ञान महारस पाया, भेल्यो भिले न मांही॥ २॥
दूध मथ घिरत करत जुग न्यारो, कास्ट आग प्रकाशा।
यूं मथ ज्ञान बिरच नर बैठो, तजि ब्रह्म लग आसा॥ ३॥
मात पिता सुत नार कुलन्तर, जुग जुग बोह संग किना।
दिन दस सुलझ समझ ढींग बैठो, अंत छाड सब दिना॥ ४॥
आवागमन मिटाई चावो, माहापरम सुख लिजे।
कह सुखराम नांव तज करता, सत नांव चित दिजे॥ ५॥

संतो से फ: है कि इसका कोई कारण नहीं है, चाहे घर में रहो, चाहे त्याग कर जावो। जिस तरह माहा बैराग उपजता है तो घर को छोडकर जंगल की तरफ चला जाता है। मृत्यु आने पर सब ही इस शरीर को छोड देते है लेकिन वो त्याग श्रेष्ठ है जो जीते जी शरीर को छोडकर के: पद आ: पद की प्राप्ति हो जाती है। संसार में रहते हुये इससे मोह व आपा नहीं रखता है तो किसी प्रकार की अडबी नहीं रहती है। वह संसार के साथ में रहता हुवा भी अलग है। इस तरह सतशब्द का ज्ञान प्राप्त होने पर शरीर में रहते हुये भी शरीर से अलग है। दूध मथकर घी को अलग करते है। कास्ट मथने से आग प्रगट हो जाती है। ऐसे ही सतस्वरूप आ: पद का ज्ञान धारण करके ब्रह्म पद तक के ज्ञान को छोड दिया। माता पिता लडका स्त्री कुटुम्ब जिस जिस योनि में गये वही मिले। इनके साथ में रहते हुये भी आपा व मोह छोडना ही इनको छोडना है। जन्म मरण से रहित होना चाहते हो तो के: पद आ: पद की प्राप्ति करो। म:फ: है कि करता याने आधार का जो नांव है इसको छोडकर सत नांव याने निरधार निज नांव की भक्ति करो।

हरजस पद राग मस्त (१)

तूं तो स्याम धणी कूं बर अे, लाड लडी लाछा।
ज्युं तेरा सब सिद्ध कारज सरे अे, लाड लडी लाछा॥ टेर॥
आनदेव सब ऊला होई, जे मरजाय जगत ज्युं सोई।
च्यार दिना का सगा सोई, हां अे तुं तो अवगत सुं रत रे अे॥ १॥
नव दस शेष अठयासी सारा, ब्रह्मा बिसन महेश विचारा।
धर धर जन्म पचे पच हारा, हां अे तुं तो केवल को घर कर अे॥ २॥
धर ब्रह्मण्ड अेबी मर जावे, जंवरो सोज शकल कूं खावे।
वां लग काल कबूं नहीं जावे, हां अे तुं तो अवगत आसा करे अे॥ ३॥
कह सुखराम सभी बर काचा, फेरा पेली मरण की आसा।
मुरदा सुं क्या सन मन पासा, हां अे तुं तो कहयो हमारो कर अे॥ ४॥

आत्मा को लाड लडा रहे है कि तूं परमात्मा पद की प्राप्ति कर, जिससे जन्मना मरना मिट जाय। जो नेत्रो से दिखता है, ऊपजता खपता रहता है, ईन्द्रियो के द्वारा जाना जाता है। ये सब आनदेव और उली तरफ के है। जगत में मरते है जैसे ये भी आते जाते है ये भी ऊपजते खपते है। इसलिये इनका साथ हमेशा नहीं रहता है इसलिये चार दिना के सगा सोई है, इसलिये तूं उस अवगत परमात्मा की प्राप्ति कर जो सत है और उपजता खपता नहीं है। नो नाथ, दस अवतार, अठयासी हजार ऋषि मुनि, ब्रह्मा विष्णु महादेव इनकेभी अनेक जन्म होते रहते है, इसलिये तूं तो के: पद आ: पद की प्राप्ति कर। धरती और ब्रह्मण्ड ये भी एक दिन मिट जायेंगे। काल सबको सोजकर खा जाता है। सतस्वरूप आ: पद में काल नहीं जाता है, तूं उस पद की आशा कर। म:फ: है कि इस तरह सभी असत है और थिर नहीं रहेंगे, यही फेरा पेली मरण की आशा है। जो ऊपजते खपते है उनकी क्या भक्ति करना, यही मुरदा से संबंध नहीं करना है इसलिये तूं तो हमारा कहना कर ले।

卐 हरजस पद राग मस्त (२) 卐

म्हाने अवचल बर परणावो ओ, आत्मा का ओ बापजी।
वांहा अमर सुहागण कुवांवा, आत्मा का ओ बापजी॥ टेर॥
जे मरजाय तिके नहीं ब्याऊं, चार दिना फिर रांड कुवाऊं।
पीछे संकट बोहोत दुख पाऊं हो, जांके काल घरे नही जाय हो॥ १॥
जे आधीन और बस होई, जाचक देव न मांनु कोई।
जे दुखी आप क्या सुख लोई हो, अे तो सब जंवरो चुण खाय हो॥ २॥
ज्यां री बात मांड लग होई, तीन लोक आगे नहीं कोई।
वे बर परथ न मानुं सोई हो, म्हाने अवगत हर सुं ब्यावो हो॥ ३॥
कह सुखराम बजाई बजाई, जे कोई बीन्द नहीं जग मांई।
तो तूं बाप परण हर आई हो, मैं तो सांच कहयो तूं ही सुण हो॥ ४॥

आत्मा परमात्मा से कह रही है कि मेरे को अवचल बर याने जिसका कभी नाश नहीं होता

है उस पद की प्राप्ति कराओ। उस पद की प्राप्ति करने पर अमर हो जावे याने जन्मने मरने से रहित हो जावे तो यही अमर सुहागण कहलाना है। जो जन्मे मरे उसकी भक्ति नहीं करूं, जिसकी भक्ति करने पर जन्म मरण में आना पडे, यही रांड कुवाना है। जन्म मरण में आना ही बोहत संकट का आना है। उस पद की प्राप्ति करावो जहां काल नहीं जाता है। जो दूसरे के आधीन है उनकी भक्ति नहीं करना चाहती हूं। यही जाचक देव को नहीं मानना है। जिनके खुद के ही दुख दूर नहीं हुये है वो दूसरो के दुख कैसे दूर कर सकते है। इन सबको तो काल खा जाता है। जिनकी बात मृत्युलोक तक है। ज्यादा से ज्यादा तीन लोक तक में है, मैं उनकी भक्ति नहीं करना चाहती। मुझे तो सतस्वरूप आः पद की भक्ति करावो। मःफः है कि आत्मा कह रही है कि ऐसा जन्मने मरने से रहित कराने वाला दूसरा कोई नहीं है। अतः हे परमात्मा मुझे आपकी शरण में लो आपसे सच्ची प्रार्थना करती हूं।

卐 हरजस पद राग मस्त (३) 卐

फुटरिया मन रे। तुं तो हर भज पार उतर रे, थारो अवसर कारज सरे रे॥ टेर॥
राम सुमर मन ढील न कीजे, ओ मन झूंठ बिकार न दिजे।
सागट कुं सुण संग न लिजे, रे मन साध संगत चित धर रे॥ १॥
तन मन अरप गुरांजी ने दीजे, आठो पोहर अग्या मांही रिजे।
पतिव्रत खण्ड कबु नहीं किजे, हां रे मन गुरु मुख ईमरत झर रे॥ २॥
अेसो डाव कबू नहीं पावे, मिनखा तन बिन जांहा तांहा जावे।
लख चौरासी में गोता खावे, हां रे मन सबल श्याम कूं बर रे॥ ३॥
अब के हारो के जीतो रे भाई, आ सुण नांव किनारे आई।
खाली कराके भरदो मांही, हां रे मन रच मच हर सुं अड रे॥ ४॥
कह सुखराम ऋषि जन सोई, शिवरण श्याम न भूलो कोई।
ईस बिध भक्त करे नर लोई, हां रे मन जिवतडा तूं मर रे॥ ५॥

हे प्यारे मन उस परमात्मा का भजन करके भव सागर से पार हो जाये, इस मनुष्य जन्म में ही परमात्मा की प्राप्ति होती है, यही कारज सरना है। रामजी की भक्ति करने में देरी मत करो। जो असत है, थिर नहीं है, उसमें मोह करना ही व अपना समझना ही विकारो में लगना है। जो भक्ति में प्रेम नहीं करते है उनका साथ नहीं करना चाहिये। हे मन जो सत स्वरूप आःपद की भक्ति करने वाले है उनका ज्ञान धारण करो। तन मन से भक्ति करना व हर समय सतगुरु याने संतो के अणभै ग्यान की आज्ञा में रहना ही पतिव्रत धरम का खण्डन नहीं करना है। सतगुरु अणभै ग्यान का निरपक्ष निरणा करते, यही उनके मुखार बिन्द से ईमरत झरना है। ऐसा मनुष्य जन्म फिर नहीं मिलेगा। मनुष्य शरीर के बिना चौरासी में भटकना पडेगा। इसलिये हे मन तूं सतस्वरूप आः पद की प्राप्ति कर। मनुष्य जन्म का पाना ही नांव का किनारे आना है तथा मनुष्य जन्म पाकर नरको व चौरासी में जाना ही हारना व खाली करना है। मनुष्य जन्म पाकर मोक्ष की प्राप्ति करना ही जीतना व भरना है। हे मन तूं हर समय परमात्मा का भजनकर। मःफः है कि वही मनुष्य ऋषि व संत है जो एक क्षण परमात्मा का भजन नहीं भूलते। मनुष्यो से फः है कि ऐसी भक्ति करो जिससे

पांच तत्वो व शरीर स्वांसा से अलग होकर जीते जी के: पद की प्राप्ति करना ही जीवतडा मरना है।

卐 हरजस पद राग मस्त (४) 卐

तूं तो निरगुण पद से मिल रे, ज्ञानी मन नर रे।
तूं तो पारब्रह्म सूं मिल रे, ज्ञानी मन नर रे॥ टेर॥
भगत मुगत की गेल सम्भावो, नांव अमीरस ईमरत खावो।
सांस उसांस की डोर लगावो, रे मन भजन पूर कर ले रे॥ १॥
आसण मार जुगत से बैठो, या घट मांय पवन संग पेसो।
जब तन खोज शब्द मुख कह सो, रे मन आत्म सोजर छिल रे॥ २॥
लिव बंध शिवरण अे निस कीजे, नाभी मांय सूरत मन दीजे।
रसणा जोर ऊतावल कीजे, रे मन बिरहन सुं नित खेल रे॥ ३॥
बंकनाल होय ऊंचा जावो, त्रकुटी मथ अनाहद बहावो।
सुखमण गंग निसो दिन न्हावो, रे मन दशवें द्वार पर पिल रे॥ ४॥
कह सुखराम सुणो संत आई, निरगुण सूं हम मिलियां मांही।
पीछे आ बिद रीत बताई, रे मन थाका मूसा बिल रे॥ ५॥

हे ज्ञानी मन नर तूं निरगुण पद की प्राप्ति कर और पारब्रह्म में मिल। भगती मुगती का साधन करो। नांव रूपी अमरत पीवो, हर समय सांस उसांस में भजन करना ही सांस उसांस की डोर लगाना है व भजन पूर करना है। आसन लगाकर स्वांसा के साथ भजन करना ही युक्ति से बैठना व पवन संग पेसो है। सारे शरीर में शब्द का अनुभव कर मुखारबिन्द से कहना ही जब तन खोज शब्द मुख कह सो है। आत्मचेतन द्वारा अनुभव करके उसका अनुभव आनन्द लेना ही आत्म सोजर छिल रे है। नाभी में सूरत लगाकर विरह के साथ रसना द्वारा जल्दी से जल्दी हर समय रात दिन भजन करना ही लिव बंध शिवरण करना है। बंकनाल से उलटकर ऊपर त्रिकुटी में बिना किये शब्द का अनुभव होना ही अनहद बहावो है। दशवे द्वार में हर समय सुखमणा में अपने आप भजन होना ही सुखमण गंग में नहाना है। म:फ: है कि सब ही संत सुणो, शरीर व स्वांसा से अलग होकर केवल में मिलना ही निरगुण से मिलना है। आ: पद में लय होना ही थाका मूसा बिल रे है। अर्थात अब जन्मने मरने से बरी हो गई।

卐 हरजस पद राग मस्त (५) 卐

तूं तो ऊण पद सुं मिलजा रे, लाड लडा मन रे। तूं तो आवागवण न ओरूं, सुध लिया मन रे॥ टेर॥
रजोगुण, तामस, ममता त्यागो, सतगुण शील नींद सुं जागो।
रच मच नांव भजन सुं लागो, रे मन उलट आद घर आ रे॥ १॥
बेद कुराण पुराण तजिजे, अेको नांव निकेवल लिजे।
सब तन चूर गिगन घर कीजे, रे मन दशवें द्वार समा रे॥ २॥
त्रगुण रूप तजो सब भाई, राम बिना सब झूंठ सगाई।
दशवों द्वार ऊगाडो जाई, रे मन नैचल सुं लिव ल्या रे॥ ३॥

कह सुखराम सुणाय सुणाई, आवागमण संकट बोहो भाई।
ब्हो दुख जीव सहे तन मांही, रे मन अवगत देव मना रे॥ ४॥

मन को लडा रे है कि तूं उस पद की प्राप्ति कर ले जिससे तूं आवागमण में नहीं आवे, रजो गुण तमोगुण व ममता को त्यागो व सतोगुण शीलव्रत धारण करो। निरन्तर निज नांव की भक्ति करो। निज नांव याने सतशब्द के साथ बंकनाल से ऊलटकर के: पद आ: पद की प्राप्ति करो। वेदों कुराणो पुराणो के ज्ञान को छोडकर एक निकेवल नांव ने: अँच्छर का भजन करो। शरीर में सब स्थानों को पार करके गिगन याने ब्रह्मण्ड व पार ब्रह्म से ऊपर दशवें द्वार में पहुंचना ही दशवें द्वार समा रे है। त्रृगुण रूप से प्रेम छोडो, एक रामजी की भक्ति बिना सब झूंठा प्रेम है। दशवा द्वार से बाहर होकर के: पद का अधर अनुभव होना ही ने: चल सुं लिव ल्या रे है। म:फ: है कि जन्मने मरने का दुख बडा भारी है। यही बात बार बार समझाकर कहता हूं कि इस शरीर में जीव को बोहत कष्ट सहने पडेंगे, इसलिये अवगत परमात्मा की भक्ति कर।

卐 हरजस पद राग मस्त (६) 卐

छोगाला नर रे, तुं तो जम जालम सुं डर रे। तुं तो कहयो हमारो कर रे, तुं ध्यान हरि को धर रे॥ टेर॥
जब तन आंण पडेला घेरा, नव दरवाजा जम का डेरा।
रंज गेल मिले नहीं सेरा, रे तुं तो वां दिन को भै कर रे॥ १॥
जो जो करम किया ते भाई, से सब लिखिया कागदा मांही।
अणभोले कोई अेको नहीं जाई, रे मन तिल तिल लेखो करे रे॥ २॥
केह केह मार दिरावे सोई, ज्युं लोह ताव दिरावे लाई।
यह सब काम तुम्हारा होई, रे मन वां दिन दुख पडे रे॥ ३॥
कह सुखराम सुणो नर आई, जम की झाट बुरी रे भाई।
चूंट चूंट डाकी ज्युं खाई, रे मन समझर राम सिमर रे॥ ४॥

सभी मनुष्यो से फ: है कि तुम जम जालम से डरो, तुम मेरा कहना मान कर परमात्मा का भजन करो, जिस समय शरीर छूटेगा तब नो दरवाजे से जावोगे तो जमराज के बन्धन में ही रहोगे। नो दरवाजो से जावोगे तो मोक्ष में जाने का जरा सा भी रास्ता नहीं मिलेगा, इसलिये अन्त समय का डर रखो, जो तेने अच्छे बुरे कर्म किये है वो सब चित्रगुप्त के यहां लिखे हुये है। किये करमो का फल अलग अलग भोगना पडेगा। एक भी करम बिना भोगे नहीं छूटेंगे। एक एक करम बताकर उसका फल भुगतायेंगे। जिस प्रकार लोहा गरम किया जाता है, यह तुम्हारे ही किये हुये करमो का फल है। इसलिये उन करमों का फल भोगना पडेगा। म:फ: है कि सब मनुष्य सुणो, नरको व चौरासी का जन्मने मरने का दुख बडा भारी है। यही जम की झाट व डाकी का चूंट चूंट खाना है। इस तरह समझकर सतगुरु विधि से सांस ऊसांस में रामजी का भजन करो।

卐 हरजस पद राग मस्त (७) 卐

हे तूं तो बाबल मुज परणावो हो, आत्म का हो बापजी॥ टेर॥
आत्म कन्या बचन ऊचारा, अब मुझ पीयर लगे जग खारा।
बिन खांवद सो ध्रक जमारा, हो तुं तो बाबल मुज परणावो हो॥ १॥

अब मुझ समझ बहुत ऊर आई, बिन खावंद किम जिऊंरी मांई।
सतगुरु पास अकल बोहा पाई, अब मेरो अेल जमारो जाय हो॥ २॥
मेरी साहिन्या के लडका होई, बागा है थाल अनाहद सोई।
अणभै गुल बटिजे लोई, हो अेतो सेज समाध समावे हो॥ ३॥
कह सुखराम ब्याव अब किजे, केह मेरो दोष, सराप सहिजे।
गुण ओगुण सब छाडज दिजे, हो अब तुं तो बेगो लगन लिखाय हो॥ ४॥

आत्मा परमात्मा से प्रार्थना कर रही है कि हे बाबल मुझे परणावो। आत्मा का हे बापजी, आत्म कन्या कह रही है कि अब मुझे पीयर याने संसार खराब लगता है। बिना परमात्मा की प्राप्ति के जीना धिक्कार है। हे बाबल मुझे परमात्मा की प्राप्ति करावो। अब मैं यह समझ रही हूं कि परमात्मा की प्राप्ति के बिना कैसे जी सकती हूं। सतगुरु का ज्ञान धारण करने से यह मालूम हुवा कि मेरा जीवन व्यर्थ जा रहा है। मेरी साहिन्या याने दूसरी आत्माओं के शब्द की जागृति हो गई, यही लडका होना है। बिना किये हुये शब्द की ध्वनि हुई यही अनहद थाल बजना है। अणभै का वचन कहना ही गुड बटना है। सता समाधि होना ही सेज समाध समाना है। म:फ: है कि आत्मा कह रही है कि परमात्मा की प्राप्ति करा दो या मेरे सराप सहन करो, मेरे गुण अवगुणो की तरफ मत देखो, जल्दी परमात्मा की प्राप्ति करा दो।

卐 हरजस पद राग चरचरी (१) 卐

धिन गुरु ज्ञान जो साध इण जुग में, अनन्त ही जीव कूं आंण तारे।
मेरे है ऊर मन अेसी आवे, जुगन जुगन रहुं लारे॥ टेर॥
भरम तो बोहोत जंजाल बोहो घट में, जुगत के संग मा जाऊं बुओ।
कृपाल दयाल मुझ आंण काढियो, भव ही सिंध से कियो जुवो॥ १॥
ज्ञान तत्काल मुझ आंण अेसो दियो, अरध ही नांव को भेव आंणी।
जीव उत्पत अे आद गुण ऊपना, तीन तिरलोक शिर गत जांणी॥ २॥
काल का मुख सुं आंण मुझ काढियो, गरभ ही जूण की भरान्त खोई।
केत सुखदेव भू स्वर्ग पाताल में, नाम गुरुदेव सम नांय कोई॥ ३॥

ऐसे सतगुरु याने केवली भगवंतो को व उनके अणभै ग्यान व संतो को धिन है, जिनके ज्ञान से अनन्त जीवों का उद्धार हुवा है। मेरे मन में ऐसी आती है कि जुगों जुगों तक सतगुरु का ही अणभै ज्ञान धारण करूं। शरीर में अनेक भरम करम रूपी जंजाल में लगे रहना ही जगत के संग बहना है। कृपालु दयालु सतगुरु ने अरध शब्द याने ररंकार का भेद दिया, जिससे आद से जीवों की उत्पति तीन लोको में होती है। उससे मुझको अलग कर दिया। जन्म मरण व गर्भ में नहीं आना व चोरासी नहीं भोगना ही गर्भ ही जूण की भरान्त खोई है। म:फ: है कि तीन लोक स्वर्ग मृत्यु पाताल लोक में निज नांव व सतगुरु याने केवली भगवंतो के बराबर कोई नहीं है।

卐 हरजस पद राग चरचरी (२) 卐

ऐसे अवगत आप सांई, मेहमा काहा कीजिये। शेष मुखा सुं शेष गावे, तोही पार न लीजिये॥ टेर॥

फूल्यो हिरणाक बहुत भारी, शिव बिस्न ब्रह्मा हारियो।
आप अवगत मांय निकसे, पटक राक्षस मारियो॥ १॥
हरे वेद चारूं देत, धस्यो समंद मांही। जब दुज उठ के, प्रणाम कियो सांई॥ २॥
समंद सब मथ सोज, संख मरोड लिया। ब्रह्मा कूं बेद हरी, आप आण दिया॥ ३॥
शिव में भीड गाढी पडी, मोहनी रूप धारियो।
कह सुखराम मार दुष्ट, शिव को कारज सारियो॥ ४॥

हे परमात्मा आप ऐसे अवगत है आपकी महिमा का वर्णन कैसे करूं। हजार मुंह से शेष आपका यश गाते है तो भी आपका पार नहीं पाते है। हिरणाक्ष राक्षस बहोत बलवान हुवा, ब्रह्मा विष्णु महादेव भी उससे हार गये, आप उसके हाथ से प्रकट होकर राक्षस को मार दिया। चारो वेद लेकर शंखासुर राक्षस समुद्र में घुस गया तब ब्रह्माजी ने आपसे प्रार्थना की तो आपने समुद्र सोध कर राक्षस को मार दिया। आपने चारो वेद लाकर ब्रह्माजी को दिये। शिवजी में कष्ट आने पर मोहनी रूप धरकर भस्मासुर को मार उनकी रक्षा करी।

卐 हरजस पद राग चरचरी (३) 卐

ऐसे ही बोहो बेद कुराण, भरे सायद तेरी। अबे दयाल दया देख, राख लाज मेरी॥ टेर॥
शरणे आय न डुबो कोई, भगत बिछल तोकूं कयो।
जात पांत कुल हीन, कपटी तार लियो॥ १॥
पतत पावन अधम उधारण, सुणयो बिड़द तेरो।
साख बुझ शरण आयो, पतित नांव मेरो॥ २॥
गीद्ध भील गिनका तारी, लोधो सेन नांई।
घाटम मेणो अजामेल, सजन कसाई॥ ३॥
कामी क्रोधी कुटली तारे, काहा बिडद दीजिये।
कह सुखराम शरण मैं तेरी, मेरा कारज कीजिये॥ ४॥

इस तरह वेद कुराण आप की महिमा करते है। हे परमात्मा दया करके मेरी लज्जा रखो, आपकी शरण में जो भी आया चाहे जाति पांति कुलहीन हो, कपटी हो, आपने सबका उद्धार किया। इसलिये ही आपको भक्तो की रक्षा करने वाला कहा है। आपका बिडद ऐसा सुना है, आप पतित पावन और अधमो का उद्धार करने वाले हो। यह समझकर ही यह पतित आपकी शरण में आया है। इसलिये मेरा उद्धार करो। गिद्धराज, जटायु, शबरी, भीलनी, गिनका, लोधा, सेनानाई, घाटम मीणा व सजन कसाई आदि ऐसे ऐसे कामी क्रोधी कुटली इन सबका उद्धार कर दिया, ऐसा आपका बिडद है। म:फ: है कि मैं भी आपकी शरण में हूं, मेरा भी उद्धार करो।

卐 हरजस पद राग चरचरी (४) 卐

ऐसे श्याम राम, भगत बिछल कवायो।
ज्यां ज्यां भीड पडी भगतन में, तांहा तांहा दौड आयो॥ टेर॥
गही जब दुषाशन द्रोपत, ध्यान तेरो कियो।
बध्यो चीर गज सेहस, पत राख लियो॥ १॥

ध्रुव छाड घर कूं गयो बन में, अंतर ध्यान तेरो धरयो।
आप अवगत ऐसे सांई, अटल राज ध्रुव ने करयो॥ २॥
हिरणा कूं मार पृथ्वी राख लिवी, प्रहलाद जन उबारियो।
गज ग्राह फंद काट, किचक दाणो मारियो॥ ३॥
लाख मेहल रखे पाण्डव, दल बिच भंवरी व्यात है।
सुखराम राम मीरां लियो, ऐसे अवगत नाथ है॥ ४॥

रामजी महाराज आप भक्तो की रक्षा करने वाले है, जहां जहां भक्तो में कष्ट होता है आप वहां पधार कर उनका कष्ट निवारण करते है। दु:शासन ने द्रोपदी का चीर खींचा तब द्रोपदी ने आपसे प्रार्थना की, तब आपने वस्त्र रूप धारण कर उसकी रक्षा की और आपका बिडद रखा। ध्रुवजी ने घर को छोडकर बन में जाकर अन्तर में आपका ध्यान किया। आपने कृपा करके उसको अटल राज दे दिया। हिरणाकुश को मारकर पृथ्वी की रक्षा की व प्रहलाद जी को मृत्यु से बचा लिया। मगर मच्छ से हाथी की रक्षा की और किचक राक्षस को मार दिया। पाण्डवों की लाख के महल में आग लगने पर भी रक्षा की, पाण्डव व कोरवो के बीच में लडाई में टिटोडी के अण्डो की रक्षा की। म:फ: है कि मीरां ने आपकी भक्ति करी, ऐसे आप अवगत परमात्मा है।

卐 हरजस पद राग जोगारंभी (१) 卐

किस विध मिलीये हो राम सूं, आडा बेरी अपार। जब चालूं हर मिलण कूं, लहे बिचे मुज मार॥ टेर॥
लोभ नदी भारी बहे, पिंदे सांसा सूल। पांच पोरायत तीर पे, ऊभा कर कर झूल॥ १॥
मोह का बन्धन साबला, सबली करमा की फौज।
काम कटक भारी घणो, करडी नारी दी मोज॥ २॥
भरम अंधारा बन में, गेलो सुजे नहीं कोय।
सिंह अज्ञान धडुकियो, में ते नाहरी दोय॥ ३॥
दुरमत दासी बोहोर वे, नित पत मुझको आय।
डिगपिच दाणू दाहली, बैठो गेलो रे मांय॥ ४॥
शेष अठयासी घाट है, बेरी अनन्त अपार।
विषम गेल साहिब दिशा, बोहो अन्तर ऊर मार॥ ५॥
जन सुखदेव की विनती, सुणज्यो सतगुरु श्याम।
तुम ऊपर नित राखज्यो, ज्यूं पूंतू निज धाम॥ ६॥

रामजी से किस प्रकार मिले, आडा अपार बेरी है। जब मिलने के लिये चलता हूं तो मुझको बीच में ही मार लेते है। लोभ रूपी नदी भारी बह रही है, जहां लोभ है वहां सोच फिकर रूपी कांटा भी है याने सूल भी है। काम क्रोध मद अहंकार ये पोरायत भी किनारे पर खडे है। अपनी अपनी वृतियों में फंसाते है। कुटुम्ब से संसार में मोह कर रखा है। यह बन्धन भी मजबूत है, करमों की फौज बलवान है। कामना व इच्छा रूपी फौज व स्त्री संग रूपी मौज बडी भारी है। भरम रूपी अन्धकार में रास्ता नहीं दिखता है। अज्ञान घट में छा रहा है। यही सिंह धडुक रहा है। थारी मारी ये अलग है ये सिंहनिया है, दुरमतीयां रूपी कई दासीये है सो नित्य ही मुझे सताती है, डिगपिच

रूपी राक्षस रास्ते में बैठा है। यह विचार स्थायी नहीं रखता। अठयासी हजार ऋषियो के मत अलग अलग है जो करम काण्ड जप तप का ज्ञान धारण करवाते है। फिर आत्मा तीन लोक में जन्मती मरती है। इसलिये परमात्मा की प्राप्ति का साधन बडा कठिन है। बुरे विचार व लक्षण वृतियां अन्तर में कई तरह के आत्मा को भक्ति से रोकने के लिये उपद्रव खडे करते है तो आत्मा पुकार करती है, हे परमात्मा सतगुरु याने केवली भगवंत मेरी प्रार्थना सुणो, आपकी कृपा से ही परमपद की प्राप्ति होना ही निज धाम की प्राप्ति होना है।

卐 हरजस पद राग जोगारंभी (२) 卐

जी गुरां भेद बतावज्यो, किस विध मिलसी जी राम।
मोख मुगत परलोक को, किस विध परसुं मैं धाम॥ टेर॥
जिण जिण विध हर पाविया, सो विध कहो मुज आय।
सोइ सोइ विध सब धार सूं, जपस्युं अे निश जाय॥ १॥
चीर फाड कन्ता करूं, पेरूं इन गल मांय।
गृह तज बन सब ढूंढस्यूं, जे हर मिले मुज आय॥ २॥
केवो तो जुग कुल छाड दूं, तन मन करूं कुरबाण।
काट काट तन छाड दूं, जे हर मिले मुझ आंण॥ ३॥
गुफा खोद भो में रहूं, कहो तो पहाडा बीच।
कहो तो जल में डूब रहूं, कहो घर गारा कीच॥ ४॥
जन सुखदेव गुरु यूं कियो, सुण तूं शिष सुजान।
हर पावो नर सांच सूं, दूजी लिव सुं जांण॥ ५॥

आत्मा रूपी शिष्य ग्यान गुरु देव से प्रार्थना करती है कि किस साधन से परमात्मा की प्राप्ति होगी। मोक्ष मुगती परलोक के धाम को मैं कैसे प्राप्त कर सकूंगा। जिस विधि से परमात्मा की प्राप्ति हो वो मुझ से कहो। वही विधि मैं धारण कर रात दिन भक्ति करूंगा। आप कहो तो लीरियो के बने वस्त्र धारण करूं, यही पेरूं इन गल मांय है। आप कहो तो घर को छोड बन में जगह ढुंढू, अगर परमात्मा मिलते हो तो। आप कहो तो जगत को, कुल कुटुम्ब को छोड दूं। तन मन आप पर न्यौछावर कर दूं, आप कहो तो शरीर को काट काट तन आपके अरपण कर दूं। अगर परमात्मा मिल जाय। गुफा खोद मैं बन में रहूं। आप कहो तो पहाडो में जाकर रहूं, आप कहो तो जल में जाकर डूब जाऊं या आप कहो तो कीचड में जाकर बैठ जाऊं। म:फ: है कि ग्यान गुरु देव ने शिष्य से यह बात कही कि परमात्मा की प्राप्ति सतगुरु विधि से सांस उसांस में राम रटणा विश्वास के साथ रटोगे व बारह कंवल की जानकारी करके आत्मा को सत शब्द रूपी परमात्मा का संग करावोगे।

卐 हरजस पद राग जोगारंभी (३)

सुणो भाई संतो मैं ज्ञान दूं, यांरी मुक्त न होय।
पारब्रह्म बिन गाईयां, अंत जासी सब रोय॥ टेर॥
ज्ञानी भूला ज्ञान में, सब जग भूलो अज्ञान।
दरशण भूलो उपासना, सब मिल पूजे आन॥ १॥

जोगी भूला है जोग में, सोहं मंतर साज।
दाता भूलो हो दान में, सुरगुण गायर गाज॥ २॥
देह बिन भूला हो देवता, वे सुख लियो नहीं जाय।
सतगुरु बिन सब सांभलो, पद की गम नहीं काय॥ ३॥
सत साहिब सतशब्द कूं, बिरला लखसी कोय।
जन सुखदेव कह पावियां, सतगुरु शरणे जोय॥ ४॥

संतो से फ: है कि मैं ज्ञान से समझाता हूं कि पारब्रह्म की भक्ति के बिना जन्मना मरना नहीं मिटता, यही अंत में रोना है। ज्ञानी अपने मन से विचारो के ज्ञान में ही भूले हुये है, सारा संसार अज्ञान में भूल रहा है। दरशनी आन की उपासना में भूल रहे है। सब मिलकर असत याने आन माया की भक्ति करते है। योगी श्वांस के आधार से अष्टांग योग का साधन करके भूल रहे है। दाता दान देने में लगे हुये है। सुरगुण की भक्ति वाले गाकर बजाकर वाणी के आधार से भक्ति करने में भूल रहे है। मनुष्य देही के बिना देवता भक्ति नहीं कर सकते है, इसलिये उनको उस पद का सुख प्राप्त नहीं होता। सब ही सुणो, सतगुरु याने केवली भगवंतो के अणभै ग्यान के बिना के: पद आ: पद की प्राप्ति नहीं हो सकती। सत साहिब सतशब्द को बिरला ही प्राप्त करते है। म:फ: है कि मेरे को सतगुरु का अणभै ज्ञान धारण करने पर ही सतशब्द व सतसाहिब की प्राप्ति हुई है।

卐 हरजस पद राग जोगारंभी (४) 卐

भजना रे प्राणियां, क्या अरथ विचारे। पढिया गुणया माने नहीं, जम जंवरो मारे॥ टेर॥
तीन ताछ का करम है, जीवन के लारा। चवदा तीनूं लोक में, करमा बस सारा॥ १॥
प्रालब्द क्रिये सही, संचित बोहो भारी। या तीनां ने काटसी, तब मिले मुरारी॥ २॥
काटण की बिद सांभलो, दिष्टांग बताऊं। अेक मोटो कृष्यण थो, तांको धन गाऊं॥ ३॥
एक साल में निपनो, मण एक हजारा। तां धरबा के कारणे, ऐसे विध विचारा॥ ४॥
सो मण घरां पठावियो, नव सो मण लारा। ताकूं खो में गाडियो, अेसा जतन विचारा॥ ५॥
धुर अषाढा ओलरियो, बिरखा बोह भारी। चार महिना बरसियो, नहीं आंख उगाडी॥ ६॥
खो को खो में गल गयो, हल जूत न पाया। घर को घर में पीस के, सब खाय खुटाया॥ ७॥
एक कण नहीं निबरियो, टोटा भल आया। इस विध करम कटावज्यो, पांडे सुण भाया॥ ८॥
आठ पोहर चौसठ घडी, रसना जड लागे। सुण पांडे सुखराम कह, तब तीनूं भागे॥ ९॥

प्राणी मात्र से फ: है कि तुं क्या अरथ विचार रहा है, शास्त्रो व अणभै वाणी पढने, सुनने, गुनने से केवल की भक्ति नहीं होती है, इसलिये जन्मना मरना नहीं मिटता। यही जम जंवरो मारे है। जीव के साथ में तीन तरह के करम है, तीन लोक चवदा भवन में सब करमो के वश में है। प्रारब्ध कर्म, क्रियेमाण कर्म, संचित कर्म, इन तीनो को काटने पर ही परमात्मा की प्राप्ति होती है। काटने की विधि को उदाहरण देकर समझाता हूं। एक मोटा किसान था, उसके घर की बात कहता हूं। एक वर्ष में एक हजार मन धान पैदा हुआ, उसको रखने के लिये उसने ऐसा विचार किया, सौ मन धान तो घर पर भेज दिया, नो सौ मन धान बाकी रहा। बाकी के नो सौ मन धान को खेत में खाई खोदकर भर दिया, ताकी खराब नहीं होवे, ऐसा काम किया। अषाढ महिना शुरू होते ही

भारी बरसात हुई। लगातार चार महिना तक पानी बरसता रहा, बिल्कुल नहीं रूका। बरसात बहोत होने से खेत में पानी भर गया। इसलिये खो का धान खो में ही गल गया और खेत में पानी होने से खेत में हल नहीं जूत सके। जो घर में धान था उसको पीसकर खा गये। इस प्रकार सब धान खत्म हो गया। एक दाणा भी नहीं बचा, यही टोटा आना है। पण्डितो से फ: है कि इस तरह करमो को काटो। आठ पोहर चौसठ घडी रसना से सतगुरु विधि से भजन करने पर सतशब्द जागृत हो जाता है। तब बाणी से रटणा व बिना बाणी अखण्ड रात दिन सतशब्द गरजता है। म: पंडित से फ: है कि इस प्रकार भक्ति करने से तीनो कर्म, प्रारब्ध कर्म भोगने से, संचित रटना करने से व नये कर्म नहीं करने से क्रियमान कट जाते है।

卐 हरजस पद राग जोगारंभी (५) 卐

करम काट पद में मिले, जब अेसा होई। सुख, दुख तो व्यापे नहीं, अंग पलटे न कोई॥ टेर॥
जब लग तन डर उपजे, सिसकारो खावे। जब लग जन पुंथा नहीं, पिछा फिर आवे॥ १॥
नार पुरूष की गम रहे, चमक जन बैठा। जब लग जन पूरण नहीं, घर आद न पैठा॥ २॥
केवल बिना करतूत रे, बोहली होय आवे। जन सुखिया निज नांव बिना, कोई मोक्ष न जावे॥ ३॥

करमो को काटकर पद में मिलते है। उनके शरीर के आठ अंग चौसठ लक्षण अेसे रहते है कि सुख दुख नहीं व्यापता है, यह उनके लक्षण है। जब तक शरीर में सुख दुख उपजता रहता है यही डर व सिसकारा खाना है। तब तक उस जन को परमपद की प्राप्ति नहीं हुई है और जन्म मरण में आता है। स्त्री का पुरूष का भान रहता है व अलग अलग समझता है यही चमकना है, तब तक उसे आद घर याने पूर्ण पद की प्राप्ति नहीं हुई है। केवल की भक्ति के अलावा कितनी ही शुभ अशुभ करणिये व करतूत करे। म:फ: है कि पारब्रह्म परमात्मा के निज नांव सतशब्द के बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती।

卐 हरजस पद राग जोगारंभी (६) 卐

अे चेतावणी जम लोक की, कोई नर ध्यावे। मार पडे शिर ऊपर, नरका दुख पावे॥ टेर॥
निंदा करे सो नीच है, कडवी कह सो कोढी। दगो करे सो जम रे, लंपटी सुण ओढी॥ १॥
आंण अडे सो भंगेरियो, दुख दे सो दाणु। बाद करे सो विकारी है, फिर बिकली जाणो॥ २॥
ज्ञान सुणे बुजे नहीं, सो जड कहावे। जमराय दरबार से, शिषे कुंड न्हावे॥ ३॥
अे अंग लछण नर नार में, नरका चल जावे। जन सुखिया तिहूं लोक में, कोई भीर न आवे॥ ४॥

अणभै ग्यान गुरुदेव आत्मा को चेतावणी दे रहे है कि जम लोक में जाने का कार्य करेगा तो जन्मने मरणे का दुख व नरको का दुख भोगना ही मार पडना है। निंदा करते है वो नीच है, खारा बोलते है वो कोढी, दगा करते है वो जम है, जो लंपट है वे ओढी है, वाद विवाद करते है वो भंगेरियो के याने नशा पता करने वालों की तरह है। दुख देने वाले राक्षस है। वाद विवाद करते है वो विकारी है और संकल्प विकल्प करने वाले विकली है। ज्ञान सुनकर उसका भेद नहीं पूछते है। वो मूर्ख है व जड है। उनको तो यमराज के दरबार याने नरको में ही दुख पाना पडता है। जिन स्त्री पुरूषो में ऊपर के यह लक्षण है वो निश्चय ही नरक में जावेंगे। म:फ: है कि तीन लोक में उनकी कोई भी सहायता नहीं कर सकता है।

卐 हरजस पद राग जोगारंभी (७) 卐

ज्ञान ग्रन्थ सब सांभलो, तत नाम विचारो। काम क्रोध अहंकार रे, ममता फिर मारो॥ टेर॥
सांच बिना माने नहीं, भव भूख न जावे। कण बिन कूट पराल कूं, कण एक न पावे॥ १॥
तरगस तीर कबाण रे, बन्दूक बसावे। बिन खेवट लागे नहीं, गोली सोर गमावे॥ २॥
नीर बिना शरीर की, भै प्यास न जावे। तेज बिना इण देह में, को गरमी लावे॥ ३॥
पंथ बिना पग तोडिया, सो नगर न आवे। गऊ नाल बोहो मार्ग कूं, केता पंथ जावे॥ ४॥
सो बातां की बात है, कारज कर लिजे। सब तत्तन को तत्त है, तां पर दिल दीजे॥ ५॥
आंच बिना सिजे नहीं, बिन नेण न सूजे। जन सुखदेव बिन नांव रे, करणी कुण बुजे॥ ६॥

ग्रंथो से ज्ञान का विचार करो, तत याने ब्रह्म का जो निजी नांव है उसकी भक्ति करो। काम क्रोध अहंकार ममता इनको त्यागो। सत ज्ञान के बिना जन्म मरण से रहित नहीं होता। जैसे अन्न के बिना भूख नहीं जाती, कण के बिना पराल याने ऊपर के छिलके कूटने पर उनसे कण याने अन्न बिल्कुल भी नहीं मिलता। तरगस तीर कबाण बन्दूक चलाता है। इन चीजो को चलाना नहीं जानता हो और चलाने पर भी निसाने पर नहीं लगती है तो गोली व सोर व्यर्थ में ही गमाता है। पानी के बिना शरीर की प्यास नहीं जाती, तेज के बिना शरीर में गरमी कौन ला सकता है। बिना गांव के रास्ते चलने से नगर नहीं आता है। गऊनालो के कितने ही रास्ते है। एक रास्ता नहीं है। इसलिये भटकना पडता है। सब बातों की एक बात है अपना कार्य कर लो। जिस प्रकार आंच के बिना अन्न नहीं पकता, बिना नेत्रो से नहीं देख सकते। ऐसे ही बिना सतपद के ज्ञान के व परमात्मा के निज नांव के बिना शुभ अशुभ करणियो से मोक्ष नहीं होती।

卐 हरजस पद राग जोगारंभी (८) 卐

सतगुरु भेद बताविया, सत ज्ञान सुणाया। मुरख मन चेताविया, के सुता सरप जगाया॥ टेर॥
लोभ नदी भारी बहे, जुग गांव बुहाया। जुग जुग में नर ऊबरया, गुरु शरणे आया॥ १॥
अब जागरत चेतन भया, जुग दुख दिखलाया। सब जुग बेहतो जोय के, मेरे डर आया॥ २॥
रात दिन सोवे नहीं, जम का डर खाया। जन सुखदेव लवलीन हुवा, गुरु भेव बताया॥ ३॥

सतगुरु याने केवली भगवंत सतपद के ज्ञान का भेद बताते है और सुणाते है, तब जैसे सोते हुये सांप को जगाने पर फुफाडा व क्रोध करता है, ऐसे ही मुरख जीव केवल ज्ञान को सुनकर क्रोध करता है। संसार में सब जीवों का लोभ वृति में लगे रहना ही लोभ रूपी नदी का भारी बहना है। जुग जुग में उनका ही उद्धार हुवा है। जिन्होंने सतगुरु केवली भगवंतो के अणभै ज्ञान से सत पद का ज्ञान धारण किया। संसार में दुखो के सिवाय सुख नहीं है। यह जानना ही जाग्रत चेतन होना है। सारा संसार जन्म मरण में आ रहा है यही डर मेरे को लग रहा है। इस भय के कारण ही रात दिन सांस उसांस रटणा करता हूं। म:फ: है कि गुरु पद में मिलने का भेद बताया उस माफिक साधन कर आ: पद में लय होना ही लवलीन होना है।

卐 हरजस पद राग जोगारंभी (९) 卐

कोहो इण मन सुं क्या करूं, किण विध ल्युं समझाय।

जागृत सुषोपत सपन में, निश दिन विषे मत खाय॥ टेर॥
साध संगत गुरु टेल के, नेडो आवे नी कोय।
भजन करण कूं बेसियो, तब मन रेवे वो सोय॥ १॥
आठ पोहोर परमोद दूं, तोई ओ बोले नहीं सांच।
कोट जतन लख बिनती, कर कर दीठा म्हे खांच॥ २॥
धरम पुनः सत जत कूं, भूलन पकडे नी बीर।
भगत मुगत हर भजन की, अंतर व्यापे नहीं पीर॥ ३॥
कह सुखदेव मैं कादरयो, इण मन माया कूं जोय।
राम निभावे तो निभूं, नितो निभणो न होय॥ ४॥

आत्मा मन के लिये प्रार्थना करती है, इस मन का क्या करूं और इसे कैसे समझावुं। यह जागृत स्वप्न सुषोप्ति अवस्था में रात दिन ही विषयो का ही विचार करता है। संतो की संगत व गुरु के अणभै ज्ञान को धारण नहीं करता, यही नेडा नहीं आना है। भजन करने के लिये बैठते है तो मन दूसरे दूसरे विचार करता रहता है और मन का भजन में नहीं लगना ही सोना है। आठ पोहोर याने हर समय इसको समझाता हूं तो भी यह भजन में नहीं लगता है। यही सांच नहीं बोलना है। करोडो उपाय व लाखों तरह से समझा कर देख लिया। धरम करने की, पुण्य, सत की, जतीपना की बात को भूल कर भी धारण नहीं करता है। भक्ति मुक्ति और भजन करने की अन्तर में जरा सी भी पीडा नहीं होती याने बिल्कुल नहीं होती है। म:फ: है कि मैं इस मन की माया लालसा को देखकर निराश हो गया हूं। रामजी की कृपा हो तो मैं भक्ति कर सकता हूं। यही राम निभावे तो निभना है।

卐 हरजस पद राग जोगारंभी (१०) 卐

ओ तज दुजा जे भजे, से भुला संसार। अनंत जनम लग पच मरे, तोई न उतरे है पार॥ टेर॥
हिन्दू मुसलमान कूं, सुणज्यो सब तम भेव। रमता साहिब रामजी, ओ है सबको देव॥ १॥
पीर तीरथंगर अवलिया, ओरूं सब अवतार। सब मांही यो देव है, सुणज्यो श्रोत विचार॥ २॥
ओऊं सबको देवता, सत ओ घर मज जांण। हर तज शिवरे और कूं, सो सब बेईमान॥ ३॥
क्या हिन्दू क्या तूरक है, क्या दरशण सब होय। रमता साहिब बाहिरी, सेवा सुं फल न कोय॥ ४॥
सबको सुण ओ देवता, इनको अवगत जाण। कह सुखदेव सतशब्द है, दूजी भरमना ठांण॥ ५॥

ओ याने परमात्मा को छोडकर दूजा याने शरीर रूपी आन की भक्ति करते है, इसमें ही सारा संसार भूल रहा है। अनन्त जन्म तक भी शरीर रूपी आन की भक्ति करने से जन्म मरण से छूटकारा नहीं होता। हिन्दू हो या मूसलमान सब इसका भेद सुणो, जो परमात्मा सब में रम रहा है वो ही सबका देवता है। पीर तीरथंगर व अवलिया में, अवतारो में सब में व्यापक है। सब ही शास्त्र यह कहते है। सबके शरीर आत्मचेतन के आधार पर है। सब में आत्मचेतन एक है। यह बात सत है सब शरीरो में आत्म चेतन रूपी देवता बैठा है। परमात्मा को छोडकर शरीर रूपी आन की भक्ति करना व लगना ही बेइमानी है। चाहे हिन्दू हो, मुसलमान हो या छ: दरशणी हो, जो रमता राम परमात्मा की भक्ति नहीं करता है उनको मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। यही सेवा सफल नहीं होना है। शरीर में आत्म चेतन सबका आधार होने से सबका देवता है। आत्मचेतन अवगत परमात्मा के

आधार पर है। म:फ: है कि सतशब्द के जाग्रत होने का साधन सांस ऊसांस में राम रटणे से परमात्मा की प्राप्ति होती है। यही परमात्मा का निज नांव है। दूसरे साधनो से परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती, इसलिये उनको भरम कहा है।

卐 हरजस पद राग जोगारंभी (११) 卐

हर सुं हूं मिलियो चाहिये, कर ईण सूं हूं प्यार। अगवाणी सूं मिल चलो, ज्यूं ऊतरोला पार॥ टेर॥
चोपदार चित जांणिये, निज मन मंछी होय। कोटवाल सो सांच है, भेला करसी तोय॥ १॥
ज्ञान पोलियो मोख को, सोऊं सेंधा जाण। ओऊं गरज गुदारणो, ररो बोला वां बांण॥ २॥
अे अगवाणी राम का, सुणज्यो सब संसार। जे चाहो हर सूं मिल्या, चालो इण की लार॥ ३॥
यासुं मिलिया पाईये, सिमरथ शिरजण हार। आनदेव सुखराम कह, पूज्या उपजे विकार॥ ४॥

परमात्मा की प्राप्ति करना हो तो इनसे प्रेम करो। अच्छी वृतियां धारण कर परमात्मा की प्राप्ति करना ही अगवाणी से मिलना है। परमात्मा की प्राप्ति कराने के लिये चित चोपदार है। निज मन मुंशी है, सच्चे दिल से भक्ति करना ही कोटवाल है। इनको लगाकर भजन करने से ही परमात्मा की प्राप्ति होती है। यही भेला करना है। अणभै ज्ञान मोक्ष का पोलिया है। सोऊं याने उसांस में भजन से उसकी प्राप्ति होती है। यही सेंधा जांण है। बाणी द्वारा नाम का उच्चारण करना ही अरज करना है। रग रग रोम रोम में ररंकार होना ही बाणी का बोलना है। सब संसार सुणो इस प्रकार भक्ति करने से रामजी की प्राप्ति होती है। इसलिये इन्हें अगवाणी कहा है। परमात्मा की प्राप्ति करना हो तो यह सब अंग धारण करके भक्ति करो। ऐसे अंग धारण कर भक्ति करने से ही आत्मा को परमात्मा की प्राप्ति होती है। म:फ: है कि आनदेव याने नाशवान शरीर के पूजने व पूजाने से अग्यान रूपी विकार पैदा होते है।

卐 हरजस पद राग शब्द (१) 卐

बांदा तीन भगत कहूं तोई। सुरगुण निरगुण आनन्द पद की, यांरो भेद न्यारो होई॥ टेर॥
जोगारंभ जप तप शिवरण, करणी कुछ भी होई।
तब लग निरगुण भक्ति नांही, सुरगुण या कहूं तोई॥ १॥
निरगुण भक्त तका सुण कहिये, तत पिछाणे सोई।
निरभै हुवा भरम सब भांगा, सांसा सोग न कोई॥ २॥
एक निरगुण अंग दूसरो कहिये, जे ज्ञानी कोई पावे।
सोहंग जाप अजपो जप के, दशवें द्वार लग जावे॥ ३॥
अे निरगुण में मिले न कोई, जायर देखे सारा।
करामात कला कोई पावे, ब्रह्म न हुवे विचारा॥ ४॥
आनन्द पद की भक्ति बताऊं, प्रथम तो मत आवे।
ज्ञान ध्यान हद का गुरु सारा, से सब ही छिटकावे॥ ५॥
सतगुरु ढूंढ शरणे ले जाई, जहां नांव कला घट जागे।
राज जोग ओ कहिये जुग में, बिन करणी धुन लागे॥ ६॥

फाडर पीठ चढे आकाशा, फक्त हंस संग लियो।
काया पांच संग जीव रेहतो, सो सब न्यारो कियो॥ ७॥
आनन्द पद की सता कहिजे, इण संग जे जन होई।
और जोग अटक्या दरवाजे, ओ नहीं अटके कोई॥ ८॥
राज जोग ओ कहिये भाई, और जोग सब लोई।
बादश्या पास रैत नहीं पहुंचे, भूप मिले कहूं तोई॥ ९॥
दरवाजा उला सब खुले, बजर पोल लग सोई।
राज जोग बिन दशवों कहिये, सो नहीं खुले कोई॥ १०॥
कह सुखराम भेद बिन जोगी, जे आशा करे सब जावे।
दरवाजे सुं सब जोग फिरिया, आगे जाबा न पावे॥ ११॥

मन से फ: है कि मैं तीन तरह की भक्ति कहता हूं। सुरगुण(साकार) निरगुण (निराकार) आ: पद की, केवल ये तीन है। इनका भेद अलग अलग है। श्वांस के आधार से जोग की साधना करना, जप करना, तप करना, शिवरण करना तथा किसी प्रकार की शुभ अशुभ करणियां करते है, तब तक निरगुण की भक्ति नहीं है। सुरगुण भक्ति है। निराकार की भक्ति करने से ही ब्रह्म की प्राप्ति होती है। निराकार की भक्ति करने वालों के सब भरम नाश हो जाते है और किसी प्रकार का संशय दुख नहीं रहता। एक निराकार की भक्ति दूसरी है जो ज्ञानियो को प्राप्त होती है। सोहं का जपा करने पर अजपा जागृत हो जाता है और दशवे द्वार तक ले जाते है। ये निराकार में मिल नहीं सकते, उसका जाकर अनुभव करते है। इस प्रकार के साधन करने से किसी को करामातों की व कला की प्राप्ति हो जाती है, ब्रह्म रूप नहीं होते। आ: पद की भक्ति का वर्णन करता हूं प्रथम तो ऐसा निश्चय होता है कि मुझे आ:पद की भक्ति करनी है, तीन लोक याने हद का ज्ञान ध्यान बताने वाले को छोड देवे। जिन सतगुरु के अणभै ज्ञान धारण करने से शरीर में निज नांव याने सतशब्द ने: अँच्छर की जागृति हो जाती है उनकी अणभै वाणी की निरपख निरणे की संगत करे, इसे राज योग कहते है। सब शुभ अशुभ करणियों से अलग सांस उसांस में रटणा करे तब सतशब्द की ध्वनि का अखण्ड अनुभव होना ही बिना करणी धुन लगना है। इस तरह के साधन से शब्द बंकनाल के रास्ते से उलटकर आत्मचेतन के साथ ब्रह्मण्ड व पार ब्रह्म से ऊपर चढ जाता है। पांच तत्वो के साथ जो चेतन रहता था उसका पांच तत्वो से अलग होना ही, सो सब न्यारो कियो है। इस साधन को आ: पद की सता कहते है, जो जन इसकी साधना करते है। दूसरे साधन करने वाले दशवे द्वार पर अटक जाते है और यह नहीं अटकता है, इस योग को राज योग कहते है। दूसरे जितने भी योग है वो सब पब्लिक योग है। जिस प्रकार बादस्या के पास राजा जा सकता है प्रजा नहीं जा सकती है। दूसरे साधनों से बजरपोल के उली तरफ के सब स्थान पार कर सकता है लेकिन राजयोग के साधन के बिना दशवां द्वार नहीं खुलता। म:फ: है कि बिना भेद से योग की साधना करने वाले आशा करके दशवें द्वार तक जाते है। आगे नहीं जा सकते याने दसवां द्वार नहीं खुलता।

卐 हरजस पद राग शब्द (२) 卐

बांदा मत भूलो भरमा मांई। जुग मरजाद मन की बांधी, सो हरि माने नांई॥ टेर॥

चार वेद पुराण अठारे, जे मरजादा गाई।
जे से सब हद की जुग कूं बांध्यो, नहीं साहिब की भाई॥ १॥
दरगा की यह मरजाद कहावे, लिंग भग जोडे होई।
माता बहन कह जुग बेटी, फिर नारी कहूं तोई॥ २॥
जुग मरजाद भांजिया जग में, जुग ही दोख लगावे।
दरगे की मरजाद ऊथाप्या, वाहां सूं दाद न पावे॥ ३॥
जे मरजाद जुग की राखे, तो कारण ओ चाहिये।
जो साहिब को भेद ले जाणे, तो दुख नेक न सहिये॥ ४॥
पांचू भोग आत्मा भाडो, ज्यूं कोई पूरण चावे।
इनकूं दोष कहे सो भरम्यो, वे सुध राह न पावे॥ ५॥
नेः अँच्छर बिन अँच्छर आखर, सो सब भरम कहावे।
केवल मत बिन सब मत ऊला, आनन्द पद नहीं पावे॥ ६॥
राज योग बिन जोग सकल ही, से भरम कहिजे भाई।
जो विज्ञान बिन सब ज्ञानी, सो भरमना जुग मांई॥ ७॥
जो विज्ञान किया बिना घट में, ऊलट समाधी लागे।
ज्ञान तिके करणी सो मुद्रा, कला घट मांही जागे॥ ८॥
सो अज्ञान ज्ञान सब छाडर, मून पकड जड होई।
ज्यूं काले को मन खुश्याली, मो सम अवर न कोई॥ ९॥
कह सुखराम समझ या न्यारी, कोईयन जांणे ज्ञानी।
दोय बात को न्याव शकल के, तिजी किणी न जांणी॥ १०॥

मन से फः है कि तुम भरमो में मत भूलो, संसार की मर्यादा मन की बांधी हुई है उनसे परमात्मा पद की प्राप्ति नहीं होती है। चार वेद अठारा पुराणो में जो साधन बताया है उस के माफिक साधन करने से तीन लोको में फलों की प्राप्ति होती है, उससे परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती। लिंग भग दोनो जोडे है यह दरगा की मर्यादा है कोई स्त्री माता है, बहन है, बेटी है, कोई स्त्री है। संसार की मर्यादा में नहीं चलने पर संसार ही दोष लगाता है लेकिन परमात्मा मिलने की मर्यादा तोडने पर परमात्मा पद की प्राप्ति नहीं होती है। संसार की मर्यादा रखना चाहो तो यह विचार रखो अगर परमात्मा की प्राप्ति करना चाहते हो तो किसी प्रकार कष्ट मत सहो। पांचो इन्द्रियो के भोग भाडा रूप में पूर्ण याने भोगता है उसके कोई दोष लगाता है तो वो भरमा हुवा है, उसको सच्चा रास्ता नहीं मिला। नेः अँच्छर याने सतशब्द के बिना अक्षर ब्रह्म के साधन से सतस्वरूप आः पद की प्राप्ति नहीं होती, यहीं भरम है। केः पद के ज्ञान के बिना दूसरे सब ज्ञान उली तरफ के है, उनसे आः पद की प्राप्ति मानते है, यही भरम है। जो भजन रटणा सांस उसांस में करे व सत शब्द का आनन्द बिना करे, अपने आप होता है उसको विज्ञान कहते है, जो ज्ञानी बिना विज्ञान के दूसरा ज्ञान करते है वो सब भरम है। विज्ञान उसे कहते है जो उलटकर सहज में रटणा भी चले व गिगन मंडल में सतशब्द का आनन्द बिना किये हुये आता है, उसे सता समाधि लगती है। ज्ञान उसे कहते है जिससे शरीर में शुभ अशुभ करणिया कला व मुद्रा की साधना होती है, जो अज्ञानी ज्ञान व विज्ञान

दोनो को छोडकर मून धारण कर लेते है, जैसे पागल मनुष्य अपने मन में बहुत खुश हो रहा है कि मेरे बराबर कोई भी नहीं है। म:फ: है कि विज्ञान का साधन सबसे अलग है, ज्ञानी कोई भी नहीं जानते। संसार ज्ञान व अज्ञान इन दो को जानता है, तीसरी बात विज्ञान को नहीं जानते।

卐 हरजस पद राग शब्द (३) 卐

बांदा ओ जुग मोय न जाणेला, कोई बिरला हंस पिछाणे ला॥ टेर॥
पूरण ब्रह्म पिता है मेरा, अंच्छया मेरी बाई।
सतस्वरूप आनन्द गुरु मेरा, याद कियो मुझ भाई रे॥ १॥
ने: अँच्छर कागद गुरु भेज्या, बांच सही हम किया।
अब हम चल्या अगम कूं भाई, मात पिता तज दिया रे॥ २॥
बालक बुद्धि शकल ये ज्ञानी, मात पिता कुंई जांणे।
सुरगुण निरगुण में सब भीना, बेदर भेद बखाणे॥ ३॥
मात पिता सुं सब कोई राजी, लडका लडकी भाई रे।
सतगुरु कूं कोई बिरला जांणे, समझवान जुग मांई रे॥ ४॥
मैं सतगुरु का खाशा चाकर, सनद दिवी गुरु मोई रे।
अनन्त हंस मैं ले उधरूं ला, सुण लिज्यो सब कोई रे॥ ५॥
केवल बीज अगम सूं आयो, सो मुज मांही ऊगो रे।
आगे सुण तीरथंगरा पायो, ज्यां संग बहु हंस पुगा रे॥ ६॥
चार जुगा में केवल भक्ति, मैं हंस आण जगाया रे।
सब हंस लेर मिलूंगा गुरु में, आनन्द पद में भाया रे॥ ७॥
केइयक भेज दिया मैं आगे, जुग जुग हंसा भाई रे।
बहुत हंसा की आज्ञा मोने, ताते रहूं जग मांही रे॥ ८॥
कोइयक हंस आगला मिल्या, सुण मो पासे आवे रे।
दरशण करत नांव प्रकाशे, रग रग तन सुख पावे रे॥ ९॥
नवा हंस प्रमोदूं जुग में, जिनकूं बहु दिन लागे रे।
उनका भरम शकल सब भाग्या, नाम घट में जागे रे॥ १०॥
केवल भगत कोई नहीं जाणे, भरमा भरमी गावे रे।
पारब्रह्म लग निरगुण पहुंचे, फिर फिर पाछा आवे रे॥ ११॥
सुरगुण निरगुण कर कर भक्ति, सब ऋष पच पच मुवा रे।
आवागमण मिटी नहीं कोई, पद सूं रह गया जुवा रे॥ १२॥
मूरत मूरत सब ही गावे, करणी सबे पिछाणे रे।
बिन मूरत बिन करणी पावे, आ गत कोई न जाणे रे॥ १३॥
मोकुं दया तुम्हारी आवे, सुण लिज्यो नर नारी रे।
सतस्वरूप की भगत बिना रे, फंद पडे शिर भारी रे॥ १४॥
करणी बिना गिगन दूं चाडी, एक पोर पल मांही रे।

मुद्रा कूंची न कोई आसण, तोही जग जांणे नांही रे॥ १५ ॥
पच पच मरे जोगेश्वर सारा, तोई गढ चढयो न जावे रे।
मो संग अनन्त सहज में चढ गया, तोई ईतबार न आवे रे॥ १६ ॥
पच पच चढे गिगन में ऊंचा, सेज समाध न पावे रे।
मो संग चढे जिकारे भाई, आठ पोहर गरणावे रे॥ १७॥
सता समाध रात दिन लागी, मो संग चढिया जांरे रे।
पवन खेंच पच पच चढिया, ऊतरत कछु नहीं बारा रे॥ १८ ॥
ज्ञानी तिके मांड में सारा, कोई नहीं जीत न पावे रे।
एक साख में सबकूं पकडूं, तोई इतबार न आवे रे॥ १९ ॥
माया चरित नहीं केवल में, पाखण्ड रूपी भाई रे।
जो परचा बाहिरला होवे, केवल लजायो आई रे॥ २० ॥
ज्ञानी सबे गरस्ती जैसा, संत बुध नहीं कोई रे।
केवल भगती को भेद न जांणे, क्या पंडित क्या लोई रे॥ २१ ॥
मैं तो भगत करूं उन पद की, ताकूं ईस न पायो रे।
समझ बिना कोई नहीं माने, सुणया ईचरज आयो रे॥ २२ ॥
मोख मोख केता सब कोई, सो ओ मारग होई रे।
सो प्रगट किया हम जुग में, निरख परख लो सोई रे॥ २३ ॥
अंद्ध मुंद्ध में महमा कर गया, सत स्वरूप की सारा रे।
गेल भेद पाया बिन बक्या, कोई न ऊतरया पारा रे॥ २४ ॥
कह सुखराम सुणो सब ज्ञानी, न्याव सत सुण लीजो रे।
अहूं भाव हूं पद तज दूरो, केवल निरणो कीजे रे॥ २५ ॥

मन से फः है कि यह संसार मुझे नहीं जानता है कोई बिरला मनुष्य ही मेरे ज्ञान को धारण करेंगे याने पिछाणेंगे। जीव का पिता पूरण ब्रह्म है, माता अंच्छया है, सतस्वरूप आः पद है वो गुरु पद है, उन्होंने मुझे याद किया है। नेः अँच्छर का शरीर में प्रगट होना ही गुरु का कागज भेजना है। नेः अँच्छर के साथ आत्मचेतन जाता है यही बांच सही किया है। अब केः पद आः पद की प्राप्ति करना ही अगम कूं चलना है। माया ब्रह्म के पद से अलग केः पद आः पद में जाना ही माता पिता को तजना है। जो ज्ञानी माया ब्रह्म तक का साधन करते है, उनकी बालक के समान बुद्धि है। कोई सुरगुण माया की व कोई निरगुण ब्रह्म की भक्ति करते है और वेदो का ज्ञान व योग का साधन बता देते है। जिस प्रकार माता पिता से लडके लडकी सब खुशी रहते है, सतगुरु को कोई बिरला ही समझदार हो वो जानते है। मैं सतगुरु का निज चाकर हूं। गुरु महाराज ने मेरे को तारने का ओधा दिया है, याने तारने का ओधा सतशब्द को है। महाराज यहां सता व सत पद के ज्ञान रूप से बोल रहे है कि अनन्त हंसो का मैं उद्धार करूंगा। सब कोई सुण लो, केवल बीज याने सतशब्द प्रकट होता है वो ब्रह्म वैराट में से आता है यही अगम से आया है व शरीर में प्रगट होना ही उगना है। यह सता याने केः ज्ञान तीरथंगरो को प्राप्त हुवा है। उनके साथ बहोत से हंसो को मोक्ष की प्राप्ति हुई है। महाराज सता रूप से बोल रहे है, कि चार जुगो में सता व सत पद के ज्ञान से ही मोक्ष की

प्राप्ति होती है। यही हंस को आकर जगाना है। आत्मचेतन सतशब्द के साथ ही आः पद में जाकर मिलता है, यही सब हंस को साथ लेकर आः पद में मिलना है। कितने ही हंसो को जुगो जुगो में मोक्ष की प्राप्ति करा दी। सतपद के अणभै ज्ञान रूप से मःफः है कि अणभै ग्यान से सता आती है, सता को तारने का ओधा है, यही बहोत हंसो की आज्ञा है, इसलिये सत पद का ज्ञान याने सता जाग्रत होने का अणभै ज्ञान संसार में रहता है। कितने ही हंस पहले के भव में भजन करे हुये होते है। वो हंस मेरे से ज्ञान धारण करते ही उनके निज नांव की जागृति हो जाती है। शरीर में सब जगह रग रग रोम रोम में सतशब्द के सुख का आनन्द आना ही रग रग तन सुख पावे है। नये हंसो को ज्ञान देता हूं उनको कुछ दिन लगते है। उनका सब भरम मिटने से उनके भी निज नांव की जागृति हो जाती है। केवल की भक्ति को कोई नहीं जानता है, माया ब्रह्म की भक्ति को ही केवल की भक्ति समझते है, यही भरमा भरमी गाना है। निरगुण की भक्ति पारब्रह्म तक ही पहुंचती है। वहां से भी पीछा आने की रीति है। सब ऋषि सुरगुण माया की व निरगुण ब्रह्म की भक्ति कर करके चले गये। लेकिन उनका जन्मना मरना नहीं मिटा और केः पद आः पद की प्राप्ति नहीं कर सके, यही पद सूं रह गया जुवा है। सब ही आकार की महिमा करते है व करणियो की महिमा करते है लेकिन बिना आकार बिना करणी के केः पद आः पद की प्राप्ति होती है, इस गति को कोई भी नहीं जानता। सभी स्त्री पुरुषो को फः है कि मुझे तुम्हारी दया आती है, सतस्वरूप की भक्ति के बिना जन्मने मरने का रोग नहीं मिटता है। यही फंदा पडना है, बिना शुभ अशुभ करणियो के एक पोर एक पल में गिगन याने ब्रह्मण्ड व पार ब्रह्म से ऊपर केः पद आः पद की प्राप्ति करा दूं तो भी संसार इस बात को नहीं जानता है। जहां न मुद्रा साधन की जरूरत है, न कुंची का साधन चाहिये, न कोई आसण लगाना पडता है। योगो के साधन करने वाले पच पच कर मर गये तो भी गढ याने केः पद आः पद की प्राप्ति नहीं कर सके। इस सता के साथ सहज में ही केः पद आः पद की प्राप्ति हो जाती है, तो भी लोगों को विश्वास नहीं आता है। यही मो संग सहज में चढना है। पच पच कर गिगन में याने श्वांसा खेंच खेंचकर चढते है, उनको सहज समाधि की प्राप्ति नहीं होती। इस सतशब्द के साथ चढते है उनके आठ पोहर हर समय सतशब्द की ध्वनि का केः पद में अनुभव होता है, यही मो संग चढना व आठ पोहर गरणाना है। सतशब्द के साथ चढने वालो के रात दिन सता समाधि रहती है तथा श्वांस खेंच खेंच कर चढने वालो के नहीं रहती है, उनको उतरते देर नहीं लगती। संसार में जितने भी ज्ञानी है वो मेरे से कोई भी नहीं जीत सकते, मेरे एक शब्द का कोई जवाब नहीं दे सकते, यही सबका पकडना है, तो भी सबको विश्वास नहीं होता। केः पद के ज्ञान में माया के पाखण्ड रूपी चरित्र नहीं है। अगर बाहर परचा देते है वो केवल की भक्ति को लजा रहे है। सब ज्ञानियों की बुद्धि गृहस्थी की सी है, संतो की बुद्धि नहीं है। केवल की भक्ति का भेद नहीं जानते है चाहे पंडित हो या संसारी, मैं तो उस पद की भक्ति करता हूं जिसको महादेवजी भी प्राप्त नहीं कर सके। इस पद के ज्ञान के प्राक्रम को समझ के बिना कोई नहीं जानता और सुनने पर आश्चर्य करते है। सब ही मोक्ष मोक्ष की बाते कहते है पर मोक्ष का मारग यह है मैं बताता हूं। उसको मैंने संसार में प्रगट कर दिया है। उसका अनुभव कर परीक्षा कर लो। सतस्वरूप की बिना जानकारी के महिमा करते है यही अंद्ध मुंद्ध में महिमा करना है। साधन के भेद को प्राप्त किये बिना ही पद की महिमा करना है। गेल भेद पाया बिन बक्या है। इससे केः पद आः पद की प्राप्ति नहीं होती,

यही पार नहीं उतरना है। म:फ: है कि सब ज्ञानी सुणो यह बात सत है। अहूं भाव याने मैं और मेरे को छोडकर याने ब्रह्म का पद सब में है और ब्रह्म के पद में सब है। इस पद से सतशब्द के साथ अलग होने पर ही के: पद की प्राप्ति होती है, यही केवल निरणा करना है।

卐 हरजस पद राग शब्द (४) 卐

बांदा यूं जग मोहे न जाणे। अगम देश का मैं उपदेशी, अे मायारस माणे॥ टेर॥
भाग बिना ज्यूं चीज न पावे, गुण बिन बुज न जाणे।
ईऊं जड़ी जंगल में बहू तेरी, कोई नहीं पिछाणे॥ १॥
ये सब मेरी काया देखे, आत्म की चल भाई।
ऐसी खबर किसी कूं नांही, बिछड़ रहत है नांही॥ २॥
कह सुखराम पिछाणे मोने, तामें निज पद जागे।
ऊलटर हंस चढे गढ ऊपर, ध्यान समाधि लागे॥ ३॥

मन से फ: है कि यह संसार मुझे नहीं जानता है। मैं अगम देश याने के: पद आ: पद का ऊपदेश करता हूं। संसार माया याने तीन लोक का सुख चाहता है। भाग्य बिना कोई चीज प्राप्त नहीं होती। चीज के गुण को नहीं जानते है तो उस चीज को नहीं लेते है। ऐसे ही जगत में बहुत जडिये है लेकिन जड़ियों को नहीं पिछाणते। यह सब आत्मा ने जो शरीर धारण कर रखा है उसको देखते है। यह शरीर तो जाने वाला है, इसकी किसी को खबर नहीं है। म:फ: है कि जो मुझको पिछाणते है याने मेरा ज्ञान धारण करते है, उनको निज पद याने के: पद आ: पद की प्राप्ति होती है। बंकनाल से उलटकर गढ पर चढ जाता है याने के: पद आ: पद की प्राप्ति होकर ध्यान समाधि याने सता समाधि लग जाती है।

卐 हरजस पद राग शब्द (५) 卐

बांदा केवल भेद न्यारो जी। सतस्वरूप आनन्द पद कहिये, सो ऊपदेश हमारो जी॥ टेर॥
ब्रह्मा विष्णु महेश ना पायो, ना अवतारा सोई।
सुर तेतीस शक्त ईन्द्रादीक, नेक न जाण्यो कोई॥ १॥
ज्ञानी ध्यानी संत साध रे, ना जोगेश्वर पावे।
दुनियां शकल कोण गिनती में, शेष ब्रह्म लग ध्यावे॥ २॥
बंध मुक्त दोनो के आगे, मुक्त रूप सुण होई।
यहां लग शकल खबर ले आया, आगे न जाण्यो कोई॥ ३॥
कह सुखराम अरथ जब लाधे, जब अेसी मत आवे।
जब बैरागी नर होय जग में, पिता किसब कुण चावे॥ ४॥

मन से फ: है कि केवल का भेद सबसे अलग है सतस्वरूप आ: पद की प्राप्ति करने का मेरा उपदेश है। सतस्वरूप आ: पद के ज्ञान की ब्रह्मा विष्णु महादेव अवतारो को भी प्राप्ति नहीं हुई। तेतीस करोड देवता ईन्द्र आदि देवता शक्ति भी इस ज्ञान को जरा सी भी नहीं जान सकी। ज्ञानी ध्यानी संत, साध तथा जोगेश्वर इनको भी सतस्वरूप आ: पद की प्राप्ति नहीं हुई तो संसार कौनसी

गिनती में है। शेषजी ब्रह्म के नाम की भक्ति करते है वो निज नांव याने सतशब्द की नहीं करते। बंध याने स्वर्ग मुक्त याने बैकुण्ठ और दोनो के आगे मुक्त रूप याने पारब्रह्म का पद है, यहां तक की प्राप्ति सबने की है। इससे आगे के: पद आ: पद को नहीं जानते। म:फ: है कि इस तरह सतस्वरूप आ: पद की भक्ति करते है तब ऐसी बुद्धि होती है, जिस प्रकार कोई बैरागी हो जाता है वो पिता कीसब नहीं करता है। ऐसे ही सतस्वरूप आ: पद की भक्ति करने वाले माया ब्रह्म की भक्ति नहीं करते है।

卐 हरजस पद राग शब्द (६) 卐

बांदा और शकल पिस्तासी। मेरी शरण हंस जो आसी, सो आनन्द पद पासी॥ टेर॥
अब तो शकल करत है हांसी, नवी बात आ कांई।
मायाबेद भरम में भूला, सत्त पिछाणे नांही॥ १॥
सत सत कहे तिके सत ओ है, ने: अँच्छर सो ओई।
कुदरत कला केवे सो आ है, निरख परख लो कोई॥ २॥
कह सुखराम ताण कर कहूं, परमारथ के तांही।
सतस्वरूप की आज्ञा मोने, हंस तारूं जग मांही॥ ३॥

मन से फ: है कि दूसरे साधन करने वालो को पछताना पडेगा, क्योंकि उस साधन से जन्म मरण नहीं मिटता है। मेरी शरण में याने मेरे अणभै ज्ञान को धारण करने से हंसो को आ: पद की प्राप्ति होती है। अभी तो इस ज्ञान को सुनकर हंसी करते है यह नयी बात क्या है। संसारी माया प्राप्ति के ज्ञान धारण करने में लगे हुये है, इसलिये सतशब्द के ज्ञान को नहीं जानते है। जिसको सत सत कहते है वो सतस्वरूप का ज्ञान यह है। ने: अँच्छर भी यही है, कुदरत कला भी इसी को ही कहते है, इसकी भक्ति भजन करके अनुभव कर परीक्षा कर लो। म:फ: है कि मेरे से किसी का स्वार्थ नहीं है मुझे तो जीवों का कल्याण करना है, इसलिये परमारथ के लिये जोर देकर कहता हूं। मुझे हंसो को तारने की सतस्वरूप की आज्ञा है, मुझे तारने का ओधा है। म: यहां ग्यान व सता रूप से फ: रहे है।

卐 हरजस पद राग शब्द (७) 卐

बांदा ओ नर मोहे न जाणेजी। आगे वस्तु न देखी किसने, काना सुनी बखाणे जी॥ टेर॥
जड़ी सजीवण लाता खुंदे, खोद कोई नहीं लावे रे।
यूं बिन भेदी मोसुं कर बाता, खाली उठने जावे रे॥ १॥
पारस लेर भींत में चुण दे, मिण कूं गही ले फोडे रे।
यूं बुध हिण जगत में ज्ञानी, मोसुं नेह न जोडे रे॥ २॥
ज्यों मूरख चिन्तामण पावे, ले कौवा शिर बावे रे।
यों मद भाग्या मोकूं फेक्यो, नेडो कोई न आवे रे॥ ३॥
कह सुखराम सुणो नर नारी, ओ मारो अंग होई।
ज्यों चिन्तामण में गुण प्रगटे, निज मन माने सोई॥ ४॥

मन से फः है कि संसारी मनुष्य मेरे अणभै ज्ञान को नहीं जानते है। उसकी केवल महिमा ही की है, यही बिना देखे काना सुणी बखाणे है। जंगल में घास काटने वाले संजीवनी जडी पर पैर देकर चले जाते है। उसकी जानकारी उनको नहीं होने से घास खोदकर ले आते है, लेकिन संजीवनी जडी नहीं लाते। ऐसे ही मेरे ज्ञान के भेद को नहीं जानते, खाली बाते करके चले जाते है। ज्ञान को धारण नहीं करते, यही खाली उठने जावे है। पारस का गुण नहीं जानने से पत्थर समझकर भींत में चुण देते है। मणी का गुण नहीं जानने से कांच समझकर फोड कर फेंक देते है। इसी प्रकार ज्ञानी सतस्वरूप आः पद की भक्ति नहीं करते, यही नेह नहीं जोडना है। जिस प्रकार मूरख मनुष्य को चिन्तामणी मिल जावे तो उसे पत्थर समझकर कोवा उडाने के लिये फेंक देते है। ऐसे ही मदभागी मनुष्य सत पद के ज्ञान को धारण नहीं करता है, यही मोकूं फेकना व नजदीक नहीं आना है। मःफः है कि सब स्त्री पुरूष सुणो यह मेरा अंग है जिस प्रकार चिन्तामणी से जो निज मन से चिन्तन होता है उसी वस्तु की प्राप्ति हो जाती है। ऐसे ही सत पद के ज्ञान से केः पद आः पद की प्राप्ति हो जाती है।

卐 हरजस पद राग शब्द (८) 卐

बांदा मोमे ओ गुण आयो। कल बरछ तले जाय ज्यूं बंछे, सोई सोई फल वहां पायो॥ टेर॥

निज मन मान अंतर में लेवे, सोई गुण प्रगटे आई।
दुबध्या मांहे विकलता ऊठी, सुख नहीं ऊपजे मांही॥ १॥
निज मन मांय करारी बैठे, जाण अजाण्या कांई।
सोई गुण आंण प्रगटे नर में, कसर न रहे है कोई॥ २॥
जे नर झूंठ जाणसी मोने, से झूंठी नर पावे।
सांच जाण कर शरणो गहे रे, से अमरापुर जावे॥ ३॥
निंदा करे तके नर निंदक, से निचा फल पासी।
महिमा करे तके नर जुग में, सुण बैकुण्ठा जासी॥ ४॥
निंदा करे कह कोई झूंठो, कोई महिमा कर देवे।
निज मन रहे खुचा बिन यो रे, एकी फल नहीं लेवे॥ ५॥
रोल भोल में कुछ ही कह जावे, ताकूं दोष न कांई।
काठी पकड करे नर कोई, सोई तत्काल फल देखे भाई॥ ६॥
कह सुखराम सुणो सब भाई, भाव जिस्यो फल है जग मांही॥ ७॥

मन से फः है कि मेरे ज्ञान में यह गुण है जैसा कल्पवृक्ष में है, जिसके नीचे जाकर जो भी कामना करते है उसी की प्राप्ति हो जाती है। निज मन से अणभै ज्ञान धारण करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है, यह गुण प्रगटना है। मन से कोई भी साधन करो सफलता नहीं मिलती, यही दुबध्या में विकलता उठना है और सुख नहीं ऊपजे मांही है। निज मन से निश्चय करके जान में करो चाहे अनजान में साधन करने से सफलता ही मिलती है यही गुण का प्रकटना है, व कसर नहीं रहना है। जो मेरे अणभै ज्ञान को झूंठा समझकर धारण नहीं करते है, इसलिये उनको केः पद आः पद की प्राप्ति नहीं होती है यही झूंठा पाना है। तथा मेरे अणभै ज्ञान को सच्चा समझकर धारण करते

है। उन्हें अमरलोक की प्राप्ति होती है। सतसरूप के ज्ञान की निंदा करने वालो को नरक व चौरासी का दुख भोगना पडेगा, यही नीचा फल पाना है। इस ज्ञान की महिमा करने से बैकुण्ठ की प्राप्ति होगी। कोई निंदा करते है, कोई झूंठा बताता है, कोई महिमा करते है लेकिन निज मन से नहीं कहते है उनको कोई फल नहीं मिलता। हंसी मजाक में कुछ भी कह देते है उनको कोई दोष नहीं लगता, जोर देकर कहने से तत्काल फल याने नरको की प्राप्ति होती है। म:फ: है कि सब सुणो जैसा भाव है वैसा ही फल मिलता है।

卐 हरजस पद राग धमाल (१) 卐

जन चाय हुवे सो खोजजो हो, या इतना सुं न्यारो॥ टेर॥
सूरत निरत मन सूं सो न्यारो, चित्त समझ सूं जांण।
बुद्ध सो अकल श्वांस दम आगे, सन्ता करो पिछाण॥ १॥
ररंकार धुन तन में उठे, घुरे अनाहद जोय।
यांसु निकेवल न्यारो, खोज परख लो सोय॥ २॥
अनहद परे नाद सो गाजे, जिंग शब्द फिर होय।
ज्यां सूंई सतशब्द है न्यारो, कयां लखे नहीं कोय॥ ३॥
अनाहद सब शिष शिर हो, गाजत है दिन रात।
खोजी हुवे तके सब सुणज्यो, ईण सूं ही आगी बात॥ ४॥
राम नाम रट उलटियो, चढ त्रिकुटी जाय।
कह सुखराम ईसी विध परखो, करद शब्द कूं मांय॥ ५॥

भक्ति करने वाले जनो से कह रहे है कि जिनको चाह हो जो इतने से अलग है, उसकी खोज करो, जो सूरत निरत मन बुद्धि अकल श्वांसा व दम से आगे है, हे संतो उसकी पहचान करो। ररंकार की ध्वनि शरीर में उठ रही है। अनहद याने बिना किये ही गुंजार हो रही है वो उससे अलग है उसको खोजकर परख लो याने अनुभव कर लो। अनहद से परे शब्द गरज रहा है, फिर जिंग शब्द हो रहा है। उससे भी सतशब्द अलग है। उसको कहने से कोई नहीं देख सकता। बिना किये सबके सिर पर रात दिन गरजना हो रही है उसे अनहद कहते है। जो खोज करने वाले है इससे आगे की बात को सब सुणो। राम के नाम को सतगुरु विधि से रटकर बंकनाल से उलटकर जल्दी त्रृगुटी में पहुंचो। म:फ: है कि इस विधि से करद शब्द याने आधे शब्द ररंकार को अन्दर परखो याने अनुभव करो।

卐 हरजस पद राग धमाल (२) 卐

तुम सुणज्यो शकल जन आण, सो पेल करम कन जीव हुवे हो॥ टेर॥
प्रालब्ध कूं सब जुग गावे, के लिखियो ज्यूं होय।
पेली अंक किसी विध खंचिया, सोध बतावो मोय॥ १॥
प्रालब्ध सुण पेल कहिजे, कन क्रिये सुण भाई।
कोही अरथ समझकर खोजो, ज्ञान ग्रंथ के मांही॥ २॥
क्रिये करम वश यो डोले, कन संचत के मेल।

कन ओ समझ सोच रे भाई, प्रालब्ध के खेल॥ ३॥
संचत करम बस ओ डोले, कन क्रिये क्रियां से होय।
कह सुखराम जीव सो पेला, पाछे करम विध सोय॥ ४॥

तुम सब ही जन सुणो पहले करम हुवा है या जीव हुआ है। सब जगत वाले कहते है कि परालब्ध में लिखा जो होगा। उत्पति से पहले यह करमो के भोग कैसे लिखे गये, इसकी सोधना करके बताओ। पहले प्रालब्ध कर्म हुवा है या क्रियमाण कर्म इसका ज्ञान ग्रंथो में सोजकर अरथ बतावो। यह जीव क्रियमाण कर्म के बस में डोल रहा है या संचत कर्म के बस में या प्रालब्ध कर्म के बस में इस बात को समझो और सोचो। संचत कर्म के बस या क्रियमाण कर्म करने से डोलता है। म:फ: है कि पहले जीव बना है बाद में कर्मबन्धन हुवा है।

卐 हरजस पद राग धमाल (३) 卐

करम करे सो कवन है हो, यांको करज्यो विचार॥ टेर॥
मन करे कन राम करे है, कन करम प्रालब्ध जोय।
कन यो जीव करत है संतो, अरथ बतावो मोय॥ १॥
मन है करता मन है हरता, मन बिन कछु न होय।
जागृत सुषोप्त सपने में हो, ज्यां त्यां मन कूं जोय॥ २॥
तिरषा भूक ऊंघ सो आलस, छींक उबासी बाय।
जे ओ मन करम को करता, यांरी कहो कद चाय॥ ३॥
सुख सो संपत ब्हो विध चावे, सो क्यूं होवे नांय।
जे ओ मन करण है करता, दुख पावे क्यूं जाय॥ ४॥
सुख दुख तो मन है करता, तिण में फेर न सार।
अब सो करे अगम में भूगते, पूरब का अब लार॥ ५॥
संचत करम का है हर करता, क्रिये मन बस होय।
कह सुखराम ब्रह्म बिन भ्यास्या, भोलप निकले न कोय॥ ६॥

करम करने वाला कौन है इसका विचार करो। यह मन करम करता है या रामजी करते है या यह प्रालब्ध से है या यह जीव करता है। हे संतो इसका मुझे अरथ बतावो। मन ही करने वाला, मन ही हरने वाला, मन के बिना कुछ भी नहीं होता। जागृति सुषोप्ति व सपने में जहां तहां मन ही रहता है। तिरखा भूख ऊंघ व आलस छींक ऊबासी अपान वायु यदि मन करम का करता मानते हो तो मन इनकी कब इच्छा करता है। मन बहुत सुख संपति चाहता है वो क्यों नहीं होती। यदि यह मन करम का करता है तो दुख क्यों पाता है। सुख दुख का करने वाला तो मन ही है। इसमें किसी तरह का फेर सार नहीं है। अब जो कर रहा है उसका फल आगे भोगेगा। पहले के करम किये हुये अब भोग रहा है। संचित करम ईश्वर के आधीन है व क्रियमान करम मन के आधीन है। म:फ: है कि ब्रह्म की प्राप्ति के बिना भोलप याने तीनों करम समाप्त नहीं होते।

卐 हरजस पद राग धमाल (४) 卐

कोई ऐसा है जन सूर साधो, ओ सब भरम मिटाइये हो॥ टेर॥

क्रिये करम करे सो को है, प्रालब्द कुण ल्यावे।
संचत करम किणे कहो किया, घेर कोण भुगतावे॥ १॥
संचत करम किया हर आपी, प्रालब्ध हर लावे।
क्रिये करम मन शिर दिया, सामल राम करावे॥ २॥
क्रिये करम कटे सो कैसे, प्रालब्ध किम खूटे।
संचत करम गले सुण कैसे, शकल फंद किम तुटे॥ ३॥
क्रिये करम त्याग सूं खूटे, प्रालब्ध सो खाया।
संचत करम जलमस गलेसी, बोहोर गरभ नहीं जाया॥ ४॥
संचत करम गल्या जब प्राणी, कछु रहे नहीं मांय।
कह सुखराम प्रालब्द क्रिये, सब ही गया बिलाय॥ ५॥

साधो से फः है कि कोई ऐसा शूरवीर जन है जो मेरे सब भरम मिटा सकते हो। क्रियमाण करम कौन करता है, प्रालब्द कैसे बनते है, संचत करम का करने वाला कौन है। इन करमों को कौन भुगताता है। संचत करम का भुगताने वाला परमात्मा है। प्रालब्द भी परमात्मा भुगताते है, क्रियमान कर्म करना मन के वश में है, रामजी सबके साथ में रहते है, क्रियमाण करम कैसे कटते है? प्रालब्ध करम कैसे खत्म होते है? संचत करम कैसे गलते है? करमों के सारे भोग कैसे मिटते है? क्रियमान करम त्याग करने से, प्रालब्ध करम भोगने से, संचित करम पिछा जन्म धारण नहीं करने से समाप्त होते है। संचित करम समाप्त होने पर कोई करमों के भोग में नहीं रहते है। मःफः है कि परमात्मा की प्राप्ति होने पर तीनो ही करम समाप्त हो जाते है।

卐 हरजस पद राग धमाल (५) 卐

मेरे आंणद अनंत सुख ऊपज्यो हो। सुन्न में खेलुं हो सुन्न में खेलुं, साहिब संग खेलूं फाग॥ टेर॥
मरदंग ताल पखावत बाजे, जिंज डफा घन घोर।
गावत अनंत सहेलिया हो, लहक रहयो एक मोर॥ १॥
मन सुख धुन गुलाल उछले, प्रेम पिचरका होय।
बाणी बेण श्याम मुख बोल्या, मोह लिया मन जोय॥ २॥
अला पिंगला सुखमण हो, आण मिल्या जिण जाग।
गाजे है नांव घुरे दिन राती, वां खेलूं नित फाग॥ ३॥
ऊलट चढी गढ ऊपरे हो, रमी है पीव संग जाय।
कह सुखदेव अब जगत में हो, कछु न आवे दाय॥ ४॥

मेरे अनन्त आनन्द व सुख की प्राप्ति हुई है। ब्रह्मण्ड पार ब्रह्म से ऊपर निरंजण निराकार पद में सूरत दिष्ट व दिव्यदृष्टि के द्वारा सतशब्द का अनुभव होना ही सुन्न में फाग खेलना है। त्रिकुटी सुन्न में शब्द की ध्वनि होना ही मरदंग ताल पखावत जिंज डफली व अनन्तो सहेलियो का गाना है। शब्द की ध्वनि हो रही है यही मोर का बोलना है। मन में सुख आता है यही गुलाल उडना है। प्रेम से भक्ति होना ही पिचरका चलना है, शब्द की ध्वनि का होना ही श्याम का मुख बोलना है व सूरत शब्द का ध्यान कर रही है, यही मोह लिया मन जोय है। जहां पर अला पिंगला सुखमणा

मिलती है जहां रात दिन शब्द की ध्वनि हो रही है वहां जाकर जन का ध्यान करना ही नित फाग खेलना है। बंकनाल के रास्ते सूरत ऊंची याने ब्रह्मण्ड से ऊपर के: पद की प्राप्ति होना ही गढ पर चढना है। सूरत का शब्द में मिलना ही पीव के साथ में रमना है। म:फ: है कि संसार में अब कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

卐 हरजस पद राग धमाल (६) 卐

संतो अे अगवाणी आविया हो, मेरे हो मेरे आंणद हुवा मन मांय॥ टेर॥
प्रेम करक लेहरा बोहो ऊठी, विरह व्यापी शरीर।
खट रस साव बोहोत विध आवे, मन तन धरे है न धीर॥ १॥
कंठ के बीच गिलगिली होवे, अटकत अटकत आंण।
घडी पहर पल होय रहे तब, बोल सक्या नहीं बांण॥ २॥
हिरदा मांय हिलोला खावत, सोक पडे तब आय।
जैसे बाज झपट तीतर पर, तां सूई अधिक कहाय॥ ३॥
नाभ कंवल में सुण धुन ऊठी, कांप रहयो सब डील।
बाजा राग छतीसूं बाजे, खुली है अगम की मील॥ ४॥
सुरग इकीस पिछम दिस घेरया, दिया है जमा शिर पांव।
लागा बंध नख बिचे, सब जुग देखत चाव॥ ५॥
त्रिगुटी मांय जाय जन बैठा, तीन जोत जहां होय।
कह सुखराम नाद घरणावे, अनंत कला गत जोय॥ ६॥

संतो से फ: है कि मेरे यह वृतिया धारण हुई तब से मेरे बहुत आनन्द हुवा है। प्रेम व करक रूपी बहोत लहरा उठ रही है। शरीर में बिरह आ रही है। भजन करने पर कंठो से जो आता है यही खट रस साव का आना है। मन व शरीर से इसका हर समय सुख लेना ही मन तन धरे न धीर है। कंठो में साव के आने से गिलगिली होती है और हर समय आता रहता है अटकता नहीं है। सावका ऐसा आनन्द आता है, घडी पोहर बोलना भी बंद हो जाता है। जिस समय मैं भी परमात्मा की भक्ति थोडी सी भूल जाता हूं तो हिरदा में बडा भारी दुख होता है, यही हिरदा में हिलोला खाना है। जिस प्रकार बाज तीतर पर झपटता है और तीतर को जो दुख होता है उससे भी ज्यादा दुख होता है। नाभी के स्थान पर शब्द आता है सारा शरीर कांपने लग जाता है। जिस प्रकार ठंड से कांपता है। सूरत के द्वारा व नाड नाड रोम रोम में शब्द का होना ही छतीसुं प्रकार रागो का बाजा बाजना व अगम का रास्ता खुलना है। बंकनाल में इक्कीस गांठिये है यही स्वर्ग है, इनको पार करना ही छेदना है। शब्द के साथ सूरत का मेरू स्थान पर उतान पात बन्ध लगना है, उससे सारा शरीर जकड जाता है। यही नख चख के बीच में बन्ध लगना है। ऐसा अनुभव होना ही शरीर रूपी जगत को चाव से देखना है। त्रिगुटी में आने पर अला पिंगला सुखमणा का संगम हो जाता है, यही तीन जोती है। म:फ: है कि शब्द की अखण्ड ध्वनि हो रही है। यही नाद का घरणाना है व अनंत कला का देखना है।

卐 हरजस पद राग धमाल (७) 卐

ऊ दिन को कब ऊगसी हो, म्हारे सतगुरु द्वार पधारे हो॥ टेर॥
आंणद ऊछाव बधावणा हो, सामा मिलस्या जाय।
परदिखणा प्रणाम करूंगी, लुल लुल लागू पांव॥ १॥
ढोल बजावत गावत हो, लेसा बधाय बधाय।
केशर लूंग इलायची, बोहत चढावूं जाय॥ २॥
अगर चनण सो कुमकुमा हो, मन्दिर ढुलावुं आंण।
फूल मंगावूं जाफना हो, सुख सेज बिछाऊं जांण॥ ३॥
भोजन बोहो प्रकार का हो, लेसूं ईधक बणाय।
गुरु जीमे कब आंगणे हो, मैं ढोलूं लुल लुल बाय॥ ४॥
ज्ञान कथे बाणी पढे हो, करसी अरथ अनेक।
कह सुखदेव भरम भागसी हो, नाना विध का देख॥ ५॥

वो दिन कब उगेगा जब सतगुरु हमारे घर पर पधारेंगे। उनके पधारने पर आनन्द उछाव के साथ सामने जाणा ही अगवानी करना व मिलना है। उनकी परिक्रमा करना ही लुल लुल कर पांव लगना है। ढोल बजाते बजाते हरजस गाते गाते सामने जाकर उनको घर पर लाना ही बधाना है। केशर लूंग ईलायची उनको भेंट करना ही चढाना है। अगर चन्दन कुमकुम से घर को पोतना ही घर को ढोलना है। केशरिया फूल मंगाकर फूलों की सेज बिछाना ही सुख सेज बिछाना है। कई प्रकार से अधिक से अधिक प्रसाद बनाना ही भोजन ईधक बणाया। गुरुजी अपने घर पर प्रसाद करने पर पंखा ढूलना ही लुल लुल बाय करना है। ज्ञान कहते है, बांणी पढते है, अनेक तरह से निरपक्ष निरणा करते है। म:फ: है कि उनका ज्ञान सुनने से अनेक तरह के भरम भाग जाते है।

卐 हरजस पद राग धमाल (८) 卐

धिरग लाणत मन आप कूं हो, तूं हर तज सेवे आन॥ टेर॥
तन के बिच सांई, तांकि दिशा न जाय।
आठ पोहोर चोसठ घड़िया, सो रहे भटक जुग मांय॥ १॥
आल जंजाल बोहोत विध बोले, नाच रहयो दिन रात।
सरब ऊपाय अनेक करे है, हरि दिश नेक न जात॥ २॥
पाछे कूं नर सोचत है हो, आगम सोचत कोय।
नासत सूं नित खसत है हो, आ सतो गहे न कोय॥ ३॥
जिन रटिया सुख अनंत लहिजे, जाय अनंत पद खूल।
कह सुखदेव मैं कहत पुकारी, ताय निमख मत भूल॥ ४॥

हे मन तुझे धिक्कार है जो परमात्मा को छोडकर शरीर रूपी आन की भक्ति करता है। परमात्मा तो शरीर में ही है उसकी भक्ति तो नहीं करता है। उसके लिये आठ पोहर चौसठ घडी याने हर समय संसार में भटकता फिरता है। नाशवान शरीर रूपी आन की उपासना करना ही आल जंजाल है। उसमें लगे रहना ही रात दिन नाचना है। ज्ञानी बनकर मन से अनेक साधन करना ही अनेक

उपाय करना है। परमात्मा प्राप्ति का साधन नहीं करता है। ऐसे मन के साधन करता है। जिससे परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो, यही पाछे की सोचना है। जिससे परमात्मा की प्राप्ति हो वह साधन कोई कोई सोचता है। असत की प्राप्ति के लिये रात दिन मेहनत करता है और सत की प्राप्ति के लिये नहीं करता है। जिनके निज नांव का भजन हुआ है उनके अनन्त सुखो की प्राप्ति होती है, यही अनन्त पदो का खुलना है। म:फ: है कि उस परमात्मा को एक क्षण भी मत भूलो।

卐 हरजस पद राग धमाल (९) 卐

मेरे प्रीतम कब मिले हो, जो मेरा धुर खावंद है वो सोय॥ टेर॥
प्रीत पुकार पुकार पुकारे, बिरहन रही बिललाय।
रात दिवस कल ना पडे हो, उडत पांख बिन जाय॥ १॥
सुध बुध सबे भूल गई सारी, एक अकल आ मांय।
राम ही राम पुकारे निश दिन , एक पीव की चाय॥ २॥
अन्न जल तज्यां नींद नहीं, ओ सूख रयो तन जोय।
कह सुखदेव इण जगत में हो, धिरग जनम है मोय॥ ३॥

आत्मा कह रही है कि मुझे परमात्मा की प्राप्ति कब होगी जो मेरे अनादि से खास पति है। प्रेम प्रीति से विरह के साथ रात दिन भजन करना ही प्रीति का पुकारना व बिरहन का बिलबिलाना है। परमात्मा की प्राप्ति के बिना रात दिन चेन नहीं पडता है अगर मेरे पंख हो तो उडकर चली जाऊं। दूसरी सब सुध बुध भूलकर एक भजन करना ही एक अकल आ मांय है। रात दिन राम राम का भजन करने की व परमात्मा की प्राप्ति की इच्छा है। अन्न जल का त्याग करने से नींद नहीं आती व शरीर सूख जाता है। म:फ: है कि जब तक परमात्मा की प्राप्ति न हो तब तक मेरा जन्म धिक्कार है।

卐 हरजस पद राग धमाल (१०) 卐

अवगत हर सब ऊपरे, ज्यां सूं ओऊं सोऊं शक्ति होय॥ टेर॥
ब्रह्मा बिसन महेसर, राम कृष्ण अवतार।
देह धर इन सम को नहीं हो, दिठा दिष्ट पसार॥ १॥
पीर तीरथंकर देवत सारा, इन बिच कसर न कोय।
इण ऊपर सोई सांईयां हो, सो हर सबके मांय॥ २॥
उपजत खपत पांच के मांही, सो सब माया स्वरूप।
यों कर फल गत पाईयो, नाना विध का चूप॥ ३॥
पांच पचीस ईनाको हर है, तां ऊपर वे होय।
कह सुखराम ब्रह्म कूं जान्या, लारे रहयो नहीं कोय॥ ४॥

अवगत याने पारब्रह्म परमात्मा का जो पद है वो सबसे ऊपर है, उसी से ही ओऊं सोऊं शक्ति की उत्पति है। ओऊं याने आत्मचेतन, सोऊं याने ब्रह्म चेतन, शक्ति याने माया है, यह बात देखकर कही है। ब्रह्मा विष्णु महादेव राम कृष्ण अवतार जिन्होंने भी शरीर धारण किया है वो अवगत पद के बराबर कोई नहीं है। पीर तीरथंगर देवता इनसे ऊपर जो परमात्मा है वो सब में व्यापक है इसमें

कोई फरक नहीं है। पैदा होना मिटना पांच तत्वो के साथ है वो सब माया का स्वरूप है। इनकी भक्ति करने से नाना प्रकार के फलो की प्राप्ति होती है। पांच तत्व पच्चीस प्रकृतियों के साथ हर याने ब्रह्म का पद है, इससे ऊपर पारब्रह्म का पद है। म:फ: है कि ब्रह्म याने के: पद आ: पद की प्राप्ति होने पर पीछे कुछ भी कसर नहीं रहती है।

卐 हरजस पद राग धमाल (११) 卐

अनाद शब्द सूं नाद हुवो, जांकू लखेज बिरला जांण॥ टेर॥
नाद शब्द सूं अनहद ईच्छा, ताकी है सोऊं सांस।
या शब्द सूं शकल विस्तारा, तीनूं चवदे बास॥ १॥
या शब्द सुं ही ररंकार धुन ऊठे, यां से ही ओऊंकार।
सब के शीष जिंग सुर गाजे, वो सत मूल विचार॥ २॥
गायत्री सुन मंतर जंतर, सब सोऊं का होय।
वेद कुराण पुराण स गीता, बाणी भागवत जोय॥ ३॥
राम भजन सूं सब गम होई, देख्या या तन मांय।
ररंकार जींग शब्द कहिजे, नाद अनाद जोय॥ ४॥
मूल शब्द अखण्ड है मांही, हले चले नहीं कोय।
जन सुखदेव पंच भूत के हो, परे शब्द ऊ होय॥ ५॥

अनाद शब्द याने पारब्रह्म से नाद याने अक्षर ब्रह्म हुवा है, उसको बिरला ही अनुभव करते है। नाद शब्द याने अक्षर याने अक्षर ब्रह्म से अनहद ईच्छा याने आत्म चेतन की उत्पति हुई है। आत्म चेतन से ओऊं सांस की उत्पति है। तीन लोक चवदा भवन में सब प्राणी श्वांसा के आधार पर है। श्वांसा के आधार पर ररंकार उत्पन्न होता है। श्वांसा के आधार से ही ओऊंकार को चढाया जाता है, सब के शिर के ऊपर जिंग ध्वनि होती है। वो सत का मूल है। गायत्री मंत्र जंत्र सब श्वांसा के आधार पर है। वेद कुराण पुराण गीता संतो की बाणी सब श्वांसा के आधार पर है। सतगुरु विधि से रामजी का भजन करने से ही ररंकार जींग शब्द नाद अनाद की जानकारी होती है। मूल शब्द याने पारब्रह्म का पद वो सत है, स्थायी व थीर है तथा इसका निज नांव सतशब्द है वो भी सत है। म:फ: है कि सतशब्द व सतसाहिब का पद पांच तत्वो से अलग है।

卐 हरजस पद राग धमाल (१२) 卐

ईण मन सुं कहा कीजिये हो, ओ जांण बुझ छिप जावे॥ टेर॥
जे सुण मडो दुबलो होवे, ज्ञान नाज ले खुवाऊं।
कर हट पिंड हाड बे तुटो, तो भेद घिरत ले पाऊं॥ १॥
भोलप व्हे तो बुध सुध देवूं, बालक लूं पोटाय।
मोटो व्हे तो शब्दा मारूं, जख बिडदाऊं जाय॥ २॥
मानत नहीं चवे जो सामो, अरथ धन दूं आय।
जे ओ जिजक भडक जो जावे, तो गहूं हूं प्रसंगा मांय॥ ३॥

मांदो है तो औषध पाऊं, नांव जडी घस लाय।
कह सुखराम लालची व्हे तो, मोख पद दूं जाय॥ ४॥

इस मन का क्या करूं जो सोच समझकर भी भक्ति नहीं करता है यही छिपना है। मन कमजोर हो तो ज्ञान रूपी नाज खिलाऊं, इसके हाथ पैर शरीर आदि टूट गये हो तो परमात्मा की भक्ति का भेद देऊं, यही घी पिलाना है। भोलप याने बेसमझ हो तो बुद्धि दूं, बालक हो तो पुचकारूं, यदि अपने को बडा समझता हो तो शब्दो का उपदेश दूं, यही मार लगाना है। राक्षस वृति हो तो उस की प्रशंसा करूं, यही बिडदाना है। ज्ञान की बात को मानता नहीं है और सामने बोलता है तो इसको ज्ञान से अरथ समझाऊं। यह झिझकता भडकता है तो दृष्टान्त देकर समझाऊं, बीमार हो तो नांव का उपदेश देना ही जडी घस पाना है। म:फ: है कि मन अगर लालची हो तो मोक्ष पद की प्राप्ति का लोभ दे दूं।

卐 हरजस पद राग धमाल (१३) 卐

हर को नांव न जांणिये हो, जब लग मोख न जावे कोई॥ टेर॥
गावत रात दिवस, बांचत बेद कुराण।
ऐके भेद बिना सब थोथा, नाना विध सो बांण॥ १॥
अरथ विचार बोहोत विध जांणे, नाना विध का सूत।
सांच भेद बिन सब है फीका, कोट ग्रन्थ का सूत॥ २॥
चवदा विद्या सबे नर सिख्यो, बोहो कला लिवी आंण।
नारायण निज नांव भेद बिन, कछु नहीं पायो जांण॥ ३॥
पारब्रह्म की चाय हुवे तो, भेद लहिजे जाय।
कह सुखराम हद गुरु छाडो, सतगुरु शरण समाय॥ ४॥

परमात्मा के निज नांव की भक्ति नहीं करते है तब तक मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। रात दिन वेदों को, कुराणो को बांचते है, गाते है लेकिन जब तक सतशब्द का भेद नहीं है तो यह सब निरर्थक है। चाहे नाना विधि के साधन करो, क्रोडो ही ग्रंथो का अरथ बहोत विधि से जानते हो, लेकिन सतस्वरूप के ज्ञान के बिना सब फीके है। चवदा विद्या निधान हो, बहोत कलाये याने करामात जानता हो, परन्तु परमात्मा के निज नांव के भेद को नहीं जानता हो तो समझो कुछ नहीं जानता है। पारब्रह्म की प्राप्ति करना चाहो तो भेद से भक्ति करो। म:फ: है कि हद गुरुओ को छोड कर सतगुरु का अणभै ज्ञान धारण करो।

हरजस पद राग धमाल (१४)

हर कूं सोजो या तन मांही, खण्ड पिण्ड की बिध एक है॥ टेर॥
बांदा कवन कौन सो करता, कौन राम सूं कवाई।
अवगत किस्या कहो इण घट में, सो मुझ देवो बताई॥ १॥
अंजन कौन निरंजन कोहो है, पारब्रह्म कहो मोय।
आवागमण गरभ नहीं आवे, तिन्ह कहा घट होय॥ २॥

बेहद किसी हद सो क्या है, तीन लोक कहो जांण।
पांचु तत्व छटा नारायण, सोज पिण्ड कहो आंण॥ ३॥
खण्ड पिण्ड को निरणो किजे, कहो ठाकूर कुण होय।
कह सुखराम ज्ञान बिन सुलजिया, राम न पायो कोय॥ ४॥

परमात्मा की सोधना इस शरीर में करो, बाहर जिस प्रकार तीन लोक है वैसे ही शरीर में मृत्युलोक पाताललोक स्वर्गलोक है। शरीर में बांदा कौन है, करता कौन है, रामजी कौन है। अवगत का पद कौनसा है सो मुझे बतावो। अंजन याने आकार क्या है, निरंजण क्या है, पारब्रह्म का पद कौनसा है, वो पद शरीर में कौन सा है, जिसे पाकर जन्म मरण व गरभ में नहीं आवे। बेहद और हद क्या है। तीन लोक कहां तक है। पांच तत्व व छठा नारायण शरीर में कहां है, सोझ कर बतावो। इस तरह खण्ड पिण्ड का निर्णय करो, इसमें ठाकूर कौन है। म:फ: है कि ज्ञान प्राप्त हुवे बिना रामजी की प्राप्ति नहीं होती।

卐 हरजस पद राग धमाल (१५) 卐

घट मांही साहेब बसे हो, तुम सुणज्यो सब जन लोय॥ टेर॥
बांदा कहावे सो मन जांणो, निज मन करता होय।
रमता राम तको इण घट में, सोऊं सांस को जोय॥ १॥
अंजन होय तके तत्त ईन्द्रिया, सोऊं निरंजण जांण।
ररंकार धुन पारब्रह्म है, अवगत अनाद बखाण॥ २॥
धुन अनाद शब्द सुर जींग है, अेसो गरभ न जाय।
अजरावण सो अमर पुरूष है, सो घट धुन कहाय॥ ३॥
हद सो नांव नासका बिच है, बेहद त्रिगुटी पार।
तीन लोक है शीश नाभ में, पग सो पांव विचार॥ ४॥
पांचु तत ईन्द्रिया काया, नारायण जींग राम।
ओ सुण भेद लखेगा घट में, ताका सजे सब काम॥ ५॥
खण्ड पिण्ड का निरणा सब सुणज्यो, है ऐसी विध मांय।
कह सुखराम अवगत हर चाहिये, तो किज्यो सतगुरु आय॥ ६॥

घट में साहिब बसते है तुम सब ही भक्ति करने वाले सुनो। बांदा मन को कहते है। निज मन करता याने चेतन पद को कहते है। रमताराम सोऊं स्वांसा को कहते है। आकार याने शरीर में ईन्द्रियो का व शब्द का अनुभव करता है जिसको निरंजण कहते है। शरीर में रग रग रोम रोम नाड नाड में जो ररंकार की ध्वनि होवे वो ही पारब्रह्म है। अवगत पद लखबा में नहीं आवे, वह पद अनादी है। धुन अनहद जिंग शब्द जो अधर है उसकी प्राप्ति होने पर गरभ में नहीं आता, घट में अधर जींग धुन है उसको अजरावण अमर पुरूष कहते है। हद नासिका के बीच है। बेहद त्रिकुटी के पार है। तीन लोक पांव नाभी व शीर तक है। पांचु तत्त व ईन्द्रिया यह काया याने शरीर में है। जींग धुनी नारायण राम है यह भेद घट में लखेंगे, उसके मनुष्य जन्म का कार्य सिद्ध हो सकेगा। खण्ड पिण्ड का सब निरणा सब सुनो, घट में ऐसी विधि है। म:फ: है कि अवगत याने के: पद आ: पद की प्राप्ति करना हो तो सतगुरु का अणभै ज्ञान धारण करो।

卐 हरजस पद राग धमाल (१६) 卐

जंवरो सोज कहो घट मांही, खण्ड पिण्ड की गत एक है हो॥ टेर॥
कहो कौन काल कौन जम कहिये, कहो कुण मारणहार।
घट में जीव शीव सो को है, सो मुझ कहो विचार॥ १॥
करमी कौन कवन सो धरमी, कौन शाहा कौन चोर।
कहो कुण सुख दुख घट पावे, सुरग नरक कहां ठोर॥ २॥
घट में पीर तीरथंगर कोहो है, को ओतार कहावे।
सुर नर देव जगत सो जांणे, कहो हरि शिमरथ मांय॥ ३॥
एक नाम सो कहो कौन, तन में बोलत कौन कहो जांण।
कह सुखराम घटे बधे को है, अचल कौन घट ठांण॥ ४॥

जंवरो याने काल कौन है खण्ड पिण्ड की एक ही विधि है। काल कौन है, जम कौन है, मारने वाला कौन है, शरीर में जीव शीव कौन है, सो मुझे विचार कर कहो। कौन धरमी है कौन करमी, कौन साहूकार व कौन चोर है, इस शरीर में सुख दुख कौन पाता है। स्वर्ग नरक कहां है, शरीर में पीर तीरथंगर अवतार कौन है। देवता, मनुष्य, जगत कौन है। शिमरथ परमात्मा कौन है। एक नाम वो कौनसा है। शरीर में कौन बोलता है उसे कहो। म:फ: है कि घटता बढता कौन है तथा अचल याने थीर शरीर में कौन है।

卐 हरजस पद राग धमाल (१७) 卐

खण्ड पिण्ड की गत एक है, तन खोजो हरिजन संतो आंण॥ टेर॥
काल क्रोध करम सुण जम है, अहुं मारण हार।
घट में जीव ईन्द्रिया कहिये, सोहंग शीव विचार॥ १॥
करमी मन चोर ही मन है, ओही साहूकार।
ईन्द्रिया मन सुख दुख पावे, भृगुटी सुरग विचार॥ २॥
घट में पीर तीरथंगर मन है, सुर नर है अवतार।
दाणू देव जगत सो होई, रमता राम विचार॥ ३॥
घटे बढे सो ही मन माया, शीव धुन घट में जांण।
कह सुखराम तत्त बोहो नामा, ब्रह्म एक घट जांण॥ ४॥

पिण्ड याने शरीर व खण्ड पिण्ड की विधि एक है, भक्ति करने वाले जनो व संतो से फ: है कि इस शरीर में खोजो। शरीर में क्रोध काल है, करम जम है। अहंकार मारने वाला है, शरीर में इन्द्रिया व जीव है। शीव के पद को सोहं कहते है। मन ही चोर, करमी व साहूकार है। ईन्द्रिया व मन ही शरीर में सुख दुख पाता है। भृगुटी में स्वर्ग का स्थान है। शरीर में पीर तीरथंगर देवता व अवतार मन ही है। राक्षस व संसारी ही मन ही है। मन जगह जगह संकल्प विकल्प ही करता रहता है, इसलिये मन को रमता राम कहा है। मन के विचार घटते बढते रहते है। ब्रह्म धुन ही सब घटो में शीव है। म:फ: है कि पांच तत्वो से बनी चीजो के नाम तो बहुत है लेकिन ब्रह्म सब घटो में एक है।

卐 हरजस पद राग धमाल (१८) 卐

मैं देता हूं हेला जुग के मांय, ज्ञानी हुवे सो सांभलो हो॥ टेर॥
कहां ब्रह्म को घाट घट है, कौन रूप हर होय।
पारब्रह्म सूं ही पराब्रह्म है, तां बिंद रंग कहो मोय॥ १॥
मन को रूप जीव को कहिये, को तत को आकार।
चित सो सूरत कौन ऊरमना, कौन कौन की लार॥ २॥
बोलण हार कौन बस बोले, चुपक किसे बस होय।
नव तत लिंग सरूप बतावो, सो जन पूरा जोय॥ ३॥
परगट घाट रूप सो कहिये, नेहचल डोल बताय।
कह सुखराम नहीं जो आवे, तो शिष होय पूछो आंण॥ ४॥

मैं जगत में उपदेश करता हूं जो ज्ञानी हो वो सुणो। ब्रह्म का स्थान कहां है, परमात्मा का क्या रूप है, पारब्रह्म व पराब्रह्म याने आः ब्रह्म का पद बतावो। मन व जीव का रूप बतावो,पांच तत्वो का आकार बतावो, चित व सूरत का अनुमान बतावो, कौन किसके साथ है। बोलने वाला किसके आधार से बोलता है और चुप किसके वश में होता है। नव तत लिंग का क्या सरूप है, इस बात को बताने वाले जन पूरे याने पहुंचे हुये है। प्रकृति के घाट व रूप को बतावो, नेहचल का आकार बतावो। मःफः है कि इन सब बातों का उत्तर नहीं दे सकते हो तो शिष्य होकर पूछो।

卐 हरजस पद राग धमाल (१९) 卐

नेः चल को रंग डोल कहूं हो, तुम सुणज्यो सब संत आय॥ टेर॥
अवगत देव निरंजण मन को, रूप रंग तत होय।
देही घाट सुणो ओ कहिये, दिन चढे सो जोय॥ १॥
बोल चुपक नेः चल के, परगत चित मन ऐह।
नेः चल को तुम डोल सुणाऊं, पांचा को सुण देह॥ २॥
नव तत्त का रंग सो नहीं दिसे, धायो डोल बखाण।
कह सुखराम अरथ सो सागे, सुण ले शिष्य सुजाण॥ ३॥

नेः चल का रंग व आकार कह कर सुनाता हूं तुम सब ही संत आकर सुणो। अवगत परमात्मा निरंजण मन का रूप रंग पांच तत्व है। दिन चढता है वो देही का आकार है। बोलना चुप रहना नेः चल के आधार पर है। परगत चित मन सब नेः चल के आधार से है। पांच तत्वो के जितने भी शरीर है वो सब नेः चल के आकार है। नव तत लिंग शरीर का रंग नहीं दिखता है। जैसे कोई धापने की तृप्ति का अनुभव होता है। ऐसे ही नव तत लिंग शरीर का अनुभव होता है। मःफः है कि हे शिष्य सुण ले यह सच्चा अरथ है।

卐 हरजस पद राग काफी (१) 卐

वे जन जुग कूं तारसी हो। ज्यां रे अणभै परवाना हात, साधो वे जन जुग कूं तारसी हो।। टेर।
जांकू दुवो दियो हर आप ही, वे जन तारे जीव।

वां बिन रात दिवस हर गावो, परथ न मिलसी पीव।। १।।
फल सो मिले पदवी सो पावे, गरभ न छूटे कोय।
दुवा बिना साध बोहो जुग में, ज्यां संग मुक्त न होय।। २।।
राम दुवाई मैं तो झूंठ न बोलूं, इण में फेर न सार।
भजन कियां ही तारसी, किण सांचा जन की लार।। ३।।
सांचा सतगुरु संत वे हो, उलट चढे आकाश।
जन सुखदेव अणभै सो वाणी, वारां ध्यान त्रिवेणी बास।। ४।।

वे परमात्मा के जन ही जीवों का उद्धार करेंगे जिनको परमात्मा की तरफ से अणभै वाणी बनाने का हुक्म हुआ है, यही हात में परवाना है। वो ही जन जगत के जीवो को तारेंगे जिनको अणभै रूपी ओहदा दिया है। वो ही जन जीवों का उद्धार करेंगे। उनका अणभै ज्ञान धारण किये बिना रात दिन भक्ति करो तो भी परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती। दूसरे साधनो से व नवधा भक्ति से फलो की प्राप्ति होती है। तीन लोको में पदवी मिलती है लेकिन गर्भ में आना जाना नहीं छूटता, इस तरह के: पद आ: पद के अणभै ज्ञान के बिना जितने भी हद बेहद का ग्यान बताने वाले संत है उनका ज्ञान धारण करने से मोक्ष नहीं होता है। रामजी की सौगन्ध खाकर कहता हूं कि मैं झूंठ नहीं बोलता हूं और इस बात में कोई फरक नहीं है कि सच्चे संतो याने केवली भगवंतो की अणभै वाणी में बताई हुई विधि से भजन करने पर ही मोक्ष की प्राप्ति होगी। सच्चे संत व सतगुरु वे है जो बंकनाल में ऊलटकर आकाश याने ब्रह्मण्ड से ऊपर चढते है। म:फ: है कि वे संत ही अणभै वाणी बनाते है हंसो को तारने के लिये तथा उनका सुखमणा में ध्यान अखण्ड रहता है, यही त्रिवेणी बास है।

卐 हरजस पद राग काफी (२) 卐

हरिजन को किम जाणिये हो, तुम सब सुणज्यो हो ज्ञानी पिंडत आंण।। टेर।।
करामात सूं पीर कहावे, वचन फल्या सिध होय।
सांग बणाया भेष भरमना, जगत रहया जुग लोय।। १।।
टेल किया सुं दास कहावे, तप सुं तपसी जांण।
इन्द्रि दमण जति जुग भाषे, मून मुनेसर ठांण।। २।।
चरचा ज्ञान बहो लख ले, सो पिंडत जुग होय।
होणहार होसी सो भाषे, जब लग रिष पद जोय।। ३।।
भांजे मांड घडे फिर पाछो, सो गुण देव कुवाय।
धारे देह अनन्ता अेकी, राकस सिध गत थाय।। ४।।
ऊडे गडे डूबे जल मांही, मन की कहे सब जोय।
कह सुखराम सिध वे कहिये, देव कला कहे लोय।। ५।।

सब ज्ञानी पिंडत सुणो कि हरिजन को कैसे पहचाने। करामात बताने वाले को पीर कहते है। जिसके वचन फलते है उसे सिद्ध कहते है। सांग बनाने वाले भेख धारी है, यह तो जिस तरह संसार है वैसे ही है, सेवा करने से दास कहलाता है। तपस्या करने से तपस्वी कहलाता है। ईन्द्रियो को

वश में करने वाले जति कहलाते है। मौन धारण करने वाले को मुनि कहते है। चरचा व ज्ञान को समझने वाला पंडित कहलाता है। होणकाल ब्रह्म व सृष्टि करता के पद का ज्ञान देते है वो ऋषि कहलाते है। सृष्टि को मिटाकर वापिस बना देते है उनको देवता कहते है। एक शरीर से अनेक शरीर धारण करने वालो को राक्षस व सिद्ध कहते है। उडते गढते जल में डूबते व मन की सारी बातें कहने वाले है। म:फ: है कि उन्हें सिद्ध व देवता कहते है।

卐 हरजस पद राग काफी (३) 卐

हरिजन सो इम जाणिये हो। सुणज्यो हो ज्ञानी पिंडत आंण, हरिजन सो इम जाणिये हो।। टेर।।
काया खोज शब्द तत चिन्हे, उलट आद घर जाय।
आठ पोहोर साहेब सुं ताली, गरक हुवा पद मांय।। १।।
नांव नकेवल बिन नहीं माने, कोट कला की बात।
आशा बिना भजे अविनाशी, भरम कहूं नहीं जात।। २।।
दुवा बेदुवा दे कबु नांही, मान मोहोला नांय।
लागे है ध्यान ब्रह्म सूं ताली, दशवें द्वार घर मांय।। ३।।
लागे है धुन नाद सो गाजे, अखण्ड खण्डे नहीं कोय।
कह सुखराम संत सो कहिये, रता है ब्रह्म सूं जोय।। ४।।

हरिजन याने के: पद आ: पद की प्राप्ति करने वालो को इस तरह से पहचानो, सब ज्ञानी पंडित सुणो। सतशब्द के द्वारा रग रग रोम रोम व खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड का अनुभव करना ही काया खोज शब्द तत चिन्हे है। सतशब्द के साथ उलटकर के: पद आ: पद की प्राप्ति करना ही उलट आद घर जाना है। हर समय सतशब्द का निरंतर अनुभव होना ही साहिब से ताली लगना है। आ: पद में लय होना ही गरक होना है। एक निराधार निज नांव के बिना दूसरी करोडो कला की बात हो उसको नहीं मानता। बिना फल की इच्छा के परमात्मा की भक्ति करता है और दूसरे साधन करने में व जीव भाव से सुखो कि प्राप्ति की इच्छा मन को नहीं जाने देना भी भरम कहूं नहीं जाते है। न किसी का बुरा करते है न किसी को परचा देते है। न किसी से मान बडाई चाहते है। दशवें द्वार में शब्द का अखण्ड अनुभव होना ही ब्रह्म सुं ताली लगना है। शब्द की अखण्ड ध्वनि व गरजना जो खण्डित नहीं होती है उसका अनुभव होना ही संतो का ब्रह्म में रत रहना है।

卐 हरजस पद राग काफी (४) 卐

बिन करक्या हर न मिले हो, जे कोई कोटा करो हो उपाय।। टेर।।
रूत बिना दान दिया नहीं ठेरे, बाल गरभ के मांय।
कस्टयां बिना जन्म नहीं होवे, कोटा करो हो उपाय।। १।।
करूणा बिना दया नहीं व्यापे, मोह बिना नहीं प्यास।
खसिया बिना काम नहीं होवे, उगा बिना नहीं आस।। २।।
दरद बिना सुण बेद सूं हो, अंतर हेत न होय।
कुरूज करूके बाहिर हो, बच्चा पकेहन जोय।। ३।।

जुग में किया जुग ज्यूं रिजे, आइज हरि गत जांण।
कह सुखराम सांच बिना चिता, तिरयो सुणयो नहीं आंण।। ४।।

बिना लग्न के परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती, चाहे करोडो ही उपाय करो। बिना ऋतु के ऋतु दान देने से गरभ नहीं रहता। कष्ट सहे बिना बालक का जन्म नहीं होता, चाहे करोडो उपाय करो। करूणा के बिना दया नहीं आती। चाह के बिना प्रेम नहीं होता। मेहनत के बिना काम नहीं होता। धरती पर अंकूर प्रगट हुये बिना खेती की आशा नहीं रहती। शरीर में बीमारी के बिना बैद्य से प्रेम नहीं होता। कुरज पक्षी अंडा देकर दूर चले जाते है। अगर सूरत अण्डे में नहीं लगाता है तो बच्चा नहीं पकता है। संसार से प्रेम करने पर संसार राजी होता है। ऐसे परमात्मा से प्रेम करने पर परमात्मा राजी होते है। म:फ: है कि सतशब्द की भक्ति के बिना किसी की मोक्ष नहीं होती है।

卐 हरजस पद राग काफी (५) 卐

धिन धिन सो नर जाणिये हो, ज्यारै है ज्यारै आठ पोहोर लिव ध्यान।
धिन धिन सो नर जाणिये हो।। टेर।।
नांव रटे नर बोतस पीडा, राम मिलने बोहो प्यास।
तन धन बिसरया कामना हो, मोख मिलण की आस।। १।।
खिण रोवे खिण हंसत है हो, यूं मन लेरया खाय।
साध संगत गुरु देव बिना हो, पलक रहयो नहीं जाय।। २।।
जिण जन जलम भलाई धारयो, लगी है ब्रह्म सुं डोर।
एक नकेवल ध्यान है हो, चित रहयो निज ठौड।। ३।।
जगत चाव सब छाड दिया है, राम कोड नित होय।
कह सुखराम मुक्त का ग्रामी, तामें फेर न कोय।। ४।।

वही मनुष्य धिन है धिन है जिनके आठ पोहोर लिव बन्ध ध्यान रहता है। शरीर व धन की कामना को छोडकर मोक्ष मिलने की इच्छा व रामजी की प्राप्ति के लिये विरह के साथ भजन करता है। कभी रोता कभी हंसता है। इस तरह मन लेरया खाता रहता है। साध की संगत, संतो का अणभै ग्यान समझ कर भक्ति के बिना एक पलक नहीं रहता। उन जनो का जन्म धिन है जिनके रात दिन ब्रह्म का अखण्ड ध्यान होता है। एक निकेवल याने निराधार सतशब्द का ही ध्यान करते है। उस ध्यान से चित एक क्षण भी नहीं हटता याने लगा रहता है। संसार के कामो को व मोह ममता को छोडकर रामजी की प्राप्ति में लगना ही राम कोड नित होय है। म:फ: है कि वे जन मोक्ष की प्राप्ति करते है इसमें फरक नहीं है।

卐 हरजस पद राग काफी (६) 卐

इन मन कूं दोष न कोय, सुण समरथ साहिब सांईया हो।। टेर।।
आपीज करता आपीज हरता, आपीज का सब हो काम।
तीन लोक पंच भूत शकल ही, तम सिमरथ का राम।। १।।
बैण कहया ज्यां आप संगी था, सुणयो जांहि हर साथ।
साहिब बिन मन अकेलो हो, क्या करी को बात।। २।।

चाल गयो ज्याहां हरि पास था, कियो काम संग होय।
तमा से बिछट कहो क्या कियो, समझ दोष दो मोय।। ३।।
हुक्म तुमारो तुम ही साथे, मैं पायक था होई।
आगे लारे कह सुखदेवजी, तुम बारे तुम मांई।। ४।।

परमात्मा से प्रार्थना करते है कि इस मन का कोई दोष नहीं है। आप ही करता हो आप ही हरता हो। आप से ही सब काम होते है। तीन लोक में पंच भूतआत्मा सब प्राणी आपका ही भजन करते है। वचन कहने सुनने में सब जगह आप साथ है, आपके बिना मन अकेला क्या कर सकता है। जहां गया जहां आप साथ थे, आप से अलग होकर मैंने क्या किया सो समझ कर मुझे दोष दो। आपकी ही आज्ञा थी, आप ही साथ थे, मैं तो आपका सेवक हूं। म:फ: है कि आगे पीछे बाहर भीतर सब जगह आप थे।

卐 हरजस पद राग निसाणी (१) 卐

कुण है रे बाबा कुण है रे बाबा, कुण है कुण है कुण है ओ।
तीन लोक में राच रयो है, अेसी यांकी धुन है ओ।। टेर।।
कोई कहे ओ जीव विचारो, कोई कहे ओ सांई हो।
कोई कहे ओ ब्रह्म आप है, पूर रहयो जग मांही हो।। १।।
सांई है तो क्यों दुख पावे, ब्रह्म गरभ क्यों आयो है।
जीव हुवे तो फिर क्यों ऊपजे, ताकूं जंवरो खायो है।। २।।
नहीं ओ ब्रह्म जीव नहीं सायब, कहता कछु न आवे है।
पांचु बास सदा ऊर यांके, भंवता यूं जुग जावे है।। ३।।
ज्ञानी ध्यानी साध सिधा ने, ब्रह्मा बोहो विध गायो है।
अर्जुन व्यास किशन कण बिणया, तो भी अरथा में नहीं आयो है।। ४।।
अदभूत खेल अचंभो भारी, आद अंत यो होई हो।
समे भाव माया देह धारे, सुख दुख लारे दोई हो।। ५।।
माहा रस ज्ञान आनन्द पद ऊपजे, जद यो निरभै होई हो।
कह सुखराम कठा लग, आगे करता लग दुख ओही हो।। ६।।

म: आत्मा के वास्ते फ: है कि यह कौन है जो तीनों लोको में सब प्राणियो में रम रहा है। यही इसकी धुन है। कोई इसे ब्रह्म कहते है। कोई जीव कहते है। कोई साहिब कहते है, कोई कहते है इन सब पदो से न्यारा भी है और सब पद इसमें भासते भी है। आद अंत में यह ही है। ईश्वर है तो दुख क्यों पाता है। ब्रह्म है तो गर्भ में क्यों आया है, जीव है तो फिर क्यों पैदा हुवा है। जिसको काल ने खाया है। न तो यह जीव, न ब्रह्म है, न सायब, न कुछ कहने में आता है। पांच तत्वो के साथ है व पांचो विषयो का संग है, जब तक जन्मना मरना पडेगा। ज्ञानियो ने, ध्यानियो ने, साधना करने वालो ने व सिद्धो ने, ब्रह्माजी ने, भगवान श्रीकृष्ण ने, अर्जुन ने, व्यासजी ने, इसको कि आत्मा का यह स्वरूप है बताने की बहुत चेष्टा की, परन्तु अरथो में नहीं बता सके। अदभूत खेल अचंबा भारी है, यह आद में है अन्त में है। समय पाकर माया का शरीर धारण करने पर सुख दुख

इसके साथ हो जाते है। म:फ: है कि के: पद आ: पद की प्राप्ति होने पर जन्मना मरना मिटता है। जब निरभय हो जाता है, करता पद की प्राप्ति हो जाने पर भी आवागमन नहीं मिटता।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (१) 卐

राजा है अैसा जन कोई। होणकाल ईश्वर सूं आगे, ज्ञान बतावे मोई।। टेर।।
जे कोई ज्ञान त्याग ले ध्यावे, तिके काल मुख मांई।
वांकी संगत परम मोक्ष नहीं, हंसो किस विध जाई।। १।।
जे कोई ज्ञान बतावे करता, पैदा करंदा भाई।
अे सब ज्ञान काल का मुख में, न्याव करो ओ आई।। २।।
क्रिया कला जप तप साधन, कुंची मुद्रा गावे।
पेलो छेह काल का मुख में, परम मोक्ष नहीं जावे।। ३।।
घणी बात थोडी में केवुं, सुण लिज्यो नर नारी।
ब्रह्म काल माया सब चारो, देखो ज्ञान बिचारी।। ४।।
कह सुखराम काल सूं बारे, जे जन सत पद पावे।
हद कूं छाड तजे बेहद कूं, ब्रह्म ऊलंग हंस जावे।। ५।।

राजा से फ: है कि ऐसे कोई जन है जो सृष्टि करता ईश्वर से आगे के: पद आ: पद का ज्ञान बताने वाला हो। जो त्याग से मोक्ष बताते हो, लेकिन त्याग से जन्म मरण नहीं मिटता। उनके ज्ञान के द्वारा परम मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। हंस बिना सतशब्द के मोक्ष की प्राप्ति कैसे कर सकता है। जो सृष्टि करता परमात्मा की प्राप्ति का ज्ञान बताते है उससे भी आवागमन नहीं मिटता, इस बात पर तुम विचार करो। क्रिया कला जप तप साधन कुंची मुद्रा अष्टांग योग के साधन करने से मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। शरीर अमर हो जाता है लेकिन महाप्रलय में मरना पडता है। यही काल के मुख में पेला छेह है। बात तो बहुत है मैं तुम्हें थोडे में कहता हूं सब स्त्री पुरूष सुणो, ब्रह्म व माया के पद में जन्मना मरना नहीं मिटता। इस तरह ज्ञान से विचार कर देखो। म:फ: है कि जन्म मरण से रहित वहीं हुये है, जिन्होंने सतस्वरूप आ: पद की भक्ति की है। हद याने तीन लोक, बेहद याने ब्रह्म पद से अलग होकर के: पद आ: पद की प्राप्ति करना ही ब्रह्म के पद को पार करके जाना है।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (२) 卐

संता ज्ञान अरथ गम भारी रे, संता ज्ञान अरथ गम भारी रे।। टेर।।
सुरगुण निरगुण भक्त सेल है, नार पुरूष सब जांणे।
केवल ज्ञान विज्ञान कहिजे, बिरला संत पिछाणे।। १।।
सुरगुण मात पिता पण निरगुण, हंसा रो कुल होई।
जब लग तात परोजन उनसे, निरभै मत नहीं कोई।। २।।
माया ब्रह्म करे सब निरणा, रोम रोम कर ठांणे।
केवल ज्ञान विज्ञान कहिजे, बिरला संत पिछाणे।। ३।।
माया रही हद के मांही, बेहद ब्रह्म कहावे।

पराभक्त सतगुरांजी को शरणो, या विध बिरला पावे।। ४।।
सतगुरु महिमा संत पिछाणे, भिन्न भिन्न कर गुण गावे।
कह सुखराम सुखा का सागर, भेद तो बिरला पावे।। ५।।

संतो से फ: है कि सत पद के ज्ञान का अरथ व अनुभव भारी है। साकार व निराकार की भक्ति सरल है। उसको सब स्त्री पुरूष जानते है। केवल की भक्ति विज्ञान याने भक्ति करने की विधि धारण करने से होती है। उसको बिरले संत ही जानते है। माया ब्रह्म हंस के माता पिता है। जब तक माया ब्रह्म के ज्ञान में है, तब तक निर्भय पद की प्राप्ति नहीं होती। माया ब्रह्म का सब ज्ञानी निर्णय करते है। ब्रह्म को सर्वत्र व्यापक बताते है, लेकिन केवल का ज्ञान ही विज्ञान है। उसको बिरले ही संत जानते है। माया का पद हद याने तीन लोक में है। बेहद में ब्रह्म का पद है। बिरलो को ही परा भक्ति याने सतस्वरूप आ: पद की भक्ति सतगुरु का अणभै ज्ञान धारण करने पर होती है। केवली संत ही गुरु पद के ज्ञान को जानते है। उस परमात्मा व ज्ञान का भिन्न भिन्न कर गुण गाना है। म:फ: है कि पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति ही सुखो का सागर है। यह भेद बिरले ही जानते है।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (३) 卐

संतो मैं ऐसा सतगुरु चाहूं। आवागमण मिटे दुख भारी, माहा परम सुख पाऊं।। टेर।।
पाप करूं तो दोजख देवे, धरम किया भुगतावे।
तपस्या किया राज गल फंद में, जन्म जन्म दुख पावे।। १।।
साजन किया सिधाई जागे, करामात फल पावे।
बूरो रे भलो काहू को बंछे, यूं कर नरका जावे।। २।।
किरिया तो किया करम सिर बंधे, गरह आव दम तुटे।
त्यागन किया रह शिर बदलो, जन्म दूसरे लूटे।। ३।।
भणिया सोच भरम बो उठे, तीरथ सूं तन छीजे।
सेवा किया सांच नहीं आवे, यूं तो राम न रीजे।। ४।।
भरम करम दोनां सूं न्यारा, ज्यां सूं रहो लिव लाई।
कह सुखराम राम बिन जग में, सब ही करम ऊपाई।। ५।।

संतो से फ: है कि मुझे ऐसे सतगुरु चाहिये जिनके अणभै ज्ञान से आवागमन का जो भारी दुख है वो मिटकर महा परम सुख की प्राप्ति हो जाय, जो सुख मिलकर कभी खत्म नहीं होता। पाप करने से नरको का दुख भोगना पडता है। तपस्या करने से राज मिल जाता है। जिससे जन्म जन्म तक दुख पाना पडता है। कोई भी साधन करने से सिद्धियो की जागृति हो जाती है। करामात बताने लग जाते है। किसी का बुरा हो जाता है, किसी का भला हो जाता है। इस तरह बुरा होने पर नरको में जाना पडता है। कोई भी क्रिया करने से शुभ अशुभ करम बंधते है। गरह आव याने स्वांसा व आयु करम बन्धन में ही लगती है। घर को छोडने से इस जन्म का बदला अगले याने दूसरे जन्म में चुकाना पडता है। कई शास्त्रों के अध्ययन करने से अनेक भरम उठते है। तीरथ करने से शरीर कमजोर होता है। सेवा करने से सतशब्द की जागृति नहीं होती। इस तरह करने से परमात्मा की

प्राप्ति नहीं होती। जो के: पद भरम करम से अलग है उसका लिव बंध सांस ऊसांस में राम भजन होना ही लिव लगाना है। म:फ: है कि परमात्मा प्राप्ति के साधन के बिना सब ही करमो के ऊपाय है।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (४) 卐

संतो ऐसा भेव संभावो, ज्यां सूं आवागमण न आवो।। टेर।।
तुम मेरा स्वामी मैं तेरा चेला, जे ओ अरथ बतावो।
ने करमी सूं किस बिद मिलिये, रेत कोण घर लावो।। १।।
ररो ममो दोय मात पिता है, रिद्ध सिद्ध बोह घर होई।
नवला ब्याव करो नित साधो, गरभ टले नहीं कोई।। २।।
ओऊं सोऊं दादो दादी, पारब्रह्म पड दादो।
तीन लोक रचा उनकी ईच्छा, उलट उसी ने खादो।। ३।।
रेत राज की किया चाकरी, करम न दुरा जावे।
इनकी टेल करम ही करना, करमा की पदवी पावे।। ४।।
कुल बैराग दोय है रस्ता, परापरी सूं आवे।
कुल में त्याग पलक नहीं रेवे, गरह त्याग नहीं चावे।। ५।।
नां वे उरे परे भी नांही, ना कोई बीच कहावे।
त्यागी पुरूष बिराजे न्यारा, कोटा मधे पावे।। ६।।
कुल में तो निरभै मत नांही, भावे सा जन होई।
कह सुखराम त्याग जब निसरियो, करम रयो नहीं कोई।। ७।।

संतो से फ: है कि ऐसा ज्ञान बतावो जिससे आवागमण में नहीं आना पडे। अगर आप यह अरथ याने परमात्मा मिलने का भेद बताते हो तो मैं आपका शिष्य हूं और आप मेरे गुरु है। जिस पद में शुभ अशुभ करणिये करम नहीं है उस पद में जाने का कौनसा साधन है, जिससे उस पद में जाकर मिल जावे। ररा ममा माता पिता याने माया ब्रह्म की भक्ति है। उनसे रिद्धियो और सिद्धियो की प्राप्ति होती है। माया ब्रह्म की प्राप्ति करने से सुखो की प्राप्ति होती है। यही नवला ब्याह करना है, लेकिन इससे जन्मना मरना नहीं मिटता। ओऊं सोऊं का जपा अजपा दादा दादी के जैसे है तथा पारब्रह्म की भक्ति पड दादा की जैसे है। पारब्रह्म की ईच्छा से ही तीन लोक की रचना होती है और महाप्रलय में यह सृष्टि पारब्रह्म में लय हो जाती है। यही इनकी इच्छा से रचना और उलट उसी को खाना है। प्रजा को राजा का काम करने से करणिये करनी पडती है। ऐसे ही माया ब्रह्म की भक्ति शुभ अशुभ करणियो से होती है। करमो के फल मिलते रहते है। अनादि से एक कुल का दूसरा बैराग याने त्याग ये दो रास्ते है। कुल में व गृहस्थ में त्याग नहीं रहता है। के: पद आ: पद को त्यागी पुरूष कहा है। उसको कोई करोडो में बिरले ही प्राप्त करते है। वो पद माया ब्रह्म पारब्रह्म के पद से अलग है, यही उरे परे बीच नहीं होना है। कुल याने माया ब्रह्म का साधन करते है तब तक निरभय पद की प्राप्ति नहीं होती है, चाहे गृहस्थ हो या घर छोडने वाले हो, कोई भी जन हो। म:फ: है कि जब माया ब्रह्म के पद से अलग होकर के: पद आ: पद की प्राप्ति करना ही

त्याग कर निकलना है तब कोई भी करम नहीं रहता। क्योंकि उस पद में न शुभ अशुभ करणी है न करम है।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (५) 卐

संतो अरथ करे सो पूरा। सार शब्द कूं नहीं रे पिछाणे, रहे मोख सूं दूरा।। टेर।।
आद पुरुष सूं हंस बिछडयो, क्या पाप पुन्न किया।
किण आधार गरभ में आया, तो ताड किणी ने दिया।। १।।
करम वहां किया के यहां आय किया, के ने: करमी चल आयो।
कोण सो करम किणी ने लागे, तो काल किणी ने खायो।। २।।
अेती गम ज्ञानिया कूं नांही, समझ बिहूणा सारा।
काली त्रिया नार ने ब्याही, सो तुम करो विचारा।। ३।।
सो ही वस्तु शकल घर मांही, सोई हाट में होई।
क्यूं पच मरे मुक्त ने मूरख, रात दिवस मिल दोई।। ४।।
कविता कहे करम तत भज रे, ब्रह्म उलट समाई।
कह सुखराम पेल के आयो, तो अब के क्यों नहीं आई।। ५।।

संतो से फरमाते है कि जो अरथ याने अणभै वाणी का निरपक्ष निरणे को जानता है वह पूरा याने केवल्य ग्यान को समझता है। सार शब्द याने सतशब्द को नहीं जानते, उनकी मोक्ष नहीं होती। परमात्मा से जब शुरू में हंस की उत्पति हुई, उस वक्त उसने क्या पाप पुण्य किया था, किस आधार से गर्भ में आया अथवा उसको किसने भेज दिया। हंस ने कर्म वहां किया था या यहां आकर किया या नेकरमी चल कर आया। कौनसा कर्म किसको लगा व काल ने किसको खाया इसकी गम ज्ञानियो को नहीं है, क्योंकि यह बात उनकी समझ के बाहर है। पागल स्त्री एक औरत को ब्याह दी उसका तुम विचार करो। आत्मा ब्रह्म है और ब्रह्म पद की प्राप्ति कर ली, आत्मा ब्रह्म है तो ब्रह्म पद की प्राप्ति कराने वाले ज्ञान के वास्ते रात दिन क्यों पचता है, यही चीज जो घर में है वो ही हाट में मिलना है। ब्रह्म होकर ब्रह्म पद की प्राप्ति करना ही काली त्रिया नार को ब्याहना है। वेद कहते है कि करमो का त्याग करके भजन कर उलट याने वापिस ब्रह्म में समा जावो, तो म:फ: है कि पहले भी वहां से आया था तो अब क्यों नहीं आवेगा। आना ही पडेगा।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (६) 卐

संतो गुरु भक्ता नहीं कोई। सुरगुण निरगुण दोय भक्त अे, मात पिता की होई।। टेर।।
राजा रंक नार काहा पुरूषा, हिन्दू तूरक मिल दोई।
मात पिता का सब अगवाणी, ज्ञानी ध्यानी लोई।। १।।
हद में ज्ञान ध्यान बिध सारी, सो मात पिता की सेवा।
बेहद माहे समाधी लागे, जहां पिता निरंजण देवा।। २।।
ईनकूं गावे ईनकूं ध्यावे, इनका शिवरण होई।
जो नर समझ करने आगे, तत्त पिछाणे कोई।। ३।।

सुरगुण छाड तजे निरगुण कूं, नेः अँच्छर कोई पावे।
ओऊं सोऊं तजर अजपो, पिछम घाट जन आवे।। ४।।
हंसो चढे पटक सब माया, नेः अँच्छर संग होई।
मणिया सेंग ईकीसूं फोडे, चडे शिखर कहूं तोई।। ५।।
अला पिंगला दोनुं जागे, मेरूं डण्ड सूं भाई।
सुखमणा चले शीष ऊपर होय, मिले त्रिकुटी आई।। ६।।
सतस्वरूप शब्द के मांही, आठ पोहोर जन देखे।
रूप न रंग बरण कुछ नांही, देखत अन्त बसेखे।। ७।।
तत्त कहे सोई पण ऊला, ज्ञान दिष्ट सूं जोवे।
आनन्द पद ज्यों ज्ञान बिन घट में, अखण्ड रात दिन होवे।। ८।।
नव तत लिंग शरीर कहिजे, सो नहीं इण संग चाले।
आत्म पांच तत्त नाभ में, बिछडी त्रगुटी में नव पाले।। ९।।
आनन्द पद कूं हंस पहुंचे, नेः अँच्छर संग होई।
पूरब घाट चढे सो अँच्छर, ईखर शब्द कहूं तोई।। १०।।
ईखर शब्द संग जे जन चढिया, दशवें द्वार लग जावे।
दशवों द्वार न फूटे वां सूं, जब फिर पाछा आवे।। ११।।
ईखर शब्द संग नव तत्त चाले, माया सरूपी होई।
नेः अँच्छर ओ सत सरूपी, यो द्वारो दे खोई।। १२।।
दशवें द्वार परे पद आनन्द, सो सतगुरु पद जांणो।
दशवें द्वार मांही सब बांता, माया ब्रह्म पिछाणो।। १३।।
मात पिता हंस का होवे, माया ब्रह्म कहूं तोई।
आनन्द पद सतगुरु सो कहिये, समरथ नेः अँच्छर सो होई।। १४।।
केवल बीज शब्द ओ कहिये, सो बाहर सूं आवे।
घट में नांव तिको सो माया, तांको मूल कहावे।। १५।।
घट में नांव राम सो कहिये, जिण संग जे गत पावे।
सो मात पिता को छाड जगत में, गुरु शरणे क्यों जावे।। १६।।
कह सुखराम ज्ञानी सब भूलो, ज्यां में न्याव न कोई।
निरगुण ब्रह्म पिता हंसन को, गुरु ठेरायो जाई।। १७।।

संतो से फः है कि गुरु पद की भक्ति करने वाले कोई नहीं है। सुरगुण याने वाणी के आधार से, निरगुण याने सूरत के द्वारा शब्द ब्रह्म की भक्ति की, ये दोनो भक्ति माता पिता की याने माया ब्रह्म की है। राजा क्या रंक याने गरीब, क्या स्त्री पुरूष, हिन्दू व मुसलमान दोनो ज्ञान करने वाले ज्ञानी व ध्यान करने वाले ध्यानी, सब माया ब्रह्म की भक्ति करते है। हद में याने त्रिकुटी के नीचे शुभ करम शिमरण मन से ज्ञान व मन से ध्यान तक का साधन माया ब्रह्म का है। बेहद याने त्रिकुटी के ऊपर जो समाधि लगती है वह ब्रह्म की है। इनका ज्ञान करते है इनका ध्यान करते है इनका सिमरण करते है। जो मनुष्य समझकर तत याने ब्रह्म पद की, ब्रह्म का निज नाव याने सत नाम की

पिछाण करते है, बाणी का सिमरण कर, बाणी के शिमरण से भी अलग होकर सूरत के द्वारा शब्द का ध्यान कर, सूरत के ध्यान से भी अलग होकर ने:अँच्छर याने सतशब्द की प्राप्ति करते है। ओऊं सोऊं में सतगुरु विधि से जप कर अजपा याने जो शब्द जागृत होता है, उसे कहते है। अजपा प्राप्त कर उसके साथ पिछम घाट याने बंकनाल में उलटकर पिछम घाट जाना है। हंस याने अपनी चेतनता माया के पद से अलग होकर ने: अँच्छर याने सतशब्द के साथ होकर ईकीस स्वर्ग को छेदन कर ऊपर चढता है। अला पिंगला दोनो मेरू याने यमराज के स्थान से जागृत होती है। सुखमणा मेरू से सिर ऊपर होकर आती है, त्रिकुटी में मिल जाती है। सतस्वरूप का पद शब्द में है, जो जन के आठ पोहोर के ध्यान से प्राप्त होता है। उस पद का अनुभव होते हुये भी वहां रूप रंग वरण कुछ नहीं दिखता, ऐसी विशेष बात है जो ब्रह्म को ज्ञान दृष्टि से देखते है। वह पद ऊली तरफ का है। आ: पद विज्ञान याने दिव्य दृष्टि से रात दिन अखण्ड अनुभव होता है। नव तत लिंग शरीर है वह इसके साथ नहीं जाता। शब्द नाभी में आता है वह आगे बढने पर चेतनता पांच तत्व के शरीर से अलग हो जाती है। त्रिकुटी में दो पांख के कंवल से अनन्त पांख के कंवल तक याने पारब्रह्म तक पहुंचने पर चित, मन, बुद्धि, अहंकार व पांचो प्राणो। इस प्रकार नव तत लिंग शरीर का साथ व के: पद में लिंग शरीर नहीं है। आ: पद में हंस याने चेतनता ने: अँच्छर में लय होकर सतशब्द आ: पद में लय हो जाता है। पूरब याने संखनाल के रास्ते जो चढते है वह अक्षर ब्रह्म याने होणकाल ब्रह्म का है। संखनाल के रास्ते अक्षर ब्रह्म के साथ चढने वाले जन दशवे द्वार ब्रह्मण्ड में बजरपोल व हजार पांख के कंवल तक जाते है। बजरपोल से आगे नहीं जा सकते, वापिस आ जाते है, उनका आवागमन नहीं मिटता। अक्षर ब्रह्म के शब्द के साथ नव तत्त लिंग शरीर रहता है। यानि चित, मन, बुद्धि, अहंकार, पांच प्राणों से चेतन अलग नहीं हो सकता, माया के साथ रहता है। ने: अँच्छर जो सतशब्द है, वह सतस्वरूप का है, इसलिये दशवे द्वार को खोल देता है। दशवें द्वार के आगे आ: पद है उसको सतगुरु पद कहते है। दशवें द्वार के अन्दर जो होता है वह सब माया ब्रह्म के पद में होता है। हंसो की उत्पति माया ब्रह्म के पद से है इसलिये माया ब्रह्म हंसो के माता पिता है। आ: पद सतगुरु पद है वह समरथ ने: अँच्छर याने सतशब्द है। के: पद आ: पद की प्राप्ति कराने वाला यह सतशब्द है, जो शरीर के साथ चेतन के पद में नहीं है। शरीर चेतन से अलग निरंजण निराकार चेतन पद है इसको ब्रह्म बैराट कहते है। सो सतगुरु विधि से भजन करने पर कंठ कंवल पर सतशब्द प्रगट होता है। शरीर में चेतन पद में जितने नांव है, वह सब माया के पद में चेतन में है। जिससे इसको माया का मूल कहा है। शरीर के साथ चेतन में जो नांव है वो वाणी मन विचारो के आधार पर है व सूरत के आधार पर है। इन आधार के नावों द्वारा उस पद की प्राप्ति हो जाती तो जगत में मुक्ति माता पिता से हो जाती तो उसको छोडकर गुरू की शरण में क्यों जाते। ज्ञानी लोग जो निरंजण निराकार सर्व व्यापक जो पांच तत्वो के साथ चेतन का आधार है उस पद को गुरु पद मानते है परन्तु यह गुरु पद नहीं है। ने: अँच्छर सतशब्द रात दिन अखण्ड अधर अनुभव होता है वो के: पद आ: पद है, उसे गुरु पद कहते है। वो ज्ञान से नहीं विज्ञान से प्राप्त होता है।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (७) 卐

साधो भाई आनन्द पद गुरु होई। राज जोग सतगुरु की सेवा, और जोग कुल होई।। टेर।।
पूरण ब्रह्म पिता है मेरा, अंछा है मारी बाई।
इण सुं भोग करे बस हुवा, जब या कहाणी माई।। १।।
भेद बिना ज्ञानी सो जग में, सब अेकी कर जाणे।
माता पिता गुरु का गुण न्यारा, बुध बिन नांय पिछाणे।। २।।
मात पिता का मैं अगवाणी, ज्यूं जग सपूत कहायो।
नाना विध पदी सो देखी, आनन्द पद नहीं पायो।। ३।।
नुगरो रयो जुगे जुग हंसो, मोख कोण विध पावे।
सुरगुण निरगुण अे दोय भक्ति, कुल का धरम कहावे।। ४।।
सुरगुण निरगुण दोनुं छूटी, नाम कला जब जागी।
अब बैराग अपज्यो मोने, तब या सुजण लागी।। ५।।
सतगुरु शरण हंस अब आयो, अब सुगरो नर होई।
मात पिता दोनुं को तारूं, जे गम पूछे मोई।। ६।।
पूरण ब्रह्म पिता हमारा, अंछया मात कहावे।
अब दोनुं को मोख पहुंचावूं, जे मोई शरणे आवे।। ७।।
तीन लोक में जे नर नारी, सब कुल मेरो होई।
मां र बाप सेत सब नर नारी, जे गुरु धरम पकडे कोई।। ८।।
कह सुखराम ज्ञान ओ मेरो, सुण कर सब मुरझावे।
ज्यूं जुग मांय व्हे बैरागी, जब घर सब दुख पावे।। ९।।

साधको से फ: है कि आ: पद है वो गुरु पद है। राज जोग की भक्ति सतगुरु की भक्ति है, दूसरे योगों की भक्ति माया ब्रह्म की भक्ति है। पूरण ब्रह्म पिता है अंछा शक्ति वो हमारी बाई है। ब्रह्म माया का भोग भोगता है इसलिये उसे माता कहा है। बिना भेद के ज्ञानी वो माया व ब्रह्म के पद को एक ही समझते है। माता पिता व गुरु के गुण अलग अलग है, बिना बुद्धि के नहीं जानते। माया ब्रह्म की भक्ति मैंने अनन्त जन्मो तक की, यही सपूत बेटे की जैसे है। उससे तीन लोको में अनेक तरह की पदवी प्राप्त हो गई पर आ: पद की प्राप्ति नहीं हुई। आ: पद गुरु पद है, उसकी प्राप्ति नहीं होती तब तक हंस नुगरा है। आ: पद की प्राप्ति नहीं होना ही मोक्ष नहीं होना है। सुरगुण निरगुण की भक्ति माया ब्रह्म की याने कुल की माता पिता की है। सुरगुण याने बांणी के आधार से, निरगुण याने श्वांस के आधार से भजन करने पर, पारब्रह्म परमात्मा के निज नांव की जागृति हो जाती है, तब आत्मचेतन के आधार पर अलग भक्ति होने लग जाती है, यही सुरगुण निरगुण से छूटना याने अलग होना है। निज नांव की जागृति को ही बैराग उत्पन्न होना कहते है। सतशब्द की भक्ति होना ही हंसो का सतगुरु शरण होना है, जब हंस सुगरा होता है। माया ब्रह्म दोनो को तार देता हूं। अगर वो सत स्वरूप आ: पद का ज्ञान धारण करे तो, यह जे गम पूछे मोई है। पूरण ब्रह्म पिता है, अंछया शक्ति माता है, वो यह सतगुरु का ज्ञान धारण करे तो मोक्ष याने पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति हो सकती है, यही मोई शरण आना है। तीन लोक में जितने भी स्त्री पुरूष है वो सब मेरा ही कुल है। चाहे

माया ब्रह्म सहित सब स्त्री पुरूष हो, यदि वे के: पद आ: पद का ज्ञान धारण करे, यही गुरु धर्म पकडना है। म:फ: है कि ऐसे मेरा यह ज्ञान सुण सब सकुचाते है जैसे घर में कोई भी बैरागी होवे तो सब दुख पाते है।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (८) 卐

भाई भेदी हुवे सोई जांणे, दुजो नहीं जांणे रे भाई।
पारख हुवे सोई परखे, दूजो क्या परखे रे भाई।। टेर।।
मुख सुं शकल संत सो कह गया, माया जीते गाजी।
धिरग धिरग ऊण अकल मत कूं, पर्चा हुवो हुवे राजी।। १।।
माया मार लिया अध बीचे, ज्यां कूं जहान सरावे।
ऐसी खबर नहीं अे कच्चा, कायर तके लुटावे।। २।।
रिद्ध सिद्ध मिल्या मुक्त जे होवे, मूवा जिवाया सोई।
तो शक्ति माहे काहा कहो ओगुण, मोख न पावे कोई।। ३।।
कह सुखराम बन कूं जाता, मेहेरी चेन बतावे।
ई ऊं रिध सिध सुण सब परचा, घेर घट में लावे।। ४।।

जिन्होंने सतगुरु विधि से भजन करके के: पद आ: पद की प्राप्ति की है वो ही इस भेद को जानते है दूसरे नहीं जानते। जो परीक्षा कर जानता है, वही परीक्षा करता है, दूसरे कैसे कर सकते है। सभी संत यह उपदेश देते है कि जो माया को जीतता है वो बडा है, परन्तु धिक्कार है उनकी अकल को जो परचा देने वालो व करामात बताने वालो को बडा समझते है, परचे माया के पद में होते है, परचा देना ही माया के द्वारा अध बीच में मार लेना है। सारा संसार परचा देने वालों, करामात बताने वालो की सराहना करते है, इनको इतना भी ज्ञान नहीं है, जो परचो को प्रधानता देते है। परचा देना ही कायरता से अध बिच लूटना है। रिधी सिधी मिलने से मरे हुये को जिलाने से मोक्ष हो जाता तो शक्ति में क्या अवगुण है, जो मोक्ष की प्राप्ति नहीं कर सकती। म:फ: है कि जिस तरह किसी को बैराग उत्पन्न होने पर घर छोडकर बन जाता है तो उसकी स्त्री उसको कई चैन बताकर रोकना चाहती है। ऐसे ही रिद्धि सिद्धि के: पद आ: पद की प्राप्ति नहीं होने देती है।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (९) 卐

सुण ज्ञानी बचन हमारा रे, सुण ज्ञानी वचन हमारा।
रिद्ध सिद्ध तिका संत ले धारी, से नहीं उतरे पारा।। टेर।।
सतस्वरूप की सता बिना रे, माया जांण ने देवे।
चौसठ अंग अन्त है जीणा, ज्यूं त्यूं कर गह लेवे।। १।।
माया ब्रह्म की दासी कहावे, बोहो बिध हाजिर होई।
सतस्वरूप में जांण न पावे, नहीं वो चावे कोई।। २।।
निरगुण भक्ति करे जन कोई, जहां माया चल आवे।
कईयक पकड़ करे वश जन कूं, कईयक वश हो जावे।। ३।।

कह सुखराम बन कूं जाता, मेहेरी चेन बतावे।
यूं रिध सिध सकल सोई परचा, घेर घट में लावे।। ४।।

ज्ञानियो से फ: है कि हमारे वचन सुण लो, जिन संतो ने रिद्धि सिद्धि धारण की है उन्होंने मोक्ष की प्राप्ति नहीं की। सतस्वरूप की सता जिसको सतशब्द ने: अँच्छर कहते है उसके बिना माया के पद से अलग नहीं हो सकते, यही माया का नहीं जाणे देना है। आठ अंग चौसठ लक्षण बहुत झीणे, ये माया के पद में धारण होते है, इनके धारण करने से मोक्ष नहीं होती। यही ज्यूं त्यूं कर गह लेना है। ब्रह्म की भक्ति करने से रिद्धि सिद्धि जागृत हो जाती है, यही माया का दासी कहलाना व बहोत विधि से हाजिर होना है। सतसरूप के पद में माया नहीं जा सकती, सतसरूप की भक्ति करने वाले रिद्धि सिद्धि को प्रधानता नहीं देते, यही नहीं चाहना है। निरगुण भक्ति करते है, वहां माया के चैन होते है। कोई साधक तो माया को वश में कर लेते है और कई माया के वश में हो जाते है। म:फ: है कि बैराग धारण कर कोई पुरूष घर छोड कर जाता है तो उसको स्त्री कई प्रकार के चैन बताकर रोकना चाहती है, इसी तरह माया भी सतसरूप की भक्ति करने वालो को रिद्धि सिद्धि परचा देकर रोकना चाहती है।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (१०) 卐

राजा ऐसा भेख हमारा। भेदी जके भली विध जांणे, करमी लखे न सारा।
राम रटे परमेश्वर प्यारा, रह करमां सूं न्यारा।। टेर।।
कफनी हमे क्षमा की पहरी, ज्ञान गूदडी ओढी।
चोलो अजब दया को गल में, कुबध कामणी छोडी।। १।।
रमता संग रमूं जग मांही, इण मन कूं शिष कीना।
सतशब्द सो गुरु हमारा, तत्त तिलक शिर दीना।। २।।
पोथी पाठ वेद सब गीता, अणभै का पट खोलूं।
द्वादश मंत्र गायत्री मेरे, सतशब्द मुख बोलूं।। ३।।
मुद्रा कंठी पावडी अलफी, भेद ज्ञान की पहरी।
सांस उसांस अजप्पो घट में, निरगुण माला फेरी।। ४।।
धीरज धरण लंगोटी जरणा, आडबंद मत मेरी।
या देह बीण तांत सब नाडी, रागा अनहद घेरी।। ५।।
गिगन मंडल में मंडी हमारी, त्रिगुटी सेवा पूजा।
सतशब्द जोत के आगे, और देव नहीं दूजा।। ६।।
अला पिंगला करे आरती, अनहद झालर बाजे।
चित, मन, सूरत, हजूरी, चाकर, गिगन शब्द धुन गाजे।। ७।।
देहरो भेष शकल सो माया, असत सत नहीं कोई।
जे कोई भेद शब्द को साजे, मोख मिलेगा सोई।। ८।।
कह सुखराम भेष यो मेरो, जे कोई संत बसावे।
तीनूं ताप तोड कर हंसो, अमर लोक में जावे।। ९।।

महाराज राजा चन्दूलाल को कहते है कि हे राजा हमारा भेष ऐसा है जिसे परमात्मा की प्राप्ति व भजन के भेदी है वही भली प्रकार से जानते है। करमी याने शुभ अशुभ करणियां करने वाले मेरे को सब नहीं जानते है। जो सतगुरु विधि से राम रटता है वह परमेश्वर का प्यारा है। ज्ञान रूपी गुदडी ओढ रखी है और मैंने गले में दया का अजब चोला पहन रखा है तथा कुबुद्धि रूपी कामणियो को मैंने छोड दिया है। श्वांसा चल रही है उस श्वांस ऊसांस के साथ तन मन से भजन करना व एक श्वांसा को भी खाली नहीं जाने देना ही रमता संग रमु जुग मांही। इस मन को शिष्य बना रखा है याने मन आत्मा की आज्ञा में रहता है, जो परमात्मा सत है वह निरंजण निराकार ब्रह्म सत चेतन है। वही गुरु है। तत तिलक याने सतशब्द ने: अँच्छर पारब्रह्म परमात्मा का निज नाम है। उसका अखण्ड अनुभव होना ही तत्त तिलक शिर दीना है। केवल पद का अनुभव करके अणभै ग्यान की सिरजणहार से परवानगी लेकर आना ही बेद व गीता सबका पाठ है व अणभै का पट खोलना है। मुंह से सतशब्द का ज्ञान देना ही द्वादश मंत्र (ओम नमो: भगवते वासु देवाय)व गायत्री मंत्र है। मत ज्ञान, श्रुत ज्ञान, मन परचे ज्ञान, अवध ज्ञान, केवल ज्ञान, इन पांचो के भेद को जानना ही मुद्रा कंठी पावडी अलफी पहनना है। श्वांस उसांस में रकार मकार का भजन करना व अजप्पा जागृत होकर अखण्ड अनुभव होना ही निर्गुण माला फेरना है। पृथ्वी के समान धीरज धारण कर रखा है सहनशीलता की लंगोटी लगा रखी है, सतशब्द के ज्ञान के सिवाय मेरी बुद्धि दूसरी तरफ नहीं जाती है, यही आड बंद मत मेरी है। मेरा शरीर बीणा है, नाडिया तार है। बिना किये ही कई तरह की अनहद की रागे हो रही है। ब्रह्मण्ड व पार ब्रह्म से ऊपर केवल पद में सतशब्द का अनुभव होना ही गिगन मंडल में ही मंडी हमारी है। त्रिकुटी में शब्द आने पर कई प्रकार की ध्वनियो का होना ही त्रिकुटी सेवा पूजा है। सतशब्द का निरंजण निराकार चेतन में अनुभव हो रहा है। यही सत का शब्द जोत के आगे है। इसके अलावा मेरे कोई देवता नहीं है। त्रिकुटी में शब्द का अनुभव होना ही अला पिंगला का आरती करना है। बिना किये ही जो आवाजे आ रही है वो ही अनहद झालर बजना है। चित व मन लगाकर सूरत के द्वारा शब्द का अनुभव करना ही चित मन सूरत हजूरी चाकर है। गिगन में सतशब्द की धुनि का अनुभव होना ही गिगन शब्द धुन गाजे है। आत्मा ने चौरासी लाख योनियो के शरीर धारण कर रखे है। यह सब माया का भेष है। यह असत है यह सत्य नहीं है। आत्मा जो इस शरीर भेष से अलग होकर सतशब्द में लय हो जाती है। यह सतशब्द का भेष धारण करना है। आनन्द पद में लय होना ही मोक्ष की प्राप्ति करना है। म:फ: है कि यह भेष जो संत धारण करेंगे वे हंस तीनो तापो (आदि दैविक, आदि भौतिक व आध्यात्मिक) को तोडकर अमर लोक में पहुंचेंगे।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (११) 卐

म्हारो ने संदेशो साहिब सांभलो, बिनाजी सुणियां रो नहीं है सूल।
बिरहन विचारी तन कूं छाडसी, रही उरध मुख झूल।। टेर।।
बरस अठारा हर बिना काढिया, म्हारे आस रही घर मांय।

अब तो जोगण हर होय जावसूं, बसतर देऊं जी बगाय।। १ ।।
काहे तो ढोल्यो हर नहीं घालता, भेद न देता जी मोय।
बिना तो दीठी साहिब चीज रो, म्हाने दुख दालद नहीं होय।। २ ।।
शब्दां कलेजो रामजी बींधियो, म्हारे करोत बहे ऊर मांय।
नख चख साले रामजी निश दिनां, मोसूं हर बिना रहयो नहीं जाय।। ३ ।।
अब तो जग में बोहर नहीं आवडे, आप मिलोनी आय।
इण तो अपराधी दुष्टि जीव रो, जलम अकारथ जाय।। ४ ।।
एकण महल दूजे चढी, तीजे खडी छूंजी आंण।
बजर दरवाजा हर नहीं ऊघडे, रहया करारा जी तांण।। ५ ।।
चेन तमाशा हर दिखलाय के, मत डेहकावो जी मोय।
किरपा करोनी जन पर दयालजी, मोय दरसण दो पट खोय।। ६ ।।
जन सुखदेवजी हरजी सूं बिणती, सुणज्यो जी सूरत लगाय।
अमरलोक जी साहिब आपरो, म्हाने घणो जी देखण रो चाव।। ७ ।।

आत्मा परमात्मा से प्रार्थना कर रही है कि मेरा सन्देशा सुणो। बिना सुणे मेरा दुख कैसे मिटेगा। बिरहन शरीर को छोडेगी, वह ऊंधे मुंह झूलेगी। परमात्मा की प्राप्ति के बिना अठारह बरस निकाल दिये, शरीर में ही मेरी आशा लगी रही याने माया ब्रह्म के पसारे में आशा करना ही आस रही घर मांय है। हे परमात्मा अब तो करमो से अलग होकर बैरागी हो जाऊंगी। वस्तर याने शरीर (स्थूल सूक्ष्म कारण महाकारण) से व पारब्रह्म पद से अलग होना ही केवल पद आनन्द पद में मिलना है। हे परमात्मा यदि आप मुझे ढोल्या याने मनुष्य शरीर नहीं देते व शब्द का भेद नहीं देते तो इस प्रकार बिना देखी हुई वस्तु का हे परमात्मा मुझे दुख व पश्चाताप नहीं होता। अब शब्द से मेरा कलेजा बिंद गया है व मेरे हृदय में करोत बहे जैसे दर्द होने लगा है। मेरे नख से चख तक रात दिन दरद हो रहा है। मेरे से परमात्मा के बिना अब नहीं रहा जाता है। शरीर में सब जगह शब्द का अनुभव नहीं होना ही दरद होना है तथा सतशब्द के अनुभव बिना एक क्षण भी रहना हर बिना रहयो नहीं जाय है। हे परमात्मा अब संसार में याने माया ब्रह्म के पसारे में मुझे नहीं सुहाता है। इसलिये आप आकर मिलो। इस अपराधी व दुष्टी जीव का जन्म परमात्मा के मिले बिना बेकार जा रहा है। एक तो खण्ड में दूसरी पिण्ड में चढी व तीसरे ब्रह्मण्ड पर आकर खडी हुई किन्तु बजरपोल का दरवाजा बहुत मजबूत लगा हुआ है। जो मुझ से नहीं खुलता है। परमात्मा कई माया के चैन तमाशे बताकर मुझे मत बहकाओ। हे दयालु आप मेरे पर कृपा करो व मुझे पट खोलकर दर्शण दो। म:फ: है कि हे परमात्मा मेरी प्रार्थना को ध्यान से सुणो। आत्मा कह रही है कि मुझे आपके अमर लोक को देखने की बहुत इच्छा हो रही है। केवल पद आनन्द पद ही अमर लोक है।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (१२) 卐

दिया मैं हेला सुणो शकल नर नार, दिया मैं हेला।। टेर।।
सूरातन जब प्रगटे रे, सिंधु दिरावे कोय।

यूं जन गढ चढ बोलिया रे, नांव ऊदे घट होय।। १।।
पीव आज अब बिछडे रे, जां सत आवे जांण।
जुग आडा दिन बोहो पडया रे, जा मुख शरम न कांण।। २।।
जिनका सतगुरु शूरवां रे, ऊलट चढया अशमान।
वां शिष के तन जागसी, बंदा नांव कला घट आंण।। ३।।
संत गिगन चढ बोलिया रे, वे तो गया है सिधाय।
पीव मुवा दिन बोहो हुवा, बंदा सत आवे किम मांय।। ४।।
कह सुखदेव यो भेद है रे, जे समझे नर कोय।
नांव तबे घट प्रगटे रे, वे जन सेदेह होय।। ५।।

म: का स्त्री पुरूषो को उपदेश देना ही हेला देना है। मनुष्य में जब सुरापा प्रगट होता है जब सिंधु राग गाई जाती है। सताधारी सतगुरु के मौजूद रहने पर नांव की घट में जागृति होती है। यही गढचढ कर बोलना है। पति का बिछोह याने शरीरान्त होने के समाचार मिलते ही सती के सत प्रगट हो जाता है, जिसको शरीर छोडे हुये बहुत दिन हो जाते है तो सत प्रकट नहीं होता। जिनके अणभै वाणी बनाने वाले सतगुरु शूरवीर है और जिन्होंने उलटकर परमपद की प्राप्ति की है, उनके अणभै ग्यान धारण करने पर घट में सतशब्द की जागृति होती है। जिन संतो ने जीते जी परमपद की प्राप्ति की है वे तो धाम सिधार गये, इसी तरह पति का शरीरान्त हुये ज्यादा समय हो गया है तो सत कैसे प्रकट हो सकता है। म:फ: है कि यही भेद है जो मुनष्य इसे समझे, निज नाम की जागृति जब होती है जब वो संत सेदेह मौजूद हो। याने ऐसे केवली भगवंत नहीं और उनके अणभै ग्यान में बिधी लिखी है, उस तरीके पर करने से सता आती है तो देहे उनका ग्यान है।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (१३) 卐

संतो यो दुख किण सूं कहिये। ऊंडी मार मरम तन मांही, आठ पोहोर किम सहिये।। टेर।।
किण ने कहूं रे दरद मेरा मन को, भेदू मिले यन कोई।
यो संसार भेख सब ढूंढियो, सब माया का होई।। १।।
जुग से कयां सरे नहीं कोई, नांव भेद नहीं जांणे।
हांसी करे शकल सो दुनियां, फिर फिर निंदया ठांणे।। २।।
बिना सुण आग शकल तन दाजे, बिन मारयो मन रोवे।
कह सुखराम इस्या कोई जग में, मेरा दुख को खोवे।। ३।।

संतो से फ: है कि इस दुख को कैसे सहन करूं। चौबीस घन्टे जो परमात्मा की प्राप्ति की इच्छा इस शरीर में लग रही है, यही ऊंडी मार लगना है। इसको मैं आठ पोहर कैसे सहन करूं। मेरे मन के विचार मैं किन से कहूं। परमात्मा की प्राप्ति का भेद जानने वाला कोई नहीं मिलता है। सारे संसार से व भेख धारियो से जानकारी की है। सब माया के ज्ञान में लगे हुये है। जगत को कहने से काम नहीं चलता, जगत वाले निज नांव का भेद नहीं जानते। इस बात को सुनकर सारा संसार हंसी करता है व निंदा करता है। बिना ही अग्नि के सारा शरीर जला जा रहा है। बिना मारे ही मन रो रहा है। म:फ: है कि ऐसा कोई जगत में है जो मेरे दुख को मिटाकर परमात्मा की प्राप्ति का भेद बता देवे।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (१४) 卐

काचे मन बैराग त्याग, भोले मत किज्यो। घर माया के बीच, मन पचणे ऊर दिजो।। टेर।।
ज्यूं फल बेली संग, बाल माई संग जोय। तरवर दोली बाड, पाये सेवा हुये मोय।। १।।
वैसा हुय तब त्यागियो, पांच न बोले काय। बास चले सुखराम कह, परमल दिशु दिश जाय।। २।।

तब तक सच्चा बैराग उत्पन्न न हो जब तक घर का त्याग नहीं करना चाहिये। गृहस्थ में रहते हुये गृहस्थ के सुख दुख का अनुभव करना ही माया के साथ पचना है। जैसे बेल के फल लगा हुवा रहता है। ऐसे ही बालक माता के साथ रहता है। जैसे वृक्ष के चारो तरफ बाड लगी हो तो उसकी रक्षा होती रहती है। जब पांचो ईन्द्रिया अपना भोग नहीं मांगती हो तब ही घर का त्याग करना चाहिये। उन्ही संतो की महिमा चारो तरफ होती है।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (१५) 卐

तुम बिना मेरा नांह जुग में, भावे मारर तार। प्रभुजी हो सुणज्यो, हो मेरी पुकार।। टेर।।
नेणा नींद न संच रे हो, अंतर ऊंडी मार। शब्द कलेजे छेद पडियो, बेदन बूझण हार।। १।।
वेद जोशी रोग नां जाणे, शरण तुमारी आवियो, दुजा सब त्याग्या।
सब जग दिशे थोथरो, तुम सूं चित लाग्या।। २।।
भावे बन में राखज्यो, भावे गरह जागा। भावे करज्यो अकेलो, भावे बोहो सागा।। ३।।

आत्मा परमात्मा से प्रार्थना कर रही है कि जगत में आपके बिना मेरा कोई नहीं है। चाहे आप मुझे मारो व तारो, मेरी प्रार्थना सुणो, यही सुणज्यो मेरी पुकार है। आंखो में नींद नहीं आती, अन्तर में आपकी प्राप्ति नहीं होने से बहुत दुख है। हृदय में यही दुख हो रहा है कि परमात्मा की प्राप्ति नहीं होने पर नरक व चौरासी का दुख भोगना पडेगा। इस दुख को कोई नहीं जानता है। वेद व जोशी याने झाडा झपटे देने वाले मेरे रोग को नहीं जानते। मैं तो सबको छोडकर आपकी शरण में आया हूं। सारा जगत सुना दिख रहा है। मेरा चित आप में लग रहा है। चाहे आप घर में रखो या बन में रखो, चाहे आप अकेला कर दो या बहोत परिवार के साथ रखो।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (१६) 卐

संतो भाई करो हो केसरिया आई। अेली साट धबोला खाय ने, जावोला जन्म गमाई।। टेर।।
राम नाम की केशर गाली, चौडे धरी लाय।
शब्द हांक ढंढोरा फेरूं, सुणो शूर जग मांय।। १।।
पाछे कबिलो जुग जुग जीवे, नांव रेह जुग मांही।
परियां बाट सूर की देखे, रेही रण दल छाही।। २।।
चोरासी में जहां तहां फिरियो, किवी राम सहाय।
अबके मोसर आंण बणयो है, तन मन सुंपो लाय।। ३।।
दाद जुग में अवस पासो, लेसी राम बधाय।
ब्रह्म लोक का पटा देवे, जीवत या जुग मांय।। ४।।
जन सुखराम किया है पेली, केशरिया जुग मांय।

मेरे संग सो सोई आज्यो, राम मिलण होय चाय।। ५।।

संतो से फ: है कि केशरिया बाना याने शूरवीरता धारण करो। परमात्मा की प्राप्ति नहीं होगी तो मनुष्य जन्म को व्यर्थ गमा दोगे। सतगुरु विधि से राम नाम का भजन करने के लिये सबको कह रहा हूं यही चौडे लाकर धरना है। जगत में शूरवीरता धारण कर भजन करने वाले हो, वे सब सुणो यही ढिंढोरा फेरना है। पीछे जुगानजुग में शूरवीरों की व संतो की महिमा रहती है, यही नांव जगत में रहना है। परियां लडाई के मैदान में छाई रहती है और वे शूरवीरों की इंतजार करती है। चौरासी में जहां भी रहा वहां रामजी ने तुम्हारी रक्षा की है। अब मनुष्य जन्म मिला है। तन मन से भक्ति कर लो। इस संसार में भी रामजी तुम्हारी रक्षा करेंगे व कृपा करके जीतेजी सतशब्द की जागृति होना ही ब्रह्म लोक का पटा देना व बधा कर लेना है। म:फ: है कि पहले भी सतशब्द की भक्ति करने वाले हुये है और अब भी मेरे ज्ञान को वही धारण करेंगे जिन्हें रामजी की प्राप्ति की ईच्छा है।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (१७) 卐

संतो भाई सो सत सूर बखाण। घाव झटको सन्मुख झेल, बद बद पोरस आंण।। टेर।।
शब्द सिंधू बजे झूंझावू, सुणे सो हरिजन कान।
भार अठारे रूम सारे, खडा हुवे सब जान।। १।।
कांच चूडी यो तन भांजे, जुग सब झूंठो जांण।
आड अटक ना सवण माने, जोतिष झूंठो जांण।। २।।
तीरथ बरत मूरत पूजा, परहर जुग सब अंग।
जन सुखराम सोई जन सूरा, जीत चले जग जंग।। ३।।

संतो से फ: है कि वो ही सच्चा शूरवीर है जो सामने से वार झेलता है और बढ बढकर दूसरो पर वार करता है। भक्ति करने वालों के जो शब्द की ध्वनि हो रही है वो ही झूंझावू बाजा बजना व भक्ति करने वाले अपने कानो से शब्द सुनते रहते है। जैसे शूरवीर के अठारा भार रोमावली खडी हो जाती है, वैसे ही भजन करने वालो के रग रग रोम रोम में शब्द का अनुभव होता है। शरीर को कांच की चूडी की तरह मिटता हुवा समझे व सब जगत को झूंठा जाणे व किसी तरह का आड अटकाव व सूण जोतिष आदि को न मान कर तीर्थ व्रत मूर्ति पूजा व जगत के सब अंगो को छोड दे। म:फ: है कि वही जन शूरवीर है जो जगत में जंग जीतकर जाते है याने परमपद की प्राप्ति करते है।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (१८) 卐

संतो काल शिर भारी है। ओ सब कुं खाया जाय, छाडो करम ऊपाय।। टेर।।
ब्रह्म बाग में मैं रमूं रे, सुन्न शिखर पर जाय।
गढ चढ हेला देत हूं रे, बंधी जगत के मांय।। १।।
सतगुरु शरणो लीजिये रे, ब्रह्म ज्ञान सुण आय।
काल डरे करतार सूं रे, और शकल कूं खाय।। २।।

ब्रह्मा विष्णु महेश कूं रे, चांद सूर कुंई खाय।
पवन पाणी इन्द्र कूं रे, धर आकाश मिटाय।। ३।।
पूरण परमानन्द की रे, सरण गहो तुम आय।
काया में करतार सूं रे, मिलो रेण दिन ध्याय।। ४।।
मानव देह तन पावणो रे, सके तो लेखे लाय।
सुखदेव हेला देत है रे, पीछे सरे नी काय।। ५।।

संतो से फ: है कि सिर पर काल बडो बली है व सब को खाये जा रहा है, इसलिये कर्मो के साधन को छोडो। ब्रह्मण्ड पारब्रह्म में दशवे द्वार से ऊपर सतशब्द का अधर अनुभव होना ही सुन्न शिखर पर जाकर ब्रह्म में रमना है। के: पद आ: पद की प्राप्ति करना ही गढ पर चढकर सारे जगत में हेला देना है। सतगुरु का अणभै ज्ञान धारण करके सतस्वरूप आ: पद की भक्ति करो, यही ब्रह्म ज्ञान का सुनना है। काल परमात्मा से डरता है और सब को खा जाता है। काल ब्रह्मा, विष्णु, महादेव, चांद, सूरज, हवा, पानी, ईन्द्र, पृथ्वी, आकाश को समय से सबको मिटा देता है। शरीर में शब्द ब्रह्म की जागृति कर रात दिन भजन कर पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति करना ही शरण लेना है। मनुष्य शरीर स्थायी रहने वाला नहीं है। हो सके जहां तक इससे भक्ति करो। म:फ: है कि मनुष्य शरीर छूट जाने के बाद कुछ नहीं होगा।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (१९) 卐

वारी वारी पोढो राम दियाल, तूं आय तूटे विषे जंजाल।। टेर।।
प्रेम पथरणो, अेकत समता की शाल।
ज्ञान गदरो शील सीरक, पोढो राम दियाल।। १।।
वारी वारी जींवा के प्रतिपाल, सूरत कामण बाट जोवे, ध्यान ढोल्यो ढाल।
आत्म सुन्दरी बोहत राजी, पोढो राम दियाल।। २।।
छिम्या छंवरी चंवर चेतन, प्रीत पवन ढाल।
जोग निद्रा बाट देखे, पोढो राम दियाल।। ३।।
छिम्या चादर पुन: पगाणो, दया की ओढो दुशाल।
सत सिराणो सरस गीदूं, अब चांपे पांव नित पत, सब सुख जीता काल।। ४।।
दास सुखदेव शरण तुम्हारी, पोढो राम दियाल।
जीवां के प्रतिपाल, पोढो राम दियाल।। ५।।

शरीर में सतशब्द का अनुभव होना ही रामजी का पोढना है, भक्ति करने से ही जगत के विषयो व जंजाल से छुटकारा होता है। समता धारण करना ही शील का ओडना है। ज्ञान ही गदरा है। शील ही रजाई है व प्रेम ही पथरना है। सूरत रूपी स्त्री आपका ध्यान कर रही है। यही बाट जोना व ढोल्या ढालना है। परमात्मा जीवों की रक्षा करने वाले आपको धिन है धिन है। आत्मा को आनन्द आना ही आत्म सुन्दरी का बहुत राजी होना है। क्षमा ही चंवरी चिंतन ही चंवर है। प्रीत से भजन करना ही हवा करना है। सता समाधि होनी ही जोग निद्रा का बाट देखना है। क्षमा ही चादर है, पुन्न ही पैर पूछने का पगाना है। घट में दया रखना ही दुशाला ओढना है। सत नाम की

भक्ति करना ही सिर के नीचे तकिया लगाना है। हर समय आनन्द का अनुभव होना ही सब सुख का आना, पांव चापना व काल का जीतना है। म:फ: है कि मैं आपकी शरण में हूं आप ही जीवों की रक्षा करने वाले है।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (२०) 卐

जीमो सतगुरु सांचा शिरजणहार। तुम जिम्या शिष सब सुख पावे, पूरण हुवे करपाल।। टेर।।

ज्ञान कीमत शब्द चीजां, रेण रसोडे पाल।
सूरत रांधण मन हजूरी, जिमो राम दयाल।। १।।
चोखा चेतन प्रेम पुडिया, सेज सोवन थाल।
लाडू पेडा नांव निज तत, जिमो राम दयाल।। २।।
समझ नारी राख पंखी, मत चकलो ढाल।
निरत अंच्छया कवा देवे, जिमो राम दयाल।। ३।।
झरणा झारी लगन लोटो, चलु बैण बिसाल।
प्रीत नारी हाथ पूंछे, जिम्या राम दयाल।। ४।।
बेण बादल घटा उलटी, जिम मगन मतवाल।
संत डकारे बोल अणभै, जिम्या राम दयाल।। ५।।
दास सुखदेव शरण तुम्हारी, खावंद तुम प्रतिपाल।
शीत प्रसादी मोहे दिज्यो, जिमो राम दयाल।। ६।।

परमात्मा व सतगुरु से प्रार्थना कर रहे है कि आपकी पूर्ण कृपा से सब शिष्यो को सुख की प्राप्ति होती है व पूर्ण परमानन्द मिलता है। शब्द रूपी चीज का ज्ञान ही मूल्य है। ज्ञान के माफिक रहना ही रसोई पाल है। सूरत लगाकर भजन करना ही रांधना है। मन ही चाकर है यही आपकी कृपा है। चित लगा कर प्रेम से भजन करना ही चावल व पूडिये है। सहज में सरलता से भजन होना ही सोने का थाल है। आपका निज नाम ही लाडू पेडा है यही कृपा है। समझ के साथ भजन करना ही नारी का हाथ में पंखी रखना है। भक्ति में दृढता रखना ही चकला बेलन है। निरत याने अखण्ड ध्यान होना ही कवा देना है। क्षमा धारण करना ही झारी है। लग्न से भजन करना ही लोटा है। विशाल बचन बोलना ही चलु करना है। प्रीति के साथ भजन करना ही नारी का पूंछना है। बादल वचन ही, घटा उलटना है। भजन करने से प्रसन्नता होना ही मगन मतवाल है। अणभै के वचन बोलना ही संतो का डकारना है। म:फ: है कि यह दास आपकी शरण में है आप ही इसके स्वामी है। परमपद की प्राप्ति करना ही शीत प्रसादी व आपकी कृपा है।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (२१) 卐

शब्द चेतन देह चमके, ईमरत मीठी सीर, नाड नाड न्यारी।
सरब बोले जागो सहेर गंभीर, मूरली बाजे सुषमण तीर।। १।।
हिरदे हल चल नाभ गूंजे, नेणा बूंठा नीर।
छेद प्याल पिछम कूं देख्या, परस्या जम का पीर।। २।।
बंध पिछम बोहोत भारी, मन मध मीठी पीर।

खांच खेंच कबाण चढे छतियां, फाटे चुव चीर।। ३।।
अला पिंगला सुखमणा जागी, मिल तिरवेणी तीर।
प्राण उलट आद घर आये, थके बैराट शरीर।। ४।।
ध्यान लागो जोत देखी, सुषमण टपक्या हीर।
दास सुखदेव अमर घर में, पीवे ईमरत सीर।। ५।।

शब्द की जागृति का चेतन द्वारा अनुभव होना ही देह चमकना व उसका आनन्द आना ही ईमरत मीठी सीर है। सारे शरीर में नाड नाड में शब्द का अनुभव होना ही सबका बोलना है व शब्द की ध्वनियां होना ही मूरली बाजना है। प्रेम भाव से भजन करना ही हिरदे में हलचल होना है। नाभी में शब्द का गुंजार होना ही नाभ गुंजे है। विरह के साथ भजन करने से नेत्रो में पानी आना ही नेणा बूठा नीर है। शेषजी व गणेशजी के स्थानो को छेदकर पिछम में आना ही पिछम को देखना है। मेरूडण्ड पर शब्द का अनुभव होना ही परस्या जम का पीर है। पिछम में उतान पाद बंद मेरूडण्ड पर लगता है जिससे शरीर कबाण की तरह खिंचना ही छातियां फाटे चुव चीर है। उससे मन में खुशी होना ही मन मध मीठी पीर है। मेरूडण्ड से अला पिंगला चलती है, बीच में सुखमणा सिर पर होकर जाती है व त्रिकुटी में संगम हो जाता है। प्राणो व स्वांसा व शरीर से अलग होकर के: पद की प्राप्ति होना ही आद घर की प्राप्ति होना व बैराट शरीर का थकना है। शब्द का सुखमणा में ध्यान होना ही जोती का देखना है। आनन्द आना ही हीर टपकना है। म:फ: है कि आ: पद की प्राप्ति होना ही ईमरत की सीर पीना है।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (२२) 卐

संतो भाई भेव मिल्या गम आवे, परम मोख पद पावे॥ टेर॥
राम नाम सब लोय कहत है, दर्शण भेष ऊचारे।
हिकमत बिन तो राछ सुं रे, सबे पचे पच हारे॥ १॥
नित उठ दौड करत है भारी, गांव गेल नहीं जांणे।
उजड गांव तोड पग बैठा, नगर सुख क्यूं मांणे॥ २॥
देह बिध धार सकल आवे, सब बाता सुणिया बिना ही आवे।
कह सुखराम मोख राह झीणी, सतगुरु बिन क्यों पावे॥ ३॥

संतो से फ: है कि भजन करने का भेद व उसका ज्ञान मिलने पर परम मोक्ष की प्राप्ति होती है। सारा संसार दरसणी व सब भेखधारी राम राम करते है। राम राम कैसे करना चाहिये इसका भेद नहीं जानते, इसलिये सतशब्द की जागृति नहीं होती। यही बिना हिकमत के राछ से पच पच कर हारना है। जिस गांव में जाना है उसका रास्ता नहीं जानते। हमेशा चलते रहने पर भी नहीं पहुंचते है। उजाड में जा रहे है गांव में कैसे पहुंचेंगे व गांव में पहुंचने का सुख कैसे मिलेगा। शरीर धारण करके सब आते है व जगत के सब काम बिना सुणे ही आ जाते है। म:फ: है कि मोक्ष प्राप्ति का रास्ता तो बहुत झीणा है। सतगुरु का अणभै ज्ञान धारण किये बिना उसकी प्राप्ति कैसे हो सकती है।

卐 हरजस पद राग मिश्रीत (२३) 卐

संतो भाई अे क्यों मोख न जावे, नांव बिना गत पावे॥ टेर॥
गडरी सरभर गरीब न कोई, सिंघ सम नहीं सेंठा।
वैश्या आस शकल की राखे, कोडी जुग सुं रूठा॥ १॥
कवो कडवी बांण बोले, मैना बैण सुं प्यारा।
रासब रोडी ज्यां त्यां लोटे, अजिया कीच तज गारा॥ २॥
लुंकी बाघ बघेरा बन में, स्याल सुषा बोहो होई।
बस्ती बीच स्वान रहे मिनकी, अर जगत रह लोई॥ ३॥
तिरिया समझ रमे सुख सेजा, कोही भोलप हुवे संगा।
कह सुखराम थके गुण नांही, गरभ बंधे घट चंगा॥ ४॥

संतो से फः है कि ये मोक्ष क्यों नहीं जाते है। बिना निज नांव के किसी को भी मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती। गाडर की बराबर कोई गरीब (नम्र) जानवर नहीं है, सिंह के बराबर कोई बलशाली नहीं है। वैश्या शकल की आशा रखती है। कोडी मनुष्य को जीना जगत में अच्छा नहीं लगता। कौवा कडवी व मैना मीठी वाणी बोलती है। गधा जहां तहां रोडी पर लौटता है। बकरी कीचड व गीली मिट्टी में खडी नहीं रहती है। जंगल में लोमडी बाघ बघेरा श्याल सुस्या बहुत होते है। गांव के अन्दर कुता बिल्ली व संसारी रहते है। स्त्री के साथ सुख सेज में गर्भ की इच्छा नहीं करते हुये भी गर्भ रह जाता है। मःफः है कि साथ करने का गुण प्रकट हुये बिना नहीं रहता। ऐसे ही सतगुरु विधि से भजने पर शब्द की जागृति होकर केः पद आः पद की प्राप्ति होती है। इसका अनुभव भजन करने वालो को होता है।

卐 हरजस पद राग बसन्त (१) 卐

तोभी नहीं हो इण नांव सम, बिना गुरु भेद न पावे गम॥ टेर॥
बन मध जाय कर धरत ध्यान, छोडे जगत गोत कुल सरब आंण।
आसण साज अनेका खुद, नव द्वार रखे सर्व मूंद॥ १॥
करव्रत झाप देह कमला चाड, पर्वत बिचे गुफा तन बाड।
कठण तप देह अंग गाल, फोडे भरम भ्रांत सो अज्ञान पाल॥ २॥
पढे चहूं वेद सो पंडित होय, सरोधा साझ अगम कहे कोय।
कर ले मांड बिणासे आय, जो सुणई शकल ऊर मांय॥ ३॥
जप तप करे अनेका कोय, पुन्न घर दया अलेखे होय।
कह सुखराम कहा कहूं जोड़, बिना हरि नांव नहीं कहूं ठोड॥ ४॥

कोई भी साधन निज नाम के बराबर नहीं है। सतगुरु का अणभै ज्ञान धारण किये बिना इसकी जानकारी नहीं होती। जगत में गोत कुल को छोडकर बन में जाकर ध्यान करते है। अनेक तरह के आसन लगाकर साधन करते है नौ द्वारो को बंद कर लेते है। यह व्रत ले लेवे कि मैं नीन्द नहीं लूंगा, कोई अपने शरीर को काट कर अपने ईष्ट को चढा देवे। कठिन तपस्या करके शरीर को सुखा देते है। पर्वतो की गुफा में जाकर रह जाते है। भरम भ्रांती व अज्ञानता को त्याग देते है। चारो वेदों को

पढकर पंडित कहलाने लगते है। सरोधा साध कर भविष्य की कहने लग जाते है। संसार को बनाकर बिगाड देते है। एक बार सुनते ही हृदय में धारण कर लेते है। अनेक तरह के जप तप करते है, घर में पुन्न, धर्म, दया अक्षय करते है। म:फ: है कि अनेक साधन है। गिनती कहां तक बतावूं, परमात्मा के निज नांव के बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती, चौरासी में फिरते रहते है।

卐 हरजस पद राग बसन्त (२) 卐

संत सुणज्यो हो सतशब्द विचार, अखण्ड शब्द सोई तत सार॥ टेर॥
बोले बेण जीभ मुख मांय, से सब क्षिण खुट जम खाय।
मंत्र विध अनेकूं होय, माया सरूपी है शब्द दोय॥ १॥
कही सुणी कया सुंई होय, तहां लग चार काल की जोय।
सूरत समझ मन के बस थाय, जब लग काल धरे मुख मांय॥ २॥
मन सुं गहया नेक न थुमे जोय, जो भी शब्द नही असल थाय।
यो इतना को कहिये मूल, तहां लग काल करम की चूल॥ ३॥
कह सुखदेव राम सो गाय, अरध शब्द देख्याज मांय।
सूरत निरत मन बस नांय, सो सुण शब्द अखण्ड हम मांय॥ ४॥

संतो से फ: है कि सतशब्द का विचार सुणो, जो शब्द अखण्ड है वो ही ब्रह्म का निज नाम है। मुंह से जीभ के द्वारा जो भी बचन बोलने में आते है उनसे जन्म मरण नहीं मिटता। अनेक तरह के मंत्रो से जप करने की विधि है व ओऊं सोऊं का साधन ये सब माया के पद में है। कथा करना व सुनना, कहे माफिक कोई भी काम करना, ये सब काल के वश में है, समझ कर सूरत व मन के आधार से साधन करने वालो को भी काल खा जाता है। मन के ठहराने से जो शब्द थोडी देर ठहर जाता है वो शब्द भी असत है, सतशब्द नहीं है। ये साधन श्वांसा के आधार से होते है। इन साधनो से काल कर्म से छुटकारा नहीं होता। म:फ: है कि सतगुरु विधि से रामजी का भजन कर उस आधे शब्द याने ररंकार का अनुभव किया, वो शब्द सूरत निरत मन के वश में नहीं है। उस शब्द का मुझे अखण्ड अनुभव हो रहा है। वो ही सतशब्द है। ब्रह्मण्ड व पार ब्रह्म से ऊपर अधर अनुभव हो रहा है।

卐 हरजस पद राग बसन्त (३) 卐

मन भजिये हो नित राम नाम, ज्यां से शकल मनोरथ सजे काम॥ टेर॥
व्यास किशन रघुनाथ जांण, ध्रूव नारद शनकाद आंण।
ब्रह्मा विष्णु महेश देव, नित पारब्रह्म की लग सेव॥ १॥
रूखमांगद अर्जुन जांण, भीष्म द्रोण सुख संजेय बखाण।
प्रहलाद पांडव अमरीष होय, अे भी भज्यो नित राम जोय॥ २॥
पाराशर रिष रूम जांण, पृथु साल जन भरत मान।
हंस ध्वज जुग रूप सूर, हर गाय परसिया ब्रह्म नूर॥ ३॥
पिपलाद हरि किवलाद होय, रिष रिषभ देव अवतार जोय।
जन केत देव सुखदेव जान, सब समझवान भये लीन आन॥ ४॥

मन से फः है कि राम नाम का हमेशा भजन करो जिससे तेरे सब मनोरथ सब काम सिद्ध हो जायेंगे। व्यासजी, कृष्णजी, रामचन्द्रजी, ध्रुवजी, नारदजी, सनकादिक ऋषि, ब्रह्मा, विष्णु, महादेव भी पारब्रह्म के नांव की भक्ति करते है। रूखमांगद, अर्जुन, भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, सुखदेवजी, संजय, प्रहलाद, पाण्डव, अमरीष ये सब हमेशा रामजी का भजन करते थे। पाराशर ऋषि, लोमश ऋषि, राजा पृथु, भरतजी, पिपलाद हरि, व किवलाद ऋषि, रिषभ देवजी व अवतार मःफः है कि यह सब समझदार राम में लीन हुये है।

卐 हरजस पद राग बसन्त (४) 卐

कह गीता हो सुण वेद चार, हर नांव तत सुंई तत सार॥ टेर॥
पुराण अठारे भरत साख, शिव शेष संत सो केहे भाख॥
ग्रन्थ और सब जोय जोय, सब मांही बीज कण नांव होय॥ १॥
आन धरम सब मिटे है सोय, सुण राम नाम जुग अटल जोय।
परापरी लग संत कवाय, सत राम नाम जन केत जाय॥ २॥
चवदे पूरब कथा जोय, हर रामायण सा ग्रन्थ होय।
सब बांच बांच सो कहे, धाम सत स्वरूप सम नहीं किशन राम॥ ३॥
मरत लोक सूर शेष मांय, जिग जाप जप सब तप कवाय।
केत देव सुखदेव पेख, निज नाम सम नहीं अवर देख॥ ४॥

गीता व चारो वेद कहते है कि सुणो परमात्मा का नांव ही सब में श्रेष्ठ है, इसकी अठारा पुराण साक्षी दे रहे है। शिवजी व शेष जी व सभी संत यही कहते है। सब ग्रन्थो को देखा है सब में कण व बीज राम का नाम है। आन धर्म याने माया धर्म तो सब मिट जाते है, पर राम का नाम अनेक जुगो से अटल है। परापरी याने आदि से जो संत हुये है। उन्होंने भी राम नाम को सत कहा है। चवदह भाषा में जो कथाये है। उनको देखा व रामायण जैसे ग्रन्थ को बांच बांच कर यही कहते है सतस्वरूप के बराबर राम कृष्ण भी नहीं है। तीन लोको में सब साधन जिन्हें जिग जाप जप तप कहते है। मःफः है कि सबको देखो ब्रह्म के नाम व निज नाम के बराबर कोई नहीं है।

卐 हरजस पद राग बसन्त (५) 卐

धिरग धिरग हो मन धिरग तोय, गुरु गम छाड जग बश होय॥ टेर॥
लिव भजन छाड कर कथे है ज्ञान, जप धरम करत नर बंधे मान॥
हर सुख छाड माया मन चाय, तज ध्यान ठौर जग रमण जाय॥ १॥
अष्ट पोहर रट राम राय, पल निमक एक नहीं ढील खाय।
सुण एक लेस ऊर मांही जांण, जुग जुग पूजे सो मोही आंण॥ २॥
देह भांग भख भूर कीन, सब सुख छाड कर भयो है लीन।
सुण एक पंथ ऊर अरथ चाय, फिट भगत बीच आरे हो संभाय॥ ३॥
धिरग धिरग हो मन तोय, गुरु देव छाड शिष बस होय।
कह सुखराम कजी सो काढ, कसर कोरनो शीश बाढ॥ ४॥

मन से फः है कि तुझे धिक्कार है धिक्कार है जो सतगुरु के अणभै ज्ञान को छोडकर जगत के

आधीन हो रहा है। लिव बंध भजन को छोडकर दूसरे ज्ञान धारण करता है। जप तप व धर्म करके मान चाहता है। परमात्मा के सुखो को छोडकर मन से माया चाहता है। परमात्मा के ध्यान को छोडकर जगत में फिरता है। आठ पोहोर रात दिन रामजी का भजन कर, एक पल भी ढील मत कर। इस एक बात को हृदय में धारण करो। जुगानजुगो से पूजिक होने का कार्य करते आ रहे है। शरीर को कष्ट देने में ही लगा है। सब का एक ही अरथ है बिना भक्ति के सब धिक्कार है। हे मन तुझे धिक्कार है जो सत की भक्ति छोडकर असत की भक्ति करता है। यही गुरुदेव को छोडकर शिष्य के वश होना है। म:फ: है कि जो गलतिये व कसर कोर है। उनको निकाल कर रामजी के भजन में लग जा।

卐 हरजस पद राग बसन्त (६) 卐

कोई अेसा है जन संत सुजाण, निज निरगुण सेव बतावे आंण॥ टेर॥
जप तप तीरथ धाम सोय, पुर जिग्य ज्योग सब बास जोय॥
अे सबे रीत सुरगुण मांय जांण, चरच पूजकर जप ठांण॥ १॥
सुण पढत ज्ञान अदभूत कोय, सुणबाय बेण बोहो विध होय।
जप जाप सूरत मन करे सेव, धुन ध्यान ज्याहां लग माया देव॥ २॥
ओऊं शब्द के सोऊं सोय, सुरगुण मूल तो अेज होय।
ममंकार सो माया जांण, मन जीभ चढे सो सरब ठांण॥ ३॥
करद शब्द के अरथ सोय, मन सूरत पढत सो माया होय।
चित क्रिया होय बात ठांण, जब लग सुरगुण असल बखाण॥ ४॥
भजन पूर कर राम गाय, सत निरगुण शब्द है सहज मांय।
मत भूल केवता सुणे जोय, सुण अरध शब्द गम रटया होय॥ ५॥
जब ओर आंण कर कहे कोय, मन जीभ समझ ज्यों तुरत होय।
जन कहत देव सुखदेव जान, ऊ अरध शब्द नहीं भरम मान॥ ६॥

कोई ऐसा समझदार संत है जो निरगुण की भक्ति जो आत्म चेतन के आधार से आत्मा के निरंजण निराकार पद में वाणी व बिना वाणी अखण्ड होती है उसका भेद बतावे। जप तप करना, तीर्थ धामों में जाना, पुरीयो में जाना, जीग करना, जोग करना, उपवास करना ये सब सुरगुण भक्ति में है। पूजा करना, चन्दन चढाना, जप करना ये सब सुरगुण भक्ति है। अदभूत ज्ञान पढते है। बहुत विधि से वचन बोलते है। सूरत व मन लगाकर जप जाप व ध्यान धुन करते है वो सब माया के पद में है। ओऊं सोऊं का जपा अजपा करना सुरगुण का मूल है। ममंकार सो माया है, मन से ज्ञान करना जीभ से बोलना माया है। चित लगाकर भजन करना व क्रिया करना सब सुरगुण की सेवा है। खूब प्रेम से रामजी का भजन सतगुरु विधि से करने से ही सतशब्द का अखण्ड अनुभव होना ही उसको निरगुण का शब्द कहते है। दूसरी कहावते सुन मत भूलो। अरध शब्द का ज्ञान रटने से मालूम होता है। जब कोई भी आकर कहे जो ज्ञान मन के आधार व बाणी का आधार व समझ के आधार से है। म:फ: है कि उसको ररंकार समझते है तो वो भरम है।

卐 हरजस पद राग बसन्त (७) 卐

धिरग धिरग सो नर नार कवाय, हर पथ छाड जम गेल जाही ॥ टेर ॥
जन संग छाड ठग संग कीन, लाडूज तज मुख भीष्ट लीन।
नर अमर बेल कूं खिणे आय, जल तुछ बेल कूं पावे है जाय ॥ १ ॥
परण्यो पीव पर हरयो संग, नीच यार संग रची रंग।
गज से उतर चढयो खर आय, ईमरत छाड विषे मत खाय ॥ २ ॥
सांच छाड गहे झूंठ कोय, धन गांठ भव ज्यां हां हरे सोय।
जन केत देव सुखदेव आंण, फिट शुभ छाड गहे अशुभ जांण ॥ ३ ॥

उन सभी स्त्री पुरूषो को धिक्कार है धिक्कार है जो परमात्मा की प्राप्ति का रास्ता छोडकर जन्म मरण के रास्ते जाते है। संतो का साथ छोडकर ठगो का साथ करते है। लाडूओ को छोडकर मुंह में मेला लेते है। मनुष्य अमर बेल को खोदता है और साधारण बेल को जल पिलाता है। स्त्री परणे हुये पति को छोड नीच मनुष्यो का संग करती है। हाथी से उतर कर गधे पर चढते है। ईमरत को छोडकर जहर मत खावो। सांच को छोडकर झूंठ को पकडता है। गांठ का धन हरते है उनका साथ करता है। म:फ: है कि जान बूझकर शुभ को छोडकर अशुभ को धारण करते है उनको फिट धिक्कार है।

卐 हरजस पद राग बसन्त (८) 卐

कोण शब्द से कोण होय, जन सोच सोध कहो अरथ मोय ॥ टेर।
बावन हरफ सब सोज बीर, कौन शब्द को कोण चीर।
तत पांच गुण तीन जांण, सतशब्द मूल मुज कहो आंण ॥ १ ॥
हो ररंकार में बडो कोण, सुण ओऊं सोऊं कहो मोण।
या च्यार शब्द को करो न्याव, कोण शब्द सो कोण आय ॥ २ ॥
पांच तत्त गुण तीन जांण, ईण ओऊं शब्द से बणया आंण।
सुण सोऊं शब्द का हरफ सेंग, जे जीभ पढत मुख करे बेग ॥ ३ ॥
च्यार हरफ को मूल एक, यो शीश शब्द सोई इधक देख।
कह सुखदेव कहे सो सोध जोय, सुण सतशब्द सो अधिक होय ॥ ४ ॥

भक्ति करने वालो से कहते है कि किस शब्द से क्या होता है, इसका अर्थ सोच समझकर कहो, बावन हरफो को सोजकर किस शब्द की कहां तक पहुंच है। पांच तत्व तीन गुणो को जांणो, सतशब्द का मूल क्या है। वह मुझे कहो, ररंकार में बडा कौन है, ओऊं सोऊं के लिये भी कहो, इन चारो शब्दो का खुलासा करो कि किस शब्द से क्या होता है। पांच तत व तीन गुण आत्मा ब्रह्म से बने है। सोऊं शब्द याने स्वांसा से सब हरफ बने है जो जीभ से बोले जाते है। इण चारो शब्दो का मूल अेक है याने स्वांसा है। इनके ऊपर जो सतशब्द है वो सबसे इधक है। म:फ: है कि सतशब्द इन सबसे अधिक है तुम इनका अनुभव करके देख लो।

卐 हरजस पद राग बसन्त (९) 卐

मत भूलो हो मन माया संग, समझ सोच कर रहो अभंग॥ टेर॥
भगत बिना नर धरक कहाय, कोट अकल बुध अेली जाय।
नांव बिना सब आल जंजाल, सुणज्यो शिष्ट, संत, सर्ब ग्वाल॥ १॥
आन धरम सब माया होय, यां कूं पूज तिरियो सुणयो नहीं कोय।
तारणहार ब्रह्म राम राय, गुरु गम भेदज लहिजे आय॥ २॥
जिण जिण प्रीत लगाई आय, तिरता बार न लागी काय।
ऐसो नांव नकेवल होय, तिरिया संत अनेकूं लोय॥ ३॥
छाडो झूंठ, कर सांच संग, पाको रंग चढावो अंग।
कह सुखदेव बजाय बजाय , ईमरत छाड बिसे मत खाय॥ ४॥

मन से फः है कि शरीर रूपी माया का साथ करके परमात्मा को मत भूलो, माया से अलग रहो। भक्ति के बिना मनुष्य को धिक्कार है। करोडो की अकल है वो सब व्यर्थ जाती है। परमात्मा के नांव बिना सब आल जंजाल है। सब संत व सब सृष्टि वाले सुणो, आन धर्म याने प्रकृति के आधार से जाना जाता है, सब माया के है। आन धर्मी का किसी का मोक्ष नहीं हुवा है। उद्धार करने वाले तो ब्रह्म रामजी ही है। सतगुरु का अणभै ज्ञान धारण करने पर ही उनका भेद मिलता है। जो हंस सांस उसांस में राम रटते है तब आत्म चेतन से सतशब्द का अनुभव होता है, वो आत्म धर्म है। जिन जिन ने प्रेम से भजन किया है उनका उद्धार होने में देर नहीं हुई है, केवल का निराधार नाम ऐसा है। जिसको धारण करने से अनेक संतो का उद्धार हो गया। असत को छोडकर सत का साथ करो। पक्का ज्ञान धारण करो याने असत को छोड सत का ज्ञान धारण करो। मःफः है कि ईमरत को छोडकर विष मत खावो यह मैं तुम्हें बार बार कहता हूं।

卐 हरजस पद राग बसन्त (१०) 卐

धिन धिन हो धिन राम नाम, तासे अखण्ड अधर पर सहज धाम॥ टेर॥
प्रथम धिन सतसंग होय, ज्यां गुरुदेव मिलाया मोय।
भांत भांत सो भरम जांण, निरभै ज्ञान दिया ऊर आंण॥ १॥
पूरब जन्म हमारो धिन, सुखरत शुभ किया इण मन।
तां की विध अब मिली आय, राम धुन लागी ऊर मांय॥ २॥
धिन धिन भाग हमारो जांण, ताके मीत राम सा हुवा आंण।
दुख सुख भरम मिटाया दोय, सुरग नरक सांसो नहीं कोय॥ ३॥
धिन धिन मन हमारो होय, जिन हरि भक्ति संभाई जोय।
आठ पोहोर रटयो निज नाम, कह सुखराम सरे सब काम॥ ४॥

राम नाम को धिन है जिसके द्वारा खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड व पार ब्रह्म के ऊपर अधर शब्द का अनुभव होता है। पहले तो सतसंग को धिन है जिससे सतगुरु के अणभै ग्यान की प्राप्ति हुई। अनेक तरह के जो भरम थे उनको मिटाकर केः पद आः पद की प्राप्ति का अणभै ज्ञान दिया। मेरे पूर्व जन्म को भी धिन है। जिसमें इस मन ने शुभ करम किये थे उसी का फल अब मिला है कि रटणा व

बिना रटणा ही सतशब्द की ध्वनि का अखण्ड अनुभव हो रहा है, हमारा भाग्य धिन है, जिससे रामजी की प्राप्ति हुई। सुख दुख व भरम मिटाकर सुरग नरक जाने का दुख भी मिटा दिया, हमारे मन को धिन है जो रामजी की भक्ति करने में ही लगा है। म:फ: है कि आठ पोहोर हर समय निज नाम की भक्ति करने से जन्मना मरना मिट जाता है। यही सब काम सरना है।

卐 हरजस पद राग बसन्त (११) 卐

मेरे लागी हो ऊर शब्द भाल, क्या करिये जुग किरत ख्याल॥ टेर॥
जे मन घेर राखूं ऊर मांय, तो तन टूक टूक होय जाय।
मेरे बस नहीं ओ मन होय, बिरह धाहा पुकारे जोय॥ १॥
अक बक जीव भयो मन मोय, जुग कुल लाज न कोय।
रूम रूम कह राम राम, कब हर परसुं निज धाम॥ २॥
ज्यों जग में सेण न दिसे कोय, सबे नर नार जमा सम होय।
कह सुखराम गुरु धिन कवाय, के राम स्नेही जे जुग मांय॥ ३॥

जगत की करणिये व क्रिया को छोडकर हर समय निज नांव की भक्ति करने में लगना ही हृदय में शब्द का भाल लगना है। मन को समझा समझा कर रखता हूं तो शरीर को कष्ट होता है। यही टूक टूक होना है। यह मन मेरे बस में नहीं है और रात दिन विरह के साथ आपका भजन करता है। संसार व कुल की लज्जा को खोकर निरन्तर आपकी भक्ति में लगना ही अक बक होना है। रोम रोम में राम राम हो रहा है और कब के: पद आ: पद की प्राप्ति करूं। ऐसी मन में लग रही है। संसार में मेरा कोई हितेषी नजर नहीं आता है। सब ही स्त्री पुरूष भक्ति में बाधा डालने वाले है। म:फ: है कि सतगुरु रामजी महाराज धिन है या रामजी की भक्ति करने वाले सतसंगी धिन है।

卐 हरजस पद राग बसन्त (१२) 卐

समझो हो नर समझ नार, बिन भक्ति धरक जिवो संसार॥ टेर॥
भजन बिना नर सरब अेम, कीट श्वान पशु पंछी जेम।
राज पाट सुरलोक कहाय, हर नांव बिना सुण जम खाय॥ १॥
सावधान बुद्ध अकल जोर, निरख परख कहे सब ठौर।
द्रव्य अपार अखूट होय, भजन बिना नर चल्यो है रोय॥ २॥
करत तन बोहो जोग जुग, लेत बीज सरब शुभ चुग।
कसर कोर नहीं रखी मांय, पण बिना नांव नहीं मोख जाय॥ ३॥
कह सुखदेव विचार विमेक, सब हार चले नर नार देख।
मिनख जन्म अमोलक पाय, गुरु के भेद बिना चले गमाय॥ ४॥

सब स्त्री पुरूषो से फ: है कि बिना भक्ति के संसार में जीना धिक्कार है। बिना भजन के सब मनुष्य ऐसे है। कीडे कुत्ते पशु पक्षी के जैसे है, चाहे कितना ही राजपाट हो, चाहे स्वर्ग लोक की प्राप्ति हो। लेकिन परमात्मा के निज नांव की भक्ति के बिना जन्म मरण नहीं मिटता, यही जम का खाना है। बडी भारी अकल हो, सावधानी हो, बलशाली हो, जो भी वचन कहते हो, सब जगत देख परख के बोलते है। अपार धन हो जो कभी खत्म नहीं होने वाला हो, लेकिन बिना भजन के

रोकर जाना पडेगा याने कोई साथ नहीं जायेगा। तपस्या करता है, जुग में विधि से जोग की साधना करते है, सब शुभ शुभ करणिये करते है। शुभ करणी करने में किसी प्रकार की कमी नहीं रखते है। लेकिन बिना निज नांव की भक्ति के मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती है। म:फ: है कि सब विवेक से विचार करो। सब स्त्री पुरूष देखो, सतगुरु के अणभै ज्ञान के भेद बिना मनुष्य जन्म पाकर भी परमात्मा की प्राप्ति नहीं करी तो यही सबका हार के चलना है।

卐 हरजस पद राग बसन्त (१३) 卐

धिन धिन हो धिन परम धाम, जांसे किशन देव चल आवे राम॥ टेर॥
सरब शिष्ट की बाय मूल है, पांच तत की शून्य चूल।
शून्य मूल से ब्रह्म होय, ताय शीश नहीं अवर कोय॥ १॥
ब्रह्मा, विष्णु, महेश, देव, अष्ट पोर हर आई सेव।
शेष लोक पंयाल होय, नित आठ पोहोर लवलीन जोय॥ २॥
पीर जैन अवतार जोय, ब्रह्म ब्रह्म कर रहे रोय।
आकार धार त्रिलोक मांय, समझवान रहे ब्रह्म गाय॥ ३॥
शिष्ट सेंग तुज मांही होय, काल जम सब जख लोय।
कह सुखदेव कहा कहूं आय, बडा बडा तुज पुकारया जाय॥ ४॥

परमधाम याने पारब्रह्म परमात्मा को धिन है जहां से रामकृष्ण अवतार भी आते है। सारे संसार का आधार श्वांसा है। पांच तत्वो के आधार शून्य याने निरंजण निराकार सत चेतन है। शून्य याने निरंजन निराकार सत चेतन ही ब्रह्म है, उससे ऊपर कोई नहीं है। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव और सब देवता आठ पोहर याने हर समय ब्रह्म की ही भक्ति करते है। शेषजी पाताल लोक में हर समय भजन में लवलीन रहते है। पीर याने मुसलमान, जैनी अवतार भी ब्रह्म की भक्ति करते है। तीन लोक में जितने भी आकारी, जितने भी समझदार है वो सब ब्रह्म की भक्ति करते है। सारी सृष्टि आपके ही अन्दर है। काल है, जम है, राक्षस है। म:फ: है कि कहां तक कहूं जो बडे बडे है। वो सब रात दिन आपको ही पुकारते है याने आपकी भक्ति करते है।

卐 हरजस पद राग धुन प्रभाती (१) 卐

हो ज्यां परम पद तत दिया हो, मेरा भरम विधुसण किया हो॥ टेर॥
वे जन को कब आसी हो, वे सत लोक का वासी हो॥ १॥
निर्भय मोकूं किया हो, परम मोख पद दिया हो॥ २॥
धिन धिन वा पुल कुवासी हो, ज्यां दिन सतगुरु आसी हो॥ ३॥
चरणा शीश निवासूं हो, सनमूख दरशन पासूं हो॥ ४॥
उण सूरत की बलिहारी हो, जहां दिया ज्ञान विचारी हो॥ ५॥
सुखदेव बोह दुख पावे हो, वे दिन दुरलभ जावे हो॥ ६॥

वे सतगुरु कब आवेंगे जो मुझे परमपद याने के: पद आ: पद की प्राप्ति कराकर मेरे सब भरम को मिटा देंगे। उनका रात दिन के: पद में ध्यान होना ही सतलोक में रहना है। उन्होंने मुझे जन्म मरण से रहित के: पद आ: पद की प्राप्ति करा दी, यही निर्भय करके परममोख की प्राप्ति करा दी।

वो समय धिन है जिस दिन मेरे सतगुरु पधारेंगे, उनके सन्मुख जाकर दर्शन करके चरणो में शीश निवावेंगे। उन महापुरूषो की बलिहारी है जिन्होंने ऐसा अणभै ज्ञान दिया है। म:फ: है कि उन सतगुरु के ज्ञान दर्शन के बिना दिन दुख से निकलते है, यही दुर्लभ जाना है।

卐 हरजस पद राग धुन प्रभाती (२) 卐

वो दिन को कब आसी हो, मारा सतगुरु मोय मिलसी हो॥ टेर॥
चरणा शीश निवासुं हो, सनमुख दरशण पासूं हो॥ १॥
धिन सूरज सो कवासी हो, मारा सतगुरु मोय बुलासी हो॥ २॥
वा पुल को कब आवे हो, मारा गुरु की रीस बुजावे हो॥ ३॥
कोई अेसा हरिजन आवे हो, मारा गुरु सुं मोय मिलावे हो॥ ४॥
प्रभु मेरी अरज सुणिजे हो, मेरे गुरा सूं सनमुख किजे हो॥ ५॥
सुखदेव करे पुकारी हो, गुरु सुणज्यो अर्ज हमारी हो॥ ६॥

वो दिन कब आवेगा जिस दिन सतगुरु के दर्शन होंगे, चरणो में शीश निवावूंगा और सन्मुख जाकर दर्शन करूंगा। उस दिन को धिन है जिस दिन सतगुरु के दर्शन होंगे, वो समय कब आवेगा जब सतगुरु देव केवली भगवंत मेरे पर कृपा करेंगे, कोई ऐसे संत मिलेंगे जो मुझे गुरु पद की प्राप्ति करा देवे। हे परमात्मा आप मेरी प्रार्थना सुणो, मुझे सतगुरु का अणभै ज्ञान ज्ञात करावो। म:फ: है कि हे सतगुरु देव आप मेरी प्रार्थना सुणो।

卐 हरजस पद राग धुन प्रभाती (३) 卐

धिन धिन भाग हमारा हो, मेरा सतगुरु द्वार पधारे हो॥ टेर॥
करम कीट सब भागे हो, मेरा ताला ऊदे होय जागे हो॥ १॥
दुभधा दुरमत भागी हो, राम रटण लिव लागी हो॥ २॥
भरम अज्ञान नसाया हो, परम चैन सुख आया हो॥ ३॥
विष रस सब मिट जावे हो, ईमरत सिरा आवे हो॥ ४॥
आनदेव सब भागे हो, म्हारा राम राज ऊर जागे हो॥ ५॥
असंख जुगा के मांही हो, सतगुरु सम कोई नांही हो॥ ६॥
सांसा सोग मिटाया हो, जां घर सतगुरु आया हो॥ ७॥
बेद कुराण सरावे हो, गुरु मेहमा हर गावे हो॥ ८॥
कह सुखराम सुणाई हो, गुरां सम नहीं धर मांही हो॥ ९॥

मेरे सतगुरु मेरे द्वार पर पधारे तब मेरा भाग्य धिन है धिन है। मेरे करणी करम रूपी कीडे सब भाग गये है व मेरा भाग्योदय उदय हुवा है। मेरी दुविधा याने तेरी मेरी व दुरमती भाग गई है व रामजी का भजन करने की लिव याने लग्न लगी है। मेरे भरमों व अग्यानो का नाश हो गया है व मुझे परम सुख की शान्ति का अनुभव हो रहा है। विषयो की सब वासना मिट जाती है और भजन का आनन्द आना ही ईमरत की सीर आना है। इस ज्ञान के धारण करने से समस्त चौरासी मिट गयी एवं रामराज्य याने के: पद में जाने का मार्ग प्रशस्त हो गया। असंख जुगो के अन्दर सतगुरु सतशब्द

की बराबर कोई नहीं है। जिस घट में सतगुरु पधारते है उसके संशय व दुख मिट जाते है। सतगुरु की महिमा सब गाते है व वेद कुराण भी सराहना करते है। म:फ: है कि सतगुरु के बराबर पृथ्वी पर कोई नहीं है।

卐 हरजस पद राग धुन प्रभाती (४) 卐

वे मिलज्यो हरिजन आंणी हो, जहां परम पद गत जांणी हो॥ टेर॥
वे मिलिया भर्म सब जावे हो, ओ प्रांण बहोत सुख पावे हो॥ १॥
वे आद अन्त का खोजी हो, वाहां भिन्न भिन्न काया खोजी हो॥ २॥
वे राम भजन इधकारी हो, जां सूरत गिगन दिश धारी हो॥ ३॥
वे सांसा शिवरण जाणे हो, तां सुं ही ब्रह्म बखाणे हो॥ ४॥
वे ऊलट पिछम कूं ध्यावे हो, वे बंकनाल रस खावे हो॥ ५॥
जहांरा गिगन मंडल में डेरा हो, वे समरथ सायब मेरा हो॥ ६॥
वे अणभै बाणी बोले हो, वे ज्ञान भंडारज खोले हो॥ ७॥
वे अणभै ऐसी लावे हो, सब का भेद बतावे हो॥ ८॥
वे सांसा कुछ नहीं राखे हो, निरभै हरि पद भाखे हो॥ ९॥
कह सुखराम पुकारी हो, वे हरिजन जीवण हमारी हो॥ १०॥

म:फ: है कि अेसे हरिजन केवली भगवंत अणभै वाणी बनाने वाले मिलो, जो परमपद आ: पद की प्राप्ति किये हुये हो। वैसे संतो के दरशणो याने अणभै ग्यान से सब भरमो का नाश हो जाता है व मेरे प्राणो को सुख शान्ति का अनुभव होता है। वे सब खण्ड पिण्ड ब्रह्मण्ड का अनुभव कर काया को भिन्न भिन्न प्रकार से खोजते है। जिनका ध्यान के: पद में लगा रहता है। वे संत अणभै वाणी में विधि से राम भजन करने को कहते है। वे सांस उसांस में भजन करने की विधि जानते है। उसी से ब्रह्म पद की प्राप्ति होती है, वे सतशब्द के साथ बंकनाल के रास्ते पिछम में जाते है यही बंकनाल का रस खाना है। जिनका ध्यान के: पद में लगा हुवा है। वे ही मेरे समरथ साहिब है। वे अणभै के वचन बोलते है। के: पद आ: पद की प्राप्ति का ज्ञान बताते है। वे अैसी अणभै की बाते बताते है जिससे सब भेद मालूम हो जाता है, इसलिये अणभै बाणी बनाने वाले संतो का ज्ञान धारण करने से किसी तरह का संशय नहीं रहता है। वो निरभय पद याने के: पद की प्राप्ति का ज्ञान देते है। म:फ: है कि ऐसे ही संत हमारे जीवन के आधार है।

卐 हरजस पद राग धुन प्रभाती (५) 卐

सतगुरु मेहमा किजे हो, तन मन धन सब दीजे हो॥ टेर॥
वे मोख मुक्त का दाता हो, गुरु बिन नरका जाता हो॥ १॥
सुण मन तोहिज बतावे हो, गुरु बिन धाम न जावे हो॥ २॥
प्रेम सहित सब किजे हो, गुरु आज्ञा में रिजे हो॥ ३॥
वां सूं कछु न दुरावो हो, ज्यां कर सायब पावे हो॥ ४॥
जुग जुग करम कमावे हो, गुरु शरणे सब जावे हो॥ ५॥
गुरु पूजा सुख पावे हो, प्राण आद घर जावे हो॥ ६॥

सतगुरु ऐसा कुवावे हो, सुखदेव भेद बतावे हो॥ ७॥

सतगुरु की महिमा याने उनका अणभै ज्ञान धारण करना है। तन मन धन से आपा खत्म करके उनकी आज्ञा मानना ही सब देना है। सतगुरु से ही मोक्ष मुक्ति की प्राप्ति होती है। सतगुरु का केवल ज्ञान नहीं मिलता है तो चौरासी याने नरको में जाना पडता है। सतगुरु का अणभै ज्ञान धारण किये बिना हे मन परम पद की प्राप्ति नहीं होती है, सतगुरु का ज्ञान प्रेम से धारण करना ही आज्ञा में रहना है। सतगुरु की अणभै वाणी में विधि के बताये मुजब साधन करो जिससे ही परमात्मा की प्राप्ति होती है व उनसे कुछ नहीं दुराना है। जुगान जुगो से जो कर्म बन्धन किये है वो सतगुरु की शरण लेने से सब खत्म हो जाते है, सतगुरु का निज ज्ञान धारण करने से सब सुखो की प्राप्ति होती है व आत्मा को परमात्मा पद की प्राप्ति होती है। म:फ: है कि सतगुरु ऐसे समरथ है याने सत केवल ज्ञान ही सतगुरु है।

卐 हरजस पद राग धुन प्रभाती (६) 卐

म्हारा सतगुरु परम स्नेही हो, राम मिल्या इण देही हो॥ टेर॥
जीवत मोख मिलाया हो, करम खोद सब बाया हो॥ १॥
रूप न चुप न काया हो, वो मुझ देश बताया हो॥ २॥
भीत दिवाल न पाया हो, ऐसा अधर घर आया हो॥ ३॥
चंद न सूर न देवा हो, वां घर का सुख लेवा हो॥ ४॥
ब्रह्मा विष्णु कवावे हो, ऊण घर कूं नित ध्यावे हो॥ ५॥
कह सुखराम सुणाई हो, हम मिल्या आद घर जाई हो॥ ६॥

केवली भगवंत अणभै ग्रन्थ बनाने वाले सतगुरु परमकृपा करने वाले है, उनके बताये हुये साधन से सतशब्द की जागृति होना ही रामजी का इस देही में मिलना है। शुभ अशुभ करणियो के कर्मो से अलग होकर उस के: पद की प्राप्ति करना ही जीवत मोक्ष मिलना है। उस पद के न तो आकार है, न रूप है, न शरीर है, उस पद की प्राप्ति सतगुरु के अणभै ज्ञान से होती है। उस पद में भीत दीवार व नींव नहीं है। ऐसे अधर सतशब्द का अनुभव होना ही अधर का घर आना है। वहां न कोई चन्द्रमा व सूरज है न कोई देवता है, उस पद का अनुभव हुवा, ये ही सुख लेना है। ब्रह्मा विष्णु ब्रह्म कहलाने वाले भी उस ब्रह्म का हमेशा भजन करते है। म:फ: है कि मुझे उस आद घर याने के: पद आ: पद की प्राप्ति हुई है।

卐 हरजस पद राग धुन प्रभाती (७) 卐

गुरु बिच अंतर राखे हो, तांकी वेद भागवत भाखे हो॥ टेर॥
चौरासी मांय राखे हो, मार बोहोत विध चाखे हो॥ १॥
नरक निगोदा डारे हो, शरण कोई न उबारे हो॥ २॥
कह सुखराम दुबध्या राखे हो, वे पार न पूथा भाखे हो॥ ३॥

केवली संतो को सिरजण हार से अणभै ग्यान की परवानगी मिलती है। वो ही सतगुरु होते है। अब उनको कोई नहीं मानते है तो उसकी वेद भागवत भी कहते है उसको चौरासी का याने जन्म मरण का दुख भोगना पडता है, यही मार बोह विध खाना है। उसका निगोदा नामक नरक में डालते

है। किसी की भी शरण में जाने से उसका उद्धार नहीं होता है। म:फ: है कि दुबध्या रखकर साधन करते है तो उनको परम पद की प्राप्ति नहीं होती है।

卐 हरजस पद राग धुन प्रभाती (८) 卐

वो दिन को कब ऊगे हो, प्राण आद घर पूगे हो॥ टेर॥
धिन धिन वा पुल कवाई हो, मेरा ध्यान लगे सुन्न मांही हो॥ १॥
त्रिवेणी तट धारा हो, कब न्हावे प्राण हमारा हो॥ २॥
जोत अखण्डित मांही हो, कब जन देखे जाई हो॥ ३॥
त्रिकुटी शहर मंझारा हो, कब आसण होय हमारा हो॥ ४॥
कह सुखराम विचारा हो, अब मोय पार उतारा हो॥ ५॥

वह दिन कब उदय होगा जिस दिन मेरे प्राणो को आद घर याने के: पद की प्राप्ति होगी, उस पल को धिन है धिन है जिस पल में मेरा ध्यान ब्रह्मण्ड पार ब्रह्म से ऊपर के: पद में ध्यान लगना ही सुन्न में ध्यान लगाना है। त्रिवेणी याने सुखमणा में भजन ध्यान कब होने लगेगा यही त्रिवेणी में नहाना है। सतशब्द का अखण्ड अधर अनुभव होना ही जोती का देखना है। उसका अनुभव कब होगा। त्रिकुटी शहर याने पारब्रह्म के आगे के: पद आ: पद में आत्मा कब मिलेगी। म:फ: है कि अब परमात्मा ने मुझे पार कर दिया है।

卐 हरजस पद राग धुन प्रभाती (९) 卐

आज दिवस भल ऊगा हो, मेरा प्रांण आद घर पूगा हो॥ टेर॥
धिन धिन वा पुल कवाही हो, मेरा ध्यान लगा सुन्न मांही हो॥ १॥
सर्वण रसना कवाही हो, एक मास पद राही हो॥ २॥
कंठ शब्द पख एका हो, हिरदे मास बसेखा हो॥ ३॥
नाभी में पद आया हो, बरस द्वादस गाया हो॥ ४॥
जहां शेष नाग घर जागा हो, वहां एक माश दिन लागा हो॥ ५॥
पिछम देश में आया हो, वहां जन बोहो दु:ख पाया हो॥ ६॥
सूरग ईकीसूं छेक्या हो, जाणेगा जन देख्या हो॥ ७॥
दिवस मास पख बीता हो, जम थाणा जन जीता हो॥ ८॥
मेरूडण्ड जहां घाटी हो, ऐसी ओर न बाटी हो॥ ९॥
अला पिंगला जागी हो, अनहद नोपत बाजी हो॥ १०॥
चार मास जुग जुंझया हो, तब घर आदू सुज्या हो॥ ११॥
त्रिकुटी तख्त बिराजे हो, अब जन सुखदेव गाजे हो॥ १२॥

आज का दिन मेरे लिये भला उदय हुवा है। जिस दिन मेरे प्राणो को आद घर याने के: पद की प्राप्ति हुई है। उस पल को धिन है धिन है जिस पल में मेरा ध्यान ब्रह्मण्ड पारब्रह्म से ऊपर के: पद में लगना ही सुन्न में ध्यान लगना है। रसना से कानो से सुनकर एक महिने तक भजन किया है। कंठ कंवल पर पन्द्रह दिन भजन किया है व हिरदे में एक महिना भजन किया है। ब्रह्मा गणेश व शेषजी के स्थान पर एक महिने तक भजन किया है। जब शब्द नाभी में आया तो बारा बरस

तक नाभी में सूरत लगाकर भजन किया है। पिछम देश में आकर भजन विशेष करने से ही शब्द आगे बढता है। यही दुख पाना है। बंकनाल में इक्कीस स्वर्गों को छेदन किया याने पार किया है वो ही जाणेंगे। जिन जनो ने इसका अनुभव किया है। डेड मास तक भजन कर मेरूडण्ड को पार करना ही जम थाणा जीतना है। मेरूडण्ड को पार करना बडा ही कठिन है। ऐसा कोई रास्ता दूसरा कठिन नहीं है। मेरूडण्ड से ही अला पिंगला सुखमणा जागृत होती है। फिर त्रिकुटी में तीनो अेक होकर सतशब्द का आठ पोहर अनुभव होता है, यही अनहद की नोपत बजना है। बारह वर्ष चार महिने तक भजन करने पर के: पद का अनुभव हुवा। त्रिकुटी याने पारब्रह्म से ऊपर सतशब्द का अधर अनुभव होना ही त्रिकुटी तख्त पर विराजना है। म:फ: है कि शब्द की ध्वनि का अनुभव होना ही गाजना है।

卐 हरजस पद राग धुन प्रभाती (१०) 卐

त्रिकुटी महल अनुपा हो, जां रात दिवस नहीं धुपा हो॥ टेर॥
सुणज्यो हरिजन आंणी हो, कहूं परमपद छांणी हो॥ १॥
तीन लोक का साधा हो, वहां मठ त्रिकुटी बांधा हो॥ २॥
सतलोक यां आगे हो, ज्यां जम का डर नहीं लागे हो॥ ३॥
त्रिकुटी लग जम जावे हो, ब्रह्मा बिसन ढहावे हो॥ ४॥
ओऊं सोऊं सांसा हो, वहां लग जम का बासा हो॥ ५॥
त्रिकुटी परे मुकामा हो, नव लंघ केवल धामा हो॥ ६॥
निरंजण अवगत दोई हो, वो पद पेला होई हो॥ ७॥
कह सुखराम विचारी हो, तत वां सूं पद न्यारी हो॥ ८॥

त्रिकुटी महल याने के: पद अनुपम है जहां रात दिन व धूप नहीं है। सब ही संत सुणो परमपद का निरणा बताता हूं। त्रिकुटी का पद पारब्रह्म तक है यही तीन लोक तक है, यही मठ बांधना है, सतलोक इससे आगे है,वहां जम की पहुंच नहीं है। त्रिकुटी तक जमराज की पहुंच है। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव भी आते जाते है। ओऊं सोऊं याने स्वांसा के आधार के जितने भी साधन है उनसे जन्म मरण नहीं मिटता है, यही जम की पहुंच है। त्रिकुटी याने पारब्रह्म से नव तत लिंग शरीर को लांघने पर के: पद प्राप्त होता है। निरंजण निराकार ब्रह्म का पद है वह अवगत पद पारब्रह्म का है, यह पद पहले आते है। म:फ: है कि के: पद आ: पद इनसे अलग है।

卐 हरजस पद राग धुन प्रभाती (११) 卐

सब भरम छाड दहिजे रे, नकेवल नांव लहिजे रे॥ टेर॥
हरि कूं अंतर गावो रे, भले सुण जन्म न आवो रे॥ १॥
हरि कूं समझर गावो रे, मति ओ जन्म गमावो रे॥ २॥
आयोडो मोसर जावे रे, हर कूं काय न गावे रे॥ ३॥
भजन बिना दुख पासी रे, भुगते लख चौरासी रे॥ ४॥
राम भजन को साजा रे, बंचत है सुर राजा रे॥ ५॥

बोहोर न नरतन पासी रे, भगत बिना पिस्तासी रे॥ ६ ॥
राम भजन के काजा रे, तू मत खोय अकाजा रे॥ ७॥
तन धन जोबन माया रे, आ बादल की छाया रे॥ ८ ॥
कह सुखराम नर देह मूंगी रे, ओ मूरख जांणे सूंगी रे॥ ९ ॥

सब भरमो को छोडकर केवल नाम याने निज नाम का भजन करो। रामजी का अन्तर में सांस उसांस में भजन करो। जिससे जन्म धारण नहीं करना पडे। रामजी का भजन सतगुरु विधि से करो, मनुष्य जन्म को व्यर्थ मत खोवो। मनुष्य जन्म भक्ति करने के लिये ही मिला है तो रामजी का भजन क्यों नहीं करते हो। रामजी का भजन नहीं करने पर चौरासी लाख योनियो का दुख भोगना पडेगा। मनुष्य शरीर परमात्मा राम भजन के लिये ही देते है। बडे बडे देवता भी मनुष्य शरीर पाने की इच्छा करते है, मनुष्य शरीर बार बार नहीं मिलता है। भक्ति नहीं करेगा तो पछताना पडेगा। यह शरीर रामजी की भक्ति करने के लिये ही मिला, इसे तूं व्यर्थ के कार्यों में ही मत खो। तन धन जोबन माया थिर नहीं रहती है। जैसे बादल की छाया थिर नहीं रहती है। म:फ: है कि मनुष्य शरीर अमूल्य है। मूरख इसे सस्ता जानता है।

卐 हरजस पद राग धुन प्रभाती (१२) 卐

हरि को भेद नियारो रे, लखे कोई संत पियारो रे॥ टेर॥
मुक्त को भेद नियारो रे, जाणे कोई जाणन हारो रे॥ १ ।
गोविन्द है ज्यूं गावो रे, जिके मोने संत मिलावे रे॥ २ ॥
हरि ब्रह्म है ज्यूं बतावे रे, ईस्यो कोई मोय जतावे रे॥ ३ ॥
गुरां बिन भेद न पावे रे, जके सुण दोय बतावे रे॥ ४ ॥
मुक्त कूं नांव बणायो रे, करमा सूं नरक ठेरायो रे॥ ५ ॥
सुखदेव सतगुरु पाया रे, घट घट में बह्म बताया रे॥ ६ ॥

परमात्मा का भेद अलग है कोई संत ही इसका अनुभव करते है। मोक्ष का भेद भी अलग है। इसे कोई जानने वाला ही जानता है। जिस विधि से भजन करने से ने: अँच्छर रूपी गोविन्द की प्राप्ति हो वैसा कोई संत हो तो मुझे मिलावो। परमात्मा का जो ब्रह्म का पद है। उसकी प्राप्ति का मुझे कोई रास्ता बतावे। सतगुरु केवली भगवंतो के बिना भेद नहीं मिलता, दूसरे साकार व निराकार दोनो को ब्रह्म बताते है। मुक्ति प्राप्त करने के लिये परमात्मा का नांव बनाया है। नरको में जाने के लिये बुरे कर्म है। म:फ: है कि सतगुरु के अणभै ग्यान की प्राप्ति होने पर घट घट में ब्रह्म की प्राप्ति हो जाती है।

卐 हरजस पद राग होरी (१) 卐

संईया खेलो फाग होरी आई। आज आछी पुल पाई, आ तो रूत बसन्त चल जाई॥ टेर॥
अवगत देव निरंजन सुन्न में, ज्यां संग खेलो जाई।
अनन्त कोट साधु जन खेले, नाद घुरे एक गाई॥ १ ॥
शील संतोष सांच लिया, मनवो भजे है निरंजन राई।

अंतर मांय अखण्ड धुन लागी, गिगन मंडल घर मांही ॥ २ ॥
सांस उसांस पिचरका छूटे, ज्ञान गुलाल उडाई।
निज कण नीर नांव ले मिलिया, आठ पहर एक सांई ॥ ३ ॥
सब तन खोज अगम घर पहुंता, आद हमारे मांही।
जन सुखराम मगन रम हुवा, राम मिल्या हर आई ॥ ४ ॥

आत्मा सब ईन्द्रियों से कहती है कि सतगुरु विधि से भजन करने में लगो, यही फाग का आना व होरी खेलना है। यह मनुष्य शरीर मिला है यही अच्छी पुल आई। मनुष्य शरीर पाकर भजन नहीं करना ही बसन्त ऋतु का जाना है। पारब्रह्म परमात्मा का निरंजण निराकार पद में सतशब्द का अनुभव हो रहा है यही उसके साथ खेलना है। अनन्त कोट संतो ने उस पद की प्राप्ति की है। शब्द की धुनी का अनुभव होना ही नाद का घुरना है। शील सांच सन्तोष व विश्वास के साथ मन लगाकर सांस उसांस में भजन करना ही निरंजन राय को भजना है। ब्रह्मण्ड से पारब्रह्म से ऊपर गिगन मण्डल में सतशब्द की धुनी का अखण्ड अनुभव होना ही अन्तर में धुन लगना है। सांस ऊसांस में भजन करना ही पिचरका छोडना है। ज्ञान करना ही गुलाल उडाना है। निज नांव कण और नांव पानी की तरह है। उसका रात दिन भजन करना ही एक सांई याने परमात्मा की भक्ति करना है। सब शरीर सोधकर के: पद की प्राप्ति करना ही अगम घर पहुंचना है। इसका अनुभव अन्दर में होता है, यही आद हमारे मांही है। म:फ: है कि उस पद की प्राप्ति होने से आनन्द हो रहा है। रामजी शरीर में मिल गये है। यही राम मिल्या हर आई है।

卐 हरजस पद राग होरी (२) 卐

सुन्न में खेलुं सायब संग होरी। और शकल ही से तोडी, मैं तो एक रमैया सूं जोडी ॥ टेर ॥
सब सखियां मिल ओ अरथ बांध्यो, भली ही बात आ हो री ॥
वा पुल पोर घडी दिन धिन्न है, हम हर बेली जोरी ॥ १ ॥
पांच पचीस मिली सब संईयां, उलट शब्द लहोरी।
सुर नर देव घाट सब लांग्या, बैण ब्रह्म सूं कहोरी ॥ २ ॥
त्रिकुटी शहर जहां हर समरत है, जां जाय हेला दो री।
हरि रंग राग बिलास करिजे, आनन्द सुख तुम लहोरी ॥ ३ ॥
खेलो जाय पिया संग गढ़ में, बिच पडदा मति दो री।
कह सुखराम हरि सूं हिलमिल, लोत पोत होय रहोरी ॥ ४ ॥

सुन्न याने निरंजण निराकार पद में सतशब्द का अनुभव होना ही सायब के साथ होरी खेलना है और सबसे अलग होकर सतशब्द का अनुभव करना ही रामजी से जोडना व सबसे तोडना है। सब ज्ञानेन्द्रिया मिलकर यह विचार करती है कि यह होरी याने ज्ञान बडा श्रेष्ठ है और वो समय वो घडी वो दिन धिन है जिसके सूरत याने आत्मचेतन हर समय सतशब्द का अनुभव करती है। यह हर बेली जोरी है। पांच तत्व पचीस प्रकृतियों का शरीर में उलट कर सतशब्द का अनुभव करना ही उलट शब्द लहोरी है। सुर, नर, देव के जितने भी स्थान है उनको पार करके सतशब्द का अखण्ड अनुभव करना ही बेण ब्रह्म सूं कहोरी है। त्रिकुटी में शब्द का अनुभव होना ही जां जाय

हेला दो री है। शब्द का अनुभव कर आनन्द आना ही हरि रंग राग बिलास करना है व आनन्द सुख लेना है। ब्रह्मण्ड पार ब्रह्म से ऊपर के: पद में सतशब्द का अनुभव करना ही उसके साथ खेलना व बीच परदा नहीं देना है। म:फ: है कि आ: पद में लय होना ही लोत पोत होना है।

हरजस पद राग होरी (३)

संतो अगम गेल गत न्यारी। ज्यां जांणी ज्यां ब्रह्म तज्यो, तजी राम पियारी॥ टेर॥
ने करमी ने नहीं पिछाणे, जब लग जोगी नांही।
ज्ञान ध्यान की लगी समाधि, है तो जुग के मांही॥ १॥
कास मेर लग करे कासटा, काया कसणी भारी।
मन चावे सो कर बतावे, है पको संसारी॥ २॥
सुण अवतार अलख सो बाजे, पारब्रह्म के कोई।
अखर ब्रह्म तजो जोत सरूपी, जगत शब्द है दोई॥ ३॥
ओ बैराग जगत नहीं बाजे, राजा बादशाह नहीं होई।
कह सुखराम ना है निरख वालो, लखसी बिरला कोई॥ ४॥

संतो से फ: है कि के: पद की प्राप्ति का साधन सबसे अलग है। जिन्होंने के: पद आ: पद की प्राप्ति की है वो ही माया व ब्रह्म के पद से अलग हुये है। यही ब्रह्म व राम प्यारी का तजना है। ने करमी का पद के: पद है उसका अनुभव नहीं करते है। तब तक जोगी याने करमो से शुभ अशुभ करणियो से अलग नहीं है। मन से ज्ञान धारण करते है, ज्ञान की समाधि लगती है, वो जगत में ही है याने तीन लोको में रहने का ही साधन है। शरीर को बहुत कष्ट देकर कई तरह के बहुत साधन करना ही काया कसणी भारी है, इस मन में जो इच्छा होती है वो ही करके बता देते है, याने परचा देते है। यह सब बाते संसार की है। सुणो अवतारो को कोई अलख बताता है और कोई पारब्रह्म बताते है। अक्षर ब्रह्म का ज्ञान जो आत्म चेतन के आधार पर रहता है। वो भी छोडो। श्वांसा के आधार के जो शब्द है। ओऊं सोऊं है वो जगत में ही फल देने वाले है। जगत में रहने वाला बैरागी नहीं होता है, जैसे राजा बादशाह नहीं हो सकता है। म:फ: है कि के: पद आ: पद की प्राप्ति का अणभै ज्ञान धारण करने वाले बिरले ही है।

卐 हरजस पद राग भवन (१) 卐

समरथ साहेब नित भजो ये हेली, हर भजिया डर सब जाय॥ टेर॥
आठ पोहर चौसठ घडी ये हेली, नाम रह दिल मांय।
सो साधु जन धिन है ये हेली, वांरा चरण छिवीजे जाय॥ १॥
ध्यान लग्यो ब्रह्मण्ड में ये हेली, त्रकुटी शहर मंझार।
सो साधु जन राम है ये हेली, वां रे नित डोलिजे लार॥ २॥
नो दरवाजा लांघ के ये हेली, दशवों उघाड़े जाय।
वे साधु जन केवली ये हेली, वांरा चरण रहो लपटाय॥ ३॥
तीन ताप जन जीतिया ये हेली, नव तत लिंग शरीर।
सो जन अवगत आप है ये हेली, वां सूं मिलत न किजे धीर॥ ४॥

जन सुखदेव कह सांभलो ये हेली, कर सतगुरु की सेव।
पहुंचावे निज धाम कूं ये हेली, जहां है निरंजण देव॥ ५॥

हेली याने आत्मा से कह रहे है कि परब्रह्म परमात्मा के नांव व निजनांव की भक्ति करना ही समरथ साहेब को भजना है। उनका भजन करने से सब डर चले जाते है। आठ पोहर चौसठ घडी याने नांव को एक क्षण भी नहीं भूलते, ऐसे साधु ही धिन है। उनके चरण स्पर्श करो याने ज्ञान धारण करो, जिनका त्रिकुटी शहर याने पारब्रह्म से आगे सतशब्द का ध्यान होता है। वो साधु और जन रामजी के बराबर है उनकी संगत करो। नो दरवाजो को पार करके दशवां द्वार खोलते है तथा के: पद की प्राप्ति करके रात दिन सता समाधि रहती है वो साधु केवली है। उनका अणभै ज्ञान धारण करो, तीन ताप व नवतत लिंग शरीर से अलग हो कर के: पद की प्राप्ति कर पूर्ण परमानन्द में लय हो गये है। वे जन अवगत आप है। वो परमात्मा ही है, उनका अणभै ज्ञान धारण करने में देरी मत करो। म:फ: है कि सब सुणो, सतगुरु का केवल ज्ञान धारण करो। उनका ज्ञान धारण करने से निरंजन निराकार सत चित आनन्द परमात्मा है उसकी प्राप्ति हो जाती।

卐 हरजस पद राग बधावा (१) 卐

म्हारे पावणा परमगुरु आज, संया आवो अे।
म्हारे आया अे हरि का जन आज, संया आवो अे॥ टेर॥
आवो अे गावो संया, आणंद बधावा।
म्हारे आंगणिये अे साधां रो समाज, संया आवो अे॥ १॥
कथा अे प्रसंग हिलमिल, हरिगुण गास्यां।
म्हारे मेहेर करी है महाराज, संया आवो अे॥ २॥
किणीयक सुकरत संया, सतगुरुजी मिलिया।
कोई किणी अे मानव तन साज, संया आवो अे॥ ३॥
ओ मानव तन संया, ब्रह्मादिक बंछे।
कोई राम शिंवर किज्यो काज, संया आवो अे॥ ४॥
सोना रो सूरज म्हारे, इण पुल ऊगो।
म्हारे घर बैठा गंगा आई आज, संया आवो अे॥ ५॥
लख चौरासी संया, दुखडा री फांसी।
कोई हुवो अे बहोत अकाज, संया आवो अे॥ ६॥
इण भवसागर म्हारा, सतगुरु जी तारे।
कोई आपरा बिडद की है लाज, संया आवो अे॥ ७॥
सुखदेव सुख में म्हारो, मनवो जी झूले।
म्हारे साध सदाई शिरताज, संया आवो अे॥ ८॥

सब सहेलियो से म:फ: है कि आज मेरे सतगुरु परमगुरु मेरे घर पर पधारे है। मेरे परमात्मा के जन घर पर पधारे है तुम सब आवो। आकर आनन्द बधावा गावो, मेरे घर आज संतो का समाज आया है। तुम सब आवो। संतो के पधारने से कथा प्रसंग होगी, हिलमिल परमात्मा का गुणनुवाद

गायेंगे। मेरे पर पूर्ण कृपा करके पधारे है। तुम सब आओ। कोई बडे पुण्य के फल से मनुष्य जन्म मिला है। इस मनुष्य जीवन की इच्छा ब्रह्मा, विष्णु, महादेव भी करते है। रामजी की भक्ति कर अपना कार्य याने परमात्मा की प्राप्ति कर लो। सतगुरु कृपा करके मेरे घर पर पधारे है यही सोना का सूरज इस पूल में उगना है व घर बैठे गंगा आना है। तुम सब आवो। चौरासी लाख योनियो का दुख भोगना ही दुखडा री फांसी है, बोहत भारी अकाज हुआ है। तुम सब आवो। इस भवसागर याने चौरासी से मेरे सतगुरु ही तारेंगे, वो अपने बिडद की लाज रखकर चौरासी का दुख मिटायेंगे। तुम सब आवो। म:फ: है कि संतो की कृपा से मेरा मन चोइसो घंटे सुख आनन्द अनुभव करता है। यही मन का झूलना है। संत मेरे सदा ही शिर के ताज है।

卐 हरजस पद राग बधावा (२) 卐

चालोनी रे हंसा अपणे, राम जना रे देश। वां पद कूं बंचे सदा रे, शिव सनकादिक शेष॥ टेर॥

या जुग में थिर कुछ नहीं रे, सुख दुख बारम्बार।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश सारा, फिर फिर ले अवतार॥ १॥
सुर नर सब सांसे पडया रे, जंवरो मांडयो जाल।
पीर पेगम्बर मुनी जना रे, से नही बचा काल॥ २॥
जामण मरणा जहां नहीं रे, जहां नहीं सांसो सोग।
मोहो माया व्यापे नहीं, म्हारा सतगुराजी रे लोक॥ ३॥
वा घर में नित ऊपजे रे, मुगता मोती हीर।
अनन्त हंस केल्या करे, कोई सुन्न सागर रे तीर॥ ४॥
बोहता हंस बिराजिया रे, अजहूं बोहता जाय।
भय दुख तो व्यापे नहीं, म्हारा सतगुराजी रो साथ॥ ५॥
केशर बरणा मारगा रे, आवे अमर बिवाण।
सामा संत बधावसी रे, धिन धिन करता बांण॥ ६॥
अधर दीप वो जिगे मिगे रे, ज्यां में अमर अेवास।
निरभे संत बिराजिया रे, ज्यां रो नहीं है बिणास॥ ७॥
सदा सरीसी अवस्था रे, अमर संता री देह।
अनंत जुगा नहीं बिछडे रे, म्हारे नित नित नवला नेह॥ ८॥
जन निपजे मरत लोक में रे, जय जय होय सुरलोक।
बटे बधाया उण लोक में रे, कोई संत पधारे मोख॥ ९॥
अगम अवाजा गेब की रे, गरज रहयो बैराट।
भवन भवन में चानणो रे, वांरो बदन करे भरलाट॥ १०॥
बार बार नर देही नहीं रे, करल्यो अपणो काज।
जन सुखिया इण जीव की रे, म्हारा सतगुरांजी ने लाज॥ ११॥

हे हंसा अपने राम जना के देश चलो, जिस पद की इच्छा, शिव, सनकादिक, शेष जी रात दिन करते है। इस जुग में कुछ भी थिर नहीं है, सुख दुख भी बारम्बार बराबर आते रहते है। बह्मा,

विष्णु, महादेव जो सृष्टि के कर्त्ता है, इनकी भी आयु अवधि है और आते जाते रहते है। देवता व मनुष्यों के सब के जन्म मरण का सांसा लगा हुआ है। काल ने सब पर जाल मांड रखा है। पीर पैगम्बर मुनी जन भी काल से नहीं बच सकते। इसलिये सतगुरुजी के लोक चलो, जहां जन्म, मरण, सोग, मोह, माया नहीं है। उस घर याने सतलोक में रोजाना हीरे मोती उपजते है और अनन्त हंस केल्या कर रहे है याने आनन्द ले रहे है। बहुत से हंस वहां विराजमान है और वहां का आनन्द ले रहे है। बहुत से अब वहां जा रहे है, वहां पहुंचने पर कोई भय दुख नहीं रहता है। जो यहां ऐसी भक्ति करते है उन हंसो को लेने के लिये अमर विमान आता है और केसर वर्णा मार्ग से लेकर जाता है। उस पद में बैठे संत ऐसे जाने वाले हंस के सामने जाकर उनकी अगवाणी करते है, बधाते है व उन्हें धन्य धन्य करते है। अधर दीप जो स्वयं प्रकाशवान देश है, उस पद की प्राप्ति होने पर हंस अमर हो जाता है। सदा सरीसी अवस्था याने सब हंसो का एक ही दिव्य रूप होता है। उस पद की प्राप्ति होने पर हंस कभी भी नहीं बिछडता। वहां पर सभी की अवस्था एक जैसी रहती है, और जन्म मरण मिट जाता है। अनन्त जुग बीत जाने पर भी वहां से नहीं बिछडता है। और रोजाना नये नये आनन्द होते है। जो मृत्युलोक में आकर ऐसी भक्ति करते है उन भक्तों की देवलोक में जय जय कार होती है। और के: पद में बधाई बंटती है कि आज मृत्युलोक से कोई संत मोक्ष में पधार रहे है। संतो के मोक्ष पधारने पर इसके आगे सतगुरु पद में अगम आवाजे शब्द की आती रहती है। और सारे शरीर में शब्द का अनुभव होना ही बेराट का गरजना है, सब स्थान व सारे शरीर में सतशब्द का अनुभव होना ही भवन भवन में चानणो है व बदन का भरलाट करना है। सतगुरु केवली भगवंतो के अणभै ज्ञान से भेद लेकर सतगुरु पद की प्राप्ति करना ही अपना काज करना है। सतगुरु केवली संतो की कृपा से ही जीव को उस पद की प्राप्ति हो सकती है। यह मनुष्य जन्म बार बार नहीं मिलता है।

卐 हरजस पद राग बधावा (३) 卐

म्हारा गुरांजी रे देश, चालो अे संईयां म्हारी।
म्हारा सुखां रां सागर, म्हारा जीवां रा तारण, सायब वहां बसे अे॥ टेर॥
दूरा सा देश गुरांजी रा छाना, बेद कतेब न जाने कुराणा।
शिव सनकादिक शेष पुकारे, हां अे तूं तो पूरा गुरु शिर धारी अे॥ १॥
पिव पिव करती या बिरेहन जागी, पांच सखी मिल शिवरण लागी।
प्रेम बधावा मन घर बाज्या, हां अे या तो प्रीतज आंण पुकारी अे॥ २॥
म्हारा हिरदा में झिलमिल शब्द ऊजाला, गुरां म्हारा जोई है दीपक माला।
जठे गोऊं सूं तार पोऊं सूं मोतीडा, हां अे म्हारा हिवडा में हार हजारी अे॥ ३॥
आत्म बीण नाभ घर बागी, संखरी घोर गिगन जाय लागी।
अनहद झालर भंवर गुंजारा, हां अे आ तो मुरली री टेर निहारी अे॥ ४॥
शील सिणगार सजे सन्त सूरा, उलट पिछम दिश बाजे है तूरा।
नांव तेज मुख बरसे है नूरा, हां अे उण सूरत री बलिहारी अे॥ ५॥
त्रिकुटी तखत पर नोपत बाजे, सब देव तरसे है दरशण काजे।

जय जय बांणी बरसे है हीरा, हां अे वारां चरण बंधे पुर सारी अे॥ ६ ॥
अनन्त भाण अविन्यासी री शोभा, सूरत निरत संईयां चाली है जोबा।
अला पिंगला सुखमण नारी, हां ये वारो रूप निहारत हारी अे॥ ७॥
अगम देश जहां अविचल थाना, अनन्त कोटि संत धरे है ध्याना।
लील बिलास आनन्द सुख नाना, हां अे वा तो सरब सवागण नारी अे॥ ८ ॥
अविन्यासी बर आपा ही बरस्यां, अपना गुरांजी री सेवा करस्यां।
कह सुखराम बीरम गुरुदाता, हां अे मैं तो बेह जाती भवजल तारी अे॥ ९ ॥

आत्मा सब ईन्द्रिया रूपी सहेलियो से कह रही है कि मेरे सतगुरु के देश चलो, उस पद में सुखो के सागर व जीवों के तारण परमात्मा का अनुभव होता है। सतगुरु का देश दूर है। उस पद की वेदों व कुराणो के ज्ञान से प्राप्ति नहीं होती। शिव सनकादिक शेषजी भी उनके नांव की भक्ति करते है इसलिये तुम तो पूर्ण परमानन्द की प्राप्ति करो। पांच विषयो को वश में करके विरह प्रेम के साथ भजन करना ही पिव पिव करके विरहन का पुकारना है। सारे हृदय व सारे शरीर में शब्द का अनुभव होना ही हिरदा में झिलमिल होना व दीपक माला का जोना है। जहां सूरत जाती है वहां ही शब्द का अनुभव होना ही जठे गोऊं सूं तार पोऊं सू मोतीडा है। हृदय में बडी भारी खुशी होना ही हिवडा में हार हजारी है। नाभी में शब्द आकर ब्रह्मण्ड तक सारे शरीर में अनुभव होना ही आत्म बीण का नाभ घर में बाजना है। यही संखरी घोर गिगन घर लगना व अनहद झालर भंवरो का गुंजार करना व मुरली की टेर सुनना है। शीलव्रत धारण करके भजन करके पिछम दिशा में उलटकर शब्द का अनुभव होना ही तूर का बाजना है। शब्द का हर समय अनुभव होना ही नांव तेज मुख पर नूर का बरसना है। ऐसे ही महापुरूषो की बलिहारी है। त्रिकुटी तख्त याने ब्रह्मण्ड पार ब्रह्म से ऊपर के: पद में शब्द का अनुभव होना ही नोपत बाजना है। सब देवता भी उस पद की प्राप्ति के लिये तरसते है। सारे शरीर में सतशब्द का के: पद में अनुभव होना ही जय जय बांणी और हीरा बरसना है। सारे शरीर में ध्यान होना ही चरण बंधना है। अविनाशी पद की शोभा अनन्त सूर्यो के प्रकाश के समान है। सूरत निरत द्वारा उसका अनुभव हो रहा है। अला पिंगला सुखमणा में भजन होकर उससे अलग पूर्ण परमानन्द में लय होने के लिये ही उसको निहारना है। के: पद व आ: पद ही अविचल थाना है। अनन्त संतो ने उस पद की प्राप्ति की है। पूर्ण आनन्द का अनुभव होना ही गुरु की सेवा करना व अविनाशी बर को बरना है। म:फ: है कि बीरमदासजी सतगुरु की कृपा से ही मुझे उस पद की प्राप्ति हुई, नहीं तो मैं भी संसार के साथ बह जाता।

卐 हरजस पद राग बधावा (४) 卐

आज भलाई दिन ऊगीयो, म्हारा सतगुरु मिलिया आय हो महाराज॥ टेर॥
आंणद ऊछाव बधावणा, सामा मिलसां जाय महाराज।
केसर लूंग इलायची, बहोत चडाऊं जाय महाराज॥ १ ॥
ढोल बजावत गावता, लेसां बधाय बधाय महाराज।
प्रदिक्षणा प्रणाम सूं, लुललुल लागूं पांय महाराज॥ २ ॥
अगर चन्दन सो कुम कुमा, मिंदर ढुलाऊंली आय महाराज।

फूल मंगाऊली जाफना, सेज बिछाऊंली आय महाराज॥ ३॥
भोजन बोहो प्रकार का, लेसूं इधक बणाय महाराज।
सतगुरु जीमें आंगणे, पंखा ढुलाऊं बाव महाराज॥ ४॥
ज्ञान कथे बांणी करे, करसी अरथ अनेक महाराज।
कह सुखदेवजी भरम भानसी, नाना विध का जाण महाराज॥ ५॥

आज श्रेष्ठ दिन ऊगा है सो सतगुरु के दर्शन हुये है। आनन्द उछाव के साथ सामने जाकर के दर्शन करेंगे। केसर लूंग व ईलायची ले जाकर उनके भेंट करेंगे। ढोल बजाते हुये, गाते हुये उनको बधाकर अपने घर ले जायेंगे। प्रदक्षिणा प्रणाम करके उनके चरणो में पडेंगे। अगर चन्दन और कुमकुम से मकान को ढुलाऊंगी व सुगन्धित फूल मंगाकर उनकी सेज बिछाऊंगी। अनेक प्रकार के अधिक से अधिक भोजन बनाकर उसको मेरे मकान में जिमायेंगे और उनको पंखा ढुलायेंगे। वे ज्ञान की कथा करेंगे बाणी का उपदेश करेंगे और अनेक तरह के अरथ समझायेंगे याने वाणी के निरपक्ष निरणे की महिमा करेंगे। म:फ: है कि इस तरह अनेक तरह से हमारे भरमों को मिटायेंगे।

卐 हरजस पद राग बधावा (५) 卐

म्हारा सतगुरु आया ये सैयां, सब शहरा बटत बधाईयां॥ टेर॥
नाम नूर वांरे मुख पर सोहे, तेज पूंज प्रकाशा।
हंसा काज लिया अवतारा, ब्रह्म देश का वासी॥ १॥
भक्त निशान अडिग ले रोप्या, घूरे अनाहद बाजा।
बेमुख जीव किया सब सनमुख, साध शकल शिर राजा॥ २॥
अणभै ज्ञान अगम परवाना, दूर देशान्तर जावे।
प्रेम भाव पारसद अगवाणी, सूता जीव जगावे॥ ३॥
भरम अंधेरी में सूरज उगा, अृमत का मेह बूंठा।
जन सुखराम मिल्या गुरु बीरम, शब्द उजाला दीठा॥ ४॥

(पहले सुखराम जी म. के समय उनके गुरु बीरमदास जी थे तब उनके गुरु के प्रति ये भाव थे)

म:फ: है कि आज हमारे गांव में ऐसे ओधाधारी सदगुरु पधारे है, पूरे शहर में बधाईयां बट रही है। उनके मुख पर नांव का नूर चमक रहा है। जैसे कोई तेज पूंज का प्रकाश हो। हंसवृति आत्माओ का उद्धार करने के लिये ही ब्रह्म देश से अवतार लेकर पधारे। सताधारी संत केवल की भक्ति का ही उपदेश करते है। यही अडिग निशान रोपना है। रटणा व बिना रटणा ही शब्द की ध्वनि हो रही है। यही अनहद बाजा घुरना है। जो इस भक्ति से बेमुख थे उनको ज्ञान के द्वार भक्ति में लगाकर सन्मुख किया। ऐसे संत सबसे श्रेष्ठ है। सतशब्द का अनुभव व साधन अणभै ज्ञान से ही के: पद आ: पद की प्राप्ति कराता है। यही अगम परवाना व दूर देशान्तर जाना है। प्रेम व भाव से भजन कर भक्ति में लगना ही पारसद का अगवाणी होना है तथा सुता जीव का जागना है। केवल ज्ञान का प्रकाश होकर भरमों का मिटना ही सूरज उगना है। अखण्ड आनन्द का अनुभव होना ही अमृत का मेह बूठा है। म:फ: है कि सतगुरु बीरमदासजी महाराज की कृपा से ही सतशब्द के प्रकाश का अनुभव हुआ है।

卐 हरजस पद राग बधावा (६) 卐

आवो ये बधावां सतगुरु आपणा, प्रभुजी पधारया म्हारे आज।
चोक पुरास्या अे मोतीडा बधावस्या, रामजी बुवा बिडद की लाज॥ टेर॥
पूरब दिसा अे बगड सुवावणा, पिछम दिशा ने होय रही आवाज।
प्रेम रा हिलोला अे हिवडे हरक घणा, म्हारे कोईक सुफल शुभ काज॥ १॥
प्रेम रा हिलोला अे हिरदे हर आविया, नाभी नगर उछाव।
जै जै हो रहया ये त्रिवेणी री भवना, देखो म्हारा गुरांजी रो भाव॥ २॥
रजनी बिलाई अे सूरज उगिया, बागा है अनहद तूर।
झीगामिग लागी ये मन्दिर सुहावणो, निरखूं म्हारा गुरांजी रा नूर॥ ३॥
ईमरत घटा ओलरी अे, अनहद गरजिया ऊगा है अनंताई भाण।
हीरा मांड लागी अे तिरबेणी रा चौक में, जठे म्हारा गुरांजी रो ध्यान॥ ४॥
आवो बधावो अे गावोनी बधावणा, आया म्हारा सिरजण हार।
जाबा नहीं देस्यां अे जतन करावस्यां, अे तो म्हारे प्रांण आधार॥ ५॥
कोई पूरब पुन्न प्रगटिया अे सैयां सतगुरुजी मिलिया, भजस्या म्हें तो सांस ऊसांस।
अेक ऊणारथ है म्हारा मन बसे, राखो रामजी चरणा रे पास॥ ६॥
जन सुखदेवजी की हो हरजी सूं बिनती, हूं छूं रामजी अबला अनाथ।
ओ तो नूर निहारूं हो पलक न बिसरूं, दिज्यो म्हाने साधूडा रो साथ॥ ७॥

आत्मा ईन्द्रियों से कह रही है कि सतशब्द की जागृति होना व भाव से भजन करना ही सतगुरु का बधाना व प्रभु का पधारना है। हृदय में प्रेम भाव से भक्ति करना ही चोक पुराना व मोतीडा बधाना है। परमात्मा का स्वरूप सतशब्द का प्रगट होना ही रामजी का बुवा बिडद की लाज है। पूर्व दिशा के सब स्थानों में शब्द का अनुभव करना ही पूर्व दिशा रा बगड याने रास्ता सुवावणा होना है व पूर्व के सब स्थानो को पार करके पिछम दिशा में उलटकर शब्द का पिछम के स्थानों में अनुभव होना ही पिछम दिशा में आवाज का होना ही प्रेम के साथ सतशब्द की भक्ति होती है तो हृदय में बडी खुशी होती है, यही हिवडे हरक घणा है। मेरा कोई आज अच्छा भाग्य है जो सतशब्द के ज्ञान की प्राप्ति हुई है, यही सुफल शुभ काज है। प्रेम के साथ हृदय व नाभी स्थान में सतशब्द का अनुभव होना ही हृदय में हर का आना व नाभी में उछाव होना है। त्रिकुटी में शब्द का अनुभव होना व दोनो कानो में अनेक तरह की अनहद की ध्वनिया आती है, यही त्रिवेणी के स्थान पर जय जयकार होना है, सतशब्द का अनुभव होना ही गुरुजी का भाव है। भरम व अज्ञान मिटाकर के: पद आ: पद की प्राप्ति के ज्ञान का उदय होना ही रजनी का बिलाकर सूरज उगना है। शब्द की ध्वनि रटणा व बिना रटणा ही होती है और उसका अनुभव होना ही बागा अनहद तूर है। हजार पांख के कंवल पर सतशब्द का अखण्ड अनुभव होना ही झिगमिग लगना व मंदिर सुहावण होना है, यही दर्शन करना है। त्रिवेणी के चौक याने ब्रह्मण्ड पार ब्रह्म में अनन्त पांख का कंवल पर सतशब्द का अखण्ड अनुभव होना ही ईमरत घटा ओलरी व अनहद की गरजना होना व अनंताई सूर्य का उगना है व गुरांजी रो ध्यान होना है, सब सैयां आओ और मिलकर बधावा गावो, क्योंकि म्हारा सतगुरु घर पर पधारे है। एक क्षण भी शब्द का ध्यान से अलग नहीं होना ही जाबा

नहीं देस्या व जतन कराना है। यह तो मेरे प्रांणो का आधार है। कोई बडा भारी पुण्य प्रकट हुवा है जिसके फल से सतगुरु के अणभै ज्ञान की प्राप्ति हुई, सांस उसांस में भजन करना ही भजस्यूं सांस उसांस है, मेरे मन में यही इच्छा है कि ब्रह्मण्ड पारब्रह्म से ऊपर के: पद में सतशब्द का अखण्ड अनुभव होता है उसे अेक क्षण भी नहीं भूलूं। यही रामजी का चरणा के पास रहना है। म:फ: है कि आत्मा रामजी से प्रार्थना कर रही है कि मैं अबला व अनाथ हूं मुझे ऐसे केवली संतो की संगत कराओ, जिससे के: पद में सतशब्द का अखण्ड ध्यान होता है। उसको एक क्षण भी नहीं भूलूं, यही पलक नहीं बिसरना व नूर का निहारना है।

卐 हरजस पद राग केहरा (१) 卐

ऊण सूरत की बलिहारी हो, लगी नाम ऊर धार हो॥ टेर॥
जिण मुख रसणा राम रटत है, धिन जन यो संसारा हो।
चरण बंध्या सूं पाप झड़त है, भागे भरम अंधारा हो॥ १॥
शेष महेश विष्णु कहे धिन है, सो जन हिरदे धारा हो।
वां जन कू सब देवत बंदे, धिन धिन भाग हमारा हो॥ २॥
धरम पुण्य जिग्य जोगज किया, वां जन के सब लारा हो।
केवल राम भजन ईधकारी, पांच गिगन चढ मारया हो॥ ३॥
कह सुखराम आप जन तिरया, और अनन्ता ही तारे हो।
ब्रह्मा वेद भागवत कहे, सत कर मानो विचारा हो॥ ४॥

उन महापुरूषों को धिन है जिनके अखण्ड भजन हो रहा है, यही नाम ऊर धारा है। जिनके मुखार बिन्द में रसना से हर समय सांस उसांस राम राम होता है वो ही जन संसार में धिन है। केवली भगवंतो के अणभै ज्ञान को धारण करने से पापों का क्षय होता है व भरम रूपी अंधकार मिटता है। ऐसी भक्ति करने वालो को, शेष जी ब्रह्मा विष्णु महादेव धिन कहते है। जो त्रिगुणी माया का दिया मनुष्य शरीर पाकर केवल भक्ति करते है अेसे हरि के जनो की देवता भी वंदना करते है। हमारा भाग्य धिन है जो ऐसे संतो के दर्शन हुये है, ऐसे संतो का अणभै ज्ञान धारण करने से धरम पूण्य जिग जोग क्रिया सब ज्ञान पीछे रह जाते है। ऐसे सतस्वरूप की भक्ति करने वाले संत ही पांच तत्वो से अलग होकर व पांचो विषयो को मारकर के: पद आ: पद की प्राप्ति करते है। यही पांच गिगन चढ मारना है। म:फ: है कि ऐसे ही महापुरूष स्वयं का उद्धार करके अनन्त जीवो का आप पृथ्वी पर है तब भी तथा मोक्ष पधारे बाद भी अणभै ग्यान से उद्धार करते है, ब्रह्मा व वेद भागवत सब कहते है कि इस बात को सच्ची समझो।

卐 हरजस पद राग केहरा (२) 卐

हर गुरु दोय ना जाणे हो साधो, ज्ञान करो सुण ठाणो हो॥ टेर॥
असंख जुगां में हर गुरु अेकी, न्यारा नाही बखाणे हो॥ १॥
शब्द भेद सो ब्रह्म कहिजे, देह मुख होय सुणायो हो॥ २॥
गुरु मिलिया जब हरिजी मिलिया, अंतर नांय रेहाणा हो॥ ३॥
गुरु पूज्या जहां हर कूं पूज्या, न्यारा नहीं रेहाणा हो॥ ४॥

तिरिया जाय करे प्रसादी, बालक मांय अघाणा हो॥ ५ ॥
पेड सिंचिया सबे सुख पावे, डाला बीज डेडाणा हो॥ ६ ॥
जन सुखराम मोख जो चाहिये, तो गुरु सूं दूर न जाणो हो॥ ७॥

परमात्मा व केवली भगवंतो व उनके अणभै ग्यान रूपी गुरु को दो मत समझो। केवल ज्ञान से इसका विचार करो। असंख जुगो से परमात्मा व सतगुरु याने सत ग्यान एक ही है अलग नहीं है। शब्द का भेद है वो ब्रह्म का स्वरूप है, उसे मुखारबिन्द से सुनाते है। सतगुरु की प्राप्ति से ही परमात्मा की प्राप्ति होती है। अन्तर नहीं रहता है। सतगुरु की पूजा करने से ही परमात्मा की पूजा हो जाती है। कोई अन्तर नहीं रहता है। जैसे गर्भवती स्त्री प्रसाद करती है तो गर्भ के बालक का पोषण होता है। पेड को पानी देने से पेड के पतो में डालियो में सब जगह पानी पहुंच जाता है। म:फ: है कि जिनको मोक्ष की प्राप्ति करनी है। उनको सतगुरु का अणभै ज्ञान धारण करना चाहिये।

卐 हरजस पद राग केहरा (३) 卐

सत की बात न मेलो हो साधो, सतशब्द ले खेलो हो॥ टेर॥
सत सूं धरण आकाशज थंबिया, चंद सूर रवि तारा हो।
सत सूं देवल चढ गयो इन्डो, सत सूं दुशमण मारया हो॥ १ ॥
सत सूं पोलज मेहेरी खोली, सत सूं फोज जिवाई हो।
सत सूं शीश मंगायो काने, पांडव गलया सब जाई हो॥ २ ॥
सत राख्या सूं पत रहे है, सहाय करे हर आई हो।
कह सुखराम जीव तन जातां, सत राखो ऊर मांही हो॥ ३ ॥

साधको से फ: है कि सत वचन बोलो व संतो के अणभै सत ग्यान को मत छोडो, सतशब्द में मिलने की भक्ति करो। सत के आधार से धरती आकाश चन्द्रमा सूर्य तारा ठहरे हुये है। सतशब्द की भक्ति करने से शरीर में व बाहर ब्रह्मण्ड से ऊपर उठता हुआ व पार ब्रह्म से आगे अधर सतशब्द का अखण्ड अनुभव होता है, यही देवल पर ईण्डो चढना है। पांचो विषयो को वश में करना ही दुश्मन को मारना है। सत याने पतिव्रता धारण करने से शहर की पोले बन्द हो गई थी सो उस पतिव्रता स्त्री के प्रताप से अपने आप खुल गई। सत के प्रताप से कैकयी ने मरी फोजो को जिन्दा कर दिया। सत के प्रताप से कृष्ण ने बर्बरीक का शिर मंगाया, सत रखने के लिये पांडव हिमालय में गले, सत रखने से परमात्मा उसका प्रण रखते है व उनकी सहायता करते है। म:फ: है कि जीव व शरीर भी छूट जाये तो भी सत मत छोडो।

卐 हरजस पद राग दीपचन्दी (१) 卐

सन्तो त्यागन भेव बताऊं, आद अंत मध ले गावूं॥ टेर॥
कासी सांड रह गायां में, कोहो कहा फल लेवे।
तोडे बाड खेत वो खावे, दुनिया कूं दुख देवे॥ १ ॥
बांज गाय सो कदे न ब्यावे, तामें क्या गुण होई।
चारो खावे गोबर न्हाके, यूं दुख पावे लोई॥ २ ॥

फूल फलां बिन बरछ बडो, ता पात न लागे।
काठ ताको अेसो कोमल, घडत घडत जूं भांगे॥ ३॥
चीना पिया बिना सब मर जावे, क्या बांज क्या ब्याई।
जन सुखराम काल में दुनियां, किसकूं नीरे लाई॥ ४॥

संतो से फ: है कि त्यागियो का आदि अन्त व मध्य का भेद बताता हूं। केसी किया हुवा सांड गायो में रहता है तो वह गायो को नहीं फलाता है। खेत की बाड तोडता है और खेत खा जाता है। यही दुनिया को दुख देना है। बांझ गाय कभी नहीं ब्याती है और उसके दूध दही मक्खन नहीं होता है व घास खाती है और उल्टा उसका गोबर उठाना पडता है, यही दुख देना है। वृक्ष तो बहुत बडा है परन्तु उसके फल फूल पते कुछ भी नहीं आते है व लकडी भी ऐसी कोमल होती है जो चीज बनाते बनाते टूट जाती है। मनुष्य जन्म धारण करने के बाद चाहे त्यागी हो, चाहे गृहस्थी हो, अगर यह सतशब्द प्राप्त नहीं किया तो जन्म मरण में आना पडेगा। यही चीना पिया बिना सब मर जावे है। म:फ: है कि अगर काल पड जाता है तो खुद का गुजारा भी नहीं होता है तो वे दूसरो की सेवा कैसे कर सकते है। अर्थात जब आत्मा जमराज जी के फंदे में पड जायेगी तब इसको कोई नहीं छूडा सकता है।

卐 हरजस पद राग दीपचन्दी (२) 卐

संतो भाई गृहस्थ भेव बताऊं, न्याव छांण सत गाऊं॥ टेर॥
ब्यायर का गुण सोज दाखूं, सुण लिज्यो सब कोई।
दूध दही घी गोरस बछियो, सुख पावे सब लोई॥ १॥
सुर नर मुनी जंगम जोगी, रिष हरिजन कुवावे।
वे गृहस्थ शकल कूं पूजे, सारा के गुण आवे॥ २॥
लडका लडकी पुतर जन्मे, तामें यह फल होई।
हर की भगत करे जो सूरो, सब कुल तारे लोई॥ ३॥
लडकी ब्याव धरम कर देवे, फेर भगत हुवे दासा।
जन सुखराम इसा गृहस्थ रे, त्याग जत सत से आछा॥ ४॥

संतो से फ: है कि मैं गृहस्थियों का भेद बताता हूं न्याव करके सत बात कहता हूं। ब्याई हुई गाय के गुण होते है। सब कोई सुणो दूध, दही, घी, छाछ व बछिया की प्राप्ति होती है। इससे सबको सुख होता है। देवता मनुष्य मुनि जंगम जोगी रिषी संत सबकी गृहस्थ सेवा करके सुख पहुंचाते है। यही गुण आना है। गृहस्थियों के लडका लडकी होते है वे शूरवीरता धारण कर भजन करते है तो कुल का उद्धार हो जाता है। लडकी का धर्म ब्याव करते है और दास भाव रखकर भक्ति करते है। म:फ: है कि ऐसे गृहस्थी त्यागियो जतीयो व सतीयो से अच्छे है।

卐 हरजस पद राग दीपचन्दी (३) 卐

पांडे पाखण्ड काय चलावो। सतशब्द बिना मुक्त न होवे, केवल हुनर लावो॥ टेर॥
एक ही ब्रह्म और नहीं कोई, तुम दुबध्या बतलाई।

मैं पूछू तूं ज्ञान विचारी, भिन्न कहां से आई॥ १॥
काया कष्ट करो बहु भांती, चोका नित लगावो।
अन्न बिना जो भूकज जावे, तो नांव बिना गत पावो॥ २॥
करसो बाड करे बहु गाडी, खेत बीज बिन बावो।
जे घर कोठा भरे नाज सूं, तो मोख नांव बिन जावो॥ ३॥
गहणो पेर सेज सिणगारी, सजे शकल विध सारी।
नांव बिना क्रिया ईऊ करणी, बिना पुरूष की नारी॥ ४॥
विधी आचार शकल ले किन्हा, देह का रूप कहावे।
जन सुखराम जीव को संगी, नांव ऋषि जन गावे॥ ५॥

पंडितो से फ: है कि पाखण्ड क्यों चलाते हो। सतशब्द के बिना मोक्ष नहीं होती है। सतशब्द के अलावा दूसरी जितनी भी शुभ अशुभ करणिये है वो हूनर है। ब्रह्म तो एक ही है। लेकिन तुम दो ब्रह्म बताते हो। याने साकार निराकार दोनो को ब्रह्म बताते हो। मैं तुमको यह पूछता हूं कि तुम ज्ञान से विचार करो कि यह दो ब्रह्म कहां से हो गये है। शरीर को बहुत कष्ट देकर हमेशा चौका लगाने से बिना अन्न के भूख चली जाती हो तो बिना नांव के मोक्ष हो सकती है। किसान बिना बीज बोये खेत की बाड मजबूत बनाकर नाज के कोठे भर लेते हो तो, बिना नांव के मोक्ष हो सकती है। स्त्री गहना पहनकर सेज सिणगारती है लेकिन बिना पुरूष के सुख नहीं आता। ऐसे ही बिना नांव के शुभ अशुभ करणियो से मोक्ष नहीं होती है। विधि व आचार सब शरीर के द्वारा होते है। म:फ: है कि सब ऋषि संत जन कहते है कि जीव के साथ चलने वाला एक परमात्मा का नांव व निज नांव ही है।

卐 हरजस पद राग दीपचन्दी (४) 卐

संतो भाई सो जन भक्त कमावे। मन के हात पवन की डोरी, सूरत निरत घर लावे॥ टेर॥
पांचू पिसण पगतल देवे, बीस पांच घेर लावे।
नित नारी सूं नेह दूणो, अे निश सेज रमावे॥ १॥
आसण ईडग अडोल नेहेचे, मन मारे तन माय।
नव से नार जगावे सूती, शहर रहे लिव लाय॥ २॥
मन की बात न माने अेकी, ज्ञान कहे ज्यां जाय।
जन सुखराम गुरां की आग्या, रहे राम लिव लाय॥ ३॥

संतो से फ: है कि वही परमात्मा का जन याने भक्त ही भक्ति कर सकता है जो सतगुरु विधि से सांस उसांस में सूरत निरत लगाकर भजन करते है। यही घर जाना है। पांच विषय शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध व पचीस प्रकृति को वश में करके सूरत लगाकर रात दिन भजन करे। आसण लगाकर मन का संकल्प विकल्प त्यागकर मन लगाकर निश्चय करके भजन करे, यही मन को तन में मारना है। जो नौ सो नाडीया सो रही है वो जाग जाय याने रग रग रोम रोम में ररंकार की ध्वनि होने लग जाय, यही सारा शहर लिव लगाना है। मन की एक भी बात को न माने और अणभै ज्ञान कहे सो करे, यही सतगुरु की आज्ञा है। हर वक्त रामजी से लिव लगाई हुई राखे।

卐 हरजस पद राग कानडा (१) 卐

तुम बिन आन और नहीं धारूं, तन मन जीत पचीसूं मारूं ॥ टेर ॥
नित उठ तोय पुकारूं सांई, मिल साहिब हर अन्तर मांई ॥ १ ॥
मेरे नित चोट शब्द की लागे, तुम मिलियां बिन करक ना भागे ॥ २ ॥
कह सुखराम यो जन्म अकाजा, जब लग अवगत परसूं न राजा ॥ ३ ॥

आत्मा रामजी से प्रार्थना कर रही है कि आपकी भक्ति के सिवाय शरीर रूपी आन वापस धारण नहीं करूं, तन मन से भजन करके पचीस प्रकृतियों को वश में करना ही पचीस को मारना है। हमेशा रात दिन आपकी भक्ति करूं, यही आपको पुकारना है। हे परमात्मा आप कृपा करके अन्तर में सता रूप से मिलो। सतगुरु के अणभै ज्ञान की चोटे रात दिन लग रही है परन्तु आपके मिले बिना मेरा दुख दूर नहीं होता है। म:फ: है कि यह जन्म व्यर्थ है, जब तक के: पद आ: पद की प्राप्ति नहीं करूं।

卐 हरजस पद राग कानडा (२) 卐

कृपा करो गुरां शिष कूं तारो, भरम करम मन ममता मारो ॥ टेर ॥
जनम जनम में बहु दुख पायो, तांते शरण तुमारी मैं आयो ॥ १ ॥
ऐसा निज भेव भेद मैं पाऊं, आवागमन बोहर नहीं आऊं ॥ २ ॥
तुम दाता मैं मंगता हूं तेरा, सुण साहिब गुरु समरथ मेरा ॥ ३ ॥
कह सुखराम दान देवो सांई, परम पद बिन लेस्यूं मैं नांही ॥ ४ ॥
कृपा करो दाता शिष कूं तारो, कृपा करो गुरां शिष कूं तारो ॥ ५ ॥

सतगुरु याने केवली भगवंतो व उनके अणभै ग्यान से प्रार्थना की जा रही है कि आप शिष का उद्धार करो। हे दाता कृपा करो। शिष का उद्धार करो। शिष के मन की ममता व भरम करम का नाश करो, जन्म जन्म याने जहां जहां भी जन्म लिया वहां पर बहुत दुख पाया, इसलिये अब मैं आपकी शरण में आया हूं। आपके निज ज्ञान की व भेद की मुझे प्राप्ति हो, जिससे मैं जन्म मरण से रहित हो जावूं। आप दान देने वाले हो और मैं मंगता हूं। हे परमात्मा और केवल ग्यान व केवली भगवंत गुरु महाराज आप मेरी प्रार्थना सुणो। म: सतगुरुजी से प्रार्थना कर रहे है कि आप परम पद की प्राप्ति करावो। इसके सिवाय मुझे दूसरा कुछ भी नहीं चाहिये।

卐 हरजस पद राग कानडा (३) 卐

गुरांजी की सरवर अवर न कोई, तीन लोक फिर देख्या है लोई ॥ टेर ॥
ऐसा गुरु ज्ञान बताया सांई, सहजां ही सहज मिल्या पद मांही ॥ १ ॥
देही के मांय दिखाया है देवा, तीन लोक शिर निज तत भेवा ॥ २ ॥
बिना कर पांव गिगन शिर आया, बिन नेणा हरि दरशण पाया ॥ ३ ॥
आप ही जोत ऊजाला है मांही, दशवें द्वार निरंजण सांई ॥ ४ ॥
कह सुखराम परम पद पाया, जहां बिछडया जहां जाय समाया ॥ ५ ॥

तीन लोक में फिर कर देखा है कि सतगुरु याने केवली भगवंत व उनके अणभै ग्यान के बराबर

संसार में कोई नहीं है। सतगुरु ने ऐसा अणभै ज्ञान बताया है। जिससे सहज ही सहज में परमपद में मिल गये। शरीर में सतशब्द की जागृति होना ही देही में देवता का दिखाना है। तीन लोक के ऊपर के: पद आ: पद की प्राप्ति होना ही तीन लोक सिर निज तत भेवा है। बिना हाथ पांव ही याने शरीर से किसी प्रकार की कसौटी नहीं करनी पडी सहज में ही सांस उसांस रटणा से के: पद आ: पद की प्राप्ति होना ही गिगन शिर आना है। बिना नेत्रो के याने चर्म चक्षु से सतशब्द के दर्शण नहीं होते। सूरत रूपी व दिव्य रूपी नेत्रो से सतशब्द हरि के दरशण पाया है। वो स्वयं प्रकाशित देश है और दशवें द्वार में ही निरंजन निराकार का पद है। म:फ: है कि इस तरह से परम पद की प्राप्ति हो गई व आत्मा के पारब्रह्म परमात्मा का ही आधार था, अब सतशब्द के साथ जाकर सत आनन्द में लय होना ही उसमें समाना है।

卐 हरजस पद राग कानडा (४) 卐

मैं तो एक शब्द सत लिया, साजन आन छोड सब दिया॥ टेर॥
जे आ मुगत बेद पढ होई, तो ब्रह्माजी ध्यान धरे क्या जोई॥ १॥
जे आ मुगत सिद्ध के मांही, दाणू भूत अगत क्यों जाई॥ २॥
करामात में जो फल पावे, तो मानुष देही देव क्यूं चावे॥ ३॥
जे आ मुगत बोहत बल सारे, तो शेष नाग क्यूं राम उचारे॥ ४॥
कह सुखराम परम पद न्यारा, सतगुरु शरणे लेत विचारा॥ ५॥

मैंने तो एक सतशब्द का ज्ञान ही धारण किया है और इस शरीर से जो भक्ति के पहले साधन करती थी वो साधन छोड़ दिये है। वेद पढने से मुक्ति हो जाती है तो ब्रह्माजी किसका ध्यान करते है। सिद्धाई बताने से मुक्ति होती है तो राक्षस भूत नरको में क्यों जाते है। देवताओं में बहोत करामात है और करामात बताने से ही यदि मोक्ष होती है तो देवता मनुष्य शरीर की इच्छा क्यों करते है। ज्यादा बलशाली होने से मुक्ति हो जाती हो तो शेष नाग रामजी की भक्ति क्यों करते है। म:फ: है कि परम पद सबसे अलग है, सतगुरु का अणभै ज्ञान धारण करने से ही उसकी प्राप्ति होती है।

卐 हरजस पद राग कानडा (५) 卐

जे आ मुगत भेष सूं पावे, सब ही मुगत काय नहीं जावे॥ टेर॥
खट दरशण सूं जे हर रिजे, घर का शकल काय नहीं सिजे॥ १॥
जोगी जंगम सेवडा सामी, घर मा फकर जगत सब कामी॥ २॥
अपणा अपणा धरम बतावे, खट दरशण भूला सब जावे॥ ३॥
सबका धर्म एक है भाई, खट दरशण क्या लोग लुगाई॥ ४॥
कह सुखराम बरण सब लोई, राम भजे डूबो नहीं कोई॥ ५॥

केवल भेख धारण करने से मोक्ष हो जाती है तो सब भेख धारण करके मोक्ष में चले जाते। खट दरशणियो से यदि परमात्मा राजी होते है तो वह अपने सब घर वालो को मोक्ष में क्यों नहीं भेज देते है। जोगी, जंगम, सेवडा, सामी घर मा याने शरीर से फकीर। लेकिन जगत की सारी कामनाये लगी हुई है। छ: दरशणी भी अपने अपने ज्ञान में भूल रहे है। सबका धरम एक है। चाहे खट दरशणी हो या स्त्री पुरूष हो। म:फ: है कि क्या जाति वाले क्या संसारी सब सुणो, जिन्होने

रामजी की भक्ति की है वो ही जन्म मरण से रहित हुये है यही नहीं डूबना है।

卐 हरजस पद राग कानडा (६) 卐

कुल की राह चले हर शिवरण सोई, दूजा राह आन भज कोई॥ टेर॥
सबका पिता रामजी कवाई, लख चौरासी सबके मांही॥ १॥
ब्रह्मा सूं ऊत होय आवे, सो तो एक ब्रह्म कूं ध्यावे॥ २॥
मिनखा छांट किया कुल सारा, सो तो सब है झूंठ बोहारा॥ ३॥
इण कुल सूं केता गत पावे, धरम राय द्वारे सब जावे॥ ४॥
जन सुखराम सांच कुल सोई, तिणरी परम मुगत गत होई॥ ५॥

कुल याने सतस्वरूप की भक्ति परमात्मा की भक्ति है तथा सतस्वरूप के सिवाय दूसरी भक्ति आन की भक्ति है। सब का पिता रामजी महाराज है वो चौरासी लाख योनियों में सबमें व्यापक है। ब्रह्माजी के लोक में जाकर वापस मनुष्य जन्म लेते है सो सब ब्रह्म की भक्ति करते है। मनुष्य अलग अलग पंथ स्थापित करके लोगो को उसमें बांधते है। वो सब असत याने माया की भक्ति करते है। यही झूंठा बोहार है। इस तरह असत की भक्ति करने से जन्म मरण में आना पडता है। यही धर्मराय के द्वार जाना है। म:फ: है कि सच्ची भक्ति वही है जिससे परम मुगत याने के: पद आ: पद की प्राप्ति होती है।

卐 हरजस पद राग कानडा (७) 卐

पांडे एक शब्द सत लिजे, बदले वेद भेद कह दिजे॥ टेर॥
पिपा सूं हाजर होय रहती, सन्मुख होय होय दरशण देती॥ १॥
माता सेव मोख जो होवे, पिपो छोड राम क्यूं ध्यावे॥ २॥
शिव शिव भज्यां भरम भय भांजे, तो शंकर ध्यान कौन को साजे॥ ३॥
सुरगुण सेव परम पद पावे, तो राम किशन क्यूं ब्रह्म को ध्यावे॥ ४॥
कह सुखराम सुणो सब कोई, ब्रह्म बिना सब माया होई॥ ५॥

पंडितो से फ: है कि एक सत शब्द की भक्ति धारण करो। बदले में आप अपने वेदो व उसके भेद की पहुंच बताओ। पीपाजी के देवी हर समय दरशण देती व हाजर रहती थी। अगर देवी की उपासना से ही मोक्ष हो जाती तो संत पीपाजी महाराज देवी की उपासना छोडकर रामजी की भक्ति क्यों करते। शिव शिव करने से मोक्ष हो जाती है तो शंकरजी किसका ध्यान धरते है। सुरगुण की भक्ति से मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है तो रामकृष्ण ब्रह्म की भक्ति क्यों करते है। म:फ: है कि सब कोई सुणो एक ब्रह्म के बिना सब माया है।

卐 हरजस पद राग कानडा (८) 卐

पांडे समझ चेत होय भाई, सो सुण ब्रह्म बाप बिन मांई॥ टेर॥
तांके मात पिता कुल सारा, सो सब माया रूप पसारा॥ १॥
अंछया फूल अस्तरी ठाणो, तीनूं जन्म सगत से जाणो॥ २॥
तीनूं जाग ऊपजे सोई माया है, नहीं ब्रह्म विचारो कोई॥ ३॥

जल बिन कीच धुपे नहीं कोई, सुरगुण सेव मोख नहीं होई॥ ४॥
पांडया देव सगत ने जाया, दतब काज भुगतणे आया॥ ५॥
दतब सारूं है परकासा, दीपक चंद सूर की आशा॥ ६॥
कह सुखराम समझ रे पांडे, बिना ब्रह्म माया के भांडे॥ ७॥

पंडितो से फ: है कि समझ कर ज्ञान करो, ब्रह्म वह है जिसके माता पिता नहीं है। जिनके माता पिता कुल है वह सब माया का स्वरूप है। ब्रह्म की इच्छा सृष्टि रचना के लिये सर्व प्रथम शक्ति को उत्पन्न किया, फिर तीनूं याने ब्रह्मा, विष्णु, महादेव की उत्पति सगती से है। तीन देवताओ से जो सृष्टि की उत्पति होती है वो सब माया है वह ब्रह्म नहीं है। जल के बिना कीचड नहीं धूपता, ऐसे ही सुरगुण भक्ति से मोक्ष नहीं होती। पंडितो से फ: है कि सब आत्म देवो के घर की उत्पति सगति से ही है। अपने अपने कर्मो के हिसाब से घर याने योनि मिलती है। आत्म ब्रह्म तो सब में एक ही है लेकिन घट के हिसाब से शरीर का प्राक्रम है। जैसे दीपक, चन्द्रमा व सूर्य का प्रकाश अलग अलग है। म: पंडितो से कह रहे है कि समझो, बिना ब्रह्म के सब माया के स्वरूप है।

卐 हरजस पद राग कानडा (९) 卐

त्यागी ओ तूं भेद विचारे, पीछे घेर कामना मारे॥ टेर॥
अन्न सा देव ताय कूं खावे, भिष्टा करे गुदा होय बावे॥ १॥
जल सा देव घूंट भर पीया, ईन्द्री नाल मूत कर दीया॥ २॥
धरणी देव जमी सो माता, तां पर नाडो खोलण जाता ॥ ३॥
धरणी मांय शकल कूं पाले, तां पर पांव धरे धर चाले॥ ४॥
अन्न जल आग सरस सो माया , तिरिया घाट पुरूष सब काया॥ ५॥
अे सब त्याग दिया सो त्यागी, अे संग लिया पचे है अभागी॥ ६॥
कह सुखराम सुणो सब ज्ञाता, सत ओ त्याग ब्रह्म रस माता॥ ७॥

त्यागी से फ: है कि पहले मेरे अणभै ज्ञान के भेद का विचार करो, कामनाओ को त्यागो। अन्न रूपी देव को खाकर गूदा से मल रूप से निकालते हो। जल रूपी देवता को पीकर मूत्रेन्द्री द्वारा निकालते हो। धरती सब की माता है उस पर मल मूत्र करते हो। धरती माता सबकी पालना करती है। उस पर तुम पैर रखकर चलते हो। अन्न, जल, आग, स्त्री, पुरूष सब माया स्वरूप है इन सबको त्यागने वाला त्यागी है। आत्मा जब तक इनके साथ रहती है तब तक त्यागी नहीं है। म:फ: है कि सब ज्ञानी सुणो, जिन्होंने ब्रह्म की प्राप्ति की है वो ही त्यागी है।

卐 हरजस पद राग कानडा (१०) 卐

जे जे जाय मिल्या पद मांही, तिनकी नकल जग में नांही॥ टेर॥
अे तो पीर और देव जगत सारा, सुख दुख दोष करत है लारा॥ १॥
अन्न कूं पीस भूंज के बाया, तब को आश कहां रे भाया॥ २॥
घस घस द्रव मिल्या धर मांही, पाछे तोल मोल जुग नांही॥ ३॥
तिल कूं पील तेल कूं बाले, तब को पाछे क्या गुण पाले॥ ४॥
बांज नार के पुतर नांही, किसकी मात बजे जग मांही॥ ५॥

कह सुखराम मोख जो पाई, मुख सूं बोल कह नहीं कांही ॥ ६ ॥

जो परमपद में जाकर मिले है इनकी नकल जगत में नहीं है। यहां पर जगत में कोई पीर कोई अपने आप देवता बनकर बैठे है, वह जो उस पद में पहुंचे है उन पर दोष लगाते है कि वो मोक्ष में नहीं गये। अन्न पीसकर भून कर उसे उगाते है परन्तु वो उगता नहीं है। धातु घिस घिसकर जमीन में मिल जाती है। उसका कोई मोल नहीं होता है। तिलो में से तेल निकाल कर उसे जला देते है तो तेल का गुण नहीं रहता है। बांझ स्त्री के पुत्र नहीं होता है तो वह माता किसकी कहलाती है। म:फ: है कि जिन्हें मोक्ष की प्राप्ति हुई है वे संसार में आकर बोलकर किसी से कुछ नहीं कहते है।

卐 हरजस पद राग गुंड (१) 卐

डूबा था धे मांय, नहीं तर डूबा था। म्हारा सतगुरु काडया आय, नहीं तर डूबा था॥ टेर॥
काम क्रोध मद लोभ में हो, सब जग डूबो आय।
सतगुरु हेलो पाडियो हो, मैं सुण्यो वां जाय॥ १ ॥
दोय नेजा गुरु लाइया हो, पिंडी एक बणाय।
दोय नर लागा खेचणे हो, यूं गुरु काडया आय॥ २ ॥
सेजा सेजा काढिया हो, जतन किया बोह भांत।
बलिहारी गुरुदेव की हो, काडियो कर कर खांत॥ ३ ॥
भवसागर सूं काडकर हो, गिरवर चाडयो मोय।
तीन लोक लारे रया हो, भव सागर क्या होय॥ ४॥
पांच पुरूष दोला हुवा हो, जांण न देवे मोय।
सतगुरु भेद बताईया हो, चडया पिछाडी होय॥ ५ ॥
निसरणी होय चड गया हो, सतगुरु के प्रताप।
जन सुखदेवजी पोचिया हो, जहां निरंजण आप॥ ६ ॥

जीव को नरक व चौरासी का दुख भोगना पडता है। यही धेह में डूबना है और सतगुरु का सत पद का अणभै ज्ञान देकर जन्म मरण से रहित करना ही बाहर काडना है। यदि सतगुरु सत का केवल ज्ञान नहीं देते तो जन्म मरण व चौरासी का दुख भोगना पडता है, सारा जगत काम क्रोध, लोभ, मद की वृतियां में लग रहा है यही डूबना है। सतगुरु केवली भगवंतो ने सत पद की प्राप्ति का उपदेश दिया और मैंने जाकर धारण किया याने सुणा। एक सांस में नाम का उच्चारण करने से सतनाम की जागृति नहीं होती, सतगुरु केवली संतो ने अणभै ग्यान में सांस उसांस में नाम रटणे का भेद बताया जब सतनाम प्रकट हुआ। कंठ कंवल पर दोनो स्वांसो में नाम रटने से एक घोर बंधना ही पिंडी बनाना है जैसे दो नेजा याने दो रस्सी अलग अलग होती है तो कमजोर रहती है उससे कोई चीज निकालते है तो रस्सी टूट जाती है। दोनो की एक पिंडी से कोई चीज निकाले तो वो नहीं टूटती है। ऐसे ही सांस सांस के आधार से नाम की भक्ति करने पर सत नाम प्रकट नहीं होता है और सांस ऊसांस में सतगुरु विधि से भजन करने पर नाम जागृत हो जाता है। सांस ऊसांस में ररा ममा का उच्चारण करना ही दोय नर का खेचणा है। इस प्रकार अणभै गुरु महाराज ने केवल ग्यान का भजन करा कर काड लिया। इस भक्ति करने में आत्मा को किसी प्रकार से तकलीफ व

दुख नहीं होता है। साधन का भेद सब प्रकार से समझाना ही जतन करना है। सतगुरु केवली भगवंतो ने हंसो को सहज में ही मोक्ष ले जाने के लिये जतन किया याने अणभै ज्ञान प्राप्त करा दिया। तीन लोक से निकाल कर खंड पिण्ड ब्रह्मण्ड पारब्रह्म से ऊपर चढाकर शरीर चेतन से न्यारा निरंजण निराकार में चौथे पद याने सतगुरु पद की प्राप्ति करा दी। तीन लोक से न्यारा हो गया और भवसागर याने जन्मने मरने का दुख मिट गया। पांच इन्द्रियो के पांच विषय रूप, रस, गन्ध, शब्द, स्पर्श में फंसना ही पांच पुरूषो का दोला होना है। ये भक्ति नहीं करने देते, पूर्व शंखनाल के जितने भी साधन शरीर के साथ चेतन में स्वांसा के आधार पर होते है। आत्मा इनसे न्यारी होकर अपने निरंजन निराकार पद में के: पद आ: पद की प्राप्ति नहीं कर सकती, लेकिन सतगुरु रूपी संतो ने पिछम का बंकनाल का सत नाम का साधन बताकर के: पद आ: पद की प्राप्ति करा दी है। सतगुरु के बताये अणभै ग्यान के माफिक सांस ऊसांस में भजन करना ही सतगुरु के प्रताप से निसरणी होकर चढना है। परमात्मा के जन सन्त वहां पहुंचते है जहां शरीर चेतन से न्यारा निरंजण निराकार सत चेतन याने सतस्वरूप आ: पद है।

卐 हरजस पद राग गुंड (२) 卐

तारेगा तेतीक सतगुरु तारेगा, इण भवसागर के मांय पार उतारेगा॥ टेर॥
मोय भरोसो बिडद को हो, सुण लिज्यो सब लोय।
सतगुरु शरणे नर आय कर हो, डूबो सुण्यो हन कोय॥ १॥
असंख जुगा में अनंत साधू, दे गया अणभै हांक।
सतगुरु के संग अवस तिरसी, भरत गीता साख॥ २॥
इस्तु आगे फूस केता, जल आगे क्या आग।
यूं नांव आगे कर्म हमारा, जाय इसी विध भाग॥ ३॥
ओ मन मेरो केरियो हो, नाव नौका होय।
सतगुरु सुंज बणाय सारी, पार किया है मोय॥ ४॥
सूर पिछम दिश उगवे हो, गंग उलट फिर जाय।
तो ही सतगुरु तारसी हो, मोय भरोसो मन मांय॥ ५॥
जन सुखदेव केह सांभलो हो, सतगुरु शरणे आय।
पैदा करन्ता रूठिया हो, तोई नरक नहीं जाय॥ ६॥

सतगुरु देव याने सतज्ञान से निश्चय ही तीरेंगे, जन्म मरण से रहित होना ही भवसागर से पार उतारना है। मुझे सतगुरु के बिडद का भरोसा है। सब संसारी सुणो जिस मनुष्य ने सतगुरु का अणभै ज्ञान धारण किया है वो जन्म मरण में नहीं आया है। यही डूबो सुणयो हन कोय है। अनन्त जुगों में अनन्त साधुओ ने के: पद आ: पद की प्राप्ति की है वो अपना अणभै ग्यान कह रहे है कि सतगुरु का अणभै ज्ञान धारण करने से ही जीव का उद्धार होगा, गीता भी इसकी साक्षी दे रही है। अग्नि के सामने घास नहीं ठहरती, पानी के सामने आग नहीं ठहरती, ऐसे ही निज नाम की भक्ति करने से सब करम क्षय हो जाते है। यही कर्मो का भागना है। परमात्मा का नांव नौका है और मन नांव को चलाने वाला है, सतगुरु ने सब तरह से केवल ज्ञान का निरपक्ष निरणा देकर जनम मरण

से रहित कर दिया यही पार करना है। सूर्य पिछम दिशा में उगने लगे, गंगा उलटी बहने लग जाये, तो भी मुझे पूरा विश्वास है कि सतगुरु का केवल ज्ञान धारण करने पर अवश्य ही उद्धार होगा। म:फ: है कि सब सुणो सतगुरु की शरण में आने पर और उनका अणभै ज्ञान धारण करने पर पैदा करन्ता परमात्मा भी यदि नाराज हो जाता है तो नरको में नहीं जा सकते। याने सुर्गुण माता ग्रहस्थ की भक्ति निर्गुण पिता राजा की भक्ति, केवल पति बैराग की भक्ति है। जब बैराग हो जाता है तब राजा हासिल नहीं लेते है व माता पिता भी सेवा की इच्छा नहीं करते है।

卐 हरजस पद राग गुंड (३) 卐

पिया मैं भूली हो, मेरे सतगुरु ली सुलजाय, पिया मैं भूली हो।
भटकी जिण तिण लार, पिया मैं भूली थी। बेह जाती जग मांय, पिया मैं भूली थी॥ टेर॥
सतगुरु भेव बताईया, प्रभु अन्तर आत्म राम।
भेद बिना बहु भटकिया हो, पूज्या बाहर धाम॥ १॥
पत्थर बहु विध खो लिया, प्रभु लिया मुझ ऊठाय।
समरथ सतगुरु बायरो प्रभु, सब जग बुहो जाय॥ २॥
बेद कतेब पारसी प्रभु, पढिये सुनिये जोय।
दम तुटे गरह गांठ का, प्रभु मुक्त कहां ते होय॥ ३॥
तिरथ कूं बहो भटकियो हो, पावे दुख अपार।
जहां जावे जल पाहण है प्रभु, दुजो नहीं विचार॥ ४॥
बरत बास उपवासणा प्रभु, आत्म कसे अपार।
बांण बिना कबाण कूं, प्रभु क्या कस पाडनहार॥ ५॥
उलजे कूं सुलजाविया हो, सतगुरु समरथ आय।
सुखिया सांई पाविया हो, अन्तर आतम मांय॥ ६॥

आत्मा परमात्मा से कह रही है कि मैं आपकी प्राप्ति का रास्ता भूल गई थी। सतगुरु ने आपकी प्राप्ति का रास्ता बता दिया है, यही सुलजाना है। शरीर रूपी आन की उपासना में लगना ही जिण तिण लार भटकना है। जन्म मरण में आना ही संसार में बहना है। सतगुरु केवली संतो ने भेद बताया कि आत्मा में ही परमात्मा है लेकिन मैं सतगुरु के भेद के बिना बहुत भटकी और बाहर के धामो को पूजती रही। आत्मा को जब जब भी मनुष्य शरीर मिला लेकिन यह ज्ञान नहीं मिलने से आयु पुरी होने पर परमात्मा ने वापस ऊठा लिया, यही शरीर रूपी पत्थर बहु विध खोना है। समरथ सतगुरु का केवल ज्ञान धारण किये बिना सारा संसार आवागमन में आ रहा है यही बहना है। वेद, कुराण, बाईबिल को पढो और सुनो। इनको पढने सुनने से गिनती के श्वांस व्यर्थ जाते है। परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती यही मुक्त कहां ते होय है। मैं बहोत तीरथो व धामो में फिरी, बहुत दुख पाई लेकिन जहां भी गई हूं वहां पानी और पत्थर के अलावा कुछ भी नहीं है। व्रत वास उपवास करके आत्मा को कष्ट देते है। यही कबांण की तरह है। सतशब्द का केवल ज्ञान बांण की तरह है। बिना बांण के कबांण खिचने से निशाना नहीं लगता है। ऐसे ही इन साधनो से परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती है। सतगुरु केवली भगवंतो ने अणभै ज्ञान देकर शरीर रूपी आन की उपासना

छुडाकर परमात्मा की प्राप्ति के साधन में लगा दिया है, यही उलजे को सुलझाना है। म:फ: है कि ऐसे साधन से ही आत्मा में ही परमात्मा की प्राप्ति हो गई है।

卐 हरजस पद राग गुंड (४) 卐

पिया मैं दोरी हो, प्रगटो दीन दयाल। पिया मैं दोरी हो, ओ दिन दुबर जाय॥ टेर॥
प्रेम लग्यो हर नांव सूं हो, मैं भूली खानर पान।
दरस दिज्यो सांईयां, मुझ अन्तर आत्म राम॥ १॥
रटत रटत थाकी भई हो, ज्यूं बिरहन कलराय।
खिन पल जोवूं बाटडी, प्रभु अंतर प्रगटो आय॥ २॥
तुम बिन सब सुख झूंठ है, प्रभु बिरहन नहीं सुहाय।
प्राण तजुंगी सांईयां, के दरशण दिज्यो आय॥ ३॥
बाट निशो दिन देखता, प्रभु दिन दिन निसरया जाय।
बिरहन कूं डर उपजे प्रभु, बोहो ओगण मुज मांय॥ ४॥
मेरा ओगण पर हरो प्रभु, तेरा बिडद निभाय।
शरणे आया सांईयां, सो तो अजिया कुंपल खाय॥ ५॥
आज काल के सांईयां हो, भावे मिल जुग मांय।
तन मन सुंपयो आप कूं प्रभु, सतगुरु शरणे जाय॥ ६॥
तुम मिलिया बिन बाहिरो हो, धक जन्म जग मांय।
कंत बिहूणी सेज में प्रभु, रोवत रेण बिताय॥ ७॥
अंतर गत की पीड ने प्रभु, किण सूं कहिये सुणाय।
जन सुखदेवजी बिनवे, अब प्रगटो अंतर मांय॥ ८॥

आत्मा परमात्मा से प्रार्थना कर रही है कि हे परमात्मा आप दर्शन दो, आपके दर्शनो के बिना यह दिन दुख में जाते है। परमात्मा के नाम से ऐसा प्रेम हो गया है कि मैं खाना पीना भूल गई हूं। आप कृपा करके आत्मा में ही दर्शन देवो। आपके भजन को करते करते थक गई हूं इसलिये यह बिरहनी दुखी हो रही है। क्षण में पल पल आपके दर्शन की बाट देखती हूं। आप मेरे अंतर में दर्शन देवो। आपके दर्शनो के बिना संसार के सब सुख झूंठे है मुझे अच्छे नहीं लगते है। आप दर्शन दीजिये अन्यथा मैं प्राणो को छोडूंगी। रात दिन आपकी बाट देखते देखते एक एक दिन निकल रहे है। इस तरह बिरहन को डर पैदा हो रहा है कि मुझ में बहुत अवगुण है, इसलिये आप दर्शन नहीं दे रहे है। मेरे अवगुणो की तरफ आप मत देखो, आप अपने बिडद का विचार करो। भक्षक के शरण में आने पर भी भक्षक रक्षक हो जाता है जैसे कि सिंह की शरण में आने पर बकरी को भी हाथी पर चढाकर सिंह ने कुंपले खिलाई, ऐसे ही आप तो दयालू है। मैं आपकी शरण में हूं कृपा करके मेरे अवगुणो को न देखकर दर्शन दो। आप आज मिलो चाहे कल मिलो, जुगो में मिलो। मैंने तो सतगुरु का अणभै ज्ञान धारण करके तन मन आपको सौंप दिया है। हे परमात्मा आपकी प्राप्ति के बिना जन्म धिक्कार है। जैसे पति के बिना स्त्री को सेज का सुख प्राप्त नहीं होता है और रो रोकर रात बिताती है। अंतर में आपके मिलने की जो पीडा लग रही है उसे किसे सुणाऊं। म:फ:

है कि आत्मा परमात्मा से प्रार्थना करती है कि आप मेरे अन्तर में सता रूप से आकर प्रगटो।

卐 हरजस पद राग गुंड (५) 卐

सब विध सारण काम, पिया मुज दरशण दिजे हो।
ओगण गारी रा पीव, पिया मुज दरशण दिजे हो॥ टेर॥
ऋतुवंती ऋतु ऊपरे प्रभु, व्याकुल भयो शरीर।
बेगा बेग पधारजो प्रभु, आत्म धरे न धीर॥ १॥
जल बिल नागर बेलडी प्रभु, पोप फूल कुमलाय।
तुम बिन आत्म सुन्दरी प्रभु, यूं दुख अन्तर मांय॥ २॥
जल खुटा सर सुखीया हो, दादर दुख अपार।
मीन दुखी जल बायरी प्रभु, तुम बिना आत्म नार ॥ ३॥
पपियो पिव पिव करे, प्रभु चंदर दिष्ट चकोर।
जन सुखिया यूं आत्मा रे, लगी ब्रह्म सूं डोर॥ ४॥

सब विधि से कार्य सारने वाले परमात्मा आप मुझे दर्शन दीजिये, मैं तो अवगुणो की भण्डार हूं तो भी कृपा करे, मुझे दर्शन दीजिये। ऋतुवंती स्त्री ऋतु आने पर पति से मिलने के लिये व्याकुल होती है ऐसे आत्मा का मनुष्य जन्म में आना ही ऋतु आना है। परमात्मा की प्राप्ति मनुष्य जन्म में ही होती है। इसलिये आत्मा परमात्मा की प्राप्ति के लिये रात दिन तडफती रहती है, और परमात्मा से प्रार्थना करती है कि आप जल्दी से जल्दी सता रूप में पधार कर दर्शन दो। यही बेगा बेग पधारना व धरे न धीर है। जैसे जल के बिना नागर बेल व पुष्प कुमलाते है ऐसे ही आपके बिना आत्मा अन्तर में बहुत दुखी है। सरवर का जल खत्म होने पर मेंढ़क दुखी होता है। लेकिन मछली जल के बिना रह नहीं सकती। ऐसे ही आपके दर्शनो के बिना आत्मा नहीं रह सकती। पपिया स्वाती नक्षत्र की बून्द के लिये पीव पीव करता है, चकोर पक्षी चन्द्रमा की तरफ ही देखता रहता है। म:फ: है कि ऐसे आत्मा से अखण्ड भजन व अखण्ड ध्यान होना ही ब्रह्म से डोर लगना है।

卐 हरजस पद राग पिचकारी (१) 卐

रंग मैं खेलूं रमैया सूं होली, हो सुध भूली। सुन्न में खेलूं सायब संग होली, हो सुध भूली॥ टेर॥
पूरब दिशा में बाजे , अनहद बाजा। पिछम दिशा में बाजी मुरली, हो सुध भूली॥ १॥
ज्ञान की गुलाला ऊडे, प्रेम का पिचरका। म्हारे करणी केशर क्यारी फूली, हो सुध भूली ।। २।।
शब्द उजाला म्हारे, सतगुरु सूजे। म्हारे भाव बसंत रूत फूली, हो सुध भूली॥ ३॥
सूरत निरत मन, निज मन खेले। मैं तो पांच सखी संग लूं ली, हो सुध भूली॥ ४॥
काम क्रोध शिर, करम का जोडा। म्हें तो दुखड़ा रे शिर डाली धूली, हो सुध भूली॥ ५॥
कह सुखदेव गुरु, सुखडा रा सागर। म्हारी सूरत शेषर धारा झूली, हो सुध भूली॥ ६॥

आत्मा ईन्द्रियो से कह रही है कि ब्रह्मण्ड पारब्रह्म से ऊपर निरंजण निराकार पद में सतशब्द का अखण्ड अनुभव हो रहा है यही रमैया सूं सुन्न में होली खेलना है। उसका आनन्द ही सुधी

भूलना है। पूरब दिशा के स्थानो पर शब्द का अनुभव होना ही अनहद बाजा बजना है। पिछम दिशा में जो शब्द की ध्वनि हो रही है यही मुरली बाजना है व आनन्द आना ही सुध भूलना है। सत सरूप का केवल ज्ञान करना ही गुलाल उडाना है। प्रेम से भक्ति करना ही पिचरका छूटना है। सतशब्द की भक्ति सतगुरु केवली भगवंतो के अणभै ग्यान से भेद लेकर भक्ति करने में सारे शरीर में शब्द का आनन्द आना ही करणी केशर क्यारी फूलनी है। सतगुरु का स्वरूप सतशब्द है उसका अनुभव है यही सतगुरु का सूजना है। भाव से भक्ति होकर उसका सुख आना ही बसन्त ऋतु फूलना है। सूरत निरत मन लगाकर निज मन से पांच ईन्द्रियो को वश में करके भक्ति कर उसका आनन्द आना ही पांच सखियो को साथ लेना है व सुध भूलना है। काम क्रोध और दूसरे कर्मों को त्यागना ही उन पर धूल डालना है क्योंकि करमो से कर्म बन्धन होता है और करम बन्धन से दुख भोगना पडता है। म:फ: है कि इस तरह सतगुरु देव सुखो के समुद्र है। उनकी कृपा से आत्म चेतन को अखण्ड आनन्द आना ही शेषर धारा झूलना है व सुध भूलना है।

卐 पद क्रमांक (१) 卐

संईयां सतगुरांजी रे जास्यां ये, संईयां सतगुराजी रे जास्यां ये।
सोई सोई आग्या गुरु देव करे सो, म्हे शीश चढास्यां ये॥ टेर॥
कंठ बीच कंवल फूली गुल क्यारी, अमीरस पिस्यां ये।
गुप्ता सा नैण गुरांसा म्हारा खोल्या, ज्यूं मंदिर दीया ये॥ १॥
पूरण चांद चौक बीच ऊगो, म्हारे हिरदे ऊजाला ये।
झिलमिल नूर गुंराजी रो बरसे, ज्यूं दीपक माला ये॥ २॥
भंवर गुंजार नाभ घरणाया, मंगल गवीजे अे।
प्रेम का कलश गुरांजी ने बधास्या, बधाई बटे छ अे॥ ३॥
छम के छ गुंगर बाजे छ मुरली, रास रच्यो छ अे।
मैं चढ देखूं गिगन केरा गोखा, थे काना सुणो छ अे॥ ४॥
सतगुरु शरणे अेसा सुख पाया, फिरूं छूं मैं फूली अे।
सुखदेव सुखडा रा रूप गुरुजी, दुखडो सब भूली अे॥ ५॥

आत्मा ईन्द्रियो से कह रही है कि मैं सतगुरु जी याने सतशब्द के दर्शन के लिये जाऊंगी और सतगुरु केवली भगवंत का सत ज्ञान भजन की विधि बतायेंगे उसको धारण करूंगी। कंठ कंवल पर शब्द की जागृति होकर उसका आनन्द आना ही फूली गुल क्यारी व अमीरस पीना है। सूरत द्वारा शब्द का अनुभव होना ही गुप्त नेणो का खोलना है। जैसे अंधेरे वाले मकान में दीपक के जोने पर प्रकाश हो जाता है व सब चीजे देखने में आ जाती है। हिरदे स्थान पर सतशब्द का अनुभव होना ही पूरण चांद का चोक में उगना व हिरदे में उजाला होना है। गुरु म: याने सतशब्द की ध्वनि का सारे शरीर में अनुभव होना ही झिलमिल नूर बरसना है व दीपक माला का जुपना है। नाभी में सतशब्द का अनुभव होता है तब श्वांस उसांस में भजन करने पर जैसे भंवरा गुंजार करता है ऐसी ही ध्वनि महसूस होती है। उस स्थान पर शब्द आना ही मंगल गाना है। प्रेम से भक्ति करने पर जो आनन्द आता है यही प्रेम कलश से गुरांजी को बधाना व बधाई बांटना है। त्रिकुटी के स्थान

पर शब्द होता है उसकी ध्वनि का अनुभव होना ही गुगर बजना मुरली बाजना व रास रचना है। आत्मा ईन्द्रियो से कह रही है कि मैं तो ब्रह्मण्ड से पार ब्रह्म से ऊपर चढकर शब्द का अनुभव करती हूं और तुम कानो द्वारा सुनती हो। सतगुरु के द्वारा अणभै ज्ञान प्राप्त करने पर आत्मा को ऐसा सुख प्राप्त होता है जिससे उसको बडी भारी खुशी होती है यही फूली फिरना है। म:फ: है कि गुरु म: सुखो के रूप है उनका केवल ज्ञान धारण करने से उनकी कृपा से जन्म मरण का दुख मिट जाता है, यही दुख भूलना है।

卐 पद क्रमांक (२) 卐

मैं बिगडया हूं राम दुहाई, तुम मत बिगडो लोई रे॥ टेर॥
सुणज्यो रे सब पुरका बासी, करम दिया सब खोई रे॥ १॥
चनण के संग बागज बिगडयो, परमल चारूं दिश होई रे॥ २॥
पारस के संग लोहो बिगडियो, कुल अंस रहयो यन कोई रे॥ ३॥
कह सुखदेवजी भंवरा के संग, कीट पलट भंवरा होई रे॥ ४॥

म: संसारियो के प्राणियो से कह रहे है कि मैं रामजी की सौगन्ध खाकर कहता हूं कि मैं बिगड गया हूं। तुम मेरे साथ में मत बिगडो। सब ही संसारी सुणो मैंने सब करमों का क्षय कर दिया है। जैसे चन्दन के वृक्ष के साथ बाग में जितने भी वृक्ष होते है वो सब चन्दन मय हो जाते है और उनमें चन्दन की खूशबू आने लग जाती है। पारस से लोहा सोना हो जाता है और तब उसमें लोहा पना नहीं रहता है। यही कुल अंश का नहीं रहना है। म:फ: है कि जैसे भंवरे के साथ लट रहने पर भंवरा हो जाती है, ऐसे ही मैं बिगडा हूं।

●●●●●●●